XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
×
🐇 वीर सेवा मन्दिर 🐇
\$\text{\$\circ}\$
🌡 दिल्ली 🖁
× 140011 ×
×
8
X X
\$
X
X A X
2852 mm Hear (0x/2(xx) co)
\$ 400 2 \$
भ्रे कम संख्याः
\Re (0)/2($\chi\gamma$) GT \Re
अ काल न०
X X
🛱 खण्ड - 🚃 - 💥
X X X
☆ ♡
KKKKKKKKKKKKKKKKKKKKK

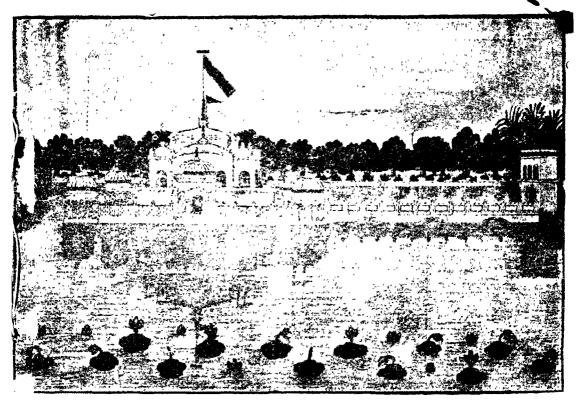
आरहंगात्राय नसः।





श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक पत्र

47 - 1 १ नवस्वर सन १५,२% 141-41 2



构和文章

निन रमंस्पण वहासारं। मीत्रलणम हजी

つけっていな場

धांप्त कामनाधमानता

对于 对书

र्सार्थक मृत्य । श्रीर राजेन्द्रकृतार जैन र्राप्त विजनीर [हाई रुपये

भी महावीरीय नमः

"च्नमा वीरस्य भूषण्यः" भी मारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाचिक मुख पत्रः

वीर

"उत्तिष्टत जामत प्राप्यवरान्निबोधत।"

''श्रियं सुखं स्वास्थ्यमथो सुबुद्धि, लाभं स्वकार्य्ये विजयं विभूतिम् । नवं नवं संगमयत्प्रसंगं, इर्षे प्रकर्षे वितनीतु वर्षम् ॥"

घर्ष २

निर्वाणाङ्क

भंका १

वन्दे-वीरं इ

गीत

अन्तख निरंगन-अध्मद भंजन-दुर्नय इंत, शिवतियक्तंत,
निर्भयशीरं वन्देवीरं ॥१॥
दिव्य प्रभामय-अविचल, अन्तय-शक्ति अनंतः प्रतिभावतं,
गुण गंभीरं, वन्दे वीरं ॥२॥
जगदोद्धारक, सत्यवचारक-दुरित जयंत, जय जयवंत
भवनिधि तीरं,वन्दे वीरं॥३॥

"वःसल"

भगवान महावीर !

नियों के अन्तिम तीर्थक्कर भगवान महाबीर के जीवन के विषय में यद्यपि काफी प्रकाश पड़ गया है, माञ्चम हो गया है कि वह वैशाली को निकट अवस्थित कुण्ड ग्राम के मृप सिद्धार्थ के पुत्र थे। यह नृप नाथवंशीय काश्यप गोत्री क्षत्री थे, और बहुतायत से विज्ञियन राज तंत्र संघ में सम्मिलित थे। इन्हीं के पुत्र राज कुमार महावीर गृहत्याग दिगंवर दोक्षा महण कर और घातियां कम्मों का नाश कर कैवल्यपति तीर्थङ्कर हुए थे। बस्तु के यथार्थ स्वरूप के अनुरूप में आपने धर्म का प्रचार करके वर्तमान के बिहार प्रान्त के अन्तर्गत उस समय अवस्थित द्वराजा हस्तिपाल मल्लवंशीय की राजधानी पावापुरी से अनुपम मानन्द्धाम मोक्ष को प्राप्त किया था। इस ही दिश्य अवसर के उपलक्ष में स्वर्ग लोक के देवों और भारतीय राजा एवं प्रजा ने दीपमालिका उत्सव मनया था । तव ही से यह पुण्य दिवस पवित्र स्मृति में जातीय त्यौद्दार मनीया जा रद्दा है। यही कार्तिक रुष्णा अमावस्या का दिवस था जब भगवान महाबीर ने मुक्ति-लक्ष्मी प्राप्त की थी। परन्तु दुख है कि भाज स्वयं उनके परम मक इस पवित्र दिवस आसुरी प्रवृत्तियाँ जुआ श्रादि-में संलग्न हो पाप का संचय करते हैं अधवा विनाशक रौप्यसुवर्णमय लक्ष्मी की उपासना करते हैं। कितना उत्कृष्ट भाष इस पृथित दिवस

में हममें उद्गाबित होना चाहिए, किन्तु अझानता की रूपा से "सार्व प्रेममय वृत्ति" के स्थान पर 'स्वार्थ वासना' का संचार हृद्यों में होता है ! कितना अधः पात है !! शोक का स्थान है !!!

अपनी प्रवृत्तियों को सुधारना अपने हाथ में है। मनुष्य स्वयं अपनी अवस्था का विधाता है। सुख दुःख उसकी मुट्ठी में हैं। इन बातों को वैक्षा निक ढंग पर प्रभु चीर ने हमको बताया था और उनका यह सौम्य-साम्य-सान्त्वनादायक संदेश आज भी जैन शास्त्री में स्वरक्षित है । परन्तु खेद और दुक्ल हैं। कि जैन समाज इस अपूर्व संदेश की संसार के निकट नहीं पहुंचने देती ! उस सर्व हितकारी संदेश का ज्ञान प्रत्येक देश के प्रत्येक प्राणी को कराना उसका कर्तव्य है। तब संसार की प्रगति सुख शांति के राजमार्ग पर हो सकेगी। 'सब जीवित प्राणियों में मेरं ही समान प्राण हैं और उनके जीवन स्वत्व भी मेरे ही सद्भग्न हैं। अपनी स्वार्थान्धता में उनको नाश करने अथवा हडुए जाने का मुक्तको अधिकार महीं है, क्योंकि स्वार्थ में मैं अपने आप को भूले हुए हूं इसलिए यथार्थ स्थिति को नहीं जानता' इस उत्तमभाव का अनु-भव प्रत्येक विचक्षण बुद्धि को भगवान की पवित्र वाणी का अभ्यास करते ही हो जायगा । और किर राष्ट्रों को 'स्वभाग्यनिर्णय' का सिद्धान्त हर जगह सागू करते देर न लगेगी। वह स्थिति की

यथार्थता को जान जांयते । प्राणियों के दुःखीं का मुल कारण मालूम कर लेंगे । इसलिए प्रत्येक स्वतनश्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करने देने में कोई बाधक न होगा। धर्म के मूल भाव को जानते हुए फिर कहीं भी हिन्दू मुसलमानों के मध्य धर्म की ओर में सं सिरफुड़ी ज्वल के दूर्य देवनं को नहीं आँयगे ? भला यह कौन सी दृष्टि से धर्म का अंग कहा जा सका है? धम्मं बाहिरी किया काण्ड के पाजण्ड में नहीं है। वह तो प्रत्येक प्राणी प्रत्येक आतमा का निजी स्वभाव है। ऐसी अवस्या में **क्या शंख की ध्वति से अध्वा इंटों और बाजों के** न होने से धर्म में वाधा आ सक्ती है ? नहीं: यह तो केवल मान्यिक कमजोरियां हैं। मान-मन्सर, ईप्यां और छेप के खेल फरतव हैं! भगवान महाचीर के धर्म साधन समय ता उनके ऊपर घोरतम उपसर्ग हुआ था, परन्तु वह अपने धर्म से तिनक भी विचलित न हुए। यात यह थी कि वह आत्म विजयो बीर थे। सांसारिक संसर्ग अपना प्रभाव उन पर डाल न सके। आज मनुष्य जाति को उन के दिव्य उदाहरण से 'त्याग' का पाठ सीखना चाहिए। और अपने धर्म को 'सत्य' के प्रकाश में. आंखें खोल देखना चाहिए।

जोहो संसार का कल्याण इसही में है कि वह भपने 'धर्म, की यथार्थता को 'सत्य की कसौटी पर कसके उसके अनुसार अपना जीवन ढड़ा बनावे। उस अवस्था में उसे अहिंसा, सत्य, शील, अस्तेय और नियमित तृष्णा रखने का अभ्योस अवश्य क-रना पड़ेगा। इन सुन्दर वर्तों का वैज्ञानिक वर्णन प्रभू धीर ने उत्तम रीति से समकाया था, उसी सादेश को आज संसार के हाथोंतक पहुंचाना हमा- रा धर्म है। जैनियों को आज अपनी शक्ति के अनु-सार इस पवित्र कार्य में सहायक होना चाहिये।

हां, तो भगवान महाचीर के विषय में हमें यह जानने की और इच्छा होती है कि आज से कितने वर्ष पहिले भगवान ने मोक्षलाभ किया था? साभा-रण रूप में आजकल प्रचलित चीर निर्धाण संवत् तो इस घटनाको २४५= वर्ष पहिले हुई व्यक्त करता है, परन्तु भ्रब ऐसे भी प्रयाण मिले हैं जो इस तिथि को ठीक नहीं बतलाते। उनके मतानुसार भगवान का निर्वाण ईसा से ४६७ वर्ष पहिले हुआ था। वास्तव में एक इतने प्राचीन विषय का ठीक निर्णय करलेना एक अतिकठिन कार्य है, किन्तु उपलब्ध सामित्री से जिस और विशेष प्रामाणिक प्रकाश पडे उसे ही स्वीकार करना लाज़मी होगा। अतएव विद्वानीको इस ओर विशेष रीति से प्रकाश डालना चाहिये। तो भी हम इतना अवश्य कहेंगे कि वेडस ओर तन मन न करते समय निम्न वातों को ध्यान में रक्खें।

यह प्रकट है कि भगवान महावीर के सम-कालीन एक अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति महातमा बुद्ध हैं। म० बुद्ध ने भी घरवार छोड़ परमसुख की खोज में साधुमार्ग की शरण ली थी। और वह जैन मुनि भी रहे थे, यह वात जैन शाख़ों के अतिरिक्त स्वयं बौद्ध ग्रंथ से प्रमाणित है जिस में म० बुद्ध ने कहा है # "मैं वालों और दाढ़ी को उखाड़ने बाला भी था, और शिर एवं मुख के बाल नौचने की परीवह भी सहन कर खुका हूं।" यहां पर संकेत जैन मुनि की केशनु चन किया की ओर है। तिस । पर डॉ॰

See Dialagues of Gotama, quoted in K: J. Saunder's Gotama Buddha p. 15.

रामहण्या भएडारकर ने भी इस ही बात की पुष्टि की है। अस्तु बुद्ध देव ने घोर दुःख सहन किए और दुद्धर तपश्चरण किए, परन्तु तो भी उन को उस उत्कष्ट झान की प्राप्ति नहीं हुई जिसके दर्शन इन्होंने शायद अपने जैन गुरू में किए थे। इस दशा में भी उनको उस झान के अस्तित्व में तो शक्का नहीं हुई परन्तु वह उसकी प्राप्ति का कोई सहज मार्ग दुंढने लगे और उस की प्राप्ति बोधि-वृक्ष के नीचे होने पर उन्हों ने अपने 'मध्यमार्ग" का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया। बुद्धदेव ने गृह-त्याग २६ वर्ष की अवस्था में किया था और वह "बुद्ध" ३६ वर्ष की अवस्था में क्रिया था और वह "बुद्ध" ३६ वर्ष की अवस्था में क्रिया था तो है। अर्थात् उसने अपनी ३६ वर्ष की अवस्था से अपने मत का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया था।

उधर विशय निगनडेट साहब का कथन है

कि बुद्ध वेच के जीवन की ५० से ७० वर्ष की घटनाओं का करीब २ एक पूरा अभाव है ("An almost complete blank.")इस अभाव का क्या कारण हो सका है यह जानना आवश्यक है। इस लिय उस समय के धार्मिक संसार में ऐसी कोई प्रवल घटना हमको देखनी चाहिए कि जिस के कारण बुद्ध वेच के धार्मिक म्यान है। आधुनिक विद्वानों की दृष्टि इस समय के धार्मिक पुरुषों में बुद्ध घटेच के बाद भगवान महावीर पर ही पड़ती है और वह समकाछीन भी थे। अत्यव भगवान महावीर के ही जीवन का किसी अपूर्व घटना का प्रभाव धुद्ध घटेच के जीवन का किसी अपूर्व घटना का प्रभाव धुद्ध घटेच के जीवन पर पड़ा होगा। तीर्थ इर के

जीवन में केवलजान (सर्वज्ञता) प्राप्त करने का ही एक ऐसा अवसर है जो अनुपम और अद्भुत प्रभाव शाली है। इस बात की पुष्टि प्राचीन से प्राचीन उपलब्ध जैन साहित्य से होती है। अत-पव कहना होगा कि इस समय भगवाम महाबीर को सर्वज्ञता की प्राप्ति हुई होगी और उनका धर्म-प्रचार समवशरण सहित सर्जत्र हुआ होगाः जिस का ही प्रभाव म० दुस पर पड़ा होगा क्योंकि जैन शास्त्रों का जो वैज्ञानिक वर्णन है कि तीर्थंड्रर के पुण्यप्रकृति के प्रभाव से ४०० कोसतक चहु क्षोर दुर्भिक्ष आदि दूर हो जाते हैं और उनके सम-वशरणके दर्शन करते ही लोगों का मिथ्याझान फाफूर हो जाता है उससे जनता को अवश्य ही यथार्थता का ज्ञान हो गया होगा। यही कारण है कि पश्चान् में घौद्ध संघ में भेदभाष पड़ा था। वहां देवदत्त ने तपस्या की अधिकता और माँस मक्षण के त्यागपर ज़ोर दिया है *भला उस समप भगवान महाबीर के अतिरिक्त और किसने अहिंसा और तपस्या की उचित बोधश्यका पर ज़ोर दिया है ? अतएव मानना होगा कि भगवान महावीर के धर्मद्वार का ही प्रभाव था जिस के कारण बुद्ध देव को अपने मत के पुचार में बाधा उपस्थित हुई थी-यहाँतक कि उसकी ५० से ७० वर्ष की जीधनी ही नहीं मिलती ? और ७२ वर्ष की अवस्था में वह सामान्यकए में राजगृह में आकर पृष्ट कर एक कुम्हार के यहाँ रात्रि विताते हैं। इस के अतिरिक बौद्ध प्रन्थ का निम्न वर्णन भी इसदी बात की पुष्टि करता है:--

^{*} Sce K. J. Saunder's Gotama Buddh P. 72-73.

भी दि॰ माग ७ भंद्र १२ प्र० १ ।

"पावा के चन्द नामक व्यक्ति ने मल्लदेश के सामगाम में स्थित आनन्द को महान् तीर्थं इर महावीर के शरीरान्त होने की कृषर दी थी। आनंद ने इस घटना के महत्त्व को कट अनुभव कर लिया और कहा 'मित्रबन्द' यह समाचार 'तथागत के' समक्ष लाने के उपयुक्त है। अस्तु हमें उनके पास घलकर यह खबर देना चाहिये।' ये बुद्ध के पास दीड़े गर, जिन्होंने एक दीघं उपदेश दिया।' (पासादिक दुसंत' See Dialognes of Buddha. pt. III. P. 112.)

इस वर्णन के शब्दों में एक हर्ष भाष भलक रहा है, और हर्प तय ही होता है जब कोई बाधक वस्तु दूर हुई हो। इसलिए इससे भी साफ, प्रकट है कि भगवान महाबीर के धर्म प्रचार के कारण बुद्धदेव को अवश्य ही अपने मध्यमार्ग के प्रचार में शिथिलता सहन करना पड़ी थी, और घह शिथि-स्नता भगवान महाचार के निर्वाणासीन होते ही दूर होगई क्योंकि मि० विमलचरण लाँ० एम० ए० बी० एल० उक्त वर्णन एर फहते हैं कि "उससे म० बुद्ध और उनके मुख्य शिष्य सारीपुत्त ने अपने धर्म का प्रचोर करने का विशेष लाभ उठाया।" *

इस प्रकार यह प्रत्यक्ष है कि भगवान महाधीर के भर्म प्रचार के कारण बुद्धदेच का प्रभाव इतना हीन हुआ कि उनके ५० से ७० वर्ष के जीवन का वर्णन नहीं मिलता! परन्तु साथ ही यह भी विचारणीय है कि भगवान महावीर का धर्म प्रचार होते साथ ही बौद्ध भर्म में हीनता उपस्थित नहीं हुई होगा। इस लिए यदि मानलें कि ५ वर्ष के भीतर भगषान की सर्वह्नता का और धर्म संदेश का प्रभाष चहुं और व्याप्त होगया तो कहना होगा कि बुद्धदेव की ४५ वर्ष की अवस्था में भगवान महाबीर को सर्वह्नता प्राप्त हुई थी अर्थात् जब भगवान महावीर ४२ वर्ष के थे तय बुद्धदेव की अवस्था लगभग ४५ वर्ष की थी। बुद्धदेव ने भी कहीं इस बात को शायद स्पष्ट नहीं किया है कि घस्तुतः भगवान महाबीर उनसे आयु में बड़े थे। अत्र य भगवान के संबंध में विचार करते समय यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि जब भगवान महाबीर का धर्मीपदेश हो रहा था तय बुद्ध की अवस्था ४०-५० के मध्य थी।

इसके अतिरिक्त बुद्धदे**ष के सम्बन्ध में हमका** मालूम है कि:—

- (१) बुद्ध जब २६ घर्ष की अवस्था में गृह-स्याग राजगृह गए तो वहां राजा श्रेणिक था।
- (२) बुद्ध की मृत्यु के ६ वा १० वर्ष पहिले देवदत्त ने जो संघ में भेद खड़ा किया था उस समय अजात राष्ट्र युवराज थे। शायद इस ही समय श्रेणिक ने अजात शत्रु के सुपुर्द राज्यभार किया था।
- (३) बुद्ध की मृत्यु से म्यर्प पहिले अजात शत्रु ने अपने पिताको कैंद्र किया था।
- (४) तथा क्षव राजा चेटक ने मगभ पर आक्रमण किया था, श्रेणिक का विवाह चेलना से हुआ था।

उधर श्रेणिक चरित्र से ज्ञात है कि जब श्रेणिक युघा हो चुके थे तब महाराज उपभेणिक ने उन को देशनिकाले का दण्ड दिया था। अर्थात् उस समय श्रेणिक की अवस्था कम से कम २५ वर्ष की

^{*} See Kshatinga claus in Buddhist India p. 176.

अवश्य माननी एडंगी। श्रेणिक के चले जाने के कुछ समय पश्चात् उपश्रेणिक का देहान्त शोगया और चलाती प्रजा पर अन्यायपूर्वक राज्य करने लगा। इससे चिद्रकर प्रजा ने श्रेणिक को बुला भेजा था। इस बीच में भेणिक बौद्ध धर्मानुयायी हो आप थे। इसिंछए बुद्धदेन की २६ धर्ष की अवस्था में मिलते समय, श्रेणिक का राजा होना कैन प्रन्थ के इस वर्णन से ठीक नहीं बैठता। तो भी इससे प्रकट है कि श्रेणिक सिंहासनारूढ होते समय करीब ३०-३१ वर्ष के अवश्य होंगे, और उनका विवाह चेलना से उस समय हुआ जब राजा चेटक मगध पर आक्रमण किये हुए थे। इस के उपरान्त भगवान महावीर के समवशरण के राजगृह आने पर भ्रेणिक जैन धर्मानुयायी हुआ था, और देवदत्त के बीज संघ में मतभेद खड़ा करने के समय तक अजातशबु भी अपने पिता की भांति जैन धर्मानुयायी था क्यें कि इसके पहिले उसका साक्षात् बुद्ध से नहीं द्वभा था और उसे अबतक 'सर्व दुष्हत्यां. का समर्थक और पोषक' बौद्ध प्रंथीं में लिखा

है। यह मतभेद बुद्ध की ७० वा ७१ वर्ष की उमर में हुआ था। इसी समय अजातशत्रु ने भ्रे णिकः को कैर में डाला था जहाँ उनकी मृत्यु हो गई थी। कैद के डालने का कारण यही हो सकता. है कि: अजातशत्रु का हृदय अब बौद्ध धर्म की ओर आरुष्ट हो गया था, और उसका पिता जैनधर्मैः रत था, यद्यपि जैन शास्त्रों में उसके पूर्व वैर कारणः बताप हैं। इसलिप इस समय के पहिले ही श्रेणिक भगवान महाबीर के समयशरण में हो आए होंगे। इस समय भगवान महाबीर अवश्य विद्यमान होंगे. और उनकी अवस्था करीब ६५ वर्ष की होगी यह अनुमान होता है। इन सब बातों पर विशेष रीति से पेतिहासिक प्रकाश पड़ने की आधश्यकता है। तब हीं यथार्थक्य में निर्णित स्वीकार की जा. सकती हैं। वास्तव में जैन इतिहास पर अभी बहुत कुछ प्रकाश पड़ना याकी है। उसही के अनुक्ष में यहां किञ्चित् विचार किया गया है। जैन चिहानी को इस विषय का अध्ययन करना चाहिए।

—उ**ः सं**ः

श्राह्वान

पधारो सन्तर १ द्या निधान ! अनुपम अन्त्य, पित्र पुण्यमय यह शुभ दिवस महान । स्वर्णात्तर श्रंकित स्वजीति का उड्नल धवल निशान ॥ १ ॥ अत्मवीर, सद्धमें मणेता सन्ति ग्रंग मणि खान । हृद्यनाथ ! भगवान् बीर ने पाया था निर्वाण ॥ २ ॥ किया अहा ! निर्वाण महोत्सव शनीनाथ ने श्रान । वह अनन्त स्मृति वितरण करती नव जीवन दान ॥ ३ ॥
किंतु आन वह दरव न अवगत नहीं वही सामान ।
क्या ? निर्वाण महोत्सवहै यह अथवा विपति विधान ॥४॥
मानव हृद्दमदीप अन्तर्गत धर्म-स्नेह अवसंग्रेन ।
दिव्य ज्ञानमय विमल ज्यातिका प्राप्त न अनुसन्धान ॥४॥
दुरितम मिथ्योतम फैला हा ! अन्त आत्म विज्ञान ।
सत्य सरल पथ विस्मृत हे विश्व ! करहु द्याका दान ॥६॥
"वत्सल"

क्या भारत के पतन का कारण ऋहिंसा है



(ले श्रीमान घरपतराय की जैन बार, एट-लाँ)

का एक प्रकार का फैशन सा बना का एक प्रकार का फैशन सा बना लिया है, कि समय बेसमय जहाँ कहीं अवसर मिले, जैनधर्म और बौद्धधर्म को भारतवर्ष के पतन का अपराधी ठहरावें, और इसका कारण वे लोग यह बताते हैं, कि इन मतों के अहिंसा धर्म के प्रचार ने ही भारतवासियों को कायर और संसार से विरक्त बना दिया था। जिसके कारण यह भन्य विदेशी कौमों के मुकाबले में खड़े नहीं रह सके।

कुछ लेखक तो पेसे हैं कि जिनके लेखों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु एक दो लेखक पेसे भी हैं जिनके लेखों को संसार आदर की हृष्टि से देखता है। जैसे, लाला लाजपतराय। लाला लाजपतराय ने अपनी 'भारत का इतिहास' नामक पुस्तक में उपरोल्लिखित दोष जैनियों के मत्थे मढ़े हैं। मुफ्ते नहीं मालूम कि लाला लाजपतराय ने इतिहास लिखने की योग्यता कब और कैसे प्राप्त की। लाला जी का साधारण जीवन निस्सन्देह देशभक्ति के लिये अर्पण हो खुका है, इसलिए में इस बात को मानने के लिए याध्य हूं. कि वह कोई बात बदनियती से अपने मुख या कलम से नहीं निकाल सकते। रही यह बात कि भूल होना सो हर व्यक्ति से संमव है। तिस पर जहाँ तक परिचय है उससे मालूम है कि लाला जी दार्शनिक विचार में इस्ल अधिक नियुण्यता को प्राप्त नहीं हैं। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष ही है कि जैनधर्म के भूतकाल के महत्त्व का उनको

पता नहीं चलेगा। मालूम होता है कि मान्यवर लाखा जी ने अहिंसाधर्म के स्वरूप को भी कुछ भले प्रकार नहीं समक्ष पाया है।

इतिहास का लिखना हर न्यक्ति के लिये संभव है। परन्तु उसमें कुशलता हर न्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता । मानुविक कियों, हार्दिक संस्कारों, व्यक्तिगत उमंगों आदि से पूरे तीर से जानकारी होने के बिना ही यदि कोई लेख लिखा जाये तो बादे वह इतिहास हो, चाहे उपन्यास हो अयथा कोई और विषय हो, वह निर्दोष नहीं हो सकता। यही हाल लाला लाजपतराय जी के 'भारत के इतिहास' का है। यों तो इस समय में जब कि बहुत से भारत के इतिहास लिखे हुए मिलते हैं। किसी नवीन पेतिहासिक प्रम्थ का लिखना कोई कठिन वात नहीं है, किन्तु हर लेखक अपनी पुस्तक में अपने निजी विचारों को प्रकट फरता है, और इन्हीं निजी विचारों के आधार पर लेख की कुश-छता का अन्दाज़ा किया जाता है।

यदि निरपेश दृष्टि से देखा जाय,तो जैन और बौद्ध दोनों ही मतों के माननेवाले बलिष्ठ राजा गत समय में हुए हैं। समाद अशोक बौद्ध मतानु-यायी था। जिस के समय में चौद्धमत का सितारा मारत वर्ष में बड़ी तेज़ी से चमक रहा था और जैन धर्म के राजा महाराजा तमाम भारतवर्ष में फैले हुए थे। स्वय' सम्राट् चन्द्र गुप्त जैन धर्म का मानने वाला था। इसमे यवन# फ़ौज का मुकाबला किस बीरता से किया, इस बात को भारत का बच्चा २ कानता है। अन्त में पवन फ़ीज के सरवार 'सेल्यूकस' ने महाराजा चन्द्रगुप्त की प्रशंसा करते हुए अपनी बेटी उनको व्याह दी। अन्य जैन राजा भी बड़े प्रतापी और बीर हुए हैं।

बीद्ध मत का पतन केवल इस कारण से नहीं हुआ कि उसके माननेवाले राजा भारतवर्ण में नहीं रहे, बल्कि इस कारण से हुओ कि लोगों ने अन्त में उसे अविकर समभा । मात्म होता है, कि उसका प्रचार केवल राजा का धर्म होने के कारण ही तेज़ी से फैल गया था । दर्शनिक विचार की अपेक्षा बीद्ध मत ने भारतवासियों के दिलों में कभी घर नहीं कर पाया था। इसिलये जब सज़ार् अशोक के परचात् बीद्ध राजाओं का राज्य छिन गया तो करीब उसी तेज़ी के साथ विस्त पीत उसके अनुयाईयों की संख्या कम होनी शुक्क हो गई। इस का मुख्य कारण वही है जो उत्पर कहा गया अर्थात् उसका दार्शनिक पहलू भारतवासियों को अब विकर हुआ।

जैन-मत के पतन का कारण बोद्द्यमत के पतन के कारण की मांति नहीं है । क्योंकि जैन सिद्धान्त भारत भूमि के लिये कभी अविकर नहीं हुआ अजैन विद्वानों तक ने हमेशा जैन सिद्धान्त के नियमों की सराहना ही की है । अजैनों द्वारा कत अत्याचार ही जैनियों की संख्या के कम होने का विशेष कारण है । अत्याचार के अय से मंद-उत्साह वाले बहुत से लोग जैन धर्म से पृथक होने के लिये समय २ पर वाष्य हुए । जिस व्यक्ति ने गत समय के जैन स्मारकों को देखा है या उनका वर्णन किसी पुस्तक में पढ़ा है,

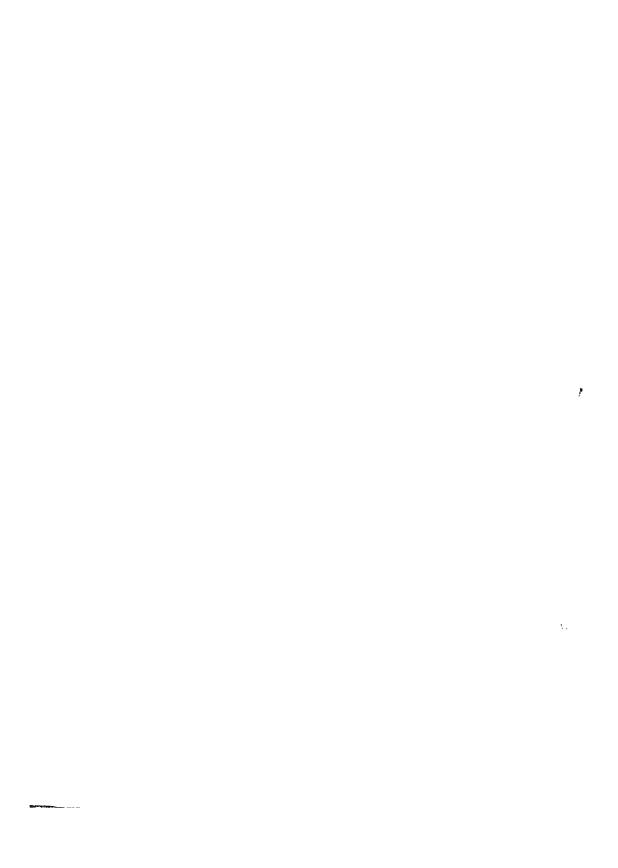
अ 'यवन' शब्द से यहां लेखक का भाव जायद Greek
 कोगों से हैं।

वीर 🚃

THE STREET STREET, STR



In Tab.
Shasha Victory administration by Vicka Duarros Sure



वह इन बात को बड़ी स्पष्टता के साथ जानता है, कि गत सत्रय में जैन धर्म तमाम भारत वर्ष में फैला हुआ था। बिहार देश में महाचीर भगवान जत्पन्न हुदे थे। उनके विदार अपने के कारण उस देश का नाम विद्यार पद्मा था। वर्त-मान समय का बईवान का ज़िला मालून होता है कि भग गान महाबार के नाम पर ही बईमान कह-ळाषा.कारण कि भगवान महावीर का नाम बर्छ-मान स्वानी भाषा। विहार देश के जिलों के 'गजट इंगरी के पढ़ने से जात होता है कि, गत समय में यहाँ पर जैनियों का जो श्रावक कहलाने हैं बड़ा ओर रहा है, और अब भी विहार देश के कु 3 जिलों में पाचीन जैनी पाये जाते हैं, जो कि अपने मत से बहुत कुछ नावाकिया हैं। यद्यपि यह पार्शनाथ भगगान को पूजते हैं और जैनियों की भ ति हो इनके साधारण आचरण हैं। यह लोग अपने की अभी तक "आक" कहते हैं।

बहुतसी जगहीं पर पाचीन जैन पृतिमायें और मिन्दर दूटी फूटी द्या में मिलते हैं। यह सब इस बात के सूचक हैं कि इस पान्त में जैन मत का बहुत प्चार रहाहै। जीतमा के पतन का एक कारण यह भा है कि इस समय में लोग विशेष कर सुद्र- बुद्धि बाले ही होते हैं, जिन के लिए कई मतों में तो स्पष्ट कप से धर्म शालों के पढ़ने की मनाई है। यह लोग न अपने और न पगये मत के समभने की योग्यता रखते हैं। जैतियों में भी बहुधा ऐसे लोग ही पैहा हुए हैं, जो अपने मत की महत्ता को दूसरों पर प्रकाश करने में असमर्थ रहे। इसके अतिरिक्त अजैनों के अत्याचार के कारण जैनी अपने धर्मकों कुराने पर बाध्य हुए। धोरे धीरे इन्हीं और ऐसे

ही कारणों से जैनियों की संख्या कम होती गई। किन्तु अब भी जैनी भारत के तमाम भागोंमें पाये जाते हैं।

अहिंसा सिद्धान्त पतन का कारण नहीं ही सकता। जैनियों की संख्या में कमी अहिंद्धा सिद्धान्त के कारण से नहीं हुई, वरन् ऊपरोल्लिखित एवं अन्य सामाजिक कारणों, से ही हुई। बौद्धोंके लिये भी यह कहना कि उनका अहिंसा सिद्धान्त उनके या देशके पतन का कारण है बड़ी बेसमभी की बात है। बौद्धों की संख्या अब ५० करोड़ के लगभग है, जो अन्यमतों की संख्याओं की अपेका सब से अधिक है। और अन्य देशों में बौद्धमत अबतक स्वतंत्रता के साथ प्रचलित है।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म में एक विशेष भेद हैं कि बौद्ध धर्म में मिक्षु और मिक्षुणी दो ही बंग संघ के हैं। जैन धर्म में चार अंग संघ के हैं (१) धावक (२) धावका (३) मुनि (४) अर्जिका। देखने गात्र में यह कोई बड़ा भेद नहीं है किन्तुं दीर्घ दृष्टि वाले को बखूबी मालूम है, कि इसका फल क्या है।

धर्म, अर्थ काम; मोक्ष, चार प्रकार के पुरवार्थ होते हैं। इनमें से धर्म अर्थ, काम श्रावक के पुर-पार्थ हैं, साधु का केवल एक ही पुरवार्थ मोश्न है। इस कारण साधु उस कर्तव्य को नहीं कर सकता है जिस को श्रावक करता है, और जो किसी श्रंश में उसके लिये करना आवश्यक भी होता है। गृहस्य धर्म और साधुधर्म दोनों ठीक र केवल उसी सनय क्ष्यम रह सकते हैं, जब कि श्रावक अपने पुरवार्थों की नियमानुसार रक्षा करे। श्रावक के लिये अहिंसा धर्म अगुवत हुए में लिखा है, साधु उस को महाबत कपमें पालता है यदि आवक साधु को नक़ल करे और अहिंसा धर्म को महाबत कप में पाले तो सिवाय गड़बड़ के और कुछ हासिल न होगा। आवक को उद्यम, रसोई, प्रारम्भ राजरक्ष, पाणरक्षा, धनरक्षाआदि में हिंसा करनी ही बड़ती है। उस अप्रकथी (मुजरिम को) दण्ड भी देना होता है। इस लिये यह केवल एकेन्द्रिय से ऊपर के जीवों काही संकल्गी हिंसा से अपने को बचाता है। सर्वधा हिंसा का स्थाग न उस के हैं, न हो सकता है। जो कमी कि बौद्ध मत के संघ में आवक और आविका के अभाव से थी वह अन्य देशों में प्राकृतिक रूप से ही दूर हो गई क्यों कि उन देशों में भिक्षु और भिन्नुणियों पर ही सीमित का होकर बौद्धमन सर्ग साधारण में फैल गया।

जैन धर्म में भावक और भाविका संघ के आवश्यक श्रंग हैं, इसका कारण जैनधर्म में कोई श्रुटि गृहस्य के पुरुवार्थों के सम्बन्ध में नहीं हो सकती है। अब रही यह बात, कि अहिंसा के पालन करने से मनुष्य राज्यपाट के अयोग्य ध निर्वल हो जाते हैं, सा यह भी ठीक नहीं है। कुछ आदमियों का ख़याछ है, कि मांस भन्नण से शरीर को पुष्टि होती है, और उसके न खाने से मानसिक और शारीरिक निर्वछता मनुष्य को आन् घेरती है। जिसके कारण उसकी धीरता नष्ट होजाती है। यह विचार सर्वथा मिध्या है। आधुनिक साईन्स ने इस बात को भले प्रकार प्रमाणित कर दिया है। कि भोज्य पदार्थों के भागों व अंशों के लिहाज सं मक्जन और मेत्रे, खासकर बादाम, बहुत पुष्टि-कारक हैं। इसके सिया मध्यन (नोनी घघी) शरीर को नीरांग दशा में कर सकता है उससे

आधा भी रोगी अवस्था में नहीं कर सकता। जित्र श्रेंभेज़ों ने मौका पाकर मांस भक्षण छोड़ दिया है, उनकी साक्षी बड़ी बादाद में फिलती हैं, धौर बह सब इस बात पर सहमत हैं कि माँस की अपेक्षा शाकाहार बहुत पुष्टिकारक कऔर बलप्रदायक है।

अतः यह बात सर्वथा मिध्या है कि मंसम्भाष शारी रिक बल के लिये आवश्यक है। अब रही यह बात कि मांसमभण की आवश्यकता बुद्धियल के लिए है, सो यह भी बिलकुल भूडी बात है, और एक ही दलील उसको मिध्या साबित करने के लिये यथेण्ट है। देखिर, जितनी मांसमभी की में आजतक हुई हैं, जिनका इतिहास या धार्मिक प्रंथों के द्वारा पता चलता है, और जिननी मांस भभी कौ में आज दुनियां में विद्यमान हैं, उनमें बड़े २ पिण्डल व तर्कालंकार इत्यादि पहिवयों के धारक लोग होगये हैं, और उन्होंने अपनी तर्क वितर्क की शिक के बड़े २ स्थानकार भी समय २ पर दिखाये हैं, परन्तु उनमें से एक मनुष्य ने भी सत्य दार्शनिक विचार में वास्तर्विक उच्च पद को प्राप्त कहीं किया। वास्तव में उपाध्याय की पहची को

^{*} जिन महानुशायों का यह विचार है कि मासभक्षण से शारीरिक बल बदता है, यदि वह इस बात पर विचार करेंगे कि साधारख मांसाहारी जातियों को महीने में कितनी बार जोर कितना मांस खाने को मिलता है, तो अनको स्टाटनया विदित होजायगा कि शारीरिक पृष्टि के जिये मांसभक्षण को आवश्यकता नहीं है। जिन मनुष्यों को महीने में एक दो बार एक प्याखा शोरवा व एक दो बोटी मांस की खाने को मिलती हैं, उनकी शारीरिक पृष्टि में किस कदर भाग अन्न का होगा यह बात हर शहन स्वयं समक्त सकता है।

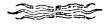
वहीं महारमा प्रहण कर सकता है जिसके मनमें लक्ष्य (पाँईट) पर द्रढता से कायम हो जाने की शक्ति है, अर्थान् जिसकी बुद्धि बलवान, शान्तिमय और दृढ़ विचार चाली है। जो बुद्धि विषय: से इद्ता के साथ नहीं लड़ सकती, जो मन के विषय पर से हट जाता है, यह पूर्गक्य से दार्शनिक विचार में सफलता को प्राप्त नहीं हो सकता । मांस कषायों को उसेजित करता है, भेजे के ज्ञान तंतुओं को गंदा और मोटा कर देता है, जिसके कारण विचारशक्ति सूभ्म विषय से टकराकर कार्य-हीन होजातो है। शाकाहार ज्ञान तन्तुओं को शुद्ध और हलका करता है। इस कारण शाकाहारी की बुद्धि निर्मल और शुद्ध होती है। शाकाहारी के मन में ही केवल इतनी शक्ति है कि वह जाकर विषय पर जाकर लड़ जाता, है। यही कारण है कि माँस भक्षण करने वाले लोगों में एक भी सद्या दार्शनिक आजनक उत्पन्न नहीं हुआ। और यही कारण है कि यह लोग न कभी अपने धर्म को सतक पाये और न किसी अन्य धर्म को । बल्क सच तो यों है. कि जितनी गड़बडी व भ्रम धर्म व वार्शनिक विचार के सम्बन्ध में पाई जाती है यह सब इन्हीं लोगों की नियम रहित तीवः मानसिक कल्पनाओं का फल स्वब्ध है ।

शब भारतवर्ष के पतन के असली कारणों को भी हम दिखाना चाहते हैं। यह विदित है कि मुस-लमानों के आक्रमण के सनय में जैन राजा बहुत ही कम संख्या में थे। तमाम भारतवर्ष में हिन्दू राजा राज्य करते थे। उस समय के अधिकांश डिन्दू राजा माँसाहारी थे। इनकी पराजय का कारण कैनियों का अहिंसा धर्म किसी तरह नहीं हो सकता। यह न जैनी थे, न अहिंसा धर्म पर खलते थे और न माँस त्यागी ही थे। इनके पतन के कारण केवल (१) विषरीत क्षत्रिय धर्म (२) मिध्या विश्वास गृह आदि का भय (३) अदूरद-शींपन (४) और आपस की फूट थे।

शत्रु के आगमन की खबर सुनकर जो लोग मुद्दर्त की प्रतीक्षा में घर में बैठे रहेंगे, वह युद्ध-स्थल में जाकर क्या बचा लॅंगे ? हिन्दुओं ने कभी यु इ विधान में उन्नति नहीं की। उनकी समफ में कभी यह नहीं आया कि जो लोग घोले प छल के युद्ध को बुरा नहीं समभते हैं। छापा मारने में जिनको पेतराज नहीं है, लडाई के समय जो गौओं को आगे करके उनकी बाडमें लड़ते हैं। उनके साथ क्योंकर लड़ना चाहिये और किस प्रकार का यर्ताव करना चाहिये । यदि हिन्दुओं ने अपने पिलष्ट शत्रुओं को पकड़कर मुक्त न कर दिया होता तो अनुमानतः भारतवर्ष आज स्वतन्त्र होता मुसलमानों के साथ अनुमानतः कभी एक लाख से अधिक सेना नहीं आई। भारतवर्ष की जन संस्था उस समय में २५ करोड़ से कम किसी हालत में न थी, और तिसपर भी एक एक राजपूत योद्धा इस २शत्रु औ पर भारी था। मैदान में पीठ दिखाना कभी इन के ख़याल में भी नहीं आ सकता था। जिनकी माँ बहिनें और स्त्रियाँ सभी बीरांगनार्ये थीं उनकी पीठ दे बनी शत्रु को कैसे नसीब होसकती थी। दिस पर भी केवल एक लाख की संख्या वाली मसल-मान सेना को रोकने वाला कोई भी न निकला।

होनहार बलवान होती है, यहाँ न कसूर हिन्दुओं की वीरता का है, न जैनियों के अहिंसा सिद्धान्त का, न बौद्धों के भिन्न-मिक्षणी-रूप संब का ही। कहा मा यही है कि "विनाशकाले विप-रीत बुखि"। जब बुरा समय आता है और कोई कराब बात होने वाजी होतो है, तो मनुष्य की बुखि कराब हो जाती है. भीर किर खराब बुखि बाले मनुष्यही पैदा होने लगते हैं, अर्थात् उन्हों का अधिकार होजाता है। जितनी धीरता! राजपूर्तों ने अपने करते समय दिकाई यदि उसका दसवाँ भाग ही बह दिखाते। वरन् टाईमटेबिल (समय की पाबंदी) का ध्यान रखते और सेनाओं के एक-बित करने का प्रयत्न करते तो कौन विदेशी सेना ऐसी थी जो भारत में आकर जीवित वापिस जा सकती थी। यदि राजाओं के दिलों में अभिमान ज़रा कम होता तो आपस की फूट का भारत के शत्रु कभी फायदा नहीं उठा सकते थे। जब अंग्रेमीं का आक्रमण हुआ तो न मुसलमान, न राजपूत, न मरहठे, न सिक्स और न पुरिषये ही शाकाहारी थे। थोड़े से जैतियों और कुछ शाकाहारी हिन्दुओं के अतिरिक्त समस्त देश मंसभिशी था। तिसपर भी थोड़े से अंग्रेजों ने आकर इन तमाम माँस भिश्चयों को जिनकी संख्या करोड़ों की थी अपना गुलाम बना लिया। तो फिर भला अहिंसा किस प्रकार भारत के पतन का कारण बताई जा सकती है? परन्तु लेद है! कि बुद्धिमान लोग पुस्तकें लिखने वैठ जाते हैं और सहज ही में इधर उधर आक्षेपों को बांटने लगते हैं।

जैन इपीग्रेफिया



(ले - चेवेलियर कांव बीव शेषािरि राउ एमव एट पीव एनव कीव)

[गताङ्क से आगे]

(११)

जैनाचार्यों का विवरण

वृत्रं प्रकाशित शिलालेकों से हमें उन जैन मुनियों और आवायों का पता चलता है कि किन्हों ने काम्यु-कर्नाट देश में जैन भर्म का प्रचार किया था। वे केवल गृहस्थ और साधुजनों के ही नेता नहीं थे प्रस्पुत उन राज्यवंशों के प्रमुख थे जिन की सत्ता में इन देशकोसियों के अधिकार थे। इन नेताओं ने इन देशों के राज्य प्रकृष्ण में कितना पूमान किसी रीति से अपने बीर-शिष्यों हारा फला

रकला था यह अगाड़ी के वर्णन से प्रगट होगा । यहां पर इन के संयन्ध्र में जो विवरण पूर्व प्रका-शित शिकालेखों से ज्ञात है वह याद रखना चाहित:—

संक्षा	गुरु मुनि	शिष्य मुनि	संघ	गण	विशेष विवरण
१	जिन भूषण भट्टारक			•••	•••
ર	प्रभाषन्त्र भट्टारक		मूल …	•••	•••
3	भाषसेन भेषीदिय चक्रवर्सी	•••	मुक्त ''	सेन	षादी के लिए प्रि ह
B	बालेन्दु मलघारी देव	•••	मूल	देसी	•••
ų.	चाद कीर्ति भट्टारकः	चन्द्राङ्क भद्दारक	मूल	देसी	•••
. &	देवचन्द्र	•••	मूल	देसीय	•••
ی^	चन्द्रभृति		मूल		•••
E	भन्देन्द्र	•••	यापणीय		•••
3	कनक कीर्ति देव	***		•••	,,,
₹o	चन्द्रकीर्ति	•••	***	•••	
११	भट्टारक जिनचन्द्र	•••	मूल		
१२	पुष्पनन्दि मस्रधारी देवः…	देवनन्दि आचार्या	·	कर० कुन्द ०	•••
१३	त्रि भु वन कीर्ति राबुल	बालेन्दुमस्रधारीदेव	मृळ ''		पुस्तक गच्छ
१४	सिंहनन्दि				
१५	पेर-भूतराखित	चूल पेर		! देसी का क	' कुन्दकुन्दान्व य
१६	लितकोतिं भट्टा॰ देवमलधारी			•••	
દ્ર	भषधम्मं भट्टारकः	•••			•••
Į=	इन्द्रकोर्ति'''	***			
88	विजय कीर्ति	अ कं कीर्ति			••• ,
२०	कलिगाचार्य	विजय कर्ति			***
ंद१	शर्दनन्दि	•••		द लहारि	अहकाली गच्छ
र्वश	कलिमद्र भाचार्य	•••			• • •
^{; Xi} ~2 3	भावनस्थि	***		***	बवराजा के गुर
રષ્ટ	अमन्त बीर्यदेवः	•••			
'ay		माघनन्दिः	मुल ः	वसाकार	कुनद०, सरस्वती

जैन कथा

(ले ० - भी युन इशिसत्य भट्टा चार्य बीठ ए० बीठ एल के बागला लेख का प्रकृत)

(क्रमागत्)

स्याद्वाद

विश्वं अगवय गुणोंका याश्रम है। पदार्थ में उन्हीं समस्र भिन्न २ गुणों का एकादि क्मसे आरोप करनेका नाम स्थाहाद नहीं है। एक एवं अहितीय गुण पदार्थ में आरोपित होने पर पदार्थ जो सात प्रकार के निरूपित किया जाता है, उस सात प्रकार की विवेचनशैलीका नाम स्थाहाद या सप्तमन्त्री न्याय है। उदाहरण के लिये अस्ति स्य नामक गुण घट नामक पदार्थ में आरोपित होने पर निम्न लिखित सप्तवर्णना संभिक्त होती है।

(१) स्वाइस्ति घटः अर्थात् कथं चित कप में घटहै। घट हैं इसका अर्थ क्या १ घट सर्जाया नित्य, सत्य, अनंत, अनादि अव्रिवर्तनीय पदार्थ कप से विद्यमान है यह अर्थ नहीं है। घट है इसका अर्थ यह कि घट अपने स्वद्रश्य (मृतिका निमित्त इत्यादि) स्वक्षेत्र (मान छीजिये कि पाटलिपुत्र नगर में),स्व काल (मान लीजिये कि वसंतकाल में) और स्वभाव (घटकप) से विद्यमान है। (२) स्याना हित घटः कथंचित् घट नहीं है। अर्थात् पर द्रव्य (सुवर्ण इत्यादि) परक्षेत्र (मान लीजिय कि गान्धार नगर में) परकाल (मान लीजिय कि शीत स्रतु में) परमाव (पटकप) से घट नहीं है। (३) स्यादस्ति नास्तिच घटः अर्थात् कथंचित् घट है और कथंचित घट नहीं है। स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र स्वकाल, स्वभाव से घट है और पर द्रव्य (स्वश्रीत स्वस्ताल और

परभाक से घट नहीं है। (४) स्याइवक्त घटः अर्थात् कशंचित् घट अवकत्य है । यदि एक ही समय में घटहै और घट नहीं है ऐसा विचारिकया जाय तो घर अवलव्य हो जाता है। दोनों बातें एक, समय में एक साथ नहीं कही जा सकती, भतएव वहाँ अवक्तव्य अङ्ग उपस्थित होना है। तीसरे भक्त में जो घट को अस्तित्व और नास्तित्व दिया गया है, उसका अभिन्नाय यह नहीं है कि जिस क्षण में घट अस्तित्ववान कहा है, उसी क्षण में मास्तित्व भी कहा है। (५) स्यादस्तिच अवकव्य धरः-अर्थात् कर्यचित घट है और कर्यचित् अवक्तः व्य है। यह पाँचमा भङ्ग प्रथम और चतुर्थ भङ्ग के मेलका फल है। (६) स्शास्त च अवक्तव्य घरःकथंचित घर नहीं और कथंचित अवक्तव्य है । यह भङ्ग दूसरं और चौथे भङ्ग के संकलन पर प्रतिष्ठित है। (७) स्यादस्ति च स्वान्नास्ति च अव-क्रव्यः घटः-अर्थात् घट कथैचित है। कथैचित् नहीं और कथंचित् अवकत्य है। बहुत करके सप्तभक्षी का सातवां भन्न तीसरा और चौथा भन्न मिलाकर संगठित किया गया है। जैन दार्शनिकों का कथन है कि वस्तुका सर्वाहिक और पूर्ण बिचार सप्तमङ्ग या स्यादाद पर प्रतिष्ठित है। एक २ भक्क से किये न्ये विचार में वस्तुकी प्रकृत पूर्णता नहीं है। ये प्रत्येक भङ्ग वस्तु का किसी अंशमें विश्वरण करते हैं वहतु का सम्पूर्ण ज्ञान सातों भड़ों के आश्रय से

होताहै। अस्तित्वके विषयमं जिस प्रकार सप्तमङ्गा-तमक विवरण किया है उसी प्रकार पदार्थ नित्य है या अनित्य ? इस प्रश्नका उत्तर भी उपसेक सात भङ्गोंकेशरा दिया जाता है। जैनमतमें स्पाद्यद्वी पदार्थ निरूपणका एक मात्र उपाय है।

द्वरपदा स्वरूप-इन्य में उत्पत्ति है और विनाश भी ये सब जानते हैं। भारतवर्ष में बौद्ध और प्रसि में Heralitus के शिष्य भेणों के इसी निमित्त द्वव्य को अनित्य मानना स्थिर किया है। किन्त प्रतोयमान उत्पत्ति विनासादि परिवर्तन के मूल में ऐसा एक तत्व रहता जो सदैव अविद्रुत हैं जैसे कि कटक कुंडल्परिके मूल में सुवर्ण। इसी लिये भारत वर्ष में वेदान्तवादी और ग्रीस में Parmendes के अञ्चलामियों ने परिवर्तन बाद उड़ा कर द्वाय की नित्य सत्ता और अविक्रति स्वीकार की है। स्याद्वाद बादी जेन गणीने इन दोनी उभव मत को कथंचित परिप्राण में स्वीकार किया है और कथंचित् परिमाणने परिहार किया है। इन के मत में सत्ता भी है और परिवर्तन भी है। इसी लिये ये अपने द्वव्य को उत्पाद-ब्यप-धीव्य युक्त प्रतिपादन करते हैं । जैसे कि (१) द्रव्य की उत्पत्ति है। (२) द्वव्यका विनाश है और द्वव्य में ऐसा एक तत्व है जिससे अनंत्त उत्पत्ति और विनाश रूप परिवर्तन के होते रहने में भी अविकत. अपरिवर्तित और अट्टर अवस्था रहती है।

द्रव्य, गुगा, पर्याय—द्रव्य के िचार में गुण और पर्याय की बात भी उठती है। जैन गणीं का द्रव्य बहुत कुछ Cartesian गण के Subestance के तुत्य है। जो द्रायके साथ चिरकाल अधि च्छांद अवस्थान करता है अर्थात् जिसके अभाव से द्रव्य द्रव्य ही वहीं रहता जैन उसे गुण कहते हैं। यही गुण Cardesian गणों का के striente है। द्रव्य स्यभावतः अविकृत होने पर भी जो अनन्त परिवर्तन समूद में प्रकाश पाता है, उस का नाम पर्याय है। जैनी जिसे पर्याय कहते हैं, Cartesian यण उसे जिल्ले कहते हैं। यह बात ध्यान में रजने योग्य है। जैन मत में पुदुगल धर्म, अधर्म आकाश और काल ये पांच अतीव द्रव्य पर्व जीव पेसे कुल छह द्रव्य हैं।

अवधिज्ञान

मित श्रुतारि पंचविध ज्ञान के भीतर मितज्ञान श्रीर श्रुतिज्ञान का विवेचन किया जाता है। स्यूल इिन्द्रियों का गोचरता के बाहिर जो समस्त कप विशिष्ट द्रव्य है, उसकी असाधारण अनुभूति का नाम अवधि ज्ञान है। वर्तमान काल में Ocenltist हैं जिसे Clairvoyance कहके निर्देश करते हैं उसे ही कुछ परिमाण में अवधि ज्ञान कह सकते हैं। अवधि ज्ञान तीन प्रकार का है-देशावधि परमावधि और सर्व विकि । देशावधि देश और काल से भयादित है, परमावधि असीम है और सब विधि के द्वारा विश्व के सम्पूर्ण कपी द्रव्य का अनुभव होता है।

मन, पर्यय, ज्ञान-दूसरे की चित्तवृति के विषय का अनुभव होना मनः पर्यय ज्ञान है। Ocentiest इसे Telepathy या Mindreading मन पर्यय ज्ञान भिन्त ही हैं। इस ज्ञान से आत्मा प्रत्यक्ष परमन गत पदार्थों को ज्ञानता है, कहते हैं। ऋज्ञमति और विपुलमति की सहायता से विश्व के समस्त चितवृत्तियों के विषय का सूक्ष्म आलो-कन होता है।

कंषल ज्ञान-चैतन्य विशिष्ठ जीव के ज्ञान का यही चरम स्तर है। विश्व का सम्पूर्ण विषय के प्रत ज्ञान से आयत्त होता है। यही सर्वज्ञता है स्त्री को पश्चिमी वियासो किस्ट्रगण Omensere कहते हैं। केवठ ज्ञान आक्ष्मा से ही प्रगट होता है। यह इन्द्रिय और किसी भी विषय का मुलापेशी नहीं है। ज्ञानी मुक्त पुरुगार्थ है। के ग्रल काम के प्रसंग में ही जैन दर्शन के सात तत्वों का केवल कथनउ रिश्त हो जाता है। जैन दर्शन के सात तत्वों का नाम है-जीव, अजीव, आअव, बन्द, संवर, निर्जरा और मोश्च।

जीव श्रीर श्रजीत-जैन दर्शन में जीव चेत-नारि गुज विशिष्ट है। स्वभावतः शुद्ध जीव अनाहि काल से अजीव तत्व के साथ मिला हुआ है। इस अजीव से जीव के स्वतन्त्र हो जाने का नाम ही मुक्ति है।

आश्रव—स्यागतः शुद्ध जीव जब तक जीवातिरिक विषयों में अनुरागी या क्षेष्युक्त होता है तब तक जैन मतानुसार जीव तरा में कर्म पुद्रगल का आश्रव याने आगपन होता रहता है। आश्रव दो प्रकार का है-(१) शुभ और (२) अशुभ। शुभाश्रवसे जीव स्वर्णादि सुर्यों का अधिकारी होता है। अशुभाश्रव से जीव नारकीययातना को भोगता है। आश्रव कालमें जो सकल कर्म-पुद्रगल जीव-तस्व में प्रवेश करता है, उसकी प्रकृति आध्र प्रकार की है। जैसे झानावरणीय, दर्शना वरणीय, मोहनीय, वेहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अंतराय। जो कर्म झान को आच्छादित कर दिता है उस नाम झाना चरणीय कर्म। जिस कार्म के प्रभाव से जीव का स्वाभाविक दर्शन-गुण आच्छा-

दित हो जाता है उसे दर्शना बरणीयकर्म कहते हैं। जो कर्म जीव के सम्यक्त्व और चारित्र गुण का घात करना है उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्म के सद्भाव से ही जीव मिथ्यात्व और राग हो प और युक्त परिणित करता है। वेदनीय कर्म के फल से सुख दुःव रूप सामग्री प्राप्त होती है। आयु कर्मके फलसे जीव गति शरीर प्रभृतिको प्राप्त होता है। नाम कर्मसे जीव गति शरीर प्रभृतिको प्राप्त होता है। गोत्र कर्म से उच्च और नीच गोत्र में जन्म लेता है। अन्तराय कर्म से दान. लाभ, भोगोपभोग और शक्त में विद्य उपस्थित होता है। इन्हीं आउ कर्मों के १४८ उपभेद और हैं।

वन्ध-उक्त कर्म पुद्गल के आग्रव से स्वभा-बतः मुक्त जीव बद्ध होता है। अर्जादान्तर्गत पौद्गलिक कर्म के साथ जीव का एकीभूत ही जाना ही बन्ध कहलाता है।

संवर—संसार में मोहित होने वाले जीवों में कर्म का आश्रव जिस प्रकार से रुक जाता है, उस प्रकार को संवर किहते हैं। संबर बद्ध जीव को मुक्ति का मार्ग बतला देता है। जैनमत में संवर की साधना सम्यक दर्शन सम्यक् ज्ञान और सम्यक बारित्र के अवलम्बत से होती है।

निर्मरा-करमं के एक देश क्षय होने का नाम निर्जरा है। सविवाक और अविवाक रूप से कि निर्जरा दो प्रकार की है। निर्दिष्ट फल भोग के अन्त में कमं का स्वभाविक क्षय उसे सविवाक निर्जरा कहते हैं। एवं फल भोग के पूर्व ही ध्यान तपश्चरणादि हारा कर्म क्षय होने को अविवाक निर्जरा कहते हैं।

मोज्ञ-जीव के यावतीय कर्म क्षय होने पर

वीर "



श्रीयुन ब्र० धरनेन्द्रदासजी रईस आरा ।



जीय मोश्र लाम करता है। एवं स्वभाविक पूर्ण विकसित अवस्था को प्राप्त होता है। जैनधमं मं मोश्र एथ के चौदह स्तर (गुणस्थान) हैं। उनके नाम-मिश्यारा, सासाइन, मिश्र अविरत, सम्यक्ष वेराविरत, प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत, अप्रवंकरण, स्वत्रहत्तकरण, स्वत्रहत्तक

मोच्च मार्ग

जैनाचार्यों के मतानुसार सम्यक्तदर्शन, सम्यक्तान और सन्यकचारित्र इन तांनों की एकता मोक्षमार्ग है। ये तीनों जैन दर्शन में त्रिस्त या रतन्त्र गाम से विख्यात हैं।

सम्पक्तदर्शन- जीव अजीव प्रभृति पूर्वोक्त सात तत्वों में अधिचलित विश्वास और आस्या रखना सम्यक दर्शन है।

सम्यक्षज्ञानः संराय, त्रिपर्यय, अनध्य-वसाय नामक तीन समारोप या भ्रान्ति हैं। इनसं रहित ज्ञान हो सन्यकज्ञान है।

साम्यक चारित्र-राग है प विरहित पवित्रा-चांण का अनुष्ठात सत्यक चारित्र है श्रद्धस स्थान में यह निवन्ध पूर्ण किया जाता है। जैन कथन करने जायो तो और भी कई कथन करना आवश्यक है ईसका कोई शुमार ही नहीं। जैन काव्य, जैन पुराण जैन साहित्य, जैन नीति ब्रम्थ, जैन ज्योतिय, जैन चिकित्सा शास, प्रभृति में कितनी कथायें, कितने सिद्धान्त, कितने ऐतिहासिक उपकरण हैं उसकी आलोचना के अतिरिक्त जनता के आगे रखने का दूसरा उपाय नहीं है। हमनें जो जैनदर्शन की थोड़ी सी विवेचना की है यह विलक्षल सामान्य जैन तत्व विद्या का कंकाल मात्र है। प्रमाणाभास, वाद विचार, फल परीक्षा, प्रभृति जैन दर्शनके अनेक तथ्यमी हस निवन्ध में स्थानाभावसे नहीं दिए जा सकें और न समयाभाव से उनकी आलोचना ही की गई। तथापि जो कुछ आलोचित हुआ है सुक्ष-व्यक्ति इसी में अनेक तत्वों का अनुसन्धान पा सकते हैं, जिसमें वर्तमान कालीन विज्ञान के बहुत कुछ मूल सूत्र निहित हैं।

र्फंन विद्या भारतवर्ष की विद्या है। इस विद्या का उनहहार करना केवल जैनियों का हो नहीं बरन सम्पूर्ण भारतियां का एक मात्र कर्चन्य है। इस विद्या के प्रति बंगालियों का भी एक कर्चन्य है। भारतीय लुप्त सभ्यता के अनुसम्धान में बंगाली ही अप्रगामी हैं। बंगाल प्रान्त में ही बहुत पहले से जैनमूर्ति आविष्कृत हैं। बंगाल प्रान्त में 'सराक' नॉम की अहिंसापरायण एकजाति का संधान पाया जाता है। हिन्दू समाज में अन्तर्निविष्ट होने पर भी वे प्राचीन जैन या श्रावकों के चंशधर हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

ऐसा अनुभव होता है कि जो बंगदेश में वर्झ-मान नगर है । वह चौबीस दें तीर्थक्कर महाबीर स्वामी का अन्यतत्र नाम बर्झमान की स्मृति को बहन कर रहा है। उक्त बीर स्वामी के नाम से ही वंगदेशीय वीरमूमि अवतक सुपरिचित है। बंगाछ प्राप्त में एकाधिक तोर्थक्कर मूर्ति स्वतीत प्राचीन

^{*} आयुनिक शैंकां से यहि जैनधर्म के अनेन। निक कीर मोजनार्ग के रहस्य को अन्य दर्सनों की आलोचनात्मक हथि से समक्षता हो तो अनुवादक की विक्री ''अनेकांसमय सम्बद्धिकान'' पुरुषक मंगावें।

जैन मन्दिर भी आिष्ठत हैं। बंगाल के निकटवर्ती अराध देश में ही अनेक तीर्थकरी का आविर्भाव हुआ है। ऐसे क्षेत्र में सभ्यताभिमानी वंगदेशाय जन यदि जैन विद्या के पुनरुद्वार में यत्नवान न होते, तो यह उसके लिये बड़े ही आक्षेप का विषय है, और भी एक बात यह है कि अहिंसा प्रभाव से भारतवर्षं का राजनैतिक उद्धार सम्पादन करना चाहिए, ऐसी महात्मा गांधी की घोषणा होते ही बंगदेश में ही सबसे पहले उक्त राजनैतिक अहिंसा तस्व हृद्यङ्गम किया गया एवं कार्यक्रप में परिणत हुआ पंसा जान पड़ता है। परन्तु इस अहिंसा वत का मूल कहाँ है ? वेद शासित धर्म में अहिंसा की प्रशंसा है, यह स्वीकार है । बौद्ध भी अहिंसा को अपने धर्मकी मूल मिति कहतेहैं। किन्त भारत-वर्षीय जैन संपदाय केवल अहिंसा धर्म का समादर करने में ही निरत नहीं रही। मन,वचन और काय

से उन्होंने अनुष्ठान भी किया है यह घात जैन समाज के सूची भेद्य अझान अन्धकार के दिनों में भी स्वीकार करनी पड़ती है। जैन विद्या का समादर करने के लिये ही यह एक कारण वंगदेशीय विद्वानों के निकट उपस्थित किया जा रहा है।

नोट-यह निबन्ध मूल लेखक ने शङ्घानगर साहित्य सक्ष्मेलन की दर्शन शाखा में पढ़े जाने के लिये जिला थान इससे ज्ञात होता है, कि बंग साहित्य सक्ष्मेलन की दर्शन, विज्ञान इत्यादि भिन्न व विषयों की श्रक्य २ शाखायें हैं और उनके द्वारा श्रवने व विषय के साहित्य की श्रीष्टिंद के क्षिये श्रनेक उपाय श्रमल में लाये जाते हैं । हमारे निरी साहित्य सम्मेलन के सचालकों को भी चाहिये कि वर्शिक सम्मेलन के साथ ही में माहित्य के भिन्न प्रमुख विषयों के श्रमुमार शाखाएँ नियोजित करके शाखाओं की बैठक एक एक दिन हुआ करें और शाखा सम्मेलन के सभापति उस व विषय के पारदर्शी विद्वान नियुक्त किये नाम करें।

माहिला-माहिमा

महिलाओं के लिये स्वच्छ वायु की उपयोगिता

भारतीय नारीसमाज का जैसा हीन जीवन आज हो रहा है वैसा शायद ही पहिले कभी रहा हो। यही कारण है कि आज उनके जीवन उन्नत नहीं हैं, उनके शरार सबल नहीं है, उन के मस्तिष्क परिषक व गंभीर नहीं हैं, उनके हृदय हुट़ नहीं हैं; उनके ज्ञाननेत्र खुले नहीं हैं! दूसरे शब्दों में बह सब तरह से दीन हीन दशा में हैं! समयके फेर ने समाज के नियमों को ऐसा प्रदा दिया कि पुरुप का आधा अङ्ग समका जाने वाला समाज आज, 'जीवन-ध्यंय' से अनिभन्न हो गया। यह मानी हुई वात है कि शरीर ही सर्व धर्मों के साधने के लिए मूल कारण है। नीति भी इसी बात को चिल्ला २ कर कह रही है। और ठीक भी है कि जब शरीर ही स्वस्थ्य न होगा तो धर्म, अर्ध, काम,

मोक्ष साधनों का किस प्रकार साधन हो सकेगा। प्रत्यक्ष में भी प्रकट है कि आज जैन समाज की शारीरिक अचस्या विलक्कल खराव हो रही है वह अपनी रक्षा भी सामना पडने पर किसी आक्रमण-से नहीं कर सकी है प्रत्युत ऐसे अवसरी पर अपने धन और जन की हानी उठाती है 'अपनी प्यारी' बहु बेटियाँ? की बेइउजती अपने आंखी देखती है ! दुःव है कि वह अपने बच्चों को, अपने युवकों को व्यायाम कराना आवश्यक नहीं समभती। अपनी बहुबेरियों को स्वच्छ बायु से उन और उचित व्यायाम को पाने का अवसर नहीं देती जिससे उन के शरीर हुप्ट पुष्ट हीं, और बहत्या उनकी संतान सर्व पुरुषार्थी का पूर्ण पाळन करस कें और वास्तविक जीवन विता सकें। किन्तु दःख है कि महिलाओं की शरीरोन्नर्ति की ओर ध्यान देना हम पाप समक्तते हैं। उन्हें शीव्रसे शीघ 'राक्ष्सी-बन्धत' में बीघ घर की चहारदीवारी के भीतर पटक देते हैं। उस दिन से उन के लिये स्त्रळ हवा का पाना दूभर हो जाता है। इसिछिए यदि वास्तव में हम अपनी महिलाओं के जीवनको 'मनुष्य जीवन' बनानी त्राहते हैं तो हमें उनकी समुचित धार्मिक मानसिक एवं शारीरिक शिक्षा का प्रबन्ध रखना चाहिए और १५ वर्ष की अवस्था । के पहिले कभी भी उनकी शाही न करनी चाहिये तथा १५ वर्ष से पहिले शादी कर देने में उन की शिक्षो दोक्षा, और शारीरिक उन्नति भी नहीं हो पाती। और यह उन्नत जोवन व्यतीत नहीं कर सकीं। विवाह के उपरान्त भी उन को स्वच्छ वायु सेवन का प्रति दिवस अवसर देना स्थाहिए। अपने पतिदेव वा अन्य तिक ! सम्बन्धियाँ

के साथ खुले बेदान, बग़ीचा आदि स्थानों में जाने में कोई हानि नहीं ! सती सीता तो अध्वे पतिदेव के साथ बनबन फिरी थीं आजकल भी दक्षिण प्रान्त को हमारी बहिनें स्वच्छ वायु में विचरती हैं और वे हमारी उत्तर की बहिनों से कहीं विनय-वान, शीलवान और बलगन हैं। स्वच्छवायु से उन जिसप्रकार पुरुषों के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी है। इस लिए प्रत्येंक पुरुष को अपनी पुत्री की शारीरिक उन्नति परपूरा ध्यान देना चाहिए। अप्रानदेशकी स्त्रियों की विशेष हप्टतायुप्टता का यही कारण है कि उनकी शिक्षा दीक्षा उचित राति से होतीहै। उनका विवाह प्रौढावस्या में होता है। और गृट्स्य जीवन में भी उन को स्वच्छ बायु सेवन के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं। जापानी श्रियों को जुटपन से ही बताया जाता है कि स्वब्छ हवा के बिवा उनका जीवन रहना ही कडिन है। उन्हें हृदयङ्गम करर दिया जाता है कि जितनी ही स्वच्छ हवा होगी और जित्तनी ही वर् अधिक होगी उतने ही स्वस्थ्य और सुव्रमय उनके जीवन होंगे ! इसका फल यह है कि वहां वायु सेवत की ओर विशेष ध्थान दिया जाता है। वहां के घरों की बिड़कियों में शीशे के स्थान पर तेल में भिगोर हुए कागृज लगाये जाते हैं। इनसे हवा रकती नहींहै,परन्त तो भी जापानी स्त्री पुरुष कभी भी जाड़ों के दिनों में भी-इन खिड़कियों को बन्द करके नहीं सोते है। जाड़ा लगने पर वे अधिक 'ओड़ना' रख लेते हैं। परन्त हतारे यहां इसके विषरीत भाव बच्चोंको सिखार जाते हैं। इराया जाता है कि'लश्लाको बाहर हवा में मत ले जाऱ्यो-डर जायगा।' फड़तः गन्दी हवा

में रह कर हमारे, हमारे बच्चों के और हमारी बिहनों के स्वास्थ्य ख्राव हो रहे हैं। जरां आपानी महिलोपें प्रातः उठकर बाहर जाकर स्बच्छ वायु का सेवन करतीं हैं. वहां हमारी बिहने ही नहीं प्रत्युत भाई भी अपने उस 'गन्दे पिजड़ें' में पड़े हुए करवटें बदला करते हैं जापानी महिलाओं का यह प्रातः वायु सेवन और किर शुद्ध जल का स्नान उन के शरीरों में जीवन संचार करने के मूल कारण हैं। उनके घर के

कोने १ में हवा पहुंचने का प्रबन्ध रक्खा गया है । और वे स्वच्छ हवा की खूब गहरी साँसें लेती हैं। इस के लाम में उनके शरीर अत्यन्त हृष्टपुष्ट हैं। उन में क्वयरोग तो छू तक नहीं गया है। अतरब हम पुनः अपनी बहिनों और भाइयों से अनुरोध करेंगे कि स्वच्छ वायु सेधन के महत्त्व को सममें। और स्वयं, एवं अपने बच्चें और महिलाओं के लिये उस का पूरा प्रबन्ध रक्खें। इत्यलम्।

अन्योक्ति

(हे॰-धीयुत् "नयन")

(?)

रख आशा पर दृष्टि सरलता—वश तू आया; कुछ दाने अवलोक सुधा से गया सतायह।
हां, दाने हैं पड़े; किंतु वह जाल लगा है; कर ले घरे विचार, जगत में अहुत दग् है ॥
श्रमृत और क्षि—योग से बना जगत को जान ले।
दाने यदि देखे कहीं, वहीं जाल अनुमास ले।

(?)

श्रोले से भर रहा मूढ़ यह श्रोंगन तेरा; पूजन — समय विसार बना श्रोलों का चेरा । भ्रम ही गया सवार बीनता फिरता श्रोले; श्रोले किसके हुए बतादे मानव भोले। दिया नहीं खरचा नहीं, किया न पर उपकार है; पानी बन बहता गया, श्रोला किस का यार है!

---माभुरी से

ā

जैनधर्म की ऋहिंसा जगतिषय क्यों नहीं होती?

यह सब जानते हैं कि अहिंसा जैन धर्मा का एक नितान्त मुख्य और प्रसिद्ध सिद्धान्त है। जैनधार्म में कषायके वश होकर किसी भी जीवित श्राणी, चाहे वह मनुष्य हो अथवा प्शु हो-दुःख देना अथवा मारडालना सब से बडा पाप है। इस लिये जैन लोग जहां तक उनसे हो सकता है हर प्रकारके जीवित प्राणीके प्राण क्षेत्रे से परहेजकरते हैं। यहांतक कि वे वनस्पति की हिंसा को भी यथा शक्ति बचाने हैं। न वे मनबहलाव वा तमाशा के लिये किसी जीवित प्राणी को सताते हैं। न जिह्ना के स्वाद के, अथवा अपना पेर भरनेके लिये किसी की गर्दन पर छुरी चलाते हैं। न परमोतमा अथ श देवी देशता के लिये पशुत्रों की बलि चढ़ाते हैं। वास्तत्र में देवा जाय तो अहिंसा का सिद्धान्त संसार के सब जीवों को सुख का देहे वाला एक अतिउत्तम सिद्धान्त है परन्तु आश्चर्य है कि संसार में उसका प्रचार समुचित रीति से नहींहो पाता, यचिप गतकाल में पशुओं का होम होताथा बह अब नहीं होता । परंतु जहां तक मेरा ख्याल है उन पशुओं की संख्या कि जो माँस आदि के लिये मारे जाते हैं पहिछे से अति अधिक है। कहा जाता है कि इस जमाने में अहिंसा का प्रचार अच्छा हो कला है। पश्चिमीय देशों में बहुतसी समासमि-तियां इस प्रकार की स्थापित हो गई हैं कि जो मांस भक्षण का निवेध करती हैं। बहुतसे डाक्ट्रों ते तज़र्बा करके दिखला दिया है कि मांस अनाज

व मेग जात व दूध की बराबर ताकृत नहीं देता बल्कि उससे बहुतसी बीमारियां उत्पन्न हतीं हैं। परेतु मैं तो कहुंगा कि इस प्रकार की समितियां अभी बहुत कम हैं। इतने बड़े २ देशों में यदि दो चार समितियां अहिंसा प्रचार की हुई तो उन की कौन सत्ता है ? और हज़ारीं डाक्टरीं में से यदि किसी एक दो डाक्टने मांस भक्षण को बुरा बतला दिया तो उसका क्या असर हो सका है जब कि तमाम डाक्टर खुद मांस खाते हैं ? अपने भारतवर्ष में ही देव लीजिए कि कितने डाक्स्स महाण को बुरा बतलाते हैं ? मेरे खाल में यदि डाक्टरवैद्य और हकीम माँस को युरा बतलाने लगें तो बहुत कुछ माँस भक्षण कम होकर अहिंसा का प्रचार हो जाय। य्यवि बहुतसे हिन्दू वैद्य व हकीम धार्मिक दृष्टि से अथवा रिवाजके अनुसार मांस नहीं खाने किन्तु माँस भक्षण की बुराई उनके दिलमें घरकिए हुए नहीं होती। इसलिए यदि माँस खाने बाले गेगी उनके पास आते हैं तो उनको वे मांस काने की सम्मति दे देते हैं!

मेरे ब्याल में पहिले की अपेक्षा मांस मक्षण बहुत अधिक बढ़ा हुआ है। हिन्दू जाति में अप्रवाल आदि कतिपय वैश्य जातियों और गौड़ ब्राह्मणों के सिवाय अधिकतर और सब जातियाँ मांस का ब्यवहार करतो हैं, और गङ्गा जमना के इस मध्य देश की दशा तो वैर अच्छी है, परन्तु पूर्व में बंगाल विहार आदि में तो सिवाय जैनियों के क़रीब २ और

सब लोग मांस खाते हैं। जैन लोग मांस भ भण और हिंसा के खिलाफ उपदेश देते हैं। परन्तु सर्ज-साधारणके दिल पर उनके उपदेश का कुछ अधिक असर नहीं होता ! प्रत्युत कतियय सज्जन तो जैन धर्म व जैन समाज को खिल्छी उडाने लगते हैं। कह बैठते हैं कि ऐसे उपदेशों ने ही भारतवर्ष का सत्याताश किया है! इन लोगों ने जीवरक्षा-जीव दया की पुकार लगा लगाकर सारे देश को निर्जीव कर दिया इत्यादि, बेहंगी बातें करने छाते हैं। साधारण बढिके:मन्य ऐसा कहें तो कोई आश्चर्य बहीं। परन्तु कितनेक ऊँची श्रेणी के लोग भी जैन अहिंसा को कायरता का कारण बतलाकर जैनधर्म पर आक्षेष कर डालते हैं। इस सब का क्या कारण है ? मेरे ख्याल में तो इसका कारण यह ही है कि जन समाज इन लोगों को अहिंसा का प्रभाव अमली रीतिसे नहीं दिखलाती । जैन समाज अपनी शरीर मजबूत व अपने दिल को दिलेर बनाकर यह प्रमाणित नहीं करती कि अहिंसा का पालन करते हुए भी मनुष्य हुप्ट पुष्ट बलबाम और वीर हो सकता है। बेशक हिंसा ब गोश्तक़ोरी कभी अच्छी नहीं हो सकती और देश की कमज़ोरी हिंसा व माँस भक्षण से परहेज का फल कदापि नहीं है। परन्त जब कि अधिकांश स्रोग धर्म के यथार्थतत्व व प्रमार्थ का कुछ ख्याल महीं करते इसलिय उनके दिल पर जवानी दलीलों से सममाने का कुछ असर नहीं होता, बहिक उन को वो महिंसा के पालन करने व माँसभक्षण से बारेज करने वाला मनुष्य खुद शारीरिक शक्ति दर्भ वीरता में उत्तम होकर ही यह दिखला सकता है कि अहिंसा की पाबन्दों करने ब माँस अक्षण न करने से मनुष्य कम तोर व कायर नहीं होसकता। श्सर्वे संराय नहीं कि साम्प्रत में जैनसमाज शारीरिक शकि व वीरना की अपेक्षा बहुत पीछे पड़ा हुआ है। वास्तर में देखा जाय तो इस समाजः की आज कल ऐसी हालत है कि यदि यह स्त्रेग अन्य जातियों से कड़ी अठग बसा दिए जांग तो. यह स्थयं अपनी जान व माळको रक्षा तक न कर सकें । न यह सिपहगरी का काम कर सकते हैं-न अपनी शाहीहिक शक्ति के हारा अपने आपको वैरियों के. आक्रमण से बचा सकते हैं, न खोर डाकुओं से अपनी रक्षा, कर सकते हैं, न भयानक, पशुओं शेर, भेडिये आदि से अपने को बचा सकते हैं। न इनको शक्ष चलाना आता है, और शारीरिक कमण्डोरी के कारण हिम्मत और बीरता भी बहुत कम पाई जातो है। इनकी ऐसी हालत देखकर बहुधा अन्य लोग भट विना सांचे समके यह अंद्राज़ा लगा लेते हैं कि चूं कि यह लोग ग्रहिंसा पर अधिक जोर देने हैं अहिंसा का पालन अतीव कहरता के साथ करते हैं-इसीलिए इनका पेकी दशाःहै ।

बहुधा अन्यमत वाले जैन समाज की शारीरिक निर्वलता के कारण जाने बिना, उस निर्वलता को अहिंसा को पायन्दी का नतीज़ा समक बैठते हैं। अस्तु, जब कि जैन समाज शारीरिक बल य शूर-बीरता में गिरा हुआ है तब जैन धर्म की अहिंसा जनत निय नहीं होती । अहिंसा के सिज्ञान्त का मीविक वा लिखित उपरेश आप जितना चाहे हैं, परन्तु उसका असर सर्व साधारण के हदया पर इतना हरि। ज़ नहीं होगा जितना कि उस दशा में होगा जब कि आप खुद साक्षात ताकृत के तमृता

बनकर यह दिखला दें कि अहिंसा पर अमल करने वाले शारीरिक वल में बढ़े चढ़े श्रारीर होते हैं। बात यह कि साधारण जनता धार्मिक सिडान्ती की कदर उन के मानने वालं की दशा से करती है। धार्मिक सिद्धान्त पुस्तकों में लिखे हुए कितनी ही उच्च कोटि के क्यों न हेंग ? यद्यपि बेशक विद्वज्जन जहां कहीं उनको पहेंगे वा सुनेंगे अवश्य उनका आदर एवं मान करेंगे। परम्तु यदि उन सिद्धान्त के मानने वालें। की दशा खराव हुई और उनकी संख्या घ?ती जाती हो तो सर्व साधारण के हृदयें। पर धार्मिकसिद्धान्त का प्रभाव नहीं पडता, वे शहा करने लगते हैं कि यह धार्मिक सिद्धान्त ही कुछ ऐसे होंगे जिनसे इनके मानने बालें। की हालत खरव है। इसलिये यदि जैन समाज को यह इष्ट है कि जैन अहिंसा जगिप्रय हो, संसार में अहिंसा धर्म का प्रचार हो, तो उसको चाहिये कि जहां वह अहिंसा का प्रचार उपदेशकों,ट्रेक्टों आदि द्वारा करे उसके साथ २ ही अपना शारीरिक बळ व श्रावीरता बाढायें। और अपनी संख्या की घटती के कारणों को दूर करें जिससे संसारको यह प्रमाणित होजाय कि अहिंसा पर अमल करने वाले बलवान शुरवीर और जीवन शक्ति रखने वाले होते हैं। हिंसा व माँसक्षभण को दूर करने के लिये उपदेश व व्याख्यान ट्रेक्ट बादि लाभकारी हैं, परंतु सिवाय इनके अब जुरू रत इस बात की है कि जैनसमाज अपने शरीरों को दूढ़ और मज़बूत, अपने दिलों को बीर बनाकर यह दिखलादे कि अहिंसा का पालन करते हुए भी शरीरबलिप्ट औरहृदय बीर होसका है जैनसमाज को असिकर्म (सिपहगरी) भी सीखना चाहिये।

शस्त्रविद्या भी जाननी चाहिये, व्यायाम धादि में भी निपुण होना चाहिये और इन बातों में उन्नति कर के संसार को साबित कर देना चाहिथे कि मनुष्य अहिंसा को अपने मन में जगह देते हुए अपनी संतान,अपने भार,अपनी अपति और अपने देश की अच्छी तरह रक्षा कर सका है, और जिन स्नेगों का यह ख्याल है कि जैनधर्म की अहिंसासे ही देश की अवनति हुई है उनका यह प्याल नितांत मिथ्या है। जैन समाज को जैन पुराणों में अपने पुरातन पुरुषों की कथाओं का केवल सुनना ही काफी नहीं है, प्रत्युत अपने जीवन को उनके नमूनों पर डालना चाहिए। जब जैन पुराणों में हजारी उदाहरण जैन योदाओं के मौजूद हैं तो किर शस्त्रविद्या से परहेज क्यों ? जर जैन पुराणों से यह प्रगट है कि जैनधर्म पर चलने वाले, अहिंसाधर्म के पालने बाले, मल्ल, युद्ध आदि नाना प्रकार के व्यायाम करते थे तो िकर अब व्यायाम आदि करने से हिचकिचाहट किस बाहते ? खेद है कि आजकल अधिकतर जैन लोग व्यायाम और शलविद्या को बुरा सममते हैं न हरत की निगाह से देखते हैं। यहाँ मेरठ में एक जैनी साहब थे कि जो तन्द्रस्ती की दुरुस्ती के लिर प्रातः को जङ्गल में टहलने को भी पाप बत-लाया करते थे। इसही प्रकार के लवर विचार ब अहिंसा सिद्धान्त को खींचतान कर एकान्त कप से मानने का यह परिणाम है कि जैनसमाज कायर व डरपोक के नाम से पुकारी जाती है, और जैनधर्म पर देश की गिरावट का अभियोग लगाया जाता है।

इसके अतिरिक्त बहुत सी कुरीतियाँ जैसे बास विवाह, वृद्ध विवाह, व्यर्थ ध्यय आदि भी जैस

समाज की शारीरिक निर्वलना के कारण है। उद विशाह से संतति दिन प्रति दिन कमजोर होती जा रही है. और उनके कारण सताज में ब्रह्मचर्य का पालन नहीं होता । शारीरिक च मानसिक शक्ति व स्वास्थ्य के लिए प्रहाचर्य का पालन भी निहायत जहरी है। इसलिए जैनसमाज को ब्रह्मचर्य पालन में बाधक कारणों को दर कर देना चाहिए। शादी व गमो आदि के अवसरी का व्यर्थ व्यय में। संतान का पालन जैसा होना चाहिए वैसा नहीं होने देता। पुत्र पुत्रियों के विवाह के खर्च का किक माता पिता के बल और स्वास्थ्य को खराब करता रहता है। कतिएय जैनी सज्जन मकानी आदि की सफाई पर कम ध्यान देते हैं। हिसा के ध्यान की द्रिए में रखते हुए मकानों की नालियां आदि की सफाई काफी तौर से नहीं करते। कतिपय दांतों को साफ नहीं करते। दांतों में न दाँतीन करते और न मंजन स्माते हैं. जिससे उनके दांत खराब होकर आंतभी खराब होजाती हैं और हमेशा वरहज़मी में संलान रहते हैं। यह हिंसा का विचार ठीक नहीं है। गंदगी रखने से तो और अधिक जीव उत्पन्न होकर अधिकतर हिंसा होती है। हिंसा के विचार को सीमा से अधिक खींच कर उसको एकान्त का जामा नहीं पहनाना चाहिए। अपनी गृहस्थावस्था अपनी हालत व ताकृत को देखते हुए और पाप पर पुण्य के पलड़े के भुकाव को देखते हुए प्रत्येक कार्य में प्रवृत्ति करनी चाहिए। खानपान में जैन समाज को कुछ अधिक तपदीछी करने की आव-श्यकता नहीं है। पानी छानकर पीना, प्रत्येक बस्तु घो साफ करके ध्यवहार में लाना, रात्रि को भोजन नहीं करना आदि शुद्धता की रीतियां हो

जैनसमाज में प्रचलित हैं वह बहुत अच्छी व अति प्रशंसनीय हैं ! हाँ, सत्म सब्जी के परहेज़ को जैन समाज किसी हद तक नामुनासिव तरीके पर खींचे हुए है। उसमें कुछ तबदीली की बेशक जारूरत है। यात यह है कि शाकसन्त्री मेवाजात स्वाह्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है। इनका का की ध्यवहार न करने से एक बीमारी कि जिस का नाम 'इस्करवी' (Seurvy) है मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होताती है। परन्तु तैन सनाज में कुछ यह रिवाज सा होग्या है कि विविध बनस्पतियाँ का त्याग बिना उसका मतलब ब भाव समभे छोटे बड़े सब से कराया जाता है। एक तरह से जैन समाज बनस्वति के त्याग में ऐसा प्रस्वात हो गया है कि वनस्पति का त्याग जैनधर्म का पक चिन्ह समभा जाने लगा है। किन्त बास्तव में वनस्पति के त्याग से शारीरिक स्वास्थ्य व बल को अतीव हानि पहुंचती है। जहाँ तक में समभता हं बनस्रति का त्याग जीव हिंसा के बचाव पर अवलित है अयांन जीवहिंसा को बचाने के लिए ही बनस्यति का त्याम किया जाता है और बन-स्यति के व्ययहार में स्थावर जोवों को हिंसा होती है। पान्त जैन धर्म में गृहस्थी के लिए असजीवाँ की हिंसा का बचाच जरूरी रक्ला गया है। स्थावर कोवों की हिंसा को भो अपनी हालत और ताकत की अपेक्षा जिस कदर हो सके बचाब है, परन्तु स्थावर हिंसा का बकाव गृहस्यी के लिये लाजमी ब अरूरी नहीं है। ऐसी दशा में वर्तमान में जो जैनसमाज ने वनस्पति के त्याग को हद से उपादह मुख्यता दे रक्की है वह ठीक नहीं है। यहाँ पर कोई यह करापि न समभे कि मैं बनस्पति आदिक

वीर



स्वीय वाव मुन्नालालजी लंबच् कलकत्ता ।

जनम—सं० १६०६ चंत्र कृष्या १२ रविवार

मृत्यु—सः १६८१ भाद्र शुक्का १३ गुरुवार

			Ş
			•
•		,	

है गायंर जीवों की हिंसा के बचाव का निषेध कर रहा है। मैं हरियत यह नहीं चाउता है कि जिस मंतुष्य के परिजान पेसे चडन रहीं कि चड़ स्थावर सीवों की हिंसा करना गवारा न कर सकता हो वह वेत्रहरति का त्यागं न करे। वंड वैनस्पति का स्यागकरे और जंकर करे। अथवा यदि किसी संज्ञन के परिणाम किसी खास वनस्त्रति से विरक्त हों गर हैं वह उस चनस्पति का लाना अवश्य छोडे। किंवा किसी बनस्पति व फल में त्रस जीवीं की उत्पत्तिहोती हो तो उसको भा जकर ही स्थाग देता चाहिए। मेरे कहने का भाव यह है कि बिना परिमाणों के चढ़े और जिना परिणामों में विरक्ता आर जो जैन सनाज में यह एक दहरूर हो गया है कि सब से शाकरान्जी छड़ाई जाती है, बालक बालिकाओं सबको बिना उनके त्याग का मतलब सामें शाकसाजी का त्यांगं कराया जाता है. यं ; दस्पूर ठीक नहीं है। इससे उनके शरीर कम-जोर पद्र जाते हैं और कपाय घटनी नहीं कि जो क्रैन धर्म का वास्त्रविक उद्देश्य है। अस्तु जब कि जैनधर्म में गृहस्थी के लिए स्थावर जीवों की हिंसा का बबाव लाजमी व जरूरी व मुख्य नहीं है तो फिर क्यों बनस्यति के त्याग की इस प्रकार सोमासे अधिक मुख्ती देकर जैन समाजकी

त्रवृद्धस्तो वं शारोरिक शक्ति को द्वानि पहुंचाई जाती है कि जिसको देख कर दुनिया की लोग अहिं सा धर्म की कदर नहीं करते और कड़ने लगते हैं कि जैन धर्म की अहिंसा तो शाकसंजी वें मेश जात आदिको भी छंडा-कर मनुष्य को बिलकुल कॅमज़ोर व बीमार धनाना चाहती है। और एक बात यह भी है कि आंप शाकसङ्गी कन्द्रमूल मेवा जात दुध घी की उत्तमता व उत्रुप्टता ही दिखलाकर अम्य लोगों से माँस मछली अंग्डे आदिका व्यवहार छडा सके हैं। परन्तु जब आप बनस्पतिके त्याग का भी जीर देते हैं तो फिर अन्य लोग किस तरह जैनधर्म की अहिंसा की ओर कुक सक्ते हैं! मेरे विचार में ती अजकल जो राजा च क्षत्री आदिक जैन धर्म में नहीं पाप जाते यह ज्यादह तर शाकसन्जी-कन्द्रमूल आदिक के त्याग पर हद से ज्यादह जीर देने का ही परिणाम है। अतंपव जैन समाज की इन सब बातों पर ध्यान देकर के उपरोक्त एवं इनसे अच्छे अस्य उपायी को काममें लाना चाहिए कि जिससे उसके शारीरिक बल व शुरवीरतामें उन्नति हो कि जिसको देख कर जैन धर्म की अहिंसा जगत विय और अहिंसा धर्म का लोक में प्रचार हो। इति ।

—हीरालाल जैन

कांच की शीशियां

स्वदेशी !

सस्ती !!

बहिया !!!

हर साइज़ व हर नपूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूंच्य पर रवानां की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूंग की किये।

आर० एस० जैन एएड ब्राइसं, महादीर भवन, विजनीर

संयुक्त प्रान्त में जैन स्त्री पुरुषों की तुलनात्मक संख्या

7

(लेखक-भीपुत् होराताल जी जैन बी० ए०)

स्र १६२२ व	ती मनुष्यगण	ाना को रिपोर्ट क र	ा अवलो-		जिला	इटावा	
कन करत	सतय सुम्ह	प्रह् बात खटका।	क संयुक्त	औरिया	२२	१६	zξ
-		ों की संख्या बहु और प्रान्तों व		वरधाना	₹¤	इंड	१०२
		्रभार भाग्ता व क्री मनुष्य गणना		इटावा	७२०	£ 3 /T	43 7.8
	•	कामञ्जूष्य गणना कि अंक मैंने स			जिला व	हेरा हून	
लिये थे। जै	नेयों में मनुष	य संख्या के हास	के विषय	चकाता	३ २	=	Ro
पर विवार	करने के	क् <mark>रेये 'परिपद्यु' की</mark>	ओर से	देहरा	939	१५५	३४३
	-	उसका ध्यान ः २ ः - "			सहार	नपुर	
		विअक्तयहाँ :	नकूर	ध ृद	- ३ न् र	عدو	
कर देता है।				⁄ रुड़की	২ १७	२३५	815
	- जिला	एटा		देव बन्द	पृद्	प्रश्च	१०७३
	*	* ^ •	•	सहारनपुर	ころみ	७० ६	१५५२
नाम स्थान	-	जैन नारियां-			बुलन्ह	र शहर	
कास गंज	83	95	१७०	खुरजो	२४३	ર રૂપ	89=
	जिला	भांसी		सिकन्दराबाइ	२३२	१८४	धर६
• -		•		बुलन्दशहर	30	६ ६	ERT
महरोनी	१इप्र	१५४७	३७०२ ्रू	अनूप्रशहर	१६	४४	Ę0
ल्लित ुर	२३०७	२२१८	४५२६		फर्रुख	tarz	
गरींठा	848	१२६	२=५		1100	।भाष	
मड	38⊏	Fox	993	अछीग इ	₹⊏	१०	२⊏
भांसी	४०३	३ =३	ra	करीम गंज	¥₹	वेदे	७५

फर्र खाबाद	E.G.	42	355	ये अक्क मैने चुन के नहीं छिये। जितने स्थानी
छिवामउ	Ę	1	8 ,	की मैंने रिपोर्ट देखी वे सभी के नोट कर लिये।
ंकनौज	१२३	१३१	२५४	मैं समभता हूं कि यही दशा अन्य जिलों की मी
	जिला ह	भीरपुर		ँहैं। उपर्युक्त १२ जिलों में सब मिलाकर
महोबा	૨૨ ′	२२	કક	जैनियों में १४५१५ं पुरुष और १२६१५ नारियां 🛱 🗀
राठ		ą	३	किसी भी संमाज की अच्छी अवस्था के लियें
कु ल्पोबर	48	२६	=9	उसमें पुरुष और स्त्रियों की संख्या लगभग वराकर
	जिला	बांदा		ही होना चाहिये। पर जैन समाज की यह अवस्था बहुत भय पूर्ण है। सेन्सस रिपोर्ट में यह साधारण
नरायण	१७	२ १	३≂	इत्य से कहा गया है कि क्षियों की संख्या कम
कमेसिन	t		१	होने का हिन्दुस्तान में यह कारण है कि मा बाप
बदौसाः	ន	E	१ २	लंडिकयों की उतनी परवाह नहीं करते जितनी
ंमड	48 .	38	Йo	लड़कों की। और कहीं २ तो जान बूभ कर लड़-
कर्यी	१२	đ	. १ ७	कियों की जान खतरे में डाल दी जाती है और
षांदा.	દ શ	દ્ય	१्दद	उनकी रक्षा की कोई उद्योग नहीं किया जाता।
	म्	पुरा.		लड़िक्यों की मृत्यु से मां बाप की उतना शिक
साराबाद	१११	१६२	२७३	नहीं होता जितना छड़कों की मृत्यु से होता है।
माट	१ध	=8	१०३	मेरे ध्यान में कन्या विक्रय की जो कुप्रधा हमारी
छ त ं	इ⊏३	३ २८	७१२	समाज में जोर पकड़ रही है उसका मूल कारण
मेथुरा	१५३	११४.	२६७	यही है कि समाज ने क्रिया की संख्या आवश्यकता
	मुजफ्फ	रनगर		सें बहुत कन है। उपर्युक्त अंकों को स्त्री और
बुड़ाना	9039	१५३=	3,585	पुरुषा की तुलनात्मक संख्या ह० प्रति सैकड़ा से.
जानसङ	દેકક	€o⊋	१७४५	भी कुछ कम आतीं है जिससे यह विदित हुआ
कैंशना	≡źß.	७१४	१ ५३⊏	कि प्रति सैकड़ा दश या बारह पुरुषों का विचाह
मुज़ स्फ्रंनगर	৬৪⊂	યુક્	१३२४	होना ही असम्भव है । इसका जन संख्या पर
	राय	बरेली		मयंकर प्रभाव पड़े बिना कैसे रह सका है।
सलोन		9	•	विशेष विवार के लिये मैं यह प्रश्न कमेंटी के
स्वयं बरेली	E	¥	१३	हाथ में देता हूं।

सम्पादकीय टिप्पिग्यां

जैनधर्म की उन्नति

भारतवर्णीय दि० जैन परिषद् ने अपना एक उद्देश्य यह बनाया है कि जैन धर्म की उन्नित की जावे। परिषद् को इस उद्देश्य की सफलता में दृढ़ प्रयान होना चाहिए।

कोई परिषद् हो या सभा हो उसका संचालन मभासदों के प्रयत्न पर निर्भर है। केवल प्रस्तावों के पास कर लेने से कभी कोई कार्य नहीं होता है कार्य होता है, कार्य करने वाले उत्साही भाईयों के प्रयस्त से।

दमको यह नग्छ कह देता चाहिए कि जैन जाति में काम करने वाले बहुत कम हैं। काम वहीं कर सकता है जो दूसरों के सहारे को नहीं तकना हुआ अपने पैरों खड़ा होकर अप काम करने रूगता है। मूल अमरोहा निघासी मास्टर बिहारी लाल जो अस बारायंकी में हैं, अनेक जैन प्रत्यों को देखकर एक बड़ा मारी जैन को प ऐसा तैयार कर रहे हैं व उसे स्वयं प्रकाशित करा रहे हैं कि जिससे जैन धर्म के पारिभाषिक प्रायः सर्व ही शब्दों का अच्छा बान होजायगा। इसी तरह यहि जैन धर्म की उन्नतिकारक कार्यों को एक २ भाई बिना दूसरों का अवलम्बन ताके हुए करने लगें तो जैन धर्म की उन्नति के कार्य बिना पैसे के हो सकते हैं।

इमको इस बात का अफ्सोस है कि जिन २ सहाशयों ने गत मुजक्ररनगर के अधिवेशन में अपने

अपने आधीन एक २ काम लिया था उनमें से कई षिरुकुल ही मीनावलम्बी मालम हो रहे हैं जैसे बाबु बलवीरसिंद जी बी० ए०। आपने बोडिङ्गी में धर्म शिक्षा की सम्हाल व उनमें जैन विटानों से व्याख्यान कराने का काम हाथ में लिया था। मालूम नहीं आपके दारों कहीं कुछ भी अमली कार्रवाई हुई या नहीं। प्यारे नक्युवकी ! यदि आप सच्चे भाव से कुड़ भी धर्म की सेवा कर सकते हैं तो आप एक २ भाई नीचे लिखे कामों में से एक २ काम हाथ में लेलें और उसको स्वयं कर डालें। यदि कोई दृश्य की आवश्यकता हो तो, यह तो अपने पास से लगावं या अपने किन्हीं मित्री से लेकर काम करें। यह बहुत बुरी प्रथा है कि जब किसी परिषद् के महामन्त्री कुछ रुपये की मदद भेजें तब काम किया जाते। परिषद् के महामन्त्री अपील पर अपील कर रहे हैं, पैसा कोई भंजता नहीं। जब महामन्त्री जी से पूछा जाता है कि अमुक काम क्यों नहीं होता है तब उत्तर मिलता है कि पैसा नहीं है काम कैसे + होते ? इस तरह सभाओं के प्रस्ताव सब पड़े ही रह जाते हैं और बह परिश्रम जी साधारण जल्ला करते के, विषय चुनने में व उनको स्वीकृत कराते में किया जाता है सब व्यर्थ ही रह जाता है। इसलिये प्यारे चीर

अयह जानकर श्रीक भी दुख है कि मुजक्करनगर में प्रदानित रकमों में से कतिएय प्रभी तक बस्क नहीं हुई हैं। दालारों को ध्यान देना चाहिए।

पत्र के पाठकों! परिषद् के सभास में व नवयुवका क्रिन बीरों! यदि आप कुछ भो जैन धर्म की सेना करना चाहते हैं तो नैिरष्ट्र चन्पतराय जी इरदोई का इष्टान्त प्रहण करें। जिन्होंने स्वयं अपने खर्च से बहुतसी तत्वज्ञान की पुस्त में देशी तथा परदेशी पढ़ों, उनका मनन किया और जैनधर्म के तत्व-क्षान को समम कर उनसे मुकावला करके जैन धर्म के तत्वों की उत्तमता बताते हुए देसी बढ़िया पुस्त में अंद्रेड़ी में लिखीं और उनको अपने ही बहुत से द्रष्य से मुद्रित कराकर प्रकाशित कराया, देश परदेश के विद्रानों को भेंट की, कि जिनके पड़ने से पढ़ने वाले के वित्त में यकायक जैन धर्म की उत्तमता जम जाती है।

तन,मन, धन, लगाकर जैन धर्म की सेवा का इससे बहिया और नमूना नहीं हो सकता है। इस दृष्टान्त को लेकर हमारे भार्यों को उचित है कि नीचे लिखे भाषश्यक कामों में से एक एक काम एक २ भार्र लेकर कुछ सच्ची धर्म की सेवा करें जैसी सेवा प्राचीन काल में स्वामी कुन्दकुन्द, जगास्वामी, पूष्पपाद, समेतभद्र, अकलंकदेव, वैमिचंद, सहदिकों ने की थी, कर बतावें:—

() एक वर्ष में एक मास जिस जिले में भी जा सकते हों भ्रमण कर धर्मोपदेश करना।

(२) अंग्रेजी में पुरातत्व किमाग के जो पत्र निकलते हैं, भारत में या विदेश में उनको मंगाकर च पढ़कर उनमें से जिन २ बातों से जैन धर्म की प्राचीनता का च महत्त्व का भलकाव हो उनको समाचार पत्रों में च छोटी २ पुस्तिकाओं के रूप में जकाशित करना।

(३) स्वरेश व प्रदेश में जो विज्ञान Science

की लोजे होती हैं उनको उन धैझानिक पाँको इसरा पड़कर उनको जैन सिद्धान्त से मुकाबला करके छैज व पुस्तिकाओं के झारा प्रकाश कराना।

(४) जैन दर्शन के नीखे लिखे विक्योः पर भारतीय व पाश्चिभीक तत्वज्ञान के साथ मुका-क्ला करते हुए लेख व पुश्तिकार्षे लिखना।

(१) कर्म सिद्धान्तः में कर्म कैसे बंधते हैं (२) कर्म कैसे फल देते हैं। (३) कर्मी का नाश कैसे किया जाता है (४) निश्चाय नय च ध्यवहार नथ का क्या उपयोग है (५) आत्मा और परमात्मा। (५) जगत अनादि भगंत अरुशिम है () हुव्य उत्पाद व्ययक्प परिणामी तथा नित्य है (=) जैनियों का मोक्ष तत्त्व (६) जैन और बौद्ध धर्म (१०) जैन और हिन्दू धर्म (११) जैन धर्म की अनादिता व प्राचीनता (१२) जैनियों के श्राच्लेन पुरुषों के श्ररीर की ऊँचाई बास्तिषिक बस्त है (१३) ीन शास्त्रों में सूर्य चन्द्रमा के भ्रमण की चाल कैसे बताई है। (१४) जैन ज्योतित्र से दिन, रात कैसे सिख होते हैं (१५) अनछने पानी में तथा मर्पादा रहित भोजन में अनेक त्रसजीवों के मरकर सहने से मांसाहार का दोष लगता है (१६) जैनियों में क्षत्रिय कर्म (१७) जैनियों में चैत्रय कर्म (१०) जैनियों के संस्कार और उनका वैज्ञातिक असर (१६) पुतुराह्य के स्कंधों की निर्माण विधि (२०) पृथ्यी कायिकादि पांच स्थावर जीव और पर्तमान सायन्स (२१) जैनियों का साधुकर्म (३२) जैनियों का गाईस्थ धर्म (२३) जैनियों में ध्यान व समाधि का स्वरूप (२४) जैनियों में गणित विद्या (२४) जैनियों में गान विद्या (२६) जैनियों के काव्य (२७) ीनियों के नाटक (२५) जैनियों का दान व परोपकार इत्यादि अनेक विषयों पर अंग्रेजी बिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, कनड़ी, तामील, तेलुगू भाषा में लेख ब पुस्तिकार होनी बाबियें।

- (५)—जैन शिलालेखों को संग्रह करके उन का माम दिखाते हुए घ उससे इतिहास की वातों को घ जैनधर्म के महस्य को बताने हुए पुस्तकों तब्यार करना-सारे भारत में जैनियों के हज़ारों शिलालेख अंग्रेज़ों की खोज के कारण अनेक पुस्त-कों में भरे पड़े हैं, जैनियों को उनका हाल भी नहीं मालूम है।
 - (६) जैन मंदिरों में जो २ मूर्तियाँ हैं उन के के लोका संग्रह करना च उससे इतिहास प्रगटकरना जैसा कलकत्त्रों के दि० जैन मंदिरों की प्रतिमाओं के लेलों को संग्रह कर बाबू छोटे लाल जी ने एक पुस्तक प्रकाशित की थी-

हर एक नगर में क्या एक धर्म प्रेमी भी नव-युवक नहीं है जो अपने सब मँदिरों की प्रतिमाओं के छेखों की नक़ल करले, यह कान चरर दिन की खुड़ी में भले प्रकार किया जा सकता है?

(७) जहाँ र प्राचीन लिखित शास्त्र भंडार हैं उन की लिपि की प्रशस्तियों की नकल एकत्र करनो सेखकों ने व शास्त्र दान कर्ताओं ने उस समय के आखार्व,राजा,शैन शृहस्थों का वर्णनका दिया है-विल्ली,जयपुर,सागशाड़ा उदयपुर अजमेर, इन्दौर, उग्जैंन, भालरापटन, ईडर, करमसद, सजोशा, इस्क्रं, आरा, शोलापुर, कोल्हापुर, मृद्यद्री, आदि में बड़े र भंडार है, हर एक नगर में जो २ लिपि प्रशस्तियाँ ही उन सब को संग्रह करने से एक बड़ा इतिहास तथ्यार हो सकता है।

- (६) जैन प्रसिद्ध पुरुषों व श्रियों की जीवनियों को जैन पुराणों से संप्रह कर के उन के जीवन की धार्मिक स्प्रमाजिक, व राजनैतिक रीतियों से मुकाबना करके दिखाते हुए पुस्तिकाएं प्रकाश. कराना।
- (६) स्वयं जीन धर्म का मंत्री बनकर व पाक्षिमात्य धर्म व विज्ञान का ज्ञाता होकर पर देशों में जाकर जैन धर्म के व्याख्यान करना।
- (१०) राजनैतिक विषयों पर बिक्ष्या लेखा किञ्च कर जैन पश्चों में प्रगट कराना जिस्त से. जैन. स्रोग राजकार्य्य में योगदेने में प्रोमी होजावें।
- (११) जोन शाक्षों में जो राजनीति है उसका. वर्तमान से मुकावला करके प्रगट करना ।
- (१२) जैनियों के धार्मिक सिद्धांत में बाधा न आये तथा सर्वसाधारण के अनुकूल हों ऐसी पाठ्य पुस्त में वालक व बालिकाओं के योग्य भिन्न२ हिन्दी उर्दू व इंग्रेज़ी गुज़राती मराठी कनड़ी तामील में प्रगट करना इत्यादि अनेक Salid works ठोस काम हैं जिनको हर एक जैन धर्मी जो जैन धर्मकी सेवा में अपना समय थ बल लगाना चाहता है बड़ी स्वार्वता से कर सका है।

वीर के पाठकों को ध्यान कर के इस हमारे लेख पर बिचार करना चाहिये और ख्याति लाभ पूजादि की चाइना नहीं करके केवल जिन धर्म की । भक्तिवश कोई न कोई सेवा धर्म बजाना चाहिये। वास्तव में वह मनुष्य नहीं है जो हर दिन कुछ न कुछ समय च बल परोपकार में न लगाई।

परिषद की सफलता के लिये हमारे परोप-कारियोंकों जो वे कार्य करें परिषद्दके द्वारा उसकी प्रकाश कराना चाहिये जिसमें सगठनशक्ति से काम. हो तथा जो भाई जिस निशेष काम की हाय में लेबें उसकी सूचना परिषद् जैन जनता की मालून करादें कि जिस में एकही काम में दो व्यक्ति अपनी क्रिके को न लगावें। परिषद् वर्शन्त में उन सव कामों की रिपोर्ट संग्रहित प्रकाशित करदे। बस परिषद् के इस उद्देश्य को कि जैन धर्म की उन्नति हो स कर करमें का यही मार्ग समक्त में आता है। - संपादक

संसार दिग्दर्शन

जैन कुमार सभा आगरा—का ग्यारहर्स चार्षिकोत्सव इस वर्ष विशेष धूम बाम से हुआ था। सभा ने पं॰ चन्द्र शेवर जी शास्त्री को काशी से बुलाकर धर्म प्रचार का वड़ा प्रशस्त प्रयत किया था। आप ने ११ दिन तक सभी मंडियों में धर्म के प्रभावशाली व्याख्यान दिए।

सभा का काम अब बड़े फेरों से हो रहा है। नये निर्वाचन में भी उत्साही कायकर्ता चुने गये हैं, आशा है कि इस वर्ष सभा को काया पलट-जावेगी। कई नवीन कायों में सभा ने हाथ डाला है। आशा है कि सफलता मिलेगी।

धर्मादे द्रव्य का सदुपयोग-सब माई जानते हैं, और समाचार पर्यो द्वारा यह बान अच्छी तरह भगट की जा खुकीहै कि इस समय जिनता आव-श्यक सवाल तीथों के रक्षण का हो रहा है उतना ही भी मंदिरों के जीणों द्वार कराने और भी प्रति-माओं के अविनय को हटाने का हो रहा है । इस कार्य को कराने के लिये एक "मन्दिर जीणों हार फर्ड" इस पाये पर खोला गया है, कि भारतवर्ष भर में अपने जितने मन्दिर हैं जिनकी दो हजार या हो हजार से ज्यादा आमदनी हो, उन प्रत्येक मन्दिरों के कोष से सौ २ दो २ सौ रुपये वार्षिक की सहायता इस फण्ड के लिये ली जाय । अतः समस्त मुख्य २ पंचायतियां मुिंबयां से सादर निवेदन है कि वे अपने मिन्दरों के कोष से सौ २ दो २ सो की सहायता इस फंड में देने की श्रीचू स्वीकारता में जें । उनकी इस उद्धारता की बड़ीमारी महिमा और धर्म की प्रभावना होने के साथ २ मिन्दरों के कोष का उत्तमता के स्वाय सदुपयोग हो सकेगा।

जंबू म्वामी त्रेत्र—कौरासी मथुरा मिन्दर के सुप्रवन्धार्थ दो वर्ष हो चुके। उसकी एक कमेटी भी बनी है। मन्त्री सेठ गुलाबचन्द जी टूंग्या और औठ मैने तर बाबू कन्हैयालाल (भूरती चाले) हैं। क्षेत्र की कमेटी ने इन दो वर्गों में अपनी कई बेंठकें की हैं, परन्तु क्षेत्र के प्रवन्ध के सम्बन्ध में स्थानीय पंचायत में बराबर विरोध चल रहा है। हमें अत्यन्त लेद के साथ लिखना पड़ता है कि जिस मथुरा पंचायत की कीर्ति स्व० सेठ राजा लक्ष्मण दास जी के समय में बहुत हो निर्मल थी, वह पंचायत इस तरह आज अपने पूज्य तीर्थ क्षेत्र तक का प्रवन्ध करने को समर्थ नहीं है। हमारी राय में कार्यकर्ता बदल कर कार्य किया जाय और देखा जाय कि प्रवन्ध ठीक होता है या नहीं।

—वुस्ती लाल हेमचन्द जरीयाले सम्बर्ध

देश

- --- जोती लाजपन राय ने स्वास्थ्यं की ख़राबी के कारण पञ्जाब प्रास्तीय कांग्रेस कमेटी से इस्तीका देशिया।
- श्रीमती एनी बीसेन्ट स्वराज्य का मस-विदा तैयार करने के लिये एक रोउण्ड टेविल कानफ़ेन्स करने वाली हैं। महास्मा गान्धी भी इस कानफ़ेंस के एक संयोकक होंगे।
- इलाहाबाद में पिछले हिन्दू मुसलमानों के भगड़े से लोगों में डर घुसा हुआ है। अब मी विन को देर में दुकाने खोली जाती हैं और रात में जन्दी बन्द कर दी जाती हैं।
- —्रात्तीगृह के स्वतंत्र मज़दूर दलके मेम्बरी ने एक प्रस्ताव पास कर के मा गाँधी के पास संदेशा भेजा है। उसमें कहा है:-मज़ादूर दल भारत के स्वराज्य आन्होलत को बड़ा दिल चहाी के साथ

वेखता ग्हा है और हमारा वल तथा ब्रिडिश जनता का सब षड़ा समुदाय आपके उद्देश के प्रति सहा-सुपृति और आपकी नीति के प्रति प्रशंसा का भाव रखता है। ब्रिटिश सरकार द्वारा आपके और आप के सहकारियों के कैंद्र किये जाने से हम लोग लजित हैं। इस के लिए हम सरकारी नीति की निन्दा करते हैं।"

- --- १३ वां शहीदी जत्था जो गुजरात और धजीराबाद आदि जिलों में हैं, जैतू जाने के पहिले ननकाना खाडब जायगा।
- समांचार है कि मौ० महौम्मद अली नें म० गाँधी को जो गाय दी थी वह कसाई खाने, में मारी जाने के लिए ले जायी का रही थी। मौलाना साहब ने वहाँ से लेकर महत्मा जी को वह गाय मेंट की है।

घर चैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किकायत भाव से बी० पी० द्वारा भेजा जाता है जैसे खूती' उनी, कोशा, रेरामीकपड़े व सिले कपड़े सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें ग्लास ब बीनी का सामान देशी व अंग्रंज़ी दवाएँ तेल अंतर वार्निस घहर किस्त्र की घड़ियां। एक बार क्रीक्षा कर देखें।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग के सब रोगों पर रामबाण

दिमाग की हर प्रकार की कमकोरी सिरदर्द चकर आना आँखों से घुंघलापन नज़र क्षाना, बालों का बेसप्रय पक्षना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है । बालों को लघ्छेदार और मुलय १) र० ३ शोशी का २॥।) ६ शीशी ५।) र० १२ शोशी १०) र० व्यापारिया, पर्जरी को पत्र व्यवदार करना चाहिये।

पताः - मेसर्स शर्भा एण्ड कम्पनी बामोशन एजेण्ट बम्बई नं १=

- —द्क्षिण थारत के मुस्लिम शिक्षा संघ ने मुसलमान लड़िकयों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर देने का विचार किया है। इसके लिए वह महास कारपोरेशन से अनुरोध करेगा।
- —मान्टगोमरी के नजदीक हरप्या रोड में रेल दे दुर्घटना के कारण मुसाफिरों के जान-माल की भीषण क्षति हुई है।
- मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद ने कनकनारा, इलाहाबाद, जबलपुर आदि के मुसल-मानों और हिन्दुओं के भगड़ों को सुनकर अपील प्रकाशित की है जिसमें आशा प्रकट की है कि जो हुआ, सो हुआ, अब आगे इस प्रकार के भगड़े कहापि न हो। उन्होंने नेताओं से कहा है कि वे जहाँ कहीं इस प्रकार के भगड़े बढ़ते हुए देखें, वहीं शान्ति करने की तुरन्त चेप्टा करें। ये भगड़े पंचायतों द्वारा तय कर लेने चाहिएँ।
- —वर्मा में एक नये टैक्स की सृष्टि हुई है जो विवाहित पुरुष पर ५) और अविवाहित पर २॥) सालाना है। वर्मा के लोगों ने इसका न देना निश्चय कर लिया है।

- —पं अदन मोहन मालवीय कोहाट के हिन्दुओं की दशा का निर्माक्षण करने गये हैं, वहाँ से छौटकर छाहीर में आप अकाली नेताओं के मुकदमे का निरीक्षण भी करेंगे।
- महात्मा जी का स्वास्थ्य अब धीरे २ सुधर रहा है। उन्हें अब बकरी का थोड़ा दृध और संतरे दिये जाते हैं। अब उनकी तबीयत इतनी अच्छी है कि आशा की जाती है कि दो तीन हफ्ते में ये कोहाट की यात्रा करने के योग्य होजायंगे।
- —शिमला में सुधार जाँच कमेटी की बैठक किर शुक्ष होगई। सर प्रवासचन्द्र मित्र और सर पुरूषोत्तमदास ठाकुरदास की गवाहियाँ हुई। दोनों दुरंगी शासन के खिलाफ हैं।
- —वायकोम सत्यामह अभी पूर्ववत् आरी है। सत्यामित्यों के मुकदमे में श्री० कुंजी रुप्ण पिल्ले ने कहा है कि सत्यामित्यों को एक ओर पुलिस की मार पड़ती है और दूसरी ओर उच्च हिन्दुओं की।' २१ अक्टूबर को उन पर पत्थरफंके गये। जार्ज जाजेफ सत्यामह आश्रम पहुंच गयेहैं।

'यूनीक' सलेट

पेन्सिल, कलम, कागज किसी की आवश्यकता नहीं। न साफ ही करना पड़ता है, न कागज़ ही खर्च होता है। एक अद्भुत आविष्कार है।

मुल्य पाकेट साइज 😑 स्लेट मय पाकेट बुक ७२ पेज 😑

, आफिस साइज हो , , , , , , , बढ़िया ह)

" विद्यार्थी साहज्ञ । ब्रि. ", ", रजिस्टर साहज बुक १२० पेज । ब्रि. ब्यापारियों को कमीशन। नमूने के लिये ब्रि. के टिकट भेजें।

पता:-बालकृष्ण मोहता कम्पनी, ४१ क्षेत्रमित्र छेन, सल्किया (हावडा)

—इलाहाबाद के दंगे के सम्बन्ध में पुलिस ने अश्रालत में ६ मुकदमे दायर किये हैं। पहिले मुकदमे में ५६ मुसलमान अभियुक्त हैं, दूसरे में ६ मुसलमान, तीसरे में १५ मुसलमान, बौथे में ४ मुसलमान, पाँच में १० और छठे में कुछ हिन्दू।

— २१ अवदू वर को पूना में मुसलमान महिलाओं की एक कान्फरेन्स हुई। इस में बेगम नज़ीस दुलहन साहिब ने, सभानेत्री की हैसियत से कहा कि सामाजिक सुधारों की आवश्यका है, इसके लिये सियों को शिक्षित होना चाहिए। परदा के सम्बन्ध में आप ने कहा कि वह इस्लाम हारा हमारे साथ बंधा हुआ है, उसको छोड़ना अधर्म होगा।

— मुज़फ्फ़र नगर में २० सितम्बर को राम लीला का ज़लूस सदा की तम्ह निकाला गया। अब ज़लूस गंदियन मिन्जद के पास होकर निकला तो कुछ मुसलमानों ने 'यो अली' कह कर शोर मचाया जिससे कुछ अशान्ति फैली परन्तु जुलूस शान्ति पूर्वक निकल गया। ५ अक्कूबर को जिला मिजिस्ट्रेट मि० डारलिङ्ग ने कुछ हिन्दू नेताओं को सहस्तील में बुला मेजा। यहाँ पर इन्हें यह आईर सुनाया गया कि दशहरे के दिन रामलीला का जुलूस किसी भी मिहजद के पास से होकर निका

लने के समय में और, नमाज़ के वक्त में आध २ घण्टेका अन्तर रखाजाय । इस आज्ञा का हिन्दुओं ने विरोध किया। दशहरे के दिन हिन्दू नेताओं ने मजिस्ट्रेट के पास जाकर इस मामले को पेश किया। बर, ज़िला मजिस्ट्रेट अपने निश्चय पर पुनः विचार भी नहीं करना चाहता था । तव, रामलीला का उत्सव बन्द कर दिया गया। इस पर कोतवाली के सामने पुलिस और अहलकारी को खड़ा करके मजिस्ट्रेट ने नगर के प्रतिष्ठित सञ्जनों को बुलाया । इन सज्जनों में कौंसिल, के मेम्बर, म्युनिसिपेलिटी के चेयरमैंन तथा कितने ही रईस और वकील भी थे। इन सब को मौज-स्ट्रेट ने खुव डांटा उपटा और उनसे कहा कि तुम्हारे आन्दोलन की मुभे कोई परवाह नहीं. है, गवर्तमेण्ट मेरा पूरा साथ देगी । छे लोग दो घण्टे तक धूप में खड़े रखे गये थे, मजिस्ट्रेट कुर्सी ही पर बैठा रहा। इसके बाद शाँति की रक्षा के लिय उसने १५ सज्जनों को स्पेशल कानिस्टिबल बनाया । श्रांत्रुत सुमत प्रसाद ने स्पेशल कानि-स्टबिल बनने से इन्कार कर दिया, इसिलए उन पर मुक्दमा चलाया गयो । इस नादिर-शाही पर मुजक्फरनगर में बड़ी सनसनी फैल वहीं है।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी की जिये!

कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !!

अन्यथा पछताइवे !!!

दयानन्द सरस्वती कीन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतिकया। कौन प्रन्थी पुस्तकें उन्हों ने रची। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे प्रन्थीं का खण्डन, मिथ्या होशारीपर्णों का उत्तर बहुत उत्तप्र रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सज़िल्द २॥) डाक ख़र्च ॥) कता—चौधरी शिखरचन्द जैन फ़र्रब्नगर (गुड़गाँव)

विदेश

-कुस्तुन्तुनियां में ३३०० प्रीक्स पकड़े गये हैं। कहते हैं. के जबदंस्ती टकों से निकाल कर श्रीस मेंज दिये जायेंगे। इस विषय पर राष्ट्र परि-षद् की कौंसिल २७ अजुबर को विचार करेगी।

— मक्ताः के भूत पूर्व शाहः हुसेन बसरा पहुंचे हैं। बसरा पर इराक के शाह फसल का शासन है। हुसेन शाह फेसल के बाप हैं। ईराक कोंसिल ने शाह फैसल को कहला भेजा है कि आप अपने बाप से कह दीजिए कि यदि वह बसरे में रहना चाहता है तो केंबल एक साधारण आदमी कीं हैसियत से वहां रह सकेगा।

—चीन की गृह-कलह अभी समाप्त नहीं
हुई। फेट्र-ग्यू-सेट्र नाम के ईसाई चीनी जनरहने
राजधानी पंकिन पर अपना कृष्का कर लिया है।
प्रजातंत्र के प्रेसिडेन्ट कहीं भाग या छिप गये हैं।
फेट्र-ग्यू-सेट्र के पास इस समय अच्छे ४० हज़ार
सैनिक हैं। उस ने कई मन्त्रियों को कैद भी कर
लिया है और घोंपणा की हैं कि चीन में शान्ति
स्थापित करने के लिये चीनः के नेनाओं और
सेनापितयों की एक कान्फ्रेन्स हो जाय। आशा

-पार्तिमेंट के ६५० स्थानी के लिए कन्सर्वेटिव दल के ५३६, मज़दूरदल के ५२०, और लिबरल दल के ३५० उम्मेदवार खड़े हुए हैं।

--फ्रान्स के प्रसिद्ध प्रन्थकार एनाटोला फ्रान्स का देहान्त हो गया। एनोटले इस समय के संसार प्रसिद्ध साहित्य सैवियों में से एक थे। अपनी साहित्यिक छतियों पर १६२१ में उन्हें नींबल पुरस्कार मिला था परन्तु किर पद्य से जी हट गया। गद्य लिलने लगे और ऐसा गद्य जिसकी श्रेष्ठता की धाक बड़े से बड़े साहित्य सेवियों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार की। उनका देहान्त =० वर्ष की अवस्था में हुआ।

--स्वतन्त्र हिन्दू राज्य कोचीन चाइना में कांस के आधीन अनाम नाम के राज्य में बोरो पोरो नाम का एक छोटा सा पहाड़ी देश है। वहाँ के निवासी हिन्दू हैं और बिलकुल स्वतन्त्र हैं। कहते हैं, प्राचीन काल में वे बंगाल से आये थे। ब्राह्मण देउता (देवता) के नाम से पुकार जाते हैं और जतेउ पहनते हैं। रहन सहन रीति रिघाज बंगालियों के से हैं। वहाँ राम और शिव के बहुत से मन्दिर हैं, पुरुष बीर और युद्धप्रिय होते हैं। स्त्रियाँ तक तीर व तलवार चलाना जानती हैं।

शीघ्र ही सूचित कीजिये

सर्व माई अपने २ यहां के दिगम्बर जैन बकील वैरिष्टरों, की नामावली पूरे पतें सहित शीक्र भेजने का कष्ट लेवें। कमैटी को जानने की सक्क ज़रूरत है। उत्साही सज्जन शीध ही स्चित करेंगे।

चुत्रीलाल हेमचन्द्र जरीवाले, महामंशी-तीर्यक्षेत्र कमेटी, हीराबाग-बम्बई नं० क्ष

		विषय-	-सूची				पृ	ष्ठ सं ०
Ł	बन्दे बीरं (कविता)-श्रीयुत् कवितर "	वरसत्त्र ^भ	••,•	•••	•••	***	***	ę
R	भगवान महाबोर-स्प सम्पादक	•••	•••	,* *,*	•••	•••	***	ર
3	आह्वान (कविता)-भी० 'वत्तक'	•••	•••	•••	***	•••	***	દ્
8	क्या भारत के पतन का कारण अहिंस	।। है-भी रु	र चम्पन राय	जी जैन	वाद-प्रट-स्थ	•••	•••	s
4	ज्ञैन इपाप्रेकिया-चैत्रेतियर दां० वी० शेव	गिरि राउ	पम० ए० पं	ि एच ० ।	हो ०	•••	•••	१ २
Ę	जैन कथा-श्रीपुन् गुलाबचन्द्र जी	•••	• • •	•••		•••	***	१४
૭	महिला महिमा-व्य सम्पादक	•••	,• • •	•••	•••		***	१्ट
Æ	अन्योक्ति (कविता)-भौयुत् 'नयन'	•••	•••	***	•••	***	•••	२०
3,	जैन धर्म की अहिंसा जगत्तिय क्यों	नहीं होती	-श्री ० होश	कास जैन	ची० ए०	•••	•••	२१
१०	संयुक्त प्रान्त में जैन स्त्री पुरुषों को तु	ज़िनात्म क	संख्या-भ	ि हीरास	ास जीन	•••	•••	२9
११	सम्पाइकीय दिष्पणियां	•••	***	•••	•••	•••	***	38
र्रे	संसार दिग्दर्शन	0 0 0	•••	***	***	***	***	38

अमरीका और विलायत से एक बड़े डाक्टर की आमद

यह ख़बर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाकृर बख़तावरसिंह जैन, एम० डी० (अमरीका) एल-आर-सी-पी पेन्ड एस (एडनवर्ग) एल-एफ-पी-एन्ड एस (ग्लासगो) जिन्होंने प साल अमरीका में, और २ साल इक़लैण्ड में तालीम पाई है और २ साल अमरीका और १क़लैण्ड के इस्पतालों में बतौर असिस्टेन्ट सरजन के काम किया है देहली में तसरीफ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी ख़ुशिक़हमती की बात है कि आपने हम लोगों की दरक्वास्त पर देहली में सफाखाना खोला है आप बच्चों और औरतों के इलाज में खास महारत रखते हैं। तपेदिक, आतशक, सूज़ाक, दमा, हैज़ा, नामदीं, कोढ़ और बवासीर (खूनी हो या बादी) का इलाज बजरिये पिचकारी (Injection) और जियावेतस का इलाज वग़ैर अदिवयात किया जाता है आपने एक खैराती हस्पताल खोला है जिसमें आपरेशन बवासीर आँख और दाँत गुर्वा के लिये सुगृत किये जाते हैं, और आपने एक लेडी नर्स को भी रक्का हुआ है जिसकों जेर निगरानी औरतों का इलाज होता है।

पताः-डाक्टर बख्तावरसिंह जैन पहाड़ी धीरज, सदर बाजार, देहली

कांच की शीशियां।

हमारे यहाँ हर साइज़ की निम्नलिकित, शीशियां तय्यार रहती हैं और देश भर के शफ़ाख़ानों, इन्नफ़रोशों और दूकानदारों को बड़ी होशियारी व सवाई के साथ रवाना की जाती हैं। हमारे यह। का माल अन्य कारख़ानों से अधिक वज़नी व साफ है। जिस की परीक्षा एक बार की ख़रीदारी से हो जायगी।

मृहय अठपहलू हरे रंग की शीशियों का

जो शकाखानों वगैरह में बहुतायन से इस्तैमाल की जाती हैं, इस प्रकार है:-

साइज़	कीमत फी श्रूस (१४४ शीशो)	साइज़	कीमत की मूस (११४ शीशी)	
ॄ या ॄे ड्राम	(*)	२भींस	v)	
१ ड्राम	(1)	३औस	41-)	
२ ड्राम	81=1	४औंस	· 9)	
४ डाम	211=)	६औंस	१०)	
१ औंस	રાાા)	⊭औं स	(३॥)	

नियस्--१०) सं कमका माल रवाना नहीं किया जायगा । २५) से अधिक माल मँगाने वालों को १०) फीसदो कमीशन दिया जाना है । आर्डर के साथ आधी कीमन अवश्य आजाना चाहिये।

पता-भार. एस. जैन एण्ड ब्रार्ट्स, महावीर-भवन, बिजनीर।

'वीर" में विज्ञापन छपाने की दर

एक बार विज्ञापन छपत्राने के लिये आजकल के रेट निम्न प्रकार हैं:---

पेज	साधारण पंज	j	कबर का दूसरा पे	ज	कबर का नीसरा पेज		कथर का चाधापेज	
एक ।	8)	ı	(۲	ł	૭)	ī	(0)	
माधा ।	३॥)	1	4)	ì	ਬ)	- T	E)	
पात्र ।	٦)	l	3)	i	₹#)	ı	311)	

एक बारसे अधिक छपवानेवालों को निम्न प्रकार कमी की जायगी:

६—बार विशापन छपाने वाळी को ८ फीसरी कमी।

१२-- बार " " १६ " कमी।

२४--वार " " २५ " कमी।

७-कोडपत्र बरवाने के लिये पत्र व्यवहार की किये।

८—छः माह अर्थात् १२ दफे से कम कन्ट्रैक्ट करने वालों को कुल रुपया पेशगी भेअना चाहिये। भाशा है, इस अब सर से विज्ञापनदाता अवश्य लाभ उठावेंगे। नहीं तो पछताना पड़ेगा।

विनीत-राजेन्द्र कुमार जैन, प्रकाशक-'वीर' विजनीर।

केवता २॥) रूट में सालभगतक हिन्दी का सब से वड़ा समाचारपत्र मिलेगा।



सामाहिक समाचार-पश -भ्योक्टर्स कलास 'मुरादावाद



इसमें सर्वोषयोगी हर प्रकार के उच्चकार के लेख रहते हैं तथा गत्य अद्भुत-प्रमाचार,कितवाये, नवीन-नवीन संसार भर के समाचार और चतार-कतन का सामान भी खूब रहता है।

कुलास

की छपाई, कामज टार्टप अस्ति सब सामान यहिया और नया होता है कारण प्रसिद्ध ''स्थालप-प्रेम'' भी दसी के अध्यक्ष का ते र इस् वर्ष उपहार में एक माल के बातक वनने वालीं का मृत्यि 'हिन्दी महाभारत' <u>स्वित्य</u> विनकृत सुपत

> मय हाकसर्थ प्राह्मका कापास पर हेरे पहुँचा दिया नायमा । पश्तक प्रीप्त कापात पर करीब ३०० पणे। का है । त्यान स्थान पर २४ श्लाम चित्र भा है । उपार्ट, भागन जिल्ल सक्य बहिला है ।

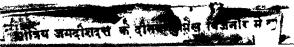
हर प्रकार की सुन्दर श्रीर सम्ती छपाई के लिए

हिमालय यस मुरादाबाद

का लिखिय ।

हमारे यहा सब तरह की छपाई का बाब जैसे एकरी, दुरी, तिरी, तारहान, लकता क ज्याक, कितान, लिका कु ज्याक, कितान, लिका कु क्याक, विक्रा क्याक, विक्र क्याक, विक्रा क्याक, विक्रा क्याक, विक्र क

पता प्रवन्धकर्सा हिमानय-प्रेम, मुरादाबाट ।



श्रीवर्द्ध मानाय नमः।

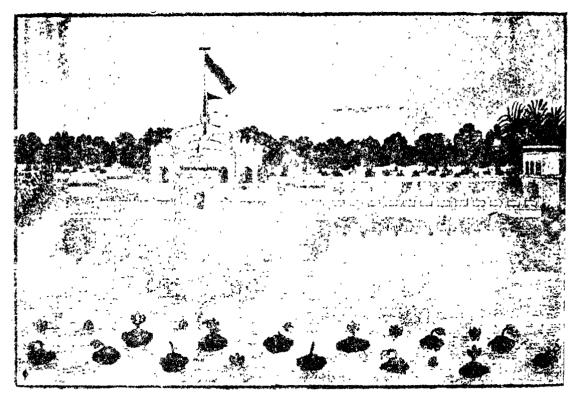


श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक पत्र

वर्ष २ |

१५ नवम्ब। सन् १९२४

सिंख्या २



मामारक

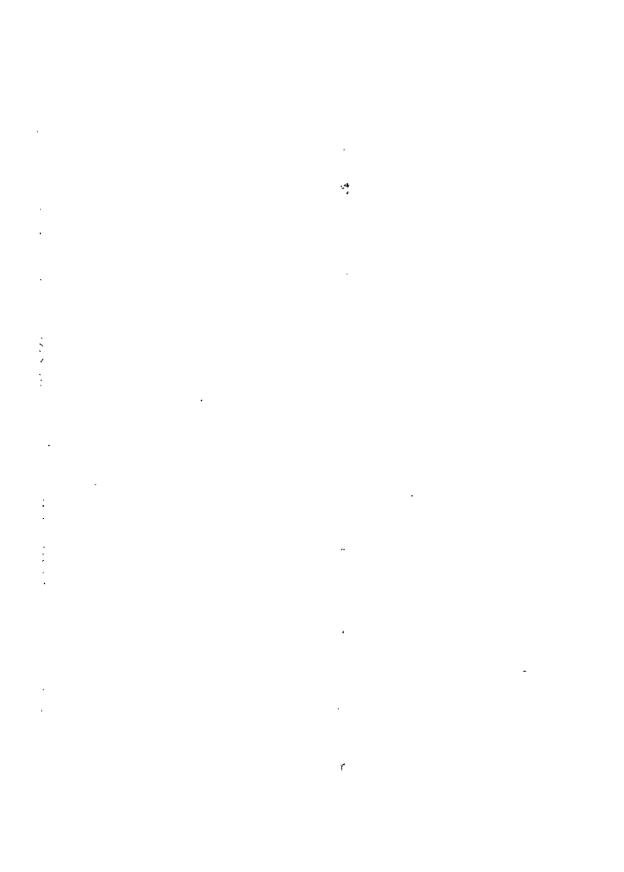
जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

उपसम्पादक -

श्रीयुत कामनाप्रसादजी

प्रकाश ह -

वार्षिक मृत्य] श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईसः विजनौर [ढाई रुपये



भी वह मानाय नगः

''त्रमा वीरस्य भूषणम्" भी मारत दिगम्बर जैन परिवद्का पालिक मुख पन्नः

वीर

"उत्तिष्ठत जामत प्राप्यवरान्निबोधत।"

"भाइयों ! ध्यान रक्षवो कि "जब तक तुम शरीररूपी वस घारण किए हो तब तक तुम्हें मुक्त होने की आशा कैसे हो सक्ती है ? जब तक कि तुम शरीररूपी कारागारमें बन्द हो तुम्हें मोच कैसे माप्त हो सक्ता है ?"

---पाइथेगीरस।

वर्ष २

्विजनौर, मार्गशिर कृष्णा ५ वीर सम्वत् २४५० १५ नवम्बर सन् २४

अङ्क २

यशोधन

चतुर्दशपदी ,

जब तक उसत शीस पाप के नहीं कटेंगे।

अन्यायों के चरुषा राजपथ से न इटेंगे ॥

पच्चपात के पत्त नहीं जब तक निकलेंगे।

🧻 बन्धु बन्धु के दोष निरन्तर जब उगर्लेंगे ॥

होगा पुरुरुत्थान न तबतक मरना होगा ।

ं जीवन भी सुखपूर्ण पाप सिर दोना **होगा ॥**

अपयश के अनिवार्य जात में फँसना होगा।

मकड़ी का साजाल बनातन कसना होगा।।

दुर्निवार इस पङ्क भरा में सहना होगा । विस्त गंभमय कास्त्रकृती में सहना होगा ॥ यह सब निश्चितकरो जातिहित आत्मसमर्पण ।

श्रेनो जगत आदर्श लोक के निर्भल दर्पण ॥
जो समय मरुस्थल मध्यपद अपने हैं जा छोड़ते।
वे ही इस काल करालमें धन्य!यशोधन जोड़ते॥

-- न्द्रान्त

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद

नैमित्तिक श्राधिवेशन इटावा

ता० ५-६ नवम्बर सन् २४

हुरावा में निमन्त्रित हुये मुताबिक परिषद् का नैमिसिक, अधिवेशन ता० ५ और ६ नवम्बरको सानन्द विशेष महत्त्व के साथ पूर्णहुआ। समापति महोदय श्रीमान् बाबू अजितप्रसाद जी एम० ए० एस० एस० वंश, रीडर दिस्ली यूनीवर्सिटी ता० ५ के प्रातःकाल मेल दूने से पधोरे। आपका स्वागत विशेष समारोह के साथ स्टेसन से जुलूस और वैण्ड बाजे के साथ हुआ। बाहर से अम्बाला, आरा और कुताबाद, हैदराबाद दक्षिण से सम्यवृन्द पधारे थे। विशेष उल्लेखनीय बाबू चम्पतराय जी वैरिष्टर बाबू रतनलाल जी असहयोगी वक्षील, बाबू राजेन्द्र कुमार जी रईस बिजनीर, बाबू क्रायन्द जी रईस

कानपुर, पं० कन्हेयालाल जी वैद्यराज प्रो० लक्ष्मा बन्द्र एम० प० एल० एल० बी० प्रयाग, सेठ कस्त्रसाह सेठ नवलसाह औरंगाबाइ, पं० कम्मन लाल जी तर्कतीर्थ कलकत्ता, बाबू कामताप्रसाद अलीगंज, बा० शिवचरनलाल जसवन्तनगर, ला० फुलजारीलाल रईस करहल इत्यादि सज्जन थे। परिषद्द का कार्य ता० ५ को दिन के २ बजे से प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण पूज्य ब० शीतलप्रसाद जी ने किया। पश्चात् स्वागत समिति के समापति ला० कपचन्द जी वैद्य ने जिन्होंने कि त्रिलोक्य विधान पूजन कराया था तथा परिषद्द को निमंत्रित किया। अपना छपा हुआ भाषण पढा।

भाषण सभापति स्वागत समिति

श्रीमान् समासद तथा उपस्थित बंधुगण और बहिनों इस छोटे से और दूर देश इटावा नगर में आप महाबुभाव ने श्रीत पिश्लिम करके धर्म और जात्यु-कृति के भावों से प्रेरित होकर जो शुभागमन किया है उसके लिये हम हृदय से स्वागत करते हैं और कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

वर्तमान में देश और जाति की अवनत दशा होने पर आप के स्वागत के विशेष साधन न हाने से हम केवल वचन द्वारा ही आप सन्जनों का स्वागत करते हैं आशा है कि इस ब्रुटि के कारण आपको जो असुविधायें हो उनके लिये आप छपया समा प्रदान करेंगे।

यह इटावा नगर जिसका शुद्ध नाम इध्टिका-पथ है छोटासा होने पर भी अति प्राचीन और पेतिशासिक नगर है यहां पर सं० १०१० वि० को विनय सागर मुनिका समाधि सरण हुआ और उनका समाधि स्थल यहां से एक मील दूरी पर यमुना तट पर बना हुआ है। जो कि नसियां जो (नसैनी दारी) के नाम से विख्यात है, दूसरे यहां से २ कोस की दूरी पर एक आसई नाम का प्राचीन खेड़ा है जहां पर यमुना के किनारे बहुतसी सुरहर प्राचीन प्रतिमायें मिलती हैं। उन्हीं में से एक बौबीसी अति मनोज प्रतिमा हाल हो में यहाँ लाकर इसी मिरहर में विराजमान की गई हैं। तिसारे जिस समय जैन धर्म पर आयंसमाज आहि के जारों और से हमले हो रहे थे और जैन लोग

अपने को जैन कहने में भी किजिजत होते थे उस समय इसी नगर में एक जैन तस्व प्रकाशिनी नाम के सभा स्थापित हुई जिसने स्थान ए दौरे कर लाखों दे कर निकाल कर और व्याख्यान तथा भजनों द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया और जैन के धर्म पर लगे हुये प्रिथ्या दोषों को दूर किया । अजमेर में शास्त्रर्थ करके और जगह २ शंका समा-धान करके जैन धर्म का सिक्का जमा दिया।

इस नगर के जैन भाइयों के शुभोदय से जैन धर्म भूपण पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी का इस वर्ष चतुर्मात यहीं पर हुआ है। जिसके कारण इस नगर में जैन धर्म की जो प्रभावना हुई है वह अकथनीय है आपके ही उपदेश से यहां पर जैन विद्यालय जैन कन्याशाला प्राणि रक्षा सभा स्था-पित हुई है और जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा का पुनरुद्धार हुआ है। यहां पर आप लोग जो धर्म प्रभावना के लिये एकत्रित हुये हैं यह भा आप ही के उपदेश के प्रभाव के कारण से है।

अ। हम सब लोग जिस जैन धर्म की प्रभावना और जैन जाति के सुधार व उन्नति के लिये एक-त्रित हुये हैं उस कार्य को तन मन धन से सफल बनावें।

हम लोगों की यही निरन्तर भावना है और रहेगी कि आप महातुभावों ने जिस कार्य में हास लगाया है वह भी जिन देव की हुए। से शीव ही सफल हो। विक्रेष्वलय कि स्ट्रांट कर के

सभापात का चुनाव व भाषागा



उपरान्त बाब् रतमलाल जी ने सभापति की बाजना का प्रस्ताव उपस्थित किया। जिस का समर्थन बाद चन्द्रसेन जो वैच, बादू लश्मीचंद्र जी, वाबू कामताप्रसाद जी, छः० बाबूराप्र जो चौधरी और एं० भागन हाल जी ने किया। इस पर बाब अजित्रमसाद जी ने सर्व सम्मति के अनु-इए में सभापति का आसन "जैनधर्म की जय" के शब्द गुंजार में ब्रहण किया और अपना मौजिक भाषण प्रारम्भ किया। अपनी असमर्थता दर्शात हुए समाज की शोचनीय दशा का उट्छंब किया । कहा-"अजय सकते की हालत है, न कुछ बोल सकते हैं, न जीते हैं न मरते हैं, योंडी हरदम सिस-कते हैं।" ऐसी दशा में कार्य कैसे किया जाय? परन्त हताश भी नहीं हुआ जा सकता। आत्मा का अद्धान है तो वर्श हताशपना कहां ? हताश होना ती पाप है। परन्तु उदासीनता जो आगई है बह चारों ओर की परिस्थित का फलहै। अत्रव जिस परिस्थित के कारण कार्य नहीं चलता उस की हटाना है। और वह सामुदायिक हप में कार्य करने से हट सकती है। अकेले अलग २ कोई क्या कर सकता है ? बस्तुतः कोई बस्तु अकेले कार्य महीं कर सकती। परमाशु की शक्ति व्यक्ति रूप में गहीं किन्तु स्कन्धका में ही कार्य करती दिखाई देती है। इसछिए आज जो हमारे सामने दिकत है बंह यही कि आज हम मिलकर कार्य करना नहीं बाहते। समाज २ और जाति २ में घड़े बाजी है।

घर २ में, भाई भाई में नहीं बनती है। हिन्दुस्तान का अशुभ कर्म है कि मिलकर कार्य उसके निवासी नहीं करते। यही बजर जरूर हमारी उन्नति में बाधक है। मगर इसको दूर करना है। यह रोग बहुत बढ़ गया है। जैनियां में श्वेताम्बर शिगम्बरी का भगड़ा मिरता नहीं है। आपसी निवटारे की ध्यनि सुनाई नहीं देती। शिवर जी का मुकदमा फैसल हुआ । परन्तु उसकी अवील निर्वी कौन्सिल में दायर है। उधर दुसरा मुकदमा ऐसा है कि उससे साफ जाडिए होता है कि **यड** भगड़ा निबटना नहीं, राजप्रशी मुकद्दमें के सन्बन्ध में मुफे मेरे पित्रों ने छिवा है कि राजप्रही से उन के केशर के पत्थर श्वेतास्वित्यों ने उलाइ दिये। J. K. (दि॰ जैन तीर्थक्षेत्र कमेटा) अक्षर हैं। इस प्रमाण को मिराने का प्रयत्न सोरी की भांति किया गया। पान्त यह प्रमाण हटाउ न जा सक इसके लिये दो फोटोग्राफर भेजे गर। परन्तु कामयाव नहीं होने दिया गया। श्वेताम्बरी का कहना है कि बिहार प्रान्त के तीर्यस्थान रेंदै० के हैं दिगम्बरों के नहीं। हिगम्बर दूर से नमस्का-, रादि कर सकते हैं। इसी अनुक्रप में बहां उन्होंने भागडा मचाया। परन्तु फौजदारी करना ठीक नहीं समभक्तर फोटोब्राफर वापस बुला लिये गये। अवालती कार्रवाई हुई। यह एक धर्मयुख है। देसे धर्मयुद्ध यदि लडने ही हैं तो वाजवी तरीके पर हड़ने चाहियें। वे चाहे तीर्थ सम्बन्धी ही अधवा

मन्य प्रकार के, पान्तु सब में संचाई हो। जो कुछ संबुत ही उन्हें सचारिके साथ पेश की जिंदे। धर्म युद्ध में मायाचारी पाप है। ऐसी लड़ाई सुनमता से हटने को नहीं। मनमें ऐसा घृणित विचाराकां 🏎 शायं न लावें जिनसे हृदय फलुवित हो। अहिंसा के जिलाफ़ हम कुछ भी न करें। भठे गवार पेत न करें। Policy का व्यवदार न करके सत्य के साथ अपने स्वत्वीं को बचार्ये । दूसरा नामुनासिब कार्य हमारा आपस में लड़ना भर हना, दल-बन्दी अथवा घडेवाजी करना है। दो आदभी एक राय के नहीं हैं, पिर काम चल तो कैसे चले। इसलिए जुरूरत है कि यह कार्य हम और आप मिलकर करं जो नीति बुरी है उसको कोई न करे। इसमें कंप्ट अवश्य है, परन्तु इससे धर्म और समाज को हानि नहीं । हमें व्यक्तिगत भक्ते होना चाहिए। यदि आप व्यक्तिगत असंदृष्यवहार नहीं करेंगे तो आएसी सब बादविवार सचाई के साथ हो सकते हैं आवसी भगड़ों में घोलेगाजी नहीं होना चाहिए इस प्रकार अपने मन से द्रुढ प्रयत्न कीजिए। हम व्यक्ति अपेक्षा हरगिज हमेगा नहीं रहेंगे। संसार, समाज, धर्म हमेशा चले जायगे । हर आइमी के निर्मल चरित्र का प्रभाव सत्र पर पड़गा। उसका अक्स दूसरों में इका घर करेगा । अतरव आज बह कार्य नहीं कि केवल प्रस्तावादि ही पास किए जीय। आज तो नम्ना धनकर दिखाना चाहिए । हिसाबे का नुमाइशी काम बहुत हो चुका । अव ठोस कार्य करना चाहिए। अब्र जी की नक्छ कर ने से फायदा नहीं। आज सारी दुनिया उसी तरह कर रही है। इसलिए उसके बिलाफ करना मुश्किल पड रहा है। लेकिन उसकी नकल करना

ठीक महीं। इस दिखाने की जकरत नहीं। असरत डोस काम की है। प्रत्येक व्यक्ति देखें कि मैंने रूपयं कितनी उन्नति की । कितने क्याय घटाए। कितनी सराचार में उन्नति की। वस किर ज्यादह कहने सुनने की जरूरत नहीं। हमारा अन्य गुरू भी नहीं, आत्मा हो हमारा गुरू है, अतः उसके अनुसार भागश्चित्त करते जाहर । ता ही हम उन्नति कर सर्जें। काम के तका के को देख कर अब यह बेह्याई है कि खंडे होकर कुछ कहा जाय। अप्रतो कार्यकी जिए। यहि अव भी खडा होकर कुछ कहा जाए तो सनकिए हमें सिर्फ अपनी विद्वसा जाहिर करना है, आपने फरमाया कि परि-पद का अधित्रेशन इटाया में होना शुभ चिन्ह है । आजतक मुक्ते इटाया का वह महत्त्व और प्राची-नता माल्म नहीं थी जो स्त्रा० स॰ के सभा गति के भाषण से प्रकट हुई है। परन्तु यहीं वर १२ वर्ग पहिले का जल्ला मेरे नेत्रों के समक्ष है जन जैनियों के पण्डितों के गुरु स्या० वा० स्या० पं० गोपाल दास जी रवैया का सिंहनाद होता था । और नकारा धर्म कांबजता था । उस समय मुसलमान, आर्यसमाजी, और हिन्द लोग धर्म की प्रभावना को हृदयङ्ग करते थे। मुसलमानी की भी अहिंसा का उपदेश सुनकर गरदन हिल जाती। यस प्रभावना तय ही है अब कि अन्य स्वीकार करें। प्रचार हो तो ऐसा हो। किसी एक व्यक्ति पर मार न डालना चाहिए। जैनधर्म के प्रचार के लिए पूज्य ब्र॰ जी ने प्रस्ताब के अनुक्रप में पुस्तक बना दी। उन का तो यह दिन रात को कार्य ही है। मला एक औरभी सारे मारत के लिये क्या करंगा ? आवश्यकता है कि विदान लोग ब्रह्मचारी

सनं, निःस्वार्थं सनं तव ही काम चले। दो भाद नियों की सेवा सका नहीं कर सका। सब नाहते हैं कि मोह मिले और संसार में नाम हो ! परन्तु यह दोनों कार्य नहीं हो सके। हम चाहते हैं कि यक्त्रतींपद ही मिलता चला जाने पर यह हो नहीं सका संसार तो भूल मुलैया है। परन्तु इस पर हमें विश्वास नहीं। यदि होता तो अभी कपड़े उतार कर उस से नाता तोड़ लेते। आवश्यकता तो यह है कि प्रचारक इस काविस यन जाने कि उन के वाक्यों का प्रभाव पड़े।

किर सभापति महोदय ने परिषद् का महत्त्व और आवश्यका का दिग्दर्शन कराते हुए मुजक्र्र नवर मधि रेशन के सभापति साह जुःमं रिदास ती के ही उन वाक्यों को दुइरा दिया जो उन्हों ने परि धर के विषय में कहे थे। सारांशतः यह कि महा-सभा में योग्य कार्यकर्ताओं का अभाव होते हुए समाप्त में ठोल कार्य करना असंभव हो गया था और जब यह अच्छो तरह समक छिया गया कि यहाँ से होस कार्य नहीं हो सका तब ही परिषदकी स्थापता हो गई। स्थापना हो गई, परन्तु उसे सार्धक बनाना कार्यकर्ताओं पर निर्भर है किन्तु मुकाबिक्षे के तौर पर नहीं। अलग स्थापित करने का नतीजा हमें जतला देना है। महासभा पुरानी है-इस की प्रतिष्ठा भी पुरानी है। परम्तु नवयुवक को हंसाई का डर हर वक्त है। वह अगाड़ी बढ़े तो उन पर भार अधिक है। महोसभा की तरह के ही हमारे प्रस्ताब रहे तो कुछ बात न हुई। ऐसा काम उठाइये जो फैलाच का न हो, पर संगठित हो साक्ष भी ने सब जकरतों को गिनाया है लेकिन बहुत से फीलाब से कुछ शहरत नहीं। एक ऐसी

चीज़ जो सामुदायिक शक्ति को Centralised केन्द्रीभृत कर देती है। मुस्छिम यूनीवर्सिटी का उदाहरण सर्व समक्ष है। अताव अपने 'जैनस्व' को जतलाने के लिए कालिज का होना आवश्यक है। इसरे स्थान पर बोडिंक हाऊसी हारा भी शक्ति समूहरूप में काम में लाई जा सकी है। इला हाबाद में जैन बोर्डिन्म की वजर से ही क्रेनियों की सास कर इन्जत हो गई। अजैनी ने यहां के काम की तारीफ़ की। दरअसल अजीन दुनियां में नाम करने के लिए भिलकर काम करने की जुद्धरत है। वहां सब मिल कर रहेंगे वडां जैन धर्म के तत्वी ब चारित्र को जानेंगे-मानेंगे और उसका अगल करेंगे तब घड अर्ग को जैनी करते नहीं शरमार्थेंगे र उनका चारित्र उन्जवल होगा । तव उस से दुसँरी पर प्रभाव पडेगा कि जैन कालिज में रहने का वह फल है। तम हमारे मध्य ब्रेज्येट पंडित, ब्रेज्येट ब्रह्मचारी होते देर न लगेगी।

सब से बड़ा और सबसे पहिला कार्य हमारे सामने Central College सेन्ट्रल कालिज की स्थापना का है। चहुत से विद्वान कार्य करने की तैयार हैं। उनके दिलोंमें उमंगे हैं परन्तु स्थान नहीं है। उस स्थान के स्थापना की आवश्यकता है।

आने आपने अनेनां द्वारा किए जाने काले आक्षेपों का हवाला दिया कि ला॰ लाजपतरापजी की असदाणी अभी भूली नहीं थी कि सुना जाता है कि मथुरा में होने वाले ऋषिरमार्क सम्मेलन में आर्यसमाजी ऐसी योजना कर रहे हैं कि सत्यार्थ प्रकाश के उस अंश की लाखों प्रतियां वितरण करें जिसमें जैनकार्य का भूंठा संदन है। इसका-जवाब दियां जा सका है, नयोंकि जवाब देना सब को भाता है। परन्तु जरूं स्त है कि वह अपना जनाब ऐसा लिखा जाने जो दुनियाँ तारीफ़ करे। परन्तु ऐसा उत्तर लिखा जाय तो कैते? खोज करने की सामिग्री भी तो एक जगह नहीं मिलती। फिर भला जिन्हगी थोड़ी, काम बहुत तिस पर शक्ति नहीं, समूह का अभाव! भार्यों, कार्यकर्ताओं को मन्द दीजिए, जिससे कार्य हो सके। हतोत्साह न होना चाहिए, चाहे कितना हो शक्ति हीन हो। नाम यूंपरश्ती में वालातर हो गया। निस तरह पानी कुऐं की तह में तारा हो गया।

सभापति के भाषण के पश्चात् श्रीयुत स्तन लाल जी मन्त्री परिषद् ने तब तक की परिषद् की रिपोर्ट निन्न प्रकार प**्कर सुनाई**—

रिपोर्ट भा० दि० जैन पारेषद

भारत दिगम्बर जैन परिष्टु की स्थापना गत वर्ष जगत विस्थात जैन महोत्सव देहली में हुई थी। यहाँ यह बताना आवश्यक मालूम होता है कि इस परिषद्ध की स्थापना की आवश्यकता ही क्यों पड़ी ? यह सबको विदित ही है कि जैन सप्राज की दशा दिन पर अवनत होती जाती है संख्या की अबेक्षा उसका हास बड़े वेग के साथ हो रहा है। जो जैनधर्म भारतवर्ष का राष्ट्रीय धर्म था आज अस्यन्त साधारण अवस्या को पहुंच गया है। जिस समाज में थोड़े दिन पहिंखे जागृति होती मालम होता थी वह किर निद्रा देवी की गोद में जापहुंचा ्रथीर इसमें से जीवन शक्ति जाती रही । जिस भा० व० दि० जैन महासभा ने जैन समाज में स्फ्रिति उत्पन्न की थी वह स्वयं पारस्परिक हेप य अज्ञानता के कारण जर्जरित हो गई और उसके कितने ही कार्यकर्ता उससे पृथक होकर समाजसे उदास हो बैठे। ऐसी अवस्था में कुछ धर्म ब्रेमियों ने साधारण जनता में दिग० जैन धर्म प्रचारार्थ व जैन समाज के उत्थानार्थ इस भाग दिव जैन परि-

वद् के अकुंर को भारत मही पर छगाया । इस अकुंर के सीचने व देख भाल का क यं हमारे उपस्थित सभापति महोदय (बा॰ अजितप्रसाद जी) को दिया गया। पौधा लगा ही था कि खारों तरफ से ओलों की बीछार होने लगी । समय क्रीब ही था कि पौधा मुरका जाता । सूर्य की धूप के समान कुछ देश व समाज दितेषी सहायता के लिये आ गये और परिषद का पौधा हरा होकर अपनी नन्हीं र शाखाओं द्वारा जैन समाज में से अनुकुल रस को खींचता हुआ बढ़ने लगा।

गत महाबीर भगवान के निर्वाणोत्सव पर इस परिषद् पर पौधे की शाला 'बीर' पाक्षिक पत्र का प्रादुर्भाव हुआ । 'बीर' पत्र पूज्य जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के सम्पादकत्व व उत्साही भाई कामताप्रसाद जी के उपसम्पा-दकत्व में सुन्दर २ ब्रान वर्धक जैन समाज के पूर्व गौरव तथा आगामी पथ दर्शक से पूर्ण भाई राजेन्द्र कुमार के द्वारा अति सुन्दर व मनोहर रूप को धारण करके जैन समाज में पुना जीवन शक्ति का संचार करने लगा । और शीव ही जैन समाज के सब दबीं से बढ़ कर ही गया।

अत्रेल मास में इस परिषद् का प्रथम अधिके शन मुज स्फलनगर में सफलता पूर्वक हुना।यद्यी। उस अधिकेशन में इस परिषद् के सनापति श्रीयुन जन्पनराय जी वैरिस्टर तथा पूर्व मन्त्री बाव अजिन्द्रसाद जी (जो इस अधिकेशन के समा-पतित्व के आसन पर सुरोभित हैं) के अनुपस्थित होने से कमी दीखती थी परन्तु परिषद् के अन्य कार्यकर्ताओं को पद अनुभव करके उपर्युक्त दोनों परिषद् के महारथी पूज्य सम्मे ह शिवर की रक्ष के हेतु रांची नगर में निस्वार्थ भाव से मुक्तमें की पैरवी कर रहें हैं और उनका आना असम्भव है संतोष था।

परिषद् को गर्ब है कि उसके दो महान कार्य-कर्त्ता सम्मेद शिखर के मुक्दम की सफल कराने में समर्थ हुये और दि० कैनों के सबों की रक्षा की।

मत मुजक्फरनगर अधि रेशन में परिषद् ने एक कुशल वैध के अन्वेपण से जैनसमाज के रोग की परीक्षा करके प्रस्तावों के रूप में वृदियों का सेवन करना जैनसमाज को बतलाया। उन प्रस्ताव रूपी वृदियों को प्रत्येक निरंप स पुरुष ने पसन्द किया है और जैन समाज के रोगों की वास्तविक औषधि, माना है परिषद् प्रस्ताव रूपी औषधि बतलाकर खुप नहीं रही किन्तु उन प्रस्तावों की औषधि को समाज के सेवन में परिणत करने का प्रयत्न करती रही जो निम्न लिकित प्रस्तावों व उसके कार्य से विदित होगा। प्रभ १-सर्व साधारण को जैन धर्म से परिचय

कराने के लिये एक ऐसी पुस्तक तथ्यार करी
जाने जिसमें जैनधर्म की प्राचीनता व सिर्दात
संक्षेप में आजानें, और उस पुस्तक को भिन्न २
भाषा में प्रकाशित किया जाय। उक्त पुस्तक की तथ्यारी का कार्य पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के सुपुर्व किया। मुक्ते लिखते हुए
हर्ष होता है कि पूज्यवर ब्रह्मचारी जी ने इसी
इटाचा नगर में अपने इसी चतुर्मास के अवसर
पर ऐसी पुस्तक तथ्यार कर ली है जो अस्य
विद्वानों के देखलियेजाने पर प्रकाशित की
जावेगी।

ेप्र०२-जैन सप्ताज की संख्या का वेग के साथ कास देखकर हास का अनुसन्धार करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की है जो अपना कार्य कर रडी है।

"प्र० १-जैन इतिहास की अन्यन्त आवश्यकता सम-भक्तर इतिहास विभाग स्थापित किया गया जिसका कार्य बार्ग्हीरालाल जी M. A. तत्वा-न्वेषी (Research Scholer) कर रहे हैं और जिनके ऐतिहासिक लेख आपके द्रुष्टिगोचर 'वीर' पत्र में हुए होंगे। आशा की जाती है कि आप सामग्री के जुट जाने पर एक बढ़िया जैन इतिहास तथ्यार करेंगे।

प्र० ४-दिग० १वेता० के तीर्थ सम्बन्धी भगड़ों को जैन समाज के लिये अयन्त हानिकारक समभकर कुछ महारायों के डिपुटेशन की नियुक्ति की कि वे इस महान कार्य को करें। इस कार्य को सम्पादन करने के लिये भीयुत् रतनलाल जी मन्त्री व श्रीयुत् नेमीशरण जी सहमन्त्री व श्रीयुत् कीर्तिप्रसाद जी श्रसह-योगी श्रेताम्यरी वकील का एक डिपुटेशन श्रहमदाबाद जाकर महात्मा गांधी जी से तथा जैनसमाज के मान्य अन्य पुरुषों से मिला। यथि इस कार्य में सफलता अभी तक नहीं हुई किन्दु प्रयत्न जारी है दिगम्बरों की तरह श्रेताम्बरी भाई भी एकता कराने के प्रयत्न कर रहे हैं।

प्र2 १-स्कूलों व जैन बौडिं हों में जैन धर्म पर स्वास्थान कराने के लिये एक बोडिं हु विभाग स्रोला गया है। इसका कार्य हाल में मन्त्री बा०बलवीरचन्द्र जी बकाल ने प्रारम्भ जिया है प्र0 =-जैनधर्म प्रचारार्थ उपदेशक विभाग स्थापित किया गया है जिसकी ओर से प्रचाराक घूमने की योजना की जा रही है।

इन प्रस्तावों के अतिरिक्त कई अन्य उपयोगी प्रस्ताव पास किये गये थे जैसे कि मारवाड़ी व देशी अग्रवालों में बेटी व्यवहार किया जावे। जैन सनाज में से व्यर्थव्यय बाल कृद्ध विवाहादि बन्द किये जावें तथा जैन मन्दिरों में महान हिंसा के द्वारा उत्पन्न रेशम तथा चर्बी लगे हुए सुती मशीन के क्यकों का प्रयोग न किया जाकर शुक्ष हाथ के बुने हुए कपड़े प्रयोग में छाये जावें तथा अस्यन्त आवश्यकता के बिना वेदी या बिम्ब प्रतिद्वार्ये न को जावें यदि की जावें तो सादगी के साथ ब्बा-क्यानादि को प्रयम्भ करा कर की जावें।

जीन धर्म का बान कराने के हेनु एक ट्रेक्ट आरमधर्मसोपान समासदों को बितीर्ण किया गया। परिषद् के कार्यकर्ता परिषद् की आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण तथा उत्साही सहायकों के मेमाद के कारण ज्यादा तेज़ी से कार्य न कर सके। मुजफ्फ्रनगर के अधिवेशन में वजट जो पास किया गया था उस कार्य के बलाने के लिर ६०००) की मामदनी की भाषश्यकता थी वहां पर व बाद को केवल १६००) के करीब चन्दा हुआ जिसमें केवल १०००) के करीब चन्दा हुआ जिसमें केवल १०००) के करीब चन्दा हुआ हितनी छोटी सी रकम से उपर्युक्त कार्य ब बीर संवालन किया गया, इस समय परिषद् के पास बिलकुल रुपया नहीं है। बीर में भी भाइकों की कमी के कारण बाटा है जो आपको परिषद् व धीर के निम्न प्रकार हिसाब से झात होगा।

हिसाब परिषद्

्जनवरी १६२३ (स्थापना) से अक्टूबर १६२४ तक

१७७५) परिषष् दान काते

- २५१) राय सा० साह जुगमन्दरकास नजीवाबाद 😁
- १०१) लाष्महाबीरश्लाद राजेन्द्रकुमार विजनीर
- १०१) सा दीराक्षास रतन्सास दक्षील विजनीर

म्ध्रप्त) बङ्गाया दान परिषद्व

- २५१) सा० जुगमन्दरदास जी नजीवाकाद
- १०१) छा० वियलां पदमवसाद मुज़फ्फ़रनगर
- १०१) ला०धूमसिंह बरुबीरचन्द मुज़फ्ज़रनगर

१०१) बाठ नेसीशरण जी M. L. C. बिजनीर १०१) छाठ वियद्धाल पदम प्रसाद मुजप्करनगर १०१) छाठ धूमसिंह बलबीर चन्द " १००) साठ बंडीप्रसाद जी रईस धामपुर १००) बाठ खंडीप्रसाद जी रईस धामपुर १००) बाठ सुमेर चन्द्र जी वकील सहारनपुर १२५) बाठ नेन्द्रिशीर जी डिन्टी कलक्टर धन बाद (भानसूम)

१००) रा० ब० नान्दमलजी अजमेर ५१) स्ना० मोतीलाल जी हाधरस ५१) बा० गोर्धनदास जी रिटायई हिप्टी

Inspector सहारनपुर

१३८३)

३६२) रक्म ४०) से कम

१७७५)

- ५१) ला० नेमीशरण विजनीर
- २५) जैन कुमार सभा मेरठ मा० बा० उम्रुसैन मोस्टर किश्चियन स्कूल मेरठ
- २५) ला॰ बारूमल पारसदाद बसेड्रा ज़िला मुज़फ्जरनगर

त्रतेष्ठ)

१००) ला॰ चंडीप्रसाद जी धामपुर

१००) ला० जम्ब्यसाद जी ननौता

હતે કે)

- हैं। बावत वीर घाटे जो बीरके हिसाव में जमा हैं
 - १५) श्री कुन्दनलाल श्रीराम कलकत्ता
 - २५) से॰फूलचन्द रामजीवनदास कलकर ।
 - २५) ला० बरातीलाल लखनऊ
 - २५) ला ॰ हरनरायण भागलपुर

೯೪೪)

७३०) धीर खाते के नाम घीर को घाटा रहा

९७०॥।इ)। िगम्बर इवेता० ऐक्यता में १००।इ)। खर्च का

प्रां≉)॥ हाक व्ययः

प्रशान) छपाई आदि मुतफरिक

३।⊭)॥। स्टंशनरी

मां)॥ द्रेष्ट्र विभाग

- २) खजाञ्ची साह जुगमन्दरदास
- ४) ला॰ ज्यातिपूसाद जी देवबन्द -
- म्हा) बकाया पास मंत्री बा० रतनसास

(6.438

हिसाब बीर वर्ष ३१ अक्तूबर सन् १६२४ तक

रेक्क्श्राह) ब्राहक फील (६अ) विकायत जा बेंज (७६) दान घोर (७६०) परिषद् के जमाः (५०२) बीर घाटे फंड जमा

₹¥97€)

१.३२) वेतन हार्क १.७३॥।इ.॥ कागज वीर ६३२॥इ)॥ छपाई वीर ८४॥८)।। कटाई बंधाई वीर २.६४इ) विशेष क ४५१।=)॥ पोस्टेज वीर २.९।=)॥ स्टेशनरी ३६॥=) खर्च मुतफ्रिंक

₹40#**#**)

स्वीकृत प्रस्ताव

भ नवस्वर को सारंगाल के ६ वजे विषय निर्धारिणी समिति की वैठक होकर निस्न लिखित... प्रस्ताव निरुवय हुए जो परिषद् के अधिवेदान ५ व ६ नवस्वर की राजि की वैठकों में पास हुए।

प्रश्नि ज ति की गिरती हुई दशा की देनकर यह परिपद् प्रस्तान करती है कि प्रत्येक स्थान की पंचायतें अपने यहां के रिवानों का लिटाज़ रखते हुए एक कम ख़र्म दस्कृत अमल बना लेगें और अपने यहां पालिवाइ, बृद्धिबराइ, कन्या विकय और अन्न ल विवाह को रोकने कि लिए नियम करें कि विवाह के समय कन्या की आयु १३ वर्ष से कम और लड़के की आयु १७ वर्ष से कम न हो और ४० वर्ष से उत्पर कोई पुरुष विवाह न करे। इस प्रस्ताव के विक् द होने वाले विवाहों में कोई सज्जन सिम्मिलत न हों।

> प्रे॰ —वैधरात कन्हैयालाल जी। स॰ —वैध चन्द्रसैन जी।

प्रण २-परिवर् प्रस्ताच करती है कि जैन मन्दिरों में केवल शुद्ध स्वदेशी चन्न ही प्रयोग में लाये जावें और जैनजनता से परिवर्द प्ररणा करती है कि वह भी शुद्ध स्वदेशी चन्न को ही ब्यव-हार में लावें।

प्र०-बा॰ रतनलाल स०-व्र॰ शीतलप्रसाद जी

[प्रस्तात्रक महोदय ने बतलाया कि रेशम के लिये की हैं (रेशन के) पाले जाते हैं की है के मुंह से तार निकलता है और उस के चारों और लिपट जाता है की ड़ा तारों के की ये (जो बड़े बेर की चरावर होता है) में बन्द हो जाता है। को ये को खीलते हुए पानी में डाल दिया जाता है की डा अन्दर मर शता है फिर रेशम का तार निकास किया आता है। यदि इस तरह से की दे को न सारा जावे तो यह कार्टकर निकल आता है और रेग्राम कर जाता है। इस तरह रेशम महा हिंसा का कारण है।

मशीन के बने सूती कपड़े में वर्धी का प्रयोग होता है प्रस्तावक म शेर्य ने कहा कि मैंने है। यं अदमदाबाद की ज़ुबली मिल में देखा है कि चर्यी और सड़ी हुई मैदा की जिसमें भी की ड़े पड़ जाते हैं बान बनाई जाती है सूत को मज़बूत बनाने के लिये बर्जी की पान में सूत को भिगो देते हैं और सर्जी सूत के अन्दर पेवहत हो जा गि है वर्षी जानवरों को मार कर निकाली जाती है इस तरह से मशीन के बने हुए सूती कपड़ों के बनाने में बड़ी हिंसा होती है। अहिंसा धर्म पालक जैनियों को ऐसे बक्त काम में न लाकर सुती हाथ के बुने हुए बल्ल यानी खहर प्रयोग में लाना चाहिए।

प्र• ३-जैन समाज के शारी रिक बल के हास को देवते हुए यह परिषद प्रस्ताव करती है कि प्रस्थेक प्राम और नगर में व्यायाम शालाएँ स्थापित की ात्र और समाज के सुबक्षों से अपने शारी कि बल को बढ़ाने के लिए उन में सिम्सिक्टत होने को प्रेणा करती है।

प्॰ प्॰ बसन्तळाळ

स॰ वैद्याश कन्हैयाकाल का
प्र०४-पर भा० दि॰ जैन परिषद्व श्रीमान चायतराय जी बैटिटर, हरदोई, श्रीमान बायू
अजित श्लाद जी वकील और श्रीमान ला॰
देवोलहाय जो रईस ने शिकिर जी केल में जो
अपूर्व स्वार्य स्थाग से सेवा की है उसके लिए
कोटिशः शामारी है और उनके प्रति अपनी

इतकता प्रकट करती है।

प्र० वा० क्यवंन्द रईस कानपुर

स० वा० कामता प्रशाद-जी अलीगंज

प्र० प-औरंगावाद (रियासत हैदराबाद) में उत्तरीय भारत से गर हुए दि० जैन अप्रवाल
भाइयों के अब केवल ४० घर ही रह गए हैं
सम्बन्ध न मिलने से उनको अपना अस्तित्व
रखना दुःसाध्य है, अतरव यह परिषद सर्व
भारत के जैनी अप्रवालों से पूरणा करती है
कि वह उनके साथ सम्बन्ध करके उनकी

रक्षा करें।

पू॰ सेड कर्हा चन्द साह औरहाबाद (दक्षिण) स॰ ला॰ भगवानदास जी

[पुस्तावक महोदयने बड़े करणा जनक शब्दों
में पुस्ताव रक्खा और कहा कि मौहमद तुगलक के
जमाने में देहली से सात आउ सी जैन अप्रवालों
के घर दक्षिण दौलताबाद में जाकर बस गये दूर
होने के कारण विवाह सम्मन्ध बन्द हो गये। एक
मौहल्ला अगुवालों के नामसे मगड़्दर है। यद्यपि अब
बद्द मौहल्ला वर्षाद होगयो है। काल की गति से
अप केवल चालीन घर रह गये हैं यदि आप होगों
में (उत्तरीय अपूब लों ने) सक्ष्यन्ध नहीं किया
तो हम दक्षिण अगुवालों का नाम भारतवर्ष से
जाता रहेगा।]

नोट—दक्षिण अगुवालों में कोई दोप नहीं है गोयल गर्ग आदि गोत्र हैं जैन धर्म के अस्तित्व के कायम देखते वालों का कर्तन्य है कि दक्षिण अगुवालों की रूग करें। प्र.० ६-यह परिषद् प्रस्ताय करती है कि कुछ काल से जो जो जातियां देश भेद से तया कई अज्ञात कारणों से पृथक् २ हो रही हैं और बरावर सदाबार शीलादि से निद्रींप होने हुये भी-विभक्त हैं वे परस्पर प्रेम बद्राकर रोटी वेटी बयबहार करें।

प्रतावक बा॰ कानता गुसा इजी सनर्थक पं० भूमन लाल जी [पं० भूमन लाल जी ने प्रसाव के समर्थन करते हुवे कहा कि बहुत सी जातियां कुछ जात भज्ञात कारणों से पृथक् २ हो गई हैं उन में रोटी बेटी ब्यवहार प्रस्म होना चाहिये जैसे मालवा प्रत्तीय और पटा जिला के पन्नावती पुरवार एक हैं बा बुढ़ेले कपिला लवेचू और करहल आदि मध्य प्रतीय लंगेचू सब लंगेचू हैं तथा बुन्देलकाड और महाबर के गोलालां एक हैं। इसी तर से बहुत सो जातियां हैं इन में रोटी बेटी ब्यवहार करने में किसी प्रकार की

पू० ७-यह परिषद्ध सब ौन पश्चायतों से अनुरोध करती है कि जैन इतिहास के हेतु सामग्री धंकिकत करने के लिये वह अपने २ यहाँ की प्रिमाओं प यन्त्रों के लेखों की नकत करके परिषद्ध आफिस में भेजें।

प्रतावक सभापति।

प्० म-जैन गमाज में हिन्दी की उच्च शिशा का
अभाव देखते हुवे यह परिषद् प्रताब करती
है। कि जैन विद्यार्थियों को विशेष कर से हिन्दी
साहित्य सम्मेन्द्रत की परिश्वाओं में सम्मितित
होरा खाहिये। और जैन सम्राह्म के प्रचीत

धुरंधर कविवरों की पृतिमा शास्त्री रखनाओं के महत्त्व को सर्व साधारण जनता में पृगट करना वाडिये।

प्रस्तावक सभापति

प्र० ६-यह परिवद् श्री समोद शिक्षिर जी सम्बन्धी
पूजा फेस की अपील जो इस समय प्रिवी
कौंसिल में पेस है और जिसका प्रभाव दि०
जैन के स्वत्वों पर पड़ता है उसका ध्यान रख
कर यह परिवद् अपने सभापति श्रीमान्
च । पतराय जी वैरिष्टर से प्रेरणा करती है कि
उत्पूर्ण अपील की पैरवी के लिय स्वयं इक्षलैंड को पधार कर उचित प्रबन्ध करें ताकि
दि० जैनियों के हक्क की रक्षा पूर्णकर से
हो सके।

प्र•-ते॰ व्र० श्री शीतलप्रसाद जी स॰-त्रत्ररचन्द जी जैन

प्र०१० यह परिवर् देश की परिस्थित देखकर यह उचित समकती है कि भारतवर्ष की मिन्त २ जातियों के एकता सम्मेलत (Peace at bitration Board) में जैनियों के प्रतिनिधि होना आवश्यक है। अत्राप्त एकता सम्मेलन और उसके समापति म० गांधी जी से अनुरोध कारती है कि जैनियों का कम से कम एक प्रतिनिधि अवश्य रक्खें।

प्र०-कामताप्रसाद

स०-भगवानदास औ

इस प्रस्तात की नकत और इस संबंध में पत्र व्यवहार में गांधों से किया जा । प्र• ११-वर्षों से सेंड विरंजी लाल जी बड़ कात्या का निमंत्रण आयो है कि परिषद का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन वर्धा में माघ शुकला बीर सम्बत् २४५१ में कर लिया जाने यह परिषद् निमंत्रण को स्वीकार करती है।

> प्रस्तावक बा॰ रतनलाल समर्थक—राजेन्द्र कुमार

नियमावली

१ इस सभाका नाम भाविक्जेन परिषद् होगा। २ परिषद् का उद्देश्य दिव्जेन धर्म प्रचार और जैन समाज की उद्दित करना है।

३ प्रत्येक दि० जैन धर्म हुया थी जिसकी आयु ११ वर्ष से कम न हो और जिसको परिपद्द के उद्देश्य संबीहत हो नियमित फार्स भरने पर और कम से कम ॥) वार्थिक परिस देने पर परिपद का सभा सद हो सकेगा। गृद्या भी महानुभाषों से कोई फीस न ली जा देगी।

संगठन

भाव दि० जैन परिषद् के आंधीकः— अ-प्रान्तीय दि० जैन परिषद् । था-ज़िला ,, ,, ।

ं इ-ह्यानीयं,, "क्रमवार रहेंगे। पिट यंदु के उद्देश्य के किसी अंग को पूर्ति करने वाली संस्मर्यं भी इन परिषदों के आधीग हो सर्हेगीं।

इनका संगठन निम्न प्रकार होगाः—

स्थानीय दि० जैन परिषद

अ-एक वा अधिक प्राप्त अथवा नगर के रहने बाले कम से कम पांच समासद्द, स्थानीयदि० जैन प्रिकृत स्थापि। कर सकेंगे।

जिला दि॰ जैन परिषद

आ—जिस जिले में कम से कम २५ सभासर होंगे वहाँ जिला परिषद् स्थापित हो सकेगा। उस जिले की समस्त स्थानीय परिषद् जिलापरिष्द के आधीन होंगी।

मान्तीय दिगम्बर जैन परिषद

इ-जिस प्रान्त में कम सं कम दो ज़िला परिषद् अयम ५० सभास र विद्यमान होंगे । वहाँ प्रान्तीय परिवद् स्थापित हो संकेगी । उस प्रान्त के समस्तः ज़िला परिषद् उस प्रान्त य परिषद् के आधीन होंगे. शासन

६-प्रत्येक परिषद् के कार्य को निर्धारित व संचा-छन करने के छिए निस्न छिबित प्रबन्धकारिणी

(१) भार्ग र जैन परिष्टु सिमित के अधिक से अधिक पर और कमसे कम २१ समास होंगे (२) प्रान्तीय दिर जैन परिष्टु सिमित के अधिक से अधिक ३५ और कमसेकम ११ सभास होंगे। (३ ज़िला रिर जैन परिषट् सिमित में अधिक से अधिक २१ और कम से कम ५ सभासह होंगे (४) स्थार्नीय परिषट् सिमित में अधिक से अधिक २१ और कम से समास होंगे (४) स्थार्नीय परिषट् सिमित में अधिक से अधिक ११ और कम से सभास होंगे, पदाधिका ते इसी संख्या में सिमिलित सम्भे जार्थेगे।

समितियां होंगी।

9-जो इस परिषद् को किसी शावा परिषद के ,फीस देकर सभासद होंगे वह अपनी से ऊपर बाली शाला परिषदों के भी सभासद होंगे और वह शाला परिषद् उस फीस को भाजदिक औन प्रस्थिद को भेग देगी।

_{मह}प्रायेक परिषड् में निक्कलितित पदाधिकारी होंगे

- (१) समापति (आवश्यकतानुसार एक वा अधिक उपसभापति)
- (२) मन्त्री (आवश्यकतानुसार एक वा अधिक सहमन्त्री)
 - (३) कोषाध्यक्ष (एक वा अधिक)
 - ६-प्रत्येक परिषद् का रुपया व हिसाब इसकी समिति रक्खेगी और ऊपर वाली समिति उसका हिसोब परीक्षक (Auditor)द्वारा जांच करा लेगी।
- १०-प्रत्येक परिपद् का कर्तब्य है कि वे भा० परि-षद्ध के या उसकी समिति के स्वीकृत किये हुए प्रस्तावों को पृयोग में लावें तथा अपने से ऊपर वाले परिषद् वा उसकी समिति के निर्णय को स्वीकार करें।
- ११-प्रयेक परिषद् व उनकी समितियों के पदा-धिकारियों का चुनाव प्रयेक तीसरे वर्ष उस परिषद् द्वारा हुआ करेगा, और प्रयेक समिति का चुनाव भी उस परिषद् द्वारा प्रति तीसरे वर्ष हुआ करेगा।
- १२-सिमितियों की बैठक पृग्यक्ष व परीक्ष दोनों प्रकार हो। सकेगी। कोरम उस सिमिति के सदस्यों का पांचवां माग होगा। यदि पांचवें भाग के कोरम की संख्या तीन से कम आवेगी तो कोरम तीव होगा।
- १३-पियद् च उनकी समितियों के सम्पूर्ण निश्चय बहुमत से हुआ करेंगे। समान पक्ष होते पर समाम्यति की दो समाति समभी जावेंगी।
- १४-सारत पश्चिड् के फिली आवश्यक कार्य में ... ज्या बजट से अधिक २५०) तक समापति और १००) तक मन्त्री कर सकेंगे। अधिक

न्यय समिति की आहा से होगा।

सभापति का निर्वाचन

- १५-भा० दि० परिषद् का जिस पुन्त में अधिवेशन होगा उस पुन्त का स्वागत कारिणी समिति होगी। जिस झिले में पुन्तीय पारषद होगा उस जिले की स्वा० का० समिति होगी। इसी तरह से अन्य परिषदों की स्वा० का० समि-तियां होंगीं।
 - १६-मन्त्री परिपद का कर्तव्य होगा कि स्वागत कारिणी समिति से सभापित के लिये नाम मंगाले यदि वह उचित समक्षेतो और नाम बढ़ाकर उन नामों के लिए परिषद् की समिति सं सम्मति लेलें। बहु सम्मति से सभापित का निश्चय होगा यदि सभापित के लिये सम्मतियां वरावर होंगी तो स्वा॰ का० वहुमत सं इस का निर्णय करेगी।
 - १९-परिषद् के अधिवेशन की विषय निर्धारिणी समिति में उस परिषद् के प्र० का० कमेटी के सर्व उपस्थित सदस्य और स्वा० का० के सभापित एवं मन्त्री होंगे। इनके अविरिक्त स्वा० का० और प्रतिनिधिगणों में से मी सदस्य उस समय की उपस्थित के अनुसार उचित संख्या में चुने जांयगे। उचित संख्या का निर्णय सभापित करेंगे।
 - १६-प्रत्येक प्रताव विषय निर्धारिणी समिति में उपस्थित किया जावेगा । उसके पश्चात् अधिवेशन में रक्खा जावेगा ।
 - १६-सर्व पस्ताव मन्त्री परिषद के पास विषय निर्घारिणी समिति की बैठक से एक दिन

पहिले आने चाहियें। आवश्यक प्रस्ताव मंती तुरम्त भी ले सकेगा।

२०-भा । दि । जैन परिषद् का मुबपत्र "वीर"
होगा जिसके सम्पादक व उपसम्पादक व
प्काशक भी परिषद समिति निश्चय करेगी ।
२१-सभापति, उपसभापति, मन्त्रीगण कोषा :यक्ष समिति के सदस्य समने जावेंगे। माञ्परिषद् समिति के सदस्य समने उपसम्पादक च प्काशक भी होंगे।

२२-निम्न लिखित अवस्था में किसी भी सदस्य का प्थकरण होसकेगा—

[क] दो वर्षतक चन्दान देने से।

[स्त्र] त्यागपत्र देने से ।

[ग]मृत्यु होने से ।

[घ] परिषद् का नियम भंग करने से।

नोट—नियम (घ) में निर्णय करने का अधिकार

.प्र० का० स• को होगा।

२३-कोषाध्यक्ष अपने पास १०००) तक रख सकेगा। अधिक होनेपर सभापतिको सम्मित से विश्वास योग्य स्थान पर जमा कर देगा। २४- परिषद् का वार्षिक अधिवेशन पृतिवर्ष किसी उचित स्थान पर हुआकरेगा और आवश्यका जुसार नैमिक्तिक अधिवेशन भी हो सकेगा। मंत्रीका कर्तव्य होगा कि वह अधिवेशन की स्वना कमसे कम १६ दिवस पूर्व सभासरोंको अवश्य दें।

२५-अधिवेशन में निम्नलि० सज्जनों को राय (बोट)
 देने का अधिकार पुाप्त होगाः—

(क) परिषद के सभासद

(स) भिन्न २ पञ्चायती तथा स्थानीय सभाओ

हारा निर्वाचित प्रतिनिधियण जिन की स्चना कमसे कम तीन दिन पूर्व मंत्री स्वागतकारिणी समिति के पास आजानी चाहिये।

२६ वार्षिक अधिवेशन पर आगामी वर्ष के लिये व्यय का वजट पास हुआ करेगा।

२७- परिषद का हिसाब जांच करने के लिये प्रधन्ध कारिणी कमेटी हिसाब परीक्षक (आडीटर) नियुक्त किया करेगी।

२८- किसी आवश्यक्ता उपन्धित होने पर उप-युं क नियमों में परिवर्तन हो सकता है । किन्तु ऐसा परिवर्तन वार्षिक अधिवेशन पर हा हो सकेगा।

> प्रस्तावक-मंत्री बा॰ रतनलाल समर्थक-कामतावसाद जी परिषद् को सहायता

इटावे में अपील करने पर निम्न लिखित परि-पह को सहायता प्राप्त हुई:-

#१०१) बा० धूमसिंह Sub Engineer इटाबा

१५१) बा॰ शिवचरन लाल जसवन्तनगर बास्ते पुस्तक उपहार

१०१) ला० रूपचन्द जी रईस कानपुर चास्ते लेख जैन हिन्दी कवि

#५१) ला० लखमन दास जी इटावा

#५१) ला० चन्द्र सैन जी बैद्य इटाबा

४१) ला॰ मुन्ना लाल अजबपुर

#५०) भीयुत चम्पतराय जी वैरिष्टर हस्दोई

५१) ला॰ फुलजारी शास जी रईस करहल्

११) ला॰ कपचन्दजी वैद्य पूजा कारक इटाबा

नोट शब्द वाली रक्ष वसूल हो गई है

- ११) एं० बसन्त लाल जी
- x) **बा॰ बस**न्तीलाल जी
- २) बा॰ मुन्ना लोल जी
- . २) बाव मंगतराय समाता
 - २) बा० मेवा राम जी पांडे
 - u) सेउ दीपचन्द जी
 - २) सेउ भुन्नीलाल जी

६=૭)

१६३) रकम ५० से ध.म

EÃo)

परिषद् की ६ नवस्वर की काररवाई परिषद् के संगानी सभापित भी युत् चम्पतराय जी के समा-पतिस्व में हुई मंगलाचरण ब्र॰ शीतल प्साद भी ने किया वर्धा से सेट चिरञ्चीलाल का तार परि-पद के निमन्त्रण का पढ़ा गया । अन्त में सर्व उपस्थित सज्जनों व महिलाओं को भन्यवाद देकर पूज्य ब्र॰ शीनल प्रसाद और पं॰ भूममन लाल जी ने शान्ति स्तवन का पाठ किया और सानन्द महोत्सव 'जैन धर्म की जय' के शब्द गुंबार के साथ पूर्ण हुआ।

सम्पादकीय टिप्पंशियां

नृतन वर्ष

वीर के नवीन वर्ष का पृथमोइ पाठकों के हाथों तक पहुंच चुका है। आराा है उसका उन्हों ने समुचित स्वागत किया होगा। और हमारी गत पृथिना को भी स्वीकार किया होगा। स्वयं ब्राहक चनाया होगा। उन्हों के सहयोग से हम इस नृतन वर्ष में भी सकेल हो सकेंगे। पृभू वीर की पित्र वाणी का प्चार और महत्त्व प्कर करने में कुछ उठा न रक्षों। विश्वास है कि प्रभू वीर के पृति सेवा और भक्ति भाव के अनुप्रह से भविष्य भी हमारा साथ देगा और हम अपने मान्य लेखतों और प्रिय सहायकों के सहयोग से संकल मनोरथ हो सकेंगे। अत में भावना है कि यह वर्ष 'वीर' को और 'वीर' के हितैषियों को सुख कर हो। औ वन्दे वीरम्।

इटावः महोत्सव और परिपद् का नैमित्तिक अधिवेशन

इटावा के सभ्यों से सिमिलित होने का सुभव-सर भी जब तब प्राप्त होता है परन्तु कुछ गत महीनों से उन के निकट से जैन धर्म के सम्बन्धमें अनोखे ही ग्रान्ट सुनाई पड़ने लगे हैं। जिस व्यक्ति से जैन पने का जिकर आजाए तो ख्वामलाह वह एक प्रशंसा की लड़ी बांधदे। सो भी केवल धर्म की नहीं धर्मात्मा की भी! पाठको, इस धर्म प्रभाव का कारण और कुछ नहीं है, केवल आप के पूज्य संपादक ब्र० शीतलप्रसाद जी के वहाँ चातुर्मास करने का यह प्रत्यक्षफल है। इटावे की जैन जनता तो आज आप की सरसंगति से अवश्य ही "जैन" कहलाने की हकदार है। वहां गऊ बत्स बत प्रमें का साम्राज्य नहार आता है। यही कारण है कि भर्म कार्यों की शिशेषता भी वर्ष पर जन्म शहण कर रही है। वहां के प्रसिद्ध जैन वैद्य ला॰ रूप वंद्र जी ने इस हर्षी पल्झ में श्रेलोक्य मंडल पूजन ता॰ इसे ७ नवस्वर तक कराया था और परिषय इको भी निमंबित किया था!

इधर नवीन वर्ष का शुभागमन-उधर एरिपर् ्का 'इष्टि-का पथ' (इरावा) में पहुंचना ! इस से उत्कृष्ट और क्या शुभसंवाद हो सक्ता है। परिपद् इंटि के पथ पर पहुंच गया यह शुभलक्षण है। कार्यकर्ताओं को उत्सादित करने में पूर्ण सहायक है। तिस पर 'बर बां! से उस का निमन्त्रित होना उनको कार्य करने के छिए थिशेष आहाउन है। समाज कार्य करने वालां-निःस्वार्थ सेवियां की कदर जानता है। उसके अगाडी कार्य भी बहुत है, परन्त कार्य करने बाले इनेगिने हैं। जो हो परिपद का नैमिसिक अधिवेशन विशेष महत्त्व को लिए हुए पूर्ण हुआ है। प्रस्ताव जो पास हुए हैं वह सब आवश्यक और प्रभावशाली हैं। उनका कार्यरूप में परिणत करना अब हमारा कर्तब्य है। विना सहयोग के सामुरायिक शक्ति के कार्य नहीं चलता है। परिषद् के मेम्बरों और कार्यकर्ताओं को उन का अमली प्रयोग शीव्रतम करना चाहिए। जैन जाति में ऐसी बहुत सी छोटी २ सम्प्रदायें हैं कि यदि उनका विवाह क्षेत्र बढा न दिया जाय ता वह शीव ही नष्ट हो जावें। इसही भयंकर भय को स्थय कर परिषद् ने इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया है। अब आवश्यकता है कि जाति हितेषी सज्जन इस प्रस्ताव को उन छोटी २ सम्प्र-द्वायों तक पहुंचाई और उनका विवाह क्षेत्र बह-बाने का प्रबन्ध कराई जिल्ले वह सार्थक होसकें।

जैन हिन्दी साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने के लिये जो प्रस्तात्र स्वीहत हुआ है सकी ये जना होना भी आवश्यक है। प्रभावशाली प्राचीन जैन साहित्य किस प्रकार संसार से छिपा हुआ है उसकी देखते हुए यह प्रस्ताव बड़े मार्के का है। तीर्थराज की रक्षा के लिए श्रीमान चम्पतराय जी से विलायत जाने की प्रार्थना करना और उनका उसे स्वीकार करना एक अद्वितीय बात है। एकता सम्मेलन में जैन प्रतिनिधि को आवश्यकता प्रगट करना अवने राजनैतिक अधिकारी की रक्षा का परिचायक है। इस सर्व अवेक्षा सं परिपद का यह अधिवेशन विशेष महत्त्वशाली था । उसकी सहायता भी जनता ने यथाशक्य अच्छी की है, परन्तु अब भी उसको अपने सब कार्यों को करने और प्रस्तार्यो को अमली जामा पहिनाने के लिए रुपयों की आवश्यकता है। समाज में ठोस कार्य करने को यह अवतीर्ण हुआ है। इस हेन् द्रव्य की प्राप्ति होना परमावश्यकीय है।

परिपद के साथ ही जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा के उत्सव भी महत्वराली रहे। जैन-अजैन सर्वत्र बान की महिमा का भान प्रगट होने लगा। इटावा में पहिले भी बड़े २ श्रिधिवेशन हो चुके हैं, परन्तु जो प्रभाव इस अधिवेशन का रहा वह पहिले कभी नहीं देखा गया। अजैन विद्वान जैन दर्शन का मह-त्व परख गए। बाबू गुरू नारायण, इन्जिनीयर तो सदैव ही तन्वान्येपण में तत्पर देखे गए। यह सब फल, सम पुण्य-प्रवृत्ति सत्संगित विशेष शुभोषयोग के संस्करण से हुई है। जैन धर्म भूषण प्रश्रीतल प्रसाद जी का वहां चानुमीस होना धर्म की अड़ क्रमाना हुआ है। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण को उस

समय आंखों अगाड़ी था जिस समय आप वहाँ से ता० = की साँयकाल को हिस्त्रनापुर को प्रस्था-नित हुए थे। जीन और अजैनों-ब्रह्मण और वैश्यों स्त्री और पुरु ों से जैन धर्मशाला खवाखब भरी पड़ी थी। सर्व के मुखाकृति एक अति पीड़ा जनक विदार के चिन्ह प्रगट होते थे। सर्घों ने सप तरह से गगट शब्दों हारा ब्र॰ जो का आभार स्वीकार किया और उनकी विदाई पर दुः त प्रकट किया। उसी सत्रय जो अभिनन्दनपत्र उन्हेंने ब्रह्मचानी जी को समर्पित किया और उन्हें 'वर्ष दिवाहर' की पर्वो से बिस्पित किया वह उन की हृदय भिक्त और इतक्षता का विकायक है। तिसार व॰ जी की अस्थान का दृश्य ती इस का प्रत्यतसाती था। स्त्री पुरुष आपन्दाज् चडा रहे थे । अपने हृदय कृतकता के आपेश में बैण्ड बाजे के साथ २ महाराज को गाड़ी में बैठाल कर पुरुष चौं।साब २ चछ रहा था, धर्म 'दिना क (र्जाः"व ० र्जाः की जयके नारं बुलन्द्र थे। अगाड़ी रायं सेवकों ने स्वयं घोड़ा हटाकर गाड़ी खीचना **प्रारंभ किया । सब लोग लगग र । अपूर्व दा**न्सत्य भक्ति का दृश्य था ! बार् गुरु गरायण सरीखे अर्जन बिहार्जी ने उस में हा व पराते अवना गौरव संत्रका इस से बढ़ कर और धर्म प्रभावना क्या हो सकी है ? किर हुं इफ़ारप्र पर जो दृश्य था वड़भी अनौखा था। सारांगतः उस सन्नय को हर बात प्रव जी के प्रभागको प्रकट कर रडी थी। गाडी चठ दी परन्तु तो भी लोग नगर। आबिर को जाना ही पड़ा । उस स्ततनगर से वाविस हो लिए। बस्तुतः आज पूज्य ब्र॰ सङ्कश अनेकों धर्मवीरों की आवश्य-कता है और यह आंत्रश्यका तबही दर्ण हो सकी है

जब सेन्ट्रल काश्विज स्थापित हो सके जहां उच्च-धंशीय विशाल प्रखर बुद्धिके धारक जैन विद्यार्थी अंग्रेजी के साथ २ धर्म कान के पारगामी विद्वान बन सकें। इसीलिए ज़रूरत है कि परिषद को सक्त बनाया जार और उसकी सहायता हर तरह से की जारे। जैन धर्म की उन्ति के लिए निः स्थार्थ त्यागियों की आज परमावश्यका है। तो भी पाउकों, और परिषद के सभासहों, यदि आप को परिषद में गांहे तो परिषद हात स्वीकृत प्रस्तावों को काम में लाइए। तम ही आपका और सब का कल्याण है। प्रमावश्वा।

जैन तत्व प्रकाशनी सभा

उक्त सभा का अधिवेतन भी इटावे में श्री त्रेलोकाविश्रान पुजन व रयायाचा के अवसर पर हुआ था। ता० ४ को बारू शिवचरण लाल जो ं के सभापति व में अंशीत र प्रसार जी, बार् रतन लाल जी, बाबू काजना प्रसाद जी और बाबू राकेन्द्र कुप्रार जी के ब्या स्थान हुए थे। ता० ५ की रात्री को पूज्य ब्र॰ जी का ब्याख्यान ''युरुषार्थ''' पर हुआ था । ता० ६ को श्रीमान वैरिप्टर चम्पत-राय जी के सभापतित्व में ब्र॰ जी का आत्मोनित पर व्याख्यान हुआ था। उसमें आपने हिन्दू संग-ठन के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किए थे। कड़ां था यदि चोटी वालों का इसे संगठन करना है तो जैनी सम्मिछित हो सक्ते हैं। यदि उससे भाव वेदों के मानने वालों के संगठन से है तो जैनी शानिल नहीं हो सके । समापति महादय ने भी इसकी पुष्टी की थी। कहा था कि यह संगठन सामाजिक Social है। इस हेतु से

यहि इसका नाम भारतीय सभ्यता संगठन रक्षा जाता तो उत्तम था । आज इटावा के सर्व प्रमुख जीन अजीन पुरुष उपस्थित थे । जिला मजिन्द्रेट मिं। मैफलिओड साहव और उन की मैम साहिया भी पधारी थीं । सभापति ने अपना व्याख्यान तुझनात्मक धर्म Comparative Religion पर दिया था। जिसमें आपने पहिले जैन मतानुसार आत्मा की सिद्धि और उसमें ही सुख. ज्ञान, अमर पने आदि की सिद्धि की थी। इसको Metaphy Sical सेद्धान्तिक साक्षी से ही नहीं बल्कि म० बुद्ध के कथन से भी सिद्ध किया था कि मनुष्य स्वयं सर्वत्र हो सका है। भगवान महावीर की सर्वज्ञता को बुद्ध ने स्वीकार किया था । आग्मा के अस्तित्वको Physiological Psychology ने भी प्रमाणित कर दिया है। Catholic psychology भी उसे स्वीकार करती है। और यह दोनों उसे Simple अखंड परार्थ बतलातीं हैं। अगाडी आप ने इन्हीं सिद्धान्तों को हिन्दुओं की आत्मरामायण से सिद्ध किया। आत्मा ही परमात्मा है यह ईसा-इयों के Be ye therefore perfect even thy

father is in Heaven और मुसलमानों के मैं अरब हूं विग्रीर पेन के यानी रब हुं"से सिद्ध है। परन्तु संसारी आत्मा में वह कपाय के कारण सोया हुआ है। वह नप्ट हुआ कि आत्मा जागा। यही कारण है कि त्व वेत्ताओं ने कहा कि (Man know Thyself) उपरान्त आपने विविध धर्मों की विभिन्नता का कारण विछला रिवाज वतलाया कि पहिले धामिक सिद्धान्त तसवीरों में Pictorial Langvage प्रगद किया । इस रूप में प्रगट करने का कारण यही था कि उस समय लोग प्राचीन बातों के खिठाफ कुछ नहीं सुनना चाहते थे। St.Panl ने साफ कहा कि यह Allegery आलंकार है। आपने हजा ों ही ं.से अलंकारों के पने लगाउ हैं। उदाहरणार्थः— हिन्दुओं के रात = ज्ञान, दशरथ = मन काबू किया हुआ, कौरिएया = निर्दृति हैं। इस प्रकार आपने विशेष विहासा के साथ अन्य धर्मों में जैन धर्म कं सिद्धान्त छुपं हुए प्रगट किए। जिसका प्रभाव जनता पर त्रिशंप पद्मा । अन्त को सभा सानम्द पूर्ण हुई।

गताङ्क का चित्रपरिचय

श्रीमान् व्र० धरणेन्द्रदास जी-आप आरा के रईसों में एक अप्रण्य रईस हैं। दि॰ जैन धर्मानु-णायी अप्रवाल वंशज हैं। बचपन से ही आपको सालनपालन उसही रीति से हुआ था जिस रीति से हम जैन शास्त्रों में सुकुमाल कुमार के विषय में पहते हैं। तो भी आपने हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी भाषा में बी० ए० तक योग्यता शास की। यह सब

होते हुए भी आपने जो अपूर्व कार्य स्वार्थ त्याग इस काल में किया है कि घह हमें पुराण वर्णित-राजा महाराजाओं के त्यागों का स्तरण दिला हेता है। स्वली और अन्य सम्बन्धी एवं अट्टट धनराशि होते हुए आपने उनसे मोह तोड़ दिया है और ब्रज्ज्चर्य प्रतिप्रा का पालन कर रहे हैं। मद्रास प्रान्त में भीमन् कुन्दकुन्दाचार्य के तपस्थान पर आपने एक उदासीनाश्रम स्थापित किया है, और वहीं आप बिद्यालय और एक शुस्कालय स्थयं स्थापित करने की योजना कर रहे हैं। वस्तुनः जैन समाज के उद्घार के लिए आज ऐसे ही निःस्वार्थ सेवी गृहत्यागियों की आवश्यकता है। हमको आपसे जैन धर्म और जाति की प्रभावना के लिये बहुत सी आशायं हैं। विश्वास है कि हमारी इन आशाओं की पूर्ति शीव होगी। और आप आत्मोन्नति से विशेष अप्रसर होंगे।

२ श्रीशास्त्रविशारद विजयवर्ष सूरि जी-की मूर्ति से कीन नहीं परिचित है। आप श्रेताम्बर आसार के साधुसंघ के आचार्य थे। देश-विदेश सर्वत्र आप सुविख्यात् हैं। आप के निःस्वार्थ पार माधिक कार्य अप्रण्य हैं। आप के निःस्वार्थ पार माधिक कार्य अप्रण्य हैं। आप के निःस्वार्थ पार माधिक कार्य अप्रण्य हैं। आप के विद्यत्ता की धाक अजैन भारतीय विद्यानों पर ही नहीं किन्तु विदेशी विद्वानों तक पर पड़ी हुई थी। डा० सैलिशन लेवी प्रभृति आ को दर्शनों को शिव रूरी पथारे थे। अजैन जनता में आपने जैन वर्म की विशेष प्रभा चना की थी। समय भारत में पैदल घूनकर प्राप्त २ आपने धर्म का उद्योत और अहिंसा का प्रचार किया था। आप श्वे० थे परन्तु दिगावर को भी सम्मन दृष्टि से देखते थे।

३ बाबू मुझालाल जी-लंबेच् मूल में हति-कांत ज़िला इंद्रावा के रईस थे, जहां पर पहिले किसी २ काल में, कहते हैं कि एक साथ ५२ प्रति-ष्टार्ये होच्की हैं। व्यवसाय के कारण आप अपना वितृगृह त्याग कर कलकत्ते पधारे थे। और वहां पर उन्होंने जो उन्नति प्राप्त की थी वह उनके स्वावलाबन की परिचायक है। आप विशेष धर्मरत विहान धरवान थे। हित्य प्रति अपना ध्ययसाय करते, परन्त साथ ही जो लोग आपके वैद्यक ज्ञान से लाभ उठाना चाहते उनके साथ वह कौरन चले जाते और स्वयं अपने पास से दवा देते। प्रति दिवस किसी शास्त्र की प्रतिलिधि में अग्य अवश्य संलग्न रहते,थे। आपने अपनी लक्ष्मी का सद्ध-योग भी विशेष धर्महत्य करके किया है। इटाबा में पक्की धर्मशाला और नवीन जैन यन्दिर आप की पवित्र स्मृति हमेशा दिलाते रहेंगे । परिषद्ध का अधिवेशन वहीं पर हुआ था।

घर बैठ बम्बई

का सभी माल बहुत ही किफ़ायत भाव से बी० पी० हारा भेजा जाता है जैसे सूती, उनी. कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े सोना, चांदी, गीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें ग्लास के चीनी का सामान देशी व अंग्रेज़ी दवाव तेल अंतर वार्तिस व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देशो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल दिमाग् के सब रांगों पर रामबाण

दिसाग की हर प्रकार की कंत्रजोरी सिग्दर्व चक्कर थाना आँखों से धुंधलापन नज़र आना, बालों का बेसतय पकता थादि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है । बालों को लब्लेदार और मुल्यसम बनाता है। मूल्य १) इ० व शौशी का, २॥। ६ शीशी पा) २० १२ शीशी १०। ६० व्यापारिया, पर्जुद्धों को, प्रकृत्व स्ववद्धार करना चाहिये। प्रता — मेसर्ज शर्मा एण्ड कम्पनी कनीशन एजेग्ट बम्बर्टू ने० १८

संसार दिग्दर्शन



समाज

-महासभा के अधिवेशन के लिये ता०२३, २५, २५ दिसम्बर निश्चित हो गई है। कांश्रेस के कारण इस समय अधिवेशन होने से किसी भाई को उपस्थित होने में याधा नहीं होगी। अधिवेशन समाप्त होने पर आसानी से कांश्रेस में सम्मिटन हो सकेंगे।

— श्रिडि छत्र तीर्थ तेत्र रामनगर में सर-स्वतो मण्डार की आवश्यकता जानकर रतनपुर निवासी पंजबनाम्सी हास जी ने अनुमान ५००) के धर्मशास्त्र क्षेत्र समस्वती भण्डार के लिये प्रान किये हैं। अतः क्षेत्र कमेटी आपको धन्यवाद देती है।

---मन्त्री

-- जैन महिलाश्रम की स्यायी प्रान्ध कारिणी कमेटी की योजना होगई है। निन्न महा-तुभाव सदस्य स्वीकृत हुए हैं: --

ला॰मीरीलाल जी सभापति और कोपाध्यक्ष डा॰ बक्तावरसिंह जी M. D. मन्त्री ब॰ शीतलपुसाद जी सदस्य भी॰ मुरारीलाली जी अंबाला ,, ,, दीपच द जी मेरठ ,, ,, सोहनलाल जी ,, मंगलसेन जी ,, होबेन्द्रकुमार जी ,, ४ नवस्थर से उक्त कमेटी ने आश्रम का कार्य भार लिया है और इस प्कार यह सामयिक समिति (Rrovisional Committee) समाप्त होती है जो पूर्व कमेटी के दूटने पर आरज़ी तौर पर दनाली गई थी। उक्त कमेटी की ए और सदस्य बढ़ाने का अधिकार है।

निवेदक—मन्त्री

— उत्सव समाचार मिति अगहन घरी प्र रिवद्यार ता० १६-११-२५ को श्री िगम्बर जैन मिदर जुनराई आगरा में श्री १००० श्री देवाधि देव के कलशाभिषेक यह समाने इ के साथ हुआ उसी अवसर पर श्री जैसाल जैन समा आगरा का जल्सा मो हुआ। मिन्दर जी की स्मिन जो खराब है उस पर प्रस्तात हुआ जिसका समर्थत कई मां यों ने किया जिसके ियं चन्दा बगैरह उगाने को श्रीमान् पूज्यवर कर्न्ह्यालाल श्रह्मचारी जी नियत हुए उन्होंने यह कार्य २ साल तक करना सहर्ष स्वीकार किया वह धन्यवाद के पार हैं।

इस उन्सव पर जैसवाल सभा के स्वयं सेवकों का प्रवाध विशेष संगहनीय रहा । स्त्री पुरुषों की संख्या भी िशेष थी।

—आगरा जैन कुमार सभा के अंतर्गत बाचनालय में गत दो माख में १५०० व्यक्तियों ने लाभ लिया और पुस्तकालय से प्रायः १२५ पुस्तकों पढ़ने गई। सभा के सहस्यों ने सिन्न के समय स्वाध्याय करता भी भारभ कर दिया है। मित दिन उपस्थिति बढ़ती जाती है। आशा है कि इस उप-योगी संख्या से यहाँ के बंधु विशेष लाभ उठाने की खेटा करेंगे पुस्तकालय में प्रन्थों की कमी है पर् आशा है कि धर्मात्मा सज्जन इस कमी को शीप हो पूरी करने की छुपा करेंगे। वाचनालय और और पुस्तकालय में सब प्रकार की सुविधा है।

> --हज़ारीलाल जैन बी० ए० मत्री (शिक्षा विभाग)

स्वर्गवास श्रीमान् सज्जनोत्तम सेठ रिखव-चन्द जी छावडा रेवासा निवासी (मालिक सुप- सिद्ध फार्म सेउ रामलालजी स्वोलाल जी मु० फलकत्वा) का मिति कार्तिक बु० ८ मंगल बार को
सिर्फ पाँच रोज़ ही बिनार रह कर स्वर्गवास हो
गया आप बड़े ही शाँति स्वामावी और धैर्व्यवान
पुरुष थे आपकी उन्न इस समय करीब ७० ७८ वर्ष
के लगभग थी। आपकी धर्म ध्यान से सर्वदासे ही
अधिक रुचि थी अतस्व श्री रुपान परमात्मा से
प्रार्थना है कि आप की आत्मा को शाँति निले तथा
आप के कुरिन्वयों से संवेदना प्रगट करते हैं कि
वह धैर्य रक्ष ।

—संवाद दाता

देश

--- इन्दौर के 'नधीन भारत' पत्र का कहना है कि इन्दौर के महाराज होलकर के गद्दी छोड़नं की खबर गृलत है।

— जावा में एक भयद्भर भ्कम्प आया। केंद्र जिले के कई गाँव नष्ट भ्रष्ट हो गये। एक गांव नदी में जा गिरा। कोई ३०० आदिषयों की मृत्यु हो गई। बहुतों का अभी पता नहीं है।

—वस्वई में होने वाली नेताओं की कांग्रेंस के सम्बन्ध में पं० मोतोलाल जी ने एक विवृत्ति निकाली है। इसमें उन्होंने लिखा है कि, कांफेंस के पहिले जो लोग महात्मा जी से मिलना चाहते हैं। वे उनसे २० नवम्बर को = बर्ज से ११ बजे तक लवरनम रोड बम्बई में मिल सकेंगे। यहि आवश्यकता होगी तो व्यवस्थापक समाओं के गैर सरकारी सदस्यों की एक अलग बैठक कान्फ्रेन्स के अन्दर हो हो जायगी। व्यक्तिशः निमन्त्रण देने में असमर्थ होने के कारण महात्मा जी ने मुक्ते समाचार पत्रों द्वारा सब को निमन्त्रित करने को कहा है।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जरुरो की जिये!

कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !!

अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीनिकया। कौन प्रन्थ पुस्तकें उन्हों ने रखीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे प्रन्थीं का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम गीति से दिया गया है। मूल्य २०) सज़िल्द २॥) डाकख़र्च ॥)
पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फर्ब्यनगर (गुड़गाँव)

विदेश

— मोरक्को स्पेन के स्थयंम् शासक कनरल प्राहमों दिरीवेरा एक बार, कुछ दिन हुए, मोरक्को बासियों के युद्ध में हार चुके थे। अब उन्होंने फिर से युद्ध ठाता है। वे मोरक्को वासी रिफ़ जातिको कुवल कर अपना शासन किर से जमाना चाइते हैं। स्पेन संसार के साम्राज्य से तो हाथ घो बैठ, देखें उस के मोरक्को के साम्राज्य का क्या हाल होता है? स्पेन में जनरल रिवेश के खिलाफ़ कुछ पड़यन्त्र भी रचे जारहे हैं।

में किस की पार्तियामेण्ड में गोली अमेरिका के मैक्सिको नामक प्रान्त की जन सभा में वडस सुवाइसा होते हुए गोलियाँ चल गयीं। एक सह-स्य ने दूसरे सहस्य की गोलियां ही कि तीसरे सह स्य ने मंच पर खड़े होकर पहिले सहस्य से गाकी माँगने को कहा। इतने ही में इन सहस्यसों के इतर मित्रों में लड़ाई होने लगी। खूब गोलियां चलीं दो सदस्य बहुत बुरी तरह से घायल हुए।

— अर्बस्तान जरूसालेम की खंबर है कि राजा अमीरअली मक्का पर खड़े आ रहे हैं और बहाबी लोग अपनी रक्षा पर तुले हुए हैं। उन्होंने जहा और मक्का के बीच की मूमि को खाली कर दिया है।

—सन्धि दिवस गत सप्ताह ११वीं नवम्बर को, सारी दुनियां के बड़े २ नगरीं में सन्धि दिइस मनाया गया।

—मिन माइन रङ्ग ठेण्ड के मिन्त्र मण्डल का चुनाय होगया। मि० बाइडविन प्रधान मन्त्री त्व के पद को सुरोभित कर रहे हैं, भि० चैम्बरलेन वैदेशिक मन्त्री हैं, लार्ड विरकेन हेड भारत सचिव और लार्ड विण्टरटन मारत के उपसचिव हैं।

—वेकारी इस समय विलायत में १२ लाख १३ हज़ार आदमी बंकारी के दपतर में काम कर रहे हैं।

	†	विषय	पची				पृ	ष्ठ सं •
् <mark>१ यशोधन (क</mark> िता)-"स्वन्त	i [*]	•••	٠		•••	•••	***	રૂ૭
२ नैमित्तिक अधिवेश	•••	•••		•••	• • •	***	• • •	31
्र भाषण सभापति स्वागत सर्	मेनि	•••	•••	•••	•••	•••	•••	38
४ सभापति का चुनाव व भाप	म्	***	•••	• • •	• • •	.,,	• • •	४०
 ५ रिपोर्ट भारत दिगम्बर जैन प 	रिषद्	***	•••	• • •	• • •	•••	-••	કર
६ हिसाब परिषद्	•••	•••	• • •	•••	• • •	•••	***	87
७ स्वीकृत प्रस्ताव	***	•••	• • •	•••	•••	***	***	83
= सम्पादकीय टिप्पणियां	•••	•••	•••	•••	•••	***	•••	¥3
ह गताङ्क का चित्र परिचय	•••	•••	•••	•••		***	***	पृष्ट
१० संसार दिग्दर्शन	***	•••	•••	• • •	•••	***	***	¥±

भूस सुधार—गताङ्क के "जैन धर्म की अहिंसा जगत त्रिय क्यों नहीं होती ?" शीर्षक छेख के छे क काबू ऋषभदास जी बी० ए० हैं। पृष्ठ ३ पर बीर सं० २४५० के स्थान पर २४५० उपयुक्त है। पाठक संभाळ कर पढ़ें।

हँसोड़

"हं नोड' हमाने हंमाने होट पोड कादेने वाले चुटकुली का संबद्ध है मुठण॥) आठ शाना

🗱 भजन संग्रह 🏶

शगवत् समित के जिन भजनों की पटनेप स्पर्धीय जानस्य प्राप्त होता है। नेप पाताश्र पूर्ण होताने हैं। उन्हीं र जनों का बड़े परिश्रमस्य संग्रह हाथा है। सुरुपाय)

। ता-हिमाउय हिपा मुगडाबाद,

विदूषक

विदृषक हैंसाने हैंसाने पेट में बलड़ाल देनेशाली कहानियाँ का संग्रह है मुख्या।)बारहमाना

🗱 गजल संग्रह 🏶

मेशहरी श्रीवेगों की चोजभरी हुई ग्रज्ये जिन को मृन कर हर समय उन्हीं का प्यान रहता है गाना भी वहीं रहता है। उन्धी सब हुई। हुई गज़्जों का सम्रद है अदिनीय है, मृज्य ॥) दुना-हिसालय दियों, मुरादाबाद

अन्तिम मार्च सम्राट का इतिहास

ार्ग पृथ्वीयज्ञ चौहान 🔨 🚉

चाहानभार के प्रक्रा स्टब्स्याई का स्नेत, प्रकृतिता हरण, इशहें हो अद्यान की प्रशासय तथा भागत पर सर्वोध्यक्त स्था के १५ के हस्तरी का उपर, हुई। भ्रय में विस्तार प्रवेष कर्मिया । मुख्य सहक्षक केवल न

पताः— । मालयः । पो, श्रादावाद यु० पी०

पेतिहास्तिकः उपन्यासः क्ष्युक्षत्र तमरसिंहराठे प्रभित्ते । १० बाह्यता कः स्राह्यवे से जिस्से

क्षात्रज्ञात के २४ इंदर में १ असन सान लाख के बदलें में ७ वर्ने २ उर वास्त्रिमों के जिस उनार दिये थे। उसी का चस्त्र इसने हैं। मुख्यत्रीक्ष्यय संध्या।

ेमहाराज यशपन्त सिहर्न औरंगजेपसे दिन्द अर्म की रक्षा

आरगजस्माहन्द्र धम का रक्षा करने वाले और करचित्र है। मुख्य डाक व्यय सहित (॥) सात्र

्य्रित्र्यपृश्वतल भनार्थ्यक्र

जिसके तमाशे को देखने के लिये बातकी बात में हजारों मनुष्योका भीड़ इस्ट्रां हो जाती है उपी जितेन्द्रीय का य चित्र्य पहने योग्यहैं। मू-सडांक भार्य ५ गा-हिमालय डिपा, मुरादायाद, यानिक पश्चिकित्यायाचा राक्षमा विकास का पास मन्या अन्य

मेंर्स रजिम --शिक्षण

द्या के यावकों हारा सदार सब अध्यय कामी को सन्दर्ध निन्दों से ब्रु सकता ह जैसे, जोरी अपे ह य का पता लगाना,पृत्वाक गडेचन की जानजाता. सुकडमी के परिणाम को जानना, थिछो हमें दुःखित गृहसे पलायमान विच प्यारं को विदित कर नुलाना, शेर बकरा को एक बाट पानी पिलाना, मैस्मेरिजिम हारा वाणी मात्र से हुच्छानुसार कार्य कराना हुसी से सिद्ध होता है। मृत्य इकि इच्च सहित १॥)

श्विता-हिमालप डिपा,।मुरादाबाद,

नी वर्षेत्रावादवयः

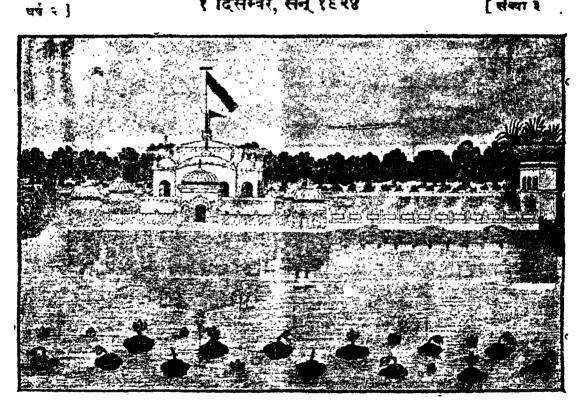
वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाचिक पत्र

१ दिसम्बर, सन् १६२४

[संस्या ३



सम्पादकः---

नैनथर्मभूषण बद्यायारी श्रीतलपसाद जी

प्रकाशक

भाविक म्ल्य]

थी० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, विजनीर ।

हपस्रकादकः---

श्री कायतामसाद जी

[डाई कपबे

भी महार्थशीय नमः

''चमा वीरस्य भूष्णम्" भी भारत दिगम्बर जैन परिवद्का पाचिक मुख पत्रः

वीर

"तजल्ली हास्त हक्रा दर नक्षे जाते इन्सानी। शहूदे ग्रेंब गर ख्वाही वजूब ई आस्त इम्कानी॥" अर्थात्—मनुष्य की सत्ता में समस्त पारमात्मिक ग्रेंश विद्यमान हैं। यदि तू इनका अनुभव करना चाहता है तो यहीं उनका अनुभव कर। काबे और बुतलाने क्यों जाता है ? —गऊ वाणी

वर्ष २

विजनौर, मार्गशिर शुक्ला ५ वीर सम्बत् २४५० १ दिसम्बर, सन् १६२४

शह द

(द्वितीय वर्षाभिनन्दन)

स्तागत, आओ ? न्यारे बीर ?
कर्म क्षेत्र में बढ़ा अग्रसर, अड़ा रहा निरचल निज मख पर ।
शतशः आर्थिक संकट सहकर, बना रहा गंभीर ॥ स्वागत०
शुभ स्वजाति संदेश सुनाकर, हद तन्त्री के तार बजाकर ।
नव उक्षति की ज्योति जगाकर, हुआ अयी रखधीर ॥ स्वागत०
शुनः सत्य साहस रस भर कर, जात्योद्धारक आमा सजकर ।

धर्म भावना संयुक्त प्रशंकर, अवल मेरवत धीर ॥ स्वागत० वीर-मञ्ज उपदेश सुधाको, भारत धन्तर्गत वर्षा दो । द्वेष दाइ अब अनल बुभादो, बनक्कर विय प्रशं वीर ॥ स्वागत० "बस्सस्य"

विनाश का प्रवल कारण श्रीर उपाय



(ते - श्री० रामस्वरूप भारतीय सं० 'जैन मार्नएड')

हमारी जड़ में घुन लग खुका है। पत्तों और टहिनयों की स्वच्छन्दता जातीय-जीवन के लिए यथेष्ट नहीं ! मुख्यतः-'ज़र, जोरू, जमीन' विनाश के कारण गिने जाते हैं। ज़र और ज़मीन' हमारी समाज के अधः पतन के वर्त्तमान कारण नहीं हैं। परंच सारे संकट और भंभटों की जड़ हमारी बढ़ती हुई विलासिता और काम-लिप्सा है।

देवियाँ हमारे देश की मंगल स्वरूपा हैं। माता व हमारी अदा-भाजन हैं। किन्तु पापियों की पाप-लिन्ता देवियों का देवित्य विनष्ट कर रही है। सभा सोसाइटियाँ, नित नवीन आन्दोलन, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं किन्तु व्यभि-चार की ज्वाला उत्तरोत्तर प्रबल केंग से प्रस्कुटित हो रही है। दुर्भाग्यवश हमारा, हमारे नेताओं का ध्यान भी उचितरूप में इस ओर नहीं जाता।

पक बच्चा, जो जैनकुल में उत्पान होता है, प्रारम्भ से ही जोखम के मार्ग में आता है। प्यारं माँ बाप उसे विविध वस्त्राभूषणों से अलंकत करते रहते हैं। जन्म से ही बच्चे के स्वामाविक और सजीव सौन्दर्य पर चटक मटकदार बस्त्रालंकारों को विशेषता दी जाती है। इस प्रकार उसके वि-कास-मार्ग में काँटे बखेरे जाते हैं। उसका शारी-रिक और मुख्यतः नैतिक विकास सन्देहास्पद हो जाता है। वह बड़ा हुआ और कुछ समक बूक होते ही चहुं ओर व्याप्त विषेले वातावरण में प्रसित हो जाता है। भीरुता और उरपोक्तपन के प्रारम्भिक संस्कार इस अवस्था में दूढ़ बना दिए जाते हैं। गुरुकुलावस्था शानदार स्कूलों या महाविद्यालयों में व्यतीत होती है। और वहाँ—?

मस्तिष्क के विकास को स्वामाविक उत्तेजना देने के स्थान पर उसे जीवित कोष ढालने का प्रयत्न होता है। गुरु-शिष्य कभी आइम्बर प्रियता के शिकार बनते हैं। जिह्ना आदि इन्द्रियों का संयम मात्र किसी २ पाठ में द्रष्टिगत होजाता है। लज्जा के साथ यह भी कहना होगा कि दुर्भाग्यवश विद्या-लयों और बोर्डिंगहाऊसों में भी व्यभिचार को प्रा-बल्य वृद्धि पर है। वहाँ वह पैशाचिक और पाश-विक वासना अवस्थित है जो जाति के होनहार बालकों को भावी जवांमरदों को-जनाना बनाती है।

थोड़े से छात्र छात्रावस्था में ही विवाहित बन जाते हैं, वे विद्यालय से पृथक् होते ही भारतीय-शिक्षितों के एकमात्र आलम्बन भृत्यता की खोज में फिरते हैं। जो अविवाहित हैं वे पेट-पूजा की चिन्ता के साथ र विवाह की चाह से भी दुखी रहते हैं।

विद्यालयों में जिन्हों ने अखण्ड ब्रह्मचर्य का स्राप्तकार नहीं देखा, जो बालों को सँभाल २ कर कादने, तेल लगाने, फैशनेबुल रहने के आदी दन चुके हैं, वे संसार में एकवित्त से स्थिर कैसे रहें ? मन दूषित और उपन्यास-साहित्य की ओर लप-कता है। और उनका जीवन आडम्बर और व्यभि-चार से कलंकित हो जाता है।

विवाह हो जाने पर, मोहांघ हाकर अपने आप को भूल जाते हैं। किर अति से ऊष कर, शक्ति और उत्साह को खोकर कहते हैं:—

> इश्क ने गालिव निकम्मा कर दिया, बदने हम भा आदमी थे काम के।

ितर भी स्वभाव से विवश हैं। मूर्खता से, पुरुषों की अन्धना और गाही स्थिक अत्याचार की चक्की से क्रियाँ अकाल-कविलत हो जाती हैं। स्वार्थों, नराधम मनुष्य दाहि किया से पूर्व ही नव-िवाह के विचारों में लग जाता है। बात यह तिक खड़ती है कि जिने जहां तक अवसर मिलता है। कन्याओं के स्वन्धों का अगहरण करता है। यह तक कि साठ साठ वर्ष के बूढ़े कसाई, पागधारियों का मुँह मीठा कर, धन के मह से अबूक कन्या-गायों को अपने खूँटे बांध लेने हैं। मीन-भाषा में कन्या का डकराना, न तो निजींच पंचायतियों के हो कड़ोर कानों तक पहुंच पाता है, न इस घर अन्याय के प्रतीकार के लिए नवसुवा कहलाने वालों की भुजाएँ ही उठती हैं।

कन्या पर इससे अधिक निन्य अत्याचार और क्या होसकता है कि वह उसकी अधूका क्या में एक ऐसे अवमेठ वर के साथ बाँध दी जाय कि जिस विश्वासघाती के मस्तिष्क पर एक भोठी अवला के आशा-दंलन का टीका लगा हुआ है। स्पष्टशब्दी में, कन्या का विवाद योग्य व्यारे वर के साथ ही होना अनिवार्य न करके समाज के पाश्विक शकि धारी व्यभिचार का तार खोले हुए हैं। स्थार्थी और स्वार्थवश उनकी पीठ ठोकनेवाले धर्म की आड़ लेकर येन केन प्रकारेण इस अत्याचोर का समर्थन करते हुए भी नहीं लजाते!

जब व्यभिचार की ज्वाली (इतनी आद्योपान्त संगठित) घघक रही हो तो सादगी और शुंचिता का पता कैसे चले ? विलासता और आडम्बर वृद्धि पर हैं।

पुरुगें की इस पीरूप-धातक प्रवृत्ति ने, सियों को कामसेवन और सन्तानोत्पत्ति की मशीन बना डाला है। वे अपनी भ्रष्ट रुचि के अनुसार, प्रदर्शनी में संप्रहित वस्तुओं की भंति उन्हें सजा कर अपना मनोरंजन करते हैं और इसके लिए उनके देवोपम स्वामायिक सौंदर्य को सदैव के लिए बिलुस कर देते हैं! इस प्रतिकूल अवस्था में स्वास लेने का प्रभाव, मेले तमाशों में देखा जाता है-जिसके स्म-रण से ही लजा से हमारा सिर फक जाता है।

बात तो यह है, जो इस पाप का पलायन चा-हते हैं, हदय से बुरा समक्ष कर इसकी बुराई करते हैं, प्रस्ताव करते हैं, नेतृत्व निभाते हैं. निरंकुश मदन उन्हें भी पय-भ्रष्ट कर देता है। इस प्रकार एक ओर तो समाज में सदाचार प्रचार का आन्दोलन उठता है, दूसरी ओर अनङ्गदेव अपने माया-वाणीं से अभीष्ट मन्तःय सं हमें विलग रखने की चेष्टा करते हैं। यही संघर्ष हमारी उन्तति में अवरोधक है।

रोग गर्ग है और गहराई तक विना पहुंचे इस से छुड़कारा न होंगा। यदि नेताओं ने इस ओर ध्यान न दिया तो समाज की रक्षा के सब प्रयज्ञ निष्कल होंगे। पोच समफ कर हतें इस नाश्क शत्रु के मर्महाल पर सीधा प्रहार करना होगा जिस से सुसुस समाज वेदार होजाय। सोचिये, समिक्यें और 'बीर' द्वारा अपने विचार समोज के समक्ष रिवर।

इसके प्रतीकार के अनेक उपाय हो सकते हैं। क्नमें से भावश्यक दो में प्रस्तृत करता है। समाज में क्रान्तिकारी, उसे तक और व्यापक आन्दोलन की आवश्यकता है। "मन्दर और विवाह" के सुधारों पर समाजशिक केन्द्राभूत हो सकती है। शौर इसका संगठन सुगम और व्यवहारिक प्रति-भासित होता है। इन विषयों पर बहुत कुछ लिखना है। समय मिला तो विस्तृत विवेचन किसी स्वतंत्र क्षेत्र द्वारा किया जायगा । यहाँ पर इतना ही कि-मन्दिरों में स्वदेशी-वस्तु प्रयोग अनिवार्य बनाने के क्रिए संगठन किये जायें। वे संगठन स्थानीय कोषा-भ्यक्षीं को हिसाब और मन्दिर के धन की सुद्य-दश्या के लिए बाध्य करें। इस आन्दोलन से एक प्रभाव यह भी पहेगा कि साधारण जन शक्तिथा-रियों के सामने दूढता से खड़ा होना सीख जायंते जिससे पँचायतियों के संगठन और बल में आशा-

तीत सुधार होगा।

विवाहों के सम्बन्ध में जो कुरीतियाँ हैं—उन के प्रतीकार का भी संगठित प्रयन्न बांछनीय है। वृज्जिववाह और कन्याविकय को वहिष्कार आन्दो-छन और सत्याप्रह तक से रोकना होगा। जहाँ ४-६ सत्याप्रह सफलता से हुए कि इन कुरीतियों का काला मुँह ही समिभिए। एक बात और—जो पुरुष अपना पुनर्विवाह करना चाहें कम से कम उन विवाहों में पंचान अमूक कन्या की अनुमति अवश्य हे लिया करें। उनकी सरल लज्जाशीलता के कारण उनकी गरदन पर छुरी चलाना अहिंसा-प्रेमियों के लिए लज्जास्पद है।

अन्त में, परिषद् के संचालकों का ध्यान हम इघर आकर्षित करते हैं। हमें विश्वास है कि परि-षद्व प्रस्ताव की प्रस्तिनी नहीं यन सकती-उसे काम करने की लगन है। क्या वह श्री मन्दिर सुधा-रकसमिति और सत्याप्रहसमिति की आयोजना करेगी?

कलिङ्ग में जैनधर्म

उत्तराय भारत से आप हुए इन साधु और बीर जातियों से चालित और प्रभावित आम्ब-कर्णाटक के इतिहास और सभ्यता का जैन-काल बौद्धकाल के अन्तर्गत वा बहुधाकर उससं पहिले ही प्रारम्भ होता है, जैसे कि इन शिलालेखों से प्रकट है। पेसे झात जैन शिलालेखों में कलिडू का

खाले नु शिलालेख सब से प्राचीन है। इस शिलालेख की तिथि अवभी निश्चित नहीं है किन्तु उसका जैन कर और उसमें के आन्ध्रमान्तीय जैनधर्म सम्बन्धी उल्लेखां की प्राचीनता सर्व संशय रहित है। खाखेलु शिलालेख के भाव से कलि हुदेश में जैनधर्म की प्राचीनता बहुन ही पुगानी प्रमाणिन होती है। कलि हु

देश बहुश्रोकर आम्ध्रमण्डल इतना ही था। इस प्रकार जो कि आन्ध्र इतिहास और सभ्यता का ''जैनकाल'' कदलाना चाहिए यह इतिहास में बहुत ही प्राचीनकाल से प्रारम्भ होजाता है अर्थात् "बौद्धकाल" (सतवाहन) के अन्तर्गत बल्कि पहिले से रीतिरिवाजों की अपेका जैन धार्मिक जीवन और विचारविकास अपेक्षा जैनपुराणविवरण (Mythology) इतना पौराणिक ब्राह्मणधर्म सदश हैं कि जो जैनप्रभाव बौद्धकाल में चालित रहा वह कम से कम आन्ध्रदेश में ब्राह्मणधर्म में परिचर्तित होगया । सतवाहन काछ के Amravati Martles जो गत शताब्दि में जैंचे गए, उनमें यह भी अर्पिन है, जैसे डा॰वर्जेस सन् १===ई० में प्रकट करते हैं, (अ) "एक गोल किएगए पाषाण का ऊपरीसाग, जिसमें एक मृत्ति का सिर और आकार है। इसके घुँघरीले बाल हैं और सम्भवतः बौद्ध है। परन्तु बहुधाकर यह एक जैनमुत्ति का सिर है" और (ब) "उक पात्राण का बामभाग शायद जैन का है।" सन् १८६२ में मद्रास आर्केलाजिकल सर्वे विभाग के सुपरिम्टेन्डेन्ट मि० री ने कृष्णा जिले में गुदीवाड़ा में एक सुन्दर जैनमृत्ति पाई थी और बेजवाड़ा में एक अति अद्भृत जैनस्तम्म पाया धा जिनमें चार मूर्त्तियाँ अद्भित थीं। यह दोनों ही स्थान तेलुगू देश में उरके "बौद्धकाल" के प्रभाव कारण विशेष विख्यात हैं।

तेलुगू भाषाभाषी अपनी बणमाला प्रारम्भ करते समय यह मंत्र उच्चारण करते हैं "ॐ नमः सिः।य सिखम् नमः।" इस मन्त्र को अन्तिम भाग प्रत्यक्षतः बोद्धों का है। उनहीं के निकटवर्सों कलिंद्र के उड़िया लोग, जहाँ तक कात है, "सिद्धिः अस्तु" का मन्त्र स्यवद्वत करते हैं। यह मन्त्र एक जैनदानएत्र के अन्त में है।

तेलुगू देश के कलिङ्ग भदेशों का इतिहास (जिसकी अभी समुचित कोज नहीं हुई है) चेतीय-राजा खाखेलु के समय से वहाँ जैनधर्म का राज-कीय प्रभाव प्रकट करता है। "कलिक के कोल और खोण्ड लोगों को यह पुश्तेनी स्याल है कि— उन्होंने वहाँ के पहिले के निवासियों को परास्त किया था, जो जैन और भूया कहलाते थे।" कलिङ्ग मालिया में भूज और जैन प्रामी के विशेष उल्लेख हैं जो नाम से प्रकट हैं। यह 'जैन"संभवतः ''कदंब" हैं जिनका उन प्रदेश पर काफी राजकीय प्रभाव था जडां आज कोल और खोण्ड रहते हैं। साथ ही उन प्रान्तों में भी जहां से वह ऐतिहासिक कालों में प्रयक् किए गए थे। (किल है शिलाहे बी में यह 'रुद्रपुत्रा' कहलाए हैं) गंजम जिले के कुछ स्थानी के नाम करंबों की सत्ता को अकट करते हैं। बम्बई प्रान्त के एक प्राचीन कदम्ब दानपत्र में एक कदम्ब ब्राम का नाम "बृह्द परलूर" है। तेलगू में यह "पेडू परल पुरम्" होसकता है, जो गंजम ज़िले की एक जिमीन्दारी की गद्दी के उड़िया नाम "बोडो (परल)-बिमेडी" के सदृश है।

─क्रमशः ।

जैनियों में शिचा प्रचार

निम्न के काष्टक से यह पता पाठकों को बल जायगा कि शिक्षागणना के अङ्ग जैनियोंको केवल २६ प्रतिशत प्रगट करते हैं. अर्थात जो केवल लिख और पढ़ सक्ते हैं वह जैनियों में के बल १०० में २६ हैं। यह घडे दुःख की बात है कि समग्र जैनियों में ७५ प्रतिशत "अक्षरज्ञान" सं भी शुन्य रहें, जब कि उन्हें इस बात में गर्व है कि वे व्यापारिक द्रव्टि से भारतीय जातियों में प्रमुख हैं! और भी दखद कहानी यह है कि प्रारंभिक शिक्षा पाते इए जैनियों में से केवल १२ प्रतिशत वितीयश्रेणी (Secandary education) का शिक्षा अर्थात नाईस्कुल की शिक्षा प्राप्त करते जाते,हैं और इनमें से मुश्किल से दो प्रतिशत उचिशिशा प्राप्त करने कालिजों में जाते हैं। यहि स्नीशिश की ओर दृष्टि-पात करें तो मालूम होता है कि सारी जैन स्त्री समाज में सिर्फ ४ पतिशत ख़ियाँ शिक्षित हैं। इसरे शब्दों में हमारी बहिनों में १०० पीछे ६६ अशिक्षित हैं। यह भी अति आश्चर्यजनक है कि गत वीम वर्ष में जैन छात्रों की संख्या करीब ५००० के घट

गई है। ऐसी दशा में यदि कोई अमली कारखाइ नहीं की जायेगी जिससे शिक्षा की बृद्धि हो तो वह समय भी दूर नहीं है जब जैनियों की भी गणना पिछड़ी हुई (Backward) जातियों में की जाने क्योंकि उनमें समुचित शिक्षा का सभाव होगा और उन की राजनैतिक क्षेत्र में भी कुछ पूछ नहीं होगी। मि॰ सर्वे ने यह वात अभी हाल ही में रि-फाम कमेटी के समक्ष गवाही देते हुए कही ही है। इस हेत् किनियों के लिए यह एक जटिल विचार-णीय प्रश्न है। जब जैनी रथयात्राओं और वेदी प्रति-ष्टाओं एवं जीवनवारों में हजारों रुपए प्रतिवर्ष सर्च करदेते हैं तब क्या शिक्षा प्रचार के कार्य में उन्हें उदासीन रहना चाहिए। समभ में नहीं आता कि जो जैनी एक इन्द्रिय जीव की रक्षा करने में कुछ बाका उठा नहीं रखते हैं वे इस अझान अन्धकार में पड़े हुए पंचेन्द्री सैनी जीवीं की रक्षा करने से कैसे आँखें मींचें हुए हैं आगामी सन्तति की भलाई शिक्षाप्रचार ही पर अवलम्बित है।

	•	• 10 4		
प्रान्त	कुछ जैन जनता	शिक्षित पुरुप	शिशित स्त्री	अंद्रेजी पढ़े जैनी
बजमेर-मारवाड़	१=ध२२	१७०९	४६०	३१३
आसाम	३५०३	१७२४	८४	13
विलोखिस्तान	१७	3	•	१
बङ्गाल	१३३७६	७३१४	६६२	દ ેવ ર
विहार और उड़ीसा	४ ६१०	१५५=	२११	१३४
बम्बर्द	८ ⊭१६५०	१२६३७७	२५६२४	१२६२६

प्रान्त	कुल जैन जनता	शिक्षि त पुरुष	शिक्षित स्त्री	अंत्रे जी पढ़े जैनी
बर्मा	११३५	४३६	98	રંદર
मध्यप्रान्त और बरार	६६७६४	\$43a\$	२ २≂ <u>६</u>	१२८६
कुर्ग	२०२	. !!	?	
दिव् ली	8 ₹ 8 ≍	१६४१	२ ६३	રૂ વ્ય
मद्रास	२५४६३	<i>e33</i> ફ	299	348
उत्तरपश्चिमीय प्रान्त	3	3		ą.
पद्मजाब	ध १३२१	८ह३	७६८	१०६३
संयुक्त प्रान्त	६⊏१११	१८६३	२१०३	१४१७
बड़ौदा स्टेट	४३२२३	१६०३२	₹€09	કહ ફ
मध्यभारत	धउददर	१ १४५७	१२३२	५३६
कोचीन स्टेट	१०१	3 3	2	3
ग्वालिर स्टेट	३८८०६	= २६३	500	₹0=
हैदराबाद स्टेट	१८५८४	318 £	२६ ६	૨ ३૨
काश्मीर	५ २६	१६१	ર ક	₹ ૭
राजपूताना एजेन्सी	२ ७६७२२	६७०५०	८ ६३,५	१३२०
दावनकोर स्टेट मैसोर	३३	3	3	
मैसोर	२०७३२	१०३४	488	३०१
कुल बृटिश इन्डिया में	13 4=0 5 5	३१३४१६	४३४६३	રર ૫૫૫૭

-अंग्रेजी जैनगज़ट से।

महिला-महिमा



परदे की दशा

जातियों की अियों में परदे का रिवाज़ वहां की महिलाएँ निर्लज्ज हैं और शीलवान नहीं पाया जाता है। परन्तु यह रिवाज सिर्फ उत्तरीय हैं। प्रत्युत देखने में यह आया है कि जितनी मान-भारत में ही है। पश्चिम और दक्षिण भारत में इस मर्यादा भीर शीलधर्म में पहुंच उन महिकाओं की

है उतनी इस ओर की परदा करनेवाली बियों की नहीं है। कारण यहीं है कि वहीं परदा अवश्य नहीं है, परन्त नेत्रों में लज्जा है-हदयों में पित्रता और शुभकामना है यही दशा भारत की प्राचीन नारियों को थो। हमारे शास्त्रों में कहीं भी परदे का नामभी सुनाई नहीं देता। उल्टे महिलाओं का धर्मसन्मे-लनों आदि में प्रगट हा में माग लेने का ही जिकर मिलता है। इस लिये कहना होगा कि यह परदेकी रिवाज हमारे प्राचीन पुरुषों की नहीं है। वास्तव में यह रिवाज मुसलमानी वादशाहत के ज़माने में व्यभिचार की मात्रा के बढ़ने एवं अन्य अत्याचारी के होने के कारण प्रचलित हो गया था। अपने पडोसी का प्रभाव हमारं दैनिक जीवन पर पडता ही है। आज भी अंग्रज़ों की सभ्यता का प्रभाव बहुत कुछहमारे दैनिक जीवन पर दिखाई देरहा है। इस हेन कहना होगा कि समय की मांग सब कुछ करा लेती है। आज कल परदे के रिवाज में क्या सुधार होना चहिये यह विचारना आवश्यक है। उसका अन्त तो सहसा किया नहीं जासका। वह लुप्त तो तब ही होगा जब हमारी माताएँ और बहिनें पूर्ण शिक्षिता हो जायँगी। अपने चहुं ओर एक तेजोमय प्रभा को फैलालंगी तब ही वे अपनी दक्षिणी बहिनों की भाति संसार को मुख दिखला सकेंगी ! परन्तु क्या परदे के होते हुए भी उसका पालन समुचित रीति सं होता है ? इस के उत्तर में कहना होगा कि देखा तो यह गया है कि हमारी मालाप और बढ़िनें अपने घर में तो घर के लोगों के सामने एक हाथ रुम्या घूंघट निकाले गहती हैं,

परन्तु अन्य छोगों और नौकरों वगैरह के सामने निर्लाजता पूर्वक निकलती धैठती हैं। मेले ठेलों में वह जिस प्रकार बाज़ार में मोल भाव करती हैं और सरे बाज़ार मुंह उघाड़े घुमती किरती है उस समय वास्तव में घह परदा उनके मुख से हट कर हम पुरुषों की बुद्धि पर आकर पड़ जाता है। भला जो संगे सम्बन्धी आंख उठाकर भी अपनी बह-येटियों की ओर नहीं देख सक्ते उनका तो परदा किया जाता है। और बाजारू दुकानदारी (जिस में नीच प्रकृति के मनुष्य ही अधिक होते हैं) के सामने वह परदा रफू होजाता है। अकिकाँश में हमारी महिलाओं की यही शोचनीय दशा है। इस प्रकार कहना होगा कि परदे से घह वास्तविक लाभ नहीं होता जो होना चाहिये। अतएव परवे का वास्तविक उपयोग होने, के लिए घर में से परदे की रिवाज को दूर कर देने का प्रस्ताव उत्तम है। यथार्थ में इमारी बहिनों को अपने हित्र घरवालों से किसी प्रकार्यकी बुराईका भय हो नहीं सक्ता है।परन्तु जिन का वे आज परदा नहीं करती हैं उन का उन गैर मनुष्यों का परदाउन को कम से कम उस समय तक अवश्य करना चाहिए जब तक वे अधि काँश में पूर्ण शिक्षिता न हो जावें। हाँ, बाज़ार से किसी बस्तु की खरीदने की उन्हें विशेष आवश्यका ही हो तो अपने पति अथवा भाई के साथ जाकर खरीद छेर्चे । परन्तु स्वच्छन्दतापूर्वक अन्य पुरुषोके मध्य निर्लग्ज हो घूमना उनके लिये शोभनीय नहीं है। बहिनी को विचारना वाहिये:-इ० सं०

दौर-ए-त्रासमां

(गज्स)

किससे बफ़ा करेगा किससे जफ़ा करेगा;

ये दौर-ए-आसमाँ है दम दे दग़ा करेगा।
जो ख़्न-ए-ग्रीबों पर बैठे हैं बने शाह;
भटके में एक उनको दीनो गदा करेगा।।
आहों में जिनकी कटती हैं आज रात दिन;
कृदमों में उनके हाज़िर सारे मज़ा करेगा।
दो दिन की है पह इस्ती मग़रूर न होनो;
बैसी जज़ा भरेगा जो जैसी सज़ा करेगा।।
खुदी को मिटा खुद में जो महब बनेंगे;
भगवान आवा जाई से चनकी रज़ा करेगा।।
---भारतीय

जाति पर वैज्ञानिक प्रकाश

(के०-श्रीयुत्र कापमशास भी भी । ए)

हिन्दी जैनगजट के खास अङ्क में उपरोक्तं शीर्षक का सेख भी युत् प० गीरी साल जी शास्त्री का अति विश्तापूर्ण प्रगट हुआ है। मुक्त को उसके पढ़ने से बहुत लाभ हुआ। परस्तु उस को पढ़कर निम्नलिशित प्रक्ष मेरे हृदय में उपस्थित हुए हैं। रूपा करके पंडित जी अथवा अन्य विद्वान् इन मेरे प्रश्नों का समाधान करें

(१) प० जी ने मोगम्मियों की बावत किका है कि "उस समय जाति व कुलस्य धर्म उनमें ससा-स्वरूप रहताहै।" सो क्या यह उस तरह सम्तास्व-रूप रहता है जिस तरह सिखस्वधर्म संसारी भारमा में समास्वरूप रहता है? या इसमें कुछ और विशेष है? यदि विशेष है'तों क्या विशेष हैं? और यदि कुछ विशेष नहीं है तो इसका तो यही शर्ध है कि कुछ

जाति उन में नहीं होती। उदाहरण और प० जी ने दिए हैं उनसे कुछ समक में नहीं आता। आंध और अन्धेरे के उदाहरण में आँख बरावर काम करती है। अन्येर को देलती है। यद्यपि प्रकाश न होने के कारण और पदार्थ उसको नजर नहीं आते परन्तु आँख का काम बन्द नहीं होता। आंख काम बराबर करती रहती है। परन्तु भोगभूमि में जाति व कुलस्व धर्म कुछ भी काम नहीं करते। इसलिए यह उदारण ठीक नहीं वं उता। दूसरा सम्पतिकाल में सैनिकाल का उदाहरण दिया है वह ठांक नहीं बैडता। क्योंकि सम्पतिकाल में सेना भी बराबर काम करती है। यद्यविशत्रु से नहीं छड़ती परन्तु शस्त्रविद्या का अभ्यास व अन्य व्यायाम बराबर करती रहती है। देश व नगर आदि का प्रबन्ध व रखा करती रहती है। परन्तु जाति और कुछ का ती कोई काम भोगभूति में नज्र नहीं आता ! तीसरा उदा-हरण दलाली करते हुए वैरिप्टी डिग्रोमा का दिया है। इसके कुछ अर्थ ही समभ में नहीं आते। दलाली से क्या मतलब है ? वैसे वैरिष्ट्री डिल्लोमा हरवक काम देता रहता है।

(२) यदि भोगभूमि में जाति व कुलत्व धर्म सत्तारूप विद्यमान रहते हैं तो वर्णधर्म भी तो उन में सत्तारूप से विद्यमान रहता होगा ? परन्तु कर्म-भूमि में वर्ण तो श्री आदिनाथ भगवान् व उनके पुत्र भरत जी ने स्थापित किए हैं। जाति व कुले किसने स्थापित किए ? यदि किसी कुलकरने स्था-पित किए तो किस कुलकर ने और कीन कीन जाति वे कुल स्थापित किए ? कम से कम दश पाँच के नममें का तो उस्लिख होना चाहिए।

्र (३) ब्रीमभूमि में संपादय से हरेयंक युगर्क

की पृथक् र कुल व जाति होती है या बहुत से युगर्लोके समूह की एक कुल व जाति होती है। यदि प्रत्येक युगल की पृथक् र कुल व जाति होती हैं तो कुल व जाति में भेद क्या रहा? और भोगभूमि मैं कितने कुल व जाति होती हैं? और यदि बहुत से युगलों के समूह की एक कुल व जाति होती है तो किस स्टूशता से वहएक कुल व जाति होती है?

(४) प० जी ने लिखा है कि ''जाति नोमकर्म के पाँच भेर-एकेन्द्री आदि जाति हैं और उनके ही भेद प्रभेद चौरासी छाख जाति हैं।" सो मल पाँच भेद एके दी आदि तो इन्द्रियों की अपेक्षा हैं। इस लिए उनकें और भेद प्रभेद भी इन्टियों के कप ज्यादह ज्ञान की ही अपेक्षा से होने चाटियें। क्योंकि सामान्य के विशेषत्व में उस सामान्य की अवेक्षा वरावरं कायम रहती है अर्थात् उस सामान्य में ही कुछ विशेषना ही जाने से विशेषों की उत्पत्ति होती है। जैसे पंचेन्द्री जाति के जो भेद शभेद हींगे वे पांची इन्द्रियों के झान की कमीवेशी के लिहाज से ही होंगे न कि किसी और विशेषता से। इस . लिए प्रश्न यह है कि सतुष्य की जो चौरह लाख जाति हैं अथवा वे जाति पांच इन्द्री व मन के ज्ञान की कमीवेशी की अपेक्षा से हैं या अग्रवाल-खंडेल-बाल-चौहान-गीड आदि जाति जो लोक में प्रसिद्ध हैं यह ही वे चौदह लाख जाति हैं ? क्योंकि यह जाति तो पृत्यक्ष में और और ही कारणों से उत्पन्न हुई हैं जैसे कि अप्रघांल राजा उप्रसेन से उत्पन्न हुए, और आपने जो लिखा है कि "यह अप्रचाल, पश्चावती पुरवाल आदि जाति हैं यह अनादि काल से हैं।"

यह आपका लिखना कुछ समया में नहीं भारत वे

क्यों कि इतिहास से यह प्रमाणित है कि अप्रवाल काति एक व्यक्ति उन्नसेन से उत्पन्न हुई है, यह धनादि काल से किस तरह हो सकती है ? हां, उपसेन भी किसी जाति के अकर होंगे और जिस जाति के वे होंगे वह ज़रूर अप्रमाल जाति नहीं थी वरन् उद्धेत की सन्तति का ही अप्रवाल नाभ होने का कोई प्रयोजन नथा! और जिस जाति के उग्रसेन थे उस जाति के भी यहन से मनुष्य होंगे और यह तो प्रगट ही है कि उन बहुत से मनुष्यों की जाति और उपसंत से उत्पन्त हुई अग्रवाल जाति अव एक काति नहीं है। अतएव इस तरह अप्रवाल जाति को अनादि किस तरह कहा जा सकता है ? हां घारा प्रवाह की अगंका या तो कहा जा सकता है कि हर कर्म भूमि में कोई न कोई जाति होती है। परन्तु यह नहीं कह सकते कि वर्तमान में जो अप्रवाल आदि जातियां हैं यह ही अनादि से हैं। यह जाति तो हमेशा घट-कती रहती हैं। कभी कोई उत्तर किसी खुजर्ग के नाम से उत्पन्त हो जाती है। कोई किसी देश, देश अववा किसी अन्य कारण से कायम हो जाती हैं। इन अप्रवाल आदि जाति को अनादि मानना तो प्रत्य ह इति हास के विरुद्ध पड़ता है। इसके अति-रिक प॰ जी स्वयं लिखते हैं कि "जाति मिनन ू सदार्य नहीं है-द्रज्यां की पर्याय ही हैं।" सी जैन सिद्धान्त के अनुसार पर्याय तो सदेव बर्छती रहती है। इसिंडिए जाति भी हमेशा बदलती रहना चाङ्य। और यदि किसी जैनशा च में अववाल. मांडेलवाल भारि जातियाँ को अनादि जिला है तो क्या करके एं० को उसका हवाला लिखें।

(.4) मुळेड्छ , साण्डों में ब्राति होती .हैं या

नहीं ? यदि होती हैं तो आर्य खंड की जाति और बहां की जाति एक हैं या क्षिन्त २ हैं ? साल्कें में बहां की जातियां के कुछ नाम दिए हैं या नहीं ?

- (६) आपने लिखा है कि "जब लीधे काल का करीब एक लाख वर्ष रहा था तब कुलक्लक उत्पन्न हुए और पार्श्वनाथ स्थामी के बाद खुद्ध हुआ है।" सो पार्श्वनाथ स्थामी के पहिले कुछ कम एक लाख वर्ष के अन्तराल में कौन २ कुछ कलं के उत्पन्न हुए?" किस शास्त्र में उनका हाल दिया हुआ है?
- (७) क्या छठे काल में अप्रवास, खंडेस्रवास आदि जातियां कायम रहेंगी और स्रोग अपनी २ जाति में विवाह-सम्बन्ध करके जाति धर्म व कुलाचार कायन रक्खेंगे ?
- (८) क्या गोत्र कर्म के उदय से भी चिरत्र होता है? यदि किसी प्रन्य में यह दिया हुआ है तो क्रपा करके उस प्रन्य का नाम गाथा या प्रस्रोक का पता लिखें।
- (६) यदि कोई नीच गोत्र सा मनुष्य अच्छा आचरण करने लगे तो क्या यह कहना ठीक होगा कि इसके अब नीच गोत्र कमं का उदय नहीं रहा? उसकी उस गोत्र कमं का उदय होगया ? इसलिय उसकी उस गोत्र का समकता चाहिए।
- (१०) वर्ण व्यवस्था का रज वीर्य का साधन्य है या नहीं ? श्रीयुन् पंश्चन्दनलाल जी ने तो अपने एक लेख में क्षत्री, ब्राह्मण, चैर्य वर्ण के वीर्य के प्रयक् र गुण लिखकर वर्ण व्यवस्था का कीर्य से ही सम्बन्ध बतलाया था। क्या आप पंश्वी की राय से सहतत हैं ? जो आप वर्ण यचस्था की मार्ज विका के साधन स्टब्स दहसाने हैं।

- (११) आपने लिखा है कि जाति वर्ण के भेर अमेद नहीं है। तो क्या एक जाति के कई वर्ण हो सकते हैं? और क्या यह जाति कई वर्णों में पाई जाती हैं? यदि कोई जाति ऐसी हों जो कई कर्णों में पाई जाती हों तो कृपा करके उन जातियों के नाम लिखिए।
- (१२) क्या जैन धर्म में कोई लौकिक व्यवहार भी कहे गये हैं ? यदि कहे गये हैं तो वे कौन २ से हैं ! और उनमें क्या होता है ?
- (१३) आपने लिखा है कि "यह अन्य खंडेल-षाल, अववाल बादि जाति कुलकरों के समय से या अनादि से हैं।" यह किस ब्रन्थ में लिखा हुआ है कृपा करके क्लोक समेत लिखिए।
- (१४) गुजरात प्रान्त में हुमड़ और मेवाड़ प्रान्त में नरसिंह पुरादस्से क्यों कहलाते हैं ? सब प्रश्नों का उत्तर यथार्थ शीव्र देना चाहिए।

इतिशम्।

सम्पादकीय-टिप्पशियां



हिन्दी साहित्य श्रीर जैनी

वगाध जैन साहित्य पर एक साधारण दृष्टि डालने से यह सहज ही अनुमान में आ जाता है कि हिन्दी साहित्य में उसका भाग विशेष है और यह मृत्यमय है। हिन्दी के प्राचीन इतिहासका पता जैन साहित्य के अध्ययन से ही प्रकट हो सका है, वर्षों कि हिन्दी की जन्मदाशी प्राष्ट्रत भाषा मानी गई है। और प्राष्ट्रत में जैनियों का साहित्य अपार है। इस के अतिरिक्त समय २ पर जैन कवियों ने जो अपनी नैसर्गिक प्रतिभाशाली कविता से हिन्दी साहित्य को समलंकत किया है, वह भी किसी से छिपा नहीं है। कश्चिर बनारसीदास जी, भैया भगवतीदासजी, बाबू बृन्दाबनदासजी प्रभृति कवि कु छरलों की अमूल्य रचनापें शान्ति और मिक रस की अपूर्व सामिग्री है। उनसे हिन्दीसाहित्यका महत्व बहुत कुछ बढ़ गया है। परन्तु हिन्दीसाहित्यका महत्व बहुत कुछ बढ़ गया है। परन्तु हिन्दीसाहित्यका

के प्रारंभिक काल में इस तरह जैनियों के तत्सम्ब न्धी उत्साह को देखते हुए आज उन का उस तरफ से उदासीनता को देखते अधीम दुःख का सामना करना पडता है। इस िषय में यद्यपि हम जानते और मानते हैं कि हिन्दीग्रन्थ प्रकाशन स्पूर्म उनका साहाय्य बहुत बड़ा खढ़ा है। किन्तु यह उक्त भूटि की पूर्ति नहीं करता ! आज कोई भी टांडरमल, कोई भी बनारसीदास, कोई भी वृन्दावन नहीं दीखता! इस उदासीनता को दूर करना और जैनियों में उनकी मातृभाषा के प्रति मकिभाव संचार करने का प्रयत्न प्रत्येक जैन सभा और विद्या लय को आवश्यक है। जैन विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य लम्मेळव की प्रश्लेकाएँ देने को उत्साहित करता प्रत्येक जैनलभा का लाजभी कर्ज है। इस ही बात को रुध्यकर परिषद्द ने अपने गत अधि-बेशन में इसी भाराय का एक प्रस्ताव किया है।

अब जैन हिन्दीसाहित्य सेवियों और कवियों का कर्तव्य होना चाहिये कि वे उसकी अमली पूर्ति करें।परिषद् का श्वागामी अधिवेशन वर्धा में माध्यास में होवेगा। उत्तम हो यदि उस समय समग्र भारत के जैन साहित्य सेवी व कविगण एक त्रित हो एक "जैन हिन्दी समिति" की योजना करें और उसके द्वारा हरप्रकार हिन्दी जैन साहित्य की उन्नति करें। अभी हाल में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में जैनियों ने कुछ भाग नहीं लिया यह भी उन की इस और से उदासीनता का परिचायक है। ऐसी दशामें यदि जैनेतर संसार और इद्यं सम्मेलन प्राचीन जैन कवियों की प्रतिभावान सदकत्यों से अनभिन्न रहे और उससे उदा-सीनता रक्बें तो कोई आश्चर्य नहीं ! यही हाल आज देखा जाता है । इस शोचनीय दशा को मेटने के तिए श्रीयुत नायुराम जी प्रमी, बाबू युगल किशोर जी, पं2 दरबारीलील जी साहित्यरतन, वाबू करहैया लालजी करत्तला प्रभृति को कार्यक्षेत्र में आजा चाहिए । और बर्धा अधिवेशन के समय जैन कवियों व लेखकों का सम्मेलन करना चाहिए। क्या अन्य सरजन इस ओर अपने विचार प्रगट करेंगे।

२=जैनियों में शिक्षा पूचार

--- ड० सं०

अन्यत्र जो संख्यायें सरकारी रिपोर्ट से जैनियों में शिक्षा प्रचार की दीं हैं, उन से हमारी समाज की शिक्षा सम्बन्धी हीन दशा प्रकट है। हमारे बहुत से सज्जनों को अभी तक सम्भवतः यही भ्रम होगा कि विविध जैन विद्यालयों के होते हुए जैनियों में शिक्षा प्रचार काफी रीति से

हो रहा है। परन्तु शिक्षा गणना, अंक से यह सर्वथा मिथ्या प्रमाणित हो जाता है। १०० जैनियों में से थाज केवल २६ जैनी लिख पर सके हैं। यह कितने दुःख का बात है । सोभी उनमें कोई भी ऐसा प्रखर विद्रान नहीं दिखाई देता औ पूज्य स्व॰ टोडरमल जी की समानता कर सके अथवा छौकिक विद्या में अल्प संख्यक पारसी जाति के अनुसार प्रख्याति प्राप्त कर सके ! यहां तक शोचः नीय दशा है कि आज इतने जैन विद्यालयों के होते हुए भी जैन पाठशालोशों के लिये अध्यापक नहीं मिलते। इटावे का उदाहरण आँखों अगाडी है। वहां के भाइयों ने उप्लाह कर विद्यालय स्थापित कर लिया परन्तु जैन पंण्डित की प्राप्ति उन को अभी तक नहीं हो पाई है। इससे साफ प्रकट है कि वर्तमान के जैन विद्यालयीं से जितना शिक्षा प्रचार और उनसे लाभ जैनियों को होना चाहिए था उतना नहीं हुआ है। तिस पर यदि स्त्री शिक्षा की ओर दूषिट डालें तो रहा सहा हृदय ट्क २ हो जाता है। आज १०० जैन-क्रियों में से ६६ निरीह मूर्खा हैं। ऐसी दशा में वह स्वयं अपना आत्म-कल्याण कैसे कर सक्तीं हैं ? और कैसे अपनी सन्तित को ऐसी झानवान बना सक्तीं हैं जो वह बास्तव में जैन धर्म रत हो सके ? जैन धर्म प्रचार और जैन समाज की उन्नति का मूल मन्त्र बस यही एक है कि सबसे पहिले खियों में आवश्यक शिक्षा का प्रचार किया जाय । समक में नहीं भाता कि अक्षर ज्ञान के नहोते हुए वे किस प्रकार धानक के परावश्यकों का पालन कर सकीं हैं और अपने को श्राविका बतलाने की अधिकारी बन सकी हैं ! अतएव इस सब की देखते हुए बह

जानस्यक प्रतीत होता है कि इस अजानान्यकार को बेटने के लिए जिसके कारण हमारी जाति के सर्वाङ्ग ठिउर गर हैं और उनकी कहीं भी कुछ कुंक नहीं है, व्यक्ति यत प्रयत्नों के अतिरिक्त एक स्वामिक आयोजन किया साथ और उसके कार्य समाग्र भारत के होतियाँ में शिक्षा प्रसार को क्रोतकता की जाने । वर्तमान में प्रथम २ जो विद्या-स्त्य सो रहे हैं उनसे समाज के धन के दुरुपयोग होते के साथ साथ धारतविक लाग भी नहीं होता । उनको पाउन कुम भी एक दूसरे से इतना विभिन्न और वर्तमान सोबन आवश्यकाओं के इतना विपरीत है कि उन से न तो जैन धर्म की पभावना ही समुचित रीति से होती हैं और न जैन छात्रों के छोक्तिक जीवन उन्नत बनते हैं। दूसरे विचारणीय यह भी है कि जैन विद्यालयों में इस समय एक विद्यार्थी के पीछे कम से कम ३०। मासिक खर्च किए जाते हैं और उधर सरकारी कीए में टैक्स आहि हुए से जो धन जैनी देते हैं उस का उचित उपयोग वे सरकारी शिक्षा प्रचार के कार्य से नहीं लेते। इस प्रकार दोनों ओर से हानि उडानी पड़ती है। इस कारणवश ता यह उचित है कि जैन विद्यालयों का परनक्षा इस ढंग का रक्का जांबे जिसमें जैन अजैन सब सम्मिलित को सर्वे और उसी तरह वहाँ से शिक्षा प्राप्त कर इसके जिस प्रकार मिशनरी स्कूलों में से वे प्राप्त करते हैं। ऐसी अवस्था में धर्मशिक्षा भी ही जा सकेगी और जान अपने हो किक जीवन की उन्मति हेतु आवश्यक व्यापारिक आदि ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे । तथापि सर्च भी घट अधिगा क्योंकि छात्रों हो उचित फीस भी ही जासबेगी और सरकार से भी सहायता मास की जा सकेगी। जैन छात्रों को

अथवा अन्य छात्रों को उचित छात्र वृतियां देकर खहायता भी की जा लकेगी। इस हेत छात्रग्रूयमें सब पेड छावही रह सकेंगे जिससे छावालयमें भी कम खर्च पडेगा। इस प्रकार के कम से को रूपया बचेना उसके द्वारा अन्य स्थानों पर तप िद्यालय खुल सकेंगे। साथ ही जिन छात्रों को छात्रवृत्ति रूप में वर्तमान की भांति सहायता ही जाने उनसे कम से कम दो वर्ग तक किसी पुकार की सामा-जिक सेवावृत्ति यात्र भोजन-व्यय पर ली जावे। इससे कार्यकर्ताओं के अभाव की भी पूर्ति किन्हीं अंगों में होती रहेगी। परन्त ऐसी व्यवस्था तब ही हो सक्ती है जब बर्तमान जैन शिक्षालयींके लिए एक भारतन्यापक जैन शिलासमिति अथवा जैन विश्वविद्यालय स्थापित किया जाने। और उसी ही के आधीन सर्च पुकार के जैनशिक्षा-छा रहें। उस की स्थापना सं स्त्रीशिक्षा के प्रचार का भी उचित पदन्य हो सकेगा। तथा उन स्त्री पुरुषों की शिक्षों के लिए जो अधिक वय पान हैं और अपने गाहंस्थिक उलक्षमा के कारण किसी विद्यालय में शिक्षा पाप्त नहीं कर सक्ते 'चूमवे हत पुस्तकालयों " के ढंग पर व्यास्था की जा सकेगी, जिससे वे अपनी आत्मोन्नति कर सकेंगे। बस यही एक उपाय है जिसके हारा जैन समाज में पूर्णक्रप से शिक्षा का पुचार किया जा सका है। जब तक एक जैन विश्वविद्यालय क्याबित महीं होगा और उसके आधीन जं न शिक्षालय नहीं रहेंगे तब तक न तो जैनधर्म का प्यार होसकेगा और न ीन समाग की उन्नति । समाजहितें विशेष और नेताओं तथा उन शिक्षा आश्रमों के अधिष्ठा-ताओं को इस ओर ध्यान देकर अज्ञानधिकार मेटना चाडिए। -30 do

साहित्य समालोचना

भगवान महावीर

१-लेखक-अलीगं न ज़ि॰ पटा निवासी श्रीयुत् बाबू कामताबसाद जी जैन, उपसम्पादक 'बीर' २-प्रकाशक-श्रीयुत् मूलचन्द्र किसनदास जी काप-ड़िया, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, स्रत ३-मूल्य-सजिल्द का १॥।) प्रकाशक से प्राप्त । पृष्ठ संख्या लगमग २००,साइज २० × २०,१६पेजी मेरी दृष्टि में अब तक जैन समाज में "श्री बीर भगवान" के जितने भी जीवन चरित्र लिखे गये हैं उन सर्व ही में यह चरित्र अपनी निम्न ।लिखित बिशेषताओं के कारण अधिक उपयोगी, अधिक महस्वपूर्ण और अपने ढंग का सबसे पहिला ग्रन्थहै

१-आधुनिक शैली पर पेतिहासिक ढंग से किलागया है।

२-जैन और अजैन सर्व ही के डिये समान उपयोगी है।

३-जीन धर्म की अतीय प्राचीनता, उत्हएता और खर्शीयसेनिता को न केवल जैन गृन्थों के आधार वर वरन अनेक अजैन गृन्थों के शाचीन लेखों और आज कल के सुत्रसिद्ध कई स्वदेशीय व विदेशीय अजैन विज्ञानों की सुयाग्य सम्मतियों की सांकी हैंगि सहूह प्रमाणों से सिद्ध करता है।

8-श्री महातीर भगवाम तथा अन्य तीर्थंकरों के वास्तविक व पेतिहासिक व्यक्ति होने में जो वर्तमान समय किसी २ बिद्वान को कुछ श्रीकार्य हैं तथा हीन धर्म के सम्बन्ध में जो कई प्रकार की भूठों किम्बदन्तियां फैली हुई हैं उन्हें द्रृद्ध प्रमाणीं द्वारा निर्मुल सिद्ध करता है।

५-अजैन विद्वानी को नैन साहित्यावलोकन के लिये उत्कंटित करता और जैनवर्म की वास्तिक प्रभोवना फैलाने में बहुत कुछ सहायक है।

दे-यह चरित्र न केवस वीर भगवान का ही अबुकरणीय पवित्र चरित्र हतारे सामने उपस्थित करता है, चरन इनसे पूर्व के सर्व तीर्थंकरों भीर पश्चान्के सुप्सिस आचार्यों जादि का भी संक्षित्त कप में दिग्दर्शन कराता है जिससे अभो को जैनधर्म का एक महत्व पूर्ण और सर्वाङ्ग सुन्दर यृहत् इति हास तुष्टनात्मक पूणाकी पर स्थित जाने में बहुत सुन्द सहायता मिल सकती है।

७-वृकरण २१ में 'क्षत्र चुड़ामिय-जीवन्यर" और ए० ३१ में ''भगवान का दिव्य उपदेश और निर्मेल चारित्र''शीर्षक लेख सर्व सरभारण के छिये वड़े उपयोगी और पठनीय हैं।

क्षी चीर अमवान के पविष जीवन से जो
 उत्तम शिक्षाएँ मिलतो हैं उनका सार्यक्षक संबद्
 भी इस अंथ के अन्त में देदिया प्रवा है। इत्यादि।

इस अहितीय चरित्र को संस्कृत महोद्व ने यद्यपि बहुत कुछ सममग्री सुटाकर सब्दे सरिक्षण से लिखा जान पड़ता है तय्यपि इसमें कोई २ सो सा-प्रदायिक भेद से और कई एक सामग्री की कुछ काम सा अन्य कारणों कहीं २ से स्वेष भी वह सब हैं जो आशा है कि अगले संस्करण में भले प्रकार समक्त और विचार कर यथा आवश्यक दूर कर दिये जायँगे : इनमें से कुछ उदाहरण मात्र निम्न लिखित हैं:—

(१) ए० १२ एं० १३ पर श्री नेमनाय का श्री पार्श्वनाथ से =४००० वर्ष पूर्व होना।

त्रिलोकसार गाथा =१० में तथा हरिवंशपुराण आदि गृन्धों में=३०५० वर्ष पूर्व है और भी महावीर भगवान से लगभग =४००० वर्ष पूर्व है, भी पार्श्वनाथ भगवान से नहीं है। यद्यपि भी नेमनाथ का भी पार्श्वनाथ से भी =४००० वर्ष पूर्व होना सर्वथा अंशुद्ध नहीं है, क्योंकि जैनगृन्धों में को एक तीर्थ-क्रंत का दूसरे से अन्तराल दिया है वह प्रायः सर्वत्र मोझ से मोझान्तर है और भी नेमनाथ की पूर्ण आयु लगभग १००० वर्ष की है। अतः उनका =३०५० वर्ष का मोझ से मोझान्तर होने पर भी =४००० वर्ष पूर्व होना (विद्यमान होना) भी यद्यपि ठीक है तथापि शास्त्र परिपाटी विद्यह होनेसे बिना साफ शब्दों में स्पष्ट किये पाठकों के लिये भूमोत्पा-दक अवश्य है।

(२) पृ० २३ पंक्ति = पर भ्री कृष्ण को भ्रीनेम-नाथ का भतीजा लिखना।

हरिवंशपुराणादि जैन गृन्थानुसार वह श्री नेम-नाथ भगवान के चचेरे भाई थे।

(३) पृष्ठ २६ पंक्ति ११ पर श्री रामचन्द्र को श्री मुनिसुत्रत भगवान का समकालीन लिखना।

"समकालीन" के स्थान में "तीर्थकालमें" लि-कना उचित होता। क्योंकि श्री पद्मपुराण, उत्तर पुराण तथा श्वेताम्बराचार्य श्री हेमचन्द्र रचित ं ''तैन रामावज" आदि शैनगृन्धों से पाया जाता है कि श्री रामचन्द्र का जन्म श्री मुनिसुन्नतनाथ के समय से बहुत सी पीढ़ियाँ सूर्यवंश की बीत जाने पर श्री मुनिसुन्नतनाथ और श्री नेमिनाथ के अन्त-रालकाल ही श्रीमुनिसुन्नत मगन्नान का "तीथंकाल है जो लगभग ५६०००० वर्ष पर्यन्त रहा। इसे "समकाल" नहीं कह सकते।

(४) पृष्ठ १३पंक्ति १३-१४ पर भागीरथ केवली का अभिषेक किया जाना।

श्री उत्तरपुराण प्रकरण ४८ श्लोक १३८-१४१ में श्रीभागीरथ मुनि के चरणों का उनकी छग्नस्य अवस्या में श्लीरोद्ध के जल से इन्द्र द्वारा अभिषेक किया जाना लिखा है। मुनि दीक्षा के लिये पी है छग्नस्य अवस्था में भी चरणों के अतिरिक्त अन्य शरीराङ्गों का अभिषेक नहीं होता और कैवल्य पद प्राप्त किये पीछे चरणों का भी अभिषेक नहीं किया जाता।

(५) पृ० ७४ पंक्ति १= पर भी बीर भगवान के जन्म समय चौथे काल में ७४ वर्ष ४॥ मास शेष रहने लिखना।

श्री वीर मगवान की आयु ७१ वर्ष ६॥ पास की थी और उन के निर्वाण के समय चौथे काल में ३ वर्ष =॥ मास शेष थे। अतः इन दोनों का काल परिमाण का जोड़ जो ७५ वर्ष ३ मास है इतना ही काल परिमाण उनके जन्म के समय चौथे काल में शेष था।

यहाँ यह भी ध्यान रहे कि कोई महातु-भाव भूल से भगवान की वय पूरे ७२ वर्ष की मानकर उनके जन्म समय चीये काल में ७५ वर्ष दा। मास शेष रहना जानते हैं। यह अशुद्ध है। (६) पृष्ठ हैं६ पंक्ति ४ पेंट भी बीर भंगवाने की हीक्षा के समय ६ मास का तप या उपवास (षट-मेंग्सीपवास) प्रहण करनी या ६ मास पीछें आहार कैना में

धीं उत्तरपुराण पर्व अबं नहीं के ६०२, ६१६, ६१६ से प्रकट है कि दीक्षा के समय उन्होंने चंद्रीपंवास (बेलावत) अर्थात् केवल दो दिन के उपवास की प्रतिक्षा गृंदण की धीं, पर्मासीपंवास की नहीं। दो दिन का वत पूरा होने पर अर्थात् प्रतिक्षा से बीधे दिन "कुलग्रम" में कुल नोमक रोजा के यहाँ भाहार लियां।

नोट रे—अंगा कविहत "श्री महावीरचेरित"
सर्ग १७ स्त्रोक ११५ से तथा स्वर्गीय श्र्वेताम्बर
मुनि श्री आत्माराम जी इत "जैन तत्वादशं" पृ॰
३६ न० १८, २१ में भी षष्ठोपवास या बेळावत ळेना
ही लिखा है। श्री सकल कीर्तिदेव विरंचित "श्री
महावीरपुराण" अधि० १३, स्त्रोक २, ३ आदि से
तथा स्व॰ इवेताम्बर मुनि प० झानचन्द्र जी रचित
"श्री बर्द्रमानपुराण पृ० २२, २३ से भी यही सिद्ध
है कि श्री बीर भगवान् ने दीक्षा के समय ६ मास
का तप या व्रत नहीं लिया। पर उन में शक्ति छः
२ मास के उपवास गृहण करने की थी तथा एक
हार छः मास का उपवास और कई बार छः मास
से कम, कई २ मास का उपवास भी किया किन्तु
बीका के समय नहीं।

नोट २—यह ध्यान रहे कि षष्ठोपवास ६ दिन के उपवास को नहीं कहते किन्तु दो दिन का निर्जंड उपवास और धारणा व पारणा (उपवास से पूर्व और पश्चात्) के दिन एकाशना करने को कार्त हैं। सर्वाद के संपूर्व के साहार स्थान को फेंहेरी हैं। इसी प्रकार चंतुर्योपवास एके दिन कैं निर्जेल वर्त की और भेडीपवास तीन दिने कैं निर्जेलवर (तेलां) की कहते हैं।

नीट १-प्० ६६ पर ही लिखा है कि कूलपुर का पता नहीं कि यह कहाँ था। मेरी सैम्मीत में यह स्थान भंगवान की जनमपुरी कुण्डपुर (कुण्डेगुंगम) ही का या तो अपम्र श नाम या दूसरा नाम है अथवा 'कुण्डपुर' के निकट ही के किसी अन्य गुंस की नाम हो सकता है। # क्योंकि जन्मपुरी के निकट के पंड (नागलंड) नामक बन में दीक्षा लेकर भगवान ने वेलावत लिया था और इस वत के पूर्ण हाते ही आहार प्रहण किया। ऐसी अबस्था में कहीं दूर जाकर आहार लेने की संभावना नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त श्री जिनसेणांचार्य हेत हरिचेश पुराण सर्ग ६० श्लो॰ २५४ (कंतकसे के छपे का पूर्व पर्देश पंक्ति १५ पर) में आहार का स्थान "क्डप्र" (जनमपुरी) ही लिखा है, और उत्तर पुराण पर्न ७३ इलोक ३१८ में कुलक्राम (कुल प्राम या कुल्यग्राम नहीं) लिखा है जिसका अर्थ शब्दार्थ लगाकर "कुल को या वंश की बाने" अर्थात् 'कुंड प्राम' या 'कुंडपुर" भी हो सकता हैं जो हरिवंश पुराण के अनुकूल है। रही यह बात

* "मगवान महावीर" पुस्तक में कीवियं जाति के नृप की राजधोनी रामगांम की कृषपुर बतकाया गया है और यह कृष्टधोम वा वेशाबी के निकट भी था। चेतिएवे वहीं के राजा कृष्यमूप ने मगवान की चाहार दियां होगां। यदि हैने कुष्टपुर काहार माम मानके तो किर कृष्यप का रेतिहासिक कंतुसंस्थान कोगाना रोप रहजाता है। परस्तु कृष्यि जाति के कृष्य कृष्यमूप और उनकी समयानी ही कृष्यनगर वे कृष्य हैं मानके तो हक सबका समायान होजाता है। —व० स०। कि इंडमाम में 'कूल' नामक राजा कैसे हो सकता है सो उत्तर पुराण में उसे कुंडमाम का अधिपति या वासी नहीं कि खा। वरन् यह लिखा है कि "कूल नामा महिपाल ने कुलमाम में आहार दिया" भगवान की दीक्षा के समय आये हुए अनेक मही-पालों में से एक यह महीपाल भी होगा और भग-वान के पारणे के दिन तक कुंडमाम में ठहरा रहा होगा। पैसी सम्भावना है।

(७) पृ० १०६ पंकि ४ पर मगवान का केवल श्रोत प्राप्ति पीछे चतुर्मासा करने के लिए एक स्थान पर रहना ।

चारण आहि ऋ विधारी मुनि (गणधरादि) और केवलियों को वर्षाऋतु में एक स्थान में रहने को कोई नियम नहीं है। क्यों कि उनके शरीर से जीवधात होने का भय नहीं है। ×

(म) पृष्ठ २११ पर "वीर निर्वाण प्रति काल निर्णय" शीर्षक लेख में (१) श्री त्रिलोकसार की गाथा म्प्र•, (२) अर्थिविद्या सुधाकर (३) सरस्वती गच्छ की पर्टावली की भूमिका (४) पर्टावली की भूमिका (४) पर्टावली 'अ' की भूमिका की गाथा, यह चार प्रमाण देकर अचलित वीर निर्वाण सम्वत् के ही दिनेक बताना।

इस लेख में भी त्रिलोकसार की गाधा म् ५० आदि ४ ममाण देकर जो प्रचलित सम्बत् के ठीक होने की पुष्टि की है वह ध्यान देकर विचारने से उन्हीं चारों प्रमाणों द्वारा अशुद्ध सिद्ध होती है।

अवसम हो इस विषय में खेलक मेरे वन प्रश्नों का बलक अवस्य करें को जैनिमन क्ष्म १ में प्रगट हुए हैं। दिश्शास्त्रों में तो वीर्थहरों के वातुमीस सम्बन्ध में कुछ नहा कहा गया है।

क्यों कि अन्तिम दो प्रमाणीं से (सरस्वती बच्छ की पर्टावितयों से) तो खुले शब्दों में विक्रम का जन्म (न कि विकम सम्वत् का प्रारंभ्भ) श्री बीर भगवान के निर्वाग काल से ४१० वर्ष पीछे हुआ। और विक्रम ने सम्वत का प्रारंभ विक्रम के जन्म से किसी प्राचीन या अर्वाचीन विद्वान ने माना हो पेसा किसी लेख में दृष्टि गौचर नहीं हुआ, किन्त इस के विरुद्ध 'मदनकोष' 'भारत के प्राचीन राज चंश' आदि अनेक ऐतिहासिक प्रन्थोंसे यह मिलता है कि शक जाति के लोगों को जीतने की स्मृति में विक्रम यह सम्बत् चलाया और इसी लिये यह राजा "विक्रमादित्यशकारी" नाम से प्रसिद्ध हुआ। किन्हीं किन्हीं ऐतिहासिक लेखीं से यह भी पता लगता है कि विक्रम सम्वत् का प्रारम्भ विक्रमकी १८ वर्षकी वय में हुआ। अतः भ्री बीर निर्वाण काल से विक्रम सम्बत् का प्रारं+भ ४७० वर्ष + १⊏ वर्ष=४८= वर्ष पीछे हुआ उपरोक्त दोनों प्रमाणीसे सिद्ध होता है * और पहिले दो प्रमाणों से (त्रिलो

* पुस्तक खेखक को वस समय तक मास्टर साइय के प्रमाणों का मान नहीं था। अब आपके प्रमाण भी प्रगट हैं और उधर जार्क चोर्यन्टियर साठ ने दिंग सन्से ४६७ वर्ष पहिसे वीर निठ मानना ठीक बतलाया है। इस लिए इस प्रश्नों पर पूर्ण विचार करने की आवस्यका है। यथि इन प्रमाणों को देखते हुए ई० सन् से ४४४ वर्ष पहिसे वीरनिर्वाण मानना भी आत्युक्ति नहीं है। ऐसा ही मत बाठ की कोवी का मी प्रतीत होता है। उन्होंने "मनवान महावोर" की पहुँच में को यब बिखा है उसमें बिखा है:—In the 32nd chaper you show that according to Ligambara tradition, the Nirvana of Mahavira took place 470 before Vikrama, Now I found in a guravali

-- 30 EO |

कसार की गाथा ६५०, व 'आर्य विद्या सुधाकर' के इंडोक से) भी यह प्रगट नहीं है कि निक्रम सम्बद्ध का प्रारंभ्य बीर निर्वाण काल से ४९० वर्ष पीछे हुआ किन्तु यह अर्थ निकलता है कि ४९० वर्ष पीछे विक्रम नामक राजा हुआ। जिस का आशय प्रथम के दोनों प्रमाणों से अविरुद्ध यही लेना युक्ति संगत है कि बीर निर्वाण से शुकराणा का जन्म ६०५ वर्ष पीछे और विक्रम का जन्म ४९० वर्ष पीछे हुआ। ऐसा अर्थ लेना उपरोक्त खारी प्रमाणों से अभिरुद्ध हैं। अतः वीर निर्वाण काल विक्रम सम्बद्ध से ४८० वर्ष पूर्व मानना पिछले दो प्रमाणों से सर्वथा विरुद्ध है और पहिले दो से भजनीय दिखात्मक है।

पृ० ३४ पंकि १७ से २१ तक के लेख से जात होता है कि बुद्ध का निर्धाणकाल अब तक सन् ई० से ४=९ (या ४=२) वर्ष पूर्व माना जाता था परन्तु from Jaipur that Vikeama's birth occured 470 years after Mahavira's Niivana सत्तरिबंद्ध सद्भुतो तिख्काला विक्रमो हब्द जम्मो. But the Vikrama era does not date from the जन्म of Vikrama, but from the राज्य of Vikrama, or from the 18th year after his birth. By his recokning the Nirvana should be placed 18 years earlier or 545. B C. भ्रमी भाष प्रमाण चाहते हैं। इस हंतु मास्टर माहब के उक्त प्रमाण भी भाषक भेजदिए आर्थन । जो हो इससे साफ मकट है कि प्रचित्त बीर निर्वाण संद भारत है। मास्टर साठ की यह भ्रमोषणा स्राहतीय है।

भारत के प्राचीन राज गंश जितीय भाग के

अब "बार बेठ" के लेखानुसार सन् रं वि पे पे पे पे (बिंव संव से प्रक्ष) वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है और यही सम्बत् (प्रप्तत्र या प्रप्त्र) सींलीन की पुस्तकों में भी माना गया है। अतः बीर निर्वाण काल विक्रम संव से ४०० वर्ष पूर्व मानने से और महाबीर निर्वाण काल बीद निर्वाण से १७ वर्ष पीछे का सिद्ध होता है जो स्वयम् गून्थ छंखक के लेख (पृष्ठ २१३ पंकि १७ वर्ष पृव १७२३ पंव १, व पृव २३१ पंकि १६ से २७ तक व पृव २३२ पंव १ से चार तक) से विवद्ध है, परन्तु वीर निर्वाण विक्रम से ४०० वर्ष पूर्व मानना उसके भी विवद्ध नहीं है।

इस के अतिरिक्त मेरे कई छीव "जैन मित्र" वर्ष २२ अंक ३३, और अहिंसा वर्ष १ अंक २०, आदि कई जैन समाचार पत्रों में तथा वृ० जैन शब्दार्शव कोप के पृ० ७ के फुट नोट में अन्य भी कई प्रमाण इस विषय में निकल चुके हैं जिन में श्रीयुत पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद व स्वर्गीय ब्रह्म चारी शानानन्द जी ने भी अपनी अपनी सम्मति इसी के अनुकूल प्रकट की है। अतः मेरे तुच्छ वि-चारात्रकुल भी वीर नि० काल विकम जन्म से ७४० वर्ष पूर्व और विक्रम सम्बत् के प्रारम्भ से ४८८ वर्ष ५ मास पूर्व मानना ही सर्व प्रकार ठीक और युक्ति युक्त है और इसिनिये आजकल जो गत दीवाली के पश्चात से बीर निर्वाण सं० २४५१ माना जाता है उसमें १६ वर्ष बहाकर (क्योंकि प्रच-लित बीर नि० सं० २४५१ बिक्य सम्बत् के बारम्भ काल से बीर निर्वाणकाल को ४६९ वर्ष ५ मास पूर्व मान कर चल रहा है जिसका अन्तर ४== वर्ष प्रमास के साथ १६ वर्ष ही है) उसके स्थान में २४७० मानना उचित है। ऐसा मान्हें

दुक् मेरा क्यार है किसी भी प्रामाणक नियन्वर या दुवेतास्वर जैन प्रत्यों या पर्टावसियों आदि से किरोध आने का भी भय नहीं है।

इस प्रकारको इन कई प्रकार की साधारण भूछीं के होते इप भी, जिनका हो जाना प्रत्येक अवपड़ मृजुष्य के लिये अनिवार्य है, पुस्तक की उपरोक्लि जित उपयोगिता पर दृष्टि डालते हुए बडे हप के साथ कहा जा सकता है कि भीयुत बाव कामता प्रसाद जी ने इस अमृत्य पुस्तक को लिखकर उप-खब्ध जैन साहित्य को विरवान्छनीय पेतिहासिक आवश्यकता को बहुतांग पूर्ण कर सम्पूर्ण दिगम्बर केनसमाज को आभारी बनाया है। आशा है कि हुम बीर भगवान के पेसे उपयोगी चरित्र को शीम ही प्रत्येक जैनी भाई के घर में तथा जैन पाठशा-छाओं व पुस्तकालयां में पडन पाठन करते और पढ़े लिखे अपने अजैन मित्रों को दिखाते हुए तथा श्रीम ही इसके द्वितीय संशोधित संस्करण को वेस्तो। इत्यलप्र।

बिहारीजाल जैन
(बुलन्दशहरी)
१६२४ ई० सी० टी०, श्रासस्टेंटमास्टर
ग० हाई स्कूल व गबद्दी
(श्रवथ)

स्त्रम्पार्घ झान रत्नमाला का दितीय रत्न बृहत् जैन शब्दाणिव

(बड़े साइज़ के २०० पृष्ठ से अधिक छप्रकर तैयार होगर)

बहु वही अञ्चपम और अपने हंग का सब से व पहिला ओर अर्ड नेन महान कीप है जो चारों हो

अनुसोग्रों के छग्नभग सर्व ही उपसच्या केन गुन्छी क्के अकारादि कुमासे किले यूथे शब्दों के अर्थ और व्याच्या आदि का एक बहुत बड़ा और महान संवह है, जिसकी तैयारी का कार्य लगभग २५ वर्ष कें हो रहा है, जिसके सम्बन्ध में कई छेड़ "हैंब मित्र" में कर्बार निकल चुके हैं, जिसके प्रारंभिक थोंड्रे से ही छप प्रशं की संश्रिष्त पर उत्तम सम्ह-लोजना रातवर्ष के जैनगज़द में और जैनमित्र सुंक ४८ में निकल चुकी है और जिसको शीघ्र से शाम देखने के लिये और उस से लाभ उठाने के लिये इमारे बहुत से भ्रात्मण अति उत्कंठित हो रहै हैं तथा जिसे पान्त करने के लिये अनेक सजत महात्रभाव तो बार २ पत्र छिखकर हमें थे है २ पृष्ठ ही जितने छपते जांय वहीं से जते रहने के लिये बाधित कर रहे हैं। उसी महत्वपूर्ण अपूर्व कोष के बड़े साइज के २०० एट्ड से कुछ अधिक छपकर आज तय्यार हो गए हैं। अपने सज्जन भ्राताओं की उत्कण्ठा पूर्ण करने के लिये हमने दो दो सौ (२००,२००) पृष्ठ हो भेजने का विचार निश्चित कर लिया है और इसी मास नवम्बर की १० तारीख से बी० पी० हारा रवानगी का प्रयन्ध भी कर दिया है। हर २०० पृष्ठ का मूल्य सर्व साधारण के लिये २। और "स्वल्यार्घज्ञानरत्न माला" के स्थायी गृहकों के लिये १।) (पौना मृत्य) नियत किया गया है। जो महानुभाव इस माला के स्थायी गृहक वनने के लिये।।) या १।) प्रवेश शुल्क भेत कर गृहक श्रेणी नं १ सा २ में अपना नाम लिखा देते हैं यह इस के स्थायी गृहक्र, माने जाते हैं। उपयुक्त कोच के अतिरिक् इस् माला में इस का प्रथम रत्न कविवर कृत्रावन

जी कृत ''पंचकत्याणक पाठ'' कल्याणक कम सं १२१ पूजाओं का अपूर्व संगृह भी प्रकाशित हो चका है जो आज तक अन्य फहीं से भी पकाशित नहीं हुआ है। इसमें कवित्रर का संक्षिप्त जीवन चरित्र उन की जनम कुण्डली और धंशवृत क्या हो शुद्ध पंचक्त्याण्य तिथि कोष्ठ तिथि कुम से व तीर्थं कर कुम से भी दिये गये है। सजिल्ह का मूल्य केवल ।।०)। है और माला के स्यायी गाइकों को । । में या किसी मन्दिर के लिये कोच के प्रथम २५० पाहकों को विना मुल्य ही काप के २०० पृथ्वां के त्री० पी० के साथ भेज दिया जापगा। इस माला का तृतीय रतन "अप्रवाळ इतिहास" भी प्रकाशित हो चुका है जो जैन और अजैन,देशी और मारवाडी,... इत्यादि सर्ग हो अपवंशियों का अब से लगभग सात सहस्र वर्ष पूर्व से आजतक का एक प्रमा-णिक इतिहास। मृत्य केवल 🗐 है। माला के स्थायी गृहकों की लेखक महाशय के फोटोसहित केवल 🏿 में दिया जायगा । यह प्रथम और तृतीय रत्न 'दिगम्बर जैन पुस्तकालप, सुरत से और "जैन गृन्ध रत्नाकर कार्यालय बम्बई से" भी मिल सकते हैं।

श्रिक रिश्रायत जो महानुभाव ता०१५ दिसम्बर १६२४ तक अपना नाम माला की गृहिक अणी में लि बा देंगे, उनके लिये प्रथम बार के बी० पी० में सर्ग डाँक व्यय भी छोड़ दिया जायेगा। चाहें वे तीनों में से किसी एक या सब की यथा इच्छा अधिक अधिक प्रतियाँ भी मंगायें। गृहिक अणी नं०१ या २ में नाम लिखाने का प्रवेश फीस ॥ ॥ या १।) भी गृहिकों की यथा इच्छा इसी वी० पी० में लगाया जा सकता है। शान्ति चन्द्र जैन,

भैने जर, "स्वल्यार्घ ज्ञान रत्नमाला कार्यालय;" बाराबंकी (अवध्र)

नोटः—वस्तुतः सास्टर विहारी लाल जी जैन धर्म की असीमं सेवा कर रहे हैं। उन का यह कोव एक अदितीय रुति होगी। फटकों को अवश्य ही गंगाना चाहिए। प्रत्येक मन्दिर में इसकी १ प्रति होना चाहिए। —उ० सं०

महिलात्रों की प्रार्थना

(बे०-भागती वाहता चन्दाकाई की) सुपारी महिलागण को आन,

पतिन इधारक भविजन तारक, श्रीजिन ज्ञान निधान । दुखिन दिखित पतित त्रसित हम, विनय करें भगवान ॥ १॥ बाल दृद्ध अनमेल रुग्ण पति, क्रोशित करत महान । मानू भक्ति रसं शून्य मही का, कैसे हो कल्याण ॥ २॥ तार्थ ताष्य अस्तित दुखभंजन, भवसागर के पान । सभागे महिलाएण को आन ॥

संसार दिग्दर्शन

समाज

वर्षा (सी० पी०) के प्रसिद्ध देशमक सेड विरंजी लाल जी जैन बड़जत्या की पूजनीया मातुश्री जी ने अपने यहां वेदी निर्माण कराई है जिसकी प्रतिष्ठा माह सुदि ४-५ अर्थात २७ जन-वरी को होगी। हर्ष का विषय है कि मो० दि० जैन परिषद ने भी सेड जी का निर्मंत्रण स्वीकार कर लिया है। स्वागत कारिणी समिति का संगठन भीमान सेठ दौलतरामजी के अध्यक्षता में हो चुका है। परिषद के वार्षिक अधिवेशन का धूनधाम के अतिरिक्त समाज के अन्य यहे २ नेताओं के व्या-क्यानों से भी अपूर्व आनन्द रहेगो। ब्रह्मचारी जी, वैरिष्टर सोहब तथा महामंत्री श्री चेनसुखदास जी छावड़ा आदि २ के आने की पूर्ण सम्भा-बना है। यहां आने पर श्री मुकागिरी जी श्री राम

देक जी आदि तीर्थ क्षेत्रों के दर्शनों का बहुत अञ्छा साधन रहेगा। अतः भोइयों को इस अवसर की हाय से व्यर्थ न जाने देना चाहिये।

-- मंत्री स्वा० समिति, वर्घा।

—श्री तंबेचू महासभा का तिरीय अधिवे रान करहल में वहाँ के पंचकल्याणक महोत्सव के सुअवसर पर माघ शुक्का में होना निश्चित हुवा है मिति अभी निश्चित नहीं हुई है। —महामन्त्री

--लंबेचू भाईयों से प्रार्थना है कि वे अपनी २ पंचायतों द्वारा निश्चित करके महामंत्रीको स्वित करें कि करहल में होने वाले महासभा के दितीय अधिवेशन का सभावित कौन बनाया जाय महामंत्री के पास इस प्रकार की सूचना अगहन के अन्ततक पहुंच जोनी चाहिये। ---महामंत्री

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दो कीजिये! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं!! अन्यया पछताइये!!!
दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर कुछ, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चछन
व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतिकया। कौन प्रन्थ पुस्तक उन्हों ने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बात इस पुस्तक में छिखी गई हैं। उनके रचे प्रन्थों का खण्डन, मिथ्या होबारोपणीं का उत्तर बहुत उत्तम गीति सं दिया गया है। मूल्य २०) सिज़ल्द २॥) डाकख़र्च ॥)
पत—चौधरी शिखरचन्द जैन फर्छ बनगर (गुडगाँव)

सचना

श्रीयुत चेतन दास जी ने भाव दिव जैने परिषद् के उपदेशक विभाग मंत्रित्व से त्याग पत्र दे दिया है। इस लिये श्रीयुत चम्पतराय जी वैरिष्टर सभापति परिषद् ने श्रीयुत् ज्यो तप्रशाद जी जैनी सम्पादक 'जैन प्रदीप' देवबन्द (सहारनपुर) को मंत्री उपदेशक विभाग नियुक्त किया है, अतः उपदेशक विभाग के सम्बन्ध में प्रोमी जो से पा व्यवहार िया जारे। रतनलाल मंत्री भाव दिव जैन परिषद् — पहिला सभा इटावे में कै लोक्य विधान उत्सव पर ता० ६ नवम्बर से म तक महिलाओं की उपदेशक सभा व शास्त्र सभायें हुईं। यहां जो मनुष्य बाहर से आये थे उनमें महिला अधिक थीं जहां देखों वहीं स्त्रियों के भुष्ड दिखाई पड़ते थे ये यहिनें झान की विपासा से प्रति दिन भा० दि० कैन परिषद के अधिवेशन में व आम सभाओं में भी आकर बैठती थीं इस दृक्य को देखकर मुक कण्ठ से यही ध्वनि निकलती है कि महिलाओं को झान प्राप्त करने की अत्यन्त अभिलाषा है परन्तु साधनों के अभाव से हमारो यह दुरवस्था हो रही है।

— इटावे में जैनधर्मभूषण पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के उपदेश से एक कन्यापाठशाला स्थापित हुई है जिसमें भाग्यवश जैन अध्यापिका भी सुयोग्य मिल गई हैं।

यहां जैन महिलाओं ने जैनमहिला हितकारिणी सभा इसी अवसर पर स्थापित की है जिसका अधिवेशन प्रतिमास होगा। कितनी ही स्त्रियों ने स्वाध्याय करने, मिथ्यात्व त्यागने व पूजन करने के नियम लिए।

— उत्प्रविश्री लंबेचू महासभा मुख्य सचित्र
मासिक पत्र शीव्र प्रकाशित होने वाला है, इसका
प्रथमांक माह मास में निकल जायगा । इसका
चार्षिक मूल्य लंबेचू भाइयों से १॥) और सर्व
साधारण से २॥) वार्षिक है परन्तु माघ कृष्णा १५
तक बनने वाले गृहकों से १) व २) लिये जांयगे
विशापन दाताओं के लिये सब प्रकार का सुभीता
है लेखादि भेजने व पत्र व्यवहार का पता—

ताराचन्द्र रपरिया महामन्त्री

बेलनगंज-आगरा

—जसवन्तनगर में श्रीमती पंडिता चंदाबाई जी का शुभागमन ता० १६-२० नवम्बर को हुआ था। तारीख २० को भी जैन मन्दिर में एक आम स्त्री सभा हुई थी। पंडिता जी का एक स्त्री उप-योगी व्याख्यान हुआ। कतिपय महिलाओं ने पूजनादि के नियम लिए। श्री वीरवाला विश्राम थारा के समाचार जान स्त्री समाज में विद्याधान्ति का उन्कंण्टा है।

घर बैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किक़ायत भाव से बी० पी० हारा भेजा जाता है जैसे स्ती, उत्ती, कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े. सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की प्रशीनें, ग्लास ब चीनी का सामान देशी, व श्रंत्र ज़ी दवाएँ, तेल, अतर, बानिंश, व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देखे।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग् की हर प्रकार की कमजोरी सिरदर्द, चक्कर आना आँखों से, धुंधलायन नज़र आना, बालों का बेसमय पकना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है । बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है दिमाग् के सब रोगों की रामवाण औषधि है। मूल्य १) ६० ३ शोशी का २॥।) ६ श्रीशो ४।) ६० ३२ शाशो १०) ६० व्यापारियों एजेटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये।

यता-मेसर्स स्क्रा दण्ड करपनी कमीशन एजेण्ट बम्बई नं १ १ द

देश

कोहाट के हिन्दू शासकों की मूर्खता और पश्चात से, लुटे, पिटे और परेशान हुए। उन की करोड़ों का सम्पत्ति घूल में मिल गई, जब यह जिक उठता है कि हिन्दुओं की जा हानि हुई उसका ताबान दीजिये, तो शासक कानों पर हाथ रखते हैं। यदि अंग्रेज शासक कोहाट या सरहदी प्रान्त में, हिन्दुओं की जान और माल की रक्षा नहीं कर सकते तो, क्यों नहीं वह इलाका काबुल के सुर्पंद कर देते ? अमृतसर में रौलट बिल के आन्दोलन के समय एक अंग्रेज मेम के पीटने का ताबान सरकारी खजाने से ५००००) दिया गया था। पंजाब हत्याकाएड का ताबान अन्य लोगों को मिला है। तो इन बेचारों ने क्या कसूर किया है ?

-समाचार है कि मद्रास सरकार ने ५७=
मोपला कैदियों को छोड़ना किर मंजूर कर लिया है।
-लाखनऊ में होने वाले नेशनल लिवरल
फेडरेशन के ७ वे अधिवेशन के सभापति के लियं
स्वागतकारिणी समिति ने पूना के डा० परान्तपं
को चना है।

--- वम्बई कारंपीरेशन में मि॰ बी॰ जे॰

पटेल। ने वाइसराय के आने पर सार्वजनिक जल्सा करने का विरोध किया ।

—श्रिष्यत भारतीय हांक कंमें वारियों की कान्क्रेंस बम्बई में हुई। समापित ने अपने भाषण में उवित वेतन के सिद्धान्ती पर ज़ोर दियां और कहा कि यह प्रत्येक कर्मचोरी का कर्तव्य है किं वह अधिक स्वच्छ जल वायु का सेवन करे और अपने लड़कों को शिक्षा हैं।

— म० गांधी ने वेलगांव कांग्रेस का समान्य पति होना स्वीकार कर लिया है। वे गो कांग्फ्रेंस के भी सभापति होंगे। कांग्रेस २६ दिसंग्वर सें शुरु होगी।

—इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्री को सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दीजाया करेगी।

विदेश

—२७ तारीख को इङ्गलैण्ड में बहुत जबर-दस्त तूफान आया है जानमाल का बहुत सा नुकसान हुआ है।

—देशभक्त लाला इरदयाल ने जो, इस समय स्विडेन में हैं कोहाट के हिन्दुओं के लिये एक पैंड का चन्दा भेजी है।

विषय-स्ची पृष्ठ सं॰ ६ दौर-ए-आसमां लेख ફક્ર १ ब्रितीय वर्षाभिनन्दन जाति पर वैद्यानिक प्रकाश ६१ ફક दं विनाशं का प्रबंह कारण और उपायं द्र सम्पादकीय टिप्पणियां ६२ ૭ર वे जैन इपीय किया (कलिंग में जैन धर्म) & साहित्य समाळोचना 88 **GU** रंक महिलाओं की प्रार्थना भ जैनियों में शिक्षा प्रकार **=**{\bar{\chi}} **अस्टिक महिना** 🗥 🍇 🎉 संस्तर दिग्दर्शन *** 23

दरिद्रता, दुर्बजता और चिन्ता व रोगों का कारण अधिक सन्तान का होना ही है।

अ सुरी-जीवन

इस में नैक्षा नक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन र कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा िना कारण अक्षानतावश हज़ारों ख़ियाँ क्यां बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि न। जल्दी र सन्तान होने से जहाँ खी का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पोषण मी समुचितरूप से नहीं किया ना सकता। रोगी माता पिता से ब्राजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दिरद्वता की निन्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य शास देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्वता के शिकार हा रहे हैं जैसे सन्तानहीं नता दुःख है जैसे ही अधिक सन्तान भी नरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के वि ानों के बनाय पेस यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई हैं जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भि धित रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों हारा हानि की सम्भावना रहती है, इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वणन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुस-जित पुस्तक का मृल्य २॥।) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

-कश्री हिमादि नेल देश÷

शिर दर्द, दिमाग की कमज़ोरी, आंखों की कमज़ोरी, आंखों के सामने पढ़ते २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में हो बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमादि तेल-शीतलता और सुगन्धि का बजाना है।

हिपादि तेल-वनस्थित सं त्रंयार किया गया है।

हिमादि तैल — विदेशी और विषेठी वस्तुओं से रहित है।

हिमादि तैल-शिर दर्द से हाहाकार करनेवालों का हँमाता है।

हिमादि तैल — अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुटाता है।

हिमादि तेल — ब्राध्म शरद् ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जःता है। एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुर्णों पर मोहित हाजायँग। यदि पसन्द न हो तो दाम बापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता--शङ्कर स्वदेशी स्टोर, विश्वनीर (यू० पी०)

केवल २॥) रु० में

हिन्दी में उच्चकोटि का पत्र साल भर तक विलेगा !
जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा
कल्प, कविताएँ, अञ्चल व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है। अपाई,
सफाई, कागुज सब ही कुन्न रहता है।

अक्ष इस वर्ष में उपहार क्ष्र्

क्त वर्ष का चन्दा भेजने वालीं को एक दय नया ग्रन्थ।

🖁 भहावीर भगवान 🖁

विखकुल मुफ्त मिलेगा।

जिसमें महाचीर भगवान की जीवनी आधुनिक शेली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीनके बाद लिखी जा रही है। यह प्रम्थ भैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी सावित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रखनाएँ अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्त में

वीर का विशेषांक

बड़ी सजधन व सम्दरता के साथ निक-लेगा। तरह २ के रड़ीन व सादे बहुत से बिजी के अतिरिक्त हिम्ही व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवि नार्ये, गल्प आदि अम्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयस्न किया जारहा है। यह अङ्क देवने ही से ताल्लक रक्केगा।

शीघ् ही २॥) भेजकर गृहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापन दाता आं के लिये भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र साबित होगा।

पकाश्चक — राजेन्द्र कुमार जैनी—विजनौर (यू॰ पी॰) थी वर्द्धवासायमञ्

वीर

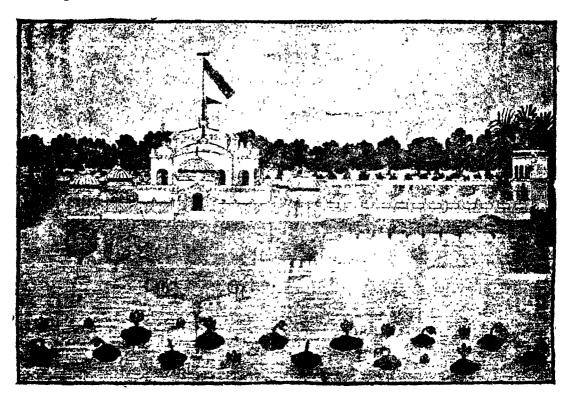
भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाचिक पत्र

44 E

१५ दिसम्बर, सन् १६२४

[संस्याध



लम्पादकः ---

वैनथर्मभूषण ब्रह्मचारी श्रीतलमसाद जी

प्रकाशक —

वार्षिक मृत्य]

भी० राजेन्द्रइयार जैन रईस, विजनीर।

टपसम्पादकः---

श्री कामतायसाद जी

िढाई रुपये

भी महाबाराब नेना ''चमा वीरस्य भूषणम्"

भी मारत दिगम्बर जैनं परिषद् का पाचिक मुख पत्रः

"सर्वत ! अज्ञाता की विचलतिका बढ़ती । भारत हुम पर यह फील परैल कर चढ़ती ।। हकंती विद्याधिनयादि गुणीं की ज्योति । अवनिति सब उच्चविषय की दिन २ होती ॥ सर्वेश! यही है विनय हमारी तुंम से । है छिपी नहीं कुछ बात जगत की तुम से R करणाकर ! करणावरणास्त्य ! भारत में । महिमा-मरीचि छावे सुभ हो भारत में ॥%

—⁰भारकर⁵³

बिजनौर, पींच इत्ला ५ बीर सम्बत् २४५० १५ दिसम्बर, सन् १६२५

पथिक

पथिक भोले में मंत्र पड़ जाना, पर्य में तेरे जास बिझा है भूल नहीं फैंस जाना । इसकी आहति देख देख कर तनिक न मन में फुल, मुक्ता नहीं श्रोस कथा हैं सुन्दरता में मत भूत । १ कांद्रेन मयास न करना इसके हेंतु व्यर्थ जावेगा, केवल दिखलावट है इसमें सूड़ न कुछ पावेगा । २ सद्भिक, सज्ञान, सत्य मुक्ताफल उर में भरले, मानव जीवन कनक सार में गून्थ सँगठित करले । र विश्वमाणियों के दितार्थ न्यों अवर कर वह माला, छदंदि शिववनिता के करसे पहिन भव्य बरमाला । ध _''वर**धतः**।

श्रोम्

श्रोकारं विन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः । कामदं मीत्तदं चीव श्रोंकाराय नमो नमः ॥

महानुभावों ! पेसा कौन अभागा पुरुष होगा जिस ने 'ओ रम्' शब्द न सुना हो, जिस के अवण मात्र से ही अनेक जीवातमा अपने कल्याण मार्ग पर लग गये हैं। इस शब्द से अधिक गृढ़ अर्थ-वाची चित्रवभर में और कोई अन्य अन्य नहीं है, इस को प्रायः सब ही मत मतान्तरों में सर्व श्रेष्ठ माना है। सब मंत्र, तंत्र, जंत्रों का सार इस ही में है क्योंकि यह सब में प्रथम ही प्रयोग में लाया काता है। इस लिए ही यह मंत्रों का महामंत्र. जंत्रों का महाजंत्र और तंत्रों का महातंत्र है । वेदों की चर्चाओं का सब से प्रथम शब्द भी यही है, इस से यह भी सिद्ध होता है कि यह शब्द वेदों के निर्माण से भी पहले का है या यदि यों कहें कि यह अनादि है तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस शब्द के महत्त्व को कुछ २ अमेरिका यूरोपादि देशवासी बिद्वान समभने लगे हैं और मुक्तकण्ठ से इसका उच्चारण जनता के लिये बडा उपकारी बतलाते हैं, उन में से किसी २ ने तो इस शब्द का उच्चारण स्वास्थ्य दृष्टि से भी अत्यन्त लाभकारी वताया है। यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों का भी वाचक है यों तो सब ही इस को ईश्वर वाचक शब्द कहते हैं और ऐसा ही है भी, तथापि इन सब बातों को बानते हुए यह कहा जा सकता है कि संसार में बहुत ही थोड़े गिने चुने मनुष्य ऐसे होंगे जो इस ऋष्य का यथार्थ इत सममते हों।

यही मसभ कर मैंने इस शब्द को कुछ स्पष्ट कप से जनता के उपकार के हेतु उसके सामने रखने का साइस किया है। यह मैं भली भांति जानता हूं कि उस शब्द की ब्याक्या तथा महत्व-क्णन में प्रनथ के प्रंथ लिखे जा सकते हैं और लिखे हुए हैं, इस लिए इसका पूर्ण कथन तीन चार पृष्टी में करना असम्भव ही प्रतीत होता है किर मा मैं प्रत्येक भाव को स्पष्ट दिखलाने का जहां तक हो सकेगा भरतक प्रयत्न कहंगा।

अोम् संस्कृतः भाषा का शब्द है जो संस्कृत बर्णमाला के पाँच अक्षरों से मिलकर बना है जिस में चार स्वर और एक व्यञ्जन है और वे 'अ, अ, आ, उ और म् हैं। व्याकरण नियमानुसार संस्कृत में स+अ='आ' के होता है, आ और आ मिलकर 'आ'ही रहता है जिसमें उ मिलने से 'ओ'हो जाता है। बस ओ में म् मिलकर पूरा ओम् शब्द बनता है। इन पाँचों अक्षरों में कोई भी अक्षर निरर्थक नहीं है सब ही सार्थक हैं, और इन पाँचों के ही अर्थ सम-फने पर ओम् शब्द का महत्व पूर्णतया समक्ष में आजावेगा और तभी इसके उच्चारण का पूरा २ फल भी होगा, क्यों कि यह नियम है कि भली प्रकार बिना समके हुए उत्तम से उत्तम कार्य्य का उस को समक्ष कर करने की अपेक्षा उसका अन-न्तवाँ भाग भी फल नहीं होता।

यह पाँचों अक्षर पंच परमेष्टी के सब से पहिले अक्षर हैं। परमेष्ट (परमदृष्ट सब से अधिक हितेषी) वहीं है जो प्राणी मात्र को दुःख से सुद्धा कर सुख मय बनावे। सुख के संसार में सब ही इल्लुक हैं कोई किसी बात में सुख मानता है कोई किसी में, किन्तु विचार कर देखने से प्रतीत होगा कि षास्तव में सब सांसारिक सुख दुःख रूप ही हैं और अंत में व्याकुलता उपजाने वाले हैं। बस यह सिद्ध हुआ कि जीव की व्याकुलता रहित अवस्था का नाम सुख है। व्याकुलता मोक्ष में नहीं है। जब जीवात्मा जन्म मरणादि समस्त दोवीं से मुक होकर अपने सञ्चिदानन्दस्यहर में पूर्णतया मग्न हो जाता है उसी अवस्था का नाम 'मोक्ष' है। जो जीव को इस अवस्था के प्राप्त करने में सहकारी हो वही उसका परमङ्ख्य अर्थात् सब से अधिक भला करने चाला है। आगे यही दिखलाया जावेगा कि 'ओप' शाद का नित्यमित चिन्तवन ही हम को असली सुख और मोश्न की ओर आकर्षित करता है भौर उनकी प्रान्ति का एक मात्र उपाय है।

'ओम्' शब्द में प्रथम असर 'अ' अहंन्त शब्द का बावक है जिसका यह सबसे पहला असर है। अहंन्त जोवातमा की उस अवस्था का नाम है जो इसको अपने सब शबुओं के निर्मूल नष्ट कर देने पर प्राप्त होती है, जैसा कि अरि + हन्त से साफ प्रकट है। संसार में बही किसी का दुश्मन कहलाता है जो उसकी इच्छित वस्तु के प्राप्त करने में बाधक हो, एक जीवातमा का कोई अन्य जीवारता शबु नहीं है, यह सब परसंयोग से उसके मानसिक विचार होते हैं जो उसको पेसा ध्यान करा देते हैं कि असुक मेरा शबु है। सांसारिक अयवहार में भी देख लीजियेगा कि यदि कोई मनुष्य यह ध्यात कर लेता है कि मेरा कोई दुश्मन नहीं है, तो उसका कोई दुश्मन नहीं

गान्धी इसके जीवित उदाहरण हैं। तात्पर्य यह है कि जीवात्मा अनादि से अपना वैरी आप ही बन रहा है।

यह दिखलाया जाजुका है कि प्रत्येक जीव सुल और शान्ति चाहता है और सब किसी न किसी कप में इनहीं के मिलने का उपाय भी करते हैं, किन्तु जीव यथार्थ सुल और शान्ति को पहिचानता ही नहीं, वह इसकी खोज में कस्तूरी बाले मृग की भाँति इधर से उधर चक्कर खाता किरता रहता है। असली सुख और शांति दूर नहीं है यह अपने आत्मा में ही है, आत्मा स्वयमेव ही सिच्दानन्द कप है। आकुलतारहित अवस्था को सुख कहा है। आ-कुलता अक्षानतायें हैं। बस जीव के सब से चिकट शत्रु वहीं हैं जो उसके ज्ञान दर्शनादि गुणों को प्रटक न होने दे, सो वह जीव के कम हैं।

कर्म वह स्क्म पुद्रगल परमास हैं जो जीय में कुछ कपायादि कर विकार होने पर जीव की ओर आकर्षित होकर उससे चिपट जाते हैं और जो समय २ पर कुम २ से अपना फल सांसारिक सुख दुःख कर में देते रहते हैं। इस प्रकार से जीव माया के साथ चिपटे हुए कर्म आठ भिन्न २ स्रतें धारण कर लेते हैं:—१ झानावरणीय (झान का आवरण जो झान को प्रकट न होने दे) २. दर्शनावरणीय जो घस्तु के यथार्थ स्वक्षण देखने में बाधक हो) ३. मोहनीय (जो सांसारिक माया में कँसाये रक्के) ४. अन्तराय (जो आत्मा के घीर्य, दान, लाम, मोग उपभोग में विघ्न डाले), ५ नाम कर्म का स्वभाव आत्मा को नाना प्रकार के शरीर अङ्गोपाङ्गादि देने का है, ६ गोव कर्म ऊँच या नीच गोव में उत्पादन करता है ७ आयु कर्म का स्वभाव आत्मा को किसी भी शुरीर में नियमित समय तक अटकाने का है। दे. बेदनीय की प्रकृति आत्मा में सुख दुःख उत्पन्न करने की है।

यहां पर इतना ही दिखलाना बस है कि पहले बार कुमें घोतिया अथवा जीव के स्वरूप को घात करने बाले हैं और अंत के चार अघातिया हैं अर्थात् र्वे जीव को अपना असली सुख व शान्ति अनुभव करने में इंड बाधक नहीं होते। इस थोड़े से स्थान में इनका संविस्तर वर्णन करना नितान्त असम्भव हैं, अतएव अरिहन्त जीव की उस अवस्था का मीम है जब कि जीव अपने चार घातिया कर्सी को र्मष्ट करेंके अनन्त चतुप्य (अनन्त ज्ञान, अनन्त दंशीन, अनन्त बीर्य, अनेत सुख) रूप ही होजाता है। अर्हन्त अपने अनन्त ज्ञान द्वारा तो तीनों छोक (आकारा, मध्य, पाताल) और तीनी काल (भूत, भविष्यत, वर्तमान) की सब ही बातों को एक सोध जानते हैं। अनन्त दर्शन द्वारा उनको सामा-स्येष्य से देखते हैं। अनन्तवीर्य से उपरोक्त (जानने वेंखने की) शक्ति रखते हैं और अनन्त सुत्र द्वारा र्तिरांकुळ परमानन्द का अनुभव करते हैं। अरर्हत रागद्वेष आदि सब विकार भावों से रहित शान्त रस इप होते हैं। वे मूख, प्यास, जन्न, मरण, बुढ़ापा आदि सर्व दोषीं से मुक्त होजाते हैं। उन्होंके उपदेश से संसार में सत्य धर्म फैलता है। वे नाना प्रकार के विभव और अतिशय युक्त होते हैं, उनकी गणधर इन्द्रादिकदेव पूजा, उपासना करते हैं। मेंसे सर्व प्रकार पूजने योग्य श्रीअहन्त देव हैं उन की हम मन, बचन, काय से उन्हीं जैसा बनने की चेंप्टा से नमस्कार करते हैं। इस प्रकार थोड़े से शब्दी में प्रथम 'भ' का भर्य तथा स्थक्त दिखळाया।

दूसरा 'अ' अशरीरि शब्द का प्रथम अक्षर है। अशरीरत्व अथवा निराकारत्व जीव आत्मा का ही स्वकृष है। इसके छिये दूसरा शब्द सिद्ध भी है. अत्तर्य यह 'अ' सिद्ध शब्द का वाचक है।

अरहन्त अवस्था के कुछ काल पीछे शेष चाह अघातिया कर्मों का स्वयमेव ही नाश होने से जीब को उसकी सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है। तब यह जीवातमा अर्हन्त अवस्था के परमौदारिक शारीर को भी छोड़ ऊर्घ्वगमन स्वभाव से लोक के अप्र-भाग विषे निराकुल आनन्दमय शोभित होता है। इस ही अवस्था का नाम ईश्वर में छीन होनो, अथवा मुक्ति, मोश या निर्वाण प्राप्त करना है। यस इसकी सिद्धः शिव, ईध्वर, भगवान, परमात्मा, गांड खुद्रा आदि किसी नाम से पुकारिये सब एक ही बात है। इनके नित्यप्रति ध्योन से ही निज पर का शान होता है, एवं भव्य पुरुष इनकी उपासना करके स्वयमेव इन समान वनने का प्रयत्न किया करते हैं ऐसे सिद्ध भगवान को जो सर्वया इतक्ष्य हैं और जो अपने ही आनम्द्र में सदैव लीन रहते हैं और रहेंगे हम अपनी सिद्धि के लिए नमस्कार करते हैं।

'आ' आचार्य 'उ' उपाच्याय और 'म्' मुनि के वाचक हैं और इनके प्रथम अक्षर हैं। यह भी सब जीवात्मा की ही अवस्थायें होतीं हैं, यह अवस्थायें उपरोक्त दोनों अवस्थाओं दें(अहत, सिद्ध) की सहकारी हैं, अथवा यों कहिये कि ये मुक्त होने की सीढ़ी के निचे के उण्डें हैं।

जो जीवात्मा संसार से उदासीन हो कर, सब परिव्रह को त्याग, मुनि धर्म अङ्गीकार कर अन्तरंग में तो अपने शुद्ध कानदारा अपने को शरीरादि वाद्य पदार्थों से मिन्न जानते हैं, अपने क्षानादिक स्वभावी को ही अपना मानते हैं, अन्य मस्तुओं में ममता बुद्धि नहीं रख्ये । पर इंच्यां को जानते सब हैं किन्तु उनको इष्ट अनिष्ट मानकर उनसे रागद्वेप नहीं करते। शरीर की अनेक अवस्थायं होती हैं। बाह्य नानाप्रकार के संयोग मिलने हैं परन्तु ये उनमें कुछ सुंख दुःख नहीं मानते। अपने योग्य बाह्य किया जैसी यनती हैं वैसे ही कर छेते हैं, खेंच तानकर **कुछ नहीं करते,** उदासीन हो निश्चल रहते हैं। इस अवस्था में तीन कपायों के न होने से हिसादि रूप अशुभ भावों का तो अस्तित्व भी नहीं रहता। इस प्रकार जीव की अन्तरंग अवस्था होती है। बाह्य में ऐसे मुनि दिगम्बर सौम्य मुदा के धारक होते हैं। शरीर का संवारना आदि कियाओं संविग्क है, बनुखण्ड आदि एकान्त स्थानों में वास करते **हैं। ९**८ मूलगुणों को अखिण्डत पालते हैं, २२ परि-पहीं को सहते हैं, १२ प्रकार का तप करते हैं (यहाँ ये सब विशेषरूप से स्थानाभाव के कारण नहीं दिखलाये जा सकते)। कभी २ ध्यानमुदा धारण कर प्रतिमा समान निश्चल होजाते हैं, इसप्रकार के सर्वश्रेष्ठ मुनि होते हैं।

पेसे मुनियों में कुछ ज्ञान तथा चारित्र की अधिकता से प्रधानपद को प्राप्त कर नायक (नेता, छोडर) होजाते हैं। वे विशेष कर तो स्वक्ष्य आव-रणमें ही मग्न रहतेहैं। कभी २ धर्मके लोभी अन्य जीवों को देख करणा बुद्धि से उनको धर्म उपदेश देते हैं, जो दीक्ष्म छेने चालेहैं (गृहस्थियों से मुनि बनना चाहते हैं) उनको भीका देते हैं। जो अपने दीप प्रकृत करते हैं उनको प्रायश्चित्र विधिसे शुद्ध करते हैं। इस प्रकृत आवरणों को शुद्ध करने वाले तथा कराने वाले आवार्य हैं, ऐसे महात्माओं को हम

अपने अत्वरण शुद्धि के अर्थ नमस्कार करते हैं।

क्षितेक प्रकार के कुनियों हैं ही कुछ ऐसे होते हैं जो सब शाखों के कर्म को जानते हैं। ये भी एकाश्रवित्त होकर अपने ही स्वक्रप का चिन्तवन किया करते हैं और खब वहां बहुत देर तक ध्यान नहीं जग्रता तो शाखों को स्वयं पढ़ने छग्ने हैं। अथवा कभी अन्य धर्म बुद्धियों को पढ़ाने छगते हैं। इस्तरकार भकों को अध्ययन कराने वाले उपाध्याय हैं तिनका हमारा साण्डाङ्ग नमस्कार होवे।

इन दोनों पदचीधारक मुनियों के अतिरिक्त सब साधारण मुनि कहलाते हैं जिनका स्वक्रण उत्पर विखालाया जालुका है। ये अपने स्वभाम को साम् धते हैं, पिसा प्रयत्न करते हैं जिलसे इनका मृन पर द्रव्यों में न फँसे, इसी के लिए तपश्चरण आदि कियायं करते हैं। ऐसे आत्मस्वभाव के साधक मुनि अथवा कहिये साधु हैं। इनको हम बारंबार कमस्कार करते हैं।

इस प्रकार से संक्षेप में ओम शब्द की व्याख्या हुई। अब इस शब्द का महस्व पाठकगण स्वयं अनुमान में ला सकते हैं कि जिसके उद्यारण से हमारे मिल्लिक में जीवारमा की इतनी दशायें चक्कर खाने लगें, जिससे हमको अपने सम्बन्धी इतना ज्ञान होगाय और केवल इनकी जानकारीं ही नहीं किन्तु फिर हम अपने आपको भी ऐसा ही बनाने का प्रयज्ञ करते जायें और एक दिन वह आये कि इस भी अपने सम्बद्धानन्द स्वरूप में पूर्णतथा मम्ब होजायें तो में नहीं समभता कि इससे चढ़कर महत्त्ववाला अथवा प्राणिमात्र के लिये लाभकारी संसार भर में कोई अन्य परार्थ होसकता हैं, कहापिं नहीं।

— मुबल्यार्टसंह, मेरड.।

श्रसहयोग श्रोर जैनधर्म दो नहीं हैं

महासहयोग की चर्चा आतेही हमने बहुतसे जैनी भाइयों को यह कहते सुना है कि असह-योग से जैनधर्म का कुछ लाभ होना तो प्रथक् प्रस्युत हानि ही होगी। किन्तु उनका यह कहना केवल असहयोग भीर जैनधर्म के सिद्धान्तों सम्बन्धी अझानता के कारण से ही है, हम नीचे होनों के सिद्धान्तों की तुलना करते हैं पाठक उन से देखेंगे कि असहयोग और जैनधर्म के सिद्धान्तों का सब धर्मों से अधिक साम्य है।

असहयोग शब्द का अर्थ साथ न करना है। किन्त इस साथ न करने का तात्पर्य यह नहीं हैं कि मनुष्य संसार में जिस प्रकार अकेलो आया और अकेला जावेगा उसी प्रकार अकेला रहाकरे और किसी का साध न करे। क्योंकि शरीर की हियति के लिये आहार, जल, तथा बस्न की आव-श्यकता पड़ती ही है, और जिन को आहार, जल, तथा थस की आवश्यकता है उनको इन धस्तुओं को उत्पन्न करने अथवा रखने वाली से सम्बन्ध करने की आवश्यकता पडती ही रहेगी । असह योग देखने में तो राजनैतिक आन्दोलन है किन्त वास्तव में यह विशुद्ध धार्मिक अथवा आध्या-रिमक बान्दोलन है भारत में राजनीति धर्म की अब हुआ करती है। अतए व असहयोग धर्म होते इयं भी भाष्यात्मक स्वतन्त्रता के साथ ही साथ राजनैतिक स्वतन्त्रता दिलाने का भी अमोघ अस्त्र है। राजनीति स्थकि को कभी अकेसा रहने को

नहीं कहती। उसका सदा उपदेश यही रहता है कि दूसरों के साथ इस प्रकार मिल जुल कर रही जिससे देश का कल्याण हो । ऐसी अवस्था में असहयोग से यह अभित्राय नहीं है कि पुरुष सबका सहयोग छोड़कर अकेला ही रहा करे, किन्तु इस का अभिप्राय बुराइयों अथना बुराइयों को उत्पन्न करनेवालों का सहयोग छोडना है, हम भारतवासी इस समय स्वतन्त्रता के मार्ग में आगे बढते हुए चले जा रहे हैं अस्तु जो कोई इस प्रशस्त उद्योग में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बाधा दे वही बुराई की उत्पन्न करने वाला है। हमारा कर्तव्य है कि अस-हयोगी (बुराई के छोड़ने वाले) होते हुए हम उसका संग छोड दें। क्योंकि ऐसा न हो कि उसके संग से हम में ऐसे भाव उत्पन्न हो जावें कि हम उस शुभ मार्ग को ही छोड़ दें। यहां यह बात ध्यान रखने योग्य है कि यद्यपि असहयोग बुराई उत्पन्न करने वालों का संग छोड़ने का आदेश करता है तथापि वह उन से हे व करने को आदेश नहीं देरहा। क्योंकि द्वेष स्वयं एक बुराई है। असहयोग उन लोगों से मध्यस्यमाच रखने का अनुरोध करता है।

अब तिनक असहयोग के इस सिंदांत को जैन धर्म से मिलाप करके देखिये, जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के पूज्यप्रन्य श्री तत्वार्धाधिगम मोझ-शास्त्र सातवें अध्याय में श्री उमास्वामी महाराज ने कहा है-- मैत्री ममोद् कारुएयमाध्यस्यानि च सत्त्व-ग्रुणाधिकित्यमानाविनयेषु ॥ ११॥

र्द्सी को श्रीअमिगति ने भगवान से बरदान इप में मांगा है।।

> सत्बेषु मैत्री गुणिषु ममोदं क्रिष्टेषु जीवेषु छपापरत्वम् माध्यस्थभावं विपरीतद्वजौ सदाममात्मा विद्धातुं,देव॥ समायिक पाठ॥१॥

अर्थात् हे देव। मेरी आत्मा को ए ती चना दीजिये कि मैं सदा ही संसार के सब जीवां में मैकी भाव रक्खा करूँ, जो मुक्त से गुणों, में अधिक हैं उनको देखते ही मेरे चित्त में प्रमोद (हर्ष) भाव हो आया करे जो मुक्त से विपरीत वृत्ति वाले हैं अर्थात् मेरे मार्गको बुरा समक्षने वाले अथवा उस में बाघा पहुंचाने वाले हैं उनके साथ मेरा माध्यस्य भाव अर्थात् न राग न हो प रहे।

इस प्रकार आपने देखा होगा कि असहयोग की परिभाषा किस प्रकार जैनधर्म में ज्यों की स्यों मिल गई।

सारांश में तो इतना कह देने से ही असहयोग का तात्पर्य पूर्ण हो जाता है किन्तु 'बुराई को छोड़ी' यह कहना तो सरछ है किन्तु छोगों को उस बुराई को पहचनवा कर उससे उन्हें छुड़ाना बहुत ही कठिन है।

महातमा गांघी ने उस बुराई के दो भेदं किये हैं। एक आभ्यन्तर दूसरी वाहा। मन में हिंसा भाव रकाना आभ्यन्तर बुराई है। और बुराई करने वाओं के सब व्यवहार वाहा बुराई है।

जैनवर्ग में दिखा जितना व्यायक शन्द है महा-

हमा गान्धी भी उनको उतना ही स्यापक मानते हैं। हिंसा कहने मात्र से ही संसार भर के असत्य भाषण, बोरी, परस्त्रीगमन, अत्यन्त छोम करना सभी दोष आगये, जैसा कि भी अमृतचंद्र आवार्य ने भी पुरुषार्थसिद्व प्युपाय जी में कहा है—

भात्मपरिणापहिंसनहेतुत्वात्सर्वमेव हिसैतत्। भन्तवचनादिकवज्ञद्वाहतं शिष्यबोधाय ॥४२

अर्थात् आतमा के शुद्धोपयोग कप परिषामी के बात होने के कारण होने से ये सब पाप हिंसा ही हैं। असत्य भाषण आदि मेद तो केवल ,शिष्यों को समभाने के लिये उदाहरण कप से कहे जाते हैं।

पक पूर्ण असहयोगी का कर्तव्य है कि सह काय से हिंसाकार्य करना और बचन से हिंसा करने के लिये कहना तो प्रथक् हिंसा की बात को मन में भी स्थान न दे।

भव यहां हिंसा की परिभाषा भी कर देनी चाहिये जिस से प्रत्येक पुरुष यह निर्णय कर सके कि अमुक कार्य हिंसा जनक है अथवा नहीं।

भी अमृतचंद्र आचार्य ने उसी पुरुवार्थसिद्दृष्यु-पाय में कहा है---

यत्त्वज्ञ कषावयोगात् प्राखानां द्रव्यभावरूपा**खाय्** व्यपरोपणस्य करखं श्वनिश्चिता भवति सा हिंसा

अर्थ- कवाय (क्रोध, मान, माया और छोम) के योग से किसी आध्मा के द्रव्य प्राण (शरीर के अवयव) अथवा भाव प्राण (क्रात्मा के शुभ भाव) का धात करना हिंसो कहछाती है।

अर्थात् किसी को कोध दिलाना लोभ दिलाना गाली देना, उसकी निन्दा करना, खुगली करना, उसको पीटना अथवा मारना आदि सभी कार्य हिंसा है। यहाँ यह बात ध्यान र बने योग्य है कि योग्य आचरणवाले पुरुष के राग आदिक भावों के विना केवल प्राण पीड़न से ही हिंसा नहीं होती। अर्थान् यदि कोई डाक्टर रोगी को बचाने की इच्छा से उसका आपरेशन करें और रोगी आपरेशन को नं सम्भाल सकते के कारण मर जावे तो डोक्टर उस-की हिसा का भाभी न होगा।

हो सार उदाहरणोंसे और भी स्पष्ट होजावेगा जिस पुरुष के परिणाम हिंसारूप हैं वह हिंसा सा कोई सार्य न करने पर भी हिंसा के फर्ड को भोगेगी। क्योंकि वह कम से कम अपने भाष प्राणी सी तो हिंसा कर ही चुका, और जिसके शरीर से उपरोक्त डाक्टर के समान किसी,कारण हिंसा हों कई हो किन्नु उसके परिणाम आदि एवा रहें घट हिंसा के पाप का भागी कभी न होणा।

जो पुरुष बाख हिंसा तो थांड़ी कर सका हो किन्तु उसके परिणाम अत्यन्त हिंसा भई हो वह तीवृहिंसा कर्म के बन्ध का भागी होगा, और जो पुढेंत्र परिणामी में हिंसा के अधिक भाव न रख कर बाह्य हिंसा अचानक बहुत कर गया हो वह माई हिंसा की बन्ध का भागी होगा।

किसी जीवको मरते देवकर अन्य देखने वाले जो अच्छा कहते व असक होते हैं वे सब ही हिंसा पढ़ के मोगी होते हैं। इसी से कहते हैं कि एक करता है और फल अनेक मोगते हैं, तथा इसी प्रकार संपाम में हिंसा तो अनेक पुरुष करते हैं। पण्डु डेन पढ़ आका करने वाला राजा उन सब हिस्सान के पाल का भागी होता है अर्थात् अनेक करते हैं।

कोई जीव किसी जीव को बुरा करने कई बस्त

कर रहा हो परन्तु (जीव) के पुण्य से कदाचित सुरे के स्थान में भला हो जावे तो सुगई करने बाला प्रत्येक अवस्था में बुराई के फल को मांगी होगा। उपरोक्त डाक्टरके अनुसार कोई व्यक्ति सुराई करके भी भलाई के फल को पांचेगा।

मन, वचन; तथा काय से की हुई हिंसा इस मकार की होती है। उसी को छोड़ने के लिये महा-त्मा गांधी तथा जैन धर्म दोनों को उपदेश है। हम को खेद है कि आजकल के जैनी लोग इस हिंसा को भूल गए हैं। और उनकी अहिंसा केवल छोटे छोटे कीडे मकोडी की रक्षा करने और छान कर कानी कीने में ही करिमित रह गई है। आजकल के जैनी अहिंसा का पाठ रटते २ ऐसे कायर बन गये कि वह गत दङ्गों में मुसलमानों के आक्रमण होनें पर अपनी माँ वहिनों को उनके हाथों में छोड़ अप ने प्राण लंकर भागे, वह इस बात को बिलकुल भूल गये हैं कि जैनधर्म क्षत्रियों का धर्म है। उनको यह स्मर्रण नहीं है कि पूर्ण अहिंसक वही हो सकता है कि जो बीर है, उनको यह विस्मरण होगयां कि शरणागत (कम से कम अपने घर की स्त्रियों) की रक्षा करना बड़ा भारी पाय है, वह अभयदान के महत्त्व को भूल गये हैं। आजकल के बहुत से जैनी बहते हुए रक्त को देखकर मूर्छित होने पर अपने को बड़ा भारी धार्मिक समभते हैं किन्तुः उनकी यह भूल है, मुर्छित होने चाले दया से मुर्छित न होंकर घूणा के आवेग को न सरमाल सकते के कारण मुर्छित होते हैं। छुणा जैनशास्त्री के अनुसार मोंक्तीय कर्म की एक प्रश्ति जुगुप्सा के उदय से होती है और पूर्णा करने से जुसुण्सा प्रकृति का क्रीर भी बन्धन होकाता है। जाहरूस प्रकृति वाप

प्रकृति है, अत्यव जैनियों को घृणा को जीतकर जुगुन्ता कर्म का वस्त्र नहीं होने देना चाहिये। सम्य घृणा को जोते बिना सम्यक्त्व का निर्विचि-कित्सा अङ्गभी नहीं होता। अत्यव घृणा करना भी हिंसा है।

यह आन्तर खुराई का वर्णन हुआ। जो व्यक्ति इस आन्तर बुराई को मन, बचन, काय से छोड़ देगा वह बाह्य बुराई को भी अवश्य छोड़ देगा। बाह्य बुराई का क्षेत्र महात्मा गांधी और जैन धर्म दोनों के अनुसार बड़ा व्यापक है। अत्र व दोनों ने ही इनको कुम से थोड़ी छुड़वाई है। अन्तर दोनों के केवल कुम में ही है।

महात्मा जो अभी केवल ५ वस्तुओं को छुड़ाते हैं अर्थात् उनका बहिष्कार कराते हैं। विदेशीवल्ल, सरकारी उपाधियाँ: सरकारी स्यायालय, सरकारी विद्यालय और कौन्सिल।

इन पाँची यहिष्कारों में राजनैतिक कारण प्रधान है जिनकी चर्चा हम को इस स्थान पर नहीं करनी है। हम को यहाँ केवल यही देखना है कि जैन सिद्धान्त इन पंचयहिस्कारों में साधक हैं अथवा बाधक हैं।

जैन शास्त्रों में भी अन्य हिन्दू शास्त्रों के समान राजा का धर्म तन, मन, धनसे प्रजा पासन करना बतलाया है। जो राजा प्रजापासन नहीं करता उस को पापी तथा राज्य करने के अयोग्य वत-लाया है। पैसे राजाओं को गद्दी से उतारने के अनेक उदाहरण जैनशास्त्रों में मिलते हैं। वर्तमान भारत सरकार की भारत पर राज्य करने की जो

नीति है वह किसी से छिपी नहीं है, अर्थात् यह सरकार विनया सरकार है। भारत के धन से इग्लेंड वासियों का पेट भरना ही इस सरकार का मुख्य ध्येय है। इसको जहां ज्ञान ध्येय में बाधा की तनिक भी शंका हुई कि इसने जलयानवाला बाग जैसे अश्रुतपूर्व कार्य किये । अस्तु ऐसी प्रणाली को दूर करने के लिये राष्ट्र हमारे लिये जो कार्य निश्चित करे उसे पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। यद्यपि सरकारी उपाधियों, सरकारी म्यायालयों, कौन्सिलों, सरकारी विद्यालयों और विदेशी वस्त्र में बहुत से राजनैतिक तथा नैतिक हानियां हैं तथापि हम को उन को ध्यान में न लेकर केवल राज्य सुधार अपना धर्म समभके इस का बहिष्कार करना चाहिये। विदेशी वस्त्रों में चर्बी लगाई जाती है जिसको छना भी हमारे लिये बड़ा भारी पातक है।

धस्तु यह सिद्ध हो गया है कि असहयोग और जैन धर्म विलक्कल एक हैं। केवल त्याग के कृम को मिन्न २ प्रकार से बतलाते हैं जिस में हमारी कोई हानि नहीं है।

आशा है कि जैनी भाई हमारे इस लिखने ले साम उठावेंगे।

नोट---अन्य जैन पत्रों को भी इस छेख को प्रचारार्थ प्रकट करना चाहिए।

> चन्द्रशेखर शास्त्री कान्यसाहित्य तीर्थाचार्य शोकेसर।

कागजी सुधारक

ही खुना वस आप से छद्धार रहने दीजिये।
मात होगी करकी हुई, ऑकी एसार रहने दीजिये।
है कमर संचनी हुई, ऑकी एसार रहने दीजिये।
कीमी वरवादीकी कांकी आंचके शीरी सख्जर ।
सरकार दलंदल की हुरी सख्यार रहने दीजिये।
बाद-ए-संवा आने न पाए गुलशन-ए-वीरानमें।
बोलते डल्लू रहें विसमार रहने दीजिये।।
दिल हागीना कीम की उल्फ तमें लीहे के चने।

हैं यह कोरी फंकटें सरकार रहने दीनिये श साहिने दौलत हो इन्म को हुनर से मासूरही। सैंस सोन्नें दूसरा यह बार रहने दीनिये।। बीहो सादिक्से नो कीमी ३ शमक के परवाने हैं हन साफ्रेने ४ कम फहन ४ कीनेज़ार रहने दीनिये। —"भारतीय"

श्रीबज्जली ६ मिष्ठवचन ३ जातीय दीए÷

४ खरे चका ५ कमसमभ

सुभन सञ्चय

(गल्प)

हैं विकेसित कुंद्धम हे क्या मिन प्रतित होता हैं कहते र मालिन ने मार निकंद आकर उसे लता से प्रथक कर दिया और हाथ की टोंकरी की शोभा बढ़ा दा। लताओं की शोभा कहां विखर गई? उस को पुनः कैसे अतिथि बनाऊँ उसे कहां जा कर पाऊँ? प्रभो कुछ बोध दो, पुनः कुञ्ज में अनुपम जीवन रक्तंसञ्चार ही ओदि कहते र मूर्खित हांकर गिर पड़ी। होकरी का अन्य सञ्चित सुमनपुरुक भी एक दशामें होगया। अभी मालिन पड़ी ही हुई है उसे कुंछ बोध नहीं।

इस सिमय उपवनमें अि गुञ्जार नहीं हो रहा है सब वधास्थान चले गये हैं-जन-पद रच ने भी विज्ञाम लिया। शुक-सारिकार्ये भी नहीं हैं जो मीलिन की कुछ प्रति बीचित करें। सम्तापी सूर्य ने इस परिताप की अतिथि बना कर इस बीटिका में भेजा है। अतिथि का अनाइर असाग्र किसे न होगा। उस परिताप का मिल्रभाति सम्मान किया गया।

मालिन कुछ सचेत हुई थी। उसे मालूम पड़ा कि प्रियतम के बरणों की आहट है, सहसा उठ बैठी, प्रतिका की किन्तु उन का पर-रव नहीं, था, सेंट गई। निराशा-मद ने भी उसे बहु से पाँसा दिया।

इंसी अखेत अपस्था में बिक्की की गति को पराजित करने की गति से आकर उस के प्राण नाथ ने कहा तिये! क्यों क्या हुआ ? आज ऐसी आवेत. क्यों है में जितने प्रेस से पूँ आजा हूं उस से क्यों अधिक निष्येम के शर छोड़ कर मेरे हदय मृग को निष्याण कर देने के यज्ञ करती हो !

मालित सचेत सी हुई, उस के कर-कार्ऋष्य-वरा माली के हाथ को क्षेष्ठ से हुझ दिया। इस्तु से माली को और व्यथा भार सहना पड़ा। ज्याँ २ सचेत होती जाती है त्यों २ कथा के पङ्ख आने लगते हैं और माली के मृत्र के सुक साझाज्य की आशा चेतती जाती है। मालित की आंखें खुलीं कि मालीने प्रे मालिक्षन किया और कहा थिये! तुमको मालूम नहीं कि मैं कितनी देशसे तुम्हारे पास बैठा हुआ हूं।

मालिन-प्रिय! मैंने तुम्हारी अनेक बार प्रतीक्षा की किन्तु तुम्हारे चरणों की अन्हर नहीं आई निराश हो गई और अचेत पढ़ी रही।

माठी-आज दीयकों का प्रकाश न होना मेरे चुयके से आने में प्रवल साधन है। मैं समफा न जाने इस्तू में चोर घुँसे न हों! लता २ की ओट में देवता आया कि कोई हो तो मुक्ते छरा न देवे।

मालिन-प्रकाश न सही किन्तु किर भी इतनी दूर तक आ कैसे गये।

माली—नुम्हारा मेम-दीपक मेरे हाथ में था, अस्तु इसासे क्या, मैं कैसे ही आया किन्तु तुन यह तो कही कि आज दीपक क्यों नहीं जलाये ? और पेसी असी तक वेसुध पड़ी रही-यहि आज हवामी आते नो क्या कहते ?

मासिन-कुछ तो तुम्हारी प्रतीक्षा ?..... । साली-मेरी प्रतीक्षा भाग इतनी जरूरी क्यों ? साखिन-मेरे समुभी कि अधिक रात्रि होगई- माली—ऐसा क्यों ? यही म ? कि कुमने दीएक नहीं किया ।

मालिन—(स्वगत) क्या कहूं ? यदि कहूं कि फूलों को तोड़ने से उपवन की शोमा नष्ट होगां है इसको पुनः अङ्गान-विसर्जन की उधेड़ दुन में रही तो ये सुनकर क्या कहेंगे ! ऐसा समफ इनको कुछ न कहूँगी।

मालिम--अञ्च्य भागको प्रया ? आप रहे सकुराळ आपहुँचे।

माळी — मुक्ते इसकी विन्ता नहीं किन्तु सत्य का देवना है-मुक्तसे छिपाती हो । कही इसमें रहस्य मधु भरा हुआ है?

मालिन—में सुनन-सञ्चय कर रही थी कि...... (अति लज्जा पराद्भव होकर न कहना और माळी का आग्रह)

माली—मुभसे छिपाकर किस कोने में रक्कोगी?
मालिन—क्या कहूँ आज सुमतसंचय करती थी।
अब पुष्पाचली टोकरी में निवास पाग्ई तो मैंने
पीछे देखा कि जिस उपवन में इतनी शोभा थी
यह निष्प्रभ होगई! इसका कारण में हूं। इस
किर क्या था? मुक्ते परिताप ने सताया। सूर्य
रिक्षि-सैन्य ने मेरे हृदयमन्दिर में स्थान लिया
इसी लिये सन्तम रही।

माली—(स्वमत) आज इतना सन्ताप ! होगा।
निस्तन्दे इयात सज है। पुष्पदीन व्यक्तिम में
भग्न होजाना क्या असम्भन है? (प्रकट) इतना
परिताप करना अनुजित था धूप छावा का
खंड है। जो सूर्य प्रचण्ड करों से संसार को
सन्तम करता है किन्तु प्रतिकिन उदित होता
है। कमछ प्रतिदिन सुर्भाते और अस्व होते

हैं। पुनः पुष्पाविस्त होगी, उसे देख कर प्रसम् होना और जल सिञ्चन का मधुकल देखना यह संसारचक है। विषाद परित्याग करो। ---'भूमर'

सम्पादकीय टिप्पिग्यां



१-वर्घा अधिवेशन सफल बनाइए

भा० दि० जैन परिपद्व का आगामी वार्षिक अधिवेशन माघ मास में होना निश्चित हो ही गया है और यह जान कर पाउकों को हर्ष होगा कि बढ़ां उसके लिए तैयाग्यां भी होना शुरू हों गईं हैं। स्वागतसमिति का संगठन भी हो गया है। साराँशतः वर्धा के सञ्जन बृन्द तो अपने कर्तव्य पालन में लग गए हैं। अब केवल परिषद्ध के मैंबरों और ग्रमचिन्तर्कों को अपने कर्ताव्य की ओर द्रष्टिपात करना आवश्यक है । उन्हें वह उपाय सर्व समक्ष में लाने चाहिए जिन से समाज का हित और धर्म की उन्नति होकर अधिवेशन सफल हो सके। यह तो प्रकट ही है कि परिपद का जन्म मात्र ठोस कार्य करने के लिए हुआ है। केवल बात वनाने अथवा ज्याति प्राप्त करने के लिए नहीं हुआ है। और न किसी भी संस्था महासभाओं अथवा अन्य-उनका विरोध करने से मतलब है। क्योंकि प्रतियोगिता में कभी भी कुछ सफलता प्राप्त नहीं होती। तिस पर जैनसभाश्री के उद्देश्य एक ही हैं। किर उन में आपसी प्रति-ंदोधका स्थान नहीं हैं। यदि कहीं प्रतिरोध दिखाई पंदें ती वह ध्यक्तिगत मान कवाय के वश हो सिका है। परन्तु हम कह सक्ते हैं कि परिचद्र इन

"बलाओं" से मुक्त है। उसके कार्यकर्ताओं को सच्चे दिल से निःस्वार्थ मान से समाज और धर्म की सेवा यधाशक्य करनी है। इसी व्याख्या की पुष्टि में परिपद् की गत कार्य्य वाही मीजूद है। उसने जो कुछ थोड़ा बहुत कार्य किया है वह देखेस कार्य है। यद्यपि हम यह अवश्य कहेंगे कि जिस वेग से कार्य होना चाहिर था उस से नहीं हुआ है! परन्तु इसमें दोष कार्यकर्ताओं का नहीं है। दोष रुपए और कार्यकर्ताओं की कमी का है। इस समय यदि परिषद् को कतिपय और निःस्वर्धी सच्चे कार्यकर्त्ता मिल जार्ने तो हमें विश्वास है कि परिषद् शीघ्र ही अपने उद्देश्य की पृति करले और उसे रुपए की कमी का भी सामना न करना पड़े।

अत्यव घर्षा अधिवेशन में सब से बड़ा यदि कोई कार्य है तो यही कि सच्चे निःस्वार्थी कार्यकर्षा कार्य करने के लिए कर्म क्षेत्र में आवें। मध्यशम्त से हज़ारों की संख्या में जैनी परिपद्द के मेम्पर बनें और अपने कर्त व्य का पालन करें। स्वा॰ समिति को उचित है कि वह परिपद्द के कार्य को और उसके महत्व को मध्यशम्तीय भाइयों के कार्नी तक पहुंचा देवे। और अंग्रेजी विश्व नव-युदकों को धर्म व समाज का सेवा के लिए उत्सा-

हित करे। साथ ही इसी समय यदि हिन्दी जैन साहित्य के महत्व को सर्व साधारण में प्रकट करना अभीष्ट हो तो हिन्दी प्रोमी जैन विहानों को बहां पहुंच कर परिषद् के अन्तर्गत एक "जैन हिन्दी समिति" स्थापित कर जैन नवयुवकों को हिन्दी साहित्य की सेवा करने को उत्साहित करने के लिए कार्य करना चाहिए। हिन्दी प्रोमी जैन बिहानों को इस पर ध्यान देना चाहिए। बल्कि अधिवेशन के साथ ही यदि हो सके तो जैनकवियों और लेखकों से कवितायें और लेख मंगाना चाहिए। उसके लिए समस्यायें और लेखों के लिए विषय प्रकट करना चाहिए। तथा पुरण्कार के लिए स्वर्णपदक और रजकपदक प्रदान करने का अवन्ध करना चाहिए। स्वा॰ समिति तथा मन्त्री महोदय को इस पर ध्यान देना आव-श्यक है।

२-जैनी ऋौर वर्त्तमान स्थिति

गत कुछ महीनों में भारत में क्या २ रङ्ग खिले घह राष्ट्रीय पत्रों के पाठकों से छिपे नहीं हैं। महातमा जी का अपने असहयोग प्रोग्राम पर दृढ़ रहना और स्वराज्यवादी नेताओं का उनका विरोध करना महात्मा जी का कांश्रेस प्रोग्राम क्यान शिथिल करना और स्वराज्यवादियों से सममीता करनागार्थसमाजियों का शुद्धिसंग्राम मचाना और महातमा जी के स्पष्ट वक्तव्य पर क्रुद्धमय ताण्डवनृत्य करना-शुद्ध के फलस्वरूप हिन्दू-मुस्लिम अनेक्यता का अंकुर फूटना और स्थान २ पर हिन्दू मुस्लिमानों में सिरफुड़ीवल होना-जिस पर महातमा जी का २१ दिन अनशन वत करना और सर्व

समाजों के नेताओं का दिल्ली में एकत्रित हो भगड़े की जड़ मेटने के प्रयत्न करना-तिस पर भी जान बुभकर एलाहाबाद भगड़ा हो जाना हमें राजनीति के गोरखधनधे के दांविपंच द्रष्टिगत कराते हैं। इधर विलायत में लेबरपार्टी का हारना, जिस पर हमारे कतिपय देशवासियों को (जो मुगतृष्णावत उन्हीं से भारत की सुखी होने के स्वप्न देखते हैं) भारत का भलाई का बहुत भरोसा था और कान्जर्वेटिय पार्टी का सत्ता प्राप्त करना 'सरकार' का बङ्गाल में 'तूफान' उठने का अंदेशा करना और इकबारगी गिरफ्तारियों से जनता में खलबली मचा देना इत्यादि राजकीय 'कर्तव्यी' को दिग्दर्शन है। परन्त इस सब से भारत की क्या भलाई हुई यह समक में नहीं आता। भारत की विविध समाजों से आ-पसी मनोमालिन्य की जड दूर हुई प्रगट नहीं होती और न कांग्रेस प्रोप्राम की पूर्ति होरही है। सब तो यों है कि सन् १६१६-२१ के भारत से आजका भारत बहुत पिछड़ा हुआ है । वह उस्ति के मार्ग से दूर है। म० गांनधी जी के उच्चसिद्धान्ती का प्रचार करने योग्य क्षेत्र ही तैयार नहीं होपाया है। यही कारण है कि वह असफल होरहा है और मत-भिन्नता की जड में अनेकता के बीज उग रहे हैं। ऐसी डांबाडोल परिस्थित में भारतोद्धार होना अशक्य है। जनता में क्षानप्रचार और नेताओं में नैतिकवल की वृद्धि होने पर ही कुछ भारत की भलाई होते दिखाई पडेगी। तब ही सहनशीलता के भाव सर्व हृद्यों में उत्पन्न होंगे।

ऐसी डांबाहोल परिस्थित में जैनियों की क्या इशा रही यह जानना कोई कठिन कार्य नहीं है। उनका वनियापन' इन सब बातों से उन्हें उदासीन

व्यक्त कर देशा । यही कारण है कि कहीं भी उनकी पुछ बहीं। पेकवासमोलन स्थापित हुमा, सर्व आवियों के मेस्वर उसमें हुए घरन्त जैतिसें का नाम नहीं! सानो जैनी सारत में रहते हो। न हों! सबको परमारके लिएक क्षेत्रक में कुछ हानि ही न उक्रना पड़ी हो। परं रू उस ही की पूछ शुन जमाने में होगी जो अबने अधि हारों के लिये हर समय तला बहेमा। उक्त सम्बोळन में जैनियां के कितने सेम्बर इते इसके लिये अब म० गांधी से पत्रव्यत्रहार हो रहा है। बस्तृतः अवतक सर्वजातियों के मेग्बर महीं होंके और वह समाई से भगड़े मेटने के प्रयान नहीं करेंगे तबतन राष्ट्रोस्नति होने में आशहा है। अगद्ध जोनियों की छोर से कौन उनकी श्थिति को सम्मेलम के समक्ष रक्षमा ? कौन यतलावेगा कि व्यक्त हिन्दू ही अपने प्राचीन साथियों के धार्मिक स्वत्त्रों में बाधा डासते हैं ? कौन कहेगा कि आर्य-समाजी आज अपनी मान्यवृस्तन 'सत्योर्थवृत्ताक्ष' में जैमियों के प्रति अवधार्य वक्तव्य के। प्रकट कर थापनी मनोमालिन्य यहा रहे हैं ? कौन जतलावेगा कि जैनियों की अपने विधमी पड़ासियों से कितनी स्वति उठानी पड़ी हैं? इन सब बातों के लिए-जीनमें का सन्वाय जानने के छिये एकता सम्मेलन में ही क्या वरिक प्रत्येक संस्था में जैन मेम्बर का होना आयश्यक है यदि वस्तृतः भारतके हित के लिये वह स्थापित हो। जैनियों की अपने अधि-कारें के लिये "व्यवपन" छोड़ना चाहिये और उनकी रक्षा के लिखे करियक रहना चाहिये।

३-पत्र व्यवहार

इमें सासनी (अलीगढ़) के आयुत् नेमीचन्द सरदार हिंस जी का एक पत्र मिला है। उसमें आप आर्यसमाजियों के 'ऋषिस्मार्क्त मही-स्पन' के समग्र सन्मार्थक्रमात्र की एक सम्ब प्रतियों के बटिने का उत्केश करते हुए जिसके हैं:-

' इस अनुसर पर ग्यपि (जैने पूर्ण के विश्व में मिलपा सार्ती का) संदन छशकर बांदरा प्राक्षिय खेकिन सहयार्थ मकास से ही मिश्या वार्ते विक्रताशो जांग तो बारबार खंडन छपाने को कोई प्रावश्यका न हो । पश्चिमे भी प्रपृती तरक से सरवार्धप्रकाश के खंदन में 'द्रश्वताद्वक्रकातर वर्षण 'त्रिमलिशिद्र' इत्यादि परतकं निक्ष चुकी हैं। सोनित असमें कुछ असर मानुस नहीं पड़ता। मेकी राय में विश्वनी को चाहिए दश्यनन्यशतान्दि मथुर। में दोगी इस श्रवद्भा पर काक ए सरपार्धायकारमं जीवकां सम्बन्धी मिथ्या बातों को लाबित करके निकलवा देनी चाहिए और को न माने तो भदायत के अरिये ने निकालकादी जावें । मुक्त को अफ़्रासोस होता है कि सरवार्शवकारा को इसने वर्ष खर्ने हुए हो गये कि जिसमें तीर्थकरों को चोगदि कहा है और अनेक मिथ्या बातें लिखी हैं, उत्तका खंडन तो बार बार छापने भी कोकिश की जाती है परस्तु सत्यार्थै बकाश से मिध्यावातें तथा तीर्थे वर्षे को बुग जिल्लाग यह निकलकाने की कोई क देशिश नहीं की जाती।"

प्रस्तव में भाई साहब को लिखना ठीक है। इस समय जैन विज्ञानों को अवश्य ही मसुरा में पहुंच कर जैनधर्म का महत्व प्रस्त करना चाहिए सत्यार्थनकारा से मिथ्या वातें विकलवाने के लिए संक्षी महोदय को आर्यसमाज से उचित प्रश्न व्यवहार करना चाहिए। हमें विश्वास है, बहि आर्यसमाज को सत्य से प्रोम होगा तो अवश्य ही वह मिथ्या वार्तो को सत्यार्थनकारा में से विकाल देगा। वनन् उसको सार्वधर्म परिष्ठ प्रक्रिक वस्ता प्रस् होंग मान सम्मा जायगा। उच्च दिन

पहं में हीत धर्म पर केरहने के लिए भी जिहानों को अनमंत्रित किया गया है। विदानों को ध्यान देना काहिया।

--उ० सं०

साहित्य-समालोचना

महिलासुधार — लेखक श्रीयुत साहित्यालह्वार कन्नेमल एस० ए०, प्रकाशक — महाबीर प्रन्थ
कार्यालय किनारी बाज़ार अगरा, सृत्य । १) पृष्ठ
६३। यह पुस्तक हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्लेखक
के विविध साहित्यापयामी लेखें का संग्रह है।
संग्रह उत्तम हुआ है। भारतीय महिलासमाज के
उद्धार और सुधार के विषय में खासा सर्वहितकारी विवेचन किया गया है। प्रत्येक महिलाहितेषी
और उन्नत्येच्छु को इस पुस्तक का पाठ कर
अमली कार्य का श्रीगणेश करना चाहिये।

मोहिनी—लेखक श्रीयुत भेयालाल जैन, प्रकाशक उक्त कार्यालय, मूल्य। । पृष्ठ = ३। यह छोटा सा अनूटा शिक्षाप्रद उपन्यास एक पौराणिक कथानक का नयाकप है। इसका प्रथम संस्करण कुमार देवेन्द्रप्रसाद जी द्वारा प्रकट हुआ था। यह दितीय संस्करण भी सफाई, छपाई और भाव-भूपा में उसी के अनुक्षय है। महिलाओं के साथ २ पुरुषों के लिए भी यह समान उपयोगी हैं।

स्वतन्त्र-विता-विलास—क्षेत्र मुन्सी यन्ता-कास जी बेमयुक्त प्रकाशक उक्त कार्यास्य, मूल्य हु॥, पृष्ठ २३। इसमें विविध सम्बन्धनियों में चिंति हिंन्दू पुरोणांतुसार स्वर्णपन्या की स्वेच्छा-चारिता का अच्छा चरित्र खोंचा गया है। छहा का वर्णन तो चहुत कुछ आजकल के किसो नगर की रचना के सहरा किया गका है। इस पुस्तक से उन छोगों को भी शिक्षा छेना बाहिए जो बी को नितान्त हेय हृष्टि से देखते हैं और उनको भी जो महिलाओं को मेमों की भीति स्वच्छन्द देखना चाहते हैं।

भेरी भावना — श्रीयुत जुमलिकशोर जी के इस मनोहारी नित्थपाठ का आदर सर्वत्र समुचित है। महावीर भेस खागरा के अध्यक्ष ने क्सकी १००० प्रतियां सदुपयोगार्थ मेंटकप में प्रगट की है।

ग्राह्मप्ति—(उर्दू) प्रथमभाग लेखक ब प्रकाशक ला॰ सीतलदास जैन षि० एम॰ पानीपत म्०१०) इस १३६ एण्ड की पुस्तक में उर्दू की लच्छे दार भाषा में उपन्यास के दंग पर आर्यसमाज के विविध सिद्धान्तों की अपेक्षानिकता और उन के पालन से जो हानियां होतीं हैं उनका खासा दिग्द श्रीन कराया है। उपन्यास में मियों को इसे मंगाकर अवश्य बढ़मा खाहिए। साथ ही उत्तम हो यदि हमारे आर्यसमाजी भाई सत्यार्थजनीश का निष्मस हुष्टि से पर्य्यपक्षोचन कर उसे में आक्ष्मक सुधार करले।

सुखमागार भजमावली — जैन धर्मभूषण वर्ण शीतलप्रसाद जी के अध्यात्मिक भजनी के संग्रह का यह द्वितीय संस्करण वर्ण जी के नम्बिश्व सहित श्री जैन साहित्यमसारक कार्यालय, हीरा- वाग गिरगांव, बम्बई ने वकट किया है। छपाई सफाई उत्तम और मूल्य १॥ है। पाठकों को अवस्य श्री इन अध्यात्मिक पदों का रसपान करता

चाहिए। कविषर दौलतरामजी के पश्चात् शायद यही एक 'भजनावली' ऐसी है|जो आत्मा के निज रूपामृत का आस्वोदन हमें कराती है।

जैनगजट-भी भाव दिव जैन महासभा के साम्राहिक मुखपत्र का विशेषांक समालोचनार्थ प्राप्त है। मुख पृष्ठ पर सम्यक्ष महिमाप्रदर्शक सुन्दर चित्र है। इसके अतिरिक्त महासभा के अब तक के सभापति, मन्त्री, सम्पादक आदि के चित्र हैं। कतिपय चित्रों को छोडकर बाकी सब चिथड़े हुए हैं। कुल लेख कवितायं लगभग ३३-३४ हैं। सम्पादकीय वक्तव्य में अवश्य ही स्पष्टता का अभाव है। जैनलंख्यावृद्धि को भी परम आवश्यक नहीं समका गया है। वेशक वर्तमान युग में संख्यावृद्धि के साथ २ धर्माचार वृद्धि की भी आवश्यकता है, जिसकी आवाज संख्यावृद्धि के साथ उठाई ही गई है। अगाडी भा० दि० जैन परिषद् पर आक्रमण किया गया है। सम्पादक को अभी उसका समा-जोन्नति में सहायक व बाधक होने का विश्वास नहीं है तिस पर भी आप उसके द्वारा सर्वनाश का स्वप्न ही देख रहे हैं। वस्तृतः जो वस्तृहिथति की ओर से आँखें मींचे रहते हैं उनसे ऐसे पूर्वापर विरोधात्मक लेखीं का लिखा जाना कोई अनोखा कार्य नहीं है। पेसे ही सज्जन प्रकाशक की हैसि-यत से सम्पादन कार्य करते हुए भी उससे मुन्कर होते हैं ! हम नहीं समभते ऐसी दशा में परिषद-हितेशियों के साथ वे किसनकार मिलकर कार्य कर सकते हैं! समाज के प्रतिष्ठित नेता स्वयं महा-सभा के भूतपूर्व सभापति दानशीर सर स्वरूपचंद हुकुमचन्द्र नाइट इस को उसी तरह असम्भव सम-मते हैं जिस प्रकार अग्नि और घृत का मेल ! खेद

है इतना हमको हठतः समालोचक की दृष्टिः से लि-खना पड़ा है। ले जो में पदार्थ निर्णय की कुक्जी. युर्च्यधर्म, क्या अहिंसा के उदर में कायरता है ? शीर्पक पडनीय हैं। भगवान पार्श्वनाथ के जीवन पर मेरे लेख के नोट (प्०१२६) पर सं० ने एक अनावश्यक नोट लिख मारा है। मेरा विचार उस नोट से यह नहीं है कि विवाहसम्बन्ध में पाश्चात्य सभ्यता का अद्भक्तरण किया जाय। जो हो संपा-दकों को सत्य और स्पष्टता के अश्वित हो अपनी लेखनी का प्रयोगमात्र धर्म प्रभावना और ऐक्य बढ़ाने की द्रष्टि से करना चाहिए। समाज से इस अङ्क के प्रकाशनार्थ ११५०। की सहायता मिली। उत्तम होता कि इस रक्म से किसी प्राचीन प्रत्थ का उद्धार किया जाता और वह प्रन्थ पत्र के उप-होर में दिया जाता । प्रस्तुत अंक पर उसको मूल्य लिखा नहीं है ।

—वृश दर्पण यह सचित्र वैद्यक मासिक पत्र अभी ही लाहौर से प्रकट होने लगा है। संपा-दक हैं, श्रीयुत सरस्वती प्रसाद त्रिपाठी वैद्य। पुस्तकाकार बा० मू० २)। ३-४ संयुक्त अंक हमारे हाथों में है। इस में अमलतास का पूर्ण विवरण हिस्टीरिया रोग का वर्णन,विष हिताहित, अनुभूत प्रयोग आदि उत्तम लेख हैं। लाहौर से आयुर्वेदके इस उत्तम पत्र की हम हृदय से उन्नति चाहते हैं।

इनके अतिरिक्त निम्न पुस्तकें और पत्र भी सामार स्वीकार किए जाते हैं---

- (१) जैनमहिलाश्रम देहली का विवरण सन् १६२३–२४।
- (२) रिपोर्ट भी भदावर प्रान्तीय जैन विद्या-लय सन् १६९१-२४।

- (३) भ्रीयुत मोतोलाल पहाड्या कुनाड़ी से भुड़ाग रसक विभान अर्थात् कन्याओं के लिए बुडों के अंजर से बचने के सहज उपाय।
- ं (४) क्या वेद सब विद्याओं तथा सचाइयों के अण्डार हैं ?
- (w) The dark side of Hindustan and Vedicism.
 - (&) Cruelty to Hidu women.
 - () The Religion of Social Service.
 - (=) वैदिक धर्म का तारीक पहलू (उर्दू)
 - (६) हिन्दू स्त्रियों पर जुल्म जीवदया सभा फीरोजपुर छावनी से प्राप्त ।
 - (१०) रेशम निषेध
 - (११) गोरक्षा उपदेश
 - (११) व्यसन निषेध

प॰ गौरीशंकर नशुराम बद्दवा, मादनगर से प्राप्त ।

- (१३) सुरेन्द्र बीणानाद
- (१४) कमलकिशोर नाटक आदि अभि सुरेन्द्रचन्द्र 'बीर' आगरा से ब्राप्त ।
- (१५) मतवाला (साप्ताहिक पत्र) २३ शंकर घोष लाइन कलकता।
 - (१६) गोलमाल (सा० पत्र) पटना।
 - (१७) भारतजीवन (सा॰ पत्र) बनारस
 - (१८) शकि (सा० पत्र) अलमोड़ा।
 - (१६) नारद (सा० पत्र) छपरा।
 - (२०) अहिंसाप्रचारक (सा० पत्र) अजमेर
 - (२१) विधवासहायक (मासिक) लाहीर।
 - (२२) जैनहोस्टल मैगजीन (श्रैमासिक)
 - (२३) पुरातत्व (श्रीमासिफ) अहमदाबाद।

साहित्य-सुमनसंचय



सफलता का रहस्य।

अमेरिका के विकास करोड़पति मि॰ एक-फेलर की बाबत खुना गया है कि वह एक बार अपने मित्रों के साथ गेंदबेल रहा था। एक बार निशाना चूक गया। मन में खेदिबन्न हुआ। मित्रों को बिदा किया और पचास बार निशाना लगाने का अभ्यास किया। यह ही वास्तव में इस लब्धमतिष्ठ धनी की सफलता का रहस्य है। जिस कार्य में मुनुष्य को असक्तता हो हो यह नहीं कि हिम्मत हार के उस कार्य को छोड़ दे। विक उसे चाहिए कि वारम्बार प्रयत्न करके सफलता प्राप्त करें। इस धनी पुरुष को अपने कार-वार में अनेक वार असफलता का मुख देखना पड़ा। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और अन्त में उस कार्य में सफलता प्राप्त करके ही छोड़ी। यह पुरुष संसार में सब से बड़ा धनी गिना जाता है। धर्म के विषय में सफलता का भी यही निर्णय है। कि मनुष्य छगातार प्रयत्न करें। उस्मैं वह गिरेगा

असफल होंगा परेन्तु फिर भी हिम्मत न हारे, कई बार पूजा पाठ आदि में दिल नहीं लगता परन्तु यदि मनुष्य यराबर प्रयत्न किए जाय तो अवश्य ही एक दिन वह सकल हो जाएगा।

--विश् स॰ से

महारमा के महावाक्य

मेरे दिल में लड़ाई के भाव विलक्क नहीं हैं. में किसी से लड़का नहीं चाहता पर चाहे स्थराजी चाहे नरमक्लकाके लिवरल कोई भी दल के भाई हों उन सब से में प्रार्थना करता हूं कि वे मुफ "मिलारी का फोली में हाथ का कता मयना झत डाल दें" जो कुछ जेरे साथ हैं शेरदिली के साथ दिलचस्पी वहीं हो रहे। प्रेसी हालत में हमीं मत

दस्ता और हमीं प्रतिनिधि हैं। आज मुक्ते स्वराजी और मुखलमान दोनों ने हरा दिया इस लिये चेल-गाँव की काँग्रेस में में सब दलों की एकता का अमेला मी हूं यदि उच्च श्रेणी और उच्च बिचार वाले हिन्दू मुसलमान इस समय एक बैठक करके आपसी भगड़ों का निपटारा करके शान्ति स्थापना करने में जोर शोर से लग जाँयगे तो फौरन बही हालत देश की फिर हो जायगी, यदि इस समय हिन्दू मुसलमान न चेतेंगे तो देश की खराची निश्चितहै। और हमें थोड़े दिनों के लिये स्वराज्य शब्द भूल जाना चाहिये और गुलामी को अप नाना चाहिये।

-समालोचक

वीर-वार्तालाप

वार्त निकालदीं को वह भी 'धर्म' के हिमायती ठेकेदारों! द्वारा 'सिद्धान्त विरोधक' की कोटि में रक्का गया? मुक्ते तो आश्चर्य है! सत्याधीन-भई यह तो तुम्झीं जामी-वीर पढ़ते हो, कोई बात नज़र आई-तुम मी तो पंडित हो! गड़०-हु' सही पर भाई मेरे विचक्षण नेत्र नहीं। मुक्ते तो खाजतक 'बीर' में कोई भी ऐसी बात

वहीं दिखाई दी जो सिद्धान्त के विरुद्ध हो। प्रत्येक लेख धर्म प्रभावक होता है।

सत्या०-तो किर क्या ? विशिष्ट 'मूर्ख-मंडली' उसे मिथ्या आवेश में चाहे किसी ही विशेषण से विभूपित करें। जो वस्तु की यथार्थ स्थिति से नेत्र मृंद अपने स्वार्थ साधन में संलग्न हो अंट संटक्कने लगें तो आश्चर्य भी क्या है ?

कांच की शीशियां

स्वदेशी !

सस्ती !!

बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की एकी शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रजाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस०जैन एरड झर्क्स, महाबीर भवन. विक्राने

परिषद् अधिवेशन का समापति कौन हो?

व धां के आगामी वार्षिकधिनेशन का सभापति पक ऐसा योग्य अनुभव प्राप्त विंहोन् और क्रैन धर्मप्रभावना में रत परोपकारी सज्जन होना चाहिए, जो जाति को मृत्यु। के मुख में गिरती हुई समाज को अञ्चक भौषधि का पान करा सके और प्ररिष्दु के उद्देश्यों को सफल कराने में सहायक होसके। समाज को अपने प्रनोनीत सरजनी की नामावली प्रकट करना चाहिए तथा अपनी एंचा-यत की ओर से सम्मति भिजवानो चाहिए। अधि-वेशन की सफलता योग्य सभापति पर निर्भर है। आंख फीलाते ही हमें समाज में चमकता हुआ रतन, चारित्र की प्रकट मूर्ति और धर्म के सर्च्च भक्त श्रीमान् चम्पतराय जी ही द्रष्टि पडते हैं। उनकी समानता में हमें सहसा अन्य समाजहितैपी रत्न नज़र ही नहीं आते । परन्तु उन धर्म-रत्न निः-स्वार्थी अपने प्यारे हितैषी को हम पहिले ही अपना सिरताज बना चुके हैं-वह हमारे स्थायी सभा-पति हैं। उन पर हमारा सारा आशा-भरोसा और

पथप्रवर्शन अवलिकत है। यह अवश्य ही । अधि-वेशन में उपस्थित हो हमें सच्चः कल्याणकारी मार्ग सुकायँगे। परन्तु नियमानुसार अधिवेशन के सभापति पद के लिए हमें अन्य दानवीर, परोप-कारी विद्वान् जातिनेता को चुन लेना आवश्यक है अतर्थ हम विश्वास करते हैं कि समाज हमारे इस नोट पर ध्यान देकर अपना अभिमत इस ओर प्रकट करेगा तथा अन्य आवश्यक उपयोगी मस्ताव उपस्थित करेगा। हमारी क्षुद्र सम्मति में निम्नः महानुभाव इस महत्वशाली पदके लिए अतीव उप-युक्त है:—

(१) सेठ ताराचन्द जी बरबई (२) राज्य-भूषण सेठ छ। छचन्द जी सेठी भारुरापाटन (३) सेठ रतनचन्द्र जी बर्म्बई (४) रायबहादुर नांद-मरू जी अजमेर (५) बाबू निर्माबकुमार जी आरा (६) बाबू ऋषभदास जी मेरठ (७) बाबू कन्छेदी छाछ जी दमोह।

---उ०सं०।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जवदी की जिये!

कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !!

अन्यथा चळताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नमर, कुल, गोत्र में इन का जनम हुआ। उनका चलन स्मवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतिकया। कौन प्रन्थ पुस्तकें उन्होंने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे प्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २०) सिज़ल्द २॥) डाकख़र्च ॥)

यत - बौधरी फिल्लरबन्द जैन फर्रह नगर (गुरुगाँव)

विजनौर का शानदार सत्याग्रह

दे वियों व पुरुषों की गिरफ्तारी व जुर्माने

विजनीर नगर के पास दारानगर में गङ्गा के तट पर कार्तिक स्नान के अवसर पर प्रतिवर्ष मेला लगा करताहै और हिन्दू जनता एक लाख के लगमल संख्या में उपस्थित हुआ करती है । गत वर्ष नवस्वर १४२३ में डिस्ट्क्ट बोर्ड ने इसका प्रवन्ध जातीयता के रूप में (National lines) किया था। पं० जत्रोहर लाल नेहरू ने प्रदर्शनी खोली और एं० रंगाअयर M. L.A. ने इनाम बांटे। ये वाते सर्कारी अफसरों को असहा हुई उन्होंने युक्तपान्त का सर्कार से एक चिर्ठी भिजवादी तिसको द्वारा मेले का प्रवन्ध डिस्ट्क्ट बोर्ड से लेलिया गया और ज़िला मजिस्ट्रेट यानी कलक्टर के सुपूर्व कर दिया गया उस चिट्टी में बोर्ड की तरफ से लगाया हुआ टैक्स नाजायज बतलाया गया था। इस पर जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री ने ज़िला मजिस्ट्रेट को लिखा कि आप किस कानून से टेक्स लगाना चाहते हैं मगर मजिस्ट्रेट उतर में कोई कानून नहीं बतला सके इस पर उन को लिख दिया गया कि बिना कानून मालूम किये जनता टैक्स न देगी।

& नवम्बर को बा० नेमीशरण जी M. L. C. सहमन्त्री परिषद् मेले में बिना टैक्स दिये हुये गये भीगती क्षानवती पत्नी वा० विश्वामित्र बकील दो और देवियों के साथ शाम के ६ बजे मेले में

पहुंची टेक्स नहीं दिया टैक्स वसूल करने वोलें व पुलिस ने रोका मगर वे मेले में चली ही गई और अपने डेरे में जा पहुंची । पुलिस ने आकर उन्हें उनके डेरे में रात के ११ बजे गिरफ्तार किया और मजिन्दुंट ने रात के १ बजे पांच २ रुपये तीनों देवियों पर जुर्माना कर दिया। इसकी खबर बिजनौर में २० नवम्बर की सुबह को फैलगई जनता में जोश भर आया। सुबह के 💵 बजे श्रोत्रिय जग-दीश दस व मौ० अलदल लतीफ टैक्स न देने में गिरफ्तार हुये दस २ रुपये जुर्माना हुआं। १० बजे बाबू नेमीशरण जी की माता. बहिन, पत्नी व भाई टैक्स न देने पर गिरफ्तार हुये और पाँच २ रुपये जुर्माना करके छोड़िये गये। १२ बजे तीन देवियां एक पुरुष और गिरफ्तार हुये मगर थोड़ी देर बाद बिना जुर्माना किये हुये ही छोड़ दिये गये। १ बजे श्रीयुत रतनलाल असहयोगी वकील मन्त्री परिषदु व ला॰ ठाकुरदास चेयरमेन डि॰ घोर्ड टैक्स न देने पर गिरफ्तार हुये और थोड़ी देर बाद छोड़ दिये गये। जनता में आन्दोलन को धडते देखकर पुलिस ने गिरफ्तार करना छोड दिया और टैक्स न देने वालां का ताम नोट करने छगे।

पुलिस ने बाद को टैक्स न देने बाले ७ महा-शयों पर जिनमें परिषद् के मन्त्री ला० रतन लाल भी हैं यह कह कर कि इनके ताँगे इकने से भीड़ हो गई रास्ता रक गया पुलिस पेकृकी दफे ३२ के मुकदमें चलाये हैं इनमें प्रत्येक पर दो २ सी हत्ये मजिस्ट्रेंट ने जुर्माना कर दिया है । किसी सत्याप्रदी ने अभी तक जुर्माना नहीं दिया है । इनके सम्बन्ध में बहुत से प्रश्न बा॰ नेमीशरण जी ने कौन्सिल में पृष्टे हैं। यह भी मालूम हुआ है कि 'युक्तप्रोन्त की सर्कार ने कलकर से पृंखा है कि आपने टैक्स किस कानून से लगाया है कलकर भी परेशान है देखिये इस सत्याप्रह का क्या फल निकलता है।

संसार दिग्दर्शन

समाज

सियनी से महामन्त्री मसासभा ता० ३० को तारद्वारा स्वितकरते हैं कि एं० नेमि सागर जी वर्गी आगामी महासभा के सभाषति नियत हुए हैं च उन्हों ने स्वाकार भी कर लिया है।

जैन वृती या श्रलणवेलगोलामें ५६ फुटऊँची
एक पाषाण में रिवत भी गोम्मट स्वामीकी बृहद्द
मूर्ति का महा अभिषेक हुआ था। वह अवसर इस
वर्ष किर पुण्योदय से प्राप्त हुआ है। कालगुनसुरी
५ से चैत्रवदी ५ तक समारोह है। अन्त के कई
दिन बहुत उत्सव होता है। १४ नवम्बर को स्तंभ
मुदुर्त हो चुका व एक स्वागत सभा का निर्माण हो
गया है। इस कार्य में ३००००) तीस सहस्र रुपये
खर्त्र पड़ेंगे। यात्रियों के लिये २०० घर बनाय जांगगे। महाराज मैसूर के बुलानेकी भी योजना होरही
है। सर्व देश के यात्रियों को इस अवसर पर जैनबद्दी मूलबदी की यात्रा करके महान पुण्य सञ्चय
करना चाहिये।

प्रगट होगा भा० दि० जैन खण्डेलवाल महा-

सभा की प्रवन्थका के निश्चयानुसार सभा का मुखपत्र ' खण्डेलवाल हितेच्छु ,, (जो कई महीनों से बन्द था) अब फिर अजमेर से सेठ मोहरीलाल जी बोहरा हारा सम्पादित होकर प्रगट होगा। लेख, कवितायें व संवाद मेजिये।

-भा० दि० जैनगोलापूर्व सभा साग्यका पञ्चमां पञ्चाचित्रान आगामी मार्गसिर सुदी १२-१३-१४को सिद्धसेत्र रेशंदीनिर (पन्ना)पर राज्यमान बा० खुशालचन्दजी पटोरया खिदवाड़ानिवासी के सभापतित्वमें होनेका निश्चय होचुका है। स्वगत-समिति का संगठन हो खुका है, अतः इस अवसर पर सभी भाई पधारें, विद्वानों के उपदेश य सभा का जन्सा देखने के साथ २ सेत्र के दर्शन व वहां की पाठशाला के निरीक्षण का भी सीमा य प्राप्त होगा। यह सेत्र सागर से ३३ मील है।

—श्रार्य समाजी भाई फरवरी में अपने संस्था-पक श्रीयुत द्यानन्द सरस्वती की शाताब्दिमें एक धार्मिक कान्फुन्स मधुरा में फरने वाले हैं उस ससय के सत्यार्थप्रकाश की एक लाख प्रतियें वितरण करेंगे। इसमें जैनमत का चिपरीत खंडन है। कहने से वे इसको निकालेंगे नहीं तब जैनममं का कतं व्य है कि उसका खंडन सिख कर उस की प्रतियों वहां वितरण करें तथा एक दी विद्वानों को वहां जाकर जैन धर्म पर व्वाख्यान देना व जैन धर्म के सिद्धान्तों की रक्षा करनी चाहिए। श्रीमान् पं० माणिकचन्द औं न्यायावार्य व पं० मक्खन लाल जी न्यायालंकार को महासमा की ओर से मेजना उचित है।

देश

-कांग्रेस के अवसर पर बेलगाँव में होते

वाली परलोक विद्या कान्फ्रेन्स के सभापति अमृत बाज़ार मिलका' के श्री॰ पीयूपकान्ति घोष सुने गये हैं।

—स्वयर है कि "इण्डियेरोडराट" की भूतपूर्व सम्पादक मि० जार्ज जोज़फ ने मदूरा में फिर से बकालत करने का निश्चय किया है। मि० जार्ज-जोज़फ कट्टर अपरिवर्तनवादी दल के सदस्य हैं।

—मद्रासके किसी गाँव की सात वर्ष की एकलड़की रेलवे लाईन पार करते हुए मद्राास और सदर्ग मरहडा रेलवे कम्पनी के एक इञ्जिनके भक्के,से बहुत घायल होगई थी। लड़कीकी औरसे रेलवे कम्पनी पर मुकदमा चलाया गया और मद

THE JAINA GAZETTE.

(The Monthly Orgen of the All-India Jaina Association)

Edited By Rai Bahadur J. L. Jaini, M. A. M. R. A. S. Bar-at law Chief Justice. Indore, and Messrs. Ajit Prasada, M. A. L. L. B. Lucknow. and C. S. Mallinath Jaini Madras.

This is the only Journal and Newspaper in the Jain Community which is edited in English, and has a wide circulation in India, Europe, America, Africa and Australia.

It contains every month interesting and instructive articles on the History, Philosophy, Metaphysics and Ethics of the Jainas by learned scholars. Important news and critical comments on communal events and affairs are also published.

It is the Jaina Gazette that has created in the Eurpean and the American 'scholars and in the English educated non-Jainas an interest to study and understand Jainism.

The more Janism will be known in the world the lesser will be the misery of living beings and greater the virtue of those who help to propagate it.

It is therefore the religious duty of every Jaina to subscribe to the Jaina Gazette and, help it in all possible ways.

Annual subscription is Rs. 3/ only.

Specimen copies will be sent free on application.

PLEASE APPLY TO-

The Manager "The Jain Gazette"
21, Parish Venkatachala Iyer Street,
MADRAS. G.T.

रास हाईकोर्ट ने लड़की को कम्पनी से ३५००) का गई इस में चन्दे की अपील पर ७०००) के हर्जाना दिला दिया।

- -- श्रीसती एनीवीसेन्ट ने कांत्रेस के उह भ्यों पर हस्ताक्षर कर दिये हैं और वे उसकी मेम्बर बन गई। श्री देवदास गाँधी उन्हें चरला कतना सीखा रहे हैं।
- --- नाभा की जैलों में इस समय तक १०३ प्रकाली केरी मर चुके। रावलपिण्डी की जेल में लगलग ५० अकाली फैरियों को निमोनिया हो गवा है। कितना सुप्रबन्ध है।
- ---श्रमृतसर् में 'नागरिक संघ' नाम से एक सभा स्थापित हुई है। यह म्यूनिसिपिलेटी के शासन की देख रेख करेगी।
- -- जैन पथ प्रदर्शक (आगरा) के सञ्चा-लक श्री पद्मसिंड जी जैन लिखते हैं कि जैन धर्म के प्रसिद्ध आचार्य श्री माधव मृति का स्वर्गवास हो जाने से २६ नव० को स्थानक बासी जैन संघ का कुल काम वन्द रक्ला गया पूज्य मुनि की स्मृतिमें अनाधालय खोलते का विचार करके एक सभा

बचन मिले।

विदेश

- विटेन और जर्मनी में व्यापारिक संधि की शर्ते तय हो गई और दोनों देशों ने उन पर हस्ताक्षर कर किये।
- -- जावा में किर भूकम्प के कारण मंगत जीलोरिया नामक नगर नष्ट ही गया और प्रायः ६० मनुष्य मर गये।
- ---पोलेराहमें कपड़े की मालों के ६० हज़ार मज़दूरों ने वेतन-वृद्धि न किये जाने के कारण हड़-ताल कर दी है।
- -- फ्रान्स के कई विद्वानीने एक इन्डिया करोटी की स्थापना की है। इस करोटी की !स्था-पना की है। इस कमेरी का उद्देश्य है भारत की विद्याओं आदि का बान प्राप्त करना और भारतसे विद्या सक्वन्धी सम्बन्ध स्थापित करना ।

घर बैठे चम्बई

का सभी माल बहुत ही किफायत भाव से बीठ पीठ द्वारा भेजा जाता है जैसे सूती, अनी, कोशा, रेशमीकपडे व सिले कपडे, सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें, स्टास व चीनी का सामाव देशी, व श्रंप्रोजी दवाएँ, तेल, अतर, वार्निश, व हर किस्म की घड़ियां । एक बार परीक्षा कर देखो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाम् की हर प्रकार की कमजोरी, सिरदर्व, सक्कर आमा आँखों से, धुंधलापन नक्रर आवा. बालों का बेसमय पकता आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है । बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है दिमाग् के सब रीगीं की रामवाण औषधि है। मूल्य १) ६० ३ शीशी का २॥।) ६ शीशी ५।) ६० ३२ शाशी १७) ६० व्यापारियां एजेटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये। बता-मेसर्स कर्क क्यानी कमीशन एजेण्ट बम्बई नं रेड,

;	विषयसूची								
	लेख		·	`				•	वृष्ठ सं॰
ę	पथिक (कविता) कविवर "बरसव	L''	***	• • • •	•••	•••	•••	•••	EV
2	श्रोम्-भी । पुष्त्यार सिंह मेरठ		***	•••	•••	•••	•••	•••	E &
ş	जैनधर्म और असड्योग दो नहीं है	્રે−મી ∘	चम्द्ररो खर	गास्त्री	कान्यसाहित्य	तीथीवार्य	मोक्सर		£o
8	काग्जी सुधारक (कविता)—क	विवर "ः	गरतीय"	•••	•••	***	•••	•••	દક
ų	सुमन-संचय (गरूप) श्री • "भूम	R"	•••	•••	•••	•••	•••	•••	£8
Ę	सम्पाद्कीय टिप्पणियां		•••	•••	•••	•••		•••	#3
9	साहित्य समाळोचना	•••	•••	•••	•••	•••	•••	•••	83
E	साहित्य सुमन संचय	•••	***	•••	•••	•••	•••	•••	१०१
8	बीर-वर्चालाप-भ्री० "सत्यनिष"	•••	•••	•••	•••	•••	•••	•••	१०२
(o	परिषद् अधिवेशन का सभापति व	कौन हो	? –७५ सः	पादक	•••	•••	•••	•••	१०३
११	विजनौर का शानदार सःयाप्रह		•••	•••	•••	•••	•••	•••	१०४
१२	संसार दिग्दर्शन	•••	•••	•••	•••	•••	•••	•••	१०५

अपरीका और विजायत से एक बड़े डाक्टर की आमद

यह सबर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाक्टर वस्तायर सिंह जैन, एम०डी० (अमरीका) एल-आर-सी-पी पेन्ड एस (एडनवर्ग) एल-एफ-पी-एन्ड एस (ग्लासगो) जिन्होंने प्रसाल अमरीका में, और २ साल इक्लैएड में तालीम पाई है और २ साल अमरीका और इक्लैएड के अस्पतालों में बतौर असिस्टेंट सरजन के काम किया है देहली में तशरीफ़ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी खुशिक़्स्मती की बात है कि आपने हम लोगों की दरख्वास्त पर देहली में शफ़ाखाना खोला है आप बच्चों और औरतों के इलाज में खास महारत रखते हैं। तपेदिक, आतशक,स्ज़ाक, दमा, हैज़ा, नामदी, कोढ़ और बवासीर (खूनी हो या वादी) का इलाज बजरिये पिचकारी (Injection) और जियावेतस का इलाज वग़ र अदिवयात किया जाता है आपने एक खेराती अस्पताल खोला है जिसमें आपरेशन खवासीर आँख और दांत गुर्बा के लिये मुक्त किये जाते हैं, और आपने एक लेडी नर्स को शि रक्षा हुआ है जिसकी जेर निगरानी औरतों का इलाज होता है।

पताः—डाष्टर चलतावरसिंह जैन पहाड़ी घीरज, सबर बाजार, देहली

दरिव्रता, दुर्बलता और चिन्ता व रोगों का कारण अधिक सन्तान का होना ही है।

उद्धा सुखी-जीवन हैं

इस में शैक्षानिक रीत पर यह बतलाया गया है कि किस इकार गर्भ रहता है, किन २ कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा िना कारण अक्षानतायश हज़ारों लिया क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रइ सकता है आदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्वल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पापण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से आजन्म रोगी दुर्वले न्दिय और दुःवी सन्तानों से देश में दुःव और दिहता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दिरहता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तानहीनता दुःव है ौसे ही अधिक सन्तान भी नम्क ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानों के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई हैं जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भिद्धित रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है इसका आयुर्वेद और धूनानी द्वारा वणन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुस-जित पुस्तक का मूल्य रात्रो) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

दश्य दिमादि तेल हैं। अस्तराहर स्टब्स

शिर दर्द, दिमाग की कमज़ोरी, आंखों की कमज़ोरी, आँखों के सामने पढ़ते २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमादि तेल- शीतलता और सुगन्धि का खजाना है।

हिमादि तैल-वनस्पति से तथार किया गया है।

हिमादि तैल-विदेशी और विषेठी वस्तुओं से रहित है।

हिमादि तेल-शिर दर्द, से हाहाकार करनेवाली को हैसाता है।

हिमाद्रि तेल-अधिक दिन लगाने सं चश्मा लगाना भी खुटाता है।

हिमादि तैल-प्राप्त शरद ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जाता है। एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता-शङ्कर स्वदेशी स्टोर, विश्वनीर (यृ० पी०)

केवल २॥) रु० में



हिन्दी में उच्चकोटिका संजीव सामाजिक पत्र साख भरतक मिलेगा।
जिसमें सर्वोपयोगी हर मकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक प्वं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा
गल्प, कविताएँ, श्रद्धत व नवीन से नवीन संसार भर के समाधार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है। कागृज,
छपाई, सफाई, सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट
निडर और समाज के पृश्नों पर निस्पन्त रहती है।

📲 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को एक दम नया ग्रन्थ।

,'महावीर भगवान' 🖁

बिलकुल मुक्त मिलेगा।

जिसमं महावीर भगवान की जीवनी
आधुनिक शेळी पर वड़ी ही रोचक भाषा में
अत्यन्त छान बीनके वाद लिखी जा रही है।
यह ब्रन्थ जैन अ जैन सच ही के लिये उपयोगी
स्वावित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज
में इस मार्के की रचनाएँ अब तक बहुत ही
कम निकल पाई हैं।

इस बर्प भी महावीर जयन्ती के उपलब्ध में

वीर का विशेषांक

वड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निक-लेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुतृ से चित्रों के अतिरिक्त हिन्से व जैंड संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कविनायं, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अंद्व दें बने ही सं ताल्क्षक रक्खेगा।

शीघृ ही २॥) भेजकर गृाहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापन दाताओं के लिये भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र साबित होगा।

प्रकाशक-राजेन्द्र कुमार जैनी-विजनौर (यू० पी०)

श्रीबद्धभानाय नमः।

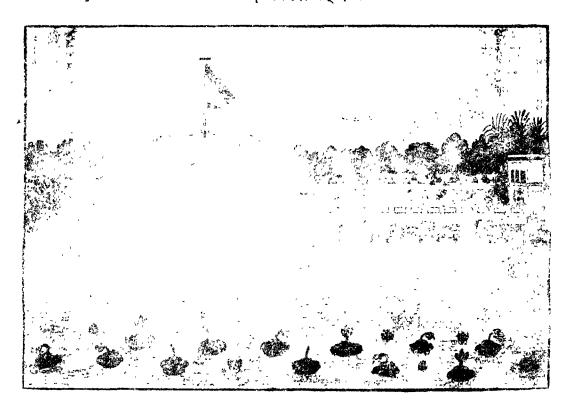
वीर

म्रोभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाहिक पत्र

- - २००४ अस्ट्रिस्ट्र १ जनवरी सन् १८२५

[संस्थी ५

वर्ग२]



मात्रकः -जनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रकादजा उपसम्पादकः— श्रीकामताप्रसादजी

प्रकाशक---

वार्षिक मूख्य]

श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनीर।

[ढाइ रुपये

'वीर' का विशेषांक

पिछले वर्ष को भाँति इस वर्ष भी हमने महावीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग विरंगे अनेक दिनों से सुशीभित, अन्यान्य दिषयों से विभूषित, एक मनोहर और अत्यन्त उपयोगी विशेषांक निकालने का निष्य किया है। जिस में श्रीयुत बाठ चम्रतरायकी बैरिप्टर, बाठ इस्प्रदासकी वकील, बाठ हीरालालकी एम. ए., गिरीशकी बीठ एठ आदि बड़े बड़े जन-अजैन आधुनिक लेखकों के लेख व कदिताएँ होंगी। यह अंक अपने ढंग का

परन्तु 'वीर' की आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह तबही संभव है, जबिक हमारे ग्राहक गण व राचे धर्म-हितेषी अपनी चंचला लक्ष्मी से, तथा ुवीर की ग्राहक संख्या बढाकर इसमें सहायता है।

इस अमूल्य विशेषांक के लिए केवल २००) की सहायता दरकार है। यदि कुछ सडलल दश-दसकी स-बीस रुपये इस धर्म कार्य में प्रदान कर पुरुयोपार्जन करलें, तो यह विशेषांक वीर के ब्राहकों के समक्ष बिना मूल्य ही अर्पण किया जा सकता है।

इस कार्य में श्रीयुत बार कामताश्रधादणी जल श्रलीगंज निवासी थे दश रुपये हमारे पात्र भेजे हैं, जिस्के लिए उनको 'वीर-मंडल' की छार से कोटिशः धन्यवाद है। हमका पूर्ण ख्राशा है कि इसी प्रकार हमारे ख्रन्य साधर्मी जलभी इस कार्य में हाथ बटाकर यश खोर पुग्य दो हो का सञ्चय करेंगे खीर हमारे उत्ताह को बढ़ावेंगे।

विनीत--प्रकाशक।

भी महाबीशय नमः

"चमा वीरस्य भूषणम्" भी भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाचिक मुख पत्रः

वीर

भय वीयराय जग ग्रह, होड ममंतु हृष्य भावऊ भयवं। भव निव्वेड मगाग्रु, सार्या इट्ड फल सिद्धी ॥

-सामयिक पारण गाथा।

वर्ष २

बिजनीर, पीष शुक्रा ७ वीर सम्वत् २४५१ १ जनवरी, सन् १६२५

अड्ड ५

श्री पार्श्वस्तवन

पास जी हो पास दरसर्ग की वित् जाइयै: ॥ पास० ॥ मनरंगै गुरा गाइयै ॥ पास० ॥ बाट घाट ज्यान में ॥ पास० ॥ नामै संकट इपसमें ॥ पास० ॥ जपसमें संकट विकट कष्टकी दरित पाप निवारणोः ।

> श्राणन्द रङ्ग विनोद वारू श्रपे संपत्ति कारणो० ॥ जाग तौ जस सोधाग बहुलो संग भेटण श्रावए।

> > मृगमद अगर कपूर चंदन भली पूज रचावए! ॥ पा० ॥

अञ्चल स्र्रति प्रश्च तर्णा०॥पा०॥ बदनु ससी सोभा भणी०॥पा०॥ बर्णत महाजुग श्रंपदी ॥पा०॥ जार्णात पंकः ज तर्णा जैसी श्रंपदी जग सोहर्ष ।

नासिका उन्मंत दंत पंकति रूप तृभवन मोहर ॥

भी मुद्धुट रयणो जहित सुघटा कानि दुएडल दीपए ॥

तिनि योति व्योति उद्योत करि प्रश्च कोटि ससि रवि दीपए ॥ पा० ॥

शी अवेती राजपः ॥पास्या अहिवर लंखण छाजप्य ॥पास्या वेव सबै सिरताजप्र ॥पास्या

सीरतान साहिव प्रगट पत्रों सकुल गुरा छुप सागरो ।

श्राससेन वामात्त्यौ नंदन श्री पार्स्वनाथ उनागरी ॥

दंबाधिदेव तृलो कुरी स्वामी कृपा घणी।

श्री गुणासागर कर जोड़ि विनवे, पृरो श्रास्या मनितणी। पा०॥
(नोट--यह स्तवन जैनमन्दिर असवन्तनगर के एक प्राचीन जीर्ण गुटके में लिपिबद्ध है। गुटके का लिपि समय विक्रम सं०१६२६ दिया हुआ है। इस हेतु यह कविता इस समय से प्राचीन होनी
चिहिये। यहाँ पर वह ठीक उस ही कप में उद्देश्त की गई है जैसी कि वह लिपिबद्ध है। इससे हिन्दी
भाषा के विकास इतिहास पर अवश्य प्रकाश पड़ सकता है। इस गुटके की अन्य रचनाओं का पूर्ण
परिचय हम पाठकों को आगामी करायँगे।)
—उ० स०

जैन लॉ

(छे॰—श्रीमान् चम्पतराय जी जैन वैरिष्टर) (क्रमागत)

विभाग किया

प्रथम ही पिता सिद्ध प्रतिमा की पूजन करे फिर मुख्य २ सज्जनों की साक्षी पूर्वक अपनी संप-चि को अनिमाण के अनुसार विभाग कर उस पुत्र का भाग उसी को समर्पण (३७) करे।

यदि कुल को छोड़कर देश, कुल, स्त्री और समय की अपेदा से दायभाग करना चाहे तो कुल में एक ही शिष्य उस पद का अधिकारी (३८) होता है।

"ब्राह्मण के धनके भाग में विशेष कहते हैं"

पितो के मरने पर यहें भाई आदिकों के हाथ आया जो द्रव्य उसमें विद्या पठन में संलग्न छोटे भाइयों का भी भाग (अधिकार)(४०) है।

विद्या रहित भाइयों को व्यापार से धन उपा-

र्जित करना चाहिये और पिता के धन को छोड़कर बाकी द्रव्य में सब का समान भाग होना (४१) चाहिये।

जो निष्युत्र ब्राह्मण का धन हो तो उसकी भी-गता उसकी धर्मपत्नी होगी। यदि वह न हो तो उसकी जाति के जो ब्राह्मण हाँ उनकी साक्षी से दिया (४२) जावेगा।

यदि द्रव्य के भाग किये पश्चात् बड़ा भाई या और कोई भाई मर जाने और उसके पुत्र भी न हों तो उसका धन शेष भाई समान भाग करके छेचें परन्तु सपुत्र मरनेवाले के द्रव्य का स्वामी पुत्र ही होनेगा (४३)।

उस (अपुत्रा) मृतक भाता का धन क्रमशः भोता बन्धुजन प्रहण (४४) करेंगे।

⁽३७) देखी त्रि० आचार घ० १२ श्लो० ६

⁽३८) " मी बार प्रारु पार ३१ सूर निरुपत्र १३४

⁽ vo) " भव सं ० ६= .

⁽ ४१) देखों म० सं० ६६

⁽ ४२,४३) " इ० जिल् सं० ४०

^{(88)&}quot; "88

जो भातृवर्ग में से कोई एक भाता यदि पंगु, बिधर, उन्मत्त, कलीवरण, कुबड़ा, अन्धा, विपयी, मूर्ख, कोधी, गूँगा, रोमाकुल, माता पिता से वैर करनेवाला सप्त कुव्यसनी अभक्ष भोजी ऐसा पुत्र भाग नहीं (४५) पाता।

ज्येष्ठ भाता को उचित है कि उसके भोजन वस्त्र का निरन्तर यत्न करता रहे और यदि वह मन्त्र व औषधि से अच्छा होसके तो चड्डा कराय उसका भाग उसको देवे। उसका भाग सदा काल रिस्त रख उसके आय से उसका पालन करता (४६) रहे।

या उसके पुत्र या पुत्री सर्व गुण शुद्ध हों तो उनको देना चाहिये। परन्तु निज धर्मयुत जो हो वही भाग के योग्य है, सर्वोपिर धर्म मुख्य (३७) है। ब्राह्मण पतिद्वारा त्राह्मण, चात्रिय वैश्य की कन्याओं से उत्पन्न हुए पुत्रों

का विभाग

पिता के जड़म तथा गोधनादिक और स्थावर द्रव्य में दश भाग करके ब्राह्मण से उत्पन्न हुए पुत्र को चार भाग, क्षत्रिय से उत्पन्न हुए को तीन भाग और वैश्य के पुत्र को दो भाग तथा अवशिष्ट एक भोग धर्मार्थ नियुक्त (१) करे।

शूद्रा स्त्री से उरण्झ हुए पुत्र को भोजन वस्त्र के शतिरिक्त और कुछ नहीं मिल सकता।

- (४४) देखो इ० नि० सं० ४१, ४२
- (84) " " 83
- (89) " " 88
- (१) देसी म॰ संत्रह-३१६० त्रि॰ सं**० ३०** प्रा० नी**० ३**८, ३६

चात्रिय णिता से सवर्णा व वैश्य व शूद्र स्त्रियों से उत्पन्न हुए पुत्रों का भाग

क्षित्र पिता से उत्पन्न हुए पुत्र को पिता के द्रव्य कर अर्द्धाश तथा वेश्यजा को चतुर्थाश और शूद्रा सं उत्पन्न हुआ जो पुत्र है यह उसीका स्वामी हो सकता है जो अन्न वस्त्रादिक उसके पिता ने दिया है अधिक (३) नहीं।

क्षत्रिय पिता के पुत्र ३ और २ माग के अधि-कारी क्षत्रिय या वेश्य मातृपक्ष से (४) होंगे। वेश्य पिता द्वारा सवर्णा तथा शुद्रा स्त्री

से उत्पन्न पुत्रों का भाग

वैश्य से सत्रर्णा स्त्री द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुआ सर्व सम्पत्ति का अधिकारी हो सकता है। शूद्रा से उत्पन्न हुआ केवल भोजन वस्नका अधिकारी(५) है।

बैश्य पिता और माता से उत्पन्न दो भाग का और शूदा माता से उत्पन्न एक भाग का अधिकारी (६) है।

शूदा माता। और शूदा स्त्री से उत्पन्न द्रुए पुत्रों का श्रधिकार

शूद्र पिता से शूद्रा स्त्री के उत्पन्न पुत्रों को एक दो तथा शत भी होवें समभाग का अधिकार (७) है।

- (२) देखो आ० नी० ३६
- (३) " ४०, ४२, भ० सं० ३३
- (४) " इ० जि० सं० ३१
- (४) " भ० सं० ३४, श्रा० नी ७ ४९
- (६) " इ. डि. सं. ३१
- (७) " भ० सं०३५ श्राठनी० ४४

शूद पिता द्वारा शूद्रा दाली से जो पुत्र जनमें (पिता के जीवन में) उसको पिता के धन का पिता की इच्छा से जो भाग मिले और पिता के बर्ख के बाद उसके संपूर्ण धनका आधाभाग मिले । ध्याही वासी के पुत्रों को और भाइयों के रनमान । धनि उसके और पुत्र पुत्री क दोहिता भी न होय तो पिता की संपूर्ण सम्पत्ति उक्त दासी पुत्र को ही मिलेगी (=)।

दासी पुत्रों के पालन पोषण का भार

गृह में जो दासी से उत्पन्त हुए पुत्र होवें ते' उनका पालन छोटे, भाई को पिता की मृत्यु पश्चात् करता चाहिये, अयवा सर्व भाई मिलकर अन्न, यस्त्र का सबन्ध करें। वे पेसा प्रयन्ध करें जिसमें कि इह पिता की याद (१) रचले।

दीन वर्ण के पुरुशों के निकट रहती हुई शूद्रवर्णा स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हो उस को पिता अपने जीवन कारू में जो कुछ देवे उसका वह निश्चय मालिक (२) होगा।

पुक पिता के पुत्रों में से यदि एक के भी पुत्र हो तो सब पुत्र वाले कहलायेंगे

ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य, अथवा, शूद्र इन चारों ही वर्णों में एक जिता के उत्पन्न हुये पुत्रों में से यदि किसी एक के पृत्र होते तो उस पुत्र से सर्व ही पुत्र पुत्रवाले समभे जाते हैं।

- (=) देखो भाग्नी० ४४
- (१) " भ० सी ३२ भा० नी० ४३
- (२) "भा०नी० ४२
- (१) " मक्एंक ६६, भार मींक १००

[प्रश्न:-क्या इसका यह भाव है कि शेष अपुत्र भाई दत्तक नहीं ले सके हैं, एकत्रित रहते हुये का जुदे २ होने पर भी।]

एक मनुष्य की बहुस्त्रियों में से किसी एक के पुत्र होने पर अधिकार

किसी पुरुष की बहु लियों में से किसी एक के पुत्र होने तो ने सर्व ही लियाँ पुत्रवती सममनी (२) बाहियें।

उन क्षियों के मरने पर उन का धन वह पुत्र (जो एक स्त्रों के उत्पन्न हुआ है) ही छंबे अर्थात् एक पुत्र के होने पर अवशिष्ठ स्त्रियों को पुत्र नहीं छेता चाहिये किन्तु जो एक सौत के पुत्र हुआ है वह सर्व धन का स्वामी (२) है।

कन्या के विवाह का वचन देकर उससे प्रतिकृत होने पर कर्तव्य

जो कोई प्राणी अपनी कन्या किसी को वचन से देनी करके लोभ वश दूसरें पुरुष को देवे तो प्रथम पित के निवेदन पर राजा उस को दंड़ देकर वह फिर्याद करने वाले प्रथम पित को खर्च के बढ़ले द्रज्य दिलावे।

यहस्थ धर्म को छोड़ कर द्रव्यवान् दीचा लेने वाले का कर्तव्य

जो प्रहस्थाभ्रम में अपने आप को हतार्थ मान चुका है और गृहस्थाभ्रमको छोड़ना चाहता है उसे

⁽२) देखो ,, ३७, , ६८

^{(1) ,, ,,} tx, ,, tx

⁽१) अधान मीठ १२८

खिद्ध प्रतिया का पूजन कर उस (प्रतिया) के खमक्ष नीचे लिखी विधि करनी चाहिये और उन की साझी पूर्वक अपने पुत्र को समस्त सम्पति दिखलाकर घर में ही रख देनी चाहिये और पुत्र से कहना चाहिये कि यह सम्पत्ति और घरवार सब हमारे कुल कम से चला आता है अब आगे हमारे बाद इन सब की रक्षा करना इन सब द्वय के तीन विभाग करना और उसे इस प्रकार धर्च करना। एक भाग अपने घर के कामों में कुर्च करना और तीसरे भाग को अपने भाईयों में समान भाग से वाँट लेना इस प्रकार सब धन के विभाग होजाने पर सब पुत्रों के सामने चड़े पुत्र से कहे कि तृ सब से बड़ा पुत्र है इस लिये तृ मेरी इस समस्त संतान को

स्वीकार कर अर्थात् इन की रक्षाकर। मैंने तुभे विधिपूर्वक शास्त्रचरित्र किया मध्यादि सब सम-पंण किये हैं पढ़ाये हैं और दिये हैं इसेलिये तू विना किसी आलस के इस कुछ की अम्नाय का पालन करना। गुरु और देघों की सदा पूजा करते रहना। इस प्रकार ज्ये ह पुत्र को शिक्षा देकर उस आवक को अपने मोह जन्म विकार सब छोड़ देने चाहियें। इस प्रकार दीक्षाप्रहण करने की इच्छा रखने वाले उस आवक को स्थयं अपना घर छोड़ देना चाहियें और अपने हदय से काम और अर्थ और स्वार्थ को त्याग कर धर्म ध्यान करते हुये थोड़े दिन विताने (१) चाहियें।

(१) वि० आयार छ १२ श्बोक १३-१६, श्रादि पुराय

जैन इपीग्रेफिया

(ले॰-चैरेलियर डा॰ वी॰ शेनागिरि राउ एत॰ ए॰ पी॰ एच॰ डी॰)

[क्रमागत]

कलिङ्ग में जैनधर्म

दानपत्र में पक "परलूर" का नामेएलंख रानपत्र में पक "परलूर" का नामेएलंख है। आजकल पुरातत्वानुवेषियों ने इसे धारवार ज़िले के अद्दूर नगर के उत्तर और पांच मील पर अवस्थित हरलपुर बतलाया है। प्राचीन और अर्वा-चीन कनड़ी भाषा में 'प' 'ह' में बद्दल जाने के कारण हरलपुर परलपुर व परलपुरी होजाता है, जो परल किमेदी ज़मीन्दारी की गही और गहुवंश की एक प्राचीन शाला की राजगही थी। गन्जम ज़िले में एक अन्य स्थान टेक्नाली एक प्राचीन कदंब नगर टेकल के समान है। (यह नगर गङ्गवंश के अधिकार में आने के पहिले कदम्ब नगर अवश्य रहे होंगे।)

ब्रह्मश्रियों की शालारूप यह कदम्ब जैन थे और उनकी राजगद्दी परुसिक (आजकल की हल्सी) थी। इस ही परुसिक के सदृश एक नगर प्लुस नामक गञ्जम ज़िले में है जो किसी समय कदम्बी की कलिङ्ग शाला का प्रस्थात राज्यनगर रहा था। इन्हीं कदम्बों के अधिकारी कलिङ्गनगर का गङ्ग वंश हुआ था जिनकी उपाधि "शिकलिङ्गाधिपति"

थी। परन्तु हमें बनवासी वा वैजयन्ती नामक एक मगरी में एक कदम्ब नरेश जो मगेश कहलाते थे उनका निवास स्थान मिलता है। इस ही वनवासी वा वैजयन्ती के सदूश हमें कलिक में एक स्थान जयन्तीपुर मिलता है और तेलुगू ब्राह्मणी का एक अयन्ती बंश ! कलिंग का जयन्तीपुर या तो कदम्ब (Collateral) शाखा का राज्यनगर है, जिस शाखा के राजा पश्चात् शैष या गैष्णव होगए थे ।अथवा पलस के बाद जैन कदम्बों ने पौराणिक ब्राह्मणधर्म स्वीकार करने पर इसी को अपनी राजगढ़ी बनाया होगा। जो हो कदम्बीं का एक गंश अपने को मयूर-वर्म राज्य की संतति बतलाता हुआ कहता है कि उसको राज्याधिकार जयन्ती-मधुकेश्वर की कृपा से मिला था। (बनवासी अन्यप्रकार जयन्तीपुर कहलाता है) बनवासी में एक मधुकेश्वर का मंदिर है और वहां के एक ब्राह्मण पुरोहित का माम मधुलिंग मिलतो है। गन्जम ज़िलेका मधुलिङ्गम नामक ब्राम जो पारल किमेदी के जिमीदार का है इसे स्थलपुराण में जयन्तीपुर कहा गया है। मेरे

गुरु रावसाहिब जी० बी० राममृति पन्तलु गर, बी० ए० ने कितने वर्ष हुए तब इस ही प्राम को फलिङ्गनगर बतलाया था जिसको उल्लेख कलिङ्ग के पूर्वी गङ्गशंशीय राजाओं के तामुपत्रों और शिला-लेखों में आया है। इस स्थान पर एक मधुकेश्वर का मन्दिर है। परन्तु मधुकेश्वर गङ्गवांशीय राजा-ऑके आराध्यदेव नहीं थे वे महेन्द्र के गोकर्णेश्वर के अटल भक्त थे। इसलिए प्रत्यक्षतः यह मधुकेश्वर और जयंतीपुर कदंबवंश द्वारा निर्मित हुए थे जिनको गक्कराज्य ने परास्त अवश्य किया होगा। मधुलिङ्ग अपने बिगडे रूप 'मोहोलिको' के रूप में आज भी उस प्रदेश के उड़िया लोगों में व्यक्तिगत नामों में ब्यवहत होता मिलता है। गन्जम जिले के चिका-कोल के निकट अवस्थित श्रीकुरमम् नामक प्राम में एक तेन्द्रपू वाह्मणों का वंश जो 'जयन्ती' कह-लाते हैं बहुत दिनों पहिले आ बसा था। यह बा-स्तव में जयन्तीपुर (मुखलिङ्गम्) से आये हींगे जब वह कमम्ब वंश की राजगद्दी थी।

--कमशः।

श्राख़िरी हसरत।

डन्क-ए-इंच बजा, बात सम्हाली न गई !
दम में बेदम किए,आई फ़ना(१) टाली न गई !!
हो रहीं हैफ़ (२) जनाज़े पै,हसरतें दिल की ।
जीते जी हाय ! तमका, भी निकाली न गई !!
जो यगानं(३) थेबड़े, डनकी हसाई देखो ।
बाद मरने के मेरे, ख़ाक भी डाली न गई !!

मुक्त को मिट्टी में, मिलाने को आग घरपा की ।

और शहकीक की, कुछ चोट तो खाली न गई।!

इस तमाशे में अलाते हो, क्यों अपने को रामः।

उम्र बरवाद हुई, खाम खायाली न गई॥

—मारतीय

सम्पादकीय-ांटेप्पिशायां

वीर भक्त और जमाने की मांग

वर्तमान विद्युतवेग से बहता चला जारहा है। बह अपना युगकालीन पर्य्यटन करीब २ पूर्ण ही कर चुका है। उसका अन्त निकट है। उसके पैर लडखडा गये हैं। वह जर्जर कन्दरा-अज्ञात अनन्त अन्धकार की कन्दरा की कार पर अपक्रपाते री खड़ा है। जरा ठोकर खाई कि अरर धम! उधर भविष्य का सुखमय जगत्-आशामय उन्नत पथ-भीर 'वसुधेव कुटुम्बकम्" की आत्म-सभ्यता अभी भी भविष्य के ही गर्भ में है। परन्तु गर्भ में से ही उसके शुभलक्षण हमको दीख रहे हैं। संसार वर्त-मान के ढड़ और वर्तमान की सभ्यता में उकता चला है। वह एक अब से उत्तम-आदर्श समय को ला रखने के प्रयत्नों में कुछ २ संलग्न है। परन्त अभी अच्छी तरह नहीं ! पाप का घडा सब ओर और सब ठीर भरकर फूटा नहीं है। परन्तु वह फूटेगा और अवश्य फूटेगा। यही कारण है कि संसार के लोग एक दूसरे के मन्तन्यों और विचान का भादर करने छगे हैं। परन्तु अभी साफ दिल

से नहीं। बीसवीं शताब्दी की 'डिप्लोमसी'-चुडैल अभी वहां अपना अहा अमाए हुए है। जब वह वहां से हटेगी तब ही सुअपूर्ण-उम्नतप्य की ओर संसार पग बद्दा सकेगा।

भारत में भी म० गान्धी के स्तृत्य सदुप्रयत्नी से वैसे ही वातावरण उत्पन्न करने का श्रीगणेश होचुका है, परन्त नेताओं में चरित्रदृढता, प्रणपरा-यणता और स्वच्छहृदयता की कमी अभी तक उसे फलने फूलने नहीं देती। जातियों में परस्पर एक दूसरे पर विश्वास और प्रेम न रखने का अभाव कोरे धर्मढौंग के नाम पर खुन की नदियां बहवाता है और दुःखी प्रजा के दुःखभार को स्वयं बढवाता है। तिस पर हम जैन जाति पर दृष्टि डालते हैं तो आजकल का पैशाची प्रभाव उसे ही सबसे अधिक निगले हुए मिलता है। धैसे तो भारत की वर्तमान परिस्थित ने भाई भाई और पिता-पुत्र को एक दूसरे का वैरी बना रक्खा है एक तरह यह व्यक्ति-गत बात उपेक्षित भी हो सकती है परन्त एक ही भर्म के माननेवालों की-एक ही आदर्श पुरुष की उपासना करनेवालों की आपसी लडाई कभी देखी

सुनी नहीं गई है। इस पर यदि विदेशी शासक भी आरवर्य करें तो काई आइवर्य नहीं! आज के स्वार्थी बनानेवाले दरिद्वतापूर्ण अधर्ममय बातावरण ने बड़े बड़े दिगाज विद्वानों और धीमानों के दिमागों को चकरा दिया है। धर्मभाव आज कहीं भी दिखाई नहीं देता! सर्चाई का कहीं पता नहीं चलता! यदि कुछ शेव है तो मान-मरसर-ईर्घ्या-द्वेष ! जिन के फलस्वरूप विषेले फल चहुं शोर उगरहे हैं। बड़े विद्वान हैं तो वाक्पटुता में अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित कर वितण्डाबाद खड़ा करदेंगे! और अपने से अधिक चरित्रवान्,विहान् और पूज्य पद्यारी के प्रति अपराब्दों का व्यवहार करते नहीं हिचकिनायंगे। धनकान हैं तो खुशामदी-मुँहलगों की चापलूसी में धर्म के भूठे नाम पर रुपया दे डालंगे-किर नहीं देखेंगे उन रुपयों का हुआ क्या ? बस फिर एकमात्र अपनी बिलासितापूर्ति में-सामाजिक नियम तोडने में छा। जायंगे ! यह अधेर समाज को मुद्दां बना रहा है! अपसी प्रतिरुपदा में शक्ति का नाश व्यर्थ हो रहा है! शरीर में घुन लगा है-उसका इलाज भी समक्त में आता है-परन्तु अपने मान की आन में उसका विरोध करना ही लाजमी होजाता है! सत्ता का किप्सा-शासकपने की लालसा अपना ही प्रा-बस्य सर्वत्र देवना चात्ती है। अंब्रेजी पढे छिखे सनमानिक कार्यों में पड़ें ही नहीं! सामाजिक कार्यों में केवल एकाङ्गप्रधान रहे यह हो नहीं सकता ! सोती हुई समाज को जगाने, सबसे पहिले अंग्रेजी-संस्कृत-मिष्क ही आए थे। तिस पर जमाना बद्रक गया ! प्राप का घड़ा करीब २ भर गया ! फूटने की देरी है ! सँमाहिये और समय की मांग को देखिये। जमाना नह रहा है गला पाड २ कर-

'डिप्लोमसी का अन्त करदो सबाई को अपनालो और भाई२ को गले लगालो।'

जमाने की इस माँग पर ध्यान देना हमारे लिप लाजमी है। जीवन रखना है तो उसकी पूर्ति कोजिए वरन् मृत्यु मुंह बार सम्मुख है। साम्म दायिक भेद आपसी द्वेषाग्नि के कारण न होना चाहिए। तीथीं के नाम पर शक्ति का दुरुप-योग करना दिगंम्बर और श्वेताम्तरों को नहीं शामता, जब कि विधर्मी हमारे धर्म पर खुला आक्रमण कर रहे हैं। आक्रमक हैं ऐसे महोदय जिन के हाथों में भारत का भविष्य है। उदाहरण क्रुप में लाला लाजपतराय का कारगुज़री आँखी अगाडी है। हमारे धर्म के प्रति अन्याय किया-उस को विमोचन करने के लिए कहा गया तो ध्यान देना पाप समभा गया ! तिसपर उन्हीं का वही मिथ्या इतिहास ओज राष्ट्र की भावी सन्तति को पढाया जायगा । अतएव इस तरह जैन धर्म के प्रति घुणा के वीज बोए जाने वाले हैं। उधर मास्र-बीय जी के कार्य भी भुलाए नहीं जा सकते। हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापनासमय जैनियों को हजारी तरह के आध्वासम दिए परन्तु आज तक न वहाँ जैन मंदिर बना और न उच्च कोटि की जैन पुस्तकों ही कोर्स में रक्खी गई ! इस में उदासीनता जैनियों की भी है। रुपए देकर उसके सदुपयोग कराने की ओर उनका ध्यान ही नहीं है! कहिए ऐसी दशा में आपस में लडना हमारा कहाँ तक ठीक है ? वह लड़ना नहीं है-अपने आप अपने पैरी कुल्हाड़ी मारना है! याद रिखये हमारी ऐसी निर्बल दशा में हमारी अवहेलना सब ठीर होगी। हमारे धर्म के विषय में भिथ्या बातें वतलाने वाले

सैकड़ों सत्यार्थ प्रकाश रहेंगे, हजारों हिन्दू सभावें रहेंगी। कोई भी सहायक नहीं होगा। हमारी अलं-गठित दशा के कारच ही राज्य, राष्ट्र और, नेता हमारी उपेक्षा करते हैं। बो हिन्दू महासभा सर्व आर्य जातियाँ को ऐक्पतासूत्र में लाने का दम भरती है वह ही जैनियों के प्रति हिन्दुओं हारा अत्याचार किए जाने पर शोक प्रकट करमो रापनी शान के खिलाफ समभती है। किस को नहीं मालूम कि हिन्दूगण कभी २ किस मकार जैनरथ यात्राओं के निकलने में बाधा डालते हैं। किन्त बास्तव में यह अत्याचार फर्याद करने से मिट नहीं सकते ! इनका अन्त करने को हमें अपने।पैरों खडा होना चाहिए। दिगंबर-श्वेताम्बर-और स्थानक वासियों को पेक्यसूत्र में बंधकर इस समस्या को हल करना चाहिए। आपसी लड़ाई का।।काला मु'ह करने में ही भलाई है। सोचिये समिक्षए!

स्वयं दिगम्बर जैन समाज में आज दलवन्दी को दलदल गहरी सन रही है। अवस्थाप्राप्त समाज झाज उस के मध्य असाह्य अकाल कवलित हो रहा है! क्या इस पर भी हम को दया नहीं है? आपसी वाक्-वाण वर्षा क्या पेसी दशा में भी वन्द नहीं की जा सकी? सच बात तो यूं है कि जब सक सचाई के साथ पक दूसरे पर विश्वास नहीं किया जायगा तबतक यह दखदल बनी ही रहेगी।

इमारे धनी सेठ लोग जब तक केवल दर्शक ही बने रह कर अपना बढ़प्पन रक्लोंगे तब तक समाज का कल्यांगा नहीं होगा । इस समय यही एक अंग ऐसा है जो हमारी उलभी सुलभन को सुलभा सक्ता है। यो फिर हमारा भरोसा-मरते वक खुन के आंखु बहाती हुई दिग-म्बर-धर्म-रूप माता की दक्षदकी हमारे सब्धनी पर है। प्यारे नवयुवकों ! यदि सच्चे धीरभक्त हो तो सच्चाई से कार्य करने को मैदान में आजाइए। और मरती हुई माता की रक्षा की शिए ! नहीं तो कुलनाश का टीका अपने माथे पर सगवाहये! आइए! कर्तव्य की मांग को पूरी कीजिए! धोर विरोध का सामना की जिए तो भी सत्यपथ से विचलित न होइए! परिषद का बर्धा अधिवेशन निकट है। उस के लिए योग्य सभापति चुनिये। और अपने कार्यक्रम को निश्चित कीजिये ! गत इटोवा अधिवेशन में परिषद् ने मरती हुई अव्व-संख्यक जातियों की रक्षा के लिए ऐसी जातियों की परस्पर रोटी बेटी संबंध खोख लेने की क्रय-स्था ही है। अब आप का फर्ज़ है कि आप इसे कार्यरूप में परिणति करावें। और मरती हुई काति को बचार्वे ! अपनी रक्षा करें और अपना शीस बन्देवीरम् उम्नत रक्कें। —उ० सं०

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! सस्ती !! वृद्धिया !!! हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रधाना की जाती हैं। नावश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

भार० एस•जैन एएड ब्रादर्स, महाबीर भवन, विजनीर

नवयुवकों से निवेदन

उत्थान की डोर आप के हाथ में है।
उठो! समय आपकी प्रतीक्षा करते करते आज
स्वयं सन्मुख आकर पुकार रहा है, महाचीर प्रभु के
अनन्य भको! उठो! अधिक विश्राम ले चुके!
अब इस सुख शैय्या का परित्यागन कर दो, और
कर्तव्य क्षेत्र में आवो यह समय तुम्हारे सुख स्वम
देखने का नहीं है, किंतु धर्मश्लेत्र में अपसर बढ़
कर अपनी कर्तव्य शीलता और साहस की परीक्षा
देने का है। बीर अकलंक की सदृश साहसी सैनिक
की तरह, धर्म की पताका को दृढ़ता से सम्य
जगत के संमुख उच्चाकाश में फहराओ।

सच्चे अहिंसक बन कर, पूर्ण सत्यवती बन कर शमा और प्रेम के अमोघ शस्त्र [धारण कर साहस का दूढ़ कवच पहिन कर, धर्मोत्थान हेतु जीवन संप्राम में विजय प्राप्त करने के लिए कटि-वह होजाओ। एक बार पुनः "वन्दे वीरम्" के दिव्य नाद से भारत वहुन्धरा को प्रतिध्वनित कर दो।

मित्रो ! शरीर नश्तर है, लक्षमी चंचला है और मानव जन्म तुष्पाय है, फिर मी क्या विचार रहे हो । अमूल्य समय अभी आप के हाथ में है, उठी खड़े हो जाओ । स्वजाति धर्मोत्यान हेतु कर्महेन्न में उतर पड़ो, हिचको मत । स्वार्थ वासनायें त्यागनी पड़ेंगी, और सुख छोड़ना पड़ेगा । छोड़ हो, विस्मरण करदो तुम्हारे आत्मबल के घातक तुम्हारे उन्नति मार्ग के कंटक हैं इन्हें कुचल डालो ।

"वत्सल'

महिला महिमा

एक महिला गवर्नर प्रमेरिका के न्यूयार्क और केन्सस प्रान्त की गवर्नर श्रीमती फर्ग्युसन नामक एक महिला नियुक्त हुई है। श्रीमती फर्ग्यूसन संसार में सबसे प्रथम महिलाई जिनके हाथ में गवर्नरी जैसे कड़े पढ़ को बौंपा गया है। वहाँ की स्थियाँ बड़े २

कार्य करती।रहतीहैं, और उनमें सचमुच कार्य करने की शक्ति बहुत ही अधिक है, यही कारण हैं कि पश्चिम की दिन दिन उद्यति होशी आरही है। देश की उन्नति में स्त्रियां का यहत हुछ हाथ होता है, इसीलिये सभी उन्नत देशों में स्त्री शिक्षा पर बहुत ही अधिक ज़ोर दिया काता है, और उन की शक्ति कौर प्रतिमा को विकसित करने के लिये हर प्रकार का यह किया जाताहै परन्तु इस अमागे भारतवर्ष की स्त्रियाँ सिवा घरों में बन्द रहने के और कोई कार्य ही नहीं कर सकतीं बड़े २ कार्यों की तो बात ही क्या छोटे २ काम भी उन से सम्पन्न होते नहीं देखे जाते। यद्यपि हिन्दुस्थान की स्त्रियों में भी अव जागृति उत्पन्न होगई है परन्तु जैसी चाहिये वैसी उन्नति उन की अभी नहीं हो रहीहै। यद्यपि थोरोप की खियों में अनेक दोष हैं, परन्तु गुण भी उन में बहुत से हैं, जिन को हमारी चहिनों को प्रहण करना चाहिये। हमें पूरा २ विश्वास है कि हमारी बहिनें अब संसार में किसी से पीछे न रहेंगी और दुनिया को अपनी शक्ति और प्रतिमा से चिकत कर देंगी।

हम अमेरिका की सरकार का धन्यवाद देते हैं और श्रीमती फर्ग्यू सन को इस उच्चपद की शांति के लिये बधाई देते हैं।

आर्य जगत से

पाक शास्त्र हत्त्वा की तरकीब

भगर हलुवा बनानाहों तो एक पाव घी कड़ाहीं में छोड़ कर वादको एक पाव रवा भी उसी में छोड़ दो जब रवा पक कर लाल हो जावे तो एक पाव पानी में दो पाव शकर मिला कर कढ़ाही में छोड़ दो। घीरे २ करछी से चलाते रही जब एक जाये तब उतार लो।

द्भ का ब्रा

जंगली अक्जीर को दातेन की तरह पतली २ काट डालो और फिर १५ या २० की कूची सी बनालो मगर लकड़ी सूलने न पाये । २ सेर दूध को कढ़ाही में चढ़ा दो और उसी बनाई हुई कूची से चलाते रहो जब दूध का रवा खिल जाये तब उतार लो वहीं बूरा होगा।

आर्य जगत से

साहित्य-सुमनसंचय

विदेश में जैनधर्म

दिसम्बर मासके अंग्रेजी 'मार्डनरिव्यू' में जर्मन विद्रानों के विद्यत्परिषद् का विवरण देते हुए प्रसिद्ध विद्वान् डा० विन्टरनिज साहब लिखते हैं:-

"इस परिषद् में एक मनोरंजक निवन्य मि॰ एच. बान म्बीसनेप्प (H. Von Glasenapp) ने 'भारतीय धर्मों के इतिहास में जैनधर्म का स्थान और अन्य धर्मों से जैनधर्म का सरखन्ध' विषयत पढ़ा था। यविष जैन धर्म वेदविषयीत धर्म (Heterodox) है, क्योंकि वह देदी की मान्यता और श्राह्मणों के प्रभुत्व की श्रह्मीकार करता है और ययिष उसके सिद्धानत हिन्दू दर्शनों के नितांत विभिन्न हैं तो भी उस पर हिन्दू वर्म का खासा प्रभाव पड़ा है। जास कर उसकी धार्भिक क्रियाओं और सामाजिक संस्थाओं पर सूपरी और जेनसभाव हिंदुकों की विविध शासाओं को

मान्यताओं में विशेषकप से मिलता है। ग्लेसनेप्प साहव ने यह भी बतलाया कि जैनधर्म और बीड्रधर्म में समान क्या २ है धौर वनमें भापसी विशेष किन बातों में-खासकर 'भारम-कर,' वें कैसा है। इकबाम और जैनधर्म का पर#गर प्रभाव एक दूसरे के शिक्प पर पड़ा है। बानकब जैनधर्म ने ईसाई भने के प्रभावानुकप मिशनरी टक्न से उपदेशकी का कार्य प्रदेश किया है। इस पर जो विवाद खिड़ गया तो उसमें वेर्तमान केम स (टा॰ विस्टर निज) ने गतवर्ष अपने नेवों से देखे हुए स्व० श्राचार्य विमयधर्मस्ति के स्मार्क में समारं हित प्रतिष्ठा वियानका विवरण सर्वसमच उपस्थित। किया, निसमें कि सर्व सम्बदाओं के हिंदुओं ने नो निशेष भाग जिया था। जिस सहानुभृति से माह्मण और हिंदू सामुझी तथा शिवपुरी (ग्वाधनर) की समय प्रजैन जनता ने स्त्र० जैनसाय की पित्र रुम्ति मनाई थी वह उन्नती श्री अपूर्व थी जितनी कि जैन और दिंदू पार्निक किएकों (जैसे कारती) की समा-नता है। घोठ में डर (Prof. Schrader) ने कहा कि ऐली सहानुभृति बैनियो और इन शैंनां में नहीं थी, जो मांसाभितः यज्ञ दोमते थे ।"

जैनधर्म के अतिरिक हिन्दुओं के महाभारत, बौद्धधर्म और उसके साहित्य अदि के सम्पन्ध में भी विशिष्ट विद्वानों ने अपने मूल्यमय विचार प्रकट किये थे। प्रो॰ भेंडर ने संस्कृत पर द्वाविड़ भाषा का प्रभाव पड़ा व्यक्त किया तथा भारत के संबन्ध में अंतिम निबन्ध हारा प्रो॰ एक्स ने भारतीय दर्शनों में केवल चार्शक को नाहितक प्रमाणित किया। उनको दृष्टि में बौद और सांक्य दर्शन नाहितकता की गर्त में नहीं पटके जा सकते। जैनधर्म के संबंध में जो उपरोक्त बातें प्रकट की गई हैं वह महत्त्वपूर्ण और बिद्धारणीय हैं। उपदेशकी का भिशनरी हम प्राव्हित की सिशनरी हम

जिस समय तक जैनम्नियों की बाहुत्यता रही थी. क्योंकि जैनमूनि केवल वर्षामृत के बार मासों को छोड़ कर शेप के मासों में सर्वत्र विचरते और उप-देश देते रहते हैं। वस्तृतः जर्मनी के विद्वानी का तुलनात्मक शास्त्रीय अन्वेषणप्रेम सर्वथा सराह-नीय और अनुकरणीय है। जैनियों में हमें कोई भी पेसा विद्वान् दृष्टिगोचर नहीं होता जो इस प्रकार तुलनात्मक शास्त्रीय खांज में संलग्न हो। हां, यदि हम इस विषय में किञ्चित् गर्व कर सकते हैं तो अपने मान्य सभापति श्रीमान् चम्पतराय जी के ही सत्हत्यों में कर सकते हैं। परन्तु इतने जैन विद्या-लयों के वर्षों प्रयत्न करने के फलस्वरूप कोई भी ऐसा घुरंधर विद्वान नहीं दीखता! इसका हमें खेद है अत्यव आवश्यकता है कि अब विद्यालयों को सामयिक आवश्यकानुसार विद्वान् उत्पन्न करने योग्य बना देना चाहिये। और यह तब ही हो सकेगा जय एक जैन विश्वविद्यालय स्थापित किया जा सके। जैनधर्म को वास्तविक ।प्रभावना प्रकट करने से लिये विद्वानी, धीमानी और जाति नेताओं को ध्यान देना चाहिये और इस कमी को मेट देना चाहिये जो आज दिसाई पड़ रही है कि ''जैनियों में ऐसे विद्वानों का प्रायः अभाव ही 🖁 जिन को संसार विद्वान कह सके।"

इस पत्र के इस ही अह के एक प्राचीन भार-तीय सभ्यता सम्बन्धी लेख में पंजाब के हरप्पा और सिंघ के मोहिन-जो-डेरो नामक स्थानों से प्राप्त प्राचीन वस्तुओं के तुलनारमक अध्ययन से यह प्रमाणित किया गया है कि ईसा से २००० वर्ष पहिले आजकल की तुनियां में क़रीब एक सी ही सभ्यता और घर्म थे, जो सम्भवतः द्वाविष्ट लोगों के समान थे।

भारतीय कपड़े का व्यापार केंसे नष्ट हुआ ?

'मारवाड़ी अप्रवाल' इस विषय पर लिखता है:-"यह पूर्ण रूप से साबित किया जा सकता है कि मारतवर्ष के प्रारम्भ में अर्थात् आज से तीन हजार वर्ष पूर्व कातने और बुनने की कर्लो का प्रार्दु भाव हुआ था । सिकन्दर बादशाह के जुमाने में विदेशियों ने भारतवासियों को अच्छे से अच्छे स्ती कपड़ों को पहमते देखा था। और उनकी प्रशंसा भी की थी। डाक्टर टेलर ने सन् १८४६ में मलमल का एक थान २० गज लस्बा और सवा गज चौड़ा देखा था वह बजनमें ७ ताले का था ! उन्हीं डाक्टर महाशय ने ऐसा बारीक स्त देखा था जो १३४६ गज लम्बा पर बजन में सिर्फ २२ प्रेन का था। यह सूत आजकल के जमाने के ५२४ नम्बर सुत के बराबर का होता है। क्रीव २०० वर्ष पूर्व यानी सतरहघीं शताब्द में ईस्ट इन्डिया और डच्च फम्पनियाँ लाखीं रुपयी को कपड़ा हिन्दुस्थान से ले जाया करतीं थीं। और योख्य का बाजार हिन्दुस्तान के कपड़ सं

हरा भरा रहता था।उन्हें अपना स्वदेशा वस्त्र पसन्द नहीं होता था । इस्र क्रिप बहां के कारीगर वेकार होते जाते थे। अपना सत्यानाश और भारत का उन्नति होती देखकर अपनी सर-कार के कानों तक पुकार पहुंचाई । सन् १,७०० में इङ्गर्लेंड के तीसरे बादशाह सर विलियम ने काले कान्त [Acts 11 and 12 of williom vii cop 10 (1700)] द्वारा भारतीय बस्न को अपने देश में जाने से रोक दिया। वहाँ की सरकार ने पेसा हुक्म जारी कर दिया कि जो स्त्री पुरुष भारतीय यस्त्र वेचेंगे वा व्यवहार करेंगे उन से २०० पाउण्ड यानी ३००० रुपये जुर्माना लिया जावेगा । इस तरह अन्यदेशों ने भी कामून बनाकर भारतीय वस्त्र का आना बन्द कर दिया। """ बाद में कोयले और पानी के संयोग से वाष्प द्वारा इञ्जिन चलने लगे और इन्हीं इञ्जिनों से फरधे भी चलने लगे। बस फिर क्या था लंकाशायर का भाग्य चमक उठा। """कल हारो बनाई हुई सस्ती वस्तु पर हिन्दुस्तान लट्टू हो गया। किसी जमाने में जिसका व्यापार उन्नति की शिबिर पर चढ़ा हुआ था, वह आज धूल में छोटने लगा ! "

साहित्य समालोचना

तारदर्परा—लेखक व प्रकाशक रामस्वरूप जी बीसाऊ (जयपुर) पृष्ठ ६४ मूल्य ।),यह पुस्तक की चतुर्था हित है। पुस्तक का लोक प्रिय होने का कारण उस में व्यापारियों के मतलब की अधि- कांश बालों का होना है। अं प्रेजी अभिन्न व्यापा-रिखों के लिए पुस्तक उपयोगी है।

हन्मान चरित्र नौविल भूमिका—छे॰ घ प्र॰ वाब् विहारी लाल जी मास्टर वारावंकी । प्र॰ ६२ म्०९। इस छोटी सी पुस्तक में बानर वंश का संक्षित वर्णन है। जो लोग हन्मान जी आदि वानरवंशियों को बानर (वन्दर) के सदृश सममते हैं उन्हें इस छोटी सी पुस्तक द्वारा अपने भ्रम को दूर कर लेना चाहिए । पुस्तक बानर वंशी राज्यों की विशलता का अवलोकन अच्छी तरह कराती है।

मिध्यात नाशक नाटकभाग तीन(उर्दू)—
लेखक पं॰ ऋषभदास की प्रकाशक उक्त महोदय।
सू॰ ॥॰ । प्रति। करीब २०० से अधिक पृष्ठों की
पुस्तक में लेखक ने उर्दू भाषा भाषी जनता को
बिविध धर्मों के मन्तव्यों की औष्वत्यता का
दिग्दर्शन माटक के ढंग से कराया है। नाटक मनोरंजक है। जिस प्रकार आजकल सरकारी अदालतों में कार्रवाई मुकदमात मुकदमों का ढंग भी
मालम हो जाता है। पुस्तक प्रत्येक उर्दूदां को
पदनी चाहिए।

चतुर्विशति जिन पंचकन्याणक पाठ— कविवर बृन्दावन की कत । प्रकाशक उक्त महोदय पृष्ठ म् मृल्य ॥ १०) यह कविवर वृन्दावन की मनोहरी कविता में जिनेन्द्र भगवान की १२१ प्रकाशों का संमह है । छपाई सफ़ाई अच्छी है। इसका सम्पादन उत्तमता के साथ किया गया है। साथ में कविवर का संक्षिप्त जीवन और श्री तीर्थंकरों के शुभ कल्याणकों का क्रम से नक्षत्र सहित शुद्ध तिथि कोष्ट भी दे दिया है। अथन्य लिखत जिनेन्द्रस्तुति भी दी है। किववर की नैस-गिंक किवता कितनी प्रभावशास्त्री है यह निम्न पद्य से ही अन्दाजी जा सकी है:—

"नर नारक आदिक जीन निषे, विषयातुर होय तहां चरभी है। निहं पावत है सुख रञ्च तऊ, परपंच परंचिन में मुरभी है।। जिन नायक सों हित प्रीति बिना, चित चितित आश कहाँ सुरभी है। जिय दोखत क्यों न विचार हिये, "कहुं श्रोस की बूंद से प्यास सुभी हैं"।।

इस पाठ का प्रचार जैन समाज में काक़ी है। प्रत्येक पाठक को इसको मंगाकर जिनेन्द्र प्रभू की भक्ति से अपना हृदय रंजायमान करना चाहिये।

अग्रवाल इतिहास—लेखक व प्रकाशक उक्त महोदय। एष्ठ २४। मूल्य हो। इस में अग्रवालों की उत्पत्ति और उनका आज तक का इतिहास अच्छी तरह दिया हुआ है। परन्तु लेखफ ने अपने विवरण की पुष्टि में कोई आधार नहीं दिए हैं जो प्रमाणभूत समभे जाते तो भी अग्रवाल जाति का पूर्ण परिचय इससे प्राप्त है। पृष्ट ६ पर मिश्र देश का राजा कुक्वविन्दु जैन धर्मी वतलाया गया है। पेतिहासिक पुस्तकों में प्रत्येक व्याख्या की पुष्टि में प्रमाण अवश्य होना चाहिए।

ज्ञानेन्दु — सं॰ ला॰ विश्वस्भर दास जैन । प्रकाशक ला॰ गुरुपसाद अप्रवाल, दिल्ली । मू॰ ।) इस में तीर्थंकर भगवान की स्तुति तथा उद्योगी विषयी पर भजन दिए हुए हैं। भक्तजन मंगाकर साम उठा सके हैं।

शानित— मासिकपत्र सहारनपुर शानित मेस से प्रकट होता है। संम्पादक भीयुत शीतल-प्रसाद विद्यार्थी हैं। बा॰ मूल्य १) है। हिन्दी साहि-स्य सेवा के उद्देश्य से 'शान्ति' कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हो अपने इष्टपधमें अप्रसर हैं। हम इस की उन्नति के इच्छक हैं।

मारवाही अग्रवाल— यह सिवित्र सुन्द्र मासिक पत्र अ० मा० मारवाड़ी अप्रवाल महसभा का मुखपत्र है। आकार उवलकाउन। वार्षिक मू० है। सम्पादक श्री तुलसीराम जी सरावणी। इसका तृतीय वर्ष का १२ वां अंक इमारे समझहै। महत्व पूर्ण सामाजिक और व्यापारिक लेख तथा मनोहर कवितापें हैं। मारवाड़ी अश्रवाल व्यापार प्रधान जाति है उस ही को लक्ष्यकर इस में व्यापार संबंधी विशेष लेख रहते है। इस हेतु व्यापारियों के मतलब का भी यह एत्र है। इस होतु व्यापारियों के मतलब का भी यह एत्र है। इस सहयोगी की पूर्ण उन्तित में इच्छुक हैं।

व्यापार समाचार

—गेंहू की फसल सन १६२३-२४ की समस्त भारत के गेई की फसल की अन्तिम रिपोर्ट से शात होता है कि समस्त देश में ३११७८००० एकड़ भूमि में गेई की खेती की गई जिस में, उपज अन्दाज ६७५६००० टन हुई। गत वर्ष ६६८२००० टन गेई उत्पन्न हुआ। इस हिसाब से इस वर्ष २ प्रति सैकड़ा गेहूं कम उत्पन्न हुआ है सन् १६२४ के अप्रैल मई और जून के महीनों में गेईंशिवाहर से ३००० टन काया और रफतनी हो गई

—विदेशों में गेहूं सब १६२५ की अमेरिका की फसल अन्दाज १६=२२०००दन होनेका अन्दाज किया जाताहै। गतवर्ष वहीं २१०४९१०० मन् गेष्ट उत्पन्न हुए थे। कनाड़ा की सन् १६२४ की गेह्नकी फसल ७५५५००० टन अन्दाज की जातीहै। आस्ट्रे-लिया की ३३७०००० टन होगी। इस में २० लाख टन माल विदेशी भेजा जासकेगा। अर्जे न्टायनकी यही फसल ६६१५००० टन की होगी। वहाँ ग्राम्नी को तैयारमाल १७०३००० टन गतजून मास में था।

—जापान में नया टैनस विलायत, अमे-रिका, भारत आदि विदेशों से जापानमें जानेवाले विलायत की घीजों पर १०० पर्सेन्ट चुंगी बैठाई गई है। इससे विलायत में खलबल है।

—चान्दी का फ्रोट मभी दाल दी में उन्तन दो।भारतः भाने के लिए जान्दी का ओड़ आ क्रोंन्ड से बराकर १॥ पर्सेन्ट कर दिया गया है। लन्दन भी यक पर्सेन्ट से घटाकर पौन पर्सेन्ट कर दिया होकर अमरिका से जो चाँदी आती है उसका फेंट

मारवाड़ी अप्रवाल गया है।

जैन-साहित्य



निसको अपने साहित्य से. तनिक नहीं भी प्रेम है ! कब उसका इस संसार में, हो सकता कुछ चेम है ?

विचिको ! जैनसाहित्य के महत्त्व पर अनेक बार अनेक दिद्वानों ने सामयिक पत्रों में विवे-चना की है, जिससे स्पष्ट है कि अन्य धर्मावल-ब्रिक्टों के साहित्य की अपेक्षा जैनियों का उपलब्ध काहित्य भी कुछ कम और महत्त्वहीन नहीं है। आवयश्कता केवल उसको प्रकाश में लाने की है।

जैनसाहित्य-सेवियों की ओर दृष्टिपात करने से मालम होता है कि वे पाण्डवों की संस्था के बराबर भी नहीं हैं। पेसी दशा में हमारा साहित्या-भ्यदय कैसे हो सकता है ? इस समस्या का हल करने के लिये दो एक उपाय पाठकों की सेवा में उपस्थित किये जाते हैं:-

जैनसमाज २०, २५ वर्ष से कई हज़ार रुपया मासिक सहायता, भिन्न २ प्रान्तवासी विद्यालयों कों होनी हाथ देरहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब जैनियों के विद्वानों की संख्या तवर्गान्त तुल्य (नकारात्मक) थी बहु आज उँगलियों पर गिनने लायक होगई है। न्यायतीर्थ और काव्यतीर्थी की संख्या ५० के भीतर ही द्रप्टि आती है, संपूर्ण खण्डों में उन्होर्ण शास्त्रियों की संख्या भी इनसे अधिक न होगी। पूर्ण आचार्य तो अभी कोई हैं ही नहीं। हाँ पूज्य प० गणेशप्रसाद जी वर्णी, प० माणिक-चन्द्र जी ने न्यायाचार्य के ३, ४ खण्डी में अवश्य उन्नीर्णता प्राप्त की है। इन के अतिरिक्त ४, ५ अन्य सजनों ने भी २. १ आचार्य के खण्डों में उत्तीर्णता प्राप्त की है।

इघर जैन बोर्डिङ्गहाउस और दूसरे बोर्डिङ्ग और होस्टलों के B. A. M. A. आदि विद्यार्थियों ने कितनी संख्या कमाई है, यह हमारी गिनती में नहीं आसकी फिर भी २००, ३०० से ऊपर होगी।

इतनी संस्कृत और अंग्रेजी का प्रचार होने पर भी जैन साहित्य की यह दशा क्यों देखनेमें आवीदे। सच तो यह है कि:--

ख़्दा ने उस कीम की हालत नहीं बदली। जिसे नहीं क्याल अपनी हालत के बदलका ब हम समभते हैं कि हमने अभी तक अपने गहन साहित्य पर दृष्टि ही नहीं डाली। यदि इस के उत्थान के लिमे हम सचेष्ट रहते तो हम अपने को आज से बहुत आगे पाते।

किन्तु हम समभते हैं कि अब बहुत शीब ही जैन साहित्य अभ्युदय के शिखर पर होगा क्यों कि इस पर समाज ने अपना लक्ष्य देकर निम्न भाषाय के प्रस्ताव स्वीहत किये हैं:—

स्यादाद विद्यालय की प्रवन्ध कारिणी क्रमेटी से २-५-२४ को स्थीरुतः—

(१) शास्त्री या तीर्थ परीक्षा में उत्तीर्ण उन छात्रों को जो निम्न परीक्षाओं के पास करने की प्रतिक्षा करें:—

'क्योंस कालेज़ की न्याय, व्याकरण या साहित्य की पूर्ण आचार्य परीक्षा। वृत्ति १५)रु से ५०)रु मासिक तक योग्यता और स्थितिके अनुसार। इन छात्रों को साथ में अँ ब्रेज़ी साहित्य व धर्म विषय भी पढ़ कर परीक्षा में उन्होंण होना आवश्यकहोगा।

(२) प्रेज्जुण्ट, दितीय भाषा संस्कृत रखने वाले इस विद्यालय में रह कर न्याय में प्रमेयकमलमा-र्वण्ड और गोम्मटसार आदि में उत्तीर्ण होने की प्रतिका करें। इन को भी १५,से ५०)६० तक छात्र-वृत्ति मिलेगी। दूसरे 'मा० व० दि० जैन परिषद् ने शत ५-६ नवम्बर को निस्न लिखित प्रस्ताव का प्रासार किया है!—

"जैन विद्यार्थियों को चित्रेषक्व से हिन्दी स्महित्य समोलन को परीक्षाओं में सम्मिलित होना चाहिये और कवित्रचें को जैन समाज के धुरन्धर अतिमाशाली स्वनाओं के महस्त्र को सर्व साधारण अनता में प्रकट करना चाहिये।"

हमारी समभा में शत्येक ज्ञैन पत्र के सम्पादक

को इस का बड़ा भारी आन्दोलन करना चाहिये कि वर्तमान के समस्त विद्यालयोंमें 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की फरीक्षायें भी तीर्थ शास्त्री और अन्वार्क परीक्षाओं के समान अत्यावश्यक हैं।

'जैन मित्र' के २५वें वर्ष के १५ वें अङ्क में जैन साहित्य प्रचार' के लिये लिखा था, इस पर हमारे माननीय पाठकों का बहुत कम ध्यान गया है।

हम जैन पत्र सम्पादको विद्यालयों के कार्यं कर्ताओं और सनस्त विद्यार्थियों से नम्न निवेदन करमा चाहते हैं कि वे क्रेन साहित्य को अपना लक्ष्यविन्दु अवश्य बनावें।

'सम्मेलन' के परीक्षाधियों को पृथक छात्र वृत्ति देकर उत्साहित करना चाहिये। प्रत्येक विद्या-लय को 'सरक्वती' माधुरी' 'प्रमा' भारतमित्र' 'आज' 'कविकीमुदी आदि कम से कम २५, ५० साहित्य के सामयिक समाचार पत्र अवश्य मँगाने चाहियें और समाचार पत्रों का बाँचना विद्याधियों के लिये आवश्यक हो। ऐसा करने से ५० विद्याधियों में से २,४ विद्याधीं भी एक विद्या-लय में साहित्य की उद्याकाक्षाओं से परिच्लिक होंने तो भी शीव्र इस में समयानुकूल उन्नति हमारे साहित्य की हो सकती है।

संसार की समरस्थली पर कोई भी समा अ अपने साहित्य शख्य के बिना विजय प्राप्त नहीं कर सकता इस लिये जैन समाज में हिन्दी साहित्य समिति' की स्थापना परम आवश्यक है जिस के उहे ज्य 'जैन साहित्य' को सर्वाङ्ग सुन्दर पर्व सुद्धभ स्था सर्वमाननीय बनावे के हों।

> शेव किर कभी— —भारतेस्ट

भा० दि॰ जैन परिषद् श्रीर उसका द्वितीय वर्षाधिवेशन

यह घही परिषद है कि जो अब से दो वर्ष पूर्व देहली में प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर स्थापित हुई थी, इसकी स्थापना का कारण था भाव दिव जैन महासभा के प्लेटफार्म पर जातीय शुभवितकों और धर्मश्रेमियों को कार्य करने का सीभाग्य प्राप्त होना यह महासभा क्या थी-एक विता के अब पुत्रों की ओर से एक मिला जला फर्म जारी था, जिसमें सब पुत्र योग देते थे परन्त देवयोग से मत-भेद पैदा होगया अर्थात कुछ हिस्सेदार तो काम की उन्नति चाहते थे और कुछ ज्यों का त्या रखना चाहते थे। कुछ का विवार कागज की रक्षमी का भुगतान करके व्यापारको बढ़ाने का था और कुछ का कागज़ की रकमीं को कागज़ में ही छपेटे रखने का। इसलिये उन्नति के इच्छक भागीदारी को बड़ी दुरदर्शिता, गम्भीरता और विवेकपरता से काम लेकर और पुराने फर्म से जुदा होकर एक दुसरा नया फुर्म (भा० दि० जैन परिपदु) जारी करता पड़ा और उस पुराने फुर्म को उन्नति के क्षेत्र से काली कोसों दूर रहने वाले संकुचित हृदयी भाइयों के हाथों में उन्हीं की कहणाद्रष्टि के भरोसे छोड़ना पड़ा। परन्तु शोक! कि इन भोले भाइयों ने इस नये फर्म का विरोध ऐसी बुरी और भद्दी रीति से करना प्रारंभ किया कि जिस भाँति एक जवानजोर और ईर्वालू कुंजड़ी दूसरों के पके और मीठे फर्ली की निन्दा करके अपने कहा और खट्टो माडों के बेरों की प्रशंसा किया करती है और

प्राहकों को बहकाया करती है कि वहां न जाओ यहां आओ।

आजकल महासभा का मुखपत्र जैनगज़ट यही वुहाई देता हुआ दिखाई धेरहा है, यह कहता है कि दि॰ जैनसमाज सिवाय जैनमहासभा के न तां किसी इसरी सभा के प्रस्तायों को माने चाहे वे कितने ही लाभदायक क्यों न हों और न किसी दूसरी सभा को सहायता दे, चाहे वे सहायता की अधिकारी ही क्यों म हों। चाह चाह क्या ही निराला न्याय है और द्या बढिया समाज भेम है। इस परिषद् की बागडोर जातिनेता. समाज शुभचिन्तक, धर्मप्रेमी तीर्थमक, जिनवाणी प्रचारक श्रीमान् बा० चम्पत राय जी बार-पटला-हरदोई के पवित्र हाथों में है (आप इसके स्थायी सभापति हैं) आपसे तमाम जैन समाज परिचित है। इस परिषद् के अवतक दो अधिवेशन (एक अब्रेस सन् २४ में बार्षिक मुज़फ़्फ़रनगर और दूसरा नवम्बर सन् १६२४ में नैमिसिक इटावा) होचुके हैं अब तीसरा अधिवेशन दूसरे वार्षिकाधियेशन के रूप में माघ शुक्का ३-४-५ सं० १६=१ (ता० २३-२**=-२६ जनवरी सन् १६२५)** वर्धा C. P. में होना निश्चित हुआ है। यद्यपि दश महीने के भीतर तीन अधिवेशनों का होजाना बहुत ही ज्यादह है परन्तु समाज के उस सच्चे प्रेम को जो इस परिपद्द के साथ दर्शाया जारहा है भले प्रकार सिद्ध कर रहा है और पूर्ण आशा की जाती है कि दूरदर्शी समाज इस परिषद् को अपनायगी और लाभ उठायगी।

क्योंकि अधिवेशन का समय निकट आगया है इसलिये समाज की दुर्शा का दर्र खने वाले कर्म धीरों को अधिवेशन में सम्मिलित होकर समाजो-स्थान के उपाय सीचने चाहिये और उन उपायों को काम में लाकर समाज का पूर्णरूप से हित कर ना चाहिये।

> समाज का शुभचिन्तक-ज्योतिमसाद जैन सं० जैनमदीप, दंवयन्द ।

महिलोपयोगी विचारगीय प्रस्ताव

सारे संतार में यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि "जिनके जैसे बाप महतारी उनके वैसे लड़का" और भी कहा है "दीपो हि भस्यते ध्वान्तं कजल च प्रस्थते" अर्थात् दीपक अन्धकार का भक्षण करता है तो घड़ी अन्धकार उसमें सं निकलता है महानुभावो ! उसी कमानुसार आज हम प्रत्यत्र देखतीं हैं कि हमारी तथा हमारे पुष्ण समाज की अधोगति होरही है, यदि ऐसे ही विचार रहे तो दिन पर दिन पतित होने जायँगे, कारण समाज हमारे ऊपर विलक्कल ध्यान नहीं देती।

आज हमारी गर्वनमेन्द्र जो यहाँ से समुद्र पार बसती है वह तो हमारे लिये स्कूल और काणिज खोले और उसमें नशीन पद्धति अनुसार हमें कला फौशल सिखाने तथा मांजे बनाना, चिक्कन निका-लना, गुल्चन्द बुनमा सिखाने साथ में अनुचित कार्य भी सिखाने जैसे सी० पी॰ की कन्या पाठ-शालाओं में रामलीला का होना। यद्यपि विलासिता के लिये यह एक अच्छा सुअवसर है किन्तु जितनी हमारी शोवनीय दशा है उतनी ही ऐसे कारणों से पतितावस्था और तुरावस्था हो रही है, इससे बन्धुवर्गों! सबेत होजाओ। म्यूनिसिपिल स्कूल तुम्हारे हाथ में है और तुम काट के पुतला वर्ने देखते हो यह खेद की बात है. अस्यु।

अब मैं एक ऐसी घटना अपने पाठकी की सु-माना बाहती हूं जिससे समाज को चाहिये कि जो जो रिवाज समाज में दुखद है उन्हें निकालने की शोध ही कोशिश करें जिससे सच्चा रास्ता मिल जाय । आज एक घटना दमाह निवासी सन्जनों के सामने उपस्थित है जो विचारणीय है। एक महाशय साहपूर के रहने वाले हैं आप विवाहित स्त्रीं:से चार संतान भी उत्पन्न करचुके हैं तिस पर आपका कृत्य महिलासमाज के हितार्थ अति दुःखदाई हुआ है। भाग साहपुर की एक स्त्री की उड़ा लेगये थे जो कि दर्जा ४ पास है और इस समय सारं संसार का चकर लगा कर किर दसोह में रहते हैं इस श्रीमती के भी एक बालक है जो अभी ३ वर्ष का होगा। श्रीमती ने उनके साथ चलना पसंद करलिया था किन्तु श्रीमता का दर्भ पास हंते पर भी हमारी समात ने शास्त्र अध्ययन नहीं कराया था और गहने की स्वतन्त्रता का यहाँ सी० पी० में कहना दूर रहा सचमुत्र ह उकड़ी और बेड़ियां के सिवाय अङ्ग प्रयङ्ग सीधे होना उतना किटन है,जिता।

किंदिन एक काउइरे में बन्हें को एर हुला करण होता है। बस इसी धन के लोभ ने और घरके अकेले एन ने तथा शिक्षा के अभाव में और माता पिता के पति की परीक्षा न करने पर विवाह कर देने से यह कार्यों हुआ है।

यद्यपि में पुनः कहूंगी कि हमारी उस बहिन का दोष कुछ भी नहीं है, कारण उपरोक्त जितने कारण हैं वह सब हमारी समाज की ढील पोल के कारण है और हमारी परदा रखने से एक साधा-रण अवला को दूषण लगाने का कारण बना देना यह तो महान मूर्खता है। जैसे दक्षिणी महिलाओं में इसका प्रचार है कि जो पति विहीना हैं उन्हें शिर दकना और बाल न रखना उनके विध्यापन का रक्षक है उसी ककार। हमारे लिये शृहार में सुनहरी गहने और पान काना, परवे का रखना और सिर के केशों को सँभालना ही। बस यह प्रत्यंक है कि उपरोक्त घटना पर ध्याम रखकर परिषद्ध में की शिक्षा सम्बन्धी कार्य में लाने योग्य ऐसा प्रस्ताय पास किया जावे जिससे हमारी बहिनों का दुःख दूर हो और सम्याज में जागृति हो इसका होना तथ तक ही कठिन है जबतक समाज में कन्यायें न पहुँचेंगी।

विनीता-

जानकीवाई

लेखकों को पुरष्कार

भा० दि० जैन परिषद् अधिवेशन के समय वो स्वयंपरक उन सरजमों को दिये जायँगे कि जिनका निस्न विषयों में से फिसी एक पर लिखा हुआ होच भीर समस्याओं में से किसी एक पर रखी हुई कविता सर्वोत्तम प्रमाणित होंगी। परीक्षार्य एक फमेटा होगी। लेख च रचनाप ता० २० जन-बरी तक निस्न पते पर आ जाना चाहिये। लेख काम से कम १५ पृथ्ठों पर (फुलसकेप साइज) हो कौर कविता में कम से कम ११ लन्द हों।

विषय

- (१) जैन और जैनेतर कवियों का शान्ति और वैराग्य रस एवं उसकी महत्ता।
- (२) हिन्दो का उत्यति विकास ओर उस में

अनियों का भाग।

- (३) हिन्दी जैन साहित्य की विशेषताएँ और उसको सर्व प्रिय बनाने के उपाय ।
- (४) कविता की श्रेष्ठता और जैन कवि।
- (प्) नैसर्गिक प्रेम-भक्ति और जैन धर्म।

समस्यायें

- (१) बाँभ को पूत विना अंखियान कुट्ट निस्ति में ससि पूरन देख्यो।
- (२) घीर जिनचन्द सी नेह करौ नित।
- (३) ध्येय हो विभु आदेश पुनीत।
- (४) न हैं वे भीर महा हैं चीर।
- (५) जीवन सार है।

पताः—कामता ऋखाद जैन

उ० सं० वीर कसवन्तनगर(इटाबा)

संसार दिग्दर्शन

समाज

— निवारणीय प्रस्ताव-जैन समाज में जिस की कल्या ४ थी कलाश पास नहीं उस महाशय के लिये कुछ प्रायश्चित्त रक्खा जावे क्योंकि पढ़ाने का कार्य्य उनके माता पिता का ही है। पर माता विता कल्याओं को घर का ईन्धन समभा करते हैं सो उसकी महत्वता कुछ उनके हृद्य पर उप-रिधत है।

-- जानकी वाई

—-श्रीमाम् पूज्यवर जैनभर्मसूपण अ०
सीतलप्ताद जी का दमोह में शुभागमन और
दिगम्बर जैन कुटुम्ब सहायक फण्ड की स्थापना
और करीब ४०००) हजार का चन्दा इकट्टा होगया
है, आशा है अब हमारे असहाय भाई अपना मनोरथ
सफल कर मानव-जन्म सफल, करेंगे। साथ में उन
महानुभावों को भी कोटिशः, घन्यवाद है कि जिन्हों
ने अत्रक्षर होकर नामावली में अपना नाम लिखा
कर इस शुभ संस्था की स्थापना की है!

४००) बादू चन्नेलाल जी ४००) सेठ लालचन्द जी १००) सेड गुलाबचन्द जी २५०) दुलीचन्द भइयालाल

. बाकी फुटकर चन्दा हुआ है। उपरोक्त समा के सभापति भीमान् सालचन्द की है। सहायता देने वालों तथा केने बालों से प्रार्थना है कि वर्ड अपनी २ अर्जियां मन्त्री के नाम से मेर्जे । —एक समाज सेवी नमोह

-श्री जैन वाला निश्राम आरा के विचा-लव भवन का उद्घाटन ता० ११ दिसम्बर को चड़े समारोह के साथ हो गया।

प्रातःकाल म् बजे से हवन पूजन विधान
हुआ इस समय जैन व अजैन कितने ही उच्चपदाधिकारी गण्य मान्य लोग उपस्थित थे।

पूजन समाप्त होने पर मन्त्री महोदय श्रीमात्र बाद निर्मल कुमार जी ने रिपोर्ट व संस्था का उद्देश्य विधेय पढ़कर सुनाया तथा स्यानीब रईस चौधरी करामत हुसैन ने व चेयरमैन बाद् भगवती प्रसाद जी ने व अन्य कई महाशयों ने संस्था संचालकों को धन्यवाद दिया और हार्दिक प्रसन्तता प्रकट की।

पश्चात् श्रीमान् बाबू निर्मल कुमार जी की कोर से उपस्थित सन्जनों को प्रीतिभोजन कराया गया इसी विद्यालय के एक विशाल कमरे में छात्राओं का बनाया हुआ सामान रक्खा गया था जिस्रको देख कर सब लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए।

फिर मध्यान्ह समय स्त्री सभा हुई और वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुई छात्राओं को व कर्म-चारियों को पारितोषिक बांटा गया । विद्यालय के उद्द्याटन से अब यहां बहुत जगह हो गई है जिन मितिलाओं को विद्यालाम करना हो शीघ्र प्रार्थना एक भेत्र कर भरती हो जाना चाहिये। समर्थ असमर्थ दोनों तरह की छात्रायें ली जासकती हैं। —कृष्णा देवी, आरा

—शोकसप्राचार-आज १५।१२।२४,को भी आतमा नंद जैन सभा अम्बाला शहर के सभा सदों ने बंबई निवासी भी मोतीलाल मूल जी की भकाल मृत्यु पर शोक प्रगट करने के लिये एक मीटिंग करके निम्न लिबित प्रस्ताव पास किया:— "भी आतमानंद जैन सभा अंवाला शहर अपनी आज की मीटिंग द्वारा बंबई, निवासी जैनकुलभूषण, दान-वीर भीमान मान्यवर सेठ मोती लाल मूल जी जे० पी० की अकोल मृत्यु पर अपना होई के शोक प्रगट करती है और प्रार्थना करती है कि आप की अतमा को शांति मिले पर्व उन के परिवार से सहानुभूति प्रगट करती है।

—शोक समा गत ता० २०-११-२४ को रात्रि के द वजे कलक सा दिगम्बर जैन समाज की एक सभा श्री महावीर पुस्त नालय के भवन में सेठ हरी राम जी सरावयी के सभा पितत्व में स्वर्गीय सेठ द्याचन्द्र जी मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये हुई थी जिसमें सेठ जी के जीवन खित्र पर और उनके आदर्श कार्यों पर भाषण हुये और शोक प्रदर्शक एक प्रस्ताव सेठ जी के कुट्ट म्बीजनों के प्रति संवेदनार्थ भेजना निश्चय हुया।

- उद्यपुर में महासभा के समय करीब ५०००) का चन्दा समाज से इसलिये वस्ल किया था कि बाहर ब्रामों से गरीब बिद्यायीं बुला कर उन की हर प्रकार से सहायता करके निहान बनाया जाय। मगर इसकी पूर्ति ब्र॰ बांदमल जीनि की। अब यह ७०००) रुपया सेठ भीमचन्द जी टांडर मल जी उदयपुर के यहां जमा है जिस का १=) मासिक ंच्याज सेठ प्रो॰ मोती चन्द दि॰ जैन पाठशाला को देते हैं इस पाठशाला में माणकचन्द टूप्ट फंड से हर मास ५०) रुपया भाता है फिर १=) मासिक इसमें क्यों दिया जाता है जब एक पाठशाला थी तब तो मय मकान भाड़े के ५०) रु० में अच्छी तरह कार्य चलता था लेकिन अब पार्श्व-नाथ विद्यालय खुलने पर भी पाठशाला में घाटा बताया जाता है।

कालूराम जैन। बीर' कलकत्ता।

—कुन्थता गिरि ब्रह्मचर्याश्रम के वार्षिक मेले पर पूज्यं म॰ शीतल प्रसाद जी गये थे उनके परिश्रम करने पर बहाँ का ब्रह्मचर्याक्षम फिर यथा स्थित चालू हो गया है तथा म॰ पार्श्वसागर जी फिर बहां उहर कर काम करने लग गये हैं।

—लाहीर में ता० रूप अक्तूबर को यहां की दिगम्बर जैन सभा का वार्षिक अधिवेशन मि॰ सुमेरचन्द चेरिण्टरके सभापितत्व में हुआ तब सर्व सम्मति से लाला रामानन्द जी बेंकर फीरोज़पुर शहर के असमय वियोग पर हादिक शोक प्रगट किया गया। और उनके कुरुम्बके साथ सह जुभूति प्रकट की गई। तथा इस प्रस्ताव की नकल उनके पुत्र लाला मनोहरलाल जी को मेजी गई उक्त ला० साहब बहुत ही विद्यो प्रेमी व धर्म साधन में उत्साही थे उन के वियोग से पंजाब का एक मुख्या जैन समाज से उठ गया।

—श्रिहंसा मेमी भाइयों को स्वित किया जाता है कि वह माँसाहारी, शिकारी, बिल, हिंसा करने वाली जनता में बांटने के लिये जीवदयासभा बेलन गंज आगरा के पते से, हिन्दी, अंग्रेज़ी बंगला, गुजराती अप्रदि भाषाओं के ट्रैक्ट विना सूल्य मंगा कर तकसीम करें।

- मंत्री

--श्चावश्यकता भाग दिन जैन परिषद के उपदेशक विभाग में हिन्दी, उर्दू, अं में ज़ी जानकार शानी, सुधारके इच्छुक, सदाचारी, अनुभवी दो उपदेशकों की आवश्यकता है। जो उपदेशक बनायं । चाहें उन्हें भी साथ घुमाकर उपदेशक बनायं । ज्योति प्रशाद जैन; मंत्री उपदेशक विभाग

—म्मभवन देववंद

—व्यावर में खंडेलवाल सभा व प्रतिष्ठा-आगामी फाल्गुन बदी १३ से सुदी ५ तक होने बाली है जिसका ध्वनारोपण मुद्दर्त मगसिर सुदी १० को हो गया है। प्रतिष्ठा समय दि० जैन खंडे-लवाल महोसभा का तृतीयाधियेशन होगा। स्वागत कमेटी वन गई है तथा इस अवसर पर भाव दिव जैन महासभा को भी अपना नैमितिक अधिवेशन करने का निमंत्रण भेजा जा खुका है। कांग्रेस समाचार

दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में बेलगांव के अन्दर राष्ट्रीय महासभा (Congress) तथा अन्य सभाजों के अधिवंशन हुये हैं और उन में अगामी वर्ष के लिये भारत की स्वाधीनता के युद्ध के कार्यक्रम का निर्णय किया गया है। इस वर्ष राष्ट्रीय महा-सभा के समापति भारत हृदय के सम्राट महात्मा गांधी थे। महात्माजी के सभापत्वि का भाषण अति उत्तम था अन्य समाप्तियों की अपेक्षा आकार में छोटा था भाषण सरल स्वष्ट व सत्यता से पूर्ण था भाषण में तीन बातों पर जोर दिया गया था (१) चर्या प्रत्येक मनुष्यको स्वयंकातन चाहिये। कांत्र स सभापद के लिये तो आवश्यक वना दिया गया है कि वह प्रत्येक मास २००० गज लम्बा कता हुआ सूत दे। (२) हिन्दू मुस्लिम एकता जिसके विना स्वराज्य होना असम्भव है। (३) श्राप्नतपर्वे को दर करना हिन्दू मत नहीं सिखलाता कि किसी मनुष्य को अछूत समभा जावे। आपने अपने भाषण में यह भी बतलाया कि स्वराज्य केसा होना चाहिये।

द्यानन्द छज कपट दर्पण

जल्दी कीजिये!

कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !!

बन्यथा पछताइये !!!

द्यानन्द सरस्वती कीन थे। किस नगर. कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका खलना व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतिकया। कौन प्रन्थ पुस्तमें उन्होंने रचीं। किस वर्म के विश्वासी थे। आदि जनेक बात इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे प्रन्थों का खण्डन, मिथ्या होषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २०) सज़ित्द २॥) डाक वर्ष ॥) पत्र-चौभरी शिक्षरबम्द औन फुर्ड व्यवमार (ब्रुड्मांद)

---भूख सुपार रातीयाङ्क के पृष्ठ ७६ पंकि ४ में ४१० की जगह ४७० वहना वाहिये और पृष्ठ ७६ पंकि २१ में ७३० की जगह ४७० पहना चाहिये।

विषय-सूची।

				•			
१ श्री पार्श्वस्तवन	•••	***	१०८	१० व्यापार-समाचीर	•••	•••	रश्
२ जैंन ला	•••	•••	११०	११ जैन-साहित्य	***	•••	134
३ जैन इपीव्रेफिया	•••	•••	48	१२ भा० दि० जैन परिष	दु और र	उसका द्विर	तीय
४ आखिरी हसरत	•••	•••	११४	घर्षा धिवेशन	•••	***	१२६
५ सम्पादकीय टिप्पणि	ायाँ	•••	११५	१३ महिलोपयोगी विचा	रणीय	प्रस्ताव	१२9
🗜 नययुवकों से निवेदन	r •••	•••	११=	१४ पुरप्कार	•••	•••	१२८
७ महिला-महिमा	***	•••	११=	१५ संसारदिग्दर्शन	•••	***	128
६ साहित्य-सुप्रनसंचय		***	855	१६ कप्रिस समाचार	***	***	138
& साहित्य-समालोचन	п •••	•••	१२१				

केवल दो रुपये भें

(१) वीर के प्रथम वर्ष का फाइल-

इस वर्ष में साहित्य, काव्य, सिद्धान्त धर्म, समाज, इतिहास, राजनीति, आदि २ सव ही विषयों पर बड़े ही उच्च कोटि के और उपयोगी लेख प्रकट हुए हैं। प्रत्येक श्रंक में स्त्रीसमाज के हितकर लेख, सुन्दर गर्ले, विनोद की सामग्री तथा संसारभर के आश्चर्यकारी अञ्जूत खोजें व समाचार भी दिये गये हैं। यह संग्रह हत्री पुरुषों के लिये एक समान उपयोगी और समय २ पर स्वाध्याय करने योग्य है।

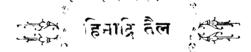
(२) वीर के प्रथम वर्ष का विशेषाङ्ग-

जो महाबीर जयन्ती के उपलक्ष में करीब १०० पृष्टी का रङ्गीम ब सादे बहुत से सुन्दर चित्रों से सुस्तिज्ञत हिन्दी के घुरंधर किन श्री 'नवरत्न' 'गिरीश' आदि की सुन्दर कविताओं से अलंहत मि० चंपतराय बा० ऋषभदास आदि के सुपाठ्य लेखों से विभूषित है। देखने ही योग्य है।

(३) वीर के प्रथम वर्ष का उपहार प्रन्थ "असहमत सङ्ग्रम"—

इस ५५० पृष्ठों के अमूल्य विराद उपहार घन्य में जैनमत, वेशमत, यह दियों का दीन, वेदान्त, सांक्य, न्याय, वैशेषिक, योग. वौद्धमत ईसाई, इस्लाम, शाक, राधास्वामी, कवीरपन्थ, दादूपन्थ, थियो-सफी, चार्वाक-मत आदि संसार भर के सब ही प्रचलित धर्मों के ओद और विराहता के मूल कारण धड़ी सरल व सुन्दर माचा में लिखे गये हैं, इसके मूल के बाक धर्मतराय जी वैरिष्टर हरदोई। आज ही २) मूक्य और ॥) पोस्ट खर्च

कुछ २॥) मनीआर्डर हारा भेजकर सब मैगालीजिये। ची. ची. नहीं भेजा जायमा, पीछे पछताना पढ़ेगा। पता-'चीर कार्यात्वयः विजनीर सू॰ पी०



प्रतम नई चीतः! विलक्षण मुफ्तः एक अमृत्य प्रन्थः !!! विश्व को ग्राहकों को ग्रापृत्रं उपहार शःदर 'महावीर भगवान ' विजल्द बिल्लकुल मुक्त मिल्लगा

जैन समाज में श्रीवीर भगवान के जितने भी जीवन चरित्र लिखे गये हैं, उन सब में यह चरित्र अन्यान्य विशेषताओं के कारण अधिक उपयोगी है तथा अधिक महत्वपूर्ण और अपने ढंग का रूब से पहला श्रंथ है।

इस श्रंथ को बाव कामतात्रसादजी जैन उव सव "बीर" ने बड़ा परिश्रम करके आधुनिक शैली पर एतिहासिक ढंग से बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान-बीन के बाद लिखा है।

इसमे जैन धर्मकी ख़तीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन प्रंथों के प्राचीन लेखों बरन अजैन विद्वानों की सम्मतियों की साक्षी द्वारा सुदृद् प्रमाणों से सिद्ध किया है। जिनकों देखने ही अजैन विद्वानों को भी जैन साहित्यावलोकनकी उत्कंठा पैदा होजाती है

यह श्रंथ श्रीवीर भगवान् के सिसाप्रद पवित्र जीवन का अवलोकन कराते हुए, उनके वास्तविक व ऐतिहासिक व्यक्ति होने में तथा जैन धर्म के विषय में फैली हुई अन्य भूँ ठो किवदंतियों को दृढ प्रमाणों हारा निमृत सिद्ध करता है।

प्रत्येक जैनीको यह प्रंच अवश्य पढना चाहिये।

श्रीमान् बा० शिवचरणलालजी रईस जसवन्त नगर की रूपा सं यह अंथ इस वर्ष वीर के द्रहाकों की मुफ्त भेज दिया जायगा।

शीच्र बाह्क बनजाईये ख्रायया एळताना पढेगा।

क्यों कि श्रंथ के यह व की मती होने के कारण केवल उतनी ही प्रतियां छपाई जांयगी जितने ग्राहकों का वार्षिक मृत्य मांच तक हमारे पाम आजायगा। जिन महाश्यों का वर्ष महावीर जयन्ति (अप्रेल १६२४) से आरम्भ हुआ है और आगामी मांच सन १६२५ में समाप्त होजायगा उनको चाहिये कि वह भी अगामी वार्षिक मृत्य भेज कर रजिस्टरमें नाम दर्ज करालें। इपा कर गफलत न करें।

हम विश्वास दिलाते हैं-

कि जो महाशय इस अमूरुप अव तर को खोदेंगे वह बहुत पछतावंगे। ऐसे उत्तम और अनमोल > ग्रंथ हर समय प्रकाशित नहीं हुआ करते हैं।

राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक--वीर बिजनीर।

की वर्षमानाय वसः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पात्तिक पत्र

अवस्य 🛥

द्वतस्याद्यः---

्रभैनवर्गपुरस्य प्रकारी शीनलभसाः अह

श्री कामताप्रसाद नी

इस वर्ष के वीर के प्रत्कों को शुभ समाचार ।

सम्बर् 1

बिशहर उपहार

स्वनित्द !!

'महावीर भगवान श्रोर उनका उपदेश'

वित्तकुल भुफ्त मिलगा ।

इस दर्य में आहर्की मी यम अपुलस गृत्य जिसमें भी बीर सगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ २ जैन पर्से की जातीय शर्मानता, उत्हर्णता मीर सर्वीपयोगिता को न केवल जैन अर्थों के प्राचीन लेखी बरन संसार के बड़े २ लजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सहद प्रमाणों स सिख किया गया है। ग्रंथ बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर साथा में टिका गया है। अपने हंग की अमुल सानी है।

शीव प्राहक श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिये अन्यथा पछताना पडेगा ।

—प्रकाशकः

अवाशक औ॰ राजेम्द्र कुमार जैन रईख, विजनीर (यू॰ पी॰)

विषय-सूची।

Au	विषय	वृष्ठ	मं०	विषय		वृष्ठ
₹	आंस की बृंद (किश्तिता) ***	१३३	७ सम्ब	।।दकीय टिप्पणियाँ	***	६वत
ર	जैन समाज में जन संख्या की कमी	१३४	८ यध	के अधित्रेशन में 😶	• • •	,
₹	भले उद्देश्य (कविता)	१३=	ः परिष	ग्दु व जैनियों का कर्तड	य .	१४७
ઢ	जैन इपीव्रेकिया	१३ 5	६ संस	ारको अङ्गुत वार्ते 🐃	• •	583
4	समाज में सेन्ट्रल जैन कालंज़ 😬	११	१० साहि	त्त्य-समालोचना 😬	• •	१५०
Ę	प्राचीन खोज प्रवास	१४२	११ संसा	र दिग्दर्शन 😬	* 1	१५२

'बीर' का विशेपांक

पिछले वर्ष की भौति इस वर्ष भी हमने महाबीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग विग्गे अबेक चित्रों से शुशोभित, अन्यान्य विपयों में विभृषित, एक मनोहर और अध्यन्त उपयोगी विशेषोंक निकालने का निश्चर किया है। जिस में भीगुत बार चम्पतगय जी वैरिष्टर, बार क्रियमस्त्री वकील, बार हीरालालजी एम प्रतिगिशाजी बीर पर आदि घड़े जैन-अीन आधुनिक लेखकों के तस व कविष्यों होंगी। यह अंक अपने होंग का निराला ही होंगा।

परन्तु 'वीर की अधिक स्थिति पर विचार करते हुए यह त्यापी समय है। जय कि इसमें गुज़काण व संबे धर्म जिल्हों (तहीं चेचला जहमां स्व, तथा बीर तर गृह्यक उद्या बढ़ाकर इस में सहाजना करें)

इस अज़्राय क्रिशंक के लि (केवर २००) की सहावता दशकार है। यह कुछ सजन दस दस वीस वीस रुपये इस धर्म कार्य २ व्रदान कर पुण्योवार्जन करलें, तो यह विशेषाक वीर के गूरदर्भों के रामक्ष बिना मृज्य हैं। उपण किया जासकता है।

दस कार्य में भ्रीयुत बार कामताबसातजी जेन असीगंध नियासी ने दस रुपये हमारे पास नेजे हैं जिसके लिए उन को 'बीर-भड़ल' की ओर से कोटिशः भ्रन्यबाद है हमको पूर्ण आशा है कि इसी प्रकार हमारे शन्य सांध्रमीं जन भी इस कार्य में हाथ बहाकर यश आर पुण्य दोनों का सम्बय करेंगे और हमारे उस्ताह को बहाउंगे।

विनीत-प्रकाशक ।

भी महाबीसाय नगः

''चमा वीरस्य भूषणम्"

भी भारत दिगम्बर जैन परिचद् का पाचिक मुख पन्नः

वीर

"हा ! वेही शास्त्र-पर्श प्रशिथितित हुए और भी जीर्श शीर्ष । होते हैं देख के हा ! ऋषि-मुनियों के वित्त विन्ताविदीर्श ॥ जाखों ही ग्रन्य होते जिन मन के याँ नित्य कीटावि भच्य । क्या सूने हा ! किया है निज मन से भी एतदुहिश्यलश्य १००

—''भास्कर''

धर्ष २

बिजनौर, माघ कृष्णा ७ वीर सम्बत् २४५१ १५ जनवरी, सन् १६२५

अङ्क ६

श्रोस की बूंद



धोस की विंदु न इठला मन में ।
कैटक चारों और विजे हैं तेरे इस जीवन में ॥
सक्ता की झाकृति के सहश सुन्दर मोहक रूप ।
लिलन कुसुम पर बैठ दिखाती आभा सुखद अन्प ॥ १ ॥
इस स्वरूपको देख अरी तू हृदय न किंचित फूल ।
नश्वर है संसार न इसकी माया में दुक भूल ॥ २ ॥
सहसा पवन वेग से हत् सुधि चाटेगी तू धूल ।
जिसके बल पर तू इतराती होगा जीवन शुद्ध ॥ ३ ॥

—''बरसरुं''

जैन समाज में जनसंख्या की कमी

[ले॰ श्रीयुत चेतनदास जी दी॰ ए॰]

रही है इस पर आजकल बहुत बिचार हो रही है इस पर आजकल बहुत बिचार हो रहे हैं और इस सम्बन्ध में हाल में कई सज्जनों ने अपनी सम्मति बीर, जैनमिश्र; जैनपदीप, जैन आफताव आदि जैनपत्रों में प्रकाशित की है। उन को पढ़ने से यह मालूम होता है कि इस कमी के कारण बहुधा (१) अनमेल विवाह (२) बालविवाह (स्वास्थ्य का ठीक न होना (४) ज्ञान की न्यूनता (५) व्यर्थ व्यय समके जाते हैं।

ऊपर के देखने से जैनसमाज की कमी के यहा कारण दीवते हैं। जैसा कि किसी रोगी को देवने से ऐसा मालूम होता है कि वह ज्वरपीडित है और हाथ या शरीर के किसी और अङ्ग के स्पर्श करने से इस बात की साक्षी मिल जाती है कि वास्तविक उसको ज्वर है। तब ज्वर की औषधि से बीमार का इलाज किया जाता है. फल यह होता कि 'बीमारी बढती गई ज्यों २ दवा की' कारण कि वह ज्वर केवल इस बात का सूचक ज़िन्ह है कि वह दुखी है। जब तक यह पता न होगा कि यह दुःख फेफड़े के खराब होने के कारण है या फोड़ा निकलने वाला है या बदहजमी है, या चेचक निकलने वाळी है या कोई और ब्राबी शरीर में है उस समय तक ज्वर के इलाज ने कोई काम न दिया शरीर में इनमें से किसी व्याधि का पता लगने पर उसको मेटने का उपाय किया गया तब कुछ शानित

हुई, थोड़े दिन ओराम रहा परन्तु थोड़े दिन पीछे दूसरा उत्पन्न होगया तब यह समम में बाता है कि शरीर में कोई ऐसे परमाण इकट्ठे होगये कि जो इन व्याधियों को उत्पन्त कर रहे हैं। इन विष मरे इप परमाखुओं को शरीर से निकालते ही शरीर पुष्ट होगया और सब व्याधियाँ जाती रहीं। बात यह थी कि इस शरीर में दुःख के मूल कारण यह ध्याधियां नहीं थीं यह तो बाह्य जिन्ह हैं जो इस बात का एता देती हैं कि शरीर दुःखी है, परन्त मल कारण अन्तरंग होता है जिसका पता बहुत सीचने से लगता है। जो लोग कि बाह्य दुःखी का इलाज करते रहते हैं वह बारहां महीनों के रोगी होते हैं।। जब तक कि अपने शरीर में से सड़ी हुई मात्रा को निकालने का उपाय नहीं करते-अब्छे नहीं होते जब इस सड़ी हुई मात्रा को निकाल कर शरीर पिंच किया जाता है तब बास्तविक शांति होती है।

इसी प्रकार, यह जैन जाति शरीर दुःखी है और यह रीति रिवाज़ उसके लिये व्याधि है जो उसको नष्ट कर रही हैं परन्तु यह सब मेरी समम में मूळ व्याधि के सूचक हैं, बाह्य चिन्ह हैं। उनके रोकने से कुछ शास्ति सम्भव है परन्तु वास्तविक उपाय काने के लिय कुछ गहरा जाना पड़ेगा, जाति के प्रत्येक अब को देखना पड़ेगा, अभ्यन्तर रोग का पता लगाना होगा।

विचार कर देखिये कि यह अनमेल विवाह, बान

की न्यूनता, व्यर्थ व्यय आदि क्या सारी ही हिन्द साति में नहीं होंग्हों है परन्त सबकी मालूम है कि कुल हिंग्द्र जाति में जनसंख्या की कमी नहीं होरही है। पूलरे यह देखने में आता है कि हजारी जैनी अजैन होते चलें जाते हैं सुना जाता है कि मधुरा में घाटी का मन्दिर अंप्रवाली ने बनाया था उस समय यहाँ पर हजारी अग्रवाल जैनी थे अब एक बो रह गये हैं जैन धर्म का उपदेश न मिलने से और अन्य जिति के स्थानीय जैनियों से प्रेम न पाकर सबने जैनधर्म त्याग दिया। ऐसा ही मैंने पीलीभीत में सुना था हरधान्त में यही सना जाता है इससे यह स्पष्ट है कि 'जेनियाँ में कमी का मूल कारण ឆ और ही है यह कमी उन कारणी से नहीं हुई जो बतलाई जाती हैं न अनमेल विवाह का असर है न स्थर्थ प्यय का और न किसी और बात का, किंत् जैनधर्म के उपदेश का अभाव ही मूल कारण दीखता है। ऐसा बतीत होता है कि हमारे आचार विचार जैन धर्म के अनुकूल बहुत ही कम हैं।

यहं सर्व माननीयं है कि इस धर्म के दश लक्षण हैं। बथार्थ में तो धर्म से आत्मा के स्वभाव से मत-लब है परन्तु इस स्वभाव की प्राप्ति के लिये यह इस भाव प्राप्त करने की आवश्यकता है। गृहस्थी के लिये वे इस पंकार माने जा सकते हैं।

- (१) चूमा मात्रां—सव से मित्रता और प्रेम कां भांच रखना।
- (२) मार्टव माद:-कुलं, जांति, धर्म, संपत्ति, कंप, चल, विधा, तप बादि का धमण्ड न करना अंधीत् अभिमानी न होता, दूसरे की घृणा की दृष्टि से न देखना।
 - (३) आंजिद:-गाया चौरी को खीड़कर सरस

परिणाम रखना, दूसरे को न ठंगना, न घोखा देना जो दिल में हो वही वर्तोत्र में ही, छल कपट माया चोरी पना न हो।

- (४) सत्य:-भूठ को त्यागना और जैसी बात या जैसा बंस्तु का स्वस्तं किसी के हदंय में हो वैसा ही कहना, विषय वासना में फँस कर अस्त्य न बोलना, यथा सम्भव पेसी वास में न पड़ना जिससे कि दूसरे को हानि पहुंचे।
- (प्र) शीच:—इसका अर्थ पवित्रता है और यह दो प्रकार से हो सकती है आत्मिक और शारीरिक शारीरिक पवित्रता भी आत्मिक पवित्रता पर निर्मर है यदि चित्र मर्लीन नहीं है और मनुष्य लोभी नहीं है तो उसके शरीर में रोग का ही कम सम्भव है। मनुष्य का जैसा मन होता है उसके अनुसार वायु के साथ पौदगलिक परमाणु शरीर में आकर स्थित होते हैं। शुद्ध मनवाले के साथ शुद्ध परमाणु स्थांस के साथ आते हैं और मलीन मन बाले के साथ मलीन परमाणु साथ में आते हैं, इस कारण शौच शब्द मनकी पवित्रता से सम्बन्ध रखता है। लोभ का न होना ही शीच है किर भी शरीर को बाह्य मैंल से रहित रखना गृहस्थ का धर्म है।

भंगम:—मन विषय वासनाओं में न घूमता फिरे और धर्म के काय्यों में लगा रहे ऐसे विचार रवना संयम है।

७ तप्:--तप यद कार्यंकम है कि जिस से आत्माओं में जो पहिले कर्मों का मैल लगा है वह दूर हो सकता है। शुभ सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान आदि से शुद्धता होती चली जाती है इस कारण इनको करना चाहिए।

≈ त्याग:--- जो धन न्याय मार्ग से_कमाया

है उस में से जितना बचा सकता है इस काम के छिए बचावे कि परोपकार और धर्मकार्य में खचं हो सके। बुरे विचार बुरे शब्द को हर प्रकार से छान करे।

8 आिक बन्य: —यह त बिचार करे कि को धन धान्य आदि मेरे पास है मेरे ज्ञान से आधिक काम के हैं वास्तविक ज्ञान दी एक चीज है जो कोई छीन नहीं सकता इन पदार्थों में मोह स रखे।

१० ब्रह्मबर्य:—काम घासना जहां तक हो सके कम करे केवल एक अपनी विवाहित स्त्री से संबंध रखना चाहिए।

अख पाठक महाशय यह विचार करें कि यह धीनत्व के चिन्त हम में से किन किन में है। किस स्तम् श्री महाचीर भगवान धौर उन के पीछे आचार्य साध्याँ द्वारा लोगों को जैमियाँ सं यह खिन्द वीस पड़े तो धड़ाधड़ औन मनावरुम्बी धनते चले गर और उनको जैन कहलाने में गौरव था क्योंकि दया भाव सम्राई, सादगी परित्र मन, परोपकारता आदि जैन कहलाने से उसमें मान ली जातो थीं और बर इस बात का यत्न करता था कि अपने बर्ताव से ऐसा न होने पावे कि जैन धर्म पर धन्या आवे, उसको इस बात का अभि मान न था कि मैं कौन वर्ण और कौन जाति का है। इसे इस वात के सोचने का समय ही न था। बह लो सतत परिभम से अपने कर्तन्य को पालन करते हुए घर कमाने में लगा रहता था और उस धन को परोपकार तथा धर्म कार्य्य में छगा कर प्रवास रहता था। उस को अपने नाम को विस्तृत सारी सा चित्रार नहीं था अपने नाम की संस्था

कोलना या अपने नाम का मन्दिर बनवाना यह इस नहीं था, किन्तु जहां कहीं भी धर्म कार्य में घन की आवश्यकता होती थी बहां धन को लगाता था, वह यह जानता था कि धन मेरा नहीं है परोपकार के लिए मेरे पास आया है जिस को आवश्यकता हो मैं दूं।

जब ऐसा होता था जनता पर उसका प्रभाव पड़ता था वह देखते थे कि जैनी बड़े दयाल हैं और इन से इमको बड़ा लाभ होता है। यही धर्म अ'गीकार करना चाहिए । इसमें धोका नहीं है. सौदा नगन है इस हाथ छे उस हाथ दे. ईश्वर कोई देने याला है या नहीं देने बाला है इस फगड़ में उस को पड़ने की आवश्यकता नहीं थी। वे देखते थे कि परिश्रम को फल अवस्य अच्छा होता है परिधम करके कमाना चाहिये। और चिस प्रसन्न होता था; जब वे उस कमाये हुए धन से पीड़िसी की रक्षा करते थे। उस समय इस दात का विचार नहीं था कि वह कौन मत मानने वाले हैं करुणा-त्मक दया सब पर होती थी। इस वर्ष हिन्दुस्तान में निर्यों की बाहने लोगों को कितना दुख पहुंचा-था इन बाद पीड़ित मनुष्यों को जैनियों ने कितनी सहायता दी पाठक स्वयं बिचार करें। यदि हम आपस में अमा भाव करके तीर्थों के भगड़ी को छोड़ते और एक दूसरे से आपस के भगड़ों को मिटा कर नीर्थ भक्त सज्जन और धर्म प्रेमी धन द्वान पीडितों की सहायता करते तो जैन धर्म का यश फैलता और बड़ी भारी चास्तविक प्रतिष्ठा होती। जैन धर्म की प्रभावना होती। पेला न होबे से बहुत से जैनी ही जैन धर्म को स्वाग दे मे।

किसी का कहना है कि जैनियों की इन्हों

सहन शीलता और सादे विचारों से हिन्दुस्तानको धक्का पहुंचा है यह उनका कहना असत्य है। हिन्दुस्तान की क्षति उस समय से हुई है जब से क्रैन धर्म का प्रचार कम हुआ है। लोगी में मान कवाय, लोभ, भूठ का स्वमाव फैलाया गया। यह बतलाया गया कि ब्राह्मण बड़े हैं अन्य छोटी जाति हैं। ईश्वर पर भरोसा करो सब काम चल जायगा। इससे छोग पुरुषार्थ हीन हो गए और अपना समय धन कमाने और उस को पर्योगकार और धर्म में लगाने की जगह अपने द्रव्य को दींग की पूजा और सेकड़ों देवता और देवियों की उपा-सना में खर्च करने लगे और लोभ इतना बढ़ा कि बहुत से त्यौहारों में बान लक्ष्मी की पूजा की जगह द्वाय लक्ष्मी की पुत्रा होने लगी द्वव्य को ज्ञान से बढ़ कर मानने लगे। लोभ, कषाय बढ़े, जिस के कारण अनैक्यता फैली। इस प्रकार हिन्दुस्तान की क्षति उन लोगोंसे हुई जिन्होंने छल कपर से मनिर्दो द्वारा लोगों को बहका कर धन इकट्टा किया और उस धनसे ऐसी घोके की सजाबट पैदा की जिससे उन के अनुयायियों का मन बाह्य पदार्थी की शोभा में दिस होते लगा और सज घड की कियाओं के करने वालों की प्रशंसा के सामान पैश किये।। संयम, तप और त्याग के भाव को छुड़ा कर मोह के जाल में फैला दिया। भित्र धर्म अवलंबियों को छपा की द्वष्टि से न देखकर उन पर भूठे र आक्षेप करके अतैक्यता को फैलाया और परस्पर विरोध की अग्नि को जला कर भड़काया यह बात जानते हुए भी कि दूसरे के शास्त्रों में किसी विषय पर जो लिखा है वह किसी अभिशाय को लेकर लिखा है और बह उस अभिप्राय से ठीक

है तो भी खंडन करने के लिए अर्थ का अनर्थ करने का यज किया। एक को दूसरे से खूब लड़ाया।

जैनियों ने भी औरों को देख २ कर पैसे ही आचरण अपने यहाँ कर लिए सैकड़ों प्रकार के देवी देवताओं को पूजने लगे. एक ही वर्ण के अन्त-गंत अलग २ ऐसी सैकड़ों जातियाँ होगई कि एक दूसरे से कोई सम्बन्ध ही नहीं था। जैसे वे सज धज को पसंद करते थे वंसे ही हम लोग करने लगे। सादा रहना सादा लान रखना और परोप कार करना छोड़ दिया, जो रुपया जाति से इकटा किया यह आपुस के भगड़ों में खर्च कर दिया या मन्दिरों की लज धज में लगाया और ऐसी प्रतिष्टा कराई जहाँ लुब भगड़े हीं और लोग हंसाई हो।

इस लिए मेरी सम्भ में जैन संख्या की कमी का कारण केवल एक ही है। वह है जैन धर्म के तत्व को भूल जाना, और उणाय एक ही हो सकता है और वह है शीच, तप, संयम, त्याग आदि धर्म के लक्षणों का स्वयं आदर्श बन कर जैन धर्म का प्रचार करना और छोभ के राज को भिठाना। जैन धर्म को जाति भेर इण्ट नहीं है जब तक उन की पुष्टि होती रहेगी अनमेल विवाह अवश्य होता रहेगा, माया के जाल में कसे हुए ननुष्य, जैन धर्म से दूर, लोभी, कन्या का वेचना कैसे छोड़ देंगे, जब तक कामकी तीव्रता है बुद्दे अपना विवाह करने से नहीं एक सकते। उन के विरुद्ध कितना बपदेश दिया जाते। नवयुवक अच्छे बलवान और भदाचारी उसी समय हो सकते हैं जब कि पैड़ा होने से पहिले गर्भ की अवस्था में प्रहान थ्यं के विचार के परमाणु उन में पहुंचे।

सारांश वर है कि कमी को दूर कनना इन्ट है

तो जैनधर्म का प्रचार करो। जाति के भेद को छोड़ कर पेक्यता के मार्ग पर चलो। प्रेम और मैतिभाव सर्गत्र विना रकावट फैला दो। स्पर्य के मकाब की तरह अंग्रेधे से अंग्रेरी कोठनी में पहुंच जाय। सुल शान्ति की स्थापना के लिए स्थाप काच को सदीव मन में रक्लो प्राणियों को सुली कनाना हैन धर्म का मूल अंग है, इस अपूर्व सुल का संदेशा केवल कहने मात्र न हो किन्तु अपने कर्तन्य से, काव्यं से, बिचार से, आचार से, धर्म से और कर्मसे प्रमाव हाला, जाय। वर्तमान सांव- हायक मोहान्थता को दूर करके मैत्रीभाव का

मंकुर जमाया जाने । कोई परवार है, कोई गौला लारा है आंदनाल है स्वेतबाल है वासा है यह मेद भाव का विचार न कर के धर्म के मूल लक्षणों परे ध्यान रखते हुए परिभ्रम और उचम के साथ क्षणे ईमानदारी से इन्य कमा कर उसका संबुपवान करो साम्प्रदायिक और जातीय संव संस्थायें मिस कर एक संस्था का संगठन हो जिसके द्वारा सत्य का प्रकार हो और प्रेम का इंका बजे तथा मैकी-भाव विस्तृत हो । हमारी प्रवित्र आत्मा हमको सफलीभूत अवस्य करेंगी।

भले उद्देश्य

(ले॰ भी॰ राजधर जैन पर्धारा निवासी)

मेसे जो हैं मनुष सर्वों के तदु हरे व हैं। जब पदों की माप्ति सर्वों के सदु हरे व हैं।। वहुतों को पर विदित नहीं निज शुमो हेरव हैं।। इसी हेते सब के यहां बतलाते जह रे व हैं।। इसी हेते सब के यहां बतलाते जह रे व हैं।। इसी हेते सब के यहां बतलाते जह रे व हैं।। विश्वा का मुलो हरे व हैं जोती जिल नर को भले करने को जह रे व हैं।। शिक्षा का जह रे व नहीं जठरोदर घरना।। धिन्यों का जह रे व दान में तरपर रहना। जीवन का जह रे व सदाचारी बन रहना।। निर्भय करना निवलको बल माप्ति उह रे व है। महितत्याग हित गृहण ही बिद्द जन जह रे व है। का निर्मय करना। एसतक का जह रेय वीर-वाणी नित सुनना। एसतक का जह रेय वीर विश्वको नित नमना।। ने में का जह रेय वीर विश्वको नित नमना।।

जिहा का उद्देश कीर गुण गाया गाना ।।

भाषाका उद्देश दें सद्भाषण करना सदा ।

करोद्देश सत्कार्य को करते रहना सर्वदा ॥ ३ ।।

तीर्याटन करना वरणों का शुनोद्देश हैं ।

जीव गात्र पर देश धर्म का सर्वद्देश हैं ।।

सकत का उद्देश दोष पर गुण करना है ।

वीरों का चद्देश दिवन से निर्देदरना है ।।

मनका तो उद्देश है तरन मनन करना सदा ।

नर तन का उद्देश है तरन मनन करना सदा ।

नर तन का उद्देश स्वाप्तिका लेना है ।

हद्वी का खदेश मूझ विद्यानी रहना ।

च्यायोचित वाणिज्य ही वैश्यों का उद्देश हैं ।।

धर्मीचित संवा पर्म श्रद्धों का उद्देश हैं ।।

धर्मीचित संवा पर्म श्रद्धों का उद्देश हैं ।।

धर्मीचित संवा पर्म श्रद्धों का उद्देश हैं ।।।।

सम्म का उद्देश प्रजाका रक्ष करना। श्रुत समान नितासे सुस्रक्षित समाम रखना॥ प्रमुक्तम्य के लिये कहें स्वापीन बनाना। पाप कार्य के लिये दंह दे उन्हें दवाना ।। मनावर्ग का अरु भक्ता सन्दर मूली देश्य है। शिरो पार्य करनाथला जो नृपका भादेश है।।६

जैन-इपीग्रेफिया

(ले॰ चैंचेलियर डा॰ शेषागिरि रोउ॰ ५म० ए॰ पी॰ एच॰ डी॰)

(कमागत)

कदम्ब वंश का इतिहास

स्मारकारी पुरातत्वान्वेशी स्व० राउवहादुर वी० वेंकैया के समय तक कदंव वंश का उत्पत्ति इतिहास निश्चित नहीं हुआ था और शायद आज भी उसने उस समय से कुछ अधिक उन्नति नहीं की हैं , बेंकैया ने जयवर्मा के एक कदम्ब दानपत्र का उल्लेख किया है, जिसको डाँ० हल्ट्र इंसाफी दूस-री शतोब्दि का अनुमान करते हैं। इस अनुमान के समर्थन में और भी कुछ नवीन सामित्री उपलब्ध हुई है। अमा साल में जो सन् १६१४,१५ की पुरा तरव सम्बन्धी सरकारी बाविक रियोर्ट मिछी है। उसमें कुछ पेसे शिलालेख दिये हुए हैं (पृष्ठ १२०-१२१) जो सतवाहनकाल के हैं और जिनमें हरीति शब्द मिलता है। इधर कदंबवंश ही एक ऐसी दक्षिण मान्त्रमें शासक वंश था जिसने सबसे पहिले यह विशे षण यहण किया"या मानव्यस गोत्र,हरीति-पुत्र ।,, हरीति एक बौद्धदेवी का नाम है और हरीति ही बीसनाम बीसी के भाइति अर्पण करने अपेक्षा है।

अवंतो करम्बों ने 'इरीति पुत्र, की उपाधि महण की उससे मकरहे कि किस प्रकार परचात् का बौद्ध धर्म जैन धर्म में परिणत हो गया (?) पेसे मनुष्य जिन्होंने इस सम्योचित उन्नति को महण किया था घह अवस्य सतवाहन के पतन के अन्तिम समय के अर्थात् ईमनी सन् की मारम्भिक शतान्दियों के होने चाहियें। और इस ही समय का कदम्ब जय बर्मा का उक्त दानपन्न हैं। इसके कुछ काल पश्चान् मेस्र के शिलालेख से हमें एक "विष्णु कुन्दि कद्म म्ब शतकर्णी" का नामोल्लेख मिलता है। Vide Carmichael Professorship Lectures on Indian History bey Prof. Bhandarkar)

यदि इस मान्यता से श्लीगणेश करें कि ईसा की प्रार्मिस शतान्दियों में एक प्राचीन जैन कदंव गण दक्षिणभारत में आगये थे, तो हम समस्ते हैं कि उनके प्रवास का मार्ग पूर्वी तट होकर कोशल और कलिंग से हुआ था इसके पर्याप्त प्रमाण मिल जायेंगे। टेलर साहन की हस्तलिखित शासों की

सूची में (Catalague of Oriental MSS. Vol III P. 60) एक कन्नड् शास्त्र का उल्लेख है जिसमें कदभ्बवंशीय राजघराना मगध में राज्य करता बत-लाया गया है। यदि यह कटंबनण मन्य से प्रस्था-नित होकर दक्षिण भारत में आना चाहे होंगे तो वह अपस्य ही कोशल और कलिंग में से गुजरे होंगे उसी पुस्तक के पुष्ठ ७०४-५ में एक मराठी शास्त्र का उल्लेश है जिसमें एक उपरान्त के कदम्य राजा मयुर वर्मा (दक्षिण कर्नाट शाखो के) का विवरण दिया हुआ है। इससे केवल इतना ही पता चलता है कि वह उत्तर भारत से आया था और वह उत्तर भारतीय सम्पता एवं उसके पालको का हिमायती था। इस प्रकार साहित्य में करम्बों के एक उत्त-राय भारतीय राजगंश के उत्तरभारत से मगध. कौशल, कलिंग और पूर्वी तट होकर आने का स्पष्ट वकव्य मिलता है।

यदि यह प्रारम्भिक जैनगण कदम्बगण जैन थे जैसी कि मेरी सम्भावना है कि वह जैनी थे, तो बहु उन २ स्थानों पर जहां होकर वह गुजरे और ठहरे थे अवश्य ही अपने कुछ चिन्ह पीछे छोड़ गए होंगे "श्तुरंश्य याहात्म्यण एक मुख्य जैन प्रन्थ है। वह ईसा की आठवीं शताब्दि के पर्यान् का नहीं है। इसलिये यह अपने रचनाकाल के समय प्रचलित जैनगान्यताओं की प्रामाणिक साक्षी माना जा सकता है। इसमें जिन प्रविश्व जैन विरियों का

उल्लेख है उनमें एक "कवंबिगरि" भी है। श्रह्म→ क्षत्रियों की एक कर्न्य शाखा ने जिन्होंने कर्न्य अपनातिया था वह अवश्य ही हीन थे क्योंकि कदंबिगरि उनके निकट विशेष पूज्य थी। कदम्बी की ही मान्यता का अनुकरण करते हुए चालुक्य भी अपने दानपत्रों में कहते हैं कि उनके पुरुषाओं को राज्य की प्राप्ति चालुक्यगिरि के देवताओं के पुजन को फलक्ष हुई थी। (Vide Nandamapudi grant E. Chalukya Raja Raja Narendra) बाह-क्यों की यह मान्यता,जिन्होंने कदंब ढंग"मानव्यस गोत्र. हरीतिपुत्र" को अपनालिया था, प्रारम्भिक कदंशों के निकट 'कदंगीगिर' पुज्यवस्तु थी इसकी साक्षी है और साधारणतया उनके जैन होने का भी प्रमाण है। हम इस बात को मानने को तैयार हैं कि स्थानों के कदम्बिगिरि वा कदम्बिसिगी अथवा इस ही प्रकार के अन्य नाम इस बात के साक्षी हैं कि यह नाम पहिलेपहिल कदंबी द्वारा अथवा उनके राज्यकर्मचारियों द्वारा रक्खे गये होंगे। उनसे निकटतर में करंबों के आगमन और उनकी सभ्यता का पता चलता है। ऐसे स्थानी के नाम गंजम और विजगापटम् के भागों में मिल सकते हैं जिनसे नया भाग "अजेन्सी डिवीजन" मद्राप्त प्रान्त के उत्तर-पूर्वीतट पर निर्णित हुआ हैं।

[कमशः]

समाज में सेन्ट्रल जैन कालेज़

की

श्रावश्यकना।

प्रिय बन्धुओं ! यह बात आप लोगों को यत-लाने की नहीं कि इस जैन सनाज में न तो तास्त्री की कती हैं और न कश्मी के लालों की, कमी है तो केवल इस बात की कि इस में उ सादी कार्यकर्त्तागण बहुत ही न्यून हैं और जो हैं भी वे पहले अपना स्वार्थ साधते हैं पीछे समाज की किकर करते हैं। यदि हमारी समाज में श्रीमान माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय सरीखे दो एक ही पुरुष दुर्गंव होते तो फिर हमारी समाज की ऐसी गिरी हुई दशा कभी भी नहीं होती इस में एक 'सेन्ट्रेल जैन कलोजा की तो कहे कीन, धैकडों हाईस्कृल श्रीर कालंज खुले हुए नकर भाते, परन्तु सवाज का सङ्चा प्रेमी तथा उसकी लगन में मस्त रहने वाला मुभे एक भी व्यक्ति मजर महीं आता । हां, समाज में स्फूर्ति डालने बाला और मुर्वा दिलों को जिन्दा करने वाला थदि कोई था तो वह स्वर्गीय कमार देवेन्द्र असाद ही था जिसने अपना सारा फाल इसी समाज सेवा में ज्यतीत किया था । इसी समान्न सेवा की धुनि में छो रहने के कारण वे एफ० ए० क्लास से आगे म बद् सके। पहलेपहिल सेन्टल जैन कालेजा के मस्ताव को कुमार देवेन्द्र बसाद जी, आरा वार्ली ने ही भी स्वाद्वीद पाठशाला काशी के वार्षिकोत्सव के समय सन् १८१३ ईं में

उठाया था। बाद को भारत जैन महामण्डल ने भी इसका पूरा पूरा आन्दोलन किया । परम्तु स्वर्गीय कुमार देवेन्द्रप्रसादजी की मृत्यु पीछे उसने भी वह प्रस्ताब बेहाल हुआ छोड़ दियो। परन्तु में कहता है कि यह प्रस्ताय हैय नहीं। इसके लिए जितना भी आन्दोलन फिया जाए, धोडा है । जन तक इस प्रस्ताचके अनुसार कार्य न होजाय सब तक बरावर आन्दोलन करने की आवश्यकता है.कार्य कि यह बड़ा ही समयोक्योगी प्रस्ताव है। इसके अनुसार कार्य होजाने से समाज का बहुत कुछ काम वन सकता है। इसके अभाव में हमारी जाति के नवयुशक दर दर मारे मारे फिरते हैं. कहीं भी ठिकाना नहीं पड़ता । आखिरकार जब खुव हैरान हो जाते हैं तो पीछे जिस चाहे उस स्कूल या कालेज में अवेश हो जाते हैं और उन की घार्मिक शिक्षार्ये प्रहण करते हैं। यदि हगारी अति में इस का प्रवन्ध हो जाय तो हमारे ना-युवकों के अवार विचार उच्चकोटि के ही और वे दूसरों को भी शुद्धाचरणी बनावें। यदि समाज इसके लिए पूरा पूरा प्रवन्ध कर दे तो अङ्गरेजी के पढे लिखे बालक संस्कृत तथा धर्मशास्त्री या शिक्षा प्राप्त कर जैन धर्म का महत्व सारे संसार में फैलो देवें। बस्त्।

अन्त में भेरी औमान बाबु मजितप्रसाद जीं

चकील लखनऊ तथा श्री॰ पून्यवर धर्ममूषण वृद्ध-चारी शीतलप्रसाद श्री से यही प्रार्थना है कि आप महानुमाव इसकार्य के लिये कप्तर कसकर तथार होजाइये। यह कार्य वहुत ही गुरुतर है और पह आप जैसे महारथियों के बिना पूरा नहीं हो सकता है,समाजमें आपलोगों की बड़ीधाक तथा प्रतिष्ठा है आप लोगों के जिरये यह काम बड़ी ही आसानी के साथ अरुपकाल ही में पूरा होसकता है। आशा है कि उक्त श्रीमान मेरी इस तुष्छ प्रार्थना पर अव-इर भ्यान दंगे ।

प्रार्थी नायूराम सिंधई जैन

मोट:—एक सेन्ट्रेज जेंन का जिंग की आवश्यका और
महत्ता सर्व प्रकट है। जैन समाग के कतियय शिद्धान सक्के
जिए प्रापना जीवन समर्थण करने थी तैयार है। परम्तु आवस्यक्ता है कार्यकेंत्र की और रुपए की। हमारे बानवीर चन
बानों को ध्यान देना चिरिं।
—30 स0

प्राचीन खोज प्रवास

भी भाव दिल जैन परिषद् ने प्राचीन छेती के संगृह करने का जो प्रस्ताव स्वीकृत किया है, उसी के अनुका में हम लागी ने यथाराक्य आस पास के मन्दिरों आदि से छेखसंगृह करने का निश्चय कर लिया था। इस ही निश्चय के का में अली-गंज, जलबन्तनगर, और इटावे के नवीन मन्दिर के लेखों का संगृर भी किया गया है जो पेतिहा-सिक विवेचना के साथ शायद शीघ् ही पाठकों के हाथों तक पहुंचेगा । इन छंां से यह श्रच्छी तरह एता चलता है कि किसी समय में इस ओर भदावर प्रान्त में जैनियों का प्रावस्य विशेष रूप में रहा था। चीनी यात्री फाहियान ने जो मधुरा से दक्षिण दिशा में एक जनपर का नामोल्लेख किया था और जड़ाँ पर बहिंसा की विशेषता और साध संघ में विभिन्नता उसने देखी थी, संभव है वह यही स्थान रहा हो। इस ही भरायर प्रान्त में

आज भी जैना की संख्या बाहुत्यता से हैं, परन्तु अब सब अज्ञान में गुसित नाश को प्राप्त होते जा रहे हैं हमें इन भाइयों की रक्षा के लिए विशेष प्रवन्ध करना चाहियं । असहाय सहायकफण्ड की स्थापना कर उसके हारा इन लोगों का उद्घार करना चाहिये। फिलहाल कम से कम उपदेशक भेजकर उनमें ज्ञान प्राप्त करने की उत्कण्ठा उत्पन्न कर देना आवश्यक है। तथा उस उत्कण्ठा के रूप में उन्हें शान संवय करने का सुभीता उप-देशक महाशय के साथ ''घ्पते-पुस्तकालय" (Moving Liftary) की योजना करके जुटा देना परम लाभपूर है। यह कार्य परिषद्ध द्वारा सुगमता पूर्वक हो सका है, परन्तु यह तब ही जब कोई धनवान परिषद के कार्यों में आर्थिक सहायता प्रदान करने की हामी भरले। जो हो परिषद और वानचीर धनवानों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

अपने उक्त निश्चय को विशेष रूप से फार्य में परिणत करने के लिये और भरावर प्रान्त में जैनियाँ के प्राचीन कीर्ति का विशेष अनुसन्धान पाने की आशा से हम और हमारे मित्र परिपद के दो सइस्य, श्रीयत या० शिवचरणलाल जी और श्री बानू अमर चन्द्र जी दस प्राचीनता की खोज मैं प्रयास करने को इस प्रान्त में प्रवास कर गये। जमुना की गहरी कन्दरायं और मीलों वीहड़ वन मानी संसार की भयानकना बनलाता हुआ हमें कालिन्दी के कलकलनाद करने सलिल धारा के पास खड़ा देखता अष्टहास करने प्रतीत हुआ ! जमुना पार हुए! चट क्वीरा में दाखित हुए! यहां पर जो दृश्य देला यह तो संसार की नश्तरता का चौखा चित्र था। जमुरा की गत दादण बाद ने कवीरे का यास्तव में कच्चूमर ही धना दिया था। पुरता आलीतात सकान जो कभी अपनी हृढ़ता और िशालता में इँठ एडे थे-जो कभी भी भुकता उस समय स्त्रीकार न करते थे-बही आज धराशायी हुए अपनी मुहता पर मानों पश्चाताप कर रहे थे। कहतेहैं बादशाही जसावे में यह म्मान थ्यापार प्थान था । बास उन्यसने यहाँ पर चाल् थे वहाँ चहुवाण बंशी राजाओं का राज्य था। सं० १६११ में नृप महेन्द्र सिंह रोज्याधिकारी थे। यही गदी आजकल नौगांच में स्वान्तरित हो गई है। इन का उजड़ा किला आज भी अगुनानट के मेरे भंभावायु के भकोरों से सांव २ शब्द करता मनुष्य की निष्ड्रता पर रोप प्रशट करता प्रतीत होता है। आज का बहुत कुछ उज्रडा कचौरा अपनी पूर्व की समृद्धशाली दशा का परिचायक **है। यहाँ ३-४ घर गोलालारे और लमेच्यू जै**नियों के

हैं। एक पाचीन पुख्ता विशाल जिन मन्दिर भी है। इसका मुख्यद्वार दर्शनीय है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिमाओं और यंत्रों के लेखों की प्रतिलिपि ली। यहां संवत् १४७१ तक के यंत्रादि है! यहां से हम लोग अगाड़ी बढकर राजा की हाट होते हुए महाराज भदावर के राज्यस्थान नीगांव पहुंचे । राजकीहार में महाराज भदावर का बागावि पुरुता इसारतं वनी हुई हैं। और एक छोटा सा बाजार भी राज्य की ओर से ज्यवस्था होते पर छग गया है । यहां जो दाहर से १-२ घर देनियों के आए हैं उन्होंने ही अपने में प्क पूक्तिक प्तिथिम्ब छाकर स्थापित करली है। यहीं लीकानुसार प्रजापादाल करते रहते हैं। नीगांव तक पहुंचने में हजारा मार्गपर्यटन ठीक श्चंग्रेजी गणनांक के नौ की उल्टी शक्ल का होगया था। जसूना की कन्दराओं के कारण यहे चक्कर से नीग'व पहुंचना होता है। परन्तु अब आशा की जाती है कि महाराज भवाबर एक सीधी सड़क शीव बनवार्वेगे। हसने नौगांच के विषय में जो फर्पना की थी, ठीक उसके प्रतिकृत रूप में उसके दर्शन हुए। होती और खड़ी हुई ऊँची कन्दराओं के बीच में होकर नौगाँव पहुंचा जाना है । राज-गहल और राजकीय 8 इनारती को छोड़कर नीगांब बिलकुल एक मान्ती गांव ही है। राजकीय झार-रती में राजा महेंद्रपालसिंह का मन्दिर अच्छा वना है। वहां राजपुरुषों की मुनियां स्थापित बतलाई गरें। वहीं एक भाग में राजकीय हकीम रहते हैं। यहां से जमुना और उसुनातट का रमणीय द्वश्य अपूर्व दृष्टिगत होता है यहाँ सिर्फ दो घर छमेच जैनियों के हैं। इन्हीं में एक राजा के मोदी हैं।

करी के साथ भी मन्दिर जी के दर्शन करने गये, बैंदों की देशों देखेंकर हमें हर्व के स्थान पर शोक को अनुभव करना पड़ा हैगांव के किनारे उजहेरूप में एक कच्चा घर है। उसती के भीतर एक छोटी सी फीडरी में जिलोकपति भी तीर्थकर भगवान की धानुं और पायाण की १३ मृतियां विराजमान हैं। इनमें सं १३= अभी एक मूर्ति प्राचीन है। यहीं हाथ भर से लेकर आध बिलस्त के परिमाण के १६ बिन्न भी हैं। इनमें सं० १९२० के 8 यन्त्र विशेष षर्रानीयं हैं। इनकी प्रतिष्ठा भ० विश्वभूषणदेव द्वारा **प्रदेशी और इनकी स्थापना गोलारे श्री म**ल्ले ने कराई थी। इन पर जो ताँबे के रङ्ग का रंगसाजी का प्लास्तर (Coating) है वह टीक आज कल के (Enamelled Ceating) के सदृश है । खुबी यह है कि उनका रोज़ाना प्रक्षाल होते रहने पर भी वह र्घनिक मी घरत नहीं हुआ है। यह वेशी कारीगरी के सासे नमूने हैं। उन्हीं में एक श्री पाश्वैनाथ के यन्त्र में भ्री पार्श्वनाथ मगवोन् की और धरणेन्द्र पंदुमावती की मूर्तियां भी उकेरी हुई हैं। इसके षिति हमारे देखने में यन्त्री की मृतियाँ नहीं आई थीं। इन मृतियों और यन्त्रों की रक्षा समुचितरीति से हो इस कारण वहां के जैनी मुखिछा पोदार महाशय ने अपने घर के निकट उनके लिये चैत्या ख्य वनाने का यचन दिया है। भाशा है, उसकी वह पूर्ति शीघू करेंगे। हमको यह जानकर दुःस है

कि इन धर्मवत्सल महोदय ने ज्यों त्यों कर मन्दिर बनवाने को मंदिर में ईंट भी एकजित की बीं, परंतु राज्य ने अपने कार्य में उन्हें से लिया। बास्तव में राज्य द्वारो धर्मायतन की दशा समुकत न हो सके तीं वह उसके लिये कदोपि भी शोभनीक नहीं हैं। आशा है धर्मवत्सलता के अबुह्नए में महाराज भदा-वर इस ओर ध्यान देंगे। जैनी भाइयीं से शास हुआ कि कुछ वर्षी पहिलं यहाँ जैनियों के २० घर थे। उनमें से कुछ तो व्यापार प्रसंग से बाहर चले गये और शेप अज्ञानता में पड़े २ काल की कुटिल गति से केवल दो हो रह गये। यह जैनियों के पतन का प्रत्यक्ष दृश्य है। इस और के सर्व भाई अब भी अ-झानता के अन्धका में पडे हुए ज्यों स्पी कर अपना जीवन ध्यतीत कर रहे हैं। यहाँ के जैनियों की शिक्षा का नम्बर Census Report के नम्बर से चित्रकुल चरअक्स मिलंगा। जाति नेताओं और दयाल भार्यों को इस करणदशा पर दया लोगा खाहिषे। तथा नदीन जिन विश्वों की स्थापना करने के पहिले इन प्राचीन विम्वी के उद्धार और उनकी यिनय के लिये यहाँ के जैनियों की रक्षा का प्रबन्ध करा अट्ट प्ण्यसंचय करना चाहिये । तथा अन्य सदस्योंका प्रस्तावानुरूप अपने यहाँ के लेखीं का संप्रह शीय ही भेजना चाहिये।

-30 tio 1

कांच की शीशियां

स्पदेशी!

सस्ती !!

बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां नैयार कराकर बाज़ार भाव से कम सूच्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

भार० एस०जैन एरङ ब्रादर्स, महावीर भवन, विजनौर

सम्पादकीय टिप्पिशायां

जैन जाति की उन्नति श्रीर परिषद लक्ष्मीपात्रों की कृपा

त्रिय भाइयों ! जैसे अपने शरीर की रक्षा-मात्र सोचने से नहीं होती है किन्तु अच्छी तरह सोच विचार कर स्वास्थ्ययुक्त भोजन पान बस्नादि देने से होती है अथवा जैसे आत्मा की उन्नतिमात्र कान व अद्धान से नहीं होनी किन्तु सम्यन्दर्शन व सम्यक्षानसे विशिष्टहों कर सम्यन्चारित्रके अभ्यास से होती है वैसे जैन क्षांति व जैनचर्म की रक्षामात्र सोचने व प्रस्तावों के पास करने से नहीं होती है किन्तु अच्छी तरह सोचे हुए व निर्णय किये हुए प्रस्तावों के अनुसार आचरण करने व कराने से होती है।

निय बन्धुओं ! भारतवर्णीय दिगम्बर जैन परिषद का जन्म इसीलिये हुआ है किइसकी एक सङ्गठित उत्ते जना के छारा इसके सभासह, मितिनिध व मायः स्त्रीपुरूप कार्यक्षेत्र में उत्तरकर साहस के साथ साथक कारणों का प्रचार और विरोधक कारणों का यहि कार करें तथा दृष्यक्षेत्र काल को देखकर दि० कैन शास्त्रों के सेंडान्तिक उद्देश्योंके अनुकूल जो र साधक यथार्थ उद्देश्य की सिद्धि के लिये जान पड़े उनको निर्मय होकर कहें, समकार्वे, आप उन पर चलें तथा दूसरों को चलने का मार्ग बतार्वे।

् हमारे ऋषियों के रचे हुए प्राचीन शास्त्रों में जो रहस्य भरा है व जो मनुष्यसमाज की उन्नति का मार्ग वताया है उसी को आधार मानकर बिना किसी भय के यदि परिवद होरा उपायों की योजना की जायगी तो विना किसी संदेह के जैन धर्म व जैन समाज की उन्नति होगी।

हरएक गृहस्य को अपना नित्य का चारित्र श्री समन्तभद्राचार्य के कथनानुसार बनाना चाहिये। उन्हों ने श्रीरत्न कांड श्रामकाचार में गृहस्थ के आठ मूल गुण बताप हैं। येही एक साधारण व्यक्ति को राज्य च पंच के दंडों से बचाकर लोकमान्य बनाने वाले तथा चित्त को निराकुल व धर्मात्मा बनाने वाले गुण हैं।

मद्य बांस मधु त्यागैः सहासु व्रत पंत्रसम् । अष्टीमृत ग्रेणा नाहु र्मृहिणां श्रमणोत्तवाः ॥

अर्थात्—यदिरा, यांस य मधु न खाना तथा
अहिंसा सत्य, आस्तेय, स्वर्जी संतोष; परिग्रह प्रमाण
इन पाँच अणुवर्तों का अभ्यास करना जो गृहस्थ
नीति से ज्यापार करेगा यह पैसे को नीति से खर्च
भी करेगा। वह स्वयं अभ्यायों से, व्यर्थ व्ययों से,
यचेगा। जो स्वयं कामसेवन में घ परिग्रह में
संतोप रत्नने का अभ्यास करेगा यह अपने पुत्र
पुत्रियों को अवश्य शिक्षित करके नीति पर चळायगा तथा उनका जीवन संतोपपूर्ण हो पेसा
विवाहादि सम्यन्ध उनका करेगा। स्वयं ही बाल
विवाहादि का विरोध होजायगा। विय भाइयों!
परिपद् हारा जैनधर्म का गौरय बढ़ायो, अजैनों
को झान का अमृत देकर मेम से उनका जैनी

बनाओं और उनके साथ आदर का व्यवहार करो उनके साथ साधर्मीएने का व्यवहार करो,जाति से फुरितियों के हटाने में स्वयं अन्नगामी हो। समाज में बीर पुत्र उत्पन्न हों इस लिये सम्बन्ध मिलाने का क्षेत्र प्राचीन काल के अनुसार विशाल बनाओ योग्य संतानों से ही समाजकी शोभा हो सक्ती है।

परिषद द्वारों जो प्रस्ताव निश्वत हों उन में यहुत से प्रस्ताव के प्रचार के लिए धन की आवस्यका है, धन के लिये लोगों से चंदा करके एकत्र
करना यह सहज उपदेश सब कोई जानते हैं-परंतु
आवश्यको यह है कि जैसे महामंत्री, पत्रसम्पादक
आदि अपना तनमन देकर समाज सेवा करने पर
तरार हैं उसी तरह कुछ लक्ष्मी पात्रों को स्वयं
अपना धन परिषद के प्रस्तावों के प्रचार में लगा
देने का बलिदान करना चाहिये। यदि कम से कम
एक भी धनवान इस बात पर तथ्यार होजावें कि
हम हज़ारदाहिज़ार प्रति वर्ष इस परिषद हारा
कारों के होने में खर्च करंगे तो सहज में तनमन
हमाने बाले रुपयों की चिंता छोड़ कर केवलकार्थ
की चिन्ता में ही, अपनी शक्ति को लगायें—

हमारे धनवान भाइयों को स्वगंवस्ति सेठ माणक चंद हीराचंद बम्बई का उदाहरण ग्रहण करना चाहिये। बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभा के प्रस्तावों के प्रचार में धनकी सहायता देनेवाले आप मुख्य लक्ष्मीपात्र थे आपके जीवन में तो आप धन से मदद दे सभा के कार्य चलाते ही थे परन्तु सापने आप के पीछे भी सभा के कार्यों में सदा धन की सहायता मिलती रहे पेसी योजना कर दी, जिससे प्रीमास्त्य का काम निर्विध्न स्टल रहा है उपदेशक भी घूम रहे हैं' यद्यपि प्रान्तिक समा के नाम से नहीं किन्तु कार्य वही हो रहा है को प्रान्तिक सभा करती। जैनिपित्र भी आपके घ आपके कुटुन्वियोंकी छन्नछायामें बरावर समाजकी सेघा करता आरहा है। इसी तरह हमारी भावना है कि परिपदके प्रस्तावों के ऊपा भी किसी लक्ष्मी-पात्र को लक्ष्मी का उपयोग विनासंकोच करने का साहस दिखाना चाहिये। विना धन के कोई उस्रति के काम नहीं हो सकते हैं।

यह कैन सनाज हर तरह अवनित के गर्त में धंसी चली जा रही है यदि हमारे परीपकारी भाई उपकार का दृष्ट प्रयत्न न करेंगे तो अपने कर्तव्य से च्युत होकर जैसे आलस्यमें कोई अवना घर चोरी से लुटने दे धेसे हम अपनी जाति को अज्ञान, अनेक्य कुरीति, आदि लुटेगें से लुटने देंगे और इस मुर्खता के पाप के भागी होंगे।

—सम्पाद्क

जैनी श्रोर म० गांधी।

सर्वमान्य मण्गांधी जी ने जो व्याग्यान गरा काँग्रेस के सभापति की हैंसियत से दिया था, वह वस्तुतः भारत की वर्तमान संकटापत्र दशा के पूर्ण अनुकृत्य था। आज मतिमन्तता के होते हुए भी आपसी ऐकाता की कितनी आव-श्यक्ता है वह उससे भन्नीभांति प्रकट है। वर्तमान बात बनाने के लिये नहीं है प्रत्युत जी तोड़ कार्य करने के लिए है। इस ही को लक्ष्य कर मण्जी ने कांग्रेस प्रतिनिधियों से परस्पर एक दूसरे पर विश्वास रखते हुए चर्का-प्रचार और विदेशी बहि-एकार में जी जान से संलग्न हो जाने की प्रेरका को है। यथार्थ में आज भारतवासियों की आधिक दशा को उन्नत बनामे के लिये यह चर्चा अचूक प्रयोग है। हमारे जैनी भाइयों को भी भारतीयार को लिये कम से कम मा जी के इन बचनों की तां पूर्ति करना ही चाहिये । वैसे तो म० जी ने क्रेनियों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा है, परन्तु को विचार उन्होंने अल्प संस्थक (Minorty) आतियों के सम्बन्ध में कहे थे, उनसे संभवतः हमारे कतियय भाई जैनियों की सर्वत्र प्रथक प्रति निधित्व की मांग को अनुचित सम में । परन्त म॰ जी वर्तमान की अवस्था को देखते हुए उसकी बुरा नहीं कहते। और वस्तुनः आज के भारत में परस्पर अविश्वास और स्वार्थ परता की दशा में शहप संख्यक जातियों को अपने स्वत्यों की रक्षा के लिये प्रथक प्रतिनिधित्व आवश्यक ही है। इस दशा का प्रत्यक्ष प्रमाण मुस्लिम, सिक्ख और पारसी प्रतिनिधियों का प्रथक निर्वाचित होना सर्व समझ है। पेसी दशा में अपने स्वत्वीं तथा अपने रीतिरिवाजों और सभ्यता की रक्षा के छिये क्षाज जैनियों का सर्वत्र अपना प्रतिनिधि भेजने की आकौंक्षा प्रकट करना सर्वधोचित है । बेल गाम में माननीय पंठ मालवीय जी ने जो हिन्दू-महासमा की पुष्टि में विचार प्रकट किये वह

भी इस आवश्यका को उपयुक्त प्रकट करते हैं। तिस पर स्वयं म० जी भा इस बात को भारत की भवाईके लिये उचित्र सम्भते हैं कि सर्व जातियाँ और सर्व विचारों के मजुष्य काँग स में सम्मिलित हों। तो पंसी दशा में हम महातमा जी से सानु-रोध प्रोरणा करेंगे कि वह कांगोस कमेटी और पेक्यता सम्मेलन में जैन प्रतिनिधि रखनेकी योजना करें। आज जैनियों की असस्था का और उनके मत को प्रकट करने वाला हमें उक्त संस्थाओं में कोई भी नहीं दीखता। अत्यव विश्वास है कि म० की हमारे इस कचन पर अवश्य ध्यान देंगे । वैसे यह माननीय है कि भारत राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रथपत्य का भेद उठ जाना चाहिये और इस अवस्था में जैवियों को अपने अलग अस्तित्व को प्रकट करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। परन्त जब तक मुस्लिम, सिक्ख और पारिसर्यों का प्रति-निधित्व अलग माननीय है तबतक जैनियों को उसके लिये रोकना एक तरह उनके अधिकारी की उपेक्षा करना है । वस्तुतः यह जैनियों के लिये घोर अपमान है और इस को मेटने के लिये उन्हें भरकस प्रयत्न करना चाहिये।

---- Eo Efe

वार्घा के ऋधिवेशन में परिषद व जैनियों का कर्तव्य

यह ता सब को बिदित है ही कि परिवर् का कि जैन समाज के इन्छ हितैची विज्ञानी ने यह जान अन्म देवळी अहोत्सव में उस समय हुआ था अर्थ क्रिया था कि महासभा में वास्तविक काम करने

वालों के लिये स्थान नहीं है। और यदि वे जैन समाज को कालके गुल से बचाना साहते हैं तो उन को महासभा से पृथक् होकर संघद्वारा जैनसमाजके उत्थान व जैनधर्म के प्रचार का कार्य करनो चा-दिये। इस उद्देश्य को अपने सामने रसकर परिपद् के कार्यकर्ताओं को आगामी वर्ष के लिये कार्यक्रम बनाना चाहिये। इसी भाव को लेकर लेखक अपने विचार समाज के समक्ष रखने को तत्वर गुआ है।

सब से(पड़ा दोन जो इल जैनसमाज में फैला हुआ है वह परस्पर हेप व फूट है। १२ लाख संख्या बाली जैन सनाज पहिले से ही दिगम्बर व श्वेता-म्बर हो संप्रदायों में विभक्त थी और उनकी परस्पर मुकद्मेवाजी से जो तीर्थ स्थानी के सम्यन्ध में हो रही है, चिह्नल थी परन्तु इनमें से मत्येक सम्प्रवाय को उसके आन्तरिक भगडों ने विलक्कर ही काली-म्मुख करिया दिगम्बर समाज को ही छीजिये हस में फुट का साम्राज्य दिवलाई देता है कुछ समाचार पत्र अवने कर्तव्य को भूरुकर द्वेपोत्पादक लेख लिख कर समाज को उकसा रहे हैं जिससे समाज में हेव के भाव वढ़ रहे हैं और समाज वास्तविक फार्य की ओर से शिथिल होती जाती है इन को का एकता के किये लिखना कैसे कार्यकारी होसकता है? क्या फुट इपी अग्नि पर है पोरपादक लेकों के घृत हालने से फूट की आग बुभ सकती है ?

अतएव परिषद् व जैनियों का कर्तव्य है कि बे इस फूट को समाज से दूर करनेका प्रयत्न करें। फूट प्रेम के द्वारा जीती जा सकती है Love conquers all 'प्रेमो जयित संसारः' अर्थात् प्रेम द्वारा संसार जीता जा सकता है। यह प्रेम शब्द अहिंसा को कंपान्तर है, 'जिसकी जैनवर्म है बढ़ी 'मान्यता है अतः जैनियों को और परिषद् के कार्यकरां में व हितैपियों को विशेषकर प्रोम के द्वारा प्रूटकपी शत्रु का संहार कर देना चाहिये। उन्हें अपने या अपने मित्रों के ऊपर किये हुए, कटा च बाहोपीं, को सा-धुओं की भाँति सहन कर के उत्तर न देना चाहिये। यदि विचारों पर आक्षेप किया गया हो और उस से सामाज में भूम फैलने का डर हो तो अपने शुद्ध पिचार प्रकट कर देना चाहिये। यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि परिषद का पत्र 'बीर' अवतक इससे मुक्त रहा है और आगामी भी इस दोष से मुक्त रहेगा।

समाज में कितनी ही सभायें कितने ही काल से कार्य करते दिखाई देती हैं परन्तु उन्नति कुछ भी दिखाई नहीं देती। समाज में इंब्रिय विलासिता शिथिलता कायरता,द्रेष तथा असत्य व्ववहार बढ़ते हये दिखाई देते हैं तब कैसे जैन धर्म जो अहिंसा (प्रेम) सत्य संयम निर्भयता कार्य तत्परता का शिक्षक है और जिसके प्रवर्तक क्षशीकल शिरोमिक तीर्यकर हुये हैं कैसे उन्नति करता हुआ कहा जास-कता है। तब परन उठताहै कि उन्नति क्यों नहीं होती ? उत्तर पस्ट है कि अब तक समाबी में व्या-ख्यानादि ही होते रहे परन्तु उन बातों को जो व्याक्यानों में कही जाती है इषयं व्याक्यानदाता भी काम में नहीं छाते क्या उपदेशरूपी औषधि को विना प्रयोग में हाये हुये दुर्ज्यवस्थाका रोग दर हो सफता है ! क्या जैन धर्म के बाचार्यों ने अज्ञान (सम्बक्त) के ही जाने पर ज्ञान के साथ २ चारित्र को आवश्यक नहीं वतलाया ? अतः समाज्ये अन कहने मात्र से काम नहीं बलेगा बरम् करने से थंकेमा । अप्रकृषका प्रसीत होती है कि बाक्तविक

(डोस) कार्य करने के लिये परिषड् की आधीनता में 'बीर संख' स्थापित किया जावे। उस के समा-सड़ वे ही हो सकेंगे जो निम्न लिखित वार्ते करें।

१-जो जैन धर्म अकानी सप्तव्यसन त्यागी पेच अणुवत धारक अर्थात् व्रतमितमा के धारक हो ।

२-जो जैन धर्म फैलाने में अपना समय व आमर्नी का शनांश देने को तच्योर हों।

३-जो कुरीतियों व व्यर्थ व्यय को स्वयं किसी दशा में भी न करें तथा इन को रोकने के लिये कटिवद्ध हों और भावश्यका पड़ने पर सत्याग्रह के लिये भी तथ्यार हों।

४-छोटी २ जैन जातियों का बेग के साथ हास देखकर उन जैन जातियों में जिन का काना पीना विचार रहन सहन एकसा है रोटी बेटी ब्य-बहार प्रारम्भ करदें तथा करावें।

५-विद्यालयों में पेसी शिक्षा का प्रक्रिय ऐसी रीति से करें कि वड़ां से विद्यार्थी, विद्वान्, उत्साही, जैनवर्म की सेवा के इच्छुक निकलें और उसने अपना जीवन देने के लिये, तैयार हों।

६-अपने ऊपर किये हुए आक्षेपों का उत्तर अब तक कि उनसे समाज में मिथ्या भूम फौलने का हर न हो न दें।

७-स्थान २ पर परिवद् की शाखाय स्थापित करके उसके प्रस्तार्थों को प्रयोग में लावें।

द-परिषद् के कार्यकर्ताओं के लिये आवश्यक हो कि वे वीरलंघ के भी सभासद हों। यह अवश्य है कि ऐसे कीरसंघ के सभासद थोड़े होंगे। थोड़े होने से कोई हानि नहीं क्यों कि ये सभासद हृदय से काम करने वाले होंगे इनके व्यवहार से जैनधर्म

टपक्रेगा-इनमें एक आकर्षणशक्ति होगी जो वृसरी को उच्च बनाने और अपने में सम्मिछित होने के छिये आकर्षण करेगी।

परिषद्द को उपर्युक्त वीरसंध स्थापित कर्षें के अतिरिक्त उपर्येशक विभाग के कार्य को अधिक बढ़ाना चाहिये—जब तक जैन धर्म के प्रचार का कोर्य नहीं होगा तब तक जैनी वास्तव में जैन कह-छाने योग्य न होंगे और न अजैन जनता में जैनधर्म फैल सकेगा। इस कार्य में भवतक दो वातें बाधक रहीं (१) धनाभाव (२) योग्य प्रचारकों की कमी परिषद्द को उचित है कि उपर्युक्त कार्य के लिये एक अच्छी रक्म जमा करलें जिसके द्वारा भारत या भारत के बाहर ज्याख्योन पुस्तक आदि के द्वारा जनधर्म फैलाया जा सके। तथा स्याद्वाद विधालय आदि को हाथ में लेकर ऐसे योग्य विद्वाक स्थार करें जो;जैनधर्म के प्रचार का कार्य कर समें।

जैनधर्म के गौरव को सर्व साधारण में स्था-पित करने के लिये; इतिहास विभाग को इह करना चाहिये। परिषद के इस कार्य को उत्तमता से चलाने के लिये कमसे कम एक लाख रुपये के फंड की आवश्यकता है। जैनधर्म प्रभावनार्थ प्रतिवर्ष लाखों रुपया ज्यय किया जाता है सबमें बड़ी प्रभा-धना जैनधर्म की उसी समय होवेगी जब उसकी प्राचीनता व उत्तमता का सिक्का इतिहास असु-सन्धान द्वारा सर्व साधोरण, पर जम जावेगा।

परिषद् होस काम करने के लिये स्थापित की गई है, प्रत्येक जैनी को जो जैनधर्म का बढ़ना व जैन समाज की उन्नति चाहता है परिषद के अधिवेशन बार्धा में जो २७-२६-२६ जनवरी को होगा प्रधारना चाहिये। और आगामी वर्ष के कार्य के

निर्णय में सहायता देनी चाहिये।

ं नोट-जैनियों को चाहिये । कि स्थानीय सभा पंचायतों की ओर से वार्घा अधिवेशन के लिये प्रति-निधि चुनकर सूचना देवें। भवर्षाय---

रतनलाल थी. एस सी. एल. एल. थी. मन्त्री-जीनपरिषद्, जिन्नीर

साहित्य समालोचना

श्चात्मरामायगा-(अंग्रेजी) श्री कशंरानन्द हिन्दू संन्यासी प्रणीत और श्रीमान् चम्पतराय जी जैन हरदोई द्वारा अनुत्रादित च प्रकाशित। पृष्ठ ६० मुल्य १॥ छवाई सकाई अतीव सुन्दर।

बाब् बम्पतराय जी ने अपने अपूर्व अथक शा-स्त्रीय परिशोलन द्वारा जो अङ्कृत खोज की बात अपनी विविध पुस्तकों में प्रकट की हैं वह अवश्य धार्मिक संसार्धे एक नवयुग उपस्थित करने वाली संदेश-सचिका ही कही जा सकती हैं। आपने यह स्रमाण सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन धर्मों में एकाध को छोड़कर सब के शाख अलंहत भाषा में लिखे हुए हैं। इसलिये उनका शब्दार्थ लगाना उस के अर्थ का अनर्थ करना है। ईसाइयों की बादविल भी इस ही रूप में लिखी है और मुसलमानों का करानशरीक भी, यह उन्हीं पुस्तकों के हवालों से प्रमाणित है। हिन्दुओं के वेदादि भी उस ही ढंग से लिखे हुए हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हिंदू आचार्य प्रणीत प्रस्तुत पुस्तक ही है। इसमें सम्पूर्ण रामायण की कथो को अलंकार की भाषा में लिखा हुआ प्रकट किया है। इसलिये उसका भावार्थ लगा कर प्रणेता ने उसे खासे आत्मसिद्धांत के वर्णन में परिणत कर

दिया है। इसमें दशरथ राजा न होका मन हैं-कीशल्या निवृत्ति-रामचंद्र कान हैं। इसी तरह सबका निक्ष-पण किया गया है। इस के अपूर्व आत्मरस का आस्वादन पाठ करने से ही प्राप्त होता है। पाठकों को अवश्य पढना चाहिये।

गऊवाणी-भी उक्त महानुभाव द्वारा प्रकट हुई है। लेखक हैं श्री ऋषभचरण जैन। पृष्ठ १२६ मूल्य १) छणाई सफाई अच्छी है।

इस पुस्तक में धर्म के नाम पर जो हिंसा हो रही है उस को लश्य करके सब धर्मों का छानवीन की गई है। जिस प्रकार असहमतसङ्गम आदि पुस्तकों में अन्य धर्मों के भाषार्थ प्रकट किये गये हैं उसी तरह इसमें भी उनके भाषार्थ से अहिंसा की सिद्धि की गई है खूबी यह है कि प्रश्नोत्तरक्षप में इस सरलता से सेंग्रान्तिक विवेचना कीगई है कि हर कोई खुगमता पूर्वक समभ सकता है और उसको हदयंगम कर सकता है। प्रत्येक सहित्य प्रेमीको इसका पाठ एक बार अवश्य करना चाहिये। घस्तुतः ऐसी ही पुस्तकों के प्रचार से संसार में हु:खों का अन्त होसकता है। और परस्पर प्रेम भावनायं बढ़ सकती है। दातारों को ध्यान देना चाहिये।

बृहद जैन शब्दार्शब—रचिता बाबु विहारीलाल जी, प्रकाशक बाबु शान्तिचन्द्र **जैन, बाराबंकी।** छपाई सफाई अच्छी है। इस जैन कोष के २०८ पृष्ठ हमको समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं। वस्तृतः जैनसमाज में एक ऐसे कोष की अतीव आवश्यकता थी । इसकी पूर्ति इस प्रकार होते देखकर हमको परम हर्ण है। वस्तुतः केवज अपने ही वल पर इस तरह का एक महान कोप को तैयार करने का कार्य उक्त याबू जी के लिये प्रशंसनीय होने के साध २ उनके साहित्यप्रेम का परिचायक है। निःस्वार्थसेवा का यह खासा नमुना है।कोप की तैयारी जिस विशतु और विशिष्ट रीति सं रोगही है उलको देखते हुए कहना होगा कि यह एक पूर्ण और प्राताणिक प्रन्थ जैन धर्म के सम्बन्ध में पूर्ण हान प्राप्त करने के लिये होगा। २०= पृष्टों में 'अकार' ही चल रहा है और असी बाकी है। प्रत्येक शब्द का पूर्ण विवेचन दिया गया है। परन्तु उत्तय हो कि शब्द किस भाषा का है और उसकी उत्पत्ति कहां से हैं इसके छिये संकेतांक अक्षरी में हवाला देदेगा महत्त्वशाली रहता तथा किसी मत का आधारभूत प्रमाण भी यथा ह्यान दिया जाय इसकी आवश्यकता है। आसा है आ-गामी इनकी पूर्ति होजागी। प्रत्येक पाउक को इस कोप को मँगाना चाहिये।

जैनसमान सुधार लेखमाला—यह मैं कोले आकार का मासिकपत्र अभी मद्रास से मुनि वरमा-नन्द जैन के सम्पादकत्व में प्रकट होने लगा है। मद्रास प्रान्त से हिन्दी भाषा के इस सामाजिक सुधार के हिमायती पत्र का स्वागत करते हमें परम हर्ष का अनुभव हो रहा है। हम मावना करते हैं कि यह विशेष उन्नति प्राप्त कर समाज में आव-श्यक सुधारों की सृष्टि कराने में सफलप्रयास हो। लेख समाजोपयोगी ओजस्विनी भाषा में हैं। वा॰ मू॰ २) है। पता-मगनमल कोचेटा, व्यवस्थापक न॰ १६६ बंगाली बाजार, सेंटथामसमाउन्ट-मद्रास

विशेषांक-अभी हाल में जैनपत्रसंस्तर में दो विशेषांक प्रगट हुए हैं। उनमें से एक तो इताहा-बाद जैन होस्टल से प्रगट होने वाली (अंग्रेजी-दिन्दी की)शैमासिक पत्रिका जैन होस्टल मेगजीन का यनिवसिटी कन्योकेशन अंदा है। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी यह विशेष सज धज के साथ प्रगट हुआ है। जुन्दर मनोभाहक छपाई और स्वेत स्थूल-सचिदकण कागृज़ सहसा पढ़ने के लिये जी ललचा देना है। तिस पर भीतर दो रङ्गीन और १८ सादं चित्र उस उत्कडा को हिगुण कर दंते हैं। चित्र सब ही लब्धवतिष्ठ पुरुषी और दर्शनीय स्थानों के हैं। लेखों का संप्रह भी उत्तम हुआ है थद्यपि जैनपत्र की दृष्टि से जैनधर्म संवन्धी हेखी को कमी खटकर्ता है। अन्य विषय सम्बन्धी छेखाँ में जो यात्र के सिखान्त के विरुद्ध हो तो उस पर संपादकीय टिप्पणी देदेना आवश्यक है। ऐसी ही आवश्यकता की उदेशा इस अंक के देख Earth and its evolu ion " शीर्वक में की गई है। यद्यवि वैसे इस अंग्रेजी भाग के सर्व ही लेख पठनीय हैं। हिन्दी में भी दो लेत और तीन चार कितायें पर-भीय हैं। कवितार्वे महत्वशाली और होगहार जैन कवियों की रचनायें हैं। इस्रप्रकार ८≂ एउंगे का यह अंक सर्वथा ही पठनीय तचनि संत्राहणीय ह हान अपने शिय मित्र मां० त्यानीचन्द्र जो सम्पादक को

इस सफलता पर हृदय से वधाई देते हैं। प्रस्तुत लंक का पृथक सूच्य १) है। बा० १॥) है। दूसरा किशोपांक जैनसाहित्य संसार के श्विर परिखित पत्र स्रस के ''दिगरूक्र जैन' का है। इसके जैन धर्म की प्रभावना में तल्लीन उत्साही संपादक सेठ मूलचन्द किसनदास की कापड़िया जिस सुन्दरता से इसके विशेषांक करीब १२, १३ वधों से निकाल पहे हैं वह किसी से लिपा नहीं है। उसी तरह अब की भी श्री महाजीर निर्वाणीयलक्ष्य में जो उन्हों ने ११२ पृथ्डों का सुन्दर सचित्र श्रंक प्रगट किया है वह इसके गत विशेषांको से लपाई सफाई में उत्तम प्रतीत होता है जिसके लिये हम संपादक महोदय को बधाई अवश्य ही देंगे। इसमें मुनियों, त्यां गियों और जैन समाज के यिद्वानों आदि के २६ जित्र इस अंक की शोभा बढ़ा रहे हैं। पृष्ठ छौटते ही म० गांधी जी का तिरंगा मनमोहक चित्र दर्शनीय है। यह सब चित्र चौखटे में जड़ कर टांगने से कमरे की शोभा को बढ़ा सकते हैं। छेख और कविताय सब मिलकर ४१, शिक्षापद पठनीय हैं। एक लेख अंग्रेजी का भी है शेष भाषा और गुजराती के हैं। इस अंक का मृत्य १) और वा॰ मृ० २) है। पाठकों को अवश्य ही इन दोनों विशेषांकों के दर्शन करना चाहिये।

--उ० सं०।

संसार दिग्दर्शन

समाज

-- वर्धा में भारत दिगम्बर जैन परिषद आज तार द्वारा मालूम हुआ है, कि कि चार्था जियेशन की तिथि २७--२८ जरवरी ही रहेगी, प्रार्थना है कि भारतदिगम्बर जैन परिषद् के सद-स्थ गण अवस्य पधारकर वार्थिक अधियेशन से कास उठायेंगे।

---मन्त्री परिषद्

--- सस्तनक में ग्योत्सव मेला, मिति साध सुदी प को श्री देवाधिदेव ११ बजे दिन को श्री मन्दिर जी चौक चूड़ी घाली से रथ में बिराजमान होकर बड़े समारोह के साथ चौक बःजार होते हुये अहियागंज पधारेंगे यहां के श्री मन्दिर जी से भी श्री देवाधिदेव रथ में विराजमान होंगे किर रकावगंज डालीगंज होकर जैन गंज में जैन बाग के विशाल सभामंडण में विराजमान होंगे बहां श्रितन पर्यन्त प्जन व भजन का अपूर्व उत्साह रहेगा पण्डितों के उत्तम ६ व्याक्यानादि भी होंगे श्रीमान जैन धर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्रह्मचाड़ी श्रीतलश्रसाद जी तथा न्यायावार्य पण्डित माफिक चन्द जी व्याख्यान वाचस्पति पण्डित लक्ष्मीयन्त् जो आदि सज्जनों के पथारने की भी आशा है इन्हीं दिवसों के अन्तर्गत श्रीजैनधर्मत्रवर्ष नी सभा स्वनऊ व श्रा अवध प्रोन्तिक सभा के धार्षिक सत्सव भी होंगे जैन समाज की अच्छी संख्या में पथारने की आशा है ठहरने शादि का बहुत उत्तम प्रबंध किया गया है वाहर से प्रधारने वाले भाइयों को ४ दिन पहले से सचना दे देना चाहिये।

> -दर्शनाभिलोषो घरातीलाल जैन; मन्त्री जैन सभा (लखनऊ)

-- जैसवालजैन, जैसवाल जैन का ६-९ संयुक्त अह थी० बाबू हजारा लाल जी जैन, थी महेन्द्र भी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो गया । जिन लोगों के पास भूल से न पहुंचा हो वह भाष मंगालें। १॥।) ह० भेज कर ब्राहक होने वालों को ''जैन बिधि से विवाह" नामक पुस्तक मुफ्त ही आर्येगी। -- गेंदा लाल जैन

-- सराहनीय प्रयत्न, हम लोगों की प्रार्थना पर ध्यान देकर जीवदया सभा आगरा कि मंत्री श्रीमान पं० बाबूराम जी विज्ञाशन देवी (देवास) भी वारह हजार पशुओं की बिल हिंसा बन्द करने के लिये उज्जैन देवास सारंगपुर आदि स्थानीं पर भ्रमण कर रहे हैं। प्रतिष्ठित हिन्दू जनता का डेपूरे-शन महाराजसा के पास ले जाने का प्रयतन कर रहे हैं आज के सारगर्भित तेजस्यी भाषण में आपने कहा कि मेरा श्रीवन निरपराध दीन प्राणि-यों को बेमीत मरने से बचाने के लिये हैं इन बलि हिंसोओं के बन्द करने के तीन मार्ग हैं १ राजाका (कानूनन) से वन्द करना। दूसरा,पंडों से मिलकर रजामन्दी से । तीसरा, जनसाधारण में यहिंसा का प्रचार कर हिंसा बन्द करना । यथाक्रम में तीनी मार्गीका अवलंबन करूंगा। प्रभू आपका मदद करें। -रामशरन भोपाल

— पुरक्तारी निवंध जैन धर्म के हास के कारण" और पूज्यवर पं० गोपाल दासजी वरिया और उनकी सेवाएँ शीर्पक निवंधों पर लेख लिखने की प्रार्थना पूर्व अंकों में प्रकाशित की गई थी, खेद है कि अभी तक उस ओर अच्छे लेखकों ने ध्यान न दिया पुरक्तार योग्य एक भी तिबंध हमें अभी तक न मिला। अस्तु हमने दोनों लेखों की अवधि १ मास अधिक करदी है। आशा है। इस धार प्रेमी सःजन उत्तम २ लेख भेजने की आवश्य कृता करेंगे सर्योत्तम लेखकों को पाँच २ रूपये की पुस्तकों पुरस्कार में दी जार्येगी।

मंत्री-जैन कुनारसभा आगरा

रोडवाल में भारतवर्षीय दि०जै०महासभा

सभा में मारपीट—इस वर्ष शेडवाल में अनेक संस्कृत व अंग्रोजी के विद्वान व सेठ प्रधारे थे।

२३ दिसम्बर को रात्रि के समय अधिनेशन
प्रारम्भ हुआ। मङ्गलाचरण के पश्चात् स्वागत
कारिणी समिति के अध्यक्ष श्रीयुत देव गींडा वाब
गौंडा पाटील शेडवाल ने अपना भाषण मराठी में
पड़ा। इसके पश्चात श्रीमान पं० नेपीसागर जी
बण्डी समापति चुने गये और उन्होंने भाषण
कनड़ीं व हिन्दी में दिया रिपोर्ट महासभा को
महामन्त्री जी ने पड़कर सुनाई। फिर सवजक्ट
कमेटी के चुनाव की बात प्रारम्भ हुई रात्रि के
बारह वज्र जाने के कारण सभा का कार्य दूसरे
विन के लिए रक्ता गया।

मण्डप में पुलिस का पहरा था, प्रतिनिधि व सभासदों के टिकट हार पर लिये जाने के कारण देरहोगई और कार्य ३॥ पजे प्रारम्भ हुआ। ५१ नामों की सूची प०ध जालाल जी ने सभा के सामने रक्ता। दूसरी सूची ५१ नामों को धावते महाशय ने रखी। बहुत देर तक विचार होने पर यह निश्चय हुआ कि प०ध जालाल श्रीयुत वोलचन्द्र कोठारी MLC. ब श्रीयुत चौगले वकील सभापति व स्वागताध्यक्ष जो बहुमत से निश्चय कर देंगे वह सर्व को स्वी-कार होगा। पाँची महाशय विचारने के लिये अलग २ चले गये। सभा में झल्लक पार्श्वसागर जी का व्याक्यान समाजोन्नति पर होता रहा। तीन मत (श्रीयुत कोठारी व चौगले व स्वागताध्यक्ष) एक तरफ और शेष दो मत दूसरी तरफ थे। बहुमत

था कि वडी पार्टी के दो तिहाई और पण्डित पार्टी के एक तिहाई हों। प० धन्नामल जी का कहना था कि दोनों पार्टियों के बराबर २ हों। एक मत न हो सका-सभापति जी ने आकर सभा में कहदिया कि कुछ निश्चय नहीं होता, सभा रात्रि को ७ वजे होंगी और स्वयं उठने लगे तब लोगों ने धाबते आदि से पूछा कि लापकी ५ महाशयों की कमेटी में क्या हुआ। धावते सभापति की आहा में बोलना चाहते थे। कुछ लोगों ने हुल्लड़ मचा दिया और धावते कोठारी आवि को मारना शुरू कर दिया। १०-१२ आदिमियों के चोट आई। महामन्त्री जी ने ढँढोरा विटवा दिया कि सभा कल म बजे होगी। दूसरे दिन भी मन्त्रों जी ने काई सभा नहीं की कितने ही प्रतिनिधि समापति के पास गये। सभापति जी ने कह दिया कि मुक्त से काम नहीं होता दूसरा समा-पति करलो।

सभा मण्डप में २५ दिसम्बर की दुपहर को रत्तत्रय सभा को जलसो होने लगा था। इस लिये ४००-५०० प्रतिनिधियोंने दूसरे स्थान पर महासभा का जल्सा सेठ ताराचन्द्र नवलचन्द्र के सभा-पतित्व में किया सारे नीचे लिखे आशय के ६ प्रताव पास किये।

१-प्रस्ताय में श्री शांतिसागर जी महाराज के मुनिसंघ के आसन पर हर्ष प्रकट किया गया । २-सेठ द्याचन्द कलकते वालों की मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया ३-गृन्ध मुद्रण के विरुद्ध महासभा के पहिले प्रस्तावों को रद किया गया । ४-प्रिवीकोंसिल में पूजा केस की पैरबी के लिये इक्सलैंड जाने के लिये श्रीयुत चम्पतराय जी वैरि-रिटर से प्रार्थना की गई। ५,६ नवीन चुनाव

हुए जिसमें सेठ ताराचन्द नयस बन्द जी सभापित, श्रीयुत वालचन्द कोठारी महामन्त्री व वा० अजित प्रसाद जी बकील सम्पादक जैन गज़ट व अन्य ४६ उत्साही विज्ञान व सेठ प्रबन्ध कारिणी के सभा-सद बनाये गये।

मालूम हुआ है कि पं० घन्नालाल जी की पार्टी उपर्युक्त कारवाई को उचित नहीं बतातो। २५ दि० की शाम को सुपरिन्टन्डेन्ट पुलिस वेल-गांव से आये। और महासभा का जरला करना रोक दिया।

रत्नत्रय सभा में आचार्य शाँतिसागरती का व्याख्यान घण्टा भर हुआ।

देश

— बङ्गाल कौन्सिल में सरकार की ओर से बंगाल आर्डिनेन्स विल जिसमें सरकार बिना मुक-दमा चलाये जेल में रख सकती है, कौन्सिल में पेश किया गया। गवनंर साहव के अपील करने पर भी बिल को कौन्सिल में बहुमत से अस्वीकार कर दिया।

- 'मिलाप' का कहना है कि कोहाट के दक्तें के सम्बन्ध में १२० मुसलमान और २२ हिन्दू गिरपतार किये गये हैं। कोहाट के जिन हिन्दुओं को
पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया है, उन पर मुसलमानों की शतें स्वीकार कर लेने को दबाव डाला
जा रहा है। पेशायर की कान्मेंन्स में कोहाटी हिन्दू
मुसलमान कुल शतों के साथ समभौता करने पर
राज़ी हो गये थे। १८ दिसम्बर की शाम को सरकारी अफसरों ने तय हुई शतों को नामञ्जूर कर
१२ नई शतें पेश की और असिस्टेन्ट कमिश्नर ने

हिन्दू प्रतिनिधियों से कहा कि तुम गान्धी आदि राजनैतिक आन्दोलन-कारियों को सलाह पर खल रहे हो. इस लिए जो चाहों को कर सकते हो। इस पर भी सरकार ने सममौता तोड़ने का कस्र हिन्दुओं के उपर लादा है!

- —त्तालन के के केसरवाग् में अखिळ भार-तीय सकीत सम्मेलन ता० ६ जनवरी से १४ जन-वरी तक होगा। कला-प्रदर्शिनी का उद्देखाटन ता० क जनवरी १६२५ को होगा।
- —हैदराबाद की हिंदू सभा ने एक प्रस्ताव पास कर कोहाट के शरणागत हिंदुओं के साहस पूर्वक मुसलमानों के समकौते की अन्यायपूर्ण और अपमानजनक शर्तों को अस्वीकार कर देने का समर्थन किया है।
- गत ता० २७ दिसाबर को बम्बई में सर इब्राईम रहीमतुल्ला के सभापतित्व में मुस्लिम शिक्षा-कान्फ्रेन्स का ३७ वां वार्यिकोत्सव हुआ। उन्होंने अपने भाषण में मुसलमानों की आर्थिक स्थिति का ज़िक करते हुए स्त्री शिक्षा पर ज़ोर दिया।
- —बेलगाँव में अखिल भारतवर्षीय सामाजिक कान्करेन्स का अधिवेशन सर शङ्करन नायर
 के सभापतित्व में मनाया गया । सभापति ने
 अपने भाषण में महिलाओं और अछ्तोद्धार की
 खर्चा करते हुए कौंसिल-खुनाव में उनके मताधिकार प्राप्त करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि
 महायुद्ध नेम्सब जगह क्रान्तिकारी विचार फैला
 दिये हैं। दलित दल समानता का दाया करने लगे
 है। जिस प्रकार टकीं के मुस्तका कमालपाशा ने
 धार्मिक बन्धनों को दूर कर दिया, उसी प्रकार

मारत को भी शास्त्रीय तथा कोरान के आदेश बन्धर्मी को तोड़ देना चाहिए। अशास्त्रण और पद दिखत जातियों ने अपनी ज़श्त्रीरों को तोड़ डालने का इरादा कर लिया है।

- —वेतागाँव में अखिल भारतीय परलोक-विद्या सम्मेलन, श्री पीयू कान्ति घोप के सभा पतित्व में हुआ। उस में परलोक-विद्या के प्रचार का निश्चय किये जाने के अतिरिक्त सितम्बर १६-२५ में होने घाले पेरिस के परलोक-विद्या-सम्मेलन के लिये भारत की ओर से श्री० वि० डी० ऋपि को प्रतिनिधि चुना गया।
- ने त्रगांत्र में अखिल मारतीय पुस्तकालय सम्मेलन देशवन्यु दास के समापतित्य में हुआ। देशवन्यु ने अपने भाषण में कहा कि हमारा ध्येय केवल शासन सम्बन्धी अधिकार ही प्राप्त कर छेने का नहीं, किंतु राष्ट्र-निर्माण करना है। उन का कहना है कि ब्रानोपार्जन के लिए प्रत्येक गांव और कस्बें में। पुस्तकालयों की स्थापना होनी चाहिए।
- न्बेलगांव में कर्नाटक आयुर्वे दिक कान्फर्ने रेन्स ने एक प्रस्ताव पास कर काँगू स.से कहा है कि वह भिन्न भिन्न प्रांतों की कांगू स कमेटियों से आयुर्वे दिक और यूनानी औषघालयों की स्थापना करावे और प्रत्येक प्रांत में मुख्यतः एक बड़ा आयुर्वे दिक औषघालय सोला जावे । प्रस्ताव में कहा गया है कि कांगू स इस काम को अपने विधातक कार्यक्रम का एक अब बना ले।
- --कनादा से अकालियों का जो शहीदी जत्था आया था वह ममृतसर से जैतू के लिए रवाना हो गया।

- -- महात्मा गाँधी के आदेशानुसार पं॰ मोती लाल नेहक और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने नागपुर के हिन्दू मुस्लिम भगड़ों का निपटारा कराने की जिम्मेदारी ली थी। वे इस काम के करने के लिए & जनवर्रा १६२५ का नाग-पुर पहुँ चंगे।
- -- बम्बई सरकार ने कुष्रबन्ध और फजूल खर्चों और पापस्परिक कलद के कारण १ फरवरी से कोरला म्युनिसीपैलिटी को तोड़ दिया।
- —वर्मी में दमन का जोर बढ़ता जाता है। ध सभायें और गैर कानूनी करार दी गई। । और ११७ गावों में पुलिस बढ़ाई गई है।
- —श्रमृतसर् में सिक्ख कैदियों के परिवारों की सहायता के लिए एक फंड कायम किया गया है जिसमें ७० हजार रुपये साल की जकरत पढ़ेगी।
- --- 'इमद्दे का समाचार है कि बम्बई सर-कार ने एक विद्वादित निकाल कर स्वित किया है कि वह गुजरात विद्यापीठ की सनदों को स्वीकार करेगी।

विदेश

- स्पेन में कुछ राजमैतिक परिवर्तनों के होने की बड़ी चर्चा है। यह भी कहा जाता है कि स्पेन में प्रजातन्त्र राज्य कायम होजाय और स्पेन के इस समय के बादशाह किंग अल्फोसो प्रजातंत्र के अध्यक्ष चनाये जायें।
- ---पायोनियर का समाचार है कि मंगोलिया में (जो अभी तक बीन की मातहती में था) बोल्से-विक हैंग का प्रजातन्त्र शासन स्थापित होनया। कहते हैं योल्शेविक सेगाओं के बल पर ही शासन पद्धति की स्थापना हुई है।

दरिद्रता, दुर्बलता भीर चिन्ता व रोगों का कारण श्रिधिक सन्तान का होना ही है।

इस में वैज्ञानिक शीत पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन २ कारणी से गर्भ नहीरहता। तथा विना कारण अज्ञानतावश हजारों सियां क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। फिस प्रकार गर्भ रह सकता है अदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहां सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पापण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता । रोगी माता पिता से ब्राजन्म रोगी दुर्बले-न्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्वता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तान-हीनता दुःव है शैसे ही अधिक सन्तान भी तरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानी के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में टाने की विधि लिखी गई हैं जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भीत्थात रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ गंकने की औपधि तथा किन २ औपधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है इसका आधुर्वेद और युनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग चालीस चित्रों सं सुसः िजन पुरुवक का मुख्य था।) मात्र है।

मंसार के सब तेलों का गाता, अपूर्वे सुगन्धि का भंडार

शिर वर्द, दिमाग् को कमजोरो, आसं के कमज़ीनी, आंखी के सामने पहते २ अस्थेरा होता, शिर चकराना. कम आणु में ती दाला का गिरना या पकना आदि को दुर करता है भीर बालों को बढ़ाता दे।

हिमादि तेल-शानस्ता और सुनन्धिका सजाना है। हिमादि तेल-बनस्पति सं नेपार जिया गया है।

हिमादि तैल- चिदेशी और विषेठी परनुओं से रहित है। हिमादि तेल-- शिर दुई से हातका करनेवालों को हैमाना है।

हिमादि नैल-अधिक दिन लगाने य चश्मा लगाना भी खुटाता है।

हिमादि तेल - प्रीप्स शस्त्र ऋतु के लिये पृथक २ औपित्रियों से बनाया जाता है। पक बार लगाने सं हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायैंगे। यदि पसन्द न हो तो वृाम वाधिस । मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया ।

पना-शहुर स्वदेशी स्टार, विजनीर (यू० पी०)

रत स माल भेजन का कायदा

(सरब हिन्दी भाषा, पृष्ट बागनग ५००, तिषयस्वी के १८ पृष्ट, मूल्य १))

बहिया झांगज पर ! अनारस की बहिया समाई !!

आरुगाड़ी से भेजे हुए मांल आदि का उक्सान क होने पार्व, वा मुकसान होने पर बेखबे आइएकों हैं क्रियोड़ोर समझी जो सके यह बात स्वापारियों को बताने के लिये यह पुलान अब अब्छी तरह से साबित होंगयी है। इस तरह की खड़ी के बल एक पुलाक है। तमाम रेलवे के पनियों के ग्रंडस बीके के कियाम प्रहत्त के कायरे, बातें, आदि जो कंपनियों के अलग र अंगरेजी हैरिफों में होते हैं वे सब दर्स के ही पुनाक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बावों के समाम हाईकोटी के बहुत हो महत्व के फंसले भी दसमें बताये हैं। विषयानुसार पुनतक ६ हिस्सों कामक होने पर स्थान का स्थान होने सह स्थान होने पर स्थान का स्थान होने पर स्थान का स्थान होने पर स्थान का स्थान होने स्थान हो

है फिक मैनेजर, और बारर रेलवे, लखनके लिखते हैं-"हम युवीन से कहते हैं कि यह पुस्तक ज्याबारियों को बहुत ही उपयोगी हैं।"

सुपोर्टन्टेन्ट (बनरल) बी॰ एन॰ रेलचे, बलकत्ता २५। ११। २४ को लिखते हैं—"बिन क्या-सारियों की रेलचे से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मृदद मिलेगी।"

हरमोनारायण वंशीलाल जी मुन्रोल (मारवाड़) २। १२। २४ के एव में लिकने हैं-"रस पुस्तक की कहाँ तक प्रशंसा करें। इसमें उपयोगिता के ग्रुणों का भगदार है। हमने आजनक क्याणाहियों के फायदे की येसी सरल छुपाय की पुस्तक नहीं देखी।'

भी वेंकटेरवर समाचार, वस्वई "माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश आपारियों को गुड़सक्लक की बात पर ही निर्मर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कामके होक देन जानने के कारण ही ज्यापारियों को नित्य रेज़ में भागहों की भंभटें सहनी पेंड़ती हैं। वस्ती नंगा में बाल महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बहे भारी श्रभाव को हर करके स्पीपारियों को बहुत सुभीता का विया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्राय: देंह पीने हो ही विवयं का विवेदक किया है। इसीपारियों के बहे काम की पुस्तक है।

बार्डर देते समय "बीर" का नाम अवस्य हो लिकिये।

शीन कापी एक साध मेंगाने से बी॰ पी॰ डाक्सबर्ड सापू

पता-

प्रारं एन० काले, सर्वकार्ट बढील, स्वत्रेन (सीट सार्द०)



परिषद शह

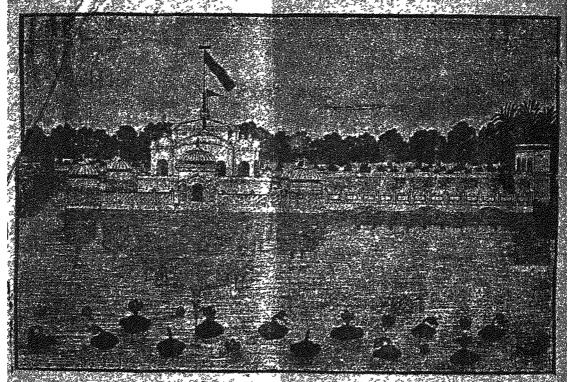
क्षी भारतवर्षीय दिवस्त्वर जेन परिषद् का

पात्तिक पत्र

eri e l

१ फरवरी सन् १६२४

I www.



arana.

जैन वर्ष भूषण ये हिं हैं। ब्रेंग् श्रीतत्त्रमसार जी

वारिक मृत्य |

श्री ः राजेन्द्रकृमार जैनः रहेमः विजनीरः।

Doggeography - 1

यो कापताप्रसाह मे

Terri suc

भी महाबीराय नमः

'द्यमा वीरस्य भूषणम्" भी भारत दिगम्बर जैन परिवद्का पाचिक मुख पत्रः

वीर

'संसार मिथ्या अविश्वास में पड़ा हुआ है। उसके दुःख और पीड़ा अज्ञान के कारण ही है। परन्तु संसार को ज्ञान प्रकाश कीन देगा ? भूत काल में निःस्वार्थ त्याग एक धार्मिक क्रिया थी। खेद, अब इसके लिये वर्षों को प्रतिक्षा खीहिये। संसार के सर्वोच्च बीर महान उक्ष्य तब सब की मलाई के लिये अपना बलिनान करेंगे। संसार को चारित्र की आवश्यकता है। साहसपूर्ण शब्दों और उससे भी अधिक साहसी कार्यों की आवश्यकता है। महान् आत्माओं ! जग जाओ ? संसार दुःख से तह है। क्या तुम सो सकते हो?"

---'सुमावित'

वर्ष २

बिजनौर, माघ ऋष्णा ७ वीर सम्बत् २४५१ १ फरवरी, सन् १६२५

अङ्क ७

वीर सैनिक

धर्म ध्वजा इड़ कर कमलीं में सत्य शस्त्र से देई सजा।
स्वार्थ त्याग का मन्त्र फूंक, विज्ञान दुन्दुभि मधुर बजा।।
सत्यधर्म की बेदी ऊपर निज सार्वस्व न्योद्धावर कर।
पीछे नहीं इट्रंगा किंचित इड़ संकल्प इदय में धर॥ १॥
धरन बढ़ा आगे साइस से प्रण पूर्ण निज करने को।
धरयाचार, अमैक्य, दंभ, अभिमान, स्वार्थ मद मर्दम को॥
विश्वपेम का, शांतिराज का शुभ संदेश सुनाने को।
सोते हुए जातिवीरों को सहसा पुनः जगाने को॥ १॥

कर्मच्चेत्र में निर्भय हो सत्य-संग्राम मचाने को । सहनशीलता, आत्मशक्ति का जागृत चित्र दिखाने को ॥ दुरित मलोभन, आशाओं को त्यन बनकर स्वजाति सेवक । स्वागत आरहा ,सेवाहित तेरा समाज यह मिय सैनिक ॥३॥

---"वत्सल"

जैन जाति के श्रधः पतन के कारण तथा उसके उत्थान के उपाय

ट्यारे जैनी भाईयां! उठा और मोह की नींदको तथा गर्दी, अब समय सोनेका नहीं। जिसने सोया उसीने खोया, देखो अन्य छोटी र जातियाँ कैसी उन्नति करने में लगी हुई हैं' परन्तु तुम अपनी वहीं सदा की बेढंगी चाल से चल रहे हो यदि तुम इस उन्नतिशील संसार में सब की भाँति कार्यन करोगे तो पिस्स्की भाँति मसलकर मारडाले जाओगे। फिर कोई भी तुम्हारा बचानेवाला न होगा। अतः यदि तुम अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हो तो उठो और मुखाँ की भाँति उदासीनता को छोड़ो। अब कोरी शन्ति से काम न चलेगा। जो जाति अन्य जातियों का सामना नहीं कर सकती वह शीघू ही मर जाती है। अनप्य जो जीवित रहना है तो वल रखते हुए शान्ति पैदा करो। चही शान्ति श्रेयस्कर है जिससे जैन जाति की उन्नति तथा वृद्धि हो। अस्तु,

हमारी समाज के अथापतन का मुख्य कारण लोगोंमें स्वार्थपकायणताहै। आजकल हमलोग इतने

स्वार्थनिरत होगए हैं कि हमको अपने मतलब से मतलब। दूसरे चाहे मरें या जिएं, उनकी ओर द्रष्टि-पात भी नहीं करते । अपने स्वार्थ जैसे बच्चे की शाही, गजरथ, पुज्यप्रतिष्ठा, व गहर्डन पार्टियाँ, बरामदा का बनवाना और वेदी लगवाना जिससे उनका नाम होता है, आदि में जी खोलकर रुपया पानी की भांति लगा देते हैं पीछे उसकी संभाल करते हैं परन्तु जिस कामसे जातिसुधार हो जाति के दीन हीन दुखित अबाल वृद्ध पलें और समाज को वृद्धि करें, वहकार्य उन्हें श्रेयस्कर नहीं, उसमें वे एक फूटी कौड़ी भी चन्दा नहीं देते। यदिचादे के लिये उनके ऊपर अधिक दबाव डाला जाए तो भटकह उठते हैं कि बस: इसमें दबावका कोई काम नहीं जो इच्छा है सो देते हैं। ठीक है उनका फहना जब अन्तरकु भाव ही उदारता के नहीं किर बाह्य द्रव्य का प्रधा काम संघ अपनी २ दाढ़ी की आग बुभाते हैं अब किसी अन्यभी तो कहे कीन जब अपने संगे कुदुम्बी भाई की फिकर नहीं तो |फिर दूसरे

की क्या होसकती है। अतः यदि समाजका सुधार हमारे ज़ैनी भार्यों को अभोप्ट है तो इस स्वार्था-धताका कृष्णमुख करके सभीकाम चल सकता है।

जीत समाजको विगड़नेका दूसरा कारण लक्षी में लिसता है। हम लोग आजकल इस देवी के इतने उपासक तथा अनन्यभक्त हो गए हैं जितने अन्य कोई भी नहीं। हम लोगों ने इसकी गुलामी इख़ित थार करली है। इसीसे हमें इससे अधिक रंम है। यदि हम इसको दासी की भांति रखते तो अवश्य ही हम इसका उपयोग करते, परन्तु उल्टे ही हम उसके दास हैं, इसी से वह हम पर आधिपत्य जमाये हुए हैं। हमारा दिल उसके मोहजाल में ऐसा फँस गया है कि हम उसमें से एक कौड़ीभी परहित खर्च करना नहीं चाहते। दिन रात हम लोग उली देवी का मन्त्र "हायलक्ष्मी, हायलक्ष्मी, जपा करते हैं और एंसाही करते २ अपने प्राण गर्वा देते हैं परन्तु यह नहीं सोचते कि इतनी प्रचुर लःमी पाकर समाज की सेवा करें ताकि उसका फल भविष्य के लिर अञ्जा मिले। हमारी समाज में लखपति तो कई एक हैं परन्तु करोड़पति भी कम नहीं। यदि ये लोग अकेलं २ ही चाहें तो सबकुछ कर सकते हैं परन्तु वे तो लक्ष्मी के मद में मस्त हैं, इनके जान समान फल द्वतीथी सो आजही द्व जांप परन्तु उनकी वलाय से। बस इसी उपेक्षा पुद्धि के कारण यह समाज गिर रही है, दुखी है। यदि लक्ष्मी के लाल अपनी लक्ष्मियों से मोह छोड़ कर समाज हित में उसे छंगाईं तो समाज सुधार भानन फानन हो सकता है।

कीन समाज के विगड़ने का तीसरा कारण कोगों में अईअन्यतो है। जहां करोसा बोध हुआ या लक्ष्मी हुई बस, फिर पैर ज़ामीन पर आस्मान पर होकर चलते हैं। वडी पेंठ हुली है और बड़े कत्राव के साथ बात चीत करते हैं। अपूर्व साधियों इप्रमित्र और अपने समाज के लोगों से अपने को बड़ा समभते हैं और सब जगह अपनी ही चलाते हैं। जहां पर इन की सूंछ नीची हुई बस, वहीं पर लड़बंधी हुई। इसी प्रकार एक छोटे से प्राप्त में जिसमें चार छह घर ही जैतियाँ। के हैं, यहां पर दो छड़ें होजाती हैं। ये सब लक्षण समाज के विगड़ने के ही हैं। समाज इस प्रकार नहीं बना, मिलकर कार्य करने से ही समाज का सुधार हो सकता है। अतः समाज के हितै-षियों ! यदि आप समाजसुवार चाहते हैं तो होगी के हृदय से अलंकार पन निकालने की कोशिश कीजिए और 'सत्वेषुमेत्री' का मुलमंत्र फू क दीजिए जब तक इस मंत्र के अनुसार कार्य न होगा तब तक समाज सुधार जरा टंदी खीर है।

जैन समाज के विगड़ने का चौथा कारण् लोगों में आत्मिक बख की कमी का है। जब से हम लोग चारित्र भृष्ट होगप हैं तभी से हमारा आत्मिक बल हम से बिदा होगया। हम लोग उन भी अकलंक निष्कलक स्वामी की संतान होते हुए भी इतने कमजार तथा बुजिदले होगप हैं कि अब हमारे धर्म पर चाहे जो जितना! मी आधात पहुंचाए हमें उसका कुछ भी स्थाल नहीं। क्याल तो तभी होगा जब हममें बल बुद्धि पुरुषार्थ पराकम हो न, अब तो हम लोग मोघरगणेश की भाँति हैं। इतने कमजोर और इरपोक होगप हैं कि हमारी मांकी सामने औरतें और हमारा सगा मार्द भी पिट रहा हो तो भी हम उस मारने वाले का कुछ कहीं

🕶 अकते। गम खाकर घर चले जाते हैं। बस, रस प्रकार जिन दहाड़े हम लोग पिटा करते हैं, हमारी यह बेटियों पर अत्याचार किया जाता है, बच्चे उड़ाए जाते हैं परन्तु कोई कुछ कहने सुनने वाला नहीं। यदि हममें पूर्व पुरुषों की भारत पुरुषार्थ होता तो क्या हम अपनी आंखों सामने ऐसे दुष्कृत्य देख सकते थे, परंतु किया क्या जाय, दिल इतने कमजोर मुर्दा होग्य हैं जिन में इन बातों का कभी भी ख्याल नहीं होता। इसरी बात यह है कि हम लोग गुप जुप करें तो महापाप, परन्त बाह्य में यदि कोई अपनी रक्षा के लिए किसी अस्त शस्त्र या लाडी ही का प्रयोग करें तो दूसरे भाई उसे रोकते हैं, मना करते हैं। और धर्म शास्त्रों की इहाई देते हैं। बस इसी सीमा ने हमारी समाज का सत्यानाश कर डाला है। जब तक लोग अपनी अपने धर्म की रक्षा बल द्वारा नहीं करेंगे तब तक हमारा, हमारे धर्म का तथा हमारी समाज का अस्तित्व कायम रहना वडा कठिन क्या कप्ट साध्य है। अतः समाजसुधार के लिये आत्मिकवल पैदा करो।

जैन समाज के बिगड़ने का पाँचया कारण सियों का मूर्बा रखना है। जबतक स्वं वर्ग में विद्या को खूब प्रचार न किया जाएगा तय तक समाज क्यी गाड़ी का सुधरना फठिन है। ये सियां हमारी जन्मदात्री हैं। ये ही हमें बनाती हैं यदि ये शिक्षिता होंगी तो हम भी अच्छे होंगे हमारा शैद्यक्काल इन्हीं के सिक्कट खेलते २ बीतता है उस समय बित ये मातायें हममें बच्छे संस्कार कार्यों के होने पर उनका परिपाक अच्छा होगा। इसरी बात यह है कि यदि सियां पढ़ी सिक्की

होंगीं तो गृहप्रबंध अच्छा करेंगी। गृह स्वामियों को उस समय गृहचिन्ता करने की अधिक आव-श्यकता नहीं। उन्हें समाज सुधार के लिए बहुत अवकाश मिल सकता है। तीसरी बात यदि स्त्री पढ़ी लिखी होगी तो उसकी सलाह भी आपको मिल सकेगी। ये अर्द्धाङ्गिनियां हैं। प्रत्येक कार्य में इनकी सलाह सिखावन लेना अतीव आवश्यक है। नीति शास्त्र इसका प्रमाण हैं। अतः स्त्रीवर्ग, को शिक्षित बनाइये तभी जाति उन्नति शिखर पर्र पह च सकती है, अन्यथा नहीं।

जैन समाज के बिगड़ने का छटवाँ कारण आचरण की न्यूनता है। हम लोग आजकल इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि जिसका कोई पारावार नहीं। बिना पढे लिखे मूर्ख देहाती गांच चाले तो इतने नहीं बिगड़े जितने अधिक पढ़े लिखे पण्डित 'कह-लाने वाले शहरी लोग, ये लोग न तो रात गिनते न दिन और न स्थान न समय का ही त्रिचार पूर्ण है किन्तु जैसा तैसा अध्याअध्य खानेके लिए तैयार हो जाते हैं। बस यही हाल हमारी पण्डित समाज का है। ये लोग, मूर्ख लोगों को उपदेश तो बड़े लम्बे चौड़े भाडते हैं और हर प्रकार की आचरण की शुद्धता बताते हैं, परन्तु स्वयं आचरण अप्ट होते हैं। कहते हैं पंडित जो कहे सो करें। जो वह भरे सो न करें। बस्तः 'पर उपदेश कुश्ल बहुतेरे' इस प्रकारके लोग बहुत हैं। भला बताइये कि अब रनका उपदेश दूसरों को कैसे असर कर सकता है। उपदेशदाता जिन बार्ती का उपदेश वे' पहिले वे सबगुण उसमें होना चाहिए तभी उसकी धाक मुर्ख मण्डली पर जम सकती है भन्यथा नहीं। अतः समाज के हितचिन्तकों, उठो

और समाज सुधार के लिए आचरण शुद्ध करो।

अतेन समाज के विगड़ने का सातवाँ कारण अपनी समाज के बालकों की उपेक्षा करना है। भार्र्यों, क्या आप लोग यह नहीं जानते कि आज कल जो बालक हैं एक दिन चृद्ध हो जाएंगे और किर येही समाज के कर्णधार बनेंगें। अतः इनका पालन पोषण करना समाज का मुख्य कर्च्य है। जिस समाज ने अपने बाल बच्चों की पूरी २ देख रेख न की वह समाज मिटे बिना नहीं रहा। अतः समाज के शिशुओं की रक्षा कीजिए। यदि आप लोग इनकी ओर द्यादृष्टि से नहीं देखेंगे तो स्मरण रहे कि तुम्हारे पास दूसरी कौमें उन्हें अपनाने के लिर मुंह बाए खड़ी हैं। अतः उठिये और समाज के बालकों की रक्षा में तन मन धन स्वाइए। इसी से समाज सुधार हो सकता है।

जैन समाज के विगड़ने का आउवां कारण जाति बन्धन का ढीलापन है। जबतक सामाजिक पाश हुद न होगी तब तक समाज का कार्य अच्छा नहीं हो सकता। इसी बन्धन के ढीलेपनके कारण समाज के लोग तीन तेरह हो यए हैं। सब अपनी २ ढपनी अपना २ राग आलापने हैं। काई किसी की नहीं सुनता और न किसी को किसी का भय है। सब स्वतन्त्र हैं। जड़ाँ चाहे चले जाते हैं और जैसा चाहे छत्य कर बैउते हैं'। दूसरी बात यह है कि इसके कारण एक को दूसरे की हींर पीर नहीं परन्तु पृथकपने से समिमलित रहना अच्छा है स्वरण रहे कि बाँद आप लोग अपना अस्ति व इस संसार में चाहते हैं तो मिलकर कार्य करो चरना पृथक् २ मारे जाओं। कोई किसी की न

जीन समाजके विगड़ने का नवमाँ करण संघ-शक्ति का अभाव है। इसके कारण हमारी समाज महा बस्त है। मुसलमान समाज को देखिए कि जिस समय उसका भगडा किसी काफिर कातिसे हों,जाता है तो सारे मुसलमान बाहे आएस में उन का विरोध हो भले क्यों न हो, परन्त उस काफिर जाति को मारने में एक हो जाते हैं किन्तु ऐसा हाल हमारी जैन समाज का नहीं। दिगम्बर और श्वेताम्बर इस समाज के दो अङ्ग हैं परन्त दोनों ही एक दूसरे के परम शत्रु हैं और एक दूसरे के मिटाने के लिए फिरते हैं। यदि ये दोनों फिके मिलकर कार्य करें तो विपुल सम्पत्ति की रक्ता हो और समाज का कार्य बने । अतः समाजके नेताओं आप आपसी लड़ाई छोड़ो और जाति का कुछ उद्धार करो। लड़ते २ तो बहुत समय बीत खुकाः है अब लडाई से बाज आओ । संघ में मिलकर रहो ताकि संसार की अन्य जातियां इस जाति की ओर अंख उठा कर न हेर सकें। बस, इसी में कल्याण है, मङ्गल है और सब का हित है।

अन्त में सब भाईयों से यही विनीत प्रार्थना करता हूं कि आप लोग इस लेख को बड़े ध्यान से पढ़िये और विचारिए कि जो कुछ मैंने इस लेख में लिखा है वह कहां तक ठीक है। यदि यह सर्वांग सुन्दर और अच्छा है। तो इसी के अनुसार कार्य करने में निरत हो जाहये। बस, इसी में कल्याण है यह लेख किसी ब्रेंपनश नहीं लिखा गया। किन्तु समाज हित की द्वांप्ट से लिखा गया है। इसकी भाषा के लिए हम सब से प्रार्थना या ते हैं। समाजका दोस—

नथूराम सिघाई रीम

सम्पादकीय टिप्पिग्याँ

रत्नत्रयधर्म

प्यारे पाठकों! हमारे तीर्थं इसे ने इस संसार हियो अगम्य समुद्रसे पार होने के लिये रत्नत्रयधर्म हियो तीर्थ बताया है। इस जहाज पर ही बढ़ कर उन्होंने स्वयं शिव हीए में अने को के साथ प्रयाण किया है। वास्तव में यह नौका परम अनुपम, दृढ़ ख छिद्र रहित है। इस नौका पर जिस जिसने आरो हण किया है उस ने निश्चय शिव धाम पाया है। शिवधाम पाने के पूर्वही से इस नौकारोहो को संसार समुद्र का दृश्य नाटकवत् बहुत खुहावना विचित्र व वैराग्यउत्पादक भासता है तथा मार्ग में स्वात्मानुभव की तान में मगनता के आने से जो अतीन्द्रय आनन्दका स्वाद आता है उसका कथन मुख से हो नहीं सकता है, वास्तवमें इस नौकारोही को मार्ग में भी आनन्द है और आगे भी आनन्द है।

इस रत्नत्रयधर्म कपी नौका को प्रहण करना हर एक बुद्धिमान का कर्तव्य है। यही जैन धर्म है जो तरण तारण, दुःख निवारण और अनुपम सुख का कारण प्रसिद्ध है।

यह रत्नत्रय रूपी नौका असल में अपने ही आतमा के पास, है सम्यग्दर्शन रत्न भी आतमा का स्वभाव है तथा, सम्यग्कान भी आतमा का स्वभाव है तथा सम्यग्वादित्र रत्न भी आतमा का स्वभाव है। इन तीनों की एकता से यह नौका बनी है।

शानी आप में ही अपनी इस रत्नन्नयमयी नौका को पाकर आप ही उस पर आरूढ़ होकर आप ही गमन कर के आप ही शिवमहल में पहुंच जाता है और अपनी नौका को भी अपने महल में रिश्नत करता है।

प्यारे पाठकों आप को इस नरतन को सफल करना है तो अपनी इस नौका को देखों और असत्य भ्रम में पहुंचाने वाली नौकाओं का आलम्बन छोड़ कर इसी की ही शरण महण करो।

जो परिषद् के सभासद प्रेमी, व वीरके वीरत्य के गृहिक हैं उन का कर्तव्य है कि वे इस आत्म-ध्यान की नौका में चढ़ें अर्थात् नित्य कम से कम एक दफें भी पौन घंटे या आध्यंटे को पर्कात में बैठ कर सामायिक का अभ्यास करें। जैन शासन में निश्चयनय से इस अपनी आत्मा को आठ कम व शरीररहित परम बीतरागी, ज्ञाता, हृष्टा, आनव्यमयी, अमूर्तीक. सिद्ध भगवानके समान बताया है-इसी तरह निज आत्मा को अद्धान करना सम्यव्यर्शन है-ऐसा ही संशय रहित जानना सम्यक्षान है तथा अपनी आत्मा के सिवाय और सबसे रागद्वेय छोड़कर सबसे वैरागी होकर अपने आत्मा के शुद्ध स्वभाव में तन्मय होजाना सम्यव्यारित्र है-इस ही तीन रतनमयी भाव को आत्मध्यान, सामायिक या नैनध्म उपासना कहते हैं—

अपने ही शरीर में निर्मल जल के समान आत्मा को देखते हुए, मध्य में किसी भी परमेप्ठी वाचक अन्त्र का उच्चारण अन ही अन में करते हुए कभी २ शुणी पर विचार जमाते हुए आत्मध्यान या सामा-विक का अभ्यास करना चाहिये. जो भाई एक सप्ताह भी अभ्यास करेंगे उनको सुखशान्ति प्राप्त होगी-वे जन्म भर फिर कभी इसको त्याग नहीं सकते हैं। यही मुख्य जैनधर्म की सेवा ई-यही पार्च को जलाने बाली अग्नि है-पृण्यकर्मी को बाने वाली अनुकूल वायु है तथा स्वात्मानंद भोग कराने को अमृतमयी रसायन है। इसी की सहाय-तार्थ नित्य श्री जिनेद्र विस्व का दर्शन,पूजन, गुण स्तवन, शद्ध खान पान, नियम व संयमसे इंद्रिबी का वर्तन, ज्ञानियों की संगति, शास्त्रपटन वीमनन तथा दान या परोपकार भी करते रहना चाहिये। आदर्श जैन बने विना जैनपना शोभता नहीं न कुछ नाम मात्र से काम ही चल सक्ता है। अतएव प्यारे पाठकों स्वयं आधित बनो तब दूसरोंसे भी अमल करा सकोगे।

भँवर में नैया

भगवान महाबीर की दिव्यतीर्थ रूपी नैया समयसरिता में बहती २ जब २ भँवर में आकर फँसने को हुई तब तब उसके सुभट नाविकों ने अपने बाहुबलसे उसे उसमें फँसने नहीं दिया। श्री समन्तभद्राचार्य और शीमद्र भद्राकलक ने अपने २ समय में उसकी रक्षा शैबों बौद्धों प्रभृतिसे की और उसे छिन्न मिन्न करने से बचाए रक्खा। बीच में भद्रारकोंने भी उसकी पतवार सुचाहरूप से अपने, करकमलों में ग्रहण की थी। फिर भी टोड-

रमल प्रभृति महारथियों ने उसके संरक्षण में अपने आपको अर्पण कर दिया। परन्तु आजही उस दिव्य नैया को बीच भँवरमें फंसा देवकर काटो तो खुन नहीं रहता ? जो सुभट उस की रक्षा के दम भरते हैं। वह उसके पतवार को हाथ में छने को बटते ही आपस में लड़ मर रहे हैं। नैया भँवर में पड़ी रसा-तल की ओर बढ़ रही है। उसकी रक्षा करनेके कार्य में करोड़ों बाधायें आरही हैं। यह दशा विश्वास दिलाती है कि जो सभट उसकी रक्षा करनेका साह-न बोर्ड अपने मस्तक पर लगाये किए रहे हैं उनके बुते का यह रोग नहीं है। यह तो मान घमण्ड के शिकार बन गए हैं। उन्हें भँवर में पड़ी नैया की ओर द्रष्टिपात करने को समुचित अवसर ही प्राप्त नहीं है। वह मुश्किल से स्थिति पालक बन रहे हैं उन से प्रगतिशील हो भँवर से नैया को निकालने की आशा करना दुराशामात्र है। अबतो इस भया-नक भंचर में से तीर्थ नैया को निकाल लाकर बीच धार में रखने के लिये प्रत्येक तीर्थभक्तको कटिबळ होजाना चाहिये। दूसरोंका मृहताकने और उनके हाथ के कठपुतले बने रहनेसे रक्षा नहीं होसकेगी रक्षा होगी तो केवल प्रत्येक चीरतीर्थमक के अपने पैरों खडे होकर और स्थितिको देखकर स्वयं अपनी बुद्धिसे काम लेकर कार्य करने से होगी। किस भी भुलावे में आने की फिर सम्भावना ही करें होगी। आर्खे खोले हम शीव्रही नैया के पतवार हाथमें लेलेंगे और संप्रहित शक्तिसे उसेपार किया ल लायंगे। बस पाठकों ! यदिआपमें अपनेतीर्थक्षर के प्रति भक्ति है तो उनके आदेशको स्वीकार करो और सावधानता पूर्वक धर्म की रक्षा में अनसर हा जाओ, वरन् याद रक्षों नेया भंवर में है और रसातल में पहुंचते देर न लगेगी।

राष्ट्रीय भारत में भी इस समय ऐसी ही संक-टापन्न दशा उपस्थित थी। परन्त उसकी रक्षा में कटियद सभर अप्रनेता ने अपने सहनशील बहु वल से उस स्थिति की रक्षा कर ली ! परन्तु आगामी दिगम्बर जैन समाज के सुभट उस की रक्षा के नामपर उसको रसातल की द ओर वाने में अन्नसर हैं। अभी हांल में तीर्थरूपी नैया केहामी रक्षकों का सम्मेलन शेडवाल में हुआ था, उसकी कार्यवादी पढकर विश्वास भी हैरान हो जाता है कि यह जैनतीर्थके नाविकों का जमघरथा अथवा सामान्य मूर्खमल्लाहीं का ? वहांकेसमाचार हमारे देखने में अंड्रोजी के "BombaylChronicle" पत्र में और जैनमित्र एवं जैन गतर में आये। जैनएवीं के समाचारों में विरोध है , परन्त अङ्गरेजीपत्र के समाचार श्रीर जैनमित्र के करीय २ मिलते हैं। जैन गजर से मालम होता है कि वहां महासभी का अधिवेशन विल्कल हुआ ही नहीं ! परन्त यह उपरोक्त दो पत्रों की साक्षी से अप्रमाणित उहरता है। और उस का पृलिस के कारनामी से सहाजु-भृति सी प्रगट करना हमें उसके कथन पर अवि-श्वास दिलाता है। पहिले किसी भी जैन सभा में पुलिस हथकड़ी लिये खड़ी नहीं देखी गई। यह समाज की रक्षा का दम भरने वाले लोगों की ही दुरदर्शिता का फल कहा जासका है। बहुमत की अवहेलना कहीं भी देखी नहीं गई हैं। अतएय पेसी दशा में समाज हितेपी विद्वानी का अपने निश्चय पर डटे रह सब कुछ सहन करना सराह-

नीय है। इन्हीं सच्चे हितेषियोंने उपस्थित प्रतिनिधियों की अनुमति अनुसार महासमा का नियमान्तुसार पुनः चुनाव कर लिया है। परन्तु दुः ल है कि उस के भूतपूर्व कार्यकर्ता अब भी अपने मान की शान में पांसे हुये तीर्थ रक्षा के शुभकार्य में वाधक बन रहे हैं। यह सर्वथा अनुचित है। यह प्रविश्व अनुचित हों। परन्तु हमें विश्वास है कि मौजूरा महामंत्री मि० कोटारी अपने कर्त य से पीछे महीं हटेंगे। और तीर्यरक्षा के लिये कर्माक्षेत्र में आयोंगे। समाज का भी कर्तव्य है कि वह उनके कार्यों में सहयोग दे और जैनत्व की रक्षा के लिये अपने बुद्धि वल से कार्य ले।

इस समय तीर्थ ने यो को भंबर में से निकालने को वाहा-अफ्रमणों का सामना कियं जाने की ओर सार्वजनिक ते त्र में जैनियों के प्रभुत्व प्राप्त करनेकी आवश्यका है। तथा अंतरंग दशा सुधारने को समाज के कुँ बारे वाह्यकों और महिलाओं की दशा पर ध्यान देने की आवश्यका है। इन विषयों पर एंचायतों को निष्पक्ष हो विचार करना परमा- चश्यक है समग्र जैनजातियों में जिन की दशा संक- टापन्न है उन को तो परस्पर विचाह संबंध खोल लेना चाहिये। परिषद् के गत अधिवेशन में यह बात निज्ञित हो चुकी है। अतप्य आवश्यका है कि समाज का प्रत्येक झंग नैया को मंबर में से निकालने के लिये अपना भरसक प्रयत्न करे। सफलता अवश्य मिलेगी।

वीर का विशेषांक

श्री महाबीर स्वामी के जन्म के आनंद के उप-संक्ष में क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि एक विशेषांक के द्वारा उनके परम उपदेश का विशेष लाम अपने पाटकों को देवें हमारे उपसम्पादक जी ने वड़े २ विद्वानी के लेख संप्रह करने का व उनकी उन के भक्तों के कर कमलों में इस विशेषांक रूपी चवरासी द्वारा पहुंचाने का दृढ संकल्प किया है। बाहकी की कमी से आमद कम होने के कारण व परिषद में द्रव्य की प्रबुरता न होने से चपरासी के बेतन पूरा करने की कठिनता सामने जाती हैं इस लियं पाठकों से २००) की याचना की जाती है। यदि चाहे तो एक ही उदार भाई इस रकम फी स्वीकारता दे सकता है। तो भी हमारी सम्मति है जो ऐसा न संभव हो।तो हमारे प्रेमी ही दस दस वीस २ की मदद दंकर इस काम की पूर्ण कराई। जिस से विशेषांकरूपी चपरासी खेलता कृदता हैसना फूलता आप की सेवा में श्री महावार स्वामी के जन्म के समय उपस्थित होकर आपको मंगलगीत स्नावं। चवरासी की वेतन पूर्तिमें नीचे िरुखे भाईयों ने उत्साह चढाया है । और भाई भी अपना २ नाम पत्र द्वारा चीर दफ्तर विजनौर में लिख भंजें। यही बीर भक्ति है।

१०) जैन घ० भू०, घ० दि०, ब्र० शीतलप्रसाद जी सं० वीर ।

१०) बाबू कामता प्रसाद की उप संव १०) बाबू रतन लाल जी मंत्री परिषद् १०) राजेन्द्रकुमार जी प्रकाशक वीर

वृथा अभिमान त्यागो प्रेम का स्रोत बढ़ाओ

मास्टर चेतुनदास बी० ए. ने जैन जाति की घटी के कारणों पर गत अंक में विचार किया है। आप ने सामाजिक कारणींको कम महत्त्व दिया है परन्त हमारी राय में जैन जाति की सामाजिक स्थित ही बहुत निरुष्ट है। इसके सुधार से बहुत कुछ हास बंद हो जावेगा अनमेल विवाहींसे संताने नहीं होती, यदि होती, निर्वल होती, जो शीध मर जातीं और संतान को न पैदा करती हुई विधवाओं की सेना बढ़नी चली जाती, उधर पुरुष विधुर बड़ी श्रायु व सतान सहित होने पर भी काम बासना को न रोफ कर कुमारी कन्याओं को विवाहते ही जाने, इधर वहुत से धन रहित युवान कुमारे ही जीवन बिताते। यस यही मूल कारण घटी का है। अप कोई जैनी जैन धर्म छोड़ कर सिवाय किसी भूले भटके के अजैनी नहीं होता है। सब धर्मी से या धर्म उत्तम है इतना भाव जैनी मात्र के बच्चे २ में आगया है। इस सामाजिक स्थित के सुधारनेका उपाय नीचे की भांति है।

- (१) पुरुषों को कामवासना घटाना चाहिये संतान सहित होने पर दूसरा विवाह न करके संतोप व शील से रहना चाहिये।
- (२) योग्य वरवधू का सम्बन्ध हो इस जिने कभी भी कम्या के बदले में पैसा लेने देने की का न करनी चाहिये।
- (३) योग्य वरवधूका सम्बन्ध हो इस लिये कन्या व पुत्र के चुनने का श्रेत्र विशाल व रना चाहिये। शास्त्रों से तो प्रगट है कि ब्राह्मण, चत्रिय

वैश्य तीनों वर्णों में परस्पर सम्यन्ध होते थे।

वर्तमान में आप इतना ही करें जो श्री जिनेन्द्र का प्रछाल पूजन कर सक्ते,मुनियों को दान देसके, उन को आप उत्तम जाति वाला समभं और उन सबमें ही योग्य कन्या व पुत्र का सम्बन्ध दूंढ़ के विवाहें, जिससे उनकी उत्तम जोड़ी से उत्तम संतान जन्मे अप्रवाल, खंडेलवाल, परवार, हमड़, पोडवाल आदि सव जातियाँ इस ही प्रकार जिने न्द्र भक्त हैं यदि ये सब परस्पर प्रस्ताव करके सम्ब न्ध्र प्रारंभ्भ करदें तो उत्तम सम्बन्ध होने लगे। तथा जिन छोटी २ जातियों को सम्बन्ध नहीं मिलते उन की भी कठिनाइयां मिटे व भरण से रक्षित रहें । ऐसा होने में शास्त्र कुछ भी वाधा नहीं देता है। यदि कोई बाधक है तो सम्यगदर्शन का विरोधी बृथा यह असिसान कि हम अग्र-बाल वड़े हैं और जातियाँ हमारी,सी नहीं है। हम खंडेलवाल वड़े हैं और जातियाँ हमारी सी नहीं हैं, हम परवार बड़े हैं और जातियाँ हमारी सी

नहीं है इत्यिदि यह मद मिथ्या है।

इस भिथ्यात्वको त्याग करके जातियों को स्था-पित रखते हुए भी परस्पर सम्बन्ध जारी करना योग्य सम्बन्ध के लिये हितकर है। प्राचीन काल में भी सूर्य्य, चंद्र, उग्र, नाथ वंश वने रहते थे तो भी सम्बन्ध होते थे।

यदि कोई अपराधी जाति च्युत हो तो उसको सर्च जातियाँ जाति च्युत माने यह परस्पर प्रस्ताव होजाना चाहिये इस मद् के त्याग से व प्रोम का क्षेत्र बढ़ाने से कन्या विकय के आशयको जलाने से,काम बासना को शमन कर शील संतोप पालने से,कन्याओं पर द्याभाय के साथ वर्तने से अवश्य बहुत कुछ जैन जाति का हास घट जायगा !

प्यारे भाईयों! अच्छी तग्ह विचार करो। खाली जाति को मग्ते हुए देखकर शोक न करो, न 'हाथ पर हाथ ग्लकर देठे ग्हो! तुम विचारचान हो वि-चारो मार्ग निकालो और जाति का उत्थान करो।

--सं०

वार्घा में भा० दि० जैन परिषद

का

द्वितीय ऋधिवेशन

ता० २७-२८-२६ जनवरी सन् २५

२७ जनवरी के प्रातःकाल श्रीयुन् चम्पनराय सेठ ताराचन्द नवल चन्द जवरी, सेठ मूल-वैरिष्टर, श्रीयुत् रतनलाल वकील मंत्री परिषद्, चन्द किसनदास कापड़िया व श्रीयुत बालचंद

कोठारी बी.ए एम.एल.सी. वार्घास्टेशन पर पहुंचे। उनके स्वागत के लिये स्टेशन पर ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी, सेठ दौलत राम खजान्बी, सिघई पन्ना लाल सेठ चिर्नजीलाल आदि शतिष्ठित जैन व देशभक्त त्यागमृति सेठ जननालास वजाज आदि प्रतिष्ठित अजैन उपस्थित थे। यन्दे जिनवरम् की ध्वति से स्वागत किया गया । और आगन्तक महोदयों के गलेमें सुन्दर प्रवमालाय पहनायी गईं। प्रतिप्ठित अतिथियों। को मोटर में लंजाकर सेठ जमनालाल की राज्य गोसाद तृज्य कोठीमें ठहराया गयो। सायं-काल को श्रीयुन् सेंड जयकुमार दें शदासजी चवर यकील सभावति हितीय वर्षिक अधिवेशन परिपट, श्रीयुन् महाजन बकील पं॰दंगकीनन्द शास्त्री आहि प्रतिष्ठित जैमभाईयाँ सहित बार्धास्ट्रेशनपर पहुंचे। उपपूर्क सर्वजीन व अजैन प्रतिष्ठितपुरुषसभाषति के स्वागत के लिये हरेशन पर प्रधारे थे। सभापति महोदय को संड जमना लाल बजाज की कोठी पर ले जाकर जलूल के साथ सभामण्डण में ले जाया गया । समाप्तण्डप श्रीमन्दिर जी के सामने सड़क पर कपड़े का सुन्दरहाप से तस्यार किया गया था। मण्डप में स्थान २ पर महात्मा गांधी लंकमान्य तिलकशादिके चित्र लगे हुएथे। मण्डा में जलूस के पहुंचने पर भारतवर्षीय दिव्जीन परि-ृषद् के दितीय अभिषेतान का कार्य= बजे राति को प्रारम्भ हुआ।

अधिवंशन में उपर्युक्त जैन व अजैन प्रतिष्टित महोदयों के अतिरिक्त भ्रीयुत कस्तूर चन्द वकीठ जयलपुर आदि कई और प्रतिष्टित महाराय प्रधारे थे।

वृह्मचारी शीतलप्रसाद्जीके मंगलाबर्णकरने

के पश्वात स्यागतसमिति के अध्यक्ष सेउ दौलत राम जी ने अपना सुदित भाषण पढ़ा । सेठ चिरंजी लाल ने प्रस्ताव किया कि परिषद्दके द्वितीय अधि-बेशन के सभापति धीयुत् संउ जयकुमार देवीदास जी चबरे वकील बनाये जार्गे जिसका समर्थन पं॰ देवकी बन्दन, श्रीयुत् चम्पतराय वैरिष्टर, सिंधई प्रशालाल अमावभी,शेष्ठताराचन्द्र मचलचन्द्र वस्वई. श्रीयुत रतन्ताल वकील विजनौर, श्रीयुत फस्तूर-बन्द् वर्वाल जवलपुर संड मूलचन्द्र किसनदास कापडिया सुरत ने किया। जयध्वनि के साथ श्री जय कुमार देवीदास चवर महोदयने सभापतिका आसन ग्रहण किया और लिक्त शब्दों में महत्वपूर्ण व्याख्यान उपस्थित महाशर्यों को दिया को अन्यत्र मदित है। रिवोर्ग गतवर्ष श्रीयुत रतनहाल परिषद् मन्त्री द्वारा पद्दी जाकर निषय निर्धारिणी समिति का निर्वाचन हुआ।

विषयनिर्धारिणीसिमिति में निम्निलिखित सज्जन थे-१ श्रीयुन् सेठ जयकुमार देवीदासच**बरे वकी**ल

२ श्रीयुत च पत्रराय जी वैरिष्टर

समापति अधिवेशन

- ३ " ब्ह्यवारी शीतलपसाद जी
- ४ " सेठ मृलचन्द किसनदास कापिंड्या
- y " सेठ नाराचन्द नवरुचंद जवेरी वस्बई
- 🕻 " रतनलाल जो वयील बिजनीर
- ७ " दौलतरामजी खजाञ्ची स्वागताध्यदा
- " सूरजमल मन्धी स्वागतकारिणी
- श बालप्रस्य कोडारी एम. एल. सी. पूरा
- १० " सेड चिरञ्जीलान जो
- ११ " भैयालाल जी
- १२ " सेट रामा साह जी

१३ " जिनदास नारायण चबरे अकोला

१४ " मोतीलाल पाटनी

१५ " सिंघई पत्रालाल अमरावती

१६ " यादवराव आवणे

१७ " मनोहर षापू जी महाजन वकील अस्रोला

१८ " वेवकीनन्द्रन जी शास्त्री १८ सेठ धन्तूशाह चबरे २० बाबु अजितप्रसाद जी बकील लखनऊ २१ पं० गोबिन्द्राम शास्त्री २२ मास्टर मोतीराम पिठोवा फुर्सले कारण्या २६ मा० छोडेलाल जी जबलपुर २४ औ० कस्तूरचन्द्र बकील जबलपुर २५ औ० मोती चन्द्र पारवार

२७ श्रीयुत सीताराम विश्वनाथ आगरकर नागुर

२८ संड हजारीमल जी छिंदवाड़ी

२६ मु॰ मातीलाल होशङ्गाबाद

२६ पं रामभाऊ जी

३० श्रीयुन वी० आर• कुकुटे

३१ श्रीयुत सुमेरचन्द दिवाकर

इनके अतिरिक्त सभापति महोदय को अधिकार दिया गयो था कि दस नाम स्वयं बढालें।

विषयिनिर्धारिणी समिति की बैठक २७ जनवरी को सवा दश बजे से साढ़े ग्यारह बजे रात्रि को और २= जनवरी को साढ़े आठ बजे से ध्यारह बजे सुबह को हुई, जिसमें १६ प्रस्ताव निश्चय हुए जो अधिवेशन में पास हुए हैं। श्रीयुत । श्रजितत्रसाद जी बकील लखनऊ व महात्मा भगवानदीन जी भी २= जनवरी को वार्धा में आएहुंचे थे। उन्हों ने भी परिषद् की कार्यवाही में भाग लिया।

२ = जनवरी को अधिवेशन के द्वितीय दिवस
प्रथम ही मन्त्री परिषद् ने परिषद् के कार्य से सहीनुभृति स्चक तार व पत्र पढ़े और बाद को प्रस्ताब
दूसरे व तीसरं दिन सभा में रक्खें गये और पास
हुए।

वार्घा में परिषद के सी के लगभग सभासद वर्षे हैं यद्यपि परिषद के कार्य के संचालन हेनु सभा में कोई अपील रुपये की नहीं की गई तो भी निम्न प्रकार सहायता प्राप्त हुई है।

१५१) श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवर वकील अकोला

२०१) सेठ ताराचन्द नवलचन्द जदेरी बम्बई

१०२) सिघई वंशीठाल पन्नालाल अमरावती

१०१) सेठ चिरंजीलाल वार्घा

ह) श्रायुत् सीताराम विशम्भरनाथ अगर-कर नागपुर

प्र६३)

निम्नलिजित महाशयों ने एक २ सहस्र ट्रेक्ट के प्रकाशन के व्यय को जो १०) के लगभग होगा देने का वचन दिया है।

१ सिंघई पन्नालाल अमरावती

२ सेट धन्नृशाह ऑकारशाह चबरे अकोला

३ सेठ मूलचन्द्र किशनदास कापहिया सुरत

ह सेठ सुरजयल बड़जात्यो बार्घा

५ सिंघई चन्द्रहाल समजन्द आरबी (बार्घा)
 सेठ गोपाल नेमीचन्द आरबी (बार्घा)

६ सेंड घासीराम भांगीलाल वदनेरा ज़िला अमरावती,सेंड दामोदर मुकंद सेंडरककाराव ७ सेठ रामचन्दराव श्रावके नागपुर एतवारी म सेठ कपूरचन्द टेकचन्द सिवनी क्षेठ भीमा बाईदोना रामासाह
 शिरपुर तालुका दोसीन (अकोला)

स्वागताध्यत्तका भाषगा

दोहा-मंगलपय मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।
नमीं ताहिजातेभये, ऋरहंतादि महान ॥
आकृत में इस भागतवर्णय दिगम्बर जैन परिपह के अधिवेशन के निमंत्रित अपने सर्व
भाई विहिनों का स्वागत कारिणी सभा की ओर से
सविनय स्वागत करता हं।

यह हमारा भाग्योदय है जो आप हैसे सज्जनों ने इस शीतऋतु में युक्त प्रान्त बम्बई आदि दूर देशों से पधारने का कष्ट उठा कर हम को अपनी उपस्थिति से इतार्थ किया है।

यह मध्यप्रान्त और बरार बहुत प्राचीन देश है। इसको शास्त्रों में निद्म देश लिखा है। यहां से थोड़ी दूर आवीं से तीन कोस प्राचीन कीडिल्यपुर है जहां श्री रूप्ण की पर्रानी रुफ्मणि जी ने जन्म प्राप्त किया था तथा वहीं श्री धर्मनाथ जी १५ वें तीर्व इस्ने राजकन्या को स्वयंवर में बरा था। ऐसा वर्णन श्रीधर्मशर्मा श्रुद्य काव्य में आता है। यहां से थोड़ी दूर भौदक्षमें जैनियों के बहुत प्राचीन प्रित्र हैं। प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज के उद्धार के लिये इस प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज के उद्धार के लिये इस प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज के उद्धार के लिये इस प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज कर रही है। तथा नागपुर प्रान्तीय खण्डेलवाल समा का कार्य भी जाति भूषण माननीय श्रीयुत् चैनसुव छावड़ा

आनरंरी मजिस्ट्रेट सिवनी द्वारा बहुत उत्तम हो रहा है। कारंजा में महावीर ब्रह्मचय्यीश्रम एक नमनेदार दर्शनीय संस्था है जिसका कार्य बहा-चारी देवचन्द्र जी के अधिष्ठातापन में बहुत ही उत्तम चल रहा है। वर्घा में खण्डेलवाल, परवार, सैतवाल, पद्मावती परवार आदि दिगम्बर जैनियाँ के १०० घर हैं। संख्या ४०० है। यहाँ एक जैन पाठशाला तथा १ जैन बोडिङ्ग चल रहा है । वर्घा में माननीय सेठ जमनालाल जी के तन मन धन से कई शिक्षा संस्थायें चल रही हैं, तथा आपकी जैनों के साथ तो पूर्ण सहानुभूति रहती है। यहां एक दिगम्बर जैनमन्दिर है, उसी में नवीन वेदी श्रीयुत् सेठ चिरंजीलाल जी बडनात्या की पुजनीया माता जी निर्माण कराकर प्रतिष्ठा करा रही हैं। इस निमित्त आप सब भाईयाँ से हमें निलने का लाभ हुआ है। आप सर्व भाई विचार-बान हैं। इससे दिगम्बर जैन धर्म व जैन जाति की उन्नति के लिये योग्य प्रस्ताव करके उनकी अमल में लाने का पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे ऐसी मैं आशा करता है। में अपनी सम्मति से एक दो ही बात की सूचना देता हूं।

प्रथम तो यह है कि फूट के समान कोई नाश-कारी नहीं है। और एकता के समान कोई गुग़-कारी नहीं है। इस ठिये हम सब को एकता और

शेम के सूत्र में बंधकर कुछ काम करके बताना चा-हिये। बहुधा सभाओं में फ्ट व आलस्य के कारण कुछ काम नहीं होता है। इससे सभाओंका प्रस्ताव गिर जाता है। दूसरी बात यह है कि हमको समाज में सदाचार व शुद्ध खान पान का प्रवार करना च।हिये। जहां पर यह नहीं है वहां धर्म व विवेक आत्मा में नहीं रह सकता है। मानव जीवन की सफलता आत्मा की उत्पत्ति तथा परोपकार से है। ये दोनों ही कार्य हम तब ही कर सकते हैं जब हम स्वयं व्यक्तनों से दूर, नीति पर चलने वाले, योग्य आचारवान व माइक एडार्थ आदि से रहित शुद्ध भोजन पान करते ही। मुक्ते यह देखकर बहुत खेद होता है कि हमारे लड़के विना किसी ग्लानि के बीडी सिगरेट पीते हैं । जिससे सिवाय हानि के कुछ लाभ नहीं होता हैं। विना किसी रोग की औषधि के चाय का पीना भी बहुत हानि कारक है। ये रोग को घर है। जो सादा और शुद्ध खान पान रखते हैं वे निरोगी रहते हुये धर्म की उन्नति कर सकते हैं।

तीसरी पात यह है कि समाज में यल की वृद्धि के लिये व्यायाम या करसत के प्रचार की बहुत जहरत है। हर एक पुरुष को वलवान व स्वास्थ्ययुक्त होना ही उसको जीवन भर पुरुषार्थी रख सकता है, बिना शारीरिक बल के बर्म व तप का साधन भी नहीं हो सकता है। इस लिये हर

एक स्थान पर व्यायामशाला खील कर अपने लड़कों को हर प्रकार का उपयोगी व्यायाम सिखाना चाहिये और २० वर्ष तक उनका लग्मन करके उनको ब्रह्मचर्य पालने की शिक्षा देनी चाहिये। बालिकाओं को भी घर का काम काज कराकर हुढ़ शरीर व विद्या देकर आदर्श गृहस्थ योग्य बनामा चाहिये। और उनका लग्म योग्य वर के साथ करना चाहिये। जिससे घीर संतान जन्में और ये जन्म भर सुन्वी रहें।

चौथी बात यह है कि शिक्षा विना कोई उन्नित का भाव किसी के दिल में नहीं पैदा हो सकता अतर्व कोई भी जैन बालक व बालिका अशिक्षित न रहे इसका पूर्ण उद्योग करना चाहिये।

पाँचवी बात यह है कि बहुआ देखा जाता है कि पढ़े लिखे भाई श्रीजिनेन्द्र देव की पूजा जो गृहरूथ का नित्यकर्म है इस पर ध्यान कम देते हैं। मेरी राय में उन्हें स्वयं पूजा करके औरों के लिये नमुना पेश करमा चाहिये।

में यह हुन्य से जाहता हुं कि आप सब भाई प्रेम के साथ विचार करें। और स्वार्थ त्याग के भाव को जागृत करते हुए वेही प्रस्ताव स्वीकार करें जिनकी अगली कार्यवाही आप जरके बता सकते हैं। अन्त में आप के स्वागत का पुनः सम्झान करता हुआ में भी जिनेंद्र देव को नमन करके गैठता हूं।

कांच की शीशियां

स्वदेशी!

सस्ती !!

बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराजर बाजार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एएड ब्रार्स, महाबीर भवन, विजनौर

सभापति का भापगा

में आप लोगों ने सभापति परिषद् खुनकर जो सन्मान प्रदर्शित किया है उसके लिये में आपका यहा आभारी हूं। आजकल सभापति पद केवल सन्मान का नहीं रहा है किन्तु यह यही जोखम का है। अतः श्री जिनदेव से प्रार्थना है कि उपर्यु क कार्य में सफलता करें। आशा है आप लोग भी पूर्ण सहायता उक्त कार्य की सफलता में करेंगे। आप लोगों ने सभा गति चुनते समय भेरा जो गुणगान गाया है, उन गुणों का शतांश भी मुफ में नहीं है किन्तु में उन गुणों का शतांश भी मुफ में नहीं है किन्तु में उन गुणों का शतांश भी मुफ में नहीं है किन्तु में उन गुणों का इच्छुक अवश्य हूं। भारत व० दि० जेन महासभा के भीतर पण्डितदल व नये दल के मतभेद ने उप्रकृप धारण कर लिया है और इससे जेन समाज को अधिक हानि होने की सम्भावना है। अतः दोनों दलों से निचेदन है कि फूट को दूर कर शान्ति स्थापन करें।

आजकल जैनियां की आर्थिक परिस्थिति ही केवल नहीं वरन् समस्त संसार की परिस्थिति बड़ी विकट होगई है अतः उस पर गम्भीरतापूर्वक विवार करना आवश्यक है। इस बात पर विचार करने के लिये हमकी पूज्य आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम, मोझ बारों पुरुपार्थों पर ध्यान रखना होगा। धर्म पुरुपार्थ के उचितरूप में प्रयोग लाने में सब में बड़ी रकावट वालविवाह है। बालक बालिकायें अपना धर्म भी समभने नहीं पोतीं, जब कि विवाह करके गृहस्थ का उत्तरदा-

व्यवस्था करने के लिये हमको बालविवाह दन्द कर देना चादिये।

सब से प्रथम हमको पूज्य स्थानों पर ध्यान देना चाहिये। तीथों की उचित व्यवस्था तो कितनी ही होगई है और जो अभी होती रही है उसकी उचित व्यवस्था होजावेगी। इस सुव्यवस्था का सम्पूर्ण श्रेय स्वर्गीय दानवीर सेठ मानिकचन्द को है। देवमन्दिरों की सुव्यवस्था अभी तक नहीं हुई है। ये देवमन्दिर हमारी उचित के केन्द्रम्थान हैं इनके द्वारा जैनधर्म का प्रसार सर्वत्र होसकेगा। जहां मन्दिर विद्यमान नहीं होते वहां धर्म का लोप हो भाता है, इन मन्दिरों से लाभ कैसे उठाया जा सकता है यह विचारणीय है—

- १. आत्मकल्याणार्थ श्री जिनदेव के गुण व कृत्यों को ध्यान में रखने व उनके अनु-सार चलने के लिये प्रतिदिन देवपूजा करनी चाहिये।
- २, धर्म व आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये पृतिदिन स्वाध्याय करना चाहिये और सदाचार से रहना व चलना चाहिये।
- कहां २ मन्दिरों की आयदनी उनकी आवश्यकताओं से अधिक है उस अधिक आमदनी को निम्न छिखित कार्यं लगाना चाहिये-
- १ जिस २ स्थान के मन्दिर ट्रटे हीं उनके जीर्णोद्धार में द्रव्य लगाना चाहिये।
- २-जिन २ प्रन्थों का प्रकाशन नहीं हुआ है

उनके प्रकाशन में त्यय किया जाय। ३-धर्म प्रचार के हेर्नु पुस्तक ट्रीडरों के वितरण व मचारकों के रखने में ब्यय किया जावे।

यदि उपर्युक्त प्रकार मन्दिरों के अधिक रुपये का व्यय किया जारे तो धर्म वड़ी खुगमता से फैल सकता है और ये सन्दिर धर्मप्रसार के मुख्य २ केन्द्र वन सकते हैं। जो २ वार्ने जैन मंदिरों के लिये लामदायक है वे ही हिन्दुओं के लिय लामदायक हो सकती हैं।

जब हम अपने सउधिमयों की आर्थिक स्थिति पर द्विष्ट डालते हैं तो ज्ञान होता है कि प्रामी में बहुत ऐसे जैनी भाई हैं जिनको दोनों समय पेट भर भाजर नहीं मिलता और जब वे व्यवसाय के लिये बड़े २ नगरों में आते हैं तो उनको वही कठि-नाइयों का सामना करना पहता है। रहने के लिये मंकान वडे २ भाडे (किराये) को पिलने हैं। व्य-वसाय के लिये उन्हें कीई अधिक सहायता नहीं देता. अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम ग्रामी से आने बाले भाइयों को सहायता है। थोड़े भाड़े पर मकान रहने के लिए दें। और बड़े २ नगरीं में ऐसं बैंक स्थापित करदें कि उन गैंकों के माल-दारीं (Sharers) को मुनाफा चार आने मासिक व्याज की दर से मिल जावें, शेव मुनाफा जो वैंक की वसे उससे अपने निर्धन भाइयों को जो व्यव-साय के लिये नगरीं में आवें उन्हें सहायता दें। मनुष्य को चाहिये कि वह भितव्ययी हो अपनी आमदनी का आधा भोग बचावे यदि आधा न वच सके तो चतुर्थाश अवश्य बचावे इसमें से कुछ दान करें और कुछ मविष्य में बड़ी आवश्यकताओं के

लियें रक्खे।

काम पुरुषार्थ के अर्थ के सम्बन्ध में बहुत से भाईयों को भ्रम है। काम पुरुषार्थ का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य भोग विलासों में रत रहे उसका अर्थ यह है कि मनुष्य में ऐसी शक्ति होने कि वह अपनी इच्छा की पूर्ति कर सके। यदि शक्ति न होगी तो वह इच्छित वस्तु, को प्राप्त न कर सकेगा और उस की चिन्ता में दुखी रहेगा। शक्ति मनुष्य में ब्राह्मचर्य से ही हो सकती है इस लिये मनुष्य की ब्रह्मचर्य पालना चाहिये शरीर को स्वस्थ रखने के लिये शहन्य ये शुद्ध वायु सेवन और व्यायाम करना चाहिये। इह्मचर्य शुद्ध वायु सेवन जैसे मनुष्य के लिये आवश्यकर वैसे ही क्षियों के लिये भी आवश्यक हैं। यदि क्षियां दुवंल होंगी तो उनकी संतान और भी अधिक दुर्गल उत्पन्न होगी।

हमको सामाजिक बृदियां निकालदेनी चाहिये बार्लायवाह के कारण ही विध्या विवाह का प्रश्न उठता है यदि कन्या का विवाह पाँच वर्ष की आयुमें कर दिया गया और वह यौवन अवस्थाको १५ वर्ष में पहुंचती है तो इस दस वर्ष के क्रांतराल में उसके विध्या होने की सन्भावना है। यदि १५ वर्ष की आयु में विवाह किया जाये ता इस दस वर्ष के भीतर विध्या होने की शङ्का जाती रहे। इसलिये वालविवाह वन्द कर देना चाहिये। इसी तरह वृद्ध विवाहादि अन्य बृटियों को मी निकाल देना चाहिये।

यहत से भाई विशेष कर गुमों में शिद्धा की आवश्यका नहीं समभते जहां बालक म, ६ वर्षका हुआ अपने घरेलु कार्य में लगा लेते हैं जिससे उन की भविष्य उन्नति दक्त जाती हैं इस लिये हम को

खाडिये कि ऐसे भार्यों के इदयमें शिक्षा की भाव-श्यका को झंकित करदें भीर उखित शिक्षा का प्रबन्ध करदें।

प्रस्ताव

१ यह परिषद् भीमान सेठदया चन्द्र जी कलकत्ता ला० रामानन्द्र जी किरोजपुर, रायसाहब सेठ विजयचन्द्र जी बांसवाड़ (मेवाड़) की मृत्यु पर शोक तथा उनके बन्धुओं से सम्बेदना रखती है।

प्रस्तात्रक-सभापति सर्वानुमति से पास

२ यद परिवद्य मन्त्री द्वारा उपस्थित रिपोर्ट को पास करती है।

> पुस्तावक-श्रीयुत कस्तूरचंद्र जी वकील समर्थक-महाजन वकील

श्रीमती महारानी द्रावनकोर ने अपने राज्य में पर्युविल के निषेध की आक्षा दें दी है अतः यह परिपद् श्री महारानी को इस द्यामयी कार्य के जिये धन्यवाद देती है।

> प्रस्तावक-सेठ वसंतठाल बांकीपुर समर्थक-मास्टर छोटेलाल

अध्युत महाराजासाहब देवासने वीजासन देवा पर होने वाली पशुविल को पन्द कर दिया है अतः यह परिषद् महाराजा साहब देवास को घन्यवाद देतीहै और इस दयामयी कार्यके लिये जीवव्याप्रचारिणी सभा आगरे को बधाई देती है।

मस्तावक-ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद समर्थक-प० देवकीनन्द्रम तीर्धों के सम्बन्ध में दिगम्बर श्वेताम्बर एकता के विषय में परिपद् के मन्त्री महोदय ने गत वर्ष के प्रस्ताव न० १ की अमली कार्रवाही की रिपोर्ट पढ़ी उस पर यह परिषद् गतवर्षके उक्त प्रस्ताव की पुष्टि करती हुई पुनः प्रस्ताव करती है कि कमेटी अपने इस पकता के कार्य को निम्नलिखित महानुभावों से सहायता लेते हुप सफल बनावे।

महाराज इन्द्रविजय, श्रागरा बा॰ कीतिप्रसाद घकील, मेरठ बा॰ गिरनारीलाल, देहली बा॰ मणिलाल की बल्लम जी कोठारी शहमदाबाद । शहताबक-सम्पतराय समर्थक-अजितप्रसाद

६ श्रीयुत रचीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन बोलपुर में बिश्वभारतीय विभाग के भीतर जैनधर्मकी शिक्षा दिलाना वहांके कार्यकत्तांओं ने स्थीकार किया है अतएव बर्चमान में वहां एक जैन विद्वान के नियुक्त करने की अत्यन्त आवश्यकता है। नीचे लिके पांच महाशयों की एक कमेटी बनाई जाती है, जो ६ मास के भीतर इसकी उच्चित व्यवस्था करे।

> ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी सिंहई पन्नालाल, अमरावती सेठ अम्बादास रोमजी महाजम बा० कस्तूरचन्द जी बकील, जबलपुर बा० रतनलाल जी बिजनौर

अह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैनधर्म प्रचार के हेतु उपदेशक विभाग के छारा सैनधर्म के महत्त्व को दर्शानेवाले ट्रेक्टों की कम से कम ७०,००० प्रतियां प्रसिद्ध २ विद्वानों से लिखा कर और भिन्त २ भाषाओं में प्रकाशित करा कर वितरण की जातें। इस का कार्य भार श्रीयुत कामताश्साद जी के सुपुर्द किया जावे। प्रस्तावक-ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी समर्थक-पंग्रोविन्दराम जी

अधित सीताराम विश्वनाथ अगरकर नागपुर ने एक वर्ष में एक मास और प० गोविन्दराम जी काव्यतीर्थ ने १५ दिन सर्वसाधारण जनता में जैनधर्म प्रचार करना स्वीकार किया है। यह परिपद्घ जनको धन्यवाद देती है और अन्य महानुभावों से भी उपर्युक्त कार्य करने की ब्रेरणा करती है।

> प्रस्तावक-यां० रतनलाल समर्थक~सेठ ताराचंद " ब्र० शीतलप्रसाद जी

- 8 पैंडत (मैनपुरी) में भी महात्रीर स्वामी की मूर्ती के सामने जखेया बाबा के नामसे बिल होती है जिस से प्रतिमा जी की बड़ी अविनय होरही है तथा जैन धर्मानुयाइयों के हृदय में आधात पहुंचता है। अतएव यह, परिषद प्रस्ताव करती है कि बिलदान रोकने और प्रतिमा जा की अविनय हटाने के लिये जीवद्या प्रचारिणी सभा से प्रेरणा की जावे।
- १० यह परिपद् प्रस्ताव करती है कि जैन सिद्धान के मर्मक विद्वानों द्वारा जैन वोडिंगोम व्याख्यानों के लिये इनके अधिकारियों से विशेष प्रश्ंध का प्रयास करे तथा उन विद्वानों से भी वहां व्याख्यान देने के लिये प्रोरणा करें जिस से कि वोडिंगों के उच्चशिक्षा प्राप्त छाजों में धर्म ज्ञान

के अध्ययन तथा स्वाध्याय के लिये प्रेम पल्ल-वित हो। इस कार्य में श्रीयुत कर रूपचन्द जी वकील जवलपुर वा० वलवीरचन्द जी मंत्री बोर्डिंग व्याल्यान विभाग को सहायता दें।

> प्रस्तावक-कापड़िया जी। अनुमोदक-पं० देवकीनन्दन जी

- ११ इंगलिश हाईस्कूल तथा कालिज छात्रालयों में लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा को उत्तेजना देने के लिये यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि एक परीक्षा विभाग स्थापित किया जावे।
 - (क) इस में ४ कक्षा होंगा प्रत्येक कक्षा के सर्वोत्तम परीक्षोत्तीणं दो विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये जार्नेगे।
 - (ख) हाईस्कृत्यके विद्यार्थी इच्छानुस्मार हिन्दी या अग्रेज़ी भाषा में परीक्षा दे सकेंगे किन्तु कालिज के छात्रीको अगेड़ाी में ही उत्तर देना होगा।
 - (ग) परीचा की पुस्त में निम्न प्रकार होंगी । कत्ता १ House Holder's Dharm रत्नकाँड श्रायकाचार
 - " २ Practical Path या तत्वमोठा
 - " ३ Dravya Sangrahद्भव्य संप्रह य तत्थार्थ सूत्र
 - " ४ पंचास्ति काय

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचन्द्र की मंत्री परीक्षा विभाग बनाये कार्गे (

प्रस्तावक—बात्र् कस्त्रचन्द्र समर्थक— मिस्टर कोटारी १२ यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि विदेशी और मिल के कपड़ों में चर्ची तथा अपिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है अतः यह परिपद् अपने पहिले पृस्तार्थों को दुहराती है कि पृत्येक मिन्दर तथा अन्य धार्मिक कार्यों में शुद्ध खारी का ही पृयोग किया जाते। सर्व साधारण जनता से भी प्रार्थना करती है कि देश की आर्थिक दशा सुधारने तथा धर्म की रक्षा के लिये शुद्ध खारों का उपयोग स्थयं करें तथा उस के प्रचार में विशेष प्रयत्न करें। प्रस्तावक—रतनलाल असुमें दक्

१३ यइपरिपद्व प्रस्ताब करतीहै कि वस्बई प्रान्तिक दि० जैन सभा और भाव दि० जैन महासभा इन दोनों के नान्द गाँव और शेडवाल के भधि वेशन पर को जैनियों में मत भेद हुआ उसके उप्रस्त्र धारण करनेसे सामाजिक और बार्तिक कार्यों में हानि होने की अधिक संभावना है। जिस का परिपद् को अस्यन्त खेद है। अतः यह परिपद् अधिवेशन के सभापति श्रीमान् जयकुतार देवीदास चवरे से प्रार्थना करती है कि शांति स्थापन के लिये उद्योग करें। प्रस्तावक—महाजन समर्थक—पं० देवकीनन्द्रन सनुमादक—पं० राज भाऊ

१४ मा० दि० जैन परिषद् की प्रबन्ध कारिणी समिति के सदस्यों में निस्नलिबित महाराव बढ़ाये जात्रें।

१ बा॰ कस्तृरचन्द्र जी वकील जवलपुर २ सेठ मनोहरबापूजी महाजन वकील आकोला १ सिघई हीरालाल जी बदनेरा (अमरावतो) ४ सेठ चिरङ्शीलालजी वार्षा

५ सिंघई प्रमालाल जी अमरावती

६ संड याद्वराव भावणे वार्धा

७ ला० रूपचन्द्र गागीय पानीपत

म् प्रो० लक्ष्मी चन्द्र जी मन्त्री परीक्षा विभागः प्रस्तातक तथा समर्थक, सभागति

१५ स्थानीय परिषद् अपने सभासदी को चन्द्रः
दक्तट्ठा करेगी। स्वयं हु॥ रक्खेगी, अन्य परिषदी में प्रत्येक का हु॥ भाग होगा। यदि तीकः
विद्यामान हो तां।) स्वय रक्खेगी है। भाग
अन्य परिषदों में प्रत्येक का होगा। यदि दो
विद्यमान हो तां।) रक्षेगी और है। भाग
परिषद् को देगी और यदि इस प्रान्त में कोई
परिषद् को देगी तो॥) भा० परिषद् को देगी।
भीस भीचेवाला परिषद् दक्षट्ठा करेगा और
अपने से ऊपर वाले को अपना भागी रक्षकर
शेष भाग देगा।

१६ आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित वजट पास किया जाता है।

7330

श्राय १४००) बीर स्नाते -१००) सभासद् १५००) व्यय
२५००) वीर खाते.
५००) एकता विभाग
१०००) प्रचार खन्ने
५००) ट्रेक्ट खाते
५००) इतिहास विभाग
१००) प्रवन्ध खाते (स्टेशानरी क्र्र्क भादि)
१००) परीक्षा विभाग व बॉर्डेक्स विभाग ५००) पुरुक्त तथारी

संसार दिग्दर्शन

हृइद्-पारितोषिक । समय चूक पछताना होगा। इस समय जैन समाज होप, फूट और कत्तह का क्षेत्र बन रहा है, जहां एक ओर 'अहिंसा परमो भर्मः" का उच्चार होता है तो दूसरी तरफ बंबे बाजी चल रही है, जिस का भर्म द्यामयी है, जो समाज शान्ति का आगार है उस में यह अशा-न्ति क्यों ! इतनी पतिताबश्या क्यों !

समात में कई इल विन्द्यां होकर थींगा थाँगी मचाई जारही है और समाज को रक्कातल को एहुंचा रहे हैं, शेड़वाल में महासभा के अधिवेशन के भवसर पर पंडित दल और बाबूदल में समात सुधार के बदले भगड़ा होकर मारपीट हो ही गई, दोनों दल किस बूते पर इतने उताक हुए हैं और क्यों इतनी विषमता फैल रही है, यह हमारी समभ में बिउकुल नहीं आता।

यह समाज हर समय नई २ सभायं और सं-स्थायं उत्पन्न कर रहा है तो भी बास्तविक सुधार अभी तक नहीं हो पाया, इसका मूल कारण क्या है। यह अवश्य विचारणीय है।

भत्रव हम चाहते हैं कि दिगम्बर जैन समाज का प्रत्येक विद्वान् और विचारशील व्यक्ति गंभीरता पूर्वक विचार करे तथा यह दूंद निकाले कि यह स्थिति क्योंकर हुई और अब उसका सुधार कैसे हो सकता है।

इसी हेतु को पूरा करने के लिये हम अनुरोध करते हैं कि दिगम्बर जैन समाज के बिद्धदुगण (पण्डित, बाबू या अन्य कोई सन्जन) अपने स्वः तन्त्र विचार का निर्भाकतापूर्ण निवन्ध लिवकर हमारे पास भेजरें, जिससे हमें यह मालूम हो सके कि हमारे समाज के नेताओं व विदानों का विचार क्या है? विषमता कहां आती है तथा उसके दूर करने का उपाय क्या हो सकता है, सर्वश्रंष्ठ निर्ध लेखक को ५०१) रु तक का तथा ितीय को ३०१) रु तथा तृतीय को १५१) रु तक का पारित्रीय को दिया जावेगा।

पारितोषिक का निर्णय निम्नलिखित कमेटी झारा होगा।

- १. रायवहादुर पत्मादुद्दौला पसः पमः सापना सा० घीः पः चीः पस सीः, पल पलः घीः
- २. रायबहादुर राज्यभूषण सर सेठ **हुकमञ्**द
- ३. रायवहादुर राज्यभूषण सेउ कल्याणमळ जीसा०।
- ४. श्रीमान् षाणिज्यभूषण संड लालचन्र जी सेठी ।
 - ५. श्रीमान् लाला इजारीसाल जी जैन।
- भीमान् जौहरीलाल जी मिसल पमः पः
 पल पलः बीः
 - श्रीमान भैवरलाल जी संठी
 - 🛋 श्रीमान् गुलावचन्द्र टींग्या
 - है. भीमान् पर जोचनधर भी न्यायतीर्थ
- १०. श्रीमान् यात्र सुखसन्द जी जैन बी. ए. हेड मारटर, ति० जैन हार्रस्कृत ।
- ११. भीमान् साहि यरता प० दश्वारीलाल जी न्यायतीर्थ।

लेख भेजने की शर्तेः —

१. विषयः-निबन्ध में निम्न ति जित सम्वर्ण विषयों पर प्रकाश डाला जाना आवश्यक है (१) जैंन समाज की वर्तमान दशा (२) महासभा के आज तक के रचनात्मक कार्यक्रम और उसमें कहां तक सफलता हुई उसका पूर्ण विवेचन (३) किन किन विषयों पर और क्यों लोगों में मतभेद है सत्य किस ओर है (सप्रमाण) (४) यह मतभेद किस प्रकार मिट सकता है (५) विधवाओं के प्रति (उनके चरित्रकी दृष्टि से) समाज का कर्तव्य (६) असहायों की शिक्षा, भरण पोपण आदि के संगन्ध में समाज का उत्तरदायित्व (७) समाज की प्रचलित कुरीतियां (घासविवाह, वृद्धविवाह, कन्याधिक्य) आदि व उनके सुधार के उपाय (८) नकते के संबंध में (मरण संबंधी रसोई) स्वष्ट विचार (&) फिन्नुळलर्ची-मध्यम श्रेणी के लोगों पर उस का क्या असर पड़ता है विवाह । नुकते आदि में किस प्रकार कम खर्च की व्यवस्था की जा सकती है (१०) चरित्र हीन घाई के संबंध में उन के कुट्मियों और सप्राज का कर्तव्य (११) प्रचलित संस्थाओं (छात्राधम विदालय आदि) से अभीतक बास्तविक लाभ वर्यो नहीं हुआ? उनी पूर्ण उपयोगी और लाभदायक कैले बनाया जा सकता है (१२) सञ्चरित्र तिश्वाओं का आदर्श विधवात्रम किस प्रकार का होना चाहियं (१३) समाज की सच्ची और बास्तविक उर्जात किस प्रकार हो सकती है।

२ लेव शुद्धदेवनागरी लिपिमें फुल्सकेप साईज के कागज़ पर एक तरफ लिखा हुआ होना चा-हिये, पृष्ठ संख्या ३ से अधिक न हो। ३ लेख हमारे पास ता० १५-२-१६२५ तक पहुंच जाना चाहिये,।

> [राय बहादुर राज्य भूषण] तिलोकःचन्द कल्याणमल इन्होर

—मेग्ठ में श्री बीर पुस्तकालय की स्थापना, जैन कुमार सभा की ओर से गत ध जनवरी सन् १६२५ रविवार को एक पुस्तकालय व पाउन भवन की "श्री वीर पुस्तकालय" के नाम से स्थापना कर दी गई हैं। रीडिंग कम (पाठन भवन) में स्थानीय उदार सज्जनों की ओर से 'फार-बर्ड' 'लीडर' 'वन्देमातरम (उर्द्',' 'आज' (चार दैनिक), 'जैनगजर' 'जैनिमन्न' 'नवजीवन' 'यगं-इन्डिया (अंब्रेजी)' (चार साप्ताहिक) च षीर' 'दिगम्बर जैन' 'जैन प्रदीप' 'जैन प्रचारक' 'शैन गत्तर (अब्रेजों)' 'माधुरो' 'माडर्न रिविय' आदि अन्य १३पत्रों का प्रबंध होगया है। पुस्तकों भी लग-भग १२५ इकर्टी हुई हैं परन्तु अन्य, पुस्तकों की अत्यन्त आवश्यका है। सभा के पास फंड न होने से इसका प्रदर्ध करने में अस नर्थ है। अतः सनाज के स् र्यातिद्वित विद्वानी च लेखको तथा धनांड्य सजनी से प्रार्थना है कि रूपया आनी लिबी पुस्तक प्रदान करें।

-- उत्तमचन्द् जैन, मंत्री।

— महासभा सम्बन्धी आवश्यक निवेदन समस्त दिगाबर जैन वंधुओं और भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभा से सम्बन्ध रखने वाले समस्त सन्जनों से सविनय साग्रह निवेदन हैं कि इस वर्ष शेडवाल (बेलगांव) में भा० दि॰ जैन महासभा के २६ वें अधिवेदान में प्रबन्धकारिणी कमेटी के

चुनाव में महामन्त्री श्री० सेठ चैनसुबदास जी छाबडा सिवनी के स्थान में श्री॰ बालचंद रामचंद जी कोठारी बी॰ ए॰ एम॰ एल॰ सी॰ (मैं) महा-सभा के महामन्त्री नियत किये गये हैं। इसलिये महासभा भी सभासदी फीस भेजना, सहायता भेजता तथा महासभा सम्बन्धी अन्य किसी तरह की कार्रवाई (पत्रव्यवहार आदि) (Dealing) अब निम्न लिखित पते से ही करें, क्योंकि नवीन चुनाव होजाने से श्री० चैनसुबदास जी छावड़ा को महासभा महामन्त्री की हैसियत से महासभा सम्बन्धी कुछ भी कार्रवाई करनेका अब अधिकार नहीं है और इनके किसी भी कृत्यसे अब महासभा बन्धनकारक नहीं होगी तथा महासभा के मुखपत्र जैनगजर के सम्पादक पं० रघुनाथदास जो सरनौ के स्थान में बा॰ अजितप्रसाद जी जैन एम॰ ए॰ एलः एलः बीः बकील, अजिताध्रम, लखनऊ नियुक्त किये गये हैं, इसलिये जैनगजर का मृत्य, विश्वापन चार्ज व सहायता आदि भी निम्नलिबिन पते पर ही भेजें, अर्थात् अर्थ किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार भूतपूर्व महामंत्री व जैनगजर संपादक प्रकाशक से न कर निम्नलिखित पते पर ही करें।

> बालचन्द्र रामचन्द्र कोठारी महोमन्त्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् शुक्रवार पेठ-पृता ।

— २ जनवरी को भा० दि० नैन
महासभा की नयी प्रबन्ध कारिणी ने निश्चय
किया है कि पूर्व महानन्त्री आदि दफ्तर का चार्ज
नहीं देते है अतः उनके विरुद्ध आवश्यक कानूनी
कारवाई की जाबे और आवश्यक अधिकार कानूनी
कारवाई करनेके श्रीयुत् बातचन्द्र कोठारी जनरल

सेकेटरी को दिये गये।

—दीतारी ग्राम जिला मुरादाबादके मंदिर का प्रवन्ध ठीक न था। जैन सेवक समिति राम-पुरने उसका प्रवन्ध ठीक कर दिया है तथा कितने ही भाईयों ने दर्शन करने का नियम लिया है उक संबक समिति का कार्य अनुकरणीय है।

हर्ष ! परम हर्ष !! महाहर्ष !!!

— विजाशन (भेंसा कलाली) देवी (देवास स्टेट) में प्रतिवर्ष १५०० पतु शें की बलि होती थी। जीव दया प्रचारिणी सभा भागरे के प्रयत्न सं देवास स्टेट ने कानूनन बिल दिंसा को बन्द कर दिया और १५ सहस्त्र पशुओं के प्राण की रक्षा की। जीवद्या प्रचारिणी सभा और उस के मन्त्री पं॰ बातूराम जी का प्रयत्न सराहर्नाय है।

—-श्री १० इग्रहतापुर जी अतिशय चीत्र का मेला अपूर्व समारोह के साथ मिति माघ शुक्ला १४ दशी से फाल्गुन कृष्णा ५ वी ता० म फरवरी से ता० १३ फरवरी सन् १६२५ तक होगा ।

श्री महावीर उदासीन आश्रम का अधिवेशन होगा तथा अञ्छे अञ्छे त्यागी बिहान पधारेंगे । राजनैतिक िचारी की सभायें तथा पंचायत द्वारा जातीय भगड़े तथ किये जाएंगे।

इसलिये आयमहानुभावों से सानुरोध निवेदन है कि इस अत्रूल्य अवसर को हाथ से न जाने देंगे सकुटुम्य पधारने की हाया करेंगे।

—धन्यवाद ता० १६ जनवरी को ला० घंमड़ी लाल मिठन लाल सरधेने वालों के सुपुत्र चिं० दीपचन्द जी का विवाहोत्सव था। वारात कस्या से बड़ा निवासी ला॰ जनकी दास के यहां गईथी। इस सुअवसर पर सामाजिक संस्थाओं को ३१५) दान दिया जिसमें ४) वीर को भी प्रदान किये जिसके लिये उनको कोटिशः धन्यवाद है-प्रकाशक

-- कुरावली में प्रतिष्ठोत्सव । ज़िले मैन पूरी में कुरावली निवासी श्री० मिजाजीलाल जी ने निज द्वारा निर्मापित येदी का प्रतिष्ठात्सव श्री। पः चम्पाराम जी एवं पः विजयकुमार जी न्याय-तीर्थ को व्यवस्था विधि में मिती माध सुदी २-५ सं । १६८१ तक सानन्द कराई। इर्द गिर्द के जैनी भाई सम्मिलित हुए। रथयात्रा में भजन आदि का प्रबन्ध अच्छा रहा था। नित्यशास्त्रसभा होती थी। प्रतिष्ठाकारकों ने निम्नप्रकार दान दिया-११) जैन मन्दिर कुरावली, ११) मन्दिर कंविल, २७) मंदिर २७ स्थान के, ४) स्यादुवाद विद्यालय, ४) सिङांत विद्यालय, ४) औषधालय कानपुर, ५) अनाथालय दिल्ली, प) धाविकाश्रम बम्बई, प) वालाविश्राम आरा, ५) महासभा पुना, ५) परिपद विजनीर, ४) पज्ञकेशनल पसोसियेशन मेसूर, २) जैनसभा कुरा-वली. ५) बढेल बालसभा, २) 'वीर'। कुल १०१) रुपये। कुरावली के मन्दिर को १ जोडी सोनंके कड़े, ३ छत्र सोने के, १ चँवर, वर्तन पूजा, चौकी चाँदी आदि दिये। महासभा के रुपये नयं चुनाव के अनु-सार पूना भेजे गये। २) वीर को प्राप्त हुर इसके लिये धन्यवाद।

— एक जैन ग्रेडगुएट ब्रह्मचारी हुए
श्री आदि नाथ मन्दिर में ब्रह्मचर्य स्थामी से नागपुर निवासी श्रीयुत् पं० बालकण शहाकार बी०
प० ने ब्रह्मचारी दीक्षा ब्रह्मण की उसी दिन से
आप ही रात को शास्त्र सभा में शास्त्र बांच कर
सुनाते हैं। आपके शाँत परिणाम, तथा शास्त्र का
विषय समभाने की शैली पर फलटण की जैन
जनता अतीव मुग्ध होकर आप को हमेशा के लिए
यहां पर ही टहरने के लिए हृदय से आगृह कर
रही है और यह उम्मेदांकर रही है कि जिस धर्म
प्रचार का बीज श्री महित सागर स्वामी ने यहाँ
पर घोषा और बाल ब्रह्मचारी हीराचन्द अमोलिक
ने जिसका वृक्ष रौयार किया उसको आप पुष्ट
करके जनता को अच्छे फल दिलायेंगे। आप का
नाम ''ब्र० धर्म सागर'' रक्खा गया है।

श्रमरीका श्रीर विलायत से एक बड़े जैन डाक्टरं की श्रामद

यह ख़बर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाक्टर बस्नतावरसिंह जैन, एम० डी॰ (अमरीका) एल-आर-सी-पी पेन्ड पस (एडनवर्ग) एल-एफ-पी-एन्ड एस (ग्लासगी) देहली में तशरीफ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी खुशी की बात है कि आपने हम लोगों की दररवास्त पर सदर बाज़ार देहली में शफाखाना खोला है आप तपेदिक, आतशक, सज़ाक, दमा, हैज़ा, नामहीं, कोड़ और बसासीर (ख़नी या बादी) का इलाज बज़िश्ये पिचकारी (Injection) और शक्य प्रमेह (जियावेतस) का इलाज बगैर अदिवयात करते हैं आपने एक लंड़ी नर्स को रक्खा हुआ है जिसकी जेर निगरानी बीरतों का इसाज होता है।

पता-जग्गीमक जैन, सदर बाजार, देहली

विषय-सूची

विषय ।	Z.	e tio	चंक् पूर चंद	ĩ
१ धीर सेनिक (किता)	***	१५७	8 बार्घा में मा० वि० जैन प्रसिद्ध १६६	Ü
२ जैन जाति के अ० के का०	तथा उपाय	१५=	्र संसार विग्वर्शन 💮 😘 🖰 😘 १००	-
३ सम्पाइकीय टिग्यणियां	***	१६२	The second secon	ق.

जगत्रसिद्ध बनारसी दस्तकौरी ।

चाँदी के फूल मान १।) तोला 😂 💮 सोने के चढ़े फूल मान २।) तोला

(सिर्प बाँदी या चाँदी पर सोने का मुलस्मा करवा के बनाने वाले सामान की सुची) हर अदद कम व वैसी जितने तौल चाँदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

हीदा ५००) से २०००)	परावत	३५०) से	3000)	# बंधनवार	१००) से	400)
अस्यारी १०००) से ३०००)	· 1			समोसरनकीरन		
पालकी १०००) से १५००)	#सिंहासन	१००) से	2000)	*×पब्चमेरु	२०) से	200)
टेबुल ३००) से ५००		७) से	R4)	#अष्टमंगळद्रस्य	१००) से	(00)
हाथी का साज ५००) से १०००)	#मुकट	१०) से	20)	#अप्टप्रातिहार्य	१५०) से	240)
घोड़े का साज २००) से ४००		४५) से	300)	#सोलहस्वपने	१००) से	100)
#बल्लम ५००) से १००	समोसरन	१०००) से	1000)	* × भामण्डल	३०) से	(00)
#सीठा ५०) से ७५) #ज्ञत्मी इंडी ३०) से ५०) जैन मन्दिर के उपकरण ।	अड़ाई द्वीपक रचनाका मा	ी)१०) से डाल)	A00)	*क्रज्या तबत चांदी के	५०) से २००) से	400) (000)
गंबहुदी २५००) से ४०००) वेदी ====================================	तेरह शेपकी रचनाकामा) (४००)से इला)	२०००)	मारहदरी । श्यूजनके सरतन	(400) सं २००) से	400) 4000)

यह क्रोम वाजिज आहंत लेकर बनवा रेते हैं मन्दिरशी के काम में १०) सेकड़ा को आहत लेते हैं। मनदूर कारी-गरों की नकाशी कामको तीवा कोर सादे काम की ०] तीला देते हैं। × इस चिन्द की चीजें तैयार भी रहती है। # वे बोजें ताबे की नगकर सोने का मुक्तमा होता है।

> पवा—(१) मोतीचन्द क्रुव्जीलाल, मोती फटरा, बनारस । (२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्योत्तम, त्रांदी विश्वाम बनारस सिंदी,

Tel, Address "Singhai" Beneres

वित्रवाः दुवेषता श्रोत जिल्ला व रोगो का कारण अभिक सन्तान का डीना डो है।

क्षेत्रहा-जीव**न**ं

क्षत में है कि कि शित पर यह वसलाया गया है कि किस प्रकार गमं रहता है, कि मू कारणों से गमें नहीं रहता। तथा िना कारण अझनतायश हजारों कियाँ क्यों कन्या मानली जातों हैं किस प्रकार गमं रह सकता है आदि । जल्यों र सन्तान होने से जहाँ भी का क्य लाक्या नहें होता है वहाँ सितान दुर्वल और रोगों होती है। अधिक सन्तान का पालन पीपण भी समुचितका से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से भाजन्म रोगी दुर्वलेन्द्रय और दुर्वा सम्तानों से देश में दुर्वा और वृद्धिता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य आत हम भी अधिक अनसंख्या होजाने से वृद्धिता की शिकार हा रहे हैं। जैसे सस्तानहीं नता दुर्ज है जैसे ही अधिक सन्तान भी नरकाही है। सुवी जीवन में यूरोप के विद्रार्थों के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लांच की जिब्ब लिखी गई हैं जिनके हारा गृहस्थ अमें का पालन करते हुए भी गर्मिस्थित रोकी जा सकती है और जब चादे सन्तान हो सकती है। गर्म रोकने की जीविध तथा किन २ औविधियों हारा हानि की सम्भावना रहती है सकता आयुर्वेद और यूनानी हारा वर्णन किया है। लगभग चालीस विजी से सुसलित युस्तक का मृत्य २॥।) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगरिश का भंडार

क्र हिमाहि नेता है ।

शिर पर्दे, दिमाग की कमज़ोरी, आंखों की कमज़ोरी, आंखों के सामने पहते र अन्धेरा होता, शिर चकराना, कम आयु में ही वालों का बिरवा या पकना आदि को दूर करता है बीर शलों को बढ़ाता है।

रिमाद्वि तैल- शोतलता और सुगन्धि का सजाना है।

हिमादि तेल-बनस्पति से तैयार किया गया है।

विषादि तैल-विदेशी और विषेठी वस्तुओं से रहित है।

हिमादि तैल-चार दर्द, से हाहाकार करनेवाळां को हैनाता है।

हिमादि तैल-अधिक दिन स्थाने से बश्मा स्थाना भी खुटाता है।

विवादि तेल - प्रीच्य शरह सतु के लिये पृथक २ औविषयों से बनाया जाता है। पक बार सनामें से हमें बूरी जाशा है आप रसके गुणों पर मोहित होजायेंगे। बदि बक्त व हो तो बाम यापिस। मृत्य १) शीशी, एक दर्जन १०) हपया।

पता-शहुर स्वदेशी स्टोर, विवसीर (यू॰ बी॰)

केवल २०।) रुपये में

वोर एक्षिकानः

हिन्दी में उपने होटि कर संजीव सामाजिक एक सामाधर तक मिलाग । जिसमें संबंधियों भी हर प्रकार के वार्षिक, सामाजिक, पेतिहासिक एवं साहित्य संवन्धी उपनकाटि के लेख रहते हैं। तथा गन्प, कवितायं, बाह्युत व नवीन से नंबीन संकार अर के समाचार और मनारंजन का सामान भी स्व रहता है। काम्ब्र, खपाई, सफाई सब ही उत्तय रहता, है। पत्र की नीति स्वेष्ट निहर और समाज के प्रकृत पर निहयस रहती है।

🎇 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्दा भेगने वालों को एक दम नया प्रन्थ

सहावीर भगवान है

विलकुल सुपत पिलेगा

े जिसमें महाबीर भगवान की जीवनी आधुतिक शेळा पर वड़ी ही गेलक भाग में अत्यन्त उन जीन के साथ लिबी जारही है। यह यन्य जैन अजैन सब हो के लिये उपयोगी सर्गकत होगा। हिन्दी संसार व जैन साज में में इस मार्ज की रचनायें अबे तब बहुत हा अम निकल पार्ट हैं। इस वर्ष भी महाबीर जवन्ती है उपलच्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निक लेगा। तरह २ के रड़ीन व खादे बहुत से जिनों के अतिरिक हिंदी व जैत संसार के आधुनिक लेलकों के लेख कांश्रताय, सद्ध आदि अन्यान्य विषय भी रहेगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अह देखने ही से साल्युक रक्सा ।

शोध ही २०) भेजकर शहको है गाम खिला देना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिय भी

वीर अत्यत्तम पत्र सावित होगा

प्रकाशक-रामेन्द्रकृपार जेली, विजनीर (युरु पी०)

भावित जगरीयः च वे दोशकरपु वेस विजनीर है छुपा

को वर्दमानाय वर्मः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्ध का

पाचिक पत्र

सम्पाइक:---

चपसम्पाद

निषमेशूषण घ० दि० ब० शीतलमसाद जी

श्री कामतांगसांद जी

इस वर्ष वीर कै प्राहकों को उपहार में

'महावीर भगवान और उनका उपदेश'

विवकुल मुफ्त|मिसेगा ।

इस अमूल्य उत्तम प्रत्य में श्री बीर भगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ साथ जैन धर्म की अतीव माचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता की न केवल जैन प्रत्यों के प्रचानी लेखों वरन संसार के बड़े बड़े अजैन विद्वानों की साची द्वारा सहद प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। यह प्रत्य बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर व सरल भाषा में लिखा गया है। अपने दंग का निराला ही प्रत्य है।

शीघ्र ग्राह्क श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिये अन्यथा पळ्ताना पहेगा।

प्रकाशक-श्री राजेन्द्र कुमार जैन रईस, विजनीर (यूर पी०)

'वीर' का विशेषाक

पिछले वर्ष की भाँति इस बर्ष भी हमने महावीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग विरंगे अनेक चित्रों सं शुशोभित, अन्यान्य विषयों में विभूषित, एक मनोहर और अत्युक्तम उपयोगी विशेषांक निकालने का निश्चय किया है। जिस में भीयुत बा॰ चम्पतराय जी वैरिष्टर बा॰ ऋषभदासजी बकील, बा॰ हीरा लालजी एम ए.गिरीशजी बी॰प॰ आदि बड़े २ जैन-अजैन आधुनिक लंखकों के लंख व कवितायें होंगीं। यह अंक अपने ढंग का एक ही होगा।

परन्तु 'वीर' की आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह तब ही संभव है । जब कि हमारे ब्राहकगण व सब्दें धर्म-हिनेबी अपनी चवला लक्ष्मी से, तथा बोर की ब्राहक संख्या बढ़ा कर इस में सहायता करें।

इस अन्त्य विशेषांक के लिये केवल २००) की सहायता दरकार है। यदि कुछ सज्जन दस दस बेस-बोस रुपये इस धर्म कार्य में प्रदान कर पुण्योण जंन करलें, तो यह विशेषांक घीर के प्राहकों के समक्ष विना मृल्य ही अर्पण किया जासकता है। आशा है पाठक नाण इस प्रार्थना पर ध्यान देकर अनुमृहित करेंगे।

--विनीत-प्रकाशक।

"वीर" के नियम।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रत्येक अंग्रेज़ी मास की १ ली व १५ वीं तारीक़ को प्रकाशित होना है। २-वार्षिक मूल्य उपहार तथा विशेषांक सहित २॥) है।

३-वीर के चन्दे का वर्ष दीपमालिका (कार्तिक मास अथवा महावोर जयन्ती (केश्र मास) से शुरु होता है। दरमियान में बनने वाले प्राहकों को पिछले प्रकाशित अंक जब से वह प्राहक बनना चाहुँ बी० पी० का रुपया आने पर फौरन भेज दिये जाते हैं।

ध-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक सनोजिक, पत्रं साहित्या सम्बन्धो विविध विवयों के लेख प्रका-शिव होंगे। परस्पर विदेषोत्पादक लेखों को स्थान नहीं दिया जायगा।

प्र-किसी लेख के प्रकाश करने न करने तथा घटाने बढ़ाने का अधिकार सम्पादक को होगा। यदि लेखक चाहेंगे तो उनके अप्रकटनीय लेख पोस्टेश मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे।

६-लंब और परिवर्तन के पत्र निम्न पते पर आने चाहियें:--

भीयुत् कामताश्साद जैन, उपसम्पादक 'बीर' असवन्तनगर (इटावा)

-अपत्र का मूल्य तथा विज्ञापन और प्रबन्धकार्यसम्बन्धी पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए श्रीयुत् राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "घीर' विज्ञनीर (यू० पी०)

c-परिषद् सम्बन्धी पत्र व्यवहार इस पते पर करें:-

भीयुत् रतनल ल जी जैन वक्तील, मंत्री 'भा० दि० जैन परिषद्ः, 'बिजनीर

श्री पहाबीशय नमः

"चामा वीरस्य भूषणम्" शी भारत दिगम्बर जैन परिषर्का पाचिक मुख पत्रः

वीर

"यह धरणी रणभूमि, यहां लिड़ना ही होगा। यदि न छड़े ? पददित पड़े सड़ना ही होगा॥ जय चाहो यदि लगातार बढ़ना हो होगा। वह देखो उद्देश्य शिखिर चदना ही होगा॥ धनो वीर संसार में कायरका क्या काम है। क्षणभर भी भूलो नहीं यह जीवन संमाम है॥"

--- "वियासंकार"

वर्ष २

विजनौर, फाल्गुण कृष्णा ७ वीर सम्घत् २४५१ १५ फरवरी, सन् १६**२५**

গ্রহ হ

* ऐक्य *

एक घरा का श्रद्ध जगत में जो खाते हैं पाते हैं जलद का नीर जगत में जो रहते हैं जन वेगमध्य जो एक पर्वन के एक अग्निका तीत्र तपन जो नितं सहते हैं की रुचिर चाँदनी में सूर्य के असहताप की नित हैं सहते ॥ पात्र मुंह नाक सभी हैं एक तरह के । सब साधन एक किन्तु इम क्यों हैं बेहके ? ! आज फिर भेद हुवा क्यों व्योम धरासा ! जग व्यापक यह धर्म हुना क्यों पड़ा मरा सा 🖁 तक प्रेम प्रवाह न हृद्यों में वह जावे । तक उन्नति पन्य इमारे नयन न आवे ॥

हे क्रुपासिन्धु ! जगवन्धु ! अव क्रुपा कीजिये करुण हो । हों ऐक्य सूत्र के बन्ध में, उन्नति रिव फिर अरुण हो ॥ — अुवनेन्द्र

न हैं वे भीरु महा हैं वीर

(लेल ह—साहिःयरत श्री दर्शरीजाल जैन न्यायतीर्थ सम्पादक—"परवार बन्धु")

कि जी को उक्त समस्या की पूर्ति पर परिपद्द के वार्धाविवेशन में स्वर्णपदक दिया है। कविता निम्न प्रकार है:—

(3)

दुलिन होते जो लाख पर पीर। न हैं वे भीर महा हैं बीर॥टेस।।

> निर्वलों का करते हैं त्राण । विश्वका करते हैं कल्याण ॥ सत्य पर दे देने हैं पाण । त्यागका जीवित यदीपमाण॥

हाथ में है न यदिप शमशीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीरण।

·(₂)

जगत में दुख का पारावार। देख कर होते दुखित अपार॥ हान का सुदृ पोत तैयार। स्वयं करते, हो बेड़ा पार॥

देख सकते न पराई पीर। "न हैं वे भीरु महा हैं कीर॥"

(३)

जगत में होता है संग्राम! और कोई न यहां है काम।। सत्य तो होता है बदनाम । स्वार्थसं उसका काम तमाम॥

देख यों पाप न धरते धीर । "न हैं वे भीरु महा हैं बीर ॥

(g)

रहे सिरपर विगदा या रोग। या कि हो दुष्टों का संयोग॥ गालियां बरसावें वे लोग। समभते निज पार्थोका भोग॥

सहन ऋरते होते न ऋधीर । "न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(4)

स्वार्थमय है सारा संसार । विना कारण वैरी तैयार ॥ अकारण ही उनको दें मार। तद्वि वे कभी न करें महार॥

भले ही हो जर्जरित शरीर। "न हैं वे भीठ महा हैं वीर॥" (&)

नहीं हो चिथड़ा भी तन में। चिट्न हो शतशत भोजनमें।। भले ही रहना हो बन में। न चिन्ता है कुछ भी मनमें।।

न चाहें चीर खीर प्राचीर। न हैं वे भीरु महा हैं दीर।

(0)

शत्रुता पर न कभी है ध्यान । शत्रुमित्रों को एक समान ॥ मानकर, जगत बन्धुमय जान । उटाने कभी न तीर कमान ॥

पहिनते स्वयं हैं लोह जंजीर। न हैं वे भीरु महा हैं वीर।

(=)

दरें जो कभी न मरने से । जगत की विषदा इरते से ॥ सत्य पथ बीच विचरने से । दरें तो दुष्कृत करने से ॥

पहिनते शामसंयम का चीर। "न हैं वे भारु महा है वीर।।"

(3)

जगत में फीला है विद्रोह। इसी से छोड़ जगतका मोह॥ द्र कर फूटा ऊहापोह ! बनाली अन्तस्तल में खोह।।

वही है निनकी शान्ति कुटीर। "न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥"

(१०)

देखने में लगते कंगाल । गुणों से हैं पर मालामाल ॥ प्रशंसाका भी जिन्हें न ख्याल। कने हैं जो गुदड़ी के लाल ॥

भीत हैं देख गदन का तीर। न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥

(११)

हृद्य में जिन के जरान क्रोध। सदा जगता रहता सद्बोध।! न जिनकी उपकृति का परिबोध। कर सके देव भी न पथरोध।!

बने हैं यद्यपि चीण शरीर । "न हैं वे भीर महा हैं वीर"

(१२)

देखकर विश्व व्यापि सन्ताप। सदो सर्वत्र पाप की छाप। सभी के अन्तस्तल में पाप। निवल को खाजाना चुपचाप॥

नयन से सदा बहाते नीर। "न हैं वे भीरु महा हैं तीर॥"

हृदय की परख

(गल्प)

(१)

स्वाला ने जब प्रफुल्ल के हाथों में अपना पक और गहना ला रखदिया तो प्रफुल्ल की भांखें डबड़ या आई और वह भरी हुई आवाज में कहने लगा:-'सरसी, ऐसे कैसे कब तक काम चलेगा?'

इसके उत्तर में सरसो ने दादस बंधाते हुए कहा-- "आप इस बात की चिन्ता में अपने स्वा-स्थ्य को खराव म करें। सब कुछ सहा जायगा। हुमोदय से शुनदिन भी शीघ्र भावेंगे।"

प्रकुल्ल एक प्रिकृत घराने के सु पुत्र हैं हैं। यह अपने पिता के अकेले लाड़ले पुत्र थे। इस लिए लाड़ प्यार में प्रकुर की शिक्षा का समुचित प्रवा्ध प्यार में प्रकुर की शिक्षा का समुचित प्रवा्ध नहीं किया गया। इन के पिता को जुमीन्द्रारी की आमद से २००) ह० मासिक मिल जाते थे। अंग जोवन आनर पूमीद में व्यतीत होता था। प्रकुर के अपने शिक्षा पुष्तिके असूल्य समय को यार होस्तों का चीकड़ी में व्यर्थ व्यतीत किया करते थे। इतने ही में होश संभालते २ प्रकुल्ल का विधाह एक अवीध सुर्गाला सुंदर कन्या से कर दिया गया। यस किर तो अधिक तर घर ही में रहने लगे, परन्तु योर दोस्त आप का पिण्ड अब भी नहीं छोड़ने थे। इसलिए घर की बैठक में ही यार दोस्तों का कमध्य रहना था। तो भी प्रकुल्ल 'पान' के ही

बहाने से घर हो आया करते थे। सारांशतः यौधन काल के आने के पहिले ही से प्रकुल्ल उस के प्रमाद कानन में रंगरंलियाँ करने छने थे। सुखकाल जाते मालूम नहीं पड़ता। देखते २ प्रफुल्ल के माता पिता अपनी जीवन यात्रा पूरी कर स्वर्गलोक को प्रयाण कर गए। प्रफुल्ल भी अब पूर्व जैसा म्फुल्ल बहुन प्रफुल्ल नहीं है। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यद्यपि एक पुत्ररस्न दम्पित का मन रंजायमान करता उनके घर का प्रकाश धन रहा है।

िता के स्वर्गपयान करते ही प्रफुछल के सर्व यद गर। यारदोस्त और हुआमों को गार्डनपार्ट-यां रोज़ दी जाने लगी। फल यह हुआ कि धन माप्ति का एक मात्र भोत जमीन्दारी जिसकने लगी। कुछ दिनों तक २००) की मासिक आहती रही। किर वही घटते घटते १०) मासिक रह गई। और किर यह नौयत पहुंची कि प्रकुल्ल को अपनी पत्नी सरस्वाला के गहने बेच २ उदर पूर्ति करनी पड़ी। परन्तु सुशीला सरसी तनिक भी अपनी स्व-भाव प्राप्त दहता और पतिशेम तथा धर्म विश्वास से विचलित नहीं हुई।

प्रकुरूल की इस शांचनीय दशा में भी वह प्रस-श्रमुख रहती है और अपने पति को मास्तिक दुःख यथाशक्य होने ही नहीं देती है। प्रकुल्ल अपनी इस शांचनीय दशा में भी अपने यार दोस्तों पर उसे प्र-गट नहीं कर सफे हैं। यह घराने के लड़के हैं। मकट करें तो कैसे करें ! हिम्मन करते हैं परन्तु मुंह में शब्द ही नहीं आते ! अब भी बैठक में बरा- बर बाय पानी उड़ती है । प्रफुल्ल को यदि कभी मुं कलाहट भी आजाय तो सरसी उसे अपने मीठे २ यखनों से शान्त कर देती है । और भट गहना उतार कर हाथ पर रख देती है । तथा पति को विश्वास दिला देती है कि 'हमारे दिन जल्ही किरों।

(2)

दो मास व्यतीत होगर, परन्तु मफुल्ल की दशा न सुध्यी! न उसका बचपन का विगड़ा हशह्य ही संभला! और न किसी भित्र पर वह अपनी इस शोचनीय दशा को व्यक्त कर सका! कई स्थानों पर किसी नीकरी की तलाश में वह गया भी, पर उस की हिम्मत नौकरी करने की न पड़ी! लाड़ चाव में पालापोशा गया और आमोद-प्रमोद में दिन ब्यतीत कि र-हाय, आत वह किये दूसरे की परार्थ नता में रहे! इसही सोच में वह धुल रहा है। उसे कोई उपाय नहीं सूजता!

आज भी बर शानी पत्नी का एक मामूठी गहना रख कर कहीं से (०) के लाया है। बेठक में उसे बसके पुराने मित्र विभूति चैठे दिखाई दिए। विभूति का मुख ग्लान है और उन की दशा शोच-, नीय मालून पड़नी है। यह माना पहिले ही से कह रही है कि विभूति के विभृतिवाले हरें भरे दिन गय! प्रफुल्ल ने बिलुई मित्र को पा प्रफुल्ल ना से प्जान-, मित्र, बहुन दिनों में दर्शन दिए! कड़िय करा हाल काल हैं! कुशल तो है?"

विभृति- "बेराक नित्र में कार्यत्ररा सेवा में हा-जिर न हो सका। और जो दशा इस समय मेरी है बहु दु: खमरी है। भैया, नीन महीने हुए तब मुभे पहिले स्थान से छुट्टी मिल गई। तब से बराबर किसी स्थान पर नियुक्त होने की खोज में मटक रहा हूं। परन्तु आजतक कहीं ठिकाना नहीं लगा है। इस बीच में परिशर के भरणपोषण और दवा दाक मंजो कुछ बचाया था वह सब खर्च कर डाला, अब घर में मुश्किल से दो रोज के लिए खाने की शेष है उधर सिर पर मकान का भाड़ा खढ़ रहा है। तथा वाजार के लोगों के मामूली कर्ज़ होरहे हैं। ऐसी अवस्था में भैय्या, यहि नुमने आज सहा यता न की तो हमारा ठिकाना कहीं नहीं लगेगा; छोटे २ बच्चों पर द्याकर भैय्या थाज हमें १५) उधार दे दो तो काम चले! किर कहीं शायद नियुक्ति हो जायगी! तब तक के लिए मेरी आबक इन १५] मिलने से बच जायगी!

भैय्या, में पाँव ······"

प्रफुल्ल आसमंजस में पड़े बुत सरीले खड़ेथे।

मित्र की दुःस पूर्ण गाथा में वह अपनी दशा भूल

गए। जेय में से १८) हु॰ का नीट निकाल कर मित्र

के हाथ पर रच दिया। परन्दु उस से भी उसकी

संतुष्टि नहीं हुई। भीतर से सासी ने बुलाकर

प्रफुल्ल के हाथ में एक गइना और रख दिया।

प्रफुल्ल ने रुपण लाकर मित्र को दिए और शेष

अपने खर्च को रक्खे।

(3)

शाम से सुबह और कृष्ण से शुक्छ पक्ष होते प्रफुल्ल राज देखते, परन्तु अपने दिनों का फिरना वह और सरसी आशा भरे नेत्रों से ही देखते ! सरसी सहैव शुद्ध हृद्य से अपने शुभ दिनों के लिए और पति के सुन के वास्ते मानवा भाषा करती। आज मानी उसकी भावना फलवती हो गई है। प्रफुट्ट ने अक्ष्यर से मुंह उठा कर मुस्कराते हुए कहा:—

"सरसी, ! हमारे पुराने मित्र बैरिष्टर बोस साहबने अपनी जिमीदारी की संभाल के लिए एक कारिन्दे की माँग निकाली है और वेतन ५०) ६० मासिक लिखा है। मुक्ते विश्वास है यदि में उनसे बाईना तो वह मुक्ते नियुक्त करलेंगे । कहो, क्या कहती हो।"

सरसी-"बात तो ठीक है। मैं तो कहती ही धी कि हमारे दिन ज़रूर फिरेंगे और शुभदिन आयेंगे! दक्षिये वही हुआ न आज ?"

प्रमुख्य भट अपने पुराने मित्र के पास पहुंचे।
खूब आवा भगत हुई। परन्तु नियुक्ति की यात
पर शैरिष्टर मित्र को विश्वास नहीं! वह हँसी
ही समभते रहे! ज्यों त्यों कर विश्वास दिलाया।
तिस पर उन्होंने गम्भोरता पूर्वक प्रमुख्य की इच्छा
को स्वीकार कर लिया!

प्रफुटल खुशी खुशी घर लौटे। आज बैठक मं किर बिश्ति बौटे मिले। शिष्टाचार की वार्ते हो खुकने पर विश्ति ने आज फिर एक मांग पेशकरदी और वह यह थी कि प्रफुटल विश्ति की सिकारश वीस बातू से कर दें जिससे वह उनको कारिन्दा नियुक्त करलें। इस पर प्रफुटल बड़े मर्माहत हुए और दुःखी हदय हो उन्होंने अपनी शोचनीय दशा का बृत्तान्त कह सुनाया! पर निश्ति को उस पर विश्वास न हुआ। हताश हो वह प्रस्थान कर गया!

(8)

दूसरे दिवस प्रफ्ल अपने मित्र के **यह** है। पर

अपना कार्य समभने पहुंचे ! वरान्डा में पैर रकते ही भीतर से निभृति निकला ! विभृति का मुख हल्दी जैसा पीला था ! फिर क्या था, विचारे को देख कर वह भांख बचा कर जाने लगा । परम्यु मफुल्ल ने उसे रोक लिया ! फिर क्या था, विचारे असहाय का दुखी हृदय तलमला गया । वह अपने दु.खा वेश में प्रफुल्ल पर दोषारोपण करने लगा । उसकी सर्व आहें खाली न गईं । उस के अन्तिम शब्द प्रफुल्ल भुला न सके ! 'मैं नहीं जानता था, प्रफुल्ल ! कि तुम मेरे मित्र होकर मेरे होटे २ बच्चों पर भी तरस नहीं लाओंगे और मेरा ही स्थान हुए जाओंगे" विभृति के यह शब्द उन के साथ में मंहरा रहे थे । विभृति अपने घर चलो आया । प्रफुल्ल अपने मित्र के पास भीतर घुंस गया !

(Y)

सरसी अपने पतिदेव के लौटने की प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। उत्सुकतासे उसके नेत्र हारकी आंर लगे हुएथे। पैरोंकी आहटपाते ही उसके नेत्र पति-देव के मुल पर पड़े। वहां प्रसन्नता छिटकरही थी उसे विश्वास होगया कि पतिदेव का मनोरथ सिद्ध हुआ है। उसने नेत्रों से ही भ्रपना हर्षभाष प्रकट किया? प्रफुल्ल ने पहिले ही विभृतिसे भेंट होनेका वृत्तान्त कह सुनाया। उसके सुनते ही सासी का हृद्य पिंघल गया। उसका एकटक यही प्रश्न था कि :विभृति के दुःबी हृदय को आपने कैसे साल्यका दी, ? इसपर प्रफुल्ल ने अपने मित्रसे जो बार्तालाय हुई उसे कहा:-

मेरे मित्र ने मेरी इच्छा के अनुक्ष सब कार्य बतलाना प्रारम्भ किया। में सब सुनलारहा। अन्त में हैंनेकहा कि आपका कार्य में सहर्ष कृत्ता परन्तु में तो यह सब मात्र मनोविनोद के अर्थ यस्हासक्य कर रहा था। अब आप यह पद मेरे मित्र विभृति को प्रदान की जिए। इस पर मेरे मित्र ने बड़ा हर्य प्रकट किया और विभृति को नियुक्त करनेको यवन वे विया।

यह सुनते ही सरसी के नेत्रों में हर्ष के आंस् भलक आर और वह गद् गद् हो अपने पति के गुणों में अनुरक्त हो गई। अपने को धन्य समभती हुई िचारने छनी 'यदि भारत में आज पतिदेव सदूश अपने पड़ोसियों पर करुणा और अनुकम्पा करनेवाले स्वार्थत्यागी नरस्म सर्वत्र हों तो गरीब भारतवासियों के दुःखीं का अन्त शीक्र हो जा?! और वह सहयोग पूर्वक उन्नतप्य पर अग्रमा हो सकें। मगयन्! मेरी इस सञ्जावना की शंग्र पूर्ति हो।#

क्रबंगमा का धनुवादिन क अन्तर।

किं मुन्दर और उनकी रचना

किन्दी जीन साहित्यको प्रकाश में छाने के छिए जीन समाज ने आजतक कोई भी संगठित ढंगसे प्रयत्न नहीं किए हैं। जिन प्रकाशकों ने ब्या-पारिक दूष्टिसे प्रक्यात कवियों की इनी गिनी रख-नायें प्रकट की हैं, उन्होंने समयका प्रकाश देखपाया है। शेष अब भी नैन भण्डारों में विराजित अपनी प्रतिभाको बनाए हुएहें अथवा मूपकों, आदिके खाद्य पदार्थ बन रही हैं। अनएव जैन साहित्यके उद्धार के छिए एक "हिन्दी जैन समिति" की स्थापना वाक्छनीय है। विश्वास किया जाताहै कि परिचर् के दार्थां के शिर एक उत्साही कर्तव्यरत मन्त्री के आधीन यह समिति हिन्दी जीन साहित्योननति के कार्य विश्वांक से करेगी।

अभी हालमें जसवन्तनगर के एक संघई महा-राय के शास संप्रद देखने का सौभाग्य मुक्ते प्राप्त

हुआ था। इसमें मुक्ते एक गुटके में कवि सुन्दर नामक जैनकविकी कतिएय रचनायें देखनेको मिलीं इसमें खास विशेषता यह है कि वह स्वयं कवि के हाथ की लिखी हुई है। श्रीयृत पंग्नायुरामजी प्रेमी ने अपनी "दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रन्थाः नामक पुस्तकके पृष्ठ ५५ पर एक सुन्दरवास नामक कविका उल्लेख कियाहै और उनकीदो रच-नायें "सुन्दर सतसंर" तथा सुन्दर विलास" बत लाई हैं। हम समकते हैं कि इन्हीं कवि की उक्त गुटके में रचनाये हैं। किन ने कविताओं के नीचे सिर्फ इतना ही परिचय लिखा है: " लि॰ सुन्दर आशाद वृदि २ संस्वत् १६७६ । मन्लपुर मध्वे । इससे कवि का समय और उनका स्थान कहीं बागड़ प्रान्त में प्रतीत होता है, क्योंकि यह गुरका वहीं के भागाणचन्द्र ने किसी अपने शिष्यके पड़-नार्थ दिया था। मळपूर भी उसी तरफ कहीं होना चाहिये। कवि की रचना निम्न प्रकार है:-

१-सिधिराग नट नारायण ?

दया विनि करणी सव विकार। भाइ अहिंसा मन वच ऋष करि तीन भ्रुवन मैं सार ॥टेक्स। अन्त अन्त संसारिकिष्ट नरकी भवपायों। लग्नी सुगेह सुथान पुरावि कंचे कुलि आयी ॥ मदन सरिस देही लही होत न रोग लगार। समभत्तु हैं चेते नहीं पाँच पोवत जनम गंबार॥ जलमै किर अस्तान समिलि, तनु मैत बतारै । छापा तिलक विणाइ अवर गलमाला पारेँ ॥ तीरथ बहु करतों फिरें गिए न रेखि सनार। फरु छातें परची नहीं ती क्यों पाने भनपार।। कहा भरे सिरि जटा कहा निति सीस मुंडाये । कहा भरे मुखि मौनि कहा तनु मस्म पहाये ॥ पंच मगनि साथें सदा भूग सहित बहु बार । किया हेतु नाखी नहीं ती वयों सिवलहै गंबार ॥ शस्यर की करि नाव पारदिध उत्तरची चाहै। काग उहाबए। काजि मृह चिताविए। वाहै।। वैसि छाइ बादल ताणी रचे पून के धाम। करि किपाण सेज्या रमें ते क्यों पार्व विसराम।। अगिन पुरुत में पैसि कहत वसुधारय ची में। कनक मेर मुसि आणि गेहि ग्रुपता करि रापौं।। बपत जीव संके नहीं मन वंखित सुखसार। इंडे सुर खिपाविह ते आहः लि मानतहार।। बाल तें भरि घाए। तेल काढण की पेलें। गिर परि कवल उगाइ दन्त्र की जुदा खेलें।। रोपि रुप कंचणि तथौं अव लेंग की होंस। आपण इत जाएँ नहीं ते देत दर्द हो दोस ॥ स्रिवनै संवित्याः बहुरि सो थिरकरि जाणे । उपवन सीवणकानि कुम्भ काचौ भरि आणे ॥ जीव दया पालैं नहीं चाहे सु सुख अपार । वार्वे बीज बब्लर्का पिणिसो वयी फलति अनार॥ सायालै तटि नदी सैल सिदि रह्यी उन्हालें। वरस्वारिति तक तसी अधिक तपु कीये निसालें॥ सइत परीसा बीसहैं अहरिति बारा मास । करतुकच्ड विरयासबै पाणि उपसम गुणानाहि तास।। सत्य वचन निति वंदे अतिय मुखि केद न भाषे। सम किततें अति प्रीति पंच इंद्री इद राषे॥ निति पति चितवें भात्मा करें न जड़ की भास। तिनकों कवि सुन्दर कई पुक्रतिपुरी होइवास ॥

इस कविता के शब्द संठन से हमें विश्यास हो जाता है कि कवि बागड़ प्रान्त का निवासी था। कविता की सरलता और उसमें लोकोक्तियों का समागम जिस चतुरता से इसनें किया गया है वह कवि को कविता का परिचायक है। मालूम पड़ता है उस समय बागड़प्रान्त के साधुओं में भी शिथिलता का प्रदेश हो गयाथा। उसहीं को लक्ष्य कर कवि अन्तिम से पहिले प्रय में ऐसे साधुओं पर कटाश करता है। इस कविता के हिन्दी सा-साहित्य के विकाश कम पर मकाश पड़ता प्तीत होता है। उस समय की लोकोकियां इस विषय में दृष्टव्य हैं। उस समय से अन कवियों में मिक मार्ग की वाहुल्यता घर करती गई थी, इस ही व्याख्या के पृष्टिकारक मानो कविके निम्न हो एख हैं। परन्तु इनमें जैन सिद्धान्त का ध्यान रक्का गया है। उपरान्त के जैन कवियों की भाँति सैन सिद्रास्त के अकर्तत्ववाद को समय की लहर कें साथ नहीं भुलाया गया है। कवितायें इस फ्रेंडार हैं:--

२. गग काफी।

जीया मेरे छाडि विषय रस उपौँ सुख पाने। सन ही निकार तिन जिल सुल गाने।। टेक ॥ घरी घरी पत्त पत्त जिल गुल गाने। ताते चतुरगति यहुरि न माने॥ रेझांडि ।।। १॥ जोनर जिन आतम चित्र लावे । सुर्द्र करत अवल पद पाने ॥ रेबांडि ।।। रा

इस में जैंनसिंदांग्त के मित बाद का किस इंकार हैंग वर्णित किया है यह दर्शनीय है। इमें किसी से आकां शा-शाञ्छा प्रगट नहीं करना है। जिन भगवान की मूर्ति का सहारा छेकर आत्मा के स्क्याविक गुण में तन्मय हो जाना है। यही बात इस छोट से मनोहर राग में भरी पड़ी है। दूसरा राग भी दिस ही दंग का यह है:—

इ. राग धमालि ।

जा दिन ते प्रश्न झोतरे घरप दर्गे झगरे!

नीर रहित जैसे कपिलनी जैसे गरंभ में नेभिकुमार ।

परणा चित्र लावों निर्णातणाजी जैसे पार्थों मुख अपार ॥ चरणं ॥ १ ॥

जनमंत्री श्री नेमि को मिलया अमर अपार ।

पर शिपर परि कनक कलस भिर सबद करत जै जैकार ॥ चरणं ॥ २ ॥

एम जािष तपु आवर्षी दुल अनंत संसारि ।

पश्च देपि स्य फरा जय जाइ चढ़्या गिरनारि ॥ चरणं ॥ ३ ॥

रहित भये संसार थे प्रश्न, हिरदे धरि करि ज्ञान ।

ध्यान धरीं चिद्रूप थे जब उपनेबें केवल ज्ञान ॥ चरणं ॥ ४ ॥

जहां रोग वियोग न संचरीं मन वंखित फल हों ।

कर जोडे सन्दर भएं। स्वामी तम सम अवर न को ह ॥ चरणं ॥ ५ ॥

यहां भी आदशं पुरुष परम पून्य तीर्थकर के शुद्धावस्था तक पहुंचने की कम व्यवस्था का वर्णत है और उसके गुण गान द्वारा मन को संसार से विरक्त थिर रक्षा गथा है। यहां न किसी से प्रार्थण है और न बांछा है। निज ध्येय का ध्यान रक्षा गया है। इस मर्यादित मेक्टिस का रूप उपरान्त के जैंन क्षिक्यों ने क्षितना विकत्त किया है

वह केवल इस एक पर से ही प्राट है कि "प्र् मेरी करनी न चितारी-मोहि अपनी जान उवारी।" जोही किन की कविता उच्चभाव को लिए हुई सरस प्रतित होती है। उत्तम हो इन के अन्य अंध कोई अंथ प्रकाशक कहीं से प्राप्त कर प्राट कैरे। इति शम्।

दश-दोहे

१-वेर विरोध जो ना करे, रहे कलह से दूर । वही पुरुष सँसार में, पिएडव हैं भर पूर ॥ २-ग्रटल रहे जो धर्म पर, तजकर भी निज पाए। नाश मान सँसार में, सफल जन्म तेही जान !! ३-विप नहीं जगमें क्रोध सम, सुधा न दया समान । चारि नहीं श्रिभिषान सम, उद्यम सम हित अरन ॥ ४-कपराई सम भय नहीं, लालच सम दःव खेद । ग्रुख नहीं सत सँतोप सप, जान लेह यह भेद ॥ ४-तर्जे मित्र क्रनध्नी को, यत्म शक्ति श्रुनिपाप ! रीते सरवर हँस तर्ने. कोधी बुद्धि निज आप ॥ ६-लाभ न सम कित लाभ सम, शुभ कारज सम धरमें । मोह समान वेंथन नहीं, हिंसा सम दुष्कम्म ॥ ७-शिष्य पुत्र सम जानिये, मुनी देव श्रतसार । शव समान धन होन को, मुर्ख ही पशु विचार ॥ द--शान्त स्वभावी विनयशील, कहेजात विद्वान । शील हीन क्रोधी पुरुष, अपयश लहे महान ॥ ६-जगत रूप दावाग्नि में, सन्तप्त हैं जोलांग । उनके हिन है धर्म ही, एक शरण के योग ॥ १०-- लिप्त मान सँसार में, जीवन चए भँगुर । ईश नाम पल मात्र को, करो न मनसे दर ॥ -- मिश्रीलाल जैन

कांच की शीशियां

स्वदेशी!

सस्ती!!

बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एएड ब्रार्स, महावीर भवन, विजनीर

महिला महिमा।

१-महिलाओं का कर्तव्य।

प्राचीन भारत में महिलाओं की कितनी उच्च और उत्तरदायित्त्रपूर्ण महत्व शास्त्री दश्य रह चुकी है, इसका अनुभव पाठकों को गन लेखीं से अवश्य हुआ होगा। वस्तुतः जिस दिन महि-लाओं की दशा शोचनीय अवस्था को प्राप्त हुई उसी दिन से भारत का पतन प्रारम्भ हुआ है। अताब आज भारतीद्वारके लिये प्रत्येक जाति की महिलाओं को दशा सन्माननीय अवस्था की पहेचाना हमारा परम धर्म है । आज महिलाओं में किस प्रकार सञ्चित शिज्ञा प्रचार की आव-श्यकता है, इस पर हमें ध्यान देना आवश्यक है। साय हो महिलायें भो अवना कर्नव्य भुला नहीं सकीं, परन्तु आयश्यका है कि यह संदेश उनतक पहुंचाया जाने। महिलाओं के अशिजित होने सं स्वयं पुरुष वर्ग को महान् कडिताइयों का सामना करना पडता है । आजस्त भारत में महिला शिक्षकों के असाय के कारण प्रारम्भिक शिला के प्रचार में कितनी अस्विया अनुभव करने पड़ती हैं यह प्रत्यक्ष है। बालकों की प्रारंभिक देव रेख और तिसा जिस खुवी से महिलाएँ प्रदान कर सकीं हैं बद् पुरुष के लिये सहज नहीं है। यह मानीं हुई बात है कि जित्ती भवन शीलता और संतोष की मात्रा महिलाओं में पाई जाती है उत्तरी पुरुषों में नहीं। तिस पर अन्य देशों के अनुभव से यह प्रमाणित है कि प्रारंभिक शिक्षा का प्रभार

विशेष फल दायक उस अवस्था में रहा है जब शिक्षकों में महिलाओं की संख्या अधिक रही है। परन्त भारत में और खास कर जैन समाज में इस उद्देश्य की सिद्धि में परदं की प्रथा वाधक है। परदे को किस सीमा तक इस समय रखने की आवश्यका है, यह बात हम अपने किसी गत लेख में बतला चुके हैं। का से कम पूज्य विधवा बहिनों पर यह इस तरह छात् न होना चाहिये कि वह अपने जीवन कल्याण के लिये ज्ञान संचय करने को किसी शिक्षात्रम में भी नहीं जा सकें। यदि हमारी यह पूज्य बहिने ज्ञान संपन्ना हो भारत के भावी सन्तति को ज्ञानदान दें तो हमें विश्वास है कि देशोद्धार होने में देर न लगे। और मध्यांधी का सदेश प्रत्येक घर में कार्य कर में परिणत होते दिखाई दे। श्यंक भारतीय गृह में चरखे की मधुर गुव्जार भारत के भागी भविष्य के सलीने द्रश्य की प्रतिभाषक हों। क्या जाति हिनेपी और देश प्रेमी इस और ध्यान देंगे ?

—उ०सं⊜

२-महिलाओं की विशेषता।

िसं पूर्णना से करते हैं वर सर्ग प्रकट है। उनके एक अनुभव से बात हुआ है कि महिलाओं की वाल साल में कुछ ऐसे शस्त्र रहते हैं जो पुरुषों के वर्गलाए में नहीं भिलते हैं। दूसना अनुभव मत्ये कुछ जाति (पुरुष खी) के २५ विद्यार्थियों से १००

विविध शब्द लिखवा कर कियो गया था। इस अनुभव का विवेचन करते प्रो॰ जैस्ट्री कहते हैं कि महिलाविद्यार्थियों ने इनके लिखने में कम समय लिया था। उनमें विचार की मात्रा अधिक थी। उन्होंने जो शब्द लिखे उनमें २६. प्रतिशत् पुरुष संज्ञाक्कि थे और २०. म् प्रतिशत स्त्री संज्ञा-बाकी थे। प्रो॰ का निष्कर्प है कि महिलाओं में भाषाज्ञान की मात्रा पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। वे पुरुषों से जल्दी सीख सक्तीं हैं— जल्दी सुन सक्ती हैं और जल्दी उत्तर में सक्तीं हैं।

रिपोर्ट भा० दि०परिषद्

वार्घा अधिवेशन में स्वीकृत

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् की स्था-पना ठीक दो वर्ष हुए भारत वर्ष की राजधानी देहली जैन महोत्सव पर हुई थी। यह परिपद् इस लिये स्थापन हुई है कि जैन नवयुवकों के दृदय में उत्साह उत्पन्त करे, कि उस जैन सनाज की उन्नति में जिसमें उनका पालन पोपण हुआ है। उन्तति करें और दिगम्बर जैनधर्म का सर्व साधा-हुण में प्रवार करें। उपयुक्ति उद्देशय की ध्यान में र इते हुए परिपद्ध के कार्यकर्ता धैर्य पूर्वक कार्य कार रहेहैं। १५ मास हुए गत महाबीर निर्वाणोत्सव पर परिवद्द के मुख पत्र 'कीर का प्रादर्भाव हुआ। इस पत्र के जन्म लेते ही जैनधर्म दिवाकर जैनधर्म-भूषण ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के सम्पादकत्व व आयुत काम्ताप्रशाद के उपसम्पादकत्व में जैन समाज ने जीवन शक्ति का प्रचार करना प्रारंहभ क्रिया । ज़ैन समाज की अवनत दशा, संख्या ह्मास प्रा जैन सनाज का ध्यान आकर्प्रण किया उस के खाहित्य पर प्रकाश डाला और अपने को जैन समाज के रोग परस्पर कल इ, द्वेप उत्पादक लेखीं से रक्षित रक्ष्या ।

यह परिपद् जैन जनता को कितना ध्रिय होता जा रहा है। इस से प्रता लगता है कि दुस मास में इस के तीन अधिवेशन हो गये। प्रथम अधिवे-शन गत अरोल मास में मुक्करनगर में हुआ। दूसरा नैमित्तिक अधिवेशन गत नवम्बर मास में इटाबा में हुआ। परिपद् ने अपने प्रथम अधिवे-शन में ही कुराल वैद्य की तरह जैन समाज की अवनत दशा रूपी रोग की परीक्षा करके कितनीही औषधियाँ मस्ताव ऋष में जैन एपाज को बतुला , जिन को प्रयोग में लाने पर जैन समाज का उत्थान व जैन घर्म प्रचार निर्मर है। अर्जन जनता में जैन धर्म फेलाने के लिए परिपर ने जैन धर्म की प्राची नता व सिद्धान्त कं। दर्शाने वाली एक एँसी पुरुतक के नथ्यार करने की योजना की कि जिस सं अजीन पुरुषों यो जीन धर्म का ज्ञान हो और वे पवित्र जैन धर्म को प्रहण कर सकें। हर्षका विषय है कि पैसी पुस्तक को पृत्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद र्जाने करीब करोब तस्यार कर लिया है। और बह अनेक विज्ञानी द्वारा संशोधित होक्कर भितन २ भाषाओं में प्रकाशित की आवेंगी।

द्भैव समाज की संख्या के देश के साथ हास को देख कर परिषद्ने एक ऐसी क्षेटी की योजना की है जो हुएत के कारणों का अनुसंधान करे और अपनी तिबोर्ट प्रकाशित करें। अभी तक उपधुक कमेटी अपना कार्य समाप्त नहीं कर सकी है आशा है कि शीध अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करेगी।

इस बात को ध्यान में रखकर कि जैन धर्म को योजन व प्राचीनता को सर्व साधारण स्वीकार महीं करते एक एविहासिक विभाग स्थापित किया गया है । को जैनधर्म की प्राचीनता सार्व भौमि-कता पितहासिक तौर पर सिद्ध करेगा और यह इतलावेगा कि इस धर्म के अनुयार्थ चंद्रगृप्त बाहि अनेक समार् राजा व बहाराजा रहे हैं। और यह सारतका राष्ट्र धर्म रहा है। इस के मंत्री वाव् हीरालाल एम-एव्तन्वान्वेषी (Research Scholer) हैं आप पतिहासिक अनुसंधान कर रहे हैं। अधिक नेशी से कार्य धनाभाव के कारण न हो सका।

जैन धर्मीनुयायियों को धर्म पर हुढ़ करने य अजैन जनता में जैन धर्म प्रचार करने के हेन उपदेशक विभाग खोला गया है और इसके मंत्री ला० ज्योति प्रसाद प्रेमी हैं। इस का कार्य योग्य उपदेशक न भिलने व धनाभात्र के कारण देर मं प्रारम्भ हुआ है। उपदेशक रक्खे गये हैं जिन का दौरा शुक्क होने वाला है।

त्रीये सन्वन्धी दिग्रम्बर प्रवेताम्बर भगड़ों में धन व पुरुषार्थ की महान हाति सनभकर परिव्रह्नते प्रस्कर निवटारे का प्रस्ताव पास किया भग्न प्रस्तावानुसार एक डिपुटेरान भीयुत् नेमीशरण M. L. C. सङ्गंत्री, भीयुत रत्तनलाल संवी, य बा० कीर्ति प्रसाद थसहयोगी श्वेताम्बर स्रकीछ का महात्मा गाँ वी के पास गया था इस कार्य में प्रयम किया गया। किन्तु अभीतक कोई सफलसा बाह्य वहीं हुई।

इन के अतिरिक्त कई प्रस्तान, शुद्ध स्वदेखी कुछ पहनने सथा रेशकी व मिलके को कपड़े जिल के कारण हिंसा होती है. त्यागने सथा दिवाहादि में क्रमन्यय करने आदि के लिए नियम (दस्तू-स्क अमल) तथ्यार करने, धालविशाह बन्द मरने के लिए किये गये हैं। जिनके कारण केन जनता का ध्यान आकर्षित हो रहा है। और उन पर अमली कार्रवाई होने लकी है।

द्रस बात को ध्यान में रखकर कि जैन समाम में कुछ जातियों की मनुष्य गणना बहुत थोड़ी रह गयी है। और उन में उचित वर कन्या नहीं मिरुते जिसके कारण इन जातियों का हास हो रहा है। बरिप्रद् ने देशी मारवाड़ी दक्षिणी जैन अप्रवालों में पारस्परिक विवाह करने तथा उन जातियों में जो किसी कारण से पृथक हो गयी हैं, पारस्परिक विवाह करने का प्रस्ताव पास किया है।

पकता बोर्ड (Unity Board) में किसी जैन को न पाकर प्रस्ताव किया था कि एक जैन भी राक्षत जावे जिसके सन्बन्ध में पत्र व्यवहार महातमा गाँधी से हो रहा है।

षात्र् यळवीर चन्द्र मंत्री बोर्डिङ्ग विभाग ने सु-परिन्टन्डेन्ट बोर्डिङ्ग हाउसों से तथा कई योग्य वि-क्षानों से पत्रव्यवहार किया है कि वे बोर्डिङ्गहाउसों में धर्म पर व्याख्यान दें।

भीयुन् चापत राय जी सभापति भीयुन्

अजित प्रशाद जी पूर्व मत्री परिषद् ने जो सेवा जैन ममाज की निस्वार्थ भाव से कई मास रांची नगर में रह कर पूज्य भी सम्मेदशिखर रक्षार्थ इन्जक्शन केस में की है वह जैन समाज से छिवी हुई नहीं है और राज गृही मुकदमे में श्रीयुत् अजित प्रसाद जी कर रहे हैं तथा पूता कंस की विशी कौंसिल में पैरबो करने के लिये श्रीयुत् वै० चम्पत राय जी उद्यम कर रहे हैं। इन दोनों परिपद्द के महारिय-यों के निस्वार्थ सेवा पर जैन समाज को गर्ब है।

श्रीयुत् कामता प्रसाद जी उपसम्पादक 'वीर' ने इस वर्ष भगवान महावीर नाम का अति उत्तम प्रन्थ नवीन शैली पर तय्यार किया है और उसमें अनेक ऐतिहासिक प्रमाणी से जैन धर्म की प्राची-नता व गौरवता को सिद्ध किया है। जिसके पहने से अर्रेन जनता भी जैन धर्म को बौद्ध आदि धर्म से पाचीन मारने लगती है।

मुज़फ्फरनगर अधियेशन पर परिषद् से

६०००) रुपये व्यय का वजट पास किया था किन्तु परिषद् के पास कोई घुौब्य फंड तो था नहीं केवल १४००) रूप र के लग भग वसूल हुए हैं जो उपर्युक्त प्रस्तावों के कार्य कर में परिणित करने के छिए काम में छाए गये। परिपद्द के पास इस समय कोई रुपया नहीं है जैसा कि नीचे लिखे हिसाव सं प्रगट होगा। धनाभाव च उचित कार्य कर्ताओं के विना परिषद् अधिक तेजी से काम न कर सकी। अतरव जैन समाज से प्रार्थना है कि यदि वे परिपद्द हारा जैन धर्म प्रचार व जैन समाज उत्थान देखना चाहते हैं तो इस की तन मन धन से सहायता करें। भारत वर्षीय परिपद के आर्थान प्रोन्तीय, जिला परिपद्ग स्थापित करके इसके समासद बनाय तथा भा० दि० जैन परिषद् के स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार कार्य करें।स्थान स्थान पर प्रचारक भेजें निज शक्ति अनुसार परिपद्ध को आर्थिक सहायता करें।

हिसाव परिषद

५४६१।०) दान परिषद

२५१) रायसाहय साठ्ठ जुगमन्द्र दास नजीवावाद (विजनीर)

२०१) ला० महातीरपुसाइ, राजेन्द्रकृमार विजनीर

१०१) ला० हीरालाल रतनलाल विजनीर

१०१) बा॰ नेमीशरण M. L. C. विजनीर

१०१) ला० पुरकाल पर्मप्सार

मुजक्करनगर वलवीरचन्द्र

१०१) लाला धूम सह मुजः फरनगर **६०**=) घकाया दान परिपद

१५९) सा० जुगमन्दास जी नजीवाबार मध्ये २५१)

१०१) लार्शियकाल पद्मप्रसाद मुजफ्रातक

१०१) लो० धूनसिद् बलबोरचन्द

१००/ ला०चन्डीप्रसादजी धामपुर(विजनीर)

१००) ला० जम्बूपसाद ननौता (सहारनपुर)

१०१) छा० रुपचन्द जैन रईस कानपुर

५२) हा॰ फुलजारी लाल रईस करहल

(मैनपुरी)

५१) पां० नेमी ग्ररण विजनीर

(मुजफ्फ़रननर)

१००) लाञ्च खीप्सार्जी धानपु(बिजनीर) २५) जैन कुमार सभा मेरठ मारफत वा० उप-१००) सा० बम्बुपुसाद जो रईस ननौता सैन मास्टर क्रिविचयन स्कूल (सहारनपुर) बहरते हेक्ट । २५) लाव वादमल पारसदास बसेहा १००) बा•सुमेरचन्द्रजी वकील सहारनपुर २१) छा । नरायन (।स मैनपुरी १२५) बा॰नन्इकिशोर जी डिप्टी कलफ्टर ११) ळा० गिरनारी किशार मैन रुरी धनवाद (मानभूम) १००) रा० य० या० नान्दमल जी अजमेर ५) हा॰ इसन्त लाल भांसी १०१) बा॰ धूनसिंद सयइन्जीनियर इटावा **८**४३) १०१) ला० रूपचन्द जी रईस कानपुर ६५) बाबत बीर घांटे फण्ड षास्ते लेख हिन्दी कवि १५) भ्रीकुन्दनलाल भ्रीराम कलकत्ता ५१) ला० मोनीलाल जी हाथरस २५) सेठ फूलचन्द्र राम जीवनदास कलकसा ५१) बा० गोर्घनदास जी रिटायर्ड डिप्टी २५) ला॰ बराती लाल लखनऊ इन्सपेषटर सहारनपुर (303 ५१) ला॰ फुलजारीमल रईस बरहल ११७१।। बीराखाते नाम (र्मनपुरी) ७३०) ३१ अष्टूबर सन् १६२४ तक ५१) ला० लखमनदास जी इटावा ४४१।इ)।। १ नवस्यर सन् १६२४ से **५१) ला० चंद्रसेन जी वैद्य इ**टावा २५ जनवरी सन् १६२५ तक ५१) ला० रूपचन्द जी बैद्य इटावा १७०॥। इंशम्बर श्वेताम्बर एकता में ५०) बा० चम्पतराय जी वैरिस्टर हररोई १७६॥॥)॥। खर्च खाते ५०।≯) ला॰ मुन्नालाल अजबपुरा ह्मा) उनक व्यय २५) बा॰ कामतापुसाद अलीगंज (पटा) =o) छपाई आदि मुतफरिक २५) जैनकुमार सभा मेरठ ४**∌)॥ स्टेशनरी** २५) सेठ मूलचन्द किशनदास कापड़िया 💵 🌖 । ट्रेक्ट विभाग २) खजाञ्ची साद्व जुगमन्दर दास सूरत २१) ला० बारूमल पारसदास बसेडा १०४) ला० ज्योती प्रसाद मन्त्री प्रचारक विभाग (मुजफ्फरनगर) १०६॥।।। वाकी पास बा० रतमलाल मन्त्री परिषद २१) ला० सोहनलाल त्रिकोकचन्द देहली २६४८।०) २०) ळा० ऋषभदास मित्रसैन तिस्सा

(मुजफ्फरनगर)

्रप) बा•स्रेतनशास जी हेडमास्टर मधुरा

२५) जैन पंचान इटावा मधे ५०) 🕏 २५)

चीर जमा

२५) लोब्गेकुल साह औरंगाबाद(Decean)

२१) स्नाव मोतीशाह कस्त्रचन्द्रशाह औरंगावाह

२१) ला॰ नरायनदास मैनपुरी

३१=) फुटकर २०) से कम

१=э) फीस समासदी

488=159

हिसान वीर वर्ष १

१ नवम्बरं सन् १६२४ से ३१ अक्तूबर सन् १६२४ तक

१२२६॥॥) प्राहक फीस ६॥। विज्ञापन चार्जेज ४६) दान चीर ७३०) परिषद के जमा ५०२) बीर घाट फंड १७२) वेतन फलर्क ५७३।।।≈)।। कागज़ बीर ६३२।।≈)।। छपाई वीर ६३२।।≈)।।। कटाई बंधाई बीर २६४३) विशेष क ५५१।≈)।। पोस्टेज बीर २७।≈)।।। स्टेशनरी ३८।।≈) खूर्च मुत्रकृरिक

मृत्यु का श्रामन्त्रण

(?)

आयन्त्रण है जिसे मृत्यु का आवुका। इस जीवन से पूर्ण शान्ति वह पा चुका।। करनी होगी नहीं उसे अब चाकरी। लगी हाथ है बड़े भाग्य से ठाकरी।। (२)

तस्य कुँवार्ते की न उसे भुतासानेगी। विधवाओं की आहं न फिर तरसानेगी।। इसों के न विवाह कलेगा कारेंगे। शिशुओं के अपनरण न वीरण डार्टेनें।। (()

स्थापस का विद्वेष न स्थाँखों स्थावेगा।
'तू तू में मैं' का न हिलोरा हावेगा।।
स्वतन्त्रता के सूत नहीं सिर बाँधेंगे।
हिन्दू मुसलिम ऐक्य नहीं फिर बाँधेंगे॥

(8)

भय जीवन से भजा मृत्यु-आमन्त्रण होगा । जिसनर से भरा का न दुःल-अपकर्णण होगा ॥ मिष्पुरुषार्थी भला कहां किसका करते हैं ? खरे समय पर सदा ऋहीं खिसका करते हैं !

(4)

परं, प्रभो!, तो परं किन्तु बदनाम म होवें।
पर के शुभ आशीप-नीर से आनन धोवें।।
ऐसे अवसर हमें स्वीकृत मृत्यु-आमन्त्रण।
समर्भोगे शुभ हुना, इस जीवन का यन्त्रण।
— अवनेन्द्र

जैन इपीग्रेफिया

(के -- चैने विषय हान बीन शेषातिर राह एमन एन पीन एक कीन)

(क्रमागत)

कि वह पर्वत जीति की परलिकमेदी अजेन्सी में कदम सिंगी' (कदम्बस्त्रिक्षी) और 'मुनिसिन्मी" नामक स्थान हैं। अन्तिम नामील्लेख से प्गट है कि वह पर्वत जैनियों के निकट पूज्य था और वहीं फड़ी निकट में जैन-मुनि-संघ विद्यमान था। साथ-ही स्थानों के इन नामों से भार्मिक सभ्यता का पुभाव पूकट है। अपने अन्तिम समय में कदम्बी ने इसई। ताल्लुके के मेदानों में अपनी राजधानी वैजयन्तीपुर स्थापित की थी। इसी प्कार इस जिले के अस्क ताल्लुके में एक गांत्र जयसिन्गा नामका है। शायद इसका यह नाम प्रारम्भिक (हिनीय शताब्द इंस्की) कदम्बवंशीय राजा जयवर्मा के नामापेता रक्खा गया होगा अथवा एक कोशल 'जया दित्य' के नामापेता जिसका ज़िकर आज कल के आंध्रक्षत्रियों की जनश्रतियों में मिलता है।

कथर विज्ञागायटम् जिले के विस्तमकहक (जिले म्मर (देव) करक) अजेत्सों में दो गांव "कर्म म्बगुद" और "कदम्ब" नाम के हैं। "गुद" वही शब्द है जैसे "गूदेम" जिसकी उत्पत्ति द्राजिङ्ग मांपा के धातु कृद क्यकित करने से हैं। इसलिये एतं के अर्थ समृह के होते हैं। भव वह समृह कार करम्य कृशों का रहाहों अथवा कदम्य केशों मधु औं का। इस स्थान के साथ एक 'मुनिसिम्गी' (मुजि-श्ट्र) का होना इस बात का चिन्ह है कि यहां भी जैनियों के मणिगुण और क्षत्रियों का निदास उस ही तरह रहां था जिस तरह परलकिमेदी अजे म्ली में रहा था। इस ही संबंध में साक्षीक्य में यह जानना भी मनोर्यजक है कि इस ताल्लुके में स्थानों के नामों के अन्त में 'भट्ट" शब्द लगा हुआ हैं, जो हांयद उन चिद्वानों के नामायेशा हों जो हिस्तेष

गल्यात् और प्रभावशाली रहे हो। उदाहरणार्थ पेसे नाम हैं:- कटचनाभिट्ट, कुद् भट, कुम्बाभद्द खक्रभट्टः पेद्भग्दश्व, सनीभग्ट सुकुलभग्ट। यह भट्ट कीत थे (यह विशेष प्रस्पात् विद्वान्-संभ वतः जैन होंगे) और उन्होंने उस समय की सम्यता निर्माण करने में क्या कार्य किया था, इस का पता तब ही चल सका है जब इस बनमय प्रान्त की खाज द्रहता के साथ की जावे। जेपुर अजेन्सी के जयपुर और जयनगरन् नगरीं के नाम कदम्बदंग के उन राजाओं के नामों पर से रक्खे गये होंगे जो जगवर्म कहलाने थे। जयन्तींगिरिसे पश्चात के कद्रम्बों की बैजयन्ती की स्फूर्ति हो आती है जो प्राचीन वंश को नवीन से मिला देती है। जैपुर अजेन्सी में कदमगुद आठ स्थानों के नोमी में व्यवहृत हुआ है। इससे यही धारणा होती है कि इस प्रान्त को एक कदम्बवशी राजाओं का विशेष दीर्घ कालीन निवास रहा था। भट्ट के अन्त सहित नाम भो इस प्रान्त में बहुत हैं जैसे अमछ मह बन्नमहिगुद, भहिगुद, दलुभष्ट, मन्नुलिभट्ट। इस प्रान्त में अन्य स्थानी के नाम, इन नामों की अपेक्षा रक्खे गए हैं:- 'रानी' खुन, प्रधानि, बाहन पति, पुजारी। इन से उन सभ्यांचित भावीं की स्मृति होती है जिन को कदम्ब्रगण छाये थे।

विजागापटम् ज़िले की कोरपट अजेन्सीं,कद-म्बगुद' दो स्थानी का नाम मिलता है और के-बल एक प्राम 'बुसकमट' नामका है। मलकनिति अजेन्सी में कदम्बगुद और उसके विकृत रूप तीन स्थानों में भिलते हैं। और जयन्तीगिरि एक स्थान एर। 'अमलभट्ट' 'कोसरमट' नामके भी स्थान हैं। निस्न नामी के, भी माम सिलते हैं: - सन्यासी, प्र- कारी, पत्र, प्रगदः प्रधानि, मंत्री, नायक, दलपति, दण्डुसेन। इन से चद्दां की राज्यव्यवस्था कौटिल्यं वा किसी प्राचीन अर्थशास्त्र के ढंग की थी यह प्रकट होता है। यह बहुत प्रचलित और अर्थ पूर्ण स्थान-नाम "कदम्बग्रद" नवरंगपुर अजेन्सी में भी मिलता है। यहां भट्ट नामान्त स्थान भी बहुत मिलते हैं जैसे अमलभट्ट, भट्टिकोट, दार्भट, को-दुभट्ट, मोहभट्ट मोहलिभट्ट, पोसकभट्ट, पुलोभट्ट, सिन्दीभट्ट, सोरमुभट्ट। नागरिक जीवन की संस्थाओं के संकेतक नाम भी मिलते हैं जैसे तुरक्री, राजा, रानी, नायक, प्रधानि, मंत्री, अधिकारी, पुजारी, पण्डित।

विजागापटम् की रायगढ़ अजेन्सी में एक ग्राम
'कदम्बरिगुद' के नाम। का है। यह नाम शायद उस राजा की अपेक्षा रक्ष्या गया होगा जिसने इस प्रान्त के कदम्बराजा को जीताहोगा और इस शब्द को अपने नाम के साथ उसी तरह जोड़ लि-या होगा जिस तरह आंधू राजा ने श्रकराज्य को। परास्त करके 'श्रकारि' की उपाधि ग्रहण की थी।

प्राचीन कलिङ्ग राज्यके यह गंजम और विजा-गापटम के अजन्ती-प्रान्त आजकल लोगों हारा भेड़िए भीर चीते के स्थान अथवा उतने ही खूंखार मनुष्यों के निवासस्थान समक्षे जाते हैं। अपनी अज्ञता में आजकल यह अनुभव करना भी आज मुश्किल हो रहा है कि यहां किसी समय में विशेष-सभ्य मनुष्यों का निवास, राज्यस्थानों का अस्ति-त्व, फलते फूलते नगरों का दृश्य, पंश्वित परिषद और मुनिविहारों की विद्यमानता रह चुकी है। इन रण-थलों में इस प्रारंभिक सभ्यता के स्थापन में उन उत्तरीय और दिखाणी लोगों के लिए जों साकर आबाद हुए, इन ईसाकी प्रारंभिक शता-दिस्यों के जैन कद्म्यों का कुछ कम हाथ नहीं पंडा डीगा।

जो. एफ. फ्लीट साइय ने (in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society Vol. IX, No. XXVII) जो शिलालेल प्रगट किया है उससे संभवतः इसही जैन कदम्बनंश की एक पश्चिमीय दक्षिण शास्त्रा का पता चलता है। वह कहते हैं: "वह उस समय के मालूम होते हैं जब दक्षिण के विशाल राजागण 'चालुक्य' उस प्र- भावशाली सत्ता को प्राप्त नहीं थे जिसको उन्होंने पश्चात् में प्राप्त किया था। इत्यादि।" पश्चिमीय दक्षिण में पलाशिका उन की राज धानी थी और यह मानना भी असंगत न होगा कि गंजम ज़िले के पलाश स्थान को भी इन्हों जैन कदस्यों की इस शाखा की किसी प्रतिशाखा ने स्थापित किया होगा। परन्तु एक प्रश्न निर्णय के लिये कठिन है कि इनमें से कलिंद्र अथवा पश्चिमीय दक्षिण की शाखा पृथ्वीन है ?

--कुमश

संसार दिग्दर्शन

समाज

करहल भहोत्सव फरहल (जिला मैनपूरों) में श्रीमान ला० फुलजारीलालजो जैन रईस
च ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पवित्र भावानुसार गत
ता० १ से अपरवरी तक श्री पंचकल्याणक महोरसव बंदें समारोहके साथ हुआ था। रथयात्राओं
और जुजुरों के साथ २ धर्म प्रभावना के अन्य
कार्य भी दर्शनीय थे। भीड़ करीब ६००० के थी।
लाला जी की ओर से ठहराने का प्रबन्धादि उत्तम
था। सुन्दर वाजार भी लगा हुआ था। पंचकल्याणक महोन्सव विधान श्रीमान एं० नरसिंह दासजी
तथा पं० कश्मनलाल जी की देख रेख में सानन्द
पूर्णताकी प्राप्त हुआ था। श्रीमान न्या०पं० मोणिक्यान्द्रजी के शास्त्रोपदेश का विशेष शानन्द रहता
था। जाग मन्दिर इतना विशाल था कि एक और

शास्त्र सभा और दूसरी और लम्बेचू सभा मनें में एक रात्रि की होती रहीं थी। उसी रात्रि की वहीं श्री रामदेवीवाई के प्रयत्न से नियों की भी एक सभा हुई थी। साराँगतः महोत्सव विशेष प्रभावना के साथ पूर्ण हुआ था और लालाजी की शुभोह देय सिद्धि भी हुई थीं। इस लिये इम लाला जी की वधाई देते हैं। इसी अवसर पर श्री संक प्रा- निस में कुल १३ प्रस्ताव इस प्रकार स्थीइत हुये थे: (१) महाराज देवास की विलिहिसा बंद करने पर धन्यवाद (२) सेट द्याज्य जी व देवी हास जी की मृत्युवर शोकं (-) जीन जाति की विविध सम्प्रदायों में परस्पर समानता से प्रेम

पूर्वक बर्ताव करना (४) घोलपुर में रथयात्रारोकी जाने की ओर उचित कार्रवाई करना (५) प्राचीन शीथीं और मंदिरों का उद्धार करना (३) जैनवैधक विद्यालय कानपुर में स्थापित करना (७) स्वदेशी बस्तु व्यवहार के लिये (=) घटेश्वरजी के उद्घार के लिये (२) स्वीशिक्षा हेतु ग्राम २ में विद्यालय खुलने की प्रेरणा (१०) साहित्य भंडारों की खोज करना (११) आगरा वोहिंड्स की दशा सुधारना (१२) सभा की कार्रवाई "वीर" में प्रकट हो इस हिये सभा की ओर से एक फार्म "धीर" में रखना (१३) और लाला ज्योतीयसाद जी को मंत्री उपदे-शक विभाग नियत करना । अस्ताव सब ही सम-योपयोगी हैं। परन्तु इनका महत्व अब ही है जब इन की अमली पृतिं की जाये। गतवर्ष के प्रस्तायीं की भीति यह भी केवल दाखिल दफ्तर न रहे। इस बात का ध्यान मंत्री महोदय को रखना आव-श्यकदै । उधर जब नियत समय पर मंत्री महोदय महीं भाषे थे तब उस रोज भी जैनतत्व प्रकाशिनी सभा की ओर से सभागंडण में भाम व्याख्यान ध्र० शीतलप्रसार जी तथा बाबू ज्योतिष्रसाद जी के हुये थे। पाँडुक शिलापर अभिषेक समय भी स्त्री शिक्षा पर पं० फूलचंद, बाबू ज्योतित्रसाद बाबू सुरजमल जी तथा ब॰ शीतलप्रसाद जी के व्या-ख्यात हुये थे। संश्रमा० सभा के १०वें प्रस्ताव की पेश करते हुये न्या । पं० माणिक्यचन्द्र जी ने जैन धर्म पर एक सारगभित व्यास्थान दिया था। इस समय शहर के प्रतिष्ठित अजीन महाशय उपस्थित थे। इसी दरमियान में श्री छम्बेचू सभा का भी अधिवेशन काशीवासी श्रीयुत संघर्र कु जीलालजी के समावित्व में हुआ था। इस में लागेसुओं के

लिये एक खास दस्तूरलअमल वन गया है, जिस पर प्रत्येक लभ्वेचू को अमल करना चाहिये। जाति सभाओं का महत्त्व अपनी आन्तरिक दशा को सुधारने तथा जानि में जैनस्व भाव भरने में हैं, वरन् उन का अस्तित्व समूं ची जैन समाजकी अपेक्षा हानिकर है। कार्यकत्ताओं को यह ध्यान रहे कि उन के सभासरों में सामादायिकता का भूत घरन कर जाये। आज यह साम्प्रदायिक भेद डीन समाज को हानि चिशेष कर रहा है। प्रत्येक जाति का मनुष्य जैनी होते हुये भी उस की परवा मही करता और अपने लम्बेचूपने परवारपने श्रादि के घमंड में चूर ही धर्म और समाज का अहित करता है। इस लिये इस बात की ओर प्रत्येक जाति सभा को ध्यान देना आवश्यक है। श्री सम्बेन्य सभाने अन्य बातों की ओर ध्यान देते हुये भी अपनी जातीय अवस्था की ओर ध्यान नहीं दिया इसका हम को दुःख है करहल लम्बेचुओं का केन्द्र हैं। परन्त् यहां की आन्तरिक दशा का जो परिचय हमको एक विश्वस्त सूत्र से लगा है उसको जानकर हम को विशेष दुःख है। कितनेही नीजवान वहां पर कुंआरे विदल्ले अनाचार का बाजार गरम करते सुने गये हैं। तथा विशेष संस्था में प्राप्त विधवाओं की भी दशा शोखनीय आणी गई है। यहाँ तक ग्नीमत थी क्योंकि यह दशा क़रीव २ हर जगह मिल सक्ती है परन्तु बज् का पहाड़ तो यहां दूदताहैन यह यह जानते हैं कि जो समाज में चहां अवगण्य बनने का दम भरते हैं बडीं अनाचार का पोषण करते हैं। लम्बेचू समाज की भलाई के लिये इस दशा पर ध्यान देना परमायश्यकीय है। किस तहर यह घृणित शोच-

नीय दशा भिट सक्ती है, इस पर लम्बेचू सभा को विचार करना चाहिये था। उक्त नैतिक पतन का दृश्य कहते हैं कि जैन सेवा समिति कैम्प में ही घटित हुआ। जहाँ अमानुपिक कृत्य किये जाँय वहां क्यों दः खों के बादल उमहें? भारयी, दुःली से छुटना है तो सन्य की गृह्ण करो अपनी संकटापत्र दशा की रक्षा करो ! दसरी ओर राष्ट्रीय सेवा समिति का पहरं व खांई हुई चीजो का पता लगाने का प्रवन्ध नितानत सगह-नीय था। साने की खोई हुई चीजों का भी पता इन सञ्चे सेवकों ने लगाया था। इस पुण्यमय अवसर पर भगवान के त्याग समय मेलाकारक उक्त लालाजी ने करीब १५००) का दान भी किया था तथा आपने कतिपय विद्यार्थियों को छात्र-युत्तियां भी दी हैं। जो सर्वधा अनुकरणीय हैं। हम लाला जी को इस शुभकार्य के लिये कोटिशः धन्यवाद दें गे। लाला जी के साथ २ आगन्तकों ने भी यथाशिक दान किया था, जिस में ५००) **छा** हीरालाल जी खड़गपुर के उल्लेखनीय हैं। यह रूपये १० संस्थाओं को भेज दिये होंगे, जिन में परिषद् भी था । अन्त में हमको सिर्फ एक प्रश्न का उत्तर लिखना कि क्या इस समय करहल में इस विस्वयितिष्ठा की आवश्यका थी ? क्या इस समय १७ नवीन विम्बी की प्रतिष्ठा कराने भी आवश्यका थी ? इसका उत्तर हमार मन्दिरी की दशा देती है जहां पूजा प्रशाल के लिये वारी बाँधनी पडती हैं। यह महोत उत्तम कार्य है परन्तु जब प्रतिचिम्बी की विनय हम यथार्थ नहीं कर सक्ते तब इस बात की आवश्यका है कि जाति में बह धार्मिक शिक्षा फीलाई जावे जिससे प्रत्येक

जैनी का जीवन जैनत्व से रंग जाये। परन्तु यह हो तव ही सका है जब हमारं पिंडतगण प्रतिष्ठा-कारक महोदय अपने लोभ को सीमित करें और असलियत को देखें। इतिशम्

--- 30 tio

— मृत्यु समय दान बा॰ ऋषभदास जी वक्षील मेरठ की बहन श्रीमती चमेली बाई जी ने कि जिनका २३ दिसम्बर सन् २४ को स्वर्गवास हो गया मृत्यु समय निम्न प्रकार वृहद्दान दिया जिन में बीर को भी २०) रु० प्रदान किये हैं इसके लिये कोटिशः धन्यवाद है। ईश्वर सं प्रार्थना है कि बाई की, पुण्यात्मा को आगामी सुल और शान्ति प्राप्त हो।

२५००) श्री जैन मन्दिर हस्तिनायुरी वास्ते यनाने कनरा धर्मशाला मवाना । व सहदरी धर्म शाला हस्तिनायुर।

२०००) श्री जैन मन्दिर पंचायती सदर बाजार मेरठ, बराय तामीर ।

१०००) श्री जैन मन्दिर शहर मेरठ, वास्ते तामीर १२५) श्री जैन मन्दिर ला० ईश्वरी प्रसाद

सदर बाज़ार मेरट।

१२५) श्री जैन मन्दिर तोपखाना बाजार मेरठ।

२५०) श्री जैन मन्दिर बड़ा गांव वास्ते मरम्मत

१०००) जैन बोर्डिङ्गहाऊस मेरठ

चास्ते बनाने कमरा।

५००) जैन कन्या पाठशाला मेरठ स्थान जैन मन्दिर

५००) जीन पाठशाला लड़कों की धृत्व फण्ड

१००) जैन कन्या पाठशाला सद्र वाजार मेरठ

१००) ,, हाई स्कृल बड़ोत

- १००) जैम हाईस्कूल देहली
- **१००)** ,....पानीपत
- 💶) ,, अनाथ भाश्रम देहली
- ५०) "ब्रह्मचर्य आध्रम जैपूर
- ५०) गोपाल सिद्धान्त भवन मोरभा
- १०) स्यादाद पाठशाला काशी
- **६०)** जीपधालय वड्नगर
- ६०) प्राचीन श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता
- १) जैन प्रदीप-देववन्द
- २०) जैन प्रचारक मेरठ
- २०) 'बीर' विजनौर
- २०) ''जैनमिन्न' स्रत
- २०) अङ्गरेजी औन गजट मदरास
- इ००) दंस्ट जो उन के नाम को छपेगा।
- ५०) धर्मार्थ औपधालय मेरठ
- २५) वैश्य अनाथाश्रम मेरड
- २५) मी शाला मेरड

ಅಭಾಂ)

देश

साहूकारां विल-पंजाब-कौन्सिल में एक सुंसलमान मेम्बर ने इस माशय का एक कानूनी मसविदा पेश किया है, कि वे सब अपना;नाम रजिस्टर करावें और अपने लेन देन का एक बाकायदा रजिस्टर रक्खें, जो किसी समय में भी देखा जा सके, और जो लोग पेसा न करें उनका दावां अदालत में माना ही न जाय। इस साहकारा विल पर पंजाब में बहुत आन्दोलन हो रहा है। कितनी ही समायें हो सुकी हैं। हिन्दुओं का कहना है कि यह मुसलमानों की चाल है, इस प्रकार मुसलमान कोग हिन्दुओं के रोज़गार पर कुडाराधात कर रहे हैं, रिकस्ट्री कराने और रिजस्टर रखने की एख जब लग जायगी तब बहुत से,साहकार अपना काम छोड़ बैठेंगे, रूपये का लेन-देन करने वाली विधवा कियाँ कानूनी प्रहार के डर से अपने गुजारे की इस प्रद से हाथ धो वैठंगी और इस प्रकार रुपये के लेन देन करने घालों को, तो धका लगेगा ही, रूपये के मिलने के कारण व्यापार को भी हानि पहुंचेगी। इसी राथ के प्रकार करने के लिए पंजाब में हिन्दुओं की बहुत सभार इस समय तक हो जुकी हैं। मुसलमानों की भी सभायें हुई हैं।

--- दक्तिए। में हिम्दी प्रचार- महास के हिन्दी अचार कार्यालय की पार्यना पर श्री पुरुषो-समदास टण्डन ने हिन्दी पूचार के लिए दक्षिण भारत में एक मास तक दौरा किया । पायः सभी पमुक्ष स्थानों में गए। लग भग ६००) ६० चन्दे में इक्षर्टा किया। बड़े २ नेताओं ने हिन्दी प्वार की सहायता देनेका वचन दिया। भीनागरी और शारदा मंड के जगदगुरु शंकराचार्यों ने वन्त्रन दिया कि अपनी छत्र छाया के अन्दर काम करने वाली पार्ड शालाओं में हिन्दी का पचार करेंगे। टण्डन जी ने चलते समय अपने सहायकों और सहयोगियों 🕏 उत्तम व्यवहार के लिए कृतशता पुकट की। आपने कहा कि महात्मा जी की अध्यक्षता में जबसे हिंसी का काम हुआ नव से दक्षिण भारत में हिण्दी की अच्छा प्चार हुआ। हिन्दी की शिक्षा और सहर का काम साथ साथ करना बाहिए।

-क्रान्तिकारी परचा 'Revolutionary' नाम का कान्तिकारी परचा देश के सब बढ़े बढ़े नगरों में बंटा। ऐसे अवसर पर, जब कि सर-कारी आदमी इस बात के सिद्ध करने के लिए पेडी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं कि इस देश में क्रान्तिकारियों का एक बड़ा भारी सुसंग-ठित दल है और घह अपने विषद्भ गवाही देने या काम करने घालों को मार डालने तक के लिए रीयार है, इस परचे का वँटना कुछ छोगों के मनमें स्वाभाविक रीति से इस संदेह को उत्पन्न कर रश है कि कहीं अपनी बात को अन्छी तरह से सिद्ध करने के लिए इस प्रकार के परचे कोई सरकारी आदमी या कुछ सरकारी आदमी मिल कर न व ट या बँटवा रहे हों। यह संवेह कुछ और कारणों से भी बढता है। अभी तक तो क्रान्तिकारी बंगालही में थे, दूसरे प्रान्तों में कव पहुँच गये ? कान्ति-कारी लोग अंग्रेजी में पत्र नहीं निकालेंगे। उन्हें अपनी अंग्रेजी योग्यता के दिखाने की अपेक्षा लोगों को उभाषने की अधिक चिन्ता होगी। लोग अंग्रेजी नहीं जानते। वे देशी भाषाओं के परची द्वारा हा उभाडे जा सकते हैं। इसलिए, यह अस-म्भव नहीं कि इन परचौं का निकालने वाला और पेसा आदमी हो जिसका कान्ति से कोई भी संबंध न हो। पाञ्चात्य देशों में, ऐसा हो चुका है। वहाँ बहुधा ऐसा हुआ है कि पराधीन देश के छोगों के भडकाने का काम शासकों के आदमियों ने उन में मिल कर किया और जब कुछ लोगों ने सिर उठाने का विचार किया,तब,उन्हें पकडवा दिया। वेश में, यदि, भयद्वर कान्तिकारियों का कोई सुसंघदित दल है, तो हमारी प्रार्थना है कि सर-

कारी आदमी उसके होने का स्पष्ट प्रमाण दें। केवल उनके कहने और इधर-उधर की असम्बद्ध घटनाओं की ओर इशारा कर देने से लोग इसवात पर विश्वास करने के लिए कदापि तैयार न होंगे कि इस देश में कान्ति-कारियों का कोई ऐसा सु-संघटित दल मौजूद है जिस के आतह से. लोगों को गवाही तक देने की विम्मत नहीं पड़ सकती और जिसके द्वाने के लिए आर्डिनेस और असाधारण कानूवों के विना काम नहीं कल सकता। यदि वायसराय महोदय और उन के संगी साथी अपने भारी तरकश से प्रजा पर चलाने के लिये नये नणे तीर निकालते हैं तो इस से, यह बात तो, सिद्ध हो सकती है कि वे बढ़े सीरंदाज हैं, और साथ ही बहुत बलवान हैं, परन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि उनका पक्ष न्याय-युक्त है,और लोगों का उनको साथ देना चाहिए।

—प्रताप
—तेन को मालूम हुआ है कि सरकार कीं
ओर से गुप्त रूप से यह विश्वित निकली है जिन
सिखों ने अकाली आन्दोलन में भाग लिया या
उसके पृति सहानुभृति विखाई है उन्हें फौजी
विभाग में न लिया जाय और अन्य सरकारी
महक्क्मों में भी उन्हें क्लर्फ का स्थान न दिथा
जाय। जो पहिले से हैं उन पर कड़ी निगरानी
रहे।

--- कलकता में ३ मुसलमान गिरफ्तार किये गये हैं। यह सोलह वर्ष के एक हिन्दू लड़कें को अगाले गये थे और उसे जबदंस्ती मुसलमान बनाया था। लड़कें के विता के पुलिस में इतिला करने पर थे गिरफ्तारियाँ दुई।

विषय-सूची

नं	० विषय	पृ० सं ३	नं० विषय			पू॰ सं॰
ţ	पेक्य (कविता)	१⊏१	६ महिला महिमा	•••		135
ર	न वे हैं भीर महा हैं बीर (कविता)	१≖२	७ रिपोर्ट भा० दि० जै	न०	•••	१ 8२
3	हृद्य को परख (गक्प)	१=४	= मृत्युका आसन्त्रण	(कविता)	•••	१४६
¥	कवि सुन्दर और उनकी रचना	१⊏⊏	& जैन इ पीब्रे फिया	•••	•••	१६७
ų	दश दोहे (कियता)	१६०	१० संसार दिग्दर्शन	•••	•••	200

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकौरी ।

चांदी के फूल भाव १।) तोला 😂 💮 सोने के चड़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ बाँदी या चाँदी पर साने का मुलग्मा करवा के बनाने वाले सामान की सुची) इर अदद कम व बैसी जितने तौल चाँदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

हीदा अम्बारी	५००) से २ १०००) से ३	1				#गंधनवार समोसरनकीरच		
	१०००) से १	4		१००) सं	२०००)	×पञ्चमेरु	३०) से	२००)
टेबुरु	३००) से	400)	क्ष्यवर एक	७) सं	₹૫)	#अप्टमंगळद्रव्य	१००) सं	२००)
हाथी का सार	त ५००) से १	000)	क्ष्मुक ट	१०) सं	२०)	*अप्ट्रप्रातिहार्य	१५०) से	સ્યુ૦)
घोड़े का साज		- 1	क्ष्वोकी	४ ५) सं	३००)	*सांलहस्त्रपने	१००) सं	400)
	५००) से	, 1	समोसरन	१०००) से	2 000)	* × भामण्डल	३०) से	१००)
स्तौठास्छतरी डंडीजोन मन्दिर	३०) से	40)				#कलशा तखन चांदी के	-	-
	२५००) सं ४	000)	तेरह द्वीपकी रचनाका माड़) _{५००)से} ला)	२०००)	बारहदरी २ श्पूजनके ब रतन	५००) सं ५ ३००) से	(000) (100)

यह काम बाजिब आउंत लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में ३०) सेकड़ा को आइत लेते हैं। मनदूर कारी-गरों की नकाशी कामको तोबा और सादे काम की ०) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीनें तेंग्रार भी रहती है। # ये चीजें तांचे की ननाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पतो—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) सिंघाई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी। Tel. Address--- 'Singhai" Benares,

रेल से माल भेजने का कायदा

(सरत हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५००, विषयसूची के १८ पृष्ठ, मूल्य ३)) बहुया कागज पर ! वनारस की बहिया छपाई !!

मालगाड़ा से भेजे हुए मोल अदि का नुकसान न होने पावे, वा नुकसान होने पर रेलवे कम्पनी ही निम्नेदार समभी जा सके यह बात ब्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अब्लो तरह सं साबित होगयी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कंपनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम महत्व के कायदे, शर्तें, आदि जो कंपनियों के अलग २ अंगरेजी हैरिफों में होते हैं वे सब इस एक हो पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेशर हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाई होटों के बहुत हो पहत्व के फैलले भो इसमें बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक ६ हिस्सों में विभक्त है।

ट्रैफिफ मैनेना, ओ॰ आर० रेलो, लवनऊ लिवते हैं-"हम यक्तीन से कहने हैं कि यह पुस्तक ज्यापारियों को बहुत ही उपयोगी हैं।"

सुपिंटेन्डेन्ट जनरल बो० एत० रेलो, कलकत्ता २५ । ११ । २४ को लिवते हैं—"जिन व्या-पारियों को रेलो से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मन्द् मिलेगी।"

लक्ष्मीनारायण वंशीलाल जी मु॰ रोल (मारवाड़) २।११।२४ के पत्र में लिखते हैं-''इस पुस्तक की कहाँ तक प्रशंसा करें।इसमें उपयोगिता के गुर्गों का भगड़ार है।हमने आजत के व्यापारियों के फायरे की ऐसी सरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी।''

श्री बेंकटेश्वर समाचार, बस्बई-"माल भेजने के सब नियम अंब्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश ज्यापारियों को गुड्सकलर्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कायदे ठीक २ न जानने के कारण ही ज्यापारियों को नित्य रेलावे भगड़ों की भंभटें सहनी पड़ती हैं। ऐसी दशा में काले महाराय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बड़े भारी अभाव को दूर करके ज्योपारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पीने दो सी विषयों का विवेचन किया है। ज्योपारियों के बड़े काम की पुस्तक है।

आर्डर देते समय "बीर" का नाम ब्रावृश्य ही लिखिये।

तीन कापी एक साथ मंगाने से बी॰ पी॰ डाक वर्च माक

चता —

आर० एन० कालो, हाईकोर्ट वकील, उडजैन (सी० आई०)

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाचिकपत्र



हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिक्किए । जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायं, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनारंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, खुपाई, सफाई सब हो उत्तम रहती, है। पत्र की नीति स्पष्ट निहर और समाज के प्रश्नों पर निस्पद्म रहती है।

👋 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को एक दम नया ग्रन्थ

"महावीर भगवान"

बिलकुल मुफ्त मिलेगा

जिसमें महाबीर भगवान की जीवनी आधुनिक शेलो पर बड़ी ही गेवक भाषा में अत्यन्त छान बोन के साथ लिबी जारही है। यह प्रस्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस पार्क की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पार्द हैं। इस वर्ष भी महासीर जयन्ती के उपलच्य में

बीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रड़ीन व सादे यहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जोन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायं, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से ताल्कुक रफ्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर प्राहकों में माम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदातात्र्यों के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक-राजेन्द्रकुमार जैनी, विजनीर (यु० पी०)

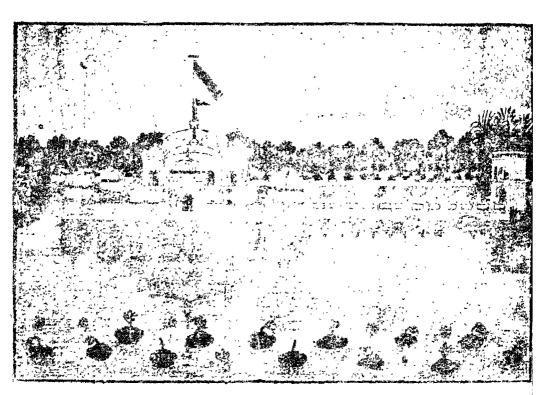
श्री नहीं मानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाचिक पत्र





सम्पादकः---

वृष्यभवाद हः---

जै०४० प्०, ४० दि० ब्र० शीतलपसाद जी

श्री कामनायमाद नी

वाविक मुख्य] राजेन्द्रकुमार जैन रईस, विजनीर (यु० पी०) (डाई रुपरे

इस वर्ष बीर के प्राहकों को उपहार में 'महावीर भगवान श्रीर उनका उपदेश'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा।

इस अमृत्य उत्तम प्रन्थ में श्री वीर भगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ साथ जैन धर्म की सतीव प्राचीनता, उन्कृष्टता और सर्वोषयोगिता को न कंवल जीन प्रन्थों के प्रचानी लेखों वरन संसार के बड़े बड़े अर्जन विद्वानों की साल्ती द्वाग सुदृद प्रमाणों से मिद्ध किया गया है। यह प्रन्थ बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर व सरल भाषा में लिखा गया है। अपने दंग का निराला ही प्रन्थ है। इसके अतिरिक्त इसवर्ष में एक उपयोगी और अत्यन्त मनाइर चित्रों से सुमिजिनत—

वीर का विशेपांक

भी प्रकाशित होगा । ये दोनों बहुमूल्य उपहार अप्रेल तक ग्राहक वन जाने वालों को बिलकुल ग्रुप्त पिलोंगे। विशेष कीमती होनेसे केवल श्रावश्यक प्रतियां हो अपवाई जांयगी। अतः शोध ही ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाईये भन्यथा पछताना पड़ेगा। — प्रकाशक

"वीर" के नियम।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रत्येक अंग्रेज़ी मास की १ ली व १५ वी नारीख़ हो प्रकाशित होता है। २-वार्षिक मृल्य उपहार तथा विशेषांक सहित २॥) है।

3-वीर के चन्दे का वर्ष वीपमालिका (कानिक मान्स) अथवा महावीर जयन्ती (चेत्र मान्स) से कुरु होता है। दर्शमयान में बनने वाले ब्राहकों को पिछले प्रकाशित अङ्क जब से घह ब्राहक धनना बाहे बीठ पीठ का रुपया अने पर फौरन भेज दिये जाने हैं।

्र ४-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक, सामाजिक, एवं साहित्य सम्बन्धी विविध विषयों के लेख प्रका-शित होंगे । परस्पर विद्वेषात्पादक लेखों को स्थान नहीं दिया जायगा ।

प-किसी लेख के प्रकाश करने न करने तथा घटाने बढाने का अधिकार सम्पादक को होगा। यदि लेखक चाहिंगे तो उनके अप्रकटनीय लेख पे(स्टेज़ा मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे।

६-लंख और पारवर्तन के पत्र निम्न पते पर आने चाहियें: -

श्रीयुत् कामनावसाद जैन, उपसम्पादक 'बीर' जसवन्तनगर (इटाचा)

७-पत्र का मृत्य तथा विज्ञापन और प्रयन्धकार्यसम्बन्धी पत्रव्यवहार निस्त पतं पर करता चाहिए-

श्रीयुत् राजन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "बीर', बिजनौर (यृ० पी०)

६-परिषदु सम्बन्धी पत्र व्यवहार इस पते पर करें:--

श्रीयुत् रतनलाल जी कैन बकील मंत्री 'भा० दि० जैन परिषद्व. विजनीर

भी महातीशास ननः

''चमा वीरस्य भूषण**म्**"

श्री मारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाचिक मुख पन

वीर

"हम जिसे अपना कर्तव्य मानते हैं उसके पालन में चाहे जिननी कठिनाइयां आती हों तो भी हमको निराय न होता चाहिये, क्योंकि यदि हम अपने सारे वल की परीक्षा करते हैं तो हमारी भाग्यदेवी अवश्य सहायता करती है। हमको अपनी शिंक की परीक्षा का कोई अवसर मुच्छ न समभता चाहिये। प्रत्येक विषय की सम्पूर्णता पर लक्ष्य देने से ही हम अपनी वर्तमान हिथति को यथासंभव उन्नत बना सकते हैं।"

--वाउडलर ।

वर्ष २

बिजनीर, फाल्गुन शृक्ता ७ वीर सम्बत् २४५६ १ सार्व, सन् १६२५

শ্ৰঙ্ক হ

* स्वप्न *

हुवा झानरिव-उदय दिशामें लाली छाई। पकट जगत् के तत्त पहे भूपर क्या काई।।
सुप मराल हैं खड़े शारदा गङ्गा के तट। खुले हुए हैं सभी आक स्वर्गों में के पट।।
भरे अप्वाहे हुए मान्य उपदेशक जन के। उपह पड़े खिल सकल सुपन उपवन क्या वनके।।
नयतरिक्षणी सीम्मि भुना के पुष्कल बल मे। हटा रही अन्याय-दुर्ग नभ से, भूगल से॥
श्रीकान्ता के चरण चूप हैं गहे चराचर। पड़े हुए हैं गहन गर्ना में सकल निशानर॥
मिटा स्वप्न-संसार रसावल में समात्र है। अस्त हुवा विज्ञान-सूर्य व पिशाय-राज है॥

धो बेंडे कर सम्पत्ति में, गले पिले आपत्ति के । क्या भला स्वप्नसाम्राज्य से ? मिलें न सुख जो युक्ति के ।।

--भुवनंन्द्र

श्री त्राविशय त्रेत्र देवगढ़ जी



उक्त तीर्थ ललितपुर से १६ मील और आखर्जन सं ७ मील की दूरी पर है। यह गुाम वेतवा नदी के किनारे बसो हुआ है। पूर्वकाल में यहां पर जैनियों की गृह-संख्या बहुत थी परन्तु काल के प्रभाव से आजकल यहां पर सिवाय एक पुजारी के और कोई भी जेन नहीं पाया जाता। इसी गाम के सन्निकट एक ३०० फट ऊँची पहाडी है जिस पर करनाली का किला बना हुआ है। अब भी उस को भग्नावरात्र पार जाने हैं। इस पर्वत राज देवगढ़ के उत्पर जैनियों के कई एक विशास मंहिर पाए जाने हैं । उन मन्दिरों की सजाबर और बना-वट को देखकर एकवार फिर मारत की प्राचीन कारीगरी का द्रश्य आंखों के सामने फुलने लगता है। मन्द्रिरी में जित्ती भी प्रतिमाय विराजमान है। सब खंडित हैं। केवल एक खुला हुआ बगमदा है जिसके बीच एक चत्रतरा है जिस पर अगणित खंडित प्रतिसाएँ विराजमान है। उनमें एक प्रतिसा ही पूजनीय है उसी के कारण पुनारी वहां पर पूजा के लिये नित्य प्रति जाता है। एक मन्दिर में एक छोटा सा शिलाले व है जिसमें लिया हुआ है कि सम्बत् १४६३ ई० में श्रीयुक्त सिंघाई नन्हेंलाल जी ने इसे निर्माण किया था। बरामदे के सालने १६॥ फीट की दूरी पर स्थित एक छत्र है जिसके एक जम्मे पर एक शिलालेख है जिसको राजा भाजदेव ने निर्माण कराया था। यह शाक्य संवत् 98 का पाया जाता है। पर्वतराज पर खड़े होकर

चहुं ओर दृष्टिपात करने से जो आनन्द आता है वह यचनार्वात है। इसके पश्चिम की ओर वेतवा नदी कलकल शब्द करती हुई अपने प्रीतम प्यारं से मि-लने के लिये वही चली जाती है। इस पर्वत के पश्चिम की ओर दो घाटी हैं जिनका नाम नहर-घाटी और राजघाटी है। इन्हीं घाटियाँ द्वारा सारी पहाड़ी का वग्साती पानी नहीं में जाता है। ये घारियां ठोस च तन में से वनाई गई हैं। गुप्तवशीय किसी राजा की बनबाई हुई मालम अनी हैं। राज-घानी के किनारे एक छोटा सा आठ लाईन का शिलाले व होने से पता चलता है कि यह राजा वत्स का बनवाया हुआ है जोकि कीत्तिवर्मा चन्देल का बजीरबाजम था। इसी के नाम सं िहल का नाम कीर्तिगिरि दुर्ग स्कला गया था-पहाड़ी के पश्चिम में एक गुका है। जिसका नाम सिद्धगुका है। इस तक पहुंचने के लिये पटाडों की चोटी से सीडियां बनी हुई है। यह भी चट्टान से बुकीर कर बनारं गई है। पहाड़ी के पूर अस की तलहरी में एक बाउटी है जो सदैव मुंह सं भरी रहती है। पानी न आने से अब उस में काई जमी रहती है।

पहाड़ी से उत्तर कर मैदान मेएक डाक बहुला है जिसमे आफीसर लोग आकर ठहरते हैं उससे थोड़ी दूर उत्तर की ओर एक दशावतार वा सगर-मेर का मन्दिर है । जालीन के बुन्देला बीर धुर-महुद्सिंह ने अपनी भागु के अन्तिम दिवस इसी पावन ग्राम में ब्यतीत किये थे। आप १७६४ ई ० में मरं थे। आपके समय यह ग्राम बड़ा ही सुन्दर तथा मनोहर था-६सी बंशवाले ने द्तिया का दुर्ग भी बनवाबा था। अस्तु।

पहले इसके ऊपर किसी की भी दृष्टि नहीं थी, परन्तु किस साल गवनंगण्ड ने अपना नोडिस इस पर कब्बा करने के लिये निकाला तो उसी साल खिलतपुर के स्वर्गीय श्रीमान सेठ मथुरादास जी टडैया का ध्यान उस ओर गया और आप उसकी प्राप्त करने की काशिश में लग गये। आज वह दिन है जब कि यह पावनक्षेत्र अपने हाथ में आया जाता है। अब समाज के श्रीमानों से मेरी यही प्रार्थना है कि आप लोगा इस क्षेत्र के दशन एक वारहु अवश्य ही कर आइये । इसको देखकर आपका चित्त ऐसा प्रसन्न हो जायगा कि आप बार २ इसके दर्शनों के लिये लालायित ग्हेंगे ।

मेरी उत्कर इच्छा तथा भावना है कि यदि एक बार यहां पर प्रति वर्ष मेला लगा करें तो यह क्षेत्र भी प्रसिद्ध होजाय और सारा काम बनजाय। अभी वहाँ कर्इ एक बातों की कमी है। अग्राम है कि संयुक्त प्रान्तीय सभा के मन्त्री श्रीमान बाबू रूपचंद जी कानपुर जोकि इस क्षेत्रसम्बन्धी कमरी के भी मन्त्री है, इस और ध्यान देंगे।

ृसमाजसयक— नाषूराम सिंघई जैन

जैन जाति श्रीर सङ्गठन

जन धर्मानुयाइयों के पतन का एक मात्र कारण उन में संगठन का अभाव है। संसार में जो र जाति जब जब हास को ाति हुई जाताय संगठन या जातीय बंधन को छिन्न भिन्न कर डालने से हुई। कस की संगठन शिक दूट जाने पर ज़ार गड़ी से उतार दिये गये। पश्चात् उस देश की जो दुव्य-वस्था हुई वह सर्व विदित है। जरमनी ने लड़ाई के समय संगठन शिक्त का सत्यानाण कर डाला फल यह हुआ कि वृद्धि गवर्न हेन्ट से हार स्वीकार करनी पड़ी। भारतवर्ष भी अपने जाताय सगठन को छोड़ देने से आज परमुखापेक्षी हो रहा है। इसी प्रकार जैन जाति भी विश्वाल से संगठन शिक्त से मुहा मोड़े हुए हैं और समस्त जातीय

बन्धनों को डीले किये हुए हैं। इस ही कारण आज साढ़े वाग्द लाख जैनी होते हुए भी वे कुछ इन गिने पारिसयों के मुकाबिले में तुच्छ एवं न होने के तुल्य है। जिस जैन्धमें का साहित्य सर्वधमों के साहित्य से श्रेष्ठ और अचल है और जिसकी अन्य २ विद्वानों ने भी मुक्तकट से प्रशंसा की हैं। जिल्थ जैन धर्म का विश्वणे मरूपी अहिन्साधमें संसारके कोने कोने में फैल चुका है और जिस के अनुया इयों में दिग्यि ई होकर एक समय समस्त संसार को जानीय संगठन से संगठित किया था, वही आज संगठन को इस धकार भूली हुई है जैसे स्व प्रशी वान हो! संसार में जब कियी जानि देश. समुदाय या राष्ट्र ने उन्नित की है तो सिर्फ संगठन शक्ति के निमित्त से । उन्नति शिखर पर चढ़ने के लिय पहिल संगठनकर्ण सिङ्गी की परमावश्यकता है, बिना प्रथम सिङ्गी पर पद (चरण) रखे मनुष्य ऊपर नहीं चढ सकता।

राजा जब किसा पर खड़ाई करता है तो प्रथम उसे उचित रीति से फीज़ का संगठन करना पड़ता है। बिणका जब ब्यापार को उद्यमि होता है सो प्रथम ही द्रव्य का यथासंभव संगठन कर लेता है। एक ब्राह्मण आन्वार्य्य, जब शिक्षारूपी कार्य-क्षेत्र में पदार्पण करता है ता प्रथम ही विद्या का शंगठन अच्छी प्रकार कर लेला है। सारांश यह है कि उन्नताकांक्षी पुरुष कार्यार्भ से प्रथम ही भले प्रकार संगठन को कर छेता है और ध्येय तक पहुंच जाता है छोटे २ पशर्थ संगठन होने पर बड़े २ कार्यों को अणनात्र में कर डालते हैं जब कि उसी ओर शक शक्ति कुछ कर नहीं सकी। जिस बोभे को एक मन्य उठा नहीं सक्ता उस ही बोभे को १० शक्तियां मिलकर सहत ही में उटा सकी हैं। ज्ञान ज्ञान को भी एकत्रित होने पर सहायता करता है। जैने एक पुरुष की मस्तिष्कशक्ति किसी विषय को निर्धारित करने में रकावट देती है परन्तु वड़ी गप्सीर विषय कुछ चंद ज्ञान शक्तियां संगठित दोकर सुचारुस्पमें हलकर डालती हैं अत-एंस जहां पर संगठन नहीं है वहां समाज, देश, राष्ट्र, आदि सर्व ही पनित एव हास की प्राप्त ही जाते है। वे देग, चाति, समाज आदि विद्या, जात. पेश्वर्य, आर्थिक व नैतिक उन्नतिसे बंचित रहते हैं क्षीण शक्त होकर परमुखापेक्षी हो जाते हैं। भारतवर्ष भी संगठन शक्तिको खोकर अपनी विद्या, शाम शिल्पकारी, कृषि, चाणिज्य आदि से हाथ थी

बैठा है। आज किसी वस्त की आवश्यकता होने पर उस की पूर्ति विदेशी वस्तु से ही हाती है, जैसे घडी, चश्मा मोटर, रेल, वायुयान और छोटी से छोटी सुई तक, इन सब वस्तुओं के लिए विदेशियाँ का मुख देखना पड़ता है। आज विदेशी सउजन हमको दियासलाई देना बन्द करदें तो अग्नि आदि स्यार करना भी हमारे लिए कठिन साध्य होजाय। जब इसी प्रकार अन्य भी बहुत सी चीजों का जोकि हमारे दैतिक कार्य में सहावता देती हैं भारतवर्ष में मिलना असम्भव ही है। इस सर्व अभाव व अस्विधा का कारण एक मात्र संगठन का अभाव है। यदि देश में पूर्ववत संगठन होता तो हमारी आवश्यक वस्तुओं का क्यों अभाव हो जाता- हम भारतवासी जन अपनी आवश्यकता पूर्ति की सामित्री अच्छी और सस्ती समयानुसार सदैव त्यार कर लिया करते थे। यहां तक कि बहुत सी बस्तुएँ विदेश भी भेजा करते थे जिन को विदेशी सज्जन दें व २ कर चिकत एव विस्मित होते थे। आज हमारी संगठन शक्ति टूटफूट जाने पर हमारी समस्त कारोगरी नष्ट हो गयी | कुछ तो हम भूछ-गए और कुछ रही सही थी वह सब विदंशी कारी-गर हम से हर प्रकार से छीन लेगए। आज हम हर तरह प्रत्येक प्रकार से निर्धम एवं उदरपृति के लिए लाचारसे हो रहे हैं। यहां तक कि हम रो भी नहीं सकते ! और रावें तो कोई तुनने बाला नहीं। एक दूसरे को देख कर घृणा करता है। इसरे हम में अपने भाई की बात सुनने की हृदयाकांश्रा नहीं है। ऐसे स्वार्थी कायर नीच प्रकृति के लोग इस समय परस्पर वैमनस्य बढ़ाने में उत्तेजना देरहे हैं! फिर बताइर कि

उन्नतिका सवाल किस प्रकार हल होसका है आज यही अवस्था हमारी प्यारी जैन समाज की होरही है। जैन समान ने तो सबसे ही बढ कर विडंबना रूप धारण किया है। यहां तो प्रेम, बात्सल्य, व करणा भाव, नाममात्र एवं लिखने और बोलने के ही लिए रह गया है। एक जैनी दूसरे जैनी की वि-भूति व पेश्वय्यं देख कर हृद्य को कलुषित करता है। वैमनस्य राजा का साम्राज्य, प्रति मनुष्य प्रति समुदाय और प्रति जानि में होरहा है। फूटने घर घर डेरे डाल लिए हैं। एक एंडित दूसरं विवान को देखकर घुटा करता है। और दूसरं/की प्रभुता को देखकर खेदित होता है एक व्यापारी दूसरे व्या-पारी के चलते हुए व्यापार को देखकर कुढ़ता है यहां तक कि एक दूसरे की भलाई, सज्जनता, पेश्वर्थाता, देख नहीं सक्ता । यही कारण है कि आज हम जैनी भाई एक उत्तम सार्वभौमिक धर्म को रखते हुएभी दूसरों के विचारों में न कुछ के बराबर एवं घुणा के पात्र हैं। संसार में हमारी कदर नहीं, लोग हमको नास्तिक कह कर पुकारते हैं. संसार की नमाम छोटी २ जातियों में भी हमा-री गणना नहीं होती, हम जातीय एवं धार्मिक नि- यमों को भी भलेपकार पालन नहीं करसके, कीं-सिलों में भी हमारी पूंछ नहीं होती, प्रत्येक प्रकार से हम दबे व छूपे हुए हैं। यदि हमारा उचित रूप से संगठन होता तो हम आज जो पग २ पर पद-दिलत होरहे हैं सो न होते और समस्त सभ्य स-माज को पारसियों की तरह दिखादेते कि हम जैनी पेसे हैं और हमारा जैन साहित्य पेसा है। इस लिए प्यारे जैनी भाइयों अगर आए जैन धर्म ब समाज की उन्नति के इच्छक हैं तो अपने भावों से बे कुटिल भाव, वे प्रेम रहित विचार, वे धर्म रहित आचरण त्यागिए, और मैदान में आजाइए और एक ऐसा अपूर्व संगठन करिए जिसमें समस्त जैनी भाई खुले हृदय से प्रेममय होकर एक सुत्र में बँघें। जो भाई चिरकाल से अपने से कारणवश पृथक् होरहे हैं उन को भी यथ चित नियमानुसार संग-ठन में संगठित कीजिए और शक्ति बनाकर संसार के कार्य चेत्र में कुछ कर दिखाइए। अन्यथा उन-ति की बांछा करना आकाश कुसुमबत है।

> समाज संवक-अमरचन्द्र जैन

बन्धु

बहुत हो चुका, श्रव भी चेतो, बीती उसे बीत जाने दो। श्राता है सुन्दर भनिष्य, श्रपनाद्यों, उसको श्रानाने दो।। १।। लड़ लड़ कर समान की सेवा बहुत हो चुकी है श्रव मानो। सुवक समृह नग रहा, उसको कार्यत्तेत्र में श्रानाने दो।। २॥ धर्म-मेमियों, धर्म-मार्ग में, क्यों श्रवम का जाल बिल्ला है? छल छन्दों हे लेद भिटा दो, फलह-काएड को मिट माने दो॥ ३॥ भाई —भाई भाई हा पालिर, भून न क्या अपनी भूलोगे।
भैया, सुद्दिन कर रहा मेया, अब तो उसको हँस जाने दो।। ४॥
उसको कलपाने में क्या कल ही भ्राता कुछ फलपाते हैं।
देप दुरे सरसे गुल सुन्दर, वह फलदायक कल आने दो।। ४॥
उठो, बन्धुनर, गलै बिलो, सद्भाव सूर्य्य का उद्य हो चुका।
देप निशा भग रही, हृद्य की भेग कली अब खिल जाने दो।। ६॥
—भारतीय।

युगकों से दो शब्द

म् दि आप चाहते हैं कि जैन ज्ञांत की नैया मंक्षधार में डूबने सं बचे ता कायओं के में बाइए। जो से जाति के प्रांत अपना दायता अब तक अनुमव नहीं कर सके उन्हें समकाने में समय खोना व्यर्थ है जिन के हृदय में उमंग है, वे अपना संगठन कर लें। और बिना आडम्बर, चुपचाप, काम में लग जांय।

क्या काम किये जाँय ? वस्तुतः यह प्रश्न यहा आवश्यक है और विज्ञान, इस के उत्तर में विश्न ह विवेचना कर सकते हैं। पर आप यदि यातों के जमा खर्च से बचना चाहते हैं तो इस प्रश्न का उत्तर सीधे अपने जी से पूछिये। आप किस लिये काम करना चाहते हैं?

अपने नाम के लिए १ तो लेब लिखिए, एक पक्ष पर आशेष की तिए, और नदी तो किसी पत्र के एडीटर बन जाइए। श्रर्थ सिद्ध के लिए? इस का भी सीया मां है। किसी सस्या में स्थान प्राप्त कर लीजिये, नाम का नाम, धर्म का काम और अर्थ-सिद्धि भी-सो भी इस अहसान के साथ जैसा कि दमारे गोरे प्रभु, नज़ाकत के साथ भारत वासियों पर ज़ाहिर किया करते हैं! मनोरञ्जन के लिए? तो कम सभा-सोमाइटियों की शरण लीजिये। यह से एच्छा नाटक अन्यत्र देखने की कासिल सकेगा।

शायद, आप का उद्देश्य इतना पतित नहीं होगा? आप सनाज की सब्बी सेवा करने की शुभ भावना रखते हैं। अपने सदुद्योग कपी सुधार सिल्ल सं मत आयः जातीय गौरव वृद्ध में जीवन संबार करने की इच्छा रखते हैं। आप चाहते हैं कि जैन-वाटिका, किर सं,हरित पल्लघों से शोभ-नीय वने। क्या सबमुच आप ऐसा चाहते हैं?

घृष्टता है, पर उसे क्षमा कीजिये। यदि आप प्यार्ग जैन जाति को मरणशैया से बचाना चाहते हैं तो अप को महरवानों की मिथ्या आशकाओं को अपनाने का अध्यास तो करना ही होगा 1 तय मेरी भृष्टता तो अकारण नहीं है । में किर जानना चाहता हूं कि आप के इंद्य में जैन-पाति की रक्षा के सद्भायों का प्रादुर्भीय किन हेतुओं के आधार पर हुआ है ?

यरि आप का वह िचार है कि हम अन्य जाति वाल। के देखते हुए यहत पंछे हैं। इसारा साहित्य अज्ञान में, हमारा ऐतिहासिक महत्व अभी सर्व सहमत् प्रमाण नहीं हुआ है, हम शिक्षा धन और राजनैतिक वैभव म और लोगों से पाले हैं तो आप अपने स्थान स ही जन संगठन का काम प्रारम्भ कर दीजिये। शिक्षा प्रचार और जीर सभाज सुआर की सुनीश्चित स्कोम काम म

किन्तु एक बात का तो िचार कीतिये। वस्तुतः हमं 'जैन जाति" शब्द को व्यवस्त करने का स्थिकार ही क्या है ? हम विभिन्न जाति वासी जिस जैन धर्म की महिमा के कारण परम्पर जात यता का अनुभव करते हैं। क्या उस ससार जिकारी धर्म के शित में हमारे हृद्य म उत्सार उठ रहा है ? इस असार संसार की येत्रणाओं के चुद्गुळ से बचा कर अनन्त शान्ति का सुम्बद् देने वाले स्वधर्म के लिस भी क्या हम कुछ करना

यदि हमारे हदय में, कैन्धर्म की अटल अजा ने स्थान नहीं किया है, यदि उस की सर्वोध्यागता पर विमुख्य हो उसके प्रचार के लिए उसारे हदय आस्रोलित नहीं हो रहे तो हमारा जारा बाहरी है। इस में हमारा 'ऊपनापन' बहुत कथ है। यह भाग ही समक बेटें कि तु चा तब में बह उस विचार वाता एण का अस्थार प्रभाव मात्र है जो समाचारपत्रों और नेताओं की घुंआधार बक्तृ-ताओं ने हमारे सारे ओर फैला रणा है।

सावधान! जवानी के नेश में धोका न खाइये!! इतने अभे न बहिये कि पीछे से इमास्त गिरतों ही जाय। आम जैन नाति का उद्ध करने चले हैं न १ पहले अपने जैनत्व की पडताल की िये। क्या आम आचक हैं १ दर्शन, प्याया-ध्याय. अभन्य त्याम, छना जल पान, गात्रिभी जन त्याम की बतिज्ञा क्या आप के हैं १ घम्मने क्यों है १ None Sence कहने से काम नहीं चलेगा। क्या कर से कम पंच अणवत के धारी आप हैं १ आवक की कीन सी पृतिमा के श्रप धारी हैं १ अप्र मूल गुण का धारण कर क्या उसका पालन कर रहे हैं १

नहीं-तो रहने ही िये। उद्घार करने की चर्चा छोड़ ी जये। प ले अपने उकार में लग जाइन। आहम स्थम और इस्ट्रिय निष्ठह का अध्यास कीजिये। पारस्म में कुछ कडिनता होगी। पर प्रतिज्ञा का लेने पर इस स्वासािक सुपथ पर आप खाउन्ड की भलक के स्थतः दर्शन पा जायेंगे। किर आपके प्रतनी का प्रभाव सात्विक होगा और जैनजानि का उद्धार अवश्यम्भावी।

संगठन होते हैं और खार दिन की चटक दिलाकर छुन पाय हो जाते हैं। इसने युवक-संग छन' की शिकारिश करने हुए भी जी हिचकता है। मगर प्रयत्न करने में हानि ही क्या है जाति के भाग्य की अन्तिम परीक्षा भी हो जाने दीजिये। 'परिषद' के अन्तर्गत पेसा सगठन कीजिये जिस में वे ही बन्धु शामिल हो सकें जो-

- १ जैनत्व का ज्वलन्त पुभाष रखते हों।
- २ अधिकार के चजाय कर्तव्य के अधिक पूमीहीं।
- ३ अपनी आयुक्ता निश्चित भाग स्वेच्छा से जार्तय हित में व्ययकरें।
- ४ पुकार पर, शारीरिक कष्ट सहन, परिश्रम व त्याग के लिए तैयार ही।

यदि ऐसे वीरों का सघ स्वापित हो जाय, तो निश्चय हो जैनजा त के सुदिन आते देर न लगेगी। कलह और अन्धकार के काले वादल धीर संघ की प्यम हुंकार में विलीन हो जावेंगे और जैन गगन मंडल में पूम आशा तथा जातीयता के दमकते हुए नक्षत्र शोभायमान दृष्टि आवेंगे।

इस का एक सिद्धान्त है "जो कुछ परिश्रम

करे वही मन दे सके" कांग्रेम का 'खरखामत्ता-घिकार' प्रताव भी उसकी पृतिष्विन स्वक्रप ही है। इस में एक अत्यन्त महत्वास्पर तत्व विदित है। जो कुछ करता है उस का मत भी बज़नदार होता है और उसी के मतको कुछ महत्व मिलना चाहिए। जानियों के निर्माण और पुनः संजीवन जैसे कार्य में चंचला लक्ष्मी को प्रधानता देना जातीय जड़ पर कुठारघात करना है, युवकों। को इस वक्ष्म पर पिचार करना चाहिये। और करना चाहिये वाद-विवाद त्याग कर चुपचाप अपना कार्य।

न रोके चूर तो इम जांप अर्श से ऊँचे; इमारी राह से पत्थर ज़रा इटा देना। —धीर सेवक'

रामस्वरूप भारतीयः

जैन धर्मभूपण धर्मादेगाकर ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी का भाषण।

रहल निश्वप्रतिष्ठोत्सय के समय थी संव प्राव दिव जैन सभा के नैप्रित्तिक अधिवे-शन के सभापति की हैसियत से पूज्य प्रव जीने जो सा गिर्मित ब्या ब्यान दिया था उसको उपयोगी जानकर हम पाठकों के समक्ष उपस्थित करने हैं— आपने पहिले ही सभाकी सफलता के लिये सभा-सहीं के सहयोग की आवश्यका प्रगट की थी फिर आपने अपने विचारानुसार निम्नवातीं पर

प्रकाण डाला था। (सभा क्या है? वह कब से है? इस को आपने दर्शाया था और उदाइरण के रूप में नीर्थं कर सगवान का समवशरण पेग किया था। प्रणाली अकृत्रिम ही है। इन्द्रों की सभादि इसकी साक्षी है। पहले तो भारत में राज्यशासन मी सभा के वल हो चुका है। जातिका उत्थान भी सभा के वल हो चुका है। इस सभा का कर्तव्य है कि इस प्रान्त के जैनियों की उन्नति कैसे हो

्जीर बहु उपाय अमल में कैसे लाये जावें। अस्तस्य कर छेना सुराम है परन्तु कार्य करना कठिन है । बिनाः स्वार्थत्याभियोंके कार्य हो नहीं सकता । इस लिये सभाकी स्थापना जब हो जब कुछ स्वार्थ ्त्याणी तैयार होगये हो । निःस्वार्थभाष के अभाव में सभाको स्थापना फिजल है। उदाहरण रूप स्थापित ईसाइयों की सभा है। उसके निःस्वार्थी कार्यकर्ताओं ने ईसाई धर्म का प्रश्वार दुनियां में कर दिया। १००, १५० वर्ष क्ररोड़ों अन्ध अपने धर्म के चित्रण कर दिये। यस निःस्वार्थभाव से प्रेरित कार्यकर्ताओं द्वारा ही कार्य होता है। इस सभामें भी ऐसे एक कार्यकर्ता वाब कपचन्द्र जी हैं। आपने जो कार्य कोलारस और देवगढ़ के संबंधमें किये हैं वह सर्व प्रकट हैं। अब प्रश्न यह है कि इस सभा को क्या करना चाहिये ? इस पर बड़ा भारी बोभा है उसको हलका करने को उसे निम्न बार्नो पर ध्यान देना चाहिये:--

(१) दि० जैनधमें की रत्ता करें। धर्म के स्तंभ तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र,मिन्दर व १० तीर्थक्वरों की जन्मनगरी इस प्रांत में है। इन तमाम का
प्रबन्ध सभा पर है। वहां पर इस समय प्रबन्ध सुचारुक्त में नहीं है। तीर्थक्षेत्र कमेटी की सम्मति से
सभाको इस आर कार्य करना चाहिये। प्रत्येक स्थान
के मन्दिर की देखभाल रखना भी सभा का कार्य
है। धर्मोन्तिन केनु उनकी व्यवस्था की इसे जांच
करना चाहिये। यह जांच चाहे पञ्चायती द्वारा करे
अथवा कानूनी रीति से। प्रत्येक मन्दिर में जमा
करने को भंडार नहीं है। प्रवन्य के सिवाय जो
बचे उसे खर्चमें लाना लाजमीहै। इस बचे दुए द्रव्य
को। खाहे जहां खर्च करों, यह आवश्यक नहीं है कि

श्वह उस ही मन्दिर में हो । चाहे कहीं जीर्णोह्मार में तीर्थों की रक्षा में, गृन्धों के उद्यार में, पुस्तका , क्यों की स्थापना में, अत्येक कार्य में मस्योक, भंडार का उपयोग होना चाहिये। सभा यदि जांच करे तो उसे सहावता की भी आवश्यकता न एवे।

- (२) शिक्षाप्रचार और विद्यालयों की रत्ता का भार सभा पर है। १८ वर्ष हुए बनाइस में स्थाहादविद्यालय स्थापित हुआ। अस्त इद्ध भादर्शकप विद्यालय हो जाय इसका प्रकथ हो। हाईस्कृल बड़ीत से और बोर्डिझहाउसेस अळा-हाबाद, आगरा और मेरठ में जनछात्रों में धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इनकी जांच करना सभा का कर्ताव्य है। जीवद्या प्रश्समा आगरा अच्छा कार्य कर रही है। उसे सुरक्षित करना चाहिये।
- (३) इनके अतिरिक्त यह सभा धर्मोत्नति, के लिये (अ) नगर, कस्बे, मुहब्ले जहां जैमी ही खुड़ां यदि दर्शन का लाभ न हो तो मन्दिरी की स्थापना की व्यवस्था करे। (ब) नौ देवताओं में मन्दिर भी देवता है-सो जहां मन्दिर जीर्ण हो उसका वहां उद्धार करें (क) प्राचीन जैन पुरावत्य का उद्धार करं (ख) जैनियों की वस्ती अधिक परन्त कोई कालं जनहीं है। कालेज कोई इउवा नहीं है। कालेज महाविद्यालय है। इसके प्रताप से जाति में जाती-यता आतो है। अलीगढ़ में मुसलमानों का कालिज़ इसका उद्याहरण है। जैनिया की कोई संस्था नहीं है जहाँ लोकिक और धार्मिक शिक्षा साथ २ दी जासके। इसी से उन में जातीयता नहीं है धर्म के लिये मर मिटने का भाव उनमें नहीं आया। यह सभा सं० प्रान्त में एक कालिज खोले। उसके यक भाग में Oriental प्राच्य धार्मिक शिक्षा का

प्रवंध ही सथा दूसरे में लीकिक Science शादि की क्षावक्या हो। इसके लिये केवल १० लाक रुपये की क्षावक्या हो। इसके लिये केवल १० लाक रुपये की इस सांक प्रतिष्ठायें होती हैं। एक विश्वप्रतिष्ठा में एक खाक स्वाहा होना मामूली वात है। यदि एक विश्वप्रतिष्ठा में वर्ष के लिये भी प्रतिष्ठायें रोक दी जांगें तो एक ही वर्ष में कालिज स्थापित हो जाने। इसी कालेज के किये मुरादाबोद के थी मुकुन्दीलाल व चुन्ती-खाक जी ने गाँव २ चन्दे इकटुं किये। परन्तु दुःख है कि नालावकी से उसकी पूर्ति सभी तक नहीं खुरें। सं० प्रा० सभा को इस प्रान्त में जातीयता का कामा गाढ देना चाहिये।

- (४) येसा कोर पुस्तकालय जैनियों में नहीं है जिसमें जैनधर्म के सर्ग प्रन्थ मिलते हों। हमारे प्राचीन पुरुष पुस्तकालय का महस्व जानते थे। प्रत्येक मन्दिर में बड़े र प्रन्थभण्डार थे। इन गृत्य प्राच्यारों में अधिकांश आक्रमणों की छण से नष्ट हो गये। वसे खुनों में आधे दीमक चाट गई। अब एक महत्त् पुस्तकालय किसी स्थान पर यह सभा स्थापन करे। वहां सर्व प्रकार के गृन्थ लिखे आ सर्वे। अलाहाबाद जैन बोर्डिक्न के अधिवेशन के समय डा० भा ने वहां पेसे पुस्तकालय की आपश्यकता प्रतकाई थी। सभा चाहे तो वहां उसे स्थापित करे।
- (५) कोलिज के अन्तर्गत ज़िला स्कूल प्रवेशिका तक संस्कृत में मैट्रिक तक अंग्रेजी में शिक्षा देवें के स्थापित करें। इनका संबन्ध कालिज से हैं। इनके स्थापित करें। इनका संबन्ध कालिज से हैं। इनके स्थापित करें। स्थान २ पर प्राथमिक शालायें स्थापित करें। जिल्लों ही के लिये ही नहीं अन्युत बालिकाओं

के सिये मी शिक्षालयं स्वाचित होशा वादिये। यदि एक स्वी महाविद्यालय स्थापित हो सी उसम हो।

अभी तक तो विशेषकर धर्मोक्रति की और विचार प्रगट हुये हैं। अब समाजोसति के विषय में फहना उपयुक्त है। यह माननीय है कि की समाज होकमान्य व राज्यमान्य हो उसकी प्रवता बढ़तो है। जैन समाज को भी येखा ही बनाना आवश्यक है। वास्तव में समाज बहुत से पुढ़वी सियों के समुदाय का नाम है। अवएव समाजो-ऋति के हेतु पहिला कर्तब्य प्रत्येक पुरुष स्त्री को अपनी उन्नति करना है। धर्म, अर्थ, काम पुरुषार्थ से उन्नति होती है। जो होना होगा सो होगा यह जीन सिद्धान्त नहीं फहता। पुरुषार्थ करो सिद्धि होगी। कर्म से ही सब कुछ होता तो पुरुषार्थ से मुक्ति न होती। अतएव धात्मधर्म का मनन करो पुरुषार्थ स्वतंत्र वस्तु है। कम के जाने से जो आतम. बल प्रकट हो वह आत्माकी घस्तु होगी। वह हमारी है। और सच्चा पुरुषार्थ है। इसी पुरुपार्थ से धर्म, अर्थ,काम का सेवन करना चाहिये। धर्म प्रवार्थ के सेवन से वह शक्तियाँ आजाती हैं जो अशी पुर-षार्थ को छा रखते हैं। परिणामी से ही पाप, पुष्य और मोक्ष है। इसलिये परिणामी को अशुभमार्ग से हटाकर शभमार्ग में लगाना चाहिये। धर्म के हेत बटावश्यक का पालन नित्य करना चाहिये । वर-रत यह मान के आवेश में नहीं और न पुण्यके भाव से करना चाहिये। यह मात्र परिणामी की निर्म-लता के लिये करना चाहिये। धर्म के बाद अर्थ सिक्षि में उपयान को लगाओ । अर्थ कि कि के पर कर्म-असि, मसि, कृषि, शिल्पावि-बताये हैं। इक के द्वारा द्वस्य कमाना चाहिये । धर्म का, बारा

कर के इच्य कमाना योग्य नहीं है। हिंसा भूठ कोरो और अतितृष्या से वचकर द्रव्य का उपा-र्जन करो। इसरे का गढ़ा काटकर भढ़ा न होगा न्याय से कमाओ, अन्याय से कमाओगे तो १० क्षे रहेशा ११वें नच्ट होजायगा । स्थाय परायण मञ्जूद आनम्द में रहते हैं। बेईमान नर्क में पहते है। न्याय की सडक से मार्ग की प्राप्ति होगी। बैनी गृहस्थ द्वये का सट्टे का काम करते हैं। बस्तुतः वह पुरुषःवहीन हैं। तीसरा काम पुरुषार्था है। परन्तु काम पुरुषार्थ स्त्री भोगों में अंध होना नहीं है। पांची इन्द्रियों के भोग मर्यादा पूर्वक सेवन करना उचित है। इससे जीवन भी प्रक्र-क्छित रहता है तथा बीर संतान उत्पन्न होती है। बस बीर संतान के योग्य होजाने पर अर्थ काम की उसके सुपुर्व कर धर्म पुरुषार्थ में लगना बाह्ये। यही प्राचीन रिवाज हैं।

अब कुटुम्ब की ऑर हिंछ डालिये। स्त्री पुरुष, आई बिह्न आदि का मेल कुटुम्ब कहलाता है। वह कुटुम्ब नहीं कहा जासकता जहां मेल न हो। ये म-पूर्वक बर्तांव व धर्म पूर्वक रक्षा के लिये संस्कारों के प्रचार की आवश्यका है। संस्कार ५३ हैं। संस्कार का महत्व विशेष है उस ही की बदौलत मूर्ति को अरहंत मुद्रा से मुद्रित करदंते हैं। इसी तरह से बालक के स्वभावों को शुद्ध करना है। संस्कारित करने से ही संतान मनुष्य होती है। अन्य देने से मनुष्य नहीं होती। परधर शान पर धरा जाने से ही तेज़ होता है। संतान शिक्षा से ही क्लम होती है। यदि सताव को जन्म हो तो उसे शिक्षा केवा ठान सो। बालकों के साथ कन्याओं की रक्षा भी ठीक करों। बालकों के साथ कन्याओं

मां व होती तो तीर्थंकर कहां से आते ? बीर पुत्र की माँ का अनादर नाश का कारण है। पुत्री को भी वैसे योग्य बनाओ जैसे पुत्र को । बेशक बन्धा तुस्हारे घर नहीं रहती। दूसरे के वहाँ खंडी जाती है, परस्तु दूसरे की कन्या भी तो तुम्हारे कहां भावी है। इसलिये कन्याओं को पूर्ण दक्ष बनाओं। फिर लहका लड़कियों का हित देखो । उनका विवाह जबकरो जब वह कमाने योध्य हो जांथ । बीर्य पका हो तब बील वर्ष में विवाद करो। कम्याखंद को तबनक शिक्षा दे योग्य गृहणी बनादो । प्रीद्धा-वस्थामें यदि शादी हो तो गर्भस्थित हो और योज्य संतान उत्पन्न हो । शादी उसके साथ हो, किसदे शादी हो-हरदिल शाद हो। काम शास्त्र में स्वी पुरुष के सक्षण इसी सिये बतलाये हैं। अन्याय है अनमेस विवाह-लोभ में बुद्ध विवाह करना यह बढ़ा शाय-है। योग्य विवस्त से दस महीने में बोद भरका सकी है। फिर दैवी विष्यत्य में उस एक संतान से वह ख़शख़ूर्यम रह सक्ती है। विधवा के बद्ध संतान न हो तो उस विधवा को वैराग्य के कपरें पहिनाना चाहिये । शान के भूषण धारण करना चाहिये। खेद हैं कि जैनी उनके आभूषण पहिनासे हैं। उनके सामने कामभाग करते और चाहते हैं उन से शीलपने का व्यवहार। इसओर स्वब् सेठ माजिकसन्द जी का अनुकरण करना साहिये बन्होंने अपनी विधवा पृत्री भी मगनवाई को क्षात संपन्न योग्य पंडिका स्वपरकत्याणी बनादिया । श्रीमती कुंकुवाई-ललितावाई-चंदावाई आदि के आवर्श आंखों अगाड़ी है। इन पूजनीय बहिनों का आदर करो। निरादर महा करो। विश्ववाओं से दासी कर्म मठलो । पहने के लिये दहाना मझ

बताओ। ऐसा कुंड्रम्य स्वाधी है। उन की आदर से दें लें कर कार्यकर्ती बना दो तो शिक्षा प्रचारादि कार्य सुगमता से हो कुरम्ब में गृहस्थाचार्य होना चौहियें चौधरी जो मिलते हैं वह धनवानों का पक्ष लेतें हैं गरीबों का निरादर करते हैं । इसलियं कुर्दुम्ब में एक गृहस्थानार्य हो जो संतान को कार्य सौंप स्थयं सादगी द्वारा परोपकार कार्य करें। जाति उत्थान पंचायती संगठन हो जिसको हर भारिमी माने । इस संगठन में पंच विद्वान एवं निष्पेश हो । यह पच अपनी जतिम शिक्षा प्रचार **भर्में। नियम** बनाई कि अन्प**ह** लडका लडकी का ियाह नहीं होगा। त्यर्थ त्यय के निषेत्र के लिये त्रह्युक्लशमल बनालें। धनवानी को यदि रुपये खर्च ने की हमस हा ता जब तक भारत अमरीका के समाम न हो तबतक अन्य २ ४ दिनकी बाहजाही लटने के प्रलोभक कार्यों में व्यर्थ रुपया खर्च न कर के समाजीन्ति के कार्यों में रुपये खर्च करें। तुक्-तेकी आयश्यका नहीं। १३ दिन तक आहार दान म देने के हेत् यह रिवाज था। यह लाजमी नहीं। इसी मुताबिक बृद्ध विवाद यादि बन्द करना चाहियं। जनशास्त्र कहतेई कि तीन वर्ण में परस्पर सम्बन्ध हो सका है । जो वर्ग मुनिदान दे सकता है उस

से सम्बन्ध होसका है। महाराभ श्रेणिकने ब्राह्मण पुत्री का पाणिगृहण किया था। तथा बैश्य पुत्र धन्यकुमार को महाराज ओणिक की बेपूजी का वित्राह हुआ था जब शास्त्रकार इस प्रकार साफ कह रहे हैं तब सब जैन जातियां एरस्पर विवाह संबंध करना प्रारंभ करतें। इसके न होने के करण बडा अनिष्ट हो रहा है। गंगेरवाल जाति में केवल २५ घर हैं। उस का किस प्रकार जीवन कायम रह सका है। वहां वर न मिलने के कारण अस्य आर्यसमाज आदि को अपनी पुत्री देने को लोग तयार हो जाते हैं। हमने ऐसा विवाह रोका है। यस जैसे पहिले होता था, वैसा अद्यक्तरो। जातियां न तोई। जावें । आपस में ठहराव हो जार्वे । दरिस्त पुरुष को कोई स्थान न दे । इस विषय पर प्रत्येक पुरुष की विचार करना चाहिये। इसमें बड़ा फायदाहै। विशद विवाह क्षेत्र होगा। तो योग्य सम्बन्ध होंगे और वीर संतान उत्पन्न होगी। आक्स में प्रोम बढेगा। आदि आक्ने बहुत से फायदे इस उपयोगी सुधार सं बतलाये तथा अन्य कतिपय यानी की श्रोर सभा का लक्ष्य आकर्षित करते हुये आपने अपने उपयोगी भावण की समाप्त किया। इतिशम् ।

क्या व्याभिचार हमारे देश में बढ़ रहा है ?

[लंखक, डा॰ बक्कावरसिंह जैन, पम॰ डी॰ सदर देहली]

ं श्री भेल का महीना और १६१८ का साल कि मैं अमेरिका के मशहर मेडिकल कालिज की (Veneral Disease chric) थानी इन्द्रिय-संब- न्धी रोग की श्रेणियों में तालीम हासिल कर रहा था कि असानक एक पास वैठे हुए अमरीकन विधार्थी में कोहनी मारी और मुमसे बूँ छा कि "क्या इस बहुतायत सं इन्द्रियसम्बन्धी यानी आ-तराक, सुजाक, नामदी, प्रमेह त्रव्हारे मुख्क में भी भीते हैं ?" में एकदम कह उठा "हरगिज नहीं" हमारे मुल्क में आचार की पवित्रता व शीलधर्म पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है और हमारे युवकों के सामने हमेशा उच्च शील, संयम, ब्रह्मचर्य का आदर्श रहता है। इसलिये हमारा मुल्क इन आप-दाओं से सुरक्षित है। यह सुनकर मेरे दोस्त को सामोश रहना एडा, और में भी अपने भारतवर्ष के ऊँचे भादर्श को चयान करके खुश हुआ। लेकिन बास्तविकता उस समय मालूम हुई, जब कि मुफे अपने देश में आना पड़ा और अपनी मांखी सं भारतवर्ष की जिन्दगी के हर किस्म के पहलू की देखना पद्धा। यहां पर क्या देखता हं कि क्या देहात में, क्या करवीं में और क्या शहरों में आत-शक, सुद्धाक और इसी प्रकार की अन्य व्यक्तिचार जन्य बीमारियां इसी कदर फेली हुई हैं जितनी कि और मुरुकों में। यहां की हाछत किसी तरह सं बेहतर नहीं।

क्या गांव के भोले भाले कारों के लड़के और लड़कियां, क्या मन्दिर के पुजारी और भंडारी, क्या कालिजों के विद्यार्थी, क्या शहरों के प्रतिष्ठत कुल के पुरुष, यहां तक ऐसे गेग हर किस्म के विभाग और श्रंणी के लोगों में देखने में आते हैं। उदाहरण के लिये कुछ मोटे र बाक्यात पेश करता हूं। १ नीजवान, १३ धष का जाट का कहका भोली भाली सूरत, पशु चगने वाला पाली परमातमा की खुली हवा में रहने वाला, शुद्ध सादा मोजन खाने बाला — लेकिन उसकी गुद्दा सुजाक कीर आवशिक रोग से शस्ति, आस पास की

जाल और मांस वहुत उभरा और वहा हुआ! किसको गुमान हो सकता है कि यह देहात का रहने वाला मास्म लड़का भा इस तरह इस घृणित व्यभिचार के रोग में फस सकता है। लेकिन मामला बिल्कुल साफ था। यहां पर फौजी सिया हियों की मेहर्बानी है। वह देहात के फ़ौज़ी सियाही जिम्होंने ईराक, मेसोपोटामिया अर-विक्तान, तुर्किस्तान, मिश्राओं व बनदाद में जाकर इम्लिस्तान की लड़ाईयां लड़ीं और वहां की औरतों को खराब, किया, अब वह अपने देशमें आकर अपने शुद्ध गांव के, शुद्ध लड़के और लड़कियों को गैर मुल्कों के व्यभिचार और सम्यता के रक्न में रँगने लगे और इनको इन रोगों का शिकार बना लिया।

२ यह शक्स एक जैन मिन्दर का पुजारी और मंडारी जिसकी तमाम इन्द्रियाँ आतिशक के पृणित स्थम जीवों ने घुन की तरह खाई हुई, और जो जैन मिन्दर के के त्रे में रहता हुआ, नर्क के दुःख भीग रहा था अपनी कैफियत यों बयान करने लगा। एक रात यह पेशाब करने उठा, हवा ठण्डी चल रही थी, अन्धेरे का समय था, उसकी इन्द्रिय के हवा लग गई! वाह खूब! हवा भी सिर्फ इस के ही लगने को बैठी थी। फिर भेद खुला कि वह रंडवेपन के एकाकी जीवन को न सह सका। पास के गांव की किसी औरत के मेम गर्ल में फंस गया, और उसके फल-स्वरूप नर्क के दुःख भोगने लगा।

३ यह एक उच्च कुल के प्रतिष्ठित घराने का नवयुषक जिसकी हाल ही में शादी होचुकी थी,कि अकस्मात उसे दौरे आने लगे। किसीने समका कि शादी संकोई भूत या जिल्ल या मेंत की परलाई पड़

गई है। बहुतेरा अंतर-मतर किया, कुछ,कारगर न हुआ। किसा नं मृगी रोग वतलाया और किसी ने हिस्टीरिया। किसा हकीन ने दिनाग का जिल्द में बरम सत्रका आर्राकसी ने चंतडियों म। एक थैंच जी नहाराज कड्ने छन कि राग कठिन है,बाठ रोज़ की दवाई करने के बाद बत ऊँगा कि जामारी क्या है? औरतें कहने लगी, कि ाद्य जा इस की जिन्दगी का एक दम का मरोसा नहीं मिनटोमनट में इसको दौरे आते हैं, एजिनन की तरह इस का सांस चलता है, आठ दिन तक यह जिन्दा कैस रह सकता है ? मुभ्रे भा उस को देवने का मौका मिला देखते ही आसार माळूम देने लगे कि वहां न काई भूत है और न प्रेत, इस पर तो ज्यमिचार-देव का असर मालूम दे ताहै ज्या इसका धानो नो उपाकर देखना चाहिये कि महाराज कामदव ने फ्या फुल खिला रक्खें हैं। वाकां सन्दह टीक उत्तरा । एक धृणित आर्ताशक के ज्ख्य का एक फूल इन्डिय के सिरं पर एक घूँघर पर और कई फाता पर ? वस फिर, क्या था चोर हाथ आगया! मर्ज मालूम हो गया। आतशिक के घृणित सुःम जीव दिमान् को निक्की पर खुनलो मचा रहे हैं और इस लिये दोरे पर होरे आ रह हैं। किसको सन्दह हा सरताह कि यह नवयुवक लड़का जिसकी मुश्किल सं १९-१= धर्ण उस्र होगी, इस तग्ह ध्यामचार की अग्नि मे पड़ कर और रोग ग्रहण कर के दींगे के चकर में आसकता है।

४ यह एक नीजवान कालिज काविद्यार्थी,आणा और उत्साह से भरा हुआ,शंक्सिप्यर अस् मिल्टन की किताबाँका पढ़ने वाला, अकर शिकायत करने छगा कि उसे नीद नहीं आती,भूख कम लगतीह,और

कमजांग होता जाता है, दिमागी काम नहीं कर सकता ! धुभे उड़ी हैरानी हुई कि यह जवानी की उछ और यह शिकायतें ! फिर हालत पूँछने पर मालूम हुआ कि पंशाय लग कर आता है वीव के कृतर भी आते हैं, और चलने किरने में दिक्कत होती है। शादी हुए सिक ४ महीने गुजरे हैं लेकिन गौना नहीं हुआ, फिर यह चीव यह सूपन, यह अलन यह पंशाय का दर्द सं आना क्यों? कहने लगा-कि एक रोज चूने की छत पर पेशाब कर दिया,धूप कड़ा के की थी, नमीन तपतीथी ऐसी जगह करने सं पंशाय लग कर आने लगा। एक वैद्य से जिक निया, वह कहने लगा, कि हाँ, ऐसा हो ही जाता है। याह साहब ! बद्दत अञ्छ कारण वत-लाप ! जरा अवनी पीठ का मुजाइना खुदबीन से बतारये, तनाम भेद चुल जानेगा । ऐसा किया गया और सूत्राक के समाम भयातक जीव प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे । अब लाज बहाना किया करा, कोई कारागर नहीं हो सकता। आख्रि मानना पद्मा कि शादी के कुछ महाने बाद एक वैश्या से सम्बन्ध हो गया और उसके एक हफ़्ते बाद पाप आने लगा, और चलने फिरने से हताश हो गया ।

प्रतिक सालदार ३०-५० लाल का संठ इन्द्रिय के घूँ घट पर ज्ञा लगा लाया। कहने लगा कि पेशाच करने के बाद वह इन्द्रिय की पांच की जूनी से पूँछ लिया करना था, उसलिये यह जन्म हो गया। चाह व्ह्य ! ६० हिसाव से तो हर एक मुसल्लमान जो ईंट के राडे से अस्त्रक्ता करना है, की इन्द्रिय पर जन्म होना चाहिये। इसकी तो कोई और चत्रह बनाओं। बहुत इन्कार करने लगा। अच्छा, अपने खून का मुआइना करना

चाहिये। खून की परीक्षा को गई और ४ दर्जे खुराय निकला। अब क्या यहाना चल सकता है ! आतशिक माद्दा इत्यमें भगा हुआ है।

बस पाउको यह बात स्मरण रखना आघश्यक है कि जहाँ अन्य देशों में अपने रोगों को इलाज करने घाले डाक्टर से गुप्त नहीं रक्खा जाता. इस मुल्क में छिपाने की बहुत कोशिश की जाती है। इसलिये व्यभिचार जन्य रोगों की कमी या बहु- लता का अनुमान करना किन होजाना है। हमारे देश में और हमारी सताज में, व्यक्तिचार बढ़ता जारता है। इसके रोकने की सताज को कोशिश करनी चाहिये, ताकि मराबीर स्वामी के नाम लेवा शुद्ध जीवन व्यतोत कर अपनी समाज की संवा कर सकें और देश के लिये अभिमान की वस्तु हों।

पञ्जाञ निवासी दिगम्बर जैनियों से स्रावश्यक निवेदन



प्रवास सरीसे सजीव प्रान्त में जब कि अस्य जातियं व समाज दिन एतिद्वन उन्तित के शिखर पर चहती जाती हैं तब जैन जाति व जैन समाज का घोर प्रमाद निद्रा में पड़े रहना किस पंजाब प्रान्तदासी सहस्य दिगान्यर जैन को नहीं खटकता। गंजाब प्रांत्रवासी दिगान्यर जैन को गंधि मिद्रा से सचेत करके उन्हें कर्म क्षेत्र में आहढ़ करने के लिए ही यत अप्रेल मास में दिल जैल पंजाल सभा की स्थापना पानीपत में हुई थी। इस संस्था का जनम इसलियं हुआ था कि पंजाब प्रान्तमें जो नर नारी समाज धार्मिक ज्ञान सं शूल्य हैं उन्हें पवित्र जैन अर्घ का उपदेश दिलावं बालक व बालकाओं के लोकक व धार्मिक शिक्षा का समुचित प्रवन्ध कराबे, नरनारी समाजमें के ली हुई बाल्य वृद्ध व जनमेल विवाह आदि कुरातियाँ

तथा विवाहादि माइलिक कार्यों में सीमा से अधिक व्यय अर्थान् किज्लावियों (जो कि समाज
को चुन के सहश खोखला करती जारही हैं) का
काला मुद्द करके उनके स्थान में उपयोगी सुरीतियों का प्रचार कर तथा इम जाति की शारीरिक
निर्धालता को दूर करने के लिये नर नारी समाज
को उचित व्यायाम की ओर आकर्षित करें। गत
नौ मास में इस सभा की ओर से २० स्थानों में
दौरा किया गया जिन में कई स्थान छोटे ग्राम व
देहात के हैं कई पाठशालाओं यतीसखानों गौशालाओं, समाओं लाजि रियों तथा ब्रह्मचर्याश्रम भिचानी का निरीक्षण कियागया समासद बनाए गए
उपदेशक फण्ड में ६३) की प्राप्ति हुई। हमारे
पंजाब प्रांतवासी भाई यदि उपदेशक कोपमे उचित
सहायता देते तो दो उपदेशक नियत करके वर्तमान

से ही द्रिगुण लाम पहुंचाया जासकता था। हमारे ं सच्ची जिन भक्ति का परिचय देना खाहिए यदि भाइयोंको अन्य समाजीकी सदूश अब प्रमाद निद्रा से जाग कर इस सभी की उन्नति के लिये कटि-वदः हो जाना चाहिए अब ितीय वार्षिक अधिवे-शन का समय निकट है पंजाब देश में जिन धम के अचार की हार्दिक इच्छा रखनेवाली स्वाधर्मी पंचा-यतों को इसका अधिवेशन अपने यहां कराकर

पंजाब के किसी स्थान में पूजा प्रतिष्ठा मेला या किसी सभा का वार्षिक अधिवेशन हो तो वहां के साधर्मी भाई हमें सूचनार्दे ताकि उस उत्सव के साथ ही इस सभा के वार्षिक अधिवेशन करानेका उद्योग किया जासके ।

साहित्य-समालोचना

--श्री विमलनाथ पुराण प्रकाशक श्री जिन-बाणी प्रकारक कार्यालय, पोप्ट वक्स नं॰ ६८४=, कलकत्ता । शास्त्राकार खुले पृष्ठ ३१६। मूल्य ँ ३)। मूँलर्गंस्कृत सहित । बहा टायप सुन्दर छपाई ।

जैनियों के १६ है तीर्थ कर मगवान विमलनाथ के विमल चरित्र को प्रगट करने वाला यह स्ट्रिंग चरित्र है। मूल संस्कृत के कर्त्ता काष्ट्रासंघी भ० रत्नभूषण की आद्वाय के ब्र० कृष्ण दासजी है। हरिकृत-पद्मलालित्य का मिठास अवश्य ही आस्वा वन करने योग्य है। भ० रत्नभूषण की गुरुपंरपरा व्रथकार ने इस प्रकार बतलाई है कि भ॰ रायसेना चार्य थे। उन के शिष्य लीमकीर्ति-उनके विजय-ं सेन-उनके उद्यंसेन-उनके भुवनकीर्ति उनके शिष्य "भ० रत्तभूषेण थे। गुर्जरदेश के लोहाकार नगर के निवासी हर्प नामक ब्रह्माण महानुभाव के उन की 'पत्नी वीरिकां को कुंशी से उत्पन्न उक्त प्रधकार थे। इन्होंने संभवतः जैन धर्ममें दीक्षित होते साथ ही इस बृहद विमलपुराण की रचना कल्पवल्ली

नाम के नगर में सं० १६७४ में की थी। इसके उप-रान्तमं रचा गया इनका अन्य मुनिसुवृतनाथपुराण नामक प्रथ है। प्रस्तावना में बत्लाया गया है कि उस में सैद्धान्तिक विक्ता की छटा बढ़ गई है जो हो प्रथकार ने इस प्रथ की रचना बड़े महत्व शाली दग से की है। अन्य पुराणों में देखा जाता है कि उसका भाग चरित्रनायक के पूर्वभावा-बली विधरण से ही परिपूर्ण होता है तब इस में बह बात नहीं है। इस में चरित्रनायक भगवान विमलनाथ के निर्मल चरित्र के साथ २ अन्य सम-कालीन महापुरुषों के चरित्रों तथा राजा भे शिक के पूर्ण वृत्तान्ती का भी समावेश किया गया है। इस कारण इस का महत्व बढ गया है। हिन्दी अनु वाद भी पं॰ गजाधरलाल जी शास्त्री द्वारा सुंदर हुआ है। अतएय कहना होगा कि उक्त कार्यालय ने इस अपूर्व प्रंथ को प्रकाशित कर हिन्दी भाषा. माषी जैन जमता का विशेष उपकार किया है। परम्तु चिशेष कारणीं वस प्रेस व अन्य प्रकार की तुंदियों की भरमार अवश्य ही उपेक्षणाय नहीं है। धर्मशास्त्र विशेष छात बीन के साथ शुद्ध छपना खाहिये। तो भी इस नवीन पुराण की मनमो-हंक रचना का पोठ प्रत्येक पाठक को करना छाभप्रद है।

सब से पहिले पंथकार ने सम्राट् श्रेणिक-बिम्ब-सार को विस्तृत वृत्तान्त दिया है । और बतला दिया है कि वह अपनी मनगढ़न्त रचना नहीं कर रहे हैं प्रत्युत पूर्वाचार्यों के कथनानुसार ही इस पवित्र शास्त्र की निरूपण कर रहे हैं। मगधदेश को धना बसा हुआ प्याऊ और बृक्षपंक्तियों से समलंडत बतलाया गया है। तथा लिखा है कि उसकी राज-भानी राजगृह नगर अति उत्कृष्ट और विशाल थी। वर्दा के मनुष्य परमधर्मातमा और कौशस्त्रों के पार-गामी थे। वहां की सुंदर महिलाएँ अत्यन्त शील-वती और दान पूजादि में लीन थीं। वहां का राजा उपश्रेणिक था। उस की पटरानी इंद्राणी थी। इन्हीं से जायमान सम्राट् श्रेणिक थे। श्रेणिक के माई ५०० थे। वहीं एक श्रंद्रप्र नगर का स्वामी 'राजा सोमरार्मा उपश्रेणिक के आज्ञाधीन नहीं था। उपश्रेणिक के बाध्य करने पर उसने माबाबीपन से कार्य किया । वैसे ही भेंटमें एक मायावी घोड़ा भेजा, जिसपर खढ़ते ही उपश्रे सिक लापता हो गए। भेषिकादि पुत्र खोज करने पर हताराही घर स्त्रीय आए। उधर उपश्रेणिक वैष्यस्त्रवास नामक भीलों की पल्ली के अधिपति यमदंड के यहां पहुंच गर,। यमदण्ड के श्रावक की कियाओं का अभाव था, परन्तु उस की पुत्री तिलकवती ज्ञान-बान थी। इस लिए राजा उपभ्रे शिक वहां रहने सनो थे और अन्त में वह उस करना पर आसक्त हो

गय तथा उसरी के पुत्र को राज्यपर देने का वर्चन देकर उस के साथ विवाह करं लिया! यहां वर्ष यह विचारणीय है कि राजा यमदंड के यहां श्रीव-काचार विपरीत होने पर भी श्रावक धर्मरत राजा उपश्रीणिक उस के अतिथि और श्रन्त में सम्बन्धी बने थे।

विश्वाहोपसन्त उपश्रेणिक तिलकवती सहित अपनी राजधानी में पहुंचे। 'अपने महाराज की फिर से प्राप्त दुर्लभ जान नगर निवासियों को चडा आन्मद् हुआ।' अतएष जवतक उपश्रेणिक लापना रहे थे और अनकी प्राप्ति में सब लोग हताश होगए थे तबतक उन के पुत्र भ्रोणिक ही राज्याधिकारी रहे होंगे। यही कारण है कि म० बुद्धने गृहत्याग करके राजगृह नगर में भेणिक को राज्याधिकारी पाया था। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उप-श्रं णिक के स्नैटने पर और तिलक-वती के पुत्रोत्पन्न होने पर भ्रेणिक के देश निकाले के दण्ड मिलने राजगृहत्याग करने पर उनको बीक संघाराम नहीं मिल सक्ते थे। बीद धर्म सी उत्पत्ति म० बुद्ध हारा ही हुई थी और बुद्ध ने गहत्वाग के द-६ वर्ष उपरान्त उसकी नीव डाली थी यह प्रमाणित है। कुमाराधस्था में राजगृह नगर त्याग कर भ्रेणिक ने नन्द्रियाम में बीक् संघा-राम देला था और वहां बीख सम्यासी के कहने से वह बौद्ध हो गए थे । नन्दि प्राप्त संप्रधतः मालंद ही है जा राजगृह के निश्ट बसर विशा में मोल की वृरी पर था और जहाँ बाद में बौद्धीं का विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था। (See the Dialogues of the Buddha. F. N. I. Page 1.) यहां से एक इन्द्रदश नामक वैप्रय के

साथ चलकर उसके नगर वेजातहाग में पहुंचे। सेट रुद्रवृत्त की यौषनवती सुन्दरी कन्या नन्दश्री ने स्वयं क्रमार भ्रोणिक को बुला भेजा और उनके गुर्जी तथा रूप पर मुग्ध हो गई, जिस पर सेठ ने क्रमार के साथ उसका विवाह कर दिया। कुमार वहीं आनन्द से रहने लगे थे और वहीं उनके क्येष्ठ पुत्र अभयकुमार का जन्म हुआ था । इस नगर का राजा। वसुपाछ था । इतने में उधर उपश्चे णिक का देहान्त हो गया और तिलक बती का पुत्र चलाती राज्य दुष्टतापूर्वक करनेलगा, जिस से:बी होकर प्रभा ने कुमार श्रेणिक की बुला मे ता । और अपना राजा बना लिया । अभय क्रमार अपनी माता के साथ सेठ इन्द्रदत्त के यह रह गये। राज्य प्राप्ति के उपरान्त सद्घाट श्रेणिक का विवाह विजयार्घवर्तत का दक्षिण भ्रोणी में अवस्थित केरलानगरीके अधिपति विद्याधर मुगांक की पुत्री विलासवती सं हुआ था । बौद्धों के तिब्बतीय दुव्य में इन्हीं का नामी-क्लेख शायद 'वासवी' के नामसे कियागया है। मृतिराज सुमित ने पहिले ही से श्रेणिक की उस का पति होना बतला दिया था। मनाल द्वीप का स्वामी राजा रतनचू हु भी उसपर अ।सक्त धा,पर-न्तु यह जैव्कुमार नामक राजपुत्र द्वारा परास्त करदिया सथा था । पश्चात् श्रेणिक ने नन्द श्री और कुमार अभय को बुलाभेजा और उसे युवराज पद प्रदान किया। अभय कुमार का उल्लेख बीद ग्रंथों में भी है। इस समय राजा श्रेणिक परिवार सहित घौद्धानुयायी थे यह स्पष्ट लिखा हुआ है। अगाड़ी सिंधुदेश में विशाला नगरी बतलाई

अगाड़ी सिंधुदेश में विशाला नगरी बतलाई गई है और वहां का राजा चेटक ! परन्तु अस्य

भोतों एवं बौद्धों के प्रंथों से विदित होता है कि बिशाला अथवा वैशाली विदेह देश में थी । इस राजा की पटरानी सुभदा से उत्पन्न साल सुन्दर पुत्रियां थी। सबसे बडी प्रियदत्ता काविवाह नाथ-वंशीय राजा सिद्धार्थ के साथ हुआ था। इन्हीं का पवित्र कुक्षि सं भगवान महावीर का जन्म हुआ था। दूसरी कन्या मृगावती का विवाह बत्सदेश के कौशांबांपुर के स्वामी महाराज पिनाक के साथ हुआ था। तांसरी कन्या वसुश्मा का श्विह हेरकच्छपुर के स्थामी महारा 🛭 दशहर 🕷 साध हुआ था तथा चौथी कन्या प्रभावती कच्छदेश के रोठकपुर के स्वामी राजा महानुदयी से विवाही गयी थीं। अं णिक चरित्र में कौशंम्बीके महाराज का नाम नाथ अथवा सार लिखा है। अन्यक्षोत से मालूम होता है।क वहाँ के राजा का नाम शतनीक था। इन विविध नामी का प्रभद समभ में नहीं आता। उधर श्रंणिक चरित्र में कच्छदेश के स्वामी का नाम महातुर लिखा है और उत्तर पुराष में उद्दायन लिखा है। इस भद भिन्नना का निर्णय पंतिहासिक द्रष्टि से महत्त्वशाली होगा । राजा चंदककी शेष ज्येष्ठा, चन्दना और चंलना नामक कन्यायं अभीतक अविवाहित थीं। बेलना की क्रप राशि पर श्रेणिक मुग्ध हो गए थे। परन्तु राजा चेटक जैन घर्मानुयायी थे । इस कारण छल से उसे हरवा मगाया और अपनी पटराही बना लिया। यहाँ भी चेलनी जैनधमेरत रहती थी। अन्त में उस ही के प्रयानों से भे जिक जैन धर्मान्यायी हो गए थे । इसमें। एक कथा हारा बतलाया गया है कि पहिले कौशांबी का राजा बसुपाल और उसकी रानी यशस्यिनी थी। राजा

भ्रेणिक ने जैन गुरुओं की परीक्षा भी ली थी। एक मनि धर्मधील नामक थे। इनके मनोगुष्ति नहीं थी। इसके न होने के कारण में जो कथा कही थी उससे जात होता है कि उस समय अर्थात् पार्श्वनाथ के तीर्थ काल के अन्त में कलिंगदेश के वंतपुर नगर के यही धर्मघोष स्वामी थे । दुसरे मृति किनपाल थे। इनने कायग प्ति न होने के कारण में एक कथा कही थी। उससे विदित होता है कि भूमिनिलकपुर का स्वामी राजा प्रजापाल अथवा बसुपाल है। उसकी पटरानी धारिणी और उनकी पुत्री मुगाँका थी। चण्डप्रदोनन नाम के राजा ने उसे वसुपाल से मांगी परन्तु वसुपाल ने नहीं दी। इस पर संवाम हुआ। राजा चडप्रधी-तन को भ्यास गई कि विजय प्रजापाल की है। इसलिए उसे जैनी मान घर जाने लगा । प्रजापाल में पूछवाने पर कह दिया कि समस्त जैनी मेरे बन्ध हैं मैं उनके साथ युद्ध नहीं करता। इस पर बसुपाल ने अपनी कन्या उसे विवाह दी । राजा चन्द्र प्रदोत कहां के राजा थे यह खोजने पर हमें विदित होता है कि यह अवस्ती के राजा थे और उज्जयनी उनकी राजधानी थी। (See Life & work of Buddhaghosha. P. 56) हमारे चण्डप्रद्योतन ही अवन्ती अधिपति थे यह बात बीज प्रन्थ की कथा से भी प्रमाणित है। "धम्मपद" की २१-२३ पद्यों की वृत्ति से विदित होता है कि कोशोम्बी और अवन्ती कें,राज्य आपस में सम्बन्धित थे। इस वृत्ति में एक बड़ी कथा में बतलाया गया है कि राजा चन्डप्रद्यां-तन की पुत्री वासुलदक्ता का संचन्ध किस प्रकार कांशाम्बी के राजा उद्धयन से हुआ था, जो राजा खण्ड प्रद्योतन से िशेष प्रस्थात् था। इसमें राजा बन्ड प्रद्योत की पुत्री का नाम वासुखदत्ता बतला-या है। वौद्ध प्रंथीं में नाम रखने की प्रथा का जो विवरण है उसको लक्ष्य कर लिखते हुए स्व० मि० हीस डेविड्स लिखते हैं कि:--

".....Loss frequently the reverse is the case, and a mother or father, whose child has become famous, its simply referred to as the mother, or father, of so and so. It is noteworthey that the name of the father is never used in this way, and the mother's name is never a personae name, but always taken either from the clan or from the tamily to which she belonged."

इससे विदित होता है कि नाम माता था पिता की अपेक्षा भी प्रख्यात व्यक्तियाँ के रक्के जाते थे। यञ्जपाल राजा की कन्या सुन्दरता में प्रक्यात थी और वहीं राजा चन्ड प्रधोत को विवाही गई थी। इस लिए उससे उत्पन्न पुत्री यदि अपनी माता के पिता के नाम अपेक्षा 'वासुलद्सा' कहलावे तो अत्युक्ति नहीं है। तिसपर बहुत संभव है कि चस-पाल ने स्वयं राजी से चन्डक्योत को अपनी कन्या दी थी । इससे वह वासुलदत्ता कहलाती होगी भौर उसकी पुत्री अपनी माता अपेक्षा उसी नाम से प्रस्थात हुई थी यह प्रकट है। जो हो यह प्रस्थक है कि राजा चन्डप्रचोत पुराणवर्णित व्यक्ति हैं और वह जैन धर्मानुयायी थे। इस के अतिरिक्त जैनम्धं आराधना "कथाकाप" के ततीय खंड की ६५ मं० की कथा से भी इस ही बात की पुष्टि होती है कि राजा चाएड अयोत उज्जैन के राजा जैन धर्मानुषाधी थे। इस कथा में इनका संक्षित्र नाम प्रद्यांत ही

्दिया दुझा है जो कि चौदों के पाली प्रन्थों के प-ज्जोत (अध्येत) के समान ही है। पालीप धीं में चंद्रप्रदोत को प्रजोत ही लिखा है । (See The Buldhist India p 4) उपगेल्लिखित कथा में राजा प्रचीत का हाथी तारा दूर भटक जाने और केट नगर में पहुंच कर जिनपाल नामक सेठ के यहाँ उहरने तथा अंत में सेठपुत्री जिनदत्ता का इन पर अनुरक्त होने से विवाह करने का विवरण है। यहाँ भी पुत्री का नाम पिता अपेक्षा ही मालूम होता है। ससे राजा प्रधोत के पुत्र वृद्धमसेम हुए जो पिता के साथ जिमवीक्षा लेगचे। राज्याभार भतीजे के सुपुदं हुआ था। इन वृषमसेन मुनि को कौशान्दी के निकट पहाड़ी से एक बौद्ध संन्यासी इत उपसर्ग सहन कर मोक्षलाभ हुआ था। तीसरे मुनि । ज मृष्णिमाली थे । उन्होंने जो कारण काय-गुप्ति न होने का बताया उससे विदित होता है कि एक प्रशिवत नाम का देश भी था। उसी मणि-मत के राजा यह मुनिराज थे। गुणमाला इनकी रानी थी । उस समय एक 'कौलिक' नामी मंत्र-बादी साधु भी होते थे जो कि हड़िडयाँ के भूषण से भूषित, भूती का संबक और नग्नरूप धारक होते थे। उज्जयनी में उन सत्य एक जिनदत्त नामक संठ थे। उन्होंने इन मणियाली मुनि की विशेष सुश्रूषा की थी। इसके पश्चात् श्रेणिक जैन धर्मके पूर्णेश्रद्धानी होगए। राजा भे णिक की रानी बेलिनी सं सान पुत्र उत्पन्न हुए थे (१) कुणिक-**अजातशन्** (२) व!रिषेग (३) शिव (४) हल्लक (५) विदल्लक (६) जितरात्रु और (७) मेघ क्रमार । इतने में भगव न गहाबीर का समवशरण रोजयुर् के निकट विपुलाचल पर्यत पर आया।

जहां भेणिक अपने प्रिवार सहित गए। वहां अभयकुमार ने अपनी पूर्वभवावली पूछी थी। जिसके निवरण से विवित होता है कि उस समय भी बाह्यणों में कृतों की पूजा प्रचलित थी जिसके निवय में मि॰ दीस हे बिड्स भी अपनी Buddhist India बामक पुस्तक में उस्लेख करते हैं। परचात् भेणिक के पूछने पर भगवान महाबीर की दिस्य-ध्वनिसे भगवान विमलनाथ का निर्मल चरित्र का स्वाध्यान होने लगा। वही कम गतानुसार प्राप्त कर अ० कृष्णदास जी ने इस प्राण में क्षेत्रवस किया है। महा-राज श्रेणिक के समय के कियाय नगरी व ध्य-कियों का उस्लेख जो आया है उसको देकर हम अग्रही भगवान विमलनाथ के प्रवित्र चरित्र पर हृष्टि हालेंगे:—

- (१) रानगृह में राजा श्रेणिक-वणिक सेट स्नागरदत्त ।
- (२) भ्रमग्वती-मगध राज्यन्तर्गत। बल-मद्र कुटुम्बी भट्टा तहुपत्नी।
- (३) सूरकांतदेश-सूरपुरनगर-राजामिक (श्रेणिक का पूर्वभव का जीव) रोनी भामिनी ।
- (४) मानन्द्युर-शिवशर्मा सेठ-तुंकारी पृत्री-धनदेवभार्ड-इस सेठ (श्रेष्टि वणिक) पृत्री का विचाह बाह्मण सोमशर्मा से हुशा था।
 - मुनि गुणसागर
 - (५) विशालापूरी के राजा की पारासर राजा से मित्रता थी।
 - (६) बनारस में किसी समय जितशत्रु राजा धनदत्त उसके राज्य वैद्या।
 - (७) इस्तिनागपुर में राजा विश्वसंत राती भामिनी-पुत्र वसुत्ता।

(६) विजयार्थ की उत्तर श्रेणी में गगनिषय नगर-राह्ना दायुवंग विद्याधर।

(६) विजयार्घश्रेगी का राजा बालक। उपरान्त भगवान विमलनाथ का दिव्य चरित्र है। धातु की खंड का पश्चिम दिशा में स्थितमेठ-पर्वत की पश्चिम दिशा में नदी के दक्षिण तट पर महापद्म देख के ठीक मध्यभाग में तीसरा संद है। उसमें रम्यावती देश था । वहां के महापुर नगर के राष्ट्रा पद्मसेन थे। उस पुरके प्रीविकर वन में सर्व मुझ नामक केवली मुनि के आकर बतलाया था कि राजा पदासेन ही दो अब बाद विमलनाथ भग वान होंने। जंबू द्वीप में भरत क्षेत्र के मध्य में कंपि लानगरी के राजा कृतवर्मा थे। उन की रानी जय श्यामा थी। उन्हीं के गर्भ में भगवान विमलनाथ का जीव साहसूर स्वर्ग से चलकर जेठ कृष्ण-दशमी के दिन आया। माघ सुदि चौथ के दिन भगवान का आनन्दकारी जनम हुआ। इस समय भगवान वासुपूज्य का तीस सागर प्रमाण तीर्थ-काल बीत चुका था एवं एक पल्योपम काल पर्य-न्त धर्म का ध्रांस हो चुका था। भगवान विमल-मा व उपयुक्त समय में राज्याधिकारी हुए और उन की पटरानी पद्मा थी। आप इस्वाकुशंशी काश्यप गोत्री क्षत्री थे। दीर्घकाल तक राज्य करके उन्होंने माधसुदी ४ के दिन अनेक राजाओं सहित दीक्षा-भ्रदण की। वेला के पश्चात् नन्दनपुर के राजा विजय के यहां भगवान का प्रथम प्रारणा हुआ था सहेतुक नामक अपने दीक्षायन में भगवान् की माघ सुदी ६ को जंब बुद्ध के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त किया था। आषाढ़ बदि इके दिन भगवान को मोक्षलाम सम्मेद शिलिर सं हुआ था। भगवान

ने केवल ज्ञानाववस्था में भारत एवं भारत क बाहर सर्वत्र धर्म प्रचार किया था।

भगवान विमलनाथ के समय में अधेषकी नारायण ह्वंयभू और धर्म नाम के बलभद्र हुए हैं जिन का वर्णन प्रन्थकार ने मनोहर कविता में दिया है ' मुनिराज जयन्त और संजयन्त की कथा बड़ी ही मनाहारिणी है। प्रन्धकार ने मुनि राज जयंत और संजयंत की कथा से सम्बन्ध रकाने बास्ते प्रत्येक व्यक्ति का चैर के आधार पर पूर्वभव का वर्णन कर इस बात का खास उपदेश दिया है कि किसी को विरोध नहीं रखना चाहिए। इस के सिवाय प्रधकार ने किस कर्म के उदय से क्या फल प्राप्त होता है इस का बड़ी ही सरलता से वर्णन किया है जिसको पढकर अझानी और निदित पुरुषोकी प्रवृत्ति भी निदित कार्यों से विमुख हो जाती है। तथा मीनवत का आचार्य ने बड़ी खुर्बा से वर्णन किया है।" जिसका अभ्यास बाज मंश्रांधी भी कर रहे हैं। विविध व्यक्तियों की पूर्व भवावली और कर्मी का फल बतलावे बाली विवरण ठीक वैसाही है जैसा कि बौद्ध प्रथ Dialogues of the Buddha में बतलाया है कि भारमा की नित्यता को प्रमाणित करने के लिए कतिपय साधु व्यक्तियों की पूर्व भवावली बतलाते हैं और उसका वर्णन क्रम भी दिया है। इस बौद्ध प्रंथ में यहाँ पर उस समय में प्रचलित धर्मी का विवेचन किया गया है। अतएव कहना होगा कि पुराण विशेष महत्व शाली रोचक प्रतीत होता है उत्तम हो कि प्रत्येक प्रथ अनुक्रमणिका और उस का तुलनात्मक संबंध प्रगट करने वाला परिशिष्ट

तथा उस विषय की अन्य पस्तकोंकी सूची सहित प्रगढ हुआ करे। प्रथ-प्रकाशकोंको इस ओर ध्यान डेंना चाहिए।

—उ∵ **सं**०

सम्पादकीय टिप्पिग्यां

कर्म सिद्धान्त पर निमन्त्रण

हम अपने विद्यापेमी तस्व लोशी भार्यों को नि-मन्त्रण देते हैं कि वे जैनदर्शन के कर्म सिद्धान्त को अच्छी तरह पढ़ें। उनको यह भेद मालूम होगा कि किस तरह एक आत्मा पापपुण्यमयी कर्म वर्गणाओं (परमाणुओं के समूहों) को अपने निकट आक-षित करता है और उनसे अपना स्क्ष्म शरीर बनाता है। तथा वे कर्म वर्गणाएँ किस तरह बँधने के पीछे अपना फल दिखला कर गिरती रहती हैं-यह भी झान इस विषय से हमको होगा कि किस तरह बहुत सी क्मंबर्गणाएँ बँधी हुई होने पर भी बिना फल प्रकट किये स्वयं भड़ जाती हैं अथवा एक पुरुषार्थी आत्मा क्या उद्यम करे जिससे विष्य में फल दिखलाने योग्य कर्म वर्गणाओं को अपने पास से दूर कर डाले व किस तरह सर्व सुक्ष्म कर्म-वर्गणाओं से निर्व ति पाकर मुक्त होजावें।

जगत में इस कमं सिद्धान्त का विस्तारपूर्वक वर्णन न दिन्दुओं के शास्त्रों में मिलता है-न इसका कथन वेद पुराण स्मृति में है न किसी न्याय वैक्षे-विक आदि दर्शनों में किया गया है-ग्रंथ और मोक्ष इन दो अवस्थाओं का वर्णन तो भगवदगीता आदि शास्त्रों में है। परम्तु बंध किसका किससे कैसे क्यों किम विधि से होता है, यह कथन अध्यत्र कहीं अवतक हमारे देखने में नहीं आया। जैनशालों में इसका संक्षेप कथन औ जमस्त्रामी कृत तत्वार्थ सूत्र तथा उसकी सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, लोकवार्तिक आदि वृक्तियों में है परन्तु विस्तार पूर्वक वर्णन श्रीगोम्मटसारकर्मकाग्रह में हैं व उससे भी विशेष प्रवल्तनयधवलादि में है जो कोई तत्त्व खोजी अच्छी तरह देखने उनको इस कमंसिद्धान्त का वैज्ञानिक वर्णन जैनशालों में मिलंगा। और यदि जैन विद्धान इस विषय का प्रकारा वैज्ञानिक (Pennible) जगत में करेंगे तो जगत के मामवीं का बहुत वहा कल्याण होवेगा।

जिन बाणी में यह अपूर्व निधि दबी पड़ी हुई है इसको उद्धार कर प्रकाश में लाना परोपकारियों का कर्राव्य है जो केवल अंग्रेजों में ही इस विषय को देवना चार्डे उनका कर्राव्य है कि कर्मसिद्धान्त की आभामात्र पाने के लिये मि॰ अभ्यतराय हुत (Practical Toth) मि॰ जैनी कुत (Translati & Taitwath patna) पढ़ें। विना कर्म सिद्धान्त के जाने हुए जैनदर्शन का मर्ग बिलकुल नहीं मात्म हो सकता है।

जात्यभिमान का त्याग करो।

हम वर्त्तमान समय का जैनजाति को जब पि छले समय की जैन जाति से मुकाबला करते हैं तो बहुत ही अंतर पाते हैं। पिछले काल में परस्पर आतियों या वंशों में प्रेम, मेल तथा सम्बन्ध था। अब इनमें परस्पर न प्रेम है न सम्बन्ध है। अब इसीरे जैन भाइयों में यह अभिमान आगया है कि हम अपनी जाति की अपेक्षा बड़े हैं तथा दूसरे अन्य जाति में लेने की अपेक्षा हमसे छोटे हैं।

पक ही दिगंबर जैन आम्नायके अनुसार अर्हत देव की मूर्तिकों, निर्मेथ गुरुकों तथा जिनवाणी को मानने वाले भाई वहिनां में भी ऊँच नीच की बुद्धि प्रवेशकर गई है। हम देव रहे हैं कि अम्रवाल, खडेलवाल, जैसवाल, बडेरवाल पांडेवाल, पहली वाल, परवार हुमड़ आदि जाति के भाई एक ही देव शास्त्रगुरु के भक है तब फिर जिनेन्द्र के समान कोटि के भक्त होने की अपेक्षा इन सब में समानता है। इन सब के घरों में श्री निर्मन्य मुनि आहार ले सकते हैं। तब फिर कोई हेतु नहीं है जिससे यह

स्थापित किया जाने कि अप्रवाल वहें हैं व खंडेल वाल छोटे. या खंडेलगल वहें और अप्रवाल छोटे। दुःख की बात यह है कि मुनि गुण तो इनके हाथ की स्पिशित कच्ची रसोई खासकें और अगुवालों खंडेलगलों के हाथ की व खंडेलगल अगुव ली के हाथ की कथां रसोई न खासकें। एक यहीं कारण है जिलसें हरएक जाति जात्यभिमान में अन्धी हो दूसरी जाति को जो वास्तव में समान है तुच्छ देखती है-परस्पर अप्रेम होने का यही मुख्य कारण है. यद्यपि इनमें वर्तमान में कच्ची रसोई का खान पान शुक्र होचला है जो पहले न था परंतु अभी तक वि ाह सम्बन्ध नहीं शुक्र हुआ है।

जैनसमाज को उचित है कि जात्यभिमान को सम्यक्त का घातक समक्षकर त्याग देवे और सक्ष जातियों को समान कोटि का समक्षकर परस्पर व्यवहार करने का अवसर देवे।

व्यवदार का क्षेत्र विशाल होने से योग्य सी पुरुषों के सम्बन्ध होंगे तथा प्रेम की वृद्धि होगी-जैन जाति में बीर नर रत्नों की प्राप्ति होने लगेगी।

संसार दिग्दर्शन

— इनामी निबंध की मुचना । हमने जो दि० जैन समाजसुधार के लिये जैनमित्र अह न० ११ में ता० १५-२-२५ तक निवन्ध मँगाये थे, उस संबन्ध में कई सज्जनों के हमारे पास पत्र आए हैं कि ऐसे महत्वशाली निवन्ध के लिये समय यहत थोड़ा है। यद्यपि कई विद्वनों के लेख हमारे पास पहुंच गये हैं तथापि हम यह चाहते हैं कि समाज

का हर एक व्यक्ति अपना स्वतन्त्र मत इस विषय में प्रकट करें। अत्रण्य हमने यह उचित समक्षा है कि इसका समय दो मग्स का और बढ़ाया जाय। प्रत्येक लेखक को चाहिये कि वे निराश न हों. खूब सोच विचार कर ता० ३०-४-२५ तक अपना कि-यम्भ अवश्यमेय भेत दें। यह पूर्ण विश्वास रक्खें, निर्णय में किसी प्रकार की गड़बड़ न होगी। प्रत्येक सहस्वपूर्ण लेख समाचार पत्रों में भी प्रकाशित कराया जाउँगा। जो सज्जन इस भाव से न लिखते हीं कि हमें हिन्दी भाषा ठीक २ नहीं आती है, उन्हें चाहिये कि वे अपने विचार और भाव अवश्य ही प्रगट करें। यदि वे चाहें तो भावों को कायम रखते हुए हम यहां पर भाषा सुध्यवा लेगे। इतनी घहुलि-यत मिलने पर भी जो कोई अपने विचार प्रगट न करेगा वह समाज का बेपी और अपने विचारों को छिपाकर समाज में विरोध उत्पन्न करनेवाला समका जावेगा।

कोई इस बात को फैलाता है कि इनका निर्णय उचित रीति से न होगा। यह शंका हमें पहिले ही ची, अंतरम हमने सब प्रकार निष्पक्ष लोगों को ही इस कमेटी में रफ्ला है। इतने पर भी हम कुछ उत्तमोत्तम लेखीं को समाचारपत्रों में प्रकाशित कर अनता का भी मत प्रहण करेंगे। जो विष्यन हमारे पास लेख भेज खुके हैं, यदि वे उनमें कुछ परिवर्तन करना चाहते हों तो उन्हें वे वापिस भेजे जा सकते हैं।

—श्रहिचीत्र-कं षार्थिक मेले का विशापन इस अह के साथ यांटा गया है उसको पाठक ध्यान पूर्वक पढें य इस मेले पर अहिक्षेत्र अवश्य प्रशारी।

-- फ़िरो न(बाद (आगरा) में वार्षिक मेला चैत्र बदी ६ से १० तक बड़ी धूमधाम से होगा सब भाई पढ़ारें। जयकुमार जैन-पानी का गांव।

—सालेग (मद्रास) में आदि द्राबिड़ी और द्विजातियों का संगठन करके देश मन्दिरों आदि में जाने के अपने अधिकारों पर जोर दिया, इस पर मन मुद्राव हुआ। १८ फरवरी को भगड़ा हो गया जिसमें तीन आदि द्वाविड़ बहुत धायल हुए और उनका नेता मार डाला गया।

- ---श्री० रहाएंयर ने बड़ी ध्यवस्थापक सभा में एक इस आशय का प्रस्ताय पेश करने का नोटिस दिया है कि जितने भारतीय देशमक स्वतन्त्रता के लिए लड़ने के अपराध में विदेश में पड़े हैं उनके देश में आने में जो ठकावटें हैं वे सक हटाली जायाँ।
- —मोपला उपद्रव के केदियों को अपडेंमन
 में वसाने का जो प्रवन्ध हो रहा है उसके सम्बन्ध
 में रायसाहब कुन्दीरमन नायर ने कहा कि १८४
 मोपला वहां अपने परिवार के सहित बस गये हैं।
 ७४ अन्य मांपलों ने वहां रहने की स्थीहित दी
 है। मदास सरकार उनकी शिक्षा आदि के लिए
 १० हजार रुपया देने वाली है।
- -कविवर रशिन्द्रनाथ टैगोर पाश्चान्य देशों की यात्रा समाप्त करके ∤र≖फरवरी को भारत आगये।
- पं० जवाहरलील जी नेहरू से स्युनि-सिपैलिटी की चंयरमैंनी से इस्तीफा वापस ले लेने की जो प्रर्थना प्रयागवंद्ध ने की थी उसके उत्तर में पंडिनजी ने कृतकता।प्रकट की और पह संदेश नेशा है कि मैं इस्तीफा वापस लेने में असमर्थ हूं।
- -- इर्मा मन्तीय सरकार ने निश्चय किया है कि वह सन् १९२५ की साम्राज्य प्रदर्शिनी में भाग न लेगी।
- ---भारत के वायसराय पद के लिए कीन चुना जायगा इस सम्बन्ध में कई अफवाहें उड़ चुकी और उनका खण्डन हो चुका । अब यह अफवाह है कि इस पद पर बम्बई के भृत पूर्व ग्रंबर्नर सर जार्ज लायक नियुक्त होंगे।

विषय-सची

मंa विषय	विष	य-सूची	
, १ स्व-न (पद्म) २ भी अतिशय क्षेत्र देशगढ़ उ ३ जैन जाति और संगठन . ४ बम्धु (पद्म)	प्रूष्ट संब २०५ ग्री २८६ २०७	में विषय	पु॰ सं• में बढ़ रहा है ? २१६ सं ···
पृ युवकों को दोशब्द ६ जैन धर्म भूषण ध० दि० आ प्रसाद जी का भाषण	२०६ २१०	र्ट साहित्य समालंबना	ंं २१ <i>६</i> ''' २२ <i>०</i> ''' २२६ ''' २२७
' 21			

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांती के फून भाव १। तोला 📆 सोने के बढ़े फूल भाव २।) तीला (सिकं बाँदी या चाँदी पर साने का मुलम्मा करवा के बनाने वाल सामान की सूची)

हर अद्द कम व वैसी जितने नौल चाँदी में नैयार हो सकता है उसकी विगत। हौदा अम्यारी १०००) से २०००) | इन्द्र एक २५०) से २०००) | #बंधनवार पालको १०००) सं १५००) असिहासन ७६) से १५००) | समासरनकीरचना२५०)से१०००) (00) 前 (00) टेब्ल ३००) सं ५००) अववर एक (on) सं २०००) ×पञ्चमेत हाथीं का साज ५००) सं १०००) #मुकट् ३०) से २००) **७) से** २५) | #अष्टमंगलद्रव्य १००) से २००) घोड़ेका साज २००) सं ५००) * चौकी १०) सं २०) / अध्यक्षतिहार्य १५०) सं २५०) *****बल्सम ५००) सं १००) समासरन १०००) सं ३०००) # × भामण्डल ४४) सं ३००) (कसोलहस्वपनं १००) सं ५००) *सोठा रें) से प्र) अड़ाई डीपकी । १०) से प्र००) क्ष्मलशा प्र) से प्र००) विस्तत बांदी के २००) से १०००) *****छतरी इंडी ३०) सं १००) जैन मन्दिर के उपकरण। स्थ००) से ४०००) तेरह डीपकी (४००)सं२०००) बारहदरी २४००) से ५०००) स्थानका मांडला (४०००) स्थानक बरतन ३००) से ५००) गधकुरी वंशी

यह काम वाजिय बाइंत लेकर बनवा देते हैं मिन्दरजी के काम में ३०) सैकड़ा को बादत लेते हैं। मजदूर कारी-गरों की नकाश }कामको।)नोका कोर सादे काम की -) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीनें तें गार भी रहती है। # ये

पता-(१) पोतीचन्द कुम्जीलाल, पाती कटरा, बनारस ।

(२) मिर्ध फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी। Tel. Addres - 'Singhai' Benares.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाचिकपत्र

हिन्दों में उच्चकोडि का सनीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के पामिक, सामानिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायं, श्रद्धत व नवीन से सवीव संसार भर के समावार और मनारंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, खपाई, सफाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निहर और समाज के प्रश्नों पर निस्पत्त रहती है।

半 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्टा भेजने वालों को विल्कुल ग्रुपन

'महावीर अगवान' 🖁

श्रीर उनका उपदेश

जिलमें महाबंद भगवान की जीवनी आधुनिक शैला पर वहीं ही रोचक भाषा में अत्यस्त द्यान बोन के साथ लिली जारही है। यह प्रस्थ जैन अर्जन खब ही के लिये उपयोगी साबित होगा जिन्हीं संसार व जैन समाज में इस भाकों की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं। इस वर्ष भी महावीर नयन्ती के उपलच्य में

वीर का विशेपाङ्क

यड़ी सजधज य सुन्दरता के साथ निक लेगा। तरह २ के रड़ीन व सादे यहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व डीन संस्थार के आधुनिक लेगकों के लेगे, कवितायें, गरुप आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रथत्न किया जारहा है। यह यह दे बने ही से नालपुक रक्संगा।

र्शाव्य ही २॥) भेजकर ब्राहको में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र साबित होगा

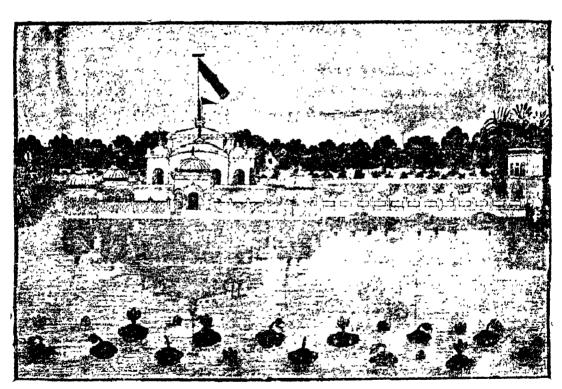
प्रकाशक-राजेन्द्रकृपार जैनी, विजनीर (यु० पी०)

संस्या १०

क्षी वर्द्धभानस्य नमः

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्ध का





सम्पादकः---

ष्ठपसम्पादक:---

जै०४० भू०,४०दि०, श्री ब्र० शीतलमसाद जी

श्री कामतामसाद जी

वार्षिक मूल्य] राजेन्द्रकुमार जैन रईस, विजनीर (यू॰ पी॰) [डाई वर्य

विषय-सूची

नं० विषय			पृ० सः	नं० विषय	पृ० सं	•
१ मम-कामना (पद्य)) ···	•••	રરદ	७ कलियुगी कृष्ण (पद्य)	••• ૅ રક	18
२ हमारी पूजाऔर प्र	क्षाल	***	२३०	म मञ्जर (पद्य)	રક	12
३ जैन-ला ''	•••		२३३	६सम्पादकीय टिप्पणियां '''	૨૪	१२
४ महिला महिमा	•••	•••	સરપૂ	<mark>१० समाजो</mark> जनि का एकमात्र उप	ाय कास्ति २४	14
५ महिला विनोद	• • •	•••	२३ ७	११ ससार दिग्दर्शन 😬	… ે રક	31
६ सूरजचोर (नाटक)		•••	२३⊏			

ग्राहकों को सूचना

वीर का विशेषांक — विछते वर्ष की भांति इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष में रंग विरगे अनेक चित्रों से सुरामित अन्यात्य विषयों से विभिषत बड़ा मनोहर व अत्यन्त उपयोगी विशेषांक ब्राहकों की सेवा में भेट किया जायगा। इस में समाज व देश के विद्वानों के अतिरिक्त अन्य देशों के प्रस्थात २ विद्वानों के कुछ लेख अंग्रेड़ी भाषा में भी रहेंगे। लगभग १०० पृष्ट होंगे। वीर का आगामी अक १ अर्गल पर बद रहकर यह विशेषांक ही ११ अर्गल तक ग्राहकों की सेवा में पहुंचेगा। पाठक अधीर नहीं।

र्वार का चपहार-इस को पूर्ण आया है कि उपहार श्रंथ "महावीर भगवान श्राँर उनका उपटेश्" देश" विरोपाक के प्रकाशित होने तक "इंडियन प्रेस प्रयाग" से छपकर आजागया। अतः श्राहकों से प्रार्थना है कि शीघ ही उपहार के डाक महस्लके लिये 19) के टिकट (अयवा छः आने मनीआईर हारा) और अपना श्राहक नंव लिये कर शाघ भेजदें। जिससे उपहार के साथ ही विशेपांक भी रिजर्फ्न में जोजा जासके। इस में गफलत न होनी चाहिये।

वीर का वार्षिक मृत्य-जिन ब्राहकों का वर्ष आगामी महावारजयंती पर अप्रेल मासमें समाप्त हो जायगा। उनकी सेवा में आगामी विशेषांक बीठ पीठ हारा भेजा जायगा। आशा है वह बीठ पीठ को स्वोकार करके अनुगृदीत करेगों और समाज सेवा में हमारा हाथ बटावेंगे।

नोट—यदि उन ब्राहकों में से किसी के पास विद्येले विशेषोंक से अब तक के अकों में से कोई अंक किसी प्रकार जाना रहा हो या न पहुंचा हो तो वह शीब्र पत्र व ब्राइक नंद लिखकर, बिना मृत्य प्राप्त कर सकते हैं और अपना फास्ट पुरा कर सकते हैं।

नदीन ग्राहक-जो बनना चाह उन को चाहिये कि शीध शाल्) (ढाई क्रपये बार्षिक मृत्य और छः आने उपहार का ढाक महस्ल) बकि ये मनिआईर भजकर गृहकों की श्रेणी में नाम लिखालें अन्यथा पछनाना पड़ेगा क्योंकि दोनों उपहार विशेष कीमनी होने के कारण आवश्यक संख्या में ही छपवाये जायेंने बोट पोठ से पत्र मगाने में ज्यादा खर्ब और देशके अतिरिक्त गड़बड़ भी अक्सर होजानी है। भी महातीराथ नमः

'व्हमा वीरस्य भूषणम्" भी भारत दिशम्बर जैन परिवर्द का पाचिक मुख्य पत्रः

वीर

"सब्बा विश्वप्रेमी वह हो सक्ता है जो दान करने के लिये धन संब्रह करने का अपेक्षा जीवों के दुःख मात्र को दूर करने के कारण भूत सहुगुणों का भंडार भरने में लंबलीन रहे वंही मनुष्य उन सहुगुणों से सब जीवों के दृद्ध में गुप्त रीति से दिव्य भंडार भरता है, उनको सुख शांति से पूर्ण करता है।"

--हार्बे ।

वर्ष २

बिजनौर, चैत्र कृष्णा ५ सीर सम्बत् २४५१ १५ मार्च, सन् १६२५

अङ्ग १७

मैम-कामना

जैयं जयं जीयं श्री बीरं जी, विनयं दी नियें कानं ।

मंगल मयं तब म्रती, बसे हृदयं नम श्रानं ।।

हैं। हम सब विद्वान, बरदानं विश्व यह दीजे ।

जैन समाजीजति का, मार्ग निष्कण्टक कीजे ।।

हो श्रानन्द महान्, जाति हित में चित देवें ।

हरा न राखें फूट, एकता अपना सेवें ।

--शिखरबन्द जैन ।

हमारी पूजा श्रीर प्रचाल



शुभ भावना की वृद्धि हो जड़ अशुभ परिणति की कटे। इन्द्रिय-विषय से वृत्ति चञ्चल चित्त की इक इक हटे ॥ वत इचन जप तप पाठ पूजा इस लिए ही इष्ट हैं। हो स्याति, पूजा, काम इन से इष्ट तो स निकृष्ट हैं ॥"

वास्तव में जैनधर्म का उद्देश्य भटके हुए जीवों को सच्चे मार्ग पर हा पापीसेलुड़ा, मोक्षभवनमें पधराना है। इसकारण वह रागादिक भावों का विवेश कर बीतराग भाष की प्रधानता बतलाता है। अस्तुः जैनियों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे अपने प्रहस्थीपने में रहते हुए भी इस शीतरागमय परमोच्य पर प्राप्ति के उद्देश्य का ध्यानधवश्य रक्कें ! यदि हम दूसरी तरह लोक इंदि से देखें तो भी हम को सब से पहिलें धर्म का आराधन करना पड़ेगा, अर्थ और काम इसके पश्चात के कर्तव्य होंगे। और धर्म के धाराधन का फल होगा कि हम अपनी बर्तमान दशा में शुम आशार्वी के द्वारा ऊपर २ उठते जांय और उस अवस्था को पहुंच जांग कि जिस में उन से भी ममस्य छूट जाए और हम अपने यथार्थ उद्देश वरमोच्य-परमात्म-पद् को माप्त करलें।

इसी लिए आचार्योंने उद्देश्यकी सिद्धिके लिए गृहस्यों को छः आवंश्यक कर्म बताए हैं जो उन को नित्य प्रति शक्तवानुसार शुद्ध भाष से करते रहना माहिए डेनमें देव पूजा भी एक आवश्यक अंग है।

--देशभक्त पं० अर्जु नलाल जी सेठी। आत्मोत्रति से है। और यह मानी हुई कात है। कि संस्थार में प्रत्येक प्राणीका कोई न कोई आराध्य देव मघश्य ही होता है। चोर और इंडाक्ऑ जैसे पापारमाओं के भी देव हैं। वे भी पाप पंकज में फैसे रहते हुए भी अपने देव का स्मरण करते रहते हैं। येश्यायें भी कुरवानी कर अपने देव के प्रति श्भभाव प्रकट करती हैं। और तो और सामा-न्य कूँ जड़ी वीहिनी के वक्त पैसे से अपने तराज् देवता की पूजा कर लिया करती है। उसी प्रकार किसान इल की और यादा अपने शस्त्रादि की! इन सब बातों से यह तो प्रकट ही है कि प्रत्येक प्राणी के हृदय में अपने आराध्य देव के प्रति विनय भाष के अंश मौजुद हैं और वह उन की पूजा किसी रूप में भवश्य किया करता है।

जैनियों के आप्तदेव श्रीतीर्घद्वर भगवान हैं। इस लिये जैनी उन्हीं की आराधमा उन्हीं की पूजा करते हैं। क्यों कि हमारा उद्देश्य भी वहीं है जो भी तीर्थं इर मगवान का था अर्थात् मोस प्राप्ति परमोच्च-परमात्मा-पद् पर पहुंच जाना। श्रीर भी तीधकर भगवान भी एक समय इस जैसी इसाहे भी हमारा उद्देश्य इच्छाओंको वश करते हुए संसार में भटकती हुई आत्मा थीं । इस छिये जिस मार्ग पर चलकर जिस रीति से उन्होंने उस बहंग्य को प्राप्त किया और हमको रास्ता चतलाया, उसी का अनुसरण हमको करना चाहिए। जो मनुष्य हमको संसारके महाभयानक दुःखीं से छुड़ा कर बास्तिबक छुछ को पाने का रास्ता चतलादे उस से बदकर हमारा उपकारी कीन हो सक्ता है? अतएब बही ह्यारा आराध्य देव है। उसी की बुजा, उसी की विनय हम को इष्ट है!

इन आप्त देव की पूजा, इस तरह पर एक तरह से आदर्श पूजा है, क्यों कि जैन वर्म में पर-मात्मा की पूत्रा से भाव उन परमात्मिक गुणी की पूजा से है, जिन को वह उपासक अपनी बान्धो-कति कर प्रकट करना चाहता है, और जो उन मद्दान आत्माओं की परमोन्हरू रूप में विनय और मिक करने से ही होती हैं, जिन्हों ने उन परमा त्मगुणों को प्राप्त कर लिया है। जैनी इन तीर्थ-इरों की पूजा कर के उन से किसी प्रकार की बांछा वा याचना नहीं करते हैं। और न वे भग. वान किसी प्रकार की वस्तु किसी को प्रवान ही करते हैं, क्यं। कि वं राग द्वेष से रहित हैं। और न उन की रच्छा ही है कि कोई हमारी पूजा करे, यिक यह तो हमारे आत्मा के लिए परमोच्चश्म प्रवृति-ईश्वरीय पूर्णता को प्राप्त कराने का मार्ग है इस लिए उन की पूजा इम स्वयं करते हैं। किसी उद्देश्यकी प्राप्ति उस ओर पूर्ण लक्ष्य लगार विद्न और उन महान् आत्माओं के चरण चिन्हीं में चले बिद्न नहीं होती है जिन्होंने उसको प्राप्त किया है।

भी तीर्यंकर भगवान की पवित्र विम्बों की नित्यप्रति पूजा और प्रक्षाल करने से हमारी आ रिमक शक्ति बढ़ती है। क्यों कि उससमय हमारा

आत्मविश्वास दृढ होता जाता है जिस समय हम पूजा मिक के ध्यान में लचलीन हो अन्य स्वीसा रिक रागों और काय्यों से जिल्ल को हटा लेते हैं। इससे हमारा दैतिक जीवन भी सत्य मार्ग की किये हुए ही निकलता है। इसलिये जिस समय से पक थ्रावक-पुजारी मन्दिर जी के भीतर कृदम रखता है, उस समय से लेकर वहां से वापिस आने तक उसे पुण्य का सङ्चारन करना और धर्म के माब को बढ़ाते रहता चाहिये। उसको अपने भाव सम-स्त सांसारिक भंभटी से शुद्ध रहने बाहिये। इसं लिये कहा भी गया है कि! ५ रिग्रामी की उज्ज्व-छता से सामान्य पूजन करनेवाला महापूजन करने वाले से भी अधिक शुभकर्मी का बन्ध कर सकता है और महापूजन करनेवाला उन्हीं परिणामी की मलिनता से सब किया हुआ भी को बैटता है। परि-णामों की उत्कृष्टता और निरुष्टता पर ही हत्य का फल निर्मर है 🗥 मगवान की परम सौध्य प्रसि-विस्वों से बीतरागमय परम शांतिभाव का भावा प्रकट होता है जो हमें पवित्र से पश्चित्र विचारों के लिये उत्साहित करता है और हमारे हृदयों में यथार्थ वैराग्यभाव का भाव फूँ क देता है। और हमें भ्यान करने के लिये यथार्थ आसन का भी शान करा देता है। इस हेत् प्रत्येक जैनी को प्रथमतः ही यह उचित है कि घह परम अयस्कर तीर्यहर भगवान की युजा किया फरें। इससे सर्व प्रकार के सुर्जी की प्राप्ति स्वयं होती है। जैसे कि श्रीमन् कविवर बना-रसीदास जी ने कहा है:-

"लोपै दुरित हरै दुख संघट, धापे रोगरहित विन देह ! पुण्यभण्डार भरै जस प्रगढे मुकतिपन्थ सो करे सनेह ।। रूपे सुराग देय शोभा जग, परभव पहुंचावत सुरगेह । कुगतिबन्थ दछमलहि बनारसि, बीतराग पूजाफल येह ॥"

नांसारिक सुख भोगने का स्थान स्वर्ग और बहौकिक पथार्थ सुख भोगने का स्थान मोक्ष है। इन दोनौं खुखों की प्राप्ति स्वयं ही इस पूजा करने के फल स्वरूप पूप्त होती हैं।

पृजा करने की विधि अत्येक जैनी को माल्य होती है और यह यथार्थ अन्यों से भी जानी जा खक्ती है। इस प्रकार हम अपने पृजन और प्रकाल में यथार्थ उद्देश की प्राप्ति का भाव पाते हैं। राग और हो व से छूटने का एक सुगम उपाय अनुभव करते हैं एवं विवेक और शांति का रसास्यादन करने का एक मिलपूर्ण मार्ग हम उस में पाते हैं। हम जिन द्वार्यों से पूजा करते हैं, उन से भी हमारे क्या करने के यथार्थ भाव और उद्देश्य की भलक सहक्ष जाती है।

"भी जिनेन्द्र की पूजन अभिषेक हुर्वक आठ इच्य से की जाती है। ये आठ इच्य पूजक के परि-कामों को सम्हालने के लिए हीर भक्ति भाव में जमाने के लिए यहे आई जलम्बन हैं। वास्तव में इन आठ इच्यों के हारा पूजक आठ तरह की भावना करता है। इसलिए इन आठ इच्यों के बहाने का बयोजन यह है:—

(१) जनम जरामरण मेरे नाश हों इसल्खिये में

बापको शुद्ध जल चढाता है।

- (२) रुंसार की आताप दाह करती है इसकी शांति के लिए मैं चन्दन चढ़ाता है।
- (२) इन्द्रियों की इच्छाएँ तृत्त नही हातीं हैं, इनकी शाँति के लिए सक्षत छहाता है।
 - (४) कामवाण नोश के लिये पुष्प धराता है।
 - (५) शुश्रारोग शांति के लिये नैवेच चढ़ाताई।
- (६) मोहान्यकार नाश के (दिये दीप चदाता है।
 - (७) आठ कम्मीका जलानेके लिये धूप खेताई
 - (६) मोक्षफल प्राप्ति के लिए फूल कहाता हूं।

इन आठ द्रव्यों में बहुत उपयोगी कम है। अन्त में मोक्षफल प्राप्त करना है। वह मोक्ष आठ कमों के नाश बिना नहीं हो सक्ता। मोह का नाश क्षुधा की बाधा शांत होते से होगा। अपुधा को वाधा काम की व्यथा दूर करने से हटेगी। काम की व्यथा इन्द्रियों के बशीभूत होने से रुकेगी। इन्द्रियों की विजय चाह की दाह की शांति जनम जरा मरण से वैराग्य होने से होगी। इस तरह इन आठ द्रव्यों में पूजक के भावों को उस्नत करने के लिए महान तत्व भरा हुआ है।"

(जैन मित्र से)

इसलिय दूदता पूर्वक यजा के यथाथ भाव को समभ कर प्रत्येक, सःजन को पूजा करनी खाहर। और उस में अपने परिणामा की उज्बलता का ध्यान रखना खाहिए। इतिराम्।

-कामता प्रसाद जन।

जैन-ला

(लेखक --- श्री चन्द्रसाय जी बेरिटर जैन बार एट० ला०)

(क्रमागत)

"वारिसों का विधान"

चर्जमान नीतिमें निम्न लिखित प्रकारसे वास्सि कहे गये हैं कोई पुरुष मर जाय तो उस के धन के मालिक कुमशः इस भांति होते हैं।

- (१) प्रथम स्त्री
- (२) फिर पुत्र
- (३) इसके अभाव में भतीजा
- (४) इनके अभाव में सात वीढ़ी तक का (संवि ण्ड) गोत्रीय
- (५) इन सब के अभाव में राजा उस धन को धर्म कार्य में लगा देवें (देखों श्लोक ११, १२)

जिस धन का कोई स्वामी निश्चित न ही उस को राजा तीन वर्षतक सुरक्षित रफ्ले फिर उस समय तक भी कोई अधिकारी घ स्वामी न होतो उस को बहीमहण करे। (देखो श्लोक५७) और।

इन्द्र निन्द जिन संहिता में इस प्रकार कि:-जब किसी स्त्री का पति नष्ट होगया या मरगया हो या बातादि रोगसे बावला होगया हो तब क्षेत्र बस्तु धन धान्य संपूर्ण स्थावर जंगम की मालिक-

- (१) ज्येष्टभार्य्या होगी जो कुटुम्ब का पालन करेगीया
 - (२) फिर पुत्र
- (३) इन के अभाव में मुख्य गोर्श्व अर्थात् भतीजा

- (४) इन के भ्रभाव में दोहिता।
- (प) तिरू के अभाव में सात पीढ़ी तक का गोत्रीय
- (६) यदि उनका भी अक्षाल हो तो 'ळबुझाता' इसका तात्पर्य यह है कि जब सात शाला में कोई न मिले तो ऐसा प्राणी लेना जो छोटे भाई का नाता रखता हो और सात वर्ष से अधिक वय का हो वह अधिकारी बनाना खाडिये (हे वे १६-१८) और फिर श्लोक ३५-३० में . दायाद वर्णन किये हैं।
 - (१) प्रथम धर्म पत्नी
 - (२) फिर खुपुत्र
 - (६) उस के अभाव में पिता का भ्राता
 - (४) उस के अभाव में माता का 9ुइ
 - (५) किर सगंक्रीय
 - (६) तत्पश्चात पुत्री
 - (9) फिर पुत्री का पुत्र
- (म) इन सब के अभाव में कोई स्वजातीय गोत्रीया बन्धु मृतक के धन का स्वामी छोकप्रमाण राज्य प्रमाण साक्षी से हो सका है

उक्त निश्चित दान में कलह न होता ऐसा धर्माचार्य ने सदा के लिये निश्चय किया है क्यों कि राजा और पंचों की साक्षी के बिना जो मृतक के दृश्य का स्वामी स्वन: होगा नो विवाद के समय वह अपमाण होगा और जो साक्षी द्वारा विधि पूर्वक प्रमाण सहित होगा उसमें किसी प्रकार का भगड़ा न होगा। दंखो श्लोक २५ ३८)

पूर्वोक्त दायभागका उत्तराधिकारी जिस प्रकार कहा गया दे सब वर्णों को उसी कृम से बनाना चाहिये।

(ह) इन सब के अभाव में अपुत्र मृतक के धन का स्वामी राजा होगा परन्तु ब्राह्मणका धन राजा को अग्राह्म है वह धर्म कार्य में लगा देना चाहिये (देखो श्लो• ३६)

अर्हन्त नीति में:-

- (१) स्त्री
- (2) 9年
- (३) पति के भाई का पुत्र
- (४) सात पीढ़ी तक बंशज
- (५) दोहिता
- (६) चौदह पीढ़ी तक का वंत्राज-सगोत्री यह एक दूसरे के अभाव में दायभागी उत्तरो-त्तर होंगे (देखो क्लो॰ उक्ष

ऊपर लिले प्राणियों के सभाव में दायभागी जाति वाले होंगे यदि उनका भी अभाव हो तो ऐसे धन को राजा धर्म कार्य्य में लगा सका है। (देखों प्रलो० ७५)

"कोन अधिकारी नहीं"

जमाई, १भाणजा, २ और सास् यह पर गान्नी होने के कारण दाय भाग के कदिए अधिकारी कहीं हैं। (देखो क्लो० ११=)

"जोडु आँ पुत्रों में ज्येष्ठता"

यश्व समय में दो या अधिक पुत्र उत्पन्न हों तो अधम निर्गत हुये पुत्र को ही ज्येष्टता होती है और विभाग समय में आचाय्यों ने उसी का प्राधान्य कहा है।(१)

यदि पूर्व में पुत्री उत्पन्न होने और पीछे पुत्र तो वहाँ पुत्र को ही ज्येष्ठत्व है कत्या का जिन।गत में नहीं है। (२)

"केवल पुत्री के होने पर सम्पत्ति का अधिकार,

आगे कहे हुए नियमों के अभाव में पुत्र के सहरा पुत्रिका मानी गई है और दाय भाग में तथा पिण्डदान में पुत्रों के समान दौहित्र । पुत्र और दौहित्र में कुछ भेद नहीं है। तथा माता के द्व-य की भागिनी कन्या होती है चाहे वह दिवाहिता हो अथवा अविवाहित और पुत्र रहित पिता के द्व-य का अधिकारी दौहित्र होता है। उस आत्मस्वरूप पुत्री की उपस्थिति में दूसरा कोई धन का हरण कैसे कर सका है।(३)

जिस मनुष्य के केवल एक कन्या होय और कोई सन्तान न हो तो उसकी मृन्यु पश्चात उसके स्थावर अंगम दोनों प्रकार के धन की मालिक पुत्री और दोहिते होंगे (४)।

विना सन्तान के पिन के मरने पर यदि उस की बधू पुत्री के स्नेह वश दसक पुत्र महरा नहीं करे तो उसके मरने पर उसके जेठ देवरों के पुत्र उसके मालिक नहीं हो सक्ते किन्तु उसकी मुख्य अ पुत्री ही अधिकारिणी होगी । (५)

- (१) देखी मा संव २०, माव नी १६
- (7) 48, 40
- (३) देखों भव संव २४, २६, माठ नीव ३२, ३"
- (* " " s s' of' " ..
- (¥) ,, ,, Ex, < E

धरम्तु अर्हन्त नीति में इस म्कार कहा है कि:-जो पुरुष संतान रहित मर जाय तो उस के इत्य का उसकी स्त्री मालिक होने और यह स्त्री अपनी पुत्री के प्रेम घश किसी को दत्तक न बना में और स्पेष्ठ देनर के पुत्र के स्रभान में मृत्यु पाचे तो उसका धन पुत्री को मिलेगा। उस कम्या के मरे पीछे उसका पति उसकी मृत्यु पश्चास उसके पुत्रादिक परन्तु उस में पित्र पक्ष के लोगों का कुछ कथिकार नहीं रहता है। (१)

一 斯伊河:

महिला-महिमा

पतिभक्ति

चिना अपनी पुत्री से कहता है-"यदि तुम मेरे घर में रहना चाहती हो तो अपने शरायी, छुआरी, ज्यभिचारी पति को छाड़ दो बरना मेरे दिल से, मेरी आँखों से, मेरे घर से सदैव के लिये हुर हो जाओ।" इस पर यह आदर्शपरनी मन में विचार करते हुए पिता से यों कहती है:-आह! कैसी निष्ठरता! कैसी विकट परीक्षा!

इक ओर धर्म, इक ओर प्रेम,

किसको लें अरु किसको छोडूँ। यह पूज्य पिता यह प्राणपति

किसके दिलका नाता नोडूँ॥

यह पिता जन्म का दाता है,

अदयती प्राण का दाता है।

इससे इस तन का नाता है,

अव इस से मन का नाता है ॥ इस ओर चलूँ, उस ओर चलूँ,

दो होने पर मैं किसकी हूं।

इसने जब मेरा हाथ इसे,

दे,डाला तो में इसकी हूं॥ मैं इसका हूं, यह मेरा है,

गुणशून्य पती, गुरुद्वस्य पती। पत्नी का सुख खौभाग्य पती,

साम्राज्य पती, सर्वस्य पती H

अरु पत्नी राधा रानी ै।

'शैदा' उपनिषद् का सार यही,

अरु यही शास्त्र की बानी है।।

—(महिला महत्त्व)

सास बहु के सगढ़े का कारण प्रेम के अभाव से आजकल पायः देखने में भाता है कि सास ससुर के प्रति बहुओं की भक्ति बहुत शीघ ही कम होजाती है, जिस कारण घर र सास बहुओं में ही नहीं बरन अन्य स्त्री पुरुषों में भी कलह बनी रहती है यहांतक कि प्रति-प्रस्ती में हार्दिक अथवा सचा प्रेम नहीं होने पाता है।

^{(।) &}quot; भा० नीव १,६,११८

जिस समय कर्या विवाहिता हो अपने पति-देव के घर में प्रवेश करती है तथा माता पिना के स्नेह से छूटी हुई नये कुटुम्बियों में मिलती है, उस समय उसका कर्तव्य है कि सास को अपनी माता तुल्य समक कर तन मन से उनकी सेवा करे तथा कमशः गृहस्थी का भार अपने ऊपर लेकर सच्ची गृहलक्ष्मी कन अपने को योग्य गृहणी सिद्ध करे।

परन्तु अगर यह अशिक्षित हो तो सीसको भी उसे अपनी पुन्नीवत् समक्ष कर पूर्णक्ष से उसे शिवित बनाने का प्रयन्न करना उचित है किन्तु नहीं यहुआ देखने में आता है कि यहुओं को शिक्षा देना अथवा प्यार के साथ समकाना तो दूर रहा वरन् यह हरजक तरह की जली करी वातों से उसका दिल दुखाती रहती हैं। जिसका परिणाम यह होता है, कि यहुओं के मन में भी उनकी ओर से अथदा उत्पन्न हो जाती है भविष्य में वह जो कुछ सेवा तथा अन्य कार्य करना चाहती थीं उससे सर्वथा उदासीन होजाती हैं और पर पर पर लांछना पाने से भवतापूर्ण उत्तर प्रस्कृतर करने लगती हैं।

अर्थम तो हमारे समाज को स्त्रियां शिक्तित मही, यदि भाष्य से माता पिता के यहाँ कुछ उच्च शिक्षा पागई और उस उत्तम शिक्षा के प्रभाव से पित्रभिक्त के आदर्श को समफने भी लगी तो उन्हें बह अवसर ही कहां मिलता है; जिसे कार्यतः शक्य कर पित को सुख पहुंचा सकं क्योंकि यदि कहीं सास नैनहीं ने पितदेव को पानी देते अथवा कुछ बोलते भी देव लियां ती मानो बड़ा अन्याय होगया उसी संमय गेचारी पर नाना प्रकार की अधिय बातों की मूसलाधार वर्ष होने लगती है इसी कारण वस उनमें किसी न किसी प्रकार भगड़े का सूत्रपात्र आरम्भ होने लगता है। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि वह यह नहीं सोचतीं कि इसमें बुगई होगी अथवा मंलोई। मेरा कहना यह नहीं है कि सब दोष सासी ही का है क्योंकि कहाबत प्रसिद्ध है कि "एक हाथ ताली नहीं बजती है" न सास यह की पुत्री ही समभती है न यह सास को माता ही, इसका मुख्य कारण केवल प्रेमका अभाव और अशिक्षा है क्योंकि उनमें से एक भी शिश्वित हों तो भगड़ा बन्द हो जावे।

प्राचीनकाल में लियों को पूर्णकर से शिक्षा दी जाती थी और यही कारण था कि वे अपने सास पति तथा अय कुटुन्बियों की सेवा में सदैव नत्वर रहती थी किन्तु वर्तमान समयमें स्वीशिक्षाका सर्व-था अभाव हो जाने के कारण स्त्रियों की यह दशां हो रही है।

इसलिए बहिनों से मेरा यह निवेदन है कि मेरे इस छोटे से लेकपर ध्यान दें, अपने गृह में सुत्य श्रान्ति की पवित्र धारा बहायें। में आशा करती हूं कि उपरोक्त कथन पर पाठिकार्ये विस्तार करेंगी और इस तुच्छ लेखसे भी अपनी बुद्धिमत्ता सें कुछ। म कुछ लाभ उठा हीलेंगी।

"महिला महत्व,

महिला विनोद

(से० एक घर का नासूस-बी० एक)

स हइ हो गयी-शीव्रता की नाक कर गयी-वायर लेस (वेतार के तार) की कम्पित्यों ने अपना टाट उलट दिया क्योंकि समाज की कुछ व्रौढायें अब इतती जल्द इधर उधर से ख्यर लाने लगी हैं कि अब (Telegraph) टेलीव्राफ, को मी हार माननी पड़ती है। योरपवालों को उचित है कि स्पेशल कन्ट्रैक्ट करें क्योंकि सारा काम खुलम और सुगमता से हो जाया करेगा।

लास चेन्टा करो मगर कुक्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ा, चाहे सभा करो,गला फाड़कर व्याण्यान दो वा मासिक पत्र निकालो मगर सब कुछ बैलाअन । बुढ़ियां अब भी कहा करतीं हैं कि क्या हमें अपनी बहुग्या और बिटियां को पढ़ा लिखा कर "वालिट्टर" बनाना है । समभ की बलिहारी।—

कौन कहता है कि स्त्री के कांमल हाथ पकड़ने का अधिकार केंबल पति को ही है, मेरी समक में तो पति से यह कर अधिकार मुसल्ले खूड़ीवालों को है क्योंकि वे घंटी मुलायम हाथीं को दवाकर खूड़ियां पहिनाते हैं।

पुरुष भी बड़े होशियार है, क्यों कि वे जानते हैं कि यदि क्रियों को पढ़ाया लिखाया या शिक्षित बनाया तो बस पकाओं अपने राथ से कच्ची पक्की, जहाँ औरतें पढ़ी नहीं शौकीनी के सरम्जाम की फरमाइसें हुई नहीं, क्योंकि हर वक्त उनके हाथों में ह्वाइटवे लेडला कं॰ (Whiteaway Ladlaw & Co. का सूचीपत्र रहेगा।

विधाह में यदि सींडनें न हुए तो सारा गुड़ गोधर हो जाता है, मजा किरकिरा हो जाता है; सब रङ्ग फीका पड़ जाता है। अरे इसी मनोरम्जन के लियें तो हमारे यहां सीडने की प्रथा की बड़े बूढ़े उडाते हैं! वाड! कोकिल कच्छ से निकंडी हुई गालियां भी कैसी मनोहर होती हैं।

स्यापी में यदि औरतों की प्रश्नायत न हों तो भीर कहां हो। क्या हमारी कुलदेवियां और बड़ी बूढ़ी क्लर्जों और सोसाइटियों में जाया करें अथवा पार्क में व्याख्यान भाड़ा करें, जिन्हें स्तापें की खालें बुरी लगती हैं वे निगोड़े अपने कानों में बेलन क्यों नहीं अड़ा लेते।

समाज में एक बात बड़ी ही अच्छी देखने में आती है हमारी कुल कामिनियां प्रायः बड़ी बृदियों के साथ गङ्गा नहाने जाती हैं। पैरल जाती हैं पर बहर ओड़ कर जाती हैं क्योंकि परें के महस्व को वे खूब समझती हैं। छीउते समय गङ्गाकिनारे कुंजाड़ों से सौदा भी ज़रीदती हैं, उस समय परें की उन्हें जरा भी परवाह नहीं रहती। यदि अक्स्मात् किसी जान पहिचान बालांपर दृष्टि पदी तो हाथीं की सूंड की तरह लक्ष्या ग्रंभट भी काढ़ लेती हैं।

धन्य है हमारी समाज, क्यों कि रखती है परदे की अच्छे जो नयी नवेलियों के मुखमण्डल का दर्शन खांज ।

भरे भाई! समाज के पुरुषों से तो वे कुजड़ेही

तो किया करते हैं।

--- महिला महत्व

(नाटक)

(लेखक-बालचम्द्र से जे लाइन्)

(स्थान-वसन्तमेना गणिका का वसन्तमइल) (बसन्तसेना उदास मुँह किये पलङ्ग पर पडी २ अपने मन ही मन में कुछ गुनगुना रही है)

स्रजनोर-(स्वतः) यह क्या ! आज प्राण-प्यारी ऐसी उदास क्यों पड़ी है ? क्या कारण है ? (प्रगट) हृदयेश्वरी ! आज क्यों ऐसा उदास मुँह किये पड़ी हो ? क्या तिवयत कुछ गड़बड़ है या और ही कुछ माजरा है ?

वसन्तसेना-कुछ नहीं, मैं तुमसं कुछ नहीं कहुंगी।

स्रज-आह प्राणप्यारी ! यह क्या हृद्यवेधी शब्द कह रही हो। तुम्हारे ही प्रेम के कारण में सर्चस्य तुम्हें अर्पण कर चुका हूं। घर छोड़ा, कुटु-म्ब छोड़ा, धर्म छोड़ा, सब कुछ छोड चुका हूं। छं ड़कर ही चुपन हुआ अब तुम्हारे प्रेम ही के कार म चोरी करने को उद्यत हुआ हूं!

बसन्त-तुम मेरी अभिलाषा पूर्ण नहीं कर सके हो।

सूरज-बाह, खूब कहा ? भला इस सूरजचार

सं ऐसा कौनसा काम बाकी है जो यह न कर सकता हो?

यसन्त-अच्छा तुम सच काम कर सक्ते हो नो फिर मेरं लिये इस नगर के राजा की पटरानी के गले का चन्द्रहार अभी तक क्यंतन का सके? अब तातुम मेरे हृदय का आछि द्वन तब ही कर सकोगे जब इसं ला दोगे। वस रहने दीजिये-जाइये ।

सूरज-(हैंस कर) बस इसी लिए ही तीर सरकस चढ़ा हुआ था। ना कुछ भी नहीं। लो मैं प्रतिका करता हूं कि कल दिन तुम्हाने सुन्दर गले में चन्द्रहार परिनाकर ही तुम्दारे साथ में आनन्द केलि करंगा।

(समय अर्थरात्रिका) (सुरजचार ने नेत्रों में अंजन लगा करके आहिस्ते २ राजमहलमं प्रवंश किया और शयन करती हुई साम्राशी के गरू से चन्द्रहार निकाल कर चम्पत हुवा) सूरज-(स्वतः) आज प्राणप्यारी के गले में इस चन्द्रहार को पिहना करके ही सुख भोग्रा 'रास्ते में चलते २ एक प्रहर्ग ने हार का चमत्कार देव कर चोर समभ करके पीछे से उस की गर्दन पकड़ ली।

प्रहरी-साला चोर, इस हार को हमारी आंखीं में घुल भोंक कर कहां लिए जाता है ?

सूरज-हुजू माई बाय, श्रपनी श्राण प्यानी की इच्छा पूर्ति हेनु सबसुच महाराणी के गले से चन्द्रहार लिए जाता हूं। सब कर्ता हूं। तुम्हारे पैर पकड़ना हूं। तुम यह लो एक हजार रूपया और ज्यादा चीं चयड़ मत कते। मुक्त करो।

प्रहरी-चल तेरी प्राण् प्यारी की ऐसी तैसी ! साला हुए घूं सबोर समभसा है। हम नमक-हराम नौकर नहीं हैं। सरकार का आशा भरोसा हम ही पर है किर भला हम नमकहराम नौकर के समान इस जगत में पासकी कैसे वन सक्तें हैं?

'शहरीसाहब ने रुपये की भौकार में अपने उप-देशको भुला दिया। मुंद में पानी भर आया। मुक्त हुआ चोर अगाड़ी बढ़ा कि अभागा कोतबाल के पंजे में परेसा। हाथों में हयकड़ियां कूमने लगी।"

3

(स्थान-न्यायात्तय)

(जनता की भीड़ और राजा जयपाल न्याय सिंहासन पर बैठे हुए हैं दीवान श्रादिकार्य-

कर्तागण अगलबगळ में बैठे हुए हैं)

राजा-दीवान साहब ! कल रात को महाराणी के गले से जिस चोर ने हार चुराया है उसके मामले में ही मैं विचार करूंगा आप उस चोर को हाजिर करें।

द्वीवान-जो दुकुम सरकार का ।

दीवान की आक्षा से प्रहरी ने हथकड़ी पहने सुरज चोर को हाजिर किया ।

दीवान-(सूरज चोर से) क्या तुम्हें इस बोरी के मामले में कुछ आपत्ति है?

सूरज-नहीं हुजूर, में भूंठ नहीं बोल सका हुं। और न मुक्ते कुछ आपित्त है। मैंने ठीक महा-राणी के गले से होर च्याया है।

दीवान-(सभ्यों की तरफ मुंद करके) देखों सभ्यगण ! यह चार अपने आप ही अपना अपराध स्वीकार करता है। अब महाराजा साहिख इसे उचित दण्ड से दण्डित करें यही न्यायसंगत हैं।

राजा-इस चोर ने खास महाराणी के गले से हार चुगया है इसलिए इसके अपराध का उचित दण्ड प्राण्यदंड ही है।

स्रज कोर-(माथे पर हाथ घरके) मिला मिला पापों का प्रायश्चित मिल गया। मेरे वेश्यागमन और चोरी करने का कटु फल मिल गया। हा! उस नरिपशाचनी के कारण मैंने कैसी यन्त्रणा भोगी परन्तु अन्त में स्ली चढ़ता ही नसीब हुआ. अपने किये पापों का फल पाचुका। भारतवासियों! धूको, मेरे जैसे अध्यम वेश्यागामी चोर पर थूको। और ढूंढ २ कर पेसे नराधमों को इंडित करके इस पावन मही को पवित्र बनाओ!

Q

(क्यां - मैदान सूली)
(यमपाल स्रजचोर को यकड़े हुए हैं श्मसान
में आकर सूली को खड़ी की और उस
पर स्रजचोर को बैठा दिया)
स्रज चोर-हाय प्राण गये ! कोई पाबी
पिलाओं ! हा यह जिनदास सेठ जी आ ह

इन्हें कहूं सेठ जी, हम मरते हुए को थोड़ा पानी को पिला दीजिये।

जिनदास-(देखकर और खुशी होकर) पानी तो जाता हूं परन्तु इतने तुम एक मन्त्र जो मैंने एक सुनि के सुब से सुन कर आया हूं उसे याद करते रहो।

सूरज-अच्छा पताइये वह क्या मन्त्र है ? जिनदास-"पमोअरहताणं"

सूरज चोर-अञ्छा में याद करता रहुंगा । भाषो ताणो ताणो सेउ वचन प्रमाणों । (सेउ का प्रस्थान और चंर के प्राणांत)

¥

(स्थान श्री विनालय)
"जिज्ञास्त्रय के अन्दरांसेड जिनदास सामायिक कर रहे हैं । द्वार पर एक प्रदूरी
के रूप में देव भव को प्राप्त
सूरजचोर वैटा हुआ है"

एक सिपादी-हटो जी शहरी, एक ओर हटो, हमें अन्दर से सेठ जी को लाने दो।

प्रहरी-क्यों क्या ऐसा अबुखित काम सेट जी ने किया है।

सिपाही-सेठ जी, कल दिन सूरज स्रोर के साथ बात करते थे, इसलिए राज्य के दोबी हैं। उन्हें यक्षड़ने की राजाज़ा है।

प्रहरी-क्या बात करने से ही दोषी होगए ! स्विपादी-हाँ, बात करनेसे ही!तों, साबित होता है कि सुरजवीर से भीर बन से कुछ सम्बन्ध था। प्रहरी-तो हम सेट को नहीं पकड़ने हेंगे। स्विपादी-चल हट। महरी-फू`······("सिवाही घराशायी हो। गवा !"

(बहुत सी सेनाओं का आगा और प्रहरी की फूंक से सबका घराशायी होगा और अन्त में स्वयं राजा का उपस्थित होना)

राजा-अज्ञात पुरुष, आप कीन,हैं ? अपना सच्चा द्वाल हमें सुनाइये। यदि कुछ अन्याय दुशा हो तो प्रकट कीजिये।

प्रहरी-राजा में तो तुम्हें अब छोड़ भी नहीं सक्ता। हाल क्या बनाऊँ परन्तु यदि तुम जिना-रूपके अन्दर सेट जिनदास हैं उन से भ्रमाप्रार्थना करा तो सब हाल विदित हो।

राजा-(जिनालय के अन्दर सेट जी के पास जाकर) सेट जी हम से जो कुछ दोष हुआ है सो समा करो।

सेट-(आश्चर्य से) सरकार, मैं तो कुछ भी नहीं जानता'''

सेठ-(बाहर जाकर प्रहरीसे) हैं यह क्या ? श्राप कीन हैं ? (चारों तरफ लक्ष्य करके) यह महान हिंसा जिनालय के बाहर ! यह घोर हिंसा ! हा क्या मेरे कारण यह हिंसा ! महानुभाव, यह क्या माया है ?

प्रहरी-(सेठ के पैर पड़ते हुए) नाथ मैं सूरज स्रोर हूं। प्रमा, आपने मुक्ते मगते समय जो णामोकार मंत्र दिया था उस महामंत्र के प्रभाव से मैं स्वर्ग में ऋदि घारी देव हुआ हूं यह आपका ही पुण्य प्रमाप है। मैं किस मुझसे भापका गुण वर्णन कर्दे। आप ही प्रम धर्मात्मा-प्रोपकारी-द्या के निधान हैं। मैं भापको यह नुष्छ (रतनों का प्रिटारा) में अपंज करता हूं। इसे छपो कर स्वीकार की जिये सेठजी-हे देख, मैंने कुछ उपकार नहीं किया। इस अपूर्व महामंत्र के प्रभाव से क्या सुक नहीं मिलते? यह अनादि निधन महा मंत्र है। इसका को अटल ध्यान घरता है वह अमर पद को भी प्रभावरता है! "क्या न सुख इस लोक में महामंत्र से होता नहीं। अठक्यांन सुख शियलोकका इस मंत्र से मिलतानह।"

है देव मेरा यही तुमसे कहना है कि इन सर्वा मनुष्यों को सच्चेत करा।

प्रहरी-(हाथमें जलका लोटा लिए सब पर छिड़-कता है) लीजि रायह सब सचेत होगए सर्वसैनिक-(आंख मलते हुए) हा ! यह क्या सुरज चोर देव होगार ! अहा यह सब जिनधार्म का ही प्रभाष राजा∹हे सेठजी और सुरराज मैं भाजसे परि जिनधार्म मंगीकार करता हूं ।

सर्व सैनिकगण्-हम भी आज से परम पवित्र जैन-धर्म ग्रंगीकार करने हैं।

"सब मिलकर गाना गाते हैं—
जपहु नर मंत्र पंच नौकार ।
इन्द्र चंद्र नागेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र जपहिं जगसार !
अशरण सरण सहाय स्वयंत्रर मुक्ति बधूटीहार ॥
भून मेत बेताल ज्याल भय भंजन तंत्रीसार !
अनुपम मंगल मंत्र महातम विद्न विनासन हार॥
स्वतिकायतन ।

कलियुगी-कृष्णा

वृन्दावन वृन्दावन व्यर्थ ही मचाते तुम, वन में दिखाते नहीं राधिका कन्हाई तो । 'व्यपट्रहेट' होते नहीं 'पायुक्तर' कैसे बना, एक वार गा के नहीं बार वार गाई तो ॥ कवियों! तुम्हारे श्याम आये यूनिवर्सिटी में, हंग है निराला रूप शोभा है बढ़ाई तो ।

तज्ञ के पीताम्बर बने हैं सूट धारी खब, देखा सब और वे ही पहते दिखाई तो ॥

रयाम अधरों से लगी बांसरी मिलेगी नहीं.

भव ने। निराली धुंश्राधार रेलगाड़ी है। प्यारी गोषियों के हेतु पागल नहीं हैं बह, खाड़ली मिसों में बना भाज तो भनाड़ी हैं। माड़ी बन्द की थी कंस पूतना की जिसने सें।, बन्द कर देता, स्वीय गौरन की नाड़ी हैं। द्वारिका में जाकर खिपे से युवराज कभी, द्वारिका निराली भव 'बाइफ़,की साड़ी हैं।।

आज भी लगे हैं कृष्ण लोक-हित-साधन में देखे। सब ओर मेम्बरों की भरमार है। भारत-बद्धार के लिए हैं भवतार खिए॥

सब से बताते सरकार बदकार है। इवार्थ-स्याग कृष्णने कियाथा गे।पियोके त्याग। आज भी निरालं महात्याग का विचार है।।

डाक घर सुटें, नारियों का अपमान करें। बोर्लेगे न नेतागण 'युनिटी' का भार हैं :

मच्छर

(1)

मच्छर ! तुम सी शकि कहां से लावें प्यारे। नहीं हुये है सफल बहुत से यज्ञ विचारे ॥ नीति जलिंघ में भ्रगर तुम्हारे हाथ बढ़ातें। किन्तु झान के धके मनुज्ञ इम पार न पार्टी ॥ (२)

पहले गिरते बरण किसी के पीछे उसकी। पीठ ठोक कर, बात सुनाते हो किर रस की ॥ इतने में है उसे तुम्हारी बात सुराती । इस के देखें छिद्र, तुम्हारी फूली छाती॥ (3)

एक साथ हम चरण एक ही चल सकते हैं। किन्तु तुम्हारी खाळ नहीं हम गिन सकते हैं।। चलने की छह गुनी, ठहरने की तिगुनी है। पदसंख्या पर शक्ति वचन मित की अगिनी है ।। (8)

हलके हो जब कभी स्वर्ग की सीर करोगे! क्या हमपर उस समय कृपा कुछभी न धरोगे ॥ सृस २ कर स्वर्ग, लौट कर हो अब आये! क्या रख कर आदर्श हमें सुव देने धाये? (4)

हम भारी हैं पड़े रहेंगे ही मृतल पर। आप लांजिये सुख स्वर्गी का अवनीतल पर ॥ मच्छर ! अनंतगुणधास ! नाम कुछकम न कमाया। अब तुम्हें अनन्त प्रणाम, नींद् से भला जगाया ? ---'भुवनेन्द्र'

न्याय की मांग !

जैन समाज की वर्तमान अधोदशा को देखते इए प्रत्येक जाति हितैयी के इदय में विषम करुता का उद्देग फूट निकलता है। दिन पर दिन उसकी संख्या घट रही है। उसकी शारीरिक मानसिक और नैतिक शकियां हीनता का प्राप्त होती जा रही हैं। पर पद पर उसकी अवहेलना की जागही है।

सम्पादकीय टिप्पिणियां।

उसके स्वत्यों और अधिकारों पर खुला आक्रमण 🔒 हो रहा है। और तो और उसके परम पूज्य श्री तीर्थं कर भगवान के प्रति भी लोग अवशस्त्री का प्रयोग करने में नहीं क्रिक्रकते । परन्तु इतना दारुण अपमान होने पर भी आज के जैनियों के कानी पर ज्तक नहीं रंगती! मला जो जानि अपने आदर्श पुरुषों की मर्यादा बनाये रखने में और उनके प्रति जनका की आदर दृष्टि बनाने में असमर्थ हो यह

किसप्रकार जीवित रह सकी है ? वह तो जीवित ही मर चुकी है। बस्तुतः आजकी जैन जाति की यही दशा है। यही कारण है कि बहु अपने अन्त समय के श्वास पूरे करने जारही है। नहीं भला इस घोर अपमान के होते हुये-वर्म की लांछन रुगाते हुए भी जैनी अपने जैनत्वको भुल ये रहते? अत्रियों के धर्म के उपस्क आज इस प्रकार नि-स्तम्भ और निस्तेज हो जाते ? सच पृछिये भाजके जैनी जैनत्व को भूले हुये हैं। वह नहीं जानते कि एक जैनी अन्यों के लिये आदर्श कर होना चाहिये। उसके दैनिक जीवनमें सत्यता और निर्भीकता की अलक दरशना चाहिये। आपस में इस तरह की प्रीति होना चाहिये कि याहरवाले देखकर दांती तहे उंगली द्वा जांच। पान्त आज बुद्धिवल की गंबार हुए-हीनता को शप्त हुये-परस्पर में छोटी २ बात पर लड़ने भगड़ने वाले-साम्बदायिकता के मदमें पदमाने किस अं कार जैनवमा होने की हासी भरसकं हैं ? और वह किसन्कार उसकी रक्षा करसके है ? यहां कारण है कि हमे न्याय की मांग वर्तमान परिस्थिति की कडी आलोचना करने को बाध्य करती है।

अंतसमाज पर दृष्टि डालते ही मोटे रूप में दिगम्बर-श्वेताम्बर मभेद हमारे सामने आता है। उनका आपस में तीथों के नाम पर रूपया बरबाद करना हमें संसार की नज़रों से गिरारहा है। परि-षद की अध्यक्षतामें बनी कमेटी इस शोचनाय नाश-कारी दुईशाको मेटनेने अग्रमर है। दोनी संप्रदायों के मुख्यों का कर्तव्य है कि वह आपस में शिधू ही धर्म और जाति को मलाईके लिये समभीना करलें जैनधर्म किसी खास सम्प्रदाय या जाति के लिये ही सीमित नहीं इस बातका ध्याम प्रत्येक जैनी को रहना चाहिये। इसी हेतु जैन तार्थायतन किसी की मैं। इसी न होकर "दैवदस" मिलकियत हैं, जिन पर उनके श्रद्धानी सबही का समान हक है।

अब जो दिगम्बर संम्प्रदाय पर दृष्टि डाली काय तो उस से कहीं लज्जास्पद सर्च नाशकारी परिस्थित इसमें हो। रही है दिगाम्बरी बीसपंथी आदि विभागों में पहिले ही विभाजित थे, परस्त बाजकल इन से बढ़े चढे नुमायशी प्रभेद उस में अनीखे हो रहे हैं। हमें उसमें दो श्रेणी के मनुष्य दिलाई पड रहे हैं। एक तो वह जो शब भी 'बाबा चाक्यं.प्रमाणमं के पश्चपाती लीक पीटने वाले और इसरे समय की प्रगति से चाकिए। प्रथम खेली के मनुष्य संख्या में अधिक और ब्रामीण ही मिलेंगे और दूसरी अंजी के मनुष्य देहातों में कठिनता सं मिलेंगे। तिस पर खुर्बा यह कि इन में भी हो मेद पड़े हुये हैं। संस्कृतिभन्न समाज के दान कियं हुयं रुपयों सं चालित विद्यालयों में से आये हुये पंडितगण स्थितियालक बन रहे हैं। उधर वर्तमान छौकिक विद्या सं विश्ववित स्वयं अपने पैरों जीवन प्रभात में आखड़े होने बाले स्थिति सुधारक जन निःवार्थ भाव सं समाज की सेवा करने की अगाड़ी आये हुये हैं। बर्तमान में जब अन्य कातियों की उकति होते वह चहुं-ओर देखते हैं तो यह वैसी उन्नत अपनी जाति को देखने की इच्छा से उस में वैध उपायों हारा कार्य करने को आते हैं। यस यहीं पर स्थिति पालकी से और इनसं मुठनेड हो जाती है। इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरा किन्ही ग्रंशों में दर्शक अथवा गुसदल समात के धनी संद्रगण हैं। इनमें विशेष

मार 'अरिस्टोक सी (Aristocia v) भी व भरी बई हैं। जिस को बनाये रखने के लिये यह लोग बहुचा एंडित महाश्यों के विरोधी वनना नहीं बाहते। इसका एक और कारण यह है कि एंडित वस पराने हरें से प्रामीण मोले दल को उकसाने और अवने पक्ष में लाने में सिद्धहस्त है, यदावि विवार्च दिश्वति का पता लगते जानेस अब वह भी भौकन्ना होता जा रहा है। स्थितिपालक पहित-वल के सुधारकदल से विगेधी होने का कारण बानवसत्ता की आकांश्री और स्वार्थ का भत है। जिस प्रणाली से सामाजिक विद्यालयीं से पहकर वंडितमण निकलते हैं (जो वहां बहुया प्रामीण साधारण स्थिति के घरों से आते हैं) उन से कर्ते मान और सचा पानेकी लालसा प्राकृतिकरूप में आधेरती है और जीवन निर्माह के लिये ठ०थे क्रमाने का सवास भगाड़ी आवड़ा होता है। उन को ज़िका बेनी होती है कि वह सियाय नौकरी के अन्य कार्यों के योग्य बहुत कम रहते हैं। तब भी फिर वह जाति ही की ओर दृष्टि दौडाते हैं और इसकी विविध धार्निक संस्थाओं में बोख काले अधिक वंतन में नियत हो जाते हैं। इसके अतिहिक और भी उपाय समाज संधन प्राप्ति के अबलित दिखाई पड़ने हैं। धन प्राप्ति के साथ ही कार्तिक कियायों से अधिक विश्व होने के कारण सथा प्राप्तन परिपाटीके अनुसार उन की मान्यता क्षी अधिक होजाती है जिलसे यह असल्लियत को

देखने में लाखार होजाते हैं। वें अपने संबाधे और पर की रक्षा के भय में सुधारक वंख के विरोधी वन बैठते हैं और जो निम्दनीय उपाय सुधारकहरूं की परास्त करने में प्रयोजित करते हैं वह सर्वया नीखता और दुष्टता के परिचायक हैं। सुधारक दुल में इतनी कमताई अवश्य है कि वह धार्मिक हान में उन के रक्कर का नहीं है और उन के मिस्ताक में खुछ जल्हीपन है। बस इस आपसी फूडे अविश्वास के कारण दंघ की अमि सुलगाई जातो है और मरती हुई समाज को और भी संगया जाता है। शेडवाल में जो समस्त जैनियाँ की समा हुई थी उस में इस विशेषने जो कांन्स्ट किया वह किसीसे छिपा नहीं हैं। उस पर समाज नेताओं को दुःज प्रदर्शित करना चाहिये था, पर न्तु उपरोक्त कारणींवश तो उल्टा ही रहा है।

समाज और धर्म की भलाई के लिये उत्तम हो यह है कि दोनों दल आपसी भूटे अविश्वास को स्थाग कर प्रेमप्बंक कार्य करना सीखें। यहन् मणता का गर्स दुर नहीं है। हम अपने उन नक-युवकों से जो सबा कार्य करना चाहते हीं यही कहेंगे कि आप इन भगड़े में न पड़ें। यदि आपकों सबा कार्य करना है तो परिषद में आह्ये। परिषद् अपने अल्प जीवन में ही ठोस कार्य करने में अध-सर है। बस आह्ये और कार्य कीजिये।

--उ० सं०

कांच की शीशियां

हर साइज व हर नमूने की पक्की शोशियाँ तैयार कराकर बाजार भाष से कम मूल्य पर रवाना की जातो हैं। आवश्यकताओं की जिलकर कीममीं को मालूम कीजिये।

आर- एस० जैनह एण्ड० ब्राइसं, महाचीर भवनः विज्ञानीर ।

समाजोन्नति का एकमात्र उपाय क्रान्ति

(लेखक-श्रीगुत् माई दयाल जैन विद्यार्थी)

जिन समाज गत तीस बालीस वर्षी से जिस तरह घट रही है उसे प्रायः समान का विचा २ जानता है। हम/सरकारी मनुष्य गणना के भेजुसार, सत्तर अस्सी हजार प्रति दश वर्ष कम ही कारी हैं। आंर भय है कि हम यदि इस ही प्रकार घटने रहे ता एक डेड सी वर्ष में सर्वाया छोप हो जायंते। इतिकास में केन समाज का नाम रोप रह आयगा। इतिहासकों के बास्ते जैन भर्ग केवल एक खोज का ही विषय वन जायमा और मिन्स सीर्थ क्षेत्र आदि जिन पर कि आत हम वेशनी सं छड़ने हैं, अविनय जनक अवह मा में होंगे। कितना भवानक हुव होंगा। आंखी के आगे आते दी वहन के रोंगटे खड़े हो जाने हैं। आंबी से अंसू बद निकलते हैं। किन्तु ऐसे ऑडमी समाज में है कितनें को समाज की इस दशा से दःवित ही ! जिस संगोत्र की घटोंतरा की सनकर देश शिरो-मणि महासी गांश्री को दुःख हुआ थो, उस समाज में वेसे कितने मई, की। नगपुत्रेक और वृद्ध पुरुष हैं जिनके घटन में जानियेन समाज की इस अध-रेथां के कारण खुन को जीश देरहा हो और समा-जोन्नति के लिए सर्वस्य त्याग देने और जैन माना के सामने विक दे देने की लालायित हों। हमारे ती कीनों पर जूँ भी नहीं चलनी हम ती कुमफरणी सीद के मजें लै रहे हैं। हमारी अवस्था तो आगत से व्यत्ति हो रंडी है हमें समाज और समाजीव्यति से क्या ? देसे विचार कहत से मंत्रूची के हैं।

उनके लिए हम सहीतुभृति के दो ऑस् वहादेने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते !

समाज में क्या २ टोच और कुरीतियाँ हैं उनका षतांना मेरे लिए कडिन है सम्भव है कीई बड़ा ही मेता उन्हें गिना सके। में सो जैन समाज को संध सरफे से घुन लगी देखता है। और समाज की उस मनुष्य से तुलना करता हूं जो अपनी मृत्यू शैय्थी पर सर्वा गोपांग रोगी पहा हो और अपनी मीत की घंड़ी गिनता हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो। उर्मकं स्थागत के लिए संय्यार हो और फुछ हो घडियों का महमान हो। हमारी समाज में एक नहीं संकडों रोप ओर क्रीतियां हैं। आर्वे का आया हा खराय है। यहां दिगस्बर और इनेताम्बर के भगई। तीथाँका युद्ध, पुराने विकार बालों की दलबंदियां, पंजाब में स्थानक वासिथी में पत्नी और परम्परा पर सांधुत्री में भगड़े, बाह विवाद, बुद्धिविवाह आदि कुरीतिषा, समाज भी सैकड़ों उपजातियों भी हीन झीज देशा इत्यादि सैंकड़ों खरादिया है। भला फिर किस र का रलाक्ष कियां जांय और फिस किस का सुधार किया आय । कछ संसभा में नहीं आता । परन्त हतारा भी हुआ नहीं जाता। स्पिछिप अब इसे पाउकी के ज्ञान के लिए मनुष्यं गणना के धैक नी खें देंने हैं। जिनके देखने से हमारी कमी और सामाजिक दशाका अञ्चलानं किया जा सके ।

		सन् १६२१ ई	॰ की रिपोर्ट	
नं०	नाम प्रांत	1939	१६२१	कमी या बढ़ोतरी
ę	राजपूताना एजेम्सी	3,32,389	ર,હ£,૭૨૨	-42,404
3	भम्बई प्रांत	8,=8,542	४ = १,६५०	-=, \ 02
3	युक्त प्रांत	७५,४२७	€= .१ ११	#95,e~
¥	मध्य भारत	=७,५७१	e \$, ₹ \$	~8,148
¥	हैदरावाद एजन्सी	२१,०२६	ミニリエ は	~ ?, & \$
1	अजमेर मेवार	₹0,३ <i>०</i> ₹	१ =,४२२	~? == •
9	प्रदास	48.254	₹೪, ५£₹	{-₹,५●₹
;	पंजाव और देहली	¥20.38	४६,०१४	-0.14
	सी॰ पी॰ और बरार	७०,२५=	\$8.38	-884
•	रियासत बड़ीदा	४ ३,४६२	४३ ,२ २३	२३.६
ł	अन्य रियोसत	३,४४३	12,020	-१४२३
ţ	धं गाल	६,२०६	१३,३७६	+ 9, %00
3	मैसोर एजेन्सी	१७ ,६३०	२०,७३२	+ ३.१०२
2	भासाम	=36,4	₹,५०३	+ 2.204
Ł	विद्वार और उडीसा	४,४४०	४,६१०	+ 1,50
	बोड	१२,४=,१=२	११,७४,५६६	-58,4=8

हम प्रति मनुष्य गणना प्रति शत किस संख्या से घटने हैं यह निम्म लिखित अंकों से सचित होता है।

सन् १८६१ और १६०१ के बीच पाट पा. (पीने छ। प्रति शत से अधिका)

सन् १८०१ और १८११ के बीच ६.४ । (साढेका से कुछ कम)

सन् १६११ और १६२१ वीच ५.५७ १। (साढ़े पाँच प्रतिशत से अधिना)

(Indian Social Reformer 16 August 1924 with corrections)

यह तो समस्त भारत की बात हुई अब ज़रा और देहती के श्रीत के सम्बन्ध में कुछ अंक देते एक प्रांत का हाल देखिए। यहां हम केवल पंजान हैं। पंजाब और देहती में १६९१ सन् ई० में

नोट । यह अर्थ 'इविडयन सोक्स्यल रिफामर' १६ अनस्त १६२४ से देका यहाँ संगोधन कर दिए हैं। चिन्ह (-) कमी को और चिन्ह (+) एड्डिंग की स्चित करते हैं।

ध६०१६ जीन थे और १६११ सन् ई० से ७५६ कम को गए थे। और प्रति एक सहक्ष आदिमियों के पीछे =५३ स्त्री हैं।

पत्राव और देहला की विभवा बहिमी की

\$ 1	हिन्दू
इन-६	3.1 ·

(सदा तीन प्र॰ श॰ से अधिक) (नीन प्र० श॰)

•-३६ सर्व को विधवार प्रति सहस्र १६०१ और १६२° में निस्त प्रकार थीः—

सन् जैन हिम्दू मुसलमान १६०१ ५६ ४७ ६० १६२१ ७६ ४६ ५६

पंजाब भीर देहली में हर आयुकी विधवार प्रति सहस्रक्षियों पोछ कितनी २ हैं यह भी देख स्टीजियः-

आयु संख्या आयु संख्या ५-६ वर्ष २ २०-३६ वर्ष १६७ १०-१४ वर्ष ७ ४०-५६ वर्ष ५३० १५-१६ वर्ष ४१ ६० से ऊपर ८१५

रथ-रह वय धर देन सं के दी के मानने में किसी का सम्बेद नहीं हो सकता । जो हाल पश्जाय भांत का है बदी हाल लगभग अन्य प्रवीं का होगा। यदि अब भी सवाज अपनी आसे न क्षोलें और साप्राजिक सुधार के लिए कटियदां न हो तो यह निश्चय कर लेना चादिय कि हमारे किय आशा का कोई स्थान नहीं। सप्राज इस बुरी सरह से कम हो रही है किन्दु हमें अपने स्वार्ध धता से भी फुरस्तत नहीं यह शमं की बात है।

नोट-पश्जाब और देहरी के सावन्य के सव संक मनुष्य गणना रिपोर्ड१६२१ (Cousus Report for 1921) से लिए गय हैं। संस्था का दिग्रशंन कर बूढ़े बाबाओं की करतू की और सामाजिक अधःपतन का अम्हाजा कर की जिए। १५ से १६ वर्ष की आयु की बधवाएं प्रति शत निम्न प्रकार हैं:---

मुसलमान सि*प्*न्य २:1.8 १:1.9

(तीन प्र॰ श॰ से कम) (पौने दो प्र०श० से कम)

क्या आप ऐसी हाळत में अपने आपको सुरक्षिते सममते हैं। क्या हम यह मानलें कि जैन धर्म हमें ऐसे समय किसी भी प्रकार की व्यवस्था नहीं है सकता। नहीं! नहीं! हम भूल करते हैं! वहाँ तो साध्य लिखा है कि बच्च, क्षेत्र काल, के अनुस्तर कार्य करो और अपनी बुद्धि से काम लो तुम्हारी सब किनताप दूर होंगी। जिन यातों । पर हमारी हुप्टि पहनी चाहिए और जो समस्याप हैं वह नीचे दी आती हैं।

१ नवयुत्रकों की मृत्यु - जितनी नवयुवकों की मृत्यु हमारी समाज में होती हैं उत्तनी शायद ही किसी समाज में होती हों। इस को रोकने के लिए शार्रारिक दशाका सुधार और सदाचार के नियम का पालन होना चाहिए।

र स्थी सपान की कमी भीर विधदाओं की द्वास:—जैन समाज में मदों से स्थी कम हैं। मदं ४०,००० अधिक हैं। डेए लाख विभवायें हैं। स्था क्या उपाय काम में लाए जाएं जिन से आगे विध- बाएं कम हों और स्थी समाज मनुष्यों के बराबर हो जाय इस का सुधार कुरीति निवारण और अन्य धर्मावलियों से विवाह करने से हो सकता है। यह िवय बड़े महत्व का है क्योंगित

संसार दिग्दर्शन

समोज

पशारिये! श्री जीवद्याप्रच रिशी सभा का प्रवां वार्षिक अधिवंशन महावीर जी के मेले पर चंत सुरी १२-१३ और १४ को बड़ी तैयारी के साथ होगा। जिसमें पंड़त किला मैनपुरी की श्री महावीर स्वामी की प्राचीन मनोइ दिशाल प्रतिविव जिसे लोग जर्बैय्या कह कर उसके सम्मुख ब मास पास हजारों छोटे पशुओं की बलि हिसा करते हैं उस हिसा को सर्वया बन्द करने बीर पुज्य प्रतिविक्य को दि० जैन समाज के अधिकार में दिलाने का बास तौर से बिचार होगा सभा पति के लिये भी प्रस्ताव ता० ६ मार्च की प्र० का० कमेटी में जातिशिरोमणी श्रीमान दानपीर राज्य भूषण रा॰ ब० सेठ कल्याण मल जी इन्दौर का हो गया है।

हजार काम छोड़ कर अच्छय २ एघार एक पंध दो काज तीर्थयात्रा, मानुमिलाए और महान बहिंसा के कार्य में भाग लेने हा सुभवसर हाथ से न जाने रीजिये।

निवेदक-वायुराम बजाज मन्त्री

--- गोगहरवापी मस्तकाभियेक में अवश्य पधारिये। वड़ी मसजता की बात है कि मसूर सरकार केले के लिये पानी, रोशनी, इवालामा. सप्तार्थ महक्षमा, पुलिस आदि का पूरा पूरा इन्त-साम कर रही है। यात्रियों को उद्दरने के लिये सरकू (Tents) और भॉपड़ॉ (Sheds) का इन्त ताम कराया मया है। तस्तृ (Tents) का भाइ। १२) रुपये से १५) रु तक मेले भर का व भीपहे (Sheds, का भाइ। ९) रु से १०) रु तक मेले भर का है। समस्त जाने वाले भाइयों को नीचे पते पर तम्बू भीपहे रिकर्व रक्षने की सूचना कर देनी चादिये।

> (१) एम० एत्त० बद्ध मानैया ! मन्त्री पूना कमेरी, गैसूर !

-- बैटाएन जैन हुए मनावर में काज्युन खदी ११ को महायक्ष नामक एक अप्रशाल बैट्याय में बान प्रदर्शक नाटक मन्द्रली अलवर (जिसके मैनेजर चांदमल जी नंघरप हैं) के जैन नाटक के उपदेश को सुनकर उसी समय जैन धर्म अर्हाकार किया तथा नाटक समाज को २५) प्रदान किये। बुखरे दिन गाजे बाजे के साथ जैन मन्दिर गये बहां भी नाटक मंद्रली को ११) व भंदार में ५) विथे। इस उत्सव से यहां जैन धर्म की प्रभावना हुई।

-गैन्दालास जैन।

च्हेहली में दान चिरंजी क जम्बूप्रसाद (पुत्र लाला नेम रास जैन अपूचाल शिमले वाले) दसक लाला जानकी दास मनोहरलाल कागजी देहली ने ७५१) मिति फाल्गुन शुदी २ तारीक २३ फर्वरी सन् ६२५ में दान दिये। जिन में सं५) बीर को भी प्रदान किये हैं किनके लिये लाला जी की धन्यबाद है।

-प्रकाशक

देश

- १ मार्च को आलपार्टी का में म (सर्वहरू-सम्मलन) की सब कमेडी की बैठम, जो िन्द्र-मु•िलम-ब्रेश्न पर एक शिक्षता तैयार करने के लिये गत जनवरी के अन्तिम सप्तात में व हि गई थी. ं महारमा गांधी के सभापतित्व में दिख्ली में हुं। उपस्थित नेताओं में अलीवन्यू, पर मोतीलाल नेहर, नरसिंह जिन्तामणि फेलकर तथा स्वामी भद्रानंद जा आदि १५ मेता थे। यह सबक्र मेटी: स्वराज्य होने पर ध्यवस्थापक सभी तथा अध्य नियासिन संस्थाओं के लियं सब जातियों तथा श्रेणियों के प्रतिनिधित्व के सावन्ध्र में एक योजना तेपार कर ने और योग्यता का एयाल शब्दते हुए गीकरियी में न्यायीचित हैंग से विभिन्न जातियों के लोगी की जगह दैने के साचन्ध्र में सिफारिश करने के लिये बनाई गई थी। सब कमेटी की बैंडकें कई बार हुई, किन्तु कुछ निर्णय नहीं हुआ। महीन्मी गांधी ने कहा कि इस सन्देहजनक परिस्थिति में, किसी ऐसी स्क्रीम का बनाया जाना, जिसे संयुक्त स्कीम कहा जा सके, असम्भव है। अब सब कमेटी की बैठक अमिश्चित समय के लिये स्थिति की गई।

-लेजिम्लेटिय एसेंबली में अर्थसदस्य ने सन् १६२५-२६ का यजट ऐश किया। अपने भाषण में उन्होंने १८२३ के (बाइडे से छंकर १६२५-२६ के आय-यय के आंकड़ों की विस्तृतक्य से व्यास्था की। यजट के अनुसार इस वर्ष १३३६८०००००) की आय और १३-५४०००००) का व्यय तथा है फरोड़ २४ साल रुपये की १ जत होनी साहिये!

विदेश

पारिक्यामें प्रदे में, भारतवर्ष का जिक्र ३ माव को छिडा था। अं में जो को बोल्शेविज्म का विचार बहुत परशान करता है। ये क ति हैं, बोल-शंविक होग अपना जाद भिस् और भारतवर्ष पर खलाने का बहुत प्रयश्न कर रहे हैं, बढ़ां अपना साहित्य खुष फैलाने हैं। यही पातें उस दिन पारलियामें में कही गई, और बंगाल अहिनेस पर सन्तोष प्रशट किया शया । एक मेर्कर साहच ने फर्काया. हम भारतवर्ष पर शासन करना बाहते हैं, हमारा यह इंग्डो नहीं कि हम भारतवर्ष को छोड कर बल आयें। उनकी इस वान का किसी को इसरे से बर मे कोई खण्डन नहीं किया। यथार्थमें, बात खण्डन करने योग्य है भी मही। जो लोग कहते हैं कि अंग्रेज इस देश में इस देश के लोगोंके कल्याण के लिए हैं, वे गलत कहते हैं, और जो पंसा सम-भते हैं। विलक्क ठीक वान यही है कि वे शासन करमें के लिए यहाँ है, और जब सक बनेगा, तब तक वे इस देशके शासक बने ग्हना अपना कर्ताय समर्भेंगे। याने वहत भीधी है। दुःख है, कि इस सीधी बात तक को बहुत से छांग नहीं समझते, या समभने की इच्छा नहीं करते।

— जर्मनी ने सार्वभौमिक शान्ति स्थापित करने का एक नया प्रस्तार्च विचारार्थ पेश किया है। इंग्लेण्ड, फ्रांस, बेलिजियम और जर्मनी और विदि इस्ली चार्च तो जर्मनी पोलेण्ड और शैकोस्लोबे-किया के बीच में पंजाबती खुलहरामें हो जायं। जर्मनी की नयी स्त्रीम का सार्राश यही है। इस स्वे प्रस्तांचे को कार्य में परिणत करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जर्मनी रोज्यसे में संक्रिमलित हो। मित्र रोष्यूं की दरफ से कहा जाता है कि प्रथम इस प्रकार के संमंकीतेक साथ सायं ही फ्रेंब. ब्रिटिश और बेलिजियंस सरकारों में एक स्वतंत्र सैनिक सन्चि होनी चाहिएं। दूसरें जर्मनी को वर्सेलीज़ की सन्चि में किये गये वादी को पूरी तरह पालन करने का वैचन देना चािये। और तासिरे पोले क बीर शेंकोस्लेबिजिया की मेंस्रा-ितें संश्वयों के विषय में पुनर्वीर विचिंग होंता चाहिये। इन लक्षणों से प्रकेंट हैं कि िक राष्ट्र अंपने सैनिक प्रभुत्य को कम करना नहीं चाहतें और साथ ही फांस मध्य यूरेष की की जी जी ही हरीं की छोड़नें। नहीं चाहतां।

जगत्प्रसिद्धं बनारसी दस्तकौरी

बाँदी के फूंत भाव १) तीला कि कि सोने के चढ़े फूल भाव २।) तीला (सिर्फ बाँदी या बाँदी पर सोने का मुलक्ष्मा करेंबा के बनाने वाले सामान की सुबी)

हर अन	ह्य कस्मध	वसा ।	जनताल च	।दाम सयः	रहास	कताह उसका	ाचगत ।	
होदा	५००) सं र	१०००.	एका वस	२५७) सं	3000)	#अंधन शार	१००) स	(00)
अंग्वारी	(000) H	(000)	इंस्ट्र एक	७ ६) से	(400)	समोसरमंभीरः	बना२५०)र	18000)
पालको	१०००) से	(४०४)	#सिं्ासन	१ ००) सं	२००७)	×पञ्चमेश	३७) सं	२७०)
देवुल	३००) में	400)	#चवर एक	७) सं	44)	* अप्टमगलद्रक	१००) से	205)
हाथी का साउ	(४००) से १	(000)	#मुक्तद	१०) स	२७)	* अंग्डप्रोतिहायं	(५०) सं	२५०)
े घोड़े का साज	२६७) से	400)		४५) से	300)	#सोलहर् यपर्ने	१००) सं	400)
• यहल म	५००) सं	(00)	समोसरन	१६व०) सं	(000)	# × भौतण्डले	है। से	tool
*भीडा	५०) से	જ્ય)			i			
*नावः *स्तरी इंडी जैन सर्विट	३०) सं	40)	अंडार दीवक	t } 20) €	ने ५००	अकलशा	<i>पुरा</i> स	400)
ज़ेन सरिइर	के उपकरण	1	रचनाका मह	इ.स. १	1	त वत चादाक	२००) स	(800)
शंधकुदी	२५००) सं ध	000)	मेरह होपकी	1		बारहंदरी व	(400) 😝	4000}
लेक्दी	इन्त) सं ४	300)	रखनाका मांड्	खा) ^{युठ्छ} /	14000	बारहंदरी व अपूजनकी बरतन	३००) से	५०७)

यह काम वाजिय आहत लंकर बनवा देने हैं मिरिहाजी के काम में ३०) सेकड़ा की बाइत खेठें हैं। मनसूर कारी-मही की नकारा काम हो।)ताला और सादे काम की०) तोला देते हैं। अहस चिन्ह की बीने तैयार भी रहती हैं। अ वै रीजें साने को नेनाकर माने का मुनस्मा होता है।

पता—(१) मोती वन्द कुंड नीलाल, मांनी करेरा, वनारंस । (२) मिंधई फूनचंद जैन, कार्यालय, मांदी विभाग पेनारंस सिटी। Tel. Address— 'Singhai' Benares.

रेल से माल भेजने का कायदा

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५००, विषयसूची कं १८ पृष्ठ, मूल्य ३))

बढ़िया कागज पर ! बनारस की बढ़िया छपाई !!

मालगाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुकसान न होने पाये, वा युकसान होने पर रेल्वे कम्पनी ही जिम्मेदार समभी जा सके यह बात ब्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह से साबित होगयी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कंपनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम महत्व के कायदे, शर्ते, आदि जो कंपनियों के अलग २ अंगरेजी हैरिफों में होते हैं ये सब इस एक ही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाईकोटी के बहुत ही महत्व के फीसले भी इसमें बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक ६ हिस्सों में विभक्त है।

टे फिक मैनेनर, ओ॰ आर॰ रेलवे. लखनऊ लिखते है-"हम यक्नीन से कहने हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुत ही उपयोगी हैं।"

सुप्रिटेन्ट्रेन्ट जनगल बी० एन० रेलवे, कलकक्ता २५ । ११ । २४ को लिखते हैं—"जिन व्या-पारियों को रेलवे से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मदद मिलेगी।"

लक्ष्मानारायण वंशीलाल जी मु॰ रोल (मारवाड़) २ । ११ । २४ के पत्र में लिखते हैं-''इस पुस्तक की कहां तक प्रशंसा करें । इसमें उपयोगिता के गुर्गों का भएडार हैं । हमने आजतक व्यापारियों के फ़ायदे की ऐसी सुरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी ।''

भी बेंकटेश्वर समाचार, वस्वई-"माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकाश व्यापारियों को गुड़मक्लर्क की बात पर ही निर्मर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कायदे ठींक २ न जानने के कारण ही व्यापारियों को नित्य रेलवे भरगड़ों की भंभरें सहनी पड़ती है। ऐसा दशा में काले महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक वड़े भारी अभाव को दूर करके व्योपारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पीने दो सी क्षित्रयों का विश्वन किया है। व्योपारियों के बढ़े काम की पुस्तक है।

आईर देते साम "वीर" का नाम भ्रवश्य ही ठिखिये।

तीन कापी एक साथ मैगाने से बीठ पीठ डाकवर्च माफ्

पता---

ञ्चार० एन० काले, हाईकोर्ट वकील, उडमैन (सी० माई०)

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाचिकपत्रः



हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा । जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के पार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायं, श्रद्धत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मन।रंजन का सामान भी ख्व रहता है। काग़ज़, श्र्याई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निहर और समाज के प्रश्नों पर निस्पन्न रहती है।

渊 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्दा भेतने वालों को विल्कुल प्रुप्त

,'महावीर भगवान' $\frac{3}{4}$

भौर उनका उपदेश

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शंला पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बोन के साथ लिबी जारही हैं। यह प्रनथ जैन अर्जन सब ही के लिये उपयोगी सावित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पार्ड हैं। इस वर्ष भी महातीर जयन्ती के उपलच्य में

बीर का विशेपाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निक-लंगा। तरह २ के रहीन च सादें बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदों व जैन संसार के आधुनिक लेलकों के लेव, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयन्न किया जारहा है। यह अङ्क देवने ही से नाल्यक रक्षंगा।

शीव्र ही २॥) भेजकर**्याहको में** नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदातात्र्यों के लियं भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक−राजेन्द्रकुमार जैनी, विजनीर (यु० पी०)

श्रो महावोर जयन्तो श्रङ्क





जैन हाईन्कृत, जैन संस्कृत धर्म-विद्यालय पानीपत (पंजाब)

कि कि । साध्यनि कल्पलतेव विद्या ।

धीमान पृत्य हैन धर्मभूषण अहाराश शीतकप्रसाद हो को प्रेमण है आह पानक्षत कर हम जनमा के उन्हान से ६ नदस्य एक को जैन संस्कृत वर्ग विलान द से करतिए। हो गया है : अविधिया पर्धाना के सम्मां के साध-साध लीकिय शिक्षा में दी सम्मां है ! पर्वेशी हाओं का १०० की के क्षानीय हाया का ५) ए० मानिक काव कृति पा जाता है ! धर्मीन्याची उद्यान महानुभावी के स्थिनय निवेदन है कि इच्य दान के अवस्पर वाणी, मानना वाहि की धार्मिक संस्थाओं की तरत उना होनी संस्थाओं की भी विवाहादि शुक्र काणी में यथा अवस्प इदय की सर्थाया भेजकर इन संस्थाओं की इह नीय समा द प्रेम विवाहादि शुक्र काणी में शाना अवस्प इदय की सर्थाया भेजकर इन संस्थाओं की इह नीय समा द प्रेम विवाहादि शुक्र काणी में शानी माने श्री है। अस्प कि यह एक स्थापी की इन्ह नीय समा द प्रेम विवाहादि शुक्र काणी का शाना माने स्थापी की स्थापी

''अन्तदानं परंदानं विद्यादानमतः परम् । अन्तेत सणिका तृप्रियविक्यं बन्तु विद्यया ॥''

अश्वी-जशकुमार सिंह जैन । बैनंकर-जैन हाईस्कृत खीर संस्कृत धर्म विद्यालय, पानीपत ।



सर्वोपयेगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, एवं साहित्य सम्बन्धी उद्यक्तीटि के लेखों से विभृषित दिगम्बर जैत-समाज का एकमात्र पत्र :—

manage - code to Tours Theren

असि स्यस्पाद ११

जैनधर्मभूषगा, धर्मीद्वाकर श्रीब्रह्मचारी शीतलप्रमाद जी

अनि० उपसम्पादक

श्रीपुत बा० कामनाप्रसाद जी

भानि । भकाराक

राजेन्द्रकुमार जेनी-विजनीर (यू॰ र्पा॰)

करण विद्वालन कार्म १ सरमार्थ केंग, भूर श्वार में गुरित

श्रामार!

"चीर" का प्रस्तुत विशेषांक प्रेमी पाठकों के कर कमलों में समर्पित करते हमें परम हर्ष का अनुभव होरहा है। गतविशेषांक से जो सफलता हमको इसमें यदि अधिक मिली है तो उसका सब कुछ अप हमारे सहदय सहायकों और माननीय लेखकों को प्राप्त है। उनहीं की आवश्यक सहायता के बल पर हमने यह प्रयत्न किया था और हमारे विश्वास के अनक्ष हम उसमें उसका ही आश्रम ले सफल प्रयास होते जारहे हैं। इस हर्षापलच्च में हमारा विनम्न हृदय उन्हें कोटिशः धन्यवाद समर्पण करने को उत्किष्ठित होता है। यदि सहदय सहायकों और माननीय लेखकों की भाँति हमारे प्रेमी पाठक भी अपने न्यारे "वीर"की दशा सुधारने में अगांडी

उन्हें कोटिशः धन्यवाद समर्पण करने को उत्किएिंडत होता है। यदि सहदय सहायको और माननीय लेखकों की भाँति हमारे प्रेमी पाठक भी अपने प्यारे "बीर"की दशा सुधारने में अगांडी बार्चे तो इमें विश्वास है उसका शीघ हो 'कायापलट' होजावे! प्रेमी पाठक यदि कम से कम दो-दो प्राहक बढ़ादें तो "बीर" के सम्मुख से ब्रार्थिक कठिनाई का प्रश्न दूर होजावे और वह सुगमता पूर्वक अब से कहीं सुन्दर और मुल्यमय आकार प्रकार में प्रकट होने लगे। इस समय उसकी आर्थिक अवस्था का ही ध्यान रखकर उसकी उन्नति में धीमी चाल से काम लिया जारहा है। प्रस्तुत विशेषांक के। लिये हमें उस समय भी कतिएय अमृत्य लेख प्रकाशनार्थ प्राप्त हुये जब यह ऋह प्रेस ही में था और हमारी प्रवल इच्छा थी कि हम उन्हें इस हो बहु में सन्मिलित करलें परन्तु वही आर्थिक-भूत हमारी इस इच्छा की पूर्ति में बाधक बन गया और हम इसके पृष्ठ बढ़ाने में असमर्थ रहे। जैन-कर्म-सिद्धान्त परिचायक एक उत्तम कविता तथा सुन्दर गरपादि भी इसीकारण इसही बहु में प्रकट न हो। सकी इसका हमें ब्रह्मन्त खेद है और प्रेयक महाशयों के निकट हम इस धृष्टता के लिये क्षमा प्रार्थी हैं। जिसप्रकार लेखक महाराय "वीर" पर कृपा करते हैं उसी प्रकार पाठकगर्यों को भी अपने 'वीर' को उन्नत बनाने पर ध्यान देना आवश्यक है। आशा है पाठकगण हमारे इस नम्निनेवेदन पर ध्यान देंगे। हम विश्वास दिलाते हैं कि यदि वह दो दो प्राहक बढ़ा हैंगे तो उनका 'वीर' उनको अधिक प्रिय और रुचिकर होजावेगा। अन्त में हम अपने मान्य सहायकों और विद्वान लेखकों को पुनः धम्यवाद की सुमनाञ्जली समर्पण करते हैं और विश्वास करते हैं कि वह 'वीर' पर अपनी सङ्क्षयता बनाये रक्खेंगे।

and the line has been

י קור קור קור קור קור קור קור

P

A STATE OF THE STA

a a so a so a so a so a

विशेषांक के लिये हमें निम्न पकार सहायता प्राप्त हुई है :-

- ५०) बार निर्मलकुमार जैन आरा
- १०) ला० सुगनचन्द जैन साद्तगञ्ज, छखनऊ
- १०) ला० कपचन्द जैन गार्गीय पानीपत
- १०) सिंधई नाथ्याम जैन क्षेत्रलारी
- ११) ला॰ फुलजारोलाल जी जैन रईस करहल (मैनपुरी)
- १०) सा० चन्द्रसैन जैत वैद्य इटावा
- १०) ला॰ लक्ष्मणदास जैन इटावा
- १०) बा० चतरसैन जैन रजिस्ट्रार क्राइल
- १०) ला० दोलतराम बनारसीदास जैन खाड़ी बाबड़ी, टेइली
- १०) बा॰ धरनेन्द्रकुमारजी जैन रईस बनारस
- १०) सा० कर्स्यासास जैन वैद्य कानपर
- १०) ला० रूपचन्द जैन कानपूर

- ९०) दि॰ जैन सभापरिषद् अमरोहा
- १०) ला० बसन्तलाल जैन इटावा
- १०) इकीम बसन्तलाल जैन खरीया (भांसी)
- १०) सा० भनवानदास जैन इहावा
- १०) ला० धमरचन्द जी जैन जसवन्तनगर
- १०) बा॰ हीरालाल रतनलाल जैन सिरसाग्डन (मैनपुरी)
- १०) ला० तोताराम मधुवनदास जैन इटावा
- १०) बा० रतनलाल जैन B. A., L L. B. बिजनीर
- १०) बा० राजेन्द्रश्चमार जी जैन रईस विजनौर
- १०) ब्रह्मचारी शीतसप्रसाद जी
- १०) बार कामताप्रसाद जो जैन अलीगुड्ज
- ५) सेंड सोमाराम गम्भीरमण इन्हीर

२७६)

आप ही जैसे महानुभावों की कृपा का फल है कि जो १०० पृष्ठों के लगभग व अनेक वित्रों से सुशांभित करके हम 'वीर' का विशेषांक पाठकों के करकमलों में भेट कर रहे हैं। हम को पूर्ण आशा है कि यदि इसीप्रकार हमारे प्रेमियों की 'वीर' पर कृपादृष्टि बनी रही तो अवश्य ही 'वीर' समाज-सेवा में अवसर होगा और श्रीवीर भमनान के पवित्र उपदेश को संसार में फैलाकर जैनधर्म्म का भंडा फिर खड़ा कर देगा।

प्रकाशक 'वीर'

'वीर' पर सम्मतियाँ ।

प्रेमी सङ्ज्यों ! 'वीर' के विष्य में जो समाचार पन्नों व मुक्य २ इप्रक्तियों ने सपनी सम्मतियाँ प्रकट को हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपको 'वोर' की समाज सेवा, उपयोगिता और लोक प्रियता का ज्ञान होसकेगा । अधिक लिखना व्यर्थ है ।

मि॰ इरिसत्य महाचार्य M. A. B. L. उप॰ स॰ 'जिनवाणी' लिखते हैं:--

में "बीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता हूँ ""लेख बहुत लाभवायक और रोचक हैं। "बीर" का सञ्जालन बहुत उचमता व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है।

नारद ता० २६ मई सन् २४ में लिखता है:—

"प्रत्येक सङ्क में घुटि के बदले नयी उन्नति के लत्त्वण दीज पड़ते है। ""लेज और कवितायें सुपाड़्य और सुसम्पादित हैं। जो धर्म जिज्ञासु हैं और तत्सम्बन्धी बातों की छानवीन किया करते हैं। उनके लिय भी यह पत्र लाभदायक हो सकता है।"

श्रीमान् चम्पतराय जी जैन सभापति परिषद् लिखते हैं:--

"बीर की पूर्व उन्निति होना अवश्यम्मावी है। मैं उसकी पूर्व उन्नति देखना चाहता है।"

'जैने पहिलादर्श' लिखता है:--

ंकीर के वो शह प्राप्त हुए। लेख सुपाठ्य और शिक्षापद हैं। महिला में स्त्रियों के लाभार्य अध्ये अध्ये लेख रहते हैं। बहिनों को भी प्राहिका होना चाहिए।"

असराठी भाषा का सुमख्यात पत्र 'बन्देजिनवरम्अणिराजहंस' लिखता है:-

्विश्व विद्यासय की उच्च प्रवियों से विभूषित विद्वान् लेखक 'बीर' का सह। ध्र करते हैं। अब तक के लेख महत्व पूर्ण च पठनीय हैं।"

प० पन्नात्मल जैन श्रीमहावीरदि०जैन पाठशाला अकलतरा से लिखते हैं:--

'भीर पत्र बास्तव में यक भादरी पत्र है इसके लेख ठोस और बड़े शिक्षापद होते हैं।'

छा॰ कन्नामळ जैन M. A. जज घौलपुर से लिखते हैं:—

'बीर अपने विषय का नितान्त उपयोगी सुलिखित पत्र है। इसमें मेरा लेख झपना मेरे लिए गीरव का विषय है।"

भा शिवचरणलाल जी जैन रईस जसवन्तनगर लिखते हैं:—

"(लेख व कविताएँ समी घटनीय हैं। हर महीने की वृक्षेरी व १६ वीं ता० को 'वीर' के दर्शन हो

जाते हैं। दूसरी के बाद १६ च १६ के बाद दूसरी तारोख की प्रतीक्षा रहती है।"

मिमियों। यदि वास्तव में भापको 'वीर' से प्रेम है और उसे एक आदर्श पत्र के रूप में भाप देखना व्याहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता की जिए। स्वयं माहक विनये व सन्यों को बनाइये यथा शाया आर्थिक सहायता भी की जिए। वस यदि महावीर के उपदेश से भीर परमातमा जिन 'बीर' से भापको प्रेम है तो 'वीर' को एक दम उसत बनाकर मुक् कीम में जान डाकिए।

राजेन्द्रकुमार जैनी,

प्रकाशक 'वीर', विजनीर (यू॰ पी॰)

विषय-सची।

न•	विषय		ą y
٤	वीर शासन (कविता)	श्री॰ विजयकुमार न्यायतीर्थ	રપૂર્
ર	वीराह्महान	उ॰ सम्पार्क	रप्रध
ą	महावीरजन्म (किवता)	थी । साहित्यशास्त्री, सतीशचंद्र गुप्त व्याकरण्रत	સ્પૃપ
ß	जीवन हेतु संप्राम	श्री॰ ऋषभदास जैन	२५६
	नहीं है भीरु महा है बीर (कविता)	श्री कुञ्जीलाल जैन काशी	સ્પૃદ
Ę	जैन साहित्य की विशेषता	श्रो हीरालाल जैन पम॰ प॰ पल॰ बी॰	२६१
3	दिन्दी प्राणमिय काव्य (कविता)	श्री प॰ गिरधर शम्मी जी नवरस, काव्यासङ्खार	२६६
	जैनसिद्धान्त में सत्यश्चन की कुक्षी व उ		२७३
3	हिन्दू-सङ्गठन	श्री॰ चम्पतराय जैन वार-पट ला <i>॰</i>	२७≍
१ 0	मेर-पर्वत	श्री० भ्रार० भ्रार० वोवडे बक्तील, इरंडोल	ર≃પૂ
११	थी कुत्तकुम्दाचार्य	श्री० कामतात्रसाद जी उ० स०	રદેષ્ઠ
	मेम के पुजारी हैं (कथिता)	श्रो० विजयकुमार न्यायतीर्थ	२६≍

Gold and Silver Medalist

GUARD YOUR PROPERTY AND BUY ALIGARH LOCKS. MANUFACTURED BY

THE JAIN LOCK FACTORY ALIGARH, U.P.

Satisfaction Guaranteed best and cheepest, For price-list apply to:-The Proprietor,

THE JAIN LOCK FACTORY. ALIGARH CITY U. P

Note: - Agents wanted every where.

अपने धन सम्पत्ति, और माल की हिफ्तज़त के लिये-

जैन लोक फ़ेक्ट्री अलीगढ

के बने हुए ताले खरीदो । सस्ते और मज़बून होने की गारल्टी वेते हैं। माइस लिस्ट नीचे लिखे पते से मुख़ मँगाइये। रोशनसाल जैन श्रोपाइटर,

जैन लोक फैक्सी, अलीगढ़ सिटी, य० पी॰

नोट :- इरएक जगह एजेंटों की ज़रूरत है

सम्पादक का कर्तत्व			ર્સ્ટ
क्या झन्य जातियों में विवाह सम्बन्ध जाति भेद को भिटाने वाला और जैन समाज को हानिकारक होगा ?	} *	भी• ऋषमदास जैन बो० ए०	३०३
कबीर कविता	_		205
	१	कन्याओं का झादर्शजीवन मगनवाई	₹o≡
	ર	महिलाझौं की शिक्षा चन्दावाई	३१०
बालिका विजाप (कविता)			३१२
	Ł	दि० जैनसमाज का निर्माण सम्पादक	३१३
	₹	जातोय स्वास्थ्य । उ० स०	३१४
	कवीर कविता महिला महिमा बालिका विजाप (कविता) सम्पादकीय टिप्पणियां	श्या अन्य जातियों में विवाह सम्बन्ध । जाति मेद को भिटाने वाला और जैन समाज को हातिकारक होगा ? किवार कविता महिला महिमा १ स्वालिका विजाप (कविता) सम्पादकीय टिप्पणियां १	भया अन्य जातियों में विवाह सम्बन्ध) जाति भेद को भिटाने वाला और जैन समाज को हानिकारक होगा ? कवीर किता महिला महिमा १ कन्याओं का आदर्शजीयन मगनवाई २ महिलाओं की शिक्षा चन्दावाई वालिका विजाप (किता)

जिबयातीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक सौर पूर्ण इलाज।

हारबर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य ज़िवयातास जोस्लिन (Joslin) और एखन (Allen) साहवान के तरीक़े-इलाज जिसको तमाम विज्ञान-जगत् में प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है, के मुताबिक डा० वक्तावर सिंह जैन एम्० डी (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीक़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुभे इस तरीक़े-इलाज से कृतई आराम होगया है। मैंने महाराजा साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुभे शकर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीक़े के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है।

द० कर्नल विजय शमशेर जङ्ग-बहादुर:-Foreign Minister, Nepal. देहली ।

२— ग्राप ने इस तरीक़े-इलाज से मेरे शकर-प्रमेह-रोग को विल्कुल श्रच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकुर हूँ।

शीतल प्रसाद राज वैद्य, चाँदनी चौक देहली।

३--- असाल में मुक्ते शकर-प्रमेह-रोग ने तक कर डाला था, लेकिन आपके तरीके इलाज से बिस्कुल ठीक होगया हूँ।

जानकीप्रसाद जैन, मैंनेजर फ़ोर मिल्स, मेरठ।

ध-मुक्ते यह तरीका-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ।

मित्रसेन जैन, रईस कांदला।

अप्रि संदीपन चूर्ण नमूना मुक्त भेजा जाता है।

यह चूर्ण यथा नाम तथा गुण वाला है। जठराग्नि दीप्त करता है भूल को बड़ाता है वायु को शुद्ध करता है। अत्यन्त स्वादिष्ट है। सिर्फ /) का टिकट भेजकर नमूना मँगाइये और आजमाइये। पता—वैद्य भागीरथलाल विजनीर (यु० पी०)

19	The Digambaras in gmeral Sanskrit Literatur	} (Professor Harman Jacobi)	317
20	The Main Object in Life	(H. Warmr)	320
21	The Docleain of Kurma	•	322
२२	साहित्य समाचार		332
६३	चित्र परिचय		333
ર ઇ	संसार दिग्दर्शन		~~~

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चांद्री के फूल भाव १) तोला किया किया किया के चढ़े फूल भाव २।) तोला (सिर्फ़ चांद्री या चांद्री पर साने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची) हर अदद कम व जैसी जितने तौल चांद्री में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

होदा	५००) से २०००)	े बेदी	८००) से ४०००)	क्षयंघनवार	१००) से	loov
ग्रम्बारी	१०००) से ३०००)	4	२५०) स ३०००)	ं समोसरनकीर	स्रता३५०\स	inant
पालकी	१०००) से १५००)		७८) स १५००)	× पञ्चमेह	३०) से	200)
	३००) से ५००)		र००) स २०००)	अग्रम् कलटब्य	ं १००) स्रे	२००)
	न ५००) से १०००)		७) स २५)	ॐ म ष्ट¤तिहार्य	१५०)से	२५०)
घोड़े का साउ	r २००) से ५००)	ळनुकट जिल्लोकी	(0) et 300)	 अस्त्रात्त्राच असोल्रहस्त्रपने	१००) से	A00)
%षएणम अस्तीता '	100) Ed (000)	्र चामा स्रमोसात	४५) से ३००) १०००) से ३०००)	ॐ × भीमग् डल	३०) से	(oo)
					' (vo) 편	Noo)
चेन मन्द्रिय	्र । । इ.के. उपकास ।	्रचनाकाम	डिला } १०)स५००)	तजत चादा क	्र २००) स	(000)
जल मान्य संधकती	२५००) से ४०००)	तरह द्वापकी	की डिसा } १०)से५००) इला } ५००)से २०००	्र क्षा चर्चा	२३००) स न३००) स्रे	(anu
32.	, , , , , , , , , , ,	्रचनाकाराः 	, (H) (In King in Alice	• ()	1301

यह काम बाजिव आड़त खेकर बनवा देते हैं मिन्दरजी के काम में ३=) सैकड़ा की छाड़न खेते हैं। मनहर कारी-गरीं की नकाश काम को।) तोला और सादे काम की न्) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें भी तैयार भी रहनी हैं। 🕸 ये चीजें तावे की बनाकर सोने का मुलन्मा होता है।

पता-(१) मोतीचन्द कुर्जीलाल, मोती कटरा, वनारस ।

(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चौदी विभाग बनारस सिटी।

Tel. Address-"SINGHAI" BENARES.

गोरे भ्रीर खूबसूरत होने की दवा।

शहज़ादा निस-आफ-वेल्स की सिफ़िरिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैस्र के वास्ते बनाई थी। जिसको दिनसात मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रक्त आजाती है मंद्र पर स्याह दाग मुंद से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज हाथ पांच का फटना बगल में बदब्दार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ कर चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी खुशबू असे तक बदन में से नहीं निकलती। क्रीमत १ शीशी १।) रुपया, ३ शीशी के सरी-दार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)।

पता: - ग्रुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को आगरा।

निहायत मजबूत व सस्ती घडि़याँ।

विय सज्जनो ! हमारे यहाँ हर किसा की घड़ियां यानी जेवी, कलाई की, टेबल पर की तथा दोवार पर टांगने की ४) रुपये से लेकर बड़ी से बड़ी कीमत तक की है। हम घड़ी भेजने के पहिले उसकी मशीन व टाइम जांच करलेते हैं तब भेजने हैं जिससे ब्राहक को कियो किसा को दिक्कत न उठानी पड़े। नापमन्द माल ३ दिन के अन्दर वापिय लेलेते हैं। मज़दूती और टाइम की सचाई के साथ ही साथ यह घड़ियां दूसरी कम्पनियों की घड़ियों से बहुत सस्ती हैं। शीब्रही पत्र लिखिये। इस फहरिस्त के खलावा यदि ब्राएकों ऊँचे दाम की घड़ों की जकरत हो तो वह किकायत भाव से उत्तम जांचकर भेज दी जायगी।

जेवी घड़ियां	रु० झा० पा०	गार्यदी	जेबी घडियां	रु० भ्रा० पा०	गार्ग्डी
१-रेलवे रेगुलेटर	₫ 30	३ वर्ष	ं ११-श्रतिं सुच्रवाच	<u> </u>	3
२-लंधग्वाच	y	51	१२-ितलेग्डर	IJ=o	33
३-रास्कोप सिस्टीम	¥20	••	१३-निकेस सिलेबर	६=०	"
४- न्यूफेशनवाच	E	31	१४−छोने की	54-0-0	37
५-एक लिप्सलवाच	?0-0-0	47	्रप्-सुनहरा≍कतीकेस	ाथ १२-०-०	૪
६-सुनहरी पक्षेटवाच	T =	**	१६-चांदी को २० .	, १५ =∘	¥
७-चांदी की जैयोवाच	। १२—०—०	*11	्रऽ−सोनेकीसी <mark>प्तर</mark> मश	ीन ४०-०-०	77
≖-आटदिनको चाबो ^व	हो ११ —=−०	11	टाइमपीस ३॥) ४।	() 918)	
६-घेस्ट लोहर	3—=− ∘	ર	अलामे टाइमपीस ६।	,	
कलाई व	ही घ ड़ियाँ ।		कलाक १=) २२)	, , ,	
१०-लीव्हर िस्ट वाच	११	3	1		

नोट—डाकल्चं। >) श्रलग पड़ेगा तीन या इससे ज्यादा घड़ी मँगाने से श्रच्छी रियायत की जायगी। व्यापारियों को थोक वंद माल का भाव पत्र लिखकर पूछना चाहिए। इसके श्रलाया घड़ियों की चैने चमड़े के पहे पीतल चांदी सोने व रोल्ड गोल्ड की हरिक्स की चैने घड़ी में लगाने के सब पुजे श्रादि २ दहुत किफायत भाव से मिनता है। एकवार श्रवश्य परीक्षा करो।

पता-मेसर्स शर्मा एगड कम्पनी वाच मर्चन्ट्स बम्बई नं० १८

दिगम्बर जैन खंडेलवाल जाति का पासिक पत्र।

पाक्षिक पत्र। ।। खंडेलवाल जैन हितेच्छु ।।

जाति की विधवाओं व अनायों का हिमायती पैशाचिक कुप्रधाओं का कट्टर दुश्मन पंचा-यतियों का संगठन कराने में अग्रसर सामाजिक स्वाम्ध्यापयोगी ऐतिहासिक श्रीपन्यासिक लेखीं तथा श्राम कविताओं से परिपूर्ण प्रत्येक एच की दशमी को शोलापुर से प्रकाशित होता है।

जिसका वार्षिक मृत्य केवल २) मात्र हैं। शवण्य ग्राहक बनिये।

लगभग ५५० पृष्ठों का सुन्दर अमृल्य प्रन्थ

''असहमत संगम''

जिसमें जैनमत, घेदमत, यहिंदगों का दीन, घेदान्त, सांख्य, चैशेषिक, योग, बीदमत, ईसाई, इस्लाम, शाक्त, राधास्तामी, क्यीरपन्थ, दादृपन्ध, वियोसफी, चार्याकमत आदि आदि सब ही संसार भर में प्रचलित धर्मों के भेद श्रीर विरुद्धता के मृल कारण बड़ी सरल व सुन्दर भाषा में बताये हैं। इसके मृल लेखक व दातार हैं बाबू चम्पतगय जी जैन वैरिष्टर हर्ग्दोई। पुस्तक के घारे में कुछ भी लिखना व्यर्थ हैं। सब ही वैरिष्टर साहव की ठोस रचनाओं से परिचित हैं। श्रीर प्रथमवर्ष में बीर के श्राहकों को उपहार में भी दिया जाचुका है।

धीर के ब्राहकों को विलकुल मुफ्त मिलेगा । जो कि शीब ही धीर के दो दो ब्राहक बनाकर छौर निस्न फार्म भरकर इस पते पर मेज देंगे ।



तारीख़

प्रकाशक "वीर' विजनीर!

जयजिनेन्द्र । मैंने वीर के निस्त दो ब्राह्क बनाये हैं । उनका भु वार्षिक मूल्य बजिये मनीश्राईर भेजना हूं । इसके उपलक्त में "श्रसहमन संगम" नामक विराट श्रंथ रुपया पहुँचते ही मेरे पत पर विना मृल्य भेज दीजिये । अश्रीर रुपया दोनों ब्राह्कों को इस वर्ष का सिचन महावीर जयन्ति अङ्क नथा महावीर भगवान और उनका उपदेश नामक उपहार की पुस्तक शीव भेजिये श्रीर साम भर तक बरावर "वीर" पाचिक पत्र भेजते रहिये। दोनों पते निस्न प्रकार हैं।

१-नाम

पता व पोस्ट

२-नाम

धता व पोस्ट

क्षपीर असहमत समम रिजन्टरी द्वारा मँगाना हो तो ।=) पोस्टेज के निये उपादह नेजने चाहिएँ अर्थाद ४।≤) का मनीशार्दर आना चाहिए। अन्यथा शायकी जिस्मेदारी पर सादी बुक्रपोस्ट द्वारा भेजदिया जायता ।

मेरा प्राहक नं० पता

इस वर्ष "वीर" के माहकों को उपहार में "महावीर भगवान् श्रीर उनका उपदेश"

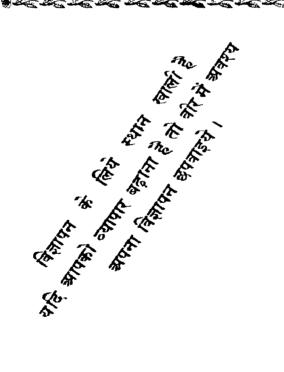
विलकुष मुफ़्त मिलेगा।

इस पवास पृष्ठों की सुन्दर पुस्तक में श्री वीर भगवान की जीवनी और उनके उपदेश के साथ साथ जैन वर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन अन्थों के प्राचीन सेकों वरन संसार के बड़े बड़े अजैन विद्वानों की साची द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से तिद्ध किया गया है। यह पुस्तक बड़ी उपयोगी और बहुमृत्य साबित होगी। इस उपहार के दानार श्रीमान लाला शिव-चरणतालजी रईस जसवन्त नगर के पूज्य पिता जी के सुन्दर चित्र भी इस पुस्तक के शुक्त अद्वित है।

शीघ ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाकर यह उपहार और 'वीर' का विशेषाक्क माप्त कर लेना चाहिए । अन्यथा पुस्तकों न रहने पर पछताना पहेगा ।

प्रकाशक--''वीर'' विजनौर (यू०पी०)





भारतीय दिगम्बर जैन परिषद्ध । उद्देश्य-

दि॰ जैनधर्म का प्रचार और जैन-समाज की उन्नति।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्रक्ति के लिये योग्य व्यक्तियों की अध्यक्षता में निम्नप्रकार चल्लेखनीय कार्य किया जारहा है:--

- उपदेशक विभाग-मन्त्री थी ज्योतिः प्रसाद जी 'प्रेमी', स॰ "जैनप्रदीप", देवबन्द । इस समय दो योग्य प्रचारक जैन धर्जैन जनता में भ्रमण कररहे हैं और एक प्रचा-रक "जैन कलालों" में (नागपुर) जो अपने धर्म को अधिक काल से भूले हुवे हैं विशेष रूप से कार्य्य कर रहे हैं।
- टे क्ट विभाग—बा॰ कामताप्रसाद जी श्रलीगञ्ज की श्रधीनता में हिन्दी, उर्दू, बङ्गला, मराठी. गुजराती आदि भाषाओं में उत्तम व उपयोगी ट्रेक्ट व पुस्तकें तय्यार कराई जागही हैं।
- बोर्डिङ ट्यास्यान विभाग-मन्त्री बा॰ बलवीरचन्द्रजी B. A., LL. B. बकील मुज-फ्फरनगर जैन बोर्डिझ व स्कूलों में व्याख्यान का प्रथन्ध कर रहे हैं।
- परीचा विभाग-मन्त्री श्री प्रोफेनर लक्ष्मीचन्द्रजी M A.L.B. इलाहाबाद जैन स्कूली व छात्र(लयों में धर्मशिक्षा की उत्तेजना श्रीर परीक्षा का प्रबन्ध करते हैं।
- इतिहास विभाग-मन्त्री बा॰ हीरालालजी $M(\Lambda, \operatorname{LL}, \operatorname{B})$ श्रलाहाबाद । जैनधर्म की प्राचीनता, सार्धभौभिकता व गौरवता के इतिहास की सामग्री एकत्रित कर रहे हैं। छोटी समितियों के द्वारा "दि॰ स्वे॰ एकता", संख्या हास के अनुसंधान आदि कई एक महत्त्वशाली कार्य्य किये जारहे हैं।
- 'वीर' पाचिक-पत्र-पूज्यवर ब्र॰शीतलश्साद जी के सम्पादकत्व में व **बा**॰कामताप्रसाद जी के उपसम्पादकत्व में नियमक्य बिजनीर से प्रकाशित होता है।

धर्मप्रेमियों से प्रार्थना

है कि परिवद के सभासद वर्ने(पुरत पर फार्म छुपा हुआ है)बशाखा सभायें स्थापित करके परिषद् के कार्य्य को सहायता पहुंचार्च। श्रीर शक्ति श्रनुसार श्राधिक सहायता भी पहुंचार्च।

सभापति :--चम्पत्राय Bar-at-Law

मन्त्री:---**रत्नलाल** B. S. C. LL. B

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन पारिषद् ।

स्थापित माघ शुक्ला १०,---२४४६ -----२०-१--२३ सभापति-श्रीयुत चम्पतराय जैन,

वैरिस्टर-ऐट-ला.

हरदोई ।

मन्त्री-श्रीयुत रत्नलाल बी॰ एम॰ सी॰ एल॰ एल॰ बी॰ विजनौर। उद्देश्य दिगम्बर जैन धर्म का प्रचार ऋौर जैनसमाज की उन्नति।

में उपर्युक्त परिपद् का सदस्य होना चाहता हूं। मैं इसके नियमों का पालन करूँ गा तथा उसके उद्देश्यों को कार्यरूप में परिणत करने का भरसक स्थलन करूँ गा और ॥) वार्षिक चन्दा देता रहू गा। में दिगस्वर जैन धर्म का अद्धानी हूं। मेरी अवस्था १८ वर्ष से ऊपर है।

द॰
नागीस्
नाम उपाधि सहिन
पिना का माम
जानि उम्र व्यवसाय
स्थान पो॰ ज़ि॰

मीट-यह फार्स भर कर भन्त्री के पास मेज देना चाहिए।

स्र मूची में सं पर नाम विष्या गया।



- महान्**मा**

n 12056/12019



वर्ष २

महाधीर जयत्ती अङ्क बार मखन २४४१

अङ्ग ११-१२

वीर शामन!

(लेजक भी विजयहमार न्यरयती है) साब सुन्दर हु:लसागर वीर जिनवर शासनम् ।

शास्तिणासक शस्ति उनागर वीर जिन व्यनुशासनम् ॥ देकः ॥ चग भवादाक सग विकासक भव्य कुसुद सुधाननस् ॥

तरन तारन जन उपारन जग जिहान उपारनम्॥ १॥ भार्यगुप्तः विगतद्गणा नीति अयगय नाशनम् ।

विरवज्ञानी सुगुणस्वानी श्रान्यबोध विभासनम् ॥ २ ॥ भीतरामी दिव्यगमी दिव्यवाणी मोइनम् ।

दिव्यम्ति दिव्यस्त्रींच दिव्यकीत्यरं शोहनम् ॥ ३ ॥ ऋद्धि सिद्धि समुद्धिच्यक हद्धिनायक श्रीधनम् ।

तार तप तन नाप नापित नपन नश्न घनाघनम् ॥२॥ सन सुगोहन मन सुमोहन मदन कानन दाहनम् ।

विश्वलोचन दृःखसाचन नीतिराज्य सुदावनम् ॥ ४ ॥ देश मण्डन मद् विदण्डन भारतीय सुलालनम् ।

संबार सोते के ज्याया स्तान्ति के पतिपालनम् ॥ ६॥ है वही गारम क्वाया वीर जो जिन शासनम् ।

"बीर" भी कहता उठा जिन बीर पे अनुशासनम्॥ ०॥

वीराह्यहर् ।



र अभ्येकार ज्यात था। हाथ को हाथ नहीं दीखता था। पथचर पथ भृष्ट होरहे थे। कोई भरक कर गहरे गर्ज की ओर सर्पट दीड़ा चला जा रहा था। कोई आकुल-ज्याकुल हो दयी का न्यों

कुल बना इआ था। तो भी विकराल काले पर्वत के पाषाणों से अपना माधा उकरा रहे थे भीर कहीं चनकते जुगनू का फिलंबिला प्रकाश धायो कि चट मगवत् उसकी ओर दीड़ पड़ें। सारांश यह है कि उस अनुल अन्धकार में सब कोई प्रकाश के लिये लालायित हो रहे थे। परन्त या घोर अन्धकार पाटकों! रात्रिका अन्धकार नहीं था। वह रात्रिन थी जो इतनी भयावह हो रही थी, यह घोर अन्धकार आज से २५०० वर्ष परले के भारतवर्ष के सामाजिक और धार्मिक यातावरण में च्याम था। लोग चोखे चक्के हरे भरे शे और अपने माउपिक प्रवाधी की दक्षता में अवलोन! उन्हें नौन तेल लकड़ी की फिकर नहीं थी। भौतिक शरीर के रक्षा का भूत सवार नहीं था। है। यदि कि सी उ**ेग में सम्यद** थे तो बहुधा भाग्मस्वतन्त्रता प्राप्त कानो का अटल आकांक्षित रिश्वास! लाग भाषे कियाकाण्ड से ऊव गर्थ थे. निरापराध पशुओं का अधिर वहाने से घदडा गये थे, अपने र मान्यिक अधिकारों के निये सब ही कांटबद्ध थे। सब ही आपसी छणा च विद्वे वीत्पा-इक मेरबाव को मेटने में संलग्न थे। इस हेतु जो क्षोभित रुद्य अवसर हो कर्मदोत्र में वाता था लोग उस ही के अनुयायी हो जाते थे। इस आस्म स्थ-सम्बता के बहिसामयी भंडा उडानेवाली में सदसे पिर्छि म० वुद्ध का नाम सभ्य संसार में विख्यात है। परम्य सब्बो अहिसा और बीरता की मृति का जन्म कर्मध्रेर में जिस समय हुया उस समय

म॰ बुद्ध को भी कुछ वर्षों के किये विराम् केना पड़ा। म० युद्ध के जीवन के ४० को १० वर्ष के अस्तराल का कोई विषर्ण ही उपरूष्य नहीं होता † और वह हो भी कैसे संकता था उस समय हो सर्वज्ञ भगवान महाबीर का सदुपदेश चहुं भीर हो रहा था। जनता को साक्षात सत्य का प्रकाश उन में मिल गया था। उनके स्यादाद न्याय सागर में गहरे गांते लगाकर यह इच्छित फल को शप्त कर चुकी थी, सप्तभगी नय-निधि से अपने धार्मिक दिवार्छ की पूर्ति पाचुकी थी। आपसी विद्वेष, घुणा और भेद सब लुप्त थे। अहिंसा, पेस, दया, अत-कम्पा का साम्राज्य था। आत्मज्ञान सहित सप-प्रचर्या का महत्व प्रत्येक को हृदयगम हो चका था। सब अहि ना,साय, स्त्रेय, शील और अपरिशहरूपी सर्वस्थकारी पञ्चवर्टा का सेवन कर दःखदाह को खो बैठते थे। भगवान महाबीर का अब्याचाध सुन्न का सदेश चहुं और ध्याप्त होगदा था। पविन-पावन-प्रथमयी बीर शासन का दिव्य भोडा सर्वात्र सर्व ठौर ऊँचा फहरा रहा थ**ा** परस्तृ दुःख आ**ज** उसकी यह गुणगरिमा लक्ष है। और संसार में बही मानुषिक यंत्रणार्थे घर कर रही है। इनको मेदने के लिये बीर शासन के बीरसकों का तैयार होजाना चाहिये । वीरप्रभु के सुखसेदेशको घर २ मे पहुंचा देना चाहि रे । वस, कार्य करनेको वर्मशेश्रमें आइदे। उसके लिये उपाय और साधन स्वयं आपको मिख जायेंगे। सर्च्यं वीर मक हो तो अनुकम्पा और दया को अवनाओं। स्याग का पवित्र पाठ भगधात के अनुपम आदर्श से ब्रहण करो। अपने पड़ांसियी और विदेशियों पर, सहयोगियों और विरोधियों पर, निज और पर सब पर सब ठौर प्रेम की सिछिछ घारा बहादो । और सच्चे ज्ञान से उनके हृदय रजा-यमान करते। अस्यथा, अपने की बीर भगवान के भक्तवत्सल उपासक कहाने का भुठा हठ छोड़ हो। – स॰ स॰

⁷ See B'gandet's Life & Legend of Gantama.

महाबीर जन्म।

(केंबब-धी • साहित्यशास्त्री, सतीशचन्द्र गुप्त व्याकरणस्म)

चारित्र नायक बदाचारी ज्ञाननिधि गम्भीर हैं।

्सोड़ दीं तप से जिल्हों ने कर्ममता जङगीर 🕻 ॥

अवप्र सर से मथद है इस्ताञ्जली श्री वीर हो ।

यहाबीर जन्म खिल् यहाँ कर जोड़ बीर सुपीर को ॥ १॥

धुविदेह मामक देश भारतवर्ष में विख्यात है ।

भन घोन्य घर्मी ध्यानियों से और भी खारूयात 🖁 ॥

मध्य इसके हुएदपुर है नान ग्राम सुद्दावना ।

करते यहां श्रेष्टी छुपत्री जैन धर्य प्रभावना ॥ र ॥

सिदार्थ नृपवर है सुरसक कुएउपुर के अधिपती ।

सवज्ञानत्रय अक नीतियारी धर्मरत्तक सन्मती॥

मियकारियो नामक मिया मियकारियो उनकी सही।

तप सत्य संयमशील से करती पवित्र गद्दा गदी ॥ १ ॥

दिन एक शयनागार में वियक्तारियाी थीं सी रहीं।

बिउकी हुई थीं चन्द्र किरुएों कुछ सभी कम होरहीं ॥

ही, हो बुका था समय आशी रात्रि से ज्यादा अभी।

िषयकारियों ने स्वप्न पोड़श शुभ समय देखे वभी ॥ ४ ॥

इपम, इस्थी, सिंह, लक्ष्मी न्हवन माला फूल की।

चन्द्र, स्रज कुम्भ दो दो पत्स्य रेखा अग्नि की ॥

सागर सरोबर सिंह आसन स्वर्ग की शुभ पालिकी।

नागेन्द्र का भावन भवन ढेरी रतनपणि राशि की ॥ ४ ॥

ये देखकर मातः वटीं कर नित्य कर्म मुशीघ ही ।

पास शिय के जाय कर उन स्वयन की कथना कही ॥

हुन कर पशू में स्वय्न सारे फल दिये बतला सही ।

सीर्थ कर महावीर का शुभ जन्म होगा ही सही ॥ ई श

मियकारिकी का हदय पिय के शुरूत सन हरित हुआ।

मामन्द् मुख् वह परे अब अब रोगांचित हुआ। ॥

श्वापाइ शुक्ता छट बड़ी नक्तत्र भी शुभ था महा।
श्वापा करें ज्यों श्वक्त सम्सी राजहंस मधान का।
पाक्षा करें ज्यों श्वक्त सम्सी राजहंस मधान का।
पाक्षी दिशा निमि चन्द्र मएहल बाँसुनी शुभ गान को।।
रत्न हिविया रत्न को किव भारती शुभ श्वर्ध को।
गर्भ त्यों धारण किया ज्यों सीप मोतो श्वर्ष को।।
होन्दर कथा परनादिकों से माहु मन इस्ती रहीं।।
शुभ गान नाच शुनृत्य कृत्यादिक सभी होते गई।
शुभ गान नाच शुनृत्य कृत्यादिक सभी होते गई।
शुभकारिणी, निचकारिणी, मनहारिणी, दुम्बदारिशी।।
सूत्र शुक्ला की त्रयोदश थी बड़ी सुखकारिणी।।
वस ससी तिथि में दुश्वा था जन्म श्री महावीर कर।
श्री बद्धिमान सुमन्मती का बीर का श्रीतवीर का।।१०॥

जीवन हेतु संग्राम।



धन हेतु संग्राम (Strungle for life) पादचात्य भौतिक विद्यान का एक प्रख्यान् सिद्धान्त है। प्रकृति (Nature) में देखा जाता है कि प्रत्येक की चित प्राणा अपना जीवन निधर रावते के लिये वाहा संसार की ओर दौड़ता है। स्वयं जीवित रहने के लिये बाहरी

हुनियां से प्रत्येक प्रकार की तकरार और लहाई भगड़े करता है। भगने जीवन के लिये दूसरों को हानि पहुंचाने च मार डालने के लिये हर तरह सैयार रहता है। आकाश पृथ्वी और जल एवं धल जहां दृष्टि दीड़ाइये यह ही मरामार का दृश्य दृष्टि आता है। नदियों में वक्षी मछलियां छोटी मछलियों का जाती हैं-पृथ्वी पर कृमि च छोटे

छोटे की है मको हों को पत्नी खा जाते हैं. छोटी चिडियों को कब्बे व चील हड़प कर जाते हैं-ब्रोर, भेड़िये प्रादि अन्य पश्गण मनुष्य की और दौड़ते है। मनुष्य भो अनाज व सःजी पर संतीप करके भेड़, वकरी, गाय, हिरण आदि का अपना भद्य पनाना चाहता है। सारांशतः इस अस्थिर संसार में प्रत्येक जीवित गणी यह दी चाहता है कि मैं जीवित रहें और मेरे जीवन के लिये कोई भी क्यों न करल किया जाय, परन्तु में अवश्य जीवित रहें। यद्यपि यह सब देखते और जानते हैं कि यहां सहा कोई जीवित नहीं रहता। सब एक न एक दिन अन्त को प्राप्त हो जाते हैं। प्रन्तू इस सब के हाते हुये भी संसारी जीव की बुद्धि पर सब अपने अभिवन के साथ ऐसा प्रवल मोह हावी हो रहा है कि वह अपने जीवन की अपने चारी ओर घाडा संसार में ही हुंदना है और उस दुंद फोज में संदार करता और दिधर प्रवाह बहाता है।

इस जीवन हेतु संग्राम (Straggle for life) को देखकर यदि चक्कर में आती है। लोग इससे शह परिणाम निकालते हैं कि जब संसार में यह नियम देवा जाना है कि एक जीवित शाणी दूसरे अभित प्राणी को कत्ल करके स्थिर रहे तो किर क्यों न कत्ल व खनरेजी करें ? जय यह प्रकृति का नियम है कि बलवान निर्वल के आधार से जीवित रहे तो फिर क्यों हाथ यांध कर बैठ ? बेएक यह बात बिलकुल ठीक है कि प्रत्येक जीवित पाणी के भीतर एक प्राकृत इच्छा इस बात का है कि बह अपने आप को कायम रक्खे। परन्त प्रश्न यह है। का 'अपना आपा" किसका नाम है ? आत्या और पूद्रगल के मिलने से जो एक मिश्रित रूप बनाइआ है, ससारी जीव इस ही को अपना आपा ख्याल करता है। इन को ही कानय रखने के लिये हजारी कल्ल व खुनरंजी करता है किन्त यह मिश्रित रूप न कभी स्थिर रहा और न हमेशा आसामी रहेगा। अस देखना यह है कि वास्तव मे अपना आपा क्या वस्तु है ? असली सद्या जीवन फिस का कहते हैं ? संसारी जीव हृदय आकर्षित करने वाले राग प्रतने, सुन्दर रंग देखने, अच्छी साधि संघने, स्वादिष्ट पदार्थ चवने और नरम ब चिकनी बीत छुने में ही असली सच्चा जीवन स्याल करता है। हरिण राग के पीछ अपनी जान खाता है। पनङ रंग की आरज में अपने आप को जलाता है। भौरा सुगधि सुंघने के चढ़र में ही अपने प्राण गबाता है। मक्खी मधु के स्वाद के लियं ही अपनी जान खोती है। हाथी स्प्रश की लालसा में ही बन्धन में पडता है और कभी कभी गढ़ में ही अपने प्राणीं से हाथ थी बेउता है। और मनुच्य इन पाँचों को ही बश होकर हज़ारी प्रकार के द्वः उठाता है। यह उदाहरण इस प्रकार के हैं कि जिन में संसाधी जीव प्रवाल में ही सरवा जीवन मान कर अपनी जान देता है। और धारमा व पुत्राल के मिलने सं जो एक एक समुक्त पर्याप अर्थात् दशा बनी हुई है उसको अपना आपा ल्याल

करता है। जीवन हेन'संग्राम (Struggle for life) वेशक एक विश्वश्यापी सिद्धान्त है। संसारी आत्मायं बाहे केसे ही अच्छी बुरी, ऊँची नीची दशा में हों अपने अस्ति व के लिये अपने आपे के जा अर्थ वे उस अवस्था में सम्भे हुवे होती हैं उस अर्थ के अमुसार ही इस सिद्धान्त पर सब अमल करती हैं। यह और बात है कि वह अपने आप के अर्थ भिष्या समभी हुई हीं, परन्तु उन अर्थी की सच्चा समभ कर सवती इस सिन्द्रात की पाबन्दी करती हैं। परन्त अपने आप के मिथ्या अर्थ समक्र कर जो इस सिटान्त पर व्यवहार करना है चह मिथ्या व्यवहार करना है और यथार्थ अर्थ सप्तक कर जो इस सिद्धान्त का व्यवहार है वह यथार्थ व्यवहार है । अस्तु जो ध्यान देने योग्य और देखने की बात है यह यही है कि "अपना आपा" अथघा "र्भ" क्या वस्तु है ? क्या यह शरीर अपना आवा है ? अथवा शर्रारसे अलग कोई घम्तु अपना आपा है? चास्तवमे शरीर अपना आपा नहीं है प्रत्युत शरीर के भीतर जो देखने जानने वाला आत्मा है बह सच्चा अपना आपा है। शरीर हमेशा निथर नहीं रहता। आत्मा अजर अमर है। हमेशा से है हमेशा तक रहेगी। आत्मा में देखने जानने की शक्ति है। शरीर में देखने जानने की शक्ति नहीं है जड है। एक शरीर हमेशा साथ नहीं रहता। नया नया शरीर आत्मा अपने भाषी और कर्मी के अन-सार धारण करता रहता है। सद्या "अपना आपा" अथवा "मे" आत्मा ही है। जो व्यक्ति शरीर को आपना आपा मानते हैं वे गलती करने हैं। जब मनुष्य गौर करता है तो 'में हूं'। ये शब्द कदावि शरीर से लाग नहीं कर सक्ता। ये शब्द शरीर के भीतर जो देखने जाननेवाली शक्ति है उसही से लाग हाने हैं। वह ही देखने जानने वाली राकि "सच्चा में" 'सञ्चा अयता आपा' या सब्दा जीवन हैं'। उस ही का गा। आन्मा-जीव-रुह-सील आहि विकिन्न भाषाओं में है। असली र भाव आभा का सारं संसार के तीनों कार्ली भूत, भविष्यत् ,

वर्तमान के सर्व पदार्थों के देखने जानने का है अर्थात सर्वक्रता और सर्वदर्शीपना आत्मा का असली निजी इसभाव है। परम्तु यह असली स्वभाव प्रगल (Matter) के मिलाप की घजह से बिगडा हुआ है। अर्थात् आत्मा का हान पुरुगछ मिलाप के कारण दवा हुवा और कम हा रहा 🕯। ऐसी दशा में आतमा अपने असली स्वधाव अर्थात अपने आपे को कोये हुये हैं। और ऐसी बशा में आत्मा पुरा भारमा नहीं है 🎚 जब कि भारमा सर्वश्र हो जाता है उस वक्त पूरा आत्मा अर्थात प्रमात्मा हो जाता है । अतप्र सर्वन्नता ही आत्मा का सच्चा झापा या सच्चा जीवन है परम्तु एक अन्य परार्थ अर्थात् पुरुगल उसकी सच्ची जिन्दगी हाहिर व कायम नहीं होने देता। दुनियाँ में आत्मा हजारहा तरह के प्रयास करता है। बास्तव में यह सब प्रयास-संप्राम सञ्चे खीवन को प्राप्त और स्थिर करने के लिये है। यह क्षय प्रयास स्वभाविक हैं। यह सब इसलिये है कि भारमा संसार में अपनी चर्चमान दशा में धाराम. इस्मीनान और थानन्द नहीं पाता। थाराम इस्मी-मान और मानन्य स्वभाविक सञ्चे जीवन में ही हाता है। जिस जीवन दशा में पर पदार्थ का मेल अथवा पर की ताबेदारी है उसमें आकुलता 🖷 बेचैनी हो रहती है। आनस्य नस्याय नहीं होता।

अतएव जीवन हेतु संप्राम (Struggle for life)
एक प्राकृतिक सिद्धान्त और प्राकृतिक नियम हैं।
एरन्तु संसार में आत्मा की गुलती केवल इतनी
है कि वह यह नहीं समकता कि मेरा असली व सच्चा जीवन क्या वहतु है ! और इसलिये वह एसके प्राप्त करने के उपाय भी गृत्त ही कार्य में झाता है। संसार में आत्मा अपना अस्तित्व पुद्गत्व में ही मानता है। अपने शरीर को ही ''में" स्थाल करता है। यदि शरीर सुन्दर है तो अपने आप को सुन्दर समकता है। शरीर कुक्व है तो अपने आप का कुक्पी समकता है। शरीर वलवान है तो कहता है में बख्यान है। शरीर क्षीण शक्कि है तो

सममता है मैं निर्क है। धन पास हैती कहता है मैं धनधान है। धन न होने की दशा में अपने निर्धनी होने की पुकार स्थाता है। धास्तव में देखा जाए तो यह सब पेदगलिक प्रार्थ आत्मा से अलग हैं। भारतवर्ष के पराने ऋषियों का उपवेश है कि आता की सुन्दरता,वल,और सम्पत्ति सब उसका क्रम व दर्शन अर्थात देखने च जानने की शक्ति है। उस ही में आस्मा को आनम्द नसीव हो सका है। धीर पौदगलिक पराधों को अपना आपा मानकर उस की ज़स्तज में संग्राम-प्रयास करता रहता है, पर-न्तु शान्ति नहीं मिलती । क्रतए**व यह सञ्जा** प्रयास संप्राम नहीं हैं। सच्चा प्रयास-संप्राम वही है कि उसे सरका जीवन ग्राप्त करने के लिये किया जाब । वर्तमान पर्याय अर्थात दशा को स्थिर रखने के लिये जो करल व म्बँरेजी की जाती है वह सच्चा जीवन हेत संग्राम (Struggle for life) नहीं है। सच्चा जीवन हेन मंग्राम वह ही है कि जो सक्म पुदुगल को कि जिसने श्रारम की असली खासियत व असाली पवित्रता का मैला कर रक्षा है, आतम से अलग करते के लिये किया जाये। इस ही सस्म पदगल को जैनाचार्यों ने कर्म के नाम से विक्यान किया है इस ही सुक्ष्म पृहुगल से आत्मा में नीखता च कोघ च लोभ आदि उपन्न होते हैं कि जि**स 🕏** कारण आतमा अपने असाखी इत्रभाव अर्थान् पर्राताम संगिरा हुआ है। इस जो लडाई जो संग्राम नीचता-मृद्ता-कोध काभादि को परास्त करने व शरीर व इन्डियों च पुदुगल अर्थात कर्म को निरोबिस करने के लिये किये जाते हैं वह ही सच्चा जीवन हेत् संग्राम (Struggle for life!) है। इस लिये जीवन हेत संप्राम के सिद्धान्त पर अन्य जीवित प्राणियों का करूत स नाश करमा अध्यया पीड़ा पहुंचाने को उपयुक्त उद्दराना ठीका नती है। जीवन हेत् संग्राम का सिद्धान्त जुद्धर होक है परन्तु संसारी जीव अविद्या के कारक था ने भहिताय का सच्या ब्यक्य न सम्म कर इस तिदास्य का गळत ध्यवहार करते 🛍 शीक

का यथार्थ अस्तित्व अन्य जीवीं पर दया व अर्जु-कम्पां करने पर्वजनका उपकार करने से ही प्रगट पर्ग स्थिर होता है। दूसरों को अरभार करने से महीं होता।

यह यात बेशक ठीक है कि भाष व कपाय व कर्म अर्थात् ध्रेम पुरूगल जिससे आत्मा बंधा हुआ है एकदम परास्त नहीं हो सकते। संसार में कोई संगूम इससे मधिक कठिन व अधिक समय चाह-ने वाला नहीं है। यह संग्राम बाहिरी दुनियां से नहीं बिक भीनरी दुनियां से है। इसमें पुदुगल से सहा-यता लेनी पड़ती है। बिना शरीर को सहायता के आत्मा उन्नति नहीं कर सकती। शरीर की मदद के लिये शरीर को खिलाने पिलाने की जहरत है। भरीर को बिना खुराक आदि दिये यह कार्य नहीं कर सकता। शरीर ध इन्द्रियों को परास्त करने से भेरा यह भाव महीं है कि खाना पीना आदि छोड़ कर शपने आप को हलाक कर दिया आय। बिल्कं खाना पीना पर्व अन्य शारीरिक आवश्यकताओं को पेसे बेज़रर (अहानिकर) ढंग से प्राप्त करना ब ध्यवंहार में लाना चाहिये कि जिसमें दूसरे जीवित प्राणियों को कप्ट न हो। उन को जहां नक हो सबे हानि न पहुंचे इसी का नाम शहिंसा की पायन्दी करना है। जिस पृकार आत्मा उन्नति करती जाती है उसी प्रकार पुद्रगल व शरीर की कम ज़करत पद्रती जाती है। जिस समय आत्मा अतीव उत्कृष्ट पद्र पर पहुंच कर अपने असली स्वभाव को पूरा प्राप्त कर लेती है तो किर पुद्रगल से अलग हो जाती है। और पुद्रगल की कुछ ज़करत नहीं रहती। उस समय आत्मा प्रमात्मा हो जाता है और किर किसी संश्राम या इस्ट्रगल (Struggle) की धायश्यका नहीं रहती।

-श्रुषभदास जैव ।

नहीं है भीरु महा है वीर।

किलिल मंत्रन हरू साहस धीर । नहीं है भीर पहा है दीर ॥ दीप अष्टादश सहस्र निवार । शुद्ध वन बूक्तवर्ध को धार ॥ राग दोषादि सकल परिहार । अहिंसा वन पर करि अधिकार ॥ रहे निश्वल ज्यों निर्मल नीर ॥ नहीं है ० ॥

मेह तिन पृह, कुटुम्ब, गो, धन । धान्य, धन, बल्लादिक, भूषण ॥ दास, दासी, बरतन, बोहन । तजे बहिरक्ली दसों साधन ॥

चतुर्दश श्रन्तर डारे चीर ॥ नहीं है ।।

भवादिक सुबस्य तर्क इच्छा । महावृत श्रेण्ठ लई दीचा ॥ माप्त परिपृशो उटन शिक्षा । करे हैं वे ही सत्त्व रक्षा ॥ पृथक्करित्वियानीर ने क्षोर्॥ नहीं हैं ॥ श्चसन हित शुकुल भव्य के द्वार । जात मग ईयसि मिति विचार ॥ दोष विषालीय टारं इक वार । स्वल्प निज पाणि लेत आहार ॥

श्चजाची बनवासी गम्भीर ॥ नहीं हैं० ॥

प्रीच्म गिर शीस ध्यान धारे । शीत सरिता आसन मारे ॥ मेइ बरसक तक तल टाड़े । विनत नहिं धाम मेह जाड़े ॥

सर्वे झिनि शीनल ठंड समीर ॥ नहीं है ।।

यदिष ना भोवत दन्त न स्त्रंग । तदिष हैं हदेय शुद्ध शुभ रङ्ग ॥ विराजे कएठ स्थाद सत भंग । रंगे हैं स्नात्मरंग सर्वङ्ग ॥

रंचना रहे कभी दिलगीर ॥ नहीं है ०॥

तपे तप द्वादश शुद्ध चरित्र । धर्म दश सेनत सदा पवित्र ॥ कांच क्रचन सम शत्रू वित्र । विचरते सुप्ति सहित सर्वेत्र ॥

कर्म की काटन नित्य जंगीर ॥ नहीं हैं० ॥

न निज निन्दा सुनि होते कुद्ध । राग दोषनते एहे विरुद्ध ॥ सदा आरम्भन ते हैं शुद्ध । करे नित कर्म शत्रु से युद्ध ॥

लिये कर स्याद्वाद समशीर ॥ नहीं हैं० ॥

करें नित पृति क्रमण आसन । शयन भूपर वह्यु एकामन ॥ परीसः सहेत दुःख नाश्चा । मोह सेना पे करे शासन ॥

शहंशाह होके शाह फ़कीर ॥ नहीं है०॥

विराजे दश लाज्ञास सिर छत्र । ज्ञामा संतीप कवत के वस्त्र ॥ तपो वन्त ब्रह्मचर्य से अस्त्र । तिये दिग्विगय करे सर्वत्र ॥

न्नपक नायक केवल वलवीर ॥ महीं हैं० ॥

भाष से संवर का भाता । बन्धका ब्युद तोड़ खाला ॥ निर्जरा नर्जर कर डाला । मोचा का खोल दिया ताला ॥

मिटादी कुञ्जी की भव पीर ॥ नहीं हैं०॥

-पुटर्जी लाल जेन, काणी।

वीर 👓



"तज्जास्त्यमुल्य रायबहादुर योमान् सेठ माणिकचंदर्जी सेठी, भानरापाटन ।"

''(श्रु'स) । द० जन पश्यिद के संतप्त्र सभापात । ।

"Tayar ul-Mulk, Rai Bahadui Stìmán Seth Mānik Chand ji Sethi, Jhalrapatan " "Ux-President of the Mi-India Dig Jama Parishada"

जैनसाहित्य की विशेषता।

(खें 0-श्री हीराखाल जैन एम० ए० इल । एक वी ।)



न साहित्य की विशेषता बतलाने से प्रथम
यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत
होता है कि साहित्य किसे कहते हैं व
जीन साहित्य से क्या अभिप्राय है।
साहित्य की परिभाषा देना बड़ा कठिन
है। जिस प्रकार 'संज्ञा वस्तु के नाम

को कहते हैं'। ऐसा कहकर संज्ञा की परिभाषा दी जा सकती है, उसी प्रकार साहित्य की कोई सरल परिभाषा नहीं दी जा सकती। अतः साहित्य का क्या क्षेत्र है व उसमे किन २ पानों का समावेश होता है, हमें यह जानने का प्रयत्न करना चाहिये। बाह्य जगत के स्वरूप को देखने की शक्ति तो सभी नेप्रवान जीवोंमें है, पर उस स्वरूपको देखकर उस को अपने मनस्परल पर अद्वित कर छेते, उस पर विचार करने व तत्संबन्धी अपने विचानीको दूसरी पर प्रकट करने की शक्ति केवल मनुष्य ही का प्राप्त है। इस शक्ति के अभाव के कारण ही पशु निज व पर के धनुभवांसे कोई लाभ नहीं उठा सकते ध्यांकि उन अनुभवों को स्थायी बनाने के कोई साधन उन्हें उपलब्ध नहीं है और इसल्चिये से किसी प्रकार अपनी उन्नति करने में असमर्थ हैं। पर मनुष्य दूसी शक्ति के प्रभाव से अपनी उत्तरीत्तर उज्जित कर सकता है, इसी कारण यह कहावन एक प्रकार से सत्य है कि-

"We call our ancestors fools

the water as we grow.
Our wiser sons will call us so."

अर्थात् स्यो २ हमारी बुढिमसा बढ्ती जाती

है त्यों २ हम अपने पूर्वजों को मूर्ख कहने लगते हैं। हमसे अधिकतर बृद्धिमान् हमोरी भावी सन्तात हमारे लिये भी ऐसा ही कहेगी'। यह इसी काटम सम्भव है कि मनुष्य में अपने अनुभवों को अवसी व अपनी सन्तान को स्थायी सम्पत्ति बनाने क शक्ति है। गहरे भूतकाल में निमग्न हमारे पूर्वजी है न जाने कितने सांच विचार और परिश्रम से अहिल ष्टारा अन्न पका कर खाने, हळ हारा जमीन जोत कर अन्त उत्पन्न करने, लकड़ी, ईंट, पत्थर आहि 🤄 मकान बनाकर रहने च प्रकृतिप्रदश्च हई,कपास आ सं सुन्दर वस्त्र बनाकर पहनने जैसी सभ्य-किल ओं का अविष्कार किया होगा **पर ये सद** हा हमारे लिये अब बिलकुल साधारण होगई हैं. 🏳 के त्थिये हमें कोई विशेष कष्ट नहीं उठाना पहर इसी प्रकार संसार की प्राकृतिक शक्तियों जैसे 🕾 चन्द्र, घ्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, षायु, व मनुष्ट ः आन्तरिक शक्तियों जैसे, आत्मा,मन,बुद्धि, व हराहर के मानसिक विकारी जैसे कोध, मोह, ईच्यी, न्य द्वार व मनुष्य के बाह्य-आचरणी आदि के रिएएप हमारे पूर्वजी ने जो कुछ सोचा, विवास व भवना किया वह परम्परा से हमें सहज ही बात है एक है। इन सब मानबीय अनुभवीं और विकारं क प्रतारी- करण ही साहित्य **कहन्यता है। कोई क**िल अपने विद्यारों को शाद ध्वति से प्रकट करता ह कोई जिलका, कोई चित्र हारा और कोई मुर्सि कै र्मात व ६क्तकारी खुशई आति द्वारा । विस्तृहरू सं यह सब साहि व के अन्तर्गत है। इस दृष्टि 🗝 हम सन्दर्भ के सभी अनुभवों और विचारों के प्रकर् करण को साहित्य कह सकते हैं। नाचना, राध हंसना, राजा आदि भी एक प्रकार का साहित्य है

क्योंकि ये सभी मानवीय हृदय के उनुगार हैं। एक सीधे साधे प्राप्त-निवासी किसान का संध्या के समय आग वापते हुए अपने लडकों को अपनी खेती के अनुभव सुनामा भी साधित्य है और शहर के रक्र-मञ्च पर खेले जाने वाले नारक में भी साहित्य है। यह मध साहिन्य का विस्ततरुप है। इस सा-हित्य का अधिकांग अस्थायी है, और इस कारण साधारणतः यह साहित्य की गणना में नहीं लिया जाता । अधिकतर इस साहित्य के केबल उसी भाग को साहित्य का नाम दिया जाता है जो किसी प्रकार का स्थायीक्षप धारण कर मनुष्य-समाज की स्थायी सम्पत्ति वन जाता है। भाषा व चित्रण साहित्य को स्वायी बनाने के मुख्य साधन हैं। यह कहना तो यवार्व नहीं होगा कि इन दोनों साधनी में भाषा ही अधिक प्रभावशाली साधन है, क्योंकि मानबीय हुद्य की अनेक भावनाएं जिस खुवी, जिस कौशल और प्रभावशीलता के साथ चित्रकार जिस अपनी छेलनी के थोड़े से घुमाव से प्रकाशित कर सक्ता है यह लेखक अपनी पुस्तक के हजार पृष्ट क्रिब कर भी नहीं कर सकता। पर चित्रण का क्षेत्र संक्रिकत है। और षद हरएक व्यक्ति के लिये सुलभ भी नहीं है। इससे विपरीत मापा का क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण है। भाषा-हारा मनुष्य के सभी प्रकार के अनुभव व विचार प्रकट किये,जा सकते हैं और वह सभी मनुष्यों को सुलभ हैं। इस कारण विशेष कर साहित्य का केवल वही अङ्ग साहित्य-पद्यी से विभवित किया जाता है, जो भाषा हारा पुस्तका-कर होकर मानवसमाज की चिर-स्थायी सम्पत्ति बन जाता है।

इस पुस्त कास्व साहित्य के उस भाग की

जैन साहित्य की संझा देने हैं जो जैन धर्मावलवियाँ द्वारा समय २ पर उत्पन्न हुआ है।

हम जपर कह आये हैं कि साहित्य मनुष्य के अनुभवों और विचारों का प्रकटीकरण मात्र है । अनुभव और विचार मनुष्य की बाह्य परिस्थिति सं उत्पन्न होते हैं। अतः साहित्य का समाज व देश के इतिहास देंसे धनिष्ट सम्बन्ध है। किसी साहित्य का स्वरूप उसके समकालीन इतिहास को जाने विना टीक २ नहीं समभा जा सकता। जैन-साहित्य पर जैन-धर्म की छाप लगी हुई है। इसलिये उक्त माहित्य की विशेषता समभने के लिये जैन धर्म का थे। इस्ता इतिहास जान लेना थावश्यक है। यस तो यह है कि भारत वर्ष के प्राचीनतप द्वितास में जब तक हम गहरे नहीं पैठेंगे, तब तक जैन साहित्य (की पूरी २ विशेषता ह्यारी स्ट्रांभ में नहीं आसकती। क्येंकि जैन सा-हित्य के मुलाधार जो सिद्धान हैं वे पुस्तका पढ होने के समय ही किसी व्यक्ति-विशेष के मस्तिष्क में उत्पन्न नहीं हुए। उनका सिर्लासला बहुत पुराना है। कोई सिउान्त तवतक स्थायी साहित्य में स्थान नहीं पासकता जय तक कि वह समय की कर्माटी पर करना जाकर टीक न उत्तर जाय । यह नियम प्राचीन काल के लिये अब से कई गुणा सन्य था क्योंकि प्राचीन काल में लेखन कला का यहत अधिक प्रचार न था, और धार्मिक सिद्धाग्तों को ् लोग भंधी की अपेक्षा गुरु के मुख से ही सीवना अच्छा समफते थे। उपलब्ध जैन-साहित्य जैन-धर्म का अपेक्षा बहुत अर्थाचीन है। पर नौसी उसमें जेनधम की शर्चानता की आभा विद्यमान है। महाधीर स्वामी ने जिस समय जैन धर्म का उप-

देश देना प्रारम्भ किया था, उस समय जैन धर्म काई नया चलाया हुआ मत नहीं था। यह इति-हास-सिद्ध बात है। पर उस समय की सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति ने उन सिकान्तों में नई रोशनी, नया तेज, नई शक्ति ला दी थी। धार्मिक कियाओं में घार हिंसा, मनुष्य के धार्मिक और सामाजिक अधिकारों में भारी विदमता से उडिग्न जनता ने अहिंसा और श्रामिक-समानता के सिद्धा-न्तों को बड़े चाव से अपनाया । इन उच्च आदशी को रुकर ही जैंन साहित्य की उत्पास हुई थी। केषल हान सम्पन्नावस्था में महावीर स्वामी की जिब्ध ध्वमि से उस समय में प्रचलित अनेक (ग्रंथी के अनुसार तीन सी त्रेशड) प्रती का कण्डन ही कर जिन दार्शनिक सिद्धान्तों घ घानिक और सामाजिक नियसीं का प्रशिपादन उसमें हु रा उन सब का समावेश उनके शिष्यों ने बारह अताही मे किया ये बारह श्रुताङ्ग जैन साहित्य की सव सं प्राचीन कृतियां थी। उन में जैन सहर्तियों के सारे अनुभवों ओर विचारोंका निचोड़ था। इनकी रचण उस समय की बचलित भाषा झर्ह्य-मागधी में दुर्ग थो जो उस समय के गिहित अगिहित सभाके लिये सुबोध थी। महाबीर स्वामी की दिव्य ध्वति सारी जनसा को उपकारकर थी । इस लिये सम्कृत को छोष्ड इसी जीती जागनी भाषा में उनके उपदेश की रचना करना ठीक समका गया था। ग्वयं उनका दिव्य उपदेश पशुओं तक को बुद्धिगस्य था। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि ये श्रुताङ्ग कभी प्रतकार ए नहीं हुए। गुरु-शिष्य परम्परा से इनका अध्ययन होता रहा। पर यह अध्ययत-प्रणाली थोडे ही काल में देश की राज नेतिक और सामाजिक परि

स्थितियों में घोर परिवर्तमों के कारण शिथिल पह गई औरश्रुतांगोंका लोप होने लगा। जदतक प्रमाणी के लिये सर्वज्ञ के ही वाक्य प्रस्तुत,थे तबतक धर्म में कोई भारी मतभेव होने की सम्भावना न थी। पर भुतांगां के विच्छे द के साथ ही साथ समाज में मत भेद खड़े होगये। दिगम्बर ध्यंताम्बर सम्पृ-दायों के अलग होने का बड़ा भारी मूलकारण यह श्रुतांगां का विच्छे द ही जान पड़ता है। इस प्रकार इस साहित्य के लीप से एक धार्मिक और सामाजिक बखेडा खड़ा होगया जो श्राज दो हजार वर्षों से भी अधिक सतय में तय नहीं हो सका। वेदेरं की रक्षा हुई। ईसार्थ्या ने पार्श्वल को नष्ट नहीं होने दिया, मुसळनानें ने फुरान शरीफ़ सुर-क्षित रक्खे, पर धन्य भी जैन समाज ! मृने अपने मर्यादा-पूरुष के बचनों को ऐसी सुगमना से नष्ट हो जाने दिये।

श्वेताश्वर सम्प्रदाय ने पीछे धुतांगाँ के उद्धार का प्यत्न किया। पर उन्होंने जो सामश्री एकाश्रित की वह दिगम्बर सम्पृदाय को मात्य नहीं हुई । इवेतास्वर सम्पृदाय के मतानुसार भी उन के सकित किये हुए ग्यारह सूत्र, मूल धुताहीं के असली कप नहीं है। तैंभी इन ग्यारह अंभी का भारी मूल्य इस बात में है कि उनमें सर्व मागधी भाषा के नमृने रक्षित है। यद्यपि ये धुताही विक्रम की छटवी शताब्दि में रचे जाने के काम्य अर्छ-मागधी भाषा का वहीं कप पुकट करते है जो छटवी शताब्दि में खड़ा किया जा सक्ता था।

श्रुताष्ट्रीं का छोष होगया पर उनके सिद्धान्ती का नहीं । बहुत श्रीझ जैत सिखान्त्रीं को प्रतिपादन करने बाळे नथे स्थतंत्र ग्रंथीं की उत्पक्ति हुई । इस

गृंधों की रचना में भी आचार्यों का यही लक्ष्य रहा कि वे जन-साधारण को उपयोगी हों। इस कारण से भी प्राकृत भाषा में ही रखे गये। विक्म संबत की पहली शताब्दि के लगभग देश में शीर-सेनी प्राइत का प्रचार था। तःकालीन आचाय कुम्द कुम्द स्थामा ने अपने गुधीं की रचना इसी प्राकृतमें को और उनके पृथ्वात् होने वाले आचार्यों जैसे फार्त्तिकेय, वहकेर, नेमिचन्द्र आदि ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। यही नहीं। बिक्रम से पूर्व तीलरी शताब्दि में भद्रवाह स्वामीके नायकत्व में जो दिगम्बर संघ कर्नाटक प्रान्त में आया धा उसने धारे २ इक्षिण भारत में जैनधम का नुब प्रचार किया। इस धर्म प्रचार के लिये उन्होंने अनेक साधनों का अवलम्बन किया जिनमें भाषा-सम्बन्धी भी एक साधन था। हाल में ईसाई धर्म के प्रचारकों ने बाइबिल के अनुवाद के लिये सैकड़ों भाषाओं को पहलीबार ही लिपि-बद्ध किया है। प्राचीन जैन गुरुओं से यह साधन छुपा नहीं था। उन्होंने कर्नाटकी और तामिल मापाओं में गुंध लिखकर इन भाषाओं को साहित्यिक रूप दिया । विक्म की नेरहवीं शताब्दि तक इन दोनी भाषाओं के साहित्य की बागड़ीर सर्वधा जैन लेखकों के हाथ में रही। विक्रम की छटवीं शता-ब्दि से लगाकर तेरहवीं शताब्दि तक जो न्याय ध पौराणिक गृथ रचे गये वे अधिकाँश संस्कृत में हैं। इसका कारण यह है कि इस काल में जैन आबायों को धर्म रक्षा के लिये भिन्न २ स्थानों ब राज समाभी में ब्राह्मण और बीज टार्जनिकों के साथ बाद-विवाद करना पडा था। समन्तमद्रो-बार्य ने पटना और काशीखे लगा कर कार्स्स तक

व ढाका से माल्या और सिन्ध तक भ्रमण कर अनेक पर-मत-बादियों को परास्त किया था। इसी प्रकार अकलद्भदेश, प्रभाचन्द्र, विद्यानन्द आदि आचार्यों के भी बौद्ध और हिन्दु नैयाबिक से शास्त्रार्थों की कथाएं जैन साहित्य में पाई जाती हैं। इन देश व्यापी, शिक्षित समाअ के सन्मृत्वहाने वाले शास्त्रार्थी के लिये जैनाचार्यों की संस्कृत भाषा का अवलम्बन लेना पड़ा, और उस में भी उन्होंने अपना अपूर्व पाण्डित्य प्रकट किया, जिस के प्रमाण-स्वरूप उनकी जैन-न्याय पर अनेक कृतियां विद्यमान हैं। इस का यह तात्पर्य नहीं है कि संस्कृत का अध्ययन जैताचार्यों के लिये इस समय काई नई बात थी। शाकटायन व्याकर्ण, और जैनेन्द्र व्याक्तरण संस्कृत जैनसाहित्य की उत्तम अार प्राचीन सम्पत्ति हैं। विक्म की पहली शताब्दि में उमास्वामि आचार्यने तस्वार्था-धिगम सुत्र की रचना संस्कृत सुत्रों में की, जिसमें उन्होंने ब्राह्मण सब-कारों से कम पाण्डित्य प्रकट नहीं किया। जैनाचार्य यथावसर देश में प्रचलित सभी भाषाओं का उपयोग करते थे इतिहास से ।सज्ज है कि विक्म की चौथी शताब्द में, गुप्त वंशी नरेशों के राजस्वकाल में संस्कृत भाषा का देश में किछ अधिक प्रचार बढ़ा। हिन्दू पुराणों की रचना इसी काल में हुई। भर्म प्रचार में सदा कटिबक्क और जागृत रहते वाले जैनाचार्यों ने भी संस्कृत की बढती हुई लोकवियता को देखकर संस्कृत में ही अनेक जैन पुराणी भी रखना कर डाली। इससे प्रथम जैन-पुराण पारुत भाषाओं में रखे जाते थे यह 'पहण चरिया नामक पुराण से सिद्ध है जो सम्भवतः धिकुम की पहली

श्रुताब्दि का रचा हुआ है। धिक्रम की आठवीं शताब्दिके लगभग पश्चिम भारत में अपभुंश भाषो सुप्रचलित हुई। उस समय में जैनाचारों ने सैकड़ी गुंध इसी भाषा में रचकर आधुनिक भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती आदि की नीव डाली। क्यों कि यह भाषा अशिक्षित व कम शिक्षित व्यक्तियों में ही प्रचलित थी इस से इस भाषा में केवल पौरा-जिक, कथात्मक व थोडे बहुत । उपदेशात्मक गूंथ ही रचे गये। गहन-दर्शन-सिद्धान्तीं को इस भाषा में रखने की आवश्यका नहीं समकी गई। स्वयंम्भू चतम्म् ल, पुष्पदन्त, धवल, श्रीचन्द्र, धनपाल, पद्मकीत्ति, कनकाभर, सिहसेन आदि इस भाषा के महा कवियों के बड़े २ पुराण व कथात्मक गुन्य आज हमारे प्राचीन गुन्थ भण्डारों की शोभा बढ़ा रहे हैं। खेद है हम अब तक उनका और कुछ अधिक उपयोग नहीं कर सके। अपभूश भीषा के परचात ही हिन्दी गुजराती व राजस्थानी आदि श्राजकलको भाषाश्रीका काल श्राया । इन भाषाश्री के भी प्रारम्भिक गुंथ जैन साहित्य में ही विद्यमान हैं। रास गृथ, जो बहुधा गुजराती भाषा के कहे जाते हैं यथार्थ गुजराती, हिन्दी व राजस्थानी भाषाओं की समार सम्पति है। उनमें जितने गुजराती भाषा के लक्षण हैं उतने हिन्दी के भी हैं। हिन्दी भाषा के काल में बनारसीदास, भूधरदास, दौलतराम आदि ऊँचे दर्जे के कवि हुए हैं।

यहाँ दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों और प्रम्यों का ही उल्लेख किया गया है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय की विकृम की छटवीं शताब्दि तक की सब से बड़ी साहित्यिक सफलता का नमूना उन के संकलित किये हुए ग्यारद श्रुताक हैं, जिनका

उल्लेख ऊपर किया जा खुका है। इसके पश्चात उनका कार्यक्षेत्र पश्चिम भारत में ही संकृचित रहा और वहां वे विशेषनः ग्यारह अड्डो पर भाष्य टीका चुणि आदि छिखने में दत्त-चित्त रहे । महाचीर स्वामी के नाम से सम्बद्ध म्यारह श्रुताङ्गी को पाकर उन्होंने कोई छः शताब्दि तक किसी विषय पर कोई स्वतंत्र मारी मंथ लिखने की आवश्यका नहीं समभा । विक्रम की बारहवीं थार तेरहवीं शताब्दि में गुजरात के सोलंकी राजाओं को श्वेताम्बर आचार्यों ने जैन धर्माष्ठ-म्बी बनाया । यह काल यहाँ श्वेताम्बर जैन साहित्य के अतुल वैभव का था। दर्शन, न्याय, पुराण, व्याकरण व कोप के अधिकांश स्वतन्त्र ग्रंथ इसी समय लिखे गये। इस सम्प्रदाय के सब से बड़े आचार्य हमचन्द्र इसी काल में हुए जिन्हीं ने उपर्युक्त सभी विषयों पर स्वतन्त्र प्रन्थ रच कर श्वेताम्बर साहित्य की भारी सेवा की। इनसे कुछ समय पहलं होने वाले सिद्धपि आचार्य का नाम उल्लेखनीय हैं। उन्होंने उपमितिभव प्रपञ्च कथा नामक एक रूपक गन्ध लिखा, जो संस्कृत साहित्य की अतुल सम्पत्ति है। इस काल में श्वे-ताम्बर लेवकों ने अपभृश और विशेष कर रास (प्राचीन हिन्दी गुजराती) साहित्यं की रचना में अच्छा भाग लिया।

यह जैन साहित्य के बाहारूप का निदर्शन हुआ। इसमें जैन साहित्य की यह विशेषता पाई गई कि वह किसी एक भाषा में सम्बद्ध नहीं रक्ष्या गया। जैनाचार्यों ने सदेव अपने सिद्धान्तों को शिक्षित व अशिक्षित, पण्डित व अज्ञानी सभी के कानों तक पहुंचाने का पूयत किया है और

इस तेलु उन्होंने जिस समय व जिस प्रान्त में जिस भाषा को सर्व-सुबोध पाई उस समय उन्होंने अपने साहित्यको उसी भाषा का जामा पहनाया। ब्राह्मण साहित्य भो एक भाषा में नहीं है। वेदों और पुराणों की भाषा में यड़ा अन्तर है पर यह अन्तर और किसी कारण नहीं केवल एक ही भाषा के भिन्न २ काल में भिन्न २ क्यों के कारण हैं। वेदों की भाषा ने ही हजारों वर्षों के जोवन के पश्चात् पुराणों को संस्कृत भाषा का रूप धारण किया है। बौदों ने भी अपने धर्म का प्रचार देश की प्रचलित भाषा में किया पर उनका साहित्य केवल पाली भाषा में ही रचा गया है। उसे संस्कृत के अतिरिक्त भारत की अन्य भाषाओं में प्रकृट होने का अवसर नहीं मिला।

अब हम जैन-साहित्य की आभ्यन्तर विशेषता पर विचार करेंगे। स्थल रूप से समस्त जैन काहित्य दो भागों में विभक्त क्या जा सका है. एक धार्मिक और दूसरा होकिक। होकिक साहित्य से मेरा तात्पर्य उन गुन्धों से है जो ऊपर से ही साम्प्रदायिकता व धार्मिक-पश्चपात को किये हुए नहीं हैं। जैसे काव्य, कथा, व्याकरण, कोष ब्रादि गुन्ध । जैन साहित्य के ये दोनों ही भाग सुब पुष्टं हैं। यथार्थ में धार्मिक पद्मात की द्रुष्टि से भी इन दोनों भागों में केवल अपेक्षा कृत ही अन्तर है सर्भाधा भिन्नता नहीं है । जैना-चार्यो द्वारा रचित काच्यो व कयाओं पर तो जैन धर्म की छाप स्पष्ट ही है क्वोंकि इनके नावक आहि औन धर्माबरुम्बी ही होते हैं, पर कोष आदि शैहानिक गुन्य भी इससे रहित नहीं हैं क्मोंकि ये भी विजेक्कर जैन कवियों की अतियाँ

को लक्ष्य कर लिखे गये हैं। इन गृन्थी के डीका कारों ने उनकी साम्प्रदायिकता को और भी स्पष्ट कर दिया है, क्योंकि नियमी व कर्यों के उदाहरण उन्होंने अधिकतर जैन गुरुशों से लिये हैं। पर इस विभाग के कुछ गन्ध ऐसे भी हैं जिनमें लेकक अपनी साम्प्रदायिकता को बहुत कुछ छुपा गये हैं। उदाहरणार्थ, सोमदेव कृत 'नीतिवाक्या-मृतः नामक अर्थ-शास्त्र विषयक गृन्थ में पेती कोई वात नहीं है जिसके कारण इम उसे जल्दा से एक जैन धर्मी की ऋति कह सकें। धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत दर्शन, आचार और पुराण विषयक गृन्ध हैं। दर्शन गृन्धों में मुख्यतः सात सन्वी की विवेचना की गई है। प्रथम सन्व जीव और दूसरे तस्व अजीव के पांच भंद, पुदुगल धर्म, अधमं, आकाश और काल ये छह द्वाय है जिनसे सारी सृष्टि बनी हुई है। जीव का अजीव के स्तथ सम्बन्ध और इस सम्बन्धके कारण उसका संसार भूमण तथा इस सम्बन्ध के इट ने से उसका मोश ये शेष पांच तत्वों के विषय है। जैन दर्शन में एकान्ताग्रह नहीं है। उसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि पदार्था में अनेक गुण हैं। भिक्ष भिन्न इप्टि से विचार करने पर पहार्थों के भिन्न २ गुण व स्वरूप सिद्ध होते हैं। इन गन्थीं में जिल वैज्ञानिक हम से जैन दर्शन की विधेचना की गई है यह वैज्ञानिक ढंग अन्य प्राचीन साहित्यों में कम देखने में शाता है।

जैनियों का समस्त आचार अहिंसा के सिडांत पर निर्भर है। मुनियों व गृहस्थों के लिये जो नियम वत आचार-प्रंथों में पाये जाते हैं उनका मूल उद्देश्य है जीयों की हिंसाकों यथाशिक रोकना। जीवचान सं यह कर कोई पाप नहीं है। परजैन आचार की विशेषता यह है कि उसमें मजुष्य को एसकी अव-स्था व सांसारिक स्थिति के अनुसार ही नियम पारुने का उपदेश दिया गया है।

जैन पुराणी का विषय चौबीस तीर्थक्कर, बारह चक्रवर्सी, नव बलभद्र, नव नारायण व नव प्रति-मारायण इस बेशठ पुरुषोत्तामी के चरित्रों का चणन करना है। रामचन्द्र अप्टम बलभद्र थं, इसलियं उनका चरित्र जैनियोंके विमलसुरिकृत 'पुरमचरिय' ब रविषेणाचार्य कृत पश्चप्राण में वर्णित है। कृष्ण नवमे नारायण थे इसलिये उनका च उनके साथ महाभारत गुद्धका वर्णन जिनसेनकृत हरिवंशपराण मे पाया जाना है। शेष पुराणों में सामान्यहृत से उपर्युक्त बेशठ प्रत्यों ही के चरित्र वर्णन कियं गये हैं।ये पुराण प्राकृत,संस्कृत व अवस्था भाषाओं में भिन्न २ महाकवियों हारा रचे हुए पाये जाते हैं। ब्राह्मण-प्राणीं से इनमें यह विशेषता है कि (इनमें प्रायः सभी नायकों के अनेक पूर्वभवों का वर्णन भी दिया गया है। यह पूर्व भय-वर्णन की प्रया जैनकथा साहित्य में भी कुछ श्रंश में पाई जाती है। यह पूर्व-भव वर्णन जैनदर्शन के कर्म-सिद्धान्त व आत्मा के थावागमन विषयक मत को अच्छी तरह विशद कर देता है।

कला की जैन साहित्य में कमी नहीं है। यहाँ तक कि कला के जिस भाग की ओर जैन कियों का भुकाव हुआ उसे उन्होंने उसकी चरम सीमा तक पहुं चाया है। पार्श्वीभ्युद्य,पत्रनदृत,पास-प्रिय काव्य, आदि समस्या पृति के सर्योत्तन गृह्य हैं। द्विसन्धान काव्य की समानता करने घाला राघव पाण्डवीय काव्य ब्राह्मण साहित्य में भी है, पर सुरद्द संधान और चतुर्विश्विसंयान काल्य, किनके एक एक श्लोक के कृपशः सात और बीवीस अर्थ निकलते हैं, श्लेपालक्षार के अनुपम और आश्चर्यकारी उदाहरण हैं। हेमचन्द्र का दूराश्रिय काल्य भट्टि-काल्य से कुछ अधिक विशेपता रखता है। सिद्धि का उपितिभव पपञ्च कथा अपने ढंग का एक ही क्ष्मक काल्य हं,जिसकी तुलना केवल अप्रेजी साहित्य में जान ब नयन के पिलगिम्स प्रोगे स(Pilgrims Progress) से की जा सक्ती है। कवित्व शक्ति में जिन संनाचार्य के काल्य कालिदास की हानियों का भले प्रकार सामना करने हैं और सोमदेव आचार्य का गद्य याण के गद्य से कुछ नीची अंगी का नहीं है।

जैन साहित्य में अनेक ग्रंथ ऐसे हैं जिनम उनके रचयिताओं ने अपने धार्मिक पश्चपात को विस्कृत ही नहीं आने दिया है। तामिल भाषा का सब से प्राचीन और सबसे महत्त्व "पूर्ण काव्यव् रह" एक जैन कवि, सम्भवतः स्वयं स्वामी कुन्दक्रम्याचार्य को बनाया हुआ है। उसमें ऐसे उवारभावों का समावेश है कि आज भारतवर्ष का प्रायः प्रायंक ही सम्बदाय उसे अपनी ही सम्पत्ति समक रहा है। टीक यही हाल नृप अमोघवर्ष कृत (प्रश्तालक पत्न माला। का है। इसे भी सभी साववापी के लोग अपने २ साहित्य में स्थान देते के लिये लालायित हैं। नागचन्द्र कवि का 'प्रश् शाह्यस्याः कराष्ट्री भाषाका सर्वप्रय काव्य है। संस्ताय कथा-साहित्य की उत्पत्ति और रक्षा में जितना कि यों का हाध है उत्तरा अन्य किसी का नहीं। सन्द्रत भाषा के अदितीय रतन 'व्यन्ततन्त्र' की रक्षा एक जैनाचार्य पूर्णभद्र की पञ्चाम्य।यिका हारा हुई है । जैताल

पंचित्रिंशतिका सिंहासनद्वात्रिंशिका जैसे रोचक कया संब्रह जैनियों हारो हा हमारे काल तक आ सके हैं। यथार्थ में कथाओं द्वारा जन साधारण में धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार करने की सुप्रणाली जैसी प्रवल जैनियां में रही है वैसी भारत की अन्य सम्प्रदायों में नहीं रही। इसी से जैन साहित्य का कथामाग बहुत पुष्ट है। इर्टल साहब का मत है कि इनमें की अनेक कथायें प्राचीनकाल में इस देश से चल कर धीरे २ भूमएडल के अनेक भागों में फैल गई हैं। प्राचीन काल के उदार जैन कवियों ने अपनी साम्प्रदायि-कता को साहित्य प्रेम से आगे नहीं रक्ष्या। दूसरां के साहित्या में उन्होंने जो कृति विशेष उपयोगी ब प्रशंसनीय देखी उसे हृदय से अपनाया । इस उदा-रता के फल स्वरूप कालिदास, भारवि, बाण आहि महाकथियां के काव्यां पर जैनाचार्यों की टीकार्ये पाई जाती हैं। मेघदून के पदों की समस्यापूर्त्ति अनेक जैन-कवियां ने की है। जैन वैयाकरणां के ब्याकरण प्रस्तुत रहने पर भी'सारस्वतः व्याकरण पर कोई पांच भिन्न २ जैनलेखकों ने दीकार्ये लिखी हैं। बौद्धों का एक उत्तम न्यायगृंध धर्मविन्द यक जैनाचार्य महलवादी की टीका द्वारा ही भारत में ख़ुरक्षित रह सका है। भासरब के न्याय सार पर जयसिंह सूरि की टीका बहुत उत्तम है। नर-चन्द्रसुरि कृत 'कन्द्रलि हिप्पूगी' अभय तिलक स्रिर कृत 'न्यय।लङ्कारः ट्रिप्पुर्या शुभविजय सूरि कृत 'तर्कभाषा हिष्यगीश्जैन विद्वानी द्वारा ब्राह्मण प्रथी के सत्कार किये जाने के थे। डे से उदाहरण हैं इस के विपरीत यह बात शांचनीय है कि जैनसा-हिल्य को ओर भारत की अन्य समाजों ने वही उदारता नहीं दिखाई। सिद्धपि के उपमितिभव-मप्डन क्या जैसे संस्कृत के शहितीय प्रथ के

कभी किसी ब्राह्मण विद्वान द्वारा विशेष कप से अपनाये जाने का कोई उदाहरण नहीं मिलता। पर सन्तोष इस बात का है कि अब देश की इस पुरानी साम्ब्रदायिक संकीर्णता की छूत मिटती जा रही है।

सारांश यह है कि जैन साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण और व्यापक है। उसमें भारतवर्ष की पायः मुख्य २ सभी भाषाओं की उत्तम रचनाये हैं। यद्यवि यह साहित्य एक विशेष धर्म-सम्पदाय की ही अमृल्य और अक्षय सम्पत्ति है, तथापि उसमें उस लोकिक ज्ञान की कमी नहीं है जो किसीधर्म, जाति व देश की उपेक्षा न कर सम्पूर्ण मानव समाज को उपयोगी और रुचिकर सिद्ध हो सक्ते । यही इस साहित्य की वास्तविक सार्व-भौमिकता और लोक-प्रियता है। यह साहित्य छंद ज्यं।तिपः गणित, आयुर्वेद,संगीत आदि कला और विज्ञान विषयक प्रंथों से भी खाली नहीं है। इस छोटे से पबन्ध में उन सब बंधों का उन्हें बमात्र करना भी असम्भव था। यह पर हम केवल जैन साहित्य के धार्मिक और काव्य ब्रंथों का ही सक्ष्म दिग्दर्शन करा सके हैं। इतना होने पर भी भ्रमी जैन साहित्य का पूरा अन्त नहीं मिला है। प्राचीन शास्त्र भंडारी तथा मन्तिरी में अभी भी सहस्रों ऐसे ग'थ र्राति है जिनकी अन्तर्गतसामग्री का हम इस समय तक कुछ भी पता नहीं हैं। जब हम दन अप्रकाशित ग्थां सं अपने प्रकाशित साहि-त्य का मिलान करते हैं तो ज्ञान होता है कि जैन साहित्य का बहुत बड़ा भाग जमी अन्धकार में ही पड़ा है। केवल जैन समाज के लिये ही नहीं बरम् समस्त भार्य जाति के लिये वह दिन बडे सौभाग्य और गौरव का होगा जब यह विविध-क्षान-पूर्ण और कला सम्पन्न साहिय प्रकाशित होकर संसार के हान फोव में भारी चृद्धि करेगा। इति ।

वीर -



Vannya, Pras Koshi.

हिन्दी पाणप्रिय काव्य

(भी एं० गिरिधर शम्मांजी नवरत्न, काव्यालक्कार)

(?)

श्री उन्नसेन तनमा (१) गिरिनार वासी, श्री नेमिनाथ त्रिय (२) से कहने लगी यों । "हे श्याम सुन्दर विश्वाग समुद्र बूड़ें, ग्रेर समान जन को श्रवसम्ब दीजी॥"

बोहीं सबी बन इयाई तभी उसे यी, प्यारी विषाद कर ना,स्थिर चित्त हो तू। तेरे लिये प्रथम तो हम ही खलाशी!, देवाचि देव जिन से बिनती करेंगी॥
(3)

कामायतार तज यों नय योवना की, धन्द्रानना रुचिर वेशवती प्रिया को। बृद्धे मनुष्य सप्त. यों अति उग्न, कीन, खाहे युवा अपर संयम धारने को।। (४)

होवो प्रसन्न, गहली मृगलोचना की, स्वीकार शीयू कर ली इस विह्वला की। है कीन जी इस नये वय में, वियोग, पायोधि(३)को निरसके निज बाहुओं से॥ (प्र)

मानों कहा नरमखे ! निर्हें, रोक देगा, पेसा कठोर (४) करते, नृष उप्रसेत । भूषाल है, वह बचा सब को रहा है, क्या आयगान अपने शिश को बचाने ॥ (६) सत्केलि(५) कोविद पिया प्रमदा जनों के, होते अङ्जिम (६) विभूषण विश्व भाषे । शोभा वसन्त, वन की सब भाति है, सो, है आम की सुरभि पुरित मञ्जरी से॥ (७)

हो देह खूब जकड़ी भुज बल्लरी में, होर्वे परस्पर सखे मुख खुम्बनादि। बांसङ्ग हो; विलय होय वियोग दुःख, सुर्याशु संस्कल ज्यां तम नाश होवे॥

(**E**)

सौभाग्य का वह कभी दिन भी उगेगा, पा के मिलाप हम वो भ्रम आवरेंगे हो वक्ष रेवेद कण संयुत हार (७) शोभी, सुकाफल (०) घृति छहं वियं विन्दु विन्दु (६)

पीयूप हो नयन के प्रिय मित्र ही हो, आएचर्य क्या! लख तुम्हें हिय मोद छाबे, पा मित्र(३)के उदय(१०)को जड़हैं तथापि, होवे प्रफुल्खित सरोज सरोबरों में। (१०)

क्या कान्ति से ! सुकुल से ! वय से ! गुणों से ! तेरे समान यह है, घर (११) तू सुबुद्धे ! पाना प्रमोद निज आश्चित दोर को भी-। जो आत्म तुल्य करता नर है सजा के ॥ (११)

गौरी, बड़ी रुखिर, नाजुक देह घाला, है, छोड के कर रहा अत तु रसे फ्या!।

१ राजिसनी । २ पतिपिय । ३ समुद्र । ४ इस प्रकार बिन व्याही नांगी का परित्य गकर तापस बनते हुए। ४ काम कला अनुर । ६ स्वाभाविक । ७ मौतियों के द्वार से सुहायना । ६ मोती के दाने की खिश । ६ दोस्त-स्वरंज । १० तरककी-अगना । ११ विवाद कर ले ।

सीआम्य के अमृत को तज के बता तो, पीना चहे जरूफिका जल कौन सारा !।। '(१२)

आंखे कहीं हरिण में, मुख चन्द्रमा में,
त्यों तेज सूर्य विच, चाल गजेन्द्र में हैं।
हैं व्यस्त(१)व्यस्त कुछ किन्तु समस्त है ना,
तेरे समान जग में पर रम्य कोई।।
(१३)

हे नाथ ! उत्तम नहीं अवला सताना, बेला मिशापति(२)सता दुलिया(३)स्त्रियोंको। पावे वियोग निशिका कहला कलद्भी(४), ध्याँ हो पड़े दिवस में द्युति हीन फीका ॥ (२४)

क्या में कहें निशि समें रजनीश आ आ, फैला स्वकीय कर (५) हा मुक्तको सताता!। हो कान्त दूर पर क्यांमिन क्यांमियों को, रोके येथेच्छ चलते तब कीन नाथ?॥ (१५)

भाषा विवाह करने मम सीथ पूर्व,
मुक्ति निया त्रव जन्ती हिय वीच तर।
वी माथ चंचल हुआ जय चित्त तेरा,
क्या मन्द्र राद्वि(६) तव निश्चल ही रहेगा?॥

(१६)

है सेज सुन्दर सजी, मणि मालिका ह, हैं पुष्प, हैं सकल साधन राग(७)रंगा। पका किनी (=) किस तरा यदुवंश हींप!, सोऊँन हा निकट तू जग का(६)प्रकाशा॥ (23)

फ़ैला स्थकीय कर(१०)की सब ओर मेरे, क्यों तू विला न हिंब पङ्कज को रहा है ी क्यों ना वियोग:११)तमको हरता विभो तू. हो(१२)सुर्वसे अधिक भी महिमा निधान?॥

(१=)

धो दीसते घदन में परिताप देता, आनन्द ये हृदय में । भरता अन्ठा । तेरा प्रभा मुख अनन्य सुदावना है, विश्व प्रकाशक अपूर्व शश्मक विम्य ।।

बेश्व प्रकाशक(अपूर्व शशाह्व विस्य ॥ (१८)

जो प्रार्थेना सुन हरो विरद्य व्यथा को, है क्या प्रयोजन बशीकरणाहिकों से,?। हावरिन कुम्भ जलसे यदि शान्त होये, है काम क्या जल भरे किर बादलों से?॥

(२०)
हाँ, एक बार जिनने तुभ को विलोका,
सन्नारियां किस तरा पर में रमें वे।
जो रतन में सुरसिका मित आचरेगी,
सो काच में नहिं पड़े, रिव विम्ब के भी॥
(२१)

सैरा अनेक भव (१३) का मुक्त से सनेह,
तू ही सखे रमण है मम काम रूप।
विद्याधर प्रवर हो, स्मर, या सुरेश,
कोई रमें न मन।में पर जन्म में भी॥
(२२)

थे व्यर्थ पूरव दिशा मुक्त से 'विराध,' जैसा 'करें।।रमण' ना दुसरी दिशायं है।

१ आजग अनग । २ चन्द्र-रात्रि रूपी स्त्री का पति । ३ विरहणी नारियों को । ४ दुश्चरित्र कलक्क आआ । ४ किरणा हाथ । ६ सुमेह ७ राग रेन के । समहेला । ६ अगतका प्रकासक करने वाला सब को दिख्लाने वाला । १० दाथ-किरण । ११ अन्यकार-दुःला । १२ ोकर । १३ जन्म ।

संतापनायस मुक्ते शिशि है वसे ही, प्राची:(१) विलोक सकतोदप(२) पे खड़ाती॥ (२३)

रवारे बड़ो स्वपुर (३) को, नरवाल होके, मोसं विकास रच यौचन रंग माणी (४) । हो मुक्ति काम (४) यदि धर्म रखी वहीं पै। बाल्याज का सरस (६) अन्य न मार्ग ही है ॥ (२४)

संसार सार रमणा ऋषि भी बताते, सो योग्य ये मिल रही तजना इसे क्यों ?। रे छोड़ छोड़ जड़ना हट, ड्यों तुओं ही-क्वान स्वरूप शुचि निर्मल सन्त ।भाषे ॥ (२५)

त् प्राव्ध, त् सुन्त विश्वायक सत्य का है,
त् स्थाय नीतिमय, त् गुणकान, दाना।
भेरा मनोरथ वने (9) स्तव क्या कर्ष में,
है व्यक्त नाथ पुरुषात्तम (=) भी तुही है।।
(२६)

पी के समस्त (६)।निधिके जल को अगस्त्य, पा सृति नेक(१०) अब पी सकता नहीं है। हाँ क्वा करूँ! विरह सागर डूबती हं!, हे विश्वसागर विशोषि (११)! नम् सुभः में।॥ (२७)

हैं धारप वे श्युवतियाँ, जिनकी इसी में । आती निशा समय में अधिनाथ निद्राः। थिकार हाय! मुमको वह भी न आती, जो देख मैं मुख (१२) सकू तत स्था में तो॥ (२८)

हेका विवाह छिन में यह हर्षकारी।
तेरा प्रभामय मनोरम आस्यः (१३) गैंने ।
वो ही अहृश्य थिथि ने कर हा दिया है;
जैसे अहृष्ट घन में रिव-विस्व होवे ॥
(२६)

सिंहासनस्थित (१४) हुआ जनके जनों को, तू ठीक सार्ग बतला कर उच्च होके। शोभा महा यदललाम (१५) विभो लहेगा, मानो सुमेद किर पैंगति विग्व सोहे ॥ (३०)

हे श्याम ! देह मम रम्य सुधर्णवर्णी (१६), अभ्यतेष(१७)पा तच छटा दिखळावगी घो । मानो भुके सिलल(१८)प्रिम अभू(१८)से ही. होरा सुमेठ गिरि का तट एच्च होने ॥ (३१)

है ब्हाध्र(२०)पंचरार(२१)ताक लिया निशाना, जार्जे फहाँ ? किश्वर ? भीतमृगी, बचा तू । तेरा द्या रस भरा नय (२२) लोक जाने, जो तीन लोक ।परमेश्वरता बताता ।। (३२)

चालिका तज उसी द्यनीव(२३)को भी, तृते, रखी पशुद्या, मुभको (२४) सताई।

१प्रव । २ प्योदियत्तप्री उन्नित । ३ हाब्किश । ४ वप्रभोग करो । ४ मुमुखु-मोच की व्यक्तावा वाला । ६ वनम-रसमय

• बिद्ध होये । = पुरवार्थियों में वेट-पराकृती-अगलान । ६ समुद्रीके जब को । १० कुछ भी । ११ संसारकपी समुद्रके शोवस्य

करने वाले-सब प्रकार के समुद्रों के शोवस्य करनेवाले । १२ मुख देल सकता समागम पाना । १३ मुख १४ वानिस्थानन ।
१४ मार्य कुवाकक्षार । १६ सोने के से वक्षयाली । १७ व्यालिक्षन । १८ व्यवस्थे । १६ व्यवस्थे । २० विकारी । २१ कार्यक्ष वार्योक्षका २२ कार्य-निति शासन । २६ कार्यन तथा करने पोग्य । २४ माननी को ।

मेरे-- दयालु ! हिय का अब लौट(१) दे तू, भाकाश में तब बजी यश का नगारा ॥ (३३)

मैं क्नान को तब गिरामृत निर्काग (२) मैं, आई विभो मदन (३) भोलन की सताई। होती न क्यों तब महा रस वृध्दि प्यारं! या रम्य क्यों न गिरती कुछ वाक्सुधा ही॥ (३४)

हा! काम के सरप ने मुक को उँसा है,
तेरा समागम सुधीर्याध है उसे दे।
को ना, मरी यह. निकाल नहीं सक्नुँगी,
मैं तो सुधाकर (४) सुशोभित शर्वारी भी॥
(३1)

मेरे छलाट विच दुलिंपि जो लिखी है, हे प्राणनाथ! विधि में अपने करों से। है शक्त कीन मुक्त को तज, लौट दें जो, मापा स्थभाव परिणाम मयाक्षरी को॥ (३६)

को देख सुन्दर सरोवर हाश्कि। का, तेरा रसक मन भी रित से रैगेगा। एव (५) प्रेयसी रित रचे उस ठीर देख, धन्छे सफ़ोद शुभ पद्म बना रहे हैं॥ (३७)

असी पुरी यदुयते ! तुम से सुहाई, चैसी नहीं अब लसे बहुराज (६) से भी। जैसा प्रकाण लसता निशि में शशी का। वैसा कहां चमकते प्रह संघ का भी॥ (३=)

कन्दर्भ के विकट बाण लगे, हरी हूं. हो आत-देव! शरणे तव आगई हूं। हूं जानती-विमल कीर्ति न मीति पाने, तेरे समाश्रित कहीं रिपु को विलोक॥ (३६)

है सत्य बात पति मैं तुक्त को कहँगी,

तेरे समान अथवा पिय! मैं बनूँगी।
हुं मैं अनन्य (७) मन स्थाम(०)पदादिवासी,
है कीन आक्रमण की उस पे करंगा !॥
(४०)

ध्यारे ! समुद्र विजयासमज ! पालता है। रूटा हुआ रमण भी दुखिया तिया को। तेरा वियोग विश्वलानि मुने जलावे, त्वन्नाम गान जल से वह भी शमेगा॥ (४१)

कारी मनोज-अहि (है) की, जपते हुए भी, त्वन्ताम, क्यों विमन चंतन हो रही हूं। हाते सभी बिप विदीन मनुष्य प्यारे!, स्वस्ताम नाग दमनी जिसके दिये हो॥ (४२)

होता हदम्बुज अपुल्लिन, छोड्ता है. इलानी शरीर फ़लना मनिकलप(१०) शोखी । होती विषत्ति सब दूर, वियोग दुःख, होगा न मष्ट तब-सा ैतब गान गावे ॥ (४३)

कल्याण, कीर्ति, कमला विमहाशयित्व, सीभाग्य, पुत्र, धन धान्य, मनोर्थ सिद्धि।

श्रम्मद दे नियोग संदुल पाने हुए दो भँयोग का लुख दे । २ मन्द्र-सोना । ३ काम उत्थाला । ४ चंद्र-सुथामयी दाध अ अवनी बहुत दी देवाअनाओं की रित में दच्चे हुए । ६ शनेक रश्ता । ७ अन्य में मन न रक्षने वाकी । ८ आपके चरवावपी अनुद्रि में रदने वाकी दश्ती । ६ अनकपी छर्प की कारी हुई - इंकी दूई । १० पाछा का करूप दृष ।

स्नारे अपूर्व फल वेजनमाय पाते, त्वत्पाद पङ्कजवनाधित हो रहेजो॥ (४४)

नेमी तभी मनुगता स्मर विव्हला से, मोले; न मोह कर सुन्दरि ! धर्म धार (१) क्रिसके सदा स्मरण से जन शुद्ध हो हो, ससार भीति तजते शिवधाम पाते॥ (४५)

त् धर्म आचार नितम्धिनि ! जीव जिस्से-होते प्रकाशमय, स्यो घक हंस होते ॥ सम्पत्ति पूर्ण सुरराज समान होके--होते मनुष्य मकरश्वज तुल्य क्यी ॥ (४६)

(४६) स्यों ही परत्र (२) अति रस्य विशाल अच्छे, प्रासाद में बस बिलास अपूर्व पाते॥ कल्याण भाजन बने गज गामिनि, औ--बे बस्भ हीम वन के जन सिद्धि पाते॥ (७६)

है बन्धु बन्धन समान, अनर्थ अर्थ, हा ! हा ! समी विषय हैं विष से विष्टू है ! वो सोख धर्म गहले, कर देर ना तू, तेरा कर स्तवन त्यों मतिमान सारे ॥ (४=)

यो अर्त्वाक्य सुन वो मन बोध लाई, दीक्षा गढी तप किया, सुर सद्म पाई। या सिद्धि नेमि किर सिद्ध हुए उन्हीं के-श्रीमान तुन्न पद में विमला समाई॥

क्षा के । व प्रकोक में ।

जैन सिद्धान्त में सत्यज्ञान की कुञ्जी व उसका प्रचार

(संसक - कैंव पर मूर, पर दिव, बव शीतसमसाद की)



गत में पदार्थों का स्थक्ष जो एक बुक्कि-मन्द्र के अनुभव में आएगा वह यथार्थ क्य से जैनसिकान्त्र में ही मिकता है। इसिलिये ऐसा कहना अन्युक्ति नहीं है कि जैन सिकान्त में सत्यक्षान की कुञ्जी है। इसी बात के कुछ उदाहरण

मीचे विये जाते हैं।

(१) वस्तु के नित्य अनित्य दोनों क्य एक समय में है, यही पदार्थ का स्वक् प है-इसी को Science विज्ञान ने भी माना है। इस विज्ञ में न तो कोई नूतन द्रव्य पैदा होता है न पुरातन द्रव्य का नाश होता है केवल अवस्थाएं वदला करती हैं। जब हम गेहूं से रोटी बनाते हैं रोटी में वे ही परमाणु व गुण हैं जो गेहूं में थे, परम्तु गेहूं की अवस्था बरल कर रोटी की अवस्था होगई है।

अवस्था का बदलना अनित्य स्वभाव है। वस्तु के वस्तुपने का और तुणों का हर हक अवस्था में धने रहना मिश्र स्वभाव है। ये दोनों स्वभाव इच्च में हर एक समय पाए जाते हैं। इसी लिये हर एक इच्च मात्र नित्य ही नहीं है न मात्र अनित्य है किन्तु नित्यानित्यमयी उभय कप है। इसी लिये विक्रम सम्बत मर् में प्रसिख हुए श्री स्मास्वामी महाराज ने अपने तत्वार्थसूत्र में द्रय्य का अक्षण किया है-

"सद् द्रव्यत्तत्त्रागं॥२६॥ उत्पादव्ययभूभिय-युक्तं सत् ॥ ३०॥ अ० ४ ॥

इसका भाव यह है कि द्रव्य यहां है जो सदा से विद्यमान रहा करे तथा सदा रहने बाला बही है जिसमें हर समय उत्पत्ति, विनाश तथा स्थिर-पना पाया जाने। भाव यह है कि पुरानी अवस्था का मास, नृतन भवस्था का जन्म व द्रव्य के गुणी का ब उस मुख्य का मूल में बना रहना यह घीष्य है। उत्पाद स्थय भनित्यपने को और घूरेब्य निम्मपने को बोध कराने वास्ता है। सांस्य मैया-विक आदि द्रव्य को नित्य तथा बीस द्रव्य को अनित्य ही मानते हैं, ऐसा वस्तु का स्वत्राव नहीं है। बस्त तां उभय रूप है। यही सत्य है जिस को जैन सिद्धान्त ही में स्पष्टपने प्रगट किया है। हिन्दू लोगों में यह कहावत प्रसिद्ध है कि भगवान एकद्वप होकर भी तीनक्षप हैं, वही सृष्टि पैदा करने स्रे ब्रह्मा है, सृष्टि को पालन करने से विष्णु है घ स्पिद्ध का माश करने से रुद्र है। यह बात युद्धि में जमती नहीं। परन्तु जब जैन सिद्धान्त की कुञ्जी से इसको बोलते हैं तो भट समभ में आजाती है कि हो, एक आत्मा अपने स्वमाय से भगवान स्व-कप है। यह अपनी कर्म-बंध- पी सृष्टि को आप पैदा करता है अर्थात् अपने भाषीं के अनुरूप स्वयं वाप वा पुण्य जड़ (material) कर्म वर्गणाओं (molecules) को बांबता है तथा उस बंधी हुई इस्टिकी कुछ काल तक रक्षा करता है अर्थात् वे कर्ब अपनी स्थिति के प्रमाण बंधे रहते हैं। फिर .बही (उनके फल को भोगमें हुए उनको नाश करना है अथवा आत्मध्यानादि धर्म के साधनों से स्वयं ही उस सर्व कर्म रंघरूपी सृष्टि को नाश कर सा-सात् भगवान परमात्मा रूप श्रेजाता है।

इसी सत्यक्षात ने यह स्वष्ट सुभा दिया है कि

यह जगत् (Universe) आ मात्र एक समुद्दाय द्रवर्गों का है अवादि अनन्त हैं, जैसे द्रव्य सदा से विद्यमान हैं येसं उनका समृद्दाय यह जगत सदा से विद्यमान हैं। इसिलिये जगत् नित्य है—अकृत्रिम है, क्योंकि नित्य पदार्थ का कोई करने बाला अमा- क्रयक है। क्योंकि द्रव्य हर क्षण में उत्पाद व्ययक करते हैं—अवस्था यदकानी हैं—इसिलिये अनित्य है। तय उनका समुदाय कप यह जगत् भी अवस्थाओं के परिवर्त्तान की अपेक्षा अनित्य है। इस सृष्टि का प्रलय व उत्पाद हर समय होता रहता है तो भी इसका कभी अभाव नहीं होता—यही सत्यक्षान है।

(२) परमात्मा, ईस्वर परव्रहा सुद्ध या कर्म बन्ध रहित आत्मा को कहने हैं जो पूर्ण झान, पूर्ण दर्शन, पूर्ण सुन्ध, पूर्ण वीर्थ, पूर्व चारित्र आदि शुर्णों का समुद्राय है जिसमें रागहेंग, रच्छा. प्रयत्न, विकल्प, विकार, असेतीय, अस्तरक्षत्रपना, जन्म, सरण, लेट, सुधा, तृषा, रागीर स्वस्वस्थ आदि कोई होय न हो। जो नित्य आत्मीक आनन्द का विकास कर रहा है। जो जगन के प्रपंच का मात्र झाला हुट्य हो। उसका कर्सा हर्षा न हो। जेसा भी अमृत चन्द्र आचार्य ने भी पुरुषार्थ सिद्धि उपाय सन्ध में कहा है-

वित्यपयि निरूपलेपः
स्वरूपं समयस्थितो निरूपधातः।
गगनिय परमपुरूषः
परम पदे रक्करति विशदतमः॥२२३॥
कृतकृत्यःपरमपदे परमात्मा
सकल विषय विषयात्मा।
परमानंद निगरना
कानमयो नन्दति सदैव ॥२२४

भाषार्थ-जो सदा ही कर्म लेप रहित है,स्वभाव में उहरा हुआ है, किसी के द्वारा घात से रहित है, आकाश के समान अकेला है, ऐसा परमात्मा जो अत्यम्त स्वच्छ है अपने ही उत्कृष्ट पद में प्रकाश-मान है। यह परमात्मा अपने परम पद में इतहस्य है, सर्व विषयों का जानने वाला है, परमानन्द में। इवे रहता है शानमई है व सदा ही प्रपुत्तित है।

र्रश्वर का यह स्वभाव जैन सिद्धान्त बताता है। देखना यह है कि यदि ऐसे ईश्वर को स्पिन्का कर्ता, स्टिका शासक, या प्राणियों का न्याय करने बाला और उनको दःख सुख का देने वाला प्राना जावे तो क्या क्या दीव आजावें गे। एक विचारशील व्यक्ति समभ सक्ता है कि यिना इन्ह्या के कोई चेतन पदार्थ किसी विकारी काम को नहीं कर सक्ता है। सुष्टि विकारमयी है इसकी करते ।हच इच्छानान, य अकृतकृत्य ईक्वर ठहर आता है, शासक होते हुए विकल्पवान उहर जाता ह परमानम्द में हर समय निमन्न नहीं रह सका है। दुःस सुल देते हुए रागई प्यान व प्रपंच प्रसित उहर आता है बीतराग निर्धिकल्प नहीं रह क्षका है। इसी छिये जैन सिद्धान्त ईश्वर में कता हर्ता व फलदाता पना नहीं कहता है। यह एक ऐसा पवित्र भात्मा पदार्थ है जिसमें क्षोभ या ाबकार हो ही नहीं सक्ता। यह मात्र एक आदर्श का मधुना है कि हम भा बैसा होने का प्रवार्ध करके शैसे ही हो जायें। हमारी भक्ति करना उन सं कुछ मांगना नहीं है न उनको प्रसन्त करना है। केषस्त्र|हमारी भक्ति उनके पवित्र गुणीं में प्रोम बढ़ाती है व हमें उत्साहित करती है कि हम भी बर्सा ही निश्चलता आत्मध्यान में प्राप्त करें जिस से सर्व यंथ सं मुक्त हो हर तरह से परमाता के सहरा परमातमा हो जावें तो भी अपनी सका को भिन्न २ बनाय रहें। इसीलिये जैन सिद्ध एत कहता है कि सर्व ही मुक्त आत्मा प परमातमा हैं और वे अनत है। यही सत्य झान है। निश्चय सं परमात्मा में स्वाप्त से परमात्मा पाप पुष्य मई कहीं के आवरण से उसी तरह अपगट है जैसे पानी की स्वय्वका में उसी तरह अपगट है जैसे पानी की स्वय्वका में को पानी स्वय्व होजाता है यैसे कर्म बन्ध हटते ही जेसे पानी स्वय्व होजाता है यैसे कर्म बन्ध हटते ही आत्मा परमातमा हा जाता है। एक यानी जब पकान्त वास करता है जगत के मपत्र खंडता है तथ सहा है परमानन में मन्न रहने वाले परमातमा में रागे- हेपादि के प्रयंच का अधकाश कहां से हो सका है।

(३)यद्यपि अन्य मतीं को शास्त्रीं यह कथन आता है कि आत्मा कर्मों को शंधता है व कर्म बंध का छुटना मुक्ति पाना है परतु कर्म्मा क्या वस्तु है कैसे र्वधने हैं कैसे फल देने हैं कैसे छुटते हैं इस का भेद किसी भी अजैन प्रन्थ में अवतक नहीं पाया गया जैन सिद्धान्त में इस ावयय को पद पद पर वर्णन किया है इसका सामान्य कथन तत्वार्थ स्त्रको आठवें अध्याय में है जिस का थोड़ा विस्तार सर्वार्थ सिद्धि तत्वार्थ राजवानिक, श्लोकवार्तिक, में है परंतु बहुत बिस्तार से कथन श्री गोम्मटसार कर्म कांड में है व उससे भी अधिक व स्वम भी धव-लादि प्रधी में है जो अभी तक अप्रगट हैं-इन सिद्धानतों में बनाया है कि जैसे विज्ञली के स्कंध (तैंजस वर्गणाएं या Electric molecules) होते हैं व वे जगत व्यापी हैं वैसे कर्म के सकंध (कार्मण

वर्गणा या Karmic molecules, होते हैं ब वे व्यात व्यापी हैं।

अब कभी आत्माके भीतर हरकत पैदा होतीहै बे आत्मा के भीतर योग शक्ति attractive power के द्वारा आहए हो जाते हैं और जिस प्रकार की इरकत होती है उसी प्रकार से कम या अधिक प्रमाण में कर्म स्कंध आकर्षित होते हैं -तथा जिस आत्मा में जितना रागदेव या कवाय होता है उस ही प्रमाण में तीव या गद फल देने की शक्ति का रखकर कम या अधिक काल के लिये मारमा के साथ चिपर जाते हैं या बंध जाते हैं ये ही कर्म स्कथ पकते रहकर अपना असर करते हुए भड़ते जाते हैं-बस यही सुच दु:ख का भागना है-जैसे स्थूल शरीर में इम हर समय पवन लेते, स्वयं पानी पीते स्वयं भोजन खाते-जो फुछ स्थल शरीर में जाता वह उसी में लय होना हुआ आप ही रस इपिर अस्य कर परिणमता हुआ शरीर के अग उजंगी को पुष्टि देने रूपफल को प्रगर करता व आप ही उसका मल अनेक मार्गों से निकल जाता इस ही सरह सूदम शरीर में कर्मस्कथ स्वयं जीव के भावों के निमित्त से आते, बंधने, वे स्वयं फल प्रगट करते व वे स्वयं भार जाते हैं। कर्मके बंधने व उसका फल भाग करने में किसी तीसरे ईश्वर षा उस के किसी कर्मचारी की आवश्यका नहीं है।

भ्री पुरुवार्थ सि॰ में कहा है-जीवकुतं परिखामं निभिन्त मात्रं मपद्य पुनरन्ये । स्वयमेव परिखामंतेऽत्र

पुद्गलाः कर्मभावेन ॥ ११° परिणममाणस्य चितन्त्रि-

दात्मकी:स्वयमणि स्वकीमवि:। भवतिहि निमित्त मार्थ

पीदगिलिक कमें तस्यापि ॥ १२ मायार्थ जीव के किये हुए भावों का निमित्त पाकर इस जगत में भरे अन्य कर्म पुद्गल Karmie mutter स्वय ही कर्म कप से बंध जाते हैं और जय जीव में चैतन्यमई रागई पक्रप भाव होते हैं तय उन के लिये उसी के बाँधे हुए पूर्व पुद्गल कर्म निमित्त हो जाते हैं।

म्ल कर्तों के स्वमाव आठ हैं भेद १४= हैं **य** असंख्यात हैं।

- (१) ज्ञानायणीय कर्म-जो ज्ञान को ढकते
- (२) दर्शनाय गीय कर्म जो दर्शन का दकते
- (३) माहनीय कर्म जै। भद्धा व चारित्र की विगाइने
- (४) अंतराय कर्मा-जा आत्मबीर्य का डकते
- (५) भित्रतीय कर्म जे। सुव दुःख के। सामान एकत्र करते
- (६) आयुकर्म जा किसी शरीर में कैद रखने
- () नाम कर्म जा शरीर की रखता बनाते
- (६) गोत्र कर्ज-जो ऊँच नीच शंश में जन्म कराते।

यहा ही मनोरंजक कथन कर्मश्रंध का जैन सिर्द्धांत ने बता दिया है-mpurity अशुद्धता क्या है इस झान की कुँजी को खोलने वाला जैन सिद्धांत है।

(४) स्वायलम्बन के बिना उन्नति नहीं होती है-जैन सिज्ञान्त कहता है कि जैसे नुमही अपने ही अशुक्त भावों से पाप पुण्य कर्म बांध लेते हो वैसे नुमही अपने शुद्ध भावों से उन कर्मों को स्वयं हूर

श्री जैन निर्मयाजी, श्राजमेर ।

कर सकते हो, मुक्ति को कोई दे ले नहीं सकता है. अहीं तक दूसरे की भिकिहै वहाँ तक रागभाव होने के कारण से कर्म का र्णध है। जहाँ घैरान्य च आत्मकान है तथा आत्मध्यान की अग्नि का यह है पहीं कर्मों का दहन है य आत्मा की निर्मलता है इसीलिये पूरु में लिखा है-

> विपरीताभिनिवेशं निरस्य सम्यग्वितस्य निजतस्वम् । यसस्यादेविचेत्वनम् सएव पुरुवार्थं सिद्धशुपायोऽयं ॥१५५

भावार्थ-जो विषयीत ज्ञानको हटाकर मले प्रकार भाने आत्मा के तस्य को सम्भ जाता है और किर उसी में लग्न होकर हडेता नहीं घडी माश्र पुरुषार्थ का सःधन कर लेता है। अपने ही उद्यम से मुक्ति होती है। जैन सिद्धान्त रसी बात की स्पष्टपने बर्णन करता है।

(५) जैन सिदान्त ने ही शर्दिसा का पूर्ण वर्णन किया है। धरेतराग होना भाव अहिसा है-एफेन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक के जीवी का घात न करना दृष्य अहिसा है।

पृथ्वी, जल, वायु. अनि, वनस्पति इनमें जी सजीवपना है वर्श एकेन्द्रिय जीवपना है। अर्थान् सजीव दशा में ये स्पर्श इन्द्रिय के हारा जानते हैं य सुव दुः ज का अनुभव करने हैं। ये भी रक्षा के पात्र हैं। ये भी रक्षा के पात्र हैं। पशु पश्ची शुद्र कीट ने। रक्षा के योग्य हैं ही। इनना सूक्ष्म विवेचन करके इस अहिसा के अमल कराने का मार्ग मुख्यना से परिग्रह रहित निर्माण्य पद बताया है जहां साधु नम्न रह कर सम्हाल कर घलना बैठना य अत्रवध्यान में लब्ध हीन रहता है गीणता से गृहस्य पद को पनाया

है जहां पदवी के येग्य यथाशक अहिसा का पालन बताया है। निर्ध्य संकटरी दिसा का त्याग बताकर शरी, वैश्य, शूद्रादि के असि, मिस, कृषि बालिज्य शिलादि आवश्यक कर्मों में जो प्रारंभी हिंसा हे ति है उसका यदि स्थाग न हो सके तो उस में न्याय पूर्वक बर्गन बताया है। धर्म, शीक, मांसाहार, अतिथिसन्कार आदि के लिये पशु क्थ करना निरथक संकल्यी हिंसा है जिस के प्रधाय करना निरथक संकल्यी हिंसा है जिस के प्रधाय के लिये जल छान कर पीना, राजि को मांजन न फरना, आदि बातों का जितना बलिए बर्णन जैन सिजानमें है अन्यत्र नहीं है-पशु हिंसा म करनेका व सांसाहार न करनेका जितना बिल्यु में के प्री य बीहां के भी शाफों में नहीं है।

जैन गृहस्य को बताया है कि यह स्यायसं ध्य-बहार को, इसो छिये असत्य न वोले, खोरी न करे, परस्त्री न भोगे, श्रधिक तृष्णा न करे, गृहस्थकों भी धर्म साधन का हेनु मानकर खलै-आत्मानंद पर षृष्टि रक्खें, त्याय से जो राज्य या संपत्ति पावे तो भी उस में लित न हो, उस से धर्म साधते हुए धर्म को नाश न करके उन का भोग करे।

गृहस्यों को जो अपूर्व शिक्षा जैन सिद्धांत ने श्रायकाचारों में ती है बर राजा प्रजा को त्यास मार्गी स्थाबान, अध्यात्मप्रेमी घनाने बाली है। जैन सिद्धानन के माहातम्य अवर्णनीय हैं। उदाह-रण मात्र र छ दिलाकर हमारी यही भावना है कि जो जन्म से जैनी हैं वे इस सिद्धांत को पढ़ कर सद्ये जैनी जैन धर्म के आचरण करने वाले वम नथा जो होनी नहीं हैं वे सान ग्रामि को भावना स

जैन सिद्धांत को पहुँ और मनन करते हुए विचारे वंदि महत्व प्रवट दीखे तो जैग मत को सहर्प अगी-कार करें। जो अजैम जैनी होता चार्ते उन के लिये क्रैन समात्र का चाहिये कि एक जैन दीसा पदा-चिनी सवा Ja n Conversion Comittee. स्थापित करें। यह सभा जैनी बनाकर उनका भाचार व्यवहार पद्धा देखकर वे जैसी आजीविका करते हों व उनका शैसा चाल चलन हो उसे ध्यान में हेकर उनका वर्ण स्वापित करें जिस क्षत्री; बैश्य, ब्राह्मण या शर्थण में वं जा सक्ते हीं उन में उनको भरती करलें किर पहले के उपवर्ण के कैतियों के द्वारा उन नवीन वर्णधारी जीनियों के साथ समानताका व्यवहार हो अर्थात् वे सर्व सान पान बेश बेश सम्बन्ध पूजा पाठ जप तप साथ २ कर सक्ते हैं ऐसा हो प्राचीन आसार्यों ने किया है। परिषद् के कार्यकर्ताओं के लिये जैन धर्म के प्रचार का यही मार्ग है जिना कोई शंका या भय से इस मार्ग पर आरुद्ध हो परिषद के कार्य कर्ताओं को उचित है कि लाखों भूले भटके हुए मानवों को तीर्थंड्ररों का सञ्चा मार्ग बताकर उनको शक्कर के अपने समान बनालें जब अजैन जैन धर्मी हो जिनेन्द्र भक्त होगया फिर इससे घुणा तुच्छमाव बन्नना जैन सिद्धान्त की आहा के विरुद्ध बास्तव्य अभिकाधातकरना है।



हिन्दू संगउन ।

(से०-भीमान जानतराय जेन बार-एट-सा)



स समय हिन्दू संगठन का अश्व कनता के समक्ष मित दंग से उपिथत है। मेरे ख्याल में ऐसे संगठनकी बड़ी आबश्यकता है। इससे लाम की बहुत कुछ आशा हो सकी है। दुर्भाग्यवश इसके साथ दो एक बात पेसी भी

हैं जो संतोपजनक महीं हैं और जिनसे अशान्ति फौलने की संशयना है।

पक बात तो यह है कि इसका नाम हिन्दू धर्म के आश्रय सं हिन्दू संगठन रक्ला गया है, यद्यपि इस में सम्मिलित होने के लिये जैनों, बंदों और सिक्बों को भी निमंत्रित किया है । इससे मनुष्य के इत्य में प्रथम विचार यह उत्पन्न होता है कि इसमें सम्मिलित रोना मानी अपनी धार्मिक स्वतंत्रताको खोना है। चुनांचे इस संगठनकी एक बैंडक में कुछ महाशयों ने स्पप्ट शब्दों में मुक्त सं कह दिया कि जैगी तो हिन्दुओं की ही शाख हैं उनके प्रथक संवोधित करने की कोई आवश्यका महीं है। इस पर मुक्ते माननीय मालबीय जी की सेवा में एक पत्र भी लिखना पड़ा था। हम अनियों का विश्वास इस उपरांक हिन्दू विश्वास के विपरीत है। हमारा चिश्वास है कि हमारा धर्म धनादि और इसिलियं सब से प्राचीन है। मैं बीज सिक्लों की यायत नहीं कह सकता कि यह अपने आप को इस हिन्दु शब्द में गर्भित मानते हैं था महीं। परम्तु जैनी इस पोजीशन (पदवी) को

किसी दशा में स्वीकार करने के लिये प्रस्तृत नहीं हैं। यद्यपि हम जैनी हिन्दू संगउन से हार्दिक सही-मुजूति रखते हैं। मुक्ते औ धर्मदिबाकर पुज्य ब्रह्म-चारी शीनळ प्रसाद हारा एक मतंत्रा यह भी भालूम हुआ था कि इस दिन्द्संगठन की एक बैठक में (कलकक्षे) एक तसवीर भी पैसी बनाई या दिखाई गाँधी कि जिसमें बहुदेवीं के सबह में श्री पूज्य भगवान अईन्त्रदेव (भगवान महाचीर) का चित्र भी दिवाया था परन्तु इन सब का अध्यक्ष विष्णु भगवान का नियत किया था। यह भी जैनी को स्वाहत नहीं है। हमारे विचार में श्री अहरत देखको समता का काई अन्य देव नहीं है। यदि हम धीअहंग्य देव भगवान की प्रतिमा को अध्यक्षता के सिंदासन पर विराजमान कर हिन्द देव प्रतिमाओं को उनके आधान दिलायें तो सम्भव है कि हमारे हिन्द्र भाई हम से सहमत न होंगे। अतः यहां बही मसला है कि:--

श्चांच: दर खुद मपसन्दी चर दीगरां हम मपमन्द् अर्थास्-जो अपने लिये पमन्द नहीं करता है दूसरों के लिये भी पसन्द न कर।

यित काई कहे कि आओ इस बात का निणय करनें कि कीन सम्य है ने। एकहम मिन्नता और पेकाना के स्थान पर बाद-विवाद प्रारम्भ हो जायमा। हमारी हार्दिक भावना है कि हिन्दू सग-ठन सफल हो और इम उसको सफल बनाने में भाग लें। परन्तु इम अपने दिन्दू मित्रों से प्रार्थी हैं कि इस संगठन को कंचल शोशल संगठन रक्षें घानिक संगठन का जामा न पहिभायें। धार्मिक कार्यवाई जो कुछ उनको करनी हो वह सब हिन्दू महासभा इत्यादि द्वारा ही करें। जैसे हम अपनी धार्मिक कार्रवर्ध या दिगंबर जैन परिषद दिगस्बर जैन महासभा, श्वेतास्वर हैन कान्फे स्स स्वादि के होरा करते हैं। शोशल संगठनमें हिन्दू, बौद, सिक्वीं का सीर हमारा साथ है। प्रत्येक धर्मीकी धामिक सभाय प्रथक् प्रथक् हैं। इसी प्रकार से एक दूसरे की सहायता सम्भव है, नहीं तो दिन्दू संगठन के बक्क हिन्दू धर्म के अनुयादयों का हो सक्ता है। इसी कारण से इस का नाम भी हिन्दू सगठन के बजाब प्राचीन भारतीय सभ्यता संगठन अथवा अस्य इसी आशय का होना चाहिये। स्थयं हिन्दुओं ने इसका नाम आर्यसंगठन रखना प्रसन्द न किया क्योंकि इसने उनको भय था कि कहा यह आर्यसमाजियों का संगठन न समका जाय।

यास्तम में यह वहे पर्य की बात है कि सारत वर्ष में अब ऐसे संगठनों के विचार पारक्परिक पेक्यता के लियं उत्पन्न होने लगे हैं। मैं अपने हिंच भाइयों को निश्चय दिलाता हूं कि हमारे लिये उनसे अधिक दूसरी कौम श्रिय नहीं हो होकती है। क्यों कि एक एसे प्राचीन समय से जिसका अन-मान साधारण समभ के लिए असम्भव सा होता दांनों ही कौमें इसदेश में निवास करती बाई हैं। सभ्यता जीवनचर्या बोलबाल, भाषा, खौहार और एक हदतक साधारण धार्तिक नियम सक्दक ही रते हैं। हिंदू और जैनोंमें परस्पर विवाह शादिगाँ भा होती रही हैं। आपत्तिकाल में भी हमारा उनका साथ नहीं छटा है। फिर हमारा उनसे और उनका हमसे बढकर कौन मित्र हो सकता है। यही नहीं बरन हम् केना की तो हादिक रच्छा यही है कि भारतवर्ष की सब कीमें एक इसरे से मिल कर हो रहा करें। यहा मुसळकान हमारे मित्र नहीं

🤻 दिया ईसाई हमारे शह हैं ? कहावि नहीं ! हार साब की जिन बनता और साब को अपना नित्र धनाता चाइते हैं। परन्त् न हम किसी की स्वतः न्त्रता का धात करना चाहते हैं और न इस बात को स्थीकार कर सके हैं कि कोई हमारी स्व-सम्बता पर आधात करे। हे कन मुक्ते खेर्युक बहुना पहला है कि मुसलमान भाई कई दक्ता हाल में ही हमारे मन्दिरों का आमान करने में नहीं रको । जानक मुसलनान लोग निन्दू व जैन मन्दिरी च ठाक रहारी का अस्मान करने से घुणा महीं करेंगे समतक हिंदू, जैनी सथा मुसलनानी का हार्तिक मेल कैते सत्भव है! मेरे स्थाल में दिल्ली की मिलाप कान्येंस (Unity Conferenca) करावि अपने मंत्रुचे में सक्तालीमृत नहीं हो एकेगी अवतक कि मुसलमानी रुके अगुवा अपनी कीम के गुण्डों व नीवों को, जो इस प्रकार के निन्दित इत्यों में अपनी बहादूरी और अपने दीन का महत्व सममते हैं अंग लुट मार सं लाभ उठाते है अपने बगर्सन करलेंगे। केवल जबानी अमा अर्ब से काम नहीं चलेगा। बाते तो हर शक्स हमेशा बना सका ई लेकिन, बुढिमानी का क्रवन है कि एक दो अपराधी तक संशय र ता है कि आया घटना आकस्मिक तो नहीं है ? परन्त्र तांसरे अवराध के पश्चात् किर कोळ काल की गृङताइश नहीं रहती और फिर श्राइत साबित हो जाती है। मेरे ख्याल में जयतक यह नीच वृत्ति महों छु ती कि थोड़ी सी बात पर पूज्य स्थानी में चुस पड़ना और पून्य घर्तुओं का अपमान कर भाजना, उस समय तक अमन व आमान की आता और स्वराज्य वाति के विचार निर्धांक हैं।

एक दिन में भी मिलाप कांन्मेंस में मौजूद था, यवि में सन्जेक्ट कमेटी में न था। मेरे स्पाल में फोई भी जैनी सन्जेक्ट कमेटी में न था अनुमानतः यह इसी फारण से था कि डीनी तो हिंदुओं में गर्भित ही हैं । हालों कि सिक्द, पारसी व आर्थ-समाजी के जुमाइन्दे सञ्जेक्ट कमेटी में लिए गए थे। इत में से आर्यनमाजी तो जैनी की अरेका कम हिंदू नहीं है। सकते हैं। और पासियों व य्यु-सोकिकल सासाइटी के मेम्बरी की तादाद भी मनुष्य गणना के लिहाज से जैनी की अपेकः बहुत फम हैं। तब भी हमका अपने हिंदू मित्रों और कीम के नेताओं से इस प्रकारके चुनाव की बायत शिका-यत नहीं करनी चाहिये। ये स्वयं ही औरों से अस्या यों से पीड़ित हैं आप न्यायगुक कैसे हा सकते हैं ! एक कटोशमय बात मुक्ते यहाँ और कहनी है और घह यह है कि इस निलाप कान्फों स में एक कमेटा १५ बादमियों की बनी है जिस में जैनी एक भी मही है। इसके वारे में श्री दिगम्बर जैन परिषद ने एक प्रस्ताव भी दशावा के नैमिलिक अधिवेशन में पास किया था जिसकी एक प्रति परिषद के महा मन्त्री जी ने "नहारमा जी" के पास श्रेजी थी। परन्तु महात्मा भी से अभी तक उसका उत्तर प्राप्त नहीं इआ। यदि इस बोर्ड में कोई जैनी न होगा तो जैनियों के मामले के संबन्ध में कौन सलाह, मग घरे!में सहायता देगा और कीन उनके मामलें को वंश करेगा ?

कुछ हिंदू भाई तो श्रीअहंन्त देवजी की पतिमा को देखना अनुचित समभाते हैं। कोई कोई तो जैनियों की रथयात्रा निकलने के समय भी मग-यान के रथ की ओर से अपना मुंद फेर केते हैं। काई अपनी दुकानें छन्द करके चले जाते हैं। दो वर्ष हुये ग्वालियर नरेश के राज्य में इसका घोर प्रयस्त किया गया कि जैशियों का रथ न निकले। अब उनका प्रयत्न निष्मल हुआ तो उन्होंने बलवा कर दिया। बहां के छे। दे अधिक वियों ने भी हठ धर्म सं द्वित्रमें का ही पक्षवात किया और गेछी तक चल गई। अन्ततः श्रीमात्रः महाराज महाहप मे उनको कठोर दण्ड भी न्याय युक्त दिये। परन्तु दंगा तो हो हो गया। इसी प्रकार से घोल रूर में भगड़ा फैजा हुआ है। बड़े के दिन्द्र जैनियों का मय नहीं निकलने देते हैं। जयाध्या में भी पड़ी ने भग है कैला रफ्ले हैं । भला पैसी दशा कैतियाँ की ऐसे आरविट्रेशन बार्ड (Arbitration Board) से जिस में हिन्दू , मुसलमान, पासी, इंसाई, इत्यादि के हो परन्तु जैनी एक भी न हो. क्या आशा है: सक्ती है ? मेरी समफ में नहीं आता कि उसमें जैनी नुमाहन्दें के सम्मलित होने से क्या दानि होगी? सत्य है कि वर्गमान समय में चातयी चात क∍ने या करने पर बड़े २ बुद्धिमान और नेता भो ५२५त नहीं होते हैं।

तिनक इस नात पर भी ध्यान दी जिये कि हमारे हिन्दू मित्र भी अहंन्तदेव जी की प्रतिमा के क्यों विरोधी हैं? इसका कारण वे यह बतलाते हैं कि भी जी नगन दिगम्बरी स्वक्षण धारण किये हुए हैं भीर नगन अवस्था देखना बुरा मालूम होता है। यरन्तु यह उनका कथन युक्तियुक्त नहीं है क्योंकि रथयात्रा में केवल बही प्रतिमायें निकाली जाती हैं जी प्रमासन अर्थात् जैठी हुई दशा में होती हैं। खड़ आसन अर्थात् खड़ी हुई मूर्तियां रथयात्रा में नहीं निकाली जाती हैं। प्रमासन में विराजमान मृतियाँ

की नग्न व ये नग्न दशा का बोच होना अति दुस्तर है। इससे स्यार है कि केवल वहाना ही करना हुए है। किर ऐसे दोपारापण से क्या कोई अपना धर्म छांड सकता है ? पएन अति आग्चर्य की बात तो इस सम्बन्ध में करने को शेष हैं। हमारे हिन्दू भार्र जो श्री व तराग शहन्तदेव के दर्शन से इतना उरसे हैं स्वयं अपने मन्दिनों में शिष्ठलिङ्ग पूजते हैं। वह भी किस का में ? जा वह खीलिंद्र के मुख चिन्ह से संयुक्त हो ? दरा के रह नग्न अवस्था को यहां कुछ मुकाविला होसकता है ? नहीं। इसके अतिरिक्त नग्न साधु हिन्दुओं में भी होते हैं। व छंभ आदि जैसे मार्की पर प्रयागराज इत्यादि जिल्ह सीथीं में समृह के समूह आते हैं। नम्बस्य से ही जनता में चित्रस्ते हैं। जनभाषपुरी में हिन्दुओं के विशास मन्दिर पर चित्रों में साराहप में मैथुन किया करते हुए खी पुरुष दिखाये गये हैं। कुछ स्थानी पर स्थयं नग्न दिगम्बर मृति की पूजा हिन्दू मन्दिरी में होती है। दूरान्त के तौर पर मैनपुरी जिलेके पैंड्त प्राम को लाजिये कि जहाँ श्री अहंन्तदेव की मृति जलैश्या जो के नाम से पूजी जातो है। इसी प्रवार विहार में कडक जिले के जजरूर प्राप्त में अलग्डेश्वर महा-देव के मन्दिर में और वंजरा जिले के बहुलारा प्राम में सिखेशवर महादेव के मिन्स में भी नग्न दिग-म्वरी मुर्तियां पूजी जाती हैं। जिनके लिये अब हम अपने हिन्दू भाइयों से आशा करते हैं कि यह हमारी मृतियां हमको चापिस करदें।

अब ऐसी दशा स्वयं हिन्दू घर्म व व्यवहार की हैं तब किर जैनों से उनके पूज्य तीर्थहरों की दिग-म्बरी दशा की अपेक्षा से घृणा या वैरमाव का वर्तात्र करना कितना अनुचित है। बास्तविकता

थह है कि नानदशा स्थयं घुणात्याहक नहीं है। यह केवल उसी समय घुणा उत्पन्न करती हैं जब कि असके द्वारा शीलभङ्ग करने का अभिप्राय प्रगटहो। हेको, योच्य और अमेरिका के बड़े र मान्य घराँ में स्त्री, पुरुषों की नग्न मुतियाँ चौर चित्र खुले तौर पर कमरों के सजाने में प्रयोगित होती हैं। उन कमरों में उन घरों की बहु बेटियाँ स्वयं वैडनी हैं और प्रायः उन मूर्तियों और चित्रों का उल्लेख भी करकी बात चीन में होता है। मेने स्वय अपनी ऑख हो एक शरीफ लड़की को लगड़न के अजायबंघर में सक विशास वही नग्न मर्दानी मृति का कृत्मा अक्स हाथ से उतारते हुए देवा था । मृति अनुमानतः किसी अन्य देश के देवता की थी और नग्न थी। आसीनकाल में नग्नमुद्रा साधु का चिन्ह था । बेखिये, रुज्जील मुक्दस के प्राचीन भाग में, सैमी-अस्त नामी नवी (पंगम्बर) को नम्तगुद्रा में देखकर कोगों ने यहा कहा कि क्या यह नवी हो गया है। (देखो इम्बील के पुराने अहदनामा की १ संस्थेल युलाफ बाय १६ आयत २४) अरब में भी मीहस्मद से पहिले के लाग काबा की प्रदक्षिणा नग्न दशा में दिया करते ये यद्यांप अब वे हाजी अर्थात् यात्री का जामा जो एक प्रकार का लक्ष्या करता सा होता ै पहिन लंते हैं।

अतः यह विश्ति है कि नग्नावस्था पृष्यपन य साधुता का चिन्ह प्राचीन काल से दुनियां में खळा आना है। इसलिये वैरमान का बर्ताव जो जैनों के साथ किन्हों किन्हों स्थानों पर किया गया है यह सर्वधा अनुचिन है। परन्तु मुर्क इस बात के कहने में भित प्रमन्तता होती है कि इस प्रकार का बैरमाच बहुत थोड़े हिन्दू व्यक्तियों में पाया जाता है। अधिकांश में हिन्दू होन शान्तव्यक्त और मध्यस्थ भाव रखते हैं। तिसपर भी जिन्ही २ अबसरों पर उन्हें अपने सहधर्मी भार्यों के कृत्यों का स्वीकार करना ही पड़ता है।

खर यह तो प्रसंगवश कहे गये इनके कहने से मेरा केवल यही अभिभाय था कि हम लोग जो निरन्तर निजी अधिकारी को गवनेंमें टुसे मंगिते रहते हैं स्वयं अपने मिन्नों ही के अधिकारी को स्वीकृत करने में कितने सुस्त य लापरवा होते हैं।

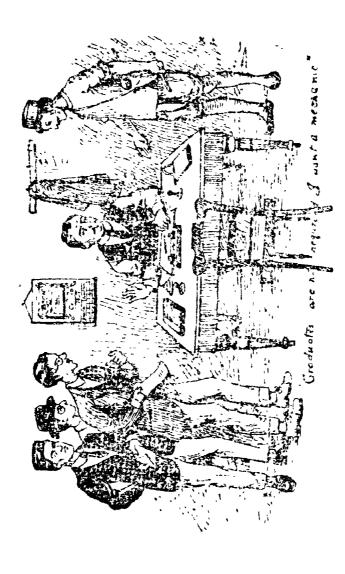
इस में सदेह नहीं कि मिलाप कोन्फ्रेंस में औ बार्ने निश्चित हुई हैं वे क़रीब र सभी लोगों को **१** शिक्त होंगी । परन्त उनमें कोई बात ऐसी नहीं है जिस के द्वारा किसी नियम उल्हान करने बाले का रोका जासके। यह विदित है कि केवल पृथित्र इच्छाओं हारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। मक्ष यह है कि गुँडें च बदमाठीं को या ऐसे छोगी का मो गुँडे और बदमाश नो नहीं है परस्त अन्य धर्मी का अपगान करनेमें वह अपनी व अपने धरी की उन्नति मानते हैं. किस प्रकार सक्ष्यता का व्यहार करने के लिये बाध्य किया जाय। पश्चिक आंधानियन (जनना की आवाज़) अब तक वरा-बर निरर्थक रही है। यह प्राकृतिक बात है जहां एक कीम नहीं बरन् दो या अधिक मुलालिक कौमें यसती हों चहां एक का विश्वास (अकीवा) दूसरे के विश्वास के विरुद्ध होगा ? उदाहरण के तौर पर भोपाल का कानून देखिये जिसके अनु-सार यदि कोई मुसलमान अपने धर्म को छोडकर अन्य धर्म धारण करे तो वह मौत की सजा तक पासका है। इस का यही अर्थ है कि:-

One mohomedan always mohamedan.

अर्थात् एक बार मुसलमान हुना और सद्देक बिये मुसलमान बना किर भला शुद्धि जैसे विराधी मल्छं से मुसलमान लाग कैसे सहमत होसके है। यदी इशा काफिर कुशी ब : उन के विषट) काफिरों के साथ वर्ताव करने की है। स्वयं धुसर हमान हेखकों की पुस्तक देखी हमी घटनाओं सं भरी हुई हैं जो इस बात को प्रमाणित करती है कि मुसलमानी ने कभी उन लोगों के साथ जिनको यह काफिर समभते हैं शत्रुओं का सा वर्ताव काने को बुरा न समका। अतः ऐसी दशा में भारतवर्ष में कोई सर्व सहिमतियय पश्चिक शोधी-नियन कैसं सम्भव है ? में इस कारणवरा इन वाती का वर्णन नहीं करता है कि मेरी नियत किसी प्रकार के जोश अथवा कड़ता उत्पन्न करने की है। मेरा अभिन्नाय कंषल यही है कि आगामी कालमे अमन सं रहने की कोई सद्यां युक्ति प्राप्त हो। भेरी राय में यदि इस वात पर अमल किया जाय कि जो कोई फरीक चिद्रत या भगडं का कारण हो ती उसको तुरन्त उसी के सजाता च सहध्यों इस बात पर बाध्य करें कि यह अपनी अनुचित कियाओं को सत्यता पूर्वक स्वीकार कर और यथा सम्भव अपने कृत्यों का दड भोगे और हानि की भी समुचित पृति करादी जाय । यदि मुकदमा कचहरी में पहुंचे तो वहां भा दे तो पश्ची की शिंगर से एक शब्द भी असत्यता का न आने पाये। मेरा जयाल है कि यदि हम इन नीतियों पर कार्य करेंगे

ता अध्यमेष पारम्परिक प्रेम तथा मिनता की नीय डाळते। नहीं तो व रभाव का मिटना किन कार्य है। मीविक सिन्य जो कुकिमयों के हदयों की परिवर्तत नहीं कर सकती गुँड के दिलों पर कभी झायू नहीं पासकेगी और न उन लोगों पर हो इसका कुछ प्रभाय पहेगा जो दूसरों से प्रमंका अपमान करना ही अपना धमं सममते हैं। यह याद रहे कि यहाँ रोमन कैथे। लिक और मेटिस्टेन्ट लेगों को मिसाल ठीक नहीं आती है। क्यों कि प्रथम ने। उनकी चिहनें गुँडों और चदमाशों के कृत्य न थे। दूसरे वह लोग कभी विपन्नी के धमं का अपमान करने में अपनी धमपाय जा नहीं समभते थे।

धास्तर में दिन्ली की िलाप केन्मेंस एक बहुत वडा स्टेप (क़दम) उचित सिम्त की ओर है। परन्तु जब तक इस प्रश्न का उत्तर यथांचित न दिया जायशा कि उसकी डिशियों का िफाज़ केसे कराया जाय तवतक कुल की कुल कार्रवाई निरर्थक और बेसूद होगी। मेरे विचार से पारस्प-रिक मिलाप के मामले में शुद्धि के प्रचार से बहुत सहायता मिलेगी गा यह सम्भव है। कि प्रारंभ में इस के कारण विरोधता की वायु कुछ दिनी तक किन्ही २ स्थानों पर अधिक बेग से चलने लगे। आशा है कि देशहितैषी इन कतियय अध्या-बश्यक बातों पर घ्यान देंगे।



बाह नौकरी की दैसी है, बड़े देखिये यहुत उदास। दिच्डोमादिखला फर बोहे-'हमहैं बी. प. एम. ए. पास'॥॥

'फ़ेशन की टरकार नहीं है' कहा 'चाहिये कर का ज़ोर अब हाय हिला साहय ने कीरन, फेरा मुँह मिस्त्री की मार ठाउ हुआ फीका सव पल में, मिस्तों ने ली वा गृं खीन।

मात्र षहुत से १सी तरह हैं. हुए प्रेज्ञाप्ट तेरह तीन ॥ ३॥

-(नेम्रोसक मेनक्रीन की कुपा से मात्र)

मेरु-पर्वत

(सेक्क-धारः भार. बोवड़े, वकीन, परंडीत)

ंश्री नंबू द्वीपमध्ये परिस्तस्तिमहा

धातकी स्वयद माची-।

पश्चान्द्रामे च पूर्वापरपरिधिकस
रपुष्कराधींतरीये ॥

प्रभानत्वं चमेरुव्वकुमिभभवने
भामुगन् जैन विम्बान्।
यामजमाहानमुख्येर्तिविभिग्धुमारत्नरूपान् विचित्रान्॥"

---पूजा पाठ

नियों की दृष्टि में मेर पर्वत अत्यन्त पूजनीय और महत्त्व शाली वस्तु है। भाद्रपद पर्व में मेरुव्रत विभान के समय भाविक लोग परमादर से पंच मेरु की पूजा करते हैं और वहां

पर विराजमान जिनिधवों के भक्तिभाय पूर्वक जल गंधादिक का अर्थ अर्थण कर अपने कमों का क्षय करते हैं। परम्तु जिस मेरु पर्यंत की अथवा वहाँ पर विराजमान जिनिधम्बों की वे पूजा करते हैं उसके विषय में उनको यह धारणा पूर्णतया नहां है कि वह पृथ्वी के किस कोने में हैं। हम को तो संशय है कि कितने जैनी इस प्रथका उत्तर देसकेंगे? अत्तर्थ पाठकों को मेरु पर्वत के विषय में परिचय कराने के हेतु इस लेख के लिखने का प्रयास किया जारहा है। इस में पहले वैदिकमतानुयायी लोगों ने जहां पर मेरु को स्थित माना है उस का वर्णन

करके इस जैन शासानुसार उसके विषय में योड़ी सक्षां करेंगे ।

हिन्दुओं के प्रस्य पुराशा ११६ अध्याय + के मध्य मेर वर्षत के सम्बन्ध में लिखा है कि "सर्वेषापुत्तरें मेरु:"! इस से मेरु पर्वत सर्थ देशों के उत्तर में होना प्रतिभाषित होता है। इसी हेतु उत्तर ध्रुव की ओर होने का अनुमान किया जाता है। भागवत रक्ष प्र अध्याय १६ में विष-रण है कि:—

"इस मेरु पर्वत के मस्तकपर के मध्यभाग में ब्रह्मदेव की नगरी है। उसी ब्रह्मपुरी के निकट पूर्वादिक दिशाओं, में इन्द्रादि आठ हिलेकपालों। के आठ नगर उन लोगों के वर्ण प्रमाण हैं।"

महाभारत के बनपर्व अध्याद १६३ के मध्य मेरुपर्वत का वर्णन यूँ दिया है। एनं त्वहर हमें हं सूर्या चंद्रमसी धुवस्। मदाक्रेण मुगाहत्य कुरुतः क्रुरु नंदन ॥३७॥ ज्योतीं विचाप्य शेषेण सर्वारय नद्य सर्वतः। परियांति महाराज गिरिराजं मदिक्षणं॥३=॥

इस म्लोक का भावार्थ इस प्रकार है कि प्रति दिवस सूर्य न चंद्र इस पर्वत की प्रदक्षिणा देते हैं। उस ही के पास से फिरते हैं। उसी प्राप्ताण सर्व तारे बुव अथवा निश्चल इस मेरुपर्शत की प्रद-क्षिणा देते हैं।

अगाइी उस पर्शत के विषय में लिखा है। क "रामि होने पर खह मेरु पर्शत अपने अंग के सेज

[÷] इस लेखमे मराठी "विविध ज्ञान विस्तार" वर्ष ४२ वें में प्रकाशित स्वक मि० गोलाले के एक लेख का विश्वित अपयोग किया गया है।

से अँधकार को मेट सा देता है और दिवस जैसा प्रकाश अपने चहुं ओर फैला लेता है। उसके देवते चहां पर यह जानना फठिन हो जाता है कि यह रात्रि है अथवा दिन !" इस विवरण से पाठकाण सहज में समभ सक्ते हैं कि मेर पर्वत के अँग में प्रस्फुटिन दिश्य बनस्पति को प्रभावान बनानेदाला वह प्रकाश अँरोरा बोरी भाँ लिस (Aurora Borealis.) के सिवा और कुछ नहीं है । उत्तर भ्रव की ओर से इिमचलयानंतर आकर आर्थगण मध्य एशिया खंड में घर्षी पहिले बस गये थे। तब महाभारत के खिखे जाने के समय ने उत्तरध्रव की ओर अपने स्वर्गासीन पूर्वजी को नमते थे। वहीं पर उन्हों ने मेरुपर्वत के शकाश संबंध में तथा उत्तर भ्रव में आकाशस्थ दूर्यों के संबंधमें जैसा का तैसा वर्णन लिखा है। इस विषय में स्व० लो० तिलक का वर्णन इस प्रकार है:--

"These quotations are quite sufficient to convince anyone that at the time when the great Epic (HETHICA) was composed, Indians writers had a telerably accurate knowledge of the meteorological and astronomical characteristics of the North Pole (SAT MA) and this knowledge cannot be supposed to have been acquired by mere mathematical calculations. The reference to the lustre of the mountain is specially interesting in as much as, in all probability it is a description of the Aurora Borealis visible at the North Pole"

Arctic Home in the Vedas pag. 69-70. उत्तर प्रव में हिमप्रलय जैसी शीत बढ़ जाने से वहां रहना दुष्कर होगया, तिस करके वहाँ से देवादिक सहित सर्वलंकगण दक्षिण की ओर चले जाये और वहां उन्होंने नवीन मेठ की हथापना की भीष्मपूर्व में इस बात की कि देवादिकों में किस स्थान पर नवीन मेठ की स्थापना की थी सहज करपना की गई है। उस में लिखा है कि:-

"इस मेठ की चारों दिशाओं में मदाश्व, केतुमाल, जम्बूद्रीप व उत्तरकुट यह चार द्वीप हैं। इस मेर के पश्चिमधार्श्वतीं जंब्याड में केतुमाल नामक घनी वस्तीवाला परेण हैं। वहां के पुरुषों का वर्ण स्वर्णमय है तथा ख्रियां रूप में केवल अप्सरा ही हैं। इस परेश में एक अति विस्तीर्ण म्फट्यितुल्य शुभू जल कर पूर्ण तथा कांचनमय व।लुकाकर युक्त अत्यन्त रम-यीय विंदु नामका सरोवर हैं। उस सरोवर में से वस्वीकसारा, नलिनी, सरस्वती, जम्बु, सोता, गङ्गा, सिन्धु ये समुद्र में मिलने वाली नदियां निकली हैं।" (भी० पर्व, अ० ६ वा) उस ही पर्व के अन्त अन्याय में लिखा है कि:-

"जो मनुष्य ब्रह्मलोक से भृष्ट होते हैं वह
यहाँ (मान्यवान् पवत) पर जन्म ग्रहण करते
हैं। मेरु के उत्तरपार्श्व में तथा नील पर्वत के
दिख्या में सिद्धों का पित्र निवेष उत्तरकुरु है।
यहाँ पर मन्द्युण्य कर देवलोक से च्युत हुए
मनुष्य लोग होते हैं। " " मेरु के पूर्ववर्ती
प्रदेश की भद्राश्व संज्ञा है। इस प्रदेश के पुरुष
शुभवर्ण, तेनस्वी व बलाड्य होते हैं।"

साथ ही उसके पांचवें अध्याय में इस प्रकार विवरण है:-- "मेरु के दिलाए में सुदर्शनकीय है। इस का अपरनाम जम्बूद्रीय है और यह बकाकार है इस में अनेक नदियां व जलमवाह तथा गगनचुम्बी पर्वत हैं। फलपुष्पकर भरे अनेक छल हैं। जो धनधान्यकर समृद्ध है। यहां अनेक आकृति के नगर तथा असंख्य रमणीय ग्राम हैं। इसके समीप गहन लवए। समुद्ध है।"

उधर श्रीमन्महाभारत में संजय ने पृतराष्ट्र को मेरुपर्वत का वर्णन वतलाते हुए कहा था कि:-

''हे भृतराष्ट्र! इस लोग जहां बसे हुए हैं वह भारतवर्ष है। उसके परे हैमवत है। हेंप-फुट की परली तरफ हरिवर्ष है। नीलपर्वत के दक्षिण तथा निवध के उत्तर में पूर्व पश्चिमी विस्तार लिये माल्यवान् नामक पर्वत है। उस माल्यवान् की उस और गन्धमादन है। इन दोनोंके मध्य में नहीं लाकृति स्वर्णमय मेरपर्वत है। वह तरुणमूर्य सदश देदीप्यमान है। तथा धुमरहित अग्निममाण प्रकाशमान् है। वह भौरासी हनार योजन ऊँचा है। उतना ही भूमध्यमें हैं। इस मेरुके चार्ने पान्वीं में महारव, केतुमाल जंबुढीप व उत्तरकुष्ट यह चार द्वीप हैं। खस्य ज्योती का नायक को ध्यादित्य सो मेरु का निकटवर्ती घेरा देता है। इसी प्रकार नदात्रों सहित चः द्रव वायु उसकी पदिवासा देने हैं। यधीं पर बुद्धा, रुद्र व सुरेश्वर इन्द्र शचुरदिशाए।युक्त अनेक यह करते हैं। तथा नारद, तुम्बर, विश्वावसु, हाहा, हुहू श्रोदि ग्न्धर्व यहाँ पर नाना पकार की स्तुति करके देवभेष्ठ को संदुष्ट करने हैं। मेरु के उत्तर में विशाल शिला प्रहकर वे(प्टत श्रीर सर्व ऋतुओं के पुष्पों से युक्त, दिव्य व समसीय कर्णिकार वन है। इस वन में सर्वभूत निर्माण कर्त्ता पश्चपति भगवान शङ्कर कर्णिकार पुष्पीं की माला गलेमें डाले अपने दिव्य भूतगणों कर वेष्टित अमेसह कीड़ा करते हैं। मेरु की पश्चिम दिशा में जम्बुखंड के मध्य केतुआल नामक विशद वस्तीवोला मदेशहै। वहाँ आयुष्यमयीद। दश हमार वर्ष हैं। तप्तस्वर्ण के समान वहां के लोगों का गौरपन है। वहां रोग-शोक न ह से सब सदा प्रसन्नविश रहते हैं। गंधमादन के शिखर पर गुद्धकाधि गति कुवेर गत्तमा व अप्तरात्रों सहित अपना काल्यापन आनंद से करता है। इस गन्धमादन के आस पास अनेक विशाल नगर हैं। यहां आयुक्ती दीय-तम मर्यादा स्यारह हजार वर्ष की है। यहां के मनुष्य विशेष बलाह्य, तेत्रस्वी व सदा आनंदी होते हैं और खियां कमलकांति समान सर्वत्र नेत्रानन्दकारिणी हैं। नीलवर्ष के परेश्वतच पं है। श्वेत की दूसरी छोर हैरएयक है। तथा षससे परे नाना जनपदोंकर युक्त ऐरावत द्वीप है। हिमालय से अनुक्रमकर दक्षिण व उत्तर मं भरत व ऐरावत धनुष्याकार हैं। व रदेत, हिरएयक, इला, हरी व हैमवत उन पांक्क मध्य इला है। इन सातों में ही एक दमरे से उत्तरोनार विस्तार, आयुर्मर्यादा, धर्म, अर्थ व काम बढ़ा चढ़ा है। हिमनान् पर्वन पर राज्य रहते हैं। हेमकूट पर सुद्धक बसते हैं। निषय पर्यत पर सर्व व नाग रहते हैं। तथा वहाँ पर गोकर्ण नामक तपोबन है। श्वेत पर्वत पर सर्घ देव तथा अप्सरा वसते हैं। गन्धर्व सदा निषध पर रहते हैं और बुद्धार्षि नील पर्वत पर निवास करते हैं।

मेर के उशार में तथा नीता के दिशाए में सिद्धों द्वारा निवेषित ऐसा उशरक्र है। इस मदेश में हुचा मध्र फल देने वाले हैं जो नित्य नये फल फूल देते हैं। फूल सुगंधयुक्त तथा फल रसाल हैं। यहां एक मकार के बूचा सर्व इच्छाओं की पूर्ति ऋरते हैं। तथा दूसरे 'च्हीरी' नाम के कोई द्वन्न हैं। उनसे सदैव अमृतद्वन्य मधुर पड्मयुक्त चीरस्वन होता है और उनके फर्लो से बसाभरण उत्पन्न होते हैं। वहां की सर्वभूमि हीरा, माणिक पद्मराग श्रादि रत्नों की है। उस पर सोने की बारीक बालुका फैली हुई है। इस पर चलना मानों नाव का पानी पर चलना है उसका स्पर्श क्ष्यकर मनीत होता है। यहाँ के मनुष्य अपने मंदपुर्यकर देवलोक से जन्मते हैं। वे सर्व अति निर्मल व उच्चकुलों में जन्म लेते हैं। परन्तु स्त्री पुरुष युगल जन्मते हैं। वहाँ की ख़ियाँ अदसरा तुल्य होतीं हैं। यह लोग 'च्हीर' इत से माप्त दुःव से भीवन निर्वाह करते हैं। यह युगक्ष स्त्री पुरुष एक साथ जन्मते तथा गुण, रूपादि परस्पर एक से होते हैं और बह समानरूप में बढ़ते हैं। सार्शश, वे सर्व शकार परस्पर में अनुरूप है तथा उनका मेम भी चक्रवा चक्रवी सहशा है। यहाँ के लोग सर्वदा आनंद में रहते हैं। वे यह भी नहीं कानते कि दुःख क्या है ? वे दश हमार दश

सी वर्ष जीवित रहते हैं। ""यहां मनुष्यों के साथ तीच्छा चींच बाले 'भारंड' पन्नी रहते हैं।

मेरु के पूर्वमें भद्रास्य नाम का मदेश है। वहाँ मद्रसाख नाम का एक वन है, जिसमें 'कालाझ' नाम के एक विशाल सुलक्षण व सततफल पुष्पसंग्र एक योजन ऊँचाई के सिद्धचरणों को सेवित महाहृत्त हैं। इस मदेश के मनुष्य शुभूवर्णी, तेजस्वी च बलादच हैं श्रांत स्त्रियाँ कुमुदवर्ण की सुन्दर तथा हृष्टि को सुलकर हैं। उनका श्रंगस्पर्श चंद्रसमान शीतल व सुलावह है। यहां के लोगों की श्राधुमर्यादा दशसहस् वर्ष है। वे कालाझ हृत्त के रस से कालयायन करते हैं।

(चिपल्राक्तर के मराठी पहाभारत से) उत्तर ग्रंथ में अधिक ठण्ड पड्ने के कारण वहां से निकल कर लोग दक्षिण की ओर आये तो वे सैवीरिया को गये और बिंदु सरोवर के तिकट केत माल प्रदेश में बस गये। इस प्रदेश के पूर्व पार्श्व में उन्होंने मेरु पर्यत स्थापित किया। उस मेरु पर्वात की प्रदक्षिणा देते जम्बूनदी उत्तरकुर से निकलती है। (भीष्मपर्श अ०७) 'मेद के दक्षिण में निपन्न पर्शत है उसपर नाग व सर्प रहने 🐉।" (भी १ श्र॰ ६) सर्प तुरक सममना और उनका देश तुरक प्रांत । यह प्रांत मंचुरिया से विवास पर्यंत सक विस्तरित है । विगण पर्वत ही नवीन मेक है ऐसा अनुमान किया जाता है। मेरु के दक्षिण का मुद्श्निद्वीप किया जम्बूद्वीप कहा है इसकी खोज करना श्रेप है। खिमण पर्वत के दक्षिण में चीन देश है । शायव उस ही का

साम सुदर्शन द्वीप होगा। सुदर्शन द्वीप का धर्णन सीन देश के सिचा पशिया खंड के दूसरे कोण तक के किसी देशको सनान लागू नहीं है। सुदर्शनद्वीप के अनुसार यह देश वर्तु लाकार है। यहां अनेक निद्यां, कल प्रवाह, गगनचुंची पर्यंत च अनेक मगरादि हैं। और इसका नीचे का बहु भाग समुद्ध संघेष्टत है।

मंदुरिया में मेर पर्वत की स्थापना करने बाले मेरवर्गत की व्यालकी बहुल अर्थात इन्ह्रपदी-बहुल (?) पीतवर्णी आर्थ व दंब यहां उच्चरकुर से मचीन आने बाले गौरवर्णी हैं। इनमें देवीं का पराभव हुआ। मसुरिया के मेर पर्धत को देवने दंन्यगुरु शुक्राचार्य गये थे। (भी० प० अ०६) इसके अनुसार मंदुरिया में मेर पर्वत है और उस के निकटवर्ती प्रदेश तिब्बत तक दैन्यों के प्रदेश हैं। और उन्होंने वन् पर नवीन स्वर्गों की स्थापना की थी यह प्रकट है। इन नवीन स्वर्गों की स्थापना की थी यह प्रकट है। इन नवीन स्वर्गों की सामत भागवत में निम्न प्रकार वर्णन है कि:—

"एशिया खंड के जो भाग बैब्एव धर्मी आयों द्वारा बसाये गये उनके उन्होंने नौभाग किये, जो 'बर्जें' कहलाये गये। इन नौ वर्षों के मध्य 'इलावर्त्त' नामक वर्ष सर्व के मध्य में है। उसके नाभिस्थान में स्थित कुलए वैतों में श्रेट्ठ येह पर्वत हैं। भा० स्कंध ५ अ० १६) सर्व वर्षों में 'मारतवर्ष' ही कर्म लेश हैं इतर आठ वर्षों में स्वर्गवासी लोगों के अव-शिष्ट पुष्य फल भोगने के स्थान हैं, जिनको अप १७) इलावृत्त हिमाल्यके उत्तर में है।"

(स्कं० ५ ४०० १६)

तिब्बत ही हिमालय के उत्तर में हैं' इसिलिये तिब्बत ही को वे इलावृत्त समक्षे होंगे यह सम्भ-चित होतो है। तिब्बत को त्रिविट्टप भी कहते हैं।

यहाँ तक की विवेचना में हमें वैदिक मताबु-सार मेर पर्वत का पता लगता है कि वह पहिले तो उत्तर ध्रुव में था, परन्तु उपराम्त में चीन देश-की उत्तर दिशामें स्थित मंचुरिया के खिगण पर्वत पर उसकी स्थापना हुई। फिर तिब्बत में वह गया यह स्तष्ट विदित होता है। अब हमें देखना है कि जैनशास्त्र इस मेठपर्वत के विषय में क्या कहते हैं?

जीव' पुदगल' धर्मा' अधर्म' व काल यह पांच द्रव्य जहां नहीं हैं वहां झलांकाकाश है। और जहां इन पांच दर्व्यों का अस्तित्व है वहां लोकाकाश है। थलोकाकाश अनन्त व शास्त्रत है अलोकाकाश में भ्रायोलोक, मध्यलोक, ऊर्ध्धलोक' यह तीन लोकाकाश हैं। यह ईश्वरीय निर्मित नहीं है. स्वयं-सिद्ध व अनादिकाल सं है। मध्यलोक में जंबदीप धातुकीद्वीप, पुष्करद्वीप, वारुणीवर द्वीप,चीर-द्वीप, घृतवर द्वीप इत्तुद्वीप नन्दिश्वर द्वीप आदि असंस्थात हीए हैं। आज हमें इस लेख में केवल जंबुडीय का दिश्दर्शन करना है,इसलिप इतर डीपी से हमें कोई सम्बन्ध नहीं है। जैन शास्त्रानुसार जंबूद्वीप मध्यलोक के ठीक बीचो बीच में है। वह पूर्व पश्चिम एकलक्ष महायोजन# का है। चालीस कोटी मील लम्बा है। दक्षिणीं तर इसका विस्तार त्रेशठ मील है। इस जंबूद्वीपके ठेउ बीचमें मेरुपर्वात

^{*} दो इतार कोस का एक मदायोजन भौर चार कोस का एक लघुरोजन दोताहै।

है। पश्चिम भाग से सिन्धु नदी निकलकर डिअणवाहिनी होकर घैताका पर्शत में होती हुई भरतक्षेत्र को गई है। वहां से घह लग्ण समुद्र में मिली है । गंगा-सिन्धु इन दोनों निवयों और विजयार्थ पर्वत ने भरत क्षेत्रके छः भाग किये हैं। इन छ। भागों में पांच भाग अलेख खराह हैं और छटवां केवल आर्य खरह हैं। उत्तर में विज-यार्थ पर्वत का भाग, दक्षिण में लवण समुद्र, पूर्व में गंगा नदी व पश्चिम में सिन्धु नदी से सीमित भाग भागे खरह (आर्यावतं) नामक है। विज-यार्धपर्वत पर नी टॉकें हैं, जिन पर विद्याधरों के निवात हैं। भरत क्षेत्र के उत्तर में स्थित हिमबाद पर्वत के उत्तर में हैमवत नामका क्षेत्र है जो २१०1 योजन ५ कला निस्तार का है। यहाँ पर ज्ञान्य-भोग भूमि होने के कारण करुपबृक्षादि सुबसा-मिश्री उपलब्ध है। उस हेमचन क्षेत्र के उत्तर में महाहिमबान् पर्नत २०० योजन ऊचा व ४२१० याजन व १० कला लम्बा पूर्व पश्चिम बिस्तरित है। यह स्वर्णमय है और उस पर आठ टॉक्सें हैं व पक ग्रहापद्म नामक सरोवर है। उस सरोवर के विश्व णभाग सं रोहिता नाम की नदी निकल कर हैमचत क्षेत्र में शब्द पाति करती हुई वृक्त बैताइक पर्शत का अर्थचक देकर पूर्व षाहिनी हा लबक समर में मिली है। उसी सरोबर की छत्तर भाग से हरीकाँना सामक नदी निकल कर ै हरी चेत्रा के गंधावति वृतवैताड्य पर्वतको अर्ध-ः दक्षिणा देती हुई पश्चिमाभिमुख।हो स्वण समृद्र में मिछी है। महाहिमवान पर्धत के उत्तरमें स्थित हरिशेत्र का बिस्तार मध्दर योजन एक कला है। इस श्रेष में मध्यम भोग भूमि व कर्य-

है। उसकी में डाई दशहजार योजन की है। उसके पूर्व पश्चिम में बाईस बाईस इजार योजन के दो भद्रशाल वन हैं। तिन के दोनो ओर तेईस तेईस हजार यो तन के लधे पूर्वविदेह ए पश्चिम विदेह हैं। इस प्रकार अंजूीप की पूर्व पश्चिमी लंबाई (10000 + 22000 + 22000 + 23000 + 23000) एक स्थ योजन है। उसी प्रमाण दक्षिणोत्तर लम्बाई भी उतनी ही हम स्वीकार किये छते हैं। वक्षिणोत्तर भाग के १६० भाग प्रमाण वहां से दक्षिण के भाग में 'भरत स्रेत्र' हैं को ४२६ 🟅 योजन (इक्कीस लाख चार हजार मील) छश्वा है इस भरत क्षेत्र के ठीक मध्य में विजयार्धपर्वत (बैताड्य प्रवंत) # पूर्वपश्चिम लवणसमुद्रपर्यन्त फैला हुआ है। उससे भग्तर्स न-उत्तरभागत्त्रेत्र ष दक्षिण भग्त संत्र ऐसे दो भागों में विभाजित हा गया है। भरतवंत्र के उत्तर में हिमबान पर्गत पूर्व पश्चिम छवणसमुद्रपर्यन्त विस्तरित है। वह १०० योजन अचा तथा १०५२ योजन व १२ कला चौड़ा है। उस पर्यत पर 'पद्म" नाम का एक सरावर (कुइ) जिसनें से रोहिनास्या, गँगा व सिंधु यह तीन निदयां निकली हैं। इनमें से रोहितास्या नदी उत्तराभिमुख हा हिमवत क्षेत्र में शब्दपातीवृत वैताड्य पर्वत का अधं चक्कर देकर पश्चितकी आरसे लगण समुद्रमें मिलती है। पासरोवर के पूर्व से निकल कर गंगा नदी दक्षिणाभिमुत हो जैताड्य पर्वत क मध्य होकर भरत क्षेत्र में गर्ह ओर छवण समुद्र से गिछी

*भरतस्यविषकं ने जञ्जू द्वीपस्य नविश्वतः भागः। १ हमास्यानिकृतं तत्वार्थं सूत्र भागः ३ सूत्र ३६ षुआदि सुन हैं।

हिरवर्ष क्षेत्र के उसेर में निच्छ प्रांत है जो चारसी योजन ऊर्जा व १६=४२ याजन २ कला लम्बा है। इस पर 8 कुट व निविद्ध नामक एक सरावर है। उस सरीवर से हरी व मिनोदा भामक पर्दियाँ निकली हैं । हरि नदि दक्षिण अंग सं निफलकर हरिक्षेत्र में होती हुई गंबाबीत बूत बैताइच पर्यंत का अर्धचक्कर लगा कर पूर्व षाहिनी लवण सञ्चद्र में गिरी है। सीतीदा नदी उत्तर भाग से निकल कर देवकुक नामक उत्तम भोरा भूमि में बहती विदयुत्त्रभ राजदन्त पर्वाद में भद्रशाल वन को गई है और वहां से सुदर्शनमध्य मेह पर्वत की अर्थ प्रदितणा देकर पश्चिमा भमुख हो विदेश्भेत्र को चली गई है, जहाँ से लत्रण समुद्र में गिरो है इस प्रकार मेड के उत्तरभाग में ऐरावतक्षेत्र (कर्मभृमि-प'च म्लेच्छलंड व एक आर्य खण्ड) ऐग्रावतद्येत्र जध-न्य भोगभूमि)रस्यकत्तेत्र (मध्यमधोगभूमि)उत्तर कुरुक्षेत्र (उत्तम भोगभूमि,यह चारक्षेत्र व शिखरी रुक्मी, नील, गँवमादन, गजदन्त, माल्यवन्त गनदन्त, यह पाँच पर्वत तथा भद्रसाल वन हैं। मेठ के पूर्व में स्थित भाग के मध्य पूर्व विदेह व पश्चिम भाग में पश्चिमविदेह है। निम्न विव-रण से पातकों को जंबूतीय की रखना की सहज में करवना होजावेगी।

१ - मेरू के द्विण पार्श्व में स्थित चेत्र पर्नत आदि ।

भरतक्षेत्र-कर्मभूमिः, ५ म्ले**च्छ ध** एक आर्थ येसे ६ संड। तिमवाम् कुला चल पर्यतः ।
हंसवत् श्लेष्ट-ज्ञाचन्य भोग भृति ।
सहातिमवान्-जुलाचल पर्यतः ।
हरिश्लेष-मध्यम भोग भृति ।
निषय कुलाचल पर्यतः ।
विगुत्यभ धजदन पर्यतः ।
संग्रह्म राजदन पर्यतः ।
संग्रह्म शंज-उत्तम भोग भूति ।
भद्र शालि वन ।

र. मेरु के उत्तरपार्श्व में स्थित स्त्रित, पर्वत आहि:-

परायतक्षेत्र-कर्मभूमि (प्रस्ते इक्क व ्यार्थक्षेत्र शिवरी पर्शत । परावता क्षेत्र जवन्यमीम भूमि रुक्मी कुलाचल पर्शत । रम्यक क्षेत्र-मध्यम भीग भूमि । नीलांकुल चल पर्शत । गोव मादन गजदंत पर्शत । मान्यवंत गजदंत पर्शत । उत्तर कुरुक्षेत्र-उत्तम भोगभमि । भद्रशाल चन ।

रै. मेरु के पूर्व पार्श्व के १६ विदेह जो तर-१. कच्छ विदेह २. सुकच्छ विदेह ३. महाक-च्छ विदेह ४. कच्छावर्त विदेह ५. आवर्त विदेह ६. मंगलावती विदेह ७. पुष्कर क्षेत्र म. पुष्कला-धर्त तेत्र ६,धच्छ जोत्र १०सुबच्छनेत्र ११. महाबच्छ क्षेत्र १२. वर्षावर्त वेत्र १३.रम्य विदेह क्षेत्र १४,रम्यक क्षेत्र १५. रमणीक क्षेत्र १६. मंगलावती क्षेत्र।

४.मेरुके परिचम पार्श्वके १६ विदंहचीत्र:→

१. वमलेश २. सुवमलेश ६. महावमलेश ४ पद्मावती स्रोत ५. घलगुलेश ६. सुवलगु स्रोत ५: गंघलिसेश कि. गंघलावती शेश ६. पद्मसेश १०सुपद्मशेश ११. महापद्म स्रोत्र १२. पद्माधर्त स्रोत्र १३; शंक स्रोत्र १४. नलिन स्रोत्र १५. कुमुद स्रोत्र १६. नली शंत्र ।

इस प्रमाण एक लक्ष महायोजन विस्तार के जम्बूरीप१ के मध्य दक्षिणपार्श्व में 'गरत चोत्र'' हैं, जो धनुषाकर है और जिसकी लम्बार्ट लवण समुद्र से हिमवत पर्गत पर्यंत ५२६ योजन ६ कला क है अर्थात् इक्कीस लाख पाँच हजार दो सी श्रेशठ मील तीन सी पंद्रह गज व २८॥ इञ्च है । इस भरत क्षेत्र में गंगा सिन्धु इन दो निदयों व विज-यार्थ पर्गत से छह भाग हो गये हैं, यह हम देख चुके है। इन में पाँच भागों में ता म्लेच्छ खग्रह हैं और छट्टे में केवल आर्थितगृह हैं, यह भी हम देख चुके हैं। जैन शास्त्रानुसार भरतक्षेत्र व आर्थ खंड का नक्ष्मा निम्न प्रकार है:—

हेमवन पर्वत	पभ सगवर	
भरतक्षेत्र	भरतक्षेत्र	भरतक्षेत्र, स्लेच्छखड
म्लेच्छखंड 	म्लेच्छबंड ध	विज्ञयार्थ पर्वत प
भाग्र भोर मलेर खंर	भ० क्षे० आ० ख०	भ० क्षे० म्लंट खं०
2	О उ पलवग	* 8
ंव	ण स	मु

श्री मद्भागवत पंचम स्कंघ में जम्ब्द्रीय के
 श्राठ वपद्रीय दिये हैं:~

''लंब् द्वीपस्य च राजनुपद्वीपानध्यौ हैक उपदिशन्ति सगरारमञ्जी रश्यान्वेपण् इमा महीं पश्तो निरवनद्भि रूप कक्षिपतान्।। २६।।

तम्रुपया स्वर्ण प्रस्थारचन्द्र शुक्र भावतीनो रमणको मंद्रशेषः पांचणस्थः निहस्रो लंकेति ॥ २०॥

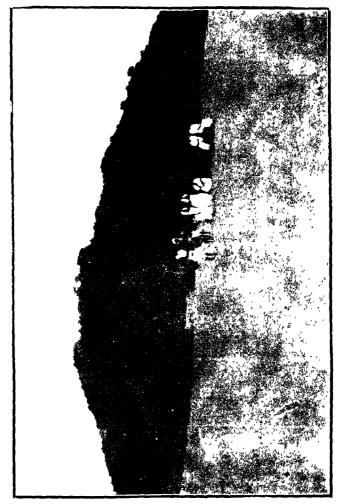
-भा० ₹र्क० ४ अ० १६

सायुपुराण, भुननिस्याम, २० ४ मध्य जंत्रहीप के छह स्पद्वीप स्तलाय हैं भीर उन के नाम इस पकार लिखे हैं:—

- (१) भंगद्वीप (२) यनद्वीप (३) मलयद्वीप (४) शंबद्वाप (४) बुगद्वीप (६) वशद्वीप ।
- भरस पर्विशित पंचयोजन शत विस्तारः पर्चे कोन
 विश्ति भागा योजनक्य।

-अमा स्वाभिकृत तत्वार्थ व मक ३ सू० २





पालगहिन नहीं श्रीकान्यकुन्ताचार्य तत् काने ये खोर नहां खब श्राक्तनकान आश्रम स्पना है

इस नका के मुताबिक वर्तमानकांठ में भूगीलं में वर्णित मार्यखंड जैन भूगील का आर्यखंड महीं है, यह सहज ही में अनुभवगम्य ही सकता है। साँवत हिन्दुम्तान देश को ही आर्यखंड (आर्यावर्त) समभते हैं, परन्तु यह भूल है । जैन शास्त्रों के आर्यबंद में युक्य, श्राफ्रिका, एशिया मादि ६ खण्ड द्वीप का संमावेश हो जाता है। तथा इनके अतिरिक्त उस में और भी पृथ्वी गर्भित है जिसका पता अभा नक नहीं लगा है। नेमियन्द्र सिङान्तचकवर्तो छन "त्रिलोकसार" में आयं वण्ड मध्य उपलब्गा समुद्र के आस पास खब विस्तीर्ण व लोक सख्या से भरपूर ऐसे १७० नगर बतलाये हैं। यह सर्व निराले २ राजाओं के आधीन हैं। भीर उस खपलुक्स सञ्जद में छोदे बड़े २७००० हीप, महाहीप हैं, पेसा लिखा है। इस हेर् इसारी पृथ्वी पर विद्यमान सागर महासागर यह आयं वण्ड के उपलब्धा के हो साग होना चाहियं और उपलब्ध पृथ्वी (पशिया, यूरोव, अफ्रिका, अनेरिका, अनिवि) उसी उपलगण समुद्र मं के कितने ही असंख्य होपों में अथवा निकट वर्ती नगरों का ही एक भाग है, पंसा पतीत होता है। आर्यसंड के षाकी के प्रदेश और भरतक्षेत्र के वाकी के पांच म्हेच्छ खंड प्रदेशों का पता अभी तक नहीं हमा 🖁 । जलमजन प्रकार से उनके विषय में कोई बात पंक्षी करना कडिन है। भूगर्भशास्त्रकों काक धन है कि बहुत प्राचीन कालसे इस पृथ्वी पर जल-मंजन प्रकार अनेक बार हुये हैं। भारतीय महा-सागर पहिले एक प्राचीनकाल में एक मदाशीय था जिलका विस्तार दिवुस्थानके दक्षिण तक्के अफ़िका

के दक्षिण और अमेरिका पर्यन्त था। वह महाद्वीप कालांतर में महासागर में इबगया। उस ही द्वीप में कें पर्वतोंकी शिक्षिरं आज जावा, सुमात्रा, धोर्निषी, मलयद्वीप, सिंखेलिस, रॉडिंग्स, चँगास, मॉरिशस, मादागास्कर, असेनरान् फाकेलैंड आदि हैं। स्पेन के पश्चिम में स्थित अटलौटिक महासागर में का परसिडोनस् नामक पेलेंन्ड पहिले विशाल द्वीप था। कालान्तर में वह डूबगयी। यह भूगर्भशासकी का मन है और आजंकल जहाँ अफोर्स (Azores) हीपं है वहां पहिले एक पवर्त की शिखिर थी। पृथ्वी के गर्भ में भरे हुंये ज्वालायही पदार्थी के स्कोट से मगरों के सागर और सागरों के नगर वन गये ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं । सारांग्रतः प्राचीन काल के जैन शाश्रों में क्लिंत पृथ्वी के स्वक्र्य में स्थित्यन्तर पड़गया ही तो उसमें कोई आइवर्ष नहीं तथापि जैनं भूगोल अवार्चीत काल का नवीन न हों कर अयंत प्राचीन काल का है यह बात निर्धिवाद सिख है।

वंदिक मतानुयाथी कोगी के आर्यलंड में में क पर्यंत पहिले कहा स्थित था यह बात इस लेख के पूर्व भाग से प्रगर्द है। परन्तु जैन शास्त्रानुसार उसका स्थान आर्य खंड में न होकर उसके उत्तर और अति अंतर से है। यह अंतर ठीक अठानवे लक्ष बीबीस हज़ार कोसका है। उस पर्यंत के नितंब पर भद्रशाल बन है। उस बनसे पांडुक बन पर्यंत्र में क की ऊँबाई 82 हजार योजन है। किर उस पांडुक बन से में क की शिक्षिर ४० बीजन पर्यंत्र रुख नील मणि की है। पारंभ में वह १२ योजन विस्तार की है। किर कप्तती होते २ उपर टीक पर वह ४ बोज न है। उस शिविर से के वल एक पाल के अन्तर ५ सीधर्म रन्द्र का सभास्थान (रष्ट्रक विमान) ४५ छाज योजन का है।

मेर पर स्थित भद्रकाल बन से ५०० योजन की कं काई पर मेरुके बारों पार्थीं पर बार नंदन बन हैं और बहें से ६२॥ इजार योजन की कं बारें पर्यन्त सीमनस नामक बन है, उस से ३६ इजार योजन की उदि पर्यन्त सीमनस नामक बन है, उस से ३६ इजार योजन कं बारें पर्यन्त मेरुके बारों अरेर बार पांडु के बन हैं। इनने बार पांडु के लिए अर्थ बजाई ति की हैं। इन पांडु के लिए आई से उस माभिषेक होता है।

जारू वि दक्षिणोत्तर घ पूर्व पश्चिम एक एक स्त योजन का है। उसके लग्ण समुद्द का विस्तार थ छ। व व तन का है, िसके दूस**ी ओर म छा**ज योजन लंग भाव भी नवंद है उस भातकी मंड के फालोइयो सबुद्र का विश्तार १६ छात्र योजन का है। कालां रिय समुद्र के सन्मुख १६ छाड योजन बिलाए का पुण्क (ार्घ रिप है। यहां तक डाई द्वीपके धा लाल योजन होने हैं । अंत्रुद्रीय, धात की खंड द्वीप, व अर्घ रूकरहीए (पुरुकरार्घ ाप) इनको थडाई द्वीप करते हैं। इस अदार द्वीप तक ही मन्त्र्य को गाय है। उसके उपरान्त मनुष्यों का निषास नहीं है। इसलिषे वहां मनुष्य पहुंच ही नहीं सकता है। अदार हीप के हद पर मानुपोत्तर पर्वत है। जिस पर ४ अरुविम जिन मदिर हैं। वहां की वेदना देवगण करने आते हैं। विद्याधर भी बहा महीं पहुंच सके। वे दूरसे बदना करते हैं। फिर

मला महत्य की क्यां बात है। इस अर्ड़ क्षीप में पंच मेक पर्वत हैं। भावपद पर्व में इन्हों पर की जिनविन्नों की पूजा करते हैं। इति।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य

र्मगर्व भगभाग थी है, मंगर्थ गोतनीयच्छी । भंगर्व कुरदकुरदायों, चैन पर्मास्तु मगर्च ॥

> न मंदिरी में प्रति दिषसः अ सभाओं से प्रारंभ में जो मंगला-चरण किया जाता है उसही में उक्त रलोक भी सम्मिलित है। इस में भगधान महानीर और उन के गणधर गीतम इन्द्रभृति

के साय भी कुन्दछुन्दाचार्य का भी स्तरण किया गया है। इस ही से पाठकरण इन भाषार्य की महत्ता और प्रतिष्टा का अनुभाव कर सके हैं। वस्तुतः दिगम्बर जैन सम्प्रदायमें आप की मान्यता। अति विशद है। यद्यपि भ्येताम्बर सम्प्रदाय में भी आप मान्य हैं। दिगम्बराम्बर के प्रत्येक मुनिवंश आप से ही अपने वंश की उत्पत्ति मानने में गर्व करता है। दक्षिण भारत में कित ने कि शिलाले ज जैन मुनियों के संबन्ध में मिले हैं यह "कुन्दकुन्दाम्बय" से प्रारंभ हंते हैं। उपदेशरनमाला के कत्ती सकन्लभूषण जी अपने विषय में कहते हैं:-'श्री कुन्द कुन्दगुरुपरमपर्य्यायम्' 'उपासकाष्ययनम्' के रचयिता वस्तुतन्दी आचार्य भी इसी प्रकार कहते हैं कि 'श्री कुन्दकुन्द सन्तानम्।' और 'आराधना क गाकोष' के पितपादक ब्राव ने नियस मी लिखते हैं

अप्रती जिल्लासन कृत अन्तिहापुराण के पर्व १३ ने में प्रांदुक निकाका वर्णन दिवाहै।

कि 'भी कुन्दकुन्दाक्य मुनीन्द्रवंश ' इन के अति-रिक जैन प्रन्थों में पैसे ही उल्लेख पशुनायत से वपसन्ध हैं। इस सब बातोंसे यह जाना जासका 🖁 कि भी कुन्द्कुन्दाचार्य जी को जैन मुनियों के मध्य कितना उच्च स्थान प्राप्त है। यथार्थमें इस ब्रह्मप्रता को प्रगट करने के लिए उनका संबोधन 'मुनीन्द्र' मोर 'मुनियक्वर्वि' सदूरा विशेषणा से हुआ है। किन्तु तुः स है कि इन महोन् आचार्य के संबन्ध में भी बिरोप भूतमात्र सामान्य जनता कं मध्य ही नहीं, प्रत्युत विद्यानीके मध्य घर किए हुर हैं। को इ है कि आज तक जैन इतिहास श्रंथ-कार में व्याप्त है जिसके कि कारण जन साधारण में मुमारमक प्रतिचाद प्रचलित हो रहे हैं। इस का निगकरण करना आध्रद्यक जान कर ही अब कुछ कुछ जैन समाज इस ओर ध्यान देने छगी है। यही इर्ष की बात है। इन्हीं कुन्श्कुन्दा बार्य के विषय में हम दिन्दीविश्वकोष भाग पंचन पुष्ठ ६८-६६ में **८४**ते हैं कि:--

"(वह) एक विख्यात् नैन प्रत्यकार् (हें)। उन्होंने माक्कतपाषा में पट्माभृन, प्रव-षनसार, समयसार, रयणसार, द्वादशानुपंत्ता प्रमृतिप्रन्थ प्रणयन किये हें। अभिनवपस्य, पालबन्द्र, अनुसागर प्रसृति जैन पविद्वतों ने पक्तगृत्य से किसी २ की टीका संस्कृत भाषा में रचना की है। अभिनवपस्य ने षट्भाभृत या पाभृतसार की टीका के प्रारम्भ में लिखा कि कुन्दकुन्दाचार्य का अपरनाम पद्यनन्दी का फिर अनुसागर ने बसी गृत्य की भोदा आभृत नास्ती। टीका के शिष में पद्यन्त्र बी। कुन्द- क्रन्दाचार्य उभव की भिन्न व्यक्ति बताया है-''इति श्री पदमनन्दी कुन्दकृत्दावार्येलाधार्यः पक्रगीवा-चार्यनामपञ्चकविराजितेन चतुरङ्गलु-कासगमर्थिना। ११ % अभिनवपम्प के पत में बद शिवकुमार महाराज के गुरु थे। कोई कोई एक शिव कुपार महारान को ही दक्तिणापथ के बद-म्बरात्र शिवमुगेन्द्र्यमि समभ्यता है। हेम-चन्द्र रचित माकुत व्याकरण की १५१८ है० को लिखी एक इस्तलिपि के शेष पर संस्कृत भाषा में कुन्दकुन्दाचार्य की वंशावली है। इस के पाड से समभ्त पड़ता है कि 'कुल्दकुन्द मूख-सङ्घ सरस्वतीगच्छ कीर बलात्कारण्या के अन्त-र्भूत थे। उनके पह पर भट्टारक थी प्रद्यनन्दि देव, फिर देवेन्द्रक्तिरेव, किर विद्यानन्दिदेव भीर किर मल्लिभूषण देव हुए । मल्लिभूष्ण के शिष्य का अमर शीर्ति और उनके शिष्य का नाम मेराइ जातीय श्रेष्ठ लाइन था ए दिस्सा महाराष्ट्र के सांवली राज्यांतर्गत बैरहाल द्याप

देश्रीकार्थो स्थापित्व इति तत्तामप्रकाना ॥ ४ ७" (E.Hultzsch.South Indian Insert, Vol.I. p. 15%)

नार--द्रशी रायेत से भूतसामा की वस्त व्यावशा विरोधित हो जाती है। जन्य विद्वारों का भी वहीं मत हैं कि पाची नाम कुरकुम्याचारी के अबंदी सम्बद्धा हुए हैं

^{*} विजयन र कं गाम्यास्त्रो नामक देवासय के स्काम पर उक्त पांची शब्द सुन्द्रसुन्द्रवार्थ के नामास्तर की मानि वर्णित हुये हैं—

श्रीमृषसङ्कऽः निवन्दिसह् इत्याहान्यकारकार गयोऽतिरमाः । सत्रापि सारक्यतवाऽत गर्न्छ द्वारका श्रयोमृहिह प्रयवन्ती । । साथार्थः सुकृद्वुस्रदाक्यो वक्त यीवो मरामतिः ।

में ११०४ शक को एक स्वोदिन शिलाफलक **भाविष्कृत हुआ था।** उस में लिखा है-'स्वस्ति शीमत्कृत्दकुन्दाचार्यन्वयद्-श्रीमृत्तम्बद-देशीय-गणद्पीस्तकगरबद्-श्री कील्लापुग्द निस्व देव सामन्तमाहिसिद्-श्रीरूपवारायण देवर । बीरनंदी ने आवारसार की टीका में कहा है कि १०७६ शक को वह (१) और मैथचन्द्र के प्रत्र विद्यमान रहे। मैयवन्द्र का कनाड़ी भाषा में लिखित समाथिशतक पगर्ने से सम-ं भते हैं कि कुन्दंकुन्दाचार्य अभिनवपम्प के सम सामयिक थे। फिर ११०४ शक को उनके वंशो-संव सामन्त निम्बदेव का भी नाम मिलता है। चक्त मनाण द्वारा अनुमान फरते हैं कि वह ई० प्रादश शताब्द को विद्यमान थे। श्वेताम्बर स्रीर दिगम्बर्डभय दल कुन्दबुन्दाचार्य का बड़ा सम्मान करते और उनका बहुविध धर्मी-पदेश सादर ग्रहण करते हैं। श्वेताम्बर जैनों के मत में उपयुक्त धर्माचरण करने से स्त्री भी निर्वाण वा मोत्त पा सक्ती है। किन्तु दिगम्बर समको स्वीकार नहीं करते । कुन्दकुन्दाचार्य ने भी 'मनचनसार' में बताया है-'चितेचिन्ता मायातमहातासि न निन्नाण । 'हदय में माया चिन्ता रहने से स्त्री को निर्वाण नहीं पिलता उक्त बचन से सपभ सक्ते हैं कि क्तुन्त्युन्द् अपने आप भी दिगम्बर रहे। उन का समयसार पड़ने से समक्ष पड़ता है जिस देश में जन्होंने बास किया वहां उनके रहते समय जनपर्म विशोष प्रयत्त पड़ा न था, श्रधि-कांश लोगोंमें विष्णु की पूनाका भचार रहा।"

उपरोक्त वर्णन से पाउकों को निस्न बातों का परिचय प्राप्त होता है कि १) कुन्दकुन्दाचार्य एक विज्यात जैन पंधकार थे और उन्होंने संस्कृत एवं शक्त भाषा में फितने प्रन्थ लिखे थे, (२) धा पश्चनन्दी नामक आचार्य से भिन्न व्यक्ति थे, (३) संभवतः वह ईला की ११वीं शताब्दि में वह थे (७) और उनके धर्मी व्हेश की श्रेतांबर-दिगंबर समान स्वयं मं मानते हैं, यद्यपि वह स्वयं दिगम्बर असील होते हैं। विश्वकीय की इन वानों से से हमें प्रथम के विषय में कुछ नहीं कहना है। यह सर्वमान्य और सर्वविदित है। शेष की बाने अध्यय ही अटपटी सी विश्ति होती हैं। इनमें उसकी दूसरी और तीसरी षानी में तो कुछ भी तथ्य प्रतीत नहीं होता । क्यों कि इस विषय में जो प्रमाण दिये गए हैं बहु पर्याप्त नहीं है। उस हो के उस वर्णन सं उसकी दुसरी बात वाधित है । पश्चर्नान्य भिन्न व्यक्ति थे, इस बात के समर्थकमात्र दो लिखित ग्रंथ हैं परस्त इसके विपर्गत एक शिला छेख और एक प्रथ भी षहीं उपलब्ध हैं जो शायद उक्त गुन्धों से प्राचीन प्रतिभाषित होते है, यद्यपि कोष में इसका खुलाना नहीं है। इसिन्यं निर्णयात्मक रूप में हम यह नहीं स्वीकार कर सकते कि कुंटकुदाचार्य और पद्मनंदी भिन्न व्यक्ति थे। प्रायुत्त उनका एक व्यक्ति होना ही विशेष संभाव्य है। नौसरी चात इससे भी अटपटी है। यह उन जैनाचार्य को जिनका कि स्मरण ठीक भगवान ग्रहाशीर के मणध्य के उपरान्त प्रति दिवस मन्दिरी में होता है, ईसा की ११वी शताब्द का बतलाता है। यहां भी उसके प्रमाण निर्णया-त्मक नहीं हैं। मेघचन्द्र के मूलवाष्य को वहां उपलब्ध नहीं किया गया है। इससे कहा नहीं आ

सकता कि यह कथन कहाँ तक मृत्र के अनुसार है कि कुन्द्कुन्दाचार्प अभिनय पत्प के सम-कालीन थे। यदि उसका यह कथन यथात्रध्य मान भा खिया जाय तो दूसरी और डा॰ हार्नल प्राचीन पर्टाविक्यों से कुँदकुन्दाचार्य का समय ईसा की प्रथम शताब्द का प्रमाणित करते हैं, जैसे कि पाउक भाग देखेंगे। फिर शक ११०४ के शिलालेब का जो प्रमाण दिया गया है वह भी भ्रममूलक है। श्री कुम्दक्रदान्वय के व्यक्ति आज भी दिगम्बर समाज में विद्यमान हैं। 'श्रीमलकुन्दकुन्दाचार्यन्वयद आदि' से सामन्त निम्बदेव को उनका ठीक वंशोद्धव कोई पौत्रादि समभना उपयुक्त है। यथार्थ में कुंद्रकुदा-न्वयद अदि से तो भाव मात्र यही है कि कुंद्कुन्द की प्रभूप में (of the line of Kundakunda) अत्र कुन्दकुन्दाचार्य का समय ११ वी शताब्दि नहीं माना जा सकता। जैन मान्यता के अनुसार यह ईस्वी सन् के प्रारम्भ में हुए व्यक्त होते हैं। और षह मात्र प्राइतभाषा के ही कवि नहीं थे, प्रत्युत तामिलभाषा में भी उन्होंने 'कुर्रल' सदृश महान श्रंथों की रचना की थी, जैसे कि प्रो० एम. एस. रामास्वामी एंगर, एम. ए. ब्यक्त करते हैं कि "जैन ब्रन्थ 'नीलकेसी' का टीकाकार कुरुंख को 'इम्मोत्' संज्ञा (अर्थान् अपना मुख्यन्थ-()urown Bible) से विभूपित करता है। इससे प्रगट है कि जैनियों - को इस बात का विश्यास था कि वल्छुवर (कुर्रुल के कर्सा) जैन थे। कथानक के अनुसार एलाचार्य नामक जैन साधु कुर्रछ के कत्ती थे। यह पैलाचार्य कितनेक के मतानुसार महान् जैनमुनि श्री कुन्द-कुन्द्र के अतिरिक्त और कोई नहीं है, जिन्होंने जैन धर्मका प्रचार तामिल देशमें दिना की प्रथम शर्ताब्द

में किया था।" (See the Studies in the South Indian Jainism. pt. 1. p. 42-43) इस से साक प्रकट है कि 'कु हल' के कर्सा भी श्री कुन्दकुन्द जी थे यह प्रनथ ईसा की प्रथम शताब्द में संकलित किया गया गया था, यह यात अगाड़ी बी॰ चन्न-वर्ची के खेखांश से प्रमाणित होती है। अतएव इस प्रकार भी भी कुदबुंदाचार्य का समय इंसा की प्रथम शताब्दि ही प्रगट होता है। तिस पर डा० चीव शेपागिरि राउ एम. ए. पी. एच. डी. आदि इस विषय में छिखते हुए छिखते हैं कि "तेलुगू साहित्य और भाषा में पर्यान्त साक्षी इस बात की पुष्टि में प्रप्त है कि जिस प्राकृत भाषा में कुन्दकुंद ने इस (पंचास्तिकायसार) प्रम्थवा अन्य को रचा है घही चा उसके सदूश भाषा आंध्रकलिंग देश के अधिवासियों में उस समय अच्छी तरह समभी ही नहीं कावी थी, प्रत्युत दैनिक बोलबाल में व्यवहृत होती थी जिस समय का विवरण रामतीर्थम की मुद्रायें (Clay Seals) और अमरावती के शिला-लेव करते हैं, यह समय ईसा की प्रथम वा द्वितीय शताब्दि के प्रारम्भिक वर्ष हो सकते हैं।" # अत-एइ श्री कुंदकु-दाचार्य का समय ईसा की ११ वी शताब्दि नहीं मानी जा सकती। शेष में विश्वकांव की चौथी बात यथार्थता को लिये हुए अकट कड़ती. है कि कुन्दकुन्दाचार्य के समय तक श्वेताम्बर-दिगम्बरी का पूर्ण पृथकत्व नही हुआ था, यधि श्वेताम्बर-दिगम्बर प्रतिभेद की उत्पत्ति इससे पूर्व श्रतकेवली भद्रवाहु के समय में ही हो चुकी थी। यह भी संभाव्य है कि भी कुन्दकुंद के अन्तिस जीवनकाल में पूर्ण पृथकत्व दोनों संप्रदायों में को

^{*} Jain Gazette, vol. XVIII, p 91.

नया हो, क्योंकि भी दर्शनसार 'में इसका समय किकृत सं० १३६ दिया है। श्री कुंदकुत्व के प्रार-िमक जीवन में यह प्रतिभेद गौण होना प्रतिभावित होता है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो श्वेताम्बर स्रोग फुन्दकुंदाचार्य के धर्मोपदेश को स्वीकार नहीं करते। अत्यव दिश्वकोय की इस बात से भी कुंद-कुंदाचार्य का स्वयं उसके द्वारा निर्णितकाल अयुक्त प्रमाणित होता है। इस प्रकार हिंदी विश्वकोष में श्री कुंदकुन्दाचार्य के विषय में जो वर्णन है, वह म्तासम्ब भगट होता है। वस्तुतः एक आदर्शपंथ में इसप्रकार का वर्णन हिन्दीसाहित्य का गौरव वर्षक नहीं है। अत्यव क्या हम आशां करें कि हिन्दी विश्वकोष के मान्य सम्पादक महोदय इस विषय में पुनः विधार करके भूमात्मक वार्ती का यथार्थ स्पष्टीकरण करेंगे ?

यहाँ तक के वर्णन से पाठकों को श्री इंद्रकृत्या-बार्य के जीवन सम्बन्ध में ,विशेष परिषय भाषा नहीं हुआ होगा। इसिलिए उनके जीवन के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि सं यथार्थ परिचय प्राप्त कराने के लिये हम पाठकों के समज्ज दिल्ला मारत के प्रक्यात् जैन विद्वान् प्रो० ए. चक्चिं, यम. ए. सादि का तद्विययक लेखांश ! शागामी उपस्थित करेंगे। उस से विशेष परिचय प्राप्त होगा।

—फामताप्रसात् जैन, उ० सं ।

† Jain Gazette, vol. XVIII. pg. 4-16.

मेम के पुजारी हैं!

शिव रित रागी पै विरागी तन नागी हो, रमत सुख से अनुपै आतम आटारी हैं। रूप है अनूप शिव नगर के भूप सुखरस के हैं क्रूप ित्र भाव के भिकारी हैं। मैं में गरक-पर-मेम तें फरक अनुभूति तें सुखक सुखचन्द के चकारी हैं। हैं को न जाने मोह यान को न माने राग रोष को न ठाने सांचे 'त्रेम के जुनारी हैं।

-विजयकुमार स्यायतीर्थ।

सम्पादक का कर्त्तत्य (बे॰-चाकुत प्रकार नहर एम ०ए०, एम ० कार न्यू ० एक)



ज कल जिस और दृष्टिपात करते हैं उधर ही साबाद पत्रा, मासिक पत्रिकाओं और छाटे चड़े प्रकाशित ग्रन्थों का बहुधा प्रचार देखने में धाता है। दैनि ह, साप्ताहिक, पासिक, मासिक,

बैमासिक भावि सर्व प्रकार के सामयिक साहि-

स्थपत्र मारत के प्रायः सब ही प्रान्तों से प्रकाशिक हो रहे हैं। अजैन सामियक और स्थाई साहित्य की तो गणना होनी कठिन है; परन्तु प्राइत संस्कृत गुजराती दिनी आदि मायाओं में प्रकाशिक जैन प्रन्यों और साहित्य पत्रों को संस्था भी। प्रति दिन पढ़ती ही चली जारही है। किन्तु यह अजुमब सिद्ध है कि धोड़। सा गुष्टक्कृतित कार्य यहुत से शङ्कला पिनीन और सत्रृटि कार्य से कहीं अच्छा होता है। कमो व लो यथानन् म किये हुए काम

का होना उस के न होने के ही समान हो जाता है। मैसे किसी पुरुक्त का अशुद्ध और नष्ट अट संस्करण निद्रानों की दृष्टि में बहुत ही दोपनीक होता है। विशेष साहित्य के मन्यों के सम्पादन के सिये पड़े शंकताली हाथों और ब्युत्पप्र मस्तिष्क की भावश्यता है। मैं सम्पादन के कार्यकों दो मागाँ में छेता हूं। (१) गृन्य सम्पादन (२) सामयिक पन सम्पादन।

मधम सर्व प्रकार के साहित्य प्रचार के कार्य में प्राचीन सादित्य का सम्पादनकार्य विशेष कठिन है। प्राचीन स.डित्य के प्रचार के लिये सम्पादक को सर्व प्रथम उस की भाषा पर ध्यान दैना होगा जर तक मूल गन्थकर्चाका विचार अविकल रूप से सर्व साधारण में न प्रचारित हो वस तक उस गृत्य का सच्चा प्चार हुआ ऐसा समफना नहीं चाहिये। और यह तब ही हो सका है कि जब सम्पादक मूल गन्धकार के आराय को ठीक समक कर अपने काम में हाथ दे। यह हम छोग अच्छी तरह से जानते हैं कि पृथितित भाषा पांच २ या दस २ या सी सी को सो पर कुछ न कुछ बदली हुई प्तात होती है। और हम जितने अधिक दूर जार्यंने उतना ही हमें प्रत्यक्ष और परोक्ष अन्तर मिलेगा। यहां तक की दो तीन सौ कोस पर जाकर इतना अन्तर हो जाता है कि , परस्पर की भाषा समभने में भी कठिनाइयां पड़तीं हैं। देखिये यदि कोई काश्मीर से पांच र षा रस २ कोस पृति दिन चलता हुआ यंगाल परुंचेगा तो उसे वंग भाषा सीखे विना ही समभ में आती जायगी। और यदि विश्वाम करता हुआ भावे तो उसे ममागत अन्तर प्रतित नहीं होगा।

संयुक्त प्रान्त की सापा पंजाब व भिहार से समता रखती है, विदार की सापा में गंगळा रंग खड़ने छगता है, मिथिला होते हुए गंगाल पहुंच ने तक दही पंजाब गंगला हो जाती है। मध्या यदि वंगाल से पंजाब जांच तो वही गंगला भाषा कमशः पंजाब पहुंचने तक पंजाबी वनी हुई मिलेगी।

को सरजन किसी भाषा के पृथ्वीन साहित्यके मर्मन होना चाहते हैं उन्हें आवश्यक है कि प्धम उली भाषा के वर्तभान दूप से यथेष्ट परिचित होकर कमशः पीछेको चलें, जैसे कि हमें हेमचन्द्रा-वार्यके प्राकृत व्याकरण का पूरा झानही तो पहिले वर्तमान समयके कुछ पाइत व्याकरण प्रन्थ देखकर कम से भागे के गृन्ध पहते चले जांय। और उन के समय के पीछे के जहां तक गुन्ध मिलते जांय, इसी प्रकार बढते हुए चहाँ तक देखे आंध, तो उन के व्याकरण के मम जानने में बहुत कम किनाई होगी। अस्तु इस रीति से झान प्राप्त कर छेने पर ही हम अपनी टीका टिप्पणी होरा यथावत मुख गुन्यकत्तां के मनोमावों को शुद्ध रूप से विशनी के समक्ष रहने को समर्थ हो सके हैं। यदि पक बार ही कलांग मार कर प्राचीन साहित्य सामा-दन करने हैठें में तो हमें अगणित टोकरें खानी पहुंगीं और हम भरोसे के साथ न कर सकेंगे कि हमारा अर्थ निस्सन्देह गुन्थकार के भाव का यथावत चांतक है । अतएव गृन्धसम्पादनकार्य के लिये भाषा का ज्ञान आत्यवश्यक है। इसी बान से सम्पादकों को लेखों.की भूलें, सुलेखों के अक्षरों की मरे हें और उनकी व्यक्तिगत अभि-राजि और भाषी का सीम्बर्य सम्दूर्ण कर से प्रतीत

हो जायगा । श्रीर यही मोना झांनकरी कवन भारण करके सर्व प्रकार की कंडिनाईयों से गुज करते हुए इस सम्मादन कर कड़ोर कार्य होत्र में अप्रसर होते चले आंगो ।

कुसरा गृत्य का जीणोंदार का प्रचार पहिले होना आवश्यक है, वह गृत्य किस विषय का है और कितना पुराना है, उस के संज्ञांदन जार्य में कीन सत्रये हैं कि जिन्हें वह सोंगा जाय इस्यादि घोतें इस विषय में विवारणीय हैं। हैमारे विचार से दार्शनिक वा वैक्षानिक गृत्यों की रक्षा सर्वेा-परि है। परन्तु ये हर फिसी के हाथीं से न्याय पाने वाले विषय नहीं हैं। अत एव इस विषय में यदि इन वानों पर प्यान नहीं दिया गया ती इस कार्य में लगाई हुई हाति. और अर्थ इस्था ही जायगा।

पूष्णीन जैन सांहित्य के निर्वाचन पर ही उन का संस्थादन कार्य सर्मधा निर्भर है। आजकल इस कार्य में किसी पूकार का नियम, किसी भाँनि की शृह्लुला, कोई विषय विभाग का विचार पूर्ण क्य से नहीं किया जाता है। करां तक कहें कुल है ही नहीं। हमें आज तक पूरा पता नहीं कि हमारे घर में कितने ब्लाकरण हैं, कितने कोप हैं, और उनमें से किन्हें पहिले सम्पादन करना उचित है। पुश्तकों के निर्वाचन सम्पादन का प्रकाशन में कुछ न कुल उहेग, सिद्धान्त कोई निश्चित अमीष्ट अध्य होता चाहिये। परन्तु वह हमारे यहां कुल भी नहीं। पक पुश्तक का एक अंग्र अध्या भाग छपा है तो दूसरे की कुल भी खगर नहीं ली गई। इसी पुकार से समय का विधार या विषय की विभाग सम्पेदकी को या तो हुंजा ही नहीं या उन्होंने उसे कार्य में परिणत करना व्यर्थ समका।

जिस समय देश में मुदायन्त्र न थे पुस्तकों के लिखवाने वा पुकाश करने में बेड़ी कठिनाइयां होती थीं, पर जब से छापे की प्रथा भारत में पारम्भ हुई हमारी बहुत कठिनाइयां दृर हो गई। परन्तु दु। ख है कि अपने जैन भाताओं ने छीपे। का उतना लाभ नहीं उठाया कि जितनां अंग्यं हिन्दं भाताओं ने उससे उडायों है। हम मुद्रायन्त्र का इतिहास देखते हैं तो आज सवा सी बर्ष से भारत में छाएने का काम चंछ रही है। सब से पंहिले ईस्वी सन् १७६२ में बङ्गाल में गाँगले टाइप में संस्कृत पुस्तक, छ पी गई थी। जैन धंनमें की सब से पहिली छपी पुस्तक, जी मेरे देखने में आई है, वह ई० सन् १८६८ में मुद्रित हुई थी। पम्तु अनेकवार हमारी अनुदारता और अन्ध विश्वास हमें संसार के साथ सम्बत होने में सहस्र वाधाएँ डालता है। कितनेक महाशय गृन्यौ कें छापने के ही विरोधी हैं कितने ही लिखत पुस्तकों की भूलों के सेशोधन के शब्द हैं यहाँ तक कि बहुनों को शब्द अलग २ कार कर लिखने और ठहाने के चिन्हों और विरामी के देने का भी विरोध है! समय परिवर्शन शील है। हमें संसार को लाथ चलना ही नहीं है किन्तु हमें अपने धार्म गृथ्य साहित्य भंडार और अपने प्राचीन गौरव को सुरक्षित रवंगा है। इन महत कार्यों के लिये हुने महैंत उच्चीय करना होगा । हमारा कार्यण्य,हमारी अर्ध्यपरम्परा, हमारा हठ काम न देंगे । इस के िना फठ यह होगा कि संसार प्रकाश में रहें और जीम अन्धेरं गर्फ्स में हां। पड़े पड़े देहा करें।

वीर —



योयुत लक्ष्मीचन्दजी जैन, एम० ए०, एल० एल० हो०. प्रोफंसर स्योर संस्कृत कालिज, इलाहाबाद।

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद।

कोई मृत्य क्यों न हो उसका गीरव उसके कर्ता के हाथ से निकसने पर जो था उतना ही नहीं बरम्स उससे कई गुना अधिक बनाये रखने के किये हमें भावप्रयक्त है कि हम उन्हें स्रपात्र उत्तरा-धिकारी की माति अस्त्री प्रकार समालोचना भौर धवयुक्त रोका दिव्यणी के साथ बड़ी सावधानी से प्रकाशित करें। कई प्रकार के मोटे प्रतखे अक्षरी का और मायापकारपायी लाल पीले रैमी से संकेतों का व्यवहार जो बहुत प्राचीन काल से बला माता है, वह नियम भी सम्पादकों को पूरा ध्यान में रखना चाहिये । इसके अतिरिक्त गृथ्य को सुबोध और सर्वविष समय पचाने वाळा करने के लिये प्रकाशित करने के समय गर्थ की बावश्यकीय सुचियाँ दाखिल करती भी सम्पादक का प्रधान कर्चत्य है। यदि प्रतक शह ही नहीं पूर्व पूरी कान बीन कांच पहलाल के साथ छापी द्यी न गई तो दूसरी यीज बानों पर कीन ध्यान हेमा है।

बह अधिक समय की बात नहीं है कि मुर्शि-दाबाद निवासी। स्वयीय रायबहादुर धनपतसिंह जी ने बहुतसा द्रव्य व्यय कर के श्वे॰ जैन सिद्धान्त गृत्थी की सम्पादित कराकर प्रकाशित किया था। बहे दुःख के साथ कड़ना एड़ता है कि वे पुस्त में बहुदियों के कारण विद्यानों में यथेष्ट सन्मानित नहीं हुई। इनके प्रकाशित गृत्थी पर अद्वेष डाक्टर हार्बल साहब किसते हैं:—

"As an edition it is worthless, deing made with no regard whatsoever to textualar grammatical correctness, both in its Sanskrit and Prakrit portions." (Upesak-dasa-Bibliotheca Indica Series. Intro, page XI, Calcutta 1890.)

सारवर्ष यह है कि इब गुरुशों के सम्पादन कार्य को आपने बिलकुल रही बतलाया । परन्तु यह दुःख की बात है कि धन संगाया जाय और फर उच्छी प्रतामी मिले। यह केवल घोड़ी सी असावधानी का ही फल होता है। अतएष उपयुक्ति विषयी पर ध्यान रखकर सम्पादन कार्य सदा घैर्य के साथ करना चाहिये । यहाळ की प्रसिद्ध पेशियाटिक सोसाइटी से उक्त टाक्टर दार्नले वे भी उपायक इशा नामक जैनहरेताम्बर आगम का सानुबाद संस्करण मकाशित किया है। बाज तक भारतवर्ष से प्रकाशित कोई भी जैन गम्ध इसके मुकाबछे में नहीं छवा है। सम्पूर्ण आवश्यकीय टीका टिप्पिक्षिं और सिचियों के साथ वेसा गुद्ध संस्करण एक भादर्श स्थल है। हाल में समरिका के "Harvard Oriental Series" में हार्टें लाइपने पूर्णबन्द मणिकत पचतंत्रका एक सस्करक सम्पादित किया है। आपने इस कार्य में रूगमग ६० हस्तरिश्वित पुस्तकों को बड़े करा से दूर दूर से एक वित करके युल को मिलाया है और एक २ अक्षरों को देखा है। कितने ही पाठान्तरों और कथाओं के हेर फैर पर सतर्क वादानवाद किया है। भूलों का परिशो-धन और उपयुक्त प्रस्तावना और परिशिष्टी द्वारा गुम्थ को विभूषित करना आप का ही काम है। इतने आन्तरिक गुण होने पर भी बाह्यकप पर कम ध्यान नहीं दिया गया है प्रेंने आजतक इतना सुन्दर संस्करण किसी भी देशी पुस्तक का नहीं देखा। अत्यव में विश्वास करता है कि सन्पादन कार्य इस ही उपर्युक प्रकार के आदर्श पर होने से चाहे वे गृम्ध प्राचीन हो वा नवीन ही-समस्त संसार तें सुयोग्य सम्पादन के पछ से निस्ताबेद समा-

हैरित हींगें। मंशुस पुस्तकों से बहुभा विचा के हेर्यान वर मविचा ही फैडती है।

पाउँकगण यह न सममें कि मैं केवल अपने गुन्धं सम्पादन कार्य की बुटियाँ लिख रहा हूं। महीं प्रत्युत मुक्ते आजतक यहां के प्रकाशित अमृद्यं गृंधीं के अब्छे रसंस्करणों का यरावर स्मरण है। अपने जैन श्वेतास्वर सिद्धान्त गुरुवी के पुकाशन कार्य में बन्ध की श्री आगमोदय समिति तथा राय-**भंद जीन सास्ममाला स्रात की श्री देवचंद सास्** आई जैब पुस्तकोद्धार संस्था,चनारस की श्री यशो-विजय जैन ग्रंथनाला भावनगर की थी ौरधर्म प्रसारक सभा, जामनगर के पं० श्रीमान् हीरा-कांक हैंसरात ने जो २ प्रमध प्रकाशित किये हैं वे कंषस्य प्रशंसनीय हैं।। हमारे अच्छे २ दिगम्बर जैन सिद्धान्त गुन्धीं का इन वर्षी में होन सिद्धान्त मवन आरा से, बम्बई की माणिक्यचंद जैनगुरथ माला और जैन गृथ रताकर कार्यालय, तथा कल-कता की जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था से एवं सरत के दि॰ जैन पुस्तकालय तथा लाहीर के स्व॰ शानखंद जी हारा प्रकाशित हुआ है। साहित्य में मी श्रीमान् बड़ीरा नरेश की तरफ से गायकवाड़ भारियंदल सिरीश में भी कई जैन गृत्थी का अन्यू-सम संस्करण छप सुका है और छप रहा है। बम्बई संस्कृत सिरीज़ में भी कई प्राकृत खंस्छत जैन प्रन्थों का अच्छा सम्पादन हुआ है। इन के सिवाय इंग्छाड, अमेरिका, फ्राँम, जर्मनी, इटाली नार्वे आदि स्थानी में अहैन विद्वार्गी ने जो कुछ मुलं, अनुवार टीका टिप्पणियों के साथ प्रम्ध प्रकाशित किये हैं उन के लिये समध्त जैन समाज वामारी है।

शेष में इसरा विषय सामविक पत्री के सम्या-देश का कार्य है। यह भी काम बहुत कठिन है। भाजकल सम्पादक उसे कहते हैं कि जी महाशय प्रवन्ध लिखें, प्रकृत पढ़ें और पत्र पत्रिका छपवार्वे। परम्त् यह धारणा भी भ्रमपूर्व समभता बाहिये। इस कार्य के सम्पादक का प्रचान कर्तव्य उचित विषयों का खुतना, उन पर लिखे लेखों की पसन्त करना उन्हें उचित स्थान देना और निष्पक्षपात के साथ पूर्णकर से सम्पादनका कार्य करना है। यदि सम्पादक स्वयं लिखें तो कोई अपराभ नहीं है, परम्तु यह सम्भव नहीं है कि आप औरों के ही छेलों को पढ कर उन के गुण दोषों को देखें और सम्पादन के प्रत्येक काम को स्वयं देख रेख करें भीर स्वयं ही लिलते रहें। परन्तु आवश्यकानुः सार उन्हें अपनी लेजनी से भी काम सेना चाहिये तो भी मुख्यतः विषयी का सुचार पत्रों के संपादक का प्रधान कार्य होना चाहिये।

पत्रीं के संपादन में साहस और धैर्थ के साथ धन, समय और शक्ति की भी आवश्यका है। और इन सबों का सहु ध्यय सर्जधा चांछनीय है। मेरे विचार से निम्न लिखित कई बातों पर प्याम रखने से पत्र सपादन कार्ज में सहायता मिलेगी:-

- (१) एक पश्चिका की भाषा जितनी सुनोध होगी उत्तनी ही अधिक पढ़ी जायगी। कठिन साचा के पत्नी की केवल विद्यान ही पड़ने हैं।
- (२) पत्र पत्रिकारों ऐसी प्रकाशित होनों खाहियें कि जिन्हें देणकर चित्त पुस्तरन हो। उन में कारा म भादि भी ऐसे दिये आर्य कि घह कुछ समय सबक्ष ठहरें।
 - (३) उनके मूल्य पर मी ध्यान रक्षना चाहिये।

साम्प्रक्रिक सिद्धान्त के श्रद्धसार थोड़े नहें, से अधिक मारू बेजना, वहुत छाम से पोड़ा मारू बेखने से अधिक छाभदायक होता है। जहाँ तक कर्ते क्षागत से दूना ही दाम रक्षा, जाय तो ठीक है। यदि कम करना संभव हो तो और भी जच्छी बात है।

- (४) पत पत्रिका अकाशित होने पर उन का सर्वेत्र प्रचार होना चाहिये। इस कार्य में देशान्तरी में अधिक अर्थ स्थय करते हैं।
- (५) प्रकाशित विषयों पर स्वतन्त्र आलोजना आमन्त्रित करना चाहिये। इससे वे विषय निर्देख होते जाते हैं और उनकी शुटियें भी कात होती जाती हैं। करना याहुस्य है कि समालोजना से पुस्तक की विज्ञों भी बहती है।

अम्रे जी में सम्पादन कार्य के विषय पर कई
मन्ध हैं परन्तु यहाँ इस विषय की स्वयं कम रहने
के कारण अपने भारतवासी सम्पादन कार्य में
अधिक अमसर नहीं हो सके हैं। प्रतंमान समय
में इस विषय की आवश्यकता प्रतिदिन पह्ती
कारही है। इस कारण आशा है कि सम्पादन
कार्य के गुरुष पर असित ध्यान रकते से इस
हैं श में भी सम्पादक छोग सफलता प्राप्त करें।
बीर सर्वत प्रशंसापांच होनेंगे।



क्या खन्य जातियों में विषाहन्तंबन्ध जातिभेद को मिटाने वाला खोर जैनसमाज को द्यानिकारक होगा?

> य सरवानी कैनसमाज में हुए हास से अपनी अन्य जातियों में विकाद संबंध करने की चर्चा चल रही है। ोजन लोगों का विचार रक्ष प्रकार में विचाह के अनुकूळ है जनका रहना है कि जैनसमाज की संस्था

बटती जा रही है और कुछ जातियों की संस्था घटने २ बहुत ही कम रह गई है। सुना है बेहने कालियां भी हैं जिनकी संख्या कम होते २ वर्समान में १०० या उससे कम की रह गई है कि आ करे बनको अपनी जाति में विवाह संयथ के लिये लेब नडी है। और यदि उनका विदाह-संबंध अन्य का-तियों में न हुआ तो थोड़े ही दिनों में उन जातियाँ का नामोनिशान दुनियां से सिंह सायगा । जिससे जैतलमाज की संख्या और अधिक कम होजावधी। इसलिये यदि हमको उन अधियों को काल के गाल से बचाना है तो उनको सम्य कार्तियों मे चिवार संबंध करने देना चाहिये। इस सरह श्रम जातियों में विवाह सबंघ जारी करते से बहुत सी जैनजातियां मृत्युक्षे बच जायंगी। और जैम समाज की संख्या घटने से रुकेगी। दूसरे बहुत सी औन आतियों में नथयुषक जिन विवाहें मौजूर हैं, जिनका चिवाह उनकी जानि की संख्या कम होने के मारण अथवा बहुत से गोत्र य सांने भादि बचाने की वजह से नहीं हो सकता भीर में से अब क्रिया

बायुपर्यन्त कुँवारे रहते से अक्सर बदचलन होकर अपनी जिन्द्रशी खुराब कर छेते हैं और समाजम न्य-भिचार फैलताहै और इनके अतिरिक्त सन्तान रहित मरजाने से समाज की संख्या भी नहीं बदने पाती। इसलिये यदि अन्य जातियों में इनका विषाह संशंध होने हमें सो इनका जीवन व समाज व्यभिचार से बचे और इनके सन्तान उत्पन्न होकर समाज की संस्था में भी बढवारी हो। तीसरे विवाह संबन्ध का बहुत छोटा क्षेत्र शारीरिक उन्नति में भी हानि-कारक होता है। विवाहसम्बन्ध का क्षेत्र धिशाल होने से सन्तान बलवान उत्पन्न होगी और समाज की शारीरिक दशा सुघंगी। चौथे जैन समाज की भिन्त २ जातियों में रोटी-बेटी का व्यवहार खुलने से बापस में पेश्व और सहातुभूति भी अधिक होती। अब एक जाति अपने को दूसरी जाति से बिलकल अलग समभती है और कभी कभी तो एक दुसरेको नफरत की निगाह से देखती है। एक जानि पर कुछ आपत्ति आती है तो दूसरी जाति उसकी बाएसिमें समितित होकर उसके दूर करनेका कुछ ध्यतन नहीं करती। वे समभती हैं कि हम तो इन से अलग हैं। इमारी जाति तो इस आफन से बची हाई है। हम क्यों फिज्ल भंकर में पहाँ। परन्त जब आपस में बेटी रोटी होने लगेगी तो। पेकाता और सदानुमृति के भाष अधिक सिरम जावेंगे। इस विषय में कतिपय महाशय कह दिया करते हैं कि देक्यता-अनैक्यता से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं। क्या एक जाति के मनुष्यों में या रिश्तेवारों में अते-क्यता नहीं होती है ? बेशक होती है । परस्तु बात यह है कि सामान्य नियम हुआ करता है और उस नियम में विशेष डाकर्ने भी होतीं हैं। सो एक जाति

के मनुष्यों की अथवा रिश्तेदारों की अलेक्यता विशेष हालत के उदाहरण हैं। यदि किसी आख कारण से एक जाति के मनुष्यों में अथवा रिश्ते-वारों में अलेक्यता होजातां है तो उससे यह सा-मान्य नियम कदापि वह नहीं होसफता कि जिल लोगों में परस्पर विचाह-शादी-गेटी घेटी होंगी उनमें प्राहृतिकरीत्या एक दूसरे से अधिक प्रेम व सहानुभृति होगी। और ये प्राहृतिक का में एक दूसरे के दुःखद दूमें अधिक शरीक होंगे और दुश्मन से सामना करने के लिये एक हो जावेंगे। अस्तु जनसमान की विविध नातियों में परस्पर रोटी बेटा का व्यवदार हाने से जुकर कीन समान में ऐक्य और सहानुभृति बहेगी।

अब दुसरी पक्ष के छांग कि जिनकी राध अन्य जातियों में विवाह संबंध करने के विवद है बे कहते हैं कि इससे जाति भेद मिट जायगा। जाति-पाति उद्द जायगी । इसी हेम् हिम्दी जैन गजाट के खास अडू में भी एक लेखक महाराय इस से पहिले हानि यह ही बतलाने हैं कि "अपने को कौन किस जानि का कहेगा।" जिसका मतल्य यह ही है कि अन्य जातियों में विवाद संबंध से जानि नेद निर जायगा । इस विचार के कतिपय सजन तो अर्ताव कडोर और अशिष्ट शब्दी का (कैसे कुछ ऐसे शब्द कि यह छोग धर्मभ्रद हो गयं हैं और समाज को भी धर्म से मध्य करना बारते हैं और हम धर्म की रक्षा के लिये सब कुछ लिखते हैं इत्यादि।) प्रयोग करके और जाति भेतृ लीव हो जाने का भय दिखलाकर जान्दोलन करने है। परम्मू मेरी सम्मति में पहिले विचार के लोग न स्वयं धर्म प्रष्ट हुये हैं भीर न समाश्र को धर्न

भ्रयः करना चाहते हैं प्रत्युत वह भी समाज के क्र फायरे को ही सस्य करके पेसा कहते हैं। यदि उनके उस विचार का उत्तर देना है तो मुलाईमि-वत, प्रेम और सभ्यता के ही शब्दों में देना षाहिये। इसके खिलाफ करने से समाज में धनै-क्यता व कलतु अधिक बद्दती है और आएकी बात जो प्रेम व मुलाइमियत के शब्दों में कही हुई शायत कुछ समक्ष में आ जाती उनकी समक्ष में महीं आर्था। उधर आपकी बात का भी महस्व कम हो जाता है। खैर भव देवना यह है कि इन महासयों का यह कहना कि अन्य जातियों में विश्वाह संबंध से जाति भेद का लोप हो जायगा हीक है अथवा नहीं। मेरी राय में इनका यह कहना ठीक नहीं है। अन्य जातियाँ में विवाह सम्बन्ध से जाति भेद नहीं मिटेगा। और इसके समभने के लिये जरा इस बात पर ध्यान देने की जबरत है कि विचाह संबन्ध अपने गोत्र में नहीं होता अन्य गांत्र में होता है तो क्या अन्य गोत्र में बिबाइ संबन्ध से गोत शेद मिट गया ? अस्तु जब कि अन्य गोत्र में विवाह संबन्ध होने से गोत्र शेव वहीं मिटता नो अन्य जातियों में विवाद संबन्ध होने से जाति भेद क्यों मिट जायगा ! अब यदि गोवस गोत्र का लडका है और गर्ग गोत्र की सदकी है तो उनका विवाह संबन्ध होने से उस संबन्ध से उत्पन्न सम्तान का गोत्र गोयल ही बहता है और इस तरह गोत्र भेद का लोप नहीं होना । तो किर इसी तरह अन्य ज्ञाति विश्वाह सम्बन्ध होते की दशा में यदि खंडेरवाल जाति का सहका है और अग्रवाल जाति की लड़की है नो उस संबन्ध से उत्पान सम्मान की जानि संबं

हवाह ही क्यों नहीं रहेगी ? इस तरह अन्यजाति विवाद संबन्ध से समभ में नहीं माता कि जाति भेद किस तरह उह जायगा अश्त अन्य जाति सम्बन्ध से जाति भेद का कीए मानना, भेरी राध में, केवल एक मिथ्या भम है। और इससे स्वर्ण भय करना अथवा इसरों को इस का अब दिख-सामा विसकुल वृथा है । वास्तवमें जिस मकार अस्य गोत्र में विवाह संबंध करने से गोत्रभेद धरायर कायम रहता है उसी तरह कान्य कावि में दिवाद संबन्ध से कातियेह बचावर कायम रहेगा। इससे जातिभेद कदापि नहीं चक्र सक्ता । इसके अतिरिक्त प्रथमानुयोग के प्रकारिक मालम होता है कि पहिले कमाने में तीनों उच्चकी में विवाद सबध हो जाता था, परन्तु उस संयम्य से उस जमाने में वर्ण ध्यवस्था का क्षोप महीं हुआ। तो फिर समक्त में नदीं आता कि अब किसी एक वर्ण की उपजातियों में परस्पर विकास सम्बन्ध होने से जातित्रयवस्या क्यों छोप हो क्षां आहें है

हिन्दी जैनगज़ट विशेषाँ इ के पृष्ट ७५ पर औ अन्य जाति सम्बन्ध की द्दानियों दी हुई हैं उन पर भी मैं कुछ लिखना आवश्यक सममता हूं।

#श्री आहि पुराण में तो बारों वणों को अपने सीर अपने से इतर 4 का में विवाद संबंध करने का विधान है। इस ही अनुरूप प्रमाणिक औन दाय-भाग ग्रन्थों में भी आबा-यों ने सवर्थी और इतरवणीय पत्नी से उत्पत्र मैनानके स्व-स्व प्रथक प्रथक िय है। कथानकों में भी ऐसे ब्हाइश्लेमिक सक्ते हैं। इस कारण प्रस्पर औन जानियों का निवाद करना शाकार विवाद गरी है।

पहिले भम्बर की हानि तो जातिशेद का क्रोच होना बत्रसाया जाता है । उसका जवाब सी ऊपर वा ख़का कि इससे जातिभेद का लीप नहीं हो सका। इसरे से पांचर्वे नंबर शक की शानियाँ जो बतलाई गई हैं उनमें लेबक महारायने पहिस्ते ही से इस बात को मान लिया है कि चुन्न विवाद, कन्याविक्य कुरीतियां बरायर जारी बहुँगीं ? यह कभी बन्द नहीं होंगीं। नहीं मान्द्रम इन करीतियाँ की धोर पेसी मुलाइमियत की दृष्टि क्यों रक्ती जाती है ! और क्यों यह ख्याल किया जाता है कि यह हमेशा जारी रहेंगी ? यदि एक सुधार जारी किया जाता है तो क्या उसके यह अर्थ हैं कि पहिले से जो कुरीतियां फैली हुई हैं इन को बन्द नहीं किया जायगा ? और वह बन्द सहीं होंगीं ? उनको तो पहिले बन्द करना श्चाहिये । और अपने दिल में यह प्रता इहादा और प्रका विश्वास कर छेना चाहिये कि इनको बन्द किया जायगा और वे जरूर बन्द होंगी। मेरे ख्याल में तो अब तक जो यह क्र शैतियां एक अच्छी संतोषअनकहद तक वन्द नहीं हुई हैं उसका कारण यह ही है कि लोग दिल से इस कुरीतियों को दूरा नहीं समभते । इनको पाप नहीं ख्याल हरते। समायें इनके रोकने के प्रस्ताव जुकर पास करती हैं परन्तु केवल जांग्ता पूरी की तौर पर। से यह समभती हैं कि शिद्धित छोग इन कुरीतियों को बुरा स्थाल करते हैं इसलिये शिक्षित सरकिल में सभा की अच्छी नामवरी कायम रखने के लिये इस विषय के प्रस्ताव ही-चाहे वे कैसे ही दीले व मुलायम शब्दों में ही पास कर देने चाहियें। और क्यानीय बंधायते, चौधरी चौकड़ायत य पुराने

विश्वार के महानुभाव तो इन कुरीक्रियों को क्रिक्ट-कुर बुरा नहीं सममते। वे तो पेसी शादियों से दिका कोल कर शरीक होते हैं। मेरे क्यान में सो यह कुरीतियाँ उस समय तक मन्द नहीं होंची अप तक हम इन करीतियों को विभवाविवाह के समान ही कुरा नहीं समर्भेंगे । क्योंकि बास्तव में यह क्ररी-तियां ही विश्ववादिवाह की उत्पदाता भीर प्रकार रक हैं. अब केवळ विश्ववािवाह की बर्चा करते वालों को बुरा कड़ने व उनके खिलाफ थान्दोसन करने से काम नहीं चलेगा। यदि हमको विश्ववा विवाह का प्रकलित न होना इए है तो क्रिस हिंह से हम विधवाविवाह को वेसते हैं उस ही हुछ से इमको इन कुरीतियांको देवना चाहिये। बिरा-इरी से पृथक करना व मंदिर जी में देवदर्शन धन्त करना आदि जो दंड हम विधवाविवाह करनेवाळी के लिये तजवीज करते हैं वह ही दण्ड हमकी वक विवाह व कन्याविक्रय करनेशाला के लिये भी ठज-षीज्ञ करना चाहिये। यद्यपि मेरी व्यक्तिगत सम् यह है कि धर्म का द्वार पापी से पापी के लिये भी बन्द नहीं होना चाहिये । परन्तु यदि इस !हिय-थार का संभालने से विवधाविबाह के मुलकारक बृद्धविशह, अनमेल विवाह, कन्याविक्य समाज से दूर दोकर समात की हालत सुधर जाय तो कुछ मुजाबका महीं। व्यवहार धर्म के पालन कराने में कमी उच्च आदर्स से कुछ नीचे भी बाता वहुका है। और अब ज़कुरत इस बात की है कि स्वानी व पंडित महाश्य जिस मकार हरी,रस आदिका त्याम कराते हैं उसी तरह हद्धविवाह, अवमेल विवाद, फन्याविक्षय करने, ऐसी शादियों में

शरीक होने, ऐसी शादी करनेवालों की मदद व उनके साथ सहयोग करने का त्याग कराये भीर महासभा आदि को ज़रा तकड़े बनकर कड़े व मुनासिव शब्दी में वृद्धविवाह, कन्याविक्य के ख़िछाफ् भस्ताय पास करना चाहिये और अपने अपदेशकों को हिदायत करनी चाहिये कि वे इस बात को अपना लक्ष्य बनाल कि जहां जायें वहां की पंचायत, वहां के चौधरी चौकड़ायत और वहाँ की जनता के दिलों पर वृद्ध विवाह, कन्याविक्य आदि को विधवावित्राह के समान ही महान पाप होने का नक्स जमादें। मेरे ख्याल में उपर्युक्त प्रयत्न से यह कुरीतियाँ दूर हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त यह समभ में नहीं आता कि जो हानि इन कुरीतियों से अब पहुंच रही है, अन्य जाति विवाह संबन्ध होने से इससे अधिक और हानि क्यों पहुंचेगी ? प्रत्युत मेरे विचार में तो उस हानि मैं किसी कृदर कमी होजायगी। क्यों कि अब कति-पय महाशय अपनी जाति में योग्य वर न मिलने के कारण भी अधिक उसर के बर के साथ अपना छड़की विवाह देते हैं। परन्तु जब अन्य जाति सम्बन्ध से विवाह का क्षेत्र बढ़ जायगा तो घोग्य वर मिल जाने का और अधिक अवसर होजायगा। भौर इन कुरीतियों के बन्द हो जाने की दशा में तो अन्य जाति सम्बन्ध से वे हानियां जो हिन्दी जैन गज्द के लेखक ने अपने लेख में नंव र से नंव प तक दी हैं किसी तरह नहीं पहुंच सकतीं। अत-प्र अन्य जाति सम्बन्ध से न जातिभेद लोप हो सकता है और न उससे जैनसमात्र को कुछ हानि पहुंच सकती है।

कवीर

धरररर भैया मोर कवीर। संघ बना संघी पद पाया, हा ! उन हीं के पूता। ईपों, फूट, द्रोह, फैलाइं, बन कर यम के दूत ॥ सवाये डेवढे बन कर फूछ रहे ॥१॥ पैसा पाकर हो मदमाने, मन में बने महेन्द्र। रथ पर चढे फूल से फूलें, तर्जे झान का केन्द्र ।। लांक परलोक विगाडें हाथीं से ॥ २॥ न्यय में साख बनाई जिनने, हुए घही वे साख। बन्धु देख कर नाक सिकोड़े ,होवें जलकर राख ॥ यही क्या जैन धर्म के लक्षण हैं ? ॥ ३॥ वस्य चिदेशी बँच बँच कर, करती पर हित काज। घरित उदार दिखाती जग को, सारी जैन समाज ॥ तिजोड़ी भरें लबालव मत्त रहें ॥ ४ ॥ मन्दिर जी में जायें नियम सं, बार्च प्रस्थ पुरान । स्रोट बहीसाता श्राली पर, टांगें दीन किसान॥ सदा हँस हँस कर खाते किया करें ।।५॥ जैन धर्म का भण्डा लेकर, आगम के अनुकृत। इसी ओट में चोट करें, जो बाबू दल मतिकूल ॥ धर्म-अवतार_समभःलो पंडित हैं ॥ ६ ॥ इया द्या मुँह से चिल्लावें, मन में छुपी करार। काम छान कर पानी पीव, पाप करें भरमार ॥

यही क्या शिव पर पावेंगे ?॥ ७॥

भले रहें ये उपकारी बुड्डे ॥ = ॥

(परवार बन्धु)

अर अर धैली शादी करते, गिने न एक इंडील।

त्रे कुहै कल्बा एर हुटें, ज्यों आमित्र पर कीसा।



१-कन्यात्रों का छाईश जीवन

इस अर्थानीन भारत की ललनाओं की हीन हशा को दंज उनको उन्नति का उपाय सीचने से उनके सुचार के अनेक कारण दिखाई पड़ते हैं। उन्नी जनकोंने से कन्याओं का आदर्शक्य होना भी उन्निधिता का कारण मानना पड़ता है। इसकारण इस मुख्य विषय को दो शब्दों में समाज के सामने उपस्थित (प्रकट) करना कुछ अनुनित न होगा।

"कन्या शब्द का अर्थ संस्कृत में उत्पत्ति है" धर्यात् जिस बालिका का आज तक पाणित्रहण (विवाद)धर्म, पंत्र और अन्ति की साजी से किसी पुरुष ने न किया हो जिसका कोई आन्मरसक और शरीररक्षक मालिक न बना हो, उसको कन्या, कुमारी, बाला आदि नाम से सम्बोधना प्रचलित हैं?

शास्त्रों में कन्याकाल सोलह वर्ष तक माना गया है, जब तक वह प्रीइ, यौजनकाल सम्मुख न हों, सबतक उनको कीमार ही समक्षना चाहिये। आजकत कुछ जियमकोल के कारण, तथा अन्य घर्माबलम्बी, ब्राह्मजों के कथनानुसार सोस ह या १० बर्ष में कर्या काल की पूर्णता मानते हैं धयवा काल या ऋतु प्राप्त हो जाने से माना विता को नर्कगामी होना पड़ता है "पेसी किंग्दन्तियों से" भोले भाले लोग व्याकुल हो उठते हैं और शिशु काल ही में कन्याओं की गुड़णी बना देते हैं। यह भादर्श विवाह कदापि नहीं कहा जा सकता है। भादर्श तो बही विवाह कहा जा सकता है जो पूर्व प्रयानुसार किया जारे। अर्थात् प्राचीनकाल में भमंहानी, कला कौशल निषुण सदाचारी मोता विता अपनी कन्याओं को अनेक कला कौशलों में प्रवीण बना देने पश्चात् विवाह करते थे।

देतिये राजा वियदत्त अपनी पुत्री अनस्तमती को चौक पूरने में, राजा केकय अपनी पुत्री के श्यो को घुरी धारण करने में, राजा अकंपन अपनी पुत्री खुलांचना को पुक्र परीक्षा में, राजा जनक ने अपनी पुत्री जानकी (सीता) को भोजन बनाने में कैसी कुशल बनाया था, जो कि जंगल के अनेक प्रकार के कप्टों को सहते हुथे भी उत्तम भोजन बना कर मुनियों को अहार दान देने में प्रतिभूष सत्यर गहती थीं। इसी प्रकार प्राचीन काल



Bahari La, V. V.I.D., Bult, alsh dus. Author of Armot Bun Heafin ar Charlie Novel, See and Transactor of Chinaky e Nai Dupan, Bhathar and Jan Varray e Shirtaks, As المرابع ا

की अनेको कत्याओं में अनेको प्रकार के असाधारण गुण पाये जाते थे। यदि वे कत्यायें मौद न होने पातीं, तो कहां से अच्छे अच्छे गुणीं की अंडार यनतीं। अन्य धर्मों में भो तिहावती, सत्ययती, अनुप्रा, दमयन्ती इत्यादि का दृष्टाकत हपियत है। इस प्रकार कत्याओं को विदुपी, पतिवता, शिष्टाचारी, धर्मप्रेमी बनना, कुरुम्बी अनी मुज्यकर माना पिना के आधीन है। पुत्र पुत्रियों की शिक्षा माना कि गर्भ में बाते ही शारम्भ हो जानी है। इसिलिये गर्भवती माना को चाहिये कि वह अपने मन, यवन, शरीन, को शुप कामों में लगावें। मन को शुप विचानों सथा शालों के धावलेकन में स्थिर करें, कथायों को मन्द कर सर्वदा प्रकृतल बदन रहें।

चवन-सं भी निन्दनीय, क्रांअमरे, याली-गलोज, भण्ड बचन कभी न निकालें। शरीर उत्तम भोजनी, उत्तम कलों में सर्मदा हरा, भरा, रक्खें। भनर्ष कार्मों से रोकें भर्यात् पूजन, सजीत, उद्योग, तीर्यभूमण, बादि में लगार्चे। क्यों कि माता के कार्यकारण का जलर बालक बालिका के शरीर मन, भारमा, चचन पर अवश्य पहला है। जैसे नेपो-लियन की भाग गर्भावस्थामें युद्ध करने में तत्यर अपने पति की सहयोगी थी. जिस का संस्कार गर्म स्थित बालक नेपोलियन पर पड़ा। ऐसे बहुत से उदाहरण पाये जाते हैं।

भाजकल हमारी जैन जाति ही क्या फोई भी समाज कत्याओं का जीवन आइर्श बनाना नहीं खाइनी है। भाइर्श जीवन बनाना तो दूररहा मोता विना तो उनको निरोग रख जीवित रखना भी सोक खन को हैं। बहुन से नायों में तो फन्यार्य रोग प्रसित्त होने पर बिना औषि के काछ की प्रास हो जाती हैं। ठंडी, गर्मी से कन्याओं की दक्षी माल हो जाती हैं। ठंडी, गर्मी से कन्याओं की दक्षी कर्जी गरियों देशी जाती हैं और लोग कहा करते हैं "कि यह तो पराये घर जायगी" पेसे कहने वाले लोगों को धिकार! धिक्कार!! महाधिककार!!! संसार ही पुत्र, पुत्रियों से बना है। यदि संसार में साहर्श कन्यायें न उत्पन्न हुई होतीं तो बादर्श वालक शूरवीर, धर्मात्म, चक्रयतीं, तीर्थहर, कहां छे उत्पन्न होते !

आज सब प्राणियों की कैसी उलटी समम ही रही है। कम्याओं की शिक्षा का कोई भी प्रवस्थ नहीं हो रहा है। जब तक कम्याओं के जीवन सुचार के धास्ते हमारे विद्वान लोग, सेठ, साहु-कार, राजा,महाराजा ध्यान न देंगे अपने हृदय से खोटे मोह न त्यांगेंगे, तब तक समाज की गिरी हुई दशा उत्थान न पायेगी।

भिय भानुनण! जन तक आप हमारे उत्थान की ओर ध्यान आकर्षित कर बढ़े २ कन्या विचान! लय, कन्या कालेज, और कन्याशालायें प्रत्येक मान, प्रत्येक प्रान्तमें न खुलकायों तब तक समाज की गिरो दशा कदापि कदापि नहीं सुधर सकती है। विचार कीजिये कि यदिं आप ही हमारी सहा-यता न करेंगे तो दूसरा कीन अवलम्बन दे समाज का उत्थान कर सकता है। जिस वंश में, जिस जाति में, जिस धर्म में, जिस देश में इम्आप पैदा हुये हैं जन्म लिये हैं, उसके बिगाइ, सुधार की जिस्मेदारी बहुत करके हमारे और आप के ही।

शोक के सार किकना पड़का है कि सामद

निधालय, कालेज खुलत्राना तो दूर ही रहा जो कम्याशालाय और माअस, खुल कुके हैं उनमें भी क्वित संक्या नहीं दिखाई दे रही है। इन शालाओं माअसों का उद्देश्य विध्वशालों नथा अनाय पालि-काओं के सुधार से मुख्यतः सम्बन्ध रखता है। जब खुंखे हुये ब्याअमीं की ऐसी दश्य हो रही है। हो शाओं साओं अअस किस जोसा पर होते जातें।

अक्षेत्र माता विता अपना मुख्यभार्म बालि-कार्यों को विसालय तथा आध्यमं भेजना समर्थे । अवनी करवाओं को जिला किसी रोक टोक के विधा-स्वयं तथा आध्रम में भेज दिया करें पांच वर्ष वहां रस कर देखें उनकी चाल व्यवहार, जीवन-सुधार में कितना अन्तर पढ़ जाता है। कितना क्या ? ज्योन आसमान, का अन्तर एड जावेगा। उन प्रकार यदि हमाही जैन समाज उद्योग करे और किसी किसी प्रान्त में विद्यालय स्थाति कर देते तो धोड़े ही काल में उस का फल सन्मूच ही दिखाई देने लगे। अर्थात् दस वर्ध के भीता २ इस मान्त का जीवन धार्मिक और होकिक होती मकारसे बहुत कुछ सुधरा हुआ दिलाई पहने लगे। वर्नमान समय में भ्यान देकर देखने से बात होता है कि रहुत से स्थानों में कन्याशालाओं ही शिक्षा पाई हुई कत्याओं का कार्य (प्रहर्याश्रम) प्रशस्ता पात्र हो रहा है। जब ५ घंटे का फल इनना होता है तो क्या २४ घंटे उत्तम शिक्षिका के साध रहने से एलाघनीय न होगा ! अवश्य होगा । अवश्य हागा ।

सत एवं आंग्तम प्रार्थना यही है कि चहां तक हो सके, माना जिला जिल भौति अपने पुत्र के कीचन सुपान और सुब के लिने प्रवस्थ चन्ना पड़ाते हैं, लिकाते हैं, उन्नी भारति अपनी प्यासी पुत्रियों के जीवन सुधार का भी प्रवन्ध करें। तब को पड़ने लिखबे के लिये भाधमों सथा कन्या शालाओं में सेजें।

--- मचनवार्द

२-महिलाओं की शिचा

महिलाओं को महत्वश्मितनी बनाना व्यक्तिये यह भोषाञ्ज श्रावः स्तरे भारतवर्ष में मूँज रही है । परन्यु शिक्षा की पद्धति कैसी और कहां तक होती व्यहिये यह विषय अभी तक विवाद गृस्त ही है। कोई मनुष्य श्रियों को पद्दा लिखाकर उन्तन करना व्यहता है तो कोई घर के काम काब में बनुर वशकर प्रसन्त होता है।

इस अकार कितने स्विवाले मनुष्य हैं उनने ही प्रकार की स्विशिक्षा भी देश में हो रही है, अर्थात् महिलायें पिता और पित के हाथ का किलीका वन गई है उन्हें जैसा अलड़ार पसन्द आता है उसीसे अलंहन कर देने हैं। बड़े घरानों में ब छारे घरों में कहीं भी पुत्रियों व पुत्रवधुओं की शिक्षा का कोई केंद्रा नहीं है, जिसकी बुद्धि जिसर कान जानी है।

जब कि पुत्रों क लिये किसी के यहाँ विकासत मोकिसी के यहां पण्डिताई का नियम भाषावश्यक समका काना है, और इसके लिये माना पिता जी-जान से प्रयान भी करने हैं परस्तु जबतक प्रत्येक समाज में, प्रायेक कुट्राव में क प्रत्येक घर में स्वी शिक्षा की कोई नियम अयन्या हियर न होगी नव सक समाज का करपाण होना मसम्भव है।

यही बड़ी जातियों में व वदे बड़े घरों में जिल बकार कश्यामी के कि र दरेज का बल्लान दोता है कि इत गा केवर इतना कपड़ा, इतना यपया हो तय हो विवाह हो सकता है विनोह हम बी कों के सगाई भी नहीं हो सकती, उसी प्रकार शिक्षा का बन्धन भी होना बाहिये कि इस र कुपुत्र की कन्याय इन र बातों में शिक्षिता हो जाय तब विवाह किया जा? । किया के मीतर मान मर्यादा का प्रद्रन गर्मिन होगा सब ही कोग पुत्रियों को योग्य बनाने में परिभम ब बनाय करेंगे अन्यथा इस समय तो राज घरानों सब को कोरी मूर्चा कन्यायें सुसरात दकेत दी कानों में बच्चे किया जाता है उतना द्रप्या भी कनकी शिक्षा में नहीं कनाया जाता है उतना द्रप्या भी कनकी शिक्षा में नहीं कनाया जाता।

यह मां निश्चय होना चाहियें। कि पुतियों के कियं पदना कहां तक अप्यश्यक है। और शिहप, पाकि विश्व सोना, गामा प्रजाना, श्यादि वातें कहां तक सिकानी चाहियें। क्यों कि इस समय कितने ही विशानों का मत है कि सियों का अधिक पड़ाने की आवश्यकता नहीं है उनकी विद्या उपकाग में नहीं आती, इसियों के केवन सामान्य कियनों पड़ता लिखाकर उनकी घर के कामकाज में लगा देना चाहिये, तथा कुछ लगों का विवाद है कि सियों में भी पाण्डिय कह विकाश होना चाहिये, अहतु जो हो इस विषय को स्वृष स्पष्ट कर देना चाहिये।

मेरे विचार से तो जो वुद्धिमतो वालिकायें हैं भीर दिनको पहने की सुविधा है उनको उच्च विद्या भवश्य हो पदानी खादिये, क्योंकि प्रत्येक गिश्रा का मूस कारण िया है विद्यावती होकर अन्य कानी का मूळ आयसी ऐसी शहा करना अमनाव है वस्त्र विद्या में परिषक होते पर दुइ

कार्यों का भनुभव बहुत जरुरी हो जाता है।

बिदुची क्रियां अपनी गृहस्थी को बड़ी सुन्द-स्ता से कड़ातां हैं व अपने बच्चों को सहुगुणी बनातां हैं। जब कि अनपद सियां वर्षों साहा नन्दों के भीचे काम सांचने पर भी गृहस्थी को विगाय नैठतां हैं। यह बात कर्रवार देखी गर्र है कि सीना विक्रेगा रसोर्ड करना, सभी काम पड़ी क्रियां सज़ार्ड से करती हैं।

चामिकतस्य भी उन्हीं की स्क्राभ में अच्छी: तरह आ सकते हैं।

पूर्वकालमें भी भारतीय नारियां परम पण्डिता होती थीं, इसका प्रैयाण पेतिहासिक घटनाभी से मम्बद्ध है। जिन सीता जो को।मारत:का,पण्डा २ मानता है वे कैनी चिदुशी थीं, यहः निम्न लिखित एसं:क से स्पष्ट होता है।

एक समय रावण ने कैर जाने में सीता जी को बहुत फुसलाया, इराया और फिर यह क्लोक कहा—इसके तीन चरण वह कह चुका था कि बीधा सीता जी ने कह दिया जिस से श्लोक कर ठीक उल्टा कर्य हो गया।

रावण भवता है-भिवर्षा रम्योरु शिद्शवदन ग्लानिरधुना । स रामो में स्थाता न युषि पुरुतो लच्न्यपस्यः इयं यास्यस्युच्ची विषद मधुना वानर चगृः ।

र्स्तः ही---

सिधिकोदं षष्ठात्तरपर विलोपात्पठपुनः ॥ भाषार्थ-राषण सहसा है थि है सीते भव राजव्यक्त को हार होगां, यह मेरे सामने म ठहर सकते और यह। वन्तरां की सेना चोर विकट

में बहेती , सर संत्या जो करती हैं, कि अपने, आ

श्कोक में से सातवा अन्नर हटाकर गांल, अर्थात् सदा पापी राघण को नीवा दिला देती थीं भीर बि, म, बि इम सीन भक्षरों के निकाल दे सव राषण की हार और रामचन्द्र का युद्ध में उहरना, बन्दरी की सेना का जीतना अर्थ है। जायगा ।

बस इसी प्रकार मुंह तेग्र जवाब देकर वे

अपने शील धर्म की रक्षा करती थीं। इसीसे सिव होता है कि पाण्डिप हर समय में काज अ.सा है।

-खन्दा ५१६

बालिका विलाप

सुतते अभी हैं, जन्म कत्या का हुआ है गेह में। रक हाथ सिरपर सोखते, उउती जलन है देह में॥ जय बाप के जी में खुर्ता दोती म दल संबाद से। त्तव करों गहीं पछतार्थेंगे, फिर बम्धु धर्म विचादसं ॥ १ ॥ अब कुछ न दी जाती हमें शिक्षा सनायन धर्म की। अब प्या कभी हैं जानसकती, बात हम शुभकामंत्री। अव हो न सीखेंगी गृहोचितकार्य कौशल सत्कला । क्वलां सुधर गृदणीं कहा सकतीं कहें। कैसे अला॥ २॥ विद्या विना मां याप की, मन में न हम कुछ गानती। होकर स्थानी भी न हम. एति भक्ति करना जानती॥ निज बाळ बच्चों को दिफाजन टीकक्षे करती न हम। हो रहेंगे पूर्व घे इस धात से इरती न ध्म । ।। मतिशीन हमको जानकर, उपहास करते हैं सभी। सब मुखं कहकर डाउने, हम योलतीं कुछ जब कभी ह 🕶 मूर्यताको हेन् इम. आदर न पाती हैं कहीं। पति जानकर इसको अधिसित प्रेम दिख्छाने नहीं॥ ४ ॥ इस देग में देती, धनेरे पुत्र अंग्रेजी पहे। को फौरानेबल ही चले हैं, टोप से सिर को मढ़े॥ ये मुर्ख माता की, हत्य से भक्ति करते हैं नहीं। को भी सुनाकी मुखंता मां घाप हरते हैं नहीं ॥ ५ ॥ हे गाथ ! भाष जनाथ रक्षक, दीन जनके बन्ध् हैं। सब क्यों हमारी सुधि न होते शील करणासिन्ध हैं। . अब की जिये हमपर "दया मतः वैडिये मुंहः मोड्करः। हम बाळिकाएं धाप से करशी विनय कर जोड्कर ॥ ६॥ (महिला महत्व)



१-दि॰जैन समाज का निर्माण ।

बालक में मनुष्यों के समुदाय को समाज कहते हैं। विदान मनुष्यों की समाज विदेखन समाज होती है। मुखों की समाज मुखं समात होती है। बाहतव में मनच्य बड़ी है जिस में शरीर, बचन, सन तथा आत्मा की उम्मति करने की शिक्षा प्राप्त हो गई है अर्थात वही मनुष्य हैं जिस का शरीर इह पुष्ट बीर्घ्यवान, बचन सत्य, शंभीर, प्रमाणिक, मन विचारशोल, अनुभवी और शांत तथा आत्मा कान बैराम्य और सरचे सुख के स्वाद से सुगंधित हो। ऐसे मन्द्र्यों की समाज ही बास्तविक मानव समाज है। सैफड़ों वर्शेकी अशिवा और अनियमित श्यिति से वर्तगान जैन समाज सत्वहीन, निरु त्साही, अधिचारी, असत्यवादी, कायर, आत्मक्षान शुन्य होगई है। इस समाज में मनुष्यता ही नहीं रही है। न इसमें चीरत्य है,न विधेक है,न परीपकार है, म धर्मीत्साह है।

ऐसी दशा में समाज का निर्माण एक बड़ा ही कठिनकाय्यं है।

योग्य मनुष्यों के निर्माण के लिये जैन समाज को योग्य पुत्र पृत्रियों का जन्म प्राप्त कर उन को शिक्षा क्राम योग्य मनुष्य बनाना है।

योख खंवानी के किये इश्विम यह है कि श्रीह

बायु के पुरुषों का श्रीड़ आयु की युवती कन्याओं के साथ सम्यन्ध किया जावे जिससे धीर शरीर संतान पैदा हो।

क्यों कि जैन समाज छोटा २ यहुत सी जातियों में विभाजित में इससे एक ही जाति में योग्य संब-रध होना कठिन बात है अतग्य प्राचीन समय की रीत के अनुसार परस्पर जातियों में सम्बन्ध का मस्ताय ही जाना चाहिये तय योग्य पुत्र के लिये योग्य कन्या का चुनाय शागीतिक व सामुद्रिक आदि नियमों के अनुसार कराना चाहिये। अग्र-याल, खंडेल्याल आदि जातियां परस्पर सम्बन्ध करें इस में कोई वाधा शास्त्रानुसार, आती नहीं है तथा इस का रिवाज धीमहाीर स्थामीके समयमें ते। था ही उसके पीछे भी बहुत काल तक रहा है। ऐसा एक नीचे दिये हुए ऐतिहासिक प्रमाण खे पाठकों को विदित होगा।

रायबहादुर पण्डित गौरीशंकर हरिचंद ओका मजमेर ने सिरोही गाय का इतिहास हिन्दी भाषा में जिल कर सन् १६११ में मुद्रित कराया है। उस में आबू रिलवाड़ी के मन्दिरोंका जहां वर्णन दियाहै वहां जिला है कि भी वस्तुपाल तेलपाल के द्वारा बनवाप हुए भीनेतिमाधजी के मन्दिरमें दो भाले हैं जिनको देववाणी जिनवाली के माने कहते हैं। पर् को शिलासे त इन बालों में दिया हुमा है उससे विदित होता है कि इन मालों को तेमपाल ने भप-नी दिनोय की सुदृहादेशों के कल्याण के निमित्त सत्तवाया था। यह सुदृह्मा देशी भवहिल बाख्यादन के मीद जाति के महाजन ठाकुर जाल्हण के पुत्र ठाकुर आसा की पुत्रीथों। तथा घरनुपाल तेजपाल सन्दिलवाड़ पाटनके पोड़बाड़ जाति के महाजन सम्बराज के पुत्र थे।

केस की नकल यह है।

कं संबत् १२६७ वर्ष वेशास सुदी १४ गुरी मान शट जातीय चंच प्रचण्ड प्रसाद महं (अहंत) भी सोमान्वये महं भी भासराज सुत महं भी तेजःपालेन भी मत्यन्तन वास्तव्य मीढ़ जातीय इ० जाल्हण सुत उ० भास सुतायाः टसुराज्ञी संतोषाकुद्धि संभूताया महं भी तेजः पाल िर्ताय भागं महं भी महद्दा देव्याः भेयोर्थ "(अद्भी का भाग टूट गया है, इस लेख से स्पष्ट प्रमट है कि योज्ञाइ गाति के के के में प्राप्ताट जाति कहा है उसके पुत्र तेज्ञपास का मोद्द जाति की पुत्री सुद्दा के साथ सम्बन्ध हुना था।

तेहरवीं राताब्दि में अथ उपजातियाँ, में सः य-श्य होते थे तथ इस समय जारी करने में काई बाधा नहीं है। पृष्ट् सम्बन्ध से उत्पन्न संतानीका बाग्य शिक्षा देकर बीर पुरुष व स्त्री दनानाचाहिये बस इन सब बीर खी पुरुषों की जी समाज बनेगी बहीं बास्तव में भी महाचीर भगवान के प्य पर बजने बाली दिगम्बर जैन समाज हो गी।

परिषद् का कर्तज्य है कि ऐसी समाज के निर्माण का निर्मीक शास्त्र प्रकल करे।

— संपारक

२ जातीय खास्थ्य।

माज हमारे जातीय स्वास्थ्य की कितनी शेष-नीय दशा हो रही है यह नवसुवक्तें की टंको कमर मीर पीछे बहरी से भली भीति अन्याजी आ सकी है। अब पुरुषों का यह हाल है तथ महिसाओं के विषय में कहा ही क्या का सका है ! तन्हीं संह उमरमें ने वधू बना हो जातीं हैं। उनके शारीरिक अवयम कुर्ज परिपक्त भी नहीं होवाते कि वह बहुधा गर्स भारण कर अकाल काल कवलित हो जाती हैं। भाजके भारत में सर्वत्र यही मर्भे स्वर्शी दशा दिकार्र पडरही है। अन्य देशीं की समानता में यहां के स्थानस्थ्य की दशा सब देशों से गिरी हूं। दशा में है। भौसतन् यहाँ के प्रति मनुष्य की उमर केवल २४ घर्ष की है। इस अपर्याप्त चय में ही उनकी धर्म अर्थ काम का साधन करना है और पराधीनता के जजा-स से छुटना है। फिन्द् इन सब बातां की सफलता होता दर्भवात दशा में समभूता केंग्रस दक् बदकी का जिलवाइ ही है। वर्तमान में सबसे बडी आव-श्यका हमारे सामने यही है कि हम अपने शरीरी को हृष्टपुष्ट बनार्थे। स्वास्थ्य का उत्तम गत्तने की बोजना करें। विना स्थास्य शर्वार के किसी भी कार्य की सिद्धि हम कटावि नहीं कर वर्कों। इचर यदि हम जैनियाँ की ओर दृष्टि शर्वी तो मेरे स्थाल में उनके खोवन का भीसत मुश्किल से ही २५ वर्ष काः बैठेगा । शहरों की गंदी हता में ही विशेष कर रह कर तथा अनाचार वर्धक कामवासनाभी के आधीन होकर समात्र की शारीरिक अवन्धा अतीय मर्थकर कप धारण करे हुए है । इसका मेरने के लिये हम सर की मिसकर कार्य करना या-िये। भाषधी सनभर सधवा साध्वराशिकतां

के विदेश की इस में न धर्साट लाता चाडिये । भारत की भलाई के लिये राजा प्रजा, हिन्दु-मुमल-मान शीर अन्य सब ही जातियाँ की जातीय क्याक्ष्य के सरभाक्ष के लिये उपयोगी उपायें। की कार्य में काने के लिये तैयार है। जीना आपश्यक है। इंग्लैंग्ड की काउन्टी आफ छन्डन का नमूना ह्मारे समक्ष उपस्थित है। यहाँ की सन् १६२३ की क्वाक्थ्य संबन्धी रिपोर्ट से कात हाता है कि सन् १=४० में जो उत्तर वहाँ के निवासियों की भी वह आज दूनी से भी ज्यादह है। गई है वही की जनता ने स्यास्थ्य में जो यह बाशासीत उन्नति प्राप्त की है इसमें इस काल में हुई वहां की स्था-**६७ र संबन्धी के।जेर्र, सफाई की आवश्यका परिचा-**यक नियमें। आदि के अतिरिक्त वहां की राष्ट्रीय, कानीय और आर्थिक परस्थितियाँ भी कारणभूत 🖥। इतने पर भी इंगर्लीड में जातीय स्वास्थ्य पर भराषर विश्वार हो रहा है। यह मानी हुई यात है कि प्रत्येक देश की दशा का पूर्ण परिचय उसके ब्रामीण भाईयों से हो लग सका है। भारत के भागीण भारपीं की कितनी शोचनीय दशा है यह मात्र इस ही से अन्दाजी हा सकी है कि उनकी मरपेट खाने का भी नहीं जिलता ! उघा शंगर्लीड में स्ट्रीं की कोदि के मङ्द्र छै।गें के लिये कितने सुभीते प्रान हैं यह सहज में जाने का सके हैं। इंगर्लन्ड में यहां से होगों की आमदनी अधिक हानी है इसलिये उनका खान पान और बन्धादि भारतनामियों से कहीं भरछे हैं। चित्र स्वच्छना का वह अवने विकट सुवमना से फीटा एकी हैं उसकी एक भारतवासी भएनी इस वारहायस्था में करारि गरीं रख सका। बहां के एक मज़रूर

के जें सभीते और स्वत्व प्राप्त हैं वह वहां के एक ररेल का भी नसीव नहीं हैं। यदि मजवूर अपा-जिहा गया है ते। उनके लिये Infirmary मौजूर हैं वहां उसकी सेवा सुअूषा होगी । मज् तूरों की कि यों की भी पूर्ण देख भाल रहती है। म्बान्ध्य ज्याच होते ही वह अस्पतालों में पहुंचाई जानीं हैं अहाँ उनका इलाज अच्छी तहह किया जाता है। वहाँ इस बात का विश्वास है। गया है कि माना के स्वस्थ रहे विना बालक कथी स्वस्य नहीं रहेगा। इस ही बात की छश्य कर वर्डा मानाओं की देवसाल गर्भावस्था से ही राष्ट्रकी ओर से है। बालक और बालि-काकों के। यहां शिक्षा प्रहण करना अनिवार्य है। हीं, यदि डाक्टर सर्टिकिकट दें ते। अले ही वह पाउशाला से लड़ी पा सकें, धरन उसे वहां पहं-चना लाजमी है। इसका फल यह है कि प्रीह अवस्था के शिक्षित वस्पति से उत्पन्न सन्तान विशोष पर बलवान और तंत्र्ण बुद्धि जन्मती है । मतप्य इन्हीं बातें। की ह्योर लक्ष्य देकर जैन काति की अपूरी शारीरिक दशा सुधारने के प्रबंतन करना चाहिये। तथा भारत के हित के लिये उसके साज भन्य जातियों की भी रस झोर ध्यान देकर हरा **रध्यक्षक उपायी में अ**प्रसर नेता केल्याक **आ । इएक है सरकार को** भावनान्य **निश्चित रूप से इस** होता प्रदान शील ा के शमाने में किविन्त सर्वार लग्ते हो उन्हर बोक्ता बस्का नहीं में जाना भारत को दरा लाख नीय गरे पर उसरे लिये भी शासनीक नहीं। -Yo Ho

Dear Readers,

If we care to turn our eyes towards the teachings of our Tirthankaras of old, we come to learn that the best and foremost duty of man is to have equanimity towards all living beings-सा सत्तेष हि सगता सर्वोबरणानां प्रमाचरणम्। Really what noble and sublime humane ideas are to be found in this short but valuable precept We convene today various Leagues and meetings for this self same cause and propose and decide in many ways the means to being about a peaceful future. But all these efforts turn out to be fruitless and the usual warrane of turnical and pain goes on at its full swing To und out its cause we shall not have to seek far off. At the time when the last Lord of the Jarras-the great Apostle of Ahrusa-Sri Mahavira Bhagwa. adorned our Sacred Luid, the conditions were not more different than they are at present. He proclaimed the message of Peace and Truth all around and people adhering to it sunk in their differences and learnt the reverence for life. The cause of failure at present hes in forsaking the teachings or forefathers and in consequence crucky has become the mark of modera civilisation - Slaughter-houses, bred hooting, horse-flogging, rash-driving, Can these be without their reaction upon character ? Hence to praclaim message of Peace and Harmony around is the wital need of the time. The and world needs to ty voices in East and West-to utter again the same succent trath of equanimity between man and man and the beast and rest as woll. Yes, the beast as well because we are faught

by our ali-profound Fathers of yore: -

"Children of men, you and the animals form but one family and brotherhood. For in you all is the onelife. And to wilfully harm but one single creature is to harm yourself and hurt the great Family of Life. Renounce your greeds of Killing. And build ye a new culture, a new civilisation Build them upon Ahinsa. For Ahinsa means not more harmlessness, not more compassion, Ahinsa is REVERENCE FOR LIFE, and there is no religion higher than Reverence."

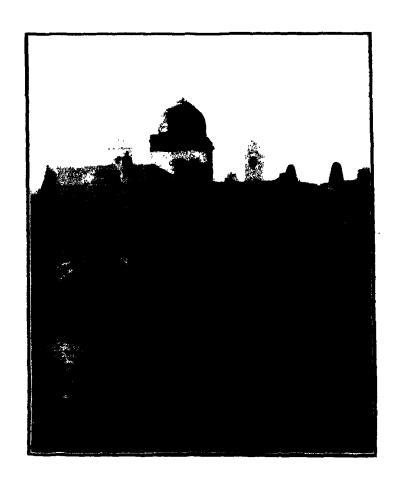
So comprehensing the necessity of raising the voice, we have ventured to reach the suffering society around with the same message of Truth and Peace on the sacred eve of the birthday of the great Apostle of Ahinsa-Lord Mahavira. Really in this sacred undertaking we are most thankful to our kind well-wishers and learned contributors, whose valuable help have made us able enough to bring out this ispecial Mahavira Jayanti number of 'Vira' Our only hope in the end is; may the voices uttering the above ancient truth be heard all over the surface of world. Answ.

"Worshipped by Indras and the gods, Be-jewelled with car-rings, necklace and crows,

May the Tirthankaras bestow Peace eternal all round. Born of noble families They gave light unto the world, Their lotus feet are adored By begions of gods celestia!."

Sub-Editor.





मी जैननिशयाँ (जमुनातट), इटावा।
(श्री दि॰ मुनि विनयसागरजी का समाधि-स्थान।)

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद ।

THE DIGAMBARAS

General Sanskrit Literature.
(BY PROFESSOR HREMANN JACOBI)

The Jainas are not frequently men-, tioned in older Sanskrit Literature by brahmanical writers, and it is a curious fact that the earliest of those who notice them designate them as naked monks showing thereby that they were acquainted with the Digambaras only. In the Vishnu Purana 3d book; 18th chapter a legend is told how Mayamoha persuaded a party of Asuras to give up the Veda and to follow a wilharma different from it; following his advice they became Arhatas, of which term a fanciful explanation is given. This Mayamoha is described in v 2 as दिगम्बरो मुख्डो वहिं पत्रधरः ; and the creed he taught the Asuras, in vio as faveter सामयं धर्मः. The age of the Vishnu Purana is uncertain; but thus much may safely maintained that the passage in question is later than the fourth century A.D; for in the sequel Buddhism is explained in a similar way as introduced by Mayamoha, now in guise of * Buddhist bhikshu, and the Buddhist doctrines are descril das the Vijnanavada, which was established by Asanga and Vasubandha in the 4th or 5th century A. D .- Further Sankara who lived 780-812 A.D., in his commentary

on the Vedanta Sutras (II 2, 83-86) discusses the Jaina philosophy आर्रश्यस्य (36) and calls them (36); but in commenting on sutra 33 he designates them as विवसन and on sutra 86 as विस्तिक, both words being synonyms or peripharastic expressions of दिगम्बर. Apparently Sankara as well as the author of the passage from the Vishnu purana just referred to considered all Jaina monks to go naked, and did not know other Jainas but Digambaras. (Amara gives दिवस्तर as synonym of जन्म and water:, and does not mention it as an appellation of one branch of the Jaina church). - Lastly it may be mentioned that Dandin, who was a contemporary of Sankara, introduces, in the second ucchvasa of the Dasakumara carita, a Jaina monk (রুণযুক্ত) who according to his description was a Digambara.

Now the question arises why these authors regarded the Digambar s as the sole representatives of Jainism which it should be noted they cordially hated. It may be said with regard to Dandin, that being a native of South India where the overwhelming, majority of the Jainas were Digambaras, he naturally would describe a Jaina monk as a naked one. The same cause might be alledged in the case of Sankara since he too hailed from the South; but as he is said, probably with good

reason, to have travelled over a great part of India, he would have had ample occasion to correct an one-sided view about the Jainas obtaining in the country of his birth. At any rate it cannot be contended that the author of the Vishnu nurana was a Southern, and it may be remarked in this connexion that the scene of the legend cited shove is laid on the hank of the Narmada. Therefore the preference given to the Dignmbaras by the brahmanical writers named in the preceding part cannot have been caused by their South Indian origin; it seemes to have been a generally accepted opinion.

The Digambaras will, of course be inclined to contend that their section of the Jaina church was the original one and, therefore, was naturally regarded as truly representing Jainism. But the Svetambaras proffer the same claim to priority. It is, however, needless to enter here into this question; all that is required in the present case is to prove by independent evidence that the Svetambaras were in existence many centuries before the period we are concerned with. Now the Kalpasutra of the Systambaras contains a detailed list of Sthaviras from Bhadrabahu, their 6th Sthavira, down to Vajrasena, the 14th Sthavira, all of whom except Bhadrababu are not acknowledged by the Digambaras. The correctness of this

list is partly borne out by inscriptions dating from the 2nd and 3rd century A. D. found at Mathura, as was first shown by Dr. Buhler: for they mention some teachers belonging to ganas and sakhas which according to the Kalpa sutra took rise from disciples of Suhastin, the 8th Sthavira. Consequently the early existence of the Svetambaras is attested by enigraphical testimony at least as old as that which the Digambers can claim for themselves. Therefore an argument based on the greater antiquity of the Digambaras fails to explain the literary facts stated in the beginning of this paper i

The question at issue can, in my opinion, he satisfactorily answered by reference to the special character of the literature of the Digambaras. They had, from an early period, made use of Sanskrit as their principal literary language, and for that reason their books could be conveniently consulted by brahmans as a source of information on Jaina doctrines. In this respect the literature of the Svetambaras was of a different character. They have preserved a canonical literature in Prakrit. the angas, upangas, etc. works'which the Digambaras maintain to have been lost in an early age; and the literary activity of the Svetambaras was mainly directed towards explaining these sacred books. They produced a vast litera-

ture of commentaries on the Siddhan. ta, called Nirvuktis, Lurnis, and Bhasyas, all of them written in Prakrit up to the eighth century A. D., when Haribhadra introduced banskrit also in this department of their literature. The difuse and desultory character of the Siddhanta as well as the language in which it and the commentaries on it were embodied, would have rendered it almost impossible for any brahmanical writer to derive from it an accurate knowledge of the principles of Jainism. even if he had gained access to those sacred texts. It may, therefore, be imagined that brahmans should have had recourse to Digambara works which presented the required information in a more systematic form and in the language to which they were accustomed. The Systemuarus, it is true, possess now a very great number of Sanskrit books on all subjects connected with their creed, but they are comparatively late works; the first Svetambara author of Sauskrit works which have come down to us, was Siddhasena Divakara who must be assigned to the 7th century A. D. since he was acquainted with the logics of the Buddhiss philosopher Dharmakirti.

There is, however, one Sanskrit prakarana, which goes back to a much earlier time, the lattvartha-dhigama Sutra by Umasvati; but it is not quite

certain that he was a Svetambara. since the Digambaras, who call him Umasyamın, also claim him as one of their own sect. In what way, however, this controverted point may ultimately be decided, thus much is certain that the Systambaras possess only one ancient commentary on the Tattvithadurgama Sutra, a short Bhasya ascribed to Umasvati himself; next in time comes an unfinished tika by Haribhadra, who, as already noted, flourished in the eighth century A. D. But in Digambara Literature the Tattvarthadhigama Sutra plays an incomparably more important part, and may, indeed, be regarded almost as its very toundation; one of their oldest authors wrote an enormous commentary on it, the Ganduahasti-bhasya, of which the introduction only has been preserved. and many more writers composed treatises based on that work. By such means it was easy for outsiders to gather information about Jaina doctrines from Digambara Literature, and for that reason, I assume, they mistook the Digambaras for the only authoritative interpreters and sole representatives of Jainism.

[Note: — We are much pleased to note here that the learned Professor has rightly placed a new thesis about the Swetambaras, which was requiring consideration

from a time. Indeed the only mention of the naked Jain monks in the Brahminical literature will not stand for the latter origin of the Swetambaras, when we see the Digambara Suastras speaking the aselves about the dissension in the Jain Church to have occured in the time of Chandragup a Maurya. But considering the question raised in the pape, we would note that not only Brahminical autuors have referred to Jaiu Munis as naked ones, but also the Buddhist authors have done likewise. Even in the work of Arya Sura, who flour, shed probably in 4th century A.D. we find a similar reference. (See th: Gatakmala, S. B. B. Vol. I p. 145. "The story of jar"). And in the "Dialogues of Buddha" we find within its 'Kassapa-sinanada Sutta' the list of practices for a certain kind of recluses. The one of them really coincides with that of Digambar muni. In it, too, the practice of nakedness is put at the very beginning. Besides the nakedness for a reciuse was regarded of much importance even by the Ajivakas and the earlier brahmanical snastras. We find in Vedas tribute paid to naked recluses such as Rishabha, Nemi, Supurawa; whom some scholars regard as Jain Tirthankaras. The legend of Shukacharya, the Digambara, on whose arrival at the court of Parikshit all the many thousand Rishis including his father and grand-father get up, can be cited, too, in support, along with the fact that a few Gods of Hindu pantheon (e.g. Shiva, Dattatrya) are regarded Digambara by them.

These references to the naked Jain munis take us in the much interior period than referred to in the paper.

Hence we would feel obliged if the learned Professor or some other scholar will kindly throw more light on the point: "An argument based on the greater antiquity of the Digambaras fails to explain the literary facts stated in the beginning of this paper".

S. Editor]

The Main Object in Life.

(By Mr. H. Warner.,

In Volume I of the third edition of his "Principles of Sociology", page 591, Mr. Herbert Spencer, in dealing with the evolution of domestic relatious says:-"Of every species it is undequable that individuals which die must be replaced by new individuals, or the species as a whole must die Regarding the continued life of the species as in every case the end to which all other ends are secondary (for if the species disappears all other ends disuppear), let us look at the several modes there are of achieving this end". And then he goes on to discuss promiscuity, polyandry, polygyny and monogamy.

This book of Mr. Spencer's is most interesting, instructive, and also amusing, and in the eight hundred odd pages of which it consists there is very little that one can very well disagree with; but part of that little is I think in the statement above quoted continued life of the species is the end to which all other ends secondary. Without being able at first to see where this statement is wrong, if wrong, one feels that it is wrong, though Mr. Spencer's parenthetical remark is of course true, and seems to make his statement conclusive, for if the species disappears there will be no - individuals who can have ends or aims. In order that there may be ends there must be individuals, so that to have individuals appears to be the first end or aim in order that other ends may come into existence.

In the case of the human species, if the continued life of this particular species is the end to which all other human ends are secondary, then it means that the first business of man is the propagation of his species; and this is felt to be untrue. Whatever may be said about man making this his first object in life, it is quite certain that in the animal world this is never an object in life; no animal makes this an object in life, much less a first object. To speak of an end being achieved is

to imply the existence of some living being who shall make ends for himselfe inanimate objects do not have aims, do not work to a purpose of their own. So the question naturally arises, whose is this end to which all others are secondary? Those who believe in a Creator might say that it is His first end to see that the life of every species is continued. But such a view would seem to be contradicted by the fact that the individuals having been created do not continue to live but die. Did the individuals not die, the species would Nature cannot be said to continue. have an end or aim, because nature in this seuse is not a living being; the same of evolution; evolution cannot be said to acuteve this end to which all others are secondary, because evolution is a process, and processus do not have aims.

Where, then, is the mistake? The mistake, if mistake there is, seems to be in Mr. Spencer's using the word end to express an idea which is undoubtedly true; it is simply the unlucky way in which he has expressed an undoubtedly true idea. If the individuals of any species die, as they do, and are not replaced by new individuals, then of course there will not be any individuals left to have aims and objects in life. Therefore all aims and objects in life are secondary to the existence of

individuals, secondary to the continued life of the species; this event must first of all come about. But this event is an event which takes place without it being the end or purpose of any living being; so if Mr. Spencer had simply said that this event must first be brought about before there can be any other ends in society, as introduction to his exposition of the several modes there are of bringing it about, there would not have been any disagreement with what he said. So now whereas we could only at fitst feel disagreement without being able to see why, we can now see as well as feel that Mr. Spencer's statement does not quite hit the mark.

One might here raise the question, if the continuance of the species to which a living being happens to belong is not his chief business, then what is the chief business of a living being? On the theory of an uncreate and indestructible soul in every living being, it becomes impossible for the individual to cease to exist : he must necessarily exist in some condition or other, and the continuance of his existence is not an event which has to be brought about, it is already there, so that he need not busy himself with keeping himself alive. What then should he busy himself with? Obviously what he should do is to get himself into a

desirable condition; or putting it another way round, he should make it his chief business in life to get himself out of undesirable conditions. Perhaps it might be said that this is the end to which all other ends of living beings are or should be secondary or instrumental. Different people will have different ideas as to what is the most desirable condition in which to live, but according to the Jain teachers it is mokaha.

The Doctrine of Karma in the Jaina Philosophy

-:0:-

The doctrine of karma consists in the theory that a certain, determined effect is unavoidably connected with one's action. This doctrine of karma has distinguished the Indian philosophical systems from the rationalistic thoughts of other countries of all times. Different from each other as they are, all the systems of Indian philosophy agree in admitting the inexorableness of karma. The Purva-Mimansa, for instance, differs from the Uttara-Mimansa in not developing the theory of Para-Brahman. The Sankhya and the Yoga again differ from the Vedanta in admitting the plurality of Souls. The Nyaya and the Vaiseshika systems are antagonistic to the Sankbya and the Yoga theories, in as much as the former invest the Soul with some Gunss or attributes. The Jaina philosophy again criticises the Nyava and the Vaiseshika doctrine and maintains that the attributes of the Soul pertain to and inhere in the very nature of the Soul and that it is the Soul which manifests 'itself in and through its attributes and varied modes. Lastly, the Buddhistic philosophy denies the very existence of a permanent reality, called the Soul. But although varving from each other in this way, all the philosophical systems of India agree in admitting the doctrine of karma,-the doctrine, namely, that

"What a man soweth, that shall he also reap." It may perhaps be said that the "Doctrine of Grace" and the "Doctrine of Vicarious Atonement". as held by the Muhammadans and the Christians, were unknown in ancient India. Right knowledge, Right Frith and Right Conduct oppose the effects of previous actions and prevent the growth of new karma and the consequent series of further existences,this is the Indian view. It was never denied that the acts already done must have some effects. The law of karma was conceived to be inexorable,-so much so that in the sacred hooks of India, descriptions are met with, of liberated (Mukta or Kevali) Beings who

are still shut up within the prison-house of hody for some time, in order that they may experience the fruits of their previous deeds. Sihlana Misra, a poet belonging to the orthodox school in ancient India, sings.—

आकाशम्यातत् गरस्त् था हितस्स्म्, अस्मोनिधि विश्तु तिष्ठत था वशेष्टम् । जन्मास्तराजित श्वभाशम-कृत्रराजाम् , खायेष न त्यञ्जति कार्यफ्लानवन्त्रिम् ॥१॥ शान्तिशतकम् ८२

"Soar above the sky, go to the end of the directions, dive deep into the sea, or stay wherever you please; the effects of the good and the bad actions which you did in your previous births will never leave you but follow you like a shadow."

The Lord Buddha also has declared:न अन्तिक्वो न सम्हमध्ये.
न पद्यतानं विवरं प्रविस्स ।
न विज्जनी सो जगित प्रवेस,
जन्मदित्हो मुंचेय्यपापकम्मा ॥

धम्मपाद १—१२

"Neither in the sky, nor in the depths of the sea, nor in the caves of the mountains, there is any place in the universe, staying where one can avoid the effects of his bad deeds."

The Jaina philosopher, Amitagati says:स्वयं कृतं कर्म यहात्मना पुरा,
फलं नदीयं लगते श्रभाशभम् ।
परेव दत्तं यदि सम्यते रुद्धम् ,
स्ववं कर्म कर्म निर्धकं तदा ॥

शावनात्राचिशति ३०

"A Being enjoys the good or the bad effects of karma which he himself did previously; if it were possible for a Being to experience the fruits of acts done by another person,—well one's own actions are then fruitless."

In the present essay, the nature of this inexorable karma and its relationship with its effect (Karma-Phala', will be briefly discussed. In other words,—what is karma? How is it connected with the Phala?—This is the subject-matter of this short essay.

The Purva-Mimanaa elaborately discusses the various rituals: its main contention, however, is that the Wedic rites and sacrifices lead one to heaven. The Purva-Mimansa does not directly discuss the nature of karma. It will not serve any useful nurpose of ours, to enter here into the scholastic disquisitions of the Purva-Mimanaa. All the efforts of the Vedanta are directed towards the determination of the nature of Brahman.

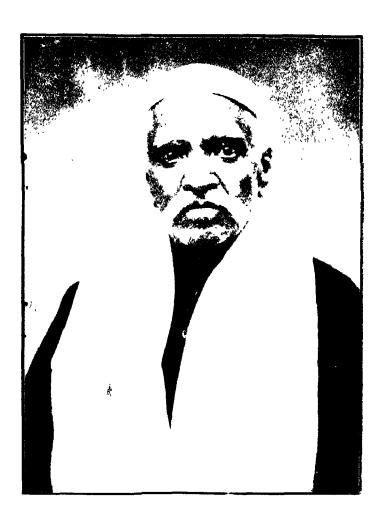
and it has little time to discuss the nature of karma. The same thing may be said of the Sankhya and the Yoga. The aphorisms of the Vaiseshika philosophy do not apparently indicate the exact nature of karma. All these

philosophical systems seem to heve taken for granted.—not to have logically examined.—the doctrines that karma is indissolubly connected with its effect and the present state of a Being is due to his past karma or actions.

In the Nyaya philosophy, however, some attempts are made to determine the nature of karma. The law of karma, again, may be said to be the basal principle of the Buddhistic philosophy. Elahorate discourses about the nature and classifications of karma are found in the Jaina philosophical books. In the present essay, the theories of the Nyaya, the Bauddha and the Jaina schools will be indicated accordingly.

The problem of the connection of karma with its Phala had occurred to the author of the Nyaya philosophy. He knew that a person is the doer of his acts. He could not deny also that an act is connected with a certain effect of its own. But it did not also escape his notice that a person's act often appears as fruitless. Hence arose a reasonable doubt in Gautama's mind, whether a person's act is by itself capable of producing its effect. To explain the apparent disconnection of an act from its effect—which is a matter of frequent experience—he introduced another element in the nexus of

बीर -



श्रीयुत् लाला फुलजारीलालजी रईस, करहल (मैनपुरी)।

हिसालप वेस मुरादाबाद ।

karma and karma-phala. He says :-देश्वरः कार्या पृत्रय कर्माफल दर्शनात् ।
न पुत्रय कर्माभावे फलानिन्यचेः तत् कारितावादतेतः ॥

"In the matter of the production of the Effect, God is the cause; for, a person's act is often found to be fruitless. It may be contended that since Phala or fruit is impossible without the Karma or act. Karma itself is to be supposed as the cause (of the Phala); but the contention is not sound. The Phala is dependent on God for its emergence or coming into explicit existence; and hence Karma can not be said to be the (only) cause of the Phala."

According to Gautama's theory of Karma, the Karma-Phala is certainly dependent on Karma; but, then, Karma is not the only cause of the Phala. He contends that if Phala were dependent on Karma alone, every act would have been found to be attended with its fruit. Karma is no doubt a condition of the Karma-Phala but the emergence of the Karma-Phala is not dependent on Karma. A person's act is often found to he unattended with its fruit That does it show 2 It shows that there is God who determines the Karma-Phala. In connection, the philosophers of the Nyaya school introduce the example of the Seed and the Plant. It must

be admitted that without the Seed there cannot be the Plant,—just as without the Karms, there cannot be the Phala. But, then, the actual growth of the Plant requires not only the Seed, but Water, Air, Light etc.; in the same way, the Karma-Phala is dependent on God, for its actual emergence.

It is implied in the Nyaya theory that although above and beyond the Karma, God connects the Karma with its Phala. Some philosophers, however, may refuse to agree that God can thus act from without. According to the older Nyaya, the doctrine of Karma proves the existence of God; but it may be doubted if the Neo-Nyaya school fully believes in the competency of the Karma-theory for proving the existence of God. Without admitting a God who joins the Karma with the Phala from without, one may, on the contrary, maintain that the Phula is completely dependent on the Karma or. in other words, that the Karma itself produces its own effect. At any rate, this is the theory of the Buddhist school.

Buddihistic philosophy agrees with the other Indian systems in holding that the course of Samsara (series of mundane existences) is due to Karma But karma, as understood by the Buddi ists, is some what different from Gautama's Karma. To understand what the Buddhists mean by Karma, it is necessary first to know what they mean by Samsara. Samsara, according to them, is a continuous flow,—beginningless, endless and unsubstantial. Buddha is reported to have said:—

"Ajnana (ignorance) hegets Samskara (tendency); this leads to vijnana (apprehension); from it emerge Nama (name) and Bhautika Deha (material body); from them come the Shat. Kshetra (six spheres or centres); these generate Indriva (the senses) and Vishaya (the objects); from the contact of the Senses and their Objects, there prices Vedana (affection); Vedana leads to Trishna (longing to get), this to Upadana (appropriation), this to Bhaba (heing), this to Janma (birth), this to Vordhakva (old age), Marana (death), Dukkha (pain) Anusochana (remorse). Yatna (misary), Udvega (anxiety) and Nairasya (despair). Thus flourishes the kingdom of Pain."

Such is the nature of the Samsara-flow, according to the Buddhistic thin-kers.—Ajanana to Samskara, Samskara to Vijnana, Vijnana to Nama and Deha, thence to Shat-kshetra, thence to Indriya and Vishaya, thence to Vedana, Vedana to Trishna, Trishna to Upadana, Upadana to Bhaba, Bhaba to Janma, Janma to Marana etc. ! We may avoid the technical terms and briefly say that the Buddhists look upon the Samsara

as an unbroken and eternal cognitive series or Continuum (Vijnana-Pravaha).

The Buddhist conception of Karma is clearly intelligible from the above Buddhist theory that Samsara, as described above, is dependent on Karma. Karma, according to the Buddhist is not merely an ethical or moral act, done by a person; it is a Law universal! This doctrine of Karma is practically the same as the Buddhist doctrine of causality (Karya-Karana Bhava). All the phenomena, things and substances of the world are ruled by this cosmic Law. The Samsara is based on it and guided by it.

As regards the production of Phala or effect," the Buddhist theory is that Karma is supremely independent and has got nothing to do with any foreign principles e. g. God' etc. Karma itself produces its own effect. A person, for example, steals; the effect is, that he heromes a thief. According to the doctrine of the Nyaya philosophy, it is God who intervenes and connects the Karma i. e. the act of stealing with the Phala i. e., the rerson's becoming a thief. The Buddhists maintain that 'the act of stealing' itself leads to the stealer's 'hecoming a thief.' The Buddhist thinkers point out that the act of stealing is a Vijnana i. e., a wave or point of consciousness. This Vijnana or cognitive wave loses itself in the

Vijnava-Pravaha or unbroken flow of cognitive continuum. What remains in the next moment is the Samskara or the persisting mark, a peculiar tendency (of the act of stealing) This Samskara, again, generates the Vijnana or apprehension of the next moment,—which is nothing other than 'the person's becoming a theif'. It is thus proved that 'the act of stealing',—which is the Vijnana of the first moment,—generates 'the person's becoming a thief',—which is the Vijnana or cognitive state of the next moment.

The substance of the Buddhist theory is that Karma is not merely the ethical act of a person. The cosmic flow of phenomena is dependent on it. The second contention of the Buddhistic thinkers is that with regard to the production of Phala, karma is thoroughly independent requiring no interventions of foreign principles e. g. God etc.

Apparently there is no difference between the Jaina and the Buddhist theories, so far as the nature and the operation of Karma are concerned. The Jainas also contend that Karma is not simply an act of a person; its operation extends throughout the universe and the flow of Samsara also depends on it. As regards the Phala also, the Jaina theory is that Karma is thoroughly self-determined and not dependent on God in any way. The

Jainas maintain that from the apparent fruitlessness of Karma, it is not right to conclude the existence of a God. The Phala of a Karma is irresistible. The effect of an act may take time to be explicit but the Karma can never be fruitless. It is no doubt a matter of common experience that a sinful man is prosperous and that an honest man suffers untold miseries. But this does not prove that Karma is ever fruitless. A famous Jaina thinker has said:—

या हिसाबतोपि समृद्धिः ग्रह्तं पूजाधिनोपि दारिद्राप्तिः सा क्रमेण प्रागुपात्तस्य पापानुविध्याः पुरायस्य पुरायानुविध्याः पापस्य स फल्लम् । तत् क्रियोपात्तंतु कर्मजन्मान्तरे फल्लिप्यतीति नात्र नियतं कार्यकारणमानं व्यक्तिबारः ॥

"The prosperity of a vicious man and the misery of a man devoted to the worship of the Arhat are respectively but the effects of good deeds and bad deeds done previously. The vice and the virtue of their present lives will have their effects in their next lives. In this way, the Law of causality is not infringed."

It is thus that according to the Jaina theory, the Phala of the Karma is irresistible. Karma itself produces its own effect. It is accordingly need-less to state that God who is to determine the effects of Karma has no place in the Jaina system.

The above similarity, between the Jaina and the Buddhist theories with regard to the nature and the operation of the Karma, is, however, in words only. There is a fundamental difference between the two views. According to the Buddhists, Kurma is an unsubstantial Law; according to the Jainas, it is the cause of the bondage of an unemancipated soul. Karma, to the Jaina thinkers, is a real, concrete substance,-different in nature from the respective at the inflow of this Karma substance, the essentially free and pure soul has been in bondage from the beginningles, time. Karma is not simply the ethical act of a person; it is noither an unsubstantial Law, as according to the Buddhist thinkers. It is a real substance, material in nature .essentially free like the soul and opposed to it. Karma in the Jama philosophy is a concrete substance to a great extent similar to what is understood by Matter in the West. It is essentially different from the soul. When Karma is attached to the soul, it becomes the cause of its bondage; when it separates, the soul becomes free. Kundakundacharya has said :--

जीवा पुरमसत्ताथा भएगोएगा गाइगह्य परिवदा । काले विज्ञज्जमाना सुहतुक् वंदिन्ति भुक्षन्ति ।

६७ पञ्चातिकाय समयसारः
'The Soul and the Karma-Matter

permeate each other, through and through. At the proper time, they separate; up till that, owing to their information, pleasure and pain are generated and experienced."

Elaborate discourses on Karma are met with in the Jaina metaphysical books. The Jaina philosophers adduce arguments to show that Karma is They show also material in nature. how the non-psychical Karma is joined to the conscious psychical principle. They maintain that the universe is filled with very minute karma-substance, called the karma vargana and with conscious souls. Souls and the karma substances are thus contiguous to each other. Although in its essence, a soul is pure, free and intelligent, owing to its proximity to karma, it becomes tinged with attachment (Raga) and envy (Dyesha) and the Karma-vargana also is likewise modified in such a way that it becomes capable of entering into the soul (the soul, modified by Raga and Duesha). The result is that the soul gets Bondage (Bandha). The Jaina thinkers compare the soul in its purity to clear water and karma, to mud and. urge that the Samsari Jiva or the soul in bondage is like turbid or muddy water. As soon as the dirt of karma is removed from the unemancipated soul, it attains its natural state of purity, freedom and enlightenment,-just as





श्रीयुत ब्रह्मचारी धर्मसागरजी।

turbid water is found in its transparent condition, as soon as the mud is removed from it.

The karma substance is divided into eight kinds by the thinkers of the Jaina school. First-Jnanavaraniya or knowledge-covering Karma; it suppresses the power of cognition. Second-Darsanavaraniya or Sensation-covering Karma; it obscures the power of sensation i. e. the power of apprehending a thing, as an undetermined whole. Third-Mohaniya or Deluding Karma; it undoes the right faith and right conduct of a soul. Fourth-Antaraya or Opposed Karma; it hampers the free functioning of the soul. Fifth-Vedaniya or Affective Karma; owing to it, the soul gets pleasure or pain. Sixth-Nama or State-determining Karma; this determines whether a soul is to incarnate as a god, a man or a lower animal, what sort of a body it is to have etc. etc. Seventh Gotra or Family-determining karma; this brings the soul into a high or a low family. Eighth-Ayus or Agedetermining karma; it determines the span of a soul's particular life. Jnanavaraniya again is further subdivided into five, the Darsanavaraniya into nine, the Mohaniya into twenty-eight, the Antaraya into five, the Vedania into two, the Nama into ninety-three, the Gotra into two and the Ayus into four modes,

eight kinds of the karma-substance are thus divided into one hundred and forty eight sub-classes. According to the Jaina theory, every state or condition of a soul is due to the inflow of a peculiar kind of karma-substance; even the very bones of an animal's body are determined by a karma, called the Asthi-karma. The detailed description of these one hundred and forty-eight modes of karma will be found in Jaina philosophical treatises and is not attempted here for brevity's sake.

The eight primary modes of karma,—the Jnanavaraniya etc.—are broadly classified into two,—the Ghatiya and the Aghatiya. The Jnanavaraniya, the Darsanavaraniya, the Mohaniya and the Antaraya come under the Ghatiya karma and the Vedaniya, the Nama, the Ayus and the Gotra are the Aghatiya karma.

The inflow of karma causes the bondage of the soul. Hence the 'Prakriti' or nature etc. of Bondage is determined by the nature etc. of karma. The 'Sthiti' or duration of Bondage also is dependent on the duration of a karma; the Jaina philosophers in their books have determined the period of which a particular karma may remain attached to the soul. The 'Anubhava' or 'Anubhaya', i. e. the intensity of Bandha is due to the intensity or otherwise of the power of a karma to produce its effect,

The quantity of the karma-matter informing every part of the soul determines the 'Pradesa' or part of the soul, held in bondage. A detailed discussion of these is also not attempted here.

The Jaina theory is that karma is a non-psychical material substance, opposed to the soul. How it comes in contact with the soul has been described above. It must, however, be always remembered that neither is the soul the direct cause of the modifications in the karma-substance nor is the karma, the direct cause of the modifications in the soul. Kundakundacharya has said:—

कुष्यं सगं सहायं मता कता सगस्स भाषस्स। गृहिपोग्गस बम्भागं इदि जिल वयलम् मुले वस्त्रम्॥ कम्सं पिंसगं कुष्वित्सेण सहायेष सम्मम्य्यालम्। ६१—६२ पश्चातिकाय

"The soul operates on and in its own nature and causes its own Bhava or state. The theory of the Jaina is that it is not the (direct) cause of the modifications in the karmamatter."

"The karma also is the cause of its own state or modification, working in and through its own nature."

The relationship between the Jiva and the karma will be clearly understood from what Nemi Chandra has said.—

पुरगक कमादीर्थ कत्ता वसहारहोतुणिच्य-पदो सेह्य कम्माणवासुहरणवा सुद्ध भावाणम्।

व्रध्य संब्रह =

"From the practical or empirical stand-point (Vyavahara) the soul is the cause of karma-modifications. From the imperfectly outological stand-point (Asuddha nischaya-naya), the soul is the cause of its own conscious dispositions (e.g. attachment, envy etc.) According to the purely Metaphysical view (Suddha nischaya naya), it is the cause of its own pure, essential states."

Infinite Knowledge, Infinite Joy etc. are the essential attributes of the soul. According to Suddha-Naya, the soul is the possessor,—the 'karta'—of these attributes. Hence from the purely outological standpoint, the soul may be said to be unrelated to the karma-substance.

The dispositions e. g. attachment, envy etc. arise in the soul in its impure state.

भावनिमित्तोषम्घो भावोरित रागद्वेष मी ह-जुदो पञ्चातिकाय समयसार।

"Bondage is due to Bhava (disposition)—and the Bhava which is the cause of Bondage is attended with Lust (Rati), Attachment (Raga), Repulsion (Deesha) and stupifaction (Moha)"

The Bhava-Pratyayas i.e. the psychical dispositions of Attachment, envy etc. give rise to wrong Belief (Mithya Darsana), Unrestraint (Avirati) Reck-

be said to be the cause of the modifi-

cations in the karma-matter.

Although according to the Suddha-Nischava and the Asuddha-Nischava, the soul is not the cause of the karma-modifications, it is so, according to view-point, called the Vvavahara-Nava. When the Bhava-karmas e.g. Wrong Belief etc. arise in the soul, its condition becomes such that the flow of the Dravya-karma or karma-matter into the soul can no longer be resisted and the soul gets Bondago thereby and goes on experiencing plasures and pains as effects of the inflow of karma-matter.

It will be manifest from what is stated above that even if we leave out of account the Suddha-Nischava view, the soul cannot be said to be the cause of the karma-modifications from the stand-point of the Asuddha-Nischava. The soul is characterised by consciousness; hence it cannot be the 'material cause' (Upadana-karana) of karma.

The inflow of karma-vargana is due to Bhava-karma; and hence the soul can not he said to be the direct 'attendant cause' (nimitta-karana) of the inflow. According to the Nischaya Naya, the soul is the cause of i. e. possessed of its own pure, essential states (attributes etc.) alone. The Bhava pratyayas and the Bhava karmas, however, make the condition of the soul such that the karma-matter, modified in a similar manner, flows into it without any hindrance. Although the soul is directly neither the upadana-karana nor the nimitta-karana of the karmavargana becoming modified in such a way that it can freely enter into the soul, indirect causation may doubtless be attributed to it; and for this reason, from the Vyavahara or empirical stand point, the Jiva is said to be the cause of (the modifications in) the karma-matter.

The above is but a synopsis of the Jaina doctrine of karma. According to the Nyaya theory, karma is simply an ethical act of a morally disposed man. Gautama admitted the existence of a God who joins the phala to the karma,—as he often found a person's act to be apparently fruitless. The Buddhists contended that karma is not simply the ethical act of a man; it is, according to them, a great Cosmic Law, the Law of Causality, the basic princi-

ple of the Samsara. The karma itself produces the phala through the Samskara; there is no determining God according to the Buddhistic philosophers. The Jainas also look upon karma as a cosmic principle They also maintain that the karma produces the phala without the interference of God. For various reasons, the phala may take time to be explicit but it is sure to come about. According to the Jaines. karma is not simply the act of a person, nor is it an unsubstantial Law. It is Material in nature. The soul which is essentially pure though in bondage from the beginningless time, goes on having bondage after bondage, owing to the inflow of karma. According to the Nischaya Naya, the soul is the

cause of its own states e.g. Raga, Dvesha etc., it is neither the material nor the attendant cause of the karma modifications. As, however, the rise of the states, e.g. Raga etc. makes it possible for karma to enter into the soul, the Soul is regarded as the cause of the karma-modifications from the empirical standpoint. Karma is primarily divided into two classes, Ghatiya and Aghatiya. It is of eight modes viz., Janavaraniya, Darsansvaraniya etc. and is of one hundred and forty-eight sorts viz., Srutavaraniya, Charitra Mahaniya etc.

When the karmas are absolutely eradicated, the Jiva becomes established in its own pure essence i.e., attains final Emancipation (Moksha).

साहित्यसमालोचना।

वहद जेन शब्दार्णव।

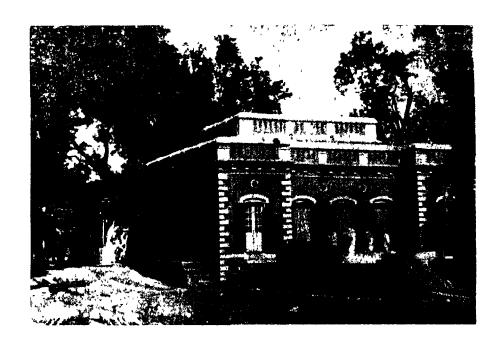
संसद स प्रकाशक सात्र विश्वीतालाजी बाग्यकी ।

इस बहुम्लय प्रतक का पहिला भाग श्रमीश्रवाहै और उसको मैंने पढ़ा है। वास्तव में यह श्रपते हुंगा का निराला कोय होगा जो सब वानों में परिपूर्ण (comprehensive and exhaustive) होगा। जम से कम इस के विद्वान लेखक की नियन हो बही है कि इसको जैन इन्साइक्लोपेडिया (विश्व कोय Jaina Encyclopaed ia) बनाया जावे सेवाड की हिम्मत, विश्व उत्साह परिश्रम, बोज

मीर लुबी की प्रशंसा करना वृधा है। स्वयं इस शब्दालंघ के पृष्ठ उनकी प्रशंसा वर्णतया कर रहे हैं। मैंने दो एक विषयों को बरीझा की दृष्टि से देखा और लेख को गुड़जलक तथा पेबीदगी से रहित पाया। उममें मुमको दिखाये के पारिहत्य की नहीं प्रत्युत वास्तविक पारिहत्य ही की मालक नज़्दू आर्र। यह कोप बाबू विद्वारीकाल की ची उमर मर की मेहनत है। वं तो उद्दोंने छोटे मोटे बहुत से ट्रेक्ट लिखे हैं परन्तु बस्तुन हति अपने हंन में अपूर्व है।

षम्पतराय जैन





यो जैन बाला-विद्याम (छात्रावास), खारा ।

चित्र-परिचय

महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी।

भुषनविक्यात आहिंसा के प्रस्म पोषक, भारत के कर्ण्यार को कीन नहीं जानता है? जैनियों को आपके विषय में यह जानकर हुए होगा कि आप के सिद्धानत बहुत करके जैन तत्यों के सनुसार होते हैं। तिस्पर जिमसमय आप किलायत पढ़ने के लिये जाने लगे थे उस समय अपनी माता के आग्रह से इन्हों ने एक प्रते भुनिके निकट शावक के पंथात ग्रहण किये थे जितके अनुरुप में ही आज आपका पवित्र जीवन है। आपके अनुरुप में ही आपकी उत्कट इन्छा है कि प्रत्येक भारतीय घर में स्वदेशी का प्रधार और खर्वेका प्रधुर गं जार हो। जैनियों को अहिंसा धर्मके नाने इन होनों बातोंकी पृतिं करना आवश्यक है।

रायबहादुर श्रीमान सेठ मानिकचन्दजी।

आप का जनम संवत १६०५ के मान्ना मास में तेरस मंगलवार को मालगापाटन के बहुत पुराने और प्रतिग्रावान घराने में हुआ। आप के स्वर्गीय पिता श्रीमान मेठ बालबन्दनी सेठी बहु धर्मात्मा, दीनप्रतिगालक और ज्यागारकता-निस्तान हैं। आपके तो भाई भी मेठ लालबन्दनी सेठी सांवाज्यम्बण और भी सेठ नेमीबन्दनी सेठी हैं। भीतालबन्दनी सेठी के पात्र वाव विमलबन्दनी स्ठी और बुक्यिं गाजकः ही बाई तथा मनोराजा बाई हैं। आपके बडे भानः कर्गांग श्रीदीरखन्दनी के एव श्रीभँवरतालजी सेठी हैं, जिनके ३ छोटे २ बक्ये प्यार की धनोजी बस्तु हैं। आप की हो बिले स्वर्गंवासिनी हो बकी हैं। आप की मारेज़्बरी एक लाख हागों का ताल करके धेशांख सं० ११६० में स्वर्गवासिनी हुई हैं। जिस समय मानाजी की शीमारी का नार आपके पास इन्होंन पहुँचा, उस समय आप यहुन शीमार ये उहने बैठने की भी शक्ति कम थी। यहाँ नक कि आप का आपरेशन होने वाला या और डाक्टरों की खलने फिरनेके लिये सखन मनाई थी। बेकिन डाक्टरों के मना करने पर भी आप माता की बीमारी का नार पाते ही फीरन वहाँ से खल पड़े और माना की सेवा में आगाने। यहाँ मानक आपने जननी की सेवा मुख्या में वात विन एक कर विया। इस मकार आप का मानुष्टेम एरम मशंसनीय है।

आप की शिक्षा बंबई में आप के निकट के सम्बन्धी तथा बंबई हुकान के श्लीय स्वर्धीय सदमग्रीय सदमग्रीय सदमग्रीय सदमग्रीय के दिल्लेख में अवर्ध तक वर्ष हुई है। आप की अंगरेजी शिक्षा के लिये खास तौर पर योग्य मास्टर रक्खें गये थे। जिल्ल से आप की अंगरेजी की याग्यना बहुत ही अन्त्री होगई है। इस समय आप को व्यापानगा चार्थी कार्मी का बड़ा अव्हा अनुभव है।

इसके सिवा आपको हिन्दी, राजराती सायाओं का भी अपछा जान है। उर्दु भी आप शोड़ी जानते हैं। लिखने पढ़ने का आप को नेहद शोक है। मानुभाषा हिन्दी से आएका हटा कर्यात है। इस भाषाओं की पस्तक वर्द एका जिस होती है। वर्द गंग-संबद्ध है। जो पस्तक वर्द एका जिस होती है। वर्द गंग-सालाओं, पढ़ों और पस्तकों के आप स्थापी गाइक हैं। खब पस्तकें आप ने पास क्राफी हैं। औसे आप प्रतकें भेंगाते हैं हैरो ही। दुरुं भें हैं। विद्या का आप को अद्युत द्यसन है।

आप के जानदान में इकसे ही खुद दान्धर्म होता आया है, आपने भी इसमें अव्हा मरा

बिया है। अपने भारया से आपका खास तौर पर रनेष्ठ है। सामाजिक कार्यों में आप बराबर भाग क्रिया करते हैं। श्री भाव दिव जैन परिषद के सर्व प्रथम सभापति आप ही थे। आप का स्वभाव बडा खरा और साफ है। सामाजिक विचार वहें उदार हैं। ख़ाली विचार ही नहीं, पर आप उन्हें कार्य-कर में परिशात करते हैं। विलायत जाने का आप का विचार महतों से था. सो आप विलायत गये शी। खंडेलकाल जानि में इन्हीं की यह पहली विकायत यात्रा है । पर आप स्वतंत्र विचार रखते हुए भी, किसी सामाजिक कार्य में अपनी बाय बालग होते हुए भी उनके होने में कोई कार्यन नरी सम्भते हैं। अपने जैन धर्म पर क्याप की परी परी भदा है। आप अपने अन्त्रे कर्तां हु होर सिलवस्तारी से घडे ? राजा महारा-जाको पर प्रभाव डाल सेने हैं। सभी आपका बड़ा आहर समान करते हैं। आप में मिलन सारी का गण बड़ा अब्हा है। सचाई की आप खब पमस्य काने हैं।

समाज से आप सदा भयभीत रहते हैं। म्ब-धर्म पर आप की वडी श्रद्धा है। आप अनु उप-बास प्रायः किया ही करते हैं। एचायार क्यानके नित्यनेम हैं। श्राप है विचार यह विवद हैं। सानि के उत्थान के आप प्रयासी हैं। आप को श्रमण का बड़ा शीक है। समय २ पर भारत के प्राय: समी नगरों में आप भूमण कर घड़े हैं। ब्राचकल द्याप विलायन याचा में हैं। घहां भी आपको स्व-धर्म का ध्यान है। 'बीर' के एउकोंको यह छएना वहाँ का अनुभव हमी अंक में भेंट करना चाहतेथे। परनत् राक्तेमें अधिक समय सरानेके कारण जनकी बागायी खंककी प्रतीता करनी होगे। ब्रुपने स्वधर्म और आचार विचार की रक्षा करते हुए ही आपने यह यात्रा की है। वहाँ भी आप यद नियम से बहते हैं । यहाँ से एक्क्षण द्यानि नौकर द्याप करते साथ लेगये हैं। ब्राह्म दाल, शाक साबी, नमक

मिर्च आदि कुल चीज यहाँ से आप के पास विलायत जाती हैं। और उन्हीं को आप काम में लेते हैं। हरचीज यहाँ से बराबर जाती रहती है। इस प्रकार वहाँ भो आप अपने धर्म का अच्छा पालन कर रहे हैं।

आप रायवहातुंर की पदवी से विभूषित हैं।
गवाकियर राज्य से "ताजहल मृद्क" हैं. वहाँ
की लेजिस्नेटिच कौंसिल के आप मेम्बर हैं और
महाराज के खान्म प० दीव में सीना है और "औ" का
खिनाव है, तथा वहां से खाप "वाखिष्य भूषण"
हैं। रायल एशियाटिक सोसाइटी के फ़ेलो हैं।
भगवान से प्रार्थना है कि आप शीवही सक्शक
स्वदेश को लेंटे और आपके रसन विचारों द्वारा
जाति में नवजीवन का संखार हो।

इस बार श्राप का यह संज्ञित परिचय ही विया जारहा है। यदि होसका तो किर कभी श्राप का पूरा जीवननिव " बीर्ं" के किसी श्रंक में प्रकाशित होगा।

मघडे मुझीलाल जी।

वनारस के चंदी आदि सामान के 'जैन कार्यालय'' नामक फर्म के आप प्रोप्तादिर हैं। माप का जनम लम्बेच जाति में आचाद बदी न संक १०३१ को हर्दा में हुआ था। १८ वर्ष तक बाप महीं रहे पण्यात जनारम में आकृत बनारसी जरी के मालका स्थापार करने लगे. जिस में इस समय आपने खिलेप उन्नित प्राप्त की है। आपको बचपन से ही नाटक लिखने वा किवना करने से प्रेम था। उन्नित के फर्मम्बरूप आप को साहित्य सेवा और नाट्य-संवालन आदि पर विविध सर्वसाधारण संस्थाओं और स्थानों से १८ पदक (Medals) प्राप्त हो चुके हैं। आपने क्रीब ११ नाटक लिखे हैं। जिनमें सुरदास, वीरेन्द्रधीर, धर्माजप, सुविध प्रकाश, मनोवती आदि उल्लेखनीय हैं। इन के श्रतिरिक्त 'कु'जविलास' नामक भजनाकी ४ पुस्तकें आप हो द्वारा प्रशीत है। वर्तमान कालीन जैन भजनों में आप के अजन विशेष सारपूर्ण हाते हुए भी लिति है। भाव को केवल साहित्य से ही प्रेम नहीं है प्रत्युत प्रत्येक ललित कला से आप सहान-भूति रखते हैं। पेन्टिंग, कारपेन्टरी, टेलरिंग, ड्राइंग मादि विषयों में माप निपुण है। और उन्हें विशेष कर सोगों को बतसाया करते हैं। १६ वर्षकी अब-स्थामें आपने एक नवीन हारमानियम बनाया था. साथ ही आपको जातीय कार्यो से भी सहानुभति है। उनमें यथाशक्य ऋषि भाग लेत रहते है। ऋभी हाल में लम्बेचू जातीय सभा का अध्यवेशन आप के सभावतित्व में सफलता से हो गया था। ऋष का चाःरत्र स्ववहार इतना उदार है कि आप के है भाई, माता पिता, पुत्र पुत्रियां भनोजे भना।जयां आदि इकट्टे रहत हुए बड़ धेन आर आनन्द से काक्षयापन कर रहे है। हम आशा करते ह कि आप इसही प्रकार समृद्ध दशामें विशेष काल तक रहते हुये जनात्थान के कार्यों में और भी विशेष भाग लंबेंगे।

श्री नाशियां जी।

आजमें को सुप्रसिद्ध जैन सेठ रायबहाडुर टीकमचंद जी जैनसमाज में सुप्रसिद्ध है। आपही के पूर्वजों ने यह निश्चयां नामक विशास दशनीय मंदिर बनदाया था, जिसका कार्य आज भी चाल् है। भारत में इस काल में जो इमारतें बनी हैं इनमें यह अपने हंग की सर्वोन्छ्छ प्रमाणित होगी। आज कल के जैनशित्य का यह महितीय नमूना ही सममना चाहिये।

श्री पोनूर हिल । जिन सगमद्वरूप भाषार्थ कुः इकः इस्वामी का विवरण पाठक अन्यत्र पढ़ रहे हैं, उन्हीं प्रातः-स्मरणीय जैनाचार्य ने जिस पवित्र स्थान पर तपश्चरण श्रीर आत्ममनन किया था वह यही है। जैनबद्री की यात्रा करते समय यहां के दर्शन अवश्य करना चाहिये। यहीं पर अब श्रारा के जैन रईस बाबू घरणेन्द्र प्रसादजी ने " कुन्दकुन्दा-अम " नामक एक उदासीन भवन स्थापित किया है, जहां पर रहने का उनका स्वयं विचार है। इस आअम से हमें जैनधमीं स्रति की विशेष आशा है।

श्रीयुत लच्मीचंद्रजी जैन।

इलाहाबाद सुमेरचंद दि॰जैन बोर्डिंग हा उसके चमका हुय रान है।आपने वहीं रहकर स्वयं होस्टल को परम उन्नति की है आर इलाहाबाद यूनी बर्सिटी में विशेष मान्यता प्राप्त की है । आजकल आप वही पर अथशास्त्र के ओफेशर पद पर नियुक्त हैं। जैन हास्टला में प्रयाग हास्टल को आदशहर बनान में आप के सत्कार्य कभो भी नहीं भूलाये जासको । अंत्रेजाविज्ञ जैनी में आप द्वारा विशेष जागृति झार जैनत्व का प्रचार होगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है। " जैन होस्टल मैगज़ोन " द्वारा जाति और धर्मीन्नति के आप विशेष बोज बोरहे है। अब आप का एक साथ ही हास्टल के बारउने शिप का कार्य करना, मंगज़ोन का सुचार सपादन करना, युनीवसिंदा होस्टल बोर्ड में भ्रानरेरी कतब्य पालन करना और अपने प्रोफेसर पद की पार्त करना आपके उत्कट संवामाय का ही मिष्ट फल है। हमारा याधना हि कि आपके शुभ संवामाध आर मा वृद्धिका शास हो, जिससे जैन समाज का आप में पूरा गर्वे हो।

> श्रीवृत बाबू विहासीलाल जी। भाषधा जन्म उत्तरशहर है

मीरातगोत्रीय अप्रवास जैन भी सा० देवीदास जी के यहां दिव्संव (१२३ भावण ग्रुक्ता १४ को हुआ था। बलन्दशहर में ही आपने इन्ट्रेन्स तक अभेजी भी शिक्षा पादे थी। फिर वहीं आप हाः स्कूल में ८ वयन इ श्रासिस्टेन्ट मास्टर रहे थे। पश्चात् अमगाह का आवका द्रान्सकर हुआ और धदां करीय रूप वष रह कर वारावंकी को आप भेज दिये गये , वहा आप उ-इ वर्ष से हैं। आप को सरकारी सरविस में ३० वर्ष से अधिक शांगये हैं। इसातवं आप रिटायर हाने वाले हैं। आप धिन्दी, उर्दू, फारसा झार झंमेजी भाषाओं का पूर्ण शान रखत है। जैन धर्मावलम्बो होने पर भी आप न चवल जन प्रत्यों ही के अच्छे मर्मक और अभ्याता ह किन्तु वीत्क, बीस, ईसाई, इस्ताम आदि अनक धने और गणित, ज्यातिष. षैद्यक-सब्बासहसा प्रत्यों की निज व्यय से मॅगाकर उनका यथाशका ज्ञान प्राप्त करते रहे हैं। इससमय आप का करीव ६ ६ जार प्रन्थी का समह है। आपका साहित्यक बान विशेष बढ़ा चदा है। आपन सबसे पहिले उद्भाषा में अन्ध क्तिजने का प्रयास सं १६४% में आर हिन्दी में सं ० १६: ६ में प्रारम्भ किया था । तबसे आप ने बद् भाषा में २५ प्रत्य स्वय लिखे और श्रव्यादित कियं हे तथा दिन्दों भाषा में भो २४ प्रन्थ आप द्वारा अणोक्ष द्वयं है। स्थानामाच के कारण यहाँ पर उनका नामोहलेख करना कठिन है। उनके विषय में उनके सुपुत्र बाबू शांतकन्द्रजी से दर्याप्त करना चाहिय। आपने एक उर्द मासिक पत्रका कुछ कालतक सम्बादन भी किया था। हिन्दी अन्यों में विशेष उस्तेषनीय आर का "सुद्द वृज्ञनशन्दार्खव" ओ बड़े साहज् ६ १०-१२सहस्र ष्ट्री मं पूर्व दोगा आर " हृद्रन् !वश्यचरितार्वाव " हैं। आप केदल हिन्दी उद्दे के लखक या कवि ही महीं हैं जरातिया, बैंद्धक, रसल,बंब,तंब, राखित आदि

के बाता हैं। आपने प्रन्थावलोकन और लेखन कार्य नित्यप्रति अधिक समय तक भने प्रकार कर सकने की योग्यता प्राप्त करने के ब्रि र २०-२१ वर्ष की वय से हो रसनेन्द्रिय की वश में रख कर थोडा ग्रोर सारियक भोजन करने का ग्रम्यास किया और २४ धर्व की दय से पूर्व अपना विवाह संस्कार भी नहीं कराया। इसहो संयम-अभ्यास के बत्त भाष इस ४५ वर्ष की अवस्था में मी धिरोप परिश्रम मजे में करते हैं। कोष को लिखने के समय से अपनो सात्विक सृति बढाने हेत् श्राप सवा वर्ष से श्रधिक तक कवल सेर-सवा सेर गोदुग्ध या कुछ फलों पर ही निर्वाह करते हेर अब भी आप अल्प श्राहारी हैं। श्रंत्रेजी-बिह्न हो नहीं प्रत्युत समन्न समाज में आप सहश संबन्नी शिद्धत पुरुष कठिनता से ही मिलेगे। हमारी अन्तरिक भाषना है कि छाप उत्तरीतर भारमान्नति कर समाज सवाम विशेष भ्रवसर हो। अमराहा आदि जैन सभाओं । के आप सभा-पति भी थे।

व्यंग-चित्र

में पाठकों को चतंमान कालकी शिक्षापश्चित के कड़क फल के दर्शन कराये गये हैं। साम्मत कर्मश्रधान समय है। कुराल कार्य करने वालं-शिरुपी-कारीगर हो खडूँ झार दरकार हैं। कारे मगुज़ पच्चा करने वाल विकासिता क प्रतिमृतिं नवशिक्षितों की आवश्यकता नहीं है। यहा इस विश्व का भाय है। जैलियों में इस समय शिक्षा-मणाली किस वेढेंगे ढंग पर है यह इस के इन पंडित-क्यां कलों से मलो प्रकार आनी आसकतो है जो उसको नमस्कार करके कहीं समाज में हो अपनी आजीविका का आश्चय दूँ उते हैं। सरकारो शिक्षा-प्रणाली जिस प्रकार क्लक-प्रसः नो है उस ही प्रकार जैन-शिक्षा-पद्धति मो सम्यापक उत्पक्ष





श्रीयुत् जयकुमार देवीदास चबरे वकील, स्रकोला। स्मापित—भा० दि० जैन परिपद् (हितीय अधिवेशन), वार्धा।

हिमालय पंस मुरादाबाद।

करने वासी बन रही है। यहां और वहां के फलों में अन्तर नहीं। दोनों स्थान के फल दासता के बस पर पकने का साहस करते हैं। किन्तु फेर इतना ही है कि पहिले फलों का तो अजीर्ण सम्य संसार को होजुका है और दूसरों का होने ही वाला है। अतः धर्म और समाज की मलाई के लिये जैनिशिचालयों का शिचाकम एक इम बहुत देना चाहिये, जिस से स्वावलम्बी धर्मनिष्ठ घुरअर विद्वान इत्पन्न हों!

श्री जैन नाशियां जी (जमुना तर) इरावा ।

यह प्राचीन स्थान आभो हाल में प्रश्ट हुआ है। गत चातुर्मास म भीमान् जनधर्मभूषण धर्म-दिवाकर वर्शातलप्रसाद जी न इस स्थान की इंद्र निकाला था। यहां पर एक मठ तथा तीन स्तूप इंटों के बने हुये हैं। यद्यपि पहले से हा इटावे के जैनी यहां पर अपनी संतान की मुश्डन कियादि किया करते थे परन्तु उनका यह नहीं मालम था कि यह एक जैन मान का समायिस्थान है। बीच की बांटी सी ग्रमटा में आंविनयसागर निर्मन्य मनिमहाराज के चरवांचन्ह्र विराजमान हैं और उन पर एक सेल अकित है। पास हामे उनके शिष्यों के समाधिस्यान तथा बरणविह्न हु। यह प्राचीन स्थान बड़ा मनाह ध्यान कालये बक्तम है। इटावे के जैनी अब इसका उद्धार कर रहे है। उत्तम हा यदि यहाँ पर एक उदासीनाक्षम **भौर पृहदुर्जन अन्वेष ए क (लपे**, Jain Research) यक पुस्तकालय स्थापित किया जाव। इटाव क ÷जैनियो को ध्यान देना बादिए।

श्रीमान् ला• फुतजारीलालजी

करबुक निवासी जैनकुकोझ्य का जन्म कार्तिक शुक्का ५ स० १८१६ को अकोगंज (परा)

में ला॰ सोनेलालजी के गृहमें हुआ था। आपकी ध वर्ष की अवस्था थी कि जब ही आएको छा॰ शिखिरप्रसाद जी गईस व ज़नींदार करहता ने गाव ले लिया। परन्तु उसावय ला० शिखिरवसाद का देहान्त हागया आर द्सक पुत्र का पासन पोषण उन की पत्ना ने बड़े प्रम से किया। विद्वती के ला॰ छुदामीलाल क यदां आप का विवाह हुआ। १६ वर्ष का अवस्था में आपने हिंदी, उद् तथा फारखी में अच्छा योग्यता प्राप्त करलो। कानून का अध्ययन भा किया परन्तु वकालत की परीकान थी। संस्कृत व अंग्रजी का भी किञ्चित् परिचय शास किया। आपको स्वि प्रारम स द्वा धर्म को और विशेष रही है। १६-१७ वर्ष को अवस्था स हो आए कोट्राम्बक स्यवस्था तथा ज्मीदारी का प्रवन्ध कर रहे हैं। तीनो पुरुषार्था का पालन समुचित राति से कर रह है। आपने भी निज संतति न हाने क कारण अपने साले के खड़क छा। मजाजालास को गांद लिया। ष्टै, जिनको शिका-दाद्या तथा विवाह-स्नग्न भी विशेष पदुता के साथ पूर्ण हुये हैं। धम प्रवृत्ति के अनुक्रप भापने विषय प्रकार सं कराव ४६०००) ह० दानभी किया है। अभो हाल में श्री विम्द प्रातेष्ठा भी करा कर आपने महत् पुरुवापार्जन किया है। असमर्थ विद्यार्थियों का आप छात्रवृत्तियां देत रःते हैं। सरकारा कायों मंभा आप विशेष सहायता देत रहत है और आप आनरेरा मिक्र है द हैं। मैनपुरा मं भी एक धर्मशाला आपने बनवाई है। १००) साल नफं की जिमींदारो आपन विद्या प्रवार के लिये निज एका क स्थरणार्थ अलग निकास रक्का है। आपका उदार, धर्मपूरा चरित्र अनुकर-णीय है। "बार" क प्रत आप के सङ्गाव है। भावना है आप दीधकाल तक धर्मलेवन करते हुये जाति के उद्धार हेन उपकार कार्य करें।

श्रीमान् पूज्य ब्रह्म० धर्मसागरजी

गृहस्थाबस्था में भीयुत बाबकृष्ण अडकोजी शाहकर के नाम से प्रख्यात थे। श्रापका जन्म सन् १=20 में वर्षा जिल्लान्तर्गत सोनेगांव में हुआ था। आपने सन् १८२० में नागपुरके हिसलप कासिज से बी॰ ए॰ की परीक्वा में उत्तीर्शता शास की। परोचा में फिलॉसफी झोर संस्कृत ही अयापके मुक्य विषय थे। फिर आपने तीन वर्ष भूरेना जैन सिद्धास्त विद्यालय में जॅन दर्शन का अध्ययन किया है। वहा आप अंग्रेज़ी भाषा के शिक्त और सुपरिन्टेन्डेट का भी कार्य करचु के हैं। बुटपन से दी आपकी प्रश्नुति धार्मिक था और इच्छा थी कि कव मं एक सन्यासी वनूं। छात्रा-वस्था से हो आप इस त्याग अवस्था का तैया। रयां कर रहे थे। मात्र देरा थी धार्मिक और लांकिक **बान में पृ**खेता माप्त करने को श्रोर तब त्याग मार्ग में प्रविष्ट दाना इष्ट था । यह समय गत १८ अनवरी को फलटण ज़िला सतारा (बम्बई शांत) में आप का प्राप्त हागया। वहां अपन दाक्षागुरु स्वरति भी ब्रह्मय्य स्वामी से आपने ब्रह्मचर्या-बस्या की दीवा प्रदेख को। आन का दीवानाम " धमसागर " भा ज्यातिष गरिएत के अनुसार रक्का गया है। यह विषय हर्ष और गौरव का है कि सर्व प्यम दि॰ जीनयों में आपहा एक प्रदेश-बैट ब्रह्मचारी है। हमारी हादिक साबना है कि श्चाप आत्मोश्वति करते दुये विशेष कालत कर्जन धर्मका पुचार जैन-अजेन और देश-विदेश में करते रहें।

श्रोजैनबाला विश्राम-भवन।

आरा के स्व० बाबू देवकुमार जी का प्सिद्ध अप्रवाल कुल धर्मकार्य में विशेष पृष्यात रहा है। आज भी उस कुल के रत्न रूप बाबू निर्मल कुमार जी उस का प्रकाश पूर्ववत् पुकट कर रहें है। उस ही कुल से जैन समाज को एक परम विदुषो की पृति हुई है । श्रीमती परिडता चन्दाबाई जो से आज जैन-महिला-संसार भली भांति परिचित है। आपही ने सत्वयत्नी द्वारा आरा में जैन महिलाओं में शिक्षा प्रचार हैत तथा विधवा वहिनों के जीवन सभारार्थ एक " जैन बाला विश्राम " स्थावित कर रक्ला है। उस के अल्प जीवन काल में हो जो साम उत्तर-प्रांतीय जैन महिलाओं का हुआ है वह सर्वे प्रकट है। यह एक आदश विद्यालय और खात्रागृह है। यहाँ से । शक्षा प्राप्त कर क कन्या अपने साथ एक अपूर्व प्रकाश रखतो इ और। जस गृह में पहुँ बती है उसका प्रकाशमान कर देता है। यहां का प्रथम्ब सर्वधा उत्कृष्ट है। बहिनों को यहां आकर इस से क्षाभ उठाना चाहिये। उत्तर श्रांत की प्रत्येक विश्वशानिहिन को तो ज़कर ही इस विश्वास में पहुंच कर आत्मकल्याण करना चाहिये। हमारी भावना है कि इस विश्राम की विशुद्ध बन्नति हो। यहां के नवीन भवन का ही चित्र इस प्रकट करता चाहते थे परन्तु समय पर ब्लाक न वन सकते कं कारण इम पुराना ही चित्र प्रकट करते हैं।

(क्रमशः)



भा॰ दि॰ जैन पीरपद

की ओर से भी प॰ मैंबरलालजी राज प्ताने में भौरे श्री प॰ में मचन्द्रजी पंचरत्न सी॰ पी में दौरा करने के लिये गये हैं। जहां उपदेशक महोर्य जायँ वहां के जैनी भाइयों को इनके व्याख्यान कराने चाहियें भौर परिषद के सभामद् बनकर श्रीर सहायता पहुंचा कर परिषद् को श्रपनाना चाहिये। ज्योतिप्रसाद जैन मन्त्री उपदेशक विशास

भा॰ दि॰ जैन परिपद

गोमटस्वामी महामस्तकाभिषक मेला।

ता० १५-३--२५ को भीमान महाराजा ऋषा-राज बहादर महैसूर श्रपने दो मालों सहित पहाड पर पंचारे थे व अपनी तरफ से अभिगेक करागा था तब बंदोबस्त बहुत ध्रच्छा था । ह्यात करीव ३००० आदमी अभिषेक देख सके जिसमें करीव चार पांच हजार विध्यमिति पर शे छीर शेव सव ने चंद्रगिरि पहाड पर इधर अधर वैठकर हर से अभिषेक देखा था। महाराजाने अभिषेकके निये ५०००) प्रदान किये थे। खदने श्री गोमट्स्वामी की प्रदक्षिणा की, नस्मकार किया तथा द्वस्य से -पुजन की थी व कुछ रुपये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये थे व भट्टारकजी को नमस्कार भी किया था। सुबह १ बजे से दोपहरको १ वजे तक इस प्रथम समियेक का कार्य अतीव सानंद व धर्म ममाबनाके साथ हुआ था। इस अभिषेक में जल, द्व, दही, केला, पुष्प, नारियल का चुरमा, घृत,

चंदन, सर्घोषधि, केशर, इसुरस, सास बन्दन, बादाम, खारक, गुड़, शक्कर, क्षसखस, फूल, बनेकीदाल श्रादिका श्रभिषेक उपाध्यायी द्वारा मचानसे हुआ था।

दौंग रिपोर्ट ।

१५ मार्च से २९ मार्च १६२५ तक प० प्रेमचंद्र पंचरत उपदेशक भा दि० जैन परिषद् ने जबल-पुर (सी० पी० मध्यपदेश) जिला अन्तर्गत रीठी यहमांच नेपुरा, गंज. एप्रयान, सिहुँडी और बाकल आमों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् की ओर से समण किया। प्रत्येक स्थान पर शास व जातीय सभाय कीं। जैनियों को दर्शन व स्वाध्याव करने की प्रेग्णा की तथा कितने ही महाश्यों ने प्रतिक्षा भी लीं। कई स्थानों के भाइयोंने भी मंदिर जी में शद खादी है बस्त्र ही प्रयोग में लाने की तथा विवाहादि के अवसर पर अञ्जील गाना व व आतिश्वाजी व वेश्या नृत्य देखना बन्द करने की प्रतिक्रा लीं। प्रत्येक स्थान पर परिषद् के समीसद व वीर के शाहक बने।

गंज व सिहँ डी स्थानों पर साधारण समायें हुई जिनमें बहुन से छजैन भाई भी सम्मिलित हुए थे। छिहसा धर्म पर ब्याख्यान हुये। उपस्थित भाइयों ने प्रत्येक स्थान पर प्रतिक्षों को कि हम देखी पर धकरा झादि चिल नहीं चढावेंगे। सिंहुड़ी स्थान पर प्रचारक महाश्य के दौरा रिजस्टर में अपनी प्रतिक्षा के हस्ताचर भी मुख्य र भाइयों ने कर दिये।

रीठी स्थान पर एक सार्विजनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसके लिये सिंघई लक्ष्मन लाल व सि लम्बुलालजीने अपनी श्यामिक व भीति की पुस्तकें प्रदान कीं। आप दोनों महाशय तस्य खर्का व स्थाध्याय के प्रोमी हैं।

रहुर। में पूजा प्रसास का प्रवन्ध ठीक नहीं है भौर तीन मंदिरों में से एक मन्दिर बहुत ही जी में अवस्था में है। रेपुरा के भाइयों को विणेष कर सिंघई प्यारेसालजी को पूर्ण ध्यान देना चाहिये तथा रीठी के भाइयों को प्रमः पीठशासा जो बंद होगई है जारी कर देनी चाहिये।

होरा बाग जैन धर्म शाला बंबई

के मन्त्री समित करते हैं कि गत माह मार्च में 899 दि• जैनी, २२ ज्वेनास्त्रत जैनी ४८% हिन्द सब १२=४ यात्रियों ने धर्म शाला में उद्दर कर साम उदाया।

पद्मावती पुरवाल

भाइयों की सेना में खास तीर रे निलेदन किया जाता है कि वे अपनी जातिके पार्थिक, सामोजिक और व्यावहारिक भागड़ों का निर्णय थी भारत वर्षीय दिश जैन परियद के द्वारा ही कराया वरें। इसमें आएके धन धर्म, और समय की बचन के अतिरिक्त जाति के अपमान से मी

फीरोजाबाद के ऋधिनेशन एर तार १६—२० मार्च को जैन जातिभ्रयम लग्ला भगवानदामजी कादि जाति के प्रधान प रुपों के विशेष आगह से मैंने परिषद् की सेशा । महामंत्री होना) स्वीकार की श्री आशा है आप लोग इसका अच्छी तरह निवाह करावेंगे। भतपूर्व कार्यकर्ताओं के दूर देश रहने से परिषद् जानिकी सेवा नहीं करसकी थी किन्त आगे ऐसा नहीं होगा। परिषद् की सेवा स्वीकार करते हो भाइयों ने जो मामले परिषद् में निर्णय होने के लिये भेजकर परिषद् का गौरव बढ़ाया है उसके लिये आपके आभारी है।

निचेदक बायराम बजाज महामन्त्री भा वि जैन परिषद् जीवहण श्राफिस श्रामम ।

श्री भार्वाद० जैन पद्मावती पाँग्पर्

का अधिवेशन फीरोजाबाद के मेले पर ता० ११-- २० मार्च को जैन जातिभपण लाला भगवानदासजी यह नगर के सभापतित्व में बन्ने संघारोह के साथ होगया। १००० हजार पदावती परवाल आर्र एकत्रित हुये थे। प्रयन्धकारिता और कार्यकर्नाओं का नवीन चनाव होगया है। समस्त जाति ने शीमान ए० यावरामजी (संबी जीवनवा सभा आगरा) को परिषद का महामंत्री बनाया है। आएके इस एवको स्थीकार करते ही उद्देश्य के कई भाइयों ने दीवानी ऋदासत से सकदमे बना कर परिषद से निर्णय कराने को महामंत्री के नाम स्टास्य (इकरार नामा) लिख टिया है। परिषट है न्यायालय से ही ऋधिकतर जातीय और व्यवहारिक मामले निर्णय किये जावेरी परि पट संबन्धी समान्त पत्र इयनहार कार्य जीवहया सभा टक्तर के साथ परिषद के दफ्तर के पते पर एक भेजने काहिये।

> निवेदक—हजारील ल बी० ए० सहा० महामंत्री परिषद्

एलद पन्नालाल जाहीगवाग जीपधालय से १०० विश्वतेन ५३ व्येश्वतेन ५१२ हिन्दू इन्त्र १०५ नवीन रोगियों ने लाभ लिया। पुराने रोगियों की संख्या ३३२४ थी।

बाल रचा सप्तरत्न वक्स

बहुभा देखने सुनने में झाता है कि छोटी अबस्या के अनेक बालक रोग मसार पसली खास खाँसी लहक दस्त स्किया ज्वर नेत्र पीड़ा गलगएड आदि में फँसकर भरजाते हैं और उग लोग उनके माता पिना को भूनादिक को बाधा अपटा नजर बनाकर ल्टते हैं परन्तु आराम नहीं होता हमने इसके लिये एक विजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शान्ति होने हैं जो ४० वर्ष से धड़ाधड़ यिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें म० १।) डा० ख०। ≈) कुल १॥≈)

मिलने का पता-ज्योतिष रत्नभवन फर्रुखनगर (पबाब)

जरूरत है-

वास्ते जैन बंधिंद्र हाउस मेरठ के एक ऐसे सुपिन्टेरडेन्ट की जो श्रॅंग्रेज़ी तथा हिन्दी जानते ही जैनी हों, धर्म से वाकफ़ियन रखते हों, तज़र्वेकार व उत्साही हों। तनक्वाह हस्स लियाकृत दोजायेगी। उनको खुद रात को भी बोर्डिंगहाउस में रहना होगा। श्रमी बोर्डिंगहाउस में रहना होगा। श्रमी बोर्डिंगहाउस के मकान में गृहष्य के वास्ते जगह नहीं है। दरक्वास्त में उस्र योग्यता व कम से कम वेतन जिसपर वह रह सकते हीं लिखकर २५ श्रमेल तक मन्त्री के पास नीचे लिखे पते पर भेजनी चाहिये।

ऋषाटास बी० ए० वकील, मन्त्री जैनबोर्डिक्सहाउस, मेरट।

केवल हेढ़ रुपया में दो सो पृष्ठों से परि पूर्ण ! सुन्दर ऋोर सचित्र "जैन होस्टल मेगजीन"

त्रमासिक पश्चिका।

यह िश्चिष्ठ विषय विभूषित पित्रका वर्ष में तीन बार सितम्बर नवम्बर और फरबरी में जैन हांस्टल प्रयाग से प्रकाशित होती है इस के नवम्बर के विशेषांक में ही हो दर्जन रङ्गीन और सादे चित्र रहते हैं हिन्दी और अंग्रेज़ी के सुरन्धर चिद्वानों के लेख और मनोहर कविताएँ इसमें रहती हैं पत्र संसार के सभी प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त-कएड से शशंसा की है। इसके सम्पादक हैं भी गुत लक्ष्मी चन्द्र जैंन एम० ए० एस एल० बी० (प्रयाग विश्वविद्यान्तय) आप ऐसी सुन्दर सस्ती और मनोहारिखी पत्रिका के प्राहक हुए बिना कदापि न रहेंगे। आज ही ॥) के टिकट भेजकर नमुना मँगा लोजिये और परीक्षा कीजिये

विकायनदाताओं के लिए भी यह पत्रिका सर्वोपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि यह पत्रिका प्रायः सभी धनाक्य जन विद्वान प्रोफेसर छात्रगण तथा देश विदेश के बड़े विद्वानों के हाथों में पहुँ बती है। पोस्टेज सहित वार्षिक मृत्य केवल १॥)। अकेले विशेषांक का मृत्य १)।

शीघ ही बाहक श्रेणी में अपना नाम लिखाइये।

पत्र व्यवहार करने का पता:-व्यवस्थापक जैन होस्टल मैगुज़ीन

जैन होस्टल-प्रयाग।

खापा रहा है !! हाथोंहाथ विक रहा है ! शीघ्र खरीदिये !!! भनेकानेक विद्वारों, जैन और जैनेतर पत्र पश्चिकाओं द्वारा प्रशंसित भारतवर्ष में विद्या प्रेमी बड़ीदा राज्य में इनाम तथा लावने रो के लिए मन्जर किया हुमा मुल, भावार्ष,

विवेचन सहित "कर्त्र अकीमुदी" नामक प्रन्य का हिन्दी अनुबाद

पृष्ठ ५५० स्त्य १॥) सजिल्द २)

कुछ सम्मितियाँ यहाँ दर्ज करते हैं।
(१) हिन्दी की सर्व श्रेष्ठ मासिक पत्रिका ''सरस्वती''—भाग २४ झड़ २७६ में लिखा है कि
मूल पुस्तक यद्यपि एक जैन परिडत की लिखी हुई है तथापि सब धर्मों और सम्भवायों के अनुयायियों के चढ़ने लायक है। विदेखना जूब विशद है। पुस्तक के अव्रितीय होने में सन्देह नहीं।

(२) "म्भा" कानपुर अप्रैल सन् १६२३ के अङ्क में लिखनी है—पुस्तक में प्रचलित लोका-चारों की दृष्टि से स्त्री पुरुषों के सामाजिक कर्त्तव्यों की विशद विवेचना की गई है।

अपने विषय की बड़ी अच्छी पुस्तक है अनुवाद अच्छा हुआ है।

३) हिन्दी केसरी—इस में मनुष्य के सामाजिक और धार्भिक कर्तव्यों की व्याख्या की गई है और उन पर धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से भ्रुच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक अधिक उपयोगी है।

(४) है बिक आज-काशी ता॰ ६-११-२२ पुस्तक में कर्तव्य झकर्तव्य का उपदेश इस मनी-रखक और प्रभावीत्पादक प्रकार से दिया गया है कि पाठकों पर उसका बहुत ही अच्छा असर पड़ता है विद्यार्थियों तथा गृहस्य स्त्री पुरुषों को किस प्रकार के आचरण से लाभ है और सदाचार की कैसी महिमा है एवं व्यसन तथा दुराचार से लोगों की कैसी अधोगति होती है, यह इस प्रत्य में दिललाया है। सामाजिक कुन्याओं से होने वाली सुराह्यों का भी दिण्दर्शन कराया गया है।

(५) कान्फ्रोन्स प्रकाश-इस पुस्तक का यथार्थ गुण तो हमारी समक्ष में कियी भी प्रतिभा-शाली लेककों की समालोचना से माल्म नहीं हो सकते, जैसे कि चन्द्रमा की अथवा कमन को अहादकता प्रकातकता चित्र से अथवा वर्णन से बात नहीं होती किय्तु प्रत्यक्त देखने से ही माल्म एउनी है वैसे ही "कर्सन्य कीमुद्रो" का भी आवन्द प्रत्येक शिक्षित

सनुष्य को अपनी नज़र से ऐखकर साल्म करना चाहिए।

(६) जैसवाल जैन-आगण प्रथम खण्ड में कर्तव्य किसे कहते हैं, यह दिखाया है और गृह्ख के कर्तव्य कभी का विवेचन किया है। द्वितीयखण्डमें मानव सम्तित शास्त्र, तथा आचार विचार के सम्बन्ध में वर्णन है। तीसरे खण्ड में स्त्रियों के कर्तव्य दिखाये हैं। इस प्रकार अनेकी आवश्यक बातों का समावेश होगया है। गृहस्यों के सिए यह पुस्तक बड़ी ही उपयोगी सिक्क होगी विषय की विवेचना और पृष्ठ संस्था की अधिकता के आगे पुस्तक का मुख्य १॥) नहीं के समान है।

(७) अग्रवाल बन्धु आगरा—स्तके श्रवसार वर्ताव करने से मनुष्य श्रपने जीवन को झफल बना सकता है। पुस्तक सभी लोगों के पढ़ने योग्य तथा उपयोगी है पाठशाला की पाठ्य पुस्तकों में ऐसी पुस्तकों की अत्यन्त आवृश्यकता है। इससे विधार्थियों को चरित्र-नठन तथा कर्सव्य-पालन करने में अधिक सहायता मिलेगी।

- (८) वैद्य मुरादाबाद यह नीति विषय का बड़ा झब्खा प्रन्थ है। इसमें वर्षमान काल में प्रत्येक स्त्री, पुरुष वा बालक, वृद्ध युवा आदि का प्रत्येक श्रवका में क्या कर्ष्य होना खाहिए। अर्थात् क्या उसे करना खाहिए क्या न करना खाहिए, इस विषय का इसमें बड़े विशद कप से पृथक् रिवचरों में विवेचन किया गया है। इसको पढ़कर प्रत्येक मनुष्य अपना खरित्र उज्ज्वल बना सकता है। इसमें विद्यार्थियों को जो उपदेश दिये गये हैं वे अमूल्य हैं। विद्यार्थियों व बालकों को सदाचार की शिक्षा देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अब्बी है। इसके द्वारा गृहस्य लोग गृहस्य—धर्म के कर्त्य का सहज में जान सकते हैं। इमारी माताएँ, कन्याएँ और विधवा बहिनें भी इसे पढ़कर अपना उपकार साधन कर सकती हैं। पुस्तक प्रत्येक घर में पढ़ी जाने योग्य है। अनुवाद की सरल भाषा और सुपाठ्य है।
- (९) जैन धर्म भूप्ता--धर्मिद्याकर भी०व० शीतलमसाइजी जैन मित्र कार्तिक १४ सं० ७६ में लिखते हैं:— इसमें ३ खगड हैं। प्रथम खगड में गृहस्य का सामान्य कर्राव्य, उत्साह की मशंसा, झालस्य की निन्दा, कोध निराकरण, प्रतिक्षा पालन के लाभ। दूसरे खगड में योग्य माता, शिश्च पालन, योग्य शिक्षा, शिक्षक, ब्रह्मचर्य, बाल लग्न, निषेध, झारोग्य महिमा, सात व्यसन के दोष। तीसरे खगड में उत्तम स्त्री कर्ता व्य, उत्तम भित्र धर्म, प्रेम का झादशे, कन्या विकय निषेध, उद्योग, नित, सस्य इत्यादि उपयोगी विषयों पर बहुत उपयोगी सार गर्भित निष्पक्षपात कथन है। स्थान २ पर संस्कृत के स्त्रोक हैं यह पुस्तक नवयुवकों के लिये व विद्यार्थियों के लिये बड़े ही काम की है। एक साधारण मनुष्य के जीवन को झादशें बनाने में सहकारी है। हर एक हिन्दी भाषा के जानकार को भी पढ़ना चाहिए मृत्य भी बहुत कम है।

(१०) दिगम्बर जैन—चैत्र स०६६ के अक्क में लिखता है:—इसमें नीति धर्म, ब्यवहार, ब्या-याम, चिकित्सा, रोति रसा, श्रादि मनुष्य जीवन के स्रनेक कर्तत्यों पर इतना प्रकाश डाला गया है कि इसका नाम "कर्त्रथ्य कीमुदो" सार्थक ही है। इस प्रंथ को मनन पूर्वक पढ़ने से हर एक मनुष्य कर्त ।यशील बन सकता है; हर एक हिन्दी प्रेमी जैन झजैन सर्व को यह प्रंथ पढ़ना चाहिए!

सस्ती ऋौर उपयोगी पुस्तकें।

(१) आवक धर्म वर्षण —पृष्ठ ४५० मू०॥) १२ का ५) सजिल्द ॥-)। (२) नारीधर्म निरुपण— १ पृष्ठ ६४ मू० -)॥ १२ का १) (३) जैन धर्म के विषय में झजैन विद्वानों की सम्मितयाँ-पृष्ठ ६४ मू० -) १०० का ६) (४) सुवर्शन सेठ चरित्र— पृष्ठ ४० मू० = ११ का १। (५) जम्बू झामी चरित्र— पृष्ठ ६० मू० ।=)॥ १२का ४) (६) जैन प्रश्लोत्तर कुसुमावली-पृष्ठ १२० मू० ।≤) ५ का २) (७) हितो-प्रदेश रत्नावली—मू० =) ४ का १) (८) जैन दर्शन जैन धर्म—पृष्ठ १६ मू०)॥ १०० का २॥) (म० इर्षट घारन लम्बून रचित) (६) नित्य नियम नित्य समरण्—पृष्ठ ३२ मू०)॥ १०० का ४) (१०) उपदेश रत्नकोश पृष्ठ ५० मू० =)॥ २५ का ३॥)

मोतीलाल रांका मैनेजर जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर (राजपूनाना)

ब्ट "दिछी में लूट" बीजिये

ये रूपये कमाने के विज्ञापन नहीं हैं।

मुपत 'न्बरत्न' मुपत

राम तिथिपत्र, परोपकार महिमा, धर्म परिचय, अनाथरसा, उचित सेवा, रतनज्योति, नेत्र महोषधि, समयाष्टचक भीर यंत्रशिक्षा मुफ्त खर्च के लिये 🔊 का टिकट भवश्य भेजें।

पता-रतनालय अरब सराय न० ४ देहली।

क्या इस मूल्य में ये घड़ियाँ और ऐसा इनाम मिलते तुना है—-अल्प मृल्य आला मशीन ।

मुफ़्त "अवल घड़ियों" पर भी "डवल इनाम" मुफ्त

धी ३) गहकोष ४) रेल्वे ५) पेटेन्ट ६) जर्मनी ७) अमरोकत =) साप्ताहिक ६) सर्विस १०) रिस्ट घुड़बीड़ ५॥) मेडेना ६॥, खांदी ७॥) वेस्ट =॥) मोहन यन्त्र ६॥) घंटाघर १२०॥) प्रत्येक कारच्यान, सैकिन्ड कांटा या विज्ञानी सिहन का ♣) प्रति रुपया अधिक सब एक साथ लेने से कलाक और दर्जन पर १ इनाम में मुफ्त । खर्च अलग ।

पता—व्रजराज वाच को० जङ्गपुरा देहली न० ४ ।

मुक्त 'रतन ज्योति' युक्त नेत्र महोषधि मुक्त

मूल्य धर्मार्ध लगभग १० तोले झौषधि का २) झताथ तिर्धनों को मुक्त निरास रोगियों को रोग गये पोले दृना मूल्य धर्मार्थ देने को प्रतिज्ञा पर मुक्त धनी। मुक्त मंगाने वालों को ईश्यर शपथ खर्च डाक के लगभग ॥ =) सब से ; तिये ;ंजावंगे।

पता—ब्रज सेवकाश्रम भोगल न० ४ देहली।

विद्वत्ता के इच्छुक छात्रों को शुभग्रवसर।

श्रीस्याद्वाद महाविद्यालय काशी में—

- (१) दो ऐसे शास्त्री या तीर्थ परीक्षोत्तीर्ण छात्रों की आवश्यकता है जो कांस कालेज काशी की न्याय ब्याकरण या साहित्य की पूर्ण आचार्य परीक्षा पास करने को प्रतिक्षा करें। इन छात्रों को साथ में श्रंप्रेज़ी साहित्य व धर्मविषय भी पदना होगा।
- (२) दो ऐसे प्रेजुप्ट या अएडर प्रेजुप्ट द्वितीय भाषा संस्कृत रखनेवाले छात्री की आधश्यकता है जो इस विद्यालय में रहकर न्याय में श्रीपमेयकमलमार्च एड, अष्टसहसी और प्रमेविषय में आसर्वार्धसिद्धि, गोरमटसार व पञ्चाष्यायी में उत्तीर्ण होने की प्रतिका करें।

विशेष छात्रोंके निर्वाहार्थ विशेष छात्रहत्ति योग्यता व उनकी स्थिति के अनुसार दीजायगी।

प्रवेशेच्छुक छात्र विशेष विवरण इस विद्यालय के सुपरिन्टे छेन्ट से दर्यापन कर सकते हैं। समतिस्रास-मन्त्री ।

रेलसे माल भेजने का कायदा।

(सरल हिन्दी भाषा, एष्ट लगभग ५०% विषय मूर्ची के १८ एप्ट मूर्य ३)) बढिया कागृज पर १ दनारम की बढिया उपार्ट ।

माल-गाड़ों से भेने हुए माल आदि का मुकस्थान न होने पाने, व सुकस्थान होने पर रेलवे कम्पनी ही अमीदार समर्भी जा सके। यह वात व्यापारियों को बनाने के सिथे यह पुम्तक अब अब्ही तरह से खावित ही गयी है, इस तरह की पत्नी केवल एक पुम्तक हैं। तमाम रेलवे कम्पनियों के सुद्म युक्ति के तमाम शत-व के आपने, शती जादि जी कम्पनियों के अलगा अलगा अलगा अंग्रेज़ी हमीं में होते हैं, वे सब उस एक ही पुम्तक में बताये हैं। माल का सुकस्थान होने पर रेलवे कब अम्मेदार ही सक्यी, आदि अशों के तमाम हार्देश में क्या हार्देश में क्या सुक्ति हमी के वहत ही महत्व के पीमने भी उस में बताये हैं। विषयानुस्पर पुम्तक छे अस्थी मादिवाह हो।

त्र ११% प्रतेषकः, ११ Ѷ केमचे सम्बन्धः स्थिष्ये हैं । "हम यक्तिको बहते हैं कि यह पुरतक ध्यापारियी यो १९३व हो उपयोगी हैं "

स्वपंत्रदेवेंद्र जनगत-पीर एक्ट पेलंक, कसकत्त। १५-६६-५५ को लिखने है-"जिन व्यापारियों को २०१५ से बात पाला है। उनको रूप प्रस्तक से यहत ही मदश् मिनेगी ।"

त्रक्ष्मीकारायण बन्मीसाल भी मुन रोक, (शानवाड)२—१०० के यथ में सिख्त हैं, — "इस पुरत्य की कहां तक प्रशंस करें, इक्ष्में उपमें का के गुणी का किए। है है हमें आज तक खादा-वियों के प्रायत की ऐसी सरत एपाय की पुनत का उसी।"

श्री वैकादेश्वर समासार घरमई—''माल देशने के साथ निष्म अंग्रां। में तीने के काण्य अधिकांग्र श्रीपारियों की मुद्दूस हुद्ध की बात पर ही किये रहता एएता है, अंग रेल से माल के जैने के कार्यं टीक दीक न जानने के कारण ही व्यापारियों को निष्य रेलने कमादी की संसदें सहनी यहता है। ऐसी श्री में काले महाशय ने इस पुल्तक की प्रकाशित करके एक पड़े मानी अनाव की प्रकार करके व्यापारियों की बहुत खुनाता कर दिया है। इसमें माल में भी के स्वम्बन्ध के प्राः है। है भी विपर्णा वा विवेचन किया है, व्यापारियों के बहु काम दी प्रत्य है।

भाईर देने समय ''सीर'' का माम अयश्य ही सिहिन्दा र सीन काली हका नाल भेनाने ने नीव गीप इन्दा मार्च मान्।

> पता—छ।र॰ एन॰ काले. हाईकोर्ट वकील उन्जैन (मीट फाई॰)



विन्दी में उच्च कोटि का सर्जाव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वीपयोगी हरप्रकारके धार्मक,सामाजिक. वितिहासिक पर्व साक्षिय संबंधी उधकोट के सेव रहते हैं। तथा गरूप, कविकायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोर बन का सामान भी खुब रहता है। काग ह छवाई, सपाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट. निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पश्न रहनी है।

The state of the s



Application of the state of the



वक वर्ष का चन्दा नेजने पालों की बिल्कुल मुप्त

इस खां ही प्रशासित जगती के ALLMANT II ---

और उनका उपदेश

रम प्रथ में महाचीर सगवात की · जीवनी आधुनिक शेलीपर बड़ी ही रीवक भागा में भागना छान-बीन के साथ लिखी गरं है। यह पंच जैन अर्जन अब ही क लिये उपयोगी सावित होगा। हिन्दी-समार व तेन समात में रा मार्चे को रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

दिया गया है:--

इसकी महत्वना, उपयोगिना मन्द्रमा देखने सं स्वयं ती शात ताज पर्गा । इस वर्ष अर्मनी आदि दुर देशान्तरी के प्रमः।तः लेखकों के कुछ लेख अंग्रेजी पत्या में ती है। अधिक लिखना व्यशं है। शांत ही २ए। भेजकर बाहवीं में नाम लिखा लेना खारे, ये अन्यथा पछताना पहना। क्योंकि उपहार मंध्र व विशेषाङ्क बहुत धोडे बादी बचे हैं।

विज्ञापनदानाओं के लिये भी

प्रकाशक-राजेन्द्रकुमार जैनी, विज्ञनीर (यू॰ पी॰)

की वर्द्धमानाय नमः

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्ध का

पाचिक पत्र



अति- सापारकः --

व्यक्ति । उपसन्पादकः---

र्कंट प्रक्रम् ०,४०दि०, भी झरु शीतलपसाद जी

श्री द्वापन।प्रसाद जी

The second where where we will be the second with the second where the second will be the second with the second will be the second will be

त्र्यावश्यक प्रार्थना ।

जो पहाश्य नवस्वर सन १६२५ (निर्वाण श्रङ्क) से पहले प्राहक बन चु है थे, यानी जिनका वर्ष "महावार जयन्ता" से आरम्भ होता था उनको तथा कुछ अन्य समान प्रेमियों को गत 'बीर' का सुन्दर सचित्र विशेपांक लग भग १०० पुष्टों का उपहार धनहारीर भगवान और जनका उपदेश। सहिन बी० पी० द्वारा भेना गया है । कंबल २०० में ही 'बीर' का सुन्दर सचित्र "निवासों हुए के अतिरिक्त प्रतिपत्त "वीरए समें २ समावारों तथा उत्तरोत्तम लेखों से सुमिज्जित होकर आप की सेवा में उपस्थित होता रहेगा। हमको पूरी आशा है कि 'वीर' प्रेमी वी० पी० हुड़ाकर आसामी वर्ष में ब्राहक बने रहेगे श्लीर समाम सेवा का परिचय देकर हमारे उत्भाह की बटावेंगे नथा इस प्राप कार्य में हमारा हाथ बटावेंगे। यदि नी० पी० छुटाने में किसी प्रकार का सन्देह हो तो डिपाजेट में रख अपना प्राहक नं ० लिखकर पत्र व्यवहार कर ली निये। ~-- म काशक

ૡ**ૢૺૢ૱ ૡ**ૢૺૢૺ૱**૾ૡ**ૢૺૢૺ૱ **ૡૺૢૺૢ૱ ૡૺૢૺૢ૱ ૡ૱ૢૺૢ૱** ૡ

অ:বি৹ ঘকায়ক—

राजेन्द्रकुमार जैन रईछ, विजनीर (यू० पी०)

'वीर' पर सम्मातियां।

प्रेमी सन्जर्मी! 'बोर' के विषय में जो सवाचार पत्री च मुख २ व्यक्तियों ने अपनी सम्मितियां १कट की हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपकी 'बीर' की समाज सेवा, उपयोगिता भीर लोकवियता का ज्ञान हो सकेगा। अधिक लिखना व्यथं है।

मि० हरिसत्य भट्टाचार्य M. A. B. L जप० स० 'जिनवाणी' लिखते हैं:-

र्में "भीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता है " · · ' '' लेख बहुत लाभदायक और रोचक हैं। ' भीर" का सञ्चालत बहुत उत्तमना व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है।

नाग्द ता० २६ मई सन् २४ में लिम्बता है:--

"अयेक अङ्क में बृदि के बदले उन्नति के लक्षण दीच पड़ते हैं। ''''' लेख और कवितायें सुपाठ्य और सुसन्पादित हैं। जो धर्मजिल्लासु हैं और तासम्बन्धी वाती की छानबीन किया करते हैं। उनके लिए भी यह पत्र लाभदायक हो सकता है।"

श्रीमान् चन्नतराय जी जैन सभापति पश्पिट लिखते हैं:-

"बीर" की पूर्ण उन्त्रति होना अवश्यम्मार्था है। में उसकी पूर्ण उन्त्रति देखना चाहता हूं।"

'जैन महिलादरीं' लिखना हैं: —

"बीर के दो अडू प्रान्त हुए। तेल सुवाठ्य और विश्वापद है। म_िला में जियाँ **के लाभार्थ अच्छे** भच्छे लेज रहते हैं। यहिनों को भी प्रांदिका होगा चाहिङ ।"

यगठी भाषा का सुनम्प्यान पत्र 'बन्देनिनवस्म श्रामिसानहंमः निखना है:-

विश्वविद्यालयं की उच्च पटविश्वों से िमृणिन विद्यान् लेखक 'बीर' का सङ्<mark>य करते हैं । अव</mark> नक के लेख महत्व पूर्ण च पठनीय हैं ।'

पं० पन्नाताल जैन श्री महाबीर दि० जैन पाठशाला श्रवलनरा से लिखते हैं:---

'बीर पत्र वास्तव में एक आदर्श पत्र है इसके छेख डोम और शिहाबद होते हैं।"

ला॰ क्योमल जैन M. A. अन थीलपुर निखते हैं:---

ंबीर अ∂ने विषय का वितास्त उपयोगी सुलिखित पत्र है। इसमें मेरा लेख छएना <mark>मेरे लिए गौरब</mark> का दिवय है।"

बार शिवचग्रालाल भी जैन गर्टस जसवन्तनगर लिखने हैं:--

"लेख च कविताएँ सभी पटनीय है। हर ग्रहीने की दुसरी व १६ वी तार को 'बीर' के दर्शन हो

ज्ञान हैं। इसरी के दाद १६ व १६ के याद इसरी नारीख की एनीका रहती है।"

प्रीमयों ! यदि वाक्तव में आपको वीर से में में में हैं और उसे एक आईश एवं के सप में आप देवना जाहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता की जिए , क्य ये प्राहक वित्ये व अन्यों को यनाइये यथा-श्वय आर्थिक सहायता भी की जिए । बस यदि महाबीर के उपदेश से और परमात्मा जिन बीर से आदका थे में है तो 'थीर' को एक दम उन्नत बनायर मुद्दों की म में जान डालिस ।

> राजेन्द्रकुमार जैनी, प्रकाशक 'वीर', विननीर (यू० पौ०)



वयं २

चित्रतीर, वेशाख शुक्का = बीर सम्बत् २४५१ १ मई, सन् १६६५

अहा १३

वीरस्तवन-पञ्चक

(लंखक-श्रीयुत फुलजारीकाल ट्रेन्ड शास्त्री)

(?)

षीरों में है वीर शिरोपणि काम बीर योधा बलवान । किसने कुष्ण बास से जीते हरि हर ब्रह्मा देव महान ।। साधारस जन की क्या गिनती जिसके संग्रुख बीच महान । एस का भी अथकर कहलाये पशु तुम महावीर भेगवान ॥
(२)

चैत्र शुक्र नेगिस के शुभ दिन जनमे पश्च ज्ञान त्रयवान।
वर्ष आठमी में तुम भारे पांच ऋगुवत गुण के खान॥
भात पिता परिवार प्रता को बचन सुधा का देके दान।
सुखी किय जगवासी तुम ने ज्ञोन भानु से हरि सज्जान॥

तीस वर्ष के हुये वभू भव तब तुम लीना दीम्हाभार। परिजन के मंगरव को तनकर राज्यादिक भी करि परिदार।। •पालिस तक इद्यास्य रहे तुम चार घातिया करि संहार। समवसरन लच्मी के पति बनि भीव किये भवद्धि से पार॥

(8)

सात तथ्व पंचास्तिकाय घट् द्रव्य तथा ग्रहि यति आचार। इनका सम्यक् वरणान करिके शिव मारग दरशाया सार॥ चार ज्ञान के धारक गौतम द्वादशांग कीना विस्तार। भवि जीवों का भूम तम हरकर कीना बहु आतम उद्धार॥

(4)

कार्तिक कृष्ण श्रमावस शुभ दिन पात्रापुर उद्यान मंभार। अष्ट कर्म चक्रचुर प्रभू तुम परनी शिवकान्ना सुरूकार।। तुम को जो मन वस काया से पूजे भक्ति भाव अर्थार। 'पुष्पलाल' वह भी तुम सम बनि हिर करि कर्म निरंभवपार।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य

(मूल लेखक-प्रो० ए० चक्रवर्ती एम० ए० आई० ई० एस०)

नाइ में श्री कुरदक्ताबायं के सबंधमें कचित् प्रकाश पड़ चुका है। परन्तु प्रोन्न चक्रवनों के निम्न वर्णन से उसका विशेष परिचय प्राप्त होगा। प्रो० चक्रवनों ने पहिले ही कुन्दकुम्दाचायं जी का जीवनकाल निर्णित कर लेना आवश्यक समभा है जिस के विषय में गताइ में पाठक मान प्राप्तकर चुके हैं। और यह इसके लिये प्रमाणभूत वस्तु दिगास्वर और श्वेताश्वर प्रसावित्यों को लेते हैं। और बत्तलाते हैं कि भगवान महाबीर के उपरान्त उनकी शिष्य परम्परा + निम्नश्कार रही:— १. केवलीं गीतम उन्द्र भृति ''' १२ वर्ष सुधर्माचार्य ''' ''१२ '' जम्बस्यामी '''' ३= '' २. श्रुतकेवलीं विष्णुकुमार '''' ''१४ ''

4 Indian Antipuary Vols XX & XXI The several Pattavairs examined by it. Horrie.

		• -		8 व	B. 15	गारह	रंगी ''	न १२ ज	*****	•••••	रुट वर्ष
		अवगाजिम	······ ···ः२ २	77			ज	प्रपाट	ठकः∵		······ ३०
		गोवधन	§ §	"			-	। प्रमुख		•••••	···· \$8 "
		मद्रवादु प्रथम	₹£	**			ध	यसंग	····	••••	ईड ,,
ŧ.	दशपूर्वी⋯		······ ₹0	"			₹5	स	••••		52 ''
		ब्रोप्टिल	ร์ส	**						Ę	हुल ''४६२] ३०
		नत्त्वत्र '''''	io	"	A. X	प अ	पांगो				৽৽৽৽৽ৠয়য়
		मागसेन "	ફ⊏	17			य	શેશ્યક	ž,		······· १८ ''
		जयसेन *****	२१	77			भ	द्रवाह	្ត្រីត <u>ូ</u>	ीय	
		सिद्धार्थं ' ''''	१७	17		ৰ শ্ৰন্থ চ			_		आसीन होने के
		धृति सन 💛	, ধৃ≡	11							
		षिजय 😬 😬	१३	12						-	नाऔर विक्प
		बुजिहि 😬	२०	15						_	विभाग्यपः
		देव प्रथम …	. (8	13	परि	नयुक्त	हुए।	इन वे	र उप	भारतः	की शिष्य पर
		घरसेन 🐪	ः १८	**	FIXT	नि∓न	कोष्टरः	. मंब	नलार्ग	सई है	;
प्र	ं इर्जित बे			नयो	कं ऋः	भार	गग =ि	निव	कृत्व	कन्द	दशपरम्पराः
,		आचार्य पड का नियुक्त समय	गुहस्थ	Į	नि	आर	वाय		;	1 इ	
1	_	ागवुरसः समार	_	-				H	:	•	
	नाम	2	r r r	, pe	T X		n p	जाय दिवा	-12	hr 🖟	विशेष विवर
4		सम्यत् क्	चव मास खिल्ल	वन,	माम रिवस	स र	माम हिन्नम	F	M	मास दिवस	
			!		i		1	1	}	!	!
		\$91.5		}					<u> </u>		यह जाति के
,	भद्रबाह् हिल	मश्रित रीव	રક	30		વર	१०२९	3	ડ ફ	88 .	ब्राह्मण ध
	•					``	,)	1.	Γ
.	f	ा जिल्ला कर कर कर कर किया है। असी जा रिक्ष करें		3		_		1		1	यह जानि के
_ '	गुन्निगु न	का जुर्छ दर	24	34	•	3	६ २५	12	Ęų	٠ ي	पंचार थे ।
		37,								1 1	यह जाति के
Ę	माधनस्य प	ंअ शुः १४ २१	54	દેક	1 1	8	उ २६	A	₹€	14.	शाहथे।
]			1	ì	
ĸ	। . जिससम्बद्धाः	ा ४० ० ना.शु.१५ १५	२४ ६	! } 3~	3		i f	3	20	ं ंट ह	
		3	1		٦	-	- 4		1	1 c c	
		. 8E				1			Į	1	इनकं ५ हप≍
¥	कुरस्कर	यो घ. ८	११	33		48	/ g	4	£4	18. 31	प्राचित्रको च क्रम
	}	1				1		}			वश्चमादन, न्यः मार्डिपण्डः कः
	I			1				1		1 1	- C 100 1 1 124 3

में फ्र

यदि उपरोक ईसा सं पूर्व मधी वर्ष कुरवकुन्दा-खार्य के अध्यायं पद पर आस न होने की माना जाय नो उनकी जन्म तिथि ईसासे पूर्व अनुमानतः ५२ नी वर्ष की होती है। क्यों कि अपने जीवन की ४४ वीं वर्ष वह आचार्य पद पर नियुक्त हुए थे।

अय यह जानना है कि उनका जन्मस्थान कहां था और उनका जन्म किन अवस्थाओं में हुआ था? जनमङ्गात के चिपयमे प्रकट प्रकाश प्राप्त नहीं है। इस विषय में भी मात्र कथानकां-मौक्तिक वा लि बित-का आधार उपलब्ध है। अतुएव देखना यह है कि इन से कुछ फलदायक विवरण प्राप्त है ना नहीं । पुष्यात्रव कथाकोष में श्री कुन्दकुरदाचार्य का जीवन शास्त्रदानके लिए आदर्शरूप प्रगट किया गया है। उसका वर्णन इस प्रकार है:- भरतखण्ड के उक्षिण देश में पित्रथनद नामक प्रान्त था। इस प्राप्त के कृष्टमरई नगर में एक करमुण्ड नामक धर्मा चेत्र्य रहता था। उस की पत्नी श्रीमनी थी। उस की गउवीं का गालक एक खाला था। उस का नाम मधिवरन था। एक दिन जब वह गउवी को पास के एक बन में लिय जारहा था तो उसने अवस्में में देखा कि समग् वन के पंड् बरागिन स भस्य हो गय हैं। मात्र कुछ बीच में बचरहे हैं। और वह स्वाहरें भरे पत्ती से लड़े हुए हैं। यह देव अञ्चर्यात्वित हो वह उस स्थान को देखने के लिए स्या। बहा उसने एक महामुनि का निवास स्थान ्या और एक सन्द्रक भी जिसमें जैनागम प्रन्थ े हुव थे। यह बेबारा अनए है तो था ही पर-_{तित} स्थानमें भागम गुन्थ रखने के लिए यह ववृत्रंक घर पर ले आया । अपने मालिक प्रवित्र रथान पर उन्हें रख कर ब : नेह

प्रतिद्वस उनकी पृजा करने लगा। कुछ काल उप-गान उनके धर एक मुनि का आगमन हुआ, भनी वंध्य में बड़ी विनय से उस को आहार कराया। तब ही उक्त गाले ने भी उन भृष्टि को वह आगम गून्थ भेंट कर दिए। इन शुभक्तयों से ऋषि आंत प्रसन्न हुए और उन दोनों को उन्हों ने आशीर्षाद दिया। धर्ना वैष्य के काई सनान वहीं थी सो उन के जानवान पुत्र हो और वह पुत्र खाला ही अपने मालिक की उचित सेवा करने के लिए उन के पुत्र हो। यह हर्षपद घरना घटित हुई और जो ६त्र उन्पन्न हुआ। यह एक विकास स्वान्ताचार्य और मुनिन्द्र हुआ। यही श्री क्रद्रकुरू थे।

इस कथानक में अगाडी उनके पवित्र विहास का वर्णन है। तथाए पूर्व विदेह के थीं मंधर स्थामी के समोगरण में उन का सर्वोत्हर मनुष्य-रूप उल्लेख, इस बात की परीक्षार्थ हा चारण मुनियों के आगमन समाधिमन्त होने के कारण उनकी अविनय हुई सम्भान, चारणमुन्या का स्वेदिवन हृदय लीटना, घटना का प्रगट करना, चारणमुन्यों और थीं कुन्दकुन्द का मिलाए, और उन के साथ थीं कुन्दकुन्द का समोगरण में जाना इस्यादि बातों का पूर्ण विवरण है। उपरांत पूर्वजन्म के शास्त्रदान पल स्थरूप उनका विशद झानी होना और आचाय रूप में उन्नत जीवन दयतीय करने का उल्लेख है।

'दिगम्यर जैन पुरुषकास्य स्रत' सं प्रकाशित एक कुन्दकुन्दाचार्य स्थित में भी इन का जीवन चरित्र यणित है। इसके अनुसार कुन्दकुन्दस्थामी का जन्मस्थान मालब देश में है। उनके माता पिना के नात कुन्द श्रेप्टि और कुन्दस्ता ध्यक किए हैं। और लिखा है कि युवक कुन्दकुन्द कैनाचार्य के सुपूर्व शिक्षाप्राप्त करने हेनु कर दिए गए। इस्वपनसे ही इनने साधुवृत्तिसंग्रीम प्रदर्शित किया। इस्विष्य इन्हें दीक्षा दीगई। और यह सघ में सिम्मलित हो गए। गेव वर्णन उपरोक्त के अनुसार है।

यह दोनों हो बर्णन काल्पनिक प्रतीत होते हैं। ब्राह्म्स सो उपगम्त काल की गढ़म्स प्रतीत होती हे क्योंकि उस में कुन्टकुन्ट के नाम अपेक्षा ही उनके माना पिना के नाम मान लिए गए हैं। पिटली कथानक में जो स्थान दिए हैं उन का जानना कठिन हैं। इन कथाओं से जो निश्चसनीय बात बादन होती है वह यही है कि वे द्तिए। देश में अवर्ताणं हुए थे। अनएव इन दोनों कथाओं की उपेक्षा करके किसी तथ्यपूर्ण प्रमाण की खोज करना आवश्यक है। यह बात मानना लाज़मी है कि श्री कुन्टकुन्द द्राविड़ संघ के थे। इस सबस्थम मिल गिरनाट का वर्णन प्रमाणीक है। (See P 42 Introduction, Reportant Epigraphic Jama)

श्री कुन्दकुन्द द्राविड़ देश के थे, इस बात की पुष्टि में अन्यत्र प्रमाण पाने के लिए एक अप्रका शिष्ट मंत्र लक्षण' सम्ब थी लिकित ग्रन्थ का निम्न इलीक अनि मुल्यमय है:-

"दिक्तिण देश मल्यये हेम ग्रामे मुनिर महान्मिस्ति, एलाचार्यो नाम्ना द्राविदृग्णार्थाशो श्रीमान्।"

यह प्रनथ पेलाचार्य की एक शिष्या के लिए लिया गया था, जो ब्रह्मगश्रस से प्रसित थी। यह प्रसित शिष्या अवश्य ही शास्त्रों में पाराङ्गत थी, परम्तु हेममाम (जिस में ऐलाचार्य रहने थे) के निकट अवस्थित नीलगिरि की शिविर पर पहुंच कर यह यहां कभी हैस्ता कभी रोती और बुरी नगह चिन्लानी इत्यादि कुन्सित क्रिया करती थी। कहा जाता है कि ऐलाचार्य ने ही उसे उन्न लामा-लिनी मन्त्र हारा स्वस्थ किया था। उपरोक्त रलाक में वर्णित स्थान भी सहज में जाने जा सके हैं।

मदास प्रान्त के उत्तर और दक्षिण अर्काट जिलों को ही नाम मलयदेश है। इन्हें जिलों मे 'वृषीं घार' नामक पर्यत्रपाला फौली हुई है। कल्ल कुरिची, तिरुवन्नमस्दर् और बन्डेबाश नामक ताल्लुक ही संभवतः इस मलयदेश की मध्यभू थी । हेमब्राम, जो कि पोन्नूर का संस्कृत रूपान्तर है, चान्डेवाश के निकट ही एक प्राम है। इसी ब्राम के निकट एक छोटी सी पहाडी नीलगिरि नाम की है। इस ही पहाडी की शिविर पर आन भी ऐसाचार्य के चरण चिन्ह विराजमान हैं, जिन्हों ने यही पर तपरचरण किया था। अब भी यात्री गण वर्ष में एक बार चरणचिन्हों की पूजा करनेके निमित्त एकत्रित होते है। इसके अनिरिक्त श्लोक में पेलाचार्य 'द्राविदगणाधीश' बनलाए गए हैं। और यह अच्छी तरह प्रकट ही है कि कुम्द्रकुन्दा-चाय का ही दूसरा नाम पेलाचार्य है।

अब यहां ऐलाचार्य जैन मान्यता के अनुसार नामिल साहित्य के महान् प्रत्य 'थिरुक्कुल' के रच-यिता है। यह प्रत्य तामिल भाषा के भावीन 'बेन्ब' इसर मे रचा हुआ है। जैन मान्यता के अनुरूप मे यह प्रंथ ऐलाचार्य ने रचकर अपने शिष्य' थि हवल्लु बर को दिया था, जिन्होंने उसे मदुरा संघ में प्रच-खित किया। यह वर्णन निनात अयुक्त नहीं है। प्रयो कि 'थिरुक्कुरल' के रचयिता के सम्बन्ध में अन्य अजैन मान्यता ठीक इस का कान्तर ही प्रतीब होती है। हिन्दू मान्यता थिक्च एलुवर' को ही उस

का रचियना प्रकार करती है । उनका धर्मशैत्र बत-स्राया गया है और जाति 'बल्लुब'। और उन का जन्मन्यान धिरुमेलह या मेलाउरी अर्थात् वर्तमान में मदास का दक्षिणी भाग मैलाप्र बतलाया है । उसके मनानुसार यह प्रस्थ ऐलालसिंह की संर-क्षिता में रचा गया था। जो थिरवस्तुवर के साहित्यक सरक्षक थे। हिन्दू मान्यता का पेलाल सिंह मात्र पंछाचाय का एक रूपान्तर हो सका है। विरुवत्त्रवर का उल्लेख दोनों में है। एक मे रचिवता के रूप में और दूसरे में संघ के समक्ष विश्वित कराने वाले के रूप में । तामिलप्रम्थ 'निरुत्तरनथर्था' के अनुसार मैलाप्री में एक प्रख्यात जनमन्दिर थी नेमनाथ स्वामी का था और यह स्थान जैन सभ्यता का केन्द्र था यह बान दक्षिणभारत के साहित्य और शिलालेखीय ब्याक्यां भी सं प्रमाणित हैं। यश्चिष उक्तप्रम्यंक्ररलं का सब ही-शंब, बौद्ध, और जैन-अपनाते हैं और उस के रक्षिता के यथार्थ धर्म का भी टीक वरिस्त्र प्राप्त नहीं है.तथ.पि उस प्रस्थ की निष्पक्ष रूप में अध्ययन करने से और उन खास शब्दों पर ध्यान हेमे से जिन का व्यवहार उस के इन्हीं में क्रिया गया है एव उस में वर्णित सिद्धान्तों और धर्मीवरेश की आर विशेष लभ्य देने से बह साफ प्रकट हो जाता है कि इस बन्ध का आधारभूत 'बीनगा' का नैतिक सिद्धान्त है जो जैन धर्म की नीव है उसका सर्व व्यापारों में कृषि को ही सर्वो -कार बनाना बेळाळी बिषयक मान्यता से सन्बन्ध र बना है जिसमें अगर है कि दक्षिण भारत के जनान्द्रार नान्द्रकेदारों में यह बेजाल लोग प्रत्य-सनः उम देश के सर्व प्रथम जैन धर्मान्याची हैं।

कुठ के पेलाकार्य अ.र पेलाखार्य अधवा कुरुकुरकु का एक व्यक्ति सानने से उक्त तामिक

प्रम्थ ईसा की प्रथम शताब्दि का प्रगट होगा। और यह निवास्त असंभव नहीं है। हा॰ पोप उसे ८ वीं शताब्दि से भी उपरास्त का बतलाने हैं, किन्तु उन की इस मान्यता की पुष्टि में पर्यात पेतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं । वह अपने निजी मनोतुषु ल विश्वास के आधार कहते हैं कि एसा समुन्तत नैतिक शिक्षापूर्ण गुन्ध मात्र द्वादिह सभ्यता ४ वल पर नहीं रखा जा सका, प्रधान इस को रचन। में ईसाई धर्म का प्रभाव अवश्य पड़ा होगा, जा घहां धारम्भ के ईसाई पाद्रियों हारा लाया गया था। किन्त् जिन नैतिक शिक्षः औ और सिद्धान्तीं का उपदेश इस गुरुध में विधा हुआ है वही क्रीब २ तामिल साहित्य में फैला हुआ मिलेगा और खास कर उन गृन्धों में जिन को कि जैनियों ने स्था होगा, जैसे नलदियान 'सरवेरीचरम्''पजमोजी' 'एळाँध' इत्यादि । संस्तृतः जो नामिल साहित्य से भिन्न होगा वह कुरुल की रखना को विश्व दाविद विदान की मानने में आदाकानी नहीं करेगा, को विवेशी सम्यता से निसान्त अन्भिन्न रहा हो । अत्रप्य यह विक्यास योग्य है कि कुरल के कर्ता एंलाकार्य और प्राभन-त्रय के रखियता कुन्दकुन्द एक ही व्यक्ति थे और वह इंसा की प्रथम शताब्दि के प्रारम्भ में हु० थे।

कुरल के वेलाचाय और कुन्कुन्दाचार्य को एक व्यक्ति मागने से एक अन्य पेतिहासिक ध्या स्या उपस्थित तीनी हैं। यह प्रमाणित है कि 'शील-प्यतीकरम' और । मिन्मेखेलह । मामक नामिल प्रस्थी से कुरल प्राचीन हैं। प्रथम प्रस्थ देंगा के सेर महागा 'सेन गुसुबन संग्न' के लघुश्चाना 'स्लम्माविद्याल' । शा लिखा गमा था। और दूसरा प्रस्थ, जो प्रथम प्रस्थ की कथा का शेष भाग है, 'इसमोक्दि' के समकालीन और मिश्र कुलबर्निकन सक्तनार होता रचित है। देवी भेटिंग (तील प्र दीकरम) की प्रतिष्ठा में सिहल के गजवाह प्रथम विद्यमान थे। महावंश के अनुसार उन का राज्य सभवतः ११३ है। दुआ प्रकट हाता है। अन रव कुटल इस से प्राचीन होना चाहिए। इस से एला-वार्ष अथवा कुन्दकुन्दाचार्य के पूर्व प्रमाणित समय की पुष्ट होती है।

इत भव कथानक और साहित्य सर्वाभी त्या-क्यार्थों से यह भी प्रकट होता है कि कुन्दकुत्दा सार्थ दाचिह देश के थे। और यह द्राधिद संघ के मायक थे, यब ंधक भाषा से अधिक में पाराङ्गत धे। 'द्राविड संघ' में जो 'द्राविड' शब्द ब्यव-इत है उस का कोई खास संबंध दक्षिण भारत के उन जैमों से अवश्य ही प्रकट होता है. जा प्राचीन तामिल माहित्व में 'बेल्लाल' संझा सं उल्लिखित है और जो पूर्ण रूप में 'कोस्लक्षुतम्' में अर्थात 'महिसा धर्म' के पालक थे। साथ ही इस की पुष्टि इस और प्रचलित 'इाबिड-म्राह्मण' शब्द से भी होती है, जो 'गौड-ब्राह्मणीं; की समानता में निवानन निरामिष भोजी हैं। यह अच्छी नगह मानी हुई यात है कि दक्षिण भारत के बाह्यण बद्यपि यह में पश होमते हैं परन्तु अपने दैनिक जीवन में जो पूर्ण शाकाहारी रहते हैं वह मात्र दिख्यि भारत में पूर्व प्रचलित जैन सभ्यता के अशांश को पैशिकसम्पत्ति रूप में प्राप्त करने के कारज है।

द्विण भारत के प्राचीन राजवंश कर केल और पांड्य थे। दक्षिण भारत के सम्बन्ध में यह पूर्णक्रय में स्वीकृत मत है कि पांड्य जैनधर्माज्यायी और जैन धार के साधक थे। उन्हों ने अपनी अ

धर्मका स्ता की स्वी शताब्दि में अपार और सम्बन्दर के शेष धर्म का प्रकड़ार करने पर म्याग किया था। यह भी कि होर जेनी धा शील-धार्रीकरम' नामक एक अन्य तामिल साहित्य प्रस्थ सं प्रसाणित है, जिसका रखयिना एक जैन चितान था जो तब के चेर राजा (जो सिहल के गजनातु के समकालान थे (के लघमाता थे। बाल मां जैन सरक्षक कहलाने के अधिकारी हैं। यद्यपि अन्त में उनका लश्यम्भ शेव धर्म सं होग्रधा था। यह नोर्नो ही राज्य संभवतः सम्राट अशोक के समय में भी बात थे। तीनों ही राज्यों में राज्य भाषा भी संभवतः तामिल थी। अत्तव क्या यह माना जासका है कि श्री कुन्दक्रव भी इन्हीं तीनों राज्यों में से किसी एक में रहे थे ? उपरोक्त िवरण इस बातको मानने में सहायक है, परन्त मार्ग में एक रोडा अवश्य ही आ पड़ता है।

श्री कुल्डकुन्द के प्रन्थ प्राकृत भाषा के हैं। तिस्त पर 'प्राभृत प्रय' प्रश्वास्तिकाय, प्रवचनसार और समयसार—के टीकांकार बतलाते हैं कि यह प्रन्थ कुंडकुन्टा खार्य ने अपने राज्य शिष्य शिक्कुमार महा-राज के लिये लिखे थे। यह शिक्कुमार महाभाज कीन थे और इन्होंने कहां राज्य किया था इस यात में टीकांक र मीन हैं। इसलिए मात्र अनुमान से मानना पड़ेगा कि यह शिवकुमार महाराज अवश्य ही जेन थे और इनके राज्य की भाषा प्राइत थी। साथ ही वह कहीं दक्षिण देश मेथे क्योंकि भी कुद-कुन्द उनके धर्माचार्य थे। यह नाम सीनों ही वंशीं— चेर, चोल और पड़िय की वंशायलीमें नहीं मिलता है, इसके अतिरिक्त यह भी विधित नहीं है कि इनवंशीं क किसी राजा के राज्य का भाषा प्राइत रही ही।

इस विषय में अब कुछ श्रधिक लिखने के पहिले सि० के० बी० पाठक की त्याच्या को निराकरण काता आवश्यक है। (The Indian Antiquary, Vol. XIV, 1885 page 15.) में वह लिखते हैं कि कुत्रकुत्र प्रस्यात प्रथक चांऔं में एक थे। इनके उस रचितं प्रदेश प्राभृतसार, समयसार, रयणसार और द्वाप्रशास्त्रवेक्षा बताः जाने हैं। यह सब जैन प्राप्तन में लिखे हा हैं। अभिनय पम्प से पहिले रह हुए # बीकाकार बालचढ़ प्राभतसार की ज़ीस में कडते हैं कि इंडिक्ट श्वार्य पद्मतन्दी के नाम से भी वि-क्यान थे और वह शिवकुमीर महाराज के गुरु थ। में ((अ॰ पाठक) इन एदागाज को अचीन करंग-बेतीय श्री विजय शिवम्गश महाराज ही बवला उद्गा। क्योंकि इन के सबय म जैनी तिप्रन्थ और इवेतपटों में विभक्त होगए थ और श्री कुन्दकुन्द अपने बच्चनसारमें श्वेतपर्टी पर आक्रमण करते हैं। जहां वह फहते हैं कि स्त्रियों को वस्त्रधारण करना इसल्ये भावश्यक है कि वह निवर्ण को प्राप्त नही हो सकती:-"विक्विकामायाथम्बा तेसम् ना निज्ञानम्।" इसरी खास बात इन के प्रन्थों से यह प्रशाद होती है कि इन के समय में जैनभर्म का प्रकार इस ओर दिश दिशान्तरों में नहीं हुआ था और इस ओर के मज़ुष्य विष्णु की पुजा करते थे। जैसे कि समयसार के निम्न श्लोक से प्रगट हैं।

अयहा पर असिनव परूप से पूर्व के टीकाकार बालकार में भी भी कुरुद्कुस्द और पदानस्ती को एक ही व्यक्ति वत-स्वाया है। अतपत्र हिंदी विश्वकोष भाग ४ एक्ट ६६ – ६६ में अन्हें भिन्न व्यक्ति बनवाने की जीर मंजेन किया है, वह इस से भी वाधिन होता है। वस्तुनः भी कुरुद्कुष्ट् के ही एका-वार्ष स्वादि ४ उपनाम थे। वह संब ''लोग समणाणमेर्च सिद्धत्तं पडिण दिस्सदि विसेसाँ। लोगम्भ कुणदि विण्डु समणाणं अपन्तो कुणदि ॥'ः

अर्थात्—"लोगो के मंत से यदि कोई विष्णुं हैवादि यति सम्बन्धी जीवों को करता है। तथा अमण व सुनियों के मत से यदि कोई आत्मा छः प्रकार कायों को करता है। ऐसा मानने पर लोगों के और मुनियों के मत म कोई फर्क नहीं दीखता।" इन कारणों वश और जंग पदावालयों में जो हैथान उनको प्राप्त है उसके शतुमार तथापि इसलिये भी कि इनके प्रथ घरवरर और पेस्र के जैनविद्वानी हारा इनने प्रार्थान समभे जाते हैं कि यह अब मिलते भी नहीं, में (मि० पाठक) मानता हूं कि कुंद-कुदाखायं प्रार्थान कदम्ब महाराज शिवमुगंश के समकालीन थे।"

मि॰ के० बी० पाउक ने जो कारण दिए हैं यह ठीक हैं। कुन्दकुद श्वेतास्वर प्रतिसेद से उपरास्त के हैं क्योंकि वह सद्रवाहु प्रथम के समय हुआ माना जाता है और संसवता श्रीकुन्दकुन्द के समय में जन साधारण वैष्णव धर्म की वेदान्तिक मान्यता का पालम करते थे। परन्तु इस पर भी इन ब्वा-स्थानों से यह प्रमाणित नहीं होता कि शिवकुमार महाराज ही कदस्व राजा शिवमृगंश वर्मा थे। "मैसूर और कुगं" नामक पुक्तक में (पूष्ट २६)

× श्रवत्य इंग्भी कुट्टकुट्टाचार्य के पूर्व हो भी अ्रुत-केवली अष्ट्रवाहु श्राचार्य के समय में रवेतास्वर-दिगम्बर मत-भेद खड़ा हो गया था और उसका जड़ वहीं से पड़ गई थी, परंतु वनका पूर्ण प्रथकत्व ईस्स की प्रथम शताब्द में ही हुआ। था। यथा-

'ख्यासे वीरमसये किक्य पायश्स ध्वया पर कम । संक्रिके वक्तीण कल्परणां भेवड़ी संबंधि ११ क्षेप स्वास् मि० लुस्ति शाइस कर्ने हैं कि "मेस्र के पश्चिमं भाग पर कदम्बों ने ईसा की तीसरी से छटी शता-बिर् तक राज्य किया था।" किर यह ज्ञात नहीं कि अथवा कदम्ब प्राप्ति भाषा से परिचित थे? इन बाती का ध्यान रखने हुए थी कुन्दकुन्द के निष्य शबकुनार महाराज की अन्यत्र देखना होगा।

कोंचा पुरुष् पत्लव राज्यवंश की राजधानी भी। परल में ने 'यान्डमण्डलम्' पर और तेलुग् देग के कृष्णानदी के तदतक की भूमि पर राज्य किया था। थीन्डमण्डलम् अथवा धीरहेन्द् उस देश का नाम था। जिल में वांमी पेकारी का पूर्वट समिलित था अर्थात् विलिण अर्थाट में विशिण ग्रेजार और मेंबलीर में उत्तर पंजार । तथापि घाटा के पूर्वीय भाग का भी जिल्ह में समावेश था। यह दश कितनेक 'नदुओं' में विभक्त था और 'नद्' किननेक 'कोएटोमी' में विसाजित थ। यह देश शिमनो का भाग कितनेक प्रत्यान द्राविद् विद्वान् जैसे काल का कर्ता, महान् नामिल कवेशवरी क्ष बई, नळपंत्रब का रखिया प्रांत्र प्रांत्री र्ज्याति धीपडेमण्डलम् मे ही अवतीलं हुए श्रेत धां। डीन्डुकी राजधानी काञ्चीपुरुस् इस कारण अवस्य हो दक्षिण में बिद्या का एक केन्द्र स होगा। देग के विविध प्रान्त सं छाद्रत्य अ १६३ **, ही बहु**रे अध्यवनार्क सण्हारे । वज्य १४ ४० सन बहां पाला साउद इंदिस में (१३१ मा) एकक मार्श्व एकतिहा थे । १४४, गर्म । पक्ती में से एक प्रश्ना है है । इस विभिन्न को अधार ११६० । १५० । १५० । ध्यात व लोगझा किए। के । व रा त्रा ७ तस्यात की प्रतिज्ञाकर का थी कि बन्म का पाह्यण थी

शस्त्र प्रहर्ण कर के एक राज्यवंश की स्थापितकर सक्ता है। इसी के फलक्ष कदम्बवंश का अस्मि-स्व हुआ। इस प्रकार पल्लव राजधानी कोन्ची-पुरम् की सत्कीति ईसा की द्वितीय शतास्त्रि में चहुंदिश व्यास अवश्य हो गई था। कोन्सीसरम्के राजा लोग जब विद्या प्रेमी थे तब यह आवश्यक है कि उन्हों ने पार्मिक प्राह्मार्थीं-जैन, हिन्दू, बीद का भी उने जना दी ही। इन शास्त्राधी में सम्मि लियं होने के कारण उनके निजी धर्म पर भी अख्या प्रभाव पड़ा होगा । देखा की पारंभिक शताब्दियों में एक हुमां के धर्मका खाइन करना विजेब प्रचलित या । विविध धर्मी के महान धानार्य देल प्रदेश में राजा और प्रजा को निज अर्थान्यायी बनाने मुमण करने थे। इस विषय में जैन इतिहास से द्वात होता है कि समंत्रवह स्वामी कश्तीपुरम् गए थे। यहां उन्होंने शिवकोटो महाराज को क्षेत्र भमोनुयायी बनाया था। पर्वात वही राजासमः न्तभद्र क शिष्य और उत्तराधिकारी हुए थे। इस के उपरान्त करीय दक्षे शताब्दि से अकला भी आए थे और उनमें बीही की शास्त्रार्थ में प्रशासन कर के यें इस गंजा हिमशीतल को जिल खबेरन मन्या था। इस लिए यह अपयुक्त नहीं है, 🎁 ह हंसा की अधन शता दिन्स में कोंचा पुरुष के पतनी .ब राज्ञ ेन बाह भंगस्य थे अखवा स्वयं जैनी। शे । ६ . निपतेश शिलालेकाष ध्वाणी से शह भी अपूर्वक उन का **राज्य भाषा शहत था।** ' ो ः प्राप्त के नाम भे जो 'बेहवात वे ार कर कि उस सारत के देखिल के ल**ड़े कार** : का भ तुन्। या शस्तिय भारत प्रशास को छो छ कर संपर्ध एक्टन हैं है। सन्तर्थ की अपना एक

पेंसी प्राकृत है जो साहित्यपाली के सदृश विदित होती है,परंतु उस में कितनेक विशेषनाएँ और मेंद भी हैं। डोo ब्हलर (Epr. Indica. Vol. I. p. 2) कहते हैं कि वह जीन आर महाराष्ट्री से बनिस्वत पार्ली और प्राचीन लेखोंके अधिक साद्रश्यता रखती है। यह दानपत्र कोन्जी प्रमुक्त पल्लवन्प शिवस्क-न्द्रवर्मा द्वारा प्रणयित है। विशेष इस मे यह अधि कता है कि यह मथरा के जैन शिलालेखों से विशेष समानता रखती है। इस दानपत्र और मधुरा के केल में जो पहिले 'सिखम' शब्द है वह इन के जैनत्व का प्रमाणिक संकेत है। सब से महत्वपूर्ण तो शिवस्कन्द शब्द है जो शिवकुमार का रूपान्तर है। इस में संशय नहीं कि यही नाम आन्ध्रवंश में भी मिलता है। मि॰ इबरायल दोनों वंशी में पर-स्पर सम्बन्ध प्रकट करते हैं। यह कहते हैं कि पल्लव वंश के शिवस्कन्द्वमां (युवमहाराज) शिवस्क्रन्द सतकर्णी के पौत्र हिं और उन का नाम भी उनके विनामह के अनुसार है। परन्तु इस सं यहां कुछ प्योजन नहीं है। यहां तो मात्र यही देख-ना है कि पल्लब्बंश में एक राजा शिवस्कन्द और शिवकमार महाराज नाम के भी थे। एक दसरे दानपत्र में वह युवराजकप में उल्लिखित हैं। यह माम अइतरीति में कुमार महाराज के सदश है। इस्रक्रिय यह बिल्कुल सभव है कि यही कों जीपुरुम के राजा शिवस्कत्द अथवा इनके कोई पूर्वज श्री कुन्दकुन्द के समकालीन और शिष्य थे। यह मा-न्यता श्री कुंद्कुंद के संवन्ध में विदित अन्य बाती भी भी सहमत होती है। कुन्दकुंद अथवा पलाचार्य धवश्य ही धोण्डैमंण्डलम् में हुए थे और सोही ंद्वाविद्धसंघ की गदी पाटलीपुत्र भी थे।ग्हैमग्डलम का एक मगर था।

इस सम्बन्ध में यह मानना मिध्या हैं कि पल्लब राज्यवंश विदेश-ईरानी-थे। में ० साहब इन का निराकरण सप्रमाण रूप में करते हैं। फिर बनलाने हैं कि क्या यह संभव नहीं है कि थोन्डेमण्डलम् के अधियासियों और मौयों के उत्तराधिकारी आन्धी या आन्ध्रमृत्यों में कोई निकट संबन्ध हो? तामिल में शहद 'शोन्डु' के अर्थ 'सेवा' के हैं। 'धोएडर' के अर्थ संवक के होंगे। इसलिए वह संस्कृत 'आन्ध्र् मृत्य' का नामिल रूपान्तर माना जा सकता है। इस लिए पल्लब अथवा थोण्डर उन आन्ध्रों की ही एक शाखा थी जो दक्षिण में यस गण थे और उस मृमि को आन्ध्रस व्याह संबन्ध से अथवा निज अधिकाररूप प्राप्त की थी। एल्लब के सहण ही आन्ध्रमृत्य भी उन्ननशील सभ्य थे यह विशेष गुक्ति संगत और प्रमाणित की जा सकती है।

पल्टबों के विषय में उल्लेखमात्र श्री कुन्द्रकुन्द्र के जीवन का विशेष परिचय प्राप्त करने के लिए करना पड़ा है। इस धकार यह युक्तिसगत है कि श्री कुन्द्रकुन्द्राचार्य ने 'प्राभृतत्रय' एक शिवकुमार महाराज के लिए लिखे थे, जो सम्भवतः पल्लवश के राजा शिव स्कन्द वर्मा थे।

प्रो० सकवर्ती के उक्त विवेचन से श्री कुंतकुदा-नायं के स्वयं और उनके शिष्य शिषकुमार महा-राज के निषय में ऐति दासिक परिचय ग्राम होजाता है। परन्तु एक अन्य विद्वान डा० थी० शेषामिरि राउ एम० ए० इत्यादि (Jam Gozette Vol. XVIII p. 90) इस मान्यता से सहमत नहीं है। वह युक्त प्रमाणों से कलिंगदेश के एल ब्राम्य कवंब वणीय राजा शिर्याक को श्री कुन्दकुन्द के शिष्य शिषकुमार महाराज सतलाते हैं। परन्तु इनके विषय में कुछ भी पेतिहासिक प्रकाश प्राप्त नहीं है। मात्र इन के दां लेख डा० साहब को मिले हैं, जिन से इन के चित्रय में विशय झान प्राप्त नहीं होता। अत्यव जब तक और अधिक प्रकाश इनके जीवन पर नहीं पड़े तबनक प्रो० साहब की मान्यता उचित जंचती है।

जा हो इस समन्न वर्णन से यह प्रमाणित है कि जन कथात्रोंका वर्णन यथार्थ है। उसमें वर्णित शिव कुमार महाराज एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। चाहे वे पल्लववंशीय शिवस्कन्द हों अथवा आन्ध्-कद्य

वंशीय शिवांक । साथ ही कुन्दकुदावार्य के सम्बंध में वास्तविक झान भी हमको प्राप्त होजाता है। वह दिगम्बराम्नाय के एक महान् आवार्य थे और दक्षिण देश में ईसा की प्रथम शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में अवर्तार्ण हो उन्होंने इस पुण्यमयी मारतमही को पवित्र किया था। उन्होंने अपने ग्रंथ एक राजा के लिए बाज से सभवतः १८५० वर्ष पहिले लिखे ये। दिगम्बर सप्पदाय में उनके तास्विक ग्रंथ सर्व प्राचीन हैं यही कारण है कि उनकी प्रतिष्ठा जैन समाज में इननी वर्षों चढ़ी है। इबिशम् ।

भँवर में नैय्या

जाति की नेट्या है में अधार।

लगादां इसे वैधुश्रो पार ॥

हेग. दुराग्रह, दलवंदी का छाया है तृकान। अमड़े घोर विपति के बादल, हुई बुद्धि हैरान॥

> हत्ता भानु मेम का तार । लगादो इसे बंधुओं पार ॥

मध्य सुधारकवृत्द्, खींचते- इसको अपनी ओर! और सभ्य पंडितसमात्र लेती स्वओर अकओर!!

> जर्जरित हुए युगल पतवार । लगा दो इसे वंधुको पार ॥

श्रापस में लड़ बंधु कर रहे हैं, स्वशक्ति का हास। किंचित बढ़ती नहीं अग्रसर होता व्यर्थ प्रयास ॥

> हुए मञ्जना यद में मनबार। लगादो इसे वंधुओ पार॥

मेगरज्तु देंथि हेत्ह् संगठित, वन कर के सुग वीर। संयुक्त बैल नवशांका वड़ाकर, इसे खगाडों तीर ॥

> क्रील दे। जैत धर्म जयकार। ज्ञागादे। इसे बंधुओं पार॥

> > — 'बत्सल'

दिगम्बर जैन समाज में अनेक्य क्यों ?



पाउँकी को विदित है कि आज कर दि॰ जैन समाज संधर्म सीमा का अनेक्य फैटा ह्या है। यो तो अनैक्य दोर्घ काल से चला आ रहा है परन्तु अब इस अर्गेक्य में अतीव भयानक क्षा धारण किया है। कोई किसी को धर्मा जेंही, चर्न जुल, धर्मपुल्य यनलाते हैं । कोई किसी की ब्राजान गीति में क्षमय की आवश्यकतानुसार क्षामा परिवर्षन उपस्थित करने पर नास्तिक के नाम से प्रशास्त्रा है। कोई किसी को स्वार्था ,धर्म का कैहेर ए बर्श के नाम की बुहाई देनेवाला, भाग की काम भारते बाला, प्रकट करता है। आज कार परिकार जैन समाचार पत्र मी इसी प्रकार की पार्श तहीं ज से भरे मिलते हैं। सभा के अधिवेत्राते वे मार बीट को नीवन आजानी है। खार्र्यातः आवकल इस समाज में अर्केक्य का खुर हीर दौरा है। यह अनेक्य क्यों है ? और यह अनैवय क्यों नहीं भिटता? यह ऐसे प्रश्न हैं कि जित पर प्रत्येक जैनी को विचार फरने की आध-श्यकता है। मेरे विश्वार में इस भनेका के कारण

पुराने व नयं विचारों की मुठ अंड है। च'कि इस दि॰ कैन समाज में पुराने विचार अधिकतर प्र महाशयंके हैं और नये विवार अधिकलर श्रेमे जी विश्व महादयों के हैं। इसिलये इस समाज में दो पारदी-पंडित दल व बाब दल के नाम से वियत है। गई हैं। इन दोनी टली का अनेक्य दूर नहीं होता, दिन च दिन बहुता चला जाता है। यह अनेक्य क्यों दूर वहीं होता इस बात के जान में की भावश्यकता है। हाल में इन पंडित महा-शया की ओर स यह बात प्रगट की गई है कि इस असंक्य के दा त होने का कारण यह है कि हमारे और विवक्षी दल के मध्य केवल मनभेट ही नहीं है, प्रत्युत उद्देश्य सेव् है। और उद्देश्य सेव् घेसी घरत है कि जब तक वह दूर न ही अनेक्य द्दा नहीं होत्यकता। अय देखता यह है कि अथवा वास्तव में इन दलों के मध्य उद्देश्य मेद है या नहीं। क्या यथार्थ में पहित महोद्यों का उर्देश्य कुछ और है और अबंबी विश्व महोत्यों का कुछ और ! मेरे निचार में ऐसा कदापि नहीं है और

पंडित व बाबू महोदय चया, मेरी राथ में से केरी मात्र का उद्देश्य धर्म प्रचार व समाज सुधार है। पहित महोदय भी यही बाउते हैं कि संसार में जैन धर्म का प्रचार हो और जैन समाज की बिगडी हुई दशा अच्छी है। अ गरेजी विक मही-दयों भी भी यही दार्टिक इच्छा है कि संसार में जैत्धमं का इंका बजे और जैन समाज की अधी-दशा सुधर जाते। अत्यव इन दीनी दली के उद्दे-श्य में भेद बतलाना केवल एक भ्रम है । यह तो सम्भव है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के उपाय दोती दल के व्यक्ति अलग अलग समक्ते हो। पंडित महोदय इस उद्देश्य की पूर्ति होना किसी एक उवाय से समकतेही। और बाद महोद्य इस उहें-इप की सफलता किसी अन्य मार्ग हारा विचारते हां। यहां मत भेद कहलाता है। उद्देश्य भेद हमका माम नहीं है। उदाहरण के तौर पर लीजिये। धमं प्रचार एक उद्दंश्य है, इस की सिद्धि कं विभिन्न उपाय व नियम हो सकते हैं। किसी इल का विचार हो कि हाथ के लिये हुये ग्रन्मी से धर्मका काफी प्रचार हो सका है। दूसरे दल की राय हो कि उस जमाने में केवल हाथ के छिले प्रन्थों से धर्म का प्रचार नहीं हो सका, द्रत्युत धर्म का प्रचार आजफल एक अच्छे यहे वैसान पर करने के लिये शाखों के छपने की वही भावश्यका है। बस यही मनभंद कहनायगा। बहुंश्यभेद नहीं है। उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थान् वर्म प्रचार है। और इस सत्येव के कारण समाज में भने क्य नहीं होना चाहिये। एक दल को दुसरे का दुश्मन नहीं यन जाना चाहिये। न प्रक दल को दूसरे के लिये सभ्यता के विरुद्ध

शब्दों को व्यवहार म लाना कारिये। प्रस्युन शांति के साथ वैठकर स्थितियर विचार करना चाहिये और घडुमत से जो कुछ निर्णंथ हो उस पर अमल करना चाहिये । मेरी दयक्तिगत राय यह है कि इस जमाने में धर्म का प्रचार विना छाये की सहायना के नहीं हो सकता। और में स्थाल करता हं कि अधिकतर लोगों की खाहे से पंहित हों अथवा अंग्रेजी विश्वयह ही राय है। चुनांचे इस समय पडित महाशय ही शास्त्रों के उल्थे कर कर के प्रकाशित करा रहे हैं। किर नहीं मालम गत चार मास के भीतर ही पडित महोदयों की राय शास्त्र छपने के विरुद्ध क्यों हो गई है ! बढ़े तमाशे की बात है कि एक और तो पंडित महोदय जैन समाजकी संख्या की कमी का इलाज धर्म का प्रचार चतला रहे हैं-कहते हैं कि समाज की सक्या को बढ़ाने के लिये धर्म का प्रचार खब जार के साथ करना चाहिये-परन्त् दुसरी और धम प्रचार का सब से बड़ा जा उपाय शायों को प्रकाशित कराना है उसमें रोडा अरकाते हैं। क्या एडिन महोदय यह नहीं समभने हैं कि ससार में जा बौद्ध धर्म, इंसाईधर्म श्रादि का इस प्रकार श्रांधक प्रचार हो रहा है उसकी बजह यह ही है कि उनके धर्म प्रन्य हजारों व लायों की सल्या में छपे हये मौजूद हैं। और वे लोग अपनी धार्मिक व्रक्तकों का विविध भाषाओं में अनुवादित करा-कर प्रकाशित कर रहे हैं। और श्रीमान् स्वर्गीय पंडित गोपालहास जी खुद व अवतक उनकी शिय्य व मित्र मण्डली शास्त्र छपने की पूरी सम-र्धक थी। परन्तु अब जो पं० गोपाल दास जी की शिष्य व मित्र मण्डली की राय शास्त्र छपने के

िक्य हुई है इस का क्या कारण है ? इसका कारण कियाय वसकारी के पक्ष के और कुछ माळा नहीं होता। और इसका भाव यह है कि धर्साय अवसी पार्टी को मजरून करने की गर्ज से किसो मुक्य व्यक्ति की हमद्दी व खुशन्दी मिनात प्राप्त करने के लिये कोई बपाय भी खाद्रे बर डेपाय उनकी असली राय और सरीको अमल को विरुद्ध ही क्यों म हो अख-ति गर कर सके हैं। परन्य यह किया इब पंडित महोदयीं को शोभनीक नहीं है। इनकी तो लगा-आहित की तरफ रूपाल करना चाहिये। हिन्दी जैन गत्र में दोनों दली के मध्य उड़े ह्य भेद बत-झाकर निस्न की तीन बानों का दो गरोपण अंबेजी शिक्ष महोदयों पर लगाया गया है। (१) विधवा-बिबाह (२) जानिभेद का लोप (३) छत छात का सेग्प। अब विचार योग्य यह है कि उनका यह दोषारायण कहां तक उपयुक्त है।

विश्वा विवाह — जहां तक मै देखताहुं आज कल दि० जैन समाल में कोई आन्दोलन विश्वया विश्वाह के प्रचार का नहीं होएहा है। न को व्यक्ति विश्वयादियाद जारी करनेकी कोशिश कर रहा है। और मेरे ख्याल में ता इस वि० जैन समात में तो शायद्ती कोई व्यक्ति ऐसा हो कि जो विश्वयाधियाह की द्वारी अपना श्रव्छों प्रथा लगाल करता हो। हां चालविवाह सुव्याह अनमेलविवाह कत्याविक्य आदि दुरीनियां की बजह से जो विश्वयाओं की उत्पक्ति बद्धारी और अधोद्या दूहि आती है उसकी देखकर कलिया सज्जतीका विश्वार मजबूरन कभी २ विश्ववाविश्वह की ओर खला जाता है। सो इस का

महीं है। प्रत्युत इसका इलाज है बालबिबाह-सूख-विवाह अनमेलविवाह-कन्याधिकय शादि को बन्द करमा। यदि यह करीतियां वस्त्र हो अंधनी सी फिर किसी को विधवाविवाह की ओर खयास दौशाने या उसका जिकर करने का अवसर ही नहीं रहेगा है मैं हायं विधवाबिवाह का विरोधी है। इसकी एक अमीव नीच व हानिकर्प्रया समभता हं और इस के खंडनमें एक छोटासा 2ैक्ट भी लिख चुका है। परंत यदि कोई व्यक्ति बालबिवाह सुद्ध सिवाह-अनमेल विवाह-कल्यविक्य आदि कारीतियाँसे विध-बाओं की बदली हुई संख्या और समाज हारा इन कुरीतियो का बहिष्कार न होते देखकर तथा विश्व बाओं की अधम दःखद दशा और उनके आधार सं द्यार पाप होते देख कर नेक तियती से इन बुटिवी को मंदने के लिये थिधवा विश्वाह का जिन्न करें ती में उस व्यति का धर्मद्रोही कहना, उसका दुश्मन होता. उसको गालियां देकर समाज में द्वेष फैलाना उसके साथ उमन शीत का व्यवहार करना पक्षन्त्र मही कढ़ेगा। क्योंकि स जानता है कि इस प्रकार के व्यवहार सं उसके विचार नहां बदल सकते। धटिक उसके जिसार तो जिन कारणों से उसके इदय में विष्य सिंग का खबाल आया है उन कारणी को दूर करने और मुलायमियत व प्रम के साथ यशोचित तर्कणाओं से उसके विकास को वाधित करने से ही चदल सकते हैं। कुछ काल से कति-पय पण्डितगण विधवाविवाह का हथियार हाथ में लेकर पूज्य अ० शीतलश्रसाद जी के बुरी नरह से पीछे पड़े हैं। कहते हैं कि यह विश्वयाश्विवाह जा-हते हैं। विभवायियाद का प्रसार करते हैं। म् जी कहते हैं कि मैंने विधनाविबाह मण्डन का न कभी

की है लेख लिया और न किसी दूसरे का लिखा हुआ '**जैनमित्र' में छापा।** परन्तु यह लोग उनके इस कहने को नहीं मानने और करने हैं कि एर कि. एक **जी क**मी विश्ववधिका मध्यस्थ रह सेल र १ जिल सते इसलिये वे तकर विधाननियास के पक्षपाना है। बाद ! क्या विदिया स्याय हैं! यदि कोई वर्ष क ''दिवर जगत कर्ना है'' इस सिवास्त के संगडत में केन्न नहीं लिय सकता तो कह दिया जाय कि यह इस सिद्धारत का पश्रपानी है! अभी हाल में बगाबर में बंद जी के विरुद्ध प्रस्ताव पंडितों ने पास कराया है कि वेएक मास के भीतर विधवाविवाह को खंडन प्रकट करदे बरग उनके नामके साथ'ब्ह्मचारी'राष्ट्र कदाया रक्वा न जाय! सुता है कि दि॰ जैन समाज की सैनवाल आदि कई जातियों में विश्ववाविवाह होता है। किर इसकी यजह नहीं मालूम होता कि चि बबाचिवाह खंडन न लियने पर ब्र० शांतलप्रसाद जी का ब्र० पर छोतने के लिये तो प्रस्ताव पास कराया परम्तु इन जातियों के विरुद्ध विधवा-षिवाह धरह करने के अभिप्राय से कोई प्रस्ताव पास नहीं कराया। वया यह अनावी बात नहीं है और इसका कारण वर्जी से ध्यक्तिगत हैं प न समका जाय तो क्या समका जाय ? इस के अतिरिक्त क्या हम यह काइकर कि अमुक व्यक्ति विवयावि गह का पश्चपानी ह-इसल्ये वह धमंत्रष्ट य भर्मशून्य है उसका बायकार करो,उसके नाम के साथ अनुक पर्वी सूचक शब्दमत लगाओ विधवा विवाह का रोक सकत हैं ? हरगिजनहीं रोक सकते! द्वाय मध्या दमननीति कभी सफल महीं होती। दितिहास इस बान का साक्षी है कि जहां कही किसी बात के दबाने के लिये दमन अथवा जबरदस्ती

का मार्ग ज्योकार किया गया उत्पन्न यह यान दवी लगीं है दि कि उससे उनेक्सा हुई है। सन्दर्भ विश्ववा विधाह राष्ट्र ने का उचित उपाय यही है कि जिल काणीं से लोगों का स्वयाल विधवायिबाह की क्षार ज्ञाना है जन कारणों को दूर किया जाय। अब बालविवाह वृद्धविवाह अनमेलविवाह कम्याधिकथ आदि अर्थातियों की धोर मुलायमियत व लापरवाही की दृष्टि रखने से काम नहीं बलेगत। अब सो आप का अवने इदय में यह पक्का विश्वास धारण कर लेना चाहियं कि यह कुरीतियां जुरुर जैन समाज में घुन की तरह लगी **दुई हैं उसकी राण्या को** धटा रही है और इनके रोकने से कुद्धर औन संख्या में वृद्धि हासती है। इस प्रकार का विश्वास करके इन कुरीतियों की जड़ उन्नाइने में हमें लग जाना चाहिये। यदि आप ऐसा कर सकेंगे तो विश्वका विवाद असी नाच प्रथा अरू रुकी रहेगी। वरन के बल दूसरों पर दोषारोपण कर उनकी निस्दा कर नेस के।ई फायदा नहीं! इससे तो समाज में हो ब ब अनेक्य फेलता भीर समाज का शक्ति घटती है और कोई फल नहीं किकलता । अताव विश्ववा विवाह का दे।पाराएण दूसरी पर लगाता सथार्थ नहीं है।

जातिभेद का लोप इसरा दोवरोपण जो किसिय नदशिक्षत बंधुओं पर लगाया जाता है वह यह है कि यह लोग जातिभेद का लोप करना खाइते हैं। परन्तु यह बात भी मिध्या है। जाति भेदको उड़ाना कोई नहीं खाहता। और न उस तज बीज से जो कित्यय सक्जन उपस्थित कर रहे हैं जातिभेद उड़ती सका है। और यह तज्जी जयह है कि जैन समाज के बेश्यवर्ण में जो खंडेल बाल, अम

वाल भादि जातियां हैं उनमें वरस्पर विचाह संबंध होने लगे। बात यह है कि जैनसमाज की संख्या घडती जारही है और कुछ जातियों की संख्या घटते घटते बहुत ही कम रहगई है। सुना है पेसी जातियाँ भो हैं कि जिनकी संख्या कम होते २ इससमय सौसे भी कम रहगई है कि जिससे उनका अपनी जाति में भिषाः संबंध के लिये क्षेत्र नहीं रहा। और यदि उनका विचाह संबन्ध दूसरी जातियों में न हुआ तो थांडे ही दिनमें उन जानियों का नाम बुनियां से निद जायगा जिससे जैनसमाजको संख्या और अधिक कम हो जायगी। अत्यव इन जातियों को काल के गालसे चचाने के लिये उपजानियों में बिवाइ संउन्धकी सिकारश की जाती है कि जिस को कतियय पहितगण धर्म च आगम विरुद्ध च बातिनेद की उड़ाने बाला यतलाते हैं। और इस तज्बीज के पेश करने वालों पर धर्म द्रोही, भूष्ट आदि नामों की बौछार करते हैं। परन्त् जैनगृत्यों में विवाह संगंध विभिन्त वर्णों में पाया जाता है। श्रुनांचे भगवान् महाबीर के समय में ही राजा श्रेणिक ने इन्द्रवृत्त सेठ की कन्यासे विवाह किया। और इस ही संबंध से अभय कुमार नामका मोश गामी पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसस प्रवट है कि उस ज्ञमाने में इस प्रकारके विवाह अनुचित्र और नीचे मकार का नहीं समका जाता था, वसने उस सं मेरश्रगामी सन्तान उत्पन्न नहीं हो सन्ती थी। अन एव जब जैन धर्म के अनुआर अन्य रर्ण का विचास सबंध धमं व आगम विरुद्ध नहीं है तो फिर एक ही वर्ण की उपवातियों के विवाह संबंध धर्म व आगम विरद्ध किस तरह हो सका है। हमारे ख़वाल में ते। बढ़तर है। यदि यह पंडिसनण इस्तेन

की धर्मद्रीही, धर्म मृष्ट कहने के बनाब सभवं कुमार के माता पिता के विवाह संबंध की ही मिथ्या प्रमाणित करें। और न उपजातियाँ में पर-स्पर विवाह संगंध से जाति भेद उड़ सका है। क्यों कि प्रथम ता जब कि प्राचीन कालमें विभिन्त वर्णों में परस्पर विवाह संबन्ध होने से वर्ण भेद नहीं मिरता ता अब एक ही वर्ण की उपकातियाँ में विवाद संबन्ध से जाति भेद किस तरह मिट जायगा ? दूसरे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि विचाह संबन्ध एक गोत्र में नहीं होते हैं और जिन्न गोवी की शादी से गोत्रभेद नहीं बड़ता तो फिर मिल बातियों की शादी सं जातिभेंद क्यों उड़ जायगा ! जिस तरह गोयलगोत्र के लड़के व गर्ग गोत्र की लड़की की शादी से सन्तान का गोवल गोत्र स्था-चित होता है उसी तरह खडेलवाल सडके स अम बाल लड़की की शादी से सन्तान की खंडलवाल काति कायम रहेगी। भतएव यह सहना कि इस प्रकार के विवाहसंबन्ध से जा तमेंद का लोप हों जायमा, मिथ्या है। इसलिये पंडित महोदयों को बह बात खुव हृदयंड्रम कर लेना चाहिये कि कनि पय नृतन विचार वाले अथवा अंग्रेजी विश्व जो जैन समाज की कनियय मन्ती हुई जा नयी की भीत के पड़ते से बचाने, जैनसमाज की घटनी को रीकने जैनसमाज को सन्तित व शरीर की हुएपुष्ट बनाने और जेन समाज में परस्पर मेल मिसाप ब हमदर्वी बढ़ाने के लिये उपजातियों में परस्पर विवाहलंबः ध करने की नजवीज उपस्थित कर रहे हैं उससं उन का उद्देश्य केर्द्र काम धर्म व आगम विरुद्ध करते अधना जातिभेद की उड़ाने की नहीं है और न इससे पास्तव में तातिमेद उस ही सकता है।

छूतद्यात का लोप-तीसरा दोषारोपण पडितगण इन सज्जनों पर यह करते हैं कि यह लोग क्रुतछान को उड़ाना भंगी समारोंके साथ सानपान प्रारंभ करना चाहते हैं। मेर न्याल में यह दोषा-रायण ठीक नहीं है। दिगम्बर जैन समाज में काई व्यक्ति यह नहीं कहता कि भंगी चमारें के साथ स्वान पान प्रारंभ कर दिया जाय। केवल उन के साय हद सं ज्यादा खिली हुई नफरन व इंप की बर्ताव का निषंध किया जाना है। वास्तव में छन छान का सम्बन्ध खान पान की शुद्धता से हैं। जा ध्यक्ति मैला उठाता हो।या गुलीच रहता हो या जिसका खान पान मांसादिक अशुद्ध पदार्थीका हो या जिसके कर्म बहुत नीच ही उसकी स्पश की हुई बस्तुको खाने स खाने वाले के दिल में पक प्रकार की आकलता उत्पन्त होती है कि जिससे यह भ .ने धर्मका साधन डीक तौरस नहीं कर सका। अत स्व हृदय में आकृत्यता की आनेसे रोकन के लियं यह छूत छात का नियम रक्ला गया है। परत् इसनियम को इस प्रकार सीमास अधिक खीचना ठीक पहीं है कि दूसरे की शायासे, दूसरे के एक सदक पर अपने बराबर चलने से धर्म सब होता रुपाल लिया जाय, अथवा यदि कोई भगी वा चमार का बच्चा किसी गड़हें या नालेमें गिरता हो तो हम भारती उच्च जातिके अभिमान में उसको एकए कर गिरमें से बचाना अपनी शान के खिलाफ सम्प्रेत । अथवा अपनी उच्चजाति होने के कारण उनकी शिका देना उनसे मांस महिरादि भक्तण, द्रष्टकर्म प्रकाने के लिये धर्मडणदेश देना पसंद न करें। उनकी आस्मिक उम्मति में सदायता देने से परहेज करें इत्यादि । अत्रव्य इस सनाज में कतिश्य नवीन विचार वाले या अंगरेजी विज्ञ महोदय कुतछान को इस सीमातक व इस अर्थमें ही हटाने को कहते हैं। सान पान आदि एक करने को नहीं कहते। यद्यपि बेलगांच के अधिबेशन में साफ ग्रह प्रकर किया जा चुका है कि इस प्रस्ताव से यह मेतलब कदापि नहीं है कि भंगी चमारों के साथ सानपान अथवा बेटीव्यवहार प्रारंभ किया जाय । परंत् फिर भी कतियय पडितगण यह कहे चले जाते हैं कि यह लीग भंगी चमारों के साथ बान पान प्रागंभ करना चाहते हैं। भंगी चमारों को मन्दिरों में ले जाना चाहते। जहां तक मेरा ख्याल है मन्दिर में कोई छंजाना नहीं चाहते हैं। परन्तु पहिछे जमाने में इस भाव से कि यह होग भगवान की मृति का दशन कर सकें मदिर के शिखर पर बाहर की ओर मूर्तीयां हुआ करती थी । संद है कि बह यद्यपि अब बन्द करदी गई है। उसको फिर प्रारंभ करदेना चाहिये।

दूसरं यह नियम आजकल इस भारतवर्ष में राज्यनैतिक इए को भी लिये हुये हैं। कहा जाता है कि सात करोड़ मतुष्यों के साथ अळूतवने का ऐसा नामुनासिब व्यवहार किया जाता है कि जिससे वे अपने को समग् जाति से बिलकुल प्रथक समकते हैं: परन्तु जबतक समस्त जाति में सगटन न हो और न हमर्द्री हो भारत को स्वतन्त्रता मिलना अतीव दुष्कर है। इस लिए इस संबन्ध का आन्दोलन जार शोर के साथ सार देशमें फैला हुआ है। अब विचारणीय विषय यह है कि जैन समाज को इस आन्दोलन के प्रत अपनी दृष्टि कैसी रखना चाहिये? क्या जैत समाज को पूर्ण एक से इस आन्दोलन का विशेष करना मुनासिब है? क्या

यह विरोध करते में सकल हो सकती है और विरोध करने की अवस्था में उस की क्या दशा होने को सम्भावना हैं? मेरा राय में जैनसमाज के "उदे एस देश ज्यापी आन्दोलन का पूर्णतथा विरोध करमा दुरम्देशी के खिलाफ व सक्त गृळवी है। बाब प्रथम ही अकृत जातियों से जिस शीति में ब क्षिस इइ तक नपारत व अमेम का बर्ताव किया बाता है। यह जैनधर्म के निश्चय मार्ग के निता-न्त चिरुद्ध है। दूसरे जैन समाज की संख्या यहन कम है और दिन च दिन कम होतो जा रही है। विस पर जैन समाज में न संगठन है. न पेसा. आरोटिक थ मानसिक चल है कि जिस से यह बिसी देशमापी बान्दोलन का सफलता पूर्वक विरोध कर सके। अतुवस यदि क्षेत्र समाज इस देशकारी बारशेलनका विरोध करेगी तो सफलता हो इर किनार फल यह होगा कि जैन समाज का द्वनियां मेहाह्य और जैनक्षमं की अवभावना होर्सा। श्रीर उस को सख्या अधिक बेग के साथ घटने क्रमेगी। तथापि संमव है कि इनका अस्तित्व ही मंबद में भाजाय। और भारतवर्ष की स्वतंत्रना प्राप्त होने के उपरान्त यदि कुछ जैनसमाज शेव इही तो उम की दक्षा क्या होगी यह खयाल की बा सकी है। उस समय उसकी दशा वही होगी कि जो एक विपश्नी की हुआ करती है। और उस के प्रकार पही मिलेंगे जो एक विरोधीको मिला करते हैं। अवएव इन सब बातों का ध्यान कर के जैन समाज के लिये यह ही बुद्धिमत्ता और र्रार्च हर्शिता है कि वह अपने खान पान के ज्यावहारिक शबता को स्थिर रखने हुए इस देश:याणी आस्त्री सन में मुख्यकर जब कि यह जैन धर्म के उदार

निश्चय मार्ग के विरुद्ध नहीं है कुछ सहायक ही हो, उस का विरोध म करें।

अतएव उपयुं िल्लिक कारणों के बहा कति एयं पंडितमण जो किन्ही नवीन विचार वाले अथवां अंग्रेजी विज्ञ महोदयों पर विधवा विवाह जारी करने, जातभेद व छूत छात उड़ाने का दोवारोपण कर के उनको धर्म भूष्ट आदि नमीं से पुकारते हैं वह डीक नहीं है। और यह देल कर कतिएय नवीन विचार धाले अथवा अंग्रेजी विज्ञ महोदय जो इन पण्डित महाशयों को स्वर्णी, धर्म का ठेके दार आदि कहने हैं घह भी ठीक नहीं है। के ऐभी वार्ला से समाज में अने त्र्य फैन कर समाज की शक्ति बदती है। पंडित पहोदयों की हुन्य केंग्र कालके अनुसार

क हम विद्वान सेसक के स्पष्ट रिवेचन क विदे रिकीय भागारी हैं। दीनो पक्षा के मुल्लिने को इस भार ध्यान हेनड वादिये । बरतुनः भाषमा एकानानी में सामाजिक शक्ति दर्व कास हो रहा है। इसती बात को अध्यय किए के परिवाह के श्रीयृत अवरे महादय को जापसी निवटेश कराने के किके नियुक्त किया था । परम्तु धनके पर्व ग्रह्म प्रतिस्थित समाज वेहाओं के प्रयम्न शुलह कराने के लिये केवल कमिय्य एंडिसी की चींगा चींगी के कारण कभी तक अनुकत रहे हैं। वेशक सर्वे भेष्ठ मार्ग यही है कि दिपालगी का ऋषम मचावे विका नाम विन्तु बास् दल की अपयुक्त शस्त्री और उनके कृत्र कृत्यों का मंदा फोड़ करने में समय यह नहीं करना चाहिये पाय का घड़ा स्वर्ध भरकर फुट आध्यता । परन्तु भोली कनमा अग्रमी पढ़ मानी है। इसकिए इस देखको मक्तम् इस कोर क्यान देना पहला है। फिर भी इस करी कहेंसे कि इस कराहे में शक्ति की लगाना पुरुषयोज करणा है, इसका बार-वस में विवरण ही करवा है। इस वारक्वित सबसीते के जिए परित्र पार्टी की यत्रबुद करदेना चर्रावे । वह सब

कुद सुधार को धर्म व आगम विरुद्ध नहीं समेक्षना बाहिये। कैसे बाजकर दि॰ जैनसमाज में ब्रत्येक्शवर्ष आहे इस काम रूपया पूजा प्रति फाओं में कर्च हो जाता है। हजारी, लाजों रपये काडके दाधी घोडां,दीवारी को सोने से दकने और छड़ू व दावती में कर्च हो जाते हैं। परन्तु इसको सब सममहार स्वीकार करते हैं कि बाज कल इन कार्रवार्र्यों सं कुछ मधिक जैन धर्म की प्रमावना. जैनधर्म व समाजको उन्नति नहीं होती । इन कार्यों को देख कर दनियां बस यहही कह कर कि क्षेत्री बहुत धर्ना हैं खुपहोजाती है। जैन धर्म की धिशेषता स जैन सिखान्त की छाप उनके दिली पर मही बैठता । आजकर जरूरत इस बातकी है कि अधिकतर रुपया शिक्षा प्रचार तथा जैन धर्म के किद्धान्त के प्रचारम कर्च किया जाय। तेन प्रधी के सरल एवं विविध भाषाओं में अनुवाद करा २ कर सहस्रों की संस्था में प्रकट करना चहिये। जैन तस्वीं का प्रसार सम्यार में देवर आदि हरा किया जाय । उक्कांदि की जीन संस्थायें स्थापन की खांग कि उहां से परमंदन चारिक एवं ही किक शिक्षा प्राप्त का के विद्यार्थी निकल और पूजा विन क्रुओं के इलुकों में भी खंदर छुत्र की बमक रमक की दीसकता दें कि जब क्यायदक्त के शान्ति इच्छक निष्यच व्यक्ति क्रोर सहासमा के पूराने कर्णधार इस और कुछ क्रमध न्यव करके वाक्रनांवक किन्ति का पता खगावें। धभी सक रूप कार प्रथम दिवा के कतिक्य महीर में एवं सेटी (भी) अबरे सरका) ने किये हैं. परत्तु शेव प्रान्त बासी तम शा देश रहे हैं । यह बीक नहां । सब को मिलकर दून मगड़े का स्थायोचित करत कराना चाहिये।

को कम करके जैन सुभाषितों (Mottos) की रौनक बाजार में दिखाई आहा | और पूजा प्रतिन्डाओं के काजारी में कैशन, अराधश, पेश धशरत के समान की दुकानों की बजाय नैनिक व बात्मिक उक्कति और देशोशित में सहायक पुस्तकों आदि की दुकाने लगवाई जांय। परन्तु सेद यह है कि यदि कोई व्यक्ति उपरोक्त कारणी और उद्दे श्योंत्रश्च कुछ काठ के दाथी घोड़ी के विदद्ध लिखदेता है तो कतिपय पंडित गण उसको नास्तिक के नामके शकारते हैं। किर बतलाइये काम बले तो कैसे बले। और समाजसे अनै स्प दूर होतो किस सरह से दूर हो ? में इस वात को मानने के लिये तैयार है कि नवीन विचारवाली या अग्रेजीविकों में के अधिकांश धर्म-शान से अज्ञानकार हैं। इसलिये संभव है कि किसी समय कोई व्यक्ति कुछ धर्म के चिरुद्ध भी कह वैदें। परन्तु इसमें कसूर किसका है। मेरी रायमें यह बसुर समाज का ही है कि उसने अंग्रेजी शिक्षण के छाथ धार्मिक शिक्षा का प्रवन्ध नहीं किया है। कोई मार्ग ऐसा न सिरजा कि जिससे स्कूलों व कालिजों में पहने वाले जैनी विद्यार्थी अपने धर्म की शिक्षा बहुक कर सकें। २२० दानवीर सेठ माणिक बन्द भी ने यांडिङ्गहाउसेज का मार्ग सिरखा। परन्तु बही क-ठिनाई यह है कि कतिएय पंडितगण जैन बोर्डिक हाउसों और म्कूलों की निदा करते हैं। उनमें दान देने को पाप बनलाते हैं। यदि उनमें कोई इटि है तो इसको प्रेमपूर्वक दूर करानी चाहिये न कि उन का विरोध करना। हाल में मैंने किसी पंडिससाहस का किया हुआ किसी पत्र में पटा था कि बोडिक ्रा उसे त में तो भामिक शिक्षा कंत्रस्त एक वर्ष में क्रस घंटे (शायह २॥ वटें लिया था) कडिनक सेन्द्री

जाती है। परन्त में तो बैन बोर्डिक गटस मेरठ के अन्मत्र से इसको नहीं मुद्ध-सक्ता। यद्यपि इस वार्डिङ्गहाउस में फंड वृष्होंने के कारण धर्माध्यापक का प्रयम्ध नहीं है परन्त तो भी यहां शाखसभा. पुत्रन, धार्मिक व्याख्यान आहि के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा औसतन करीव एक मास में आह दिवस के दी जाती रही है। और जैन बालबांच ४ भाग, केंद्राले, दृश्यसंत्रह, जैनसिद्धान्तप्रयेशिका पढाये जाकर लिखिन पर्चो द्वारा परीक्षायें होती उही हैं। इसके अविशिक्त मांवन यह तो अस्य अस है कि बीनी लहको अबे नी न पर्टे । श्रंब्रेजी पदना तो जमाने की भाषश्कताओं की अपेक्षा आवश्यक एवं लाजमी है। बस अब आप यह पलन्द करने हैं कि यह अंप्रजी पढ २ कर अपने धर्म को छोडने जायं या यह पसन्द करने हैं कि जैनी बने वहें। पहिली बात काई पसन्द नहीं करेगा। अतएव जब दमरी बात इष्ट व समाजहित की है तो जरूरी है कि उनके लिये

घार्मिक शिक्षा का प्रवन्ध किया जाय। और जैने बोर्डिक्स इस्तेज की बुराई कक्कर के यदि उनमें कोई बृद्धि वास्तव में है तो उसको ब्रेसपूर्वक दूर कराया जाय।

अव में अन्त में नवीन विचार वाले व अंग्रेजी विज्ञ महोद्यां से भी यह जरूर कहूंगा कि वे हुए। कर के कतिएय एि उन साहिबों को स्वार्थी धर्मका ठेके ट्रार-आदि लिखना छोड़ है। सहस शीलता स्वीकार करें। यदि एडितएण आपका धर्महांही धर्म भ्रष्ट आदि कहते हैं तो कहने टीटिये। कुछ परवा न की जिये। कहां तक कहेंगे। एक टिन अवश्य समभेंगे। फलतः इस दिगम्बर जैन समाज से अनेक्य एवं कलह दूर होकर अवश्य सुख व शांति का राज्य होगा। एसी मेरी हार्दिक भावना है।

समाज में शान्ति का अभिलाषी— ऋषभदास भैन बी० ए०

हिन्दी जैन गजट से प्रश्न

दिन्दी जैनगज़र अहु २६ ता० ६ अवेल १६२। में "वर्ण और जाति दोनों मिन्स हैं" शोर्षक लेख एड़ने पा मेरे हृदय में निन्न प्रश्न उत्पत्न हुये हैं। कृषा कर के लेखक महाशय अथवा अन्य विदास उत्तर दें:—

- ्र (१) क्या कोई एक जाति भिन्न २ वर्णों में पाई जानी है? यदि पाई जानी है तो बह कीनसी जाति है?
 - (२) क्या मनबाल, अंडेलवाल, भेसवाल,

पद्मावतीपुरवाल आदि जातियां क्षत्री अथवा ब्राह्मण वणां में भी पार्ड जाती हैं ? यदि पार्ड क्षाती हैं तो वे कहां आबाद हैं ?

(३) एक जाति के भिन्न २ धर्णवाली में धिवाइ संबंध हो सक्ता है ? ऐसा उल्लेख किस जैन शास्त्र में है ? और उदाहरस भी दीजिये । क किस एक जाति के (उस जाति का नाम लिखिये) दो क्यों के मनुष्यों में विवाह संबंध हुआ ?

> उत्तराभिलावीः-ऋषमश्रास जैत, वक्षीस्र मेरद्र ।



ममाज सेवक कैमे मिनें ?

जीन समाज की ओर गंभीर ट्रव्टियान करने से हुँ चिटित होता है कि समाजीत्थान के कार्य करने के लिये जिनने कार्यकर्ताओं की आवश्वका है उतने प्राप्त नहीं होते ! तिस पर जो कुछ प्राप्त हैं उनसे समाज सेवा का उतना कार्य नहीं होता जितना कि होना चाहिये ! इस में कारण यही है कि ऐसे कार्यकर्ता साजिक कार्य करने के लिये पूर्ण स्वतन्त्र नहीं हैं। वे अपनी जान में भरसक प्रयान जार्योत्यान के लिये करते हैं और उन की सराहनीय निःस्वार्ध सेवा से कभी २ मध्र फल भी पान्त होते हैं। परन्तु उनको अपने गाई-हि वक जीवन सर्वधी अन्य आवश्यका की भी पूर्ति करनी पहली है। इस हेत् व इच्छा होते हुये भी अपनी सारी शक्ति समाज के लिये अमर्पित नहीं कर सके और यह प्रसिद्ध ही है कि मनुष्य दो कार्य एक साथ नहीं कर सका ! भगवत का भजन और शैतान की सेवा एक साथ नहीं हो सकी। यही कारण है कि समाज अवतक उस . उन्नत अवस्थाको नहीं पहुंचा जिस को कि उसके थेडोसी पहुंच चुके हैं! यहां तक कि उस का एक मोरत ब्यापी संगठन नहीं हो पाया है, जिस के कारण कोई भी संस्था ऐसी नहीं है जो समस्त जैनियों की भारतवर्षीय संस्था कहळानेका दास्त विक हक रखती हो। ऐसी अवस्थामें समाजसेव-कों की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि जैब शिक्षालयों स निकलने वाले नन्युवकीं से इस और अनिवार्यस्य सं सहायता ली जात्रे । जैन समाज के गतजीवन के पन्ने उलटने से हमें हान हीता है कि समाजने इन विद्यालयों की स्वापना समाज सेवकों को उत्पन्न करने के लिये ही की थी ! इस पर स्वय उन विद्याधियों को ज्यान देना चाहिये जो समाज की सहायता से विचाध्ययन करते हैं। उसमें उन्हण होने के लिए यह आवंड्यक है कि वह इस बात के लिये प्रगटतः तैयार हो जावें कि असुक समय तक हम अवैत्रिक रूप में समाज का कार्य करेंगे जिस तरह हम विद्यालय में अन-पेड पढ़ते और रहते थे। सब विद्यालयों के प्रवन्धकों का कर्त्र होना चाहिये कि वह ऐसे छात्रों से पहिले ही प्रमाण पत्र लिखवालें कि एक अथवा दो वर्ष तक यह समाज की सेवा अवैतानिक रूप में करेंगे। इसके अतिरिक्त एक "संबक्त संध" की स्थापना की जाये, जिसमें निःस्वार्थ समाज सेवी सम्मिलित हो और वे नव्युवक हो जो अल्प वेतन (जीवन-निर्वाह हेतु) लेकर समाज के लिये र्तियार हो। ऐसा करने से उन खोगी के समझ गृहर में के अरण पोषण का प्रश्न हल्का हो जावेगा और पे अधिक स्वतंत्रता पूर्वक समाज सेवा का कार्य कर सकेंगे हेपसे ही संघके इन स्वयं संघकों हारा एक भारतःयापीं संगठन सुगमता पूर्वक हो सकेगा, जिसके बिना समाजात्थान होना नितान्त औरास है। समाज हितेषी सेठी और वेताओं की ध्यान देना चाहियं।

जिन वाणी क प्रति सच्ची विनय।

भाजकल जिस प्रकार जैन समाज अन्य बातो में लोक पीटना ही अपना गौरव समभनी है उस ही प्रकार पवित्र जिनमुखादुभूत सर्वहितकारिणी बाली की विनय मात्र सदिवत् अर्घ अचन में ही पुरित स्वयाल करती है अथवा शास्त्री की अलमा-रियों में बन्द रखकर ही उसका महत्व प्रकट होता अञ्चल करती है। यह अवश्य ही एक सच्चे जिन बाजी अक के लिये दृःखद स्थिति है। हां, इतना अवश्य है कि कतिएय जिनभक्तों के अधिकल अम से समाज में से वह अन्धविश्वास और मृहता कम हो गयी है और लोग जिनवाणी के दिव्य गीरव की सर्वत्र स्याप्त करने के लिये कार्य क्षेत्र में अवतीण मा हो चुके हैं, परम्तु अब भी रुद्धि के अन्धमकी की कपा से उस और वह संगठित प्रयास नहीं हुआ है जिससे उसका धारतिक महत्व उचित नीलि से प्रगट होता ! कतिएय लोगों के दिलों में अब मी सुद्धित शास्त्रों के प्रति कटुभाव हैं ! यहां सक कि उनको लिखित शास्त्रों से कम महत्व का समकते हैं। परन्त इसमें मुख्य कारण उन लोगों का असली धर्मज्ञान से नावाकिफयत ही कहा जा सका है। उनकी द्रष्टि बाह्य-वेप पर ही अनुकी हुई है। अभ्यन्तर की ओर उनका द्वव्टि पात ही

नहीं होता ! घरन लिखित और मृद्रित दोनों ही शास्त्र हमारे लिये समान हितकारी हैं। दुःच तो उन विद्वानी और भीमानी की विवश्नण बुद्धि पर होता है जो इस उन्तरशीख जक्रकों में भी १६ वीं शताब्दि के राग अलावते हैं ! इस समय जकरत है कि एक संगठित इस सं जिल्हाणी उद्यार का काय किया जाय उसके स्थान में मुक्ति-मन्धी का बिरोध करना कहां की बुद्धिमला है ? फिर जरा अपने प्रातन पर्यों के क्रायों पर भी तो हिण्ड डालिये ! हमको मालम है कि पहिले हान्दर्शांग वाणी गृहशिष्य परंपरा सं मीलिक कप में रितन थी। जब अधिगण की समग्णशक्ति श्रीण होने लगो नर उन्होंने उसके प्रति सच्चे विनयभाव रम्बरक उसको लिविवड कर लिया ! इस समय लेखन सामियो ताह और भोत पत्र थे । उपरान्त अप कागज की बाहुल्यता हुई तथ उन्होंने उस पर लिखना प्रारम्भ कर दिया। यही नहीं समयान-स्तर उन्होंने उसको भाषा भी बदली थी । अर्थ-माराधी से संस्कृत भी हुई और फिर अपभंश, कनडी, नामिल आदि कप भी उसके हुये थे। इस से प्रत्यक्ष प्रकट है कि हमारे पूर्वाचार समयाज्ञक स साधनी द्वारा हमेशा जिनवाणी का प्रचार करते रहे हैं। मारत में काग् ह फटे प्राने विश्व हो आदि मिलन पराधों से बनता था यह भी प्रकट है जैसा कि आज भी उसका निर्माण अन्य बस्तुओं के साध उन से भी होता है। ऐसी अवस्था में यदि पुना-बार्य यही ख्याल कर लेते कि शास्त्री को लिपि-बद्ध कर देंगे तो उनकी अविनय होने का हर रहेगा और किर कागज मलिन प्रार्थ है इसलिये शास्त्रों की कागत स्वाही का दव वेकर रक्षित

करना उच्युक्तनहीं! सां किर आज कहां से हमका इस इाइरांग बाणों के दर्शन होते? इसिक्यं प्रत्येक के नी का बद कर्तव्य निर्णाल हो जाता है कि यह कि कि को समान दृष्टि से वेखें। तथा दोनों के ही प्रचार में सहायक हो। जिन्दाणी उद्धार के लिये आवश्यक हैं कि एक ''सेन्ट्रूल जैन प्रदेश और प्रवल्धिशना हाउस'' स्थापन किया जाय! उसके हारा प्रत्येक भाषा में जैन प्रभ्य विशेष विहानों की हेस रेख में प्रकृत ही। तथा सेवन कहा को जीविन रखने के लिये

षह आवश्यक है कि इस्येक स्थान के शास्त्र मंद्रारों का सोज कराई जावे और वहां जो अलभ्य उत्हर्ण प्रस्थ हीं उनकी प्रतिलिधि रखां कर एक मुख्यस्थान पर "वृद्ध जीन पुष्तकालय" स्थापित कर विशाज मान कराय जावें। वास्तविक कार्य करने का तो यहां उपाय है और सच्ची विनय इस ही में हैं। यहन उसके प्रचार कार्य में बाधा डालना अविनय करना ही है। पत्र सस्पाइकों भीर विद्वानों को ध्वान हेना चाहिये।

—उ० सं**०**



श्री श्रहिच्छत्र का मेला व पाठशाला

सी विश्वित्र तीर्थक्षेत्र का वार्षिक मेला आनट पूर्वक समाप्त होगया इस वर्ष जनसम्या ६०० थी। श्रीमन् पूज्य रोलक पत्तालाल जी महाराज, याचा मगीरथदास जी वर्णी, थी० सम्पतराय जी वैदि-स्टर, प० बनारसीदास सहारपुर, प० रचुनाथदास सरनऊ, प० जिनेश्वरदास विलराम, कैलासचल्ड नहतौर व प० हरदेवद्य जी शर्मा अमरोहा, सेठ होसाराम जी भित्रानी, वा० मुजीलाल आदि महा-स्थ पश्चारे थे विद्वल् मण्डली के प्रधारने से अन्त्री प्रमावना रही।श्री पाश्वेनाथ दि० जैन पाठशाला के धर्म की भूसे हुए रामनगर निवासियों में पून: पर्म के मचारार्थ स्थापित हुई है। पाठशाला मैं २५ विद्यार्थी है। ४ जैन खडलवाल और २१ अन्य झाझण, अविय, बैज्य हैं सबको धर्मिक य लौकिक शिक्षा हो जाती है। पाठशाला में पर विप्यादत्त जी धर्मिक य हिन्दी के शिक्षक हैं और एक मास्टर उर्दू पढ़ाता है। पाठशाला में ६ विद्यार्थियों को भोजन को सहायता भी ही जाती है। पाठशाला का मासिक हथ्य ८०) के है। पाठशाला के मन्त्री भी० रतनलाल जी भी० एम० सी० पकील (मन्त्री भाव दि० जैन परिषद्) बिजनौर हैं पाठशालां की परीक्षा ली गई। कल बहुत ही अच्छा रहा। ६००) छः सौ के लगभग चन्दा पाठशालां के लिये दोगया, जिसमें भीगान लान नग्या गी

रईस विल्सी बालों ने पाठताला के ४ विद्या-ियंगों को भोजनव्यय जो ३०) मासिक के लग-मग होगा एक विषे तक देने का वजन दिया। आशा है यदि पांठशाला का कार्य इसी प्रकार बालू रहा तो रामनगरप्रामवासी एक जैन हो जानेंगे। समाज और विशेषकर दातारों से प्रार्थना है कि हो समय २ पर पाठताला का निरीक्षण करते रहें और सहायता करते रहें।

> नंमीचन्द्र जैन उपमंत्री अदिक्षंत्र तीर्थ मुरादाबाद

— जैन संबक्त संप्रश्ने निश्चध किया है कि
बह जैन समाज में बर्णातर्गन जानियों में पारस्परिक विधाद सम्बन्ध प्रचलित करें इसके प्रबंध की
सुगमना के किये उन सब मात पिताओं से, जिनके
यहां विवाद योग्य पुत्र या पुत्र। हो और जो इस
प्रकार के सम्बन्ध से सहमत हो, निबेटन करना
साइना है कि वो अपने सेवकों के संघ से सहायता
ले और उससे पत्र व्यवहार धारंभ करवे। विधाद
सोम्य बर कन्या के विषय में योग्यना, वय गोत्र
आदि पूर्ण विधरण लिखने की कृषा कर जिससे
बह संघ उचिन साहायना कर सके।

मंत्री-जैनसंतक संघण पहाडी धीरज देहली

-महाबीर जी के सेवा कार्य श्री जैन कुमार समा श्रागरा इस वर्ष महाबीर जयन्तो उत्सय के जिये अनिशय श्रेष महाबीर जी में अपने अनेक सामासदी को लेकर पहुंची थी, वहां मन्दिर जी में और बाहर सेवा के अनेक कार्य बड़ी मुस्तेदी से किए। कई खोई हुई बीजें उन के मालिकों को दी। कुछ बीकों के मालिक का पता न लगने पर मंडार में जमा की गई। रियासत के नाजिम साहव ने सभा की सेवा को सहवं स्वीकार किया और उसे सहायता दी। इस कार्य के अध्यक्ष सभा के उत्साही कार्यकर्ता वाबू लाल जी गोयक मादि थे। -मनी

--जैन महिला आश्रम देहली, आश्रम में इस वक १२ लड़कियों से ६ महीने में १८ सड़कियां हो गई हैं । लड़कियां ज्यादातर जिला मैनपुरी के इलाके से आई हैं। जिन में २ विश्ववाप हैं और शेव कुआंरी। और लड़कियां आने की भी उम्मीद है।

इस वार्षिक परीक्षा मे१= लड़कियों में से ९७ लड़कियां वैटीं। जिन में से १४ पास हुईं और ६ फोल।

आश्रम का काम काला अच्छा जल रहा है। दाया अभी तक पहिली कमेटी के अधिकारियों से नहीं मिला है। जिसकी यश्वह स आश्रम का मकान अभी तक तयार नहीं हो सका और आश्रम को ६०) माइवार वि.रार्का जैरवार होता पह रहा है।

निवेदक-ब्रुगाबरसिंह जैन एम० डी० मन्त्री
—श्री जैन कुमार सभा खागर। की नरफ
से इस वप श्री महाबीर जयन्त्री उत्सय श्रातिशय
खेत्र महावार जी मंश्री घर दि० ब्रु० शीतलश्रसात्
जी के सभापित व मं बड़ा शान शीसत व अपूर्व स्त सलता के साथ मनाया गया। अनेक प्रतिस्टित
बिद्धान श्रीमान उपस्थित थे। अनेक महत्वशाली
स्थास्यान हुत्रे। जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव
पड़ा। समाज के लिए उपयोगी ४ प्रक्ताव भी
पास हुत्रे उपस्थित लगभग ५००-६०० की थी।

—श्री चेत्तक पन्नातात जी महाराज का केशलांच विलसी जिला बदायूं में जेट घदी प तक होने वाला है निश्चित मिती की श्रामामी स्वका की जावेगी । धर्मक्रेमियों को एधार कर अवश्य काम उठाना चाहिये।

---कानपुर का मुसलमान पत्र 'अलवरीद' बड़ी अयंकर समय सुनाता है। बड़ कहता है कि काँच (जासीन-डिल्हा) में पहिली अर्प स को पुलिस के हेड मुहरिंद सैयदहुसेन की ६ वर्ष की कत्या स्रापना हो गई। तन्त्राश काने पर, ईसाईयों के कब्रिस्तान के पास उसकी साश मिली जिस पर बाह्न के बाव थे, सीना बाक करके दिल निकाल किया गया था । जिस्म पर तमाम जेवर भाजद था, और पक कागज बाजु पर बंघा दुश था, जिसमें उद् जीर हिन्दी में लिखा हुआ था कि अब मुमलमानों के बच्चों पर पेसा ही जुन्म किया आयता जैसा कि पहिले हुआ करता था, यानी हर साल्ड मुसलस्मानी के यक्त्री का दिल नवद्गी पर चढाया जायगा । यह समाचार इतना अयंकर है कि हम उसके सचाई पर एक दम विश्वास वहीं कर सकते।

-शियासना को एक बड़े देशी राज्य के बिश्वहन सम्बाददाना से समाचार मिला है कि बहां इक्दाल वेगन' नाम को एक बेश्या पर, जो सांसाधारण में राज शई के नाम से प्रसिद्ध है, महाराजा साहब मुख्य हैं। कई छास्र उपये अब तक इसके कप पर मेंद्र सह चुके हैं। बीच में इस वेश्या के शाल्य से खर्छ जाने पर राजा साहब ने पहिले आदमी भन्न कर उसका बुलाना जाना बरन्तु जब बह न आई तो है। य शुन्त कर से उसकी केवा में उपस्थित हुए । सुनते हैं उसने अपने कर की कीमन १० छात्र कथ्या चनलात्रा । १० छात्र उसी समय है दिये गये और १५

काल का पृथनधाहो रहा है एक वर्ष के बाद २५ काल भीर देने होंगे। ~

---श्रीमाम् निजाय ने दाल में एक फरमान निकाला है जिसमें उन्होंने प्रजा के सामने अपनी स्थिति को यही नम्नता के साथ मकट करते हुए कहा है कि एक शासक के आवश्यकीय सम्मान और पद गौरन को छोड़ कर मेरी हेस्स्यित एक साधारण 'सियिलसर्वेट'' के बराबर है। निजाम के मुंह से यह विनयपूर्ण सच्या आत्म परिचय और जन सम्नात्मक सीजन्यता प्रशंसनीय है।

-११ अमेल की रात्रि को गढ़वाल में भयंकर जुफान भाषा। बहुत से मकान नष्ट होनल।

— २३ अप्रैल को फान्स की राजधानी पेरिस में बोल्शंबिक कान्तिकारियों में पेट्रियाटिक यूय" नामक संस्था के तोन सदस्यों की हत्या कर हाली और आठको घायल किया। उसी दिन राजि को लगभग ५० बोल्शंबिकों के एक इल ने पालमिंट के एक सबस्य तथा उनके मित्रों पर अकस्मात् हमला किया।

—हर्वन (दक्षिण अफ्रीका) के किक्कट होट स्टेट सिकोलिव, स्मिग फीव्ह लया अमगेनी आदि स्थानों में गत मार्च में लगातार दो सप्ताह तक बड़ी अयकर धर्ग हुई जिससे वहां के निवा-तियों का विशेष कर गृगेव किसानों का सर्वनाश हो गया। इन स्थानों हैं प्रधासी आरतीयों की भी बड़ी शोचनीय दशा हुई है। फसल और अनाज का नामों निशान तक नहीं रहा। खेतों पर नदी की तेज धार वह रही है। चारों ओर हाहाकार मचा हुगा है नीकरी पेशावालों को नायों पर व्यवर जाना एड़ना है। बवासी भारतीयों के कई खेतों का जिनमें फूल गोभी और पिक्षाज़ आदि स्वाही लगी हुई थी, विलक्षक समाया हो बया

परिषद् समाचार

भारतवर्गीय दिव जैनपरिवत् की प्रवन्धकारिणी सिनिति वे निस्नलिखित प्रस्ताव वर्गेशकप से सर्थ सम्मति द्वारा पास किया है। भारत है कि पव बाग् राम जी उक्त प्रस्ताव को कार्यक्रप में परिणित कर देंगे:—

पेंडत ज़िला मैनपुरी में भी महावीर स्वामी के प्रतिविश्व (जिसे लोग ज़र्सेथा कहते हैं) के सन्मुन व मास पास बिल के नाम से घार हिसा होती है जो जैनधर्म के सर्वथा विरुद्ध है और जिस से प्रतिविश्य की महाल अविजय होती है बतः यह भाव दिव जैन परिचंदु कमेटी प्रस्ताय करती हैं कि-

(१) शतिबिश्व के सन्भुख हिंसा यस्य कराई जारे तथा प्रतिविश्व को अपने अधिकार में छं छेने का प्रयम्न किया जाते।

(२) आयुत प० बाब्राम जी आगरा निवासी से बेरणा की जावे कि उपर्युक्त कार्य के सम्पादन के लिये पूर्ण प्रयत्न परिषद की ओर से करें।

> रतनकाल मस्त्रो—परिपद

सच्ची पूभावना

अपने धर्म को पूली हुई जैन कलाल जाति में पुन: धर्म प्रचार नागपुर य उस के इतनीपवर्ती शामी में जेन कछार नामा जाति है जो पहिले जैन धर्मानुपायी थी परस्तु काल के दोष से अपने धर्म का भूल गई है। इस जाति के दो विभाग है पहिले विभाग ने स्वामी शंकराचार्य के हाईश से हिन्दू धर्म की अंगीकार कर लिया है मीर वृसरा विभाग दिछमिल विश्वास है न जैन ही हैं और न अजन ही। नाग पुर नगरमें इस आति की संख्या एक सहस्त्र हे समीपवर्तो आमी में भी यह जाति कई सहस्त्र संख्या में है। भारतवर्षीय दिग्य जैन परिचद की भीर से पं प्रभाव है भचारक व पं प्रमान विश्नाय जान कर इस जैन कलार जाति में कार्य कर रहे हैं। इस आति की एक सभा है उस के श्रीत्रयों ने परिषद् के प्रचारकों को सहायता देने का बजन दिया है। इस जाति में मांस सदिरा कर प्रचार है पूर्व काल में यह काति श्रीवय जाति थी। दस बारह कुडुम्बों के प्रांत शिवय जाति थी। दस बारह कुडुम्बों के प्रांत सिहरा का त्यात है। इस जाति का एक बालक कालिज में विद्याध्ययन कर रहा है। यदि जारी रहा तो आगा है कि यह सबक्त जाति पुनः

पिरयह की थार से दो प्रशासक और मी दीरा कर रहे हैं और कः सान ट्रैक्ट हिस्टी उद् सुनगती परहरी कन्द्री बंगला में निकलने बाले हैं जिन में से एक ट्रैक्ट छपरहा है और अन्य टेक्ट लिनाये जा रहे हैं। परन्तु परिषद के बास पन का प्रभान है घन की कमी के सारण घर्म प्रभार व इनिहासका सथा अन्यकार्य अधिक तेजी से नहीं बलाये जा सके। इस लिये समाज से प्रार्थना है कि शक्त्यबुसार प्रिवृद की घन से सहायता दें। और जो समाज केवा के इच्छुक हैं के बागे कार्य सेत्र में बावें। यह मी जिवेदन है कि जिन र महासयों ने ट्रैक्ट प्रकाशित करके तथा परिषद् से अन्य कार्यों से लिये दान देने का बचन दिया है से शोध रुक्या परिषद् के कोपाध्यक्ष गय साहब साह जुगमन्दर दास जी रईस गयनंगद स्वार्ड्या ज़िला विजनीर वा येरे पास भंजदें।

जाति सेवक-

रतन झास्न सनी भा० दि० जैन परिषद्

रिपोर्ट दौरा पं० ब्रेमचन्द पंचरत्न प्रचारक-भा० दि० जैन परिषद २६ मार्च से ४ अम्ल नक

--पवर्द्द्(पन्ना स्टेट)--रीडी से बलकर ! अप्रैल को पवर्द्द आया केळदन के मेले के कारण सभा में मनुष्य केवल ! अर्थ व्याच्यान प्रशावनाद्द्र पर हुआ-जन भार्यों ने स्वाध्याय का नियम लिया और अञ्जील गाने के बन्द करने की प्रतिक्षा की। बहां एक जैन कव्दिर ब १६ घर दिग¢ जैनियों के हैं। कई भाई सभासद प्रियद हुवे यहां पर कलेदी का मन्दिर है देवां का मेला खगना है। बकरें की बिस नहीं होती किन्तु माये पर तिलक लगा कर छोड़ बेते हैं।

---गुनीर् (स्टेट अजयगढ़)-मंदिर १ जन

सक्या ७२ है। यहां विद्या का प्रसाव है। व्याख्यान विद्या विद्य पर हुआ। ६ आधि ने स्वाध्याय का नियम जिया और आनिश्रवाज़ी व अङ्जील गान योद करने का वसन दिया।

-- मुँदवारी (बन्ना स्टेट) १-४-२५ को आया यहां मन्दिर १ जन संस्था २४ है मन्दिर का प्रश्नं थ ठोक नहीं,सभा हुई, सात भार्थी ने स्वाध्याय का नियम लिया। विद्या का प्रचार नहीं है।

—स्वदा (अजय गढ़)११ अप्रे छ को आया।
सन्दिर एक,जन संस्था ५७ है मन्दिरमें मनुष्य जन्म को दुलेमती पर व्याख्यान हुआ ३ भाइंगों ने स्था-ध्याय का नियम लिया। एक साधारण सभा हुई व्याख्यान बलिहिसा, कसाई को होर बे बना, नथा धिवंशी बीमी के विरुद्ध हुआ। जनता ६० के लग-भग थी कई भाईयों ने बलिशन तथा विदेशी खीमी त्यामा। बहाँ जैन मन्दिर में एक प्राचीन प्रति विश्व सफेद प्रथाणकी सम्बस् १५ की है लेख पढ़ा

— गलेहा (अजय गढ़)-एक गंदिर तथा जन सक्या ४० है ?३ अप्रेल से १५ अप्रेल तक ठहरा-३ शास्त्र सभा तथा १ जातीय सभा हुई ७ आईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया सथा औरों ने शास्त्र सभा में सम्मिलित होने तथा आतिश्चा बाज़ी अञ्जील गान तथा कथा विकय बन्द करने के यचन दिये। कई परिष्टुके सभासद हुये। शीला पर्वत सलेहासे ३ मील फासले पर है इनमें तीन सुन्दर गुफायें हैं जिन में प्राचीन काल की प्रति-मायें हैं। पर्वतके निकट एक तालाब है एक गुका १ प्रथ सं बनी है जो महाथ लग्ना ४ हाथ ब्रोड़ा है।

(मतिबिम्न परिचय)					
१ गुका-१ पद्मासन बीरमार्थंकी इन्द्र	प्रसदित				
कं	41	(1 (1)	फुर		
' २ आदिनाथ की खड्गासन	,+	रशा	कुट		
		पौन	**		
" ४ मड़ी बीरनाथ की इन्द्रसहित	••	311	*		
'' ५ पारसनाथ की खड्गासन	**	3	4		
२ गुफा-१ योरनायकापद्मासमङ्द्रसहित	₹"	\$11	73		
" २ पारसभाश की पद्मासन	34	ś	**		
" ३ आदिनाथ की 🔭	.,	१	"		
" ५ शीरनाथ की "	>>	P	,,		
" ५ वीरनाथ की ?"	٠,	,	ਰ		
' ६ वारमनाथ की ''	۶,	ŧ	**		

" २ बीरनाथ की (फन, सिंह किन्ह) सहमा सन ऊंचाई ३ फुट

, ३ पारसनाथ की खड्गासंग इन्द्रसित ऊंखाई ३ फट

पदाह से उत्तर दिशामें नीखे अतिपाखीन अजैन वैष्णव मन्दिर है जिसे बोमुजनाय का मन्दिर कहते हैं, उसमें १ मृशिशहर (रुद्र) की चारमुखवाली है उसी मन्दिर से दो फर्लांड्र की दुरी पर १ टीला है जिस में २ प्रति सिण्डल पड़ी हैं. वहां अनुमान से पहिले मन्दिर रहा है। तीर्थ खेश कमेटी को इस क्षेत्र पर अवश्य प्यान देना चाहिये। यह शीला पहाइक्षत्र रियासन अजयगढ़ में है और नागौद से इक्के को स्वारी में जाना होता है। हमारे मार्थों को इस क्षेत्र का अपश्य दर्शन करना चाहिये। इस क्षेत्र में एक धर्मशाला है गुफाओं की मरस्मन का पहाइ पर संविधों की परम आवश्यकता है।

साहित्य-समालोचना

सन अवाई ३ फुट

बीतिबाक्यमाला—अनुवादक एँ० तस्तक साक्ष जैन वैद्या प्रकाशक भी दिगस्बर जैन पुरुत साक्रय स्ट्रान । पृथ्व २०५ मूल्य १। ।

रे क्राफा १ कीरनाथ की (फन, सिंह सिन्ह) सहग्रा-

🤋 शास्त्रनाथ की

बंगे जी मुल से गुजराती में क्यान्तरित हो बह सुभावित संग्रह हिन्दी में अनु शहित हुआ है। इसमें पश्चिम के विकानों और महायुक्तों के उप देश बाक्य समीजित हैं जो सदाबार प्रचार में मह स्वागती हैं। पाठकों को पहना चाहिये।

श्रावकाचार-- प्रथम माग-श्रीगुण भूषण संशोधी द्वारा विरचित का उक्त पंडित जी द्वारा अनुकार । प्रकाशक भी दि० जैत पुस्तकालयः सूरतः एष्ट १४५ शृज्य ॥। इसमें श्रामकीके लिये निर्मिष्ट आषार कर भक्छा वर्णन है। इसका मूल संहतमें है जो पुस्तक के साथ नहीं है। इसके यह नहीं जाना जा सका कि मूल का भनुसरण कहाँ तक किया गया है? साधारणनः यह एक स्थान्त्र रचनासी ही प्रतीत होती है। जैन शास्त्रों के प्रकाशन में एक निर्णित परियादी का निश्चय ही असा बास्क्रमीय है जिसके प्रत्येक याथ मूल और उसके अन्दर्वार्थ, अर्थ तथा विशेषार्थ सहित ही प्रकट हो। प्रकाशकों को स्थान हैना चाहिये। यह दोनों पुस्तक 'दिलंबर बैनम के उपहार गुन्ति हैं।

विषय-सूची

Ħo.	विषय	पृ० सं०	नं o	विवय		₹	ঢ় ০ ৼ i∙
१ बीर र	स्त वर्ग-पंच बक-(क ^{वि} ता) · · ·	381	५ सम्पा	दकीय टिप्पणियां	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	b	३३इ
	म्द्रकुन्दाकार्यः	. ફ ४३	६ संसा	र दिग्दर्शन	• , •		\$52
	में नैया-(कविता)			ादु समाचीर	•••	• • •	#fy.
४ दिगम	बर जैन समाज में अनेश्वनयों !	१ ३५२	= साहि	रत्य समालोबना	• •	4	३ ६⊏
	जगत्प्रवि	सेद्ध बना	रसी द	स्तकारी ।			
चार	ी के फूल भाव १० तोला द			सोने के चढ़े फू	त भाव	श) नो	বা

बांदी के फूल भाव १।) तोला कि कि सोने के बढ़े फूल भाव २।) तोला (सिर्फ बांदी या बांदी पर साने का मुख्यमा करवा के बनाने वाले सामान की सुची)

हर अदद कम व वैसी जितने तील चांडा में तैयार हो सकता है उसकी विगत । २५०) से ३०००) | क्रांधनवार हीरां ५००) भी २०००) गरावत (00) H (00) ७६) से १५००) [समासरनकीरचना२५०)से१००७) **अंस्वारी** १०००) से २०००) इन्हें एक १००७) से १५००) असिंशसन १००) सं २०००) 🗴 प्रस्वमेर ३०) में २००) पालको Beo) में 100) क्रेस्ट्रेश एक २५) [६अ:टमगरद्रव्य १००) स 🗝०) रेष्ट्रस बाधी का साज ५००) से १०००) अमुकट १०) सं - ६०) क्रिअप्टप्रानिहासं १५०) स्व २५०) ४५) सं ३७०) (*सोलहस्वपने १७०) से ५७०) घोडे की साज २०० से १००) क्रवीकी १००) से ३०००; | * × भामण्डल ५००) से २०० मिमीसान **₹वल्लम क प**री उर 30) A ५०) से ५०) । ३०) से ५०) अहाई होंगकी । १३)से ५००) तिव्रत सांदी के २००) से १०००) २५००) से ४०००) तेरह दीपकी । ५००)से२०००) ८००) से ४०००) । रचनाका मां इला। करदर्ग चंडी जैन मन्द्रिंग की उपकरण । गंधक्री यर्ग

यह काम बाजिय अक्षा नाहर सनया देने र मन्दिरकों के काम में २०) सेकड़ा का बादन लेने हैं। मन्द्रुर केशी-गरी की नजाश कामका नोला और सादे काम कान नोता देने हैं। अदस चिन्ह की चीजें नैयार भी रदनों है। असे ये सिर्णे ताबें की बनाफर मान का मुख्यमा होना है।

पता---(१) मीतीचन्द्र कुञ्जीलालं, मीती कटंग, बनारंस ।

🕕 🤰 सिंबई फुलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग पमारस सिटी ।

Tel Address-"Singhal" Benares

गारे और खुबसूरत होने की दवा।

शहजादा जिल-आंक्-बेह्स की सिकारिश से डीं लिंगडेन साहये में मंहारोज मैसूर के कर दे बताई थी। जिसकी साह दिन मनकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रहने आजाती है मुंद पर स्थार वान मुंद से की हा, फुरसी, दाद, खान दार्थ पाँव की फटना बंगल में बदबुंदार पंसीने काओंनी इस्यादि सब को साफ कर खर्मडे को नश्म कर देनी है। यह फ्लों से बनाया हे इसकी खराबू असे तक बदन म से नहीं निकलती। कीमत २ शीशी १।) स्पंया ३ शीशी के खरीवार को २ शीशी मुपत। डाकंध्य ॥।।

पना!--मुहम्पद् शक्रीक एगंड की भागरा।

वीर का विशेषांक

श्री वीर जयन्ती के उपलक्ष्य में यह भड़ प्रकाशित किया गया है। जो कि सब प्रकार हुन्त व सबलोकनीय है इसें में रंगीन व सादे मिलाकर १० जित्र हैं। महात्मा गान्धी जी का तिरंगा जित्र विशेष दर्शनीय है। इस भक्त में समाज के धुरन्धर लेखकों के सुन्दर व अत्यन्त उपबोगी लेख व कैंबितायें एकतित्र हैं। कतिपय लेखकों के नाम इस प्रकार है:—

भी० चम्पतराण जी वैरिष्टर, बा० ऋषभवास जी B. A., श्री० हीरालाल जी M. A. L. L. B. श्रीयुत 'नवरत्न', श्री० श्रार० आर० बोचडे चकील, श्रीयुत पूर्णचन्द्र नाहर M. A. R. S., श्रीमती मगनवाई जी, भी० चन्द्रावाईजी आदि। इसके अनिरिक्त विदेशों के पृथ्यात विद्यानों के कुछ लेख जो कि बड़े पश्थिम से पृष्य किये गये हैं अमे जी भाषा में भी हैं जैसे श्री० प्रेशकंसर झ० हरमन जैकाबी (जरमनी) श्री० हुंबर्ट वारन (लण्डन) श्री० एख० बारमर आदि। अक्क विशेष दर्शनीय है।

--- একা গক

इस वर्ष "वीर" के माहकों को उपहार में

'महावीर भगवान ऋौर उनका उपदेश'

विलकुल मुक्त मिलेगा ।

इस प्रवास पृष्ठों की सुन्दर पुस्तक में भी बीर भगवान की जीवनी और उनके उपदेश के साथ साथ जैनपर्म की अतीव प्राचीनता, उन्हाइता और सर्वोपयोगिता को न केवस जैन प्रश्यों के प्राचीन स्नेष्ठों वरन संसार के बड़े २ अजैन विद्वानों की साफी द्वारा सुदृद प्रमाणों से सिस्न किया गया है। यह पुस्तक बड़ी उपयोगी और बहुमृत्य साबित होगी। इस उपहार के दानार श्रीमान साला शिव-सरणसाल भी रहेस जसवंतनगर के पूज्य पिताजी का सुन्दर चित्र भी इस पुस्तक के शुक्र में अद्वित है।

शोध ही ब्राइकश्रेणी में नाम लिखाकर यह उपहार और 'वीरे का विशेषोंक पाष्त कर खेना चाहिये। अन्यथा पुस्तकें न रहने पर पक्षताना पहेगा।

प्रकाशक---"वीर" विजनीर (यू० पी०)

श्यावश्यक सूचना ।

पत्र व्ववहार करते समय माहकों को अपना माहक नम्बर अवश्य जिखना चाहिये। इस से पत्र का उत्तर देने में सुभीता रहता है।

बाल रचा सप्तरत्न घक्स

बहुषा देखने सुनने में आना है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक शुंग मसान, पसली स्वान. खोसी, लहक. इस्त, सुकिया, जबर, नेवपीड़ा, गलगण्ड आदि में फंसकर मरजाते हैं और ठम लोग उन के भागा पिना को भूतादिक की बाधा भपटा नजर बताकर लूटने हैं परश्तु अप्नाम नहीं होता। हमने इसके लिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शास्त होते हैं। जो ४० वर्ष से खड़ाखड़ विकरहे हैं जिसके अनेक सार्टीिक केट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मूल १।) डाल खलाल) इस १।०)

मिलने का पता-ज्योतिय रत्नभवन फर्र खनगर (पण्जाव)

ब्र "दिल्ली में लूट" बीजिय

यं रुपयं कमाने के विज्ञापन हैं।

इपन "नव्रत्नः इपन

गम निधिषत्र, परोपकार महिमा, धर्म पश्चिय, अनाधरक्षा उत्तित संवा. रतन्त्योति, नेत्र महो-षधिः समयाध्यक और यन्त्रशिक्षा मुफ्त सर्च के लिये हैं। का दिकट अवस्य मेंने ।

पता-रतनालय अग्ब सगय न० ४ देहली।

क्या इस मूल्य में ये चिडियां और ऐसा इनाम मिलने सुना है-

अन्य मृल्य आला मशीन।

मुफ्त "अवल घड़ियों" पर भी "डवल इनाम" मुफ्त

वी दे) रास्कोष ४) रेल्वं ५) पेटेन्ट ६) जर्मनी ७) अमरीकन ६) सामाहिक ६) सन्सि १०) रिस्ट घुड़रीड़ ५ ।) मैंडेना ६ () चान्ती ७॥) वेस्ट ०॥) मोहन यात्र ६॥) घंटाघर १०१) प्रत्येक कारच्योन, सैकिन्ड कांटा या विजली सिहित का ६) प्रति रुपया अधिक सब एक साथ लेने से कलाक और दर्जन पर १ इनाम में मुक्त : खुर्च अलग ।

पना --- ब्रामान बाच को० जङ्गपुरा देहली नं० ४।

पुष्त 'रतन उयोति' युक्त नेत्र महोष्यि पुष्त

मृत्य धर्मार्थ क्षमभल १० तोले औं ६घि का २) अनाथ निर्धनी को मुपत निराश रोगियों को रोग गये पांचे दुना मृत्य धर्मार्थ देने की प्रतिज्ञा पर धनी मुफ्त मंगाने वाली को ईश्वर सफर खन्न डाक के लगभग ॥ १०) सब से लिखे आयेंगे।

पता-बा सेवाकाश्रम भोगल नं ० ४ देहली।

"वीर" के नियम ।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रवेक अंग्रोज़ी मास की १ ली व १५ वीं तोरीक को प्रकाशित होती हैं। २-वार्विक सुल्य उपहोर नंधा विशेषांक सकित २॥) है।

३-वीर के चन्द्रे का वर्ष दीपमालिका (कार्तिक मोसं) अथवा महाबीर अयन्ती (खेत्र मास) सें शुरु होता है। दरभियान में बनने वाले प्राहकों की थिछने प्रकाशित अक्क जब से चह प्राहक बनना खाहें बी० पी० का रूपया अने पर फीरन भेज दिये जाने हैं।

४-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक, सामाजिक एवं साहियं सम्बन्धी विविध विषयों के लेख प्रका-शित होंगे। परस्पर चिद्वेषापादक लेखें। को स्थान नहीं दिया जायगा।

पु-किसी लेख के प्रकाण करने न करने नथा घटाने बढाने का अधिकार सम्पादक को होगा । यदि क्षेत्रक चाहेंगे नो उनके अन्कटनीय लेज पंक्टना मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे ।

६-ले त्र और परिवर्तन के पत्र िस पर्त पर बाने चाहियां -

श्रीयुन् कामना साह जैन, उपसम्पादक बीर जसवन्तनगर (इटाबी)

७-पत्र का मृज्य तथा विज्ञायन और प्रबन्धकार्यसम्बन्धा पत्रव्यवहार निस्त पते पर करते। चाहिए-

श्रीयुत् राजन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "बीरा, विजनीर (यु० पी०)

परिषदु साबन्धी पत्र व्यवहार इस परेपर करं:---

श्रीयुत् रतगलाल जैन मध्त्री-(भा० दि० जैन परिपद्ग) बिजनीर ।

जिबयातास (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक खोर पूर्ण इलाज।

हारबर्ड मृनिध्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य जिल्लान्। से जोग्लित (किल्ला) और एसने (Allen) सादबान के नरीक़े-इलाज जिस को नम्मि विकान सभने में प्रमाधिक और पृण माना हुआं है के मुताबिक़ डा० बच्तावर सिंह जैन एम्० डी (अमरीका) सदर बाजार, मृहली का अपने गरीज़ी पर बहुत कामयाची हासिल हुई।

१--- मुक्ते इस नरीक ेडलाज से कर्नड आराम होग्या है। जो महाराज साहब श्री नैयाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जा मुक्त शकर प्रमेह की श्रीमारी लगी हुई थी उसमे इस तरी है

के इलाज से विन्हुल अराम हा गया है।

द् कर्नल विजय शर्थार जङ्ग वहादुरः -- Foreign Minister, Nepal देहली । २--आपने इस तरीके इलाज स मर शकर-प्रमेहनोग का दिल्कुल अच्छा कर दिया । मै

बड़ा मशकुर है।

शीतल पुसाद राम बैच, चाँदनी चौक देइली !

३—५ साल से मुक्ते शब्दल-प्रमित्-रोग ने तक कर डाला था, लेखिन भागके सरीके इलाज छे विक्कुल ठीक होनया है।

जानकीपुसाद भीन, मैनेतर फ्रांर मिन्स मेरुट।

ध--- सुको यह नरोका - इलाज बहुत मुक्तिद सर्गयन हुआ ।

विश्वसेन भैन गईस कदिला।

सावधान! नई खुश्खबरी!! सावधान!!!

नादी के कारीगरों ने मंदी के कारण मंजदूरी घटादी

मारी मंजदूरी क्लाशीशार केंशी काम कैसे बेरी, गालकी, सिंहासन, ब्रंग्ड, छव मारि

मारी मंजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वर्गेंग्ड २
शीघू ही कुछ बार्डर भेजकर हमारी संचाई की परीचा कर देखिये

हमाग उद्देश्य जाति व समान सेना है।

श्रीमन्दर जी के हर किसम के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करत हैं और तैयार भी रहने हैं। खंबर, सिहासन, चंदी, नालकी, अध्यमंगलद्रव्य, अध्यमतीहार्य, मुकुट, मेक, भामण्डल आहि। तांचे के ऊपर सान का बरक खंडे हुए सामान, पञ्चमेर, शिलर कलश, कलशी जरशेजी का सामान जैसे च,ीया, परदा, अञ्चान, बन्दनवार हरपादिक।

सीतासम लहगीयसाद मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, कार्शा रमारे अन्य कार्य।

हमारे यहाँ बनारसी साड़ियां साफे दुपर्टे, किनखाद पोत के धान, ईसकाफ, काशासिल्क के धान, डुपर्टे, साफे, दावनी, बोटा, पर्टा, पुरबी साड़ी, टकुवा बगैरह।

जातिसेयक— सीताराम लहरीनथाद, सराफ़ा, बनारस

Gold and Silver Medalist

GUARD YOUR PROPERTY AND BUY ALIGARH LOCKS.

MANUFACTURED BY

The Jain Lock Factory Aligarh, U. P.

Satirfaction Guaranteed best and cheepest, For price-list apply to:

The Proprietor,

The Jain Lock Factory, Aligarh City, U. P.

NOte-Agents wanted every where.

भपने पन सम्पत्ति भीर माल की रत्ता के लिये— जैन लाक फ़्रेक्ट्री अलीगढ़ के यने हुए ताले खरीदो

सस्ते और मज़बूत होने की गारएटी देते हैं। प्राइज़िस्ट नीचे लिखे पने से मुफ्त मैगाइये। रोशनलाल जैन प्रीपाइटर, जैन लाक फैंबटरी, अलीगड़ सिटी यू०पी॰ नोड़ा-दर एक सगह वर्जेटों की ज़करत है।

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाचिकपत्रः

हिन्दो में उच्चकोटि का समीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर मकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंगन का सामान भी खूब ग्रता है। कागृज़, ख्याई, सफाई सब डी उत्तम रहती हैं। पत्र की नीति स्पष्ट, निहर और समाज के प्रश्नों पर निस्पन्न रहती हैं।

粥 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्षका चन्दा भेजने वालों को विल्कुल सुप्त

इंमहावीर भगवान'

और उनका उपदेश

इस पुस्तक में बीर भगवान की जीवनी ब उनका दिन्य उपदेश बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान यान के बाद लिखा गया है। संसार के अन्यान्य बिहानों की साक्षी के अतिरिक्त प्राचीन जैन अजैन प्रन्थों व शिला लखों के टोस प्रमाण दिये गये है। इण्डियन प्रेस प्रयाग के छवे हुए ५० पृष्टों के अतिरिक्त भारम्भ में एक सुन्दर चित्र भी दिया गया है। इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलच्य में

वीर का विशेपाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरताके साथ निकाला गया है। तरह २ के रङ्गीन व सादे यहुत से विजों के अंगिरिक हिंदी य जेन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गरुप आदि अन्यान्य विवयों से सुमन्जित किया गया है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रखता है।

शीव ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम स्टिखा टेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र सावित होगा

प्रकाशक-राजेन्द्रकुमार जैनी, विजनौर (यू० पी०)

and the second

भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्व का

पाचिक पत्र

ऑन॰ सम्पादकः—

र्मानः उपसम्पादकः--

र्षे० ४० भू०,घ०दि०, भी ४० शीनत्तप्रसाद जी ५ २०२० २०१३ २० २०१९ २० २०१९ २० भीयुन् कामतामसाद भी

हर्ष ! हर्ष !!

वीर के ग्राहकों को इसवर्ष दो उ । हार

इस वर्ष के ब्राहकों को उपहार में सुन्दर और उपयोगी पुस्तक "महावीर भगवान और उनका उपदेश" विना मून्य भेजी जारही है। जिनके पास २० ता० तक यह उपहार न पहुंचे उनको शीघ्र "वीर" कार्यालय विजनीर को अपना ब्राहक नं० व पता लिखकर प्राप्त कर लेनी चाहिये।

मुक्त !

दुसरा उपहार

मुफ्त !!

अश्रे नी जानकार पाठकों को हमारे 'मथम वर्ष उपहार' के दाता अपूर्व सहायक "श्रीमान चम्पतराय जी जैन वैरिष्टर, हरदोई" ने अपनी शरूयात व असूल्य रचना PRACTICAL PATH की कुछ प्रतियों वीर के उपहार में फ्री देने का चचन दिपा है। अतः शीघ्र ही अश्रे नी पढ़े ग्राहकों को ।) के टिकट और अपना पता व नं ० स्पष्ट अश्रे जी में वैरिष्टर साहब को लिखकर यह असूल्य उपहार पाप्त कर लोना चाहिये।

० १००० स्वाहिक स्वाहिक

राजेन्द्रकुमार जैन रईस, विजनीर (यू॰ पी॰)

सावधान! नह खुशास्त्र शास्त्रा सावधान!!!

सावधान! नह खुशास्त्र शास्त्रा सावधान!!!

सावधान! नह खुशास्त्र शास्त्रा सावधान!!!

सावधान! नह खुशास्त्र शास्त्रा सावधान !!!

सावधान! नह खुशास्त्र शास्त्रा सावधान में से बंदी, गालकी, सिहासन चंवर, छत्र आदि

आम मजदूरी नकाशीदार फींशी काम जैसे बंदी, गालकी, लोटा, गिलास वगैरह २

शीध ही कुछ आर्डर भंजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये

हगार उदंश्य जाति व समान सेवा है।

शीमन्दिर जी के हर किसम के उपकरण
हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार

भी स्वति हैं। चंवर, सिहासन, चेदी, नालकी, अप्रमंगलद्रव्य, अण्डमानीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांचे के उपर सोने का वाक चंह हर सामान. पञ्चमेरु, शिष्य कल्या, कलशी जरदोजी का सामान जैसे चांचा, परदा, अछार, वन्दनवार इत्यदिक।

सीनाराम लहसीममाद

मालक-'उपकरण कार्यालय' चोक, काशी

जियातीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक ओर पूर्या इलाज।

जिवयातीस (शुकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक श्रीर पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड मुनिवासरी, अमरीका, के योग्य धैद्य जिवयातीय जोविसन साहवान के तरीके-इलाज जिस को तमाम विज्ञान जगत में प्रमाणिक और पूर्ण भाना उथा है के मृताबिक डा॰ वस्तावर सिंह जैद एम० डी (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मराज़ों पर बहन कामयाबी हासिल हुई।

१—मुके इस तरीक इलाज से कृतर्र आरोम हो गया है। हैने महाराज साह्य श्री नेपोछ-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जा मुक्ते शकर ध्रमेह की वीमारी लगी हुई थी उन्नमें इस तरी के के इलाज से विरुकुल आगम होगया है।

—द० कनल विजय शवशेर जङ्गवहादुर:-Foreign Miniter, Nepals देहली i २-आपने इस तरीके इलाज से मेर शकर प्रमेह रोग को वित्कुल अच्छा कर दिया । में बडा मशकुर हूं। - शीतल प्राद राजवैद्य, चाँदनी चौक देहली।

3-- 9 साल से मुक्ते शकर प्रमेह-रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आप के तरीके डलाज से बिन्कुल ठीक होगया है।

---जानकीपमाद मुक्तं यह तरीका-इलाज यहुत मुक्तिद साधित हुआ। — भित्रसंन जैन रईस. कांदला।

भी महात्रीराय नवः



वर्ष २

विजनीर, उयेष्ठ कृष्णा = धीर सम्बन् २४५१ १५ मई, सन १९२५

अङ्ग १४

* विनय *

देशनिधि ! केंसे हो श्राह्वान ।
हे पददिनित, प्रधाविद्यान, विस्मृत निजात्म सम्मान ॥
श्रात्मश्राक्ति वंचित, श्रा्यसंचित, सद्गुण श्रात्मधोन ।
लच्यभ्रष्ट, सद्बुद्धि नष्ट, कतेच्य ज्ञान श्रावसान ॥
चुसे हुए श्राशा पर्दाप, दृद्ता का पतित निशान ।
विश्लुड़े बन्धु, सहायक छूटे, साहम हुशा पयान ॥
व्याधित, पञ्चितित, हृदय हाय दुष्पाच्य शांति रसपान ।
क्रिकर्तव्य विसृद्ध धेये का टूट गया सोपान ॥
श्राश्रो सत्वर नाथ ! करो श्रव सन्धर्मानुष्ठान ।
पतित विलोक प्रो ! पत दिचको दो नवनीवन दान ॥

जैन लॉ

(लेखक-भ्रीयुत चम्पतराय जी र्जन चग्र-पट ला)

(क्रमागत)

"द्रव्य का अधिकार"

"पिता का अधिकार" (मुन्तकिलो की मनाही)

सर्व रत्न धन धान्य जाति का स्वामी मुख्य िता है उसी की कृषा से संपूर्ण कुटुम्ब जंगम द्रव्य डारा वस्त्राभूषण इत्यादि धारण कर सुख भोगता है परन्तु सम्पूर्ण स्थावर धन का स्वामी पिता या पितामह या उनकी स्वंग कंई नहीं हो सक्ता क्यों कि वह स्थावर वह किसी को दे देने का अधिकारी नहीं। (१)

जो बाप का बाप जीता होये तो पिता को स्थावर वस्तु दें देने का अधिकार नहीं। इसी प्रकार पितामह की मृत्यु पश्चान् पुत्र उत्पन्न होय तो उस स्थावर वस्तु को पिता दूसरे को दें नहीं सका, भावार्थ नहीं बंच क्षका (२)।

बाबा के द्रव्य में से यदि वह (सपुत्र) भाण है आदिकों को कुछ देना चाहे तो उसकी पुत्र निषेध कर सका है (३)।

और जो कि पिता ने पुत्र के जन्मसे प्रथम भी स्थावर था जंगम द्रव्य स्वयं उपार्जन करा हो उस को भी वह पुत्रा के अतिरिक्त न किसी को देसका है और न अन्य प्रकार प्रथक कर सका या बैच सता है।(४)

जो पुत्र जात या अजात या बाल वा गर्भ स्थित है अज्ञानी पिश्रुन भी है परम्तु यह सन्पूर्ण कुटुम्बी वर्ग अपनी वृति चाहते हैं तथा यात्रा धर्म कृत्य मित्र जन के वास्ते भी जंगम धन खच करना योग्य है परम्तु स्थावर विकय न करे। (॥)

'विकी की आजा"

यदि कोई पिता या पितामह म्थाबर बक्तु की विकय या दान किसी आपत्ति काल में कर तय माना पिता ज्येष्ट भाता और अन्य कुटुम्बी जी दायाद ही उनकी सम्मातसे करे। कभीक स्थाबर के स्वामी सम्पूर्ण दायाद हैं चाहे यह मिसक है या अविभक्त, उसके विकय करने का एक को अधि-कार नहीं हैं (६)।

पुत्र समर्थ हो और कामे कमाने आनन्द पूर्वक स्थानत्र होचे। उन के माना पिना आवश्यका के समय अपनी स्थावर दस्तु को बचते और दान करते हुये रुक नहीं सक्ते (७)'।

(ब्यक्ति) सुत की आज्ञा के विना ही विभाग की हुई अथवा अविभक्त द्रव्य का

१ देखो इ० ति० संव ४, भाव नी० ६

⁽५) ,, ग्राठनी० ७

⁽३) , य० ० से ६१

⁽४) , ६० (त्रवसंवर्, प्रावनीय म

⁽x) .. " s

^{(8) 5}

⁽৩) ,, স্থাত শাঁত ११

ः स्याः निषात्रिसः वस्याः क्रांतिः वक्राद्विकों में वर्धाः - स्थित क्रास्ताः है। (७ अ०)

"पितामह के द्रव्य में पिता और पोतों का साधारण अधिकार"

जो द्वन्य पितामहबा कमाया हुआ है वह चाह मकात हो चाह खेत हो उस पर पिता पुत्र दोनों का साधारण अधिकार होगा (इ)।

यदि वितासह की मृत्यु होजावे तथापि स्थावर भारको कोई नहीं लेसका (सुन्तिकल नहीं होसकती) क्यों कि उससे कुटु व का भरण पोक्ण साभव है और इसी से साधारण धन बह्म इत्यादि में यथा योग भाग उचित है। (= 32)

"पुत्र का अधिकार"

ज्येष्ठ भाई विशाका सब धन स्वाधीन करें और शेव छोटे भाई वितासमान सम्मक्त उस की अनुकूल चलते रहें।

सम्पूर्ण द्रव्य का अधिकार व्यवहार करने में पुत्र को है खूर्ज करने में नहीं। यहि किस्से कारण सा बिलकुल खूब पुत्र के पाल न रहा होये अर्थात् खाली हाथ होय ता माता की आज्ञा से खन्च करने का भी अधिकार है। (१०)

मान। पिता के जीवने सौकसी कोई प्रकार के स्थावर जङ्गस धन को सेवदेने व सिस्घी रखीं कर देने का अधिकारी नहीं। (११)

- (अ थ) देखां ए० इ.० ६०
- (=) ,. **আ**ত নতি ১ও
- (= ध), इ० तिव मां ४४
- (६) , शाः नी० २५
- (१०),, भ० स्त्रं ७ १३
- (११, " नव मा ४० मावनी व मर ,नव तीय १४

भाइयों में इं। भाई पुत्र रहित हो तो अपने पिता पितामहके स्थावर धनको वा उस में से कुछ निज का भानाओं की सम्मति बिना यदि सुपुत्रा है ता पुत्र को भो सम्मति बिना किसी को नहीं है-सक्ता। उनकी सम्मति हैकर देवे तो किसा प्रकार कलह न होय। (१२)

पुत्रकी सम्मति यिना पिता कुछ नहीं देसकता और पिता के मन्ते पर पुत्र देता हुआ कि ससे दक सकता है। (१३)

बिना विभाग की हुई अधस्था में, सब भाईयों का एकमा व्यवहार माना गया है यदि एक भाई अलग हो जाय तो किर उस समय सबका विभाग अलग अलग हो जायगा (१३ अ)।

जो पुत्र उत्पन्न नहीं हुआहे तथा उत्पन्न होकर भी अज्ञान अपस्था में है और जो उत्पन्न होकर मर गया है य सब आती अपनी जीविका के लिए उस धन के उत्तराधिकारी हैं मराहुआ छड़का उत्तरा-धिकारी है इसका अभिधाय उसकी स्त्री व व पुत्र से हैं। १३)

"कव पुत्र अधिकारी नहीं"

धर्म को छोड़कर चूनादि व्यसनों में यदि स-म्वूर्ण भाई आसक्त होजावे नो उनको धन नहीं मिल सकता प्रत्युत दण्ड करने के योग्य हैं। (१४)

जा पुत्र सप्त कुःयसनामक, विषयी, कुप्टी अन्य असाध्य रोग ब्रस्तित गुहमाना पिता से

⁽१२) देखो ., ४६-४९ ,, ६६

⁽१३) ,, भः संव ६२

⁽१३५६४) ,, आठ नी० १३१

⁽१६व), "१०

⁽१४), "१२१-'मवर्गव रवः

विमुख उनकी आहा से परान्मुल हो वह पिता के धनका अधिकारी करोपि न होगा। उस समय पिता के धन का अधिकारी ज्येष्ठ पृत्र होगा और उनकी पितानुस्य कुरुख का पालन करना चाहिये। (१५)

"ज्येष्ठ भाई झौर छोटे भाईयों के कर्तव्य"

ज्येष्ठ भाई को चाहियं कि अपने अविभक्त अर्थान् एकत्र रहने चाले (या जुदे हुये) भाइयों की विता तुल्य पालता करें। और उन भाइयों को भी उचित्र है कि ज्येष्ट भाई को सदेव विता समान (१६) जाने।

"नाता का अधिकार"

विधना स्त्री पतिवृता व कुटुम्ब पालने लायक है तो पुत्र जब तक समर्थ न हो एवं पुत्र के अभान में पति के सःपूर्ण धन की स्वामिनी होगी। (१७)

माताको द्रश्य की यत्नपूर्वक रक्षा करनी उचित है और उसका ऐसा प्रवन्ध करें कि द्रव्य के व्याज भाड़े में स्वामी के कुटुम्ब का पालन होता रहें (१०)।

पति भृष्ट हो आय, मर आय, बाबला हो। जावे दीता लेकर त्यांगी हा आब उसके स्थाबर जंगम सर्घ प्रकार के धन की स्वामिनी उसकी स्त्री होगी (१८)।

अपने निर्वाह तथा धर्म कार्य ज्ञान कार्यो (Commercial purposes) के लिये विश्वश्वास्त्री को वितयेक्सन आज्ञाकारी औरस अथवा दत्तक पुत्र होते हुये भी पति का अंगम तथा स्थावर धन दान करने अथवा गिरबी या बेचने का अधि-कार (२०) है।

"कुशाला और सुशीला का विधान"

जो स्त्रियां सुनीला हो जिनका आकरण अच्छा हो और जिनके कोई सन्तान न हो ऐसी । स्त्रियोंका पालन पोषण करना चाहिये । और जो स्त्रियां व्यभिचारिणी है युरे स्वभाव बाली अथवा प्रति-कूल हैं उन्हें निकाल देना (२१) चाहिये।

अपनी कुलाक्ताय के प्रतिकृत चलने वाली कुशीला पित के घर से पृथक् रहने वाली विश्ववा क्षी के ज्येष्ठ देवर तथा पुत्र उसके भोजन वस्त्र का प्रविध करके सर्व प्रकार का अधिकार उसका ' घर से उठा देवेंगे। (२२)

"उन्मत्त का विधान"

भृतादिक वाधा के कारण उक्त स्त्री विधवा, शावली, बौरी अत्यन्त रोग वाली हो वायु विकार से गूंगी अन्धी, स्पष्ट न बोलने वाली, मन बाली, समरणशक्ति रहित, अपने कुटुम्ब धन तथा शरीर की भी रक्षा न कर सको, उसको धनवी और उसकी कृम पूर्वक भनी औं, देवर, सात पीढ़ी तक के बंशियों तथा चौदह पीढ़ी तक के बंशियों या दूरस्थ संबंधियोंको यक पूर्वक रक्षा करनी, बाहिबे यदि इन सब का अमाब हो तो निकट निवासी रक्षा (२३) करें।

⁽१४) देखी ४० जि० सं० १२-१४ शानी । म६-८०

⁽१६) , भव मंत्र १० शाव मीर २०

⁽१९) ,, ब० वी० १४. ,, ४४

⁽१८) ,, भावनीय ४१

^{(16) , ,, **}

^{—(} कमराः)

⁽२०) ,, **स**० नी० दश (२१) ,, साथ ती० ७७

^{(44) 45}

^{(43) ,. ,,} un-mo

साहित्य-सुमन-सञ्चय

"जैन दर्शन"

मथुरा में आयंसमाजियों के गत शतान्दी महो-स्मच पर उनकी और से जो सार्वधर्मपिष्वद हुआ था, उनमें जैनदर्शन पर भी निबन्ध मंगवाया गया था। तानुसार शिवपुरी के इतेतान्वराच्यायं श्री विजयंग्द्र स्रिजी ने एक उपयोगी निवन्ध लिलका किसी एक विक्षान् के हारा वहां उपस्थित कराया था। निबन्ध की उपयोगिता उसके पाठ से प्रकट हो सकती है। इसलिये तथा कतिप्य पाउकों के अनुरोध अनुरूप हम उसे यहां विविधविचारमाला से उध्दत करते हैं। मान्य लेखक ने ठेड विषय पर आते हुए लिखा था:—

जैनद्दीन—एक स्थतंत्र दर्शन है। इस जैन दर्शन में सत्वज्ञान, साहित्य औद इतिहास समृद्ध संपूर्ण और जैनेतर समग्र साहित्य के अभ्यासियों को आकर्षण करे, इतना है। इस संबन्ध में जर्मन विशन डाठ जैकोबी कहते हैं कि:-

In conclusion let me assert my conviction that Jainism is an original system, quite distinct and independent from all others and that therefore it is of great importance for the study of Philosophical thught and religions life in ancient India. (fecture read in the congress of the History of religions.)

यक समय था।क जब बड़े २ वि गर्नों में भी जैनधर्म के विषय में अज्ञान प्रकृतमान था। कितने ही जैनधर्म को बीद्धधर्म अथवा ब्राह्मणधर्म की शास्त्रा मानते थे। कितने ही महारीर स्वामी को

उसका सहयावक समभे वेठे थे। हो कि तने ही गेसे भो थे जो जैनपमं को नास्तिक बतलाने थे। आज भी येमी मिथ्या धारणाधी के कहनेवाले सर्वधा हो नहों हैं यह ता नहीं, परन्तु अस्यास और शोध-खोज के परिलामस्वरूप यह प्रगट है कि बौद्धधर्म के पहले भी जैनधम का प्रचार था। और महाधीर क्वामी जैनधर्म के प्रचारकरूप ही चुके हैं। पाक्या-स्य चिरानों की द्वृष्टि पहिले पहिल बाह्मणधर्म और बौद्धधर्म पर पड़ी। उससे वे अपने अभ्यास में जैन धर्म को भूजगयं। उपरांत महावीर और बुद्ध सम-कालीन थे। इसलियं दोनों के जीवन तथा उपदेश में किञ्चित् साम्य था। इन कारणीवश किन्हीं विद्वानों ने बोद्ध और जैन धर्में के एक ही सान लेने की भूल की थीः परन्तु ज्यों २ अभ्यास की शोध बढ़ती गई. त्यों २ जैनधमं के सिद्धान्त और इतिहास कुछ और ही प्रकार के और सहत्व के प्रमाणित हुए। परिणामतः जा त डा० जैकोबी, डा० पेटींल्ड. डा॰ स्टीनकोनो, डा॰ हेल्माथ बान ग्लेसे-नेष्य, डा॰ हर्नल प्रभृति अनेक विदान जैनतम्बद्धान और उसके साहित्य का अभ्यास तथा प्रकाश यूरो-पादि देशों में करोरहें हैं। अत्वव जैनधर्म सम्बन्धी अजैन चिद्वानों में इतनी अज्ञानता होने और तज्जन्य आक्षेप उठाने का कारण मात्र यही प्रकट होता है कि उनमें मूल अध्यास और संशोधन की बृटि एवं कमताई थी।

प्राचीनता— जैन धर्म प्राचीनता का दावा करता है। जगन् के धार्मिक इतिहास पर दृष्टि डालने से पगट होता है कि हजरत मृसा ने यहुत्।

धा च तथा। कम्भयनियस चीत देश ये प्राचीन ध्रम प्रमापक व प्रवर्गक होचका, जिसने कन्पयु-् साप प्रमं स्थापा। मार्डस स्रोस्त ने खोन्तीर्दनार्ड धम को बस्ति की । हतर्त महस्मद ने इ.लाम श्रम का प्रारम किया और मन बुद्ध ने बौद्ध धर्म को तीय डाली । ओर जरधस्त ने पारसी धर्म चलकित किया तो भी रतस्य संपहिले आतं सं २८ । वर्ष पर्व भगवान महा रिने प्राचीन काल से चले आने हुये जैन धर्म का पुनः प्रचारक हा मं पन्नार किया : जैनधर्म की दृष्टि से उपरी-लिश्वत धर्म आधुनिक ही हैं। के ग्ल बाह्मण या . 📽 एक धर्मऔर जैन धर्मयेता धर्मही प्रातीन धां गिने जा सके हैं। अब इन दोनों धर्मी के साध्यस्य में विकास करना शंप है बौदों के धम प्रमर्था पिटक प्रन्थी प्रहानात और प्रहापतिसि-ः ह्यान सुत्र आदि जैन धर्म और सहावीर स्वामी के सम्बन्ध में कितनीक यथार्थनाओं को बनला रहे हैं। इसके उपरान्त महाभारत, रामायण और आदिपच में जैन धर्म सम्बन्धी उहनव मिलत है। सारांशनः हिन्दुधर्भ शास्त्र और पुराण भा बेनधर्म के अस्तित्व का उल्लेख करते हैं। ज्ञेंनधर्मके आदि तीर्थं द्वर ऋग् भर्वका वर्णन श्रीप्रज्ञागम्त के पांचर्यस्थन्य में है। यह ऋष भने । भरत के चिता हैं कि जिनका नामायंक्षा यह देश भएतवष कहलाता है। भागान्त का कथा के अनुसार ऋषभदेव साज्ञात् विष्णु के श्रवतार थे। इसमें अगाही देखिये तो वेदों में भी जैन तीर्थ-करों के नाम श्वाते हैं। यह नाम कोई मनगडन्त नहीं हैं। प्रत्यन २६ नीर्थ हरी के नामां में से ही यह नाम है । अस्मकी पृष्टि विद्वान दतिहास

वेसाओं को!लोज के परिणाम से भी होती है। इन प्रमाणों से काप है कि वेदों में भी उन लोशंहरीं का नामोल्लं व हं जिनको संभी उलाश्वदेख मानते हैं। अतग्य यह कहना अन्युक्ति पूर्ण नहीं है कि ''यद रवरा के काल में पहिले भी जैनधम श्रवस्य विद्यामान था ("Dr Guermot सहते 2:- There can no longer be any doudt that Parsya war a Historical personage. Accord ing to tain Tradition he must have lived a hundred years and died 250 years before Mahavira His period of activity, there fore corresponds to the 5th, century B. C. The Parents of Mahivita were followers of the religion of Parsya The age we are in there have appraised 24 prophets of Jaimsm They are ordinally called Tuthankers. with the 23 id Paisvanith we enter into the region of History and reality (See Introduction to his essay on Jain Bibliography)

इन प्रमाणों से सिद्ध है कि जैनधर्म अत्यक्त प्राचीन धर्म है। महायीर कामी उस धर्म के अन्तिम तीर्थं इर थे और वे बुद्ध देव के समकालान थे। ऋषभदेच प्रथम तीर्थं इर थे, जिन का जन्म अत्यक्त प्राचीन है।

नन्दज्ञान — मुक्तं निष्यञ्चपात रीति से कहना चाहियं कि जैनधर्म का तत्वज्ञान-उसका धर्म और नीति मीमांना, उसका कर्त्याकर्त्य्य शास्त्र और चारित्र यिवेचन अतीव उच्चधेणी का है। जैनदर्शन में अध्यातमांभ्र, आत्मा और प्रमात्मा, प्रवार्थ विज्ञान और त्याय विषय का स्पष्ट ध्यव स्थत, और बुद्धिंगम्य विषेचन देखने में आता है। जैन तत्त्रसान देतना विशिष्ट महत्त्व का और तुलना-तमक एष्टि से आलोखित है कि मध्यस्य दृष्टि के बाजक और अम्बासकर्ता को यह सर्वथा सपूर्ण हो दृष्टिगत होगा। इतना ही नहीं, प्रत्युत थह श्रद्ध्य में एक प्रकार का आनम्द उत्पन्न करता है। जिन विद्धान महाशयोने जैन धर्म का नुलनारम्क रीस्या ध्रम्यास किया है वे उस की मुक्तकंट से प्रासा किये जिना नहीं गई हैं।

जगन क्या बस्त् है ? बह केवल दो तत्व-जड और चे 1नरूप मालूम पडता है-अलग्ड ब्रह्मांड के समग प्रार्थ इन दो तत्थी में आजाते हैं। जिस म ुर्चतन्य नहीं-भान नहीं, घह जड़ हैं, और उस के िपरीत चैतन्यस्वरूप आस्मा हेवह जीव है। चानशक्ति आत्मा का मुख्यतक्षण है । चेतना-्. हो। नीतः जैन तस्वजान इस प्रकार अन्यों से आपने बहुता है कि वह पूथ्मी में, जल में। अग्निमें, बायु में और बनरपति में जीव सानता है। जीवीं के मुख्य उस और स्थावर भेद है । धर्तनान धेन्निकी की भी माध्यता है कि समस्त लोक सक्स जी से भरा पड़ा है। उस धमाण उन्होंने सब स छंटा ''थेकसमा नाम का प्राणी दुंहा है जो एक सुई के अवसाग पः एकलाच चैठ जांय तो भी गिच पिच कि होता उधर प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता प्रीव जगदी प चन्द्र बोस ने वनस्ति पर प्योग करके यह प्रा-णित किया है कि धनस्पत संसार के वृक्षादि को कांध लोभ, रीस आदि संज्ञायें होनी हैं तथा उनमें जीव हीतां है।यही बात जैन दर्शन में हजारी वर्ष पहिले ही 'बता दी गई है, जब मन्बादिका साधन भीनहीं था। परमा अवने बान द्वारा तार्थ करों ने

वैसा बताया था। अब समय जाने लगा है कि जन जैन दर्शन के अनेक सिद्धान्त जगत को स्वं.कार करने पड़ेंगे। ऐसा अनुमान करने में बहुत स कारण है।

क्षांच और अजीव के इपरान्त पुण्य पाप (शुभ एवं अस्म कम), आश्रव (आर्थायते कम अनेभ-आहमा के साथ कर्मका सम्बन्ध ह ने का फारण . सवर (आते हुए कर्मी' को रोक्ष्में की शक्ति), दस्ध (कर्मीका बन्ध होना), निर्जरा (कर्मी का इय) और मोश्री (मुक्ति) यह सात मिलकर कुल भी तस्त्र जैन दर्शन में माने है। सायुर्ण जैन फिलासकी क्रम वर निर्भर है। आत्मा और कर्म इन दोनों का अनावि संबंध्य है। बाइसविक इनक्ष्य में आखा स्वरिक्तना नन्दमय है। परन्तुकर्भों के आवरणवश रसका मुल स्वकृष आच्छादिन है। उसे २ कभी का माश होता है तैसे २ उसका असला स्वरूप प्रकाशित होता है। और अध्यक्ष्यक्षण का साक्षाकार संभ का अक्षय सुव प्राप्त होता है। जैस २ कर्म जीव करना है, देसे २ पल उसे मीगने पड़ने हैं। और अवनक कर्राका सर्वाया नाश नहीं होय तब तक जन्म मरण करना पहले हैं।

मोत्त का साथन-जैन टर्शन में मोह का साथन सम्यक्तान (Right Robowledge) और सम्यक् चारित्र Right conduct) का रस्तत्रथ सामा है। तत्वार्थ सूत्र का सब से पित्रला सूत्र यही है-सम्यगृद्शीन-ज्ञान-चानित्रा (ए। मोत्तामार्थ: । यही मोह का मार्ग है। किर जैन दर्शन आरमा को निर्ण माने हैं। कमों का स्वयं करके अखंडानद मोह सुल प्राप्त करने वाली आहमार्थ किर अवसार उती नहीं। यह

जैन शास्त्र की मान्यता है। जो तोर्यक्करों के जन्म से यह प्रमाणित होता है कि जब २ जगत में अना-बार और दुः व बहते हैं तब २ महान आत्माएँ अय-एय जन्मती हैं और ये जगत को सन्मार्ग बताती हैं, परन्तु मुक्तात्मा, जिनको ससार में फिर आने का कोई कारण नहीं, चे किर संसार में जन्म छेनी नहीं। इस लिये जो महान पुरुष जन्मने हैं यह मोश में गई आन्मायं नहीं हैं। परन्तु चार गतियों में भ्रमण करनेवाली आत्मायं होती हैं।

श्री गीता जी का कर्मयोग यह जैंन परि-भाषा में पुरुषार्थ है । जैनदर्शन कर्मवादी होने के लिये नहीं, प्रयुत आत्मा को किसी की सहायता के जीवनमुक्त (कैवस्य) अवस्था पूस करने के पुरुषार्थ को करने का उपदेश देता है । आत्मा संपूर्ण आत्मज्ञान (किव्य-क्षान) के बढ़ने पर जगत के सर्व भावों को जान और देव सकी है और उस के पश्चान घह मोज पद की पार्ता है। मुक्त आत्माओं को निगल आत्मज्योति में से स्कृतिमान स्वभाविक जो आनंद है बढ़ी आनन्द परमार्थ सुव है। ऐसी आत्माओं के शुद्ध, बुद्ध, सिद्ध, निरंजन, परमव्रम आदि नाम शास्त्री में दिये हैं।

ईश्वर-के सम्बन्ध में जैनशास्त्र एक नशीन दिशा बतलाते हैं। इस विषय में जैनदर्शन प्रत्येक दर्शन से लगभग जुटा खड़ा होता है। यह इस दर्शन की खूबी है। परिस्तीण समलकर्मा ईश्वरः। जिसके सकल कर्मी का निर्मूल क्षय हुआ है, ऐसी आत्मा परमात्मा बनती है। जी जीव आत्म-स्वकृष के विकास के अभ्यास में अगाड़ी बढ़ कर परमात्म हि रित में पहुंचे हैं, वे ईश्वर हैं। यह

जैनशास्त्र का सिद्धान्त है। इस परमासम स्थिति में पहुंचे सर्व सिज परस्पर एकाकार एक समान गुण और शक्ति वाले होने से समप्टि रूप उन का "एइ," शब्द से व्यवहार हो सक्ता है जैन धर्मका एक अन्य सिद्धान्त पुनः विचारशील विद्वानी का ध्यान आकर्षित करता है। वह है कि हेश्वर करत का कर्ता नहीं। बीतराग ईश्वर न तो किसी पर प्रसन्न होता है, न किसी पर नाखुश होता है। कारण है कि उस में रागदंब का सर्वाधा अभाव है। संसारचक से निर्लेष परमज्ञार्थ ईश्वर को जगतकर्ता होने को क्या कारण ? प्रत्येक प्राणी के सुख दुःल उसकी कर्ग सत्ता पर आधार रखते हैं सामान्य बुद्धि से ज्यों दुनियां में बस्त्यें किसी के बनाये विना उत्पन्न नहीं होतीं त्यों ही जगत भी किसी का बनाया हुआ होना चाहिये, ऐसं कहा जाता है। परन्तु यह ख़याल मात्र है। क्यों कि सर्जवा राग, हं प, इच्छा आदि से रहित परमान्मा इंश्वर को जगत बनाने का कोई भी कारण दीवता नहीं । इस लिये जगत् का ईश्वन्कर्ना मान्से म अने क दोष आ सक्त है। हां, एक गीत से ईश्वर जगत् कर्ता बनाया भी जा सका है:-

परमेश्रयेयुक्तत्वाद् मतः आः मैव वेश्वरः , सः च कर्तेति निदेशिः कर्त्योवादो व्यवधितः ॥ —हरिमद्यस्मितः

भावार्ध-परमैश्वयंयुक्त होने से आत्मा ही इंद्र्यर माना जाता है और उसे कर्ता कहने मे दोष नहीं, क्योंकि आत्मा में कत्त्वाद् विद्यमान है केवल जैनी ही इंग्नर को जगत्कता मानते नहीं यह बात नहीं है, प्रत्युत शैदिक मत्तों में अधिकांश इंद्र्यर को जगतकता नहीं मानते। (इंद्रो वाचक्यंति मिभ रचित सांरुपतत्वकी सुद्दी ५७ कारिका)

स्याद्वाह-प्रमाणपूर्वक जैन शास्त्रों में एक सिजान्त पेता साबित करने में आता है कि जिस के सारवन्ध में चित्रानों को आश्वर्य हुये बिना महीं रहता। यह सिद्धान्त 'स्याद्वाद' है । एक-क्मिन वस्तुनि सारोत्तरीत्या विरुद्ध नानाधम स्वीकारी हिस्याद्वादः । एक वस्तु में अपेक्षा पूर्वक विकुद्ध छुटा २ धर्मी का स्वीकार करना इसका नाम स्यादाद है। जैसे भन्तव कुछ बोलता है तैसे उसमें उसके सियाय अन्य निषय सम्बन्धी सम्य अनुष्य रहता है। उदाहरण रूप में बह हमारा भाई है, इस प्रकार जय में कहता है तब बढ़ व्यक्ति भेरा भाई होते हुये भी किसी का पत्र अवश्य है। तो किसी का काका भी है और मामा भी है। प्रत्येक दश्तुकी अवेदा से लिया-निय रूप मानने से सर्व पटार्थ उत्पाय, विनाश और क्रिथित क्वभाव बाले हैं: ऐसा उहरता है। धर्म मात्र में सामान्य धर्म और विशेष धर्म होते हैं। सार्गशतः एक ही बस्तु में सापेद्या से अनेक धर्मी की विद्यमानना स्थीकार करना उसी का नाम स्याहार है। जरा विशाल द्रष्टि से पैठ करके दर्शनशास्त्र वेसा सम्भ सन्ता है कि प्रत्येक दशन-क रको एक अथवा अन्य रीतिसे स्याद्वार स्थीकार करना पड़ा है। सम्य के अभाव से मात्र सक्षंप में प्रत्येक विषय का इप उपस्थित किया जाता है।

जैन साहित्य — अब जरा जैन साहित्य पर भी हरिष्टपान की निष्य। जैन साहित्य विश्वल विस्तीर्ण जीन सम्बद्ध है। ऐसा कोई विषय नहीं जिलके अनेक प्रस्थ जैन साहित्य में न मिलें। इतना ही नहीं परन्तु इन विषयों की सर्वा बड़ी ही उसम

रीति से उत्तमांत्तम और विद्वतापूर्ण दृष्टि से हुई है। जैन दर्शन में प्रधान १५ शास्त्र हैं. जो सिद्धान्त अथवा आगम फहलाते हैं।(यह इवेतारबर गन्थ हैं) दिगम्बरियों के अनुसार यथार्थ आग्रम प्रम्थ उपलब्ध नहीं हैं) प्राचीन समय में शास्त्र लिखने को प्रवृत्ति नहीं थी। शास्त्र शिष्यपरम्परा जिब्हा द्वारा याव रक्खं जाते थे। उर्थो २ समय व्यतीत हुआ, त्यी २ उनकी प्रतकारू इ काने की आयश्यका पडी। बेमहाबीर स्वामी के जीवन कथन और उपदेश के सार है । यह संपूर्ण जैन साहित्य द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्म कथान-योग और चरण करणानुयोग नामक चार विभागी में विस्तृत है। गणित सम्बन्धी चन्द्र प्रज्ञांत सूर्य प्रकृति और लोक प्रकाशादि प्रन्थ इतने अपूर्व हैं कि उनमें सूर्य, चन्द्र, तारा महल असल्य द्वीप. स्वर्ग लोकादि का यथार्थ धर्णन मिलता है। हरि सीमान्य विजय पुत्रस्ति धर्म शर्माभ्यदय, पार्श्वा-भ्यद्य,काव्य आदि काव्य,सभ्मति तकं, अनेकान्त जापाताका अभृति न्याय गुन्थ, योग बिन्द्र आदि यांग गृत्थ, ज्ञानसार, अध्यातम करुपद्रम आदि अध्यातम गुरुव, सिद्ध हेम भादि व्याकरण गुरुध आज भी प्रसिज हैं। प्राकृत साहित्य का उच्च सं उच्च साहित्य जैन साहित्य में हैं। जैन न्याय, जैन तत्वज्ञान, जैननीति और अन्यान्य विषयों के गद्य पद्य के अनेक उत्तमोत्तम गृन्ध जैनलाहित्य में भर यह हैं। ज्याकरण और कथा ,साहित्य तो जैन साहित्य में अदितीय है। कैन स्तेश,स्तृति माचीन मुजगती भाषा के रास आदि अनेक दिशाओं में जैन साहित्य विस्तृत ई । जैन साहित्य के बिपयमे .प्रें क जोहत्म एर्ट्स लियते है कि-1 hey are the

बाह्यता शिक्ष प्रभाग स्टाहार कार्या कर प्रमाण के प्रमाण के स्टाहित्य खूर्य मिलता है। """
पिछले २५-३० वर्षों सं जनसाहित्य विक्रेष प्रचार में आने लगा है। इंगलेन्ड, जर्मनी,फून्स, इटली और चीन में भी जैन साहित्य का खूय प्रचार हो रहा है। आज स्वर्गस्थ जैनावार्य श्री विजयधर्म स्टिती।के महान् प्रयास सं अनेक विद्वान देश विदेश में जैन साहित्य का अभ्यास और प्रचार कर रहे हैं। मेरा हुद विश्वास है कि ज्यों २ जैन साहित्य का अभ्यास और प्रचार कर रहे हैं। मेरा हुद विश्वास है कि ज्यों २ जैन साहित्य विशेष प्रमाण में पढ़ा जावेगा और उस का मुलनारमक अध्ययन होवेगा त्यों २ उसमें से मधुर खुगिंच जगत् के रंगमंडप में फैलेगी, जिस से जगद में वास्तिवक अहिंसाधर्म का प्रचार होगा।

जैन इतिहासकता—जैन और अजैन वि ानों का ध्यान जैन इतिहास की ओर अमं उनना आकर्षित नहीं हुआ है जितना होना चाहिये। गुजरात के इतिहास का मूळ जैन इतिहास में है। अनेक प्राचीन ध्यानों में जैन इतिहास के स्मरण मिळते हैं। जैन राजाणार येळ की गुकार्य, आव्यवंत की साइचर्यपूर्ण चित्रकारी, शत्रु जयके मंदिर जैनों को शिल्पकळा की अध्वताके कुछ नधूने हैं। जैन राजा और मंत्रीमी अनेक हो गुजरे हैं। सन्ति धे णिक, कुमारपाळ आदि राजा तथा वस्तुपाळ, तेजपाळ भामाताह आदि मंत्री भांज जैन इतिहास के चम-को रज हैं।

श्राहिसा—यह जैनधमंत्रा जगतको अनुभुत संदेश है। जगत्के सर्व धर्मे में अहिसा का कुछ न इड उस्केत श्राहर है। परन्तु जैन धर्म ने जो

आहिसा घरो बनाया है बैसा अन्य धर्मों में नहीं हैं। कतिपय भारतीय विद्वानीका आक्षेप है कि अहिंका ध्यमें भारतवर्ष की श्रीरताका नाश करा है। छोगों में इसके कारण शर्वारता के स्थान पर कायरता और भीरता अगर्द है। यह कथन सत्य नहीं है। अहिंसा धर्मपालको ने युद्ध करे हैं, लडाइयां लड़ी हैं आर राज्य चलाये है। अहिसा में को आत्मशकि; जो संयम जो विश्वप्रेम है वह अन्य कही नही है। अहिंसा सम्बन्ध में उपराक्त आक्षेप वही लॉम करते हैं जिन्होंने जैनदर्शन में प्रतिपादित साध्यमी और शृहस्थाधार्यको नहीं जाना है। इन धार्मों के भेद को समभने वाल कभी भी यह आक्षेप नहीं कर सकते। भारतगौरव लो० तिलक ने अपने व्याख्यान में एक रुधल पर करा था कि ''अहिंसापरमोधर्मः'' इस उदार सिद्धारत ने ब्राह्मणधर्म पर चिरस्मरणीय छाप मारी है। अर्थात् यज्ञ यागादि में पशुिसा होती थी वह आजकल नहीं होती-यह जैन धर्म ने एक भारी छाप बाह्मणधर्म पर मारी हैं। घोर हिंसा के पातक का बाह्मणधम से विदार करने का भेय जैनधर्म को प्राप्त है। नार्वेजियन विद्वान हा० स्टीनकोनो कहते हैं कि:---

"आज भी अहिंसा की शक्त पूर्ण क्य से जागृत है। जहां कहीं भारतीय विचारों अथवा भारतीय सभ्यता ने प्रवेश किया है वहां सदेव भारत का यही संंश रहा है। यही संसार के पृति भारत का गगनभेदी सम्देश है। मुखे आशा है, और में। यह दिश्वास है कि पितृभृमि भाग्त के भावी भाग्य में खाई कुछ हो, परंतु भारतवासियों का यह सिद्धांत सक्षेत्र अजण्ड रहेगा।"

उपरान्त विद्वान् आचार्य ने उपलक्षर में जैन

थर्म की विशेषता बतलाते हुए उसे सार्वभौमिक धर्म बनलाया है तथा भाषना की है कि इसका प्रचार भी शीघ ही सार्वभौम में हो जिस से शान्ति का सामा अप स्थापित हो। हमारी भी यही भावना है। वस्तुनः निबन्ध महत्वशाला है, और इस पर हम मान्य लेखक को भन्यवाद की सुमनाञ्जली समर्पित करते हैं। आवश्यकता है कि आज ऐसे ही सार्वधर्म परिवर्दों द्वारा जैनधर्म का प्रचार किया आवे।
—उ०स०।



श्रवला-जीवन

(लेलक - श्रीयुत प० गीरी शहर गर्मा)
चाधुतर, तथों न दुःख फिर पाएं।
धर्म कर्म को त्याग नहाँ हम, पत्तपात दिखलाएं।।
मरघट के मसान बनने तक, बुद्धारंग नमाएं।
पैसे के बताप कन्य।एं, बधु बना घर लाएं।। १।।
ध्याने ही भीते जी कितने, करनी पर पहनाएं।
खड़ा सा व्यिचारी दल का गेह अनेक दिखाएं।। २।।
यातनमद में छकी तिचारी, जब होती बेव।एं।
तब कुसंग पा पाकर कितनी, पातक पुद्धा कमाएं।। ३।।
भेद न खुले, सोच कितनी ही बिवश तीर्थ को जाएं।
ध्याससर पर लाजना रखने हित, करें भूण हत्याएं।। १॥
कितती बहु बेटिकां अपना, परदा दुर हटाएं।
गेह पींगहे से उड़ जातीं, बन बैठें वेश्याएं।। १॥।

रंग रगीली छैल छवीली, फैशन अजब बनाएं। रूप जाल को बिद्धा युवकलग उसमें खूब फंसाएं॥ ६॥ यह सब देख नयनों सं, नेना नहीं लजाएं। हा ! अपनी समाज नेया की, गररे भर्च हुवाएं॥ ७॥

(परवार बन्धु)

महिलाओं की दशा

प्राचीन भारत में किस प्रकार महिलाओं का सम्मान और प्रतिष्ठा रही है यह विज्ञ पाठकों से खुरी हुई बात नहीं है। उनकी मानमर्यादा और जीवन सुख की ओर पुरुष समाज का पूर्ण ध्यान रहताथा। यदी कारण थाकि उन्हें पूर्णशिक्षित और ललित-कला-निपुण बनाया जाता था। निम पर गाहरियक जें वन के सुलपूर्ण होने का खयाल बलकर उन्हें स्वयं प्रौढावस्था में विवाह करने की भी आज्ञा दी जाती भी। बणिक्युत्री नन्दश्री ने स्वयं ही समार्श्रेणिक के गुणों की परीक्षा करके उनको ही अपना भावी पति हृद्य से बना लिया था। परन्तु समय ने पलटा खाया-भारतीयों के िला से भारतीयता और मनुष्यता जाती रही! व्यक्तिगृत स्वार्थ का भन उनके मन्धे पर सवार शागया। वे पापात्रित हा मनमाने अस्यासार करने लगे। मुसलतानी जनाने में महिलाओं की रक्षा की आवश्यकता थी । उन्होंने अपने प्रारम्भिक अधि-कार भी पृथ्यों ले हवाले करदिये। उधर मुसल-मानी विलासिता और कूटनीति ने पुरुषवर्ग को विळामी और दस्भी बना दिया। परिणाम यह हुआ कि महिलाओं के जीवन संकटापन्न होत्रये। वे वा-सनापूरी की मशीन ही समभी जाने जगीं। यह दुराचार यहाँ तक वड़ा कि अपरिषक्ष अवस्था

में ही कन्याओं को गृहणी बनाया जाने लगा। अपरिपन्ध शरीर को ले वे जीवन-ससार में भा बहुधा काल कपलित होने लगी। परन्तु पुरुष की पाशविक यूनि का अन्त क्यों कर हो ! एक के मरते ही दुसरी किशोरी को मोल ले आना आजकल रोजनरें का खेल करतव है। इस स्वाधीनता के यल भाज ५०-६० वर्ष के युद्ध भी प्राष्ट्रतिक विभूर होते हुए भी विघर नहीं हैं। परस्तु इन नरविशासी के पेशाचिक इत्यों से ३-३ वर्ष की अबोध बालि-काओं के जीयन नष्ट किये जाते हैं। जिन कम्याओं का सांसानिक ज्ञान भी पूर्णन हो, फिर भला बे कन्यार्थे किस प्रकार वैधव्य के कठोरदंड की भागी होसकतो हैं ! इस अमानुविक अत्याचार का दण्ड तो बुद्दे बाबाओं को मिलना चादिये। महिलाओं के प्रति किये अत्याचारों का अन्त यहीं नहीं हो जाता। यं विचाी एक सुशील भारतीय रमणी की भांति चुपचाप इस दण्ड को सहन करने के लिये उधन होती हैं। परन्तु नरियशाब यहां भी उनके जीवन-मार्ग के कण्टक बन उन्हें मध्य सुध्य हो कर डालने हैं। एक हितेथी महाशय ने इस संबन्ध की कतिएय घटनाओं का उल्लंख 'परबारबन्धु' के गतांक में किया है। यह लिखते हैं कि पिछले वर्ष हमारे सागर जिले में तीन बार घटनायें।पेसी हुई हैं जिनको देख सुनकर विध्याओं के संबन्ध में कुछ स कुछ नई व्यवस्था करने की आवश्यकता प्रतीत हुए बिना नहीं रहती। उन घटनाओं का संक्षेप यह है:—

"र-एक सउननने जो पिछले ही वर्ष सिर्घा हुत हैं-अपनी सगी विधवा कार्काका धममुण्ड किया और जन गर्भ रह गया तय उसे जबदंस्ती मुँग म कपड़े हु स कर और गाड़ी पर कसकर कही अन्धन्न मेजिदिया। एक गराब जैनी भाई को कुछ कर्यों का लंभ दंकर उसके साथ कर दिया। छुण्टी हो गई। काकी को जायदाद के अब एक तरह से सिर्घा जी ही अधिकारी हैं।"

"२—एक मोदी जी ने भी-जो प्रवीसक हजार के धनी हैं-अपनी काकी को ही नष्ट किया और जब उसके गर्भ रह गया तब उसे ५०) और थोड़ा सा गड़ना देकर अन्य न कड़ी भिजवा दिया। साब ही अपना पाप छुगने के लिये यह प्रसिद्ध कर दिया कि बह गर्भ उसके एक देवर का था यद्यपि घड सर्वथा निरुपराध है।"

''३—एक बहुकर जी-जिनकी स्वी मीजूर हैअपनी मीजाई को जिसे विधवा हुए अमी दो हो तीन
वर्ष हुए हैं विगाइ दिया। भव बह गर्मवर्त है।
पंचायत होने वाली है। वह क्या फैसला देगी सी
भायः सभी जानते हैं। विधवा सदा के लिये विरा
दरी से खारिज करदी जायगी और बहुकर जी
मन्दर जी को कुछ नकृद दण्ड देकर और एव सरदारों का मुंह मीठा कराके किर िराइसी में शामिल हो जावेंगे। सुना है, पिछले वर्ष एक दिन बहुकर जी को भएनी इसी मीजाई से भगड़ा हो गया था। उसने कहा कि क्या मेरा इस घर में कीई हक नहीं है जो तुम सुके इस तरह दुःख देते हो ? इ विके उत्तर में बहुकर जो ने गरज कर कहा था कि नेरा हक क्या है सो में चनलाऊंगा। तुओं विचाय कर इस घर से न निकाल दूं तो मेरा नाम। इत्यादि।

"%-एक साहु जी ने भी कुछ ही महीन पहिले अपनी विधवा भी जाई को विगाडा । उसके गर्भ रह गया। गर्भपात करने की दबाई दी गई, परम्तु दुर्भाग्य से बच्चा पेट में ही मर गया। डाक्टर बुळाये गये । आपरेशन हुआ। आखिर विधवा का प्राण मोक्ष हो। गया ! अभी अभी इस तरह की इसी जिले की ऐसी घटनाओं का और भी पता लगा है।"

करिये पाउकराण इस अध्यसता का भी कहीं ठिकाना है। यह अमान्तिक अत्याचार हमें क्यों नहीं मिट्टा में मिला दें गे ? परन्तु यदि कोई इस भयानक दशा की ओर समाज का ध्यान शाक-वित करता है, ता उस दशा पर गंभीर विचार करने के स्थान पर उस कहने वाले को ही उद्दा सीधी सुनाई जाती हैं! परन्तु इस बात की परवा न करके समाजहितं वियों का अब इस दशा का बोध प्रत्यंक ना नारी को करा देना खाहिये। नवा महिलाओं पर किये जाने बाले अयाचारी का अन्त शीघ्र ही कर डालना चाहिये। इस ही में इमारा अस्तत्व है। वरन् महिलाओं के अपमोनसे अवलाओं को आद से हम नंप्ट हो जांयगे । आजी टीन अ.लाओं का कहीं ठिकाना नहीं है। उनकी प्राचीन महिमा कही दिखाई नहीं देती। बहुं और उभने लिये विपत्ति के गहे खुदे हुये हैं । विचारी विभवाओं के जीवन तो मध्यता के पंजे में ही फसे हुये हैं। बाहरी गुण्डों बर्माशों के स्थान पर उन

के घर के लोग ही उनके धर्म और धन के दूशमन कने हुये हैं। ते नर विशाख उनका धर्म विगाड़ औरन कथ्ट करते हैं और धन हड़प कर किसी दीन का नहीं रखते! इसमें विचारी विध्याओं का कुछ भी कस्र नहीं है। यह अर भी अपनी महिता पूर्वत बनाये रखना खाइती है परन्तु पापी हुराचारी नरविशाख रखने दें तथ ना! अधि-कांग्र में पुरुषों की ज्यहंस्ती से, फुसलाने से अथवा अन्य प्रकार से ही विध्यायें पतित होंतीं हैं। इस हशा को मेहने का उपाय यही है कि पुरुष आति को कडोर इण्ड दिया जाय। जिस भाति स्त्रियों के प्रति कडोरता का व्यवहार किया जाना है. उसी नरह पुरुषों के प्रति भी होना खारियें। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार अपराधी पुरुष के लिये प्रायश्चित्त की व्यवस्था है उसी प्रकार स्त्रयों के लिये भी उसकी व्यवस्था होनी चाहिये। यह संभव नहीं कि स्त्रियों के लिये प्रायश्चित्त की व्यवस्था हो हो नहीं। तथा पंचा यभी नियमों को हुड़ करके वृद्ध विधाहादि वह कारण मेट देना चाहिये, जिससे विधवामों की सृष्टि होती है। वर कन्या के शिक्षित होने पर प्रीदा-वस्था में विधाह सबन्ध होना चाहिये। बिडामों, घीमानों और समाओं को इस और गम्भीरता के साथ घ्यान देना अत्यावश्यक है। उपका करने में जीवन के लाले हैं! महिमाशाली तीर्थ कर मसवनी महिला को सताकर कोई जीवित नहीं रह सकना!

--- एक समाजसेवक।



भगड़े की जड़ कहां है ?

इसा ठैंग्ड के प्रख्यात् िश्विच्याकय आक्स फर्ड में जो भारतीय विद्यार्थी शिक्षार्थ तिचास कर गर्ड हैं उन्होंने योजना करके भारतीयना के प्रचार हेतु बहां से हाल ही में 'भारत' नामक एक मासिक एक प्रकट करना प्रारम्भ किया है। इसके प्रथमांक में एक अंग्रेख विद्वान् ने किसी जाति की उन्नति के हेतु आवश्यक बतलायों है कि:—

"A community can be strong only when the many individuals who compose it have common interests to which they subordinate their personal desires and conveniences and private quariels when they have a certain measure of first in each other and their leaders and when maintain their will un-weakened insuite of circums tences on the lapse of time."

भाष यह है कि कोई भी जाति तब ही शक्ति-शाली हो सकती है जब उसके अनेक व्यक्तियों के उद्देश्य एकसे हों, जिनके समज्ञ वह अपनी निजी इक्काओं, सगमताओं और भगडों का अन्त ,करहें तथा उनमें भाषस में किसं। इट तक और नेताओं में भा विश्वास हो। साथ ही उनका यह विश्वास किसी भी अवस्था अधवा कालान्तर में शिधिल महीं होना चाहिये। पेली अन्नकाओं में ही किसी काति की उन्नति हा सकती है और वह शक्ति गाली हो सकती है परन्त्र भारत के साथ जैनियों में भी इसके विपरीत अवस्था हो रही है। यहां उहं श्य एक से होते हुए भी उनके समन्न अपने व्यक्तिगत विचाती, आकांक्षाओं और विक्रंप की विलग नहीं किया जाता है। तिस पर भारतके विषय में अवश्य ह। इस ओर कुछ आशान्यत चिन्ह द्रारिगत होते हैं, परन्तु जैनसमात में घार अन्धकार ही चहुंओर चिलाई देता है। यहां प्रत्येक विचार और जाति के उद्देश्य एक ही हैं। सब यही चारते हैं कि जैनधर्म का प्रचार हा और जैनसमाज की उन्नति हो। हां, यह अवश्य है कि इनकी सिद्धि के उपायों में मत भेर हो। कोई किसी चीन से उनकी सिद्धि सन-भता हो तो अन्य दूसरी प्रकार ! परन्तु वह मतभेद हमारी सिद्धि में बाधक नहीं हो सकता यदि है। उक्त प्रकार अपनी इच्छाओं, सुगमनाओं और भगडों को उसकी मार्ग का रोड़ा न बनाई। पास्पर अधि-इवास करने और नेताओं के प्रति असतुबुद्धि रावन से कभी भी किसी गाति की उन्नति नहीं हो सकती ! आज इन निजी वार्तों को हम सर्वोपिर स्थान दिये इए हैं। इसी कारण हम में उग्स्पर भगाई चल रहे हैं। अविश्वास के कारण कोई भी कार्य जात्युकृति का नहीं हो रहा है। शेडकाल से उत्पन्न हुए भगड़े का शान्त करने के लिये भी इन्ही व्यक्तिगत बातों को अगाडी रकता जारहा है। नीर्थभक्त शिरोमणि

कां व देवीसहाय जी ने कतियय शर्मी की ही सब प्रथम स्वीकार करने को जोर दिया है। हम रही समभते कि सारे भारत के सबं विचार और जा-तियों के मनुष्यों ने किस समय यह अधिकार लाला जो अथवा अन्य किसी ध्यक्ति व मण्डली को दिया है कि वह अपनी ओर संही समझ भारत के ीनियों की प्रतिनिधिक्षका 'सूत्रा वर एकाधि-पत्य स्थापित करलें और अपने व्यक्तिगत मनो-भ!वनाओं को सर्वोपरि स्थान दें ! इस प्रकार कभी भी भगड़ा मिट नदीं सकता और शान्ति स्थापित नहीं हो सकती ! शांति स्थापित तब ही हो सबती है जब व्यक्तिगत अहत्त्व को त्याग दिया जाय और असत्य एवं असभ्यता के चर्नाच से धरहेज किया जाय। इस समय शान्ति स्थापित करने के लिये सर्व प्रकार के. सर्व जातियों के और सर्ववित्रारी के राज्यों प्रतिनिधियों का एक सरमेलन होना आयण्यक है तथा उसमें इन सब बाती का स्वष्ट निर्णय हो ग्राना चाना चान्य जिनसे परस्पर मनो-मालिन्य बढने की सम्भावना हो। भगडे वी जह व्यक्तिगत इच्छाञ", सुविधाञा और मनोमालिन्यौ को सर्वोपरि स्थान देने में है। कमसे कम नेताओं में तो इनका (अभाव होना चाहिये। हाला जी की यदि बन्तुतः शान्ति असीप्ट है तो सर्व प्रकार के नैनियों के प्रतिनिधियों का सम्बेळन एकशित वर नेमें प्रयत्नशील होना चाहिये। बरन् कोरी वाली से कुछ नहीं बनता है। परियद की ओर से श्रीयृत खबरे बकील को इस प्रकार पेक्य-याजना के लिये नियस किया गया है। आशा है वह भी इस ओर च्याम वेंगे और भगाई की जड़ अहंत्य और अबि-ज्वास को मेटने में अवसर होंगे। कतियव हरी

पंडितों की भी समाज की दशा पर यथा लागी वाहिये। वस्तुकः उन्हों की पकपशीय हउता काप्रिथ्या विश्वास का परिणाम यह दुःखद कलह है।
और यह मानी हुई बात है कि अविश्वास किसी
स्वार्थ के भय के कारण ही उत्पन्न होता है। परंतु
हम विश्वासतः कह सकते हैं कि जेंगसमाज में
पंडित और अन्य सर्व प्रकार और परिस्थित के
स्थितियों की उन्नित का ध्यान एक बास्तिक प्रकार के भयवश अविश्वास और मनाभावनाओं को सर्वेपरि स्थान देना आवश्यक है।

क्या लोक व्यवहार परिवर्तन-शील नहीं हैं ?

भगवान महाबीर क्षीमें जो कल्याण कारी उप-हेश दिया, जिसको कि हमारे पृत्य भाषायों ने हम तक अपनी सदुकृतियों हारा पहुंचाया है, वही आगम है। उसी बागम के पाठसे हमें बात हाता है कि भगवान में बहन्में एकसं अिक गुण बतलाये थे जिसही के कारण उनके दिव्य शासन की असे कान्त प्रभुता सर्वत्र स्थाप्तहै । उन्हों ने वस्तु ि श्रति इतमें बनलाया था कि प्रत्येक दर्द के मुरु मुल अथवा उनके अस्ति व का नाश नहीं होता, यद्यपि उसमें परिवर्शन अवश्य उप स्थल होते रहतेहैं। इस्त्री दिशि से उन्होंने प्रत्येक परार्थके स्वभाव निर्णय का निश्चय ह्रव दिया था और उसके विपरीतको व्यव हार कहा था। यही कारण है कि हमें जैन शास्त्रों में सर्वधा इसही दृष्टि का कथन मिलता है। परन्त कु:सा है कि अब कतियय पंडिनगण अपने निजी मन्त्रच्यों और शृह अधीं की सिद्धि के लिये इस

सिखाम्त का भी अनर्थ करने को उतार हुये हैं-सो भी धर्म और आगमको दुदाई देकर । वह कहते हैं कि व्यवहार में परिवर्तन हो ही नहीं सका। जैनियों को लकीर के फकीर धना रहना लाजमी है। यह एकाम्तपश किस प्रकार जैन भागम के अनुकूछ हो सक्ता है यह पाठकराण स्वयं विचार सक्ते हैं। जैन धर्म में एकान्तपक्ष मिख्यात माना गया है। ऐसी अवस्था में अवरिधनंनवाटी घनमें की सम्मति हेना किस प्रकार युक्ति युक्त और कार्य संगत हो सका है ? श्रीमद् उमास्वामि जीने वस्तुको उत्पाद,धीःव व्यय बुक्त व्यवहारमें बतलाया है! फिर यह कैसे माननीय हो। एका है कि लोक व्यवहार में अन्तर ही न पड़े उसमें परिवर्तन ही न हो ! किसी मन्त-ब्यों के अर्थ धर्म वाक्य का भी अनर्थ करका भले ही कतिपय पंडितों को शोभता हो परन्त हम उसमें उनकी हानिके साथ २ समाज का अहित और जैन धर्म की अपुभावना को ही पाने हैं। लोक स्वत हार में प्येक वस्तु की उत्पति स्थिति और नाश होना अप्यम्भावी है। इसलिये संसार का कोई कार्य जिसका सःवन्ध व्यवहार से है-कभी भी एक रूप में नहीं रह सकता। उसमें परिवर्नन अवश्य उपस्थित होजायमा । यही कामण है कि हमें भिन्न भिन्न समय के आजारों के विवरणों में किन्हीं बातों का शापमा भेद मिलता है। एक आचार्य एक प्रकार आध्क के अध्यम् छ गुण बनस्ताते हैं तो दूसरे अन्य प्रकार हा। ऐसे ही और बातें समभी जा सकती हैं विशेषांकमें बाबू हीरालालकी ने अधने लेख में जैनाचार्यों की साहित्य श्र्मात किस प्रकार समयानुसार बदलती रही है यह प्रश्यक्ष दरशा दिया है। यदि जैनागम में अपरिवतनबाद को ही मुख्य

क्यान मिला होता तो जैनाचार्य कभी भी नवीन रीतियोका अनुसरण न करते।परन्तु धह बात एसी नहीं है। उसी कारण रहा है कि महासभा के प्रारं-क्षिमक जमाने हैं पंडितों ने जैन जनता को नवीन बातों को अवनाने और लाक पोदना छोड़ने के उप-हेश दिशे हैं। इ.शं पर गोपालदास जी के सम्पा-इकत्व में प्रगट हुए "जैनमित्र" का फायल इसकी साही से भरपूर है। परन्तु आज उन्हीं के शिष्य कतिपय परित्रमण अपने निजी मन्तःयों की सिद्धि हेत् ध्यार्थता के विषरांत कहने भी तत्पर हागये है।यह भी इस परिवर्तनशीलना का प्रमाण है। र्जन-काल-विभाग-सिकास्त ही स्वयं स्टान-ध्यवदार की परिश्वतन/लिता को लिह करता है । भगगान महाबीर ने उस हा लिये द्वस्य. क्षेत्र. काल भाष के अनुसार वर्शन करना उपयुक्त वनलाया है । अज जो कनिएय पहिलां के बर एकाम्ला विकार हथे हैं उस का फारण सामाजिक परिस्थिति है। पेडितरह फहता है कि आंब मीसे चुपचाप चहं चला-द्राय, क्षेत्र, काल, साथ की और ध्यान ही सन दी। बाबू दल फरता है कि स्वयाज की दशा शोचनीय अधान्नव हो रहा है-उस की रक्षा के लिखे बच्च, हेब, काल भाव के अज्ञासार कतिएय रक्षा के उपायी की अपना लेता चारिये । इस ही बात को लेकर फितियय पंडिल मुख्यतः अपने निर्मा अधी श्रीर मन्त्राणीं को द्वृष्टिकाण करके अपरिवर्तन-बार का दिक्षारा पोटते हैं ! यह कितनी दःखद और लक्षाजनक यात है ! जैम समाज का सामा-जिक स्यवहार भी सर्वेच एक सा नहीं रहा है यह पत्यक्षतः हमारे शास्त्री सं प्रभाः है। अगवान

महाबौर जी के समय में विवाह सम्बन्ध यही गह-रथ का मुख्य सामाजिक नियम है-सर्ववर्णी में होता था। एक अश्री कस्या वैश्य से विवाह करती थी और बैध्य कन्या क्षत्री बर से । इसी तरह अन्य वर्णों में सम्भिये। सम्राट भ्रेणिक का विवाह ने श्य पूत्री स, वैश्यपत्र भायक्रमार का विवाह अजी पृत्र से और वैष्य पृत्री तुंकारी का विषाह बाह्मण सोमशर्मा सं दुवा था. यह स्वाध्याय प्रंमियों से छिएं हुये दण्टान्त नहीं हैं। फिर सम रतभद्राचाय के उपलब्द ब्रहस्थाचार गृथी में प्राचीन रत्नकाण्ड श्राडकाचार में श्राडक की लांक व्यवहार की कियायों का कुछ उल्लंख ही नर्डा मिलना है बिवाह-शादी का जिकर ही नहीं किया भया है। उपरान्त श्री जिनसेमाचार्य सम-यान्सार बाह्मणी के पायल्य के कारण पासीन विवाह नियम में सशोधन करते हैं और अनुस्रोत िवाह होना युक्ति युक्त ठहराते हैं। अगाइ चल कर मेघाबी आदि आचार्य केंदल ऊपर के तीन वर्णा म हा उसे सीमित कर देते हैं। फिर भारत में कैमा राज्यने निक विष्ठव भाषा यह सर्थ पकट है। उस कार म पाररूपरिक मनोमालिख दिस प्कार बढ़ा यह इतिहास पुरिन्धों से छिपी हुई बात नहीं है। इस मध्यकील मे-मुसलमानी जमाने और उपनात के में आपसी मनोमालिन्य के यल मई २ जातियां यहती गई और वह मत भेद, देश भेद अधवा शितां भेद की मुख्यता देकर अलग २ रंठी वैंडा रही। जैन जाति से भट्टारक सहीदयी की अध्यक्षना में यह पंभद अधिक विहे हैं। श्रीव इस्ट्रमन्द आवार्य अपने मातिसार प्रथ भट्ट एका का एक यह भी काल चनलान है। पश्चिमकः बही

विवाह संबन्ध यणं में ही नहीं प्रन्यून उपजातियों में जो बहुधा एक वर्ण के बरा ही है क्सीमित हो गया। कदिये पाठकम ग ! अब यह कहना कहां तक युक्ति-संगत है कि लोकव्यवहार में अन्तर उपस्थित नहीं किया जा सकता। षड सदैव उस ही कपमें रहेगा। चिवाह नियमको ना हम बिलकुल बदलत हुए देखते हैं। ऐसी अवस्था में बाब्दल का कतिपय आवश्यक सुधारी को सनाज रक्षार्थ उपस्थित करना शास्त्र-सन्मत है। उनका यह प्रयास शास्त्रों के नियमों को उल्लंदने का नहीं है। एक आचार्य तो साफ कहते हैं कि जैनियों को वह सब लोक व्यवहार मान्य होंगे जिनसे सम्यक्त में बाधा नही भानी हो। इसका बल्लेख एं० लालाराम भी ने सागारधर्मामत में किया है। ऐसी अवस्था में पारस्परिक भगड़े की जड़ बाबुओं पर शास्त्रसिद्धांत बदलने का भूठा आक्षीप कभी नहीं होसकता। भगड़े की जड़ तो उक प्कार ही है। जो किसी भी जानि व मनस्य को शोमनीक नहीं है। न इसमें उस जाबि की अलाई हो है।

--- उ० स० ।

दमन का दुष्परिणाम !

संसारमें कहीं भी कोई दमन द्वारा स्थाई सफ-छता को प्राप्त नहीं कर सका है। इतिहास इसका साक्षी है। दूर जाने की आषश्यकता नहीं। सन् १६२०-२१ का भारत ही इसका प्रमाण है। भार-तीय सरकार की दमननीति ने धसहयोगियों को अपने पथसे शिखलित नहीं किया। प्रत्युत वे और

अधिक यंग के माथ असहयोग-मार्ग का अवलंबन लेते गये । अकालियों का सत्याप्रह और बंगाल आर्डिनेन्स की दमन नीतिका परिणाम भी हमें यहीं द्रिष्टिगत होचका है। ऐसी अवस्था में दमन नीति से इप्टसिकि की श्रामा करना दराशामात्र है। उस का परिणाम कदक हो निकलता है। जैनसमाजमें भी एक दल ने दमनतीति को हो अपनी मनौरध सिद्धिका अन्य करार वियाहै। यह उस हो के बल अपनी सत्ता धाक और समाज की भराई होते देखना चाहता है। परन्तु दमन का सदैव दुष्परि-णाम ही होता है। आजकल सामाजिक अधीदशा को संभालनेके स्थानमें पारस्प स्क कल्पता बढाने के प्रयत्नों में ही शक्ति व्यय की जारही है। विध-वाओंकी दशा सुधारने के स्थान पर जो उस ओर ध्यान आकर्षित करता है उस पर विश्ववा विश्व प्रचार का भटा लांछन लगाया जाना है और उसे समाज की दृष्टिसे गिराने का प्रयत्न किया जाना है। परन्त् इसका परिणाम विषम होगा वह व्यक्ति जिसका हृदय शह है और जो बस्तुतः विधवाओं की हृदयिवारक दशासे दःखित है फर्म भी किसी की नजर से नहीं गिर सकता है। उल्टा फल यह होताहै कि उसके विधवाधियाह प्रचार न करने पर भी इस दलकी इस इमननीति और भूठे लांछन के कारण समाज में विश्ववाविवाहके कीट।ण प्लेग की भांति फैलना संभवित होजाते हैं. क्योंकि यह स्पष्ट है कि अिकांश विधाशकों का जीवन ऐसे वाता-बरणमें है कि उनका पूर्ण शुद्ध जीवन स्थतीत करना असिदुष्कर ही है इस ही कारण पैसी विभवायें तथा अ यायिक इन द्रमनचोषकोंके विश्ववादिवाह प्रसार के भड़े लांकन से उहटा ही भाव लगा हैते हैं इस

क इस ब्यास्था की पृष्टि में मेरी एकट होनेवाणा युस्तक 'सैनजेस संग्रह'' देखना चाहिसे ।

ही प्रकार इव्शीतलप्रसाद जी के पृति इन लोगों ने अवना अब-पहार किया है,परस्तु इस दमन का भी उल्टा ही फल होगा। ब्रह्मचर्यांचस्था में रहते हुए हर ती सहाचारी ही रहेंग और जबिमक्के उपयागी रहते हुए उसको सबही अपनायमे । परिषद् ने पेसे 'धर्मदिवाकर'को 'बीर' का मुख्य सम्पादक प्रारंभ से ही नियत कर रक्ता है यह उसके मेम्बरी की गुणगाहकता का परिचायक है और हमें इसमें गर्व है। वस्तुतः ६० जी'धर्मदिशकार' ही रहेंगे। इसके विपर्गत दमन का फल कछ हो हो नहीं सकता। परन्तु समाज में अश्टङ्कलना अयश्य बहुती है। इस लिये यदि इस दल को समाज की भलाई का कछ ध्यात है तो ऐसे इस दमन से अन्त्र का स्थाग देना चारिये और मगधान के दिष्य चरित्र का अनुकरण करके पं मपूर्वक दितमित वाणी से उन सब जीवों का कत्याण करना चाहिये जो सन्मार्ग सं भटक रहे हैं। अविश्वास आर निज अर्थी का भय करना केवल मिथ्या धारणा और को ी कल्पना है। घूणित विधानियाह को यदि समाज में फैलने सं रोकना है तो फुठे लांछन लगाना छोड़कर विध-वाओं की दशा सुधारने के उपाय में लग जाइये-उन कारणों को मेट दीजिये जिनसे विधवाओं की सस्या घडनी है। वरन् याद रखिये इस दमन का इप्तरिणाम आपको और श्रीपके समाज को चलना होगा। क्योंकि कुड़े को दबाने से दुर्गन्धि दुर नहीं होती। अवभी समय है चे र जारये-संभल जार्ये-भू भी चर्च की रहा की जिये।

दि॰ जैन समाज की उपजातियों में सम्बन्ध

जो भाई जैन समाज की रक्षा के लिये उत्सुक हैं और गम्भीर विचार वाले हैं उनका यह मत हुद् हो रहा है कि जिल्ल २ उपजातियां कायम रहते इए भी उनमें उसी तरह सन्बंध हो सकते हैं जैसे भिन्त २ गोत्री में होते हैं। योग्य पृंह सम्बन्ध होने के लिये व मेल वढाने के लिये व छाटी २ जातियी की रक्षा के लिये इस प्रधा का चलाना बहुत ही ज़हरी है। देहली में 'ज़िन-सेवफ-संघा रस लिये स्थापित हुआ है, जिसकी धागडोर परमोपकारी बाद्य श्रामितपसाद वकील ने हाथ में ली है और सय से पहले इसी काय के चलाने का बीड़ा उठाया है। अब उचित यह है कि जो २ भाई इस कार्य को करना ठीक समभते हैं उनको चाहिये कि वे अपना नाम व पता उक्त संघ के दफ्तर में भेज देवें। सध को उच्चित है कि रजिस्टर में शीध ही १००० पैसे नाम नोट कर है, किर उन्हीं की सन्तानी का भिन्न २ उपजातियों में सम्बन्ध करावे। इस में सन्दें तही कुछ वर्षो तक जाति के पचायती मुक्सि देसा करने वाली को जातिच्युत करेंगे। उस समय इन १००० भार्यों को पम्हपर एक गहने का बल प्रगट करना होगा। इस महत वल के सामने यह जाति का यहिष्कार सीति का ढंग थोडे दिनों में बन्द हो जायगा । जो समाज में बीर सन्तान चाहते हैं उन को अपमे २ नाम शीध लिखवाने चाहिये तथा रूप को उचित है कि दौरे पर परोपकारियों को भेजक माम नोट करें। -- समाहस्

-- 30 सं01

परिपद् समाचार

जैन कसारी में चुनः जैनधर्म प्रचार ।

रिपोर्ड प० पूभा चन्द्र पूचारक

में यहां पर १-४-२५ को आया था उसी दिन क्री० पण्डित कीतागम विश्वनाथ आगर कर से मिला पण्डित जी शिराम श्रम करने वाले उन ध्यक्तियों में हैं जिनके हृदय में समाज की अधनत देशा की गहरी चोड़ हैं।

क्षर्र दिन तक्ष पं०जी से नथा श्री मृत्यस्य कप बाद जो परवार गेथा किस्र्य मुझालास जी आदि सं मतेक्य होते पर यह बात चलती रही कि कार्य किस प्रकार से प्रारम्भ किया जाते । अन्तनः बही ते बुझा कि पहिल उन्हीं का(जैन कलारीं का) संगदन करना ठीक है।

साथ सं पहिलं में उपयुक्त सण्जानों के साथ बातुदेव गांव के पास गया जो आजकल Medical College में पहुंते हैं उन्होंने पूर्ण सम्मति पर्ध बन्सह प्रगार किया नथा सहायता देने का बन्धन विद्या । फिर क्ष्मशः इंग्लिकार, गंपाल साब, हरोगा जी, डोंढ्या जी पहल्यान, सीताराम जी पाउन, पण्यत्न गांव, पुण्यलीक, मुलसीराम जी, क्षं खपाल, धांचुग्ह्न यनपुरका एवं नाग्यण साव नथा दाकर खंगार आद से परिचय हुआ और यथास्थान बराबर धार्मिक बातों पर प्रस्यं क अवन में बहस हुई प्राया सभी सज्जान हम कार्य से अस्त हैं। उपयुक्त सब महाशय शिक्षित नथा पुत्रस्व साली हैं।

जैन कलाओं में कई इस हैं।

- (१) जो मंकराचार्य (शारदापीट) के आदेश से अपने को दिन्दू कहते हैं। और कळार से पहिळा जेन शब्द निकालना चाहते हैं।
- (२) जो करने हे कि हम आपके मिन्दर में भी आवेंग। मद्य मांच आदि भी छोड़देंगे अपने की जैन कहेंगे च लिखेंगे परन्तु राम, कृष्ण, हनुमान शकर, बुद्धा, विष्णु की पृता भी करेंगे।
- (३) जो जिनालयं पृषेश की आज्ञा जैनियी से पाकर सम्मिलित हो जाना चाहते हैं।
- (४) जान इध्यर के हैं न उध्यर के हैं जिनका कुछ भीनिश्चय नदी है।

एक ब्रह्मचारी जी मेनूर पृति से आये हैं उन का काना है कि कुछ प्रभावशाळी व्यक्ति परबाद तथा इनर समाज के और कुछ जंग कलार जाति के लकर आप घर घर जैन कलारों में आध्ये और धन सम्रह करिए इस कार्य में ६ मास सी लग जाने नो थोड़ हैं क्योंकि ऐसा किसे विना संगठन पृष्ट नहीं सकेगा।

थाज से ऐसा ही करने का िचार है। किरनु हथानीय प्रावशाली स्पक्ति इस कार्य में बोग नहीं देने केवल मुलचस्द क्षणचन्द जी तथा सि॰ सुश्रात्मक भी का उत्साह प्राचनीय है।

यहां ीन कलार समाज के ३०० घर २००० संख्या है। यह केन्द्र स्थान है इनके जैनधर्म प्रहण करने से समस्त जैन कलार ज्ञानि जो नागपुर के आस पास मामी में कितने ही सहस्र संख्या में है जैन धर्म धारण करलेगी।

मोट-जैन धर्म प्रियों से क्षिम है कि परि-

षद्र को भन सं पूरी सहायता है ताकि यह जैन कलारों तथा अन्य ऐसी ही जातियों में जो जैन धम से विमुख हो गई हैं पूजार का काय वेग सं कर सर्वे।

रतनलास मन्त्री, परिपद्य ।

रिपोर्ट दौरा पंचरत्न परिडत प्रेमचंद जी प्रचारक

१६ अमेल से ३० अमेल नक

पहिर्मा (अजयगढ स्टेट)—दि० जैनलाया १५० है, ३ शास्त्रस्था व एक जातीय सभा हुई। १२ पुरुषों ने स्वाध्याथ ६ स्त्रियों ने दर्शन करना पूजन व शास्त्र अवण का नियम लिया। आतिश्वामित व अस्तील गाने की प्रधा बन्द करने ब धी मन्दिर जी में शुद्ध खादी के ही दुपटटा घोती घडा स्वनं का वचन दिया। यहां एक जैन पाटशाला है, भयन्य पाटशाला का उत्तम है।

वड्वारा (अजयगढ़ स्टंट)—१६ अमेल की पहिरम के ३ लात्र सहित पहुंचे। मिन्दर में सभा हुई। ४ माइयों ने स्वाप्त्याय का नियम लिया तथा ख्यातिशवात्री व अक्लील गाना बन्ट करने का बचन दिया। यहां जैन संख्या २५ है, प्रक्षाल का प्रयन्ध ठीक नहीं है, सिधई मन'यांग्लाल जी को ध्यान देना चाहिये।

नागीद स्टेंड-२० अप्रैल की पहुंचे। यहाँ की जैस जनता में धर्म का प्रेम कम है, बुलाने पर भी स्थान में धोड़े पुरूप आये। सेठ गजाधर जी महाँ के मुलिया हैं उन्हें विशेष ध्यान देना चारिये। महाँ स्थानी प्रचारकों को आना चादिये। सतन।— २२ अर् ल को पहुंचे। शास सभा हुं। यहाँ पर महाबोर दिगम्बर केन पाठशाला व महाबोर दिगम्बर केन पाठशाला व महाबोर दिगम्बर केन पाठशाला में धार्मिक ब लीकिक मिक्षा दी जानी है ५० छात्र पहुंने हैं। बीवधालय पं भी प्रति दिन ३०-५० रोगी द्वा लंते हैं दोनों सहयाय ठीक हैं यहां पर स्वध्याय करने व शास्त्र अवण का प्रेम है औषधालय का १००) मासिक के लगभग व्यय है ५ सको सिंघई धरमवास भगवतद्यास की अपने प्रसक्त देते हैं।

रीवां स्टेट---र्भ भपेल को पहुँ से श्रावक धर्म पर व्याख्यान हुआ यहाँ स्वीध्याय का पूजार है शास्त्र सभा बन्द भी दुवारा बाल कराई। प्रधा-यत ने आतिश्याजी स अश्लील गाना बन्द करने का बचन दिया। यहां दो मन्दिर और १ शैर्यालय है। एक मन्दिर में श्री शीत्तल्लनाथ की १० फीट उन्नी खड़ ।सन प्रतिदिम्ब है जो शहाराजा राधां की दुवा से मजगंज (रीवां) प्रशाह से लाई गई है।

पन्ना स्टंट—२५ अ ेल को पहुंचे। दो सभा हुईं, समाजसुधार पर ध्याख्यान दिया, भाई बहिनों ने स्वाध्याय करने व स्वनने का बचन दिया, पचा-यतमे अश्लील गाना व कन्यानिक्य व आतिशवाजी बन्द करने का प्रस्ताव पास किया, सिंघई बलदेव प्रमाद ने अपने ध्यय से एक जैन पाठशाला चला रक्वी है। पिष्यद के कई सभासद हुए तथा परिपद को हुं। की सहायता प्राप्त हुई। बुन्देल-खण्ड में शिखा की कमी है, सिंघई बल्देव-साइ जी को शिक्षाप्रचार का विशेष प्रयत्न का ना चाहिये पन्ना में हीं। की बान है, जैनी भाई अधिक तर ही। का ही ध्यापार करने हैं।

साहित्य समालोचना

(१) दुः विन पुकार म्० (२) कैन लाब-नीवहार मू० (१) एव्ड १६ (३) जैन नारी मंग-साचार मू० (१) एव्ड १६ (इन पुस्तकों के रचयिता और प्रकटककों बाबू पी० सी० जैन. मार्ताकटरा आगरा हैं। इन सब में सामाजिक दशा को लक्ष्य कर विश्विधराग-रागनियों में उसी हग के शिक्षा प्रव भजन दिये हुये हैं जिस हंग और लग में साधारण जनता अन्य गीतों को गानी है। समाज में इनका प्चार खूब हो सका है और उससे समाज सुधार के कार्य में सहायता मिल सकी है। इस हेनु प्कार कर्ता धन्यवाद के पात्र हैं। पृत्येक गुर में इनकी पहुंच होना साहिये । उदाहरण में देनिये:—

"ाचरज देलियोरी. बांधी ऊँट गलेमें बिएली। टेका। साउ बाप को बृढ़ों बरना,सान बाब की लएली। उन्हें दांत गाल पिचकेसे,वड़ी पेट में तिल्ली अला। लटकी चाल देहकी सारी,मुख पर पड़ गई फिल्ली। डाढ़ो मूं छ कटाय बालरग,याबा वने विल्ली।। मोदर बाव के चले गांध के, लाग उड़ावें खिल्ली। "पुर स्वर" (स सायमें सुका,इनको इंडा गिएली।।

र्जनशास्त्र में स्त्री के पुनर्विवाह की आहा— शीयक छोटासा ट्रेक्ट उक्त महोदय से बिना मृद्य मिल सका है। यह 'जानि पूरोपक' से उज्जन है। रत्तमें पुकाशक ने सन् १६२१ में बालविधयायों की संख्या इस प्रकार बनलाई है :—

पृत्रपंते कम आयुकी१५१६८ पृ , १० वयंतक की १०२२ म १ १० ,, १५ ,, ,, ५०६१०४ १५ ,, २० ,, , ५१७ म १०

सत्यार्थे दर्पेश-छेबक आ अजितकुमार शास्त्री । पुकाशक लाळा देवी सहाय जी फिरोज-पुर हैं। सुरुप क्षात नहीं। पृष्ठ २ + १५३० छपाई सफाई उत्तम । परन्तु कहीं २ शीघना के कारण छ। एंकी कालव पर्सक्तीभी चढाई गई है। इस में सत्यार्थ प्रकाश के १२ वें समुक्लासा का यथाथ उत्तर थिशेष विवेचन सहित दिया गया है। विद्वानों को पढ कर सत्यार्थ प्रकाश के पाठ से पारत मिथ्या भजान को दूर कर छेना चाहिये। तथा आर्यसमाजियों को गारिस्परिक प्रेम वृद्धि के हेतु सत्यार्थ पुकाश में इस पुस्तक के अनुसार समुचित संशोधन कर हेना चाहिये। यह पुस्तक मथुरा की क्रम्म शतार्थी महात्सव के सवय वित रण करने को हो उक्त लाला जी ने अपनी और से प्कट की थी। ज्ञात नहीं यह यहां वितरण की गई थीया नहीं।,



जैन-सेवक-सङ्

् बा० अजिनश्रसाद बर्स्स्ट, जैनेन्द्रकुमार और ला० जौद्ररीमल सर्राक के आमन्त्रण पर ७-४-६५ को शुभ बोरजयन्तीकं दिन देवलीमें एक Workess Conterect (संबक सम्मेलन) पूर्ण सफलता के साथ समाप्त हुई। आमन्त्रण के आराय के अनुसार 'संबक-संघ' का भी संगडन कर लिया है। उसके उद्देश्य दुस प्रकार हैं ---

१—देश की पृगति के साध जैन समाज की उन्नति करना।

(अ) सामाजिक कुरीतियों का निवारण। (आ) देश और समय की आध्रयकतानुः सार उच्चित शिक्षा-पचार।

२-कम से कम १ घंटा समाज सेवा के लिये निकालने के लिये लोगों को तैयार करता। पृथ्येक जैन स्त्री—पुरुष संघ के पुनिकाषत्र पर हस्ताक्षर करने सि इसका 'संघ'त' हो सकेगा जो १० वर्ष या उससे अधिक बय का हो और जो कम से कम १०० घंटे पुनिषषं समाज के दित के लियें देने को तैयार हो। संघ के इस बर्ष के पूंग्राम में ३ बाने हैं-

१-तताप जैन जाति में रोटी-ब्यवहार।

२-वर्णान्तर्गत जातियोमें पारस्पिक वि 🗻

३-सम्र का फंड जिसकी ३ शाखाएं हों
अ. पृथासफंड आ. पत्र-फंड, र. सेटक फंड
इस वर्ष संघ के अधिकारी बा॰ अजितपूसाद
बा चुने गए हैं। संचालक ४ सदस्यों में महालमा
भगवानदीनकी और ए॰ अर्जुलालजी चुने गये हैं।

-मन्त्री 'संवक सध'

महात्मा के महावाक्य !

बार्वा के गऊ रक्षा सम्मेलन में जो उत्पार
म० गांधी जी ने प्रकट किये हैं उन पर प्रायंक
भारतीय की ध्यान देना आवश्यक हैं आपो कहा
था कि केवल कसाई की छुरी से बचाने में ही
गऊ की रक्षा नहीं है। अधिकांश दिख्दू घरों में
गउवों के प्रति बड़ी निद्यता का व्यवहार होता
है। गऊ रक्षा के प्रति यदि सब्बे भाव हैं तो गऊ
की प्रत्येक अवस्था में रक्षा करना चादिये। इस
ही समय मी० शौकनअली ने भी इसका समर्थन
किया था। कहा था कि में यद्यपि मुसलमान हैं
परन्तु गऊ को उस ही पूज्य हुटि से देखना है
जिससे कि हिन्दू। मोलाना के इन वाक्यों से
हिन्दू मुस्लम एवयता है छहने की क्या हम

आशा करें ? हिन्दू और मुस्लिमानी की इन शब्द का पत्रिश्रता की अनुभव हत्यदुम कर लेना खार्रिये। मी० साहप की भी इन वाक्यी की कार्य का में परिणति करके महत्व पंकड कवा अत्यन्त भावश्यक है । उपरास्ततः आज कल महात्मा जी देगाल में पर्यटन कर रहे हैं। कलकर्स में आपका भपूर्व स्थागत हुआ था। आपने वहां रखनात्मक क यं कृम की पूर्ति पर जार दिया । कहा चाहे तिस विचार के आप हा परन्तु आप से मेरी यही प्रार्थना है कि रचनात्मक कायक्म की संकल बनाइये। पाउकों को महात्मा की भावता पूर्ति के लिए अवश्य ही स्वदेशी का नियम तथा चर्ला चलाने की प्रतिज्ञा स्थाकार करना चादिये। म० जो ने परस्पर मेल वृद्धि के लिये अवने विचारों के प्रतिकृत स्वराज्यपार्टी के पक्ष मे निर्णय दे दिया । जैनसमाज में भे मसूद्धि हेतु इस स्यागभाव को अपनाना चाहिये।

— जैन संगठन सभा - देहली का प्रथम बा-विकोस्सव न, ३ जून १८२५ को माननीय बान प्यारे काल यकील के सभापतित्व में ईंडली में होगा। बड़े २ माननीय विभाग बनेता निभन्नित विभेग सं है। सपाज हिनेपियों का अवश्य प्रधानमा जातिये।

-- नीवद्या सभा आगरा का पांचवर वा

विकात्सय ता॰ ६-७ अप्रैल सन् २५ को "श्रीमहा- वार तीर्थक्षेत्र पर रायबहादुर बांव नन्दमल जी के संभापितस्य में सफलता पूर्विक हो गया। इव शानिलप्रसाद, बाव ऋशंभदास, लाव फुरुजारीलाल आर्त् र मान्यपुरुष पधारे थे। इ आवश्यक प्रस्ताय पास हुए। जर्कया (पेंडन) बलिहिसा यन्द करने के लिथे समाज के कई महामान्य पुरुषों की हेवु- टेगन नियुक्त हुआ। लगभग १०००) बन्दा एक- जित हुआ!

—हीराबाग धर्मशाला बम्बई मंगन अर्थेल मास में ७२६ दिगम्बरी ६५ प्रवेतान्वरी ७७० जिन्तु और वसक प्रभालाल श्रीपधालय में १८६ दिग-म्बरी ५० प्रवेताम्बरी ५८१ हिंदु कुल ६१७ नये रोगी और ३२५७ पुगर्व गोगियों ने लाभ उठाया।

अहिंसाप्रेमी भाई ध्यान दें।

उद्देशाया के शरिसा विषयक टैक्ट सभा के कीय में करीब ए समान होत्तुके हैं, क्या कोड तथा प्रमा भाई रहम के उत्पर अच्छा सा ट्रैक्ट उद्देशियान म तथार कर अंजन और उसकी छवाकर वितरण करने का खर्च प्रदान करने का उद्दारता प्रमान करने हैं

मन्त्री— जीवदया सभा, बेलनगंत्र, जानरा

विषय-न्ची

শি ভ বি	ष्य	ए०स ०	न० विषय		go efe
१ विमय (क	'वता)	. 393	 सम्पादकीय डिच्छिण्या 	***	8क€
र जैन ला	***	इंडर	६ परिषद्ध संभाजात	***	03.5
३ साहित्य सु		c.e.f	 वाहित्य समालोशना 	***	¥3£
४ महिला महि	हमा 😷 …	423	 संसार दिग्दशंन 	4.	१ ८३

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के फूल भाव १) तोला कि साने के बढ़े फूल भाव २।) तोला (सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलग्मा करवा के बनाने वाले सामान की सुची)

हर अ	दद काम व वस्ता	।जातन ताल चा	दाम तथा ६ हा स	कितार उपकार	ावगत ।	
हीदा	५००) से २०००)	परा३त	२५०) से ३०००)	, श्रद्यंघनवार	१००) से	400)
अम्बारी	१०००) से २०००)	इन्द्र एक	<i>७६</i>) सं १५००)	समासरनकीरर	बना२५०,से	(000)
[ं] पालको	१०००) से १५००)	#सिहासन	१०n) सं २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से	२००)
टेबुल	३००) से ५००)	#चवर एक	७) से २५)	#अध्यमगळद्रव्य	'१००) से	200)
हाभीकासा	ज ५००) से १०००)	#मुकर	१०) से २०)	*अध्यत्रातिहार्य	१५०) सं	२५०)
घोड़े का सा	त २०० सं ४००)	#चौकी		#सोल रस्वपने		
	४००) सं ६००		१००) सं ३०००)	# × भामण्डल	३०) सं	(00)
#खतमी इंडी	६०)सं ७५) ३०)सं ५०) रकेउपकरण।	अडाई द्वीपकी	t) १०)से ५०० इन्स्रा)	क्षकलशा तवत चांदी के	५०) से	400)
	२५००) से ४०००) ==00) से ४०००)					
#1 ±	atin artisa mesa ar	ਦ ਦੂਰ ਹਨ ਜੋਵੇਂ ਜ਼ਿਲ੍ਹੀ		सेन्द्रभाष्ट	· · · -	m f-+

यह को मंबाजिब श्राइन लका बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में ३०) सेकड़। का श्राइन लेते हैं। 🗴 इस चिन्ह ैं की चीनें तेंगामी रहती हैं। 🕸 ये की जें ताचे की बनाका सोने का मुलस्मा होता है।

पता—(१) पत्रान कार्यानय (कोटी) मोतीचन्द्र कुञ्जीलाल, मोनी कटरा, बनारस !

(२) जैन समान कार्यालय निध्हें फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी। Tel Address—"Singhai" Benares

गारे श्रीर खूबसूरत होने की दवा।

शह्जा ग जिस-आफ्न-बेटस की लिकारिश से डा॰ लामडेन साहब ने महाराज मेसर के बास्ते मनाई थी। जिस को सात दिन मलकर नहाने से गुलाबके फूल की सी रङ्गत आजाती है मुद्र पर स्थाह दाग मुंह से फीड़ा फुन्सी, दाद, खाज हाथ पांव का फटना बगल में बदबूद्दार पसीनेका ओना अयादि सब को साक कर चमड़े को नतम कर देती है। यहफूलों से बनाया है इस को खुशबू असे तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शाशी १।) हपया ३ शीशी ख़रीदार को १ शीशी मुपत। डाकध्यय ॥।

पता:--मुहम्मद शफीक एएड को आगरा।

बालरचा सप्तरत्न वक्स।

बडुधा देवते सुनने में आता है कि छोड़ी अवस्थाके अनेक बाकल रोग मसान, पसली, श्वास,लांसी, खाँक, दस्त, सुकिया, ज्वर, नेवपीड़ा, गलगण्ड आदि में फसकर मरजाने हैं और उम लोग उनके माना पिताको भूनादिक की बाधा भपटा नजर बताकर लटते हैं परन्तु आगम नहीं होता । हमने इसके लिये एक विजली को बक्त पनाया है किससे बालकों के सब गेम शान्त होते हैं। जो ४० वर्षसे घड़ाचड़ विक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मु० ११) डा॰ख॰ १०) कुलर १०)

मिलाने का पता-ज्योतिष रतनभवन फर्रुलनगर (पञ्जाव)

केवल २॥) रुपये में

वीर

ज्ञक्पत्र हरू हिन्दी में उच्चकीटि का समीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसंधें सर्वोपयोगी दर मकार के पार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक पूर्व साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गन्य, कवितायें, मञ्जुत व नवीन से नवीन संसाद भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। कागृज़, च्याई, सफ़ाई सब दी उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निहर और समाज के मश्नों पर निस्पन्न रहती है।

粥 इस वर्ष में उपहार 🎇

एक वर्ष का चन्दा भेनने वालों को विल्कुल मुप्त

'महावीर भगवान'

श्रीर उनका उपदेश

इस पुस्तक में चीर भगवान की जीवनी य उनका दिव्य उपदेश बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बोन के बाद लिखा गया है। संसार के अन्यान्य विद्वानों की साक्षी के मतिरिक प्राचीन जैन अर्जन प्रम्थों च शिला लेखों के ठोस प्रमाण दिये गये है। इण्डियन प्रेस प्रयाग के छने हुए ५० पृष्ठों के अतिरिक्त आरम्भ में एक सुन्दर चित्र भी दिया गया है। इस वर्ष भी किएक जयन्ती के उपलच्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरताके साथ निकाला गया है। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विपयों से सुसिक्जित किया गया है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रखता है।

शीव ही २॥) मेजकर ब्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर ऋत्युत्तम पत्र साबित होगा

८काशक-राजेन्द्र**ङ्गार भीनी,** विजनीर (यु० पी०)

भोजिय जगदीराइस है हीनबन्दु प्रेस विज्ञतीर है छपा



भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्व का

पाचिक पत्र

१ जून सन् १६२५

संस्था१४

वर्ष २]

हर्ष !

विलकुल मुफ़्त !!

हर्ष !!!

उपहारों की धम

इस वर्ष "वीरण के ग्राहकों को निम्न उपहार केवल २॥।) वीर का वार्षिक मूल्य व डाकलवर्ष पाष्त होते ही सेवा में मुफ्त भेजे जा रहे हैं।

- (१) मह।वीर भगवान और उनका उपदेश-५० पृष्ठों की अति चप-योगी सुःदर पुस्क, जो बड़ी छान बीन और परिश्रम के साथ लिम्बी गई।
- (२) वीर का विशेषाङ्ग-जगभग १०० पृष्ठों का रङ्गविरङ्गे चित्रों से सुशो-भित, धुन्धर विद्वानों के लेख व कविताओं से अलंकृत, अन्यंत उपयोगी अंक।
- (३) PRACTICAL PATH—अंग्रेजी भाषा में बड़ी उच्च कीटि का धार्मिक ग्रंथ अंग्रेजी पढ़े हुए ग्राहकों को केवल (८) के टिकट डाकखर्च के लिये, इस के लेखक व दाता "श्री० चम्पनराय जी जैन बैरिप्टर, इरदोई" को अलग भेजने पर शाद्य हो सकता है।

शीघ ही ब्राहकश्रेणी में नाम लिखाइये अन्यथा पद्यताना पहेगा !

व्यांन० सम्पादकः —

वान॰ उपसंपादकः-श्रीयुत् वायु कामताशसाद जी

कें प्र• भू०,प॰दि०, श्री ब्र॰ शीतलप्रसाद जी

आंग० प्रकाशक— राजेन्द्रकुपार जैन रईस, विजनीर (यु० वी०)

विषय-सूची

Ħ+	विषय			ए० सं ०	म o	विषय			पृ० सं•
१ अस्तिः	ा द्वश्य (क ¹ वता)	•••	••	ર દુક	६ उत्तर	न देने का कारण	• · ·	•••	818
२ जैनव-	भिर ज्योतिष	•••	•-•	33\$	७ नाहि	य समाहोचम	•••	•••	४१ ५
इ प्रस्था	भुद्रण सं हानि	•••	• • •	४०६	= परिष	दु सागचार		***	818
🛊 महिल	। महिमा	* ***	•••	808	६ संसा	र हिग्दशन	• •	,**	धरुक
५ सम्पाः	स्कोय टिप्पणियां	•••	•••	ુકશ્વ					

गाहकों को स्वना

- (१) घीर, भज्छो तरह जांच कर यहां से भेजा जाता है। यह कोई अंक आशामी अंक की तिथि सक न मिले तो पाले अपने डाककाने से पूछना चादिये। यदि पता न लगे तो उस की सूचना हवारं वास भेजनी चाहिये।
- (२) गाइकों का पत्र व्यवहार करने समय अपना गाहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये अन्यथा पत्र का उत्तर न पहुंचने के उत्तरहाना हम नहीं होंगे।

बीर २-३-3 शिक हमार पास निजकुल नहीं रहे हैं । कोई पाठक आंगाने का कष्ट न उठावें। फाइल न रखने वाले गाइक यदि चाहें ता वह अंक हमें दे सकते हैं। उस का मूस्य उन का इच्छानुसार दे दिया जायगा।

सावधान । नई युश्यवधा । सावधान । सावधान । नई युश्यवधा ! सावधान !! सावधान !!! मावधान !!! मावधान चार्य का का (क्ला) जैसे वाली, लेखा, जिलास वर्ष्य का का का (क्ला) जैसे वाली, लेखा, जिलास वर्ष्य कर देखिये हमारा उद्देश जाति व समान सेवा है। भीमित्र जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहने हैं। चंग्र, सिद्धासन, वंदी, नालकी, अल्डमंगलद्वय, अल्डमतिहार्थ, मुकुट, मेरु, भागण्डल आदि। नांये के ऊपर सोने का भागण्डल आदि। नांये के ऊपर सोने का सामान जैसे कलश, कलशी जुरदोजी का सामान जैसे चराचा, परदा, अछार, चम्दनवार इत्यादिक ।

सीनाराम लहरीममाद मालिक-'उवकरण कार्यालय' चौक, काशी

काशी सिल्क के थान, दावती, योटा, पर्टा, पुरबी साजी, रक्कवा बगैरह ।

जातिसेवक--सीताराय लहरीयसाद, सराफ़ा, बनारस



धपे >

विजनोर, ज्येष्ठ शुक्ला ६ वीर सम्बत् २४५१ १ जुन, सन १६२५

अडिश्प

* ग्रंतिम दृश्य *

इनित कालिमायुक्त निशा का हुआ। शीघ छौतिम अन्सान। प्रवास प्रताप पुद्ध पानी से था उद्यास पति तेन घटान !! लिलित लालिमा स्वर्ण रश्मिमक फैला प्रचुर प्रभात प्रकाश । मंजु प्रचा विक्तोक जिन रवि की स्प्रास्ति होता इयों आत्मविकाशा। मन्द्र मन्द्र सुरक्षित माहत नव भेम प्रमीद् बहुत्तर या । निःख्यार्थ लोक संवा का श्राम भदेश स्वातः था ॥ कलरव करते पर्त्वागमा शुचि मधुर रागिनी गाने थे। प्रेय. ऐक्यना का पनुनों का जागृत दृश्य दिखाने थे ॥ सूर्य मिन लांकि पूर्ण महितनम उदित हुए थे पूर्ण प्रमुन । म्ब पाकृतिक मधुरता संयुत्त गुण गरिमा से थे परिपूर्ण ॥ मृद्रच मंजून पारुत द्वारा नितरसा करने सब शुभू गुगःघ । मन्द्र पनद ममका कर खिलाहर अरुपा देते थे श्रानाह ॥ किन्द नडाग नरग नरलयन नाट्य मनंहरम फरना था। हरपरागि, धानलाक गात्र से मन बहान ही हरता था । चित्र अप्यत्रद सङ्घ्यु मारि से पैक्षत्र जल्त से विन्तुग खिले। बाल्पितरम अहीतिश पामी कित कदानित नहीं मिले ।।

चिर विद्धरे सन्मित्र पाप्य मनुजी के उथीं मन मुदित हुए। सूर्परश्वि संयोग मात्र सं त्यों पङ्गत बच्फुलित हुए ॥ आहा निट्र मानी ने निष्टुर हो पङ्कन को तोड़ लिया। कलिका का साबेस्व पाणहर दुःसहनीय वियोग दिया ॥ हैं अपनन्द नियन रसिक अस्ति ? हाथ ! नहीं था मृतक हुआ। कठिन काष्ट भेदी पङ्कन मधि मृत विलोक आश्नये हुआ।।। था विचार में मन्त असङ्गत केसा ! यह व्यवहार हुआ । काष्ट्रभेद फर्जेरित बनाता, वही कथा दल मध्य मुझा ॥ कहा हृद्दय ने जिस के द्वारा रावण का मद नष्ट हुआ।। उसी विषय पंकन-पधु-पदिरा से ऋत्ति जीवन पतन हुआ।। इन्द्रिय विषय विलास मग्न सधु लोलुप भूपर विलिध्न हुआ। लोभी मधु के रसास्वाद से किचित् हुटय न तुप्त हुआ।। विषयेच्छा प्रतिचारा प्रदीप्त थी भविष्य पर कुछ दिया न ध्यान। स्थात्मज्ञान विस्मृत हो हत् बुधि दे बैठा निम जीवन दान ।। संध्या समय विलोक मधुप यदि नोपाम्न लक्षि उड़ भाता। दम्धित पश्चाताप त्रनत्त में क्यों दारुण संकट पाना ॥ मैंने सोचा एक विषय इन्द्रिथवश यह दुर्दशा हुई। हैं पंचेन्द्रिय त्रिषय मग्न क्या होगी उनकी दशा दई ॥ पनिन, दुराचारी, व्यमनी मानव कितना दृःख पार्वेगे । क्या अलि साहश ! नहीं अकथ दुःसह द्ख भार उठावेंगे ॥ अप्तर∹विषय वासनामग्न, बंधुव्रकर्भान होना ।

दुष्याष्य मानव भन माणिक व्यर्थ न खोना ॥ श्रात्मोद्धार वर्ता, त्रिक्तयी, संयमा झानरत । रहना सतत-सचेत, रखो रिच्चत धन चारित ॥ दुरित विषय कर्द्रीम सहित, भनसर अगम, अगाध है । झान, चरित तरनी चढ़ों, यदि इच्छित ,श्रातम साध है ॥

Ł

जैनधर्म ऋौर ज्योतिप।

(के०-अायुर्वेद मार्नेट उचीतिय रन्न पंडित जैनी जीवा काल भी खीचरी राज वैथ)

जीन हम अपने प्यारे पाठक बुन्हों को जीन ज्योतियक संबन्धमे कुछ कहंगे, जी भान तक उन के देखने औं सुनने में भी नहीं आया होगा। इसकी देखकर सर्वसाधारण क्या घडे २ विज्ञान भी आइचर्य करेंगे। परन्तु जो कुछ लिखा जाता है वह पुरातन और सनातन ही है. नवीन या मनीक इसमें एक अक्षर तक भी नहीं है।

ज्योतिय विद्या जो संसार में प्रचलित है, खोर को भूत भविष्यत् पर्तमान तीन काल का पता देती है, यह तीधंद्रगं भगवान की ग्याग्ड शङ्क चौरद पूर्व के ग्याग्ड में कल्याणवाद पूर्व (जिस में छम्बीस करोड पद हैं) कथितविद्या है. और यह अध्य प्रव के आधार पर दी निर्मर और निमित के (१) स्थल (२. अस्तरित्त (३) पृथ्मे भोमि (४) अङ्ग (५) स्वस् (६) ग्यम्तरित्त (३) पृथ्मे भोमि (४) अङ्ग (५) स्वस् (६) ग्यम्तरित्त (३) सक्षण (६) छित्र इन आउ भर्दो कर के भो गोमित हैं। सामतिती सोग ज्यातियका ग्रह्मा के चतु कहते हैं। सा विचारना चादिये कि यथार्थ में यह कथा बस्तु है, और इसमें तीन

विचार करने पर हमको अधिक दिनों की स्वोत और वडे यह महात्माओं के स्वव्सम से जो कुछ प्राप्त हवा उसको विद्वानों के स्वविष् रख विकेशन करते हैं कि इसको पक्षपात क्रपी अज्ञान का खश्मा उटाकर विशेष शुद्धभाव से अचलोकन कर हमारे पश्चिम पश्चान दी जियेगा!

सिद्धं श्रीब्यव्योत्पाद स्तत्त्वगद्भव्य साथनं ।

इस लक्षण का ध्यान रखते हुये हम कह सकी हैं कि कोई ऐसा भी समय था जब सर्व ससार में जैन धर्म का ही सुर्ध्य प्रकाश करना था और अज्ञान करी अमाद स्था की उराधनी राधि कर सर्वथा अनाय ही था, कारण करूप खुझों के उज्ञाल में गृथ्य चन्द्र नारायण कोई भी दृष्टि गोचर नहीं होने थे? आज हमारा यह कहना कि पुराना और स्थानन मी यह जैन धर्म ही है सी इस का स्वक कार स्वीकार करें ऐसा क्य निर्वथ है। जो हो, परन्सु

थरमार्थ काम मन्त्रासाम्।

धार्म १ अर्थ २ काम ३ मोत्त ४ यह जार साधन मनुष्य मात्र को अपनी जीवन लीला के अन्त तक कमशः करने उचित्र हैं. सो प्रथम ही धार्म का लाभ मुन्य है, धार्म क्या यहतु है? इस को ध्यान पूर्गक विचार करना चाहिये । ससारी जीव दान देना द्या पालना पवित्र रहना तपस्या घरना इत्याविक को ही धार्म समभाते हैं, पराल्य यह उनकी बहुत बड़ी मुल है, क्यों कि दानाविक देना नियमादिक पालना यह धार्म की आहा का पालन है, ऐसा करने वाला प्राणी दयावान धार्म तमा सुशील तो कहला सकता है, परन्तु उसन धार्म शाद के अर्थ को यथार्थ नहीं जाना यह वल पूर्वक कहना ही पहता है, क्यों कि—

"वस्तुस्वभाशोधम्मीः" भाषार्थं जिस ५ हतु का जो स्वभाष है उसका धार्म है, संसार में जीव १ पुद्गल २ धार्म ३ अधार्म ४ आकाश ५ काल ६ यह वट द्रव्य सना-तन हैं। इनमें केवल पुद्गल ही क्यी और दृष्टि गोकर होता है। शेष पांची का जानना जान चक्षु के द्वारा ही निर्मर है।

अब हमको यहाँ पुद्गल हा की चर्चा करनी अभी ह है। इसलिये प्रथम उसका ही कथन करने हैं। बचिप पुद्गल इच्छ के व्यनिरिक्त हमको काल इच्य का भी सहारा लेना होगा, परन्तु प्रथम पुद्गल का विषय लिख पुन काल इच्य की चर्चा करेंगे।

पृद्गल माम उस बम्तु का है। िसको हम संसार में रहते हु। अपने चर्म चल्ला से देख उसका निज देवियाँ द्वारा म्हर्म रम गम्धादिक उपयोग लते हैं, परम्तु इसका उपयोग जीवभागा शरीर में रहता हुआ हो ले सकता है, और पौदग-लिक शरीर का भारमा से कार्मों के संयोग से सम्बन्ध है, और कार्म जड़ हैं, इनके छूटने पर जीव निर्मल सिद्ध स्वस्प होजाता है, इस से जड़ कार्मी का पौदगलिक स्वभाव दिख्लाना ही हमारं लेखका मुख्य विषय है!

पुद्गल को नामारूप रहुवाला देखते हुए भी यहाँ हम उसको आठ भागों में विभाजित करते हैं, भाषार्थ पीत १ १वेत २ गत्त ३ हरित ४ पाण्डु ५ धूमर ६ मीला ७ स्थाम = यह उसके रह हैं, तथा पीत १ १वेत २ स्का ३ हरित ४ पांडु ५ धूमर ६ नीली ७ स्थाम = यह उसकी मृतिका के भी रूप गुण हैं, जैसे पीली मृतिका गोपी सन्दन १ श्वेत शही खड़िया २ लाल मिट्टी गेरू ३ हरित जंगार ४ हम्सन्ता मृतिका मेंनिशल: ५ स्वागा फिटकड़ी

६ नील ७ कोयला = तथा पुष्प सुर्ध्यमुखी १ कुमो-दिनरे २ साला ३ नागर ७ गेँदा ५ मोतिया ६ अससी अधन्यन्तरी = तथा औषधि केशर १ कपूर २ कुसुम ३ तिलक ६ हारशङ्कार ५ सिन्दूरिया ६ गुलगाञ्चकां अशासुरवी = पुनः जावित्री १ रवेन चन्दन २ मजिष्टा ३ मयूर तुरथः ४ आमलासार ५ गद्भदर्भा ६ अगस्त ९ अमस्रतास = तथा रस्त माणिक १ मुक्ता २ जालचुकी ३ पन्ना ४ पुष्पराज ५ द्वीरा ६ नीलम ७ छहसनियां = धान् स्वर्ण १ चाँडी २ ताल ३ नीलाथोधा ४ सार ५ पार्व ६ सुरमा ७ लोहा = तथा उपधातु स्थर्णमाभी १ चन्द्रमाशी २ हिंगुल ३ नृतिया ४ हरिनास ५ अध्यक ६ शिलाजीत ७ कीटी = मधा इसी प्रकार छः शास्त्र में गण भी आठ ही माने गये हैं. मगण १ भेगण २ जगण ३ स्वराण ४ लगण ५ बराज ६ स्वराण ७ तगण म और इनके स्वामी क्रम से सुर्खादिक आठों ही हैं, तथा राग माला में छः राग तीस रागिनी उनमें भी एक एक के आठ आठ पुत्र बाठ आठ भार्या हैं, इत्यादिक कहां नक लिखें। अध्य प्रकार प्रस्ताल विभाग का सम्बन्ध आकाश में खलने फिरने विखरते उपोतिया देखी के विमानी (व्योमयानीं) से इस प्रकार है। जैसे कागज का पतक (ड्रंगी) बना अपकाश में उड़ाने बाले के हाथ में उसकी होरी रहती है। और सूर्य १ सन्द्र २ सङ्गल ३ बुध ४ बुहस्पति ५ शुक् ६ शनि: ७ राहु ह बह आठों ही कृमसे अपनी अपनी पूर्वोक्त वस्तुओं से मिश्रित हैं, और यह तो मोबी हुई बात है कि जीवात्मा चैतम्य और कम्मं जड़ हैं, यस ज्ञानाः-घरण करमं का नाम सूर्य १ दशेनावरण अन्द्रमार वेदनी महल ३ मोहनीयबुध ४ आयु: ब्हरपतिः ५

माम शुक् ६ गोत्र शिनिश्चर ७ अन्तराय राहु ६ यह भारों ही हानि साम सुख दुः स के करने वाले की वी की साथ अनादि काल से संगे हुए हैं, और छन्नस्थ शरीर में झान १ विव्य दृष्टि २ रक ३ बुद्धि ४ प्राण ५ कीर्य ६ मृत्यु ७ रोग द तथा प्रकाश सूर्य १ मन चन्द्रमां २ शरीर मङ्गल ३ झान युध ४ जीव वृहस्पनि ५ बीय शुक्त ६ जिनाश शनिः ७ कच्छ राहु द यह आडो ही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हैं।

हमारा इतना विस्तार पूर्वक लिखने का नात्पर्य यह है कि जिल शरीर में प्रथम जाना चरणी की विशेषना होगी भावार्थ इस कम्म का अधिक सञ्जाब पाया जायगा। उस शरीरमें सूर्यान्श विशेष होगा। इसी प्रकार आर्टी कम्मी का आर्टी ही ज्योतिषी बिमानी से सम्बन्ध है, इन विमानी में पृथ्वी मह के सम भाग से सात सौ नव्ये (७६०) याजन की दूरी पर आकाश में सब से नीचे ताग गण हैं, और उससे नी सो (६००) योजन का दुरी पर ज्यांतिय पटल का अन्त हुआ है, यह ज्योतिप पटल एकसो दश (११०) योजन मोटा है और इसके चारी और (तर्फ) घनोदधि है। तारागण के पटल से दश (१०) याजन अंचाई पर मुर्य विमान है। उससे अस्सी (६०) योजन की उँचाई पर चन्द्रमा का विमान है, इससे चार योजन ऊ चाई पर नक्षत्र पटल है, इनसे चार योजन ऊंचा बुध का पटल है, बुध से तीन योशन ऊंचा शुक् विमान है शुक्ष से तीन योजन की ऊ'चाई पर बृहस्पति और बृहस्ति से तीन योजन ऊंचा महल और मङ्गल से चार योजन ऊंचा शनिश्चर पटल है।

सूर्य चन्द्र मङ्गलादि जो जो नाम उक्त विमानी

के स्वामी ज्योतियी देवीं के हैं. यह सब सर्थ १ १ चन्द्र २ नक्षत्र ३ तारा ४ गह ५ ऐसे पांच प्रकार के हैं. इन में चन्द्र देवों की आयु एक छाल वर्ष अधिक एक पत्य की है, सर्य देवों की एक सइस्र बर्ष अधिक एक पत्य को है, और शक् देवों की सौ वर्ष अधिक एक पत्य और बृहस्पति की पौण पत्य महुल ब्ध, शनि, आधा प्रवृत, तारागण की पावपल्य उत्कृष्ट आयु है, सां यह देवीं की जाननी, विमान तो पुदुरालिक रतन मई जड ही हैं, यह हम तुम सब प्रत्यक्ष देख रहे है कि कमल वा सुर्य मुखी पूर्प सुर्य के उत्तय में प्रफुल्सित होते हैं, कुमृदिनी चन्द्रमां को देख कर खिलती है, अग क्तिया पृथा अगस्त मृति के उद्य होने पर जिल्ला है। आगियाकाच (आईना शीशा) सर्य को दिख-लाने से अग्नि उत्पन्न कर देता है, सर्व्य कांति-मणि रस्न से जल टपकने लगता है,यह सब प्रद्रगत्न का ही स्वाभाविक सामान गुण है।

अब हम को यह दिखलाना है, कि जब पृथ्वी पर स्टर्य चंद्र तारागण कल्प वृश्नों के सद्धाव में थे ही नहीं उस समय पद्गल का स्वभावक्प धर्म कहाँ लुमथा, उसका उत्तर यही है कि यह उयोति वियों के विमान उस समय कल्प वृश्नों के प्रकाश में हृष्टि तो नहीं चढ़ने थे परंतु इनका अभाव नहीं था। जैसे सूर्य के श्काशमें तारा गण नजर महीं आते तो उनका अभाव नहीं माना जा सकता!

प्रत्येक बस्तु अपने स्वभाव को लिये हुए सदा सर्वदा उपस्थित रहती है काल चकु के द्वारा इसमें उलट पलट का होता रहना वा स्थूलता सुक्ष्मता दृष्टि पञ्जा यह उसके स्थाभाविक भग्में में बाधक नहीं हो सका इस लिये अब इम काल द्रत्य का वर्णन करते हैं।

हर रस गन्ध स्पर्श इत मृतिक गुणौं से रहित 'अमृतीक'न भारी व हलका एवम् धर्नना लक्षण का धारक आल द्रव्य है, इस के निश्वय और स्वयहार ये दो भद हैं, जिस प्रकार जीव और पुद्रगलके गमन क'ने में धार्म द्रव्य ठठरने में अध्यमं द्रव्य, और समस्त द्रव्यों को अवकाश देने में अकाश द्रव्य सहकारी कारण हैं, उसी प्रकार समस्त द्रव्यों के परिवर्शन में काल द्रव्य सहकारी कारण हैं, जिस प्रकार धर्म अध्यम्मं और आकाश इन्द्रिय गोचर न होने पर भी आगम प्रमाण से माने गण हैं उसी प्रकार काल द्रव्य का भी आगम प्रमाण से सद्भाव मानना ।

जीव और पृह्नालों का परिवर्तन सदा निष भिन्न इप से होता रहता है उसका कारण निश्चय काल प्रध्य है और घंटा मिट सेकेंड घडी पल विपल आदि उसकी पर्याय हैं। समस्त द्वव्यों के परिण-मन आदि ब्यापार 'अ'तरंग,बहिरंग दो कारणीं से हवा करते हैं. उसमें अंतरंग कारण बस्त्का स्व-भाष (योगता) है और यहिरंग कारण निश्चय काल है, काल प्रमाणुओं को निश्चय काल द्रव्य कहते हैं, सो यह कालाशु एक दुस्रां में प्रयोश न कर असंख्यात प्रदेशी इस लोकाकाश के पत्येक प्रदेश में स्थित हो समस्त लोकाकाश में व्यान है, हुटयार्थिक नयकी अपेक्षाकालालुएँ विकृत नही होते इस लिये ये उत्पाद और नाश से रहित होते के कारण क्रथंजित निस्य हैं, और सदा अवनं स्व स्व-भाष में हो स्थित रहते हैं.। कालालुओं में अगुर लघुनाम का गुण रहता है, उससे प्रति समय इनकी

पर्याय पलदती नहती हैं इस लिये पर्यायाधंक नय की अंग्रेश समस्त कालाणु कथंकित अनित्यभी हैं समयों का व्यापार भूत अविष्यत और वर्गमान इक तीन प्रकार से अनुभव में आता है इस लिये भूत भविष्यत और वर्गमान के भेद से व्यवहार काल के भी तीन भेद हो अभे हैं कालाखुरं अनंत समयों की उत्पादक हैं इस लिये वे अनंत शब्द से युकारी जाती है, ये कालाखुरं समय की उत्पत्ति में कारण हैं। इसलिये इनसे समय उत्पन्त होते रहते हैं, क्यों कि बिना कारण के कार्य्य कभी नहीं होता। कोई कहे कारण के बिना स्वतः ही कार्य उत्पन्त हो जाते हैं, नोगर्दन केश्वंतभी होने चाहियें, क्योंकि बहाँ भी कारणों की आवश्यकता नहीं है।

समय आदि काल द्रव्य के कार्यों की यदि काल द्रव्य से भिन्न किसी अन्य कारण स उत्पर्त्स माने सो ठीक नहीं, क्योंकि चावल के बीजसे मुंग उड़्द उत्पन्न नहीं हो सकते हैं,। यदि कहीं पर कार्य की उन्नित में अन्य कोई विजातीय कारण होभी जाय तो यह सहकारी कारण ही होता हैं. उपादान कारण नहीं। इस प्रकार ध्यवस्थापूर्वक निश्चय काल का सद्धाय माना है।

समय अवली उच्छवास प्राण स्तोक और लघ आदि स्यवतार कान है, उनमें काममशील पृष्ट-गल का शुद्धप्रमाण मन्दगति से जितने काल में अपने ६ प्रदेश से दूसरे पृदेशमें जाय और जिसका दूसरा भागन होसके उसकी समय कहते हैं। असं स्थान समय की एक आविल होती है संस्थान आव लियों का एक उच्छवास और निस्वास होना है, इन्हों को भाग कहते है, सान प्राणी का एक स्तोक, सात स्तीकों का एक लव, सतहत्तर (७९) लयों का धक मुदर्व, तीस (३०) मुद्तीं का एक अहारात्र। आचार्थ-दिन सान, चन्द्रहें (१५) दिन राधि का एक क्ष द्रं वर्धी का वक्त महीना, दो मास की वक **भा**तु,'तीन भातुओं का एक शयन,दो अयमी का ब्रक खबं,पांच वर्ष का एक यूग याग्द्र युग का एक साठी लथा दो सूग के दश दर्घ दनका दश गुणा किया हुए सी (१००) इनका सी से गुणा किया हजार नथा इज्ञार का स्रीक्षिणा एक लक्ष, लक्ष की चौरा-सो से गुणा किया हुना, २२०००० होंगार्सा लाव इमने समय का एक पृश्वेष्ट, और खौरासी लाख पूर्वाङ्गका एक पूर्व हाता है, इसी प्रकार गणित का विशेष विस्तार यदाँ लिखन की आवश्यकता मही कोल के असंख्यान भेव हैं, आदि मध्य और अन्त हित अविभागी, अर्तान्द्रिय सूर्ति और एक प्रदेशी प्रमाण कहा गया है, इस प्रमाण में एक समय में एक रख्य एक बण, एक संघ, और हो स्पन्न रहते हैं, और यह अभेद्य है अर्थाम् इनकों स्व भेटा नहीं जा सकता है, शब्द का कारण है किन्तु स्वय गहर का धारक नहीं है। उसके सदम होने का एक यह साधारण द्वष्टान्त है कि एक इजार (१० ०) नागर पन से एक दूसरे के उत्पर रख एक लोडे की सलाई सी उन में एक ही प्रहार से छिट्ट करे, तब यह जि प्रवय है और मानना पर्डे गा कि सलाई एक वाद से कुसरे पान में होती हुई कमशः ्रत तक पहनी. बस खयाल करो एक पान से दूसरे तक पहुँसने का समय कितना मूल्म है। संस्थार मं प्रत्यक का परि-बतन जो प्रकट देखने में आता है। उसके ही ध्यान यूर्शक विकारते से पाया जाता है कि कुद्रत के लेल सनातन नियमानुसार चलते हैं, उनस अनुभव करिये, अरो पुरुष की के स्थास से सन्तान उ पत होती है, परन्तु गर्भ की ही धारण करती है, पुरुष धारण नहीं कर सकता तथा प्रथम वतलाया गया धरत का स्वभाव यही उसका धर्म उसमें फेर बरल नहीं हो। सकता अपर जो हमने काल विभाग में पुरुगल के एक समय आविल्लादि पतलाकर निकर्णात पत्र मान ऋतु अपन वर्ष का वर्णन किया, उसका कर्मी से परा सःवस्थ है सो दिखलाने हैं।

एक वर्ष के १२ मास्य २४ पत्त ५२ सप्ताह ६ ऋत् २ अयन होते हैं, इनका नाम अपनी २ बोली में देश भेत स प्यक्र रहे, जैसे हमार क्षेत्र में सेत्र शुक्ल प्रभास वर्षारम्भ करके चंत्र कृष्णा ३० तक पूरा करते हे और दक्षिण देश में एक भिन्न भेद है, भा-थार्थ (जनको हम खेत्र शुक्ल पक्ष कहते हैं। उसकी तो वह संब शुक्ल ही कहते हैं, परन्तु जिसको हम वैशाल कृष्णपश्च कहते हैं, उसको वह चेत्र कृष्णपश्च कहते, और इस रीति से हमारा उनका शुक्छपक्ष एक हो हे परम्तु एक ऋष्णपक्ष में एक मास का अन्तर रहता है। और सूर्य गशि से मेप वैशास बुध ्यंष्ट्र. मिथ्र आवाड् कक श्राबण, सित भाद्रपट, कन्या आदिवन, तुला कात्तिक, वृश्चिक मार्गर्शार्य, धन पौष, सकर साध, कुम्स फाला्न, सीन खेता यह बारह महीने विभाजित हैं, परत् यह दक्षिण वाकों के हिसाब से उंक होता है। माधार्थ-इसके लिये हमको चीत्र शुवलगक्ष और वैशाल कृष्ण पक्ष मिलाकर सेव का सुर्थ मानना होगा। और यह चन्द्र मास का स्थल मत हैं, सुब संकारित के दिसाब से तो मैव से लेकर मीन वर्षन्त र्वमास तथा तप, सिथन ब्रीच्य कर्च, सिंह-वर्षी, अध्वा, तुल-शाः , चृत्रिचक, धन-देमन्त, मकर, शुंभ-शिशिरः, शीन, मेष ामन्त्र, यह ६ ऋषु हैं जोर करें, सिंह, काया:

तुल,वृश्चिक,धन इन छः राशियों मं सूर्य दक्षिणको भुका हुआ उदय होकर दक्षिणायण कहलाता है, इन ६ महीनों में घर्षा, शरद, हेमन्त यह तीन ऋतु पूर्ण होती है, और सकर, कुस,मीन, मेब, बुब, मिथ्न इत ६ राशियों में सूर्य उत्तर को भुका हुआ उदय होसा है और उत्तरायण को कहलाता है. इन ६ महीनों में शिशिर बसन्त ब्रीष्म यह तीन ऋतु पूर्ण होती हैं सूर्य की चाल पर ३६५ दिन १५ घड़ी ३१ पुष्ठ ३० विवल का एक धर्य होता है, अंत्रेज लोग भी ३६५ दिन ६ धन्टे का एक वर्ष मानते हैं, ओर जो बब चार पर पूरा बट जाय उनमं कर्बरी २६ दिन का बाजाता है। इससे केवल ३१ पल ३० विपल का अंतर रहता है और १३ अभैल के निकट मेप का सूर्य होता है। अब देखिये एक वर्ष में मेप से लेकर मीन तक १२ सूर्य व्यनात हाते हैं, और यही बार ; महीने सूयमास कहलाते हैं और चान्द्रमास के १२ महीने कभी ३५५ कभा ३५७ दिन के हुआ करते हैं और यह कमी त सरे वर्ष अधिक मास होने से पूरी हो जाती है परन्तु अधिक मास ४ लिये ३३ मास में एक भास बढ़े ३३ वर्ष में १ वर्ष वढ़े एसा नियम है। एक सन्ताह के र्गव, चन्द्र, मंगरु, बुध, बृद्रपति, श्रा, शनिश्चर यह सात दिन हाते हैं।

इन सात वारों की सात बह मान कर ही सम्पूर्ण ज्यानि। चक्र की विचारा जाता है। यथपि बह नच (१) माने काते हैं, परन्तु उक्त साती के व्यतस्कि एक "राहु" और हैं जो यथार्थ में इन का ही भेद हैं, जिस का वर्णन आगे चलकर करें गे, और दूसरा 'केतु" यह थोड़े काल से कल्पिन बनाया गया है, यथार्थ में तो यह "राहु" का दी साया मात्र भेद हैं ऊप जो १२ राशि कहीं गई

उन का िचार ऐसा है कि जैसे एक दिन रात्रिके २४ घंडे होते हैं, उन में मेच से हैं कर मीन पर्यक्त १२ लान त्यनीत होते हैं, और इन १२ छण्नों का समय देशभेदामुसार जुदा जुदा है. भाषार्थ जी मेचल न देहली मे ६ घड़ी 13 पल का होता है, बहालका में ४ घड़ा३०० का होता है. और यह निश्चय है कि आजकल तारीख १३ अप्रेल के अगले दिन सम्पूर्ण स्थानी पा प्रातःकाल सूर्योदय के समय मेपलान होगा , जो एक दिन में एक अंस घरता घरता ३० अंश पूर्ण कर रात्रिम चला जाता है, इसी प्रतार लग्न १२ यद्यपि एक दिन राजि में पूरे हो जाते हैं, प्रस्तु किस लग्नमें सर्थ्य उद्य होता है अगले दिन उस ल न का एक अंश रात्रि में चला जाता है और ३० अंश पूरे हाने पर सर्छा उदय दसर लग्न स पारम्भ हो जाता है, और जिस लग्न म भय्री उदय होता है। उसीके पुदृशल स्व-भाषानुसार होसम होता है।

अब और इंलो. मित्राशिका स्वहत मेपाकार माना गया ह, उस का तालाख्ये यह ह कि मेप राशि में सूर्योत्य १३ अपूं ल से १३ मईतक रहता है इस गिश का स्वामी मगल है। इस का बेदनी कर्म्स से सम्बन्ध ह इस महीने म सब जीवों के बेदनी कर्म का उदय पाया जाता है इसी पूकार तुप्रगिश का स्वरूप बैल के आकार स्वामी शुक् (नाम कर्म्स से सम्ब घ) मिथुन पुरूप स्त्री के जोड़े के आकार स्वामी बुध (मोहिनीकर्मा) तुला कर्जराशि के कड़े कींट के आकार स्वामी चन्द्रमा (दर्शना वर्ण कर्म। सिह गिश सिह के आकार स्वामी सूर्य (शानावर्ण) कस्या कर्या से आकार स्वामी सुध्य (मोहिनी कर्मी) तुला तराज के भाकार क्यामी शक (नामकर्मा) वृश्चिक विच्छें के आकार स्वामी मॅगल (वेदनी कर्म) धन का **११६प अगला मनुष्याकार हाथ में तीर कमान** लिए हुए विक्रला घाडे का आकार स्वामी वृह रुपति (आयु कर्मा) भेकर का आकार सकर एक प्कार का मक्छ, कुम्भ घष्टं के आकार स्थामी दोनों का शनिश्चर (गांत्र कर्ग) मीन छाटी मच्छी के आकार स्वामी चुररूपनि (आयुक्रमं) पेसे १२ रागियों किण्या १२ महीना के स्वामी यह अ गृह सुरुपे से शनिश्चर तक जानने केवल राहु जो उपग्रह है. यह किसी गांश का स्वामी सबक नहीं है। यद्यपि एक राशि के आधीत सवा तो नक्षत्र होते हैं, और एक नक्षत्रके आश्रय चार अक्षर और उस के चार चर्ण होते हैं, ऐसे कुल २७ नवाब है, जिन पर सुर्व्य एक वर्ष में चन्द्रमां २७ दिन में सङ्गळ हेट वर्ष से वृथ शुक्र एक वर्षमे इहस्पति १३ वर्ष में-अनिक्चार ३० - पार राहु १६ वर्ष मे-पुनः आते हैं, और नक्षत्र, योग, कर्णाटिकके नाम स्वरूप स्व-भाव, इत्यादिक पृथक पृथक है, जिन का घणंन हम दमारे भाग में लिखेंगे।

यह हम बतला चुके हैं कि श्माम की एक महितु और ६ ऋतु का एक वय होता है, और ऋतु भी के नाम समयभी बतला दिये गये हैं। अय यहाँ यह और बतलाचा चारते हैं कि मुक्तिजात मीध्म में पहाड़ के शिवर पर और वर्षों में यूक्ष के नीचे, शीतकाल में नदी स्थोपर के नट करी ध्यान धरते हैं? और उस म काई गृह सेद पाया जाता है, क्या समय विषयं होने पर हो भी इसी प्रकार से तर करते हैं? भावार्य वर्षो ऋतु म बृष्टि में हो शीतकाल में शंगत न पड़े, भीष्म काल में उष्ण-

ता न हो, शीत पड़ने लगे तर वे क्या करें ?

सो हमारे इस सरपूर्ण लेख का सार्गश इसी स्थान पर निकल आयेग कि मुनिराज अपने कर्मों के नौश करने में उधमी होकर ही तथ करते हैं, सो जिस समय जिस अर्मिका उद्य होता है उसी के नष्ट का उपाय मुख्य जान उसी रूप प्रधनंते हैं।

हमने अपर बतलाया है कि गई नाम कर्माका है, और कम्मों का सम्बन्ध सुख्यादिक ज्यानिव के देखों के विमानों के स्वभाव से हैं, उन विमानों में निवास करने वाले दें में से नहीं है, विमानों की चाल ही अन्ते स्थलाव से मला बुरा करने का उपादान हो जाती है, जिस सूर्यका प्रकाश उचेड्ड माल में कष्ट कार्य होता है, यही पकाश माध में श्रिक प्यारा जीन पड़ता है, इन विमानों का स्ब-भाव निजनामाहुसार दिन जिसी प्कट होता रहना है इन सात विश्वानों से जुदा एक 'राष्ट्र' का विमान है, यह सातों दिन भमण करता है, जिसको रिकशल कहते हैं. यह रविधार को पश्चिममें चन्द्र बार को पूर्व में, महल को उत्तर में, घुध को पाताल में. बहरूपति को दक्षिण में, शुक्त को पश्चिम में. शनिश्चर को पूर्व में मुमता रहता है, और दूसरी चाल इस की, शनि गो पूर्व में, शुक्र की अस्मि में, वुडम्पति को दक्षिण में, बुध को ने मृत्य में: सङ्गल को पश्चिम में सामधार को बायब्य में रिष्ट्यार की उत्तर ईशान में रहता है, इसको कालगाह कहते हैं. अरयासिनी चन्द्र चाल इत्यादिक अनेक अब है, उनको हम इस के दूसरे विभाग ने विस्तार पूर्वक किस्तेंगे, बस यह लड़ या जि पूर्ण होता है। असम्. त्योमवसु संग्डेन्दुः।

प्रन्थमुद्रगा से हानि

ा कर अधियेशनके बाद से 'हिंदी जैन

गजर में प्रस्थ सुद्रण की टानि दिल साने पर बहुत जीर दिया जा रहा है इसके अ गई १९२५ के अडू ३० में एक महाशय लिखते हैं कि "जिस समय भारतवर्ष में चारों ओर जैन धर्म और उसके शास्त्रज्ञान का बड़े बंग से प्रसार था, उस समय कहीं भो छपे गुन्थो हारा मनुष्य स्वा-ध्याय, पठन पाइन नहीं करते थे। " मानी लेखक महाशय की द्वप्टि में गृन्ध मुद्रण से ही जैन धर्म और उसके शास्त्रद्वान का प्रसार रुक गया। यदि गन्ध मुद्रण न होते तो भारतक्षे में खारी तरफ जैनधमं और उसके शास्त्रज्ञान का प्रसार पाया आता। बा४, फ्या बढ़िया दलाल ईं ! लेखक ने यह ख्याल नहीं किया कि चीध काल या पांचवे काल के प्रारम्भ में जब कि जैनधर्म भारतः पंसे चडुंओर फैला हुआ था उस समय में तो हस्तिल बित गुन्ध भी मौजूद नहीं थे। उस समय तो ज-बानी उपदेश ही सं काम चलता था। तांक्या किर ये कहना ठीक होगा कि यम्थी के लिखे आने से कोई लाभ नहीं हुआ ? गृन्धीं के लिखेजाने की कोई ज़करत नहीं थी, गृत्थों के लिखे जाने से जैन धर्म का श्चार कम हो गया, ऐसा कहता कदापि ठीफ नहीं होगा। जमाने की हालत, समय की आवश्यका के लिहाज सं देखा जाय तो उस समय भ्रन्थ लिखं जाने की सकत जरूरत थी। और गम्ध लिखे जाने से बहुत फायदा हुआ है।

यदि गुरथ म लिखे जाते तो हरशिका शास्त्रज्ञान कायम नहीं रह सका था। असलबात यह है कि जमाने की हालत, जमाने की ज़रूरत अलग अलग हुआ करती है। एक जमाना बद था कि मान जबामा उपवेशसे ही जैन धर्मका खूब पचार हारहा था। जवाना उपदेश को हो शनैः शःनैः ले +र बहे २ बिद्धान ते यार होजाते थे। परन्तु किए जमाना ऐसा आया कि वंबल ज्वानी उपदेश से काम न चळ सका। शःस्त्री के लिखने की जुकरत मालुप हुई ओर वे पहिले पहिल ताह पत्र आदि पर लिले हुये गुरुध भी नाकाफी रहे तो फिर कागुज पर लिले जाने की परिवारी पारभ हुई। परन्तु अव क्रमाने की हालन ऐसी है कि केवल हाथ साहि से हुये गुन्धों से फाम चल्कुबी नहीं चल सक्ता छपे हुये गुन्थों की आवश्यका है। इस निये कुछ गुन्थ छ। ये रुथे हैं। और मेरे ख्याल में तो छपे हुये प्रत्थी से बहुत फायदा पहुंचा है। संय हो व हजारों आद-मियों का हुए हुये गृत्यों के द्वारा जैनधर्म की कुछ आनकारी हुई है। अब जिनने बाद्यों को जैनधर्म सं जानकारी है मेरे ख़यान में तो यदि छपे हुये गुन्य न होते तां इस से आधी सक्या के आदमी जरूर जैनधमसे अजानकार रहते। बहुतसे आदमी पेनी जगह भीकर हैं या कुछ और पेशाकर रहे हैं। कि जहां नमा दर है-न कोई और समागम धर्मीप-देश प्राप्त करने का है-और अधिक खर्च अधवा किसीओर दिक्रत की बहुज स न उनकी बहाँ लिखे गृत्य मिले सक्ते हैं। ऐसी जगह वे छये गृत्यों से पायदा उठा सक्ते हैं। भीर उठा रहे हैं। अत्य इस कहने को कि गृत्थ छपनेसे जैन धर्मका प्रचार नहीं हुआ अक्षता रुक गया, पहिले बहुत ज्यादा था कोई नहीं स्थीकार कर सक्ता।

अब रही यह बात कि एं॰ टोइएमल जी, जयवस्य जी: सदासुव नाम जी भादि पहिले क्षयाने के विद्यानी के सुकावले के आजकल के विदान क्यों नहीं होते ? स्नेत्रक महागय की नाय में तो उस का कारण भी छवं प्रस्थी का पहना ही है। संभव है उन की राय टीक है। मैं खयान करता है कि सुफ को इस में सत्भेर उपस्थित बही करता चाहिये. क्योंकि अपने मागले की शतक्य क्ययं ही अञ्ची तरह स्वम्भ सन्ता है। गरि अन्य परित्रगण भी उनकी राय से सहमत हों भी में उनको यह सम्मति समग्रहांगा कि अव तक को उन्हें ने छपे प्रध्य पहें हैं। उसकी बादन से प्राथिकित के में और भारत्या छवे प्रस्थी की बिल इन्हें ने पढ़े जिसमें वे पंत्रोडरमल जी, जय-चार जी, सरास्त्रवरास जी आहि पहिले जमाने के पंतिनों के समाम हो जायें। इससे लेखक महा शय की राय की परीक्षा भी हो जायगी । और धि ऐसा रो गया तो फिर लेखक महाशय की ्राय के स्टर्भवास्य होने में कोई समय न रहेगी। मे इस विषय में अपनी राय लिखना नहीं साहता था। परन्तु मेना हृदय मुक्तको उसके लिखने के लिये बाध्य करता है। इसलिये कल लिसता 🕻 । मेरी राय में तो पहिले जमाने के चिट्ठार्ली की प्रमोन्हण्य विहला का कारण छपे सन्धी के बजाब इस्त लिखिय प्रम्थी का पढना न था पहिक उनका

शास बान पर मनन करना था। जो कुछ वे पहते थे उस पर मनम इस कटर ज्यादह करते थे कि उनका जीवन हो उस क्य हो जाता था। अनेका-न्त व श्राहिता जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्त हैं। इन पर मनन करते २ उनका जीवन पेसा बन गया था कि वे कोई कात एकान्त एक केंग् लेकर नहीं कहते थे और इसलियं उनकी युक्ति के सामने सब को मस्तक नीचा करना एडता था। और वे अपने व्यान्यान से विधिनन पक्ष पार्ली को शासा कार देते थे। ओर ऑस्स्रा उन के व्यक्तित्वमें ऐसा गतरा जलर किंगे हुये होती थी कि वे किसी के साथ भी कलह यह व करना पसन्द नहीं करते थे। प्राप्ती मध्य का कल्याण करने के लिये वे हर स्रवय तयम रहते थे। अत्यव मेरे विचार से सो व जैन बस के सिद्धारती पर मतन करने से ही उच्चकोटि के विद्वान व आचरणवान बने थे। लिखे छ। गुन्धों के पढ़ने का इस बात से कुछ सबम्ध न था।

लेखक महाराय ने यहां भी लिखा है कि "आज कल भा स्वाज में जो उच्चकोटि के दिगम्यर जैन विद्वान प० गणेग असार जी, प० मणिक्यचन्द्र जी आदि हैं, उन्होंने भी तो इस्तलिक्षित गृन्थों से प्रायः दिगम्बर जैन भून्यों का पंजिय अपन किया है।" यह समन है कि प्रारंभिक काल में जब इन पिडल महोद्यों ने पहुना जारंभ निया हो ने। उस समय छो गृन्थ न होने की वजह से उन्होंने इस्त लिखित गन्य पहें हों, परस्तु मेरे ख्याल में पैसा तो नहीं है कि उन्होंने छपे गन्य बिल्कुल पहें नहीं। और न अप प ने हो तथा वि ब प्रन्थ काला

और सिक्षान्त विद्यालय मो त्ना म छपे प्रन्थी का क्यमहार नहीं होता रहा है और पया अब नहीं होता है ! क्या इन विद्यालयों का काम विना छपे गृन्धों के बखुरी चल सकता है ? मेरे खयाल में तो स्व॰ पं॰ गोपाल दास जी की शिष्य मंडली से शिक्षा ज्यावहतर छपे गम्धी संही प्राप्त की है। और वे लेखक की नरत छां गर्यों के खिलाफ महीं रहे। और लेजक ने जो भद्रा और जिनय पर -ज्याहर जोर दिया है समभ में नही आता शिक्षा और विनय का संबंध छप । लिले गुन्धों सं क्या हो सका है ? हवारे खयाल में तो जिस किसी के दिल पर भी जिनवारी का लिक्का बैठ गया है. खाहे वह जिनवाणी हाय से कागत पर लिखी हुई है।, चाहे ताड़ के पत्र पर लियो हुई हो चाहे तांवे के पत्र अधवा पत्थर एर खुदी हुई हो, यह स्यकि तो उस में धदा और उसकी विनय अवश्य ही करेगा। उसकी थडा और विनय ऐसी काजोर कदापि नहीं होगी कि मात्र लिसी व छपे के भेर से उस में फर्क एड़ जाय। जिस के इस्य में शास्त्र क्षान को सच्ची विनय है वह तो चाहे शास्त्र हाथ के लिले हुये ही, चाहं छपे हुये ही-होनें सुरतें में ही शासकान की विनय करेगा। --- ऋषभशस जैन बी. प.

नोट-हमको अपने पंडित महोदयों की मृता युक्तियों और भनावश्यक विषयों का वृथा उठाने

की बुद्धि पर तरम आता है । पाठक गण, उनके लिखने के यथार्थ और औचित्य का दर्शन उपर्युक्त लेख में भली प्रकार कर सके हैं। जिन दिग्यात विदानों का नामोहसंख हिन्दी जैन गजट के लंह क ने किया है, वं अबश्य ही शास्त्र-मुद्रण प्रणासी के विरुद्ध नहीं हो सक्ते । पुत्र्य प्र० गणेण प्रसाद जी ने ता मृज्यकरनगर के परिषद् अधिवेशन में स्थयं उल्न जैनधर्म सम्बन्धी पुस्तक के छपने का समर्थन किया था, जिसको परिषद् में सर्व साधा-रण की जैन धर्म का परिचय कर से के लिये छपाना निश्चित किया था। पेसी अवस्था में पडितों का यह प्रथम कर्तव्य होना चाहिये कि ।जस किसी विषय में हे अपनी लेखनी का प्रयोग करे उसमें यथार्थता और सन्य के विपरीत कवापि न जांय। परम्सु दृःव है कि सन्ता की साहसा में वे सत्य और यथार्थना को तिलाङ्जलि देते नहीं हिचकमें जिससे समाज की हानि हो रही है। ग्रथ मुद्रण के यिश्व अब किर जो आबाज उठाई गई है वह भी अपनी निजी उद्देश्यों और सन्ता की लालमा के बशीभूत हो उठाई गई हैं। छव बुधे गृथीं के कारण समाज में शास्त्रज्ञान वढ रहा है और समाज बस्तु स्थिति को देखने में समर्थ हो रही है। हमारे पहित महोवया को शायर यह असदा है। इसी कारण वे इस अनाव-इयक विषय को उठा रहे हैं जो शोभनीक नहीं है। ---ड० सं•





एक विधवा युवती की पुकार

हाय! मैं इस असार संसार में होते ही क्यों न प्रश्ना को तथ भरही कफन लगता, और इस चर्तमान जीवन की कड़ी २ कठिनाइयों से छुट्टी पानी, सास सहागन के सामने विश्ववा वश्च न कह-लाती, मेरी ख़ुसराल में मेरी साम बाज दिन ख़ुहाग का शहार कर रही है. माँग काइ, सेंद्रा भर, अजरा सार ता अपर विन्दा लगाय रही है। और मैं संवाध बक्का लेकर अपने कभी को ठीकती हुई। घटमर २ कर रही हूं और सुबह से शाम तक दासी वेदाम की बनी दूर्र है। तिस्त पर चैन नहीं। हमेशा कुन-खनों की बौछार मेरे आर हुआ ही करती है। जब पीहर पहुंची तब क्या 'सद्दी में से निकल कर भाड़ में अभिरो' की कहाबत होगई। घडां सुरागन माता को भी बेरी सास से टीम टिमाक करने में कुछ कम नहीं हैं। यहां मेरे हाथ में चरखा कातने की पकड़ा दिया गया, यह मेरा सौभाग्य था।

हमारी सरकार गवनंगेंट ने सनी होने की खुद-कशी (धारमधान करने का एक भारी पाप) न होते का नियम बनाकर हमारी जिम्दगी की भाजाद बनाने में तो दया प्रकट की, प्रश्तू शोक ! कि बाख दिवाह, बृद्धविवाह, कन्याविक्य (जिनको हमारी जैनसमाज ने स्वार्थ के बशीभूत हाकर प्रचलित कर रक्खा है। के रोफने के नियम बनाने के बाहते आंखों से पदरी बांध ली ? अब हमारे चत्रगं आई भ्यों न इन बातों का रोकने का कड़ा निबस बनाई जिससे हमारा जीधन सुख पूर्वक ध्यमीत हो ? इस समय हमारी हालत पर यदि आप लोग विचार और जरा अपने २ फलेजों पर हाथ रख कर; अपने दिलसे ही पूछें नो मृतक से भी गई बोही उसे पार्चे। जिल प्रकार व्याप किसी अप इसी को (जो एक ६ है अवर्द्दत अजगर सप के मृत्युक्ती मुख में जाला हुआ है) खुड़ाकर, वर्गर किसी प्रवस्थ के सुनकान जंगल में ससक २ कर मग्ने को छोड़ दें और फिर आए यह दाया करें कि हम जीवदया पालते हैं। उसी प्रकार हमारे बड़े २ होंगधारियों और खुद-गजीं ने हमारी जिन्दगी तो बच्छी है। लेकिन ऐसी आनवस्त्री से लाभ क्या है ? जबकि हमको जीवन भर सिवाय बाहाजारी करने और आपको जलौंक च बदनाम करने के किसी प्रकार जीवनसप्रत करने के प्रकथ की आशा ही नहीं है।

मेरे दिस में बार २ यह विचार उरपण होता है कि मेरे माता पिका सास ससर हमें सारी उमर विभवा वनकर सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये प्रबंध क्यों नहीं करते ! आजकल वह समय महीं है कि विश्ववा शहरों और घरों में रहकर सती ही बनी रहें, जब कि हम देखती हैं कि सधवा ही नहीं माननीं ! किर हम पुरुषों से ही प्रश्न करती हैं कि वह धर्म से रापय खाकर कहदें कि किस २ के परस्त्रीसंबन करने का त्याग है! इसलिये हमधे माता पिताओं को उचित है कि वह हमारे छिये आबादी से बाहर ऐसे स्थान में रहने का प्रशंध कर वें जहाँ शहर की हवा टकरा कर भी हमारे शरीर का स्पशंत करें और न किसी पुरुष की सूरत ही दि-बाई पक्क और न माता पिता तथा सास श्वसर के प्रेमालाय को देख २ कर हमारे चित्त में कोई विकार उरपन हो ! यहां पर ही हम अपना जीवन भगवान की भक्ति में व्यतीत कर हैंगी! हमारा कोई हक नहीं है कि इस बस्ती में रहकर अपने पडोस में गुरस्थाधम की छछ बछ धीर शामगीकत तथ नामा प्रकार की काम खेच्या उत्पन्न करने वाळी धातीं को दैल २ कर अपने दिलों को कमजोर बनावें ! क्या यह मभव नहीं कि दूसरी सधवा युधनियों की गांद में नन्हें २ बच्चे खेलते हुए देख कर हमारे दिल की इसरने गुद्रगुदायें। हाथ दैन को यह मंजर न था कि इम भी बच्ची बाली होजातीं तो अपने दिली को बच्बों ही से बहुलाया करतीं। किर तुर्रा हमारी बिपत्ति का यह कि हमारे जपर जव बंदी की ऐसी धारा ताबीरात हिन्द की लगा दी गई है कि हम जीवन भर अपने कर्ट निवारणार्थ अवसी इक्छाओं

को भी प्रकट न करें। खेद ! जब कभी बीमारी की हालत व बेहांको में हम से बेफादगी हो आती है तो हमारे घर धाले और निश्नेदार वरीरा हमको इन मानंजनियाँ का शिकार बनाते हैं कि कमयण्त मन्त्री नहीं, एति को भी खालिया और हया शर्म भी उराकर रख दी। मौदर्ले वाल भी यही आश्राज कसते हैं कि चड़ी यद किस्मत है। हमारे इधर उधा बैठने उठने पर भी हमको दोष लगाय जाने है और दरवर्दा हमारी बुराइयां ही रहती हैं वाल बेरहम बादमी अपनी कुषासनाओं में फंस कर इसारे पवित्र मन की चलायमान करने से में भर-सक को अश करते हैं और बहुत सी तरगीय देते हैं प्रस्तु उन पर कोई इन्डास नहीं हराया धाता और हमको ही बाइ कर अफनी पश्चित्र भारमा की उनके पन्ने संबचाते हुए, सरकरा समभा जाता है। हाय येका क्यों ? इसलिए कि हम विध्या हैं ? क्रमारा संसार में कोई साथ सबी रिवा है सिनंगी आकाश में रावि के समय सम्पूर्ण कळाओं सहित निकलने बालं चड़मा तुफको भी हमारे ऊपर दया म भाई ? इसी कारण तेरं ऊपर: विश्वाता ने स्थाही की कालिमल लगाई है, जिसका हृदय स्वयं उजला नहीं है वह दुसरे की प्रसन्नता का क्या उपाय कर सकता है ? इस प्रकार हमारे पृज्य भारे जिल्ली आस्मा स्वयं ही पवित्र नहीं है हमारी। िवस्ति के दर फरने का क्या प्रवस्थ कर सकते हैं ? निवंधी पुरुषों के प्रति कोई पश्चायती प्रयन्थ नहीं !

पुरुषों की काम इच्छा स्त्री से आउवां हिस्सा होती है, तव उनको क्या हक, है कि यह एक दो पत्नियों के सम्मे पर भी बुदापे तक में कुमारी कम्याओं से शादी करें? और उस नव युवसी का

श्रीका सर्वेषा मध्य करें ? हाय हम द्वियाप अवशी फरियाद किसके पास लेजायं, सब कानी में नेल हाल २ कर साथे हुए हैं सिवाय इसवे कि हम खु बार होती किरें। नक्कारे की आयाज में दूसी की कौन सुरासा है। हमारे प्यारे पिता भार्यो ! हमारे कार्टी के उत्पर अस विचार करके ही दी असुबी कम संका पहाओं और हम अवसाओं का जांदन सपाल और धर्ममय पूर्ण करने के लिए प्रत्येक नीत जिलों में एक आइमें विश्ववाधम खुलवाओं और बहां इसे दुनियां की अभने से परे विद्वियों का सन्दं निकालाभ होने दो विस्तसे हमारा सुधार हों वं दे वं चोरी करणा वहीं सीखता है (जसके हाजा पिता उसको उसके दृष्परिणाम से आसाह महीं करते । हजारहा युवित्री वही दुरकर्म का ाती किरती, गर्भ गगानी तथा मुसलमान दृत्यादि नीव लगों के साथ भाग जाती हैं, जिनको बुरी हुटि से देवा जाता है और उनके भी बमस्थार की धीर ध्यान नहीं दिया जाता। समाज में चार पांच था-चकाश्रम खुले हुए हैं। उनसंशी पर्याप्त सब्दाम चित्रवायें नहीं पहुंचाई जाती! उनकी घर में ही सासी की भौति बन्ड रक्या जाता है और उनके जीवन नष्ट किये जाते हैं। हम भोली बाली बातो में फसाफर पुरुष-पिशाचे हमारा सर्वहर अवहरण करते हैं और पार्वापार्जन करने की अजयर करने हैं। हुर्भाग्य वश वदि कलडू प्रगट हुआ से हम विसी दर भी नहीं रहलीं। सरविशास तो जाति में फिला लिया जाना है और हमें भटकने को छोड़ दिया कारता है। शोक है-शर्म है ऐसे पुरुषन्य पर! मेरी इस हृदय निदा क कहानी को सनकर वह कौरका कडोग्डदय है जो न पसीजा होगा ? समाज हमारे करयाणार्थ उचित प्रवन्ध करे यही प्रार्थना है। सारी बदनामियों से घचने का उपाय विश्ववा ही को किसी योग्य विधवाश्रम में रहते देने में हैं। वहां चर आदश जीवन ध्यतीत का ना सीखेगी। और पंची इन्द्रियों के विषयों से दर रहेगी! घरन समाज में सराचार का जीवन व्यतीत करना मुक्किल होगा। बस अगर हम पर दया है तो हमारे आदर्श जी न व्यक्तात करने का प्रबन्ध कीडियं। और दिश्वर के माय कुमारी करवाओं वा विदाह विसी अवस्था में भी न की जिये। जैन धर्मधारी योग्य प्रीड ८ळ-वान युन्क यु नियों का ही विवाह कीतिये। जि-ससं अगाड़ी मुक्त सी अभागिन देखने को न किलें। अनिष्यु से बनना है तो यह प्रथन्ध शीघ की जिए।

मंगी दूसरी शथता है कि हर एक हिन्दीपत्र के सम्पादक महाशय में उत्तर क्रपा करके मेरी इस पुकार को अपने २ पत्र में लावदें और हर एक के कानों तक पहुंचा दें। मैं देवती हुं कि मेरी आह में इंड असर है या नहीं!

---सीन:वार्ध।





जैन शासन के पालक सर्व ही सेनी जीव हो सकते हैं।

केन शासन ने जिस धर्मका चर्णन किया है चह धर्म हरएक मन स्हित प्राणी के हारा पाला जा सका है बाहे यह मनुष्य हो, पश हो। देव हो या नारकी हो। बास्तव में जित प्राणियों के तर्फ वितर्क करके, कारण कार्य का विचार करके सम-भने बाला अन नहीं है वे धर्म के स्वस्प के जातने के लिये असमर्थ है परन्तु तिनके सन है उनके बड शक्ति अवस्य है । यदि उनको निविस विसे और निध्या तथा अनन्तानुवंधी कषाय का नीर का हो तो उनको जैन धर्म के व्यवहार मात्र की ने। अद्धान हो ही जाता है। इस अपूर्व शासन मे दो हा बातें की मुख्यता है एक स्वान्गीश्रति दुसरे ऋदिसातत्व के पालने की । ये ही देनों ध्यातस्व हैं। हर एक आत्या जब स्वभाव से घरमान्मा के समान शुक्र ज्ञान टर्शन मय अवि ।शी तथा ह।भाव में समणता इत परिणमन को रखने घाला है सब इस संसार को अवस्था में जी प्रत्यक्ष हम सबका प्रगट है आत्मकानी, राजदेष मोह रूप. क्षण में सुर्खा च क्षण में युः वी होने रूप बनाहो रही है बह अध्य किसी विकासकारक पडाथ क (नेमित्त में हैं । उसी अन्तराय कारक

की पीड़गलिक 'जड़) पाप पुण्यमरे बन्धन कहते हैं। यह कर्म बन्धन हर एक संसारी जीव हारा नित्य अपने शुभ तथा अस्य भावों के निमिक्त से किया जाता है। दूसरो तरक प्राना कमं षश्ध अपना फल प्रगट कर भंगड रहा है। कमी के बन्धने च लुउने का प्याह उस समय तक नही टरसका जब तक कि आत्मद्वान तही । श्रात्मा मेरा सुपसिद्ध सन्धान गगतं थ रहिन है यह है ध्यान नथा पंसाही ज्ञान भीतर से होगा और आत्मा के भीतर जो अतिस्टिय स्वाधीन आनःव भग है उसके स्थाद लेने की रुच होना यही आफदान है, इस आस्मकान का बार बार विचार कर स्वाद लेना थरी आध्योदनिक का बाहा है। िनको धान में हिल्लका व बायल अलग दीख जाता है उनको एक सरधान में कितना चावल निकलंगा पंसाबान सुनं हो जाता हैं, इसी नरह जिसको दह धडाजान के अभ्यास के वह से भेद विश्वान होजाता है उनको पुत्तमल से मिलं हुए भारमा के भेद में भी आत्मा पुतुरात से भिरत भारत-कता है, इस भेद विज्ञान के प्रदाप से रागादि से भिन्न शुद्ध आत्मा की अनुभृति का अभ्यास करना ही आत्मान्ति का घोज है। जितना कान है। ख इबारमानुभृति के लिये जरूर है उतना बान बैरा-थ्य चारोंगति के दरएक संनी जीव को प्राप्त हो

जाता है। नीच से नीच मानच भी इस घर्म के पांचने का अधिकारी हैं, आत्मोम्निन के मार्ग में एक श्रेणी ऐसी आती है जहाँ आवक के बती को पालने योग्य झान बैराग्य की जकरत पड़ती है उस श्रेणी में भो सर्व पशु व सर्व मंजुष्य आ सकते हैं। दूसरी अणी साधुवृत की है इसमें जितने ज्ञान बैराग्य को लोक पूजित मनुष्य ही प्रत्न कर सकते हैं। इस तरह यह जैनधमं जिसका एक सर्वोच्च भाग ओत्मोन्नित है अपनी २ पहची के अनुसार सर्व ही मनवाल जीवों के द्वारा पाला जा सकता है। पूजन पाठ जा तप स्माध्याय सब आत्म विचार के हेतु से किये हुए ही धर्म की संवा में अते हैं।

दूसरा आवश्यक विभाग अहिंसा का पालन है यह तैरव इस सीवे साथे तत्य पर अवलिम्बन है कि हो। अपनी रक्षा चाहेगा उसे दूसरों की भी रक्षा फरनी पड़ेगी। जब जगत में कोई भी प्राणी मरना व कष्ट पाना नहीं चाहता है तब विवेकी मानव का कर्तव्य है कि जितने अधिक प्राणियों की यह रक्षा कर सके उत्तरा हो ठीक है। इसीलिये किसी भी मानव को निवर्धक पशु पशी आदि को न सताना चाहिये। माँस, अतिधिसाकार, शिकार, घिल आदि के निमित्त वधा पशुजों पर निर्देषपान करना चाहिये व्यवहार में वधाशिक परितर करते हुए जीवन विताना। परोपकारार्थ अपना सर्वस्व अपंण करना। यही अधिमा का करने योग्य मार्ग है।

भा० दि० १ जैन परिचद् का कर्तत्र्य है कि यह श्वव इस धर्म के दी अङ्गी की पाछ और दूसरी स पक्रवाबे।

हमें उचित है कि हम वर्गमान जैनियों को जैन धर्म में दृद्ध करें, भूले द्वार जैनियां को मार्ग बतावे तथा अज्ञान में पड़े हुए मानवीं को समका कर जैन धर्म में बिना संकोच के दाखिल करें। उनके साथ भ्रात्वने का व्यवहार करें। अब समय काम करने का है। प्यारं नत्रप्रुवक स्रोरों! उठो ! कुछ धर्म की सेवा करो ! क्या तुम एक वर्ष में र मास भी भ्रमण के लिये नहीं दे सकते हो ! पहले स्वर्ग०डिन्टी चन्पतराय व सूरक्रमान बकील भादि भावरेरी रीति से दौरा करके जैन समाज को उठाते थे। अब कान से कम ६० दिन १ वर्ष के भीतर निकाल कर प्रवार का काम करो। एक प्राणी को ठीक मार्ग पर छगा देना जब महान प्रशंसा का काम है तब संकड़ों को सुमार्ग पर लाना क्यों कर हितकर न होगा। काम करों ! एरिअस करों. और जैम धर्म का विस्तार करों ।

परिषद का प्रस्ताव नं० ६

श्रीयुन् रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शास्तिनिकेतन विलेषुर में विश्व भारतीय विभाग के भीतर जैन धर्म की शिक्षा दिलाना वहां के कायकर्ताओं ने स्वीकार किया है अतरब बढ़ां एक जैन विद्वान के नियुक्त करने की अतीब आवश्यकता है। नीचे लिखे ५ महाशर्यों की एक कमेटी बनाई जाती है वह ६ माइ के भीतर इसकी उचिन व्ययस्था करे। ब्र॰ शीतलप्रसाद, सिंघाई पन्नालालजी अमरावती सेंड अक्यादास राम जी हमाजन आकोला, याचू कस्त्रचम्द वकील जवलपुर, बा॰ रतनलाल विजनीर।

्यारे भाव्यां ता०२८ जनवरी का यह प्रश्नाद

है जो ता॰ २७ जुलाई तक पूरा होना चाहिये। इसके लिये १००), १२५) मासिक की जरूरत है। दो भाइया ने ५ वर्ष तक स्वीकार कर लिये हैं।

२०) लाला उमैदसिंह मुसदीलाल अमृतसर २०) सिंहई पन्नालाल अमरावती । अय ६०) या ९५) मासिक की और अहरत है । कमेटी के मेम्बरों को चाहिये कि फ़ी मेम्बर २०) या २५) मासिक का प्रवन्ध शीघ कर दे । हमने सिंघई पन्नालाल जी को लिखा था कि वे दौरे पर चलें उन्होंने अपनी कम्या की बीमारी के कारण अस- मर्थता बताई।

जो भाई यह चाहते हैं कि हमारे जैन धर्म का पटन-पाटन व प्रभाव देश विदेश में हो उनको शीशू ही एक विद्यान नियम करा देना र हियं। बालपुर में यहे २ बिद्धान एकत्र होकर 4मं की मीमाँसा करते हैं।

्यारं धनवाने। धन को सफल करो और इस पुभावना के कार्य को हाने दो।

-सम्पादक।

उत्तर न देने का कारण

तिर काल हुआ कि दिन्दी जैन गज़ट के खास अक में एक लेख 'जानि पर वैज्ञानिक मकाश' शोर्षक भी पं० गोरीलाल जी शास्त्री की ओर से छपा था। उस पर मेने कुछ पृश्न किये थे जो 'चीर' में छपे थे। परन्तु पहितजी ने उन पृश्नों का उत्तर अभी तक नहीं दिया था। अब हिन्दी जैन गज़ट के अंक देश में जो पंडिन की ने जाति गोत्र और उन के बकीलों का व नांलाय" शीर्षक खेब दिया है उस में गोड़ा और 'उकील के मुंह से यह कहलाया है, गोड़ा किसी जैनपत्र में पहिले प्रश्न किये गये हैं उन का उत्तर क्यों नहीं दिया गया!

बकोल-'उनका उत्तर देना उस ही समय अच्छा होना जब जैनवनता पड़ी संख्या में उपस्थित होगी'

पंडितजी को मेरे प्रनी का उत्तर देने के लिये बड़ी संख्या में जैन जनता की उपस्थिति की जुरु रत क्यों है? मेरी राय में दो ही जरुरत हो सकी

हैं। एक तो यही कि पं० जी चाहते हैं कि जो कुछ। वं उत्तर दें उस का ज्ञान अधिक संख्या वाली जैन जनना को हो। ज्यादा नादादमें छोग उससे लाभ उठाउँ। दूसरी जुरुरत अधिक संख्या मे जनता इकट्टा अन्ते की मान चड़ाई-प्रख्याति प्राप्त करने ही हो सक्ती है। परन्तु में नहीं ख़याल करता कि प डि त नी को ऐसी एवाहिस हो। धैर कुछ भी हो। मेरे ख्याल में यह दोनी अद्भरतें अखवारी में उत्तर देने से ज्यादा अच्छो तरह व सुगमतास पूरी हो सकी है। क्यों कि पहिले तो जैन जनता की बड़ी संख्या में उपस्थिति के लिये किसी पूजा प्रतिष्ठा का इन्त . जार करना पड़ेगा अंतर मुमकिन है उस मौके पर अन्यकार्य इस प्रकार अधिक हो कि उत्तर देने का अयकाश न मिल सके । और अधिक काल व्यतीत होजाने पर बात प्राप्ती पड्जानेसे वह विलयस्पी ः भी नहीं रहती। दूसरे यदि किसी जहसे में उत्तर ' दिया जाय तो उस में चार पांचसी या अधिक से संधिक हज़ार आदमी मौजूत होंगे। परन्तु यहि चार पांच अववारों में उत्तर छपवा दिये जांय तो इस से अधिक संख्या के लोग उन को एड़ सकेंगे और इतमोनान के साथ स्थाई रूप से उनसे लाभ उठा सकेंगे। जवानी बात तो बहुत दका एक कान में पड़ कर दूसरे कान से निकल जाती है। अन्य श्रधिक संख्या में जैन जनता की जरूरत अख्यारों में उत्तर छपवाने से उथारों अच्छी तरह व आसानी से पूरी हो सका है। और पर जी ने

जो वकील बनने का कष्ट उठा कर गोमह्सार आदि प्रंथों की जानकारी का आसे प मुक पर किया हैं यह एं॰ जी की शप्त के लिलाफ है। मैने गोमट्टसार आदि प्रंथों की जानकारी का दावा न कभी पहिले किया न अध करता हूं। मैं तो अपने लिये शिक्षा की जकरत समभता हूं और हर यक्त योग्य व हितकारी शिक्ष्म गृहण करके के लिये तैयार हूं।

-- ऋषभवास जोन ची. ए. बक्कील-मेरट

साहित्य-समालोचना

भगवान पहावीर के जीवन की महालक-(उर्द्) रचयिना गयवहादुर लाक जुगमन्दरलाल पम. प. पम. आर. प. एम. आदि। प्रकाशक कैन मिश्रमंडल, दरीवांकला देहली। एष्ट ३० मृत्य भी मात्र। सफाई छपाई सुन्दर। यह हर्ष शाविषय है कि अब भी महाबीर जयन्ती के महत्व को समाज हर्यक्रम करती जा रही है। उस ही शुभ श्रवसर के हर्षीपलक्षमें यह सुन्दर दें कर उक्त महल ने उद् संसार के लिये प्रकट कर वास्त्रविक कार्य किया है। मान्य लेकल ने भगवान महाबीर के पित्रव जीवन की भलक यही ही खूबी से प्रशट की है। उत्तम हो यदि इन शन्तिश नीर्यद्वर का एक वृत्द जी को द्वर्भ भाषा में प्रकट किया जावे। प्रकाशको को ध्याम देना चाहिये।

भगवान महाबीर श्रीर उनकी तालीम-(उद्ि) यह ३० पृथ्य का ट्रेक्ट जैन सभा रोहतक ने अयन्त्री उस्सव पर प्रकट किया है। इस समाके इस समयोपयोगी कार्य के लिये बधाई देंगे, पन्तु ट्रंक्टके गई। कागज़, गई। छपाई और गई। सिलाई के प्रति अवश्य ही उस का ध्यान आकर्षित करेंगे। इस लापरवाई ने पुस्तक का महत्व विल्कुछ घटा विया है। सब पृछिये तो यह हदय के उसआदग भाव के माप को प्रकट करती है जो हदय में भग बान के प्रति है। ट्रंक्ट पठनीय और अपने दिवय का अच्छा है। मृत्य ८) है।

मात्र मास्तिकप्र है। संपादक हैं भी ऋषभदासकी ओसबाल। वर्ष ७ का दूसरा अंक हमारे सम्मुख हैं। एक सामाजिक लेख व ध्याबिक, कवितायें सब ही उपयोगी हैं। सम्पादकीय टिप्पणियों भी उपयुक्त निभीकता और स्पष्टता को लिये हुए हैं। सामाजित को हण्डिकीण करते हुए भी पत्र सर्व विय होसता है। वा मू० २००१ अंसवाल कार्या लय, जीहरीबाजार, आगरा से अत।

सैत्वाल जागृति स० भी हिरासाय जित-दास चवड़े वर्भा। यह मराठी भाषा का मासिक पत्र अमी हाल ही में सैतवाल जाति के उन्नति निमित्त मकट होने लगा है। इस का ३ रा अंक इमारे समक्ष है। लेख व किवताय सब मिलाकर छः हैं। सब ही सर्वोपयोगी शिक्षाप्रद हैं। संपाद-कीय लेखमें मराठी भाषा में प्रकट हुये रा० मोहनी के इतिहास में जैन धर्म संगंधी अयथार्थ सातीका निराकरण उपयुक्त रीति से किया गया है। एक ब्राह्मण बिद्वाद का भगवान महाबीर के कीवन पर भी जेक उत्तम है। परन्तु समाजहित सक्षी लेकी का अभाव अवश्य खटकता है। बार मू॰ ११/ है। जैन सुधाकर प्रेस, वर्धा से प्रोप्त।

परिषद् समाचार

उपदेशक की दौरा रिपोर्ट

३०। ४। १६२४ से १४। ४। १२२४ तक

— अमर्पाटन । पन्ना से सलकर २ । ५ । २५ को अमरपाटन आग, मन्दिर जी में शास्त्र बाँखा गया सभा की गई, उपस्थित २० थी, धर्म पर ब्यास्थान दिया, ४ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा कन्या विक्रम, अश्लील गाने और वेश्यानृत्य को अधा थन्द करने का चचन दिया। यहाँ ७ भाई समासद हुए तथा २ भाई बीर के बाहक हुए और १ भाई जैनसिन्न का माहक हुआ। यहाँ १५ घर दि० जैनियों के हैं, जनसंख्या ६० के क्रीब है यहाँ से ४ मई को खलकर मेहर गये।

-- मैद्द स्टेट । यहां मन्दिर जी में शास्त्र बांचा, यदां कुछ ३ धर जैनियों के हैं। इसलिये ध्यास्थान नहीं होपाया।शास्त्रवैश्वना के बाद परिषदु के उद्देश्य सम्बद्धत्वे और बेश्यानृत्य कन्याविक्य, अश्लील गाने की प्रधा बन्द कराई तथा मन्दिर जी में घोती, दुपहा, खना भादि शुद्ध कादी के रकने का प्रक्ताब पास कराया। यहां पूजन समय पर होता है, मन्दिर के उपर एक नई बियन्ति उपस्थित है, बह यह कि महाराजा मेहर की आज्ञा हुई है कि स्येग्ठ के महीने भर में बाज़ार के सब मकान पत्रके घन जाना खाहिये नहीं तो उस मनुष्य का मकान छीन लिया जावेगा जो नहीं बनवावेगा। तथा उस बाज़ार में जैन मन्दिर भी है उसे भी यही आजा हुई है। छेकिन बहां मन्दिर में कुछ रुपया नहीं है और न बहां के जैनियों में इतनी शक्ति है जो उसको बनवा सकें। पेक्षा हाल सुन कर एक दर्बाहत 'तीर्यक्षेत्र कोटी बर्व्स 'सीर 'परवार सभा जबलपुर' को दिस्वाई है।

— रीठी ६ मई को पहुंचे। स्थानीय पाठशाला में बैठक थी, यहाँ सिंघई तक्ष्मणसास नथा उनके मुनीम पुनऊराम लोधी के प्रयान से सर्वसुधार पाठ-शासा २ मास सं स्थापित हुई है, जिसमें लोधी, भीमर मादि जातियों के ४५ कड़के (जो दिन मर भपना मजदूरी च काश्तकारी का काम करते हैं) पहते हैं। उन्हें भक्षरकान तथा मौकिक धार्मिक शिक्षा दौजाती है। पाठशाका का समय अ। से १० बजे तक है। यहाँ से = मई को शाम की गाड़ी से रवाना हुए।

—सक्षेमाबाद (जबसपुर) में ह मई प्रातःकाल को थाये शाम को मिंबर जी में शास्त्रवंचन के बाद सभा की कई, धर्मविषय पर व्याख्यान दिया। ११ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। शास्त्रसभा स्थापित की। बालिबाह, बृद्ध बिवाद की भया बन्द की, यहाँ पूजन का प्रवस्थ ठीक नहीं है आपस में फूट है। कभी २ बारह बजे पर पूजन होता है। सभा में अनुमान १ बजे तक संमभाते रहे किन्तु कुछ नहीं हुआ। सिंघई जादोलाल की राय पुजारी लगाने में खिलाफ है। यहां से १० मई को गोसाल-पुर आय। यहाँ ५ भाई समासद हुए, १ भाई बोर का प्राहक हुआ।

—गोसालपुर (अवलपुर) १० मई का आये।

मिन्दर जी में सभा की गई, ११ भाइयों ने स्थाध्याय का नियम लिया तथा वेश्यानृत्य, कन्याविक्य, आतिशवाजी, अश्लील गाने, वाल-वृद्ध
विवाह की प्रधा वन्द्र की। यहां पूजन समय पर
होजा है। यहां ६ भाई सभासत् हुए। यहां ११ घर
दि० जैनों के हैं और जनसक्या ५० के लगभग है।

—मँभीली (जवलपुर) १३ मई को आये और
मोदा दामोदर वार्वसंघई दुलीचन्द्र जी से मिले और
सभा के लिये कहा किन्तु उत्तर मिला कि पण्डित
जी साहब यहां पर फूट है आपकी सभामें कोई भी
नहीं भा सकता आप क्यों बार २ हमें समभाते हैं।
यहां एक मिन्दर में, जिसमें परकोटा में किवाड़ों
की आवश्यकता है। १४ मई को करड़ी खाये।

जिषयातीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इकाज।

हारबर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य बैद्य जिबयातीस जोस्छिन (Joslin) और पनस्र (Allen) साहयान के नरीके-इलाज जिस को तमाम विज्ञान जगत् में प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुनाबिक डा॰ डक्तावर सिंह जैन पम॰ डी॰ (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीज़ीं पर बहुत कामयांवी हासिल हुई।

१—मुभे इस तरीक इलाज से कृतई आरोम हो गया है। मैने महाराज साहब भी नैपाक-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुभे शकर भमेड की बीमारी सभी हुई थी उसमें इस तरीके के डलाज से विस्कुछ आराम होगया है।

—दं कनल विजय श्वश्रे जङ्ग्बहादुर:-Foreign Minister, Nepal देहली। २—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर प्रमेह रोग को विव्कृत अच्छा कर दिया। मैं बढ़ा मशकूर है।

—श्रीतल प्साद शमवैद्य, चाँदमी चौक देहली। १-- ४ साल से मुक्ते शकर-प्रमेद-शेग ने दङ्ग कर डाखा था, लेकिन भाप के तशके काज से विन्द्रस ठीक दोणका हो।

--- जानकीपुसाद जैन मैंनेमर, कोर मिन्स मेरड।

युक्त यह तरीका-इकाक पहुत मुक्ति ह साबित हुआ।

-- वित्रसंग जैन रईछ, कांब्सा।



समाज

्षित्रनीर के मसिद्ध (देशभक्त) परीपकारी स्ना० बद्रीदास जी रईस का स्वर्गव।स

ला० बद्दीदास जी की आत्मा ६= वर्ष की आयु में इस संसार को छोड स्वर्ग को पहुंच गई।

विजनीर के प्रसिद्ध जैन खानदान के आप बुजुर्ग थे। विजनीर का केवल यही एक खानदान था ज़िसने असहयोग में पूरो भाग लिया था। श्रीयुन् रवनसाल असहयोगी वकील मन्त्री-'भा० दि० जैन परिषद्' व राजेन्द्रकुमार 'प्रकाशक-धीर' भी भाग हो के भतीजे हैं।

आप विज्ञमीर केएक बड़े रईस घे और संस्कृत, बंग्ने जी व फारसी के भी विद्वान् घे आपका कितना ही समय शास्त्राध्ययन में लगना था, 'श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र कमेटी' के अन्त समय तक मन्त्री नहें। जैन समाजोन्धान के कार्यों में बड़ा भाग लेने नहें। जैन कालिक सम्बन्धी महासभा के बंधुटेशन के उन्लाही मेम्बर थे।

अन्य रईसं। की समान आपने अपना रूपया पेश य सरकार की गुलामी में खर्च नहीं किया बढ़िक धर्म य देश के उपकार में लगाया है। विजनीय का वि-शास जैन मिट्ट्र आप ही का यनवाया हुआ है। विजनीर ज़िले के जैनियों में विद्याप्रचार के लिये आपके ही प्रयत्न से जैन बोर्डिङ्ग स्वापित हुआ था जो असहयोग के जुमाने से बन्द पड़ा है।

बिजनीर में आने घाले यात्रियों के ठहरने का कोई प्रयंध न देख आपने विजनीर में जैनध्यप्रशाला बनवाई है, जिसमें आजकल हजारी हिन्दू यात्री ठहर कर आराम पाने हैं। आपकी मृत्यु से जैन समाज एक वृद्ध अनुभवी समाजसेवी विजान से विहीन होगया!

श्री जिनदेव से प्रार्थना है कि आवकी आत्मा को शास्ति दें और आपके माई ला० महावीरप्रसाद ब का० हीरालाल जी नथा कुटुस्थियों को धैर्य दें।

जीवदया सभा(भागरा) के महानकार्य

- स्टेट एका जिला मैनपुरी में नी दुर्गा भीर दशहरा पर होने वाली प्रत्येक वर्ष की सैकड़ों पाड़ा वकरा आदि पशुओं की विक्रिंहिसा इसी स्वैत की नौ हुगों से राज़ाका से सदा के लिये बन्द करा दी है। राजा साहब की तरफ से भी विल्डी जाती थी। कुल बन्द कर दी गई। देवास भैसाव के मेले पर में रायं निगरानी को गया था किसी तरह की हिंसी नहीं हुई।

-- मोना गुलायत (देवास) के संध्यासी स्रोताराम जी ने उपगामी के १५०० मनुष्यों से सही कराकर मांस भक्षण नथा शिकार खेलने का स्याग करवा दिया है।

—मीना चौरसिया(फरुखाझाद) में तारीख २५ २६ अमेल को कल्लवाई श्वियमहासभा का यहां धूर के साथ वार्षिक अधिनेशन था उस में सभा के प्रचारकों को मंज कर यह प्रस्तात पास करा दिया है कि इस जाति में घलिदिसा एक दम बन्द की गई। कोई आदमी किसी भी देवता पर किसी तरह की बिल करेगा तो २५) जुर्माता किया जायगा, न देने पर जातिसे खारिज।

सभा ने इस वर्ष संग्लाकों के पर पर श्रीमान् राजा साथ स्थामानिसह जी अवागढ़ को चुना था, खुरी की बात है कि आप की स्थीकारता का पत्र आगया है।

--वाब्राम बजाज मन्त्री।

— भा०दि० जैन अनाथा । म देहली का न्यार्थिकोत्सन आश्रम के आधीनएक मिडिल स्कृल है जिसमे धार्मिक व लीकिक शिक्षा दी जाती है अनाधाश्रम के भवन में चैत्यालय बनाया गया है उसकी नेदी प्रतिदा तथा अनाथाश्रम का गार्थिकोरसक ११ इन से १३ जन २५ तक है। पिशनों के न्याल्यान होंगे भार्यों को आना चार्डिये।

-- महाथीर प्रसाद मैनेकर ।

--भा० दिए जैन पद्मात्रती परिषद की अस्तरम कंमेटी की बैठक ताल दि। १। २५ की कीरोजावाद में १३ वेश्वरों की उपस्थिति में हुई। जिला में १ यहोपधीत संस्कार कराते २ लड़की के, विवाह में स्थानीय पड़्यायत का जीमन घार, बन्द ३ नियमायली विधंत तथा शंसोधित करने के, लिये सिलेक्ट कमेटी का जुनाय ४ जाति की ११ यम को विधाहिता लड़की जबरन दूसरी जानि में ले जाने वालों को दण्ड नथा लड़की को जाति में रखने की आहा ४ घिवाह शास्त्र विधि से किस उम्र से किस उम्र से किस उम्र तो वालों के मृत्यु समय का नुका बन्द करने को कमेटी का जुनाव ६ मृत्यु समय का नुका बन्द करने को कमेटी का जुनाव धादि प्रस्ताव पास हुए थे।

परिषद् की लेवा के लिये जिन जिन शादियों ने समय और द्रव्य प्रदान करने के घचन दिये हैं उन्हें पूरे करने चादिये।

—बाबूराम बजाज महामन्त्री।

— नालंधर छ।वनी म्यूनिसिपेन्टी में एक जैन पेम्बर की नियुक्ति, हम सर्व जैन बन्धु में को यह स्चना देते हुए हर्ष होता है कि एक गव प्रान्त की नालंधर छ।वनी म्यूनिसिपेटलीके तृनीय वार्षिक जुनाव में सात समास हों में श्रीमान धर्म प्रोमी लाल मुक्तामल नी जीन, मन्नी, दिगम्बर जैन समा भी बहु सम्पति से समास है निर्वाखित हुए हैं। अन्य स्थान के जैन भाईयों को भी इस विषय में पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। हम उक्त सभास हुं महाशय को इस अवसर पर शुवान्तः करण से अधाई देने हैं और उन का ध्यान इस और आक-रित करते हैं कि घट अपने कर्मव्य का न्याय परता और निर्माकता से पालन करें।

-मुरारीलाह जैन मंश्री

---जैनपाठशाला की_{र्र}स्थापना हर्यका है। है कि आधरा में जैन पत्तकों को धार्शिक शिक्षा देने के लिये बाबू निर्मलं कुमारजी के प्रत्यन से १-५-२५ को एक राजि पाठगाला की स्थापना हुई है। यह सुमानुष्ठान "जैन धर्ममूष्ण" ब्रह्मचारी शीतल प्रमानुष्ठान "जैन धर्ममूष्ण" ब्रह्मचारी शीतल प्रमानुष्ठा के कर कमली हारा हुआ है। उसी दिन, ब्रह्मचारी जी रायघहादुर बाबू सखीवन्दीजी तथा बांठ निर्मल कुमार जी के भागिक शिक्षा भी उपयोगिता के विषय में स्थाव्यान हुए। लगमग २५ चालकों को भर्मपाठ दिया गया। बालकों को मिठाइयां बांडने के बाद उस दिन का काय समाप्त हुंआ। पाठशाला उत्तरीक्षर उम्मति कर रही है। प्रसिदिन ४० बालकों की उपस्थित रहनी है।

(पं • हरनाथ दिवदी सम्बाद दाता)

देश

--- पद्रास के त्कान से मदास और साउध मर हरा रेखने को लगभग दो छाख की हानि हुई है। ---- भी लिपर महाराजा पेरिसमें बीमार हैं। लाई डासन चिकित्सा कर रहे हैं। महारानी ओर युव-राज उनके पास कहने के लिये देश से रवाना होगये हैं।

--- हेरा इस्पाईताकां में मुसलमानों की ओर से इस शांशय के बहुन से नोटिस शहर में लगा दिये गये हैं कि अमर जून महीने तक दिन्दू लोग मुसल मान न बन जायेंगे और मुसलमानों की शर्ने मञ्जूर न कर लेंगे तो फिर कोहाट की पुनरायृत्तियां होंगी।

--- इ.स.क्या १६ मई को हिंदू मुसलमानों में एक हंगा हो शया। एक बंगाली इन्जीनियर की भाश उनके बगीचे में चिता पर रखकर जलाई ज में बाली थी। इस पर कुछ मुसलमान पास की एक मसजिद से ईटे केंकने लगे जिससे दंगा हो गया। एक काम्स्टेबिस भी घायल हुआ। विदेश

— अंग्रे मी को अय भी बोलगेविस्स का है भा सताया करना है। पिछले सप्ताह, कई विशाओं से यह समाचार आये कि अंग्रेज सममते कि वोलगेविक अमे जी राज्य की जड़ें उखाड़ फेंकना चाहते हैं, इसके लिए, वे जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं, कहीं काबुल, और देशन को बहकाते और भारतच्यं पा अपना जाल फेंकने हैं, और कहीं अंग्रेज मज़दूर समितियों को मड़काते और अपनी तर्फ़ तोड़ने हैं। पता नहीं, इन बानों में कहां तक सच्छाई है! यह भी सम्भव है कि ये बाने इस लिए फेलाई जाती हैं। कि इनकी आड़ में इस लैंड के बर्तमान शासक धूरी कहरता के साथ शासन करने की सुविधा पार्ष ।

— क्षायुल्त राज्य उदारता और कहरता का पुक्रत मासित होता है। उदारता यहां तक कि २० एतिल को जलालावाद में, वड़ी धूम घाम से सिक्चों का नंसरा वार्षिक दीधान मनाया गया, गुरु प्रस्थ साउच की सभारी निकली, और 'चाह गुरु को फतद' से आकारा गुरु ताया गया, और कितने हो काबुलां मुस्लमान तक इस उत्सव में, शामिल हुए। और कहरता यहां तक कि केवल कुछ मतभेद रखने के कारण, दो अहमदिया मुस्लमान बड़ी करता के साथ, परधरों की मार से, मार उत्ले गये! यह अपस्था न सतीय-जनक है, और न सम्यता सुचक ही!

--- अमेरिका में घोषणा की गई हैं। कि राष्ट्र-पति कूलिज एक अंतर्राष्ट्रीय समभौता कर हे के लड़ाई। में विपाक्त प्रेस के प्रयोग की सीमा निश्चित करने के पक्ष में हैं।

जगतप्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

बांदी के फूल भाव १) तोला कि कि माने के वहे फूल भाव २।) तोला (सिर्फ़ बाँदी वा बांदी पर संत्रे का मुलामा करता के बनाने वाले सामान की सुबी) इर मारा कम व वैसी जितने तौल कोती में नैयार हो सकता है उसकी विगत ।

इर अर्द कप व वेंसी जितने तील चांदी से रोवार ही संकता है उसकी विभन ।		
हीत्रा ५००) से २०००)	परावत ३४०) से ३०००)	अमधनबार १००) से ५००)
श्रद्भारी १०००) से २०००।	इन्द्र एक ७६) से १५००)	समोसरनकीरचना२४०)से१०००)
पालकी (०००) से १५००)	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	×पञ्चमेर ३०) से २००)
देबुळ . ३००) से ५००)	क्ष्यवर एक ७) से २४)	•अप्रमंगद्भस्य (००) से २००)
हाथी का साज ५००) से २०००)	क्रमुकट १०) से २०)	अच्छणतिहार्य १५०) से २५०)
घोई का साज २०० से ४००)		#सोलइस्वपर्ने १००) से ५००,
च्वल्लम ५००) से १००	समोसरम (००) से ३०००)	a × भामण्डल २०) से १००)
बब्दीडा ६०) से ७५) अस्तरी डंडी २०) से ५०) जीन मन्दिर के उपेकरण ।	अहार्र हीपकी । १३)से ५००, रचनाका माँडुन्ता	क्कलशा ४०) से ५००) तवत चोदी के २००) से १०००)
संचकुटी २५००) से ४०००) वेदी ===००) से ४०००)	तेरह डीपकी रचनाका मांडुला } ५००)से२०००)	बारहदरी २४००) से ४०००) अपूजन की वरतन ३००) से ४००)

यह कान वालिव आड़त लेकर बनवा हेते हैं मन्द्रिकों से काम में ६०) लेकड़ा को बाइत लेते हैं। 🗴 इस चिन्ह की चीनें तैयार भी रहती हैं। अ. वे. शुजे तांवे की बनाकर सोने का मुखबार होता है।

पता—(१) पत्रान कार्यात्तय (कोठी) मोतीचन्द कुन्नीलाल, मानी कटरा, बनारस । (२) जैन समात्र कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी। Tol Address—"Singhal" Banares

गोरे भौर खूबसूरत होने की दवा।

शाजारा जिल-बाक-बेट्स की सिकारिश से डा॰ लामडेन साहब ने महाराज मेसर के बास्ते मंगार्र थी। जिस को सात दिन मलकर नहाने से गुलाबके कूल की सी रक्त आजाती है मुद्द पर स्याद दाग मुंह से कोड़ा फुन्सी, दाद, लाज हाथ गांव का फटना बगल में बदबूदार पसीनेका ओना हयादि सब की साफ कर खमड़े की नरम का देती है। ग्रहकुर्ली से बनाया है इस की खुराबू असे तक बदन में से नहीं निकस्ति । कीमत है शाशी १।) द्यारा ३ शोशी ख़रीदार को १ शोशी मुपत । लाकस्यय ॥। पता:--मुहम्मह श्राप्तीक एसंड को भागरा ।

बाजरचा सप्तरस्त वक्स ।

बहुषा देखते सुनने में बाता है कि होटी अवस्थाके अनेक बालक रोग मसान, एसही. श्यास, मांसी, करक, दस्त, सुकिया, उसर, नेवपीशा, गसराव्ड आदि में कंसकर मरजाते हैं और उम होग इनके माता विताको मृतादिक की बाधा अपटा नजर बताकर ल्टते हैं परन्तु आराम नहीं होता । हमने इसके लियं वक वि कही को बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शास्त होते हैं। जो ४० वर्षसे घड़ाधड़ विक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा सवश्य करें सूर्या डाव्ड कर कुल १०० मिलोने का पता — क्योतिष २स्त भवन कर सूर्य स्थार पराज य

त्राप जानते हैं:--

कि भाव दिव जैन परिषद के स्वाधीन सटक्यरनों द्वारा जिस मकार धर्म का थचार हो रहा है, यह सर्व विदित है। परिषद किसी भी सामानिक भन्गड़े में न पड़कर स्वाधीन रूप से जपने उद्देश्यों की पूर्ति कर रहा है। परन्तु उसमें उसे पूर्ण सफलना तब ही मिल सक्ती है जब सर्व सड़मन उसे अपनायें और अपने भरसक उसकी सहायता करें। बस्तून: देश विदेशों में यदि आप जैनधर्म का मचार होता देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता की किये। उसके द्वारा 'विश्वनारती' महाविद्या-लय में इसकी बात का पवन्ध किया जा रहा है। दूसरे समाज की दशा सुधारने े यदि आप सदेख्लु हैं और उसे धर्मनिष्ट देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता की सिये। इसके 'बीर' पत्र तथा उपदेशकों तथा ट्रेक्टों द्वारा इस बात की पूर्ति की जा रही है। तीसरे यदि आप विछुड़े भाइयों को पुनः जैन धर्म में टीचित देखना चाहते है तो इसकी सहायना की जिये, इसका उपदेशक जैन कलालों को पुन: जैनधर्म में ला रहा है। इन धर्ममय कार्यों से यदि आप को मेम है सहानुभूति है तो आज ही जितनी अ। थिंक सहायता आप कर सकें की जिये। यदि समय पर सहायता न मिली तो यह प्रार्मिक कार्य अप्रभर में ही रोकना पड़ेगा। क्रन्मी साथ नहीं जायगी। उसकी शोभा दान में हैं। इसलिये सब से पहिले पश्पिद की सहायता कीजिये।

सहायता शेजने का पताः--राय सहाब साह जगमन्द्रदास कोषाध्यक्त भाव दिव जीन परिषद मजीबाधाद (विजनीर यु.पी.)

মার্গ্য:--रतनलील B.Sc.LL.B मन्त्री-'मा० दि० जीन परिषद् बिजनीर (यू० ची०)

श्री बर्डमानाय नम् ।

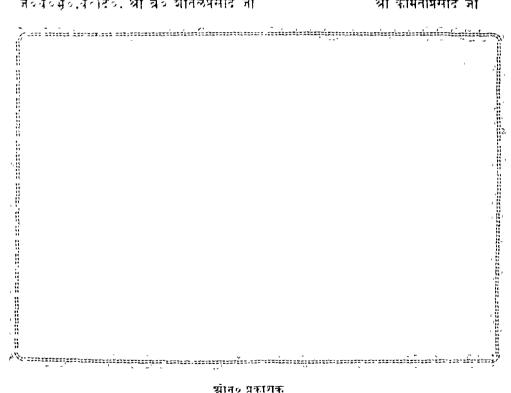
श्री भाग्तवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाचिक पत्र ।

धानक सामादकः :

श्रांन० उपसम्पादक—

र्ने व्यवस्थात्य तिहास श्री त्र व्यवसमार नी

श्री कामनाप्रसाद जी



ग्रोन० प्रकाशक

the first of the f साबवार । सह राज्यका !! वाववात !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

🖹) भरी मजदूरी नकार्णादार फेशा कार्य जैसे बेटी, तालको, सिहासन, चबर छत्र छादि भा मरी मत्तवरा कादा काम ् लिन - जैसे थाली, लीटा शिलास वगैरह २

THE STATE OF THE S हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्स क उपकरन हमारे यहाँ हमेशा बना करने हैं। श्रीर तैयार मी रहते हैं। चेंबर सिहासन बेंद्री नालकी, अष्टमङ्गलद्वायः अष्टवर्ताहायः, मुक्तर मेर मीमगहल आदि । ताँव के अपर कोन का बरक चढ़ हर सामान पञ्चमेर, शिलर कलश कलशी, जरदोत्ती का सामान जैस चलोबा,परदा इन्हार बचनवार इत्यादि ।

हमारं यहाँ बनारसी साडियाँ साफं इपट्टे फिनलाब पीत के थान उसकाफ, काशी सितक के भान, इपट्टे साफे, दावना, भादा पद्राः प्रवा साडी टकवा वर्गरह ।

हारबर्ड यूनीबर्निटी, अमराका के योग्य बैदा जिबसातील जोस्किन belien और पत्नन Men साहवान के तराके-इलाच जिलको तमाम विज्ञान जगत में प्रमाणिक श्रोर पूर्ण माना हन्ना है क मुताबिक डा० बरवाबर्गविह जेन एम० डा० (श्रमरीका । सदर बाजार देहला का श्रपने भरीजी पर वहत कामयाची हालिल हुई।

१ मुभे इस सरीक-इलाज स कर्तर श्राराम होगया है । मेने महाराज साहब श्रा नेपाल नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जा सभे शकर-प्रसेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके क इलाज से विल्काल झाराम हागया है

२--- आपने इस तरीके इलाज से मर शकर-प्रमेह रोग को ,बिल्कुल अच्छा कर दिया। में 🗷 बड़ा मशकर है।

तीन चार साल से मुक्ते शकर-प्रसेट रोग ने तङ्ग कर डाला था. लेकिन धापके तरीके इलाज सं बिल्कुल ठांक हागया हु।

मुके यह नरीका-इचात बहुत मुक्तेद साबित हुआ ।



वर्ष २

बिजनोर, आपाद कृष्णा ह छीर खम्बन् २८३१ १५ जन, सन १६२५

अङ्ग १६

महा है वीर

(लेखक-श्री । विजयकुमार श्यायतीर्थ)

लाकें जो शतु मित्र समान । सहे इत्सर्ग श्रांक महान ॥
सहा ऋषि व्यान धरे पिर धीर । न हैं वे भीक महा है यीर ॥ १॥
सहें सत्यावार दुःख अपार । स्वदेशी हितेषि श्री कर्ण श्रधार ॥
सहें सत्यावार दुःख अपार । स्वदेशी हितेषि श्री कर्ण श्रधार ॥
सहा मुनियों न धर्षे तिनि पास । खड़े खल दुर्वन कहि दें जास ॥
सहें तप रिद्धि प्रजालक धीर । न है वे भीक महा है वीर ॥ ३॥
ओ अस्वर कस्वर सस्वर कात । नतें, जु दिगस्वर जीतहि लाल ॥
लाहें वनवास तिरें भव तीर । न है वे भीक महा है वीर ॥ ४॥
महाबल बाहु नरोप्तम भूष । श्रशीतिम श्रश्न भवें जिनि कष ॥
सहाबल शाहु तरोद्दा महान । चलाविह जंगम भीन जहान ॥
सहाबल शार सहे अब पीर । न है वे भीक महा है वीर ॥ ६॥
सहाबल शार सहे अब पीर । न है वे भीक महा है वीर ॥ ६॥

करें गुरु ते जो दोष बस्तान ! निःश्वल्य निशंक हुनीन्द्र महान !! खाँदें अतिद्यह तर्षे तप भीर ! म हैं ने भीक महा है वीर !! ७ !! जे गौरन त्यांगि गये वन मोहिं ! स्व रखांग्या महिंदे पाप पलाहिं !! लगोनल जारहिं कमें अवीर ! न हैं ने भीरु महा है वीर !! म !! जे कामरु बाम नाम भये ! स्वातम रस में लबलीन उसे !! समता रस रहितत निभिर होर ! न हैं ने भीरु महा है वीर !! ह !!

जैन-ला

(क्रेब-श्रीमात् चम्पत्राय क्रेन वैश्वितः) (क्रमागमः)

"विधवा बधु का अधिकार,

"पिरामह के जीवनावस्था में यदि पुत्र मर गया हो तोश उसको स्त्री का पितामह के धन प्रभर्ता के समान अधिकार नहीं हो सका किन्तु पितिवना भर्ता के शयन का रक्तण करती धर्म तरिपर विनय से मस्तक नीचा कर श्वश्रू से पुत्र को याचना करे। (१)

उस (पुत्र) के मरजाने पर उस की खी की खंब करने में कुछ अधिकार नहीं है केवळ भोजन बख के वास्ते नियत मासिक के हिसाब से के सकी है। (२)

अपने पति का द्रव्य भी जो ससुर और सास् के हस्तगत हो गया है नहीं हो सकी केवल प्रतिसे जो प्राप्त हुआ हो उसी की अधिकारिणों है। (३) और पुत्र गोद लेना चाहे तो भी उन की ही आहासें सर्व लक्षण समुक्त चंग्रज बालकलेंचे। (४)

उक्त विभवा सासू की इच्छानुवृत्र सौँपा हुआ घर का काव्यं उस की शसन्नता यंश्य करती रहे क्योंकि सासू माता के समान है। (४)

"जो पिता की मृत्यु पश्चात् पुत्र की मृत्यु हो"

पुत्र के मरजाने पर भनों के सःपूर्ण दःय की गालिक पुत्र की स्त्री अपनी सासू के साथ कुछ कालपर्यन्त मध्यस्य साथ से रहे। (६)

स्वं करने का अधिकार सर्वधा पुत्र की बधू को ही है किन्तु जैन सिद्धान्त के अनुसार उसकी । साक्स को नहीं । (3)

⁽१) देखेः मठ सं० ११३, ११४

⁽२) देखो भ० सं०६१,तठ मी । १४ मा त्मी । ०६

⁽R) ,, , , the ack ,, , tea

⁽४) , बच नींच दक, ४६

⁽x),, ,. 15, 914 \$ 10 21:

⁽१), भर संत्रः

^{(• ,) ,, ,, *4}

सम्बद्धाः सेया जिस प्रकार पति करता था वसी प्रकार करे। यदि सास्क्ष्मे भर्म कार्यकी इंट जा हो ता भन्न देवें।(म्)

भितामर के रुप्तायात श्वसुर के द्रव्य में अपने निक्कों कार्य में ख़र्र करने का कुछ अधिकार नहीं है। जिल्हा के उत्स्व प्रतिष्ठादि जाति सम्बन्धी खर्म कर्मादि कुरुम्य पालनादि कार्यों में स्वयं कर सकी है दूसरे प्रकार में अधिकार नहीं है। (E)

परम्तु पति की उपार्तन करी हुई जंगम स्था-घर स्थापित सामित्री, देव यात्रा प्रतिष्ठादिक वर्ग कार्यों में लगाने खुर्व करने का अविकार यह विधार रखती है जो सासूकी सेवा करनेवाली प्रशंसायात्र सर्वशिष आहिक गुणवाली होते। (१०)

यदि उक विश्वना शीलवाली मिष्टभागिणी सास की भाकादुसार जाने वाली कुटस्य पानन में तपर सामर्शानुमानितों कुटस्य जनींके अनुकुल मर्ता की शस्या की संत्रक सामू और नित प्रश्लेसे सिता करता। विजयपुक्त मस्तक भूकाने याली चैसी शुभ की भी साम्युक्ती आक्रा निता अपनेपति का दुश्य क्या नहीं कर सक्ती। (११)

"अपुत्रा"

जो पुत्र सम्तान विनासरे वह द्वस्य उस्त की हिश्वताको भिल्ने और उस्त विश्वतायद्व को मृत्यु होजाने ताउस का द्वन्य सासू लें!।(११)

"सपुत्रा"

महाययंत्रत को धारण करती हुई तथा अपने धर्म में तथार कुटुम्ब का पालन करती हुई अपने पुत्र को भर्ता के स्थान पर अर्थात् भर्ता के द्रव्यका अधिकारी नियुक्त करें। (१३)

पुत्र को मर्ला की जगह नियोजित करने में उस स्वी की सास को रोकने का कुछ अधिकार नहीं हैं और उस के माता पितादिकों को भी फुछ अधिक कार नहीं है। उत्तम पुरुष चार्गे प्रकार के दिये हुये द्रव्य को फिर प्रहण नहीं करते। ऐसा करने से वे नग्क के पात्र होते हैं। (१४)

स्वामी के भाग में आये पश्चात या मोल स्थित हुआ धन स्त्री (उसकी ओवनाबस्था में) अपनी श्वकातुमार धर्मादिक में व्यय करे परन्तु यति की मृत्यु पीछे खर्च नहीं कर सकेगी। (१५)

त्रिभवास्त्री पति के द्रव्य की आय केवल निर्वाद योग्य लेती रहे शेष सब द्रव्य का अधि-कारी पुत्र ही है। (१६)

विध्याका पुत्र गाताकी सम्मति विना खर्च नहीं का सकता है और उस हे मग्ने पर उसकी स्त्री मर्तार के धन की स्थागिनी होगी। (१७)

कभी वेची नहीं गई और परभ्परा से चर्की आर्थ सासुरे की समस्त स्थावर भूमि को पुत्र की

^{- (} व) देखे। नव सं० ++

⁽⁸⁾ m m 22, 884.

⁽१०) , भाव नीव ११४, ११४

^{(12) ,, ,} tox too

⁽१३) देखे। मठ सं ० ६६

^{## (, (48)}

⁽१४), आठनीव १०२

⁽ts),, ,, tex

स्तमिति विना विश्वया को अवने कार्य में स्वर्णने का श्रिकार नहीं। (१=)

"दयय का अधिकार"

जो धन बट गया है और अपने २ अजिकार में आ गया उसकी खुर्च करने का अपना २ सब को अधिकार है। (१६)

िध्यास्त्री कुटुःव से प्रथम से ज़री हो तो अपना द्रव्य निज इच्छानुनार व्यय कर सन्ती है किसी को रोकने का उस को अधिकार नहीं है। (२०)

अति आवश्यका के समय पर कुट्ग्बी जनों के शामिल रहने वाली विधवा भी अपने भाग को संपदा को दान तथा विश्ली पुत्र के अभाग में कर सकेगी। (२१)

"विवाहित पुत्री का अधिकार"

आह्यों के समक्ष निवाहित पुत्री का पिता की सम्पत्ति में कुछ भाग नहीं है विवाह काल म पिता ने जो दिया हो बही उसका है। (२२)

विकाहिता पुत्री अपने २ माता के धन की अधिकारिणी होसी । (२३)

पुत्री के मन्ते पर उसकी पुत्री उसके अभाव में पुत्री का पुत्र अधिकारी होगशा (२४)

- (१८) देखा बाठ मीठ १०१
- (tê)., ,, tes
- (20),, ,, १४६
- (२१),, ,, १२७
- (२१) , मिरव संव १८, माध नीव २६
- (२३) , इ० मि० २० १४
- (+4) ,, ,, tx

विद्याहित कन्या का अविकारण पिता के मर जाने पर आहर्यों की सहोदरी एक अध्या बहुन सी कम्या हों हो सब आहर्यों को अपने २ भाग में से बीधा २ भाग एकब कर के कम्याओं का विद्याह कर देशा काहिंगे। (२१)

वड़े भाई को खादिये कि अिवाहित स्निनी का विवाह विशेषहान देखे कर है। यदि किसी के दो पुत्र और एक पुत्री हो तो पिता के इत्य का सीनी सम भाग कर छैं। (२६)

"सगाई पीछे जो कम्या मर जाय"

सगाई किये पीछे (विवाह से प्रथम) कन्या मर जाब तो खर्च काटकर उसका द्रव्य उसके पति को लौटा दे परन्यु जो कुछ कन्या के पास नाना मानी का दिया हुआ हो यह कन्या के साहबों को दिया जायना। (७)

विवाहित कन्या के मरे पीछे उसकी सम्पति का अधिकार

निःसम्सान विवाहित कव्या **के स**रे **एछि** इच्य का मालिक उसका पति होगाः। (२०)

पति पत्नी दोनों के मरने पर पिता में अकि करने वाला गुणवान पुत्र अङ्गज हो अथवा दशक पिता माता के सम्पूर्ण धन का मालिक हो सका है। दूसरे भाई बस्युओं का उस में कुछ अधिकार ् नहीं है। (२६)

- (२४) रेखे। मक सक १७, वक नीव ६, साव नीव २४
- (34) ,. To Ma Ho 38
- (२३) ,, का० मी० १२६
- (न्ह्) ,, अब सक २७, वव नीव १३ व्याव्योक १४
- (૧૬) છ માટલ છે રજા, દુષ્

समार् हे कुछ से कश्या को मिला हो उसको कस्या के माता विता भातादि मुहण न करें। (३०)

उसकी धन कारशक कोई नहीं तो उसके वित्र पक्ष वाले धर्म कार्य में लगा हैं। (३१)

जो क्रम्या माना विता ने स्थां न स्वाह दी हो और पुरुष हर ले जाहर संचर्च निकाह द्वारा स्त्री बनाले ऐसी नहीं का धन उसके मस्ता विका या भोर्ग भी गृहण कर सक्ते हैं क्योंकि उसका क्षांगा ताल नहीं हुआ है। (३३)

यदि उस्त अपनी पुत्रीका कोई रक्षक न हो तो उस समय उस पृत्री की तथा उसके धन की रक्षा किया करे और उसके मरने पर धन को धर्म कार्थ में लगावे। (३३)

द्रव्य का प्रचन्धकर्ना नियन करने भौर उसके हटाने की विधि

सन्तान रहित अथवा सन्तान गुक्त पुन्त क्षाचि प्रमुख सं दुलित होकर यत्रि अपने धन के प्रवस्थार्थ किसी प्राप्ती को प्रवस्थकर्ता बनाना

को दृत्य विसा माना ने दिया हो या को अवाहे हो लियत केक क्रारा पंचलनों की साक्षी तथा राजा की मुझर सहित ऐसे पाणी को नियत कर सका है जो लिखने वाले की स्त्री मादि करों की आहा पासने वाला हो। विसके दोनों अर्थात मात् पित्र पक्ष स्व व्छ ही और मासदार और सर्व विष हो।(३)

"प्रवन्धकर्ना के प्रतिकृत होने पर कर्नदय"

मृत पतिकी विधवा स्त्री अपने द्रव्य के अधि-कारी को कोमल बचन से समकाने यदि नहीं माने तो राजा मन्त्री अ।दिक के समक्ष उस को सम-भाषे । यदि किर भी नहीं समभे तो मन्त्री की आज्ञा लेका पुराना हो वा नधीन हो उसे घर से तिकाल देवे। (२)

प्रवन्धकर्ता के हटाने पर

अपने पति के समान उस कुली स्थी को भी अपने द्रव्य का यत्न पूर्वक रक्षण करना चाहिये और कुल कुम से आये हुये व्यवहारी को भी दूसरे यांग्य पृथ्वी द्वारा करावे। (३)

⁽३) ,, भार मी० ६०, ४०



⁽३०) देखी का नीव मर

^{ू,} प्रविजेशर्थ (11) ,,

ss , श्रति विशेषार्थ (44) .,

^{(11) &}quot;

⁽१) देखो वर मीक १६, १७, भार नांक ४६-४८

⁽२) , मठ संठ ७१, ७२, न० मी ० २०-२३,

मा० मी० ४६, ४०

दमन का दुष्परिगाम।



(के०-श्रीयुन पठचममास भी सक्सीबदात्र)

व्यान-नीति को उपयोग करती है लेकिन प्रजापश्च के नेताओं तथा विद्वानों का एक स्थर सं करना यती है कि यह रोग की दवा नहीं है, बल्कि इस से रोग ज्यादा २ बढ़ता है। यदि यह बात सत्य है और उस के सत्य होने में सन्देह भी नहीं हो सकता है, कारण कि अनुभव से चड़ी बात पार्र जाती है तब ता यही कहना पड़ेगा कि सामाजिक रोग की भी दमन-नीति कहापि दवा नहीं है। यहां पर सभाज का थोड़े गहरे विद्यार करने की आव-प्रयकता है।

े यह तो हर विचारवान व्यक्ति स्वीकार करेगा कि विश्ववा के नाममात्र से न तो चौं कने की जक-रत है और न उसका अब समय ही है। जब के साजों की व्युत्पत्ति है तभी से विश्ववायें हैं भीर कृती से उनके कारण होने वालो दसा, पचा, विने-क्या, छहुरीसेन आदि उपजातियें हैं। पति सहित को साजा इसो तरह पितर्राहत को विश्ववा कहने हैं। विवाह का अर्थ बास्तव में उस खुशी की शव-स्या से है जो जी-पुरुप के जोड़े को सामाजिक नियमानुसार संबन्ध निश्चित होने पर स्वयमेव होती है। मनुष्यमात्र अनादि से समाजक्ष्य में रहता आया है, कारण तभी उसकी यथीचित चृद्धि हो सकती है। अन्य माणियों में समाज की व्यवस्था नहीं है और इसीलिये उनके यहां नर-मानी का जोड़ा यों ही बनता मिटना रहता है, लेकिन यह भवस्या न तो मनुःयों के लिये वाध्यनीय है और न सम्भव ही है। इस तग्ह पर यह बात सहज ही समक में माजाती है कि भिषाहकार्य एक सामा-जिक व्यवस्थामात्र है ताकि स्त्री-पुरुष का सबस्य स्यायानुमोदिल कप से होते और स्वेच्छाचार की वृद्धि न होने पाने। प्रकृति की अनुलंबनीय बोजना है-कि स्त्री थ पुरुष जोड़े कप से रहें और जब स जहां र इसके विपरीत कार्य होना है वहां पर अ-निष्ट विमा घटित हुए नहीं ग्हता, यही प्रकृति का दण्ड है जो चाहे क्विकर हो बाहे अवस्थि कर मोगना ही पड़ेगा।

विधवार्य अनेक कारणों से होती हैं, बाल-विवाद, बृद्ध-विवाद तथा अनमेल विबाद सरातः रोके जा सकते हैं, लेकिन यह तो निर्विधाद है कि तब भी विधवार्य होवेंगी, कारण जिस पुरुष के साय उसका साम्ध्र हुआ है याद उसकी आयु का अन्त आय्या है तब कीन उसे जीवित रकने को समर्थ है किसकी कितनी आयु है इसके जानने का कोई समुचिन साधन नहीं है और अनुमब से प्रत्यक्त है कि ज्योतिष उस काम को नहीं कर रहा है अभी तक उन प्रत्येक समाजों ने जिनके यहां विधवाओं की पुनर्लंगन नहीं होती है, उनके यहां विधवाओं के लिये यही श्रेष्ठमार्य पतलावा है कि से जीवन का उन्दार्य करें। युद्दां में रदकर भी कमलवत

यांनी से परे वहें और पेला जीवन व्यतीत करें कि पश्मव में उनकी यह दाल न भोगना पड़ी, स्त्री चर्याय से छूट जाये भादि । जिनके चित्त की वृत्ति धारतं में पलडा सागा है, उनके लिये अन्य श्रेष्ड मार्ग हो ही नहीं सकता लेकिन समाज में हर लरह के पुरुष, इसी तरह हर प्रकार की स्त्रयें होती हैं व इसने िमोबे अबभव से समाजीका भेली भारत विजित ही है कि उनकी अधिकांश विध्वा बहिमे भेष्ठ । मं के वालने में असराध हैं तब स्वतः प्रक्रत क्षाता है कि क्या समाज का इसके लिये शेष्ट्र मार्ग पर चलने की व्यास्था करते की आवश्यकता नहीं हें आर मड़ी ताक्या? क्यों समाज का यहा ध्येव है कि जो स्वतः श्रेष्ठमार्गको न पाले वह उन स अनग हाजाब-उर; पेख फलई। की जकरत नहीं, लेकिन इस दमन-नाति का प्या याते परिवान वे यने में जगा ५ नहीं आरहा है कि जा अन्त्र मार्ग पर नहीं चल रते हैं वे अवनी प्रतिच्छा बनाये रक्षने के लिये नामा उधाय करते हैं जिनमें भ्रुण इत्यादि घारतर पाप के काम शामिल हैं और इस तरह साति का कहां क्रिन करके त्र कहां जानि सं अजन होते हैं जातियोग स्वाभाविक है और कौन विका प्रयत्न के उसे योंडी छोड़ देने को राजी होगा। बी समार्वे अपनी चान हाल वदल देवें. इस अभागतियों के विवे भी भें प्र मार्ग पर चला की व्याह्म करें तब क्या उसका यह परिणाम महीं हामा कि जीवन बास्तव में स्वादा शुद्ध बनेपा । हाल के अवाचार वन्। होत्रेंगे भार भाव ज्यारा बढेगा ओर अवसितों की सच्छी कीर्ति असर खोगी हाल में से संस्था ही सेराज्य है और तब भागा व संजोर की चृद्धि के साधन जुटेंगे । हाल की न्यवस्था विश्ववाओं के लिये बास्तव में देखा जाने तो सामाजिक दृष्टि से व्यवस्था है ही मही। जिल कर्या के संबन्ध के लिये हम सब लोग शोबे दिन पहिलें इनने चिन्तित न रहते हैं कि खाई रोदा नहीं पचती उसी से थोड़े दिन बाद विधि की कटा रका से विध्या होजाने पर समाज यही कहती है कि तुरहार भाग्य की परीक्षा हां चुकी अब आगे को जन्म भर दःच भागो । कर्मी को रोओ ! कुछ भी करो । तुःहारी व्यवस्था नहीं । परस्त इस तस्ह से काम नहीं बरुंगा, जड़ को हाथ लगाइवे तथ रांग की अड़ टुटेगा । मुख्य रोग समाज को विभन्न की अध्ययस्या का है। आक्षतक आपने कुछ नहीं नि.या है और तभा तो वायस्वक्य आप मिटे जा रहे हैं। कियों की संस्था पुरुषों से कम है हो कि जिस के कारण बहुत से डुंबारे रह जाते है, विवाहित कि सी में करीब २ एक तृतीयांश विधवा हैं। इनसे उत्पा-दन का कार्य रक जाता है। सामाजिक व्यद्दक्या उनके सियं कछ नहीं है। थे प्ट मार्ग पर चलने का प्रधन्ध नहीं है। बस बहुतेरे कुं आरे व विधवा प्रति छषं फलड्रित होने हैं। और बहुत ही सुरी तरह से जाति को छोड़ने को बाध्य होते हैं, इनमें जितने इसा विनेकथा आहि होजाते हैं वे फिर भी जैतियाँ की गिननी में रहते हैं लेकिन जो और ज्यादा विग-इते है वे जाति और धर्म दीनों ही की संख्या को स्युत करते हैं अर इस तरह पर प्रकृति भपना दण्ड समाज से यसूल करती है। जाति के पत्र अनेक हैं . लंकिन समाजिक समाचार प्रकाश पाते ही नहीं हैं कारण वहीं भूडी प्रतिष्ठा, को अपनी जांच उद ब आप ही लाजन मरे, हेकिन देसा कीन स्त है अर्ध कतिपय विधवाद्यों का अपवाद न हो और बिनके बारस गुरुग के वे भाव नहीते ही कि इस बनुतामी से तो बड़ी अच्छा था कि जाति इन के किये की के व्याद की करती ताकि वे स्थादा शुक्ष की कर क्ष्मतीत करने की समर्थ होती और अपना भारमकत्याम कर सकती। विभवाओं को गुह-स्थों से अलग आश्रमों में रजना भेष्ठ माग है। और श्रीह अवस्था एवं परस्पर सब जातियों में बि गह करना सच्या की कभी को रोकने का उपाय है। अतः समान का प्रथम कर्मा यह कि स्वच्छी परिस्थित क्या है इसका कान बहुत शीन मान करें और यदि ससार में यने रहना चाहते हैं तो इस प्रश्न का उचित रीति से हल करें।

संक्षेत्र में व्यवस्था का यह क्रव हो सकता है कि समाज का नियम हो कि जिस स्त्री का सोभाग्य कर्मोद्य से अस्त होग्या है वह अपने स्वकृत का विचार करं, संसार को अनित्य जानकर धर्मांकरण के प्रयुक्ति करे और एक साल से स्वाकर सिक स्मार्क से स्वाकर सिक स्मार्क से स्वाकर सिक स्मार्क से सिक सिक की कुल परुट जाने और आसे की प्रथमें पर होने की संभा-विना में रहें, यदि इसी समय में उसे मास्त्रम कई कि उसका विका सिधर नहीं होता है तो किसी विश्वेषी के साथ रहने का प्रवाध करें-आध्रम में रहें। हां पतित विश्वाओं के प्रति समाज कुछ द्वा को वर्तीय करें। उसके लिये में धार्य स्वाकर स

श्रुत पञ्चमी

(+)

पी। दिनकर महाराज का रथ उम्रो २ अगाड़ी यहता था त्यों २ उसका उम्रे ताप सम्म की स्व ठीर तापित भीर वास्तित का रहा था। रेल गाड़ियां इस तज्य ताप में दीकृती खासी अही सरीखी हो रहीं थी। इस समय कलकत्ता एक्समेस में खाला धर्ममकार जी सफ्र कर रहे थे। यह मभी हाल ही में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से थी। एः की परीक्षा में उत्तीण हुए हैं। उत्तीणीता के हुई में यह जल तत्ता जी भीर संद करने की खले त्ये थे।

आज वह अपने घर लीव रहे हैं। करीब ११ वर्ती
गाड़ी विकामपुर स्टेशन पर लड़ी होगई। लाला
साहब उत्तर पड़े। उपो त्यों कर्त्ना में अपना सामान
उत्तादा। घर पर पहुंचे सर्वको उचके आंगमन सै
खुती हुई। मां, पहिन और मार्ड सभी ने उन की
आ घरा। बानें करते कराते श्रीकादि से वह निवृत्ते
हुए। मंसिनकी बेटा अब मन्दिर की क्या जावना।
बंधिजी पड़ कर सब धर्ममृष्ट ही आते हैं परंति
करने जाते देला तो बह मवाक् रह गई। उसे कि
एवं स होगमा कि अंगजी वहने से कीई विकास

नहीं होता। बात यह थी बनारस में जैन विद्या-विंवों ने अवनी एक सभा बना रकती थी और उस में जैन धर्म के बातों विद्वान विद्यार्थियों को धर्म शासा भी बताते थे। बस धर्म साधन के होने से अं भे जी पहले दुर भी विद्यार्थियों के आचरण कुरे नहीं ही पाते थे। धर्म साधन के अभाव में भले ही ऐसा कही होता हो, परन्तु अर्म ज्ञान का प्रवन्ध होते हुए अंग्रेजी पढ़ने से कोई धर्म मूष्ट नहीं हो सकता। धर्म से जानकारी मिल चुकी थी। मित्री का स्वाद जागवा था किर भला उसे कैसे भुलाया जाता । धर्मपकाश शीघ ही मंदिरजी में पहुंचे और बड़ी भक्ति से भगवान का स्तवन शंदन किया। पश्चत् उसदिन इदिर्जा में तयं भी अपूर्व समारोह देख वह चौकत अवश्य थे। जब वह श्री जिनवाणी के दर्शन फरने पहुँचे तो वहाँ उन्होंने स्तत्र शास्त्रों को बाकायदा अलगारियों के वाहर चौकियों पर विराजमान देखा। कोई उनके घेण्टन चदल रहा था तो कोई उनको ध्रप दे रहा था। भार्ज यह कि शहलों का उद्धार हो रहा था। धर्म-बकाश को चट सुध आगई कि अरज धृत-पन्नशी है। आज ही के दिन पूर्नाचार्य में परम सिद्धान्त पर सण्डागम की रचना कर उसे किश्विद्ध किया था। पहिले के ऋषिगण उन्हें कण्ठाप्र रखने थे। चरन्तु अगाष्ट्री यह संभव नहीं । इसीिंध्ये आचार्य श्रों ने उपकार कर उन की प्रश्यक्षण रचना की थी। धर्म प्रकाश ने वडी विनव से जिनवाणी की बन्दना की। उपस्थित प्रत्यों में आपके इस प्रेम को देखकर बड़ा हुई प्रकर किया । एक नुद्ध साउत्रम ने कहा-"भाई धर्म ! हमारे नेताओं ते आज का वर्ष खुष समारोह के साथ मनाने की

कहा है। सो हम लागोंने अपनी प्रधा के अनुसार जिनवाणी की विशेष-अर्थन की है। परन्तु हम बाहते हैं कि आप सर्व साधारण को इस पर्व का महत्व समकार्य।" धर्म ने कहा—"आपकी आजा सिरोधार्य है परन्तु किसी योग्य विशाब को आप बुलाते तो अच्छा था।"

(2)

तीलरे वहर सार बजे से भी मन्दिर जी में स्वी-पुरुष आने छगं । सब यह जानने को उरसुक थे कि अन पंचमी हे क्या ? और अंग्रेडी पढ़ा भर्म उसके बारे में क्या कतेगा ! देखते २ मन्दिर जी स्वास्त्र भरं गया। एक दो भजन हुए । संसक्ता-चरण हुआ। ठाला जिनेशदास सभापति हुने । उनके कहने पर धानु धर्मप्रकाश जी ने एक सारगर्भिन व्याव्यान दियो, जिसको सुनकर श्लेगी की आखि खुर मही । उन्होंने बहुत हर्ष प्रकट किया अपने अहासांग्ये संत्रभेत कि ही ने तो यह विश्वय कर लिया कि हम भी अपने छड़के की एक जैन वोर्डिङ्ग में रखकर अंब्रेजी पढ़ावेंने । अङ्क्तिरों ने उनके भारण से अपे और गैर छापे के अम को को दिया। इंदर्शने अन्न लिया कि धर्मशास्त्र बाहे हाय को लिखे हों और चारे प्रेस को छपे हों-हैं वही श्री जिन भगवान के बधार्थ वक्त । उनकी विनद हमें समानरीति से करनी चाहिये,धर्मप्रकाश जी ने उपक्रियत संडकी का ध्वरन बास्तविक प्रभाव-नाइ की ओर आक्रित किया। बतलाया यद्यपिहम भक्ति त्रश भी जिनवाणी की पूजन-भर्षन से विनय करते हैं परन्तु यही चिनय का अन्त नहीं होजाता और इतने करने से ही धर्म की वास्तविक प्रमा-बना नहीं होता । बास्तविक धर्म प्रभावना के

किये अकश्त है कि उच्च कोटि के अर्मशाता विज्ञान सरक्त किये अधि। ये अधि जी भाषा के काथ २ प्रमं के भी पंडित हों । बेसे ही विज्ञान अधानमान्य हो सकते हैं और उन्हीं के हारा इन बबाब शक्तां का अर्थ अपबो और संसार को मालुम हो सकता है। जिससे बधार्थ धर्म का सितारा किर से दुनियां में चमक सकता है। ऐसे पिद्राभी की स्विद के लिए एक जैन कालिज की मां प्रतम स्थापित करना काहिये। साथ ही सच्ची साक्ष किजय इस नहीं में है कि हम धर्म शास्त्रों का महत्व सम्बर्भे । उन्हें पहें और और की ने को उन्हें सुमार्वे । प्रत्येक शास्त्रभंडार की सुची तैयार करावें। भौर को ग्रंथ की श्रं उनका उद्धार करावें। त्तथापि एक केन्द्रस्थात पर बृहदु जैन पुस्तकालय श्याचित्र कराकर उसमे उपरुष्ध शस्त्री की नकल करपाकर विराजमान करें। एत एक ऐसा शुद्ध

जैन प्रेस स्थापित करावें जिसले करूप भूत्व में विमेष देखरेख के साथ मन्ध मुद्दिस कराकर प्रकाशित किए जांथ। इन साली का जब हम वयन्य करेंगे तब ही हमारा भूत पंचमी मनाना होगा । वरन् सम्मान्यस्य से सर्वेत्र ही अक्षपंत्रमी मनाई क्षाती है। परन्तु इस सामान्य सीक पीरने से हम अपने आनार्थों के उपकार मृत्य से उन्हण वहीं हो सफते। शास्त्रोद्धार के लिये अमलीकार्य करने में ही सच्ची विनय हैं । उपस्थित सज्जनी पर इन बार्ती का विशेष असर पडा । उन्होंने प्रस्तावरूप में विश्वय किया कि भाव दिव जैन परिवद् को यह कार्य सींवा जाय । उसकी पूर्ति के लिये उन्होंने फण्ड करके मन्त्री को भेजना निश्चय कर रिया। और आशा की कि अस्य स्यान के भार्र भी ऐसा करें। अन्त में जिनकाणी की अय बोळ कर सभा विसर्जन हुई।

--ध्रुतसेबी।

बम्बई में म० गांधी जी का व्याख्यान।

मेरे लिये तो मुक्ति का दरवाजा ऋहिंसाधर्म का पालना है। मैंने जैनशास्त्रों का अभ्यास किया है और उन पर मेरी श्रद्धा है।

सहात्माकी ने एक सारगमित व्याख्यान विद्या। आहुने कहाः—' मुफ पर जैन माईयों की इस कहर क्या हृष्टि है कि मुफ को उनकी लेना देनी है। मारतवर्ष में एक स्तो भाई के समान भाई करे साथ रहने का दावा जैन ही कर सक्ते हैं। मेरे परमंगित डाक्टर प्राणजीवन जैन हैं जिनके खित का मुफको सम्मान है। रायचंद भाई मेरे मिन थे। और शहर बंबई में मेरे रहने का को क्यान है वह भी एक देशांकर जैन भाई का है।

फिर आज इस काम्फ्रेन्स के सभापित साहब में मेग पूरा पिचय है। सफ्र के मध्य मुफ्के बहुत से जैनमार्थ्यों से अक्सर बास्ता पड़ा है। भौर बहुत से उस समय मुफ्क सं पूछते हैं कि क्या आए जैन हैं? इस पश्न के उत्तर में मैं यदि नहीं कहुं तो उनको दुःख अनुभव करते देखता हूं। इसका मत्तळब इसके सिवा और कुछ नहीं कि यदि मैं जैन होता तो ठीक इससे उनका प्रेम मेरी ओर होता, ऐसा मैं ख्याल करता हूं। क्योंकि जिस बात को वह गानते हैं उस पर मैं अमल करता हूं।

मानं सम्पादक छ। शीत लक्षादकी , कामला प्रमाद जेन एवा

महिसाकी बायत जितनी रहना से मैं उसे पालन करता है उतनी शायद वह जैनी न करते हों । मैं जब भी पालीब से गया । उस समय मुफे श्री शब्द जय जाना हो था। और यह केवल सौर के वास्ते नहीं बल्कि भिनत से जाना था। उसके दर्शन कर मुक्ते वड़ा हर्ष 🖫 आ। ए० लालन आदि मेरे साथ थे। मै पांच को रक्षा के सिये लकड़ों की खड़ाऊँ पहनता हूं। और उनकी आध्यकता रहती है। पहाड पर चढ्ते हुए जड़ाऊं उत्करवाने को उनको मुश्किल मालूम हुई। परन्तु में समक गया और उनके विनाही उत्पर चडगया। सभापति जी ने मुभसे यह प्रश्न , किया है कि भारत की सेवा में जैन भाई किस तरह भाग है सकते हैं ! सो पहिले तो अपने २ माने हप धर्म पर स्थिर रहना यह पूरा सिद्धान्त है। इस मामली बान के बाद धर्म के दो भाग होजाते हैं। प्रथम सारे जगत् के जीवीं को जो बात आम तौर पर मन्जूर हो यह सामान्यधर्म है। इसरे धर्म के अमली और मामुली सिजांतों को अमल में लाने की कार्रकाई करना यह क्रिशेष धर्म है। इस समय मैं विशेष धर्म को बाबत जिक् कढ़ना। जो सिखान्त सर्व धर्म मानते हैं उनका तो पूर्णकप से पालन करना चाहिये। इससे जाहिरा धर्म की उन्नति होती है। पर्यन्त विशेष धर्म में इतनी जिद्द न करनी चाहिये कि जिससे कर्म बांचने का मौका मिले। क्योंकि धर्म में बंचन नहीं होते । इसलिये पेसे समय में यह समभना चाहिये कि शास्त्र का अर्थ समभे चिना अन्धीं की करह दी इते हुए सब और में देखना कं कि भारत में धर्म के नाम पर भागडा होता है।

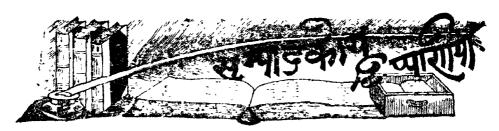
जीनियाँ के पास धन बहत है परस्त सम्बद्धा स्वयः हार अक्ष पर गैरवाज़्त्री तीर पर होता देखता हूं। सन् १६२५ में श्वेताम्बर-विगम्बरों के अगडे का फैसला करने के लिये सुभको की य में डालने की बात हुई थी, क्योंकि में बकील हूं और मैंने जैनमास्रो का किसी बदर भ्रभ्यास भी दिया है और श्रद्धा भी है। तौ भी ध्रव तक कोई फैंबला लेने नहीं आया। अपने भगडे के लिये अभी बिची कौन्सिल की मुह्ज्यन अधिकाटी। मैं पूंछता इं 'क्या पित्रीकोंसिल न्याय कर सिंके गी?' (आवाज-'हरगिज नहीं?) और यदि स्थाय हो भी तो क्या अपने में कोई नहीं कर सकता? और यत्ते इसमें अन्याय भी होने तो 'क्या बहरं (प्रिवी की-िसल में) ऐसा अन्याय नहीं होता ? आवसी से ग्लती होती दी है। और इसी तरह बदाखत में भी उपादातर जान या अजानकारी में अन्याय होते का मौका अधिक मिलता है। क्योंकि बहां सत्व और प्रमाण के विना मेरा 'पक्का' ठीक और सही है यह दोनों फरीकों का हवाका होता है। क्रिस सपय पित्री कोंसिल नहीं थी उस समय व्या होता गा १ ज्या इसका नो ख्याल करो। पहले मैं तुपको कहता हूं मैदान साफ़ करो, मेरे साथ में अहिंसा धर्म का पालन करो। यह एक सत्य है कि जीवदया अर्थात की है, खटमत आदि अधि को न सताना। यात टीक है। परन्तु यह धर्म तो तमाम जगत पालता है। जैनियों की नग्ह दूसरे भी जीवों को न मारने वासे बहुत हैं। हिन्दू जाकि में गऊ रका की शक्ति होने पर भो अक्षान के भारण रक्षा नहीं की जाता। इसी तरह इन जीवी

को बावत भी है। खटमक आदि यह हमारी परीक्षा लेने वाले हैं। यदि तुम सकार्त रक्को तो खटमल ही न हों। अत्यव बदि खडमल न हों यह अच्छा है अथवा खटमल पैका करके मांग्ने से बचाना यह अच्छा है। इसका आप खुद ज्याल करें जो आदमी छोड़े से छोटे प्राभी की दया के लिये तैयार होता है उस को प्राणीमात्र पर दया रखकी ही काडिये। और सीधी तरह यदि समभ्य जाने तो हरएक मनुष्य पर दचन रखना काहिये। में हिन्द इतान में जो कार्र-रकाई चला रहा है वह जीवदया ही की है। प्रत का सिखलाना व्याख्यान देशर नहीं होता बढ़िक अपल करके बनलानं से होता है। मेरे लिये तो युक्ति का दरवाना जीवदया का पालना ही है। मैने इसी से हिन्द अमलमानी को एक बनाना स्रोखा। ऊच नीच के परक सं दूसरों का दिल दुवा कर काम करने स जीव दया नहीं होती। नीच कौन है ? यह रेने इसी से विवस्या । उनको विलाकर खाना और उनको सुला कर संका ही में धर्म समभता है । यदि तुम का स्वराज्य की जरूरत है तो उनका अपना ही समध्यना पक्षेगा। यह तो व्यापार की बात हुई अब अर्स की दात करता हूं। तुम पगड़ा पहनकर अपने आएको अच्छे मास्त्रम कराते हो और वहिने सादी पहिन कर अच्छा मालूम कराती हैं। मगर बह स् कि दुसरे देशकी हैं इस लिए अच्छी मालम महीं देती। यह न ख्याल करी कि मान्धी बीका देवा है। अपने कर्ष के दश देशकर जिस देश में उत्पन्न हुए हैं उस देश का कर्भा देना ही पादिये । कई भार यह विचार काते हैं कि दूसरे

देश का नुकस्कान करने से अपना मला नहीं होता। प्रस्तु रखमें उबकी गुल्ती है। जीबद्या का सिद्धा-न्त दूसरों की खातिर अपने को छोड देना वहीं यतलाता। अपने लड़के को छोड़ कर दूसरे के ल इसं को दूध पिलानेवाली मां अपने लड़के के वियं गरे होगी। स्थार ग़ैर तो ग़ैर ही रहेगा ! यदि अपना पालन न करें और किलावत, जापान अदि का कायदा करने का ख्याल सोचते गई तो यह दक्षान दुवाने वाली होयी। और यह आनते धुये इसको छोड़ना चाहिये, पेसा में समध्वा हूं। तक्रहारे आगे हैं से मोटी बारों रक्ती हैं। बारीक बारों नहीं रक्षां। यह सामा और यह नहीं। इसकाः बार्तक ख्याल मेने किया है। श्रीर इसका पालन भी करता है। तुम भी वास्त र महिनयों का त्याम करते होगे। ना श्रादमी नितना संयम श्रथति त्याग पाले उतना ही कम है। परन्त इतने में ही नहीं पटे रहना चाहिये । स्वराज्य के लिये बहुत कुछ, करना है। मैं यह सम्रक्ता हूं कि इस समय ज्यादा जीचसं कुछ नही वरेगा। इसी लिये और बानों को छोड़ कर तीन बांकित रहा है। हिन्दू मुस्रकालों के इसफाक में मैं तुम से कुछ दिस्सा नहीं मांगता। क्योंकि तुम उसमें पहले हो । अञ्चलानमं वैदिक धर्मधाले शास्त्र देश करते हैं। बुमलाग शास्त्रीका हवाला नहीं देते-सिर्फ रिघान कहते हो। परन्त् से तो इसके बास्ते इतना ही समक खूगा कि कुट में शहित को जगह नहीं। इस लियं दमको सत्य और अहिसा ही स्वीकार है। तीसरी बात यह है कि अपने भारकों के प्रेम के लिये भागत की कई से भारत में ही सूत काता जावे। और कपड़ा बनाया जावे। सभावति जी जब

मिल के मालिक हैं इस लिये यह कहेंगे कि हम तो यह कारं जाई करते ही हैं। पास्तु में पूजता हूं कि हो सी रूपये दो सी भाइयों के जिन में हालो वह मज्जा है, या अवं ला अपने खासे में ही रक्षों यह मज्जा है, दा अवं ला अपने खासे में ही रक्षों यह आहता है, हिन्द के जीवन का नाश करके मिलें चलें यह तो में हरिएज़ नहीं चाहता है। यद्यपि किसी हद तक मिलें अपनी गर्ज़ पूरी कर सकंगी परन्तु में तो चाहता है कि हाथ से कातना और हाथ से बुनना खाहता है कि हाथ से कातना और हाथ से बुनना खाह मिल के मोलिकों को करना चाहिये। इसी में

उनका और भारत का भला है। सुके एक जैन भार्द ने पुरानी दस्तावेज, बतलाई। इस भारत में चिदेशी व्यापारियों ने किस तरह फायदा उठाया यह दर्ज है। इससे मालूम होता है कि व्यापारियों की मार-फात ही भारत गया और इसी तरह व्यापारियों के खुदगर्जी का त्याम करने से ही हम फिर भारत को हरा भरा कर सकेंगे। सारांश यह कि व्यापारियों के हाथों में ही प्यारं देश के स्वतन्त्र होने की बाबी है। जैनियों का व्यापार अधिक है इसल्लिये इस बात की आर मैं उनका ध्यान खीचता हूं।



भारत दि॰ जैन परिषद

परिषद् को स्थापित हुये आज करीय तीन वर्ष के होने आते हैं। इस अल्पकाल में परिषद ने जो मौलिक कार्य जैनधर्म के प्रचार और समा- जोन्नति के किये हैं, वह छिपे हुये नहीं हैं। वस्तुतः समाज ऐसे एक परिषद की आवश्यका का अनुभव कर रही थी। यही कारण है कि उसने परिषद को विशेष दिलचस्पी से अपनाया है। परन्तु हुःख है कि शेडवाल सम्मेलन सं जो उन्द्युक समाज के शिक्षितों के दरमियान बालू हुआ है, उसके कारण जहाँ अन्य मिथ्या वार्तो को सिरजा जा रहा उसी तरह परिषद के संबंध में भी लोग

ग्लंतफहमी ज़ाहिर कर रहे हैं। 'परवार बन्धु' के गताइ में सिवनी के एक महाशयने समाज के नाम एक शिलापद खुली खिट्ठी प्रकट की है। हम उस के उद्देश्य से पूर्णतया सहमज हैं। हमारा यह मत प्रारंभ से रहा है कि एक भारत व्यापक अति। कि जीन सभा में प्रत्येक जाति और विचार के मनुष्य सम्मिलित रहना चाहिये। अब भी समाज की भलाई इस ही में है कि सर्व प्रकार के जैनियों का एक कामोलन एक वित्त किया जाय और बह इस संस्था को एक वास्तविक कर हैं। परन्तु उस लेकक ने उस चिट्टीमें एकाध स्थान पर कि क्वित भूम को जन्म दिया है। परिषद के

संबंध में यह बहुना कि यह बेयस बाबुर्वोकी ही संस्था है. इसलिये यह उस में मनमानी कर सर्हेम बिलकुछ गलत वात है। परिषद की स्था-पना देशक इस बात को सध्य कर की गई थी कि अहासमा द्वारा वास्तिनक कार्य नहीं होता। इस लियं सा. तिक कार्यं करने के लिए एक अलग निष्यक्ष सभा कायम की जाय। उसी के मुताबिक परिषद्का अन्म हुआ और उस में वायू, पंडित और सेठ सब ही सम्मिलित इये। यद्यपि यह अव श्य है कि कार्य कत्त्राओं में मुख्यता बाबुओं की है। पर तु इसके अर्थ यह नहीं हैं कि परिषद के क्यान और सदस्यपन किसी खास पार्टी के लिये निर्णित हो। इसकी साक्षीमं उसका कायक्म मौज्रद है। परिषद् द्वारा अवतक जो कार्य हुये हैं उन से जैन धर्म की अप्रसायना किसी तरह भी नहीं हुई है। प्रत्युत्र उस के मुजपत्र द्वारा देश और विदेशी के विद्वार्गों में स्थार्थ जैन क्षम के विषय में ज्ञान फैलाया गवा है। दुःसका विषय है कि आधुनिक (Standard)विद्वान दिगांवर जैन धर्मके विषय में बिलकुल ही कम सान रखते हैं। उन में वास्तविक भर्मकं ज्ञान प्रकार हेतु परिषद्धने बोलपुरके 'शान्ति निकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय' में एक जैना चार्य को नियुक्त कराने की याजना की है। मात्र दातार महाशयों की अदुदारता के कारण ही अभी तक वहां कैन पंडित की नियुक्ति नहीं हो पाई है। परन्त् इसका विश्वास है कि इमारे जिनवाकी अक्त सेडगण उसकी पूर्ति शीध ही करावेंगे। इसके अतिरिक्त आवश्यक और उपयोगी ट्रेक्टी को विविध माधाओं में प्रकट कराकर और अजैन जनता में चितरण करके धर्म प्रचार का कार्य शिका आ रहा है। साथ ही जैन धर्म के थियद में आवश्यक ज्ञान कराने के लिये एक ऐसी पुस्तक तैयार हो चुकी है जो किस्सी भी विद्वान के हाथ में दी जा सर्जा है। फण्ड के मिसते ही बह प्रत्येक भाषा में प्रकष्ट की जायगी। जैन इति-हास सम्बन्ध में भी उसकी ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। प्रसिद्ध जैन इतिहासम्म बाबू हीरालाल जी एमव एव उस ओर बिश्रेष कर्तव्य परायण हैं। उनके एवं अन्य ऐतिहासिक लेखी ने, जी 'बीर' में प्रकट तो खुने हैं, विज्ञानों का ध्यान जैनधर्म की भोर आकर्षित किया है । इसके अंतरिक दो सीन जैन पंडित गण परिषद की ओर से सर्व-साधारण में जैनधम का प्रवार कर रहे हैं। वागपुर के आस पास बसे हुये हजारी प्राचीक जैनी अपने धर्म को भूले हुये हैं। उन जैनकलारी को पुनः जैन धर्भ में दं। क्षित किया जा रहा है। परिषद् के उपदेशक उनके मध्य घम रहे हैं। निस पर सब से यहा धर्म प्रचार का कार्य श्वयं धर्मका प्रकाश अपने आचरण द्वारा करते हैं। है। परिषद के सभापति श्रीमान वैरिष्टर बार्यत राय जी आवकों के लिये एक सच्चे आदर्श हैं। 'बीर' के सपादक पूज्य बु० शीतल प्रसाद जो जिस प्रकार अपने सदाचरण द्वारा धर्म का प्रकाश कर रहे हैं यह सर्विविदेत है । और इसके मान्य मन्त्री एवं अन्य सनस्यगण अपने आचरणी हारा धर्म प्रकाश करने में सर्वन तरपर रहते हैं। उधर समाजोश्वति के कार्यों में भी अवतक उद्ये सफलता मिली है वह सर्व प्रकार के मनुष्यों के परस्पर सहयोग का ही फल है। परिषद् ने जो एक सामाजिक नियमों के खिये शार्विमक दस्तर

क्ल अम्ब बबाबा था, उसकी अमसी पुर्ति उप-देशको बरार कराई का रही है। समाज की मरणास्त्रका दशा की रक्षा के लिये कवेटी नियुक्त की गई है उस में स्वार वंडित पर मधोरप्रसाद जी सहश विदान सम्मिक्ति हैं । यह कमेरी अपनी क्रियोर्ट तैयार कर रही है। दिगम्बर और श्रोता-इन्हरों के मध्य परकवर एकता कराने के लिये भी प्रवश्न किये जा रहे हैं। खेडवाल से जो अगांति उत्पन्न हुई उसको शांति पूर्वक मेटने के लिये ही परिचद ने प्रयस्न किये और उसमें सफलता क्यों महीं शप्त हुई यह श्रीमान सेट नॉन्मल जी अज-मेरी के पत्र से प्रकट है जो उन्होंने सेट नवलचन्द जी को लिका था एवं जिस को सेट जी ने, ''जैन भित्र" में प्रकट किया है। तिसपर अब भी परिवद के प्रयत्न इस ही ओर अप्रसर हैं कि समाज में पारमपरिक साम्य शीब्र ही स्थापित हो । परन्त जड़ां केवल पारश्यमिक घुणा को ही प्रधानता शाप्त हो बढ़ां सहसा सफलता प्राप्त नहीं हो सर्जः। इस सब के होते हुये भी परिषद ने जंग श्रंबीजी भाषा का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में धर्म बान के प्रचार की योजना की है उसमें अगामी बाद दल में धार्मिकता बढ़ेगी, जिससे बह उच्छ-इलता दिखाई ही नहीं पडेगी जो अब तक कभी कभी दिखाई पड जाती है। बो॰ लक्ष्मीचन्द्र जी द्वारा जैन विद्यार्थियों में भ्रमीत्रान के प्रचार का प्रक्रम हो रहा है। किर भी परिषद् का यही लाय है कि शीच हो एक जैन कालिज स्वापित होजाय, जिससे आधिनक हम के धर्मिक दियान उत्पन हो सकी। आज कोरे अंब्रेजी पढ़े हवे अथवा मात्र संस्कृत जानने बाल धर्म की बास्तिबक प्रभावना

मही कर सक्ते। सार्राक्षतः परिवद में को कुछ अभी तक किया है उससे धर्म की बजाबका और समाज को स्ताभ ही हुआ है। उसके इन कार्यों में बाब, चंडिल और सेट सब ही क्रक्रिक्त थे । यह किसी काम पार्टी की स्था होने का दाया नहीं करता-यदि दावा करता है को वास्तविक कार्य करने वालों की सभा होने का इस छिये बन्धु मों ! बचि आप सच्छे दिलसे जैक्छर्म का प्रचार और सवाज की उन्नति करना चाहते हैं तो परिषद को अपनाइये। उस के द्वारा समाव के ऐका स्थापित की जिये : धर्म का भाँडा युवः विश्व-भरमें व्याप्त कर दी जिये। परिषद् !के अधिकांशः कार्य अभी तक सर्जधा पूर्ण बही हुये है उस का कारण समाज के उत्साह की कमी है। संउ गण. यदि परिषद् के कांच को प्रचुर धन से परिवर्ष करदें तो एक दफा फिर जैन धर्म का शिक्षा संसार पर जम सका है। सच्चे कार्य कर्ता परि-पद हारा समाज की बहुत कुछ सेवा कर सक्ते हैं। यस आवश्यका है धन की और काम करने वाली-की ! क्या भगवान महाचीर का कोई भी सका भक्त असल्यित को देखकर धर्मप्रभावना के लिये परि-घद की सहायता करने अगाढी आयगा? कार्य करने वाले मौजूद हैं उनसे यदि कार्य लंना है तो परिषद् की सहायता की जिये।

भारतीय सम्वादपत्रों की दशा

भारतीय सम्बादपत्रों का इतिहास यद्यपिबहुत प्राचीन नहीं है तो भी यह विशेषतया अज्ञात ही है। परन्तु इतना तो अवश्य ही है कि गत कुछ वर्षों में उनको उन्नति विशेष हुई है। प्रत्येक भाषा में आज

साप्ताहिक, मासिक, पाक्षिक, दैनिक आदि साम-विक पेत्री का अस्तित्व पाया स्नाता है। परेन्तु श्रीद यह बाद सुशक्ष्यित होती तो इस साहित्य को विशेष उम्मति होने की सेमावना थी। उस दशा में ब्राहकों की मांग हरदम बहुधाकर हिन्दीपनों के समक्ष न रहती। यदि बह नवीन प्रणाली को लक्ष्य कर लकीर के फकीर बना रहना छोड कर और नक्त करने की आदत को सुधार कर अब भी बवनी दशा को सभालें तो बहुत कुछ समुन्नत बना सकते हैं। हाल में जो भारतीय सम्बाद पश्री का सम्मेसन हुआ था। उसमें 'स्टेर्समेन' के संपादक महोदय में कतिएय बार्ती की ओर भारतीय पत्र संबासको का ध्यान आकर्षित किया है। आपने कहा था कि भारतीय पत्रों में बहुधा व्यक्तिगत आक्षेपीकी भरमार रहती हैं। उनका कागज, छपाई आदि इतनी भद्दी होती है कि पाउको और विज्ञा-पनदाताओं दोनों को ही अरुचिकर होती है। नीसरे उनमें विखायती पत्रीकी नकल करके विदेशी खबरों के तार ही तार भर देते हैं। भारतीय एव जातीय समाचारी को जितना चाहिये उतना स्थान नहीं हिया जाता । वस्तृतः सम्पादक महोदय के लांछन

सर्वथा उपयुक्त हैं, परन्तु व्यक्तिगत आक्षेपी के विषय में हमारे बहुत से सम्पादकगण सहमत नहीं हैं इधर हिस्दी, उद्देशवं जैनएकों की प्रगति की और जरा ध्यान दंने से सम्पादक महोदंघ का उपे-युक्त लाहान सर्वथा ठीक प्रमाणित होता है। जैन पत्रों का लो यह कुछ उद्देश्य ही अधिकाश में हो रहा है कि वे एक दूसरे को गाली गलौज दें। यहां तक व्यक्तियों का अपमान इस जाति के मुखपत्र होने का दम भरने वाल पत्र होरा होता है कि हठतः उन्हें कोर्ट की शरण लेनी पड़ली है। हिन्दी पत्रों में भी परस्पर सी से हुआ करती हैं। उन् के पत्र भी इस दोष से मुक्त नहीं हैं। शेष छपाई सफाई और नकल करने की आहम भी सर्व विदित है। अंतएक इन कमताइयों को दूर करने के लिये आवश्यकता है कि भारतीय पत्र ससार का एक समुखित संग-ठन किया जाय जो उसको उन्नति के उपाय दृढ निकाले। तिस पर व्यक्तिगत आक्षेपों और विला-यती सबरों की भरमार अनश्य ही भारतीय पत्री के लिये के उद्वरूप है। इस कलडू का शीधतम घो डालमा आधश्यक है।

-- 30 Ho

साहित्य समालोचना

श्री पार्ष नाथ देयस्थान संस्था आवीं और श्री कींद्रएयपुर देव स्थान की ग्राय-व्ययहियोर्ट इस में उपरोक्त दोनों तीथों का हिस्सव कमसे १४ और १७ साल का इकट्ठा प्रकट किया गया है। अब दोनों क्षेत्रों का प्रयस्थ एक कमेटा के आधान है। रिपोर्ट में सब बात का खुलासा है। तीथौं का प्रयन्ध किस प्रकार होता है और कैश होता था तथा कितने मंदिर, कितने शास्त्र, कितनी मृतियां और कितने उपकरण-जायदाद हैं यह सब बाते इस रिपोर्ट से जानी जा सकी है। प्रत्यंक तीर्थ क पैंसा ही प्रबंध हो इस बात की आवश्यका है। श्री किंगिल जी सेशके प्रबंधकों को इससे शिक्षा लेना खाहिये। हिसाब ब तोर्थ परिचय प्गट होने से तिथे का महत्व और प्रबंधकों की निःस्वार्थता का पता साधारण जनना को लगता है। इस में होनि कुछ नहीं है।

परनारवन्धु-.अखिल दि० जैन परवार समा. का यह सचित्र मासिक मुजपत्र श्रीयुत् साहित्य रान पे॰दरबारीलाल जी न्यायतीर्थ के सपादकाव में तीन वर्ष ले निकल रहा है। तीसरे वर्ष की १ २ संख्यार्थ समालीचनार्थ प्राप्त हैं। प्रत्येक में सादे चित्रों के अतिरिक्त एक कार्टून भी है। लेख परवार बन्धुओं के लिये तो लाभ प्रद हैं हा परन्तु साधारण जनता भी इससे लाभ उना सकी है। जैन मासिक पत्री में यही जातीय पत्र होते हुये भी सर्वतां भई प्रतिभाषित होता है। उत्तम हो यदि इसमें मूल्यमय स्थाई साहित्य भी प्रकट किये जाने की ज्यवस्था हो जाय। वा० मू० ३)। प्रकाशक-मास्टर छोटेलाल जैन, परवार बन्धु आफि,स, जबलेपुर।

जैन सर्गात सुधार माला के प्रथम वर्ष की इसा अंक समासीचनार्थ हमारे होशीं में है। इस का सम्पादन ओजस्विनी भाषा में मुनि प्रसामक्त् जैन सुनार रीति से करते हैं। समाज सुधार हेतु नवयुवकों की जोश देना और कुरीतियों की आली-चना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। वा॰ मू०२)। प्रकाशक-श्री विजयराज महता,संन्द्र शॉमसमाउन्ह महास-।

खत्कर्ष-धी अखिल दि॰ जैन सम्बेच्यू समा का मुख्यत्र है इस का स्थागत करते हम को एरम हर्ष है। मधमदर्शन सं कप-राशि और माब भूषा मं उत्तमता ही प्रकट होनी है। आशा है सुयोग्य सपादक इय (भीयुन प० कुँ ग्रलाल जी स्थायतीर्थ ध भी पं॰ भामनलाल नर्कतीर्थ) के हाथोंमें इस की विशेष उन्नति होगी। और यह लम्बेच्यों में जीनत्वता लाने के सह प्रयत्न करेगा। बा॰ मु॰ शा)। प्र० श्रीसाराचंद रपरिया बेलनगंत, आगरा।

हिन्दी पुष्कर—सचित्र मासिक पत्र पुनः बरेली सं श्रीयुत् गंगासहाय पाराशरी के संपाद-कत्व में प्रकट हांने लगा है। लेख उपयोगी और शिक्षापद हैं। सम्पादकीय विचार भी मार्मिक हैं। हम हृद्य से सहयोगी की उन्नति चाहते हैं। बाव मूं भी/। संपादक को सुन्दर निकेतन बरेली के पते से भान्त।

मैनपुरी के नवयुवक ध्यान दें

कि मैनपुरी के बुढ़ेले नश्युवकों ने एक धर्म कार्य पर सत्याग्रह का अनुसरण किया है। जस-बन्तनगर के हाल में हुये विवाह समय जो दान

वरपञ्च ने किया था उसमें श्री तीर्थक्षेत्र कम्पिलः जी के लिये भी कुछ रक्ष्म थी। जसवन्तनगर की पंचायत इस रक्ष्म को मैनपुरी के कम्पिल ध्यय-स्थापकों को नहीं देनी थी इसी बात को लक्ष्यकर

सत्यामह किया गया था। बात तो ठीक थी और पेसे धर्मकार्य के लिये सत्याग्रह करना भी उचित था, परन्तु अनुसन्धान ने कुछ और ही हक्तित जन्हिर की । मन्द्रम हुआ कि जलवन्तनगर एवं कतिएय अन्य स्थानों की पंचायने करिएल जी की रकम उसके वर्तमान प्रवन्धकों को इस ही हिसे नहीं देने हैं कि आजतक इस क्षेत्र का हिसाव प्रकट नहीं किया गया है। घरतुतः ऐसी दशा में मैंनप्री के नवयुवकों का 'सत्याग्रह' सत्याग्रह न होकर दुरागृह था। यदि बास्तव में वे सच्खे ह्रदय से किपल क्षेत्र की भलाई वर तुले हुए थे अथवा हैं तो उन्हें सब से पहिले कि पल अंत्र का प्रथम्ब ठीक कराना आध्ययक है। उसका हिसाब बाकायदा प्रगट कराने के लिये यदि बे सत्यागृह करते तो उनका उक्त सन्यागृह दुरागृह न कहा शाता। बल्कि इस सायागृह की जुह्रात ही न पड़ती । हिसाब मिलने रहने पर सब स्रोग स्वयं सहायता करते और इतनी प्रचुर सहा-थता मिछती कि कस्पिल के मन्दिर के प्रामे धर्म शाला के जीर्ण होने की नौबत ही न आती, बर्लिक इतनी रक्तम बच रहती जिससे अधूरा नया धर्म शाला सहज्ञ में पूरा हो जाता । अतएव प्यारे मश्रमुको ! यदि भाष के हृदयों में सच्चा तीर्थ मेम है तो उक्त मार्ग का अवलम्बन की जिए जिस से भापके उत्साह को कोई लाञ्छन न लगा सके और आपके साथ कपटाचार का व्यवहार न कर सके ! जब तक आप तीर्थ क्षेत्र का प्रयन्ध बाका-यदा नहीं करालेंग तबनक आप किसी तरह भी क्षेत्र की भलाई नहीं कर सकते। प्रत्येक वेयहधान का प्रकथ नियमित होना बाहिये और उसका

दिसाब प्रति वर्ष प्रकट होता लाजामी है। तब ही उस देवस्थान की उन्निल होना संभव है। हमकी विश्वास है कि मैंनपूरी के मबयुवक इस आंद ध्वान होंने और क्षेत्र की उन्नति करने में अध्सर होंगे। सर्व प्रथम समाई और परस्पर प्रेम एव विश्वास की अपनाना परमावश्यक है। नवयुवकी को समाज में इसकी सृष्टि करने के लिये सब कुछ सहन करना चाहिये। इन्हीं बाली के लिये सत्या-गृह शोभता है। आपसी पेक्प बढ़ाने में और जाति की दशा सुधारने में सऱ्यागृह की शरण लेना सर्वधा सराहनीय है। बरात के स्थान पर यदि सगयभगत की उस सजातीय विभाग की रक्षा के लिये हमारे नययुवक सत्यागृह करते तो सर्वधा अभिवंदनीय थे जो एक मुसलमान के पत्रे में मय अपने दो कुमारी कन्यायों के पड़कर धर्म को तिलाइतिल दे रही हैं। क्या इस घटना सं समाज की अर्खि विधवाओं के प्रति किये जाने वाले अखाचारी के लिये खुलंगी ? क्या इस दावण घटना से समाज की नाक बनी ही गही कही आ सकी है ? समान आंखें खोल और विधवाओं की दशा सुधारने का प्रवन्ध कर उनको सत्सगति में रखने और श्राविकाशमों में भेजने का प्रकाध कर सजातीय नवयुवकों, सत्यागृह करो इस लज्जा-जनक दशा का मेटने के लिये-स यागड़ करो समाज में से अक्षान की हटाने के लिये । मिध्या अभिमान का नाश करने के लिये. अन्यथा सत्या-गृह को कलंकित मत करो !

-उ० सं०

हिसाब आय-व्यय जैन हाईस्कूल पानीपत

१ अप्रेल १६२४ से ३१ मार्च १६२५ तक

	સપાસીસ પ્રાપદ્ની		त.फसी.ब सर्चे				
ŧ.	चन्दा माहवार	₹३ ५८)	र प्रोविद्देष्ट फण्ड	₹ ₹¥: (≠)			
ą	प्राविदेग्य पांद	11 (B'He3f	२ कर्जा दिया स्यम	१६५E ८)			
3.	प्रीबिन्शियल ग्रान्ट	(3 3 £¥	 तनस्वाह स्कूल सामान बोडिंद्र 	Ĺ			
₩.	म्युनिस्पिछिटि गुप्तर	દ ૨૨ ₁₉),	हाउल भ दि	1(11178354			
ų	गूरंट राजा केडी श्रांक	(4)	्ध बाद्धिङ्गहाउस. के लिये जुमीन खर	ોથી ૧૦૦)			
É	स्कूल और बोर्डिङ्ग की फीस	468#1H~\P	५ सर्वः राजा बेड़ी श्रांस	₹={ '≠}			
9.	मान एक रुपया फुड्	A3A11),	६ सर्व्य स्काउट (Scouts)	ક્દ)			
=	लायबेरा बे व मते	(too)	७ छपत्राई रिपोर्ट	48111)			
3	मकान होत्का	\$400)	८ छपवाई अपील	38III)			
٩a	पुरामा सामान गच्छे	₹७)	६ बर्च नाइट स्ट्रूब (Night Sah	ool) ६६।०) <u>.</u>			
48	संदुक्तकी से निकला	¥ 2 3.)	१० सफ्र कचं चन्दा इकटा करने व	5k (41€)116			
१२	क्षियाह के समय	२६२)	११ मैनेजिङ्ग कमेडी के दक्तर का स	et 88-)11			
१३	जन्म के समय	\$4)	१२ संस्कृत विभाग	₹ ¥¢ ≰ ,Щ			
5.8	मृध्यु के समक	300).	१३ रोकड़ जो ३(-३-२५ को खजा।	ા			
ŧų	मुनफरिक तौर से अवयक	२१६॥(=)	के पास है	१३•४॥८)म			
14	किराया जामील	₹ ~}	सीग्राम खर्च	U:(III8223)			
\$3	संस्कृतः विभागः	(49 -11)	•	•			
٩E	रोकड़ा जो १-३-१६२६ को क	तांची के					
	पास मीजूद था	₹ \$=11/)114.					
	मीजान अक्षमदः	ति १६७७३॥।)॥					

हिसाब भाग-दयक "संस्कृत-विभाग" निम्नप्रकार है-

तफसील आगदरी		तकसील खर्च				
१ रोकड़ औ १-३-२७ को खजांची के		ং ভাগভূলি (Step hands) 🔻 📢				
पास मौजूद थी	१६ २॥~)	२ छन्नाइ रिपोर्ड	191=)			

٩	चन	हा ला॰ राधालाल नेमदास नी		₹ " अવીજ	(स.४)			
		चानीपत	{ 40}	४ छुत्पर इ स्टवाया	%)			
1	,,	रायवहातुर ता० लक्ष्मी चन्द अ	7	पण्डिती, हिंदी और अंग	्रेजी के तमाम			
		वानीपत	२द०)	दीचरों को तनस्याह औ	र सब खय हाई			
¥	**	क्षां० बिरण्डीकाल जी पानीपत	itto)	स्कूल के फण्ड से दिया गया है।				
A.	35	प० क्तूलसिंह च प० रामजील	· ·	:	मोजान क्वे ६५८३)॥			
		पानीपत	(23	गैकड़ जो ३१ मार्च १६२	x को खत्रां यी			
*	₽7	स्ता० परमानम्द, सुन्दरलाल	व	के पास जमा है।	१०२६॥८)।			
		अहंदास जो पानीपत	\$ •)		दोटल १६७०॥८)			
U	**	क्षा॰ इसरसिंह जी पानीय स	=¥) •					
, E	>>	ला॰ श्रह्यास जी पानीपन	€a)					
3	,,	ला० ज्याति ।साद र्टा ख र पानीय	ान १४)					
१०	,	बाबू शोकीचन्द्र जी बी. ए. इन्ज	ति-					
		नियर पार्नापत	ξo)					
११	5)	सेठ जैकुमार्गसह व सेठ परमा	नंद					
		जी रम्कम टैक्स अफसर	१०)					
१ २	**	जैन पंचायत पानीपतः दश साध	हन					
		में दान किया	સ્પૃષ્ટ)					
१३	4,	जैन पंचायत इटावा दस सादान	ī					
		मै दान किया	₹∘)					
\$ 8	**	विबाह आदि में आया	¥=,~)					
ŧ٧	n	छात्रवृत्ति चापिस आई						
		मीजान १	देक्स्सा ()					
	=12	—९) स्थला किलोगीनाच वसवः	साइट च्लो का⊷					

नोह—3) लाला किशोरीलाल बमतलाल जी. शामली । १६।) लाला नम्धूलाल जी ठेके हार आहजर । ४) जैन पंचायत कटक । ५) जैन पंचायत बनारस । इन सन्जनों ने इम विभाग को दान किये, अतप्य इन सर्वों को धन्यवाद देते हैं ।

जवकुपारसिंह जैन, मैनेजर ।

परिषद् समाचार

रिपोर्ट दौरा ता० १६ मई से २८ मई तक

—(फरंगी) तां १५-५-११ को साम के करंगी (जवल पुर) आपे और तां १६, ५, ५२ को धमेशाला में सभा हुई और जाति संगठन पर भावण दिया तथा-आनिशवाती, वेष्ट्यातृत्य, आइ-छीलगाने, बाल और वृद्धिवाह की प्रधा रोकना ध मन्दिर जो में घोसी दुपट्या छन्ना शुद्धखादी के रखना आदि वाने प्रस्तावक्षण में रक्खी गई जो सर्व सम्मति से पास हुई-यहाँ १ भाई चीर के प्राहक हुये। यहाँ जैन मंदिर ३ और जन संख्या अमुमान २०० के है।

—(बेंग्सिया) फटंगी से ना० १६ ५ २५ को बोरिया (जवल पुर) आये यहां २ शास्त्र समा और जाति समा खुई ६ माईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। नथा आतिशवाजी वेश्यानृत्य कन्या विकृय बालियिवाद बृद्ध विवाह आदि कुरीतियों के बन्द करने का बचन दिया। और मन्दिर जी मे सब बला खादी के रजने का बचन दिया। यहां मन्दिर अन संख्या ६० है। यहां १ समासद और एक भाई बीर के गृहहक हुए।

—(वरगी) त! १ १८-५-२५ को घरगी (जवल रूर) भाष । यहां ता ११६ को मन्दिर जी में सभा हुई काति संगठन पर व्याप्यान दिया। किन्तु यहां के भाईयों में ऐसी फूट है कि परिषद के प्रस्तावकों को किसी ने भी नहीं माना और आपस में लड़ने छो। केवल चौधरी मूलचन्द जी ने कहा कि हम १० घर वाले को परिषद के प्रताव स्वाकार हैं। और को हम नहीं जानते। यहां २ भाई सभासदु हुए और १ भाई वीर के गृहक हुए।

--गौर भागर में जुहरी सेन सभा का अधिवेशन। तार २०-५-२५ को बरगी से पिडरई (मडला) को रवाना हुए किन्तु पिडरई स्टेशन में लहुरीसेन सभा के मन्त्री श्री० कपूरचन्द जी मिल गये और अधिवेशन के लिए गौर भामर ले गये। अधिवेशन में २५० लहुरीसेन भाई एकत्र थे सब काम बड़े महत्व से हुए और उपयोगी प्रस्ताय पास हुए ३ दिन हमारा जाति उद्धार या धर्म चिषय पर व्याख्यान हुआ वा सार के प० मौरेश्वर राच का ब्रह्मचर्थ पर उपयोगी व्याख्यान हुआ अन्त में ५) सहायता चौधरी नन्हाई लोल जी सभापति ने प्रदान किये। यहां से ता० २५ को खल कर रोडी आगये।

हरू एं॰ प्रेमचन्द्र पञ्चरत्न प्र**चान्स** भाव दि॰ जैन परिषद् ।

गूाहकों को स्चना

(१) वीर, अच्छी तरह जांच कर यहां से भेजा जाता है। यदि कोई अंक आगामी अंक की तिथि तक न मिले तो पहले अपने डाकावाने से पूछना चाहिये। वदि पता न लगे तो उस की सूचना हमारे पास भेजनी चाहिये। (२) गृाहकों को एव व्यवहार करते समय अपना गृाहक नम्धर अवश्य खिला चाहिये अन्यथा पत्र का उत्तर न पहुंचने के उत्तरदाता हम नहीं होंगे।



समाज

इरावे की जैनी सौरतें हुन गई — नात दश हरा स्नान के समय रोख की सराय की तीन स्थियां जमुना स्नान के लिये गई थीं। दुश्व है कि असा स्थयश तीनों ही जल पूजाह के थपड़े में, आ गई और पाना के साथ वहां चली गई। जाल आदि साले गवे लेकिन पत्स न चला। मिथ्यात्क सेवन का हारूण पत्स मिला। सिथ्यों को श्री जिनदेक के सिका स्नानादि में पुण्य प्रान्ति नहीं समक्षना काहिये।

च्येन इंद्रिक्त पानीपतकी दूसरी शाला २१-५-२५ को पानीपत से ४ मील दक्षिण जाटैन प्राममें मैंने उक्त हाईस्कूल की दूसरी ग्र.चका मुझ्नं पं॰ फुलजारीलाल जी शाली तथा पं॰ भीष्मकन्द जो के हारा विधिपूर्वक मन्त्रों सहितहोम व पूजन के साथ कराया। तत्पश्चात् वहां पढ़ाने के लिये १ अध्यापक नियुक्त किया और उस समय पहले दर्जे में २२ लड़के और दूसरे दर्जे में २ लड़के दालिल हुवं। शाम के समय वहां के लाला कालूराम जैन आदि ५ मेम्बरों की जैन हाईस्कूल के अधिकृत सहायक कमेटी स्थापित कराई। जो कि ग्रांच की इक्स साध्य जैन हाई स्कृत इन्द्रेन्सः (Martic) के इमतिहान में, ४२ छात्र भेजे गये, थे जिनमें से २५ पास हुए हैं। ननरेजा जिले करनास, के सारे स्कृतों में अञ्चा रहा, है।

ज्ञथकुमार सिंह मैंनेजर ।

-इटाचा में प्राचीन अतिमार्थे विशेषांक में जिल समाधिरधान का चित्र प्रकट हथा है उस दीं के दुवं की खुदाई में दो पाषाण मुर्तियां प्राप्त हुई हैं। एक वड्गासन मूर्ति वंडित है। उसका केवल अपरभाग शाक्ष है । दुसरी पार्श्वनाथ जी का पट पुज्य अवस्था में है, वद्यपि पात्री के कारण उसका पावगु जर्जरित हो। या है। लेख किसी पर भी नहीं है। यह मुर्ति १ फूट की होगी । यह मालम होता है कि बीच की मठी में सामने दीवाल. की छोटी वेदी में मुलियां फिलाजमान थीं। इटावा के निकट अमुना तट पर श्री निर्मन्थ मुनि विनय सागर जी का समाधिस्थान है गत चत्-र्मास में पूरुप कर शीतकशसाद जी की खोज से उसका पुनः उद्धार होना प्रात्मभ हो गवा है। वहीं निकट के कुए की खुदाई हो रही थी । खुदाई में ही दो मृतियां उपलब्ध हुई हैं। एक तो बङ्गासन मुर्ति का केवल सिर और घड़ है बीचे का भाग नहीं है। दूसरी प्रतिमा तीन प्रतिमाओं का

पट है। बीच में भगवान पर्यनाथ की पद्मासन स्वृतियां हैं। किर धर्मचक् समान इधर उधर चक् हैं। ऊपर भी महररावसी है। पाषाण कुछ काला भूग है। कुएँ में पड़ी रहने से बहुत से अवयव घिस गये हैं। पक घुटने में कुछ दाग भी हूटा हुआ है। इटावा के पतारी टोला के मन्दिर जी में यह विराजमान हैं। भगवान पर्यनाथ की मृति प्जन योग्य प्रतीत होती है। इटावा पचायन को किसी धर्मात्मा माई हारा उनका अभिषेक कराना चाहिये। मृतियों पर से ब कुछ नहीं है। निस्यां की पर मरम्मत का कार्य चात्रू है, परन्तु अय घढ़ा ठपये की जकरत है। जीजों दार में प्रत्येक को सहायक होना चाहिये। कामता साद जैन।

—धृ लियागंत्र जैन पाठशाला का ता०

१५-५-२५ को बड़ी घूमघाम से वार्षिकोत्सव हो
गया। जिसमें मन्त्री हजारीलाल जी ने वार्षिक
क्योर्च पही व परीक्षात्र और निरीक्षण सम्मनियां भी सुनाई। इस विद्यालय का फल और
स्थानीय विद्यालयों से उत्तम रहा। यहाँ करीव
५० विद्यार्थी हैं जिसमें जैन अजैन सभीको धार्मिक
शिक्षा अनिवार्य है। -मन्त्री।

म्याग में जैन रथयात्रा प्याग में प्रयेक वर्ष की भीत इस वर्ष भी रथयात्रा उत्सव दि० जेन समिति इस वर्ष भी रथयात्रा उत्सव दि० जेन समिति इस वर्ष की अप सा अधिक धूमधाम से निकला। प्रयेक जैन वत्रायता मन्दिर की प्रवस्थ कारिणी कमेटी ही श्रीरथ्रयात्रा जी निकला करती थी। किन्तु इस वर्ष उसने न मालूव कर्म न निकाली, तब दिगम्बर जैन समिति ने उसके निकालने का सव प्रस्थ किया। किर भी एक

बड़ी मारी अड़चन असवावकी आ पड़ी। प्याग में रथयात्रा सम्बन्धी सनस्त पंचायती असवाव श्री मन्दिर जी में मौजूद रहते हुए भी प्चायती फूट के कारण बनारस, प्तापगढ़ तथा स्थानीय अन्य समाजों से रथयात्रा संबन्धी समस्त अस-बाब मंगाना पड़ा।

नोट —समाज की ऐसी दशामें आपसी बिद्धे प का होना बड़ा ही डानिकर और तुःखदाई है। क्या हमारे प्रयागी भाई इस पर ध्यान देंगें। -प्रकाशक।

—जीन संगठन सभा का मथम वार्षिकीस्सन देहली में ता० र और ३ जून को बड़े समान्त्रोह के साथ हुआ। इस अवसर पर ं नधर्म के
सभी विद्वान संघटित हुए थे और प्रेमपूर्वक सभी ने
अपने स्वतंत्र विखार प्रगट किये थे। श्रीमान् बाब्
प्यारंलाल जी वकील पम, पल, प, दिगम्बर जैन
ने सभापति का पदगृहण किया परचात सभा की
बार्षिक रिपोर्ट सुनाई गई अधिवेशन में विशेषता
यह हुई कि पूज्य वावा भागीरथ जी वर्जीने मगला
चरण किया तो श्री मदनमुनि महाराज(स्थानवासी)
ने मनुष्यधम पर सार गर्भत ब्लाख्यान दिया।

-- रीगस (प्रयपुर) में गें जी के हम कदीमी पंडा हैं इस देवता पर यहां पर चैत की असीजकी नीडुर्गा जेट के दशहरा के अलावा भादों के मेला और हरएक एतवार की भारी हिंसा होती थी। सो हम जेट के दशहरा पर पं॰ वाबूराम जी मंबी जीवदया आगरा दो साधुओं के साथ पधारे थे। हमने कुल भेंसा बकरों की बली बन्द करदी है। अश्री है आगे से कर्वा बन्द होजायगी।

म'गल पंडा, भूबर पंडा, भगतलाल पडा, भेरी जी रीगस ।

देश

— ग्वालियर नरेश का देहान्त— । जून की पेरिस में महाराज का देहान्त होगया। दो बार श्रेषका अपरेशन हुआ था, आशा थी आप अच्छे होजायंगे। आप देशी नरेशों में जंचा स्थान रखते थे। प्रका के अन्यतम हितैबी थे। परमातमा आप की आत्मा को शान्ति दे। बड़ी महारानी साहवा ने राज्य में राजकुमार जयाजीराव को जिनकी अस्था अभी केवळ ६ वर्ष की है म्वालियर का नरेश घोषित कर दिया।

मांसी म्युनिसिपल बोर्ड के मुसलमान सदस्यों ने बोर्ड में अपनी संख्या कम होने के कारण इस्तीफा देदिया है। नगर के मुसलमानों की ओर के बोर्ड में अब कोई प्रतिनिधि नहीं है।

नासिक हिन्दुओं का पुण्यक्षेत्र है उसमें जभी तक कोई भ्युनि संप्रक कसाई खाना नहीं था, प्रन्तु हाल में स्युनिसिपेलिटों ने एक कसाईखाना और एक बीफ्याकेंट खोलने का निश्चय किया है ज़िससे हिन्दुओं में बड़ा असतीय फैला है।

—लाई रीडिंग आगामी २० जुलाई की बिलायत से भारत को रवाना होंगे और ७ अगस्त को बावई पहुंच जायंगे। भारत सचित्र लाई दर कनहेड से उनकी जो बात चात हुई है उस सबंध में कीई घोषणा तब तक न की जायगी जब तक वे भारत आ न जायंगे।

- महात्मा गान्धी पंठ जवाहरलाल नेहरू के साथ २६ मेर्ड को कलकर्त से शान्ति निकेतन बोलपुर पहुंचे। कविवर रवींद्रनाथ, महामना मिल पेराडकत, श्रीयत रामानन्व चहोपाध्याय तथा पं विधुशेखर शास्त्री आदि ने उनका स्वागत किया। तवस्वी विजेन्द्रनाथ ठाकुर से जो साथारणतः वहे दारा' फहलाते हैं मिलने के बाद महातमा जी ने कविवर रवीन्द्रनाथ से भेंट की। करीब तीन घंटे तक दोनों में बात चीत होतो रही। वर्णीश्रम धर्म के सम्बन्ध में घड़ी देर तक आलोचना होती गही। महात्मा जी ने उसका समर्थन किया, परंतु रवींद्र-माथ में उसकी देश के लिये हानिकर "बतलाया। मरात्मा जी ने अधिमशस्यि को चरला चलाने का उपदेश दिया और उसके सिन्न २ कार्य विभागों का निर्राक्षण किया। ३ जन को ने कलकत्ता होते हुए दार्जिलिङ पहुंच गरें। वहां वे एक सप्ताह भर श्रीयृत दास के साथ रहेंगे।

विदेश

—वीन के शंघार नामक स्थान में विद्या-र्थियों के मुण्ड पर पुलिस ने बड़ी निर्द्यता से मोली चलाई। इसका नतीका यह हुआ कि कई विद्यार्थी मरे और अनेक आदमी घायल हुए। पुलिस के इस पैशानिककांड का प्रारम्भ क्यों हुआ, इस बात का अभी तक ठीक २ उत्तर नहीं मिला।

विषय-सूची

			6-6 - 4-				
ď	० विषय	3, A.	. ए० संब	न०	विषय		पु० सं
8	सहा है कीर (कविता)	-	. ४२१	७ साहि	्यं समाहोचन	t in the second	
	जैनलां "	*	922°	= मेनपु	रो के नवयुवक	ध्यान दें	
3	दमन का दुष्परिणाम	**************************************	ध २६	६ द्विस	विभाग-स्थय इ	रेनहाईस्यू छ प्र	ानीपस ४३८
¥	श्रुत-पञ्चमी ""	444	४२व	१० परि	पर् सगाचार	***	885
ų	करवाँ में मठ गान्धी का ज्य	(स्यान			तार दिग्दर्शन		464
Æ	सम्यासय दिप्यणियां "	***	४३३	A			1. 多种的现在

उपहारी की धम

इस वर्षे "बीरण के ग्राहकों को निक्त उपहार केवले २०० वीर का वार्षिक मूच्य व डाकल वे प्राप्त होते हैं। सेवा में कंपन भेजे का वहें हैं।

- (१) सहाबीर भगवान और उनका उपदेश्—५० पृष्ठी की श्रति उप-योगी सुनदर पुस्तक, को वही छान बील और परिश्रम के साथ लिखी मेई
- (२) बीर का विश्वाह —लंगिन १०० पृष्टी का रङ्गावरङ्ग विजी से सुनी-भित, पुरन्धर विद्वानी के लेख ने कविताओं से कर्तकृत, अन्येत स्वयंशी ग्रंकः।
- (३,) PRACTICAL PAPH— अंग्रेजी भाषा में बड़ी उन्च काहि को प्रामिक ग्रंथ अंग्रेजी पढ़े हुए ग्राहकों को केवल (८) के टिकट काकता के लिये, इस के लेवल प दाता "आठ चरपतरासंगी फीन चैरिक्टर इस्ट्रेडिंग को अलग भेजने पर पारत हो सकता है।

श्रीध ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाइये श्रान्यशा परनाचा पहेगा

हर नगह एकेन्ट स्पृष्टिये नमूना पुषत्।

शोशी ॥ इजन था)



द्वाक महस्त्र माप्त ।

विना नक्तीफ के हाइ को नह से पिटाने के लिये हद्ध हुए संग्रहम

ही दोग्य है। शोशी भा हज़न २॥) डाउँ में० माना। कीई मी बदा १ वर्जन मेंगाने से एतेन्द्र ही सकता है। सब शासीय जीपधियाँ विकी के लिए तथार रहती है। एजेंग, वेच और धर्माट्य वाली की विशेष मृतिधा। बीमारी का हाल लिख भे तमे पुर दिचत साराह मुफ्त विशेष हाल के लिये एक लिखिये सुचीपत्र मुक्त ।

> यता—आयुर्वेदाचार्य पाण्डरम जिल्लाम श्रोडये हैं द श्री गणेश चिकितमा भवन ने १५ दमीट सीर पी≉ (

'वीर' पर सम्मातियां।

प्रेमी सज्जनों | 'बी-' के विषय में जो समाचार पत्रों व मुख्य २ व्यक्तियों ने अपनी सम्मतियां प्रकट की हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपको 'बीर' का समाज सेवा, उपयोग् मिना और लोक विथता का बान हो सकेगा। अधिक लिखना व्यर्थ है।

मि० हरिमत्य महाचार्ये M A B L उपठ सं० 'निनवार्णा' लिखते हैं:--

में "बीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता हूं ''' लेख बहुत लाभदायक और रोचक हैं ।' बीर' का सञ्चालन बहुत उत्तमता व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है।

नारद, ता० २६ मई सन् २४ में लिखता है: --

े प्रत्येक अङ्क में बुटि के बदले नयी उन्नति के लक्षण दीन पड़ने हैं। ' ' ''लेख और कविनायें सुपाठ्य और सुसम्पादिन हैं। को धर्म जिल्लासु हैं और तत्सवन्धी बातों की छानवीन किया करते हैं। उनके लिए भी यह लभदायक हो सकता है।''

श्रीमान चम्पतराय जी जैन सनापनि परिषद लिखते हैं:-

''वार की पूण उन्नति होना अवश्यभ्भावी हैं। मैं उसकी पूर्ण उन्नति देखना चाहता है।''

'जैन महिलादश्' लिखना है:--

''र्चार के दो अङ्क प्राप्त दुर । लंब सुपाट्य और विश्वा द हैं । महिला महिमा में ख़ियों के लाभार्थ अच्छे अच्छे लेख रहते है । ब€िनों को भो गृश्हिका होना चाडिए ।"

मराठी भाषा का सुपख्यात पत्र 'वन्देनिनवरम्अणिगश्रदंस' लिखता है:--

''विश्वविद्यालय की उच्च पर्दावयों से विभूपिन विद्वान लेखक बीर' की सदाय्य करते हैं। अब तक के लेव महत्व पूर्ण व पठनीय हैं।''

पं० पनालाल जीन श्री महाबीर दि० जीन पाठशाला श्रवलतरा से लिखते हैं:---

'बीर पत्र बास्तव में एक आदर्श पत्र है इसके लेख ठोम और बड़े शिक्षाप्रद होते हैं।"

ला० कन्नोमल जीन M A. जन, धीलपुर में लिखते हैं:--

ेर्बार अपने विषय का नितान्त उपयोगी सुलिखित पत्र है। इसमें मेरा छेख छपना मेरे छिए गौरव का विषय हैं ."

ना । शित्रवरणानाल जी जैन रईम जसवन्तनगर लिखते हैं:--

"लेख व कविताएं सभी पठनीय हैं। हर महिन की दूसरी व १६ वीं ता० को 'वीर' के दर्शन हो

जाते हैं। दूसरों के बाद १६ व १६ के बाद दूसरी नारीख की प्रतीक्षा गहनी है।"

विमयी ! यदि वास्तव में आपको 'वीर' से प्रेम है और उसे एक आदर्श पत्र के रूप में आप देखना चाहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता कीं जिए। स्वयं गृहक विनये व अन्यों को वनाइये यथाश्वत्रय आर्थिक सहायता भी की जिये। बस यदि महाबीर के उपदेश से और परमात्मा विनयीर से आपको प्रेम है ता 'बीर' को एक दम उन्नत बनाकर मुद्दी कीम में जान डालिए।

राजेन्द्रकुमार जैनो, मकाशक 'वीर', विजनीर (यू० पी०)

क्या श्राप जानते हैं:--

कि भा० दि० जैन पश्चिद के स्वाधीन सद्मयतनों द्वारा निस मकार प्रमंका प्रवार हो रहा है, यह सर्व विदिन है। पिएद किसी भी सामाजिक अक्ष्य में न पह कर स्वाधीन रूप से अपने उद्देशों की पूर्ति कर रहा है। प्रत्तु उस में उसे पूर्ण सफलता तब ही मिल कक्षी है जब सर्व सज्जन उसे अपनायें और अपने भरसक प्रयत्न से उसकी सहायता करें। वस्तुतः देश विदेश में यदि आप जैन धम का प्रचार होता देखना चाहते हैं तो उस की सहायता की जिये। उस के द्वारा 'विश्वभारती महा विद्यालय' में इसी बात का मबस्थ किया जा रहा है। दूसरे समान की दशा सुधारने के यदि आप सटेच्छु हैं और उसे धर्मिनिष्ठ देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता की तिये। उसके 'वीर' पत्र तथा उपदेशकों तथा द्रेवरों द्वारा इस बात की पूर्ति की जारही है। तीसरे यदि आप विद्युहे माईयों को पुनः जैन धर्म में दी जिन देखना चाहते हैं तो इसकी सहायता की निये। इस का उपदेशक जैन कलालों को पुनः जैन धर्म में ला रहा है। इन धर्ममय कार्यों से यदि आप को प्रेम है-सहादुभूति है तो छाज ही जितनी आर्थिक सहायता आप कर सकें की जिये। यदि समय पर सहायता न मिली तो यह धार्मिक कार्य अध्यार में ही रोकना पहेगा। लच्मी साथ नहीं जायगी। उस की शोभा दान में है। इस लिये सब से पहिले परिषद की सहायता की निये।

सहायना भेजने का पताः-रायसाहत्र साहू जुगमन्दरदास
कोषाधध्यत्त-भा० दि० जैन परिषद
नजीवाबाद (बिजनीर यु पी)

शर्थीः— रतनलाल मन्त्री—'भा० दि० जैन परिषद' विजनौर (यु०पी०)

श्रावश्यक्ता

न। फिटी और ३ फिटी आटा पीसने की चक्की (सेकिंड हैंड या नई) आइल इञ्जन से चलने बाली खाहियं। मृत्य संहत चक्की का विवरण इस पते पर लिखिये।

न० १०८ 'घीर' कार्य्यालय, विजनीर ।

दरभंगे की मशहूर आम और गुजाबी लीचियों की कलम और पौध

आम और लीचियों की पांच वर्ष को पुरानी कुलम ३०) दर्जन, तीन वर्ष की २५) हन, । २ वप की २०) ठ०, १ वर्ष की १३) हुए दर्जन रेलवे महस्तुल और पैकिङ्ग वर्गरह अलग आर्डर के साथ कीमत पेशनी आनी चाहिये।

नोट—एक आने का टिकट भेज कर अंब्रेजो सुचीपत्र मंगार्छे । सुपरिन्द्रेन्डेन्ट नं॰ ४ "विहार गार्डेन" दरभंगा सिटी बिलकुल मुक्त !

विगट मन्य

ं विखकुल सुप्रत !!

सागभव ५५० पृष्टी का सुन्दर् ध्रमूल्य प्रम्थ

"असहमत सङ्गम"

क्रिसमें जैनमत, बेदमत, बहुदियों का दौन. बेदान्त, सांख्य, बैरोषिक, योग, बीद्धमतः इंसाई, इस्लाम, शांक, राधास्यामी, कर्वारपन्य, दादृपन्य, वियोसकी, सार्वाक्रमत आदि न सब ही संसार भर में प्रसक्ति धर्मों के मेद और विश्वसता के मूल कारण बड़ी सरल च सुन्दर भाषा में बताये हैं। इसके मूल लंकक व दातार हैं वाबू जन्पतराय जी जैन वैश्विर हरदाई। पुरूषक के बारे में कुछ भी लिखता धर्म है। सब ही वैश्विर साहब को डोस रचनाओं से परिवत्त हैं और प्रथम वर्ष में 'बीर' के प्राहकों का उपहार में भी दिया जा बुका है। मूल्य १) कर, परम्तु

'बीर' के प्राडकों को बिलकुल प्रकृत

जो कि शीव ही बीर' के दो दो बाहक बनाकर और निम्न फाम भरकर इस पते पर मेज देंगे।



							तारीष्	i	3.5	২
प्रकृत	ाशक 'घीर	' विजनी	τ!							
	जय	जिनेन्द्र ।	मैंने चीर	के निस्म	दी प्रशह	फ बनार	हिं। उन	67 4)	षापिक	मृत्य
त्रस्ये म	तीआईर भे	जता है।	इसके उ	उपलक्ष म	"असह	मत सङ्ग	म" नामच	ह विराट	র্থ স	ह्म् इ
हुंचते ही	मंरं पते प	र विनास	र्ल्य भेज	'दीकिये	#। और	कृपया द	ोनी बाहर	हो आहे।	स्स वर्ष	9 6
।हाबीर ज	विती संक	গ্ৰহা গ	रहाचीर	भगवान	और क	का उप	देशः नाम	क उपह	ार की पु	स्तव
विष् मेजि	वे और सार	हभर तक	वरादर	'बीर' पा	क्षिक एव	भंजते र	हेथे। दोन	पते नि	म्ब प्रका	₹ 8
१	-नामः…	. ,	,	· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		•••••	*** ***			
		यता	व प्रोस्ट	<u></u>		********	*****		400 20 2	
Q	-माम'''	• • • • • • • • • • • •	,,,,,,,	,,,,,,,,	• • • • • • • • •	· / · · / · • • • •	*** /**			
		वसा	व पोस्	ye) 4 1 3 4 4 + 4 .	• • • • • • • • • • •	*******	,,,,.	19200314		
# यदि	श्रसहमत्त सं	यम रजिन्ह	ी द्वारा में	गान्य हो नं	ो (क) इ.स	सर्व हे वि	ाये डि यादह है	नेन ने चाहि	वं श्रधीत	XI=
ा मनीश्राह	र भ्रामा चार्	हेये । श्रम्थर	श चापकी	जिक्सेदारी	पर सादी	गु क्यो ह ट	द्वारा भेज नि	रेषा भाषा	rr į	
धेर	ग गाउक म		'पनाः''				*** ****			

चाँदी के फूल पाय ११) तीला 🚭 🧢 ्रिमोने के चहे फूल भाव २१) तीला ((()) चाँदी पा चाँदी पर मीने का मुलस्सा करवाके बनाने वाले मासान की सुची) हर श्रदद कस व वैसी जितने तील चाँदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत ।

होदा ५००) से २०००) श्रम्बारा १०७०) से ३०००) पालको १००० स १५००	ग्रेगावन इस्ड एक ४		ानोग <i>ः</i> नकीगर	१००) से ५००) बनार५० सं१०००) ३०) से २००)
टेबुल ३००) स ५००) हार्थाकासात्तपुर्वेश सं १०००) घोडेका सात्त २०० सं ५००)	्रसिहासन ∻चबर एक ≉मुकट) सं २५) कि सं २५)	∗श्रष्टमङ्गलद्रदय *श्रष्टमङ्गलद्रदय *श्रष्टप्रतिहार्य	२००) सं २००) २५०) सं २५०)
अवस्त्रम ५००) से २०००) क्सोडा ५०) से ५५)	∜चें।की समोसक	84) सं ३००) १००) सं ३०००)	%मालहम्बन %ेंशेममग्डल	१००) सं ५००) ३०) सं १००)
अद्धृतरी इंडो ३०) से ५०) जैन मन्दिर के उपकरण । गन्धकृती २५००) से ४०००	श्रद्धाई द्वीप की रचनाका माँडला	१०.में ५००)	क्ष्यल्याः नावतः चाँदी के बारहदरीः	५०, स. ५००) २००) से १०००) २५००) से ५०००)
नंदी ६०० से ४०००) यह काम बाजिय शहत लक्ष्य व				२५६०) से ५०००) व२०० से ५००) (वे) वे इस चिक्र वी

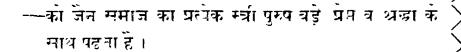
्यह काम बाजिय शाहत लक्ष्य बनवा देते हे महिट्य का के काम में ३००) सेकडा का आहत. लेते हे ≀ो इस खिक्र की चाल तैयाय मी पहला है रहा ये वाने ताय का बनाकर सान का मृत मा हाता है ।

Tel. Address- SINGHAL BONARIS

yer ye ir

शहजादा जिस-श्राफ-वेल्स की सिफारिश से टा॰ लामडेन साहब ने महाराज मैस्र के वास्ते बनाई थी। जिसकी सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फुल की सी रङ्गत श्राजाती है मुँह पर स्थाह दाग, मुँह से फोड़ा फुन्सी,दाद,खाज,हाथ,पाँव का फटना, बगल में बदददार पर्साने का श्रामा इत्यादि सब का साफ करके चमड़े की नरम करदेती है। यह फुलोंसे बनाया है इसकी खुशवृ श्रमें तक बदन में से नहीं तिकलती। कामत १ शीशी था। रुपया ३ शाशी खरीदार की १ शीशी मुफत। डाकस्यय ॥।

बहुधा देखने मुननेमें आता है कि छोटी अवस्थाके अनेक बालक रोग मलान,पलली.श्वाल.खॉर्सी, लहक, इस्त, स्किया, ज्वर, नेत्रपोडा, गलगाड आदि में फैलकर मरताते हे और ठम लोग उनके माता पिताको भृतादिक का वाधा आपटा नजर बताकर ल्टते है परन्तु आराम नहीं होता। हमने इतके लिय एक बिजली का वक्स बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शान्त होते हैं। जो ४०वर्षसे धडाधड विक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मु०१। डा०व०।=)कुलरा।=)



- —हरएक जैन ब्कृल, लाइबेरी, पाटशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।
- —धार्मिक पत्र होने के कारण बाहकों में उच्चदृष्टि से देखा जाता है।

- उच्चकोटि का पाचिकपत्र होने से फ़ाइल में रक्का जाता है। और बार २ पढ़ा जाता है।
- —एकमात्र साहाजिकपत्र होने से दिनोदिन तरक्की कर रहा है।
- विज्ञापनदाताओं के लिके अन्युत्तम पत्र सावित होवेगा। श्रीय पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट मालुम कीजिये और स्थान रिजर्व कराइये अन्यया रेट वह जाने पर पहलाना पड़ेगा।

वर्ष २]

१ जौलाई सन १६२५ ई०

सिंग्या १७

श्रीवर्हमानायनमः ।



र्श्वाभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाजिक पत्र ।

श्रानः सम्पादकः ---जैव्यव्यव्यवद्यवद्याः श्री ऋव जीतलप्रसाद जी

श्रान० उपसम्पादक ---श्री कामनाममाट जी

श्रांनव प्रकाशकः---

का मेर के के किया है। इस मेर के किया है।

सावधान!नई खुश्ख्यों!! सावधान !!! चांदी के कार्रागरों में मन्दी के कारण मजदूरी घटादी। ह)गरी मजदूरी नकाशीदार फेर्स्स काम कैसे वेदी नालकी. निहासन, संघर, छुत्र आदि ())। भरी मजदूरी सादा काम किसे वेदी नालकी. निहासन संघर, छुत्र आदि ())। भरी मजदूरी सादा काम किसे वेदी नालकी. निहासन संघर, छुत्र आदि ())। भरी मजदूरी सादा काम किसे वेदी नालकी लीटा, गिलास वर्गरहर। श्रीध ही कुल आहर भेजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये। हमारा उदेश्य जानि य समाज सेवा है। श्रीमिल्टरजी के हर किसा के अपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करने है और नया। भी रहने है। चेवर, जिहासन, वेदी, नालका

श्रष्टमहुलद्वायाः श्रष्ट्यतीहार्यः सुकृष्टः सरः भीमगडल शादि । तांत्रे के अपर सांने का वरक चढे हुए सामात, पाचमेर शिला 🛟 कलश. कलशी. जरदोत्ती का सामान हैस चन्दोत्राः परदा श्रञ्जारः चन्द्रमतार हमाहि सीनागम लहरापमाद.

मालिक-उपकरमा कार्याला । चीक अणा

हमारे यहाँ बनारची साडियाँ, साफं, इयह, कमस्वाव पान के थान, ईसकाफ काणा जिल्हा के थान, इपई, साफ दावनी, गोटा पटा परवी साटा टकवा वगरह :

त्तानि सेवक -

4. मीताराम लहरीप्रयादः मरापः, बनारम

💢 the the time the time the time the tent of the tent जिवयात्रीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज ।

हारबर्ड युवाबिभिटां, श्रमगका व यांग्य वैद्य ज़िबयावास जोक्लिन bolen श्रीर एलन \llen माहबान के नराके-इलाजाजिनका त्रमाम विज्ञान-जगनमें प्रामाणिक श्रीर पूर्ण माना दुशा है.के मुताबिक डा० वस्तावर्गावह तन एम० छ। । धमरीका । सदर बाजार देहली को श्रपने मराजी पर बहत कामयाची हास्मिल हुई।

१--मुकेदस तराके उलाच स. वटा धाराम होगया है । मैंने महाराज साहब आ नेपाल-नरंश को लिख दिया है कि दो साल स्व का मुक्ते शकर-प्रमेह को वामारी लगी हुई भी उससे इस तरीके के इलाज से विस्कृत श्राराम हागगा है।

ः इ० कनल विजय शमजेरजङ्ग बहाद्रः | Loreign Montster, Nepal देहली । श्रापने इस तरीके इलाज स्र मर जकर-प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। में ें यहां मणकर हूं। र्शानलप्रमाद राजवैद्य, चांदनी चौरू, देहली।

३ । तार चार साल से मुक्त शकर-ामेंह रोग ने तहकर डाला था लेकित **धार्यके तरीके इलाज** ने वित्रकृत टीक होगा है।

जानकीप्रमाद राजवैद्य, चाँदनी चौक, देहली ।

४—मुभे यह तरीका-इलाज यहत मुशंद स्थावित हुन्ना ।

मित्रभेन हैन रहेम, कांटला ।

भी महाबीशाय नमः



वयं २

षिजनौर, अप्याद शुक्ला २० बीर सम्बत् २४३१ १ जौलान, मन १९२४

अङ्क १७

उद्धार

सुचना

१६ वें अङ्क में "जैन हाईस्कृत पानीपत" का हिसाब प्रकाशित हुआ था, परन्तु पेस की असाव-धाना से उसकी रक्तम में कुछ गठितियां रह गई हैं। स्थानाभाव।से इस भड्ड में भी भूल संशोधन न कर सक. इसिलिये आगाना अङ्क म प्रकाशित करेंग। आशा है हिसाब के प्रकाशक तथा पाठक क्षमा करेंगे। —प्रकाशक 'वीर'

> अनाचार हमने अपनायां, सदाचार को द्र भगाया। सन्य अहिंसा पद नियमायां, आः हुआ अनिचार शामभो०॥ पद् पद पर ठोकर खाते हैं, पात्रक में भोंक नाते हैं। तक भी स्वत्व नहीं पाते हैं, कैना यह ज्यवहार ? ॥ मभो०॥ है करुरोंग ! सर्व हितकारी, वनें सभी हम हक जनभारी। मोत्त मार्ग में होये विहारी, देंहु कुपा विस्तार ॥ मभो०॥

> > --(परवार-बन्धु)

राजा मिलिन्द अथवा मनेन्द्र।



जीन साहित्य की खोज इतनी अपूर्ण अब तक पड़ी हुई है कि सहसा यह नहीं कहा जा सक्ता कि इसमें अमुक विषयके अमुक २ प्रन्थ हैं। इसही कारण इसके मर्थ्यादा पुरुषोत्तमी के दिःय चरित्र अज्ञात हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से हमे जैन राजाओं भीर अन्य महापुरुषों का विवरण कुछ भी झात नहीं है। हां यह अवश्य है कि भगवान महा-बीर के पूर्व के मदान् पुरुषों का विषरण श्रवश्य ही पुराणगृन्थों में मिलता है; परन्तु उपरान्तका विव-रण यूंदी यत्रतत्र विखरा पड़ा है। कोई भी जैन इति हास उपलब्ध नहीं है। इसही कारण लोग यह खयाल कर लेते है कि जैनधर्म के पालक केवर **डीश्य** वर्ण के मनुष्य गहे हैं। यद्यपि वास्तव में वात मूं नहीं है । भारत के प्राचीन राजा जैनी थे । सम्राट श्रेणिक विम्बसार सम्राट चन्द्रगुप्त मीर्य, सम्प्रति मीर्यः सत्राट खार येक महामेचवाहन, कुमोरपाल भनोघवर्ष इत्यादि प्रस्थात् राजागण जैन प्रमाचलः क्बो ही थे। यही नहीं विदेशों में भी जैनधर्म का प्रचार सबाट सिकन्दर के समय से होगया था। मृति कल्याणे कीर्ति (कालोनस) सिकन्दर की सेना के साथ यूनान की ओर जैनधर्म का प्रचार अपने बान और चरित्र से करते गर्थ। उसका ही यह फल था कि विदेशियों में भी जैनधर्म के प्रति इन्सण्ठा उत्पन्न होगई थी। पैरही नामक युनानी फिलासफर में दिगम्बर मुनियों के निकट से दाशं-निक शिक्षा प्रहण की थी। सारांश यह कि विदशी

में भी जैनक्षर्म की गति अवश्य हो गई थी। ऐसा कोई कारण नहीं वीखता जिसके कारण वह भारत में ही सिमित रहा कहा जासके। परन्तु दुःव है कि जैनियों ने अपनी प्राचीन गरिमाको प्रकट प्रकाश में लाने के प्रयत्न ही नहीं कि रहें जिससे उसके पूर्व इतिहास के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त हो सके। पाठकों को आज हम एक गूंकि राजा का परिचय करायेंगे जो जैनक्षमंकामक प्रतीत होता है।

सिकन्दर आज्ञम की मृत्यु उपरान्त उस का राज्य तीन विभागों में विभक्त होगया था। उसके सेनापति ही स्वाधीन शासक बन बैठे थे। सीरिया प्रदेश के प्रीक (यूनानी) राजा संत्युकस ने प्ना भारत पर चढ़ाई की थी परन्तु खन्द्रगुप्त मौय के समक्ष उसे हार मननी पड़ी थो और भपनी कन्या उसे देनी पड़ी थी। परन्तु यूनानी इस पराजय सं इताश नहीं हुये थे। अन्ततः ई० सं० से १६० वर्ष पूर्व बलक्के शासक यूथेडिमसके पुत्र डिमिश्यिसने भारत पर अक्रमण किया था। यह काबुल विजेता सीरिया के राजा एण्टिश्रोकस महान का दामाद था। इस ने अपने श्वसुर संभी आगे बहुकर काबुल पंजाब,और सिन्ध पर अधिकार कर लिया। और गृंकि लोगों का भारत के इन प्रदेशों में अधि-कार जम गया । इन्हीं राजाओं के मध्य एक राजा मिलिन्द अथवा मिनेन्डर (मनेन्द्र) विशेष प्रस्यास् था। 'ई० स० पूर्व १६० (विश्स०पूर्न १०३) से ई॰

न्दपन्हीं को एक कथानक से विदित है। उस कथा।

नक में कहा गयाहै कि ५०० योड्डाओं सर्यात यूना-

नियों ने राजा मिलिन्ट (भेनेन्डर) से निरगन्थ

नात्यस (महाबीर) के पास चलने को कहा और

अवने मन्त्रवर्धों को उन के निकट प्रकट करने के

लिय पर्व अवनी शङ्काओं को निर्वृत्त करने को

कहा।" इससे प्रकट है कि अन्य यनानियोंके साथ

सभवतः राजा मिलिस्ट भी जैमधर्म के श्रद्धानी

थे। इस विपयमें अधिक लियने के पहिले हम यह

बेखना आवश्यक सनभते हैं कि इस समय अन्य

ब्रान्तों में कीन राजा सत्ताधीय थे? मौर्यवंश के

श्रम्त होने पर शुक्रवंशी पूज्यमित्र राज्याधिकारी

बना था। इस के करीथ ७० वर्ष पहिले सम्प्रति

हारा जैन धर्म का विशेष प्रचार देश विदेश में हैं।

चका था। जैनियोंके लिये यह कान्सरिन्टायन ही:

था। तब ही से जैन धर्म की प्रधानता चली आ-

रही थी तिस पर फिर ईसा ने १७० वर्ष पूर्व कीन

राज्ञा खाखेल ने पृष्पमित्र को हरा कर अपने राज्य

को विशंव विस्तृत किया था। व्यक्तेल कहर शैन

धर्मात्रयायी था। उसने सर्वर्ग जैनधर्म प्रचार के

आश्चर्य नहीं है। स्वय उक्त वीद्धग्थमं लिखाहै क-

"They (streets of sagal) reseated with cries

स० पूर्व १४० तक यर काबुल का शासक था और ई० सा से १५५ वर्ष पूर्वके निकट इसने भारत पर चढाई की थी। मि० स्मिथ ने इस घटना का समय कि एं॰ से १७५ वर्ष पुर्व माना है। स्ट्रीबोने लिला है कि इसने पटल (सिन्ध में) सुराष्ट्र और सगर डिस सागरहीप) तक अधिकार कर खियाथा। इस के सिक्षों के भड़ोंच तक चलने का और इसकी सेना का राजपुताना तक पहुंचने का पता चलता है।'' #अगाडी स्ट्री ने लिखा है कि यह सतलज बार कर असुनी तक पहुंचा था। उधर अस्टिन ने इनका उटलेख भारतीय राजा के रूप में किया है। गर्ज यह कि राजा मल्झिन आरतीय राजाथा। कहा जाता है कि इस का जन्म सिन्धु नदी के डीप अल संद (= अलंकज्रिड्या) में हुआ था। पंताब में साकल नगर में इसने अपनी राजधानी बनाई थी। उस समय यह नगर वड़ा समृद्धि पर था। बौद गुन्थ 'मिलीन्द्रपन्हें।' में इस का और राजा का थिशेष बिवरण लिखाहै। इसमें बीक श्रमण नामसेन और राजा मिलिन्द से जो संवाद हुआ था वह म कित है। इस के अन्त में कहा है कि राजा मिलिन्द अन्त में बोद्धानुयायी हो गया था। धराव जानना चाहिये इस के पहिले वह किस धर्म का अनुयायी था ? Unstorical Gleanings नामक पुस्तक के पृष्ठ अद पर बिजरण है कि करीब ईसा जे पहिले की दूसरी शताबिह में अब यूनानी लोगों ने रिक्कांश पश्चिमीय भारत पर आधिपत्य जमा लिया था तब जैनधर्म का प्रचार उन के मध्य हो गया था और इस धर्म के नायक की मान्यता भी उनके मध्य अधिक थी। जैसे कि बौड ग्रंथ 'मिलि # देश्वरं भारत के प्राचान श्रेण वश भाग २

प्रयत्न किए थे। जैनमुनियों को उस समय भर्म प्रचार का विशेषसुमीता अवश्य प्राप्त होगा। इस लिए जैन धर्म का प्रचार वे दूर २ तक कर सके होंगे। जैन धर्म की प्रधानता उस समय अवश्य रही होगी। यही कारण प्रतीन होता है कि उक बौद्ध गृन्य में कहा गया है कि इस समय बोद्धधर्म संकट में है। (पृष्ठ १४) अनल्ब जंनधर्म का प्रचार राजा मिलिन्द की राजधानी सागल में तो कोई

of welcome to the toachers of every creed and the city is the resort of the leading men of each of the differing sects (पुच्ठ ३) अर्थात् सागल की गलियों में विविधापयों के गुरुओं को सहयं आमन्त्रण दिया जाता था और वहाँ प्रत्येश मत के नेता मिस्ते थे। इसके अगाडीएण्ड १० पर वहीं किया हुआ है कि जब बौद्धगुरु नागसेन वहां पहंचे उसके १२वर्ष पहिलेसे न ब्राह्मण और न धमण बौद्ध साध वहां दिखाई पडते थे। तो स्पष्ट है कि उस समय यहाँ जैमधर्म की गति विशेष होगी, जैसे कि अन्य विद्यान डां० विमलचरण लां-एम० ए० यी एच दिन अपनी पुस्तक (Historical Gleanings) में प्रकट किया है जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। ऐसी अवस्था में प्रजा में जैन धर्म की गति अधिक थी और समकाछीन प्रख्यात राजा खाखेल भी जैनधर्मानवायी था तब राजा मिलिन्द का जैन धर्म का श्रद्धानी होना को। कठिन बात नहीं है। राजा मिलिग्द जैन धर्मका भद्रानी है। इस ही बात को लक्षकर बौद ग्रद ने अपने शिष्य नागसेन से कहा था-I will not forgive you until you go and defeat king Milinda, who troubles the monks by asking questions from the heretics point of viow." कि जयतक राजा मिलिन्द को परास्त नहीं कर दोंगे नवतक में तुनी क्षमा नहीं करूंगा,क्योंकि राजा मिलिन्द नास्तिकों की भांति प्रश्न करके श्रमणी को तंग करता है।" तिस पर 'मिलिन्द-पन्हीं' में जितने प्रश्त किये गये हैं यह विशेषकर जैन सिद्धान्तीं के खंडनका में लिये ग हरें।

राजा मिलिन्द जैनधर्म के सिद्धान्ती को लेकर

प्रश्न करता है। मुख्यतः आत्माके अस्तित्व,निर्वाण आदिके सम्बन्ध में प्रधन किये गये हैं। भारमा को अस्तित्व राजामिछिन्द स्वीकार करता है।नागसेन उसका खण्डन एक स्थान पर पांच इन्द्रियों के इपान्त से करता है। पंचेन्डियों जैन सिद्धान्त में क्वीकार की गई हैं। बाह्मण शास्त्रों में यह इस तरह स्वीकत नहीं हैं। वहां कर्मेंदियां और शानेन्द्रियां क्वीकार की गई हैं। अत्युव यहां पर कात्मा के अस्तित्व का तिराकरण जैनधर्म को लक्ष्य कर किया गया है। निर्माण के विषय में राजा मिलिन्द प्रश्न करता है और उसे इस जीवन के बाद एक निवत कथान पर शाश्वन सख भोगने रूप जैन सिद्धान्ता-नसार मानता है। मामसेन इसका खंडन करता है। यह कहता है कि निर्वाण इसी जीवन में भाग पदार्थ है-उसके लिये कोई अलग स्थान नहीं है। (500 Milinda. iv. 8.85.) ब्राह्मणधर्म की भी निर्वाण के विषय में उस प्रकार मान्यता नहीं है। उनके यहाँ भी कोई खास स्थान निर्वाण का नहीं माना है। अतः यह प्रश्न जैनसान्यता को ही लक्ष्य कर किया गया है। इस ही तरह कर्मसिद्धान्त का संदन है। जैन सिद्धान्त कहता है कि सब प्रकार के स्राव दुःख केवल कर्म के कारण होते हैं, परन्त मागसेन इसे स्वीकार नहीं करता। यह कमी के अतिरिक्त अन्य कारण भी उसके मानता है और जैनियों पर धाक्मण करता है क्योंकि वही सुख दःख का कारण केवल कर्म को मानते हैं। बौद्ध नाराज्य कहता है-And Horem whosoever maintain that it is karma that injures, beings, and besides it there is no other reason for pain, his proposition is false इसके अतिरिक्त जल में

भी जीवकार्य मानकर राजा मिलिन्द प्रश्न करता है। यह भी जैन मान्यता का लक्ष्य कर लिखा नया है। नागछेन इसे अस्वीकार करता है। इस प्रकार साधारण कर्ण में जिन मुख्य सिखानतों को संवाद उक्त बौद्ध ग्रंथ में लिखा हुआ हैं वह जैन मान्यता के अनुसार हैं। इसलिये इस तरह भी राजा मिलिन्द का बौद्धधर्मानुयायी होने के पितिले जैनधर्मी होना प्रमाणित होता है। अत्यव हम दृढ्नाके साथ कहसके हैं कि राजा मिलिन्द-मिनेण्डर अध्वा मनेन्द्र भी किसी समय में अनेक धृतानियों समेत भगवान मह।वीर के मक रहे थे। यरन्तु काल की गति अतिविचित्र होती है। यह धृतानी किसी समय इम पर शासन करते थे वही भाज हम में मिल गए हैं और हम बतलाने में ध्रसमर्थ हैं कि वह कीन हैं?

राजा मिलिन्द के विषय में एक प्रश्न और शेप है कि कहीं इनका उल्लेख जैन शास्त्रों में भी है? इस प्रश्न का उत्तर जब तक सपूर्ण जैन साहित्य उपलब्ध न हो तब तक मही दिया जा सक्ता। उपलब्ध जन साहित्य में खोज करते से संभव है कि कुछ प्रकाश प्राप्त हो सके। यास्तव में यदि समय जैन साहित्य विद्वत्स्त्राज को उपलब्ध हो तो अनेकों नई बातें झास हो। परन्तु दुःव है, इस आयश्यकता की उपेक्षा करके समाज के नेतृत्व का दम भरने वालं महोदय आपस में लड़ २ त्य के महत्व में प्रो० जैकोबी के निम्न शब्द ही पर्याप्त हैं:—

The jain records are unfortunately as yet known only in fragments. It is the greatest desideratum for the history of this period that they should be made accessible in full. The philosophical and religious speculations contained in them may not have the originality or intronsic value, either of the vedants or of Buddhism. But they are none the less historically important, because they give evidence of a stage less cultured, more ammistic, that is to say earlier. And incidentally they will undoubtedly be found.....to contain a large number of inportant refrences to the ancient geography, the political divisions, the social and economic conditions of India at a period hitherto very ineperfectty undrestood the linguistic and epigraphic evidence so for available confirms in many respects both the genial reliability of the traditions current among the jains " भावरूप में प्रो॰ साहब ने जैन साहित्य के उपलब्ध न होने पर खेट प्रकट किया है और जैनग्रन्थों को बाह्मणों और बौद्धों की मान्य-ताओं से विभिन्न, उनसे प्राचीन समय के विवरण से परिपूर्ण विश्वसनीय बतलाया है । जैनियों को ध्यान दंना चाहिये। विनीत-उपसंपादक

बहुमत

(छे० भीयुत् ऋषभदास जैन बी० ए०)

उपर्युक्त शीर्षक का एक लेख हिन्दी जैन गज़ट अंक ३२ में छपा है। उस में जो लेखकने बहु-मत' की ब्याख्या की है वह तो ठीक ही है और "बहुमत" से जो व्यवहार में मतलव लिया जाता है इस को सब लोग समभते ही हैं। परन्तु "बहु-मत' के महत्व को जो लेखक ने घटाने की काशिश की है उस में वे सफल नहीं हुए। प्रथम उदाइरण को उन्हों ने रोगी का लिया है उस में तो स्वयं उन को "बहुमत" मानना ही पड़ा है क्यों कि बन्होंने हो बैद्यां की सम्मति से औषधि दिए जाने पर रोगी को आराम होना लिखा है। और रहीं यह बात कि जिस बियय के जो लोग जान-कार हैं उन की ही राध उस पर लेनी चाहिये इसरी को नहीं। इस को सर्वसाधारण जानते हैं। श्रीर इस पर अमल करते हैं। इस पर ज्यादा जार देने की जरुरत ही न थी। परन्त् आख़िर में जो क्रेंबक महाशय ने यह परिणाम निकाला है कि भर्म या शास्त्रीय विषय बहुमत का नहीं है । बहु मत उस पर छ।गू नहीं हो सका । यह बात एका-श्तापक्ष को लेकर कदापि नहीं मानो आ सकी। क्योंकि धर्मशास्त्र के ज्ञाताओं में भी धर्म विषय पर मत भेद हो जाता है, उस समय सिवाय बहु मत की शरण लेने के और क्या किया जा सका है। यहाँ ज़कर "बहुमत" पर ही काम करना पडता है। "आगम के समक्ष बहुमत कुछ मूल्य मही रखता।" लेखक जी का यह सिद्धान्त था

यदि कोई सभा सोसाइटी यह प्रस्ताव पास करे तो यह प्रस्ताव एकान्तरूप से हरगिज ठीक नहीं कहा जा सका। क्यं कि जिस समय किसी भागम विषय पर विदानों में मतभेद होता है उस पक "बहुमत" ही यह मृत्यवान हो जाता है। उस यक्त आप लिवाय "बहमत" के मानने के भीर क्या कर सक्ते हैं ? हाँ, यदि किसी मान्य आगम या प्रम्थ में किसी विषय पर विधि निषेध मीजद है अर्थात् किसी विषय को साफ तौर से शास्त्र जाइज अथवा नाजाइज् करार देता है। साफ तौर से उसको मना भरता है या इजाज्य देता है, ऐसी दशा में अवश्य "बहुमत" की कोई अकरत नहीं है। परन्तु जहां आगम या शास्त्र में ऐसा नहीं है और विद्वान लोग शास्त्रों से अपनी श युक्ति निकाल कर किसी बात को सिद्ध करना चाहते हैं वहां धर्म शास्त्रीय विषयमें भा"बहुमत" को मानना पड़ेगा । जैसे परस्त्रीगमन अच्छा है या बुग-इस विषय को ते काने के लिये अवश्य ''बहुमन"की कोई जुरूरत नहीं है। क्योंकि शास्त्री में साफ तौर से इसका निषेध है। दूसरा उदाहरण की जिए कि प्रस्थ मुद्रण अच्छा है या बुरा ! इसकी बाबत आगम में कोई विधि-निषेध नहीं पादा जाता । इसलिए इसके निर्णय के लिये बेशक "बहुमत' की पायन्दी करनी पहेंगी। अत्यव उन सुरतीं को छोड़कर कि जहां आगम या शास्त्री में साफ तीर से विधि निषेत्र मीजूद है बोप सर्घ धर्म

च शास्त्रीय विषयों में 'बहुमत" को मानना पड़ेगा। इसलिये एकान्तरूप से यह कह देना कि धर्मो व शास्त्रीय विषय पर "बहुमत" लागू नहीं हो सक्ता हरगिज ठीक नहीं है।

लेखक महाशय के लेख में धैच, चकील, ज्यो-तियी गायनाचार्यं आदि के द्रष्टान्त देने से उन का कुछ ऐसा भाव भलकता है कि धर्म व शास्त्रीय विषय सिर्फ पडिसों की राय से ते होने चाहिये। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि जो व्यक्ति जिन विषय की जानकारी रखते हो उस विषय पर उन ही की गय लेनी चाहिय,दूसरों की नही-वहां सक में लेखक की राय सं सहमत हूं। परन्तु मुक को इस बात के मानने में बहुत ज्यादा असंतीप है कि जैन जनता सामान्य तौर से भी धर्मसे बिल्कुल पेसी नावाकिफ है कि वह धर्म के किसी चिपय पर राय देने की योग्यया नहीं रखती! न मैं धर्म को वैद्यक, धकालत, ज्योतिय, गायन विद्या आदि से कि जो आजीविका प्राप्ति के सांसारिक उपाय हैं-समानता देना-धर्म को इन सांसारिक विषयी के बराबर समभमा पसन्द करता है। धर्म काई आजीविकोपार्जन का उपाय नहीं है। धर्म कोई पैसी वस्तु नहीं है कि जिसको केवल खास खास आदमी अथवा समाज का कोई खास गिरोह ही जाने । धर्म सब को जावना चाहिये । सबको धर्म का जानकार होता चाहिये। जिस कौम या हिस . समाज को श्रपना अस्तित्व कायम रखना है अध्या मपनी हालत अच्छी रखनी है उसको ध्यान रखना चा श्रिये कि उस का प्रत्येक व्यक्ति धर्म का जान कार हो। जिस किसी कौम में धर्म खास गिराह पर सीमित रहा है वहां अन्याय, लडाई फगडे,

खराबी व तवाही देखने में आई है। यूरोप के पोप व भारतवर्ष के ब्राह्मण इसके उदाहरण मौजूद हैं। असप्य समाज का कर्तव्य है कि वह खास २ आदमियों को ही धर्म का याकिफ कार व धर्म विषय पर राय देने का अधिकारी न रक्जे बदिक अपने प्रत्येक व्यक्तिको धर्म से वाक्तिकार व धर्मविषय पर राय देने का अधिकारी बनावें। बेशक अंग्रेज़ी पढ़े लिखे विशेषतया धर्मसे अज्ञान कार हैं: परन्तु पेसा कदाणि नहीं है कि सबके सब भर्म से वित्कुल कोरे हों। बहुत से भर्म में अच्छी खासी यांग्यता रखते हैं। कतिएयं ने जैनक्रम की एक निहायत काविलकदरदर्जे तक प्रभावना की है। और यह लोग अधिकतर जो धर्मसे नागांकिफ हैं वह कस्र भी समाज का ही है। समाज ने ऐला प्रथम्ध नहीं किया कि किस से उन को लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी मिल जाती। यह तो आजकल असंभव है कि जैनसमाज अंग्रेजी शिक्षा से बची रहे। और न ऐसा करका बुद्धिमला ही है। परन्तु इस का इलाज यह ही है कि समाज एसा प्रवन्ध रक्षे कि जिस से पाश्चिमान्य अधवा अंग्रेज़ी अथवा लौकिक शिक्षा प्राप्त करने वासे धर्म से भी जानकारी प्राप्त कर सकें ताकि धर्म विषय व खास २ पेशों (वैद्यक, वकालत आदि) को छोड़ कर शेप सब पार्ती में हर व्यक्ति राय दे सके। ऐसी हालत हो जाने से ही समाज की दशा हढ कही जासकी है बरन कहना पडेगा कि जैन समाज कमजोर है।

में यह बात मानने के लिये तैयार हूं कि दूसरी विद्या, कला कौशल की तरह धर्म विद्या में भी Specialists स्पेशियलिस्टस हो सके हैं और

होते हैं। Specialist से मतलब ऐसे व्यक्तियों से होती है कि जिन्हों ने अपना तमाम उपयोग व जीवन किसी खास विद्या एवं कलाकीशल के सीखने में व्यतीत किया हो और जाउस विद्या व कलाकीशल में खासतीर से उच्च कोटी की यांग्यता रखते हों। अतएव बह साहिवान कि जिन्हों ने अपना तमाम उपयोग व जीवन धर्माबता के प्राप्त करने में लगाया है ओर उस का ही मनन करते रहते हैं और उन में उच्चकांटा की योग्यता रखते हैं। ऐसे महाशय धर्म के Specialist अथवा पंदित कहलासक है। और धर्म विषय भी दो तरह के होते है। एक अतिगढ विषय जैसे गुण स्थानों व कर्म प्रकृषियों के उदय आह को चरचा पैसे गढ़ विषयों में बेशक धर्म के Specialist या पडितों की ही राय छेनी चाहिये। परन्त इन गृह विषयों पर भी विद्वानों में मतभेद होजाता है। मतभेद,होने की हालत में यहां भी "बहमत" ही मानना पड़ेगा। "बहुमत" का महत्व यहां भी नहीं घटेगा। दूसरं धर्नविषय धर्म के सामान्य विषय या शिक्षा पद्धति अवथा व्यवहारिक रीति नीति से सम्बन्धित होते हैं। उनका निर्णय केवल पांपली की राय पर ही नहीं छोड़ा जाना चाहिये ांग्क " एक किस्स के योग्य पुरुषों की राय छेकर करक उन्हें तेनी चारिये।

अंत लाक महाशय ने जो अपने लेलमें विध-धारेषपाइ, जानि पातिके लोग का जिकर किया है में तो इसको बिल्कुल किजुल व बेबुलियद सम-भता हूं न दिगम्बर जॅन समाज में कोई विधवा बिबाह जारी करने की कोशिश कर रहा है न कोई जाति-पाति को उडाना बाहता है। हो, कुल लोग

वैश्यवर्ण की उपजािक्यों में परस्पर विवाह सम्ब-न्ध की नजबीज पेश करने हैं। इस पर कतिपय पंडितगण ऐसे भड़क उठं हैं कि दूसरों पर विधवा विवाह जारी करने-जाति पाति को छोप करने का इलजाम लगाए चले जाते हैं। इसको प्रसी भ्रष्ट धर्मशुन्य कहे चले जाते हैं। नहीं मालूम ऐसी क्या ग्रजराउद और परेशानी है। क्या किसी दो चार व्यक्तियों के कोई तजवीत पेश कएने से बह तज्ञीज समाज में आज ही जारी हो जायगी? नहीं मालुम दूसरों पर इंटजाम लगाकर-सभ्यता धिरुद्ध शब्द व दमन र्नाति का प्रयोग करके समाज में अशान्ति व हलबल क्यों फेलाई जाती है ? यदि दिशम्बर जैन प्रत्यों में इस तजनीज की बाबत साफ तौर से विधि कियंध मीजद है, तो शान्ति से धेट कर उसके मृताबिक तय कर छो। और यदि शास्त्रों में साफ तौर से इसकी बावत कोई विधि-निषेध नहीं है, तो अपने पुराण पुरुषों के इतिहास से जो युक्ति निकलती ही उनके मुता विक "बहुमत" से ने कर लो । लेखक ने अपने लेख में चिलायत यात्रा का भी नाम लिख दिया है. यद्यपि इस सपय सारी समाज में इसका कोई विशेष आन्दोलन नहीं है इस को भी इसी तरह सं तं कर रूके हो। यदि मान्य जैन प्रन्थों में इस की बाबत विधि नियंध भी जब है तो उसके मुता-विक बरन् योग्य युक्तियों के बल "मह्मत" हारा। इस प्रकार "बहुमत" किसी दशा में भी उपेक्ष-णीय नहीं है।

मुसलमानी राज्य में गोरचा

पेतिहासिक प्रमाण

(मूल लेखक-डा० सैध्यद महम्मद पी० एख० डी०)

अनिभाने तथा हिन्दू खासकर इस बात से अनिभा हैं कि मुसलकान वादशातोंने गोवध की तरक बपा। भाव किस प्रकार कार्यम रक्का और कहाँ तक हिन्दुओं के इन अनिवार्य मनश्सनाए पर अपने हादिक पूज्य भाव कार्यम क्क्को। मैं इस घृणित प्रश्न पर कुछ प्रकाश डालना चाहनाई और पंतिहासिक प्रमाणसे सिद्ध करना चाहनाई कि मुसलमान बादशाह और उनके बापदाद इस कार्य में किननी बदारता एक सके हैं, वे कहां तक हिन्दू मजह को नत्वोंको सम्मानित कर सके, जब कि व यहां इस पृथ्वी के पूर्णाधिकारी थे।

यह विषय उस समय इतने अंशतक तिहर न या कारण कि हमारा संघन एश्वान उस समय इतना किन तथा जिसे हम भाज इतना उरुका हुआ देवने हैं। उस समय इस देशके शासक मुग रुमान थे। भगर वे इसे धार्मिक समक अपनी मह-खाकांश्चा दिखाने अथवा हिंदु ऑको नीचा दिखाने के अभिययसे धार्मिक हकावर डास्त्रने तो उनका कोई हाथ न पकड़ संकता था पर ऐसा समभने के यहने उन्होंने हिन्दु ऑको प्रजा अथवा गुलाम न समभा, बल्कि उनका अपने देशी भाइयों के समान भादर करने तथा उनके साथ बराबरीका वर्माव कोमों लानेथे। मेरे हिन्दु भाई यह भलि भांति सन्य माने कि मुसलमान बाइशाहोंने हिन्दु मांके मज़ इशी और धार्मिक तह में को सम्मानित किया और अपने एकदेशी राज प्रबन्धमें अपने साथ हकदार समन्ता। यह जान लेना यहे महत्वका प्रश्न है कि मुसलमान शासकोंने अपने शासनमें हिम्दुओं के साथ कैसा वर्गाव रक्ष्या और कहां तक जिम्मेदार राज्यप्रवस्थ में हकके साथ भाग लेने दिया.

गोवध पर सरकारी कर

इस निवन्ध के लिखने का यही हेतु है कि लोग समझ जांय-मालूम करलें, कि मुसलमान गोवध के विषयमें हिन्द् शीकी मजहबी-जातीय भावनाओं को कितने सम्मानसे देखते थे। विलक्कल शुरुषे जब कि वे मुशलमान)पहिले पहिल बादशाह हुए हिन्द-ओंकी गहरी भावनाय भली मांति समक गये क्यी कि उनकी राजनैतिक धारणाही इसी एक तस्य पर अवलम्बत थी जिसे ये पूरी तरह सम्मान देते रहे. वह गोबधर्हा हिन्दू जातीय दुख था। तिस समय से मुमलवानी बादशाहत शुरु हुई कसाइयाँ पर एक प्रकारका कर सगाया गया, जिसकी हह १२ जैताल साय पीछे थी । फीरोजशाहके राज्यकालमें कसाइ-योंने इसके रोकनेकी प्रर्थना की इसलिये वादशाव ने उसे रोक दिया। इसका विवरण कोई ऐतिहा सिक प्रतक में नहीं,पर यह केवल गोषध रोकनेंदी का मतलब था। इसीलिये यह कर दोसी यर्पी तक याने जब से मुसलमानी राज्य हिन्दुस्तान म स्थापित हुआ तबसे इसका ठीक पता फीरोजशह त्गलकके समय तक अगता है।

कोई बास आवा निकालने के बजाय (अपेक्षा)
श्वसलमान बादशाहांने गोयध बंद करने के अर्थ एक
यही तरीका निकाला था। यह "जाजीरा" कर
कहा जाता था। महम्द तुगलंक के शाही रसांईमें
गोमांस नहीं पक्षाया गया, क्यों कि वह उसे छूनेसे
गृणा करता था। अतेकों लेखकों ने शाही रसांई के
विषयमें बहुन कुछ लिखा है पर गोवधके विषयमें
कहीं कुछ नहीं लिखा। फरहतुलमुल्क गुजरातको
शासक नियुक्त हुआ और महम्मद गया छुदीन तुगछक जब बादशाह हुआ, तबभी वह इसी पद पर
नियत रहा।

इतिहास प्रेमी इस विषयको अच्छी तरह कहते कि फरइतुलमुल्क ने हिन्दुओं को अनेकों सुभीते दिये और गांचध यंद इलंकी आझा की। सुलतान गासीठ्दीन के राज्य में तो हिन्दुओं ने अधिक से अधिक प्रभाव हिंगा लिया था। वादशाहने अपने राज्य में गांवध विलक्षल रोक दिया,यद्यपि इसपर ऐसा भी मालुम होता है कि जो जाजीरी कर फि-रोज शाह तुगलक ने रोका था उसके शासनकाल के पश्चात् उसने यह फिर से जारी करा दिया। व्यों कि इसका इतिहास की पुस्तकों में पता है। फिर अकवरशाह ने यह सुनकर कानून से दबा दिया, क्योंकि उसने गो घध कायदे से रोक दिया था (फिर यह कर कहाँ तक उचित समका जा सकता है) उसे सभवतः इसी बेकाम समक रोक दिया होगा।

एक अंग्रेज पथिक का प्रमाण

एक पधिक अंग्रेज़ जो समहवीं शताब्दि में हिन्दुस्तान में आया था लिखता है, हिन्दुस्तानी गाय को वड़ी सम्मान की दृष्टि से देकते हैं उस का वध एक वड़ा अन्याई पाए हैं जो एक मनुष्य-हत्यांके बरावर माना जाता है, इस से यह स्पष्ट हुआ कि मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं की मनो-गत भावनाएँ दवाने की खेष्टा न की प्रत्युत उन की धार्मिक बोग्यता कहां तक सम्मानित की बह प्रगाद है। हिन्दुओं के ऐसे सच्चे भाव जानने को एक साधारण प्रथककों भी किसी प्रकार तकलीफ न उठानी पड़ी। उस समय हिन्दू गांवध के विच्छ में उपदेश देने को न रोके जाने थे, जिस से यह भाव निकलता है कि शासनाधिकारी इन बातोंपर भएना प्रभुख न जमाता था।

बाबरशाह का अपने बेटे को उपदेश

जब मुगल बादशाहत हिन्दुहतान में स्थापित हुई और बाबरशाह सिंहासनपर घैटा तब उसे अपने अस्प राज्यशासन में कंवल हिन्दुओं के गृह मनोभावपें ही न जान जेनी पड़ी बल्कि उसे एक खास गुन घशीयतनामा अपने बेटे हुमायूं को लिखना पड़ा। उसम इसने हिन्दू धार्मिकताका भी अच्छी तरह दिखाया और गोवभ रोकने की भाषा ही। यह असल एवं रियासत भोपाल के पुस्तका लय में अभी तक खुरक्षित विद्यमान है जिसका उपयोगी (Photo) आलोक चित्र प्रतिबन्ध मुक्ते नवाब करनल हमीदउल्ला खां साहिब के पास से मिला है। जिस का अनुवाद यहां दिया जाता है।

ये मेरे बेटे,हिन्दुस्तान में अनेको धर्मावलम्बी रहते हैं। यह उस महाराज-शकिशाली ईश्वर की दया है कि उसने इस देश की जिम्मेदारी तेरे हाथ में दी. वह इस लिये तुम्हें योग्य है कि,

- (१) कभी भगने धार्तिक भांगडे में सिर उँचाः उठाने की कोशिश न होने देना । पश्चपातरहित व्याय करना, धार्मिक भावीं को समक जाति विभाग प्रजाका मजहबी रिवाजीं का क्याल करने शासन करनाः।
- (२) कास तौर पर गोवक न करना क्यों कि इसी के तुम हिंदु प्रजाके हक्पमृग्धी कन जावोगे। इस मार्ग से तुम इस पृथ्धी की प्रजा को हत-इस के गंधन से बांध लोगे।
- (१) किसी जाति विभाग के पृत्य स्थानों को बरबाद न करना। तथा न्यापिय रहना। इसलिये कि राजा और प्रजा के बीच हार्दिक संबंध सुदृद हो, सम्पूर्ण पृथ्वी पर संतोष और शांतता फैले।
- (४) इस्लाम अर्मका फैलाव अस्याचारी तलवार की अपेक्षा भेम की तलवार और इतक्रता से आई गुना अच्छा है।
- (५) सदा सिया और सुन्नियों की परस्पर की फूटफाट भुलाते रहना, नहीं तो वे इस्लामी धर्म को दुर्ब ल बनाने को प्रस्तुत हो जांगो।
- (६) प्रज्ञा की अनेको मुख्यताएँ इस प्रकार मनना जैसे वर्ष की ऋतुरें। इस कारण राजनैतिक स्थूल शरीर सभी प्रकार के रोगों से दूर रहे।

पीछं के बादशाह

बायर इस देश का निवासी न था, पर बह इस देश का विजयी होकर आया था। और उस की यह इच्छा थी कि मेरा शासन हिन्दुओं में उन्नतिशील और परस्पर सम्मिक्तिय प्रेमका पूर्या सनीय हो। जब कि एक परदेशवाला विजयीमुस्त्यमान हिन्दुओं के भानों की इस प्कार ख़बर
दारी-चौकसी से, खासकर गोवध के विषय में
दिन्दुओं के साथ खंब ध. कायम रखना चाइतमहै
तो यह फठिन न होगा कि जो यहाँ के रहने वाले
दैं तथा जिन्होंने यहां अपना निवास स्थान बनार
लिया है. जा यहाँ ऐंदा हो उन्नतिशील. हुए, जिन
की नसों में हिन्दूपन का रक बहा उन्हीं पीछे के
मुस्त्यमान वादशाहों ने कितना गहरा (विचार
हिन्दुओं के धार्मिक योग्यता में किया होगा।

अकवर शाह

आकत्तवरशाहः ने ते। एकद्म गोवर्ग बंद करने के लिये अपने सारे राज्य में आज्ञा दी थी.।

भारते-अकवरी और दूसरी पुस्तकों में इस बात का पूरा प्रमाणहै यह आजा उसके उत्तराधिकारीने रह न की पर बराबर पाली गई। यद्यपि यह हो सकता था कि पीछे के बादशाह ने इसको कठीरता से काम में न लाया। जहांगीरने उस आजा को शिथिल न किया पर इससे कहु चहु कर रिविश्वर, जिस दिन अकबर पैदा हुआ था, गुरुवार, जिस दिन वह स्वयं सिहासना कह हुआ काई बीख बाहे वह किसी किस्मका हो न मारा जाय और उन दिनों में शिकार भी न खेलो जाय-इस तहह का नियम पाला।

्रभन्तिम--उपसंहार

उपरोक्त विवरण से प्रकट है कि मुसलमान बादगाहीने इस तरह इस देशकें गोपव राकनेका प्रयत्न किया था। उस समयके इतिहासको पढ़ी सप भाषको यह जान केना मुश्किल नहीं कि ये हिन्दू धर्म

पर कितने विचारशील और वात्सत्य भावी की रखते थे। बहुत से हिंदुओं की यह तकरीर है कि मुखळमीन बादशाहीं ने तो हम पर अत्याचार किया । पर पत्तपात रहित द्रव्टि से अगर वे इतिहास को देखते तो उन्हें विश्वास हो जायगा कि यह स्थिति-दशा यह न थी । केवल गोबध के विषय में ही नहीं पर मुसलमान बादशाह हिन्दुओं के साव दुख में तथा महो-न्सर्वो में भाग लेते थे। दिवाली में पूजादार दर-बार होता था और ब्राह्मण शाही बागों में गौर्चे छाते थे और बादशाहकी ओरसे इनाम--उपहार छते थे। दशहरा उत्सद भी मनाया जाता था। शिक्ति में शाही महलों में योगी बुलाये जाने थे और उन्हें भोजन दिया जाता था। श्रावणीर्वे बाद-शाह स्वयं कलाई--हाथमें राम्बी बंधवाते थे। मुस-लमान बादशाह आमतीर पर हिंदु साधुओं से मिलते थे और मिश्राचारीके साथ सम्मानसं बोलते थे सरधामलरो जो कि प्रथम जेम्सकी तरफसे जहांगीर के दरबार में एलची चनकर आयाधा. लिखता है कि जहांगीर वादशाह हिम्द साधुओं से शरेकों बार मिलाकरना था और एक बार तो उसने स्वय एक योगीको फटे कपडौँव राँताके पास आम-तौरपर बैठा हुआ देखा। बादशाह बड़ी मिन्नतसे उसे पिताकह सम्बोधित करता था। इसतरह मूस छमानी ज्ञानने में हिन्दुओं और मुसलमानी का परस्प प्रोम प्रगट है।

नोट-इम 'बम्बई जीवद्याप्रचारवामंदल' के छा-

भारी हैं, जिसने हल खेळ हम की प्रकाशनार्थ भेका है । इत जेख से हिन्द-म्ललमानों को शिक्षा खेना चाहिये. जो इस समय एक इनरे के प्रति अविष्णाद रख रहे हैं। वस्तृतः दोनों जातियों की मलाई परस्पर प्रीतिपर्वक रहने में ही है क्यांकि पड़ो सियाँ से वैर रखकर कोई भी सुखी नहीं रह सत्ता है। कल परस्रों ही मुनक्तवानी का बहात्यीहार मकराईद तमान हिन्द्रस्तान में मनाया काश्मा । इस में श्रापती विश्वास और पेम के जिहाज से मुनलमानी की गज कशी आहि कोई कार्य ऐसा महीं करना ही खाज भी है आससे धनके पड़ोसी हिन्द्श्री का दिख द्सी। धनके मान्यप्रेय कुरानशरीकमें स्वयं पशुविवदान को बरा कहा है। निर्जा अन्दुलकृती ने तसी भागत का अनुवाद इस मकार faut ?:- "By no means will their meat reach to God nor their blood but the puty from you alone will reach to Him; thus has He pressed them into service for you, that ye magnifty God for that He has guided you, and give glad tilings to those who do good". (Korrn tr. pt. II p.895, Surat. LVIII.) इस दशा में उन्हें अपने मान्य बंध करे मान है अपने पही-सियों का दिन किसी इश्लव में नहीं दुव्याना चाहिए। िन्द भाइयों को भी शांति धौर सचाई के साथ व्यवहार करना भावश्यक है। भावना है यह रूद सानस्य सर्वत्र पूर्ण है।

-- 30 He



जैनियों का शिचा प्रचार।

आज बीस से कहीं अधिक वर्ष होने आए कि जैतियों में शिक्षा प्रचार के प्रयत्न होते चले आ रहे हैं, परन्त दुःल का खिपय है कि अभी तक उत्ता प्रचार नहीं हो पाया है जिल्ला कि होना चाहिये। सारे भारतवर्ष में मुश्किल से पांच हाई इक्रल हैंगि, फठिनता से एक दर्जन बोर्डिङ्ग हाउ-संत हैंगि और कालिज का तो नामनिशान ही न हो ! इस्त में शायद कमो को कारण यह हो कि सतात के अधिकांश महादयी की द्रष्टि धार्निक विद्या प्रचार की ओर रही है! परन्त इस ओर भी इद्ध अधिक स्राप्तलता नहीं मिली है। अब भी पाउशालाओं के लिये योग्य अध्यापक नहीं मिलते और धरधर विद्वानों की तो बात ही न्यारी है। तिस पर खुबी यह है कि सारे समाज में आजतक इन घार्मिक विद्यालयों का प्रचार नहीं हो पायो है। योग्य घराने के छहके इन में शिक्षा गृहण करने आते हा नहां! आने हैं ता साध रण स्थित के युवक जिनका उद्देश्य धार्मिक न हाकर अपनी आजीविका पूर्ति की आंर है । इससे इन विद्या-सर्यों सं उद्देश्य पूर्ति होतो हा नहीं और सप्ताज में समुचित रीति से शिहा प्रचार होता ही नहीं। गताड़ी में हम इसकी बास्तविक पूर्ति के लिये

उयाय बतला चुके हैं। आवश्यक है कि जो विद्यार्थी समाज के आभय से विद्याध्ययन करें उन से अवश्य ही कुछ वर्ष भानरेरी कार्य शिक्षा प्रसार का कार्य लिया जाय। और विद्यालयों में आवश्यक सुधार कर दिये जांय जिससे समया-जुसार उनके द्वारा धार्मिक और शौकिक विधा का प्रचार हो सके। इसका समुचित प्रवन्ध एक "जैन विश्वविद्यालय" की स्थापना से हो सका है, जिसके आधीन सब विद्यालय रहें और उनका शिक्षा कम भा वही नियत करें। साथ ही यह विद्यालय मिशन स्कूलों की भांति प्रत्येक जाति के बालकों के लिये खुले रहना खाहिये । स्थानीय अजैन प्रभावशाली व्यक्तियों का हृदय विद्यालय की ओर रंजायमान करने के लिये उतको भी अपनी समिति में समितिलत करना चाहिये। इस ही नीति पर कार्य करके शिवपुरी के बीर तत्व मंडल ने दो वर्ष में ही बह उन्नति और प्रस्थाति प्राप्त की है जो मारंगा के सिद्धान्त विद्यालय ने अब तक प्राप्त नहीं कर पाई है। राज्य के उच्च-पदाधिकारी उसकी समिति में हैं और आज इस संस्था के प्रति वालियर राज्य की सहानुभृति अधिक है। इतना ही नहीं ,प्रत्युत यहां के विवान अध्यापकें के प्रयत्न से इस संस्था के दर्शन

विदेशों के विद्वान् डा॰ स्टीन कोनों सदृश करने माते रहते हैं और जैनधर्म के विषय में झान प्राप्त करते हैं। श्रेताम्बर भाइयों की इस कार्यपराय-जता से इमको शिक्षा छेना चाहिये और समुचित रीति में एक व्यवस्थित दंग से शिका वणासी में संशोधन करके मिशनरी होंग से समाज में धार्मिक और लौकिक विद्या का प्रवार करने में अगुसर होना चाहिये। इन्हीं कमताइयी के कारण इम लोग आजपर्यन्त शिक्षा पचार में सफल नहीं हो सके हैं। तब दूसरी ओर आर्थ-समाजी इस ही समय में हम से बाजी मार हे गए 🖁 । काहीर की मार्यसभाकी रिपोर्ट से बात होता है कि भारत में उनके प्रदे तो कालित हैं, ६० हाई स्कूल हैं और ३७५ साधारण संस्थायें हैं। भारत में ही नहीं, पत्युक्त भारत के बाहर भी उनकी अनेक संस्थाय हैं! जीनियों को जो अपने को बड़े गर्ध की दृष्टि से देखते हैं और दावा रखते हैं कि आधी से अधिक मारतीय-व्यापरिक-सम्पत्ति उन के दाय में है। अपनी शोचनीय शिक्षा प्रचार दशा पर कान्जित होना चाहिये । घर्म के पति यदि बास्तविक अभिमान है और उसकी प्रभावना इस्ट है तो शीव ही संगठन करके एक विश्वविद्या-स्व की स्थापना कीजिए और उसके कारा धार्मिक तथा लोकिक उच्चकोडि की शिक्षा का प्रबन्ध सब के लिए की जिए। ग्राम २ और नगर २ में शिक्षा-संस्थायें स्थापित कराइये । यह मत अयाल कीजिए कि आधुनिक हंग पर उनकी नियोजना करने से तथा अमेजी, शिल्प आदि विद्यार्थी का प्रवस्थ करने से पुष्य की प्राप्ति नहीं होगी धर्म का प्रकार नहीं होगा । आज आधुनिक

रीति पर धार्मिक शिक्षा का प्रयन्ध न होने से हजारी युवक धर्महान से अज्ञानकार रह कर अपनी आत्माओं का कल्याण नहीं कर सके हैं। बाज़ दफ्ते तो उनका अखान उस ओर से शिथिल हो जाता है। इस शिथिलता को दूर इस ही प्रकार किया जा सक्ता है और धर्म का उद्योत सबै साधारण में किया जा सका है। क्या यह आपको ममोष्ट नहीं है ? क्या अंगुजो आदि लोकिक विद्या के पहने बालों को जो सस्क्रनजों से संबंधा में अधिक हैं- आप धर्माधन नहीं बनाना चाहते ? यदि बनाना चाहते हो तो भाष्त्रिक हेग पर भागिक और लीकिक विद्या देने का प्रवन्ध की जिए। कोरी बार्त बनाने में कुछ भी लाभ नहीं है। इदय कलुपता की पूर्ति उससे अवश्य हो सकी है। अगुजाँ की शिक्षाप्रणाली की नकल करने की आवश्यका नहीं,आवश्यका है संस्थाओं को समयानुसार भावर्श कप बनाने की. जैसे गुजरात राष्ट्रीय महाविद्यालय है।

२ एक जर्मन अहिंसा-प्रेमी १

'करेन्टथांट' नाभक म'ग्रेजी पत्रमें मि० एम्ब्रूज् एक जर्मन अहिंसा प्रोमी मि० आलवर्ट श्वेटंजर (Sebweityer) के विषयमें लिखते हुवे एक घटना का निस्न प्रकार उठ्लेख करतेहैं:--

"प्रातः समय जय हम दोनों स्टेशन को जाने स्रगे तब मैंने उनके अहिंसा पालन के संशंधमें एक साक्षात् घटना देखी। हम दोनों एक छड़ीमें स्ट-कार्ये उनका पुलन्दा लिये जारहे थे जो तनिक भारी था। हम दोनों छड़ी का एक २ सिरा पकड़े हुये थे। कुद्देके गिरने के कारण रास्ता जरा किल्ल छने जैसा हो गया था। अकहमात् उन्होंने अपने आप को संभालते हुये अल्दी ही एक अगंदाई की, जिसकी वजह से छड़ी भी मुद्र गई और में करीव २ गिर ही पड़ा इसपर उन्होंने बिनम्न हो क्षमा याचना की और जमीनपर से एक की दे को उठा-लिया, जो ठड़ के मारे अधानरा हो रहा था और उसे एक भाड़ी के निकट बड़ी होशियारी से रख दिया। उन्होंने बड़े ही कहण स्वरमें फिर मुफसे कड़ा कि वहां यह मुद्र खुरिशन रहेगा। यहां रास्ते में तो यह मरही जाता? इस कार्य के सीन्दर्य का वर्णन करना बचन अगोचर है, परम्तु यह मेरी स्मृति में प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रति इयाभाष रखने के उद्देश्य में अरल रहेगा।"

जैनियों को यहां पर तरस लाना चाहिये और अपने दैनिक जीवन की ओर दिन्यात करना चाहिये, जिसमें अनेक अनर्थ अनायास ही किये जाते हैं। शायद इमारे उन महानुभावों के लिये अहिसा धम के प्राहृतिक प्रचार के यह समाचार असहा हों जो चिद्शों म उसका पहुंचना अधम कर्म समकते हैं।

~ 30 He

श्री केशरिया जी के मंदिर जी सबन्धी शिलालेखों की नकल

१. श्री मन्दिरजी में प्रवेश करते ही सीमनी वाज शिलालेख की नकलः-

"गयत लोका आ प्याप्त प्राप्त को बोपाल्य धित कंच रामो स्थामाध्यत् आदिनाध्य प्रणमामि नित्य विक्रमादित्य सम्बत् १५७२ वर्षे बेदााव सुटी ५ बारसोमे भट्टारक श्री जशकीर्त राज श्री कला भार्या सौनवाई विजयी राज इर्दा धूलेव प्राप्त भति श्री ऋषभनाथ पृणम्य फाइया कोईयाभार्या भरमी तस्य पुत्रे दि सा भार्या हिसदेवी तस्य पुत्र कान्हा देव रारगोड भातपन दास भार्या लाखी भातशाद भार्या बीचि सत् नाथा जरपाल श्री फाष्टासंघे बाजा न्यात काष्ट्रययोध राकडिया हि सा महप

नय चूकीय छँ तजो बड़ पूर्तला सहतरं किसी ट. ठ ई ठे ई कथ्य श्री ऋपभदेव की छँ. न. छँ...... प्रणस्य श्री नाभिगज बीर च पात्रा चजोतिर्दे...... श्री काष्ठासंघे..... प्रतिष्ठितं ये ."

 २. नकुळ जिन सन्दिर जी में डाबी वाजू की तरफ शिला छेख की:—

"लोका श्री स्वस्ति श्री कंचना एक ""मोक्ष मागुतमादिनाथं प्रणमामि विक्मादित्य सम्वत् १४३१ वर्षे वैशास सुदी अक्षय तिथी बुधदिने गुरु वाः, याणिस्य परि समेवर लोकाति खण्डवाला पगना राज ॐ विजयराज पालयति सनि उदय- ं '''''''काष्ट्रासंघे श्री विमल नाथ विश्वकाः जिन प्रतिष्टितं ं'

३. गहने की ओर (कमरा) की तक्तर चड़ा मंदिर में प्रवेश करते डाबी बाजू के शिला लेख की नकलः—

"स्वस्ति भी सम्वत् १७५६ वर्षे शाके १६५६ पवर्षमाने सर्वजीत नाम सघ सर्व मासासम मासे कृष्ण पक्षे १३ तिथी शुक्त वासरे थी द्वारत। संग्रे बाइ बागइ कव्छे लोहाचार्यान्वयं तद्यु-क्रमेण भगग्रक श्रीप्रताप कीर्ति चार्याये श्रीकाष्टा सघे नही तर गच्छे विद्यागणे भटदारक श्री रामसेना रागसेन न्वये तदनुक्रमेण सहारक श्री थीभूण तत्पहे महारक थी चन्द्रकार्ति तत्पहे भरदारक श्री इन्द्रभूषण तत्पट्टे कमल मधुरा-मान भर्दारक श्रीसुन्द्र कार्ति विराजमाने पुतिष्ठितं वधेरवाल इति गोबाल गोत्र संघर्वाश्री अल्हाभार्या कुलाई तयी पुत्र भोत सा भार्या अम्बाई सिंघबोभी मीमा डिये भार्या पद्मादे ने बोजी हर्वाई देखी तयो संघपति बापू भार्या जग बाई द्वितीय पुत्र विदून पतलादे तनगच्छे बापूजी परिचार सहपति भाजे द्वितीये जंगावरुजी तराकथ्ये संघ की भोज भार्या पहादेवो यो पुत्र चः गरि प्यम भीमासा भावां तंगा ितीय पुत्र चन्द्र सार्या

गुमाई तृतीय पुत्र अर्जुन भाषा शकाई तयो तयोपुत्र संघवी तत्वासं भाषां हितीय प्रथम मक्देवी जो गोबादेवी तीजी देग पत्तव त्रवं प्रव सिंघवी बाई हितीय पुत्र संघवी भीमा भाषां क्रियेय पृथम मलाई पुत्र सात साहे तीभभार्या देवसुमारी समस्त कुटुम्ब कर्ग संयुक्त थी ऋषमदेव श्रीशा सादवी पृषिता पृतिष्ठा महोत्मवं कृत श्री ऋषभ देवस्य नित्य पृणमित श्री रम्त शुभं भृषात् श्री' " "" "शी धर्म पृथमवंत शिष्य लिखित वाली कह्याण।"

४—माना मक्देवो जी व नाभिराजा का हस्ती भगवान के सन्मुख है, बगलमें दो पाटकाके शिला लेखो की नकल है (डाबौतरकी की:-)

'स्तिस्ति शी संवत् १०३२ शाके १६०७ प्रनर्त-माने शुभकारक कल्याणयासे कृष्णपक्षे ३ तृतीया शुभस्थ निधि शुक्रवासरं श्री खड्मदेशे पूलवेग्रामे श्रीम्हपमेरे र व्येतालये श्रीमृलसंग्रेसरस्वती गच्छे यलात्कार गणे श्री कुन्द कुन्दाचार्याम्नाय भट्टाक श्री सकलकीर्ति तत्पार्टे मुन्मकौर्ति तद्युक्रमणे भटाटरक श्री श्रीमकीर्ति तत्पद्टे भट्टारक श्रीमरे-न्द्र कीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्रीमरे-न्द्र कीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री श्रीर०० श्री चन्द्र कीर्ति प्रतिष्ठिते या हम भी शिष्यणीवाई जी श्री सज्याई के सनुल विश्वति जिन पादुका स्थापिते। शुनं।"

नोट-हूलरी पायुका का लेख भी व्यर्गुक्त ही है।

प-भन्दारक जी महाराज के बैठने की गायी

पीछे बावन जिनालयमें के शिलालेख की नकलःसम्बत् १७५५ वर्षे पीपमासे कृष्णपक्षे पंठ

सम्पा सुध श्री क्षाइन् संग्ले नंदीतर गरुछे विद्याः

गण भर्टारक श्रीरामसेनान्वयेत्तद्कुम्णे भर्टारक श्रीराजकीर्त तरपट्टे भर्टारक श्री लक्ष्मीसेन तरपट्टे भर्टारक श्री लक्ष्मीसेन तरपट्टे भर्टारक श्री हन्द्रभ्यण तरपट्टे भर्टारक श्री हन्द्रभ्यण तरपट्टे भर्टारक श्रीसुंग्द्रकीर्यु पदेशान्व दस्साहुमइ शालीय वृद्ध शालायां विश्वश्वर गोत्रे सहा अल्हावंश सटेम्यन भाषां रिल्यादेवी तयां सुन सेठ कानजी भाषां कसनवार्ध दिनाय भाषां हम्बार्ध सुनसेठ सवलास्ड भाषां सदीवार्ध दिनाय मार्था एयानयह इत्यर्ध स्वर्यराग सहसंघनी पाहर यन लखु शासादका स्वर्यता शुम् भयनु-भानेत सेठ जीवा सुज अस करण थी मेराइम वा"-

६-आजड़ी में मिन्सिओं के चारों नरफ कोट के शिलालेख की नकल (जो कि कोट के अन्दर इत्तर की तरफ है):-

श्री आर्तिश्वर जे जा पारी छे:सकल जिनेश्वर पदनिमः
प्रणाद सरस्पर्तामाय ।
श्रीगुरु नापदनुस्तरि,
कर्छ बुद्धि उपाय ॥१॥
श्री आदि निनेश मान्दिदिश,
दिषे दुर्ग उतंग ।
सन्द्र कीर्ति सूरि य तिह,
किश्वी मनु तन रंग ॥२॥
देडारग देश मेगाड् मे,
उद्यापुर सुजान ।
राज करे तिह राजयी,
भामसिंह राजान् ॥३॥
हिन्दुपति बादशाह भली,

गुण गम्भीर साव समो,

कल्पतक समशाख ॥४॥ सम्बत् १८६३ में, थवाड सुदी ३ तीज । गुरुवारे महत⁸ज फस्रो, भली तरं पुजा कींघ ॥४॥ मुलसंघ गच्छ सरस्वती, बलाकारगण भर युडी। कुन्द कुन्द सरेवर भली, कलार कीर्ति गच्छ ॥६॥ ते पाउँ गुरु शंभवो, भुवन कार्ति नमु पाय । बानभूषण ते पारे प्रगर, विजयकीति सूरि द्वशाआ शभ चन्द्र सुरिवर सदा, मुमति कीर्ति गुण कीर्ति शुह । गुपाति लुबादि भूषण तस पाट, रामकीति पाट शोसता ॥८॥ राच्या धर्म न ठाठ. षद्मनंदि पारे सुजसा। देवेन्द्र की ति गुणधार. क्षमें कीर्ति पर उज्वलो ।।६॥ नोन्द्रकीर्ति मनुहार, विजयकीति पट्टे ग्रुक्त। मेभिचन्द्र भवतार, चन्द्रकीर्ति चन्द्र समी॥१०॥ रामकीति सुलकार, धशः कीर्ति दुरावर सिंह। उदयो पुरव भंदूर, करि प्रतिष्ठा तुगंतणी अर्रश

जस ब्याप्या मापूर,

मपाठः ---

बागइदेश सुहायनी । सागलपुर वर प्राम, संघपति साहर लिया ॥१२॥ मणि सुन्दर सुनो नाम, गांधी धननी कजनी। किसनजी सुतजान, कमलेश्वर गोत्रजतस्यं ॥१३॥ यंश बधारनवान, भार्या भानंद कुवर जे। सुतमाणक चंद्र जे, भार्या कानबाई निमंली ॥१४॥ माण देवी जी तहे, हे सुत बिजयचन्द्र जानिये । पुष्यवंत गुण बन्त, धाळमदेशी भाषां भली ॥१५॥ शीलवन्ती सुसन्त । स्त नवल चत्र जनमियो, पुत्री हसी जान, पुण्यवंत प्रताप घणौ ॥१६॥ गुज कलानिधान, **ब**न्द्रकीर्ति उज्यला। करयो दुर्ग उतक, बशः कीति गुरु निर्मली ॥१७॥ करि प्रतिष्ठा सनरंग. गांधी वजे चंद ヂ वली। ग्र आशा प्रतिपाळ, यश कियो अति उज्वली । जश कीर्ति तण प्रताप ॥१८॥ वायनजिनराज के रचणार्थिन्द के लेख को "सट्टारक जी श्री नयरत्न जो सूरीश्वर जी बाहन जी धर्मबद्रजी पडितजी किफानजी पंडित मोतीखंद्र जी रावत् जी जोधसिंह जी मंडारी कुवर | कि हुमड़बातीब बुद्ध शासायां बजे खन्द्रजी सुत-नवल खद्रजी चिरजीवि जाति भारग बन्द्रेण लिखि कर्त धूलये नगरे थी रम्तु कल्याणमस्तु शुभंभयतु साणेबी उणातपी दौलनरामजी भट्ट उमाशंकरजी।" — सक्देवी जी के पालखेमें लेलकी नकलः— सम्बत् १९११वर्षे वैशालसुदी ३ सोमे श्री मृत्त शुंचे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे शीद्धः" — सक्देवी के उत्तर की तरफ धावन जिन

६—मरुदेवी के उत्तर की तग्फ थ।वन जिन याजीं, के लेल:—

> अ—"सम्बत् १७४६ वर्षे काल्गुन सुदी ५ सोमे श्री मृत्तसंघे श्री सरस्वती गच्छे बलात्कारगण थी क्रुन्दकुन्दाचार्यान्व-येच्छे भट्टारक श्री सकलकीर्ता सुलादि भट्टारक श्री पद्मनन्दा तत्पद्दे भट्टारक श्रीदेवेन्द्र कीर्तिसुनादि भट्दा-रक श्री दाम कीर्ति।"

बा-लेख नं० 'ब' के अनुसार ही है।

इ "सम्बत् १७६५ वर्ष माघमासे कृष्ण् पत्ते ५ मी तिथि सामेवासरे सट्टारक श्री विजयरत्न मंणलेश्वर तपागच्छे सुश्रायक पुण्य प्रभाविक श्री देवगृढ भक्ति कारका कष्टिशासायां महता-गोत्रो महता जी श्री रामचन्द्र भी तस्य-भावां बाई सूर्यदेवीजी तस्यात्मज महता श्री सीभागचन्द्र जी महता जी श्री सातु जी भाई महता जी हर जी श्री पाश्वंनायर्थ (जन विश्वस्थापितत।" ई-- 'सम्बत् १७६=''''''''' क-''सम्बत् १७३४ वर्षे माघ माखे श्रुक्त पक्षे भृगुवासरे भ्री मूल काष्ठासंघे भट्टारक श्री रामसेनाम्बये तहास्नाके श्री भट्टाकर श्री किस्ब भूषण सट्टारकः यशः कीर्ति भट्टारक भी भुवन कीर्स म-"सम्बत् १७६५ ज्येष्ठ सुदी ५..... ग-"सम्वत् १७७३ फाव्यान सुदी २ बीज धुलेवमाने काष्ठासंघे बादच गादी भर्-टारक श्रीरामसेन कोति"।" घ-"सम्बत् १५६० वप वैशाखः धृहेत्र-प्रामे क्षांदरासंघे नादमगानी भट्टारक श्री रामसेन कीति च-"सम्यत १७६५ वर्षे पैशाव सुदी ५ रविषार काष्ट्रासंघे नावस मच्छ भट्टा-रक भी रामसेन कौतिं छ—"संबत् १७३५ वर्षे माघ शुक्लपन्नी तिथौपष्टी भृगुवासरे श्री मृतसंघे मदी तरगच्छं विद्यागणे भर्टारक श्री रामसेन व गोपालसेन अर्टारक भी विष्णुभूषण मट्टारक ओ रत्नकोंक्षि श्री श्री की भुवन कीर्ति तस्य भट्टारक श्री मध्छरी भीमः संग ॐ्थी शीयाटसेन श्री ऋषसजिन-यम्य प्रतिष्टितं..... ज- "संबन् १७३४ वर्षे माधसूदी प्रश्कबार

धी मूलसधे नन्दो तरगच्छे विद्यागणे

सट्दारक श्री रामसेनः.....।"

१०-पूरज कुण्ड का सेखा-

'जो के गाम रिलबदेव में मन्दिर श्री ऋपभ माथ जो महाराज का के बहुत पुण्यात्मा आये और पूजा की सनदें हिन्दु लोगे। की जाहर और कोहर है और बहुत सं छोग गुलरात वरौरह हर करफ के बास्ते जात्रा श्री रिव्यवद्ध जी को भाने हैं। और अक्षर आमन्दर पूज साहवान बहादूर मा शहगीर मुसाफिरां हर कौम की व सवाम् व० स० कैंबर जाने गाम मजकूर होकर जारी रहे तिहे बस के उस जगे कुण्ड पर हेरा साहियान बहाबुर का थड़ा होता है सो नावाक कियत के सबब से बाजे लोग कुण्ड मजक्र से मछली पकड़में का इराहा कर पकड़ते हैं सो वह बात हिन्दू छोगें। के नजदीक युरी दीखती है प्यम तो ग्रेवाड भर में मोर भाकवृतर मारने की साफ मनाई है व सुशासन पेसी तीर्थ की अग्रह में तो पकड़ना महाली का लो कुँड से वा मास्ने मोर कवृतर का सब को अक्ट लिहाज रखना चाहिये। इस घास्ते सब को सबर दी जाती है कि जो कोई काम मजकुरमें कुंड ऊपर डेरा करे तो मारे फबूनर तथा दूसरा आनवर गिरवन का वा नाम मजकूर के न मारे और कुंड से मछली न से।

> ता॰ २२ मई १८४४ इस्बी उथेष्ठ छ॰ ११ सम्बत् १६१० (दस्तजत)

११—पगलिया जी का लेखः—

स्वित्त श्री सम्वत् १८३६ वर्षे शाके १७३८ पृष्कीमाने मासोत्तम मासे श्रुमकारि उपेष्ठ मासे शुक्लपसं चतुर्दशी तिथी गुरु बासरे घपुकेशर हो तिय यदाहि सार वासीका संग्र श्राम प्रपुष्प प्रभा-वाम् भी वेष गुरु भक्ति फारक श्री जिन भाजा पतिपाल का साह श्री शम्भुदोस तत्पुत्र सोखा एक कुलदीपक सेतुलाल अनम्सिवदास तत्पुत्र दौलतराम ऋषभदास क्षी उदेपुर वारास्तवरा श्री वादिनाथ पादुका कारापिन', अति हिनारीत पाग देख कुल भगद शिगेजणी भट्टारक श्री विजय किनेन्द्र सूरिभि: उपदेशात् शमोहन विजयन श्री कुलेकरे तमारि दलितं दशारगं सुभम्।

नोटा—उक्त शिलालेखों सं सर्वथा प्रमाणित है कि भी केशिरया जी का द्र ग, मिन्दर अ दि दिग-प्रवास्ताय के पुरुषा हारा निर्मित हुए थे। सर्व प्राचीन लेख सं० १९३१ और १५७२ के हैं और इनसे पुर्णता उक्त व्याख्यान प्रमाखित है। काष्टा संघ, भूल संघ, धर्मकीर्ति आदि नाम दिगम्बराखायके विविध मुनिवंशोंके ही हैं। ऐसी दशाम इस तीर्थ पर दिगम्बरी पुजादि धर्म कार्य करने का अधिकार न रखते ही यह किस्ती तरह भी न्यायसंगत नहीं है। संभवहै उक्त लेखों में मं० '-' और नं ११ के लेखों से वहाँ इवेताम्बरभाइयों का अस्तित्व प्रमा-िग्रत किया जाय क्यों कि सामान्यतः यह एयेनाम्बर शिखालेख से माल्म होते हैं। परन्यु नं० '३' सं० १७६५ का एक प्रतिमालेख है जिससे यह प्रगट महीं होता कि इस प्रतिमा से और धुलंब केशिरया

जी से कुछ संबन्ध है । संभव है कि नं०११ की अर्वाचीन संग्र=७३के रुक्तमें उद्गितिका खेताम्बर संघने उसे वहाँ स्थापित किया हो क्योंकि उसटी समय के अन्य प्रतिमा लेख वहां दिगम्बर अस्तित्व प्रमाणित कः ते हैं। तिस पर यह मूर्ति दिगम्बर प्नीत होती है। पेसीदशा में उसपर का लेख श्वे० आम्नाव का नहीं हो सकता और नं ११ का लेख तीर्थ पर स्वे० का अधिकार प्रमाणित नहीं करता और बह बहुत अर्बाचीत है । इस हेतु इस तीर्थ पर पूर्णनः दिगम्बरो का अधि-कार प्रमाणित होता है। और उन्हें प्रन्दिर जी पर ध्वजारोहण करना परमावश्यक न्याय सगत है। उदयपुर राज्य को पक्षपान रहित होकर दिशस्वरी के स्यायोचित स्वत्वों की रक्षा करना चाहिये। श्वेता। यर माईयों को भी कम से कम सचाई के छिए इस तीर्थ पर दिगंबरियां की कारगजारी में हम्तक्षेय नहीं करना चाहिये। उत्तम हो भारत के संपूर्ण मार्थी के सबंध से वे पंचवद कर म० गांधी की अध्यक्षता में भगड़ा तय कार्ल। भगवान् महा-बीर के भक्तों की आपस में लड़ना शोभता नहीं। श्वे० पसोस्थिन को ध्यान देना खाहिसे।

—ए० संव

परिपद् समाचार

इतिहास संशोधन—पंजाब के स्वृत्वों में पदाये जाने बाळे अंग्रेजी इतिहास High Roads of Indian History में से बद्द अंश सरकार ने निकस्तवा विधे हैं जो जैन मान्यता के पिरुद्ध हैं

प्रकाशक नवीन संस्करण में आउश्यक सुधार करने को रज़ामन्द है केवल विषय पुष्ट में प्रमाण मौग रहे हैं जिसको श्रीयुत् चम्पतराय सभापति परिषद्द शातमान हर् जैन सो साथटीको हारा भेज रहें हैं।

जैन कलारों में आन्दोलन

जैन कलारों (नागपुर) में प॰ प्रभाचन्त्र प्रचारक परिषद् जैनधर्म का प्रचार कर रहे हैं। श्रीयुन् चम्पतराय जी समापति परिषद् ने 'श्रमहम्मत संगम' न 'कर्म के पर्दे में से भांकी' हो पुरुतकों को जैन कलारों में बिना मूल्य वितरण करने के लिये मेजा है।

रिपोर्टदौरा पं० प्रेमचन्द्र प्रचारक परिषद्

रीठी—२० मई सं दूसरो जून तक रहा यहां श्रुतवक्त्वमी का उत्सव मनाया गया । शास्त्रों को सम्भाला गया व पूजन की गयो। स्थाल्यान मन्दिर जी में श्रुद्ध लादी के वेण्टनादि प्रयोग में लाने का दिया, यह प्रस्ताय सर्व सम्मति से पास हुआ।

उमरिया—(रीवा स्टेट) में ३ घर दि० क्रीनियों के हैं जन संख्या २५ है अयास्यान वेश्या-मृत्य अश्रतीलगाने, कन्याधिकृष बाल, वृद-विवाह बन्द करने का दिया। भारयोंने उक्त कुप्र-थार्य बन्द करने का तथा तीन भार्यों ने स्वा-ध्याय का बचन दिया।

सहहोत्—(गंघा रोट) ४-५ जून को रहा, दोशास्त्र सभा न एक जातीय सभा की । उपस्थित ४० थी स्याच्यान से २० भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा वेश्यानृत्य अञ्चलित गान की प्रथा बन्द की तथा मन्दिर जी में शुद्ध खादी के प्रयोग का बचन दिया । ७ घर दि० जैनियों के हैं।

बुद्वहार--(रीवा स्टेर) ६ जून को शास

सभा की तथा धैराग्य पर भाषण दिया। १५ भाइयों ने स्वाध्याय का तथा मन्दिर जी में घोती दुपटा शुद्ध बादी के रखने का तथा वेश्यानृत्य कम्याविकृय बन्द करने तथा स्वाध्याय का बसन दिया। गृहसंख्या ३५ तथा जन मंख्या दोसों है यहां का प्रचार बच्छा है और शास्त्रसभा होती है।

जिथारी—(रीवा स्टेंट) =- 8 जून को दी शास्त्रसभायें और एक जातीय सभा की । ११ भाईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया शास्त्र-सभा पुनः चालू कराई तथा भाइयों ने कन्या-विकृय आदि कुप्रधा बन्द करने तथा मन्दिर जी में शुद्ध खादी के बस्त्र का बचन दिया। जैन गृह १३ जन संख्या ई= है। ४।) रु॰ उपदेशक फंड की प्राप्त हुये।

गोरेला—(बिलासपुर) २ घर डोनिया के हैं मुखिया सिंघई मेधराज से मिला। उन्होंने मन्दिर में शुद्ध खादी के बरन्न काम में लाने तथा कन्या विक्य आदि कुप्रथाओं को बन्द करने का बचन दिया मन्दिर जीर्णावस्था में है। सिंघई जी दूसरा मन्दिर निर्माण कराना चोहते हैं।

पिएडरा रोड—(बिटासपुर) १० जून को २ शास्त्र सभा एक जाति सभा की । जनसम्बा ३५ है। भाइयों ने मिदर जी में शुन्न खादी प्रयोग में लाने तथा कन्या विक्य चालियाह आदि बन्द् करने का तथा चार भाइयों ने स्वाध्याय का एचन दिया। चौधरी बुद्धि लाल जी सज्जन धर्मध्री पुरुष हैं खादी प्रयोग में लाते हैं । उपदेशककंड को म) रु० सहायता प्राप्त हुई।

श्चकत्त्रा—(विलासपुर) १२ से १५ जून तक २ शास्त्र व एक जातीय सभा हुईं। साइयों ने कन्याविक्य बालिबाह आहि प्रधा बन्द कर ने तया म भाइयों ने स्थाप्याय का नियम लिया यहां शास्त्रों के सब येण्टन पहिले ही से खादी के हैं यहां एक महाबीर दि० जैन विद्यालय है २१ बाल बालिकाएँ हैं पठन पाठन सन्तोष जनक है प्रा) ६० उपदेशकफंड को सहायतार्थ प्राप्त हुए क्रम संख्या १०० है।

रिपोर्ट दौरा पं॰ भंवर खाल राजपूताना प्रान्त

श्चाष भदेन — मं ज्येष्ठबदी १३ को पहुंचा कीन गृहसंख्या १०० है ४ शास्त्र सभायें व एक क्याक्यान सभा हुई। व्याख्यान गृहस्थ धर्म पर

वीर के विषय में

प्रसिद्ध बद्धाली विद्वान मिन सिन्तान्रण सकः बर्ती कायतीर्थ बी॰प॰ लिखते हैं:--मै जैन समाज के विविध भाषाओं में प्रकट होने बाले पत्रों को हमेशा पढ़ता रहता हूं इसिछए कह सका हूं कि 'बीर' सामाजिक भगडों से बरी हैं और उसमें देसे उत्तम केख प्रगट होते हैं कि जिनको जैनधर्म के सब प्रकार के पाठी बड़ी दिलस्पी से पढ़ सक्ते 🖥 । इस पत्र से सुके 'जैन डितैर्वा' का स्मरण हो शाता है जो एक उपयोगी जैन पत्र था। तिस पर इसके गर 'महाबीर जयंती अक' में जो लेख प्रगट हुए है उनसे केवल जैनी ही लाभ उठाएँ यह बात नहीं प्रत्युत वे सब बिद्वान इससे लाभ उठा सके है जो प्राचीन भारतीय इतिहास और सम्यता के खोजी हैं।" इससे पहले 'नवांणाव ' के विषय में आपने लिखा था-"यदि इसी प्रकार उपयोगी कोजपूर्ण केस 'बीर' में नियमित इप से प्कट होते

हुआ। अच्छा प्रभाव पड़ा। ऋषमनाथ की प्रतिमां अत्यन्त मनोझ है। प्रबन्ध स्टेट की तरफ से एक कमेटी हारा होता है खड़ावे पर दिगम्बर श्वे० में मुक्दमंबाजी है। केशरिया जी के जैन विद्या-स्त्रय का निर्देशण किया अवस्था अच्छी नहीं मालूम होनी। यहाँ दो दि० साधु हैं परन्तु बे धास्तव में साधु नहीं है केवल वेशधारण किए हैं यहां की जनता उनको साधु नहीं समकती

इलियानपुर जेण्ड सुदी १ को आया यहाँ जन संख्या ५ है। सभा में केपल २० ही सज्जन आए। एक पाठगाला खोलने की व्यवस्था की ५) कु उपदेशक फंड को प्राप्त हुए हैं।

विद्वानों के मत।

रहे तो 'बोर' जैनपत्रों में सर्वोत्तम पूमाणित होगा, जैसे कि वह अब हो रहा है।"

मध्य पान्त के विद्वान् श्रीयुत् मनोहर बायू जी महाजन बी० ए० एल० एल० बी० सम्बादक 'बन्दे-जिनबरम् आणि राजहस' लिखते हैं:---

"मुक्ते यह कहने में हुए है कि 'वीर' के छेल उपयोगी और मनोरंजक हैं और प्रकाशक के सग-हुनीय उत्साह से बाह्याकृति भी चित्ताकर्षक हैं।"

''जैन महिलादर्श'' लिखता है—

"यहपत्र" जनता की अच्छी संवाकर रहा है। इसमें ऐतिहासिक हिंद से जैन धर्म का स्वक्ष दिखाया जाता है, जिसका पूभाव अजैन जनता पर अच्छा पहता है। इस मध्य पृथ्ठ के विशेषांक में उत्तम सेल और कविताओं का संगूष्ट किया गया है। जिन भी बड़े सुन्दर छपे है। सोगों को गृहक होना चहिये। बाठ मूठ २॥)।"



समाज

- विजनौर-मं ब्रह्मचारी शीनलप्रशाद जी पद्मारे थे। लाज्यतनलाल नी के प्रयत्न सं ब्रह्मचारी जी का प्रयत्निकता पर दे जून को दो घंटे तक हुआ— पांच सी छःसी शिक्षित अजैन उपस्थित थे। सिविलसर्जन मुस्सिप, और कितने ही बकील सम्मिलित थे-व्याच्यान का बहुत ही उत्तम प्रभाव जनता पर पड़ा।
- जीवद्या सभा आगरा के प्रयत्न से रंगिस में भैरों जी पर प्रतिवर्ष होने वाली वलिहिसा इसी जेड में दशहरासे सदाके किये वंद करा दी गई है।
- जीवद्या का हेपुरेशन—प्रतिविम्य महा-धीर स्थामी (अध्वैय्या) पेंटन हिंसा बंद करने तथा प्रनिविम्य को अपने अधिकार में छेने को १ हेपु-रेशन साहब कलकरर मैंनपुरी की सेवामें ४ जून को गया था । जिसमें जैनधर्मभूषण ब॰ सीतल प्रसाद जी बादि कई व्यक्ति सम्मिछित थे। साहय फलकर ने कहा कि यदि उन लोगों से मिलकर प्रतिविम्य हासिल करें और हत्या वन्द कर हे तो सरकार को कुछ आपित नहीं होगी या अवालत दीवामी से हक प्राप्त करें गो कलकररी श्रापकी फौरन प्रतिमा दिला हेगी

ब्रह्मचारी पं० बबुराम जी को साथ लेकर पेंडु-त गए थे और प्रतिचिम्य के सम्मुख बड़ी मिक से स्तोत्र पड़ा था । जैतियों से यह कहा कि प्रतिमा बहुत प्राचीन अखण्डित सर्वथा प्रत्नीय है अत्यक्ष आप लोग नित्य प्रक्षाल कर अर्च चढाया कीजिए, उन्होंने ऐसा करना मन्जूर कर लिया है।

- चात्रली (आगग) पेलक प्रवालाल की के प्रयत्न से अ. एस का मनोमालिन्य दुर हो गया तथा नयीन संदिर बनाने के लिये चन्दा एकत्रित हुआ और उसकी पूजा का उचित प्रशन्ध कर दिया गया।
- —श्रादर्श जैन माम का सप्ताहिक एव समाज से कुरीनि दूर करने तथा स्वतंत्र विचारी को प्रकाश करने के हेतु वार्षिक निकलनेवला है जैनियों को शहक यनना चाहिये प्रधा था॰ मू॰ ह
- —वास्तम (जयपुर) खार महिर हैं पूजा का प्रबन्ध ठीक नहींहै। साईयाँको ध्यान देना खाहिये।
- —देहनी। की जैन समंदन सभाव जैन मेवक संत्र भिन्न २ संस्था है और भिन्न ही कार्य कर्सा है।
- —-श्री देवगढ़ नी त्तेत्र की धर्मशाला, यहां पर ठइग्ने के लिए कोई धर्मशाला नहीं है और

न मीठे पानी का कुंआ ही है। यात्रीमण बिलकुल मैदान में ही ठहरते हैं। इसलिय हमारं जाखलीनयाले महानुभावों ने धर्मशाला का कार्य प्रारम्भ करित्या है, बहुतना काम तो उसका हो गया है अब कुछ काम धर्मशाला का बाकी रह गया है उसमें द्रग्य की अतीब आवश्यकता है। अत्यब स्य उदार चेता, धर्मात्मा भाइयों से अपील है कि आप लोग अपनी गाड़ी कमाई का धोड़ासा और इस कार्य में प्रदान कर दीजिए।

समाजसेवक—नाधूराम सिंघई विकासिकालम से तिस्त क्रिवित

—दिल्ली विश्वविद्यालय में निम्न छिलित जैनी नवयुवक बकालत (LL B Previous) में पास हुए हैं:—वाव् गम जैन, छुट्टन लाल जैन, दिलीप सिंह जैन, जिनेश्वर दास जैन सोती लाल जैन, और ऋषभदास जैन तथा (Final) में भीम-सेन जैन पाम हुए हैं, इन महाशयों ने अपने नाम के पीछ "जैन" शब्द का प्रयोग कर अपना जैन-स्व माव प्रकट बिया है। शेष छात्रों को शिक्षालेनी साहिए। प्रो० लक्ष्मीचन्द्र जैन, मन्त्री शिक्षाविमाग को इन नवयुवकों का ध्यान जैनधर्म की शिक्षा की ओर आकर्षित करना चाहिए, तथा दातामं को अगे जो की जैनधर्म की पुस्तकों स्वाम करना चाहिए।

-- डा० इमेन जैकी जैनदर्शन दिवाकर की ७५ जा वर्ष गांठ कर्मनी में आपके मिटीं ने गत ११ फरवरी की ७५ की वर्ष गाँठ मनाथी । आप वहां विश्वविद्यालय के रिटायर्ड भारतीय दशन के प्रोफेसर थे आपने हो अनुसंधान करके यह सिद्य किया था कि जैन धर्म स्वतंत्र धां है बौद्ध की शाला नहीं है । आपने यह भी सिद्ध किया है कि श्री पार्श्वनाथ व श्री महाबीर भग-वान वास्तव में वेतिहासिक पुरुष हुये हैं। आप को सन् १८१४ में जैनियों की ओर से 'जैनदर्शन' दिवाकर' का पद दिया गया था।

मीजा नगला सरुप जिला आगरा में पद्मावती परिषद् की कोशिय से १ स्थानीय जैन शाला कोली गई हे जिसमें जैन अर्जन सब को भ्राभिक ब व्यब-हारिक शिक्षा दी जाती है।

ग्रन्त्री

देश

---भारत के इत्त दास जी का परलोक गमन।

सर गया है वह जो जीता है अपने लिये। जीते हैं, वह जो कर गये औरों के लिये॥ हाय ! देखक्थ

भारत के लाइले पुत्र, गरीयों के रक्षक विध्याली के पालक, अत्याचारियों के शत्रु, क्यतंत्रा के पुतारी, कांग्रेस के नाविक, विसरजन दास आज भारत को विस्त्रता छोड़ प्रमधाम को प्राप्त हुए।

दास महोदय ससार की उन महान् आत्माओं में से थे जो अपने लियं नहीं जन्युतः संसार के लियं जन्म मरण के बन्धन में पड़ते हैं। ६ लाख रू० सालाना की वैणिट्या से आमरती होतें भी आप सदेव निर्धत वने रहते थे। बंगाल की प्रायः सब ही सार्यजनिक संस्थाओं को आप से परिपूर्ण सहायता मिलती थी। आपकी यहिन अन्नादासी ने परिलया में एक अनायालय स्वादित किया था, उसको आप दो हजार रूपया मासिक सहा-यता देते थे। निर्या के अनावालय, निर्यानम्ब आक्षम को दो हाल रुपया दान दिया । बहुाल के निर्धन विद्यार्थी और निराश्राया विध्वाओं के लिये आपका द्वार हर समय खुला रहता था । जहाँ आप कान्न के अहितीय विद्वान थे, साथ ही आप प्रतिमा संस्पन्न किन भीथे। बद्धसाहित्यं के विद्वाने का मत है, आप की कविता पूज्य रिन्द्रनाथ ठाकुर के उनकर की होती थीं। साहित्य सेवी और देशमर्कों की विद्वल धन से सर्वेव सहायता करते थे।

यं तो अलियुर बनके समयसे आण राजनैतिक मामसात में भाग लेते रहे परन्तु पञ्जाब के अत्या चारों के बाद अपनी बकालत तक छोड़ रात दिन (बतन्त्रता देनी की ही उपासना में मन रहते थे। जिसके फलस्वरूप सारकार में छः मास के लिए ाउ भेजा। जेल से आने के कुछ दिन पीछे स्वतः न्त्रता देवी के चरणों में अपना मकान तक वेचकर सर्म्य अर्पण कर दिया । इस समय किसी सम्ब निध के मकान में रहते थे तथा २५०, ६० मासिक में ही गुजर करते थे। जेल में स्वास्थ्य विगड जाने से जाक्टरीने बारम्बार विलायत आबद्दवा बर्लने के हिये जाने की सम्मति दो। परन्तु आजादी के मतबारे ने एक बार भी उस और कान तक न ्र दिया और नश्थर शरीर को बलिबेदी पर अर्पण कर ३३ करोड़ भारतवासियों का बिलबता छोड़ १६ जुन को स्वर्ग सिधार गये।

भारत के भाष्य में तो रोना ही बदा है पर राजनैतिक विचार चिभिन्नता रखते भी शक्षु भिन्न यहां तक की युरोपियन तक आपके लिये रो रहे हैं। बार साक अंग्रेज हिन्दुस्तानी पारसी आदि कभी के साथ थे। सभा श्रोर से पसंशा श्रीर सहानुभृत

देशबंधुरास की असामियक मृत्यु पर, महाला गान्धी, ला॰ लाजपतराय, प॰ मोतोलाल नहरू, प॰ मालवीय, मौ॰ मुर्म्मरअली, बीयुत जिना, बिन्तामणि आदि देश के प्रत्येक दल के नेताओं ने स्था लार्ड विकेनहेड भारत सचित्र, लार्ड रीडिङ्ग वायसराय, पर्वत्र आदि वृटिश उच्च कर्मचीरियों ने शोक तथा देशवन्धुरास की योग्यता, देशभिक्त दान की प्रशंसा की है। वृटिश साम्यवाद दल तथा हातन्त्र मजदूर एल युरोपियन असोसियेशन, डेल्स हेरस्ड, लग्डन टाइम्स, स्टेटमैन बादि बिहेशी संस्थाओं और पत्रों ने शोक और सहातुमृति प्रकड़ की है। भारत का तो बच्चा २ इस दुःस की भूल ही नहीं सकता। उनकी आत्मा शान्ति को प्राप्त हो, हमारी यही हार्रिक अभिलाना है।

-देशपन्धुस्मारक कोष महात्मा गांधी औ देशयम्बुदास की यादगारीमें १० लाख का स्मारक कोष करना चाहते हैं जिसमें तीन लाख के वायदे हो चुके हैं और अप सहस्त्र के लग भग वस्त्र भी हो चुका है।

- अद्। लागों की मानहानि विल के शित भारतीय पत्र सम्पादक अपना असंतोप मगड कर रहे हैं। वास्तव में अदालतों के फैसलों पर उचित रीति से टीका टिप्पणी करने का अधिकार उस विल के पास हो जानेसे जाता रहेगा, जो कि न्याब की दृष्टि से सर्वधा उपयुक्त नहीं है।

— भारत में श्रीद्योगिक प्रगति गत कतिपय वर्षों से देश में औद्योगिक कार्य की ओर प्रकृति हुई है, परन्तु वह अब घटती पर है, यह निम्न अर्द्धों से भूमाणित होता है भारतियों को विचारना चाहिये-

सन् १६१६-२० में ६४८ औद्योगिक कम्पनियाँ खुर्ली जिनका मूल धन २=२ करोड़ रुपये थे ।

# \$540-44 " 40 #8	19	11	**	१४८	91	19
" १६२१–२२ " ७२०	11	31"	70	E0	77	73
,, terr-73,, uma	35	77	,,	3.	"	21
n १६२३–२४ n ४३०	31	31	53	₹¥	3 1	u
"१६२४-२५ _» , ४११	93	53 '	**	21	**	19

विदेश

-मात्मवाद की लोज़ें विदेशों में ज़ोरों पर हो रही हैं। सर ओलीवर लांग और सर आस्पर डांबल की लोजों से भारतीय मात्मिक लिदान्तों की पुष्टि हुई है। सर ओलीवर लांज ने सिख किया है कि परलोक में पेसी आत्माएँ भी हैं जो आत्मोक्षति में तल्लीन पुरुषों के जीवन कार्यों में सहायक हो सकी हैं। उन भारतीयों को शिक्षा हेना चाहिए जो अपने प्राचीन श्रृषियों की मान्य-सामों में विश्वास नहीं रखते।

— चीन में सिंघाई कैन्द्रन आदि नगरीं में विदेशियों के विरुद्ध विक्षेत्रकर अंग्रेजों के विरुद्ध तीन ओन्दोलन हो रहा है। सिंघाई व कैन्द्रन में अंग्रेज व यूनानी पित्रयां हांगाकांग आ गई हैं। इन स्थानों पर वृटिश की ओर से गोली जली थी जिसमें कितने ही बीनी मारे गये थे तथा कर अम् अ व आपानी मारे गये हैं। बीनी विधार्थी व अनता अपनो सरकार से कह रही हैं कि अग्रेजों को विरुद्ध लड़ाई आरम्भ कर दो। देखें क्या होता है।

- कहा जाता है कि लाई रीडिंग और लाई बर्केनहेड का परामर्श समाप्त हो गया । उसमें निर्णय हुआ कि १६२६ के पहले कोई भी घटना होने पर सुधारों में संशोधन न किया जाय । सुधार जांच कमेटी का रिपोर्ट के अनुसार सुधारों की सफलना के लिये यन्त किया जाय । बद्दाल और मध्यपान्त की स्थित उत्पन्न न होने दीं जाय। सुधारों के १६२६ के बाध भविष्य के सम्बन्ध की योजनाओं पर गद्दनमेन्ट बिचार करे. कान्ति-कारियों को रोकने के लिये वासयराय और कार्य कारियों को रोकने के लिये वासयराय और कार्य की कमोशन की सिफारियों मानी जांय। सेना का आरतीय करण अब रोक दिया जाय।

विषय-सची

				~			
मं० विष	1य		वृ॰ सं॰			पृ० सं•	,
१ उद्धार (कांक	Rr) ***	•••	8 34	६ को शरिया जी		सम्बन्धी	
२ राजा मिलिन	द अथवा मनेन्द्र	***	<i>૪</i> ૪૬			AR 2	i
३ बहुमत		• • •	Ado	७ परिषद्व समाच	ic	… ક્ષદ્રક	ľ
४ मुस लमानी र	राज्य में गोरक्षा	***	84.३	= बीर के विषय	में विद्वानी के म	त ४६६	
५ सम्पादकीय	टिप्पणियां ***	***	*47	ह संसार दिग्दर्शन	*	828	

जगत्र्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

श्रिक्त के फूल भाव १।) तोला— सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला श्रिक्त (सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची) हर श्रदद कम व वंश जिनने तील चाँदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत।

होदा	५००) में २०००)	प्रावत) #वंधनवार	
श्रम्बारी	१०००) से ३०००)		उ ह्) स्ते १५००	,) समामरनकीर	चना२५०)से१०००)
	१०००, स्ते १५००)	&(ZJO)	१००) से २००५	₎ ⊹पश्चमेरु	३०) से २००)
	३००) सं ५००)	***************************************) *अएमङ्गलद्वय	
	जंप००) सं १०००)) *अएप्रतिहार्य	१५०) सं २५०)
	न २००) सं ५००। (१००) सं २०००			, अम्बातहस्य न	१००) से ५००)
_	५०) से ५५)	_	१००) से ३०००	») * भौम म गडल	३०) सं १००)
	र ३०) सं ५०)				५०) में ५००)
जंन-मनि	द्रके उपकरणः।	रचनाकामाँ इत	ों <i>हे हैं हैं नु</i> स्त्रे पुरुष	^{०)} तस्वत चौदी वै	६ २००) सं १०००)
_	२५००) से ४०००)	तरह होए की	Juga Jair	वारहदर्श	२५००) सं ५०००) (नः००) से ५००)
বর্গা	=००) में ४०००)	रचनाकामाँडव	त्। । व्यवस्था	ॅं'⊹पूजन के बग्त	ान २००) में ५००)

यह काम वाजिब आहत लेकर बनवा देते हैं। मन्दिर मां के काम में ३०) रोजड़ा की शाहत लेते हैं। दिस जिब की चान नेपार भी रहता है। अपे चानें नो वे की बनाकर मांने का मृत मां होता है।

पता - (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द्र कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) केंनममान कार्यालय मिर्चई फूलचन्ट केंन, कार्यालय, चॉर्टाव प्रग बनारस मिटी।

गोर ऋोर खुबस्रत होने की दवा।

शहजादा जिल-आफ-वेटन की सिफारिश से डा॰ लामडेन साहव ने महाराज मेस्र के वास्त बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाव के फूलकी र्या रङ्गत अप्जाती है मुंह पर स्थाह दाग, मुँह से फोडा फुन्नी दाद खाज हाथ पांच का फटना वगल में बद उदार पक्षोने का आना इत्यादि सबको साफ करके समडे की नरम करदेती है। यह फलोसे बनाया है इसकी खुगब असे तक बदनमें से नहीं निकलती। कोमत १ शोशी १।) रुपया ३ शीशी के खरीदार की १ शीशो मुफ्त। डाकव्यय ॥

पता: - मुहम्मद अपूर्णल पण्ड यो ० आगरा ।

वालरचा यमग्रत बक्स।

बहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अवस्था के अनेक वालक रोग मतान,पसली श्वास खाँसी लहक, दस्त, सुकिया, ज्वर नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फँसकर मरताते हे और उन लोग उनके माता पिताको भृतादिक की वाधा भपटा, नजर, बताकर लटते हैं परन्तु आराम नहीं होता।हमने इसकेलिय एक विजली का बक्स बनाया है जिससे वालकोंके सब रोग शाल्त होते है। जो ४०वर्ष से घड़ाधड़ विक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफ़िकेट मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मु०१) डा०व०।=) कुलरा=)

मिलने का पता-उयोतिष गत्नशवन फुर्म खुनगर (पञ्जाव)

यदि ग्राप व्यापार वढ़ाना चाहते हैं। तावीरमें ग्रपनाविज्ञापन ग्रवश्यलपवाइये

- क्षेर—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ना है।
- वार हरएक जैन स्कृत, लाइब्रेरी, पाटशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।
- वीय धार्मिक पत्र होने के कारण प्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।
- बंहि—- उच्चकोटि का पाचि रूपत्र होनेसे फ़ड़ान में रक्ष्या जाता है । स्रोर बार बार पढ़ा जाता है ।
- चीर-- एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोदिन तरक्की कर रहा है।
- वंश-- विज्ञायनदाताओं के लिए अध्युत्तम पत्र मावित होवेगा।
 शीघ पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट
 मालृम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़
 जाने पर पछनाना पड़ेगा।

पता:-'वीर' कार्यालय, विजनार(U.P.)

धर्य २]

१५ जीलाई सन् १६२५ ई०

संख्या १=

श्रीवद्यमानायनमः ।



र्श्राभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का **पाद्मिक पत्र** ।

~ TO HE DESCRIPTION

थानः सम्पादकः --

ैं वश्मश्यवदिव, श्री बश्र जीतलप्रमाद जी

श्रानः उपसम्पादकः ---श्री कामनाप्रसाट जी

सावधान! नई ख़ुशख़बरी!! सावधान!!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

्रह)भरी मज़दूरी नकाशीदार फेर्स्सा काम जैसे चेदी, नालकी, सिंहीसन, चंचर, छत्र श्रादि)॥ भरो मज़दूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लीटा, गिलास वर्गरहर । श्रीघ ही कुळ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की प्रीचा कर देखिये ।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज संवा है।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्स के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते है और तैयार भी रहते हैं। चेंबर, निहासन, बेंबी,नालको श्रष्टमङ्गलद्रच्य, श्रष्टवतीहार्य, मुकुट, मेरु, भीमगडल श्रादि । ताँचे के अपर सीने का बरक चढ़े हुए सामान, पश्चमेर, शिखर, कलश, कलशी, जरदोजी का सामान जैसे चन्दोबा, परदा,श्रद्धार, बन्दनबार इत्यादि। सीनाराम लहरीप्रसाद,

मालिक- उपकरण कार्यालयं चौक, कार्णा।

हमारे अन्य कार्य !

हमारे यहाँ बनारमी साहियाँ, साफे, दुपट्ट, कमण्याय, पीत के थात, देसकाफ काशा लिल्क के थान, दुपट्टे साफे दावता गोटा, पट्टा पुरवी सादा टकुवा वगेरह।

जाति संबक--

सीताराम लहरीप्रमाटः सराफाः वनारम

३२ के कर्क के के के के के कर कर कर कर के किया तीस (शुक्र - प्रमेह) का विज्ञानिक और पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड युनीयसिटी अमराका क योग्य वैद्य जिवसादीस जाम्लिन loslen और एलन Allen साहवान के तराके-इलाज(जिसका तमाम विज्ञान-जगतमे प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुनाबिक डा० यस्तावरसिह जन एम० डा० (अमरीका) सदर वाजार दहनी को अपने मराजो पर बहुत कामयावा हासिन हुई।

र—मुकेडल तराके इलाज से कता श्राराम होगया है। मने महाराज साहय था नेपाल-नरेश को लिख दिया है कि दा साल से जा मुके शकर प्रमेह को यामारी लगी दुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिल्कुल श्राराम हागया है।

- इ० कर्नल विजय अम्बेरजङ्ग बहादुरः | Lancien Minister, Nepal देहली | १--श्रापने इस तरीके इलाज से सेरे शकर-प्रमेह रोग का विल्कृत श्रद्धाः कर दिया । से , बहा मशकर है । जीतलप्रसाद राजवैदा, बोदनी चौक, देहली |

 तीन चार साल से मुक्ते शकर-प्रमेह रोग ने तङ्गकर इत्ना था लेकित श्रापके तरीके इलाज ले बिल्कुल ठीक हागया है।

जानकीप्रमाद राजवैद्य, चादनी चौक, देहली ।

४- मुभे यह तरीका-इलाज बहुत मुफीट माबित हुआ।

मित्रभेन केन रहेम, कांदला ।



वर्ष २

विजनीर, आवण युष्णा १० बीर सम्बत् २४५१ १५ जौलाई, सन् १६२५

अञ्च रव

वीर-विनय

जय जयो विश्व दीर हथीर हो ! मग विकाशक शासक वीर हो !

अनल हो विश्व कर्म करीर को। जलभ हो जगताप समीर को।

भ्रुपति सागर ब्रान अगार हो ! श्रुप विभाकर हो, जगतार हो !

> तपत दुःख अपार सभीरु को । मटकते किस्ते अपित दीन को ॥

भड़कत । करत आत दान क श्रालभ वेद सही भव नाश हो !

जय जयो विश्व बीर मुखारा हो !

तम श्रज्ञान चहुं गत छा रहा! स्रुपथ आँसत् ज्ञान न हा! रहा!

किथर जा लखते निन रूप हो ? यदि न वैन-गिरा तन नाथ हो ! विश्व हुई। श्वनमोल हितेच्छ है। तु विन हेतु द्यालु हुभेच्छु है॥ त्रिजग पालक हे शरणे गहो ! जय जयो विश्व वीर सुधीर हो !

~'वीर'

प्राचीन जैन साहित्य के नमूने

जीन साहित्य बर्नमान में भी कितना विश्व और अन्यों की अपेक्षा अतुल है, यह आज सर्वमाननीय बात है। परन्तु दुःख है कि धार्मिक विद्रोहियों और विदेशी आक्मणकों के हाथों से द्या खुचा यह अतुल साहित्य भी आज हमारी मुर्खता भीर उदासीनता के कारण चूरी और दींमकों का भोज्यपदार्थ बन नष्ट हो रहा है। हजारी स्थानी के जैन भण्डारी में कितने अमूल्य साहित्यरत्न छिपं पड़े हैं यह सर्वन्न ही जानें। पर-न्त जार कभी कही के भण्डार की खोज कोई साहि-त्य प्रेमी कर बैठता है तो यहीं किसी न किसी शद्भत रत्नको पालेता है। ग्वालियर, आगरा,रहावा बादि ज़िलों के जैनमण्डारों में भी प्राचीन कीर्तियां अवश्य ही छिपी पड़ी हैं क्योंकि इस भानत में सहा-रकों की गहियां रह चुकी हैं, जिन्होंने साहित्योद्वार और मंत्र-यंत्र की कुशलता में भरसक प्रयस्न किये थे, भभी हाल ही में जसशंतनगर के प्राचीन गुटकी में जो अपूर्व छंटि २ समस्कारपूर्ण साहित्य के नमुने इमें मिले हैं घइ हम पाउकों की समक्ष रखते हैं।

निम्न का स्तोत्र किस प्रकार व्याकरण शास्त्र की निषुणता और किन से शब्द भंडार की प्रसुरता का दिग्दर्शन कराता है, वह सहज्ञ में टी उसके पाउ से अन्दाज़ा जासका है। याज इसका अर्थ लगाना भी शायद मुश्किल होगा:-

स्तोम १

धाराणं बरणं रणं रण रणं वारा रणं वीरणं।
कंतालं करलं कल कल कलं कीलं कलं कोकिलं॥
गंता नंत ननं तनं तन तनं संतान बीतानकं।
विद्योतं धिदित दुतं दितस्त विद्याविने।दं बिदुः॥१॥
वेतालं निरलं रलं रल रल विस्तार तारं तरं।
चाणूरं चरणं चरं यूण घूणं वीकारणं कारागृहं॥
मायामोड सर्थं मयामय सर्यां बात्सल्य, वंशोद्धवं।
घृम्दं चामर मारमेर मरणं मोरारि मारोत्स्ववं॥६॥
लक्ष्मी लक्षण लक्ष्य लक्षण गुणं काल्याण वाणवृण।
वशोद्धार घर घरं घर वरं सेना समूह क्षणं॥
उच्यानं सदनं घनं घन धनं घानं घनं घं घन ।
केलीकोल कलंक चन्द्रनवनं सल्लीक्षन घोछनं॥६॥
प्रहा पूर पराग राग रजकं राणा रणं वारणं।

सर्गोत्सर्गं कुमार्ग मार्ग भरण भारमि भूतं भणं ॥ भ्यासायाम विकाश काश रसनं नासानसे सानसं । काया पाय विजाय माय मसनं मायासमं मोनशं ४

२ बद्धभान स्तोत्र

उपरोक्त के साथ ही यह स्तीत्र कितना मनी-हर और कालित्यपूर्ण है यह उसकी पहते ही अतु-भवित होता है:—

'जम्म जलिब सेत्, दुःव विध्वंस हेत् । निहिंत मकर केत्, धीरिनानिष्ट हेत्:॥ यम जनितः समर्तु, निप्रनिःशेष धातु। अंयति जगति चन्द्रो, वर्द्ध मान्नो जिनेन्द्रः ॥२॥ समय सदन कर्चा, सार संसार इर्चा। सकलमुबन गर्सा, भूरि कल्याण धर्मा॥ परमस्य समर्था, शब्द सन्देह हर्सा। जयति जगत चन्द्रो, धर्द्धामानो जिनेन्द्रः ॥ २॥ कुगति प्रथ विनेता, मोक्ष मार्गस्य नेता। प्रकृति गद्दन इन्ता, तत्व संघात मन्ता ।। गगन गमम गन्ता, मुक्ति रामाभिरन्ता । जयित जगत चन्द्रो, चर्च मामो जिनेग्द्रः॥३॥ प्रवर बड खुसालो मुक्तिकान्ता रसालो। विमल गुण मराली, नीति कल्लोल माली।। चिगत सरण सीको, घीरिता नन्त सीलो। जयित जगत चन्द्रो, वर्द्ध मानो जिनेन्द्रः ॥ ४॥ सजल जलद नादो, निर्जता सेस बादो। पतिपतिज्ञतपादो, घस्तस्वत्वंय गादो ॥ जयति भुविक पादी, नेक कीपारिन कंदी। अयति जगत चन्द्री, बद्ध मानी जिनेन्द्रः ॥॥। मदनमद चिदारी, खाठ चारिषधारी। नरकगति गिवारी, स्वर्ग मार्गावितारी ॥ मुसुर नयनहारी, क्रेबल ज्ञान धारी।

जयित जगत चन्द्रों, षश्च मानो जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥ विषय विस विनाशों, भूरि भाषा निवासों ॥ गत भव भय पासः, कीर्तिंग्रह्मी निवासों ॥ करण सुख निवासों, वर्ण संपूर्ण नासों । जयित जगत चन्द्रों, वर्जभागो जिनेन्द्रः ॥ ९ ॥ वचन रचन धीरः, पाप धूळी सभीरः । कनक निकस गीरः, क्रूर कृगारि सीरः ॥ कुशल दहन नीरः, पातितानन्त बीरो । जयित जगत चन्द्रों, वर्जभागो जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥ यित्रसंध्य सुनवधासुद्यतस्तोत्र मन्त्रसमतात्पद्यत्पदः । पंडितो न सुविशालकीर्तिना साद्विमेति शिवमदिरंनर

यहां पर यह उस ही रूपने उद्धृत किया गया है जिस रूप में यह लिपियद्य है। लिपिकर्ता ने अपना परिचय निम्नशन्दों में दिया है:—

"संवत् १६३६ वर्षे मगीवर शुद्ध १ शुर् केटा वचने बागड़ देसेरवस बाड़ा नगरे श्री संक्ष्यनाथ चैत्यालयं श्री मुन्दसंचे सरह्यति गर्छे यवात्कारणं श्री कुन्द कुन्दाचार्य नवये। मार श्रीपद्मनंदि देवा तत् पट भर श्री सकवकीति देशा नत् पट भुवननीति देश तत् किष्णाचार्य श्री ज्ञानकीति तत् शिष्णाचार्य श्री रस्तकीति तत् किष्णाचार्य श्रीयशकीति तत् सिष्णाचार्य श्री गुणचंदि सेदं पुहतकं पहावश्यकत्य हर जिष्ण नरहुत्तरा पडनार्थ दनं। श्रुभंबतु! कल्याण् नाह्नु॥"

इसमें पटावश्यक के साथ २ अन्य स्तोत्र आदि भी दिएहें। उक्त स्तोत्र के गतिरिक्त निम्नका श्री शांतिनाथ जी का स्तवन भी पठनीय हैं:—

(३) स्तोत्र

"नाना विचित्रं भव युःष राशि । नाना प्रकारं मेरेहानि पाशि॥ पापानि दोपानि हर्रति देख । इह जनम शांधों तब सांतिनाधः ॥ १

संवार प्रध्ये प्रिध्यात्य चिता । निश्वात्वमध्ये कदमांणि बन्धः ॥ ते मंत्र छेदंति देशाधिदेश। इह अन्म शर्ण तथ शांतिनाथः॥ २ ॥ कामश्चकोधश्चमायां विलोग्य । चतः कषाये इह जीव गंधः ॥ ते बंध छेवंति देशधिदेव। इट जन्म शरणं तथ शांतिनाथ ॥ ३३ जोतस्य मरणं जुधस्य घचनं। वैशांति जीव यह अन्म दुःखं॥ ते दुः स सेवंति देवा भिदेव। इह जन्म शरणं तब शांतिनाथ ॥ ४ ॥ छारित्र हीने नरजन्म मध्ये। सम्बक्त रान प्रतिपालयंति ॥ ते जीव सिद्धचन्ति देवोधिदेव। इह जन्म शर्ण तथ शांतिनाथः ॥ ५ ॥ सदाप्यहीने कठिनस्य चित्ते। पर जीव निंदे मनसी च वंधः ॥ ते गंध छेद ति देवाधिदेव ! इह जन्म शरणं सन शांतिनाथः ॥ ६॥ पर द्वब्य चोरी परदार सेवा। हिंसादिकांक्षा अञ्चलानि गंधः॥ ते अध छेदन्ति देवाधिदेवः। इह अन्म शररां तेव शांतिनाथः ॥ ७ ॥ पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि गंधः । वहु बंध मध्ये इह जीव व धः॥ ते बंध छेदं ति देवाधिद्व । इह जरम शरणं सब शांति नाथः॥ ८॥ भावों की विशवता के लिये इस में जिल्ह कार ध्यान रक्ता गया है, यह दर्शनीय है। दूसरी एक

हिन्दी भाषा की कविता इस ही गुटके में किसी हुई है उस को हम यहां पर उड़त अवश्य करेंगे। उस से पाठक देखेंग कि जैन कवियों ने केसल पैरान्य और शांति रसों में ही अपनी केसनी सीमित नहीं रक्षी थी:--

(४) रागमनार ।

आसाह आगम पीय समागम सुण्यों हे सिष भाज । मोहि दहत अङ्ग अनग रंग तरंग चंग .समाज ॥ दस दिसा यादल सजल सारे, ऊनए जलसाज । मुदित दादुर मोर कोकिल करत मेघ अवाज ॥ ए मन सोहन ! कवण सयाण पकरत अवधिचय ।

अजह न आए जी ॥१॥ सवी सहें का करत के ली काये सव सिङ्गार ॥ सुरफाल गणी अधिक सुन्दरि गर्ल मोतिन हार॥ मंतु बंचुल कुंज भी तरि कीयो हिंदोला साज। भुलती सब कामिनी गावती मेघ मलार॥ ए मन मोहन ॥२॥

भारों भयानक। रजनी सजनी नैक रहीं न जाह। पापी पपीहा रटत पीच पीच। पलक सास नमाइ॥ घर छड़ि के परदेस बाहरी वसे वरीका छाइ। कवण सुन्दित मीली प्यारे तहीं रहे बीरमाइ॥

ए मन मोहन ॥ ३॥ कोड चलतु पेंडें पिलक, नाही। कहे ज्यो सदेख। तब किंग वीसास बसंत चाले रहे गद्दी परदंस॥ अब शाह बर्गना बिरहें बेरी दहत जोबन बेस। कठिन काम फ़ीसाण जिस्त्य गए सुप |अल्बेस॥

प मन मोहन ॥ ४॥ जै हं जाणत तब हो लालन करति पेसी कुर । होड़ी के निज स्थित्र साली जाणा दंती न दूर॥ कहा कही सभी कथ्य पठडों नदी जल भरि पूर । । दल साजी के जलदाल आये। लख्यी जात न सूर॥ ए मन मोहन ॥ ५॥

मोहि अन्न पाणि सुहात नाहीं, इह्य आवत लाल। मोही कीच देवत मीच आवत मोहना के साल॥ जब मेह गाजन नेह बाहत भुग्नी अरसाल। दामीनी उरपाइ माग्त विरहणी बेहाल॥ पमन मोहन॥६॥

कवन कुदीन कुषास्वाले फीरे नहीं पीच केम। आजी पीछै सीप मेरी सुणी हे सपि एम॥ बसंत बरीपा सन्पिर रिती की बद्दत मन सिन्न भेम। परदेश पीच कीं, चलन देवा नारि की है नेम।। प मन मोडन ॥ ७॥

ते कहुं जहुराज आवत कुराल सों एक घेर । तो सपो सब मीली घेरि रापों रखी कोई ऐक फेर ॥ फहन मृति पल्पाणकीरति करहु जिणि अब सेर । सुप दुव टावूं। टरत नाही भटल ज्यो विरि मेर ॥ प मन मोहन ॥ इ ॥

ठीक इसही क्या में यह कविता गुटके में लियि बद्ध है। इससे हिन्दी के शब्दों में जिन अक्षरों की अब फोरफार हुई वह दृष्टब्य है। इधर जयं हस्त मात्रा की आवश्यका है वहाँ दीर्य दी हुई है। इससे पहने में भो दिक्कत माद्दा होती है। परन् कहा नहीं जासका कि यह लियिकर्चा की ही जुटि का फल है अथवा उस समय लियने में इन बातों की ओर ध्यान ही नहीं दिया जातो था, क्योंकि उनके लिसे हुए शब्दों की आकृति से हम सहस्रा उन्हें भाषा जान से रहित नहीं कह सके। जो हो शब्दों के कप को ठीक समक्षकर और मात्राओं को सुधार कर पहने से कविता सरम्य प्रतीस होगी। मानों मुनि जी ने जैन कविता सरम्य प्रतीस होगी। मानों मुनि जी ने जैन कवियों की कमताई को गेटने के लिये ही इस प्रकार की रचना रची हो! म लु । होता है कि मुनि जी ने सायन में श्तियों को अन्य विरद्द गीनों को गाते सुना शोगा। उन्हीं को लाय कर उनको संयोधनार्थ यह किना श्री राजुलजी के श्री नेमनाथ भगवान के विरह में रची होगो। हमें यह बात नहीं कि यह भुनि महाराज फिस संय के और किस प्रांत के थे।

इन कतिएय उदाहरणों से ही पाठक हमारे मारिश्व यक्त व्य के नहत्व को समक्त गये होंगे। वस्तुतः आज अत्येक स्थान के जैन मंडारों की विशिष्ट रीति से छान होन करने की आवश्यका है। और इस खोज हारा प्राप्त अलभ्य साहित्य रत्नों को प्रकारा में लाने की आवश्यका उस से एक करम अगाड़ी खड़ी मिलती है। ह्या हमारे यह भीगान जो येदो प्रतिष्ठा और रथ यात्रायों में हज़ारों रुपया स्वाहा कर देने हैं, इस महस् पुष्य-शाली कार्य की और भी ध्यान देंगे? प्राचीन आवश्यों ने किसक्षम से यह अज़ुन रत्न हमारे खुपुर्द किये थे। क्या आप उन्हें इस प्रकार आंखों देखने नष्ट हो जाने देंगे? उन के उद्धारार्थ स्थ गुज़ लगा दीजिए। तब ही आप अपने कर्त व्य से उन्नाण होंगे!

—उ० सं०

जैन दीचान्वय कमेटी पर विचार

(संबक-सुधारक)

विति के गत विशेषाङ्क में जैनधमं भूषण हा। शीतल भसाद जो ने एक जैन दीक्षान्वय कमेडी"(Jain Convers on Committee.) स्थापित करने की आवश्यका बतकाई थी। ब्रव्जीने इस क्रमेंटी का कार्य भी पतला दिया है कि इसके द्वारा पहले अपनी जैनधर्म में दिक्षित किर जांय और फिर उनके जीवन-व्यवहार को देखकर उनका वर्ण नियत किया जाय, जिससे उनके साथ उस वर्ण के बैनी रोटी बेटी व्यवहार बिना किसी भेद भाव के कर सर्जे। कहा आता है कि हमारे आचयों का मत भी इसदी प्रकार है। बास्तव में जैनसमाज की अवेक्षा जैनियों के लिये यह विषय शत्यन्त आध-श्यक और विचारणीय है। परन्त मेरी समभा में इस समय हमें उतनी फिकर अतैनों की जैनी बनाने की नहीं है जितनी कि स्वयं उन जेनियों की पुनः जैन-धर्म में लाने की है जो काल के प्रभाववश जैनधर्म को भूला खुके हैं। भारतवर्ष में यह विषय अतीव दुष्कर है क्यों कि यहां रोटी और बेटी का व्यवहार ही मनुष्यों के धार्मिक और सामाजिक जीवनमें मुख्य स्थान लिये हुये हैं। हमारे चारों ओर यही विश्वास फेंळा हुआ है कि किसी भी धर्म में पूर्णतः किसी को दीक्षित करने के छिये रोटी और घेटी का व्यवहार परमायश्यक है। भारत के बाहर अन्य देशों में विशेषनया यह बात नहीं है। वहां धर्म का सम्बन्ध आत्मिक विश्वास से हैं।

इस गहत के इस करने में यही एक खासी कठि-नाई है। अत्रव इसविषय में बिल्कुल स्पष्ट विचार मालूम करलेना आधश्यक है,। ब्र॰ जी ने जो कुछ लिया है, उसको जानसे हुएभी कहना पड़ता है कि उन्होंने इस विवय में कोई स्पष्ट विवेचन नहीं किया है। हमारे मध्यप्रान्त में जैन कठार हैं-इन्हें साधारण कलाल ही समभना चाहिये जैसे कि कभी २ लोग समफलंसे हैं यह उनसे भिन्न हैं। इनके अतिरिक्त कोष्टी (Koshti)जाति और कक्षार (Kasais) भी है। परन्तु मुख्य कठिनाई यह है कि यह मनुष्य फैसे निमंत्रण पर भोजन स्वीकार करते हैं बैसे अपने धर्म को प्रहण नहीं करते हैं। यह कार्य सगाप्तार विचार करने से किया जाना चाहिये। साथही जदां तक जानीय मनुष्यों का सम्पर्क है घटां तक किसी बाहिरी व्यवस्था का प्रयोग भी इस कार्य की पूर्ति के लिये करना आवश्यक है।

वस्तुतः उनके ईश्यर कर्तृत्व सिद्धान्त के अ-ध्या वेदों को ईश्यरफृत मानने के अभाष में ज़ा-हिरा कोई भी हरु बळ मजाने वाला परिवर्त्त न नहीं होगा। इसलिये दीक्षित करने का काम नितास्त आवश्यक है। क्या कोई ऐसे सज्जन जो शास्त्रों के विशेष ज्ञाता हों इस विषय में शास्त्रीय विधान विशेषक्ष से प्रकट करेंगे ? दूसरे यह भी विचार-णीय है कि इस समय यह कार्य कितना असभव सा प्रतीत हो रहा है जब कि हम देखते हैं कि उक्ष-

जातियों में परस्पर रोटी-बेटी व्यवहार पर हीं खेंचासानी पड रही है! इसके अतिरिक्त यह भी तो चताहरी कि मनुष्य किस प्रकार किस ढंग से जैन धर्म में दीक्षित किये जायंगे, इस कार्य के छिये कार्य प्रणाली किस रूप की होगी और फिर बह कानसा उपाय होगा कि जिससे नवदीक्षितीं को यह अनुभव न हो कि उनके साथ केवल दिखावरी सहानुभृति का ही पर्ताव किया जारहा है? अन्ततः उतके लिये इस धर्म के प्रहण करने में क्या अच्छाई होगी ? इसका उत्तर शायद यह दिया जाय कि इस धर्म को धारण करने में आत्मिक सन का सम्पन्ध है। हौकिक आर्थिक सुगमता आदि का विचार इसमें नहीं किया जा सकता। परन्त इसमें हमें यह ध्यान में रखना होगा कि आखिर हमको मनुष्यों से ही काम पहला है और उनकी मान्यिक कमजीरयी की पूर्ति का उपाय कुछ हूँ हमा ही होगा। भ्तकाल में सामाजिक परिस्थित एवं सामाजिक सुख ही इन मजण्यी को दीक्षित करने के कारण रहे हैं। अतर्य इन वार्तों में हमें सावधान रहना चाहिये

कि कहीं इन से हानि न खड़ी हो जाय!

इस प्रश्न पर लगातार विचार करने से यह प्रत्यस प्रगट होगा कि हमारी समाज में सब सामा-जिक प्रयत्न आर्थिक (Economical) और सामा-जिक जीवन के परस्पर खुले सहयोग की मज़बूत मिलि पर अवलम्बित रहना चाहिये। साधारण जनता धर्म को शास्त्रीय समाधानों से कदापि प्रहण नहीं करती और वे अपने धर्म को आस्य-तरिक जागृति पर भी सहसा साधारण समय में नहीं हो-इते। इस विषय पर गम्भीरतापूर्चक विचार करके एक सुसगटित स्कीम मगट करना आवश्यक है।

नं।ट—धर्म और जाति हितेषी विद्यानों को इस विषय पर अपनी सम्मति प्रकट करके इस विषय को कार्य मे परिणत करने योग्य बना देना चाहिये। समाज की परिस्थिति का ध्यान रखकर इस ओर सिचार प्रकट करना आवश्यक है। क्योंकि मध्य-प्रान्त की ओर इस विषय की चरचा ज़ोरों पर है।

-उ० सं०।

जैन विधवाएं श्रीर हमारा कर्तव्य

अम्बारों के कालमों से मालून होता अम्बारों के कालमों से मालून होता है कि दिन्दुओं की औरतों की क्या दुई ता हो नहीं है। तगह जगह भिन्न भिन्न स्थानों से खूबर आती है कि अनुक स्थान पर अमुक स्त्री को मुसलमान भगा कर ले गए; अमुक हिन्दू विध्वा किसी दूसरे के घर जाकर बेंड गई; अमुक हिन्दू-स्त्री को गुण्डे बहुका कर ले गर, और अमुक नगह जाकर येच दियाः अमुक विधवा अपने किसी भीकर के साथ चल दी, अमुक अपने श्वसुर से मिली हुई और फलानी अपने जेड देवर या आस पास के किसी पड़ोसी से. अमुक जगह एक विवया ने अपना नव-जात बच्चा पतनाले में बहा िया; और अमुक जगह एक विधवा ने नवजात शिश्च को गढ़वा दिया या कुई करकट के ढेर पर किकया किया, अमुक जगह विधवाएं शिकायत

करती हैं। कि बनिये ब्राह्मण की निकम्मी ज़ात है जिसमें हम विचारियों पर यह जुटन प्रचलित कर रक्खा है कि रंडवे भाई तो चाहे ४ चार शादिया करलें लेकिन अयला और छोटी उन्न की विभवामों को दोचारा शादी करवाने की एक दक्ता भी इजाज़न नहीं; कुलानी जगह अमुक विभवाने गर्म हत्या कराई; जीर उस स्थान पर लाज के कारण एक विश्वत्रा अपने कप्तों में आग लगा कर भस्म हो गई।

जय कि विध्ववाओं की यह असंतोप प्रद अव-क्या है तो स्वमात का कर्ताय है 'कि उनकी रक्षा का प्रवस्थ करे। उसके आगत और सुविधा के साध रहने, सहने, उनकी रंडायन के दुःल को झान, शील और सयम के साथ पाछने और उन को नीचता और पेकड़ी डी जिन्दगी के सर्व में पड़ने से बचार्ये। यदि जैतियाँ में कुछ मी धर्म का अंश शेष है तो इससे अधिक और किस अध-ह्या में प्रगट हो सकता है कि विधवाओं पर वड करणा की द्रष्टि डार्से और उनके दःगों की निधारण करने की कोशिश करें। मौतिक दक्षियां में गत महा समर के समय में जब विभवाओं की अधिकता देखी गई जो सगह जगह War Baby Housen (समर-जान जिल् प्राथम) स्थापित कर विषे गए जार्र कि विधान कें जीय और अपने बच्चे स्विण और सरलता के साव जनवार्य और बच्चों को कीम के लिये छोड़ जार्ने । उँन समाज के लिये यह उदात्रण केवल यही महीं कि अनुकरणीय नहीं है बरव् पृणित है। उसे ती अवने शील, संयम, ज्ञान आदि रूप आदर्श के अनुकूल विधानों के जीवन व्यतीत करने के

साधनका आश्रम स्वापित करने खाहिये। यह देख कर प्रसक्ता हाती है कि ऐसी २ संस्थाओं का जैनसमाज में थिलकुल श्रमात्र नहीं है। बम्बई, इन्दीर आरा, दिल्ली शहरों में यह इस प्रकार के आश्रम पाये जाने हैं जहां कि विधवाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सहें। और अपना जीवन धर्म और ज्ञान के साथ व्यतीत कर सहें। देहलीमें भी श्रीमती रामदेशी के पुरुषायें से महिलाश्रम कुल असें से कापश है। इसमें बर्तमान में लगभग २० महिलाएं शिक्षा शाम कर रही हैं।

अब तिनक यहाँ दिल्ली के जैन महिलाश्रम के कार्यों पर हिलाश्रम करना चारिये कि कितनी महिलाओं का जीवन इस भारम के द्वारा सफल और उपयोगी बना है। उदाउरण के तौर पर चन्द मिसालें दी जाती हैं।

१ राजनती देशी—हिरोजापाद हिला झागरा की रहनेवाली छोटी उन्न की विधवा, सासश्वसुरी ने घर से निकाली हुई विचारी दुः वके सारे जीविका के लिये लिखार अपने दिन काट रही थी। कि आजम में दाखिल हुई पांच प्रेणियां पास करने के बाद नामल जूनियर की परीक्षा पास की और सुख से जीवन व्यक्ति करने लगी। संमय था कि समाज के लिये लामदायक सिद्ध होगी किन्तु जीवन ने साथ न दिया और स्वर्जवास होगया।

२ जुलाब देवी, सिकदरायाद जिला युलदराहर की रहने वाली. रोटियों को मोहनाज, कुटुम्बके आह्मी होने हुए भी दुःत्र के साथ जीवन व्यमीत कर रती, फिर आजन्न में दालिल हुई। मधी जनात मिडिल को पास की, किर आजम में अध्यापिका का काम किया। परखात किरोज पुर और गोहाने की पोठशालाओं को चलाया और आजकल महि-लाश्रम देहली में अध्यापिका का काम करती हैं अभेर खुशी से जीवन व्यतीत करती हैं।

३ जदायदेया—भाइसा जिला गुड्गावां की रहने गली; पति पाकण्डी और सुलफ साधु वन गया और छोटी अधस्या में छोड़ कर चल दिया, साध ही देवर जेडों ने भी घर से निकाल दिया; यहां तक की रोटी के लाते पड़गए आध्रम में दिखल हुई नामल का इम्तहान पास किया और आज घह राधने की पाटशाला को चला रही है। इसकी ढाई साल की लड़की था जिसको आध्रम में अपने कर्च से प्रवेश किया और अब वह आध्रम में पांचवी क्लास में पढ़ गड़ी है।

४. रेशमदेवी-मोहाता (रोहतक) की रहने बाली, फेरों की गुनहगार बेबा, पांचवी हास आ-ध्या से पान्य थी, गोहाने की पाठणाला में काम किया अब भड़भर की पाठणाला चला रही है।

प. प्रभावती—१५ साल की उस की विधवा भपने भाई के साथ मुसीवत से जिन्दगी काट रही थी। आश्रम में प्रविष्ट हुई नार्मल इम्सहान पास किया, आज कळ देहली की कन्या पाठशाला में काम कर रही है।

इ. तारादेवी—छतारी जिला बुलन्दशहर की प्र वर्ष की विश्ववा; कठिनता से अपनी जिदंगी विता हों शी कि अवर्ष की व्यवस्था में आश्रम में दाखिल हों; मिडिल की परीक्ता दी और इस समय आश्रम में ही पढने के साथ पढाने में सदद देती है।

मिश्रीदेशी--कामा जिला भरतपुर निवासी
 बाल विधवा जिंदगी के दिन दुःव से पूरे कर रही
 शी आश्रम में दूसरे हास में दाखिल हुई व्यी मिडिल

और सीनियर नार्मल पास किया आश्रम में काय किया कुछ दिन वैतृत (सी० पी॰) की कम्या पाठ-शाला संभाली समाज को उससे बहुत कुछ आशा थी किन्तु अकाल ही काल कवलित होगई।

म किशनदेवी—गोहाने की रहने वाली; सास श्रीपुर से सताये जीकर आश्रम में प्रविष्ट हुई, सरकारी पाँचवी परीक्षा पास की और झब आनंद से महिलाश्रम में ही अध्यापिका का कार्य्य कर जीवन-निर्वाह कर रही है।

& सुभद्रादेवी—आश्रम द्वारा मिडिल पास किया और धर्मपुरा कन्या पाठशाला में मुख्य अध्यापिका का कार्य सुयोग्यता से चला रही है।

१० सौमान्यपती—माता रामदेशीजी की कत्या तीसरी कक्षा में अपने खुर्च से आश्रम में प्रविष्ठ होकर दो वर्ष में मिडिल परीक्षा पास की, और अब अपने कुटुग्व, और गृहस्थ के सुमंचालन के साथ अपने गांव में शिक्षण कार्य में बिशेप भाग ले रही हैं।

११ जैनदेवी-वकरौता पहाड़ की रहने बाली अत्यन्त हीन अवस्था में आश्रम में दाष्ट्रित हुई अपनी कस्या के साथ, मिडिल परीक्षा पास की, जूनियर ट्रेनिंग भो पास किया, आश्रम में कुल समय कार्य्य करने के बाद अब अम्बाले कस्या पाउ हाला में मुख्याच्यापिकी के पद पर कार्य कर रही हैं और और आनन्द तथा सुविधा के साथ जीवन स्यतीत कर रही हैं।

इससे पाठकों को मालूम हो जायगा कि इस आध्रमने जो सिर्फ सन् १६९ में स्थापित हुआ छ। अभी ७ साल के थोड़े समय के भीतर ही कितनी हो दु:खी और बस्त विधवाओं और महिलामां के कीवन को खुधारा और समाज के लिये उपयोगी वना दिया। फिर भी खेद है कि बमाज में कतिपय क्येकि पेसे हैं जो कि अ।अम के कलाने और उस में दपये के कर्च को व्यर्थ समभते हैं और कहते हैं कि इसको कलाना समाज का दपया वर्णाद फरना है। ऐसी संस्थानों को व्यावहारिक बनिये की भावना (Calculating Spirit) से नहीं देवना चाहिये। यदि समाज की एक भी दुःखित विभवा इस साभम से उच्च विचार लेकर निकली और अपने लिये तथा समाज के लिये उपयोगी सिद्ध हुई तो इस आधम का अस्तित्व सुफल होगा। समाज को ऐसे आश्रम की कृदर करनी वाहिये, क्यों के इन आश्रमों के ज़रिये ही समाज की कृदर होगी। दिस्सी आश्रम की भांति ही सम्य आश्रमों द्वारा भी विध्वधार्मों के जीवन पुण्य स्य बनाए गए हैं। समाजको ह्रदय से इन आश्रमों को अपनाना चाहिये। प्रत्येक जैन विश्वया को आश्रम में अंज कर सरसंगीत में रहने दीजिए। विध्वधार्थों के प्रति समाज का यही सुख्य कर्सच्य है।

हा० घन्साधरसिंह जैन M. D., L. R. C. P. & S.

श्राशा श्रोर निराशा

म्य प्रभात अपने सलौने दृश्यको लिये फूले अंग बहीं समाता था। उधर रिसक समुद्र भी उस के आल्हाद में जिवरल शब्द गुँजार कर रहा था। ऐसे सुन्दर समय में उसके रेतीले समकीले तटपर यह अपनी धुन में पगी अगाड़ी बढ़ी चली जारही यी। उधर सूर्य अपने पूर्ण प्रकाश को लिये वट माची दिशा में निकल बैठे। सुंदरी ने उसकी और एक आशाभरी दृष्टि से देला! देला कहीं उस में आशा की आमा हो? परन्तु नहीं, वहां कुछ भी वहीं या! मानो निराशा का पहाड़ उस पर टूट पड़ा! उसने गहरी सांस सीच अपनी रास्ता ली!

सायकाल ने नीलाकाश को सुनहरी चहर ही

बना दिया ! और लो वह अपनी अस्पष्ट मुस्कान छोड़ता—इठलाता आने लगा । सुन्दर्श के पग भी भारी पड़गये, वह थक गई, और चलने की सामर्थ्व उसमें न रही। वह बही बैठ गई। इस का शिथिल शरीर क्षण भर में ही पृथ्वी माता की गोद में ले।ट गयर मधुर-शीनल पबनने सांत्वना का कार्य किया और न मालूम उसे कब नीद ने ला घेरा।

डसने अपने स्वप्त-संसार में अपने समक्ष एक अज्ञान पुरुष को यह पूछते देखा कि किस कारण वह पेसे निर्जन स्थान में आ अकटी है। उसके मुख से यही निकला कि 'निराशा मुक्ते यहां से आई है।' उसने पूछा :- "क्या आशा की आभा वित्कुल नहीं है?"-बिटकुल नहीं! संसार ने मेरा सर्वनाश मेरे

बचपन से ही किया है !"-"बचपन से !"-"हां बचान लेही: तथ से जब से, मेरी माना मुफे अकेली छोड स्वर्ण सिधारीं ! मेरा रक्षक कोई न रहा! एक पड़ोमी ने द्या से-या भगवान जाने रालक से मुक्ते भाने वहां रवलिया लाड़ काय से मेरा कालन जोषण किया । जब मैं बाल्यबस्था की लांघ आई तो वह मेरं विवाह की फिकर करने रुगा-शीव ही मेरा पर्शाणप्रहण एक युद्ध पुरुष से कर दिया गया । में एक नयीन धर में पहुंची, पर-न्तु सुख मेरे भा य में नहीं बदा था। हाय, थे। इंही दिनों बाद मेरे भाग्य फूटगये! में निस्सहाय अवला युवती संसार के प्रलामनों से मुखमोड़ अपने दिन ज्यों त्यों काटरही थी कि किर दूसरे पड़ोसीने मेरा 🗸 सर्वनाश किया। में उसकी भोजी वार्ती में आ शील-अष्ट हुई । ५३२त् उसने सुक्ते घोका दिया। मै उस कलडू से अपने सीतेले पूर्वों की बचाने के हेतु घर सं निकल पड़ी और तब सं धक्के खाती मरक रही है। हाय……

सुन्दरी को आंखे खुल गई। अपर जो उसने कारी अप हृष्टि फेरी तो देख कि सबसुच एक अक्षात पुरुष हैं। "जा उस को दशा पर आंसू बहारहा है। वह सहम गई। मानी अप लजा के उद्वेग में नह उपाँ त्यो जन्दी समल गई। इस सणके लिये पूर्ण शांति छ। गई। आविर पुरुषने #'मिं पुरुष सपना पहिला प्रश्न दुहराया। सुन्दरी उत्तर क्यान्तर।

में दु छ भी न कह सकी। सहसा अज्ञात पुरुष के नाम पृछतं पर सुन्दरी के मुखसे भनायास'जयसन्ती' निकल गया!

* * *

सुन्दरी घवड़ा गई। साहस कर उसने मृद्धिक पुरुष के मुखपर प्रवन सीचार करतेका प्रयत्न किया। पवनके शीतल आवेग से पुरुष ने अपने नेत्र स्रोल दियं। यह घूरके सुद्दरी की ओर देखने छगा। देखतंही उसे कुछ याद आई । उसने, अपनी जेवमें: से एक पश्च निकाला। यह पत्र उसकी प्राणप्यारी का पत्र था। यह उसे जब मिला था जब वह लडाई पर था। उसने पहले देखा उसमें उसकी धर्मपत्नी उसकी नवजात कत्या का नाम 'जयबती' ही लिखा. था। पिताको अपनी संतान की यह दुर्गति,असहा थी। उसकी भारता छटपटा (उठी ! उसने शत मुख से समाज प्रचलित हानिकारक क्ररीतियों की तीब आलोचना की ! परत्तु उसके वह शब्द समृद्ध के शोर में बही छुप्त होगये ! समाज मजेमें उन्हीं अनर्थ कारी अवला सर्वस्वहारी रोतियों को अपनाये हुये हैं। ''जयवन्तीं' आशा और निराशा के धपेड़ी की मारी अवने विता के गुले लग गई।

#'Heustrated Sisir' की एक मरुप्का हिन्दी इपान्तर ।





दानवीरों को दान वीरता का स्वर्णावसर।

भाज १५ ज्लाई १६२५ हो सुकी ! सिक एक हफ्ते से कुछ अधिक दिन उस प्रस्ताव की पूर्ति की अवधि में शेव रहे हैं. जिसको समाजने वार्धा अधिवेशन में स्वीकार किया था। प्रस्ताव था श्रीमान् डा॰ रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विश्वव्यापी "विश्वभारती" विश्व विद्यालय में जैन धर्म धी शिचा का प्रवन्ध करने के लिए! जैन्धम क्ती शिक्षा साधारण छात्रों के लिये नहीं । प्रत्युत संवार के दिखान विद्यानों को जैन धर्म की जान-कारी प्राप्त भरने के छिये। क्या जैन समाज के टानवीर यह नहीं चाहते कि पवित्र जिनधर्म का सच्चा ज्ञान संसार के दिग्गन विद्वानों को सदन में हो सके ? यदि चाहते हैं तो फिर विकास क्यों ? केवल १२ रोज बाकी हैं ! और सिर्फ १५०) २००) मासिक के प्रवन्ध की आय-एयका है। इसमें करीव ७५) मास्त्रिक के वचन मिल चुके हैं। शेष की पूर्ति होना आवश्यक है। र्याद सर सेठ हकूभवन्द जी चाहें अथवा दान धीर फल्याणमळ जी, रा० व० सेठ टीफमधन्द जी या शाव भून क्षेत्र छाछचन्द जी इच्छा करें तो

सहज में यह महत् पुण्यकार्य चालित हो सका
है। उत्तर भारत के श्रीमान् दानकोरों को लाव
निर्मलकुमार जी साहब, राव साव साहु युगमन्दर
दास जी, तीव शिव लाव देवी सहाय जी प्रभृत को
भी इस परमावश्यक कार्य की ओर ध्यान देवा
चाहिये। विदेशों के वि गन् भी बोलपुर विद्यालय
में निर्मान्त्रत किए जाते हैं। वे घड़ी सुगमता से
जैत धर्म का श्रध्ययन कर सकेंगे। इसलिए निज
आवार्यों के भ्रण में किश्वित उन्नाण होने के लिए
यह स्वर्णावस्य हाथ से न जाने दीजिए। २७
जुनाई याद रिविये और पुग्यकार्यका मवन्ध
कों भिये।

जैनियों ! क्या यही जीवन है ?

आत हम अपने धर में परम्पर लड़ने में अपनी खड़ी मान बड़ाई सममते हैं। आनी टंक रखने के लिये अर्थ-अन्ध सब इन्न करने के लिये तथार रहते हैं। गर्पच रखते हैं। सत्यता की डीग मारते हैं और अपने को धर्म और समाज का रक्षक खयाल करने हैं! पिरणाम इसका यह हो रहा है कि जहां गऊ-खत्म का प्रम कभी दिखाई पड़ना धा-घटां आज गी और कसाई का पेशाचिक सबस्ध दिखाई पड़ना धा है! अहां सम्यक्ष के पालन में गर्व रक्षा जाना धा और काठ प्रकार के महीं को हमेशा बचाया

जाता था बहां अब सायकाव केवल लीक पीटने में खयाल किया जाता है और जातिमदः कुलमद आदि भांठ मदों की सद में मदमात हम एक दूसर के शत बन रहे हैं। यह कैसा भयानक द्रश्य है! क्वा यही हमारा प्रवित्र जीवन है ? हम तेरहतीन हैं-धर्ममार्ग से चिचलितहैं-फिर क्या कोई जैनी अपने को सरवा किनमक्त कहने का सहस्वा साहस कर सकता है ? यदि आज जैनसमाज के ब्बक्तियों में परस्पर सिर फुटौ:वल की नीवत न होती यदि शात जैनसमोत की जातियों में पारवर अहदार भाव और सङ्गीर्णता न होती एवं आज की जैनसभाज के मेता और धर्म-रक्षक द्रहतापूर्वक सचाई से निःम्बार्धहर में समाज भौर धर्म को खेबा करते होते तो किसी की हिम्मत न पर्द्या कि जैनियों और उनके धर्म के पनि कुटे कांछन लगाते! उनके धर्मायतनी को नष्ट ध्राट करे, उनकी रधयात्राजी की रोके! उस असस्या मे जैन शुक्रक सङ्गठन के महत्व को समके हुए पेम-रज्ञु में बंधे होते और निर्माकतापूर्वक प्रांती छ-कीर की फकीर भिवित प्रवादनों की मार्गापक धिनियति को देलने के लिथ मश्रयूर करते और समात्र में चढ़ दिश्य जीवन ला रखते कि उसकी मान्यता मित्रबाँ और पारसिकों की जांति स्रांत्र सर्वधा होती ! परस्तु असाम्यत्रश जैनी आज ठल्क इसके विपरीत कार्य कर रहे हैं। व्यक्तियों में भनोमालिन्य, जातियों में विदेष और सम्बदायां में मुकर्में बाजी चल रही हैं। यह है उन चीरों का दिज्य जीवन जो गऊ वत्स वन् प्रेमके लियं विख्यात् थे। धर में जब ऐस्प तहां तो बाहर भी करर नहीं? क्योंकि अने स्वता में आदर्श जीवन-जैन जीवन बिवाना विश्वकुल कड़िन बात है। इसका प्रत्यक्ष

प्रमाण यह है कि हमारे पड़ोसी माई हमको बुरी निगाइ से देखते हैं और हमारा अपमान करते नहीं हिचकते? "समालोचक" साप्ताहिकपश्च के निश्न बाक्य जैनियों के महत्व को भली भांति प्रकट करते हैं:—

"येतार के तार से खबर मिली है कि सागर में एक बड़ी भारी लम्बीचीडी कम्पनी खुलनेवालो है। उसमें ऐसे शेश्वर होइडर और दलालों की अफरत है जो १२ वर्ष की लड़कियाँ ६० साल के बुड़शी की बेब सकी। मगर शेअर होएडर और दलाल जैन जाति के होना चाहिये,कमीशन सरपूर दिया जावेगा।" कितना भर्तस्या पूर्ण आसं प है! माना सिवाय जैनियों के और किमीधर्म के मानने वालों में यह घृणित ब्यापार प्रचलित ही नहीं है ! प्रम्तु आपसी पेंचातानी के कारण हम सगउन से पर हैं और सचाई के साथ कार्य करना नहीं जानने। फलतः समाज की प्रतिनिधिसमा होने की दम भरनेवाली महासजादि की कुरीतियां के पति रिजायती दृष्टि का फल जाज जैनियां को हरतरह अपमानित होते में भिल रहा है। बाहर ये बगी निगाए से देखी जाती हैं। धर में उनके अभाडी नाश का भृत मुंद -वाद खड़ा है! पेसी अवस्था में जीवन नष्ट प्राय हो चुका है। युडिविवाह और अनमेळ विधाह सामा-जिक जावन को भए। तक बना रहे हैं। इजारी कुंबारे बहते हैं और विश्ववाओं की सुदि होती है। फलतः संवानोत्विच कम होने से सख्या में कमी होती है और सवाज में व्यक्तिचार की मात्रा मा अधिक बहुती है। विश्ववाधी की कुछ संबाह की मही जाती । उन्हें सत्सङ्गति में रक्षा नहीं जाता ।

घरों में वे सहसा अपनी चञ्चल मनं।यृत्तियों पर काच नहीं रख सकती। परिणामतः अडीसी पडीसी भववा स्वर्ध किसी निजी सम्बन्धी द्वारो शील रत्न को त्यागने के लिए मजदर की जाती हैं। फिर और भी अजिक पाप भूण हत्यादि करने का तैयार की जाती हैं। अन्यथा पाप के प्रकट होते ही समाज से पतित कर दो जाती हैं। नरपिशाच पुरुष तो फिर भी दृण्ड हे मिछा लिया जाता है, परन्तु विचारी विधया का कहीं ठिकाना नहीं ! शुरू से अन्त तक पुरुषों के ही इसारे पर चलने का फल उस अवला स्त्री को ही सहन करना पड़ता है! इस अन्याय का घोर पाप का परिणाम क्या हमें मेर नहीं देगा? अवश्य ही ? यह तो प्रत्यक्ष प्रकट ही है। अत्रय थित जैसी भाइयों! आप को जैस-जीवन में कुछ अभिमान है, उसका मृत्य कुछ आपकी नजरों में है तो मिथ्या जाति आदि अभिमानों को त्यागिये। और परस्पर प्रेमभाव फैलाकर समग जैन समाज

में परस्पर रोटी बेटीका टबबहुएर जफ्री होने दीजिए। इससे अनमेल विवाहों का अन्त होगा। योग्य बर कत्याओं के विवाह होंगे जिससे संतान वृद्धि होगी। तब बाल्य और बद्धविवाह भी स्वतः धरेंगे और उनके प्रति कडीं निगाइ रखने से शीघ्र ही उनका अन्त हो जायगा। और जब विश्ववासों की स्रिष्ट के मूळ कारण यह नहीं रहेंगे तब वह पाय-मय जीवन ही नहीं रहेगा, जिससे हमारा कोई अपमान कर सके! इसलिय सब से पहिले जैन जाति हितंपियों और युवकों का कर्तव्य है कि वे ≉यातीय पञ्चायतों का बास्तविक संगठन करें और उन्हें इस परिस्थित का ज्ञान कराकर कुरो-तियों का काला मृह करावें एवं परस्पर विवाह सम्बन्ध को पुनः जनम है। इस ही में भलाई है और इस ही दारा हमारा जीवन वच सकता है। घरन् अपमानित हो मिटना पहुंगा।

—З**е в**ја

बांधिये पानी पहिले पाछ!

किन्दी जैनगजर अंक ३५ में "बांधिये पानी पहिले पाल" इसटें पर एक कविता छपी है। और उसके नीचे अंखक का नोट है कि यह तुककन्दी उनलोगों का अम दूर करने के लिये की गई है जो यह कहने हैं कि जब समाज में विध्या-विवाह की प्रथा ही नहीं है तो उसका खंडन क्यों किया जाता है। हमारे खयाल में भी खंडन जकर

करना चारिये और पानी से पहिले पाल जरूर गंभना चारिये। इस दूरदेशी से कीन इस्कार करता है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि जो पाल भाप गंभ रहे हैं वह पानी को रोकने के लिये काफी भी है? अब जो विध्याविवाह रूपी पानी को रोकने के लिये पाल गंधी जारही है वह मात्र शब्दों की है। काम कुछ नहीं किया जारहा। और यह पाल इस

सरह से बांधी जा रही है कि जहाँ कोई व्यक्ति जैन चलेगा! हम को सी की तोड कर बोलवियाह. स्वमाजकी संख्या कमी के कारण बालविवाह-बुद्ध-क्षिवाइ-अनमेलविकाह-कन्याविकी-विधवाओं की सक्या की अधिकता आदि को यत्छाता है फौरन असपर विधवाविशह चाहने का दोप मदा जाताहै और उसको धर्म भ्रष्ट, धर्मग्रन्य आदि गालियां दी आती हैं। क्या ऐसे शब्दों का व्यवहार करने से विभवाविबाह रूपी पानी रुक सक्ता है ? यदि कोई ब्यकि दूर से पानी की बाद आते देखकर उन लोगी को कि जो पानी आने के कारण बतलारहे हैं गाली वेने लगे तो क्या वह पानी की बाह एक जायगी? हरिगत नहीं रुकेगी। बरिक बहुत मुमिकन ई कि गाली देने से बाहम लडाई भगड़ा होन लगे और असली उद्देश्य लुप्त हो जाय ! पानीतो अब हाथ पैर हिलाकर पानी आने के करणों को रोका जायगा तबही रुकेगाश इसी तरह विभवाविवाहरूपी पानी को शेकने क लिये यह ही मजबूत पाल हो सकी है कि ऐसे तरीके (नियम) स्वीकार किये जायँ कि जिससे विधवाओं की सख्या न घडे और वे तर्शके यह ही हैं कि बाल विवाह, बुद्ध-विवाह, कन्या विकी आदिको कर्ताधन्द किया जाये। अतस्व थिह इमको विधवा विधाह कृषी पानी को चास्तव में रोकना है तो मात्र शब्दों का पाल बाँधने से-इसरों पर विधवाविषाइ चाहने का दोप लगाने से-दूसरों की निन्दा करने से हरगिज़ काम नही

पूद विवाह, अनमेल विवाह, कश्या विकी सन्द करने की कोशिश करती चाहिये । और इन कुरी-तियों को भी पेसा ही बुरा समझना चाहिये जैसा कि हम विधवाविवाह को समक्रते हैं। परस्तु जब कि हम इन कुरातियों की चश्मपोशी करते हैं-इन में शरीक होते हैं-तो किस तरह कहा जा सक्ता है कि हम विधवाविवाह को रोकने के लिये पानी से पहले पाल बांध रहे हैं ! हमको तो चाहियं कि जहाँ कहीं बाल-विवाह, वृद्धविवाह आदि होते हुए सुने फौरन केशिश जिस तरह होसके उसके। बन्द करायें। यदि हम उन कुरीतियों को दूर करने में कामयाय होगये ते। विधवाधियाह रूपी पानी हरगिज नहीं आयगा। वास्तव में इन क़रीतियों का बंद करना ही इस पानीको रोकने के लिए मजाबून व कारआमद बांध घांधना है। अतएव विधवी विवाह क्यी पानी को राकने के लिए 'तुकबन्दी' की पाल कुछ काम नहीं दंगी। इसके लिए तो क्ररीनियों की वन्दी की जुरूरत है। इस उत्तर प्रान्त में कुछ हालत ठीक भी है परन्तु सुना जाता है कि जयपुर आदि में ते। बाल विवाह वृद्धविवाह आदि का बड़ा जोर है । छेलक को इन कुरीनियों को जह से उखाइने की के।शिश करके पानी से पहिलो पाल बांध ने का सबूत देना चाहिए।





विद्वानों से प्रश्न

(१) हिन्दी जैन गजर में जो "समभदार कहीं भड़काने से भड़कते हैं" शीर्षक लेख छप रहा है उसमें कुछ ऐसा भाव दर्शाया जारहा है कि शास्त्री की टीका करके छपयाना छपे शास्त्र पहना वाहिसे चारिश्रमोहनीय कर्मका उदय है। द्रष्टीत यह हिए जा रहे हैं कि जैसे मन्दिरजीमें बहुत से भाई जमा होते हैं, वहां बीतगगता का खूव जोर शोर सं से बरचा होता है। शरीर सं समत्व त्यानी, स्थी, पुत्र आदि से मोह छोड़ो इत्यादि वार्ते ही फही जाती हैं, परन्तु मन्दिर जी सं वाहिए आकर किर सब शैसे के देते ही हो जाने हैं। या भगवान की बीतराग मुद्रा के सामने बड़े भाव सं रहति करते हैं। बीतरागता आदिभगवान के गुणों का सिन्तबन ब गान करने हैं, परन्तु प्रतिमा जी के सामने से हरकर इस वैसे के वैशे ही हो जाने है। खुद बीन राग रूप नहीं होते। गोया जिस तरह इन द्व्यान्ती में कारण चारित्र मोहनीय कर्मका उदय उसी बरह शास्त्री की टीका कर के छपवाने, छपे शास्त्रों को पढ़ने आदि में भी चार्त्त्र मोहर्नाध कर्मका उदय ही कारण है। परन्तु मेरी समभा में नहीं आता कि यदि में किसी छपे शास्त्र को पढने वैठा हूं, मेरे परिणाम शास्त्रज्ञान हासिल करने के हा रहे हैं और मैं शास्त्रक्षान प्राप्त कर रहा हूं। तो पेसी हालत में किस तहर कहा आ इकता है कि मेरे उस समय चारित्र मोहनीय कर्म का उदय हा रहा है? और किसत रह शास्त्रज्ञान हासिल करने के परिशामीं का कारण चारित्र मोहनीय कर्म के

उदय को माना जा सकता है? मैं जैन धर्म प्रचार के लिए कोई छ्या हुआ शाल किसी अनैन को देता है, क्या जैन्धर्म प्रचार के परिणामी का कारण चारित्र मोडनीय कर्म का उदय हो सकता है? जैनगज़्द में यह लेख 'एक जयपुर निधासी" की सरफ से छ्या है। नाम दियाहुआ नहीं, नहीं मालू म किस पण्डित साहब की राय है! इसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की राय है! इसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की राय है! इसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की राय है दिसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की राय है दिसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की राय है दिसलिए धुर-स्थर पण्डित साहब की साम प्रवास है क्या श्वास है हैं हो। प्रमाण भी दें।

- (२) "जैनिमित्र" में श्रीयुत् पं काला राम जी शास्त्री का एक पहला लेख छपा है कि जो उन्होंने जिसी पं काह्य के प्रस्थ सुद्रण के खडन रूप लेख के उत्तर में लिखा था और उन्होंने गृन्थसुद्रण के खिलाए अविनय आहिक जितनी भी दलीलें थी उन सबका जवाब बड़े ज़ोरसे दिया हुआ है। अब श्री ष कलाला राम जा खुर क्रपया इस विषय पर प्रकार डालें कि आया वे अपने पहिले लिखे हुए उस लेख को गृन्दन समक्षतें और उसको रद करने हैं। और क्या वे यह भी समक्षतें हैं कि जिस समय उन्होंने यह लेख लिखा थाउस समय उनके चारिष मोहनीय कर्म का नीयू उदय था? अर्थात् क्या वे उस लेख को लिखने का कारण चारित्र मोहनीय कर्म के उदय को समक्षतें हैं?
- (३) अकसर यह लिखा हुआ दृष्टि पड़ता है कि हिंदी जैन गजटमें आर्ण वास्य नहीं छपते, क्या

हिंदी जैन गंजर में आर्ष वाक्य का अर्थ व मतलव और आर्षकाक्य के अनुसार उपदेश भी नहीं छएता यदि छपता है तो आर्ष बाक्य और आर्ष वाक्य के अर्थ व मतलब और उसके अनुसार उपदेशमें क्या

भेद है ? क्या आर्च बाक्य का अर्थ व मतल्य व उसके मनुसार उपदेश विनय के योग्य नहीं है ? उसराभिलाची:--

ऋषभदास जैन, बी, ए, बकील, मेरड

हाय देशबन्धु !

षालगङ्गाधर निलक को तो अभी रोते ही थे। आपके मरनेका गृम अह! हम अभी भूलेन थे॥ आज फिर यह और क्या आफत अचानक आगई खोट तेरे हाय भारत! और गहरी लग गई॥ देशवन्धु दास प्यारे हाय! हम से जिन गये। बोदकर हम निस्सहायोंको! फिनारा कर गये॥

देशके कल्यास हित तुम ! एक सखे भक्त थे। दीन-दुलियों के सहायक और एक काधार थे।। रोतेहुए इस दिलको अब क्यों कर भला हम धामलें क्या सहारा देख 'गोबल' आंसुओं को पींज लें। —गनेशीलाल बे॰ "गोबल" जोधपुर।

शङ्का-समाधान

महावीर भगवान् और उनका उपदेश-

नामक पुस्तक जो उपहार में दीगई है उसके उन शब्दों की ओर हमारा ध्यान जीवट के श्रीयुत मिश्रीलाल जी जैन ने आकर्षित किया है जी मन शुद्ध के। लक्ष्य कर एक बचन में लिख गए है। लेखक काम•बुद्ध का एक बचन में सम्बोधन करना खटका है। वे उसे पक्षपात अथवा उपेशना की द्वष्टि से लिया हुआ खयाल करते हैं। परन्त् उनकी विश्वास रहं कि म० बुद्ध का निरादर करने का मात्र वहां तनिक भा नहीं है। लेखक के हृदय में उनके प्रति उतना ही आदर है जितन। कि व्यवहारिक द्षिट से हो सक्ता है । तिसवर एक बचन में फेबल उनका हो संबोधन नही किया ज्या है।इस 🖯 पुस्तक में **जैन मुनियोंका** भी उल्लेख एकस्थान पर इसी रूप में किया गया है। ऐसी दशा में अनादर का सदेह करना मृथा है। हां एक बात इन जैनद हाशय की बड़े मार्के की है। आप म॰ बुद्र को सार्व अहंग्त-तुल्य मानते हैं। परन्तु यह बात बौद्धप्रन्धः "मिलि-

न्द पन्हो" (IV.I.19.) के एक कथानकले बोधित है। सर्वंब को किसी वात की अजानकारी नहीं रहनी चाहिये । उसको सब बातें सर्वकाल ही प्रत्यक्ष दर्पणवत् हर समय भलकता चाहिये। परम्तु उक्त बीद्धप्रंथ के कर्ता बीद्धाचार्य नागसेन म॰ बुद्ध के ज्ञान की इस प्रकार का नहीं बतलाते। यह उसे विचार पर अवलम्बित बतलाते हैं। वह कहते हैं u.. The insight of knowledge was not always and continually (consciously) present with him. The omniscience of Blessed one was dependent on reflection." पेसी दशा में एक जैन म० बुद्ध की सर्वज्ञता को करापि स्वीकार नहीं कर सका। कई अवसरों पर मन्तुद्ध ने प्रश्नों का उत्तर देने में भू भलाहर का अनुभव किया। और आस्मा एवं निर्वाणकं संबन्धमं कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया ! इस से भी उनकी सर्वञ्चता बांधित है। उनद्विष्ट से उक्त योद्ध कथन के बल हम कह सक्ते हैं कि म० बुद्ध की 'वाधि-वृक्ष' के तले 'कुभवधिशान' की माप्ति हुई थी। जाशा है,इस नार से मिर्भालाल औ ---उ० सं० का सतुष्टि होगी।

परिषद् समाचार

पुस्तक तेय्यार

मुजफ्फरनगर में परिषद् के स्वीरुत तीसरें प्रस्ताय के अनुसार सर्वसाधारण को जिन्धम की मानीनना और सिद्धारतों को सक्षेप में दर्शन वाली पुस्तक जैनधमभूषण शीतलप्रसाद जी ने तैय्यार करली है और अब वह पुस्तक संशोधनार्थ धान्य विद्वानों के पास गई हुई है सशाधन के पश्वात प्रकाशित की जानेगी।

ट्रैक्ट तय्यार्-श्रीयुत् चम्पतराय यैग्स्टर सभापति परिषद् कारा लिखित ट्रक्ट'सक्चा सुत्रा परिषद् की ओर से छपकर तय्यार हैं। विना मृत्य सुक्त "श्रीयुत् गननलाल मन्त्री परिषद् विजनौर" से प्राप्त हो सकता है जो भाई उसको देलना चाहे या जनता में बांटना चाहे बोस्टेज भेजकर मांगा सकते हैं।

सम्मेद्शिखिर पूनाकेस—सम्मेनशिखर पूजा केस की प्रवी कौंसिल में पैरबी के लिये श्रीयुन् बम्पतराय सभापति परिषद् सिनम्बर १८२५ के बन्त में इक्कैण्ड जा रहे हैं।

सूचना—पं॰ भंवरलाल जैन विशारद ने परि-चदु की उपदेशकी का कार्य ट जीलाई १६२५ से छोड़ दिया है।

जैन कलारों में प्रचार का कार्य बरावर जारी है। पं० प्रभाचन्द्रजी प्रचारक परिषद नागपुर में रह कर कार्य कर रहे हैं। जैन कलारों की पुनः धर्म में क्षगाने के हेतु जैन धर्माचलियों की पूरी सहा-यता पं० प्रभाचन्द्र की देती चहिये। धर्म से भूले हुए माईयों को पुनः धर्म पर आकड़ करना समाज का हिथति मंग है।

रिपोर्ट दौरा पं० घेमचंद्र पंचरत्न

मध्यवदेश

१६ से ३० जून, १८२५

भादापारा—(रायपुर) १६ जून को आये। दो सभाये हुई। आवक वर्म पर भाषण हुआ। म् भा-ईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा यहां की पंचायत ने बाल-गृड विवाह तथा वेश्यानृत्य बन्द करने तथा मन्दिर जी में खादी का वस्त्र रखने का यसन दिया। यहां की जैन संख्या ४० ई। ४) ४० डपदेशक फड को प्राप्त हुए।

नेयरा (रायपुर)-१७ जून। मिथ्यात्व खण्डन पर ट्याख्यान हुआ व वेश्यानृत्य. आतिश्वाजी, कन्याविक्यात्व वृद्धविषाह को प्रथा वस्त्र कराहै। मन्दिर जी में खादी का षस्त्र प्रयोग में लाने तथा १२भाईयों ने स्वाध्याय का बचन लिया। १०)रु० उपदेशक फण्ड को प्राप्त। जैन सख्या २७।

नवापारा (रायव्र) १८ से २० ज्म । समाज सुधार पर व्याख्यान व शास्त्र सभा हुई । जैन जन-संख्या ८०। एक नवीन शिवरवस्त्र मन्दिर तथ्यार हुआ है। उसकी प्रतिष्ठा अगहन में होगी। यहाँ के भाइयों ने ग्रेश्यानृत्य, आतिशवाजी कत्याविकय बाल-वृद्धविशाह की प्रथा बन्द करने तथा मन्दिर जी में सादी के बस्त्र रखने का बचन दिया। ४,६० उपशर्क फ्रन्ड को प्राप्त ।

रायपुर-२१ जून । शास्त्र सभा हुई, ६ भाइयों ने स्वाच्यार तथा मन्दिरजी में खादी के वस्त्र रखने का वखन दिया। यहां एक मन्दिर और एक सैत्यार क्रय है। मन्दिर जी में ३ प्रतिमा स्फटिक मणि की हैं। रायपुर से ३० मील आरङ्ग स्थान पर प्राम्यान जीर्ण मन्दिर है। रायपुर के भाइयों को प्रतिमायें मंगानी चाहिये। उपदेगक पण्ड को ५) रु० प्राप्त।

द्रग-२२ जून। जुकाम होने के कारण स्वयं शास्त्र न पढ़ सका। सेठ बद्दीवसाद जी में शास्त्र बाँचा नथा वहाँ के भाईयों को परिषद् का परिचय फराया। सेठी मोदनलाल जी ने मन्द्रि जी में सद्दर के एस रखने का बसन दिया।

स्टेट नोद्गांव-२४ ज्ञन। "बन्सात में जैलियों का कर्नच्य" इस पर ज्याख्यान दिया । यहां पर स्वाध्याय का प्रचार अच्छा है।

हुँ गरगहुं —(स्टेंट) २५ जून। जैन जनसंख्या ४०। यो शास्त्र स्था। और एक उपदेश समा हुई "सुख का कारण भर्म हैं" इस पर व्याख्यान दिया यही के भार्यों ने वश्यान्त्य,आतिशवाजी अश्लील गाने, कन्याविकृष आदि प्रधा चम्द करने तथा मन्दिरजी में शुज स्क्दो रखने का चच्च दिया तथा ५ भार्यों ने स्वाध्याय का स्थन दिया शा।) उपदे-

मोदिया — (भड़ारा) भाइयों के एक बारात में जाने के कारण कार्यन हो सका

नैनपुर — (मांडला) २० जून । दो शास्त्रसभा और एक उपदेशक सभा हुई । बार गयाप्रसाद बायम्य ने मांन मदिया त्यागने व भूठ न बोलने की प्रतिज्ञा की यहां के भाउयों ने वेश्यामृत्य व कन्याविक्य आदि प्रधा वन्त्र करने य चार भाउयों ने स्वाध्याय का नियम लिया २०) उपदेशक कर इ

उपदेशक रिपोर्ट पं० भंवरलाल ह् गरपुर स्टंट -ज्येष्ट स्रुती ६ से आषाद बदी

ए। यहां पर ३५० घर दिगन्य श्वेनाध्वर जैनियों के हैं। परम्पर मेल हैं यहां पर दो व्याख्यान गृहस्थ धम च समाज की चर्नमान दशो पर हुए। जिनका बहुत अच्छा प्रधाय जनता पर पड़ा। यहां पर एक जैन पाठशाला है। जिसका कार्य, पठमकूम बहुत अच्छा है। यहां पर एक दिगम्बर जैन धर्मशाला बन रही है। और एक पब्लिक लायब्रे सी है।

उद्यपुर—२५० घर दि० ब २०० घर को० जैतियों के हैं। यहां पर १६ व २० पःथी आम्नाय में आपस में फूर है। जिलका मेल का प्रयत्न किया परन्तु निष्पल हुआ। सेठ माणिक धन्द्र की की ओर से एक जैन पाठशाला चल रही है। पाठशाला में एक व्याख्यान विद्यार्थियों के कर्तव्य पर हुआ। जिससे बालसभा का सङ्गठब हुआ। यहां पर चार शास्त्र और एक व्याख्यानसभा हुई। अप्रवाल मन्दिर के प्रवश्वकों ने शुद्धावारी के बस्ब मन्दिर जी में रखने का बचन दिया। प्रयश्व कश्ने पर एक कश्यापाठशासा स्थापित हुई।

देवबन्द---आवाद सुदी ६ । शास्त्रसभा हुई और व्याख्यान हुन, यहां एक पाठशास्त्र है।

मुत्रफ्फ्र्नगर—शास्त्र सभा में गृहस्थवर्म पर विवेचन किया।

सहाद्ग् -आयाद्सुरीशको सभाये हुई। बाल बुद्धविचाह कन्याविक्य आदि पर व्याच्यान हुए।

रिवाही—दा ध्यास्थान सभायें हुई। यहाँ पर जैनिमश्रमण्डल, जैन पादगाला व कम्याशाला उपयोगी संस्थायें चल रही हैं तथा एक स्थानाय दिमस्बर जैन परिवद स्थापित होने बाली है। जैन अन संस्था ३५० है।



समाज

-- श्रावश्यक्तायें (१) चार योग्य कत्याओं के लिये वर्रों की जो जातीय संकीर्णता से परे हीं, श्रास्म-निर्मर हों-और नवीन विचारों के हों। (१) तथा बिवाह योग्य कत्याओं की जो योग्य हों, शृहकार्य में निपुण हों और शिक्षा प्राप्त हों। केवल वे ही मावा पिता या सज्जन पत्र व्यवहार करें जो जैन समाज में अंतर्जातीय विवाह संबंध से अस-म्मत न हों।

-जैनेन्द्रकुमार जैन, मन्त्री जैन सेवक सघ, पहाड़ी घीरज, विल्ली। -- श्रनाथालय षड़नगर में अनाथ बच्चे रहते हैं जिसका मार समाज पर है सहायता दीजिये।

—दि॰ जैन मालवा मां० सभाश्रित शुद्ध श्रीषपालय बढ़नगर-अपनी २०० शाला-श्रोंके द्वारा भारत तथा चिहेशों में कान्यों रोगियों की सेवा "विमामूल्य" पवित्र श्रीषियों से हंजा प्रेग रन्फतृरांका शादि रोगों की कर रहा है यहाँ का कार्य भाष उदार महानुभावों की सहायता पर विश्लंद है सब को सहायता करनी चाहिये।

-- खतीली में आबाद छुदी १ को जैन धर्म

के सिद्धान्त विकास के अर्थ एक संस्कृत िद्यालय का मुहर्न श्रीमान् न्यायाचार्य पडित गणेश प्रसाद जी वर्णी क्षारा होगा सब भाइयों को प्रधारना चाहिये।

-द० गेंदन लाल ।

-पानीपन, ना० २४ जून २५ को जैनहाई स्कृत के एक कमरे की फास्डर-डेशन (भीव) अम्पाला निवासी श्रीमुन् लाला बब्तावर लाल जी रईस के हारा रक्की गई। नीव रखते समय एक साल पहिले दिए घचन के अनुसार श्रापने १०००) एक हजार इपया भी नकद दिया।

इस स्थाल को एक वडे दोडिङ्गहाऊम (छोषा-लय) की आवश्यकता है। जिसमे २०० विद्यार्थी • इ सकें। दानी महानुभाषींसे प्राथना है कि शकि अनुसार आर्थिक सहायता दें।

-मैनेजर

भा० दि० जैन पद्मावती परिषद्

समाचार

—ता ० २६ जून को मौड़ा जारखी में ६ युषक तथा लड़की का पूज्य ब्रह्मचारी शांतल प्रसाद जी के बार कमलों सं योग्य विधि पूर्वक समारोह के साथ पक्षोपर्यात संस्कार हुआ। ला० छंदालाल जी रांस के सभापितत्व में वृहत् सभा हुई जिस में सभापित के हाथ से सभी में ब्रह्मचारी जो की सेवा में अधिनदन पत्र, अर्पण किया गया।

पद्मावती परिषद्ध हारा एक मुक्तदमें में एक जातीय भगडे का निर्णय किया गया।

---मंत्री

— जीवद्या सभा की तरफ से पैड़त की विलि दिसा जंद करने का पूर्ण उद्योग हो रहा है। ति प जुलाई को सरदार श्याम सिंह जी के पास डेपु-टेशन जा रहा है। हिसा बंद होते की पूर्ध उम्मेद है पहिले कलक्टर साहब से मिला था। रक्षा हीघन के अवसर पर मूक पशुनी को हिसा बन्द करने के हतु जीवद्या प्रवारिणों सभा की सहा-यता करनी चाहिये। नाम देने की ज़करन नहीं है। वाबू राम मंत्री

जीवह्या आगरा

—एक पद्माननी प्रधाल के िवाह में वेश्या नृत्य समाचार को लियने हुए हुट्य फटा जाता है, कि मांजा रिसाल का बोस, जिला यागरा के जगन सिह के भती जे गम प्रसाद विद्यार्थी जिल्म न अभी बनारस स्वाप्तद पाठणालामें काच्यनीर्थ की परीक्षा पाम कर यहां अध्ययन कर रहा है बगन जारची गई थी। इस बागनमें वर के बड़े भार पर सीपम चंद जी धर्मास्यापक जैन हाई स्कुळ पानीपत, और कई बिहान सिमलित थे। इस के बिहाह में नाच के लिये हो वेश्याप बुलाई गई थीं। पञ्चायन और कुल धर्मातमाओं के विरोध करने पर भी जिस समय शास्त्र ब्याय्यान का बुलाबा दिया जा रहा था उसी समय इन्हों ने रंडो का नाच कराया, गृगीय बनकर समाज के इध्य का दुह्यथी। करने

बाले इस घराने की तरफ कि जिस के ३-४ विद्यार्थी अब भी मुफ्त का भोजत वस्त्र आदि पाकर शिक्षा पारई हैं, क्या समान अंग विद्यालय इन से अपना चर्चा वसूल कर आये दिना सर्च दाखिल न करने की योजना करेंगे ?

--- एक बगाती

दु: खित पुकार की हमारे पास केवल सौ प्रतिया शेप है, इस इसरा पर्डाशन करा रहें हैं अगर धर्मार्थ बांट ने के लिए कोई धर्मात्मा हजार पांचसी प्रतियां छेना चोहें सो हमको लिखें हम एक हजार काषी का केवल २०) स्पयं छैंगे कम से कम आधा रुपया पंशर्गा आना चाहिने।

> पी० सी० जैन मोती बटरा आगग

— नवीन स्वतंत्र पत्र जैन जगत का जन्म सर्व दिगम्बर जैन मतावलिक्यों को यह जान कर हवं होगा कि दिगम्बर जैन समाज के विभिन्त विचार जील विद्वानों में परस्पर सहानुभृति पैदा कर उन्हें पेत्रपता के सूध में संगठित करने, समाज में शिक्षा व सदाचार का प्रचार कर कुरीतियों व किंदियों को हटाने, य जैन य अर्थन समाज में दिगम्बर जैन धर्म के बास्तविक स्वक्ष्य का दिग्दर्शन कराने के हेनु, एक स्वतंत पत्र जारी करने की योजना की जा रही है प्रत्येक व्यक्ति को, जिसे अपने आपको दिगम्बर जैन कहलाने का अभिमान है, इस पत्र हारा अपने विचारों को प्रकट करने का अथसर प्राप्त होगा। पत्र की नीति बिलकुल किंप्यक्ष रहेगी।

अन्येक विषय के पक्ष में तथा विषक्ष में दोनों ओर के लेखों को यदि वे शान्त य शिष्ट भाषा में लिखें हुए हों। बरावर स्थान दिया जायेगा।

मृत्य केवल २) क० वार्षिक हाना चह छमी पाक्षिक रूप में अन्तमेर से ग्लावन्थन पर प्रकाशित होगा। इसका प्रथम प्रथन किया जा रहा है।

सभी महाश्रामं से पत्र का श्राहक स्वयप् वनने ब अपने इष्ट विजों को बनाने तथा अपने र विचारों को प्रकट करने के अर्थ लेख व दाविता आदि भजने के लिये प्रार्थना है।

> फतह चंद खंडी सरावगा मुहल्ला, अजमेर

वरों की आवश्यका

(१) अग्रवाल जैन जाति उच्च घराने की चार सुयोग्य पढ़ा लिग्बी कन्याओं के लिये योग्य वरोंकी आवश्यक्ता है। कन्याओं की आयु १३ से १५ वर्ष तक की है। दी कन्यायों गोयल गोत्री व दो गर्ग गोनी है। खड़के तनदुरुस्त पढ़े लिखे कार्रावारी हों।

--नं ० १०१ "वीरण काट्यांताय विजनीर

दं श

-कल्ला के के वैरिक्टर श्रीयुन जेंग्यान्येन गुप्त को कार्योय देशवन्यु विकार जनवास के क्यान पर पंगार के स्वराज्यक्त व कांग्रेस का नेता चुना गया है। श्रीयुक्त सेन गुप्त ने अन्यक्ष्योग के आरम्भ में वैरिस्टरी छाड़ दी थी। परस्तु आर्थिक कठिनाई के कारण वे पुनः धैरिक्टरी कार्यहें हैं। ईक्टर्स श्रीताल रेखवे की हड़ताल में कृत्तियों का नेतृत्व गृहण कर वे तीन महीनों के लिये जेल भी गये थे। श्रीहल ्ययम्यापिका सभा में देशवर्षु की अमुपस्थिति में पार्टी का नेतृत्व भी वेहा करने थे।

नया कलपःचा कार्योदेशन के मेयर पद पर नियुक्त करने का विचार हो रहा है।

२६ जून-को महाबीर पुस्तकालय में कल-कर्स के दिन• जैन समाज की ओ• से समा हुई, न्यामी श्रीयुत् चित्तरव्जन दास की मृत्यु पर शाक तथा उनके कुटम्ब से साथ सम्वेदना प्रकट की गई।

यक्तरात्—अव के यक्तरीत् सय स्थानी पर शान्ति के साथ व्यतीत हो गई केवल कलकक्ता के कुछ हिंदू मुसलमान कुल्यों में मगङ्ग हो गया धा जो शांग हो गया।

माधानरेश चारे ही आधिक सङ्ग्रह में बताये जाते हैं। और उन्क लिये पंड एकत्र करने के याक्ते गुरुद्वारा प्रयन्धक कमेरी से निवेदन किया है।

देशक्षपु, स्मारमफड में दान देने की अवधि ३१ जुलाई नवा बढ़ा दी गई हैं। अवतक ३॥ लाख के लगभग स्वया एक्ट हो गया है।

पिएडत मोनीलाल में के अस मी २० जुलाई त्रक करूकते पहुँचने बाले थे। अब एकतार मिला है कि उनको अवस्था सीपण है सम्मध्ता इस मास तक करूकता ने आ सकेंगे।

--- ३ जुलाई को देहली की हालन और पहाड़ी पीरण का दर्नाक हर्य तमाम शहर खुलसान बना हुआ है, छिडुओं ने नो अपनी तमाम दुकानें २० जुन से ही धंद कर रक्की थी जब कि सौधरी लोडनसिंह और उसकी पार्टी के बादमी फिरफ्तार होगव थे, और हिस्हु- सुस्लिम समभौने की कोई स्रत आपसमे नहीं निक स्रती मालूम दी। लेकिन मुखलमानों ने देव की समक्ष से ३ ज्लाई से अपनी वृकाने बन्द फरडी।

कीक द वर्ते सुवर के एक गाय निकली। उस के साथ २ क्रसाई थे और खुद डिप्टी क्रमिण्नर । एक क्साई आगे हाथ में रम्सा पकड़ें हुए था। कीर गाय भी ऐसी मालूम देनी थी, कि खुद उन के साथ क्दम यहाथे अपने आग को क्यांन काने आ गत्ते हैं। १५ मिनट बाद एक और गाय थाए। हिन्दूगाव की नरफ से आई इस के साथ भा २ ही क्साई थे। दोनों लस्बी २ मुंखी वाले ई युक्ती खुणी में नए कपड़ें पतने हुए, जारी २ कदम बहाते हुए इस सक्षाटे के गज्य में गाय के। रम्सी ले पकड़े हुए जारहें हैं चेंदरें पर उदासी छाई हुई

१५ मिनद बाद तीसरी गाप निकाली गई। इस तरह आध धण्ड के अन्दर २ यद दद्वाक तमाशा ख्तम हो गया । मोरे सिपादियों का गदरा हटा लिया गया, लेकित उसी तरद खुप और सम्राट का राज गहा।

है बज़े रास्ता ग्युल गया। पडाडी घीरत के रास्ते, जरों से अन्साल से कोई गो नहीं निकली थ', सारकार की मदद से निकल गई। सारकार का सिक्का लोगों के दिली पर जम गया कि सार कार मदार्शक शाली है हर कीम की कगर, बाहे दिंदू हों या मुसल्हमान, जब बाहे तोड़ सकती है।

यह शोक्ताद दृश्य हिंदुओं को जनला गड़ा है कि समाम सनातनी हिंदुओं और जैनियों को संगरत और शुद्धि पर जान लड़ाकर कोशिश करनी चाहिए शिकि गो मसकों का गौ रक्षक बनासक। विदेश

—लाई वक्रत हेड का एलान-भारत के पंत्री लाड वर्कन हेड कई गास रे लाई वीहिंग भारत के वाइस गाय के साथ भारत की अवस्था व उसकी शायायत उन्तत पर सलाह कर रहे थे अन्त उ उसकी गायात होगाया । १६२६ से पहिले कोरे रायल कर्माशन (Royal Commission) भारत के सुपार सम्मान्धी नहीं मुकरिंग होगा। मुडी नेन की जो बहुसन की रिवेर्डिंग उसकी प्रयोग में लाने का प्रयान किया जायगा और जी रिवेर्ड लघुमन (आर्तियों) की है उसकी अनुसार कुछ न होगा। भारतियों को सहयोग करना चाहिये। असहयोग की लोड के अय तक भारत के सब नेता सहयोग न फरोंग तह तक कोई विचार न होगा।

ठीक है जैसे आ रेशलन गिरता जा रहा है वैसे ही अरेज अफसर सकत होत जाते हैं। स्वराज्य मांगने से नहीं गिलता!

्नान की स्थितिके सम्बन्धमें एक नयी बात यह भी हुई कि चीन स्थकार ने स्थब्द रूप से इस , बातकी घोषणा करदी कि चीन की वर्तमान स्थित मैं बोळगोजिकों का जग भी हाथ नहीं है। खीन के दृद्य गत भा। की यह स्थिति एक स्थतंत्र फिळ है।

ारी को में स्वतः त्रता का युद्ध-मोरको बड़ी कीरका के साथ अवनी स्वतः त्रता के लियं फृष्टि से लह रहा है उसके मेता श्री अव्युक्तवारी के पास केंद्र लाल के लगभग सेना है अवनक युद्ध में फ्रांस्य का गानि उठानी पदी है। श्राहा है कि मोरक्को का अवने उद्देश्य में बहुत कुछ सक्तलता होगी।

स्वर्णापदक या नकृद!

सर्वोत्तम चित्र पर !

'बीर" के मुख पृष्ठ पर हमारा विखार एक भावपूर्ण तिरंगा चित्र प्रक्रट करने का है। अतदब हम सर्व चित्रकारों को इस पत्र की रीति नीति का ध्यान रखकर भाव पूर्ण चित्र भेजने को सादर आमंत्रित करते हैं। चित्र ता० २० अगस्त १८२५ तक हमारे पास आ जाना चाहिये। सर्वोत्तम चित्र के चित्रकार को एक उत्तम स्वणंपदक अथवा उसका नक्तद मृत्य सादर प्रदान किया जायगा। चित्र का भाव या तो भगधान महावीर के जीवन से संबंधित हो अथवा "बीर" के अनुकुछ कोई मौलिक चित्र हो। विश्वास है कि हमारे विय चित्रकार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

हम उन महाशयों के भी आभारी होंगे जो इस विषय में क्षपने विचार प्रकट करेंगे । जिन्नी का उचित मृत्य यदि वे चाहेंगे तो दे दिया जायगा । शीधना कीजिए ।

---प्रकाशक 'बीर" बिजनीर।

एजेन्ट चाहियं, नमूना सुफ्त

दाद को जड़ से खानेवाली दवा

दड़हर मरहम

अगर फायदा न हो तो दाम वाधिस । एकथार मगाफर देखिये । विशेष हाक के लिये कैटलाग सुपत । शीशी ।) दर्जन २॥) क० । डाक महस्तल माफ ।

पता---श्रीगणेश चिकित्साभवन, नं । ५ दमोह (सी पी)

विषय-सूची

				•			
Ħ	० त्रिपय		पृ०सं∙	मं० विषय			पृ० सं•
Ł	वीर-चिमय (कावेता)	•••	४७१	⊭ विहानी से प्रश्न	***		ध≈६
2	प्राचीन जैन साहित्य के नमूने	•••	५ ७२	६ हाय !देगवन्धु दास !	•••	•••	828
3	जैन दाकान्त्रय कमेटी पर विचार	• • •	४७६	१० शहा समाधान	• • •	•••	853
*	जैन विधवाएं और हमोरा कर्त्तब्य	• • • •	શ ૭૭	११ पश्यिदु समाचार	•••	•••	RCE
¥	आशा और निराशा ···	• • •	2E0	१२ संसार दिग्दर्शन	• • •	•••	850
Ę	सम्पादकीय टिप्पणियां	•••	: 8 ⊏ ₹	१३ स्वर्णपदक यानक्द	•••	•••	858
S	ांभिये पहिले पानी पाल!	•••	とする	····			

जगत्प्रसिद्ध वनारसी दस्तकारी।

शिचाँदी के फूल भाव १।) तोला-- सोने के चढ़े फुल भाव २।) तोला किया (त्रिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सुवी) हर श्रद्द कम व वेश जितने तोल चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगन।

२५०) से ३०००) क्ष्यैंधनचार 200) # 400) ५००) में २०००) **ऐराब**न होदा ५६) से १५००) समीसरनकीरचना२५०)स१०००) १०००) से ३०००) श्राम्वार्ग इस्ट एक १००० से १५००) १००) से २०००) । पश्चमेर पालकी 30) # 204) **अस्मिद्दासन** ३००) से ५००) *अष्टमङ्गलहृत्य १००) से २००। रेवल **%चॅवर एक** २०) *श्रष्टप्रतिहार्य १५०) से २५०) हार्थाकासाज५००) से १०००) रक्ष) से **%म्बर** भाइकामाज २००) से ५००१ क्ष्मोलहम्बद्धे १००) से ५००। ४५) सं ३००) क्षचीकी you) # 1000) <u>%यहत्त्वम्</u> २००) से ३०००) *|भीमगरल | ३०। से २००) समासग्न क्ष्मीटा पुका से 34) पुक्त पुक्का अञ्चत्रमा इंडो - ३०) से 4001 श्रहाई द्वीप की । १०,में ५००) रचनाकामाँहला । तस्वत चाँडों के २००) से १०००) जैन-सस्टिर के उपकरण । बारहद्रशी २५००) से ५०००) मन्धकर्या २५००) से ४०००) तरह द्वीप की (प००)सं२०००) रचनाकामोंडलः (प००)सं२०००) प्रान के वस्तन३००) सं (प००) वरी 200) A 8000)

्राह काम वाजिय क्यादन लेकर वनवा देने हे. मस्टिर जो र काम में कं≈) से कड़ा की व्यादन लेने हैं। दिस चिक्र का बाज नेपार भी रहता है । ॐये चार्ज नोबें को बनाकर मोन का मुल-मा होना है।

- पता (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द्र कुञ्जीलाल, मोती कटरा, वनारस ।
- (२) जैनसमाज कार्यालय सिंधई फूलचन्द जैन. कार्यालय, चॉर्दाविदास बनारस सिटी | Tel. Address— SINGILAL BLNARIS

गारं श्रोर खुबस्रत होने की द्वा।

शहजादा जिस-श्राफ्-बेल्प की सिफारिश में है। लामहेन साहव ने महाराज मेसूर के बास्त बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने स गुलाब के फूलकी की रक्षत श्राजाती है मुह पर स्थाह दारा, सु ह से फीटा फूल्यी,दाद खाज हाथ पाँच का फटना, बगल में बदब्दार पत्याने का श्राता द्रत्याहि सबको साफ करके चमहे की नरम करदेती है। यह फुलोसे बनाया है इसका खुगब श्रसें नक बदनमें से नहीं निकलती। कोमन र शीशी श्री रुपया 3 शाशा के खरीदार का र शीशी मुफ्त। डाकट्यय ॥

पताः - महस्मद अफ़ी र पण्ट को० आगरा ।

वालरचा सप्तरत वक्स।

बहुधा देखने सुननेमें श्राता है कि छोटो श्रवणा क श्रनेक वालक रोग मणान पमला, श्वाम खोमा लहक दस्त. सृक्षिया, उबर नेत्रपोडा, गलगगढ़ श्रादि में फँमकर मरजाते हैं श्रीर टम लोग उनके माता पिताको भृतादिक की बाधा भपटा, नजर बताकर लटते हैं परन्तु श्राराम नहीं होता। हमने इसकेलिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शास्त्र होते है। तो ४०वर्ष से धड़ायड़ विक रहे हैं जिसके श्रनेक सार्टीफिकेट मीजट है एकबार परीजा श्रवण्य करें। म०१०) डाल्यल क्रनेशाल

मिलने का पता - ज्योतिष स्त्नभूवन फरु खनगर (एञ्जाव)

ादि याप व्यापास वहाना चाहते हैं नार्थारसंख्यमना विषय प्रवश्यहपवादय

- वीय को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पहना है।
- क्षि हरएक जैन म्कृल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।
- भाग प्रार्मिक पत्र होने के कारण ब्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।
- वीर : उच्चकोटि का पान्तिकपत्र होनेसे फ़ड़ान में रक्त्वा जाता है। स्त्रीर बार वार पढ़ा जाता है।
- ्रीः एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्क्री कर रहा है।
- विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा। र्शाव पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट सालुम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट वढ़ जाने पर पछनाना पड़ेगा।

यनाः-चीरं कार्गातवः त्रंत्रमार्गाः

वर्ष २]

१ अगम्न सन् १६२५ ई०

[संख्या १६

भीव*ई* मानायनमः ।



र्श्राभारतवर्षीय दिगस्वर जैन परिषद् का पाद्मिक पत्र ।

श्रान० सम्पादकः— कें,०घ०भृ०,घ०दि०, श्री ब्र० शीतल्प्रमाद जी श्रान० उपसम्पादक — श्री कामनाप्रसाद जी



প্রান্ত একাসক—

ग्रावस्त्रपुर्वाक्षः प्रकृतिकारः । प्रविक्तीः । । प्र

सावधान!नई खुशखबरी!! सावधान!!!

चांदी के कार्गगरां ने मन्दी के कारण मजदरी घटादी।

 श्विमी मज़र्द्रों नकाशीदार फेल्मी काम जैसे वेटी, शलकी, सिहासन, चवर, छत्र श्वादि)॥ भरो मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली लोटा, गिलास वर्गरहर ।

शीव ही कुछ आडर भेजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये।

हमारा उदेश्य जाति व समाज सदा है।

श्रीमन्द्रिरजी के हर किस्स के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते हे श्रीर तैयार भी रहते हैं। चंबर, लिहासन, बेदी,नालकी अष्टमहलद्यः अष्टप्रतीहार्यः, मुक्टः, मेरः, भीमगडल श्रादि । तार्व के उत्पर सोने का वरक चढे हुए सामात, पत्र्चमेर, शिखर कलश. कलगी, जरदोजीका सामान जैसे चन्द्रोवा परदा,श्रद्धार, बन्द्रनवार इत्यादि । मीताराम लहरीप्रमाद.

हमारे अन्य कार्य ।

きょうきょう きょうきょう

हमारे यहाँ वतारखी साडियाँ, साफे इपट्ट कमरूबाब, पोत के धात, ईसकाफ काशा लिलक के थान इपट्टे साफ़े दावती गोटा पट्टा प्रयो साहा तकवा बगेरह :

ताति सेवक---

सीताराम लहरीप्रमाद, सराफा, बनारस

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, कार्णा ।

De the state of the second the tension of the second of जिवयातीस (शुकर-प्रमह) का वैज्ञानिक स्त्रार पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड युनावर्भिंदी श्रमरीका के यांग्य वैद्य जिवयातीय जाम्लिन किला श्रीर गलन Allen साहबान के नरोके-इलाज(जिलका तमाम विजान ज्ञातमे शामाणिक और पुण माना हुआ है)के मुनाबिक डा० वस्तावरासित जेन एम० इं(०) श्रमरीका / मटर वाजार देहली का श्रपने मराजी पर बद्दत कामयावी हास्तिल हुई।

ि—मुभो इस तराके उलाज से कर्ता अगराम होल्या है । मैने महाराज साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो। मुक्ते शकर-प्रमेह की वामारी लगी हुई थी उसमैं इस तरीके के इलाज से विल्कुल श्राराम होगया है।

- द० कनल विमय शम्भरजङ्ग वहादुरः । Loreign Minister, Nepal दहली । १- श्रापने इस तरीके इलाज से मेरे ज़कर-प्रमह गंग को बिरुक्तन श्रच्छ। कर दिया । मे वडा मणकर है। धीनलप्रमाद राजवैद्य, चॉदनी चौक, देहली।

 तीन चार साल से मुक्ते शकर नामेट रोग ने तहकर डाला था लेकित श्रापके तरीके हलाज ले विल्कुल ठांक होगया है।

जानकीप्रमाद गाजवैद्य, चाटनी चौक, देहली।

४—मुक्ते यह वर्गका-इलाज बहुत मुफीट सावित हुन्न ।

र्मित्रसेन हैन रहस, कांद्रला ।



वर्ष २ {

षिजनीर, श्रावण शुक्ला १० बीर सम्वत् २४५१ १ अगस्त, सन् १६२५

可蒙 {&

माता का रत्ता बंधन

पूर्व पथा, अविशिष्ट कीर्ति इन हीन हुई हूं।

विगत मान, प्रतिभा विहीन हा ! दीन हुई हूं।।

दोवानल मय तुच्छ वारि की मीन हुई हूं।

कुटिल काल के किंवा मैं आधीन हुई हूं।।

इाय शोक ! दुर्भाग्य ! हा !! कैंसा विधि का चक्र है।

शीछ पथारो नाथ क्यों ? दृष्ट द्यानिधि ! वक्र है।। १।।

स्वार्थत्यागि ऋषियों ने जीवन दान दिया था ।
गार्डस्यों ने वचन सुधारस पान किया था ।।
विद्वानों ने पम प्रचार पर्याप्त किया था ।
धन पुत्रों दारा वश विश्व व्याप्त हुआ था ।।
चनकी संतति सात्र हा ! व्यक्तन विषय घद लिप्त है ।
हुस्य सरंबर शुरुक है, ज्ञान बारि से रिक्त है ।। २ ।।

हा ! विलोक दुर्दशा निहत होता अन्तस्तता ।

भनी, समर्थ सुनों के संद्वस भी म सुभे कला ।।

बीर्ण शीर्र्ण तन मम बस्स भी नहीं पाप्त है ।

धोर निराशा आपतियों से हृदय ज्याप्त है ।।

दीमक, सूषक मोह युत मोजन पात्र बना रहे ।

काराब्रह में ज्यस्त हूं प्राण हरे ! अञ्चला रहे ॥ ३॥

प्रथमानुयोग की साची

वाहों को स्था कर परस्पर विशेष की अपन सुलग रही है। एक से अधिक व्यक्तियों में एक विषय पर ही विभिन्नमत होना स्वाभाविक है। परन्तु उसके यह माने नहीं हैं कि अपने से विशेषी मत को रखने वाले को दुश्मन समझना आवश्यक हो। विलायत में तो पेसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनमें स्वयं पिता-पुत्र और पति-पत्नी में मत-भेद है परन्तु उन के पारस्परिक प्रेम में तिनक भी

अन्तर नहीं है। आर प्राकृतिक रूप में चाहिये भी यही। जिनेन्द्र अगमान का भी आदेश यहां है कि विपक्षी से भी द्वेष न रक्ता जाते। उसे हित भित यखनों द्वारा उचित दलीलों से कायल कर देना खाहिये। महाराज भेणिक का उदाहरण भी इस ही बात की पुष्टि करता है। महाराणी चेलनी अहाराज भेणिक के बौद्ध गुरुओं को विनय न कर निर्युन्य गुरु की विनय करने का भाग्रह करती हैं। सहाराज समकाते हैं। सहाराणी उसका निराकरण उचित शन्दों में करती हैं। महाराज अंणिक उन्हें बनकी रुचि अनुसार जिनेन्द्र मगवान का पृजन करने देते हैं। इस मत विरोध से यह उनके हो वी नहीं बन गए। परन्तु आजकल उस्टी गंगा यह रहीं हैं। बुद्धिमना इस ही में समभी जाती है कि जिससे मतभेन है उससे देव रच्छा जावे। उसे अपमानित किया जावे। तरह २ के भूठे ते। हमत लगाये जावें। अपनी मान पुष्टि में शालों के अर्थ को अनर्थ किया जावे। वास्तव में यह पांदित्य नहीं है। धर्म का सच्चा पढ़ित और जानकार तो वही है जो उनके अनुसार वर्तन करे, अत्यव धर्मके पांदित्य का दावा करने वालों को कम से कम धर्म प्रभावना के लिए धर्मा जुकूल आधरण करना आवश्यक है।

साम्प्रत जैन समाज में जातिसेट-विधवा विवाह और स्वृशास्पृश्य पर मुख्यतः मतभेद का नाण्डवमृत्य हो रहा है। जातिभेद का लीप होता इस तकवीज़ सं समभा जारहा है कि जैन जोति की उपजातियों में परस्पर विवाह संबंध होने लगे। जैन शास्त्रों में इसमें बिरोध नहीं मिलता। आचार मन्यों में परस्पर वर्णों में विवाह संबंध करने का विधान मिलता है। इस कर्मगुग के आहि में मनुष्यों को भी ऋषभदेव ने वर्णों में ही विभाजित फिया था । कोई खंडेलबाक आदि उपजातियाँ किसी भी तंथिंकर ने नियत नहीं की थी। यह क्षातियां तो विविध वंशी के कपान्तर हु जो मत-भेद व देशभेइ अदि के कारण अलग अस्ति व में भागईं। इस के शास्त्रीय और शिलाखेखीय प्रमाण उपक्षक्ष हैं। ऐसी दशा में इन जातिक्यी वंशों के मनुष्यों में परस्पर विवाह न है।कर दूसरे जातिकपी बंश में है।ना बाहिये,अर्थात् खडेलवास,का विशह

खंडेलबालों में न हाकर भन्य अववालादि में होना काहिये। यही धात शास्त्रीमें जो 'जाति' और कुल' की ब्याब्या दी है उससे प्रकट है। मुलाबार में साफ लिका है कि माताका पक्ष संसानको 'जाति' है और पिता का पश 'कुल' है। इसलिए एक ही काति या कुलमें विवाह करना युक्तियुक्त नहीं है। अतएव जैन समाज की उपजातियों में पश्हार विवाह होने से जाति का लॉप करापि नहीं हो सका। तिस पर पराण भन्धों सं हमें उदाहरण मिलते **टैं कि परस्यर उच्च-नीच बणों में** भी विदाह होते थे। ऐसी दशा में समय जैन स्नाज में विवाह संबंध से जाति और वर्ण भेर का लोप नहीं होगा। दसरे विधवा विवाह की आवाज मिण्या है। जैन समाज में कोई भी विधवा विवाह का प्रचारक नहीं हैं. बह तो उन लोगों को बदनाम करनेका एक उपाय है जो पंडितों से सहमत नहीं। हां विधवाओं की इशो सुधारने के लिय और दिया जाता है। उनकी सुष्टि के कारण बृद्ध विवाह, वालविवाह और अनमेल विवाह की जारोंके साथ रोकने की आवाज उठाई जानी है। जिनके प्रति पश्चितों की मुलायमि-यत की निगात है क्यों कि रनसे खास का धनी सेठों को काम पहला है। उन्हीं की पदौतल यह करीतियां प्रचलित है। और इन संधों से पहितगण अपनी विगाडवा नहीं चाइते। सेठों से उनका अनेक रूप में स्वार्थ सधता है । इसलिये इस विषय में कुछ भी यथाधता नहीं है। विधवानी का दशा सुधारने की आधाज उठाना सर्वया उपयुक्त है। उनके साथ सचाई का व्यवहार करना आय-इयक है। धाविकाश्रमी में भेजना लाजमी है। पतित बहिनो को उसी तरई आत्भाद्यार का भव-

सर देना चाहिए जिस तरह विषय लम्पटी चाची पुरुषों की दिया जाता है। तीसरे स्पर्शास्पर्श्य का सबाल है। इसके विषय में भी अयर्थाधता फैलाई का रही है। कोई भी जैनी नहीं कहता कि अस्पृश्यों भे साथ सान पान भादि का व्यवहार करो। कतियथ राष्ट्रबादी सुधारकों कर कहना है कि इनके साथ मनुष्योचित व्यवहार करो। उनके साथ कठोरता का वर्ताव मत करो। उन्हें भी अपने आत्मकव्याण करने देने का मौका दो। इस में कोई द्वानि नदी है और न कोई शास्त्र बिरोध है! अतवन मुधा परस्पर छोप यश वैर भाव से पाप बन्ध करना हिसकर मही है। म विक्षानी की शोभनीक है । इस ही सीनों बातों पर हम देखेंगे हमारे पूर्व पुरुषों का क्या व्यवहार था । इन पूर्व पृक्ष्मों के चरित्र जैनियों के पुराण और कथा प्रन्थों में चर्णित हैं । वहीं से हम इन विषयों पर उन आदर्श प्रयों की सामाजिक रीतियों का दिःइर्रान करेंगे, जो सर्वधी हमारे लिए अनुकर-णीय हैं। आज हम प्रथमान्योग के भी आराधना कथा कोष को लेंगे। यह तीन मार्गो में ''जैनमित्र कार्यालय बन्बई से, श्रीयुत एं० उदयलाल काश-सीवाल" द्वारा अनुवादित व सम्यादित होकर पकाशित हुवा है। इसके द्वितीय और तृतीय भागी का स्वाध्याय करने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। उन में जो उक्त विषयों के दूष्टान्त दृष्टिगत हुए वह इम पाउनों के अवलोकनार्थ यहां बनलाते हैं।

'भाराभना कथाकोष' के द्वितीय भाग में २५ वीं कथा मृगसेन भीवर की है। यह भीवर मछ-लियों मारा करता था। यशोभर मुनिरात ने इस महा हिसक पर द्या करके नवकार मन्त्र और एक

प्रकार से अहिंसा व्रत व्रहण करा दिया। धीवर ने इनका पालन यथोचित रीतिसे किया वह जमी-कार अन्त्र का जाप करने प्राण त्यांग कर विशाला के गुणपाल सेट की पत्नी धनश्री के गर्भ से प्रमा-वान पुत्र हुआ। उसके विषय में एक अवधिकानी मुनि ने पहिले ही कह दिया था कि "होगा तो वह बैश्य बंशमें पर उसका व्याह इन्हीं विश्वमभर राजा की पुत्री के साथ होगा।" तदनुसार इस वैश्य पुत्र धनकीर्ति का विवाह राजवंशी कन्या से हुआ था अन्त में उसने दीक्षा गृहण कर स्वर्गसुख साभ किया था। इस कथा से पग्हपर बणी में विवाह संबन्ध होना प्रशाणित होता है तथा महा हिसक शृद्धे घ्णा न करके उसके साथ एक मनुष्य जैसा क्ष्यवहार करके धर्म धारण करने का अवसर दिये जाने का उत्लेख है। यह भी ध्यान रहे कि उच्च वर्ण क्षत्री कत्या का विवाह बैश्यपुत्र से होता था। अर्थात आजकरू के सुधारकों की उपयुक्तिसंजत पहिली व तीसरी बात का शास्त्राचित होना प्रमा-णित होता है।

अगाड़ी २= वी नीली की कथा से एम छुणा-रकों के मत की भी पुष्टि होती हैं को अजैनों को जैनधर्म में दीक्षिन करके उनसे खेर उनके सजाति उन जैनियों से रोटा वेटी व्यवहार होना जैन समाज संख्या यृद्धि के लिये आवश्यक समभते हैं। भृगु-कच्छ नगर में जैनी जिनदत्त सेठ का पुत्री नीली था। यही एक अजैन समुद्रदत्त सेठ का पुत्र सागर दत्त था। सागर दत्त नीली पर आसक हो गया। परस्तु अर्जनी के साथ जिनदत्त वियाह करने की राजी नथा। इस लिये समुद्रदत्त ने मय घरकार के क्रैनथर्म धारण कर लिया। जक जिनद्ता ने उन्हें जैन धर्मरत देखा तब मीली का विवाह उसके पुत्र के साथ कर दिया । इस तरह उक्त व्याख्या की पुष्टि होती है।

फिर सैंतीसवीं सात्यकि और रुद्र की कथा है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि पतित स्त्री को भी प्रायश्वित है संघ में छेना शास्त्र सम्मत है जिस प्रकार पुरुषों के लिये रिवाज है। कथा यू है कि गोधार दंश के राजा सात्यिक से सम्राट् चंटक की क या उथेष्ठा की मंगनी हुई थी। कारण पा ज्येष्टा अधिका हो गई। महाराज सात्यकि भी यह समाचार सुन मुनि हो गए। एक समय एक गुहा में तीव पापकर्शके उदय से उनका अनुचित सम्ब-म्ध हो गया। गर्भवती स्येष्टा राजा श्रेणिककं यहाँ रही। नी मास बाद ज्येष्ठा के पुत्र हुआ पर श्रेणिक में उसे खेलिनी का पुत्र प्रकट किया । ज्येष्टा पुनः प्रायश्चित्त से आर्थिका संघ में सम्मिलित हो गई। इस पृत्र का नाम ठद्र था। कारण पा इसमें भी मृति सात्यको से दीक्षा प्रहणकर ली थी। अतः एव इससे भी यह स्पष्ट है कि ध्याभनार जात को भी महांब्रतहर धर्म पालन को हार नहीं बन्द था। ऐसी दशामें पतित बहिनोंक प्रति दया करना किस प्रकार अनुचित कहा आ सकता है ?

अत वी बिलिष्ठ तापस की कथा में बिलिष्ठ को मर्छालयां खानेवाला घीवर सहश तापस बनलाया गया है। परन्तु बीर मद्राखार्य दिगम्बर भुनि ने इस से घृणा न करके इसका अद्धान जैन्ह्यर्थ पर कराकर इसे मुनिषद में दीक्षित किया। फिर मला विधिनियों से होंग करना अथवा घृणा फरना कहाँ काजमी है! जब विधिनियों के लिये यह बात है तय साधर्मियों के प्रति कैसे ज्यवहार का विधान होगा, यह सहज अनुभव गम्य है। अन्नएव जैनियों का परस्पर में छड़ना भगड़ना धर्मकार्य नहीं है।

उपयुं हिळखित तीसरं विषय की मीच से नीच से भी भूणा करना ठीक नहीं। उसके साथ मन्-ष्योचित व्यवदार करके भारमोन्नति करने का अव सर देना चाहिये-की पुष्टि ५५ बी सगध्य क की कथा से भी होता है। इस कथा में मुगध्वज राज पुत्र और उसके साथी मन्त्री तथा सेठवूत्र माँसमधी थे। एकराज उन्होंने राज्यके भैंसे का पेर काटकर उसका भोजन किया। गत्य दण्ड से बचने को मुनि से सब दीका ले गये। "इन में मुगध्यज महा मुनि बड़े तपस्थी हुये। उन्होंने कठिन तपस्था कर ध्यानाग्नि होरा कर्मा का नाशकिया। और वेथक इन प्राप्तकर संसार डारा वे पूज्य हुन। सब है जैनधर्म का प्रभाव ही कुछ वेसा अजिन्य है जो महापापी से पापीभी उसे धारण कर त्रिलोक पुज्य हो जाता है" यह शास्त्र वाक्य हैं अतएव पापी से भी घुणा नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार जिलीय खण्ड में हम उक्त बार्तो की पुष्टि में कथायें पाते हैं। इनसे जैन समाज की उपजान्तयों में परस्पा विवाह सम्बन्ध होना प्रमाणित है। तथा पतित बहिनों को भायित्वता दें आत्मोक्तकि का अवसर देना चाहियें और अस्पृश्यों को भी यथोबित रीति में धर्मलाभ का मौका देना चाहिये ये भी प्रगट है। एतीय भाग का उस्लेख हम आगा मी करेंगे। इस ही तरह स्थाध्याय प्रेमियों को प्रातन पुरुषों के बरितसे शिक्षा प्रहण करना चाहिये।

जाति-संबोधन !

(से० कुञ्जीबाज जैन काशी)

उत्कर्ष जीवी बान्धवों, संबोधकों, नेता गर्णो। संगठन पेपी, नाती रत्तक, सुपध दर्शक वियजनी ॥ १ ॥ निज जाति के दुख से दुखी परमार्थ प्रेमी परिजनों। श्रीमान घीमानी सुबुधिवानी अरज मेरी सुनी।। २ ॥ जिस दबाधा के रोंग से जर जरित जाति अत्यंत है। इस रुग्ण शैरया धारिशी के रोग का किमी अंत है।। ३।। नित जाति हो द्वण एहित अरु मंगठन बल्दान हो । श्रास्त्री विचारें-ब्रान मिली यह किस तरह कल्याण हो ।।।।। खांटी प्रयाश्ची के दमन से ही पृष्ठी दिवत समाम। यम नियम ह के तांदने में है, न उस को शर्म लाज मध्या घहु सोचते हैं कि यहाँ नेता प्रणाता क्या करें। भड़ देत हैं करते नहीं यह परन श्रव कहूँ पर धरें।। ६ ॥ नित सैफर्डो मस्ताब के अनुकृत होते कार्य हैं। सव अनुकरण इस का करें तो सहज ही उद्धार है।। ७ ॥ अब मीनियं कैसे अविद्या के बहे बिस्तार हैं। जो गोहता है नियम उस के साथ को तैयार हैं।। = 11 यह भी न देखें कार्य मेरा समंग है या घात की। श्चव देखियं दुर्देव ने क्या मति विगाड़ी जात की ॥ ६ ॥ सब जातियां उझति शिखर पर चढ़ रहीं कर के सभा। इस ही अवागी जानि की नित मंद होती है मभा ॥ १०॥ यदि आप मोचेंगे कि ये तो वो हरीली राशि हैं। जिसमें न कोई नियम है ना संगठन की आश है । ११॥ यदि हैं कठिन यह कार्य तो क्या छोड़ देना चाहिये। क्या साँप के भय खाठियों को तोड़ देना बाहिये ॥ १२ ॥ शिचित सपूर्ती जाति के जातीय दोष मिटावने-का पार है मित्र आपके अब प्रश्न है यह सामने ॥ १३ ॥ सब मथक २ सभाव के सब जाति में होते सदा। कई तमोगुण कई सतागुण कोई रजी गुण सर्वदा ॥ १४ ॥ ज्ञानी सभी होजीय नो बस भाज ही महगड़ा खनम। पर सब नहीं होते सुशिचित ये हैं सृष्टि का नियम ॥ १४ ॥ जिस पर्ज को जब तक दवा सच्ची न मिलने पायगी। चाहे दबा होती रहे तकलीफ बढ़ती जायगी।। १६ ॥ हं ध्यन्नजों निम भाति के तुम भी इधर कुछ ध्यान दो। जो व्यक्ति तोड़े नियम को उनको सुशिक्ति जान दो ॥१७॥ त्रप साथ मत उनका करो मत यह समभ्त कर तोड्दो । बस हो चुका अब संगठन उलुकाई सब लोड्दो ॥ १८ ॥ जो एक हम होकर रहें तिन के दुराचारी कुसंग। तो धर्मे पिलते नहें हरबार सिद्धि के प्रसंग ॥ १६ ॥ संगठन के खाँफ़ से शत्रु भी रहते हैं अपंग। संगठम कर चीटियों ने मार डाले हैं अजंग । २० ॥ तिनके २ ओड़ कर होता बढ़ारस्सातयार। भोल लोता है जकड़ कर मस्त हाथी के महार ॥ २१ ॥ तिनके में है ताकत ही क्या, क्या जोर उस समाज को। संगठन की ही बदौलत कम लिया गजराज को ॥ २२ ॥ बंधुओं के एक रहनेमें हैवो ताकत कयाला। बृंद बृंदी से घटुर कर बनगया भोपाल ताल ॥ २३ ॥ जो बम्धु नियम विरुद्ध हों उनको सम्मेम सिखाईये। मानें न वे शिसा तो उन पर कोथ मत दिखलाईये ॥२४॥ कहीं एक द्वा के तोड़ने से रस्म मिटजाती नहीं। चित्रुक्षों के दरसे गोद्ड़ी फेंकी नहीं जाती कहीं ॥ २४ ॥ इमका तो भ्रापने लक्षा पर दर् चित्त रहना चाहिये। को कह दिया सो कर दिया कर के यही पतलाइये ॥२६॥

जो आज इन पर दंढ की मात्रा बहार्नेगे यहाँ। तो और ही परकार के परिस्ताव निकलंगे वहां॥ २७॥ जिस पर बंधु कुछ दंड की सत्ता अगर घेटायँगे। वे दंड पानेंगे नहीं खद्धता दिखलांयगे॥ २८ ॥ हितकारिणी अपनी सभाका हुक्य नाचित लाँयगे। लेकिन सभा के तोड़ने को जबमी बन जांपगे ॥ २६ ॥ यदि दह के हित जब किसी के देश हम बतलांपगे। वे दूसरों में दे। प उस से चौगुने ठइरायगे ॥ ३० ॥ यदि जातिच्युत करते किसी को उसके इस व्यवहार है। परिवार नाते दार उसके साथ का तयैयार हैं।। ३१।। वे हित श्रहित दूर्देखें नहीं देखें नवे शुद्धी श्रशुद्ध । निज थोक बाँधे में अलग होकर हमारे ही विरुद्ध ॥ ३२ ॥ जो योक ही न्यारे हुए यसले वही सच हो गए। षींबे छवे बनने चलं थे पर दुवे ही रह गए ॥ ३३ ॥ जो आज उनकी गलतियों पर ध्यान इस नहिं लांयगे। कुल समय में अपने किये पर आपही पद्यताँयगे।। ३४॥ यदि दएड से दावेंगे तो बे ऐंड में भर जांयगे। रस्सा चहे जला नायगी ऐंडन न इसके जांयगे ॥ ३५॥ जब संगठन का लच्य है सब एक होना चाहिये। ऐसी दशामें दगढ विधि इमको न रखना चाहिये ॥३६॥ अब गीर कर देखा स्वयं ही दंड उन पर होगया। वह कीर्तिकारक बीज ही अपकीर्तिका तरुहोग्या ।। ३७ ॥ यश के लिये करनी करी नियमहुतमा धन हू दिया। उसका नतीजा यह हुआ नक्कू वने अपयश खिया ॥३८॥ डंगली डठीं सब देश की इसने सभा बरबाद की। सप देशभर घर घर में घरचा मचगई अपवाद की !! ३६ !! जो व्यक्ति पंचीं के नियम को तोड़कर ही शांत है। यह यश नहीं वाता कभी यह न्याय का सिद्धान्त है।।४०॥

रश बीस पंचों की सखाह से काम होता है जहां।

इद्य मान मर्यादा सुभूषित की तिं होती है तहां ।। ४१ ।।

यह धारणा मन पारिके बहु शांति से काम खो।

यब दएट बंधन छोड़ कर भव में म बन्धन बांध खो ॥४२॥

नव ऐक्यना के शिखर पर सेना बहुत चढ़ जायगी।

यब शोष सेना पर सुबुधि की दिग्विजय होजायगी॥४३॥

वह ऐक्यना बढ़ने के साधन शान्ति आक् नेम है।

केताक्य विजयी शस्त्र जग में एक सच्चा भेम है॥ ४४॥

हाय ! मेरीं राखी !

हाँ से कालिन्दी अपने कलकल, नाद का मृतु शब्द गुजार करती अविरत्न घारा से बद रही वीर जहां के गहन बनों अथवा बीहड़ मैदानी में ्सता और भयानकता अपना आधिपस्य जमाए र नजर आता है, वहीं पास में एक छोटा सा ग्राम । ग्राम का नाम 'भागस्त्य खंट' है। इसके आस ।।स के मग्नावशेष बिन्द इस नाम में कुछ प्राचीन रहस्य लुका हुआ बतलाते हैं। परम्तु किसी को नहीं मालन कि यहां क्या था ? हाँ कोई पुरानस्वविद भले ी कुछ प्रकाश दाल दें। इस गाम में उप घर जैनि-तें के भी हैं। कहते हैं कि यहां पहिले उनकी बस्ती स संख्या से कहीं अधिक थी। परन्त् देवी प्रकाप े वह प्रायः नष्ट भुष्ट करवी। लाका हरिस्वक्रप 'हां एक अच्छे जानदानी जैनी थे। इनके दी लड़के न और उनके विवाह १२-१३ वर्ष की उस्र में होगए । विचारी की गृहस्थी ज्ञानम्य से चल रही थी। ्वायत में भी वह वह खढ़ कर वास किया करते

थे। अपने पक्ष की ही सींक हमेशा ऊँची रखने के प्रयान में रहते थे। इसलिए ज़ाहिरा तो कोई नहीं परन्तु दिलों में सब खार खाये हुये थे।

संसार में सदा किसी के दिन एकसे नहीं रहते तिस पर जो सत्यता और भलमनसाइत को छोड़ कर जीवन व्यतीत करता है उसको अवश्य ही दुःख सहन करना पड़ता है। भले ही अपने मन में कोई घोड़ी देर के लिये अत्याचार करके फूल ले, परन्तुं दूसरे भण से उसे उसका कटु फल जकर भुगतना बड़ता है। एक तो वैसे ही समाज में अधेर फैल रहा था। दूध पीते बच्चों के विवाह कर विधव एँ सिरंज दीं जाती थीं अथवा बुड़ हे बावांओं के गले में बकरियों के समान कम्यायें बांध इन अभागिनों की और भी संख्या बढ़ाई जाती थी। इन अधामिनों की जीवन को खोवलां बना रही हैं। तिक्षे पर लालों जी का पाश्रीवर्क

अरपाचार अपने जाति भारयों पर और बासामियीं पर सदैव बना ही रहता था। इन प्रापाचारों का बड़ा भरना ही था। इधर इन कुरीतियों के फल-कर समाज की दशा भरणासक हो गई है तो उधर हाला जी को अपने कर्त्यों का फल जीते जी मिस्र गया ! हैजे का प्रकाप हुआ और उसमें विचारों का बड़ा ढड़का एक अनाथ विधया को विलखते छोड़ गया! लालकी दांत पीसते ही रह गये। कराल काल पर उनका कुछ बरा न चला । आखिर कोध तो क्रमंब करमा ही ठहरा, अभागी जिलसती पुत्रवध् पर दृष्टि जा गिरी। उसही को भली बुरी सुनाकर अपना कलेता उण्डा किया! वह वस्तिया अधमरी नो हो हो खुकी थी। इन बाम्बाजी सं ऐसी मर्माहत हुई किन मालूम उसके बाण निकलते २ कहाँ अटक गए! बह खिसकते सिसकते भरने लगी । परंत उस पर किसी को दया नहीं! दः खपूर्ण अभिनद का अन्त यही नहीं होगया ! इसके कुछ दिनों ही बाद उनका[दूसरा सडका भी बीमार पडा । सासा जी के होश ठिकाने चरहे। सहसा पुत्र की उपत रोगमय दशा में ही इनका दिल धड़कना चन्द्र हो नवा ! घर में हाहाकार मचगया । दो अवला कुल बधुओं का ढाढस यंचाने वाला कोई नहीं रहा ! जो था सो खाट के सहारे हो रहा था। एक वैद्यसाहब गोगी को शाम सबेरे देख जाते थे परम्तु अञ्छाई के कुछ चित्र नजर नहीं आते थे। इठतः उम अस-लाओं पर मार्गी रहे सहे बुख का पहाड़ ट्रूट पड़ा । बह भी अपने पिता और भारत का लाधी बना दोनों अभागी अवलायें अपने साथे को धुनती रह गई। दैव से वश ही किसका खलता है! उनके जीवन निस्सार हो गये, वं धर के अन्दर ही बैंडे

दिन विताने लगी। कोई देख न पाये ऐसे तड़के श्री जो के दर्शन कर जाती और फिर घर में ही रहती! हवं, दत्तनी रूपा देव की अवश्य थी कि दो नन्तीं कल्पाओं के सहारे ये अपने मन चहला सेती थीं। (२)

जमाने की। पतार साफ कह रहीहै कि मेरं यहां निर्वेद्धों का निर्वाह नहीं - असहाय रोगियों की गुजर नहीं। िस की छाडी उसही की भैस है-इसमें शक नहीं। जो इस पेळान के लिलाफ करम रक्षेगा चह जरूर अपने जीवनसे हाथ थी बैठेगा । अथवा रुवार हो इःख की जिन्दगी वितायगा। छा० हरि-रूबक्र पकी विश्वा बहुओं ने चार पांच वर्षती अवने घर है धन बल पर बिना किसी कठिताई की सहन किये विता दिये। परन्तु अब उनके लिये जरा कठिनाई का घक आया। घरके फाजिल वरतन भाड़ों पर नजर पहुंची । वह भी पेट- देव की भेंट चढ गए परन्तु अब भी कहीं जीवन का अन्त नहीं, तिस पर उन छोटी कत्याओं का दरद उनके दिलों को और भी हिला देता था। उधर घर में नजर डालें तो कुछ रहा नहीं और बाहिर निगाह दौडायें हो कोई सहायक दिखाई नहीं पहें। पश्चलांग इन विचारियों की यह दशा देख एक तरह से मन ही मन खुशी हुए। चाहें कि कही से ला॰ हरिसः रूप आकर अपनी बहुओं की इस दशा को देख जाते! उन के द:क में साधी होना इन लोगों को सहज न था। विचारियों ने कोई चारा न देख इन्ही छागी के घरीसे गेट्ट का पीसना शुद्ध किया। टइल चाक-री से अपनी उदर पूर्ति करने छगी। जिनसे के ई आधी बात कहते हरता था उन्हीं को आज हो।ग मनवादी भिड़कियां दे रहे हैं। वे सभागिने अपने

आष्य को कोसती कातरता से विन गुजार रही हैं चे न जीती हैं और न मरती हैं। हरदम यूं ही सिसकती हैं।

भरे खलियान में मान छग रही हो और उसमें भाट-दश कलशे पानी फोई लाकर डाल दे तो उस से कही आग सुम्ह धोडे ही जायगी! इन बेखा-रियों के दः वों में भी कहीं पुण्यादय से सुख की एक किरण उग आई। अडोसी-एडोसी के हिली में भी आस्तिर मनुख्यता आ गई। एक विधवा सहायक फंड से इनको सहाबत्त मिलने लगी। इनके दिन कुछ अच्छाई के साथ किर कटने सरो। पेंट के लिए अधिक भिकर नहीं करनी पड़ी। परम्तु पञ्चनं का मुंह ही देखना पहता था । उन के रोष को कभी भड़कते न देली थीं। आप अपनी नन्ही करवाओं समेत उनके घरों की टहल किया करती। बड़ी वह उन कन्याओं के कोमळ शरीरों पर यह पास पड़ते देल बड़ी दु:खित होती ! उन के लियों पर मड़ी और कुछे के तससे भरे देखकर उलका हृदय थर्रा जाता। और तो कुछ न वन पडता था परन्तु हृदय से "हा नाथ ! रिक्षा कर" भवश्य निकल जाता था। छोटी यह अधने रोष को रोक म सक्ती थी। कभी २ मुंहचावर उससे और पशंसियों से हो जाया चन्ती थी। भला, भवला और असहाय दुखियाओं को सुख कहां! इस ही दःव दशा में बड़ी बहु तो भाग्यवशान् और अधिक क रक्ता देखने के लिए जीविस नहीं रही ! अभागी छोटी बहु पर ही दैव का साग राव आ धमका, स्वभाव चिडचिडा भौर राव भरा था और उधर पचलोग सार लायें थे ही ! इस से किस प्रकार टहल करते भी तालाजनियाँ सहीं जातीं। उपर भी तीस वर्ष के मीतर थी। इस पंचों की वन भाई। इसर पक रोज़ कहना सुनना सतम हुआ, उधर फंड से सहायता भाना इका दी गई। रोप काई काली नागिन की तरह वह उन पर टूट पड़ी। परम्तु अवला कर ही क्या सकती थी? उलटा इसका दुण्परिणाम यह हुआ। कि वह विज्ञातीय घरों में टड्ल मजुट्टी हूँ इने लगी। लोग कहने संगे उसका किसी से अनुवित सम्बन्ध हो गया। फिर क्या था वह चट आति कहिएकत कर दी गई। किसी ने स्व वात की परचाइ नहीं की कि मामला सच भी है या नहीं। कह विखारी मूदे लोक के प्रतिवाद स्वकृत इसर उपर अपने दित् जान लोगों में सटकी भी। परम्तु उसके कर्कशा स्वथाय ने कुछ भी सुनवाई न होने दी।

3

एक नन्हीं वालिका मीड़ कर घर में जा अपनी मां से पूछने लगी-"अम्मां! आज तो सल्हने हैं। देख मैं यह राखी मांग लाई। अब बता में किस के बांधूं? मेरा मध्या कहां है?"

माला भोळां बच्चां की १स करणोत्पादक वाणीं को सुन कर नेकीं में आंसू भरखार कुछ कह न सकी ! बच्ची का छाना से छगा लिया। बोळी "बेटी, तेरा कोई भरया नहीं ! छा, तू मेरे बांध दें। मैं दुभी ऐसे दूंगी। और अंदिने को बोद्दानी दूंगी। बच्चों मुस्कराती मां के पास से बळी गई। यह मां अन्मितन छोटो बहु दी है। बच्ची के खड़े जाने पर उसने एक गरम निष्वास छोटा धीर उस ही के साथ उसका हत्य उमड़ पड़ा। यह कहने लगी कि 'आज सक्टुने हैं। आज

हासी का दिन है। लोग कहते हैं कि अाक अहि-छायें अपनी रक्षा के लिए भार्यों के रासी संधती हैं । परन्तु मेरी राखी हाय ! कीन स्वीकार फरेगा। ज में घर की हूं न घाट की । न सजावीय हूं और न विश्वातीय ! दूसरे की टहल करती थी और अयमा पेट भरती थी। पर मेरे चैरी यह काहे को देव सक्ते। उन्हें तो सुके हसाना था। मेरी अनाथ बिचियों को दर २ भटकाना था। अब क्या कर्क ? इधर अपने पुरुखाओं के रीति रिवाज और वेष भूषा का मोह कहीं छुटता और सहसा पतिदेव के वियोग में उन से विश्वासधात भी नहीं किया कासा ! उधर उस विजातीय नवयुवक के भारवा-शन और प्रेम भरे ढाढस अपनी ओर खींच रहे हैं! हाव! क्या में इन अवोध कन्याओं को लेकर बंश का रहा सहा मान मिट्टी में मिला दूं। परन्तु क कंभी क्या? सुनती आई हुं कि आज के दिन इस 'श्वा ब धन' के पवित्र दिन भी विष्णु कुमार महासुनि ने भी अकंपनादि सुनि गणों के प्राणी की रक्षा की थी। आज का दिन अभयदान के

्तिप्रप्रसिद्ध है। प्रन्तु स्वार्थी संझार में भाव वह स्पीहार की लीक पीटने के रूप में ही मकाया आता है। वरन् क्या कोई भी त्रिप्यु कुम।र मुनि हाज का सम्बाभक हम भवलाया की रक्षा करने म भाता ! इम अवलायें दुःखिन,वसित और पतित की जारही हैं। हम पर अत्याबारी की अस्मार की आर रही हैं। हमारे अंधिन अवरहस्ती नष्ट किए जा रहे हैं। हठात् हमारी आत्माओं को मिथ्या-स्य के बशीभृत किया जारहा है। हमारे इहलोक भीर घरलेक दोनें ज्वरदस्ती विगाड़े आ रहे हैं। स्वर मेरा जीवन नष्ट होगा । होने दीजिय । परश्तु श्रुनि विष्णु कुमार के नाम पर यदि अभिमान है किसी को तो उससे मैं इस दशाकी सुधाने के लिये प्रार्थना करती है! अत्याचारी पंचायने समान को मध्य कर रहीं हैं। उनका सुधार करे। और महिलाओं का उद्धार करें। भाई! वहीं मेरी राह हैं। न घर की और न घाट की बहिन की राकी हैं स्वीकार करें। याहे मत करें। हा ! यह राखी ! ं --- 'प्रमी '

समाज की परीचा का समय !

तीन अवलाओं के जीवन संकट में !
जैनी हो तो अभयदान दीजिए—स्थितिकरण शक्त का पालन की किए।
'सहमी फिरती है शका उसके दिले बीमार से!
ये मसीहा दक्ष बचाले उसको इस आजार से!
ताक में गैठी है बिजली उसके खुरमन के लिये!
दुश्मनी : बादे बहारी सं उसके गुल्जार से!

सिकारी विधवाओं की दशा भाज कितनी से छिने हुई नहीं है। कोई मी विकास अवला-संकटायन हो रही है यह 'बीर' के प्राठकों की उसा करने बाला नहीं हैं! सामाज की पंचायत

इवाधीं पुरुषों के अड़े बन गए हैं! हो फिर निरय-राध दक्षियाओं की सनवाई हो तो कहाँ हो ! समाज हिनेवी भाइयों ने-नडीं सुख्य कर वहिनी ने धाविकाश्रम स्थापित कर रक्ते हैं परस्त उनका यसा तक बहुधा सच वहिनों को नहीं है ! इसी कारय अभागी बहिने तरह ६ के दुःख उठाती हैं। 'बीर' के १६ में अंक में सगय अगहत (जिला-पटा) की एक जैन विधवा का उल्लेख किया गया था ! तदुपरास्त प्रयत्न करने पर आगरा से जीव-दयासभा के मंत्री प॰ बाब्राम जी, हम (उ॰ सं०) भौर अलीगंत के कतियय पंच उसकी रहा की थ्यवस्था के लिए बहां गये थे। वह दः विया यहां तक प्रसित की गई थी कि उसे विश्वास ही नहीं होता था कि हमारे दुःखमें भी कोई साथी हो सको हैं ? उसके पास जो पहुंचा वह अपने स्वार्थ के लिये ! उसकी प और द वर्ष की करवा हो हो हो हो ने के लिये ! सराय के पंची ते इस अनुर्ध को रोक्त और प्रारम्भ में उसकी सहायता का प्रबाध गरीहरू बाल सभा तथा फोरोनपुर के किसी दानदी। के हारा कराया! उस समय तक वह विध्या अपने धमं - कर्म का पालन करती दिन विवासी रही! परन्तु जब उसकी सहायता बाहिर से वस्द होगई और बढ बाहिर से मज़री पर पेट भरने पर उद्यत हुई तब गीदड़ों की बन आई। नरपिशाची ने बठा-स्कार करना प्रारम्भ किये, परन्तु काई भी उसकी रक्षाको नहीं भाषा! वह ज्वों स्था कर अपने शीख बसाने की हामी भरतो है। इस अवस्था में उसकी रक्षा का भार लेकर मुसलमान आया और वह उसका सब प्रवस्थ अपने निजी मस्त्वी के छिये करने जगा । उसके पास दृष्ट गौरतं मेजने लगा ।

सारांश यह कि वह अब तक इसही प्रयक्त में है कि इन तीनों अवलाओं को अपने धर्म में ले आये अथवा कम्याओं को बेचकर रकम खडी करे ! स्था-नीय पर्ची पर उस विश्वास का विश्वास क्रेय नहीं है ! और दीन हीनता में अपनी भलाई देखने को बर लाचार है! एक तो प्रामीण-किर दुश्सगति के प्रसार में ! ऐसी दशाने समाज हितेषियों को उसकी रक्षा के लिये अगाडी धाना चाहिये और स्कार् उपायों को धमलाना साहिये! उसकी बात विश्वास होता है कि वह पतित अथवा विधर्मी से बचाई जासकी है ! और धर्योध कन्यायों जीवन दः जपूर्ण होने से बच सकते हैं। इसे सह १-२ राज में इम पर विश्वास होना कठिन है! उ ने एं०बायुराम जी को अपना निश्चित विचार फि १०-१५ रोज में लिखने को कहा है ! यद्यपि अपने घर पर किसी की भी वेखभाल में रहने तैयार हो। बस्तुतः उसका अविष्य सामने अ विचार में भाता है तो दिल घड़कने लगता है !-संघर जायगी। जब एक विधमी दुष्ट उसे अ ओर खीच रहा है नय क्या उसके सहध्रमी-के खून से पैदा हुये माइयों में इतनी दृहना य स नहीं है कि वह इधर मुख मोड़ सके ? सारी स का अववात उसके विधर्मी होने में है! स हितैवी ! अब तो चेतो । अपनी मूल को पछत और आगामी धिधवाओं की रक्षा का पूर्ण प्रय करो ! तुरद्वारो अङ्कट रहा है, क्या अब चेत नहीं होगा ? विधवा के सजातीय अलीगकः मैनप्री, जसवन्तनगर आदि के बुढ़ेले भार्षी क आवसी होच का छोडकर अवसाओं की रक्षा कः के लिये तैयार होना चाहिये । समाज ! यह ते

चरीक्षा का समय है ? बतला तुभ में कुछ जीवन शेव हैं या बिलकुल मर चुकी । परिश्रम करने से तीन जीव बच्च सकते हैं बरन् मांस मक्षक होंगे। इस तरह तीन का नहीं अनेक जीवों को रक्षा का श्रेय इनकी रक्षा से होगा ! पतित बहिनका उद्धार कीजिये। उसकी रक्षा के लिये सराय अगत पहुं-चिये। वहाँ के पञ्चगण सर्व प्रकार की सहायता हैंगे। यह स्थान मोटा स्टेशन (E. I. Ry yis shikohabad) से ४ मील है। पं० बाद्राम जौ से सथवा हम से इस विषय में विशेष पृछिबे। परन्तु सबेत हो कमर कम लीजिये वरन् घीरे २ छारे शारीर को कटने वीजिये। याद रिवये:— मनायें हम खुशी या ग्म,मगर यह काम करना है। सफीना एक हो है और इस सब को उत्तरना है।



जैनियों प्रेम करना सीखो !

आज नहीं तो कल त्याग भावका महान् दिन है। अभयदान का पायन पायसकाल है। गृह-गृह और द्वार दार दारशीलना का पारचय प्राप्त है! महान् पुरुष के त्याग दान का परिणाम ही वद होता है। उस भारशं का अनुकरण सारा संसार करने लगता है। सहस्रों मुनिगण एक मिण्या बुद्धि के शैतानी कार्य से अकाल ही प्राण-विसर्जन करने को बाधिन हो रहे थे। भत्याचारी अमालु राजाने उचानुनि महाराजों को जीवित ही भन्नि समर्पित करने का पैशाचिक काण्ड रख दिया था! भीर बीर मेरु सम अचल मुनिराज अपने भ्यान में अटल थे। इस दारण दुःसने उन के एक रोम को भी चलायमान नहीं किया था। इस महान् उपसर्ग को सहन कर रहे थे। परम ध्यानी मुनि विष्णु कुमार ने अन्यत्र अपने दिव्य-क्षान नेत्रों से इस दारुण दृष्ण को देखा! उन की आत्मा धर्म गृहां। उन्हें अपने गहन नप यस की सुध तुष न रही। ध्यान रहा नो केवल उन मुनि-महाराजों। के उद्धार करने का, जिनके शरीर अस्ति की भीष्म ज्वालाओं से तमायमान हो रहे थे। मनी बी दान घीर दानशीलना में आगा पीछा नहीं सोचने। धात्सल्य भाव के प्रोरं मुनिराज ने शीधू हस्तिनापुष में पहुंच कर मुनिमहाराजों के उपसर्ग का अन्त कर दिया और दुरात्मा यह कि राजा को एक सासा सबक पढ़ा दिया। जनता को इस सोदर्श से बड़ा लाम हुआ। यह उस का अनुकरण करने समी उसी समय-श्रावण शुक्रा के को सर्वमुनियों को लोगों ने भाहार दिया और जिल्हों के यहाँ

मुनिराज महीं पहुंचे उन्होंने अन्ध अविकी आदि की बुला श्राहार कराया। बहुतेरी नं श्रीनराज के चित्रलेख को ही आहार कराकर आहार प्रहण किया। सारांश यह कि प्रत्येक नर. मारी ने उस स्वर्णावसर पर दान और त्यांग भाव का महत्व हृदयङ्गम किया। उसी के अनुरूप में था। सारा संसार उस के महत्व से वाकिफ है। आज का दिन अपनी रक्षा के लिये प्रसिद्ध है। संबंहीं की रक्षा का भार अवश्य ग्रहण करना वाहिये। जैन धर्म इस समय संकट में है। उसके प्रति लोगों के कुल्सित विचार हैं और यह भारत में ही सीमित होरहा है। उसकी रचाके लिये आज समास के व्यक्ति २ को सैयार हो जाना साहिये । प्रत्येक जैनी को अपने आचाण से जैन तन्त्री का प्रसार करना चाहियं। जिनवाणी के उद्धार के लिये समाजक दान वीमें की यह पावनरासी स्वं।कार करना चाहिये । दानवीरी यह स्वर्णाव-सर है। इसको हाथ से म जाने दीजिए। परिषद् की सदायता प्रचर भगस की जिए जिससे उस के भग जिनकाणी का नियमित एकार और कैन धम का प्रचार होमके। विश्वकं विद्वानीमं दिगाकः धर्मकी मान्यता फैलानेके लिये योलपुर गांति निकेतन के "निश्व भारती" विश्व विद्यालयमें जैन आचार्य की नियुक्ति होने दीतिये। अपने पूर्वजाके ऋण सं उम्रण होदरसाथ ही धर्म के साथ समाज की स्वयं अपनी रक्षा करनो है। प्रत्येक न्यक्ति को यह राखी बांधनी बाहिये। दिलावटी ढोंस से और मानमस्तर के आवेश में समाज मर रही है। सब अपनी र दफलो भौर अपना नाग अलाप नहे हैं। सारा संसार जिस पहारवा, गांधा के बाक्यों

की आदर देता है वह आज जैनियोंके दर पर आकर तीर्थों क भागडे की आपस में निवटाने के लिये कहता है और कहता है जीर के साथ "क्या विशेश न्यायालय में कुछ अधिक मिलजा-यमा यह फैसला क्या बाहर महीं होसका।" पर-न्तु कुछ खनवाई नहीं। दिगंबरी श्रीर श्वेता-म्बरी श्रापस में लंड रहे हैं। देशदोही बन रहे हैं। देश के प्राण सरीखे महात्मा के बादयी का निरादर कर रहे हैं। इस निरादर का फल कदुक है। इस लिए आज परम बात्सल्यभावके दिन दिगम्बर ख्वेनांवर गले २ मिल आइपे। श्वतास्वर नेताता, मिथ्या अभिमान छाड्यि । इस से बचा ही आत्मपतन के साथ २ देश का पतन क्या कर रहे हो ! दिगम्बर भार्यों को भी परस्पर ब्रोम सं गक्षने का महत्व सममना चाहिये। मुनि-विष्णुकुमार के आदर्श से शिक्षा ब्रहण की जिए। भैती मात्र की अपना भाई समित्र । उस से अप्रेम मत कांजिये। बल्कि प्रेम बढाने के लिए पर-म्पर रोटा बंटा व्यवहार स्थापित की जिए। युवक कुछारोंकी यह राखी स्वीकार कांतिए और बाल एव बद्ध विवाद को त्यागिए। दीन अबला चित्रनों पर भी द्या कीजिए। उन्हें अभयशाम दीजिये यह जीविन मनपायः हो रहा हैं। उन्हें क्षान-दान नी जिए और कडोरनाका स्यवहार न की जिए। महिलाद्यों पर दया कर के बान कुद्ध निवाह भादि अनुभी रोकने के लिए आगश्यक है कि पँचायती की व्यवस्था ठीक की जाय। एक आदर्श पनायत का नपूना बनकर किसी प्रमुख स्थान को अगार्डी आना चाहिये । वास्त्रविक रीत्या निवंश्वन का पालन तो इस प्रकार ही ही सका

सत्य भाइयों और बहिनों श्यान दौजिए।

उतं महोदय यदि चाहें तो समाज में वात्सलय

त्व को शीध्र फैला सक्ते हैं, परन्तु दुःच है वे

व हो व के वशीभूत हो रहे हैं। आज इस पिन्धः

न तो भगवान विष्णु कु गर के नाम पर मिथ्या

श्रीमान को स्याग दीजिए। सचाई को प्रहण कर

मर्म मार्ग पर आदर्श बन आजाइबे। आपस में

ति सब भगडों का अन्त कर लीतिए। वस्म जैनत्व

ा अभिमान स्थान दीजिये। विशेषिकम।

-- उ० सं०

"हरमनी" का मिथ्या भाषण हैदराबाद सिंध से 'हारमनी" (Harmony) ।मक अंग्रेजी सिधी का एक पत्र प्रकट होता है। लके तार देर मार्च १६२५ के अंक में सम्पादक ने ् "Jain Priests" शीयंक में जैन धर्म के चम्ध में निथ्या भाषण किया है। जैन अहिंसा ी खिल्ली सी उड़ारे हैं। हम नहीं समभते इस बदलते हुए जमाने में भी लिंध रे-जहां पर जैन धर्म का प्रचार खुब रह चुका है-यह संपादक महो दय अपने प्राचीन ऋषियों के बाक्यों का महस्य समर्भने में असमर्थ हो रहे हैं। विदेशी-जिन्हें हम ासभ्यी की सन्तान बतलाते हैं-वह भारत वर्ष के ्ल तंत्र भारमबाद अहिंसा धर्न की महत्ता स्थी-ार कर रहे हैं, परन्तु हम उन्हीं ऋषियों की ांतान यथार्थता को देखने म छाचार हैं। शोफ कि ोंभीरं विचार संस्परतः और सहस्रोलनाका असाव धने से किसी बात का बास्तविक निर्णय करना माजे भारतामें कठिन साध्य ही रहा है। जैन

मुनियों के पास पहुंचना कठिन नहीं है। उनका आचार सब के प्रति समान होता है। किसी अव-स्था में भी कोई भी उनसे धर्म लाभ उठा सका है। उन्हें प्रत्येक जीवित प्राणी की भलाई का भ्यान रहता है। वह यथार्थना में इनने तस्मय होते हैं कि अपने शरीर की रक्षा का ध्यान ही नहीं रखते ! सांसारिक बातें और बस्तुओं से कर्नाई तोल्लक न रखना-उनसे विल्कुल निरुप्त रहना ही सञ्जेस्तको पाने का हार है। युनानी तन्त्र-वेत्त ओं ने भी इन्हीं वातों पर जोर दिंवा है। उन्हाने स्पष्ट कहा है कि Know Thyself और for Fewer things a man wants is nearer to god. आकांक्षार्यं कम-परमात्मपद् न ह्वीक ! ऐसी हशा में इन परमानश्यक निक्यों की उपेक्षा कर इनका उपहास करना हितकर नहीं है। हां! द्वंडिया पंथी साधुमुंत पर पट्टी बांधे रहते हैं, परस्तु यर मुळ जैनत्व के िकब है। दिगम्बर साधुओं के अतिरिक्त साब्गम विख्नीने आदि वल रखते हैं परन्तु जैन दृष्टि से वह शिथिला-चार में प्रवृत हैं। यहाँ तक तो खैर थी, परन्त् अगाडी संपादक ने गजब दा दिया है। हम नहीं समकते कि कोई भी ऐसा जैनी होगा जो सिउटी को शक्कर डालने के लिये अपने पद्मोसियों के सिर फोड़ दें ! ऐसी घटना शाबद ही कही मिलेगी। तिस पर ध्यापार और ब्याज की वर में के वल जैनियों पर ही आर्थ पनहीं किया जा सका प्रश्युत इमारे हिन्दू भाई भी उससे मुक नहीं हैं। अन्यव ऐसी निश्या क्षोमी-पाइक बातों को फैलाने से हुन नहीं सबकते जनता का क्या हित हीता है। मारत में बेसें ही आपंसी विरीधं

चर्म लीमा पर है! तिस पर 'हारमनो' को अपने नाम को प्यान रख कर तो कम से कम मेल चढ़ाने वाली चार्ते प्रकट करना लाजुमी है।

"मनोरमा" का छनोखा परिज्ञान !

उपरोक्त की भांति हिन्दी की प्रसिख पित्रका 'मनोरमा' में भी पुनः जैन धर्म के विषय में अय-धार्थ विषरण छपा है। उसकी मई मास की संख्या में पृष्ठ १७६ पर निम्न वाक्य किसे हुए हैं:-

"ध्यापि बोह श्रीर जैन धर्म दोनों का साथ ही साथ भारत में श्री गणेश हुआ श्रीर यद्यपि दोनों धर्म के प्रमु-तका की शिक्षार्थों में नतना श्रीयक अन्तर भी नहीं पाया काता तितना कि श्रम्य दो धर्मों के बीच में देका जाता है तथारियत महान श्राश्चर्य की बात है कि वह धर्म जो एक समय गंगर पर्नत ने कम्या कुमारी तक श्रीर श्रटक से लेकर करक तक प्रचलित था, नहीं श्राम भारत नर्ष से सहशा बोलों की तृरी पर चीन और जापान को गौरास्थित कर रहा है। इसके विपरीत जैनथमि जिसका संगठन श्रीह धर्म का शतांश नहीं था श्रीर निसे शजा महाराजाओं से यथेष्ट सहायता भी नहीं मिजी थी, श्रच्छी हाजत में न होने पर सी श्रयना सिस्तरत श्रम तक रखता है बोद्धानमें की तरह ससका नामनिशान सदाके विसे यहां से बाजा नहीं गया है!"

बलिहारी है परिकान की! किस इतिहासकार में म मालूम, इस तरह की पेतिशासिकता का परिचय विवारी 'मनोरमा' को कराया है! उसकी जाति का झान शोखनीय दशा का हो रहा है। इस लिये 'उसके इस साहसपूर्ण भाषण पर हमें ससं आता है। जैनियों की मान्यता जाने दीजियं महाशया! परन्तु प्रानत्विवदों के कथन को—नई रोशनी के विश्वानों के बन्वेषणों को तो बालाये ताक

म रिवये! सारा विद्वत्समात्र भाग इस वात को ज्ञानता और मानता है कि जैनधर्म की स्थापना बौद्धधर्म के साथ २ भगवान महाबीर ने नहीं को, बल्कि म० युद्धसे ढाई शताब्दि पहिले हुए पाइव-नाथ जी ने ही बहुत करके इसकी स्थापना की थी, यद्यपि जैमी जैनधर्म की इस युगकालीन स्थापना का श्रेय मगवान ऋषभ को देते हैं, जिनका उल्लेख संभवतः हिंदुओं की मान्य पुस्तकों में है। ऐसी अवस्था में बोद्ध धर्म के साथ २ जैनधर्म का जन्म हुआ बतलाना बिल्कुल मिथ्या है। जैन ,धर्मा का संगठन बौद्धधर्म का शतांश नहीं था-इसका निर्णय तत्कालीन परिस्थित ही करसकी है। अत-एव उससे इस व्याख्या का प्रमाणित किया जाता आवश्यक है, वरन् यह भी मनोरमा जी का मन-चला आलाप है। जैन शास्त्रों का अध्ययन ठीक इसके विपरीत परिचय करायगा। पेसी ही कारी करपना राजा महाराजाओं से सहायता न मिलने में षांभी गई है। म॰ युद्ध के पहिले से ही भारतीय राजागण जैन धर्भ के उपासक थे। भगवान पार्व-नाथ के तीर्थ के सम्राट् ब्रह्मदत्त चंद्रक नप आदि जैन थे। भगवान महावीर की माता नृप चंदक की ही पुत्री थीं। भगवान महावीर भक्त सुप्रसिद्ध सम्राट् श्रेणिक विवसार, शतानीक, कुणिक अजा-तशत्र, चण्डप्रयोत, इस्तिमल्ल प्रभृति म० युद्धके ंसमकालीन थे। उपरान्त नन्द वश्यभीर लिच्छिव संशास भा जैनधर्म को मान्यता चर्ला आई थी। प्रस्वात् सम्राट् चन्द्रगुप्त मीर्थ जीन थे। सम्प्रति भीर अशोक मीर्य भी जैनधर्म को माथा नवा चुके हैं। यही नहीं विदेशियों के हत्यों को भी कै अमं ने मोह लिया था। सिकम्दर भाजम अपन साथ

जैन मुनियां को हंगय। था । प्रश्यात्रान्डो-प्रीक गजा मिलिन्द अथवा मिनेन्डर भी कभी जैन धर्म प्रमी था। कलिंग के जितशत्रु सारवेस महामेघवाहन प्रभृति राजा कहर जैनी थे। दक्षिण गृष्कु,गांड्य, राष्ट्र कुर, कलचूरि प्रमृत वंशों में भी जैनधर्म की गति थी गुजरात के कुमारपाछ सिद्धराज प्रमृति राजा जैन थे।मेपाइ के जिशोदिया वंशज महाराणागण माज तक जैन गुरुओं की विनय करते हैं। मैसूर के महाराजा भी अपने पूर्व पुरुषों के समान ही जैनधर्म का बादर करते हैं। मुसलमानी राज्य में जो सुख किचित भारतीय जनताको मिला बंह जैनसाधुओंके षदीलत था । महम्मद तुगलक फीरोज़शाह, भला-खड़ीन और औरंगजेव के समान क ्नहदयी व निष्टुर मुसलमान वादशाहीं पर भी जिनसिंह सुरि, जिन देव सूरि और रत्नशेलरसुरि के समान जैनाचार्यीने कितने ही अंशीमें प्रभाव डालकर धर्म तथा साहित्य की सेया की थी! सम्राट् अकबर का रामराज्य होने में इरि विजय सुरि जैनाचार्य ही मुख्य कारण थे। गर्ज यह कि हर समय जैनधर्म की प्रधानता शासक वंश के निकट अवश्य रही है। उसे यथेष्ट सहा-थता उनसे मिली है। हां, यह येशक है, कि 'मनो-रमा' के परिश्वान में शायद इन नामों की बकत न न हो। वह अपना हो सेर 'सवासेर' समकती हो. परन्तु अब ज्ञाना परुट गया है! इसे ज्ञाने के षिरु ह मुंह नहीं मोलना चाहिये! इस प्रकार पराये क्षोगों पर कटाञ्च करना उचित नहीं है ! उससे इसको एंसी आशा भी नहीं थी। साथ ही जैनियों को भी इन घटनाओं से शिक्षा प्रहण करना चाहिये। इस उम्मनशींल जमाने में पेक्यता का महत्व हरएक को हदयङ्गम कर लेना आवश्यक है!

मह-नचत्र-पटलों में जीवित प्राणी!

जैन सिद्धान्त प्राचीन काल से बतलाता आया है कि प्रह-नक्षत्र-परस्ती में ज्योतिषि जाति सम्बन्धी देवगति के जीव रहते हैं। चमकते हुए सूर्य चन्द्रमा, तारे आदि दिखाई पड़ते हैं यह उन देवों के रहने के विमान हैं। इन्हीं पर सुन्दर भवनीं में वे देवगण रहते हैं। आधुनिक संसार को सहसा इस बात पर विश्वास नहीं होना था ,परम्त अब कैलेफारनिया विश्वविद्यालयके सभापति और लिक ज्योतिपालय (Oteserotry) के व्यवस्थापक प्रो॰ विलियम कैम्पवल इस ही बात को प्रमाणित करने अगाडी आये हैं उनका कहना है कि जिस प्रकार मनुष्यादि थलकर जीवीं से विभिन्न प्रकार के जीवीं का रहना जल में संभव है उसी प्रकार किसी न किसी रूप में सूर्य, चन्द्र, प्रह, नक्षत्र आदि पटलों में जीवीं का रहना असंभव नहीं है। इन स्थानी में भी किसी न किसी रूप में जीवों का अस्तिन्य होना लाजुमी है, क्यांकि जीवित पदार्थ प्रत्येक रूपान पर अपनी परिस्थिति के अनुसार रहता है। (It 18 a fact that "bite is evry where evolved in conformity with its environment") दस ही प्रकार जैन मान्यताके अनुमार कुछ काल,पहिस्टे एक अन्य ब्रो॰ ने पृथ्वी को चपटो और स्थिर बतलाया या। सारांशतः भाज विद्रश्समाज की मीलिक खोजें यथार्थता को पाती जा रही हैं जैसे जैनधर्म वत-**हाता है। इसलिये परमायश्यक है कि जैन शास्त्री** को अंग्रेज़ी भाषा में प्रकट किया जाय तथा जैन बिद्यार्थियों को उच्चकोटि की लौकिक शिक्षा दी जाय. जिन्सं जैनसिद्धान्ती की सिद्धि वैद्याधिक

ढंग से की जाकर धर्म प्रभावना हो। धर्मप्रेमी! परिस्थित को देखिये और प्रसन्त्र काजिसे।

—उ० सं०।

हमारा धर्म क्या हो ?

"यो घहति उत्तमे सुखे सः धर्मः" को उत्तम खुल में धारण करे लो धर्म है। सुल हरएक प्राणी को वाहिये। वह सुल को असल में सुख है, जिस में कोई घाधा या पराधीनतो नहीं है जिसले प्राप्त हो घही धर्म है। क्योंकि आसार्म झान गुण के साथ साथ अनेक गुण हैं और उनमें सुख गुण मुख्य है। इसालये आत्माके अज्ञान, झान घ अनुभवके प्रताप हो वह खुल जो आत्मा में ही है स्थयं प्राप्त होने लगता है। इसिलिये प्रात्माका जैसा स्वक्रव है वैसा ध्यान करना और वैसा ही ज्ञानना तथा वैसा ही ध्यान करना सम्पन्दर्शन सम्यन्तान और सम्यग् चारित्रकपधर्म है। यही धर्म परम आनन्दका दाता है यही निरन्तर सेवने योग्य चधारण करने योग्य हैं।

जिस धर्म से सुख मिल सके वह धर्म बात्मा में ती है आत्मा का स्वभाव है। इसलिये आत्मा का स्वक्रप बधार्य समक्रमा बाहिये।

आतमा का स्वभाव अनेक कप है, इसमें पूर्ण-ज्ञान दर्शन चीतरागता, आनन्द चीर्य परमास्मा के समान भरा हुआ है। यह सदा बना रहता है इस से चित्य है व इसमें अवस्थायें सदा हुआ करती हैं इससे यह अनेक्य है। यह अनेक गुर्णोमें व्यापक है इसलिये यह अनेक्य है, तीमी यह बनेक गुर्णो का अनगढ अमिट पिंड है इससे एकक्ष हैं।

आतमा अपने स्वभाव की अपेक्षा भावकप है इसमें बन्य आत्मा व सर्ज अनात्मा का स्वभाव नहीं है इसलिये उनकी अपेक्षा से अमानकप है। यह संसार अवस्था में विभावकप व मुक्त अवस्था में स्वभावकप परिणमन करता है इससे यह स्वभाव विभावकप है। यह अनित्यती है, यह नित्य ही है यह एक कपी है यह अनेक कप ही है, यह स्वभाव कप ही है, यह दिभाव कप ती है इत्यादि एकांन हठको छोड़कर जो आत्माका स्वक्प जानना सो आत्मा दृश्य का यथार्थज्ञान है। में ऐसा ही है, कमें करूंक से मलीन है परन्तु स्वभाव स कमेंनल रहित शुद्ध है साक्षत्त परव्यक्ष परमात्मकप है। ऐसा अक्षान सम्यग्वान है व इसी ही भाव में चर्या करना य जमजाना सम्यग्वान है व इसी ही भाव में चर्या करना य जमजाना सम्यग्वान है व इसी ही भाव में चर्या करना य जमजाना सम्यग्वान है । यह आत्मध्यान ही धर्म है गढ़ी सुन का तुन्न देनेयाला है। यह अत्मध्यान ही धर्म है, वस जो आन्ध्य प्राप्त करना चाहें वे आत्मध्यान का अभ्यास करें।

क्योंकि ध्यान चित्त लगाने को कहने हैं इस लिये जिस तरह आ मार्क गुणीके स्वभाव में चित्त लग सके वह सब आत्म ध्यान में गर्भित है।

इस पिषय भादपद मान में जो प्रोम बाला है हमारे गुरुस्थ भाई ब बहिनोंको इस आत्मध्यान के साधनके लिये नीचे लिखे कार्यों का दिल लगा कर अम्यास करना खादिये।

- (१) नित्य श्री जिनेन्द्र देव का प्तन या कम से कम भावसहित दशनकर स्तृतिपढ़ना साहिए।
- (२) एकति में बैठ प्रातः और सत्यंकाल सा त-क्रिक द्वारा ध्यान का अभ्यास करना चाहिये।
- (३) आध्यात्मिक प्रन्थों का स्वाध्याय मन स्माकर करना चाहिये जेन परमात्माप्रकांश, समा-धिरातक हाद्दोपदेश, प्रचास्तकाय, प्रवचनसार, समयसार, वियमसार, जानार्णव ।

- (४) मन इन्द्रियवश करनेको निष्य संयमका नियम १७ नियमों के द्वारा करलेना चाहिये। जैसे आज भजन इत्यादिक करेंगे, आज अमुक रसन आयंगे, आज ब्रह्मचर्य पालेंगे, इत्यादि।
- (५) विशेषश्चानी धर्मात्माओं की संगति में बैठकर अध्यातम सर्वा करनी व उपदेश सुनना ।
- (६) दान व परोपकार करना, जिससे लोभ व मान कषाय घटें जो आत्मध्यान में बाधा देने बासे हैं।

ल भोको चञ्चल समक कर पहिले उनकारों में पूरी मदद देनी चाहिये जो जैनधर्म व जैन जानि की संघा के लिए इस जैन जाति में कार्य प्रचलित हैं व जिनका आलम्बन सर्व जैन समाज पर है।

(१) भारत दिगम्बर जैन परिपद्ध के उपदेशक साने य बीइ पत्र खाते मदद देना, धीर में प्राहक कम हैं क्रीब १२००) रु० वर्ष का बाटा है उसमें हाथ बटाना तथा माहकों की संख्या भी बढानी। (२) स्थाइनाद महाविद्यालय काशी. गोपाल सिद्धान्त विधालय मोरेना, महासभा महाविद्यालय स्थावन, सतर्क सुधातरिक्षणी पाठशाला सागर, ऋषभ ब्रह्मक्ष्मित्रम जयपुर, देशवन्धु ब्रह्मक्यांश्रम कुंबळिनिर, अनाथाश्रम देहली, अनाथाश्रम बद्धनगर तथा भौपधालय बद्धनगर, संस्कृत विभाग जैन हाईस्कृल पानीपत, श्राविकाश्रम बस्चई, जैन-बाला विश्राम आरा, महिलाश्रम देहली भादि जो थोड़ी बहुत संस्थाय जैन समाज के भीतर विधा प्रचार कर रही हैं उनको मदद पहुंचाना, इसके लिये यथायश्यक पाठशालाओं व कम्याशालाओं को खोलना चाहिये। दान य परोपकार बहुत ही दितकारी है। जो आवर्ष में सद्दा इसको रखते हैं व सद। प्रथ कमाने हैं।

सामायिक पाठ च निधम पोधी सूरत, दफ्तर जैनमित्रसे गंगाकर उनका उपयोग करना चाहिय। --संपादक

साहित्य समालोचना

जैन सिद्धान्त (Jain Conceptions) इस में श्रीमान खंपतराय जी के दो ट्रेक्टी-अमर जीवन व सुख का संदेश एवं कर्म सिद्धान्त-को मूल (अंग्रेज़ी) में धर्म प्रचारार्थ श्री दि॰ जैन जादसं असोसियेशन, वेलनगंज आगरा ने प्रका शित किया है। छपाई सफाई सुंदर। प्रधाई!

टंडन का इंगलिश टीचर—लेखक श्रीयुत रामनारायण जी टण्डन प्रकाशक कार्यालय टंडन ब्राहर्स, आगरा शहर। पृ० २५६। मृन्य १) छपाई उत्तम। हिन्दीविश्व कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक की सहायता सं अव्छा काम खन्ठाऊ अंग्रेड़ी सीख सका है। साधारणतया इसी प्रकार की अन्य पुस्तकों से यह सस्ती और अच्छी है।

दिव्य मन्दिर अर्थान् नीर्य रज्ञा—लेखक "श्री कृष्ण्"-प्रकाशक बलवन्त आत्माराम पिजर कर, प्रोमुखन, वर्धा । पृष्ठ ४४ म् । हु॥ । स्पार्ध छपाई साधरणतः अच्छी है। इस में आजकल युवकों में इस विषय की अजानकारी के कारण जो त्रयाई दशा फैल रही है उस का दिग्दर्शन कराया है। तथा ब्रह्मचर्य का मदस्य घसाने हुथे कत्तिपय अजमूदा याने पढ़ीं ब्रानपान की व्ययस्था बतलाई हैं। 'बीर' के प्राहकों को अजिम मूल्य भेजने सं पौनी कीमस में मिलेगी। पुस्तक पढ़नी खाहिये।

संतिप्त जैन रापायस—स्व कि मनरंग लाल हत- प॰ खन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा रावल साइज एण्ड हर मूल्य॥) छपाई सकाई अच्छी। किनियर ने जैन दृष्टि से मर्यादा पुरुषोत्तम रामसन्द्र जी का खरित्र अच्छे हम से छंद बद्ध किया है। जैन किवयों में आप को भी उच्चस्थान प्राप्त है। धस्तुनः जैन किवयों की रखनाओं को प्रकट करने की अस्वन्न आवश्यका है। इस लिये प्रकाशकता यह कार्य सराहनीय है। प्रत्येक जैन घर में यह रोमायण होना खाहिये।

भारतीय-भाजन—लेखक पं० हरिदारा-यण शम्मी आयुर्वेदाचार्या । पृष्ठ ७६ मूल्य ॥) छवार्र सकार्द विद्याकर्षक उत्तम है पुस्तकर्में लेखक मे प्राकृतिक या सिदाक आहार, मांस भोजन का जिह्नाका विवेचन, मांजनका समय, धजार्ण, भोजन विधि, स्वाद, खाँ के साथ भाजन, भोजन में जल पीने की व्यवस्था, खावे की कुल सीजें, भोजन पर्धक्षा, उपवास आदि विषय विस्तार सचित्र वर्णित यतलाये हैं और इन सबकी सुग्रम भाषा में अच्छो तरह समकाया है। पुरतक का पाउ उत्तम स्वा- स्थ्य के लियं प्रत्येक हिन्दी पढ़े लिखे की करना चाहिये।

रसायन संहिता—इसका संपादन स्वामी प्रवोधानस्दर्श ने किया है। मूलग्रंथ उनको हिमा-लय प्रवास में एक स्थान से जीर्णशीर्ण प्राप्त हुन्ना उस ही का हिन्दी अनुवाद करके यह प्रकट किया गया है। वैद्यों के काम को बाज़ है। मूल्य किया पृष्ठ ६६।

मादी सिद्धान्त — कें पे भागीरथ स्वामी स्सायन शास्त्री। नाड़ी की चालका प्रस्तृत पुस्तक में सासा विवेचन आधुनिक एवं प्राचीन दोनों सिझान्तों को ध्यान में रख कर किया गया है! चित्र देकर विविध दशाओं में उसकी गित समभाई गई है। वैद्याण सासकर और जन साधारण सामान्य शींत से उसके हारा साभ उटा सक्ते हैं। मूं १८) उक्त तीनों पुस्तकें वैद्य भाश्कर पं० बांके साल गुम्म, धन्यन्तरि कार्यालय, बिजयगढ़ (अलीगढ़) से प्राप्त हो सक्ती है। यही से इन्होंक मंपादकर में 'धन्यन्तरि' नामक वैद्यक संबंधी उपयोगी प्राप्तिक पत्र प्रकट होता है। या। मूं उपवार सहिस रे)।

श्री वीरतत्व प्रकाशक पंडल की सनिष्म वार्षिक रिपोर्ट—इस सस्यामे थोडे ही सम्भ्य में खासी उन्नति की है। इस के द्वारा चालित विद्यालय में इस समय २७ विद्यार्थी लोकिक एवं धार्मिक शिक्षा पाते हैं। कार्य प्रशंसनीय है।

-30 HO



समाज

क्षेजिस्लेटिय कीन्यिलें और जैनी-मार-तीय सरकार ने यद्यपि जैनियोंको एक खास अल्प-संख्यक जाति(Inportal t'Miner ty)करार दी है, परन्तु उस ही के असुसार उन को भारतीय व्य-बह्धा मं स्थान नहीं दिया है। जैनियों ने कभी र इस उपेक्षा के प्रति आबाज उठाई भी, परन्तु वह इतने धीमे हंग से कि उस का उठाना न उठाना बरायर ही रहा ! बेशक भारतीय सरकार की यह उपेक्षा उचित नहीं कही जा सकी, परम्तु अब इवय हम ही समुचित रीति से अपने स्वर्त्यों की परवानहीं करने तब दूसरों को क्या पड़ी दें कि हमारी संमाल करें! मद्रास प्राप्त के जैनियों ने अपने स्थत्वों के लिए लगानार कोशिश का, परि-शाम यह हुआ कि मद्रास प्रान्तीय सरकार को एक जैन-प्रतिनिधि भो प्रान्तीय कौन्सलमें नियुक्त करना पड़ा ! इस ही तरह यि अन्य प्रान्तकं जेनी अपने स्वत्यों को परवा करें और लगानार इस के प्रति आन्दोलन चलार रक्त्रें ता प्रत्येक कीन्सिल मं जैन-प्रक्रिभिधवी की नियाजना हाजावे! मुद्दी बनने से काम नहीं चलगा ! अपने स्थल्यों के लिये लगातार प्राप्त करते रहना हमारे लिये लाजमी

है। कोई भी प्रान्त, कोई भी सभा और कोई भी भाम इस प्रयत्न में जिप नहीं रहना चाहिये। अब तक हामारा प्रतिनिधि राज्यकीय ज्यवस्था में हमारा मत प्रकट करने का मौजूद नहीं होगा, तब तक हमारे स्व बीकी रक्षा नहीं हागी। इस संघध में एक सगठित आन्दोलन शुक्ष कर देना चाहिये। अपने स्वर्षों की रक्षाके लिये दिगंधरी, श्र्वेताम्बर स्थानकवासी, पहिन, बाबू सब को मिलकर मैदान में आ जमनो चाहिये! राष्ट्रीयता के बिना आज जीवन निमाना कठिन है।

हर्ष और बधाई—महास प्रांतीय कौन्सिल में पहले से पि॰ बल्लाल तो जैन प्रतिनिधि थे ही परन्तु अभी हाल में धर्मस्तल के पि॰ मनजय्य हेगड़े को नियुक्त बहां की पिछक की ओर से हुई है। हमें हप है कि जन साधारण को आप में इतना बिश्चास है कि भापको आप के प्रतिपक्षी से एक हज़ान बोट आधक पिछे। इस शानदार नियुक्ति पर हम भाप को हदय से घर्धाई देते हैं और भाशा करते हैं कि आप धर्मस्तल के प्राणियों का उत्तरदायित्य समुखित रीति से निभावेंगे और जैन समाज की मलाई का भी ध्यान रक्खेंगे। उत्तम हो यदि सर्वभारतीय जैन जो प्राक्षीय की निसावें अध्वा असेम्बर्ला में हो वे संगठन करके

शैन स्थत्वो की रक्षा का जाम्दोखन उठाने। ---उ० सं०।

---श्रावश्यक्ता है। जैन पाठशाला देववंद के लिये एक ऐसे जैन, अध्यापक की जो भार्मिक शिक्षा के साथ हिसान भी पढ़ा सकें यदि उर्दू जानते हों और भी अच्छा है-वेसन योग्यतानुसार।

> आशाराम जैन मुख्तार, मंत्री-जैन पाठशाला देववन्द (सहारतपुर)

——(रोहतक) में एक आभ्रम "ज्ञानचितिता जैनाश्रम" नाम सं पिछले सालसं खोला है सो जो छात्रापं आश्रम में रहकर विज्ञाभ्यास करना चाहे यह सहवं आकर विश्वा अभ्यास कर सकर्ना हैं जो छात्रापं आश्रम के कर्च से न रहना था। उन्हों के धक १) रू० मासिक मोजन अर्घ का देना होगा सो आप इपाकर के जो छात्राण आना चाहें कोशिश करके मिजनार्ये।

—ला० हुकुमचंद जनाधरमल. विवर्ती।
—जामवन्तनगर में जै० घ० मूल, धर्म दि० ह०
शीसलप्रसाद जी का शुभागमन चडीत जाने हुआ
था। एक आम व्याच्यान द्वीरा धर्मोपदेश का विशेष
प्रचार हुआ। कलतः एक राजिसाला प्रास्म्म होगरे
है तथा श्रीयुन शिवचरणलाल जी की माना ने
स्वाप्ताद विद्यालय का छाजवृत्ति ६०) ६० वार्षिक
की प्रकान की।

--- अंग्रे जी जीनगजाट का विशेषाङ्क प्रगट होगया है। जो सर्वश्रा दर्शनीय है। गत गांध्मट स्वामी के महामस्तिकाभिषेक अवसर के कुल २२ नवीन चित्र मनमोहक हैं। उनसे उस समय के समागेत, का परीक्ष दर्शन होता है। लेखीं में उस समय के सर्घ स्यास्थान हैं तथा अन्य कई एक उत्तमलेख है। श्री खम्पत्रस्य जी के लेख से बाइविल में पैन धर्म के अबुसार भागम व पृत्रालका पंकीकरण प्रधाणित है। प्रो० खक्वतीं पर्व बावू हेमचन्द्र रायके लेख भी पठनीय है। अंगू जी पढ़े माईयों को जीनयों के इस एक मात्र अंग्रेजी मास्तिक पत्र के ब्राहक होना चाहिये। पता—मैनेजर जैनगजट, जाई हाउम, महासा। धा० मू के)

--पृत्य श्री १०५ पलक प्रकालाल जी महाराज का चतुर्मास इस साल रामपुर स्टेडमें व्यतीत हैं या रामपुर समाजका अही भाग्य है जो ऐसा सुअवसर मात हुआ है। शास्त्र स्वाध्याय धर्मोपदेश शादि का बच्छा लाभ होगा। शास पास के प्रामीपजनों को तथा सर्घ समाज को दर्शन आदि लाभ प्राप्त करने का बहुत अच्छा अवसर है। श्रीजिनदेव से पार्थना है कि महाराज का चतुर्मास निविध्न पूर्ण हो श्री ऐतक जी महाराज जी 'सम्बन्धी पत्रव्यवहार इस फ्ले पर करें।

> -लक्ष्मी प्रसाद मन्त्री जैन सेवक समिति रामपुर स्टेट

देश

— श्रस्तीमंडा (जिला एटा.) में हिन्दू-मुसल मान मार्र प्रारम से प्रोम पूर्वक रहते खले आप हैं। जिस समय खां बहादुर साहबने इस नगर की भींत्र डाली थी। उस समय उन्होंने हिन्दुओं और जैभियों को खासा आध्वासन ने यहां बुलाया था। उसी के मुनायिक किन्दू और मुसलमान जनता बड़े प्रोम से यहां रह रही थी। मुसलमान जनता बड़े प्रोम से यहां रह रही थी। मुसलमान जनता बड़े हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों में सहायक होते थे और सिंदू मुसलमानों की मुद्दम्म में दिल खोल सरीक होते थे। परम्तु भारत की राष्ट्रीय परिस्थिति ने यहां भा अपना प्रभाव हाल दिया है। होय की अग्नि न्या सुल्याने लगा है हिन्दू लोग सड़क के किनार पर स्थित महादव जी का मूर्ति पर एक छोटी सी मढी बनवाने लगे। यथिय जमीन हिंदु जी की है और यहां पास पड़ोस में काई मस्तित भी वहां हे ता भी उमारे मुसलमान भाइयों ने उस पर एतः। ज राड़ा कर दिया। दिस्ती मिलांच पर न पहुंचे आंखर सप्तारी हुकुम से महिया बनना यस्य किया जा चुका है। हिन्दु औं ने जिलाधीश की सेवा में प्राथना भी की परन्तु उसका भी कल कुछ नहीं हुआ। सबूत देने के लिये जिलाधीश ने हिन्दु भों से कहा है, हिन्दु औंने शायद अपना धार्मिक स्वत्वअप-हरण हाने स्थाल करके याजार वन्द कर हिया था।

-अफालियों भी विजय-वार्डस महीने के कठिन परिश्रम और आंदोलन के याद अन्त में अकालियों की विजय हुई और गगसर गुरुशारे से अन्तर्रेड पाठ सम्बन्धी सारी याधाएं कल से दृर हो गयी। कल ढाई वर्जे दिन में बाजेगाजे और ज्ञुल्य के साथ शहादी जन्मा निविध गगसर गुरु हारे में पहुंचा। न तो सरकार का ओर से कोई

शर्न ही लगायी गयी न याचा ही दी गयी। कलसे तीन अलड पाठ आरम्भ दुए हैं। जल्येदार ने कल शाम को ईश्वर प्रार्थना की। तीर्थ यात्रियों के लिये कोई स्कायट मही है। सिर्फ जैतो मडी में लाग वगेर इजाजन नहीं जाने पाते।

विदेश

-फरासीसियों को शंका जर्मनी के इस समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता को इतना महत्व देने से फरासीसी राजनीतिकों को शका हो रही है। 'टाइम्स' के पेरिस के संवाददाता का कहना है कि फरासीसियों की धारणा है कि राष्ट्रसंघ की कठार टीका करनेवाला जर्मनी एकाएक उस को पसन्द करने लगा है तो अबद्य ही उसे सब के हारा अपना काम निकलने की कोई राह दिखायों दी होगी। राष्ट्रसंघ के प्रति जर्मनी के इस रत्साह का वहां पही अर्थ लगाया जा रहा है कि जर्मन सरकार ने संघ के हारा दो कार्य सिद्ध कार्य कराने का निश्चय किया है-मध्य युरोपमे फ्रांस के सैनिक हस्तक्षेप का श्रेष घटाना और सन्धिपत्र का

विषय-सृची

				~				
मं०	विषय		पृ० सं०	नं ॰	विषय		Ā.	० सं∙
ţ	माताकारकावस्थन (कविता)	•••	854	६ सम्प	ादकीय टिप्पणिर	af	***	ध⊏२
ર	प्रथमानुयाग की साक्षा	***	ध७२	७ साहि	स्य-समार् ठाचन	r ! ···	•••	AER
3	ज्ञाति-सम्बोधन ! (कविता)	•••	કુરફ	द्र संस	र द्रिस्टर्शन	• : •	***	920
8	हाय ! मेरी राखी !	•••	833	८ हिस	वि आय व्यय जैन	न हार्र € कुल	पानीपत	488
ų i	समात को परीजा का समय	•••	820					

संशोधित संस्करण

हिसाब आय-व्यय जैन हाईस्कृल पानीपत

१ अप्रेल १६२४ से ३१ मार्च १६२५ तक

तफलील आमदनी

१ चन्दा माहवार	२३२⊏)
२ पोविडेन्ट फंड	१६३॥=७७
३ पाविन्शियल ब्रान्ट	५३६ ६)
४ म्युनिस्थितिशी ब्रान्ट	६२२।)
५ ब्रान्ट राजा खेड़ी बृचि	१४)
६ स्कूल भीर वःहिंक की फीस	428=III-J3
७ दान एक रुपया फंड	પ્રક્રયા)
द लायश्र ो के वास्ते	900).
६ मकान चेना	१५००)
१० पुराना सामान वेचा	88)
११ संद्कची से निकला	49=)
१२ विवाह के समय .	२६ २)
१३ जन्म के समय	१४)
१४ वृत्यु के समय	ره ه 🕏
१४ मुतफरिक तौर से आया	२१६॥=)
१६ किराया ज्यीन	9-)
१७ संस्कृत विभाग	१४१२।)
१८ रोकडा जो १-३-१६२४ व	_

सन्दिनो पास मीजूद या २३८॥।-)१० मीजान ग्रामद्ती १६७७४॥)द

तफसीख खर्च

१ मोविडेंट फ्यड	१३५२'=)			
२ कर्जा दिया गया	१३४६=)			
३ तनस्वाह स्कूल सामान बोदिङ्ग				
हाउस भादि	१२६३१॥=।२			
४ बोर्डिमहाउस के लिये ज्यं	ीन			
<u></u>	दी ६००)			
४ सर्व रामा खेड़ी ब्राँच				
६ सर्व स्काउट (Scouts)	२६)			
७ इ.पवाई रिपोर्ट	इक्षाा)			
= ऋप्वाई अपील	₹81 =)			
६ सर्च नाइरस्कूल Night Se	chool) २६(=)			
१० सफ्र सर्व चन्दा इक	द्वा			
क रने	का १५.=)॥			
११ मैनेजिक्क कमेरीके दफ्तरका खर्च ६६८)।।				
१२ संस्कृत विभाग	€8c≥)III			
१३ रोकट जो ३१-३-२४ को खजाङवी				
के पास है	२३७४ ॥=)७			
मीजान खर्च	इह्लिक्शाः।≥			

हिसाव आय-व्यय "संस्कृत-विभाग" निम्न प्रकार है:---

तपसील श्रामदनी	तफसील खर्च			
	१ दात्रहत्ति (Step hands) ६१० 🖘 🖽			
पास मीजृद थी १६२॥)११	२ इपवाई रिपोर्ट १७१८)			
२ चन्दा लाला रापालाल नेमदास	३ ,, अपील १४(०)			
पानीपत १५०)	४ इत्पर डलवाया ६)			
३ ,, रा. व.सा. सच्मीचंद्रनी २८०)	पिएडतों, हिन्दी ऋौर ऋंग्रेनी के			
४ ,, लार्थाचरंजीलाल जी पानीपत २८०)	टीवरों की तनस्वाह और मन खर्च			
५ ,, पं. इ.बूलमिंह, पं: रामनीलाल ६०)	हाईम्क्ल के फएड से दिया गया है।			
६ ,, ला० परमानन्द सुन्दरलाख व	मीनान खर्च ६४==)॥			
ब्राईदाम न्ये ६०)	रोकड्जो ३१ मार्च १६२५			
७ ,, ला० इत्रसिंह शी पानीपन 🖙४)	को खर्नाची केपास नमा है १०२६॥८)२			
🕳 ,, ला० अहंदास जी पाचीपन 🗣०)	होटल १६७४॥)११			
६ ,, लाञ्ज्यानिमसाद टीचर पानी० १४)	\$156 (400m); \			
१०,, बाबृशोकीचन्द नी बी० ए०				
इञ्जीनियर पानीपत ६०)				
११,, सेठ जैकुपारसिंह व सेटपरमार्नेह				
जी इन्कम टॅक्स अफसर ६०)				
१२,, जीन पंचायत पानीपत,				
दशालाचन में दान किया २४१)				
१२,, जीन पंचायन इटावा दस लाचन				
में दान दिया २०)				
१४,, विवाह श्रादि में श्राया ४८।)				
१४,, छात्रष्टति वापिस आई ४)				
मीनान १६७४॥।)११				

नोट-७) लाला किशोगीलाल बसंतलाल जी, शामली । १६।) लाला नत्थूलाल जी ठैके-दार भक्कार । ४) जैन पंचायत कटक) ४) जैन पंचायत बनारस । इन सङ्जनों ने इस विभाग को दान किये, अनएन इन सबों को धन्यनाद देने हैं। जयकुमारसिंह जैन, मैनेजर ।

जगतप्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

ি বাঁরী के फूल भाव १।) नोला- मोने के चढ़े फूल भाव २।) नोला ভূতী (নির্ফ, चाँदी या चाँदी पर मोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची) हर श्रदद कम व वेश जितने तील चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगत।

२५०) से ३०००) क्ष्येंधनवार् ५००) से २०००) पंगावन होदा 200) 井 400) 58) से १५००) समोसरनकीरचना२५०)सं१०००) १०००) में ३०००) श्चार्यारी इन्द्र एफ १००० में १५००) पालको २००) सं २०००) । पञ्चमंत ३०) में २००) ्रसिहासन रेवल 300) # 400) *श्रप्रमङ्गलद्वस्य १००) में २००) **⊹र्चवर एक** ५) में SUL हार्थाक्रासाजपुरुर) से १०००) *श्रष्टप्रतिहार्य १५०) सं २५०) २०) से २०) क्षमुक्ट घोडेकासात्र २००) से ५००) क्ष्मोलहम्बद्धे १००) से ५००। 39) में 300) क्षचीकी 400) H (000) **%वत्त्रम** Foo) से 3000) * मामगडल 30) से 700) *संद ५०) सं समोमग्न 34) पुक) सं पुक्क) **%कलशा** •छ्तरी इंडो ३०) स श्रुडाई द्वीप की) रचनाकामांडला । ^(०,से ५००) तख़त चाँदी के २००) से ^(०,००) 401 जेन-मन्दिर के उपकरण । वाग्हद्र्ग २५००) से ५०००) ान्धकरी २५००) से ४०००) तेरह द्वीप की । (१००)सं२०००) । पृत्तन के बरतन३००) से (५००) =००) से ४०००)

॰ । यह काम ब्रातिय ब्राहन लेकर यनवा देने हैं। मन्दिर ता र काम में ३००) से कड़ा का शाहन लेने हैं। दिस विक्ष की - चीज नेपार भारहना हैं। ऋषे चाने नोंपे राजनाकर साने का मन∘मा होना है।

पता - (१) प्रधान कार्यालय (कोडी) मोतीचन्द्र कृञ्जीलाल, मोती कट्या, बनारस (

(२) जैनसमात्र कार्यालय सिम्बई फूलचन्द्र जैन, कार्यालय, चाँदीविधाग वनारस सिटी। पन Address— SINGHAL BENARDS

गोरे और ख़बसूरत होने की दवा।

शहजादा जिस-श्राफ-वेल्प की सिफारिश से २१० लाम्डेन स्राहव ने महाराज मेसर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फुलकी को रङ्गत श्राजाती है मुह पर स्याह दार मुँह से फोड़ा फुल्मी,दाद खाज हाथ,पाँच का फटना बगल मेबद ब्रार प्याने का श्राता इत्यादि सबको साफ़ करके चमड़े की नरम करदेती है। यह फुलोंसे बनाया है इसकी खुशबु श्रसें तक बदनमें से नहीं निकलती। कामत र शोशी २१) रुपया ३ शिशों के खरीदार की र शीशी मुफ्त। डाकब्यय ॥)

पताः -मृहस्मद अपुरिष्ठ एण्ड को० आगरा ।

वालरचा समरत वक्स।

यहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अबस्था के अनेक बालक रोग ममान.पमली. श्वाम.खॉर्मा लहक, दस्त. सिक्या, ज्वर.नेत्रपीडा. गलगगड आदि में फॅसकर मरजाते है और ठग लोग उनके माता पिताको भृतादिक की बाधा भपटा. नजर बताकर लटते हैं परन्तु आराम नहीं होता।हमने इसकेलिये एक पिजली का वक्स बनाया है जिससे बालकोके सब रोग शास्त्र होते है। जो ४०वर्ष से धड़ाधड़ विक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजद हैं एकबार परीचा अबश्य करें। म०१। डा०व०।≈ कुलर्॥≈।

मिळने का पता- ज्योतिष स्टब्धवन फर्स खनगर (पञ्जाव)

्रैयदि स्राप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं होविरमें स्रपनाविज्ञापन स्रवश्यछपवाइये

- वीर को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष वहें प्रेम व श्रद्धा के साथ पहना है।
- चीर— हरएक जैन स्कूल, लाइबेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।
- बार धार्मिक पत्र होने के कारमा ब्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाना है।
- र्यार उच्चकोटि का पाचि कपत्र होनेसे फ़ड़ान में रक्ख। जाता है । श्रीर बार बार पढ़ा जाता है।
- र्वार- एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।
- र्वार विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र सावित होवेगा।
 र्शांघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट
 मालृम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट वह
 जाने पर पछनाना पड़ेगा।

ृपताः-'वीर' कार्य्यालय, विजनारः(॥.P.)

ंबर्धमःनायनमः ।

वीर

भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्व का

पाचिक पत्र।



ऑन० सम्पादकः---ष्ठो•प्रवसूर्व,श्री बुरुशोनलपसाद जी ऑन॰ उपसम्पादकः--थी कामवापसाद जी

त्राप हमारे पवित्र उद्देश्यों को कुचलेंगे

यदि आपने इस समय वीर की सहायता निम्न लिखित सरल उपायों से भी न की:--

- (१) स्वयं आहक बनकर, यदि अव तक नहीं हैं।
- (२) अन्य पित्रों को गाइक बना कर।
- (३) सार्व जनिक स्थानों पर बीर का प्चार करके।
- (४) शुभ अवसर्गे पर वीर की भन से सहायता करके।

हम अपने पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि यदि आपने वीर की समाज सेवा अपयोगिन। और सस्ते पन को ध्यान रखकर इस समय सहायता करदी तो अवश्य ही बीर की जड़ अमजावगी और श्री बीर शासन का प्रवार करने में व समाज सेवा में वीर शांघ्र ही सफल होगा।

राजंन्द्रकृपार जीन रईस विजनीर (यू० पी०)

आगामी वर्ष में वीर के प्राहकों को

उपहार में

श्रीयान् ला॰ फुलनारी लाल जी रईस करहत निवासी की द्रव्य सहायता से बा॰ कामता प्रसाद जी उप सं॰ वीर/लिखित अत्यन्त उपयोगी सुन्दर लगभग ३०० पृष्ठों का बहु सूच्य प्रन्थ

"सत्य मार्ग" मुफ्त मिलेगा

दीपमालिका तक जितने बीर के ग्राहक हो जावेंगे उतनी ही संख्या में यह गृन्थ छपेगा। शीघ गृहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिये। अन्यथा पञ्जाना पहेगा।

प्रकाशक "वीर" विजनीर

स्वर्गापदक या नकृद!

सर्वोत्तम चित्र पर!

'बीर" के मुख पृष्ठ पर हमारा विचार पक भावपूर्ण तिरंगा चित्र प्रकट करने का है। अत्यव हम सर्व चित्रकारों को इस पत्र की रीति नीति का ध्यान रख कर मायपूर्ण चित्र मेजने को सादर आमंत्रित करते हैं। चित्र ता० २० अगस्त १६२५ तक हमारे पास आजाना चाहिये। सर्वा तम चित्र के चित्रकार की एक उत्तम स्वर्णपदक अथवा उसका नक्द मुख्य सादर प्रदान किया जायगा। चित्र का भाव या तो भगवान महावीर के जीवन से संबंधित हो अथवा 'बीर" के अनुकृत कोई मौलिक चित्र हो। विश्वास है कि हमारे प्रिय चित्रकार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

हम उन महाशयों के भी आभारी होंगे जो इस विषय में आने विचार प्रकट करेंगे। खित्रों का उचित मृत्य यदि वे चाहेंगे तो दे दिया जायगा ! शीघृता कीजिय ।

--प्रकाशक 'बीर'' विजनीर ।

श्री वर्ज्यमानाय नमः।



वर्ष २

बिजनीर, भाद्रपद रुष्णा ११ चीर सम्बस् २४५१ १५ अगस्त, सन् १६२५

भङ्ग २०

दुर्लभ पर्याय

मित्र क्यों रहे मतुन भवहार ।

श्रात दुर्लभता से पाया है जिन तृप तुमने यार ।

मोहादिक के क्योभूत हो नाहक रहे विसार ॥मित्र०॥

इस श्रम् क्या तन से तुम करते माई पर उपकार ।

सम्यक् लहि निज्रगुण से परिचित्त हो तरते संसार ॥मित्र०॥

श्रमभी समय चेति लगि जाको निज कर्तव्य मंभार ।

श्रम्यथा पुनः दूकि जाउगे श्रारे भूगत मँभधार ॥मित्र०॥

—मनभावनताल जैन

प्रथमानुयोग की साची



उपरोक्त शीर्षक के गत लेख में भी आराधना कोष द्वितीय माग से उन कतिएय सामा-क्रिक विषयों पर प्रकाश डाला गया था, जिन पर समाज में आउकल मनभेद फील रहा है। आज हम उसी जान्य के तृतीय भाग से उन विषयों पर प्रकाश डालेंगे। देखेंगे कि हमारे पुराणवर्णित पुरा-तन पुरुषों का सामाजिक जीवन किस प्रकार हमारे लिए आदर्शरूप है। पाटकों को उनके जीवन के शिक्षा ग्रहण करना चाहिये।

इस शात्र मं ६५ ची कथा व्यमसेन की है। इसमें उज्जैन के राजा चन्द्रपृद्यांतन के विषय में लिखा है कि एक रोज उसका हाथी उसे लेभागा और एक धने जंगल में जा पटका। वहां एक जिन-पाल नामक व्यक्ति के यहां यह राजा रहे। कथा में यह नहीं बनाया गया है कि यह जिनपाल कौन था ? परन्त् नाम और विवरण से वह संठ-विषक पुत्र ही प्रगट होता है। इस हो जिनपाल को पुत्री जिनदत्ता के साथ राजा प्रद्योतन ने विवाह किया और इनके वृश्मसंत्र नामक पुत्र हुआ। राजा प्रयो-तन के दीक्षा प्रहण करते समय पुत्र ने भी दीक्षा ग्रहण की शी और वे मुक्ति को प्राप्त हुए थे। इस व्रकार इस कथा से जब भन्नी और वैश्य में विद्याह संबंध होना धर्मान्कल है, क्योंकि इस संख्ध से उत्पन्न पुत्र मोक्षतक का अधिकारी हुआ, तब आज कल जैन समाज की उपजातिक प वंशों खंडेलवाल अप्रवाल आदि में परस्पर विचाह संबन्ध होने में कोई हानि नहीं है। वर् तो सर्वधा शास्त्र सन्मत हैं। इसके अगानी ६६वी कया फार्निकेय मृनि की है। इस में कहा गया है कि कार्तिकपुर के गजा भग्निदस की पुत्रि कृतिका थी। वह युवाबस्थाको प्राप्त हो रही थी । उसकी रूपराशि पर स्वयं उसके पिता अग्निदल का नियत खराच हो गई। जैन मुनिने १स अनर्थसे उसे रोका भी, परन्तु वह न माना। अपनी पूत्री संही प्रश्टने अनुचित संबध कर लिया। इस संयं १ से कार्तिकेय नामक पुत्रका जन्म हुआ। युवा होने पर और अपना जन्म संबंध जानने पर वह दीवा प्रहण कर मनि होगए और उपमर्ग सहन कर स्वर्गधाम सिधारे। जब इस प्रकार व्यभिचार जात संतात मृति धर्म पालन करने की अधिकारी हे तब आजकल के प्राचीन दस्सों के विषय में विद्वानों और श्रीमानों को विचार करना चाहिये। तथा पतित बहिनों के प्रति भी नयाभाष प्रकट कर उन्हें आत्मान्नति के मार्गपर लगाने की व्यवस्था करना चाहिये। ७= वी सदृष्टि सुनार की कथा से भी इस बात की पृष्टि होती है। उसमें जार पृत्र के दीक्षा ग्रहण कर मुक्ति ल।भ करमें का उल्लेख है।

उ०वी कथा में राजगृह के राजा उपश्रेणिक के पुत्र बिलात पुत्र की कथा है। एक दिन महाराज उपश्रेणिक को समल घोड़े ने घने जगल में जा पटका। "उस बनका मालिक पक यमदण्ड नाम का एक भीत्र था। इसके लड़का थी। उस का नाम तिस्रकवती था।" इस ही से उपश्रेणिक ने इस शर्तपर शादी करली कि इस के पुत्र को ही राज्याधिकारी बनाएंगे। तिलक्षवती से बिलात-पुत्र नामक पुत्र हुआ। यह राज्याधिकारी हुआ। और अनर्थ करने लगा। प्रजा ने गड़ी से डतार दिया। कारण घश वह मुनि होगया और अन्त में उपसर्ग सहनकर सर्थार्थ सिद्धि को प्राप्त हुआ। श्रंणिक चरित्र में एक अन्य प्रकार यह कथा दी हुई है। परन्तु इस से पाठकों को देखना चा हिये कि जब पहिलं सन्नी और शुद्र में विवाह संबन्ध होता था तब आब समय की आवश्यकानुसार वैश्य वर्ण के िविध अंगी में उपनातियों में परस्पर विवाह-सबस्ध होना जगभी शास्त्रों के प्रतिकृत नही है। इम पहले लियचुके हैं कि आचार्यों ने 'जाति' मां को परिधार पक्ष को और 'कुल' पिता का पक्ष यतलाया है। ऐसी दशा में आजकल की तरह एक ही उपनानि में ही परस्पर विवाह सवांध शास्त्र सम्मत नहीं है प्रत्युत अन्य उपजातियों सं विश्राह सर्गध करना शास्त्र सम्मत है। इस कथा सं उस विषय की भी पृष्टि होती है कि नीच जातियों के प्रति मनुष्योचित व्यवहार करना चाहिये।

नं ० ६४ की कथा में आत्मिनिन्दा करने वाली खिनेरे की पृत्री बुजिमनी की कथा है। यह बनारस के राजा विशालदक्त पर मंहित थी और इपनी बुजिमना से उनको भी अपने में अनुरक्त कर लिया। फल्टनः राजा और इस चिनेरे-चिनकार की कन्या से विवाह हो गया। वह पहरानी बन गई। रानियां इस नीखकुल की कन्या से घुणा करती थी। फल्टनः उसने अपनी आत्मिनिन्दा करना प्रारम्भ की थी।

इस कथा से भी जैनसमाज में परस्पर विवाह संबंधी सोलने की पृष्टि होती है।

नं कि की विनयी पुरुष की कथा से यह सिद्ध होता है कि जिस सरह आजकल अप्रवालों में वैच्यावी से विवाह संबंध करने का रिवाज है उसी तरह पहिले भी था। की शाम्बी के राजा धनसेन वैच्याव थे और रानी धनशी जैनी थी। इस कथा के अजु स्वार वर्गमान समाज की परिस्थित को खयाल कर यदि विवर्मी सवर्णी कन्यायों को जैन धनी बना प्रहण किया जाय तो काई हानि प्रतीत नहीं होती। विदानों को अपना अभियन प्रगट करना चाहिये।

नं १०६ की कथा सध्यक्तयको न छोडनेवाली जिनमती की है। यह जिनमती जैनी जिनदस सेठ की पुत्री थी। वहीं नागदस नामक विधीं सेठ अपने पुत्र रुट्टन का विशह रमसे करना साहना था। परन्तु जिनदत्त अपनी कन्या विश्वमी को नही देना साहता था। फलकः नागद्रम ने युक्ति सली। वह समाधिग्रा मृतिके निकर जैनी होगया और बर्तीका पालन करने लगा। जब जिनदत्त को दनके जैत्रध्य के श्रद्धान का विश्वास हागया तब उन्हा ने जिन्मती का विवाद उनके साथ कर दिया। इससे प्रमाणित होता है कि जा को ध्यक्ति जैन धर्म में दीक्षित हो उसका पालन करने लगे तब उसके सवर्णी जैती शार्थी को उसके साथ रोटी बेटी व्यवहार खाल लेना चाहिये । इस समय जैन धर्म प्रचार की और शन्यपुरुषों को उसमें वीक्षित करने की अत्यन्त आवश्यका है। अत्यव इस शास्त्र-सम्मत विषय की ओर समाज मुखियाओं को ध्यान देना चाहिये।

नं १०७ की कथा में सम्राध्येणिक की कथा

है। इसमें वर्णन है कि काम्बी के सोमशर्मा बृद्धिण की पुत्री अभयमती थी। उसने भ्रेणिक की प्रीक्षा की उनके गुणों पर मोहित हो अपना पति स्वीकार किया था। इस प्रकार ब्राह्मण पुत्री और क्षत्री कुमार में विवाह हो गया। इससे आजकल जैनियों की उपजातियों को परस्पर विवाह संबंध करने की पृष्टि होती है, क्यों कि वह तो एक ही वर्ण के हैं। और पहिले तो सर्व वर्ण में भी परस्पर विवाह होते थे।

नं १० स्मी स्था में धनिमत्र सेठ के पुत्र धितिकर की कथा है। यह सेठ पुत्र जय विदेशों से न्यूब धनादि लेकर लीटा और इसकी प्रसिद्ध खहु और हुई तब वहां के राजा जयसेन ने अपनी कुमारी पृथिवी सुन्दरी और एक दूसरे देशसे आई हुई वसुन्धरा तथा और भी कई सुन्दर राजकुमारियों का विवाह इनके साथ कर दिया। अन्त में सांसारिक भोग भोग कर वह मुनि हो गय। मुनिपद में कर्मों का नाश कर लोगों को उपदेश दे आय शिवधाम

का सिघारे। इस कथा से भी परस्पर विवाह संगंध करने की पृष्टि होती है।

नं० ११० की भौषभदान कथा में भनपति सेड की वृषभसेमा पुत्री का विकाह क्षत्री राजा उग्सेन से हुआ लिखा है। इससे भी यही व्याख्या पुष्टि होती है।

नं ११३ करिकुण्ड की कथा भी इसही बात की द्यांतक है। उसमें विश्वमी धनधी का व्योह निनधमी चसुमित्र से होना लिखा है। आजकल संख्याहास को दृष्टि कर विधमी कर्यायों के लेने की बड़ी आवश्यका है। समाज को ध्यान देना खाहिये। इस प्रकार इस तृतीय खड़ की उक्त कथा-श्रीसे भी उन बातों की पुष्टि होती है जिनकों लेकर आज ज्या ही परम्पर में लड़ाई भगड़ों हो जाता है। आज समाज मर रही है-दृक्षरें उसपर खुला आक-मण कर रहे हैं उसकी परना न करके अपनी मान पुष्टि के लिए दिसंदाबाद करना हित कर नहीं।

-- उ० सं०

स्वदेश प्रेम

(१

चल जाय कितनी ही हवा, फिर भी अचल चलते नहीं। प्रणवीर करके प्रण किसी भी भीति से टलते नहीं॥ रणवीर को रणभूमि में निज मृत्यु भय होता नहीं। निज देश के दुख से जला, सुख नीद से सोता नहीं।।

(7)

हो खूर चूर न लाल बयों. यह लालिला जाती नहीं। खलकर अनल में भी कनक में कालिमा आती नहीं।। सुरभित सुमरा मिल मृत्तिका में निज सुरभि खोता नहीं। निज देश के दुख से जला, सुख नींद से मोता नहीं!!

-(**चाम्द**)



१-दश साचाणी पर्व में स्त्रियों का कर्त्तव्य।

भाद्रपद आगया, चारी ओर पूजन पाठ व्हा-ध्याय व धर्मन्वर्ज जीवित सी हो गई, बह महीना जैनियों को चतुर्थ काल का इमरण दिला देता है, जो युक्त कभी मन्दिर नहीं जाते हैं उनकी भी धृष् दशमी व अनन्तचौदश को भीजी की हाजरी बजानी ही पड़ती है, और जो बहु बेटियां वर्ष भर घूंघट में घोटी पाती है वे भी इस महाने में श्री जी का दर्शन कराने के लिये बाहर विकाला जाती हैं।

किर जो भक्त जन हैं उनका तो कडना ही क्या है,ये लोग नाना प्रकार का तपश्चरण करके महान पुण्योपार्जन करते हैं।

और इसी पुण्य की कमाई से आगे के ग्यारह महीनों को काटने हैं। इस तपस्या में हमारी महि-लायें भी पीछे नहीं हैं।, पुरुष एक दिन इस करते होंगे तो स्त्रियां वेला और तेला कई घार करती हैं। परन्तु इन बूतों से जितना लाभ होना चाहिये इतना काम शायद ही किसी यहित को होता होगा, क्योंकि दौलनराम जी ने कहा है-'कोटि जन्म तप तप, ज्ञान विन कर्म भड़ेंगें'' ज्ञानी के क्षणमाहि, त्रिगुप्ति से सहज टरें ते ॥

अर्थात्-अज्ञानी करोड़ी जन्म मे तप करके जिन कर्मी का नारा करता है उन कर्मी को सम्यग्धानी मन, पचन, काय, की गुप्ति पूचक एक क्षण में नष्ट कर देता है।

इस समय महिला समाज में झान की अत्यन्त कमी होगई है इसीसे हमारा तपश्चरण कार्यकारी नहीं होता।

सब से प्रथम गिटला समाज को विद्या पढ़कर सम्यन्दर्शनप्राप्त करना जाहियं,तभी कल्याण दोगा, अन्यथा कभी ताता पृजन कभी शीतला की पृजना और कभी विद्यां मुल्लाओं की मस्जिद भीकता यह मिथ्यात्व संसार सागर में दुनों देगा। आज आपने दशों दिन व्रत करके शोर गुल मचा डाला और कल लड़का बीमार हुआ तब मिथ्यात्व का संबन करने लगीं। इस प्रकार के आचरण से भर्म लाग नहीं हो सकता, हमारी बहिनों को चाहिये कि इस स्थ्यात्व को सर्वदा त्याग में इसके करें में आप अनेक कष्ट उठातां हैं होंगी स्थाने भोषे आपका धन हरण करने हैं व नाना प्रकार के नाच नचाते हैं इसलिये यहां भी दुःच हाता है और इस मिथ्यास्य दर्शन से अनन्त संस्कार का बन्ध भी होता है। जिसका फल अनेक वार कुबोनियों में भोगना पड़ना है।

गृहीत-मिथ्या दर्शन का विस्तार सियों में अधिक क्यों है ? इस पर विचार करने से यही कास होता है कि हम में विद्या का प्रचार नहीं है। हमारं ज्ञान चक्ष खुळे नहीं हैं, हम बस्त्राभूषणी के प्रलोभनों में ही ठगा ही गई हैं। हमने अपनो उपयोग अपने हित अहित के विचार करने में कबी नहीं स्टगाया है इसी का यह फल है। अब हमको चाहिये कि मातभाषा और संस्कृत भाषा का शान जिस सरह हो सके ब्राप्त करलें और उस विद्या के वल से भी उमास्वामी भी कुन्दक्त्य स्वामी आदि आ गर्यों के बनाए प्रन्थों का स्वाध्याय करें,जिस से ज्ञान चक्षु खुलंब आत्मवल जागृत हो और अवने हित का बोध हो, यह पर्याय क्षण भंगुर है यदि अज्ञान में ही समान हो गई या मिथ्यात्व में ही मरण होगया तो वर्डा भारा हानि हो जायगी, फिर यह घाटा हजारी जन्मों में पूरा होना फठिन होगा।

इसलिये इस भादी को महापर्व में महिळाओं को ऐसे नियम अन करने चाहियें जिन से जीवन सुधरता चला जाय और यह नश्वर पर्याय सफल हो जाय, इसके लिये समस्त यहिनों को स्थध्याय करने का व अपनी पुत्रियों और पुत्र वधुओं को धार्मिक विद्या पहाने का नियम करना चाहिये। जबतक ये छोग शिक्षिता न होंगी शुद्ध रसोई करके कोन देगा ! कवायों और भगड़ों से कभी पिंड न क्रूटेगा। इसलिये मान मर्थादा का मिथ्या भूम छोड़ कर वास्तविक गौरव की ओर बढ़ना चाहिये अपनी पदवीके योग्य पुत्रियों को पदाने का प्रयस्त प्रत्येक मां और साम को करना परमावश्यक है। और जब ये शिक्षिता तो जांय नव इन्हें धर्म का स्वक्ष्य समभना चाहिये।

दशलाक्षणि धर्म इस समय दशौ दिन माना जारहा है प जिस की पूजा बन्दमा की जाती है यदि वही धर्म हमारे हृदय में विराजमान हो जाय नो मोक्ष सुख सहज में मिल सकता है। केवल पारलौकिक सुख ही नहीं वरन् इस संसार में भी सर्वत्र आनन्द की छटा उटने लगेगी।

१ उत्तमक्षमा-अर्थात् कीच न करना-यह जितने श्रंशों में घारण किया आयगा उतना - ही शान्ति सुख का लाभ होगा । इससे सब कलद विसम्बाद मिट जायंगे । इसी प्रकार--

२ उसम मार्दत-मान न करना। इस धर्म के पालन से धमण्ड का नाश होजायगा।

३ उत्तम आर्जब-कपट न करना इस से तो स्त्री पर्यायही सफल हो आध्या-न ये छलकपट करेंगी न दुःल उठ।पंगी।

४ उत्तम सत्य-कभी भूंट न बोलना-इस धर्म के धारण करने से हम सन्बी और, सीधी होकर सबकी विश्वास पात्र हो आंग्रगी-और कमशः कैबल्य प्राप्त करने की अधिकारिणी हो जायँगी।

प शौच-अर्थात् लोभ न करमा—इस धर्म का पालन करने से सन्तोप धन की प्राप्ति होगी।

६ संयम-इन्द्रियों को और मनको बग में रक

कर सब जीवों की रक्षा करना, हिसा न करना, दयाभाय रखना, इसी धर्म के सम्पूर्ण परिपासन करने से मुनिशण मुक्ति प्राप्त करने हैं, कवनक ऐसे भाग्य हम लोगों के न ही तब तक वधाशक्ति अपनी वासनाओं को रोकना व द्या अहिंसा का प्रति-पोलन करना चाहिये।

अ तप-अर्थात शास्त्रीक योरह प्रकार का तप करना। यह भी गुहस्थ से नाम मात्र को ही ही सकता है। इस पर्व में महिलाएं उपवास करेंगी यह अनसन नाम का तब है, परन्तु स्मरण रखना खाहिये। कि उपवास के दिन घर का आरम्भ खोड़कर और कोधादि दखायों से बचकर धर्म भ्यान करना चाहिये। जयतक चिक्त पवित्र न होगा तब तक सपका फल भी न होगा।

द्रत्याग-दान देना अर्थात् कवाय भाषीं को छोड़ना और चार प्रकार दान करना। यदि गुद्दश्य के तानेका काई मार्ग है तो दान और मक्ति ही है। उत्तम पात्र को दिया हुआ दान मानी मनुष्य को हाथ पकड़ कर भवसिन्धु के किनार पार लगा देता है।

इस समय त्यागी महात्माओं को शुद्ध रसोई बनाकर आहार देकर कितती वहिनें मदत् पुष्य उपार्जन कर रही होंगी। दानका यहा भारी हिस्सा महिलाओं के हाथ में ही है। हम चाहें तो अपनी गृहरथी में चतुराई से चलकरः द्रव्य को बना सकती हैं और उससे विद्यादान, अहारदान, औव-धिदान कर सकती हैं।

& आकिश्चिम्य-अर्थात् समस्त परिग्रह का त्याग करना-यह भी मुनियाजी से ही हो सकता है सो भी सालव का घडाना और परिग्रह का परि- माण कर घटाने जान। ही हमाश अफिडिबन्य धर्म है। इसके अभ्यास से हम को एक दिन परम सुल मिल सकता है।

रे० ब्रह्मचर्छ-शील पालमा यह दशकां धर्म सब कर्ती का भूगण है। मानव जीवन का सार है, जो मनुष्य निर्दोष शील की पालन करता है वह बड़भागी है। इस बतको स्थिर रखना कायरों व पामरों का काम नहीं है। भारतीय महिलाएं इस बत का आदर विशेष कप से करती हैं इसी लिये उनकी प्रशंसा समस्त संसार में हो रही है। हमारी बहिनों को उचित है कि इस लोक में अक्षय कीति को देने बाला व परस्परा मोक्ष देने बाल जो परम पित्र ब्रह्मचर्च चुन है उसको भले प्रकार पालन करें। अपनी स्थिरता बहाती रहें।

भाइपद व दशलाञ्चण पर्यके महत्व को समभ कर दशां धर्मों को प्राप्त करने का यथाशक्ति प्रयन्न करें। तथा कम सं कम निम्न लिखित नियमों को अवस्य करलें।

१ निन्यस्वाध्याय करना, बहु बेटियों से कर-बाना, न पढ़ी हो तो उन को पड़वाना।

 मिस्थ्यास्य पूजन छाष्ट्रना, और सच्ची असा बहाना ।

३ दूस उपदास के दिन कपायभाव न करना।

ध निस्य प्रति कुछ न कुछ दान करना, भीर उस द्रव्य में से जैन सहधाओं को भेज देना।

> दितै विणी---सन्दासाई

२-हिंदू विधवा और महात्मा गांधी

स्वनाम धन्य स्यगीय देगवन्धु दास की त्रिश्रण धर्म पत्नी श्रीमती वासन्ती देवी की मान-सिक अवस्था का वर्णन करने हुए महारमा गांधी हिन्दी नक्षजीयन के इस अंक में हिंदू विध्ववाशी के सम्बन्ध में बड़े सर्मस्पर्शा शन्तों में लिखते हैं कि-

बिन्दू विभवा हुः विभी प्रतिमा है। उसने संसार के दुन का भाग अपने सिर लेलिया है। उसने दुख को सुव घना डाला है। दुख को धर्म बना डाला है!

कितनी ही बहिनों से मैं प्रार्थना करता रहता हूं कि अपना शृक्षार कम कर दीजिये । बहुनेरी बहनों से कहता हूं कि व्यसनों को छोड़ दीजिये बिरली ही छोड़ती हैं। परन्तु विधवा! जिस समय हिंदू की विधवा होती है उसी समय उसके व्यसन और शृङ्गार सांप की कोचली की तरह छूट जाते हैं। उसे न तं। किसी के शेत्साहन की आवश्यकता है न किसी की सहायता की । रिवाज! तुम क्या

परन्तु हिंदू शास्त्र किस वैधव्य की स्तुति और स्वागत करता है ? पन्द्रह वर्ष की सुन्धा के वैश्वाय का नहीं जो कि बियाह का अर्थ मी नहीं जागती। उसके लिये तो वह अस्याबार ही है बाल विश्ववाओं की वृद्धि में मुर्फ हिंदू धर्म की अवनति दिखाई देती है। वैश्वव्य उस स्त्री के लिये धर्म है जो उसकी रक्षा करती है।

जिस यात को भाज वासम्मा देवी सह रही हैं
जिस म सं वं अपने विलास को हटा सकती हैं वे
बानें जवतक पुरुष न करेंगे तब तक हिंदू धर्म
अधूरा है। एक को गुड और दूसरें को धूहर यह
उलटा न्याय ईश्वर के दरवार में नहीं हो सकता।
परम्तु आज हिंदू पुरुषों ने इस ईश्वरी कानून को
उलट दिया है। स्त्री के लिए वैध-य कायम रखा है
और अपने लिए स्थ्यान भूमि में ही दूसरे विवाह
की योजना का अधिकार!

नोट — मन् गांधी जी को भारत की स्थिति का जितना परिचय है उतना शायदही हममें से किसी को है। उन्होंने भारतीय विधवाओं के दुःखीं की हटाने का जो उपाय बतलाया है, उसपर प्रत्येक को ध्यान देना आवश्यक है। बाल और विधुर विवाह कृतई बन्द होना खाहिए।

---उ॰ सं०

एक वयोष्ट्रह महानुभाव का विचारगीय पत्र।

महासयजी आप की संवा में निवेदन है कि जो वीर पत्र अंक १५ से महिला महिमा नथा सौनाबाई विधवा पुकारके विषयमें लेख निकला है उस के पढ़ने से सारे शरीर के रोमांच थरथरा कर मधुभारा के वेग से चक्षुओं में चकाबीध होगया। हाय! २ बड़े अफ़सोस की बात है जो ऐसे जैनकुल पाकर दयाधम को त्याग कर पृत्री जनमाथ,दर्शनी हुन्ही बनारखे हैं! मेरी १२ साल से पत्रों का अब-लोकन करते २ आज ४५ साल की उम्र होस्तुकी और हर एक पत्रों में मृतक प्रायः पुरुष को कस्या से कन्यायें उससे लेली गईं और उसको भी सम-भाषा गया, परन्तु कोई फल न हुआ। कन्याओंके जीवन संकटापच होनेसं बचा लिए गए। कन्याओं का मामा उन का लेकर बाई जा के साथ दिल्ली चला गया। इस प्रकार श्रीमतो रामदेवी वोईजी के अदम्य उत्साह और अपूर्व साहस से दो प्राणियो का धर्म बच सका है। बाई जी का यह शुभक्तय स्वर्णा अर्रोमें लिखने योग्य है। जैन समाजको ऐसी ही निर्भीक वर्तव्य ररायण माताओं की जुरूरत है। जैन समाज सहसा उन के आभार से उन्ध्रण नही हो सक्ता ! उनके इस धमहत्य में यदि हमें असि-मात है तो दिल्ली आश्रम की हर तरह सहायता करती चाहिये। आश्रम के कार्यकर्ताओं को इस भर्म कार्योपल अमें अब आश्रम के पूर्ण सहायक बनजाना चाहिये!

कन्याओं का तो उद्धार होगया, परन्तु अभा-म्यद्य उस विचारी विभवा का जीवन खराबी में रह गया ! सुना गया है कि वह अब सराय से फर्डी चली गई है। इसका अनुसन्धान किया जा रहा है। उस का अपने माईयों से इस प्रकार विमुत होने में मुख्य कारण समाज की उपेक्षा द्रष्टि थी ! उसकी चिट्ठी काटदी गई ! यह कार्य उसके लिय

हलाहल का काम कर गया! जाति-अपमान के समान और दारुण दुःख क्या हो सक्ता है ? उसने स्पष्ट कहा भी था कि समाज में अब मुफ को स्थान कहीं मिलने का नहीं-सब मुफ्ते दुरदुरायेंगे। उसे विश्वास दिलाया कि पेसा न होगा ! परन्तु परिस्थिति को देखते हुए उस को यकीन नहीं आया । वस्तुतः समाज में पतित बहिनों के छिए-अनाथ बहिनों के लिए कोई प्रबन्ध नहीं है। उनको दुध की मक्बी की तरह अलग निकाल फैंक दिया जाता है। परन्त् अव समय पलट गया है ऐसे फेंकने से लोकहास्य हो रहा है। इस दशा का सुधार अवश्य होना चाहिए । पतित वहिनोंके प्रति दया दिवाइए। समाज के कर्णाधार चेतिए। जो मुनासिव समिकप वह प्रयोग में लाइए। अनाध विधवाओं के दिल रोकर कह रहे हैं-उन पर तरस लाइए:-

मत सता तू ऐ फलक, बस बेवफाई हा सुकी। इन्तहा हद तक सितमगर दिल दुखाई हो चुकी ॥ इन्तजारी के फफे।ले फूटकर बहने लगे। आस्मां तक सन्ज आहीं की रसाई है। सुकी ॥ --उ० सं०।

स्वदेश-द्वेपी।

कहा केंचुए ने मिट्टी से-छि: छि: तेरा कैसा वेश! किनि कड़क कहा-रे पापी, रही न तुभामें लज्जा लेश।। तिस पिट्टो से जन्म लिया भी खाकर जिसको बड़ा हुआ। उसी जन्म-दायिनी भू को दुष्ट कोसने खड़ा हुआ। --(विश्वमित्र)

परिषद् समाचार

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचन्द पञ्चरत्न २६ जून से १७ जीलाई तक-पध्य प्रदेश

केवलारी-(सिधनी) १६ जून को आये, किन्तु संडेळबाल विरादरी का एक बारात में शरीक होने के कारण सभी न हो सकी।

लागटा (वालाघाट)—१ जीलाई, आत्मधर्मे पर भाषत दिया। बार भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा यहां के भाइयों ने वेश्यानृत्य, बातिरावाजी, कत्या विकय बन्द करने की प्रतिहा सी और श्री मन्दिर भी घोती दुपटा शादि बस्त शुद्ध खादी रखने का निश्चय किया और श्री उप-देशक पंड को शास दुप में जैन जन संख्या २६ है।

बालाधाट-३ जुलाई, सिघई कपूर चन्द आदि हो मिठा परन्तु सभा नहीं जुट सकी।

शरा सिवनी—(बालघाट) ५ जुलाई, सभा में समाज सुघार पर व्याख्यान हुआ, यहां पर स्वा-ध्याय का प्रचार अच्छा है और जैन सख्या ३०० है। आ) कर उपदेशक जी को प्राप्त हुए।

गों दिया—(भंडारा) १० जुलाई, शास्त्र वांचने के पश्यात् सभा हुई, भाइयों ने कन्याविक्ष्य वाल विवाह, तथा वेश्या नृत्य की प्रथा वन्त् करने की प्रतिका की तथा आठ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। उपदेशक फंड को ३) द० प्राप्त हुए।

तुमसर-१२ जीलाई, समाज संगठन पर भा-बण दिया तथा भाइयों ने कन्याबिक्य, वालिववाह तथा वेरयानृत्य आदि प्रथा बन्द कराई वहां स्वा-भ्याय का प्रचार भरुछा है और जैनियों की संस्था ४० है। और साई फूलचंदजी गोलालारे उत्सोही हैं।

कामटी—(नागपुर) १३ जौलार्ड, जैन जन संख्या ४० है। सभा में १ माइयों ने स्वाध्याय का नियम तथा पंजायत ने आतिरावाजी, अञ्लील गान कन्या विकय, पेश्था नृत्य, घाल-वृद्ध-विवाह प्रधायें बन्द की।

राम्रटेक--१४ जौलाई, यह मनोहर अतिशय-क्षेत्र हे, यहाँ अति प्राचीन चतुर्थकाल प्रतिमा श्री॰ शान्तिनाथ जी को १५ फुट ऊँची विराजमान है सब सम्पूर्ण १० मन्दिर एक ही स्वान पर परपोटे के अन्दर हैं क्षेत्र का हिस्सास भी ठोक पाया।

मुक्तिगिन्-' प्रजालां, अमगवती से कुन्थल-गिरि के प्रचारक भाई देवेन्द्र कुमार जी साथ हो गए यह क्षेत्र रमणीक है। यहां दो भौंगे हैं यहां से साढ़े तीन करोड़ भुनि मुक्ति पश्चारे हैं। यहां के मन्दिर जीणें अवस्था मे हैं। जीणों द्वार होना आवश्यक है।

प्रत्याहा—(अमरावती) १७ जौलाई. यहां पर १२ घर मण्डलघाल भादयों के हैं। सिघरे सूरज मल जी ने सभा के लियं बुलावा दिया केवल दो भाई आए पृछ्ने पर ज्ञात हुआ कि वहां के भाई परिषद् के विरुद्ध हैं।

सूचना

त्रुशस्त्रका-श्रीयुत् चम्पतगःय वैदिस्टर सभापति परिषद् श्री सम्मेद शिलिरके पूजा केस (मुकदमा) को प्रिधि कौंसिल में पैरवी करने के लिये इङ्गलैंड १५ सितम्बर के लग भग जानेवाले हैं। आपने जनता के हिलार्थ यह निश्चय किया है कि अपनी नीचे लिखी हुई प्रतकों को कम मृत्य में दे दी जार्गे। पुस्तकों कम मूल्य में १५ सितम्बर तक ही दो जावंगी। सँगाने वालों को कीमत य हाक बर्च पहिले भेजना चाहिये। बी० पी० नहीं भोजी जावेगी।

कीमत डाकसर्व

- ? Key of Knowledge
- भंग्रेजी में (अर्थात् धान की कुञ्जी), ६) ₹)
 - Rouse holders Dharma
- अंग्रेजी में (रत्नकांड धावकाचार)।/ -)
 - 3 Practical Path
- भंग्रेजी में (तत्त्रसाला) **१**H) 10)
- 8 Sience of Thought अंग्रेजी में(अर्थान्विचार क्या हे ?) मुफ्त 🗝)

हर जगह एजेन्ट चाहिये नमृना ग्रुप्त

ड्यांन था) श्रीशी ॥



विना तकलाफ के दाइको जह से पिटाने के लिए दद्रहर मरहम

こうごう からから いっかのからから ही ये। ग्य हैं। शीशी ।) दर्जन शा) हा॰ म॰ माफ । कोई भी दवा १ दर्जन मराने से एजेन्द्र हो सकता है। सर्व शासीय औपधियां बिक्षी के लिये है तयार क्टर्ना है। प्रजेक्ट, है को विशेष सुविधा । घीमा है पर उचित सलाह मुफ्त । है लिखिये, सूर्वापत्र हु:त । तयार करती हैं। पड़ीन्ट, धैय और धर्माद्य बाली को विशेष सुविवा। घीमारी का दाछ लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हाल के लिये प्र

वता-आयु वाचार्य पाष्ट्रांग शिवराम शंट्ये गदा, श्रीगणेश चिकित्सः भवन, नं० ५ दमोह सी० पी॰

डाक महसूट माक

गोरे झौर खूबगुग्त होने की दवा।

शहजादा जिस-आफ्-वेट्स की सिफान्शि सं डा० लामडेन साहव ने महाराज शैक्षर के बास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाव के फूल की सी रङ्गन आजातो है शुँह पर स्योह दाग, मुँड से फोड़ा, फुन्सा, दाद, खाज, पाँव का फटना, धगल में बदबूरार पर्साने का आना इत्यादि सवको साफ करके खमड़े को नरम कर देती है। यह फूलीस बनाया है इसकी ख़शत्रू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत र शीशी हा) रुपया ३ शीशी के खरीटार को १ शीशी मुपत । डाक्य्यय ॥)

पताः -- प्रहम्भद शफीक एएड का० भागरा ।



समाज परमहर्ष !

"हमारे सभापति जी 'विद्या-वारिधि' हुए !"
हम को यह प्रकट करते परम हर्ष का अनुभव
हो रहा है कि 'हिन्दू-सनातन भारत धर्म महामण्डल'ने परिषद्के स्थायी सभापति स्वनाम धन्य
श्रीमान् याव् चम्पतरायजी वैनिष्टर-एट-लॉ, हरदाई
को 'विद्या-वारिधि' की वास्तविक पदवीसे सम्मानित किया है। वस्तुनः यह उपाधि वैरिष्टर साहब
के तुलनात्मक धर्म के अगाध पाण्डित्य को और
उनके जैन समाज के नेतृत्व को लक्ष्य कर ही महामंडल ने पुरस्कृत की है। अत्रण्य हम को और भी
हवे है कि भारत में आज धार्मिक-पक्षणान का अंत
होकर पारस्परिक प्रम का स्नांत वह निकला है।

यह सम्मान इस ही बात का एक प्रमाण है। स्थयं वैरिप्टर महोहय लिखते हैं कि 'इस सम्मान को पारस्परिक मित्रता की बुनियाद समभना चाहिए संभवतः जैन समाज भी इसी रूपसे उसकी देखेगा और हिन्दुधर्प महामंडल का आभारी होगा।" यह शब्द स्वय यथार्पताको लिए हुए हैं ई नसमाज अपने हिन्दु पड़ोसियों पर सदैव विश्वास रखनी आई है और रक्षेर्या हिन्दुमाई अपने इस इत्य हारा उसे और भी दढकर रहे हैं। हमें विश्वास है कि अब हिन्दु भाईयां हारा शायद ही काई कहीं ऐसा कार्य होगा, जहां हम कैतियाँ के दिल दुन्व सर्फ़ ! इस आध्यासन के लिए सारी जैन समाज "हिन्दू धर्म महामंहल" की आभारी है और वैरिद्धर साहित का इस सम्मान पर हार्दिक धधाई देती है। -उ॰ सं०

शुद्ध केसर

सर्व जैनी भाईयों को बिटित है। कि हमारे यहां पन्द्र वर्ण सं केसर की कृषि होती है। जिस के सम्बन्ध में हमने एक किताब बोने आदि की विधि केसर के पौरे के चित्र सहित प्रकाशित की है। इस और हमारी केसर शुद्ध व पवित्र होने के कारण अधिकता से लाग सेयन करते है। मूल्य ३॥) की तीला है।

थेक ब्रोदार को कुछ नियासन हो सकती है। जवाव के लिए टिकट आमा चाहिये ! इता—अवधिवहारीछाल मैनेजर औषवाक्रय, साह्न कुन्तिवहारीलाल जमीदार कुन्दरकी (मुरादाबाद) --श्री जीनकुमार सभाकी भीर से श्रीराज-कुमार जी आगरेकी पाउणालाओं के इन्सपेक्टर नियत हुए हैं। आप दिलचन्पी के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्नति होने की आशा है।

अगरं की म्यूनिस्पहरी ने उक्त सभा को १२) इ॰ मासिक देना स्थीकार किया है।

सभा में जीन धर्म शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों की षड़ी कमी है। आशा है उदार महानुभाव शास्त्र स्वाध्याय के लिये पुस्तकों का दान करेंगे।

इतारी लालजैन बी० ए० मन्त्री ।

--पार्श्वनाथ दि॰ जीन पाठणाला अहिच्छत्र के समीपवर्ती राम नगर गाम में जैन घम का भृते हुवे भाउवी में पुनः जैन घर्ग प्रचार करने के हेतु कोली गई है। तिसका विशापन अलग भी वंटा गया है। पाठशाला का कार्य्य बहुत अच्छा चल रहा है २१ विद्यार्थी घर्म शिक्षा प्राप्त कर १ हेहै। मन्दिर जी में पूजन भी करने हैं। पाठशाला में दो अध्यापक हैं। ७ विद्यार्थियों को भोजन व्यय भी दिया जाता है पाठशाला का व्यय १२५) मासिक है, भाइयों को सहायता देनी चाहिये।

शोक—श्रीमान गांधी कँचन्द्र दोहद का क्वर्ज वास होगया। भगवान से प्रशंता है कि उनकी आत्मा का शान्ति सिलं सुन्यु समय उनके पुत्र गांधी सुरक्रमल कँचन्द्र जी ने २) वीर को प्रदान विसे। महासभा—सम्बन्धी मुक्दमे की तारील १० है। पुराने महामन्त्री जी ने सब कागजात शेह बाल के कार्ट में दाख्मि कर दिए हैं। अब देखिये क्या होता है ! कांग्रारी जी ने एक और मानहानि का मुक्दमा हिन्दी जैन गजट पर दायर किया है। वृथा परिणामों का संक्लेशित करने का ऐसा ही कटु परिणाम हाता है! संद !

—दान वंशि का दान और की खोंद्वार कलकत्ता निवासी धर्मी साही परम सड़कन श्रीमान सेठ हजारोमल जी जमनादास जी एं श्रीमान सेठ सेढ़ मल जी दयाचन्द्र जी साहब की तरफ से श्री दि॰ जैन मन्दिर जी देवलटान का जी जींद्वार प्राचीन श्रावको आरिणी सभा द्वारा है। गया है। यह मन्दिर करीच २००० वर्ष प्राचीन बहुत विशास है। जी जोंद्वार में करीच १०००) एक हजार ठपया खर्च हुवा है। हम उपन दानी महाश्यों को कोटिशा धन्यवाद देते हैं और श्री जिनेन्द्र देव से प्रार्थाना करते हैं कि शापकी निर्माल बुद्ध सदैव इसी प्रकार धर्म कार्यों में लगी रहे। जिससे जैन धर्म और जैन समाज का उद्धार हो।

> सुद्र्शन जैन-देवलटान पी॰ पातकुम (भागभूमि)

धानश्यकता

एक अग्रवाल टाक्टर साहब की शादी के लिये एक कत्या की ज़करन है। जो जैन मन की हो, वा वैद्याव मत की हो ! टाक्टर साहब का गोत्र वंसल इस, आमदनी तन्दुक्स्ती, बहुत ही अद्बी हैं ! उम्र १३ साल से कम न हो ।

पता---राममोहनलाल बी० ए० 'रचा मेहिकल' मुरादाबाद । ,

— श्रहार राजपृताने के उदयपुर राजप का विध्वस्त नगर है। यह उदयपुर नगर से दे मील पूर्व पड़ता है। कहते में आशादित्य ने पुरा-तन राजधानी तस्वा नगरी के स्थान में इसे गति-धित किया था। उज्जैन हाथ आने से पहिले विक-मादित्य के तुवार पूर्व पुरुव तस्वानगरी में ही निवास करते रहे, जिसका नाम बिगड़ कर पहले आनन्दपुर और पीछे अहार हुआ। इस स्थान के पूर्व और कितने ही पुरत्ने के नियान मिलते हैं जिन्हें 'धलकोट' कहते हैं। धलकोट में पत्थर की तरासी हुई बीजें मही के बरतन और सिक्के हाथ लग जाने हैं। कुछ बहुतपुराने जैनमन्दिरों का आज भी पता चठता है। जिनका मसाला दूसरे अधिक पुराने गिरं मन्दिरों से ठिया गया है। मूमि चैन्यों और मन्दिरों के हुटे पत्थर से भरी, जो रानावों की कतरी बनाने में छगा है। —हिन्दी विश्वकोष

सं ७ नोट:—उदयपुर अथवा निकट के किली विद्वान पाटक को इस क्यान पर जाकर खाज करना चाहिए। तथा अपनी रिपेट हमें में जना चाहिए। यदि सिक्के भिळ सके तो वह भी भेजना चाहिए। इससे इतिहास पर प्रकाश पहुंगा।

— उ० सं७

सावधान! नई खुशखबरी!! सावधान!!!

चांदी के कारीगरों ने मंदी के कारण मजहूरी घटादी

मरी मजरूरी नकाणीवार फैंशी काम जैसे येती, नालकी, सिंहासन चंतर, छत्र धादि ।॥ भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वर्गरह २ शीघू ही छुछ बार्डर भेजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये हमारा बहेश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीनिदर जी के हर किस्स के उपकरण हमारे यहां हमेशा चना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। यंत्रर, सिंहानन, बेदी, नास्की, अष्टमंगस्त्रस्थ, अध्यप्तीहार्य, श्रुकुर, मेरु, भौमण्डस आदि। तांबे के ऊपर सोने का चरक चढें हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलग, कस्त्रशी ज्रदोजी का सामान जैसे चंदोबा, परवा, अस्त्रार, बन्दनवार इत्यादि।

सीनाराम लहरीप्रसाद मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी इमारे अन्य कार्य !

हमारे यहाँ बनारसी साड़ियां. साफे डुपट्टे, किनस्वाब, पीत के थान, ईक्षकाफ, काशीसिक्क के थान, दावनी, योटा, पट्टा, पुरवी साड़ी, टक्कवा वगैरह।

जानिसेवक-सीनाराम लहरीनसाद, सराफ़ा, पनारस सराय (जि॰मैनपुरी) बाली जैन दिश्या को मुसलमान होगई है और जिसके समाचार वीर के गत अंबोंमें प्रकाशित होचुके हैं वहीं पर है। उस को वहीं से १०) भी मिलगये। खूब ताजिये मनाये। उसकी दोनों लड़कियों को उनका मामा मैनपुरी लेगया है। रामदेवी बाई जी ने उनको लंने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु मैनपुरी पञ्चायन ने उनको नहीं जाने दिया। अब सुना जाता है कि धर उन मासून कन्यायों के विवाह जल्दी ही करके उनको जीवन नष्ट कर डालेंगे। घोर अन्याय है!

देश

— अलीगँ जा ज़िला एटा में मुहर्रम स्रोतंद्र हो गई, बद्यपि मुललभान भाई थों ने द्युधा हिन्दु में के दिल दुग्याने के प्रयत्न किए ! नई बनती हुई मिडिया पर गोएत आदि मिलिन पदार्थ फेंके गर! इन नीच चार्तो के करने में इम नहीं समभते दीन और दुनियां की क्या भछाई समभी जाती है? इसी तरह मुहरंग के रोज पहेंछे अलम निकालते हुए जैन मिन्दर के सामने अधिक देर तक हद दर्जों का मातम किया गया। हमारे एक दो मुसल-मान भाई बेहीश हो गए! जेनियों को इस में आपित एक तरह से न भी हो क्योंकि वह अपने शांत स्वभाव वश इस प्रतिस्पर्धक कार्य में भी यही समभ छेते हैं कि जैनायतन में प्रत्येक प्राणी को फरियाद करने को अवसर प्राप्त है, परन्तु लोकल अधिकारीवर्ग को अवश्य ही इस अनोखे इस्य पर ध्यान देना चाहिए। मुसलमान भाइपी को अपने हिन्दू एड़ोसियों के साथ कम से कम शरियत के निम्न शब्दों को ध्यान में रखकर वर्ताव करना खाहिए पेंग्नबर सारव कहने हैं:-

पवित्र भादों मास में मूल्य घटा दिया

चातुर्मास के बामुल्य धर्म करने के समय में स्वाध्याय व ज्ञान प्रभावना कीजिये

- (१) श्रावकधर्गदर्गण पृष्ठ ४५०, मृत्य मजिस्य ॥८) १२ का ६।)
- (२) जैन धर्म के विषयमें अशैन बिटानों की सरम्रतियां पृष्ठ ६४, मूह्य -) २५ का १॥)
- (३) किस्य नियम नित्य समदल पृष्ठ ३२, मृत्य)॥ २५ का १)
- (४) जैन वर्शन जैन धर्म पृष्ठ १६ मूरुप)॥ २५ को ॥०)
- (५) कर्माय कीमुदी पृष्ठ ५५० सुत्य सजिहर १॥)
- (६) उपदेश रन्न कोप पृष्ठ ५० सृत्य =)॥ १५ का २)
- (७) अरबु रवामी चरित्र पृष्ट ६० मृत्य ।०)॥ १ का ४)
- (=) सुदर्शन संठ चरित्र पृष्ठ ४० मृत्य 🕫) ६ का 🤾
- (ह) जैन प्रश्नोत्तर कुलुमार्घली पृष्ट १२० मः । 🗗 प का २)
- (१०) श्राविका धर्म दर्गण पृष्ट ६४ मृत्य 🔿॥ २५ का २)
- (११) मृ ल्यवान सातो (विश्ववा सती का उत्कृष्ट खरित्र) म्ल्य ३)॥ २० का गा।)

जीन पुस्तक पकाशक कार्यालय, व्यावर (राजयूनाना)

"बह मत कड़े। कि लीन दमारे साथ नलाई करेंगे ता इस भी इनके साथ करेंगे और यदि बह हमें सनायेंगे ते। हम भी सतार्थेने: बरिक यह श्रकीश का मी कि अगर लेगा हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उनके लाथ भलाई करेंगे भगद वह हमें सत्तायों तो हम खौरकर अनको नहीं सतायेंगे " (The Prophet, I., 147 Instead in the Ethics of koran Page 129)

---व्यापार समाचार्यात सप्ताह में बिला-यत से सोना २०६००० गिनी का आने बाला था भीर खाँदी १२००० पौंड (गिनी की) जावा सकर १४०००० बोरे आने वाली थी।

-- हिंद मुमलिम आपसी अनै स्य फैलाने

के अपराध में लाहीर के 'गुरुघंटाल' के सम्पादक के। ६ माम की सर्जा और १००) जुर्माना हुए हैं। हैदराबाद सिंध के 'मललमान" के एडीटर को भी इसी अवराध में १००) जुर्माना किए गए हैं।

---केलाग के एक पाइडी ने अपने दो गर्ना को माने पर बिटिश मेडीकल पसोसियेशन की २५०० गिती में येख दिया है।

--एक साथ चार बच्चे 'डेली हेरस्ड' का कथन है कि वरिल्डरन स्ट्रीट बेरी डाक्स की मिसेनः हिशित्स ने एक साथ चार वच्चों को जना है। सब सकुशल है। बलिहारी!

छपगया! श्री पञ्च पुरागा व हरियंश पुरागा नाटक (ड्रामा) छपगया!! भो पद्मपुराण का नाटक पांच पिन्छेटां में प्रथम स्वयम्बरादशं, बनावाल मार्ग, सीता हरण, छका-गमन, चक्री दमन, रखीली सुरीली तर्ज नसर नज्म,२६५ पृष्ट बडा साइज पांचा की का जिल्द । मूह्य री) है। हरिष्ठंश, पाग्डव प्राण दोनी शाखीं का सारांश लेकर प्रथम गोकुलभवन परिच्छेद मूल्य केषळ ॥) शीख कथा नाटक मूल्य । ह) विक्र ताओं को कमीशन भी दिया जायगा।

पताः -- सेत्रक जैं। डामा मु० महरूका पा० लावड् जिला मेरठ

भावश्यकता

श्री लुहरीमेन दि० जैन सभा के लिये एक उपदेशक की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार। अपनी योग्या न किस नेतन पर यह कार्य करेंगे इत्यादि विस्तार पूर्वक पत्र लिखने पर ही खत्तर दिया जावेगा।

पता - कपूरचन्द्र मंत्री श्री ब्लुब्दि जैन सभा पोस्ट-केवलारी जिला सिवनी B. N. R. मुचना-पृत्र पर्ध से पर्व के स्थान पर भूज से प्रथ से प्रध्य लग गये हैं, परन्तु विषय सिलसिले से है।

विषय-मनी

		•		(d)		
नं विषय		•	पृ० सं •	मं॰ विषय		યું વ
2 Con Adid ham	•••	•••	394	६ सम्पादकीय दिप्पणियां '''	***	४२⊏
२ प्रथमानुयोग की साक्षी	• •••	***	५२०	७ दो प्राणियों की रक्षा होगई	•••	A § A
हेस्यदेश प्रेम (कविता)		• • •	प्र२२	इ. इवदेश द्वेवी · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•••	y Z y
ध महिला महिमा	***	***	પુર્	& परिषद्ध समाचार	•••	BEV
५ एक वर्षाबुद्धमहानुभावका विचारणीय एव ५२६				१० संसार दिग्दर्शन ""	•••	પુ ३⊏

देशाचा बालक को युवापुत्री देने के विषय पढ़ वह के परलोक जाने की तक्यारी हो रही है,मगर इसका प्रचार न मिटा, घरना दिनों दिन दूनी बढ्ती हो रही है। इस विषय में मेरी राय ये हैं कि जो विश्वया आश्रम कई जगह स्वाचित किये गये हैं, ऐसी विभवा के वास्त्रे नहीं हैं क्यों कि इस से तो ऐसा होगा कि (वे सरम की नाक करी एक बीता रोज बढ़ी) सो विश्वया आश्रमके सहारे से निर्लज पुरुषों में और भी वीरता धारण की है कि आज हमारी हुन्ही भँजती है सो मँजा सेवें। अगर बेटी विधवा हो जायगी नो कोई हर्ज नहीं विधवा भाश्रम भेज दी जात्रेगी। इसी उम्मेद से अपना नोट भँजा केते हैं (मेरी घानी उतर जाय नेकी के बैल का बघग काय) यही मसल है। जो त्रिधवा आश्रम खाले गये हैं उनमें उन विधवाओं को मेजना उचित है जो युवा पुत्री वा पुत्र दोनों की उमर देख सनातन शादी की गई हो और उनकी जोड़ी फूटने से कर्मों के अनुसार वह अनिष्ट समका जाता है। ऐसी अवस्था में त्रिधवा आश्रम काम-थाव हाता है कि पूत्री अपने अत संयंग के साथ कर्मों की निरजरा करेगी और खुद अपने दिल में समभेगी कि इसमें न तो मेरे माता पिता का दोष और न मेरे सासु ससुरका दांच यह मेरी किस्मत का ही दोष है!

और जो मृतक पुरुष की शादी की जाती है तथा वालक के साथ तथा पट्टा से बा दो सौन बनना (ऐसी मुसीवत पुत्री को समक्त) जानवूक कर ब्यादी जांचे तो पुत्री बगर कोई अनीत काम कर गुजरे तो उस का दोप न समक्षमा खाहिये। बरना वह पुत्रो अवने माता पिता वा सास समुर के मकानके सामने मकान छंकर रहे और दोतोला फोलतार लेकर डामर तेल के साथ घाटे और अपने माता पिता तथा सासससुर के चेहरे पर पाते और उन का चेहरा चरकीला समकदार धनावे जैसे चोर चोरी रात को करने के कारख कि कोई मुक्तं पहिचान न सके मगर इन साहबों को दिनमान ये पहचान करनेका यल शुभ है (४) इस के सिवा उन साहबों को जो अनमेल विधाह करें करावे विरादर वो मंदिर से दूर करते की कोशिश हो, क्योंकि ये पुरुष इतने पापी के भागी होते हैं सी लिखते हैं:--प्रथम बेटी बे बना. दूसरे बेटी को व्यभिचार खिखाना तीसरे बालघात कराना, चौथे दंव धर्म तथा विरादरी को उस के हाथ भोजन पान कराना. पांचमें पृत्री का धर्मी खडित होना, छटं में जैन कुल की वृद्धि का नाश, सातर्वे जैम जाति की निन्दा, आठवें जो उस पुत्री से संतान हुई तो वह भी बैसी होगी कि "जैसे उद्दं हैसे भान उन के चुटै न उन के कान" यह मसल है और फिर यह सन्तान होश्यार हाने पर जैनी के पुत्र बर्नेंगे और जझ ज्योनार से अपने लाय भोजन करेंगे। सा हे जैन धर्म के धारी पुरुषों. कितने शोक भी यात है जरा इसपर गौर की जिये। मैं वड़ा सत्ववादी हूं मगर मेरे साथ को पुरुष बेई-मानी करेगा तो उसके साथ मुफेभी करनी पहुंगी। क्योंकि ऐसा न करने से काम नहीं चलता इस से जो पुत्री अनीत कार्य कर गुजरेंगी तो वह सिखा-यन माता विना वा सासुससुरका ही कहा जायगा, क्योंकि पुत्री का तो उन्होंने मांस, हड्डी, चमड़ा और लाज शरम दीन ईमान सर्वस्य विकी कर अपना खजाना भर छिया-इससे पुत्री का काई दीय नहीं-अगर ऐसी पुत्री नीच कीम से विगड़ी और सन्तान पैदा हुई तो वकरा मुर्गी काटने वाले औन उदर से पैटा होकर दीनमुहम्मद नामसे पुकारे आवेंगे और उनकी जाति की घृद्धि होगी जैन कुल की समाप्ति होगी। उन लोगों का धिकार है! ऐसे पिशाच पुष्प किसी भी जातिमें शामिल नहीं हो सके। यह कन्याविक ता इतने नीच हैं कि न हिन्दू न मुसलमीन न ईसाई, इत्यादि किसी भी कीम से नहीं मिल सके। कन्दीया लाल

छे।रेलाल जैन

जगद्रलपुर स्टेट, वस्तर

नेगट-इमारे वये। वृद्ध महोदय का लिखना सर्वधा उपयुक्त हैं। पत्रों में लेख रहने और प्रस्तावों के पास करने से आजनक महा अनर्थों के कारण वृद्धविवाह, बाल विवाह, कन्याविक्य अनमेल विवाह मण्ड नहीं हुए हैं: क्योंकि समाज ने उनके प्रति
मुलायमियन की दृष्टि रक्ती है। इन को मेटने के
लिए सहज उपाय यही है, जैसे कि पड़ा में बताया
गण है, कि ऐसे मीच लोगों का जातीय बहिस्कार
किया जाय। परम्तु इस में सावधानी रखना
पड़ेगी कि कहीं दोधड़े न हो जाय अथवा इस का
परिणाम कही उल्टा न निकले। इस लिए उत्तम
यह है कि ऐसे लोगों को राज्य की ओर से दण्ड
दिलाये जायें, जिससे जजरित सामाजिक अधस्था में अनिष्ट खड़ा न हो! और यह कुरीतियां
मण्ड होजावें। साथ ही पनित बहिनों को आभम
में ही स्थान मिलना चाहियं क्योंक बहुआ इन
विचारियों को बाहर कही आभय मिलना
काठन है।



१-वीरों ! उठो कमर कसो, फैलादो जीन धर्म जगत में।

शक्षान तिसिर व्याप्ति सपारत्य यथा यथम् ।
जिन शासन साहातस्य प्रकाशः स्यात्प्रभावना ॥
भावार्थ-श्री समन्त भद्दावार्य द्वितीय शताब्दी
के परम गम्भीर योगी और तार्किक यह उपदेश
करते हैं कि श्रावकों व श्राविकाओं का यह कर्तव्य
कि यदि उनमें जैन धर्म के सत्वों पर श्रद्धा है तो

वे इस जैन धर्म के माहारम्य को जगत् व्यापी करें और जिस तरह क्ने उस तरह जगत् में फीले हुए हैं अज्ञान कृषी अन्धकार को दूर करें।

प्यारं दीरों! गेसी उदार शिक्षा जैनाकार्थों की होते हुए भी शाजकल जैन लोग जैनधर्म को अपनी मौकसी सम्पत्ति समभे हुए हैं न नो जाप पालते न दुसरों को जैनी बनाकर उनके साथ भाईपने का या एकपनेकाव्यवदार करते हैं,कुलाभिमान व व्यर्थ के अहंकार से प्रसित हो जो जैन नहीं है उनको

धुणा की द्रष्टि से देखते हैं, उन पर घह दया नहीं करते हैं कि इनको भी हम संसार सागर से इवते इत् बचाकर उद्घार करें। एक जीव का मिध्यात्व छटाना परम धर्म है इसलिये परमधिकारी मन्।वेग बिद्याधर ने पवन बंग को हर तरह समका कर व बहुत परिश्रम करके जैनी बनाया था। यह कथा शी अमिति गति कृत धर्म परी ह्या में अच्छी तरह बनाई गई है। यह अवसर बहुत अनुक्छ है। यदि जैन लोग उदारता के साथ चलने लगें और घडाधड अजैजी को जैनी बनाने लगें हो इस प्रवित्र जैन्धर्म के सिद्धान्त से कोटानुकोट जीवीं का कल्याण हो। थी जिनमेनाचार्य ने साफ तौर से अपने महा-पराणवें दिखला दिया है कि कोई भी अर्जन जो जैन हो बर यदि आयक के व्रती को पालने लगे व कम से कम मूळ गुण धारण करलें, दर्शन पूजन स्याध्याय सामायिक जाप का अभ्यासी होजावे तो उसको वर्णलाभ देकर अपने वर्ण के समान करली. जैसी वो आजीविका करता हो घ जैसा उसका व्यवहार हो उसके अनुकृत उसका वर्ण स्थापित करदो, यदि कोई ज्यापार कार्य्य व छेलन विद्या करता है तो वैश्य वर्ण में शामिल करो, यदि क्षत्रि-यत्व का काम करता हो तो क्षत्री वर्ण में, यदि ब्राह्मणत्य हो ते। ब्राह्मण वर्ण में, यदि शिल्पादि व अन्य दासकर्म से आजिबिका हो तो उसे शुद्ध वर्ण में शामिल करो।

जब उसका वर्ण नियत कर लिया गया तब फिर एक वर्ण के पुराने जैनी उस नए दर्ण गले जैन के साथ खान पान करनेमें व बेटी लेने देने में कभी भी इनकार न करो।

यदि हे बीरो ! तुम इस आज्ञाके अनुसार चलो

और दस बीस वीर अजैनों को जैनी बनाने की प्रतिक्षा करके निकल खड़े हो तो बहुतसी भारत की क्षत्री, वैश्य व ब्रोह्मण जातियां व अनेक शूद जातियां व विदेश की जनता जिन में कोई नियन वर्ण नहीं हैं सब जैन वर्ण से दीवित हो सकती हैं बीर आपकी संख्या को बढ़ाकर आएका महस्ब जगत में स्थापित कर सकती हैं।

इस समय इंगलेड में कंवल आठ ही अंग्रेज हैं जो जैन धर्म पालते हैं। यह भाई जगमन्दर लाल जन इन्दौर व पण्डित लालन बग्बई की खंधा का फल है। इन में सियान किन्दी भी जैनियों ने इंगलेंडमें जाकर उद्यम नहीं किया-यदि बीर भगवान के सम्बंभक कमर कर्ले और धर्ममचार का शांदी-लग उठानें तो क्या सैकड़ों व इजारों अंग्रेज जैव धर्मी नहीं होसकते हैं। वास्तव में हम ऐसे कुपाम हैं कि हम इस पवित्र स्वाहान्कर अनैकान्तिक धर्म को जो सच्चं खोजी को परम संतोष देने वाला है ब जिसको विज्ञान हमेंन जैकोबी ने षद्मतों को अपूर्ण कहते हुए पूर्ण सिद्ध किया था जगत्में प्रवार करने की कुछ भी खेंग्टा नहीं करते हैं।

प्यारे वीरो ! यदि आप को श्री वीर भगधाब का सच्चा अनुयायीपना प्रगट करना है तो आप कमर कसो और सर्य प्रकार के स्वार्थों का त्याग कर अपना जीवन परम प्रसिद्ध धर्म रक्षक स्वामी ध्रकताङ्क निकताङ्क की भांति अर्पण कर हो। कच्च सहां परन्तु लाखों मोनवों को मिध्यात्व की कीचड़ से निकाल कर उनका उद्धार करो।

धर्मोद्धारक धीरों को जैन सिद्धान्त के साथ वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश करने की कळी स्वदेशी सथा परदेशी भाषा में आना चाहिये। जैसा दृष्क् क्षेत्र, काल भाष हो वैसा दंग विगा धारण किये उस काछ के जम समूह ध्यान नहीं देते हैं। वोरों की सृष्टि के साथ २ छालों पुस्तकों का प्रकाशन स्वदेशी व परदेशी अनेक भाषाओं में होना चाहिये जो उदारता के साथ चीर ध्याख्यान दाताओं के इत्रारा अपने भाषण के पीछे विनरण की जा सकें।

धीर के अनुयायियों का यह भी कर्तन्य है कि के भारतकां के उन जिलों में जहां जंगली लोग रहते हैं अनाधालय, विद्यालय स्थापित करें। दीन हु: खी जंगली लोगों के वालक व बालकाओं को विद्या सिखाने, जैन धर्म बनाने व जैन धर्म का आवरण करा कर उनको जैनी बनालें। जिस हग से देखाई लोग लाखों भारत वास्तियों को बंसाई धनते हैं उसी हंग से हम जैनियों को धर्म का प्रचार करना चाहिये।

कावश्यकता है जीवन प्रार्गण करने वाले धर्म भवारक वीरों की और धन से श्रव्ही तरह मदद हैमें वाले धन पात्रों की, जो अपनी लालां की सम्पत्ति इस पवित्र धर्म प्रभावना के लिये अर्पण करहें इस सक्वी व अज्ञान नाशिनी प्रभावना में धन लगाना, करोड़ी विम्ब शतिष्टा व मन्दिर प्रति-वहा से अधिक लगमकारी है।

क्या इस पवित्र भाद्र मास के पवित्र दिनों में इमारे भाई इस प्रभावना की अमली स्रत की नीव इालने की तैयारी करेंगे।

२-परम पवित्र दशलाचणी धर्म कार्य में लाक्यो-करके दिखाओ

प्यारे बीरों ! धर्म आतमा का स्वभाव है और बह मात्र अञ्चलव गोवार है बचनों से कहा नहीं जा

सकता, यदि कहने का प्रयास करें तो कह सकते हैं कि सम्बन्दर्शन, सम्बन्हान, सम्बन्धारित्रमधी थात्मा का अनुभव करना धर्म है अन्यथा आत्मा को सर्च अनारमाओं से सर्व परकृत रागादि विभावी से तथा अन्य आत्माओं की सन्ता से भिन्न पूर्ण-ज्ञान, दर्शन, बीर्य, आनन्द, बीत रागादि से अरा हुआ शुद्ध निर्भाल स्फटिक के समान जान कर श्रद्धान करना और इसी श्रद्धा पर्ण क्रान के ध्यान में तन्मय हो जाना धर्म है। इसी धर्म को और भी विक्तार से करते का उद्यम करें में तो कह सकते हैं कि यह धर्म दशलस्माप्यी है, जिसका भाव यह है कि जहां आत्मा में कोध का अभाव है वहां प्रथम उनाम जाना धर्म है, जहां मान का अभाव है वहां उन्त मार्ट्य धर्म है, जहां मायाका अभाव है वहां जनाम आजीव धर्म है, जहाँ छोभ का अभाव हे यहाँ उत्तम ज्ञीच धर्म है। जहाँ असस्य नहीं है यथार्थ वस्तु रुक्त का भाग है सहा उसम सत्य धर्म है। जहां इन्द्रियों का विषय व्यापार नहीं है तथा प्रस स्थावर प्राणियों के प्राणी के कप्ट देने का रंग मात्र भाग नहीं है यहां उत्तम संयम है। जहां आत्मा सर्व पर पदार्थों से राग छोड़ कर आप आप में तप रहा है वहां उसम तप है। सहां भात्मा आप को आप ही अनुभव से उत्पन्न अमृत रस का दान कर रहा है और सर्ज पर विकारों का त्यागी है बहां उसम त्याग है। जहां आत्मा ने अपने ज्ञानानस्ट धन को सम्हाल कर पर धन से ममता हटाली है वहां उत्तम आकि न्हिन्य है, अहां यह ब्रह्म स्वस्त्य आत्मा सर्व जगत् की काम वास-नाओं को जो ब्ह्रभाव की जागृति में घातक है स्याग कर भएने ही ब्रह्मभाख में रमण करता है बहां

सस्म मुद्धान्य है। इस दश लाक्षणी धर्म को पूर्णपने साधु गण साधतें हैं, तो भी एक देश आवकों को साधना चाहिये। इन दिनों में इस धर्म का पूजन बड़े भाव से करना चाहिये और अपने व्यवहार में इन इस भाषों को लाकर अपने चारित्र में इन इस रन्नों को जड़कर अपनी शोधा सनानी चाहिये।

कोधन करके शांति रिखये । किसी से दोषों को हो जाने पर भी उस पर क्षमा की जिये। धर्म र्यानों में कवाय अग्नि को विलक्षल जलने न दीजिये। मान न फरफे बिनय भाष रिवर्ध वर्ड छोटी का सब का यथायोग्य आदर कीजिये। कपर की छोड़कर सब के साथ व्यवहार की अथे, लीभ त्याम कर १० दिन व्यापार बन्द रख धर्म चिन्ता में समय वितादये। अप्रशस्त,असभ्य,असत्य फटोर, फर्कश वचनों का त्याग की जिथे, मिष्ठ हितकारी बचन बोलिये, मन इन्द्रियों को बश रख शुद्ध भोजन पोन की जिये। जीव द्या के साथ वर्गन की जिये । धर्म कार्य निमित्त सलिये, शेव भाना जाना स्योग दीतियं, नियम च प्रतिक्षा में रह कर बिना (ये, उपयास, बेला, तेला, एकासन यथायोग्य करके तप व ध्यान की शक्ति बहाइये। सामायिक में अधिक समय विताइये। तीनी काल सामायिक कीजिये। लोभ त्याग सुन्दर द्रव्यों सं श्री जिनेन्द्र का पूत्रन की जिये, पूजन करके निर्मा हय द्रव्य की देने लेने का च लीन साधन का निमित्त न बना कर अग्नि में भस्म कर दीजिये तथा लूब दृष्य को खार प्रकार दान में रक्ला की जिये।

भारतवर्षीय दि० जीन परिवद धर्ग जायति

को बहुत प्रयत्न करना विचार रही है। परन्तु द्रव्यके बिना कुछ नहीं कर सक्ती है इसलिये इसकी अस्छी तरह मदद सेतिये जिसमें बीर पत्र में घाटा न रहे, उपदेशकों का भूगण जारी रहे। धर्ग प्रचारक का कार्य हो। तथा अन्य आं काशी, मोरना जैपूर, व्यावर, धडनशर, उदयक्त, भिड, सागर, देहली, कुंचलगिरि आदि में बिदालय ब्रह्मचर्याश्रम अना-थालय व भौषघालय जाति हैं व श्राविकाश्रम सादि हैं उनमें सहायना भेजिये। अपने यहाँ पाठशाला कश्याशाला स्थापित कीक्रिये। शुद्ध औषन्त्र के लिये औषधालय लांलिये। मोह ममना घटा कर रहिये और सर्वपकार स्त्री संपन त्याग कर ब्रह्म-सर्व्य पालिये। अन्त में बिसारिये कि वैभी क्यों मर रहे हैं। जिन २ कुरीतियों के कारण, अधिक व्यय के कारण जैन जाति की श्रति हो रही है उन कारणीं को मिनाइये। जिन २ योभ्य उपायों मे जैन संख्या बढ़े और जैन धर्म के अधिक पालते या है ही उन उन साधनी को जारी की शिये।

वीरों । कुछ अमली काम करके अपनी रिशेर्द धीर में प्रकाशनोर्ध में जिये, वीर बाणी के प्रचारार्ध स्वाध्याय का नियम कराइये और बीर के य परि-पद के बाहक व समासद बढ़ाइये अमल विना धारी बनामा निष्कल है। —सम्पादक

१-धर्म कहां है ?

भ्री उपदेश सिद्धान्त रत्न माला में बतलाया गया है कि:---

स्रोधपवाहे सक्त करमं विज्ञहोडू मृह धरमुनि । तामि म्हाणविधरमोधकाई शहरत परिवाही ॥ ६ ॥ सर्वात् — 'हे सूर् ! जो लोक प्रवाह-भेदा-चाक-जीक चीरने अर्थात् अक्षानी जीनों कर माने हुए आधार या में स्था जान कुल कुम में ही धर्म होय तो म्लेट्झों के कुल में चानी आई दिमा भी धर्म कहलावे। तन किर अध्यम्म की परि-पाटी कीन भी होगी ! इसिजये लो कपवाह सपा कुल कम में धर्म नहीं है। धर्म सो जिनभाशित बीतराग भावहप है। सो यदि अपने कुल में सच्चा जैन धर्म भी चला आया हो और असको कुल कम जान कर सेवन करें ता भी विशेष कल का हाता नहीं है। अतएर जिनवाणी के अनुसार परीका पूर्वक निर्णाय करके धर्म को चारण करना चाहिये।

आज इस शास्त्रवाभ्य का पालन कितने जैनी करते हैं, यह बतलाना कठिन है। जहाँतक हमारी द्रष्टि जाती है,हम देखते हैं कि आजंकलहमार भाई उसही बात को धर्म समक्ष रहे हैं जो उनको जिस तिस रूप में अपने पुरुवाओं से मिलीहै। दूसरे शब्दों में कुल कूम ही धर्मा समभा जाने लगा है। परन्तु ज्य विचारिये तो सही कि मुसलमानी आतताइयों 🕏 जमाने से समाज में कुसम्प का बीज कैसा बोया गया है कि आजतक हम नेरातीन बने हुए हैं। भाजतक इमने अन्य जानियों के समान उन्नति नहीं करपाई है! तिसपर हमारे पूर्वजी पर कितने विकट संकट राज्य-पलटन के समय में हो गुज़रे हैं यह छिपी हुई बात नहीं है ! उस इल बलके ज़माने में यह मुश्किल था कि चास्तविक धर्म ज्ञान का परिचय बह आप स्वयं एवं अपनी सतान को प्राप्त करासको अन्य हम जानते हैं कि तब साधारण शिक्षाका भी प्रवन्ध समुचित न था। ऐसी दशा में जो धर्म आज तब से प्रवृत्ति रूप में चला आरहा है वह कैसे बास्तविक धर्म कहा जा सकता ैं यही कारण है कि आचार्य प्रकृति मार्ग को धर्म स्वीकार नहीं करते। अनएव आजकल

इमको सास्तविक धर्म लाभ के लिए स्थयं भर्मप्रन्थों का स्वाध्याय करना आवश्यक है। धर्म का पालन तब ही होगा अब हम धार्मिक कियायी की असल्यित सं वाकिफ होंगे। आजकल मात्र मास के पवित्र दिन हैं। इन को आकुलता रहित हो विताइए । शान्ति से धर्म ग्रंथों का स्वाध्याय की जिए और उसकी तुलना अपने दैनिक जीवन से की जिए! मिलाइए कि वह उस ही के मुताविक है या नहीं! आज सामाजिक परिस्थिति कितनी भयानक हो रही है। उस को सुधारने की दृष्टि से आदर्श-पुरुषों के चरित्रों को पढ़िर। श्राप देखेंगे कि जैन जानिका प्रत्येक व्यक्ति अपनी पुत्र-पुत्री को पहिले धर्म और लांकिक शिक्षा देता था। और उनके युवान होने पर उनके किसी भी योग्य जैनी वरके साथ चिवाह करता था फिर वे समुचित रीति से गृहस्थ धर्म पालन करके बैराग्य बृत्तिकी धारण कर स्वपर कल्याणकर्ता बनते थे। आजभी जरूरत है कि हम पुत्र-पुत्रियों का विशह युश होने पर करें! कम्या को १४ वर्ष तक किसा भी यांग्य अध्याविका द्वारा उच्च धार्मिक एव लीकिक शिक्षा दिलवावें। उसी तरह पुत्री की भी १६ वर्ष तक खुब विद्या अध्ययन करने हो। जब दोनों पूर्ण युवान पर्व संसार ज्ञान से विश्व-सासे हृष्ट पुष्ट हो आर्चेतव उनकी शादी हो। घर कम्या का जोड़ा समग्र जैनियों में द्ंढकर अच्छा मिलाइये। जाति के बाहर दुंढने में कोई शास्त्र विशेध नहीं है। पेसे ही दम्पति वास्तविक जैन गृहस्थ वन सकेंगे और उनसे आदर्श बीर संतान उत्पन्न होगी। जाति नेताओं को इसपर ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही उन वृद्ध महानुभाषीं के। जिनके संतान

भीजूर है और जो उनका कारमार संगाल रही है यह लाजमी है कि प्राचीन पद्धति के अनुसार खदासीनता यृत्ति को धारण कर आत्मकल्याण के साथ २ समाजोद्धारका कार्य करें। इन सब बातों का प्रचार तब ही हो जब अन्त्रेषक बनकर शास्त्रों का स्वाध्याय किया जाय! अत्यस प्यारे पाउंकां! इन पवित्र दिनों में शास्त्रों का स्वाध्याय अवश्य कीजिए। इस ही से आप की वास्त्रविक धर्म की प्राप्ति होगी। निष्यत्त धक्ता गुरू आजकल विश्ले ही हैं। स्वयं आचार्य कहने हैं कि:-

गुरुणो भट्टा जायासद्देशुणि श्रणालितिदाणाः । दुरिणवित्रभृणिश्रसाराद्समसमयम्मिनुद्वंति।३१।

अर्थात-'पंचमकाल विषे गुरु तो भार हो गये जो दानाओं की स्पृति करदान लेते हैं। ऐसे दाना और दान लेने चाले प्रोनों ही जिनमन के रहस्य से अनिमन्न है संसार समुद्रमें हुवने हैं।" अनवव स्वा-ध्याय को नियम ले धर्म का वास्तविक स्वरूप समिम्मद। और आत्मकस्याण कीजिए।

२-कानपुरके जैनियों के लिए स्वरागितसर।

अय की साल राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का मिलवेशन कानपुर में दिसम्बर्ग अन्त में होगा। देशके कीने २ से देशमं भी सम्मन उपस्थित होंग। इस बिशद समुदाय में जैनियों की संख्या भी कम नहीं होगी! सब ही जातियों के प्रतिनिधि यहां उपस्थित होंगे और सबकी सभाएं भी अलग २ होंगी! उस समय यदि कोई जैन-कान्करेंन्स नहीं हुई तो जैनियों के अस्तित्य का पता भी किसी को नहीं होगा और जो जैनी वहां आयंगे वह अपने कैनरवरने सं उपेशा करेंगे। इस लिए कानपुर के

भाइयों के लिए यह स्वर्ण अवसर है कि बह उस समय जैन-कान्फ्रेंन्स मश्ने का प्रवन्ध अभी से कर्कें! यह स्वर्ण अवसर च्यूकने लायक, नहीं है। उत्तम हो यदि मा० दि० जैनपरिषद् का अधिषेशन उस समय किया जावे! साला इपबन्द जी एवं बन्य सजनों को ध्यान देना चाहिए।

३-वर्तमान परिस्थिति का सुभार भावश्यक है !

देश की वर्तमान परिस्थिति पर द्रष्टि डालते ही हमें सर्वत्र अपना-अपना राग और अपनी दव-लिया दिखलाई पड़ रही है। उधर प्राकृतिक कोव कि देशनेता बंधुवर दास विदा हो खुके हैं। उनके मित सन्त्रा मान तो यही था कि सब ही दलों के मेता कान्फ्रेस में एकत्रित होकर देशोद्धार का कार्य करते ! परम्तु दुःख है कि भारतसचित्र की हुंकार को भी जन्त करके इस आवश्यकीय बात की ओर फिसी भी नेता की रुचि नहीं चलती हैं। भारनोद्धार के लिए स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन के साथ २ अभ्यन्तर शुद्धि की भी आवश्यका है। इसके किए महात्मा जी का बताया हुआ प्रोगाम ठीक है। चर्ला घलाने भीर लहर धारण करने से भारतीय हृदयों में स्वालम्बन और दूढताका संचार एवं भीठ हिसकभाषों का संहार होता है। साथ ही पड़ें सियों में आपसी प्रमका होना उन्नित के लिए परमायश्यक है। पड़ोसी की पड़ोसी की सहा-यता पहती ही है। दिंद-मुसलमानीको यहां साथ 🤏 रहना है। इस लिए इस तरह मिळजुन कर रहना ही लामप्रद है कि जिससे किसी को भी दिल न दुखें। आपसी निरोध का कारण कुछ भी नहीं है। िक मिश्रा अभिमान है। कहीं मुसलमान भाई येंड जाते हैं, तो कही दिल्दुओं की भी बन भाती है। अभी अलीगंत में एक दिल्दु भिद्दिर बनने पर स्वामस्वाह मुसलमान भाईयों ने रोड़ा अटकाया बहां पर जादिरा किसी तरह की द्वानि हमारे मुसल-मान भाइयों की नहीं है, परन्तु एक जिद्द ही तो डहरी! आपस में मिल बैठ फैसला कर लेना पाप है! यही हालन क्रीय क्रीब सर्वत्र हो रही है। इन सबका सुगम उपाय बही है कि नेतागण मिल कर एक प्रोग्राम कार्य सिद्धि का बनालें, जिस में महात्मा जी का उपयोगी कार्य में आने का्षिल भरा शामिल हो, और पुनः समगू भारत में आम व्याख्यान हारा उसका प्रचार किया जाय! साधारण जनता जब देश संबंधी कुछ धार्ता नहीं सुनती है तो वह इस भार से उदासीन हो जाती है। अत-प्रव नेताओं को मिलकर सर्वप्रथम वर्तमान परि-रिधतिका सुधार करलेना चाहिए. जिससे महात्मा जी को कागे स न छोड़ना पड़े और देश का पूर्ण नेतृत्व कांगे स को ही प्रात रहे। —उ० सं•

दो प्राणियों की रत्ता हो गई।

श्रीमनी रामदेवी जी का श्रद्भ्य उत्साह।

'मवितव्यं वृथा येन न तद्भवति चान्यथा। नीयते तेन मार्गेण स्वयं वा तत्र गच्छति॥ आचार्यों के महत चाक्य पन्यथा नहीं होमको। जिलके भवितव्यमें जो होना होता है वह होकर ही रहता है। गताङ्क से पाडक जान चुके हैं कि सराय भगहत (एटा) की एक जैन विधवा मय अपनी दो अबोध करवायों के सामाजिक अत्याचारों के कारण धर्म से विचलित हो रही है। स्थित करण अहु के नाते उसकी रक्षा के प्रयत्न किए गये। दिल्ली महि-खाश्रम की संचालिका श्रीमती रामदेवीजी ने उसके पास रहकर उसे बहुत समकाया। पंची की ज्यादि-तियों का प्रतिकार कराने का भी उसे आस्वा-शन दिया ! "परन्तु जिन दश जिम होई-तिन मति इब राखी सोई।" बाई जी के अधिरल प्रयत्नीका कुछ मी असर म हुआ। लज्जा सवशेष जो रही थी-बह भी जाती दिखाई दी! यह निश्चय होगया कि मुखक

मान इसको शीघ ही गायच कर देंगे। और इस की भ्रम बुद्धि के कारण कन्याओं के जीवन भी बूधा नष्ट हो जार्वेगे । जिन बार्तो को उसने मंजूर किया था वह उनके जिलाफ चलने लगी। हउतः बाई जी को उसके पाससे प्रस्थान करना पड़ा ! बाई जी मैंनपूरी गई और वहां से उसके माई और ला॰ धर्म ताल जी साहब रहेंस को लेकर अलीगढ ज ही को गई। जसभन्त नगर के लाव उल्लंफनराय की प्रारम्भ से उनके साथ कर दिये गये थे। वहां से अनेकों कष्ट सहन कर जनसाहब से कत्या पी को लेने के लिए इकम लेकर पटा मन्सफी से सर-कारी सहायता ले और सब लोग सराव अगहत पहुंचे। एटा में ला० शोभाराम जी, बाबू खुशीराम जी जैन मुख्तार और धाबु देवीसहाय जी (अजैन) बकील प्रभृति सङ्ज्ञती ने विशेष सहायता प्रदान की. जिसके छिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। सराय

जगत् प्रमिद्ध बनाम्सी दस्तकारी।

बादी के फूल भाव १।) तोला सोने के बढ़े फूल भाव २।) तोला कि (सिक बादी या चाँदी पर सोने का मुख्या करवा के दराने बार्ट सामान की मुर्चा) हर अदद कम ब बेशी जितने तील चादी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

५००) से २०००) । प्रावत २४०) से २००० । अशंधनवार १००) से १००) होटा - 98) स^{9400) |} समोमरनकीरचना२४०)सं१०००) इन्द्र एक १०००) से ३००३) अस्बारी १०००) सं १५००) असिटासन १००) सं २०००) (xपज्जमेर 30) सं २००) ३००)सं ५००) अर्चेबर एक 🥒 ७) सं 📑 २५) [#अप्टमगळद्रव्य १००) सं 🗇०) देवल हार्था का साज ५००) से २०००) अमुकट - १०) से - २०) (#अष्ट्रप्रतिहायं १५०) स २५०) धोडे का साज २०० से ५००) अवीकी ४५)से २००) असीलहरूवपने १००)से ५००) चवल्लम ५००)से १०००) समीसरन १००)से २०००) असीलहरूवपने १००)से १००) ५०) स सीठा # छत्रां इहाँ ३०) से ५०) अहार्र हीपकी ११०)से ५००) जैत मन्द्रित के उपकरण । अहार्र हीपकी ११०)से ५००। जैत मन्द्रित के उपकरण । २५००) से ४०००) - तेरह जीपका (५००)से२०००) वारहदर्श २५००) से ५०००) च००। से ४०००) - रचनाका भाइला (५००)से२०००) (३५०न के बरतन २००) से ५००) सध्यक्रं* 77

यर काम काजिब आहत लक्ष्य बनवादेने वे मॉन्टरजी के काम में ३०) सेक्डा की आहत लेने हैं। ४ इस चिन्ह की चीर्ने नेपार भी रहती हैं। ≉ ये चार्जे नाये की प्रशास सोने का मुखस्मा होता हैं।

पना—(१) प्रधान कार्यालय (कोटा भोतीखन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस । २२, जैन समाज कार्यालय सिन्नई फुलबंद जैन, कार्यालय, बांद्रा विभाग बनारस सिटी । पः) Addiss—"Singha!" Benares

जिवयार्ताम (शकर-प्रमह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनीवसिदी, अमरीका के यास वैद्य जिल्लानीस जीक्लिन Joslen और एसन Allen साह्यान के नरीक़ - (साज (जिसको तमाम विज्ञान-जगत् में प्रामाणिक}और पूर्ण माना है) के मुताबिक डा॰ घष्तावर्णसङ्जैन एम० डा० (अपरीका) सहर बाजार देश्ली का अवने मरीजाँ पर बहुत कामणार्थी हासिल हुई।

१—मुक्ते इस तरीको इलाज से कृतर्द गगम होगया है। मेने महागज साह्य श्रीः नैपाल-बगेश को लिख दिया है कि दो साल से जा मृत्याकर-प्रमेत की बामारी लगी हुई थी उसम इस नरीके के दलाज सेविय्कुल आगम होगया है।

३— तीन चार साल से मुक्ते शकर-प्रमेद रागा ने तद्रकर डाला था लेकिन आपके तरीके उलाज लेकिलकुल ठीक होतथा हो। -- गानकीमसाद राज्येंग्र, चाँद्नी चौक, दृंदली।

४-- मु मे यह तरीका-उलात बहुत मुर्फाद सावित हुआ ! - भित्रसेन जैन गर्दग,वादला ।





श्री भा० दि० जैन परिपद् का

सर्वापयोगी, हर प्रकार के धार्मिक सामाजिक. ऐतिहासिक एवं साहित्य सम्बन्धी उञ्चकोटि के लेखों से विभृषित उच्चकोटि का सर्जाव सामाजिक २४ पृष्ट का सुन्दर

पाक्षिक पत्र वीर

को इन पवित्र दिनों में अवश्य पहिए। यदि माहक नहीं ने २॥) भेज ब्राज ही माहक बन जाइये क्योंकि:—

उसके पाठ में धार्षिक सिद्धान्तों का परिशालन मार्षिक हंग से होता है। उसके प्रत्येक लेख से धार्षिक भाव बहने और परस्पर में म का ट्यवहार होने में सहायता मिलती है। कोई भगड़ा उसमें स्थान नहीं पाता! कोई पत्तपात उसमें हूं नहीं जाता? निष्णात्तभाव से समान की दशा और उसके उत्थान के उपायोंका दिख्दशेन निर्भा कता पूर्वक कराया जाता है इसके अतिरिक्त गल्पे और समार भर के तार्ज समाचार प्रतिपत्त पहने को मिलते हैं। नमूना मुफ्त मेंगा देखिये। इस पर भी खूर्य यह कि उपहार से एक सुन्दर उपयोगी पुरतक, और दो सचित्र "विशेषांक हैं जिसमें दुनियां भर के विशेष विहानों के लेख और मनमोहक चित्र रहते हैं प्रतिवर्ष मिलती है। सार्गश यह कि जैन समान में यह अपनी सानी का एक पत्र है है अत्वर्ष यद आप को जैन धर्म से में महैं तो 'वीर' के ब्राहक विलए।

दंश विदेश के बड़े २ विद्वानों, ने स पुत्रों, ने मुक्त कंद्र में, वीर की मशंभा की हैं

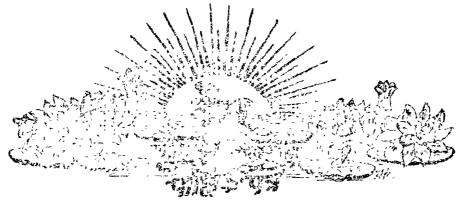




दीनवन्धु प्रेस विजने! में छापकर प्रकाशित किया ।

१५ श्रमस्त जन् १६२५ ई०

सिंख्या ११



ऑनव सम्मादकः--जीव्यव्यव्यव्या यव शीवलयमाद जी

ऑन० उपसम्पानकः-श्री कामनायसाद जी

प्राप्ति स्वीकार

सबस्बर १६२४ में ध्यास्त १६२५ तक

भा० व० दिगम्बर जैन परिषद्

१०१) 🐪 चिरञ्जाकाळ वर्षा

१पर) , फलकार्य लाल की दहाना

१५०) 🔐 जन्युपयाद जा ननीवा 👚

१५२) अ जयकुषार देशीहास खबरे वर्कात असोता

१००) , सार ज्यम दरदास वजीवाबाद

५१) ,, लख्यनवाम द्यावा

पर) , चलमंग नैय

२०१) भीएन ध्रारिक स्वाटन्संपीनयर तहाबा । ५१) श्रीम्म र पचाद शैस स्टाबा

पूर्) , मुनालाल अजवद्रा

40) " च प्यत्राय वैशिष्टर हरदीई

२०२) फ्राइकर ५०) से कम

१००) डेक्ट्र तिभाग

xo) सेउ मूलचस्द किणनदास काएडिया सूरत

yo) संउ बर्नुकाल विमाधवार ष

सीपा उबाद नेमीसंत आसी

समाज से अवेश है कि प्रिया को वथा गाँक तन मन धन से सहायना करे जिससे बह धर्म प्रचार व समाजो थान का कार्य अविक नेम से कर सक ।

रतनलाल,मंत्री परिषद् ।

राजेन्द्रकृषार जैन, विननीर (पूर्वाक)

जैन हाईस्कूल, जैन संस्कृत धर्म-विद्यालय पानीपत (पंजाव)

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

जैन समान भी प्रत्येक पान्त में जैन धर्म के उत्थानार्थ पाठणाला, विद्यालय आदि विद्या संस्थाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ा रहा है। पानीपत की जैन जनता ने पंताब पान्त में सबसे पहले यह "जैन हाईन्क्र्ल पानीपन" नाम की संख्याका जन्म सन् १६०६ में दिया था। जैन धर्म की शिल्ला के साथ २ अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, पहाजनी आदि की लौकिक शिला का परायर प्रवार कर रही है इस समय संस्था में शासुपान ४०० जैन और अजैन खात्र विद्यालाभ कर रहे हैं इसके साथ में ही घोटिंक्न हाउस भी है। जिनमें एरदेशी हाज १०० के अनुपान निवास करने हैं। और जिसके लिये प्रवर्श की ही। जिनमें एरदेशी हाज १०० के अनुपान निवास करने हैं। और जिसके लिये प्रवर्श की कांग वे स्कृत की विज्ञिक्त भी का संस्था का १४००) के मामिक खार्च है। कपये की कमी से स्कृत की विज्ञिक्त भी कमा तक अधूरी पड़ी है। इस पर उदार दानी भाईयों को विश्लेप ध्यान देकर बिल्डिक्न की पूरा बनवा देना चाहिये।

श्रीमान् पूज्य जैन धर्मभूषण बृह्मचारी श्रीनलप्रसाद जी की प्रेरणा से ब्रॉर पानीपत की जैन जनता के उत्साह से ४ नवस्वर १८२३ को जैन संस्कृत धर्म विद्यालय भी स्थाम्पित हा गया है। प्रवेशिका परीक्षा के ग्रन्थों के साध-साथ लीकिक निका भा दा नाती है। परदेशी ब्राजों की १०) रु० ब्रोर स्थानीय छात्रों की ५) रु० पासिक छात्र हानि दी जाती है। घर्मात्साही उदार मनानुपायों से स्विनय निवेदन है कि द्वत्यदान के व्यवसर काशी, गोरेना व्यादि की धार्मिक संस्थाओं की तरह उक्त दोनों सम्थाओं का भी विद्याहादि शुभ वायों में दथादावय द्वय की सहायता भेनकर इन संस्थाओं का हटू नीव जमादें व्याक्ति विद्यादान ही। सर्व दानों में श्रेष्ठ है। जैसा कि कहा हैं—

"अन्नदानं परं दानं विद्यादानमनः परम्। अन्नेन चाणिका तृष्तियवोज्जीवन्तु विद्यया॥"

प्रार्थी-जयकुभार मिंह जैन । मैनेजर-जैन हाईस्कृत श्रोर संस्कृत धर्म विद्यालय, पानीपत ।

श्री महात्रीशयनमः ।



वर्ष २

षिजनीर, भाद्रपद शुक्ला १४ वीर सन्वत् २४५१ १ सितावर, मन् १६२५

প্রাক্ত 😽

अनुताप।

पाकर मानव जन्म व्यर्थ हा ! सभी गमाया। धन्त समय संताप हृदय में तब अति छाया।। काम कोच, मद लोभ, मोह में रहा फंसा था। स्वार्थ मयी जंजीर कठिन से रहा कसा था।। शाल काल सब खेल कृद में मैंने खोया। धुनकर विद्या नाम हृदय में भारी रोया।। खेठ बाठ कर दुःशालों में समय विताते। दिन दिन उन से दुराचार हैं आते जाते।। शाल नक पैसा रहा पास में मित्र हमारे। पाल काल में देख चुके थे ऐसे सारे।। हुआ न लेकिन कुछ विचार भी किसी बात का। आता है उपदेश याद अब पूज्य तान का।। शाल नरह धरवाद किया धन हमने सारा।

रोने तब परिचार लगा पाणों से प्यारा ॥
नहीं मित्र है एक आज जो ऋण भी देवे।
आकर मेरे गेह सभी जो सुप भी लेवे ॥४॥
रही न पूंजी पास कोई व्यवसाय न होगा।
जैसा मैंने किया कर्म वैभा ही भोगा॥
इस विचार से छोड़ देश बाहर को जावें।
पावें लेकिन चैन नहीं घर्ष भा पछतावें ॥४॥
- श्री गुणभद्र सिंघर्ष।

जैन मुनियों का प्राचीन भेप।

तकं उठाने को गुंजाइण श्रद्धानी समाज के लिए नहीं रहनी है। यह अपनी मान्यता के अनुसार उनका कर स्वीकार करनी है और उसके विपरीत को अयथार्थ समभती है। जैनमुनियों के विपरीत को अयथार्थ समभती है। जैनमुनियों के विपर में दिगल्संप्रदाय का कथन है कि देनरन रहेन थे श्रेतर संप्रदाय कर कथन है कि देनरन रहेन थे श्रेतर संप्रदाय उन्हें वस्त्रधारी बसलाता है। यद्यपि श्री अप्रवस्ते और महाबीर की के तीर्थ को असंलक स्वीकार करना है। (देलों कल्पसूत्र १ कि थे के स्विध्य में दोनों संप्रदायों के प्रामाणिक गृंधों को अध्ययन करके हम वेशक एक तथ्यमय निर्णय पर पहुंच सके हैं। पर तो भी इन दोनों के अलाधा एक तीसरे की साक्षा विशेष प्रमाणीक मानी जायगी, क्योंकि यह बिलकुल संभव है प्राकृतिक है कि दोनों संप्रदाय वाले अपने २ पक्षकी पुष्टि में यथार्थ सस्य पर सफेदी फेरने के कार्य्य में स्पस्त रहे हो। अत-

एवं भारतीय उपलब्ध साहित्य में सर्वधानीत नेहीं और उनके उपरास्त बोद्ध शार्णों से हम इस जटिल प्रक्ष पर स्थलन प्रकाण हालेंगे।

वेदोंगे, जैन नीर्यंकरों के जो नाम हैं, उनमें से कितप्प मिन्नते हैं। इंशीजिल विदानों का मत है कि जब वेदों से उल्लिंगत ऋषियों के नाम जैन नीर्थंकरों से कितप्प के समान ही हैं, जैसे ऋपभदेश, सुप्रार्थ्य, अध्ययनेम महावीर, तो यह निरूपंणय मानगा पहता है कि वेद भणेता ऋषिगणों ने जैन तीर्पंकरों की उपेक्षा नहीं की भी प्रत्युत उनका रमरण आपर के स्वाध किया था। ऋपेनेद में भी इनवा उत्लेख है, पण्नु वहां उनके भेपके पिषय में कुछ नहीं कहा गया है। इस्लिए उनसे हमको कुछ मतलब नहीं है। यज्येंद के उल्लेखों में निद्ध के दो मता में उनके भेष के विषय में उल्लेख हैं और बहु इस प्रकार है:—

१. जैं तमी अहंती ऋवमीः के ऋवनः पित्रं पुरहृत मध्यरं यहीषु त्रमं परमं माह संस्तु ं वर शत्रु जयर्ग प्रार्थित्रमाहृतित स्वाहा । के श्रातार विद्वेत्रस्यमं यहित अमृताराव है वे सुपत सुपार्य मिद्र माहृतित स्वाहा । के त्रमं पुर्धारं दिग्शसमं श्रह्म गर्भ सनातत उत्ति तीर कुरा समृहतिमादित्य वर्ण तत्रसा परस्तान स्वाहा । '

--- यजुर्वेद अ० २५ धृति (ह)

२ 'अतिश्वकां मानरं महाबीरस्य गुज्नहुः । क्या सुवासदामेन चिनों रात्रीः गुरासुवा ॥" —यज्ञ० अ०६ मत्र १४ ।

इन उट्टरणों में भगवान अप्रभगाय जी रीर महाबीर कवानी का कमाण किया गया है एव उनको नन्ने लिया है। बैदों के अनिरिक्त हिंदुआ के पुराम और भरूप अदि में भी जैन मुनियों को अव-णक, दिन्वासा, बात्यसा इट्यादि कव से नम्न बनाया गया है। (देखा 'चार' अङ्ग ११-१२ वर्ष २.) अन्य यहां से ना रमको जैन मुनियों का लेव गम ही निल्ना है। अब आहर पाउक्सण, बौदों के शास्त्रों का भी जिन्द्रशंत करतें।

उपलब्ध भारतीय साहित्य में बौद्धों के प्रंथों को लिप प्रति सन प्राचीन है। घड़ बहुधाकर बुड़ देख के देशबसान के उपरान्त सी-दासी वप के भोनर २ लिपियद कर लिए गए थे अर्थात वे आज से कराब सवा दो हजार वर्ष पहिले लिखे गए थे बात ख उनतें जो उन्हेख जैन धर्म के विषय में होगा बह विशेष महत्व का होगा। और बास्तव में उनमें के जैन धर्म सबंबी उल्लेख यथार्थना को लिए हुए हैं। डा॰ जालं खारपेन्टियर का भी कथन है कि बौद्धों को अपने पारभकाल में अपने बिरोधी निर्मु- नथीं अथवा जैनों के चरित्र तथा संस्थाओं का अधिक सुनार ज्ञान था। (See Indian Antiquary Vol 43) इसलिए उनमें जो यिमेचन जैनमुनियों के भेप संबंध में मिलंगा, वह वड़ा मनोरंजक और ठीक होगा। हमें माल्हम है कि चौद्धों के धमें शास्त्र 'निपिटक' कहलाते हैं। यह विनियियक सुत्तिपटक और अभिक्रम प्रिटक के का में तीन प्रकार हैं। इन सम्मान प्रकार के स्वामें जीनियों के संबंध में कुछ न कुछ उत्लेख अवश्य मिलता है। इस अध्ययम में हमें दा गुंधों में जैत मुनियों का-निगम्य सम्मान का भेप नम्न ही मिला है। यथा, दिध्यान सम्मान कराश किया गया है:—

'स्वयम् स बृद्धिमान् भवति पुरुषो व्यञ्जनो विनः' ले(कस्यं पश्यतो योऽत्यम् यामे चन्ति नम्मकः ॥ यम्पायम् ईदृषो धर्मः पुरुषता लम्यते दशा । तस्य वं श्रवणौ राजा शुरुषेनाव स्नततु ॥"

ऐने ही बुद्ध की जातक कथाओं में 'घटकथा' नामक विवरण में स्पष्ट लिखा है कि मद पाने से मनुष्य तिग्यत्थों के समान हो यत्र तत्र राजमार्ग पर फिरना है।, यथा:-

"Even the bashful lose shame by drinking it and will have done with the trouble and restraint of dress, unclofhed like Nirgranthas they will walk boldly on the high ways crowded with recople, etc." (The tatakamata, by Acya Suia, S. B. B. Vol. 1, Foge 145.)

इसके अतिरिक्त 'विसोखाउत्थ्' धरमपदत्थ-क्ष्या' (P. T. S.) Vol. J. Pt. II P. 384. foll. में अनेक रूपली पर जैन मुनियों को नग्न लिखा है। "Dialognes of the Buddha" Pt. III.Page. 14. पर भो इसी तरह का उल्लेख है। वहां जैन मुनि 'क्र'इंट-माचुक' को नग्न लिखा है । 'महाबगा' में अनेक स्वली पर अस्तप्टक्य में जैन मुनियों को वस्त भेवचारी बतलाया गया है। 'महावस्म' के य (भृतिगण श्री पार्श्वनाथ जी की शिष्य परम्परा को थे, यह बात हम किसी अन्य छंख में प्रमाणित करेंगे । यद्यपि 'महाबगा' के इन उल्लेखी एव अन्यव के पेसे ही उल्लेखों के विषय में पूर्वा लिलशित डॉ॰ खारपेन्द्रीयर साहब यह लिखा है कि 'बीड प्रन्थी ने अनेक बार नग्न यतियों का उल्लेख हुआ देखने में भाता है और इसी रोति से वे आजीवक समर्फ अाते है। उदाहरण क्य में महाधमा ब, १५, ३,१, ६८, ११, ७०, २; सुक्लवग्ग ८, २८, ३; निस्स० ६, २, संयुक्त निकाय २, ३, १०, ७, आदि उदाहरणों में के कितने ही नग्न भिद्धगण मात्र 'नित्यय'(तीर्धिक) कहे गए हैं और इस लिये वे भगवान महाबीर के शिष्य सम्भे जा सकते हैं।" (Ind. Ant. Vol. 43) परम्तु हम इसको मगवान पार्ध्वनाथ के तंथं के मुनिगण समभते हैं,यह इस आगामी प्रकट करेंगे। इस समय हम यह भी स्पष्ट कर वेना चाहते हैं कि पाश्चात्य पुरातत्यविद्व किस तरह बाज ६फे धोला खाते हैं। जिस प्रकार उक्त उदाहरणों में के व्यतियों को आजीविक होना समका गया है उसी तरह Dialogues of the Buddha नामक अन्य के 'कश्सप सहिनाद सुक्त में' जो एक प्रकार के 'सम-मी की दैनिक कियाओं की सूची ही है उसका उस

के मान्य अनुवादक स्व० मि० होस डेविड्स ने भाजीयिकों की वमलाई हैं; परम्तु वास्तव में बह जैन मुनियों की क्रियोधों का ही प्रतिलेख हैं। बह सुबी इस प्रकार उक्त बीक्स सुक्ष में दी हुई है।

"और गौतम ! ऐसे ही निम्न की मुनि क्रियायें किन्हीं समणी और ब्राह्मणी द्वारा समण धर्म और ब्राह्मण-पन ब्रानी गई हैं:--

१-- वह नम्न विचरता है।"

२—'वह ढीली आदतों का है (शारीरिक कार्य और भोजन वह रूड़ें २ करता है' मले मानसों की भांति भुक कर या बटकर नहीं करता)

३—'यह अपने दाथ चाट कर साफ करहेता है, (स्नाने के पद्यान घोने के बजाय)

४—(जब बह अपने आहार के लिये जाता है यदि सभ्यता पूर्वक मजडीक आमे को या उहरने को कहा जाय कि जिससे भोजन उनके पात्रमें रख दिया जाय नो) वह नेशीसे सला जाता है (शायद कहीं वह दूसरे मनुष्य के वसनों का अनुकरण कर दोष का भागी न हो)।

प-- 'वह उस भोजन को नहीं लेना है (जो उसके निकट आहार के लिये निकलने के पहिले साथा गया हो)

६-- 'यह (उस भोजन को भी) नहीं छेता है (यदि बता दिया जाय कि यह) खासकर उसके लिय (बनाया गया है है

%-- धह कोई निमन्त्रण स्थीकार मही करता (कि आहार निमित्त किसी लास घर पर अथवा किसी खास रास्ता होकर या किसी लास जगह पर आउँगा)

५-- 'वह नहीं लंगा (भोजन जो उस वर्तन में

से निकाला गया होगा। जिस्पर्ने यह राँचा गया हो (जिससे कि शायद वह बर्तन चमचे से रगड़े सादि उसके कारण जायें)

६—'(वह भोजन) नहीं (लेगा) आँगन में से (कि शायद वह चढ़ां वासकर उसके ही लिए रक्या गया हो।'

१०-- (वह भोजन) नहीं (छंगा जो) छक डियों के दरमियान(रक्षा गया हो, कि शायद वह बहां जासकर उसके छिये ही रक्षा गया हो)

११--'(बह भोजन) नहीं (लेगा जो) सिल बहें Pestler के दरमियान (रक्ष्णा गया हो, कि शायद बद बहां उसके लिये ही रक्षण गया हो,'

१२-- 'जब दी व्यक्ति साथ २ में जन करते हैं सो वह नहीं लेगा (बह भोजन जो बह का गई है यदि उन दो में से केवल एक ही देगा);

१२—'यह दूध पिलाती हुई खी से भं। तन नहीं छेगा (कि शायद दूध कम होजावे)

१४—'धह पुरुष के स्वं। रतण कुरती हुई स्त्रीसे भोजन नहीं स्वीकार करेगा(कि शायद उनके रसण में बाधा पड़ें)'

१५-- 'बह नहीं लेगा भोजन (जो अफाल के समय आवक दारा) एकत्रित किया गया हो।'

१६-- 'बह वहाँ भोजन स्वीकार नहीं करेगा जहाँ पास में कुत्ता खड़ा हो (कि शायद कुत्तं को भोजन न मिले)

१९—⊀वन वहाँ भोजन नहीं लेगा जबां मक्चियों का देर लगा दो (कि शायद मक्खियों को कप्ट हो)

१८—'बह (भोजन में) गच्छी, मांस, मध. भावन सोग्वा गृहण नहीं करंगा।'

१६--'बद "यक घर जानेवाला" होता है

(फट ही अवनी आहार चर्या से सीट भाता है कि जहां किसी एक घर से आदार प्रहण किया),एक "एक-प्राप्त भंजन-करने-घाला होता है—

'या वर्" दो घर जाने वासा "—दो— ब्रास—भोजन-करने वालाः' है—

'या वह "सान घर जाने साला" एक "सान—प्रास—भोजन करने वाला है:~

ेट एक आहार निभित्त-हो निभित्त-या ऐसे ही सात तक आने का नियमी होता है।

२० - वह मोजन दिन में एक बार करता है , अथवा दो दिन में एक बार अथवा पेसे ही सात दिन में एक बार करता है। इस प्रकार बड़ नियमानुसार नियमित अन्तराल में अर्थमास तक भोजन गृहण करता हुआ रहता है।

इस प्रकार यह कियायों की सची है इस से यह स्वष्ट है कि जिन यतियों के लिए यह है वह मौल, मच, मच्छी आदि पदार्थ नहीं खाने थे और बड़े संयम से माजन करते थे। आजीवक गण नंगे अवश्य रहते थे, परन्तु उनको मच्छी, मांस आदि खाने का परहेज नहीं था और उन का आचारण भी असंप्रमित था , यह जैन एवं बौद्ध दोनों के शास्त्रों से प्रमाणित है। चौड़ों के लोम हस जातक' में भाजीविकों के बावत साष्ट लिका है कि "वे नात और मिट्टी से इके, पकाकी अकेले, मनुष्य के मुख से हिरण की तरह भगने वाले को तरत रहते हैं। उनका भोजन छोटी मच्छी, गोवर एवं अन्य कुड़ा था।"(Jataka, I p. 390) अत्यय यह निरसंशय कहा जा सकता है कि उक्त को कियायें एक आजीवक -- भिक्ष् की नहीं हैं प्रस्युत वे एक जैन सुनि की ही हैं। जैसे कि जैन

शास्त्रों के निम्न उक्ररणों से प्रताणित होग!!--

उक्त सुची में प्रयम किया नम्नपने की है दिसम्बर जैन ग्न्थ श्री मुलाचार जी में, जो ईसा की प्रारमिक शताब्दियां का गृथ हैं इस नम्न पने को जैन मुनि के अध्वाईन मूल गुणी में गिनाया है, जिसका स्वरूप ऐसा बताया है: 'बत्था जिल चक्कं जय अहुवा पत्तादिका असंस्ण। जिस्मूसण जिमांथ अञ्चलक जगदि पूज्य ॥३०॥

भावार्थ-जर्म कम्प्रलादि बख मृगद्धाला आदि स्ममं, बुश्लों की छाल वक्कल व वृश्लों के पत्ते आदि का कोई प्रकार का ढकना शरीर पर न हा, आभृषण न हो, नथा बादरी स्त्री पुत्र धन धान्यादि व अन्त रङ्ग निध्यात्व भावि २७ परिग्रह सं रहित हों वही जगत में पुज्य अखेलकपना या बन्नादिराहितपना परमहत्तस्यरूप नग्नपना हाता है। इसके अनिरिक्त श्री समन्त्रमधावार्य ने अपने बहुत्स्यमुस्तीत्र की भी नेमिनाथ की स्तृति में एवं श्री विद्यानंद स्वामी ने पात्रके गरी स्तीत्र में इस ही नम्नपने की श्रेष्टता बतञ्जाते हुए उरलेख किया है। ईसाको प्रथम शता-विद में हुए श्री कुन्द्रकुन्याचार्य ने अपने प्रवचनसार वरमागम में भा नम्मपनं का परमावश्यक बनलाया है। ऐसे ही कुल भदाबार्य ने 'सार समुद्धय' क १३६ वें भुजन में एवं पं॰ आशाधर जी ने 'अनागार धर्मामृत' अ॰ ६ श्लाक ६४ में ६स का विधान किया हैं। गर्ज़ यह कि दिगम्बर शाह्मों में बाचान से प्राचीन काल से इस नग्नपने को स्वीकार किया गया है।

श्वोताम्बर संप्रदायके प्रृंथों में भी इसके मह-त्वको भुकाया नहीं गया है। बल्कि स्वष्ट शब्दों में इसके महत्व को स्वीकार किया है। उनके प्रवचन- सारोडार के प्रकरण रत्नाकर भाग तीसग (मुद्रित भोमसिंह माणिक जी सं० १६३४) पृष्ठ १३४ में "पाउरण निजयाण विसुद्र जिण कटिपयाणं तु" अर्थात जे प्रायण पटले कपड़ा बर्जित छे ते स्वल्पो-पाधि पण करी निशुद्ध जिनकिएक कहेबाय छे भाव यह है कि जा बस्त्र रहित होते हैं वे तिशुद्ध जिनकल्वी कहलाते हैं। उनके आचारांग सूत्र(छपा १६०६ राजकाट प्रभिन्नो न्यान साधु की सहिमा है:—

जे निक्ल अचे हे परिवृक्षिने तस्स णं एवं भवित चार्म अह नण् फामं अहिया सिक्तण, सीयफासं अहिया सिक्तण तेउफास अहिया सिक्तण दंसमसग्रासं अहिया सिक्तण, एगतरे अन्ततरे विरुद्ध कासे अहिया सिक्तर।"

-- ४३३ गाथा पू० १२६

भावार्थ-"जो साधु वस्त्ररहित हो उसको यह होगा कि में घासका स्वर्श सह सक्ता हुं, प्रांत साप सह सक्ता ह, दशमसक का उपद्रव सह सक्ता है। इसी स्त्रम यह भा कथन है कि महाबोर स्वामी ने नान दीक्षार्ला थी तथा बहुत वर्ष नग्न तप किया। (अ०६ पृष्ठ १३५-१४१)" अगर नगनपना का विधान ३६० और ३६८ गाथाओं में भी है। तिसपर राजा उद्दापन की कथा में श्लोताम्बराचार्थ करते हैं:--

"तउ से उदायणे अणगारे बहुणि वासाणि सामण्ण परियागम् पीणिक्ता सन्धिम् भक्ताइम अण-सणाप चीत्ता जस्स अष्टहाप कीरै नग्ग-भावे सुण्ड भावे तम् अत्थम् पत्ते जाव दुःख पहिणे-िक्त । * इन वदाणां के किए इभ जैन धर्मभूषण झा शीतक

प्रसाद जी के आभारी हैं। __स॰ संo

(Jacobi's Selected Stories No. III p. 34.)

अधात्-तब उस उदायन ने गृहत्यागी यतिके गृह त्याग विकास इत का पालन कई वर्षी यथा-वित कर लेने पर और अपने उपवासों में साउ आहारों का त्याग कर लने पर वह उस भ्येप की पहुंच गया, जिसके लिए एक मनुष्य नगन है और मुण्डा यनता वह दुःगों से छुटता है। इस कार यहां तक के विवरणों से यह स्पष्ट है कि दिन्दू, बौद्ध एंचं दिशम्पर और श्वेतास्वरों के शाल जैन मुनियों का प्राचीन भेष नगन ही बनला है। दिश-स्थानसाय में जैनमुनि का वह भेष अब भी प्रचलित है:परन्तु श्वेतास्वराहाय को वह मान्य हाने पर भी समय की कठित परिस्थिति के कारण व्यवहार में प्रचित्त नहीं हैं। इस प्रकार यद्यपि जैन मुनियों के प्राचीन सेप के विषय में हम एक स्वतंत्र निणय पर पहुंच जाते हैं और एक तरह से हमारे छेख का उद्देश्य भी सथ जाता है, परन्तु ऊपर जो हम कि यायों को जैन शाकों से सिद्ध करने को कह आए हैं सो उनको सिद्ध कहना शेष रहता है। इस छिए उनको सिद्ध करते हुए हम देखेंगे कि बौद्ध छोग किस प्रकार जैन मुनियों एवं आदकों के स्थक्ष का परिचय प्राप्त था।

-- उ० सं०

दश लच्या धर्व और उसका पालन

(हे पक-धीर ऋषभदास जैन बी ए०)

में वस्तु स्वभाव को कहते हैं। यहां धर्म से नतस्व आत्मा के स्वभाव से हैं। आत्मा के असली स्वभाव के हसलाज अर्थात् दस निन्ते हैं कि जिल्से वह आत्मा का असली स्थमाय जाता या पिर्वाल जाता है। यह दसलक्षण यह हैं। १) क्षता (२) गाईव (३) आर्त्व (४) सत्य (५) शिक्षण (६) अर्थाव (६) अर्थाव (६) अर्थाव (१) स्थम (७) तप (८) त्याम (६) अर्थित (१०) ब्रह्मचर्य। जैन समाज में दसल अण् धर्म की घड़ी मान्यता है। भादा सुर्धिक दस दिन इस दसल लग धर्म से विशेषित किए गए हैं, जिस से कि लग इन दिनों में दसलक्षण धर्म का खूब पाठन करें। परन्तु खेर के साथ देखा आता है कि हम जैन लोग इन दिनों में स्थलक्षण धर्म का ग्राह्म के साथ देखा आता है कि हम जैन लोग इन दिनों में स्थल तण धर्म का गाठन वहीं करते! यद्यपि मन्दिरों की खूब सजावट

करते हैं जलपान व रथयात्रा भी निकालने हैं पर-न्तु इसलक्षण धर्म का बास्तविक पालन नहीं करते।

क्रोध पर विजय प्राप्त करने कोध को अपने आधीन करने का नाम ज्ञाम है। और मान के अभाव को गाह न कहते हैं। श्रमा व मार्च से अहिंसा वह दयां के पालनमें वृद्धि होती है। आपस में प्रमा व मित्रता वहती है। परन्तु खेद हैं. जैन समाज में हमेशा ही लड़ाई-अगड़े रहते हैं। दिग-स्यर व श्वंतास्वर आसाय के अगड़ों को कौन नहीं जानता! तेरह और वीस पंथ के बिरोध से भी सब वाकिफ हैं। और पंडित व बाबू पार्टी की ना इस्फाकी तो आजकल खूब ही जार पकड़ रही

है। इस समाज में थांकवर्दी च फिक़ेंबरदी की कोई हद नहीं है। जुग २ मी बातीपर फ़ीरन धड़ मुगयम होजाते हैं। कुल, जाति, धत, बल, विद्या आदि के मान में आकर एक दूसरे को नीवां दूषि से देवता, उसकी निष्दा करता है । खैर यह भगड़े ता हमेंगा चले जाते ह लेकिन उपादा अफसीस इस बात का है कि दसलाक्षणी के दिनोंमें भी अक्सर मिन्द्रों के हिसाबात व अवस्थादि पर तकरार च फिसाद होता रहता है। भाइयों! इन पवित्र दिनों को तो प्रधान जाने वीजिए।

छल, कपर व मायाचारी को त्याग कर सरह परिणाम गृहण करने की आर्त्रेन कउते हैं। भूट को त्याग कर जैसी बान हो उसको उस ही तरह कहना सत्य केइलाता है। लाभके त्याग को शीच कहते हैं छल, कपर, मायाचारी व फूट वोलने में यही प्रचृति यह जीव लोभ के बश हो कर ही करता है। इस लिए आर्जन व सत्य व शीच का आपस में गहरा सम्बन्ध है। जो व्यक्ति कीम कवाय की बश कर लेगा वह छल, कपर, व मायाचारी भी महीं करेगा और न भूड बोलेगा! इस लिए आर्जव सत्य धर्म का विकास उस में जरूर होगा। अब सवाल यह है कि च्या जैन समाज लोभकषाय पर हाची है। ? तज़ुरबा व अनुभव वतलाता है कि जैन समाज में लोभ कपाय की मात्रा ज्यादा बढी हुई है। मैं यह हरगिज नहीं कहता कि इस समाज के तमामव्यक्ति इस कपाय के दास हैं। बाज इस कपाय से उदासीन भी पाए जाते हा लेकिन ज्वादातर इस कवायमें कंसे हुए भी देखे जाते हैं। यदि ऐसा

न होता तो इस समाज में बदनी ब सहे का व्यव-हार कसन्त से न पाया जाता। और न इस ज्या-दर्सा के साथ मुक्तृद्में बाजी देनी जाती कि जिसमें भूकी गवाती खुद देने व दुसरों से दिलाने ब बही-खासे वगैरह बनाने से परहेज़ नहीं किया जाता-न लड़की बाले से ज्यादह दहेज ब माल लने के लालच में भाकर अनमेल विवाह किए जाते-न कन्या विको जैसे महापोपके कामको किया जाता! ऐसी २ बातों से ही जाहिर होता है कि जैन समाज में लोभ कवाय की मात्रा बहुन ज्यादह यही हुई है और जैनसमाज भाजीय, सत्य, शीच धर्मका पालन यथार्थ रीति से नहीं कर सकी!

इन्द्रियों को उन के विषय है रोकने यो छैं काम के जीवों की रक्षा करने य मन की दौड़ को अपने आधीन करने का नाम 'संयमं है। इच्छाके निराज अर्थान् वाञ्छाओं के रोकने य दूर करने को तप भड़ते हैं। बास्तव में तप उस कार्य कम का नाम है कि जिस से आत्मा व पुत्रल से बनी हुई पर्याव को तपाने से पीइलिक मैल आभा से दुर होकर शुद्ध अत्मा निकल आता है। सांसारिक परिग्रह-धन-सम्पति आदि के त्यागने को त्याग कहने ह । दान अर्थात परोपकार व धर्म कार्य में द्रव्य खर्च करना भी इस में शामिल है। पर पदार्थी से मोह न रखने का नाम आक्रिन्सिन्स है। इन में खे संयम, तप व त्याग की पावन्त्री जैन समाज किन ही अंशों में जकर कर रही है। हरी, रस अदि का न्यागकरती व व्रत व उपवास रखती है। छंकिन यह सब कुछ बतौर रहम व रिवात से बिला मनलब व उद्दोश्य के समभ्ते करती है कि जिस से कपायें कमओर मही हो पासी। कवाब

खुब जोरी पर बनी रहती हैं। इन्द्रियों के विषय कर नहीं होते । आराहश व नुमाइश व फैशन का शीक खुब चढ़ना रहता है। रेशम व मिलोंके हिंसा-मधी व अशृद्ध काई मिन्दिरों तक में काम में लाप जाते हैं। छोटी २ लड़कियों से उपवास कराये जाते हैं कि जो उर्ज्ञास का कुछ मतलब तें सम-भती नहीं केव ह काय काश करती हैं कि जिससे उनके दिल को दः व और उनकी तन्दुरुस्ती खराब हाता है। हालां कि जैन धर्म में यह साफ कहा गया है कि केवल भूने मरना उपवास नहीं है। सामा-यिक च ध्यान गृहस्थी छोग घटुत कम करते हैं। और चुंकि सपप, तप, त्याम व आकिष्डचन्य इन चानी में इच्छा, कवाय व पर प्रश्रं से रुचि हटानी पड़ती है। लेकिन जैन समाज में जैसे कि ऊपर लिया गया है कि लोभ की मात्रा उपाया बढी हुई है और जपतक लोम न घटे, इच्छा कषाय पर पशर्थ से रुचि किस तरा कम हो सकती है ? इस ही कारण से जैन संपात संपंप, त्याग व आकि-चन्य का पाळत डीक तौर से नहीं कर सकता। द्दान में रुपर जहार बहुत खुबे करनी है लेकिन ज्यारात्र उन कामीते कि जिनकी आहकल ज्यादा जहरत नहीं है। या विचाह आदि में किज् ल रूपये बहुत सर्च करती है कि जिससे कुछ लाग नही होता। विद्या व धर्म प्रचारमें कि जिसकी आज-कल बहुत जुरूरत है बहुत कम खन करती है।

कामबासना से पाहेज, करने, अपने बीर्य की रक्षा करने, ख्री संयोग को बिलकुल त्यागने, या विचाहित होने की हालत में अपनी ख्री से संतोप रख कर दुनियां की और सब न्त्रियों की मा-बहित बेटी के अगबर समफने का नाम ब्रह्म वर्ष है इस-

का पालन जीन समाज बहुत ही कम कर रही है। सब से बड़ा जरूरी विद्यार्थी अवस्था का ब्रह्मचर्य है। लेकिन जैन समाज इसकी तरफ कुछ ध्यान नहीं दे रही है। बाल विवाह करके अपनी संज्ञान का सत्यानाश कर रही है। और न संतान की बख्वी हिफाजन व निगरानी करके उसकी दुस्सं-गति व दुम्सस्कार सं बचाती है। और वृद्ध विवाह करके काम वासना की ज्यादती का पूरा सन्तत दे रही है। जब कि समाज में बाल विवाह-बुद्ध विवाह-अनमेल विवाह, कन्या विकथ इस कुदर ज्यादती के साथ हाते हैं तो किस तरह कहा जा सकता है कि यह समाज ब्ह्राचर्य का पालन कर कर रही है। और इन्हीं बद रख़मात की वजह से विभवाओं की सख्या में वृद्धि होती है कि जिससे समाज में और ज्यादह बदचलनी फैलती है। फिर नहीं मासूम इन वद रखुमात को क्यों नहीं यन्द कियाजाता ? इसका वजह यहां मालूम होती है कि सप्राज के दिल में युक्कवर्य का महत्व घर किए हुए नहीं है। पहले तो जब कि अपनी खी में संतोष करके जगत को सब स्त्रियों को मां, बहिन, बेटी के वरावर समभा जाता है कि जिसका नाम ग्रहस्था-वस्था व ब्ह्रचर्य या शीलवृत है। लेकिन स्त्री के मरने पर किरदूसरा तीसरा बौधा विवाह कराया जाता है। समभमं नहीं आता कि यह किस किस्म का शील इत था और अपनी स्त्री के अतिरिक्त जरान की सब स्त्रियों को मां, वहिन, बेटी समजना किसी तरह कायम रहा। असल में बुह्मचर्य या शीलवत का पालन करना तो उस ही दशा में कहा हा सकता है जब कि मनुष्य एक मरतवा ही शादी कराय । दुसरी शाशी से परहेत करें। संर यह सो रही कुछ ऊंचे दरजे की बात लेकिन ऐसे लोग भी कम सिलोंगे कि जो अपनी स्त्री मीजूद होने की दशा में अन्य स्त्री की ओर तिबयत न दौड़ायें। क्या अच्छो हो कि समाज ब्रह्मचर्य के महत्व को समक कर बाल विवाह-मूख विवाह-अनमेल विवाह ब कस्या विक्य को बन्द करे ! और वमा ही अच्छा हो कि हम दशलाक्षणी धर्म की सिर्फ जबानी न्तृति च पृजा हो नहीं यिक अपनी अमली जिन्दमा को उसक्प पताय कि जिस से समान में सुख शान्ति फैंटे।

श्री श्रकलंक वस्ती का उद्धार कीजिये।

साहे बारह सौ वर्ष के पाचीन दर्शनीय मन्दिर की रचा की जिये

हिक्षण भारत में कन्जीवरम् से दक्षिण पश्चिम की ओर (२ मील पर तिरूपरम्बर और करन भर्द नामक दो प्राचीन जैन स्नाम है। पहिले यह दोनों एक थे। तिरुपरम्बर का संस्कृत बाची शब्द मनिगिरि है। बहां जैन मुनि रहते थे इस कारण यह नाम है। पुनः श्रीभक्तलक स्वामी के वहाँ तप-इचरण करने सं दूसरा नाम अकलद्भ बस्ती पड़ा है। यही हिम शीतल की गाज्य सभा में स्वामी ने बौद्धों को परास्त किया था । इसके मध्य में एक "अरिसण्डप" नामक महरा में अब लंबहेरा के सरण हैं। यही पर उन्होंने अस्तिम सङ्क्षेत्रना वत गृहण किया था। प्रत्येक शाम में एक मन्दिर है। करन-र्घं का मन्द्रिर यहा और प्राचीन है। मन्द्रिर के हाते में ५ अलग बस्तो हैं और दो मंडप हैं। हाते की पूर्वी दीवार पर एक पोधी ग्वनं की सौकी, एक कमंडल और एक पिच्छी वनी हुई है जो अक-लड्ड देव की स्मृति में हैं। सब से बड़ा मन्दिर मध्य में कुन्धनांध जी का है। दूसरा मन्दिर जो 'येग्यस्तल' कहलाता है और जो उक्त मन्दिर से दक्षिण की ओर है श्री महाधीर स्थामी का है।

तीसरे में श्री धर्मदेवी की मूर्ति और खौथा अध-यना रे पांचवं (छोटासा मन्द्र) श्री वृषभनाथ का है। इन सब में दूसरा भगवान महाबीर का मन्दिर बडी जोर्ण अवस्था में है। आस पास के जैनी उसकी अकेलं मरमात नहीं करा सकते हैं। इसिन्ध्ये टानारों को महायता करनी चाहिये। सहायता 'श्रायुन् सीव्यसव महिलत्था, सम्यादक जैन राजद जार्ज टाउन मदास" थे रारा भेजना चाहिये । यह मस्दिर अपूर्व कारीगरी का है। इसकी छत में श्री नेमनाय और कृष्ण की लीला चिरित है। जो विगड रही है। चित्रों की मनोडरता दश-नीय है। भीतर बंदी में मनुष्य कर से ऊची अर्घ पद्मासन प्रतिमा श्री भगवान हहाबीर की अति मनोज है। तोन छत्र और भामदल भी हैं। प्रतिमा के पीछे दो देन चमर डारते हुए खड़े हैं। आंसपास भी दो देव गागफन समेत चगर ढारते खंडहै इस्ही के पास एक दम्पनि पुष्प हाथों में लिये खड़े हैं। लोग इन्हें श्रणिक-चेलिनी धनलाने हैं । यह सर्व मृतियां बड़ी चित्राकर्षक हैं। मि० मुक्तिनाथ जी ने उक्त स्थान के दर्शन करके यह अपील प्रकट की

है। वह करते हैं कि यतीं अक्रलंक देव नेश्री तत्यार्थ नीय, दर्शनीय और धड़ुत स्यात का उद्घार अवस्य राजवातिक जी लिखी थी । पेसे प्राचीन पूज्य- होना चाहिये। —उ० सं०

सामाजिक परिस्थिति का नमूना



इयर देख्ं नो क्रंचा है, उधर देख्ं तो खाई है हुआ बेकल निगरमेगा, न कल अब इसने पाई है क्ष्म के के अध्याल जैन एक धनाइय एकप हैं। आप साठ वर्ष से अधिक आयु होने पर भी धार्मिक संस्थाओं में अबतक असह-योग ग्यते हुए एक दस ग्याग्ह वर्ष की निदेंष बालिका से लग्न करने की प्रवल इच्छा की पूर्ति करते हैं। ला॰ जी की नीसरी पत्नी से दो कन्यायें मौजद हैं।

ता० २० जन सन् २४ ई० को सनेरे दस यं के समय "बाराबंकी" ही में नहीं आस पास के दम २ वीस २ कोस के ब्रामीं में भी कीर्ति करी पुष्पों की गंध फैल गई कि लाला जी के मुनाइब सिपहसालार जी एक कन्या गाजियाबाद जिले मेरठ से मय उस कन्या के पिना, पिता के भाई दो लड़के,एक बूढ़ी स्त्री एक प्यारेलाल त्रीहाण और एक पन्ना नाई थाठों को लाकर =-१० दिन से ठउराये थे। लाजा जी का तिलक चढ़ जाने के बाद जैन पड़च न ने 'जै श्रीराम आदि की' कोशिश से गाजियाबाद चार महाश्रय जांब के लिये में जे गये और यहाँ विवाह सम्बन्धी रसुमान हो गई। जांब करने वालों ने साबित कर विया कि लड़की

बिरादरी की नहीं है और फिर पिता, नाई और प्रोहित से पूछने पर पना लगा कि धन के लोभ में गैर आति की लड़कों ले आउ हैं छड़की से पूछने पर उसने कहा में एक मंगता (भिलारिन) धीमर (कहार) की लड़कों हुं इस पर सब के सब आठों कोतवाली भेजें गए और फिर कोतवाला में क्या हुआ शान नहीं।

२६ जून को सबेरें मध्ये मात्म हुआ कि एक दस वर्ष की कत्या और आज लाला जी के बर-मालो डालने आ पहुंची है।

इस कन्या के साथ न तिलक चढ़ा था और न विवाह सम्बन्धी कोई ग्सूमान अदा हुई और न लाला जी के भाई तक शरीक हुए चुपचाप दो दिन के भीतर ही भानर लाला जी ने इस दस ग्याग्ड वर्ष की कन्या के भाग्य का अन्त कर दिया।

लाला जी अर ल'ला जी के दो एक साथिया की सद्वृद्धि पर स्वार्थवश अविवेकह्मी आवर्ण एड़ गया कि गाजियावाद यहां से तीनसी मील से अधिक है। क्या वहां या उसके निकटवर्ति आमी में लाला जी से सुकुमार लावण्य गाला कोई युवक इस कम्या को वर नहीं मिल सकता था जो इतनी दूर लड़की का पिता लाला जो के रडुवेपन की उतारने बला आया।

जिन जातियों में वारात जाने की प्रथा और विवाह सम्बन्धी सर्व कियाएँ पंचियरादरी की शासी से वर और कत्या पक्ष के सम्बंधियों हारा होने का नियम है उस जाति में यदि कोई व्यक्ति स्वयं वर के घर आकर अपनी कत्या विवाहने को तयार होजाय तो उसमें अवश्य कोई न कोई मेद का कारण हो सकता है।

संसार में स्वार्थ सत्ता, अधिकार, हुकूमत ऐसी बस्तुयें हैं जो धर्म न्याय, विवेक और इस्साफ को दवा देती हैं मनुष्य की इस स्वार्थ लिप्तता ने अवला कन्याओं का जीवन भी अत्यंत भार रूप धना दिया है। वह निर्जीय सम्पति या गाय भैंस, घोडा आदि क्रय विक्य करने योग्य पशु तुल्य समभी जाने लगीं।

अद्वां पर पिता से अधिक वयस वाले बाबा की धन रूपी बेदी पर एक निर्दोप पवित्रहद्या कन्या का बलिदान दिया जाता है और फिर वहां अहिंसाधर्म प्रति पालक होने का अभिमान किया जाता है।

भरी है आज क्या मिल करके

हई सब ने कानों में ।

हन के जीफ ने क्या

ठींक दी कीलें जवानों में ॥

हमा कर डाट वैठे हो तुम

सब अपने दहानों में ।

दिफार्मर हो या सब

मिद्दा के पुरासे हो दुकारों में ॥

सन्तर्गो ! विवार का अर्था वास्तव में उस खुशी की अवस्था से है जो स्थी परूप के जोड़े की समाजिक नियमानुसार सम्बन्ध निष्यत होने पर रुव्यमेव होती है। मनुष्य मात्र अटादि से समाज रूप रहता आया है, कारण तभी उसकी यथाचित वृद्धि हो सकती है अन्य प्राणियों में समाज की ब्यटस्था नहीं है और इसोलिये उनके यहाँ नर मारी का जोड़ा योहीं बनता जिन्ता रहता है। विवाद कार्य एक सामाजिक स्पार का मान्न है ना कि स्त्री परुप का साधन्य न्यायानुसंदित रूप से हो जावे और स्वेच्छाचार की वृद्धि गहोने पाये बेई-मानी से २-- ४ पैसे की हानि पहुंचाना नो पाप समका जाता है और जहां जान वुक्त कर किसी के सारे जीवन को कराव किया जाता है वहां कितना वड़ा पाप होगा और इस के बाद जो इ.फल फलते हैं या जो प्रमृति या विवशता के कारण इन निरपराधियों से हो जाने हैं उनका शाप किन को गर्दन पर है ?

कहना तथा करना परस्पर एक सा जिल्ला नहीं। उनके कथन का वी भलाकुछ मृत्य होता है कहीं॥

समाज सेवक---

जुगमन्दरदास जैन

नोट—सप्राजिक परिन्थिति कितनी भयं-कर रूप धारण कर रही है इसपर निष्पक्ष हो विचार करना चाहिये। पंचायतों को दूदता के साथ इसके सुधार का उपाय काम में लाना खाहिये।

--- उ० संव



१-भ्रूगाहत्या पर मजिस्ट्रेटका फैसला । गत आपाइ शुक्ता १० घडस्पतिशर कं

गत आराढ़ शुक्ता एवं पृत्रस्पातवार के ख्वाता' नामक एक वैराला पा में हिन्दू समाज की कल्कु-कथा प्रकाणित हुई है। इस सम्बन्ध में अदालत ने विचार करके सुविज और सहदय मिजिक्ट्रेट ने अपनी सम्मति में जिस निर्मीकता और सन्य-निष्ठा का परिचय दिया है वह अन्ध और स्वार्थों समाज के लग्य करने योग्य हैं:—

कुमारी एक विधवा रमणी है। यह समाज के भय से अ णहत्या कर हे और बालक की मृत देह को फंकरने के कारण कवहरी में अभियुक्ता होकर आई थी। उसके विरुद्ध नार्मारात हिन्द की देह धारा का चार्ज होने पर भी हतभागिनी ने अपना सब अपराध स्वीकार कर लिया। पाठकरण जानते ही हैं कि आइन की यह धारा उन्हीं पर लगाई चानी है जो भ्रूणहत्या करते हैं और छिपाकर मृत देह को फंकर देने हैं। इस धारा का अपराध प्रमाणित होने पर दो वर्ष का कारावास होता है।

मारी के पक्ष से गवाहीं द्वारा यह प्रमाणित हुआ था कि इस घटना के पहिले उस रमणी को लोग सच्चरित्र समभते थे। उसके विरुद्ध कमा भी किसी प्रकार के दापागेषण की बाने नहीं सुनी गई।

प्रमाणों से मालून होता है कि किसी छापद के जाल में फोसने के कारण इतसागिनी पाप भूष्ट हो गई है। प्रलोभन से हाय न जीच सकते के कारण उसका सर्वनाश हो गया है।

वियेक की मार से विध्या ने सरलता से अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। सुविवेबक्क, सर्द्र्य, मजिस्ट्रेट मसुख्य की दुर्बलता और अध्यमता को अच्छी तरह से जानते हैं। उन्हें मालुम हो गया कि जाल में फैसकर, यातों में आकर हतभागनी यह निन्द्नीय कर्म कर बैठी है। यही कारण है! कि उसने अपनी सम्मति में जो विचार प्रगट किये हैं ये समाज के विचार करने योग्य हैं। मजिस्ट्रेट ने फैसले में कहा है:—

"किसी लग्पर पुरुष ने इस रमणी का असून्य सतीत्व धन नष्ट करके इसका सर्वनाश कर दिया है। यह रमणी उसके छारा प्रलोभित होकर, सामयिक उत्तेजना के वश होने पर, इस दुईशा पर पहुंची है। उस पुरुष ने इसका सर्वनाश ही

नहीं किया वरन, उसने उसे इस फौजवारी मुकदमें में भी फैला दिया है । हिन्द्र अथवा इस्लोमी आइन के अनुसार इस तरह की घटना होने पर बहुत सम्भव था कि दुःख देकर उस पुरुष का बध कर दिया जाता। परन्तु वर्तमान (अंग्रेजी) थाइन के अनुसार उसके विधान को मानकर वह पुरुष आज मुक्त है, और यह असहाया रमणी समाज के सामने, अपनी लजता ढांकने के लिए. यह निन्दा कार्य करके आज अभियुक्ता है" आगे मजिस्ट्रेट छि बते हैं:- 'ता बीरात हिन्द के कानून बनाने वाले को यदि भारतीय समाज के सम्बन्ध में रञ्चमात्र भी बान होता तो वह दण्ड विधि में ३१ = की दफा कभी न बनाता । यदि किसी अप्रेज महिला के साथ ऐसा अत्याचार होता तो वे अपराधी पुरुष को दँड दिलाकर अपने को निर्दोष प्रमाणित किये विना न छोड़ती, परन्तु समाज उसे [जातिच्युत कर देगा-इस भय से भारत-गमणी इस प्रकार के धत्याचार से छाती फट साने पर भी मुँह खोल कर बात तक नहीं करती।"

मजिस्ट्रेट की सम्मति बहुत बड़ी है। वह बहाँ उदुधृत नहीं की जा सकती, परन्तु अन्त में इतभागनी के प्रति द्वित होकर उनने अपनी सह्यवता का परिचय दिया है। उनने उसे अब तक श्रदालत न उठे तब तक कैंद् श्रीर पन्द्रह रुपये दण्ट किया है।

-परवार वन्धु

नोट-चस्तुतः इस देश में महा अन्धेर प्याप्त है। पुरुष हर हालत में सम्य है। विचारी अवलायें जरा २ सी वात के लिए समाज और राज्य दोनी ओर से दडित हैं। रमगी हितेषी किसी काउन्सिल मेम्बर को इस ३१८ वीं घारा का यथीचित सुधार करवाना चाहिए।

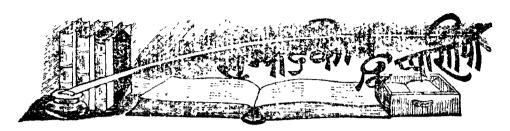
-30 सं0

२-वहेने और स्त्री शिचा!

जिला मैंनपरी-पटा और इटावा प्रभृति में करोब सात सौ संस्था की यह बढ़े लवाल जाति बस्ती है। इस हां जाति की सराय अगत बाली विधवा की बाबत समाचार पाठकरण गर्ताक मि पड चुके हैं। वैसे यह जाति अन्य छोटी-मोटी आस जस की जातियों से धन च प्रधा जालन में बड़ी चड़ी है। ज्यापार प्रधान जाति होने के कारण साधारण दिन्दी शिक्षा की बाहुस्यता रखती है, यद्यपि धर्मगान्त्रज्ञ आर अंप्रजो पढे लिखे व्यक्ति भी इसमें मिलते हैं। जियोंमें भी एक दो योग्य शास्त्रज्ञ हैं परस्त इस सबके होते हुए भी द्वेष, विपाद और श्चंघ विश्वास की माया इस जाति में अधिक बढ़ी हुई है। हम जीनने हैं, यह दशा जैन समाज की क्षधिकांग जानियों में है। परन्तु यहां इसका तांडव नृत्य हमें खासा देवनेको मिलता है, परिणाम इसका यह है कि जाति में मत भेद जोरी पर बढ़ रहा है। साधारण जनता समय की आध्यकाओंको जोगें से महसूस कर रही हैं। अन्य जातियों से विवाह सम्बन्ध करने व विधवाओं की दशा सधारने को सब उत्सक हो रहे हैं। परन्त हाय शासन सत्ता का मत ! इसने सब ठीर दारुण कन्द्रनबाद केंद्रा रक्या है। यहां भी जाति के कतिक्य एंक भीर चोधरी महाशय उसके आवेश में अपने प्रभाव से इस धार्मिक समयानुकुल प्रनिश्चित को कुचलने का भयज कर रहे हैं। यहां दादण दुःल है। हमें

किसी व्यक्ति विशेष अथवा पंचायत विशेष सं न होष है और न उपेक्षा है। हम प्रत्येक घटेले का प्रत्यंक शैकी की, धर्मा, धन, बल विद्यार्थ बड़ी देखना चाहते हैं और इसही भावना से उसका संगठन करना भी अवश्यक समका था! परन्तु दुःन कि अवविश्वास आज सर्वधा सर्व और रोमांचकारी अनर्थ कर रहा है! पाठकगण यह जान कर अतीव दः चित होंगे कि इस जाति की एक मन्य पंचायत मैनपुरी है ! सरायवाली विधवा का भाई यहीं का हैं ! बड़ विजास उसकी कन्यायों के जीवन सुधारने के लिए उन्हें आश्रासम् भे तना चाहना थी। परन्त वह पेका करने संराका गया है। यह कितना अनर्थ हैं ? यही नहीं हमको विश्वस्तसूत्र सं पता चला हैं कि मैनपूरी एवं अन्य स्थानों का कतिवय विधवा षतिने प्राथमी में शिक्षा प्राप्त करने को उत्सुक है परन्तु पंचायती भय से लाबार है। सरायवाली विधान की लयकियों को आग्रम में भजने से रोफ कर मुदिलासधार और शिक्षा प्रचार का मार्ग रोका गया है। पत्त हमको विज्यास ह कि विष्यञ्जाति हितेषी इस दशा पर भच्चे दिल से विचार करके अक्षता गत प्रकर करेंगे। ओर फिर अबोध कन्यायी को बाल बद्ध विभागको बेदी पर बलि चढने से बनाउँ! आश्रम में सर्व उप-क्रातियों की विश्ववार्षे रहती हैं-यह शिक है। परन्त्र इस में कुछ हानि नहीं है क्योंकि इस में न कुछ शास्त्र विरोध है और न प्रवृति विरोध ! मेघावी प्राप्ति आपिका चारीमै यह स्पन्ट कि ना हुआ है कि शद्ध कुलाचार ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य इन तीन वर्णी में पंक्ति भी त हो नहीं बल्कि परस्पर विवाह सहांध करना सर्वधा उचित है। और प्रवृति को लीजिए तो आज इस जाति में अनेको ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जिन्हों ने अप्रवालादि जैनियों के हाथ का नहीं

विकि अंत्रेनी यासणीं के हाथीं का साना सावा है और वह बरावर समाज में मान्य द्रष्टि से देखे जाते हैं। ऐसी दशा में यह कारण कन्याओं और विधवाओं को भाश्रमों में भेकते के लिए बाधक भही है। तिस पर यह खयाल करना कि आश्रम में भंजकर हमारी आति का अपमान होगा-विल्कल लचर दर्लाल है। बड़े २ घरों की महिलायें भो आधर्मी में आज मीजद हैं। इस कारण आध्रम में कल्यायों को जाने देने में कुछ भी जाति-अपमान नहीं हैं। जाति-अपमान तो उस अवस्थामें था जब लड़िक्यां और विधवा निराश्चित वे दीन होरही थीं! और सब कोई कानों में तेल डाले बैटे थे। इन प्राणियों की रक्षा करने के स्टिये आखिर का विज्ञा-तीय व्यक्ति ही अगाई। आप थे। इसलिए भाईयी, स्वार्थ और अंधविश्वासमें अपने भाश्रित प्राणियों के मनुष्य जन्म निष्फल न जाने दीजिए। कोटि जन्म मं यह मन्य्य भव हमको मिला है। इसमें आस्म ज्ञान प्राप्त करकं अपना कल्याण करने दीतिए। वहिनों पर वैसे हो अत्यासार हो रहे हैं। उन्हें और अधिक न सताइए। उनकी बान प्राप्ति में-शिक्षिता बनने में बाधा न उस्तिए। आश्रमी में जाने से रोक कर उनके तान लाभ में अंतराय डाल कर जाना-वर्णीय अशम कर्म का वृथा बन्ध न बांधिए ! दया की जिए-इयाल होनेका यदि दम भरते हो लबे छुत्रों में से आप आवश्यक सुधार-कन्याविकय युद्ध विकाह का विरोध करके अलग हर थे!आज स्वयं आए बही कर्म करने को उतार हैं। यह न कीजिय। प्रशाओं की मर्यादा का खयाल कीतिए। निष्पञ्च साइयों, तुम क्यों सूपचाप वैठे हो। शिक्षा का मार्ग खं।लिए। आध्रमी में अपनी बहिने जाने -- उ० सं० दीजिए।



जैन जाति की नैया मंभधार में खेबटिया रत्नत्रय धर्म है।

यह बात अच्छी सरह पाठकों को निदिन है कि
यह जैन समाज अनका, कुरीनि, न्यू न्यू न्यू , अज्ञान
तथा थिय त्व के महा यम्मीर ममुट में पूर्ण हुई
गोते खा रही है, इसका पार लगाने वाला रत्नत्रयमयी जहाज है, क्या नर नार्य गण! इस अद्भुत
शिव द्वाप पहुंचाने वाले जहाजका आश्रय न लेंगे।
यह जहाज शिव द्वीप को जाते हुए मार्ग में अनेक
सुखदाई स्थानों पर ही विश्राम करना है। यह
कभी दुःखदायी स्थानों पर नहीं जाताहै। जो अपना
हित साहते हैं उन्हें विशेष स्थानां से साथ इस
कहाज पर जाना साहिए।

विशेष द्वारा सत्य असत्य का निर्णय करके असत्य का त्याग और सत्यका ग्रहण करना उचिन है। जो सत्याग्रही है, खूथा लोक दिग्नाये व लागों की ग्रहांसा या निदा की परवाह नहीं करनेयां हैं वे ही इस जहाज पर सुख से आसन जमा सकते हैं विवेष कहना है कि सत्यदेच, धर्म, गुरुकी श्रद्धा रखके उन ही की भक्ति किसी चाह को न स्व केंबल िवपना व अपना स्वरूप साधन के हेतु से कहे अपने साध्य को पहुंचने वाले महात्माओं के मुख्य मोक्ष साध्य का पहुंचने वाले महात्माओं के मुख्य मोक्ष साध्य का पहुंचने वाले महात्माओं के

भक्ति करो, तथा उनके गुण अपने आत्मा में बि काशको पार्व ऐसी चेप्टा करो, श्रीजिनेन्द्र शांत. सुनी और कानी है आप भी शास्त सुखी और हानी बक्ते की खेलाकरों। आप्त दृक्य की आलप्यन को लेकर आतमीक गुणों की भावना करो, एकान्त से बैठ कर मान्त चिक्त हो राश हो ब त्याग सामाधिक या अत्मध्यान का अभ्यास कहो. शुद्ध भीजन करके हिमा, प्रसाद और रोगी से बची अपने भावी में आकुलमा न अप्जान इसिल्ये न्याय से कमाए हुए उच्य के अनुसार खर्च करो। मिथ्या जाति व कुल का अभिमान त्यामो और कर्मा भी अपनी शक्ति से अधिक कर्ज टेकर विवास शादी आदि में मर्चन करो। आमदनी सं कुछ श्वाने हुए सर्च करोगे तो सदा सुखी रहोगे। पुत्र पुत्री को अपने आर्थ न समक उनको विद्या, धर्म, बल, ब कला सम्पन्न बनाओं और प्रौद वय में बीग्य सम्बन्धीं मं उनका विवाह करो।

शास्त्र स्वाध्याय नित्य करके अपने ज्ञान का बढ़ाओं तथा संसार में जैन धर्म के नत्व ज्ञान का विस्तार करों जा जैन धर्म पर अग्रक्त है व इसकी प्रभावना के इच्छुक हैं उनका स्वामी समन्त भट्ट और स्वामी श्रकत्तुङ्क की तरह अपनी हानि करके भी जैन धर्म का प्रभाव फैजाना खादिये। धिडान परोपकारियों को इस धर्म की ध्धनि भारत कं काने २ में पहुंबाने के लिये थे। भी चैरामी त्यामी हो जाना चाहियं। कम से कम सातयी प्रतिमा तक बह्मचारियों के वृत पालना योग्य है। जैसे महा-राजा अशोक में हजारी विदान धर्म प्रचारकी को देश विदेश भेजकर धर्म का विस्तार कराया था धेसे ही अनेक विद्वान त्यागियों को देश निदेश जाकर जैन धर्म का संस्वज्ञान फैलाना चाहिये. और बिना रोक टोक के जो जैन तथा पर श्रद्धा लाउँ व मांस मदिश त्यामें उसे ही जैनी बना लेना च। हिये। जा जैन बन्धु ब्रामी स रहते हैं श्रीत उपदेश नहीं पाते हैं उनका धर्मो परेस का लाग हेना चाहिये । जिसमें वे इस पवित्र तैन धर्न में कते उहें- तैन समाज की संख्या दिन पर दिन धर रही है इस प्रण्य की ध्यान में लेकर जिन कारणी से बह घटी हो रही है उन कारणों को बल पर्वक रोकता चारिये । याग्य धीर संतान परा हो इस लिये तेस्य मती पुरुषों के सम्बन्ध होने की जरूरत है. अतएव जा भाई थी जिनेन्द्र के चरणों के टास र्षे उन सब से रोटी बेटी व्यवहार करना चाहिए। जातियों के बने रहते हुए भी उसी तरह परमार सम्बन्ध हो सकते हैं जैसे पहिले इक्ष्याकु वश ओर कु ह बंश आदि में होते थे।

स्त्रियों को पग्दे के भीतर से निकाल कर उसको शुद्ध नाजी तथा देनो खाहिये य उनको स्थयं ससार का अनुसब लेकर जात्युव्वति, धर्मा-व्यति यदेशोत्रति से भाग लेना खाहिये।

्यारे नवयुषको ! आप हृद् श्रद्धात्रान होकर श्रानी बनो और सत्य मार्ग पर चलो यही रत्नत्रय धर्म की नीका पर आरोहण है, और निर्भय होकर अनेक कष्ट सहकर भी इस नीका में संसार पधिकों को बुळालर चड्छो, जगत् में सुख शान्ति का विस्तार करो।

बीर पत्र

के घाटे के लिए अवश्य इस भावों मास में कुछ रकम विजनीर भेजों जिससे यह आपकी सेवा सदा करता रहे।

---सम्पादक

१-पित्र-पर्व और हम !

जैन घर्ग का परम प्रिवह एवं द्शलाक्षणी पर्व है। जेन नामका चारी अपने अपने की विसारी चाहे वर्ष के सारे दिना उससे विशु र हुआ फिरता रहे परन्तु इन दिनों में घड़ तो आ धीनराम मणवान के विश्वत्रसमंख्य कारी चल्लारविणे में बैउने को लाचार हाता है! कुल सम्कार से प्रेरा यह बढ़ी पहुंच दी जाना ह और जान लेना है कि यह मनुष्य मच चड़ा दुर्गम है। चड़े पुण्योदय से मिला है। आत्मोरनि म समार के अिलयों से बड़े चढ़े हीने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। रूपे सकत बनाना चाहिए। सत्यक्ष प्रमाण है। रूपे सकत बनाना चाहिए।

डौसं पुरुष काइ धन कारण,

ही इत दीप दीप चढ़ि याते।

आवत हाय रतन चिन्तामणि,

डारत जर्लाव जानि पापान ॥

हैसे भूगत भूमत मबसागर,

पावन नरशरीर परधान ।

घर्मवल्न गाँड करत 'वनारिय',

खोधत वादि जनम अक्षान ॥

परन्तु जय अवने इर्व गिर्व द्रप्टि वीडाता है तो असलियत को नहीं पाता है। बडी भक्ति से पूजा पाठ और शांत शास्त्र सभा और उपदेशी भजन होते भी बह देखता है और कछ प्रभावित हाता है; परन्तु याही अपने साधियां को महिरके बाहर दस-धर्म के विवरीत मान मद में सना देखता है-वृया कुछ अभिमान या धन अधवा जन के गर्ज में चूर देखता है तो समझ लेता है कि यह धर्म की बातें सब सनते के लिए और सिर्फा उसती समयतक के लिए हैं जब तक वह कहीं और सुनी जायें! अभाग्यवश शांत-चन्द्रन-वादिका में आकर भी वह अपने संतरत हवय को शांत नहीं कर पाता है! वहीं नहीं जिन श्रद्धालु जैनियों के श्राचरण की देखकर वह धर्म के मर्ग को समक्रने में असमर्थ रहता है वह स्थ्य परम शांति और स्वसे बञ्चित रहते हैं। आज जैन समाज में चहुं और हाराकार सच रहा है। पिषडत गण अपने पांडित्य में चुन्हें-बानू साहब अवनी शान की ओन में व्यस्त हैं ! संड गण पैसे की धूनमें इन सबसे अगाडी वहे मस्त हैं ! फिर मला भोली जात के भानसे रहित जनता किस तरह शाउम चरित्र बता सकती है? फिर मला क्यों न दृःखों के पहाड़ हम परवडते रहें ? कुमारी और विश्ववार्थीके कन्दन माद हमारे शान्त जीवन को मध्य करते रहें ? समाज में व्यक्तिशारादि हिंसाकर्म व्या न दिन दूने बटते रहें ? भारवो, यह नरजन्म अमृत्य हैं। फिर पिलना क्रित है ! आप जानवान हैं । इसे सक्रल बनाइए । हम्मानको के पवित्रदिनों में अपना सारा समय धर्म के विवार में विताइए। इन दिनें। सांसारिक वातों से मुंह मोड आत्म सुघ लीजिए। लोभ क्रवाय को हनने के लिए कारधार बन्द रखिये और

मंदिर जी में भी बधा की गएशप या आवसी खैंचा तानी में समय नप्रन कीजिए। दशदिनी में आत्मा-न्नति के साधन जुटाइये! धर्म रससे अपने आपको तथा अपनी संतान को सादसी,धीर और पराकृमी बनाइए ! स्वाध्याय और लामाधिक के अन्यास से अपने भूमको नष्ट कर डालिए। फिर अनन्त अतुर्दशी—कलह चतुर्दर्शा न वशकर प्रस शांत चतुर्दशी बनाइए। इस रोज अपने इत पापों की आलोचना चर्चभर में एक उर्फ तो कर लीजिए। उत्तम है। कि सब भाई जिलकर प्रतितवायन बीतराम प्रमु की समक्ष आलोचना-बाट को जोर से यह कर अपने सब दोवीं की आलोचना कर लेखें। फिर प्रति-पदा के रोज सब को अपने सदने दिल से बैर बाव को भुला देना चाहियं परस्पर वेम बदाने के लिए उसरोत सबको प्रेम-भाज में इकर्ट होकर भोजन करना चाहिए । शृह्य-वस्त-वस् प्रेस का नजारा इस एक रोज् तो दिवा देवा चाहिए! इस ही क्रम से हम इन पवित्र दिनों को सार्थक कर सकते हैं।

२-चुमा वागी

वर्ष भर में प्रिनिपद्दा का यह यह सुनहरा दिन है तो संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना वाहिये। संसार में यह समय नहीं है कि प्राणी से किसी न किसी रूप से अन्य प्राणियों को मन, बचन, काय द्वारा पीड़ा न पहुंचे। मतुष्य स्वभाव से ही असद व्ययहार की और शीद्य लप-कता है। और कवायों के आधीन हो प्राणियों की पु:स पहुंचता है। वर्णभर में यदि कोई समय भी उसके इस निरंकुश व्ययहार पर अकुण-रूप आकर म पहें तो कसार में अनर्थ और अनेक्य,अधर्म और

अत्याचार दुःव और प्रतिहिंसा का साम्राज्य फैल जावे । आज इस उपेश्रा से चहुं और यही परि-स्यिति दिखारे पड़ रही है। जैनाचार्यों ने पहिले ही बस्तु स्थमाब के अनुसार मनुष्यां के लिये वर्ष भर में एक माम-भाइपद-पवित्र बना दिया। उस मे उन्हें आत्म साधन के उपःयों की ओर रुज़ किया। जब शासा असल्टियन के मर्ग को जान गई तो पित प्रतिज्ञा रूप में आगाम परस्पर पेश रखने की सनद इए गक्श उसके इदय पर हो जाउ इसलिये विश्व व्यापी 'श्रनावाणी' का दिन(Universal forgivoness Day) नियत किया । इस द्नियां सं धैर का प्रतिदिस्ता का अन्त है। जाना चाहिये। प्रेप धारायें यह निकलना चाहिये यह उम दिवस की शिक्षा थी-उद्देश्य था। अभाग्यवश स्वय जैनिया ने ही इसके महत्व की घटा दिया। यह भी कोरी रहम गर गया। कहां ते। आखायों का वह उच्च आदर्श भीर कहां इनका यह नीच अवकर्ष! चाहिये ते। यह था कि जहाँ भारतियाँ ने इस की भुलाया है बहां अवने लारित्र से उनके निकट पहुंच कर प्रेम दशां कर इस का पुनः प्रचार संसार में कर देते ! पुनः ससार में यह प्राप भावता फीला देते, लोगें। के मुत्र ले यह कहलवा देते:--

"वामेमि सत्व जीवे सत्वे जीवा वर्मतु में।

मिति में सत्व भूपत्न, देर मक्ष्यं न केणार्वि!"
'सव जीव मुकं क्षमा करा-मेरे उनके मित क्षमा
भाव है-सर्व प्राणियां में गैबी का साम्राज्य है।,
वैर कहीं मी दिवाई न पड़े।' यही सच्चे दिल सं
आज प्रत्येक जैनी का पालन करना आवश्यक है।
रिवाज ते। होता ही है-सब कुल होता है-पग्नु
उससे दुल नतीजा नहीं! सकाई और सवाई बडी

छटा फैलने दीतिये। 'शीर संघ' डास-इमारं द्वारा जिस किसी महानुभाव के परिणामें का बात अथवा अक्षातावस्था में, कर्तव्य पालन अथवा

चीज है। उन ही का अवलम्बन :लीजिए। **इस** एवित्र 'शमावार्णा' के दिन मैत्री-प्रमाद कारुण्य को

कर्मच्या अक्षातायस्था सः, कारान्य पालम असमा कर्मच्याचहेलना से गत समय में जी पिड़ा पहुंची है। उसके लिये स्नाज के पिंचत्र दिनयह 'धीर-सघ'

और हम विनम् हृत्य संबद्धे अनुराध से उसकी क्षमायाचना करने हैं। सम्बसुचः—

^{*}ध्यारे ! आज नवीन भाष से मेल हुआ मेरा तेस।

—उ० सं०

भावश्यकता

श्री ऋष्य ब्रह्म नर्ध्याश्रम, जयपुर के लिये एक योग्य ग्रेजुयेट या अएडर ग्रेजुयेट की आष-स्यकता है जो कि अक्करेज़ी व गणित विषय में दत्त हो। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थनापत्र मय प्रमाणपत्र आदि सहित-''श्रीयुत रा०व० बा० नांदमल जी अजमेर, मंत्री आश्रम, गवर्नमेन्ट पेशनर, अजमेरं' के पास ता-१५सितम्बर के पहिलंश पहुंच जाने चाहिये। कैनियों के प्रार्थना पत्र पर सबसं पहिले ध्यान दिया जायेग। केशरलाल अजमेरा जैन, मर्त्रा-परीद्मा बोर्ड जयपुर.

श्राप हमारे पवित्र उद्देश्यों को कुच नेंगे

यदि आपने इस समय बीर की सहायती न की, वर्योकि बीर का जैसी आव श्यक्ता इस समय आपकी सहायता की है कैसी कभी नहीं होगी। निम्न प्रकार आप सहायता कर सकते हैं:---

- (१) स्वयं ग्राहक चनका, यदि श्रव तक नहीं हैं।
- (२) ध्रम्य पित्रों को गृहक बना कर।
- (३) सार्वजनिक स्थानां पर बीर का प्चार करके।
- (४) हान अवसरों पर दीर की धन से सहायता करके।

परम हर्ष !!!

"वीर" के माहकों को विराट् उपहार !

"वीर" के आगामी (तृतीय) वर्ष के ब्राहकों की "सत्यमार्ग" नामक एक पर्मोपयोगी छहद पुस्तक उपहार में विल्कुल क्षुफ्त दी जायगी! यह पुस्तक क्रीव ४०० पृष्ठ की होगी और करहल निवासी भीमान ला० फुलजारी लाल जी साहव जैन रईस व ऑ० मिक्स्ट्रेट की आर से प्रमट होगी! लाला जी इस पुस्तक को बहुत दिन से लिखवाने की कोशिश कर रहेथे। इस में ग्रहण के पारंभिक कर्तव्यों का विवेचन हुलातात्मक ढंम से किया गया है सब धमों से यह फिद्ध कर दिया गया कि पंचालुबतों का पालन करना और एक सर्व व नीतराग प्रभु की उपासदा करनी लाजमी है। बड़े गहन पिश्रम और अनेकी ग्रंभों के मन्धन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्या होगी। और अपने हैंग की एक ही रचना होगी। इसकी उत्नी ही मित्र खपताई जायँगी जितने "बीर" के ब्राहक होंगे। इस लिए यदि आप गृहक नहीं हैं तो फीरन होगाईए।

भीवर्द्धमानायनमः ।



श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाजिक पत्र ।

श्रांतर सम्पादकः ः~ जेरुबर्द्धरु,घर्रदरु, श्री ब्रुथ् शीतलप्रसाद जी श्रामः उपसम्पादकः :---

श्री कामनाप्रमाद जी

हर्ष '

हर्ष ''

हर्ष !!!

कीं के बाह्यां का विकास स्परार

बीर के श्रामामा (तृतीय) वर्ष के ब्राहकों की एक परमापयामी बृहत ५०० पृष्टी की पुस्तक

ं स्थय-सार्थ । कि इस स्पन मिलेशी ।

इसमें गृहम्थ के प्रारम्भिक कर्तांच्यों का विवेचन तुलनात्मक ढङ्ग से किया गया है। बड़े गहन परिश्रम श्रीर शनेक बन्धों का मधन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्ण हुई हैं श्रीर श्रपने ढफ्न की निरालों श्रीर श्रमृत्य रचना है।

न्यासार्वा प्रयं च दा प्रशेषाङ की स्वर्ग ।

नवान ब्राहको को श्राघ्य हा श्रपने नाम शाः वार्षिक मृत्य भेतकर दर्ज रजिस्टर कराः लेने चाहियँ । क्योंकि पुस्तक कोमती होने के कारण केवल परिभिन संख्या में ही। छपवाई । जायगी श्रन्थथा पछनाना परेगा ।

日野191年。

श्रीतर प्रकाशक

राजस्याभाग अस १ वर्गीर १ वर्ग ।

րներներներներներներներներներներ և արևերանարևանարևարևան արևանականականերներներներներներիներներներներներներներներ

हर्ष ! हर्ष !! हर्ष !!!

दिवाली पर 'विर' का विशेषाङ्क ।

इस वर्ष भी हमने दीपमालिका के उपलच्य में बहुत सुन्दर
और उपयोगों सचित्र वीर का तिशेषाङ्क निकालने का निश्रय
किया है। श्रभी से इस के लिय नय्याग्यां होरहीं हैं। इस में
श्रन्य चित्रों के अतिरिक्त एक श्रत्यंत मनोहर तिरंगा चित्र
श्रीपावापुरिजी का भी होगा जिमको कि वड़े पिश्रम और, ह्यय
करके कलकत्ते में हपवाया गया है। जिन बाहकों का चन्दा
निवार्ण श्रङ्क पर ममाप्त होता हैं (धा०न०६०१ में लेकरह ३७)
तक) उनको चाहिये कि श्रागामी वर्ष का २॥) मृल्य मनीश्रार्डर हाग भेजटें। श्रन्यथा वीं० पी० भेजने पर यह श्रंक देर
में मिलने के श्रतिरिक्त ह्यय भी श्रपिक पड़ेगा और हम को
दिक्तत पड़ेगी। श्रन्य मज्जन जो बाहक होना चाहें उनको
भी शीध श्रपता नाम २॥) भेजकर दर्ज रिजम्टर करा लेता
चाहिये। क्योंकि परिमित संख्या में ही यह श्रंक श्रोर उपहार
धंथ छुपेगा। गतवर्ष की भांति इम वर्ष भी हमको इस श्रंक की
तथ्यारी के कारण २२वां श्रंक चन्द रखना पड़ेगा । श्रागामी
वर्ष का उपहार भी श्राशा है इसी श्रंक के माथ हम बाहकों
को भेंट कर सकेंगे।

राजन्द्रकृतार जेती.
प्रकाशक 'वार'
विजनोर ।

श्री महावीराय नमः ।



वर्ष २

विज्ञनीर, आश्विन वृष्णा १३ चीर सम्वत् २४५१ १५ सिनम्बर, सन् १६२५

आह २२

* वीर जिनेश *



जयतु जय श्रीमत् वीर जिनेश !
स्याद्वाद नय कञ्न विकाशक, प्रवल-प्रचएड दिनेश ।
केवल ज्ञान लच्मी धूपित, शिव कामिन माणेश !
भजय वीर मकरध्वज, विजयी महाबीर श्रावलेश ।
मिध्याबादी नष्ट किए, दे श्रमृतमय उपदेश ।।
मक्तियुक्त, पद पद्मा, श्रहनिंश यजत मरेश सुरेश ।
कुपासिधु ! श्राक्षो ! हृद्यों में सस्वर करहु प्रवेश ॥

---"年表日報??

बाल्य विवाह की पुष्टि ।

र्व जो न मित्रं" के किसी अंक में श्रीयुत प्रस-वाल शीतलप्रसाद जी ने बाल्यविवाह के निवेध रूप में 'कारभड़' का कोई अरोक लिखा था कि जिसका मतलब यह था कि १६ वर्ष की स्त्री ब २० वर्ष के पुरुष के संगम से बलवान संतान उरपन्न होनी है। इस पर हिन्दी 'जैन गजट' अंड्र धरे में श्रीयुन एंट श्रीलालजी ने 'वावृत्ती का प्रलाप' शीर्षक छेख में लिखा है कि इस अधेक में न कहीं विवाह का शम्ब है न कन्या का क्रफत है-इस लिए यह रहोक इस बात को नहीं बतलाता कि विवाह १६ वर्षकी कत्याव २० वर्षके वरका होना चाहिए। इसमें केवल बली संतान होने का जोडा बतलाया है। लेकिन पंडितजी की यह दलील एक महज सफ्जी बहस है। फेचल विवाह और फम्या का शब्द न होने से नहीं कहाजा सका कि इस क्योकले बाल्य विचाहका निषेध नहीं होता । बहिक यह मात्र वली संतान् होने का जोड़ा बतलाबा है; क्योंकि वली संतान होने का जोड़ा तो १=-२२ साल या २० व २५ साल का भी हो सका था। सतएव इस स्टोकका मतलब इसमें विवाह व कन्या का शब्द न होते हुए भी यह जुरूर निकल सका है कि विवाह १६ व २० वर्ष के छड़की लड़के का होना चाहिए। फिर पंडित जी लिखते हैं कि "वा-ग्भर" ने फलां फलां श्लोकमें मांस मिर्ग, मधु की सराहना की है। यह दिगम्बर जैन आचार्य किस तरह हो सके हैं ! सो यदि बाग्भट ने इन पदार्थों

की सराहना की है तो विस्ताशक वह जैनाचार्य न होंगे ! वहाचारी शीतलप्रशाद जी ने शस्ती साई होगी! क फिर एं० जी लिखने हैं । कि "आप यहाँ कहोंगे कि यह अन्ध वैद्यक का है। इस में तो जो शुण जिस पदार्थ का होगा वैसा उसका गुज्ज-भव-गण लिखा जायगा। इस में धर्म से सम्बन्ध ही क्या ? तो इस बात को हम भी मानगे कि यह धर्म शास्त्र नहीं है और न धर्म से सम्बन्ध रखने चाली बातों का इसमें कथन है !" लंकिन मै तो यही कहुंगा कि पड़ा यह वैश्वक प्र'श्व हो, भगर 'साग्भट' अनाचार्य धेतो उनको मांस, मदिरा, मधुकी सराहना इस में नहीं लिखनी चाहिए थी। और अगर उनके प्रन्थमें इन पदार्थोंकी सराहना लिखी हई है तो मालूम होता है कि वह जैमाचार्य नहीं थे। हाँ, अगर द्वावशांग में वैद्यक का प्रकरण है और उस में भी इन पदार्थों के गुण दिए इए हैं। मुक्त को इस की बाबत कुछ मालमनहीं। तो जैसा कि पंडितजीने किया है, विलासक यह कहा जासका है कि चूंकि यह वैद्यक ब्रंथ है इसलिए इसके कर्त्ता के लिए जैनाचार्य होते हुए भी इन पदार्थी के गुज

^{*} वाग्यट का बल्लिसित ग्रंथ माजैन ब्यक्तियों द्वारा ही प्रकट हुमा है-इस लिए संभव है कि वसमें यह श्लोक टीका-कार या किसी अन्य न्यक्ति ने रल विए हों। जैन भंदार की किसी प्रति से बस का मिलान कर के निर्णय होना आव-व्यक्त है।

लिसना ना मुनासिक नहीं है। बरना क माहिर तो किसी जैनाकार्य का अपने मैचक प्रथ में भी इन पनार्थी के गुण में प्रगट करना वेता ही मालूम होता है।

आरो चलकर पं॰ जीने कुछ बालविवादकी पृष्टि में लिखा है। जैन विचाद पद्धति, त्रिवर्णाचार, मद बाह संहिता का हवाला देकर यह लिखा है कि करण का विवास रक्तरवळा होने से पहले १२ धर्ष को उमर में कर देना चाहिए। जो माता विना र तस्वला कत्या को अपने घर रखते हैं वे पापीहैं। सो इसके छिए भव्बछ तो बाल विवाहकी उत्पत्ति का कुछ हाल दे देना मुनासिय मालूम होता है। अब भारतवर्ष में सब को यह बात मान्य है कि बाल विश्वह मुसलमानों के अहद सलतनतसे शुरू हुआ है उस जमानेमें मुसलमान हिन्दु में की लड़-कियों को जचर दस्ती छीन कर अपनी शादी उन से करने लगे थे। सेकिन वे विवाहिता खीकां नहीं रेते थे। उस वक्त बुद्धिमान और दुरदर्शी हिन्दू पंडितों ने हिन्दू लड़िक्यों को मुसलमानों के हाथी से बचानेके लिए यह उपनेश दिया कि लहकी की शादी रजस्वला होने से पहले कर देनी खाहिए। माता विता का रजस्यला कस्या को अपने घर में रखना पाप है। और इस ही भाशव के श्लोक धर्म पस्तकों में लिब दिए। और इस दुक्किमसा और दुर दर्शिता को जैन भट्टारकों व पंडितों ने भी हाथ से नहीं दिया। जुनांके इसही आशय के श्लोक उन्होंने भी अपनी रची हुई धर्म पुस्तकों में लिख दिए। भीर इस अच्छी तरकीवने उस वक्त बहुत अच्छा काम किया लोग मपनी लडकियों की शादी रजस्यला होतेले पहले ही करने छगे कि जिससे व मैर मज

हम बालों के हाथों से बच गई । उस बक्त से ही बह दिवाज बाकबिवाह का जारी हो गया। एं भी लाल जीने को जैन विचाह पद्धति आदिका ह्यामा क्या है. यह सब तीनसी-चारसी वर्ष के श्रीतर की रवी हुई हैं। 'मद्र खड़ संहिता' की बाबत:एकबार पं० युगलकिशोर जी सरसाधा निधासी ने उस के श्लोकों की रचना आदिक से ही यह बात साबित की थी कि यह प्रथ मन्त्रकाह न्यामी का रखा हुआ नहीं होसका, बब्कि किसी और व्यक्ति ने अन के नाम से यह प्रथ रच विया है। और आज तक किसी ने प॰ युगस्तिशोर की उन दस्नीली का निराक्तरण नहीं किया है। अत्यव 'अद्रवाहसंहिता भी संभवतः मुसलमानी के उस ही जमाने का जब कि वे हिन्दू लड़कियों को ज्वरदस्ती छीनकर शादी कर लेते थे बना हुआ है। और एंट जी जो विश्व-र्णाचार' का प्रमाण देते हैं अञ्चल को यह भी प्रमाण कप में तीन सी साल का बना हुआ है। दूसरे खुना जाता है कि उस में बहुत सी मिश्यास्य प्रोक्स व गरदी व अस्त्रील बार्ते लिखी दर्द हैं। क्या पं० जी येसे प्रथा को प्रमाणीक मानते हैं ? अगर कथा आखे कि उसमें बहुत सी अञ्छी बालें भी तो लिखीं हुई हैं सो अगर ऐसा है तो पंडित महोवयों का कर्तध्य है कि वे मिथ्यान्य कोक्क-गन्दी व अव्लीस बातें इस प्रंध में से निकाल कर उसको शुद्ध करें ताकि यह जैन धर्म की हंसी व अप्रसावना का कारण न रहे।

कतिपय महाशय कह देते हैं कि धर्म, अर्थ, काम, मोल-खार पुरुवार्थ हैं सो इस प्रंथ में काम पुरुवार्थ की विधि भी बनलादी गई है, इस में हुई ही क्या है। सो मेरी राष्ट्र,में यह दलील ठीक नहीं मन्मक तो यह संसारी जीव विषय बालनाओं में पेसा सकत फैसा हुआ है कि उसको काम पुरुषार्थ की विधि का उपदेश देने की जकरत ही नहीं है। काम पुरुषार्थ के खिर तो यह खुद भी खूब होशि-वार और उत्साही पाबा जाता है। दूसरे अगर काम पुरुषार्थ को विधि वतलाने की ज़कास भी थी तो उसको धर्म शास्त्र में नहीं लिखना चाहिए था। इसके लिए एक अलग प्रन्थ कि जिसका धर्म से कुछ सम्बन्ध म पाया जाता बना देते।

कौर यह तो एक दरमियानी पात थी। अब इन विवाह पद्धति आदिक पुस्तकोंमें जो यह छिवा है कि रकस्वला कन्या को घर में रखना पाप है: सो विलाशक जिस जमाने में यह पुस्तकों किली गई थीं उस जमानेमें ऐसा छिखना गल्त नहीं था, बिल्कुल ठीक था। वस्तुतः उस ज्मानेमें रजस्यका कम्या को घर में रखना पाप ही था, क्यों कि ऐसा करने से उस बक के मुसलमानों को अत्याबार ब बाप करने का मौका मिलता था। बास्तव में इन पुस्तकों के रखने वाले बड़े विद्वान व दुश्दर्शी थे उस वक का जुरुरत को देख कर उन्होंने ऐसा नियम कायम किया यह उनकी धर्मन्ता च बुद्धि मानी जाहिर करता है। लेकिन इस के यह मानी नहीं हैं कि हम को लकीर का फकीर बना रहना चाहिए। हम को अब इक जमानेकी जुरूरत देखनी बाहिए। इस को यह देखना चाहिए कि आया अब इस नियम की पायन्दी करने से पाप की बढ़वारी होती है यो कमी-आया अब इस नियम पर अमल करने से हमारी सन्तान की शारीरिक व मानसिक बस्ति को नुकसान पहुंचता है या फायदा ।

यक और बात है कि जिस जमाने में पह

विवाह पद्धति आदिक पुस्तकें किसी गई है संअव है उस जमाने में कम्यायें १३ साल की उस में रज-स्वला होती हो क्योंकि इन पुस्तकों में जैसा कि प॰जी लिखते हैं वह लिखा है कि कम्या का विवाह रजस्वला होने से बहुले १२ साल की उमु में कर देना चाहिए। हेकिन आप जानते हैं कि आजकरू ज्यादातर कल्यायें शसास या उससे पहले रजस्वला हो जाती है जिसके यह मानी होते हैं कि अब कम्बा का विवाह १०साल से कम उम् में होना खाहिए। फिर बतलाइप यह बाल विवाह नहीं हुआ हो क्या हुआ ? बाख विवाह की जहरत जाती रहते के बाद में भी इस भारतवर्ष में बाल विवाह होता रहा उसका हो यह फल है कि रजस्वला का काल १३साल की उम् से ११व१०सास की उम् आ गया भौर अगर अब भी यह रखम जारी रही तो रज-स्थला काल और नीचे को उत्तर आधेगा । रजस्य-हो कन्या को घर में रखना पाप है, इस नियम की जकरत रका हो जाने के बाद भी पा बन्दी करने का ही यह नतीजा है कि आज इस भारतवर्ष में दोदो-चार चार-पांच पांच साल की विधवाये मौजद हैं। लोग रजस्वला होने से पहले जिस कृद्र जल्दी हो सके कन्या का विवाह कर देने की धर्म समझने लगे इसी लिए भार भार-नी नौ सालकी कन्यायों के विघाह खब हुए और होते हैं। और लड़के भी ज्यादातर कन्यायों की उम के बराबर या छोटे या ज्यादा से ज्यादा वर्ष महिने बडे पसन्द किए जाते हैं। उस का ही यह असर हुआ कि छड़कों में बीर्यकी उत्पत्ति १२ या १३ साल की उस में होने लगी और उनको कामबास-नायें छोटी उसमें ही जागने लगी। क्यों इस जमाने

में भक्सर लडकियें प्रसृति रोगों में जकड़ी पाई जाती हैं? कमज़ोर हो जाती हैं ? कमर भुकाकर खंगडाती चलती हैं! क्यों उनके अक्सर तो संतान पैदा नहीं होती और जो होती है तो अक्सर जिगर यसली व सुखे आदि रोगों के बर्शभूत हो मर जाती हैं ? क्यों लड़कियें इस तरह हो बार बच्चे पैदा होने के बाद खुद मरजाती हैं ? और [मर्दी का इसरे -तीसरे विवाह की जुरूरत पडती है ? या क्यों रुडकों की तन्द्रस्ती खनाब होकर लड़के कमजोर हो जाते हैं? व जल्द मरजाते हैं और अपनी बालविधवायं घर में बिटला जाते हैं! क्यों आज कल जवान मर्न - औरती को दिक का मर्ज ज्यादा होता है? क्यों इस जमाने में शरीर कमजीर नजर आते हैं?ब उमरें कम होती हैं ? अक्सर ४०--४३ साल की उम्में ही मौत आ जाती है। इन सब खराबियों का कारण, रजस्यला को घर में रखना पाप है, यही नियम है। बाज आदमी कह देते है कि आजकरू जीव ही ऐसे पुरुषहीन आकर जन्म होने हैं कि जिन के जिस्स कमजोर और उसरें कम होती हैं। छेकिन मैं तो यह कहंगा कि अगर आप यहां जन्म लेने बाले जीवों के लिये ताक्तवर वीर्य बरज का स्थान तैयार रक्ष्यं तो ताकतवर ब ज्यादह उमर बाले जीव ही यहां धाकर जन्म हाँ। धात यह है कि जब जीच मरते वक्त एक शरीर को छोड़ कर दुसरा शरीर धारण करताहै तो घह ऐसे ही स्थान की आंर जिचता है कि जहां वह अपने बांधे हुए कमी का फल अच्छी तरह भाग सकी। यस अगर हम अपनी सन्तान की शादी ऐसी उम्में कि जब उनके रज च वीर्य पुषता हो जारों करनी शुरू करदें तो (किसी कास हालत को छोड़ कर)

कदरी बात है कि उनके संयोग से सन्तान ताकत बर व अच्छी उम्बालो पैदा हो अर्थात् उनके संयोग करने पर उनके यहाँ ऐसे ही जीव विचकर आयेंगे जिन्होंने ताकतवर व अच्छी उम्वाले होने के कर्म बांधे हैं। अब जो बारसी पांचसी साल से बाळ-विवाह होता चला आरहा है-इससे नसर बहुत कमजोर हो गई है और वीर्य व रज नाकिस होकर पेसी कमजोर होगई है कि म लड़के अपनी काम-वासनाओं को कावू में रण सक्ते हैं जिसकी वजह से ये अक्सर बहुत जल्द बुरी मोहबत में पडकर बुरी भादात के शिकार हो जाते हैं। और न बृढ़े भादमी ही अपनी इन्टियजनित विषयवासना को दबा सक्ते हैं कि जिससे बालविधवाभी की संख्या दिन व दिन बढ़नी जाती है। जिनकी सराय दुईशा देखकर याज सरजन विधवाधियाह जैसी न करने काविल रस्म को भी जबान पर सानेकी हिम्मत करने लगते हैं। मैं विश्वयाविदा। के सब्त विलाफ हं । एक चार मैने उसके खडनमें एक छोटा सा उर्दू में ट्रेंकू भी लिखा था। विश्वा विवाह से जो शील का उच्च आदर्श है यह नीचे गिर जायगा । औरतों के दिल्से शील और सम्बरित्रता के खयालात जाते रहेंगे, पति श्रेम थ पतिसेवा की गंध उनके हृदयमें नहीं रहेगी। जहाँ किसी शीरत को अपने पतिसे कुछ नाराजगी हुई वह उस के मारने की फिकर किया करेगी। सारांश कि विधवा विवाहसे बहुत वडी खरावियां पैदा हो जायँगी। मैं जानता हूं विभवाओं की रक्षा बड़ी खराब है। कतिएय बदचलन भी होजाती हैं। गभे गिराती हैं। और इनकी संख्या दिन व दिन बहती जाती है। परन्तु इसका इलाज विधवाओं की वख्बी हिफाजत व तिगरानी करना-उन के

लिय साने पीने के सूर्च की काफी सहस्रियत रखना उनको धर्म में लगाना, उनको आविका-अमी में रखना और बाल विवाह. बृद्धविवाह कानमेल बिवाह व कन्या विकी की बन्द करना है, न कि विधवा विधाह जारी करना। मगर अफसोस के साथ देखा जाता है कि हम लोग बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विकी की चश्मणोसी करते हैं। उनकी ओर मुलाय-मियत की दृष्टि रखते हैं, बल्कि बाज् ओक्त त उन की पृष्टि करने लगते हैं। और जो लोग इन बद रसुमात के बुकसानात बयान करते हुए विधसाओं की क्यादती व उनकी खराव हालत का जिकर करते हैं उनपर फौरन विधवा विवाह खाहने का इस्ताम लगा देते हैं। मेरे ख्याल में दूसरी पर विधवा विवाह का इल्जाम लगाने, दूसरों की मिन्दा करने, दूसरों पर बाझेप करने और उनको गालीगलोज से थाद करने से कुछ फायदा नहीं है बह तरीका विधवा विवाह रोकने में कुछ कारगर अहीं होता। बलिक जिन कारणीं से विश्ववा विवाह आरी होने की संभावना है उन कारणों को दूर करना चाहिए अगर हमको यह मन्जूर है कि हमारे दिगम्बर जैन समाज में विधवा विवाह जैसी थापमयी व धर्मविरुद्ध रहम जारी न हो तो हमको चाहिये कि बाल विचाह-वृद्धविवाह-अनमेल विवाह-कन्यायिकी को भी विश्ववा विवाह की तरह पापमयी य धर्म विरुद्ध समझें। क्योंकि यह बद् रसमात विधवाओं की उत्पत्ति के कारण हैं

इन कारणों के दूर होने से न विभवाओं की अधिक उत्पक्ति होगी—न कोई विभवविष्याह का जिक करेगा। और अगर हमारे पंडित माहानाय इस बात का ऐलान करहें कि बालविवाह, कृद्धिवाह अनमेल विधाह विभुर विवाह, कन्या विक्री भी विधवा विधाह की तरह ही पाप के काम धर्म विकद्ध हैं तो ना मुमक्तिय है कि यह बद रसुमान समाज दूर न हो आयें।

पं श्रीलान जो ने अपने लेखमें वेसा भी लिखा है कि कुछ कन्या चर का संयोग विवाह के बादही तो हो नहीं जाता। हिरागेमन की रस्म भी तो पहले से जारी है। लेकिन क्या आपको मालूम नहीं कि विवाह होने पर वर कन्याके ख्यालात ही कुछ प्से बदल जाते हैं कि जिससे वे शिक्षा ही अच्छी तरह प्राप्त कर सक्ते हैं और न विषयवासनाभोंको ही दवा सके हैं। बल्कि अफसर विवाह का तज-करा सुनकर विवाह कराने का शीक ही उनके क्या-लात को विगाड देता है और जमाने की हालद के लिहाज से दिरागमन की रक्त को तो अब सब बुद्धिमान आरमी नापसन्द करते हैं। फिर फिज्रुल मर्जी दूर करने के लिहाज से भी इस का यन्द करना जरूरी मालूम होता है। पंडित जी को ऐसी पांच और लचर दलील देकर बालविवाह की पुषि नहीं करनी चाहिए थी।

> बिनीत — ऋपभदास जैम॰ बी० ए० बब्धीळ, मेरठ



श्रनोखे-ज्ञानी।

पर गांठ काठिवे को पैने छुरी समान, पर द्रव्य हरिवे को बढ़वा बनाए हैं।
करें मायाणारी, दगाबाज़ी हू में मन राखें, मीठी २ बातें कर जग को ठगाए हैं।।
पर की घरोहर हरें, विश्वासघात करें, सांची लें क्रूंठी दें बहुत हर्णाए हैं।।
कहें घन्नालाल धिककार ऐसे नरन को, निर्विवेकी विधाता ने नाहक उपजाए हैं।।
लोक के रिकायवे का बजार की मिठाई तर्जें, द्य दही कहैं हम सब ही छुटाए हैं।
पर घर जाय तहां हँस २ खायं कहें, तेलके बरूला पूरन कैसे नहीं खाये हैं।।
तेलतो अभच्य कही ग्रंथन में लेख ऐसी, तुम पंडित झानी कही कैसे यह खाक्रो है।।
कहें घन्नालाल नर धर्म माहि उगई करें, तीनों पन माहि उन खाक को क्रुकार्यो है।।
——धन्नालला जैन, अलीगंन

एक महाभ्रष्ट ।

(गल्प)

रितंक का महीना था, दीवाली की अंधेरी रात थी, आधीरात का बक था, जबकि इक्लन को जाने वाली मुसाफर गाड़ी अपने मुसाफिरों को लिये हुए बंधड़क फक फक करती जा रही थी, बलते २ रेल एक स्टेशन पर उहरी. एक ग्रीव मुसाफिर, अपनी क्षी को साथ लिये रेल में सवार होने के लिये बड़ी घवराहट के साथ सबही उन्नों को भांकता फिर रहा था. और बढ़ने की कोशिश करता था लेकिन मुसाफिर दर्वाजा नहीं कोलने देते थे और धमकाकर आगे ही हुँका देते थे। यह बहुत ही ज्यादा गिड़गिड़ाता था और हाथ कोड़ २ कर कहता कि महाराज हमारा बेटा बहुत ही सारा से स्वयर आई है. नहीं मालम अभ

तक जीता भी है या मर गया, हमको खढ़जाने दी जिससे हम जाकर अन्तिम बार उसका मुंह तो देखलें, आपका भला होगा, बड़ा भारी पुन्य होगा, हम खड़े २ ही खलें जावेंगे और किसी को भी कुछ दुःख न पहुंचावेंग। इस तरह की बहुत ही कुछ चातें बनाते थे लेकिन किसी का भी मन नहीं प्सीजता था, आगे जाओ, यहाँ जगह नहीं है, यह ही जवाव मिलता था। आखिर जब गाड़ी खलने को हो गई और कहीं भो जगह न मिली सो एक मुसाफिर ने उनको आवाज देकर कहा कि जल्दीसे यहां हमारे डिक्बे में बढ़ जाओ।

दूसरा मुसाफिर-(कर्कश शब्दों में) यहां कहाँ जगह है जो तुम ने मतलप ही दो भादमियों की धुसाकर और ज्यादा भीड़ करना अवते हो।

पहला मुसाफिर-अजी रामनाथ जी आप क्यी ध्रवराते हैं, में खड़ा होजाऊँगा और अपनी जगह उन को बिढादूँगा, आप मजे से लेटे रहें, आपको कोई नहीं उठानेगा घढ़ कहकर उसने उन दोनों नये सुसाफिरों का हाथ पढ़ कर जल्दी से अपनी जगह बिठा दिया और आप खड़ा होगया।

मये मुसाफिर-अजी महाराज राम तुम्हारा.
मेला करें, इस तो ग्रीब चमार हैं, अलग खड़े हो
जावेंगे, इतनी सुनते ही रामनाथ भड़भड़ा कर उठ
बैठा और गुस्से में भरकर कहने लगा कि ख्रर-हार जो हमारे तहते की तरफ आये, हट जाओ
इधर से, जमनादास जी मना करते २ तुमने इन नीचों को गाड़ी में घुसाया और खुद हाथ पकड़ कर बिठाया, अब बोलो तुम से ही कीन छूपंगा, गया तुम्हारा भी धर्म कि नहीं, अब कल को जब तक रहा बो म लो और सारे कपड़े न घोलो तब सक भ्रष्ट हुवे अलग बैठे रहो।

कमनादास यह तो मैं सब सहस्र्या पर जो यह गाड़ी में न चहते तो सुभे यड़ा कर्य होता।

रामनाथ-जमनादासजी तुम बुरा मानोंगे, पर आजकल नो धर्म कर्म सब उठना ही जाता है नव ही तो चमार के छूकंने से तुम को कुछ कष्ट नहीं हो रहा है।

जमनादास-और जो यह लोग खड़ने से रह बाते तो इनको कितना कष्ट होता, वेखारे अपने बेटे का आख़री मुख देखने जारहे हैं, इनकी सहा-यता करना क्या धर्म नहीं है?

रामनाथ-मधी सहायता, बाबू जी यह धर्म बार बार नहीं मिलता है, नहीं मालूम पिछके जन्म में क्या क्या पुष्य किये थे जो यह उत्तम कुल मिल गया है, जिसको आजकल आप लोगोंने इस तरह भष्ट करना शुक्ष कर दिया है।

जमनादास-तो जब पुन्य करने से ही उसम कुल मिलता है, अब भी पुन्य करना चाहिषे जिस से आगे को भी इस ही तरह उत्तम कुल मिले. यह ही सोच कर तो मैंने इन दुखियाओं को गाड़ी मैं बिटा लिया है।

रामनाथ-वाह! तुम भो फैसी उलटी बातें फरते हो; दान करो मंदिर बनवाओं, तीर्थ यात्रा कर आओ, और भी जो धर्म के काम हैं सो करो तब पुन्य होगा कि इन नीचों को पास बिठाने से पुन्थ होगा, इस से तो जन्म जन्म का संखय किया हुवा पुन्थ भी नष्ट होजायगा, इतने में दूसरा स्टेशन आगया और रामनाथ ने रेल के एक सिपाही को बुनाकर और उसके हाथपर दो रुपये रखकर कहा कि जमादार साहब इस गाड़ी में यह दो नीचाआ घुसे हैं इनको निकाल कर हमारा धर्म बचाओं।

जमनादास-जमादार देखो अगर तुमने कियो के कहने से इन ग्रीबॉ पर कोई जबरदस्ती की ता अच्छा नहीं होगा।

राममाथ-यह लोग तुम्हारे क्या लगते हैं जो तुम इतनी तरफदारी कर रहे हो।

जमना-यह मेरे भाई हैं।

रामनाथ-तो क्या तुम भी खमार हो ।

जमनादास-समार तो नहीं हूं हाँ समारों का भारे जकरहं।

रामनाथ-देखो जमादार यह भी इन समारी से मिद्र गये हैं और दूसरों का भी धर्म भूष्ट करना साहते हैं, इसका बन्दोबस्त जुरूर होना साहिये। खनार-(जनादारसे हाथ जंड़कर) मेरे राजा हमारा घेटा मरते हाल होरहा है, उस ही का मुँह हैखते जा रहे हैं, हमको मत उतारो नहीं तो हम मर जावेंगे।

रापनाथ-मरो सालो, मरते ही तो नहीं हो तय ही तो दूसरों का जन्म भृष्ट करते फिर रहे हो, इनते में जमनादास ने स्टेशन मास्टर को बुला कर कुल माजरा सुना दिया, जमादार तो टलकर चला गया और साहब ने रामनाथ के असवाव की तरफ देख कर बुड़ा कि यह सब असवाब किसका है।

रामनाथ-हजूर मेरा ही है।

साहब-तुममे इस का महसूछ दिया।

रामनाथ-हजूर यह तो ज्यादा नहीं है, वैसे ही फुला हुवा मानुम होता है।

साहय-अञ्छा तो यह तुलैगा इस को नीसं उतारो।

रामनाथ-साहत्र के हाथपर पांच रुपये रख कर हजूर नीचे उतारने में तो मेरा सब अस्वाय इन चमारों से भिड़ जायगा।

सादव-काया न लेकर,नहीं पंसा नहीं हो सक्ता, अस्वाय अकर नुलेगा।

स्राचार अस्ताय उतारा गया और तोलने पर हाई मन हुना, रामनाथ अनतक कुलियों को दो दो बार चार आने ज्यादा है दे कर असवाय रेल में रखवाता हुआ, रेल की बोरी करता हुआ चला आ रहा था, पर यहाँ उसको २५ महसूल का देना पड़ा। इतने में किसी बादमी ने रामनाथ के ,पास आकर कान में कहा कि तुम्हारे असवाय में अफ् यून भरी हुई है इस चास्ते सुक्षे माकूल रक्षम दिलर बाओ नहीं तो पुलिस को कहकर अभी तुम्हारे असवाव की तलाशी कराता है। रामनाथ ने इस को भी पांच कपये देने खाहे पर वह नहीं माना अस्तिर बढ़ते २ दो सौ उपये देकर उससे हिंदा खुड़ाया। फिर आप भी उसी गाड़ी में आकर पेक्ष जहाँ यह नीच नैडे थे। आते ही उसने उन चमारा की नग्फ पृणा की द्वन्दि से देखकर नाड़ी के अन्य मुमाफिरो से कहा कि गाड़ी में इन नीचों के दुस आने से ही यह आफ्त आई, नहीं तो इसको से रोज़ ही सफर रहता है और इससे भी तुगना कि गुना असवाव हुआ है पर कभी भी महसूल नहीं दिया है, रुपया घेली खूर्च करके ही काम निकलका रहा है आज धर्मभूष्ट होने से ही यह पांच उदय हुआ है।

जमनादास-सरकारी महसूल की खोरी करना क्या पाप नहीं है, यों क्यों नहीं कहते हो कि यह ही सब पाप इकट्ठा होते २ आज उदब होगया है।

रामनाथ-तुम पाप पुन्य को क्या जानो, जा नते तो इन समारों से हो क्यों भिड़ते, सज करा है 'एक पापी नाव में बैठ जाय तो सब हो का हूबना पड़ता है' भाई साहब तुमने ही इन जमा है से भिड़कर भाज पाप का बीज सोबा है।

जमनादास—हमने पाप किया होता तो हर पर आफ़त आती, पर हमको तो जुरा भी आंच नहीं आई है।

रामनाथ-आज के पाथे आज ही नहीं जबते हैं. कुछ दिनों में देखना इस पाप का क्या प्रत्न भोगना पड़ेगा।

जमनादास—पर हमारे आज के पापों ने तुस को किस तरह भूलस दिया, यह तो बताओं !

रामनाथ—कलिकाल है भाई साहब, नुम्हें 🐑

समभावे तुम तो सिवाय हकत करने क और कुछ कानते ही नहीं, इम पर पेसी २ अग्रन्तें आई हैं कि खड़ फंसे, बद फंसे। हुम जानो चारं पैसे कमाने के सास्ते सब तरह के भूठ करंब घोरी और दशा. बाजी करनी बढ़ती है, तब कहीं इस बुरे जमाने में अनवर के साथ गुज़ारा होता है, पर हमका तो सदा इसरो प्रश्नं कर्स ने ही बचा लिया है, जरा भी श्रांच नहीं जाने दी है, पर आज इन नीचों के संसर्ग के कारण ही कीचा देखना प्रदा है, अब तुम देखा कि तीन दिन से सफर करता भारता है, पर रेख में कैसे बार सकता हूं, इस कारण तीन दिन से अन का दाता तक मूँ हु में नहीं गया है, दो दिन का और सफर है, पर दो नहीं चाहे दस दिन का सफर हो बिना खाये ही रहना परंगा, पल फूल जो मिलता है उस ही पर गुजर होती रहेगी सो माई साहब धर्म ही कोई बीज है, जिसने अपना धर्म मृष्ट किया उसने तो अवता जन्म ही अकार्थ खाया ।

जमनादास—सफर ते हम भी करते हैं, पर तुम्हारी तरह भूखों नहीं भरते हैं, कचौरी, पूरी, दृध मिठाई जो अपने खाने योग्य वस्तु हैं यह ले लेकर साते चले जाते हैं, जो खाने योग्य नहीं हैं वह नहीं साते हैं।

रामनाथ—अजी तुम तो महाभूष्ट हो तुम्हारा क्या जिकु।

इतने में एक और स्टेशन आया, उस डिन्दे के सब बाहर फॅक दो अ और सब ही मुसाफिर उतर गये, वह दोनों चमार बांट खाओ। यह का खमारी खट उनकी जगह जा बैठे और ऊपर के निकाल कर बाक़ी स् तक्ते पर एक गठरी सी पड़ी देखकर कहने लगे दी और धैली में से स् कि देखो जी वह लोग अपनी एक गठरी छोड़ गये से कहा कि आज तुर इतने में रेल बल पड़ी थी, रामनाथ भपट करचगाने लो यह तुन भी लो।

की तरफ यथा और गठनी उनके हाथ से छीन कर करने समा कि देखूं मेरी तो नहीं हैं, यह कह कर उसने गठरी को खोला, देखा को उसमें कपड़ों के बीचमें रुपयों की एक थैली भी चंधी हैं, नुरन्त बोस पड़ा कि हरं यह मेरी तो है ही, फिर चमारों की तरफ आंख लाल पीली करके बोला कि हरामजादें बोर्डमानों नुमने क्यों इसको हाथ लगाया ।

जमनावास-रामनाथ और पराये माल को अपना मत बनाओं मेरे होते यह हज्म न ही सकेगी, रामनाथ-मेरी नहीं तो क्या त्रहारी है?

जमनाकाल-न मेर्ग न तुम्हारा, यह तो दूसरं ही मुसाफिरों की है।

रामनाथ-सबुत इस बात का।

जमनादास-सब्न देने की नौबत आवेगी हो सब्त भी देदिया अधेगा, पर यह समक्त हो कि तुमको बहुत दुःख उठाना पड़ेगा।

रामनाथ-तुम तो भाई नहीं मालूम कहां से आज जमदृत की नरह आ पिललं हो ली अपना ही कहना रक्षों और जो कुछ इसमें है आधा र बांट ली, और दो चार रुपये इन ग्रीय चमारों को भी देंदी।

जमनादास-इस तरह नियत मत विगाड़ी एकड़े आओंगे।

रामनाथ-पकड़े क्यों जोर्गी, कपड़े छत्ते तो सब बाहर फंक दो और यह जो रुपये हैं इन को बांट खाओ। यह कहते ही उसने रुपयों की थैली निकाल कर बाक़ी सारी गठरी रेल से बाहर फंक दी और थैली में से दस रुपये निकाल कर चमारी से कहा कि आज तुम्हारी भी किस्मत जाग गई, लो यह तुम भी लो। धतार चमारो-महाराज हम तो पराया माल महीं लेते भगवान हवारे गेटे को जीता रक्को बल हमारे धास्ते तो यही सब कुछ है।

रामनाध-अञ्चा तो जमनातास जी तुम तो आओ और बांट खाओ, भगवान ने आप से आप इता काके लक्ष्मी दी है तो इसे क्यों छोडते हो।

जमनाः।स - नहीं भगवान ऐसे नहीं हैं जो अध्याय के द्वारा प्राप्त करावें, यदि शुम उदय है तो न्याय द्वारा ही लक्ष्मी मिलेगी, तुमने बहुत बुरा किया को पराई गडरी घाटर पौक दी और हाँ इस को तो चमार ने साथ लगा दिया था। किर तुमने न्यों हाथ लगा दिया, यह पाप क्या तुप को हुवा-बेगा नहीं?

रामनाथ—अजी मुष्ट तो तथ ही से हो रहे हैं; जबसे रेलमें बैठ हैं एक चढ़ना है और एक उत्तरता है, अप कीन जानता है इसमें कोई चमार है, खूड़ा है या कौन है सब ही से भिड़ना पड़ता है, अब तो घर जाकर ही नहां घोकर शुद्ध होना होगा।

दतने में स्टेशन आया और वह दोनों चमार चमारी उतर गये।

गमनाथ-अब जान में जान आई मेरी तो, जब नक यह समार बैटें रहे मुफे तो बहुत ही घृणा आती रही, माल्हम नहीं तुरहें धर्म भूष्ट होते क्यों थूणा नहीं आती है, में तो अपने धर्म की रहा के सारी जान तक देने को तथार है पर अपना धर्म मुख्य नहीं होने दे सका हूं।

जमनाशस-घडुन अच्छा तुमको तुम्हारा धर्म सुवारिक हो और सुक्रको मेरा।

रामनाथ—अच्छा को धद दोनों दुष्ट तो टल गये अब तो इन बपर्यों को बांट को । जमनाशास-नहीं पराया माल मेरे चर्म के विरुद्ध है, मुक्ते इसमें वड़ी भारी म्लानि आती है, मैं तो जहां तक हो सकेगा इस माल को असिल मालिक तक पहुंच जाने की ही कोशिए करूँगा।

रामनाथ-क्या कोशिश करोंगे ?

जमनादास-किसी बड़े स्टेशन के आने पर यह हाल पुलिमपालों को बनाहुँगा वे कदड़ों की गठरों को भी हुँद निकालेंगे और सब माछ को उसके मालिकों तक भी पहुंचा देंगे।

राप्तनाथ – तुम तो बड़े ही जबरदस्त धादमी मालून दोते हो, अच्छा भाई हो यह सब मार तुम ही होते। हम ही सब करके बैठ आर्थों।

जमनादास-नहीं में इसमें से एक कौड़ी भी नहीं छे सकता हुं और न किसीकों सेने दे सकता हूं।

रामनाथ-तुम तो भाई बाहर से ही स्रष्ट नहीं हो किन्तु तुम्हारा तो हृदय भी स्रष्ट होगया मासूम होता है, तब दी तो ये मतलब दूसरों को फँसाने की कोशिश करते हो पर सुक्षे नहीं जासहे हो मैंने तुम्हारे जैसे सैकटों को जहरनुम पहुंचा दिया है. भगड़ा उठा कर देखा जो उस्टे तुम ही न कंकेंंं तो मेरा नाम बदल देना।

इतने में वारिश मुसलाधार बरसने साती. कई स्टेशन आये और गये लेकिन वर्ण न धमी धट्टिक ज्यादा बहनी गई. माना तुकान ही अपने बाला है. इतने में रेल एक बगद जब से भी के बैठगई। ज्योदा बर्ण होने की बचद से रेल की पटरी के शिक्षे से मिन्दी निकल गई थी और शत अध्येगी होने की बचह से कुछ भी मासूम नहीं सका था बारों तक्क पानी भरा हुआ था जो रेल के अध्यर भी भर एवा और सारी रेल में हाइएकार मच गया, सब ही

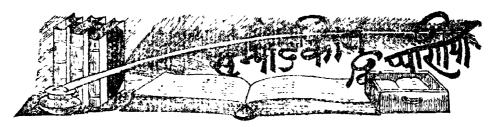
काम के साले पड़ गये और अपने २ इच्टदेव की बाद करने सग गये, पानी पल २ में बहुता आता था और अब इबे अब इबे यही होल है। रहा था। पेसे समय में रामनाथ भी बड़े जीर से अपने भग-वान की सहायता के लिये पुकार रहा था और खीता बच गचा ते। तुम्हारा मन्दिर बनवाऊँगा, इत्सव कराऊँगा, ऐसे लालच दिखा रहा था और मन ही मन यह भी विचार रहा था कि पास के डिब्बे में सब खियां हीं खियां भर रही हैं और काई कोई तो उनमें बहुत ही बढ़िया २ जेवरों सं लद रहीं हैं, चलें उनका जैबर ही भटक लावें, मरने को कैंडे ही हैं राम ने बचा दिया ते। खूब माल घर सेजावेंगे और बास बच्चोंका बिलावेंगे। लड़कीका ध्याह करना है। भगवान ने इस बाफत से बचादिये हो। खुब ठरसेसे विवाह करेंगे और नेकनामी लेंगे यह सायकर यह उठा और जमनादास से बहाना बना कर कहने खगा कि पास के खब्बे में हमारी जनानी सवारी बैठी हैं उनकी तो खबर हे आवें मरती हैं या जीती हैं। यह कह कर वह किया है खेलि कर बाहर निकला ही था कि घप से पानी में डूबगया, यह देख जमनादास जी उसको बचाने के लिये कृद पड़ा, पानी बरफ़के मानिन्द ठंडा था, अधेरा घुप होरहा था, बारिश मुसलाधार बरस रही थी, तो भी जमनादास में मर भरकर उस को टरोल कर पानी भें पकड़ ही लिया और ऊपर को उठा!कर तैरता हुं या रेलकी तरफ आते लगा, लेकिन उल्टी तरफ ही लिया, इस बास्ते मील भर तैर कर जाने परभी रेल की सड़क न आई बहिक ऊंची जमीन आगई

वहाँ सर्दी और थकानके सबय दोनी व होश बोकर गिर पड़ और दो घंटे तक पड़े रहें, इतने में सुबह होने वाली थी, सरा होश आने पर गमनाथके मुंह से निकता कि भगवान तुम्हारा गुण किस मुंहसे गाऊँ, तुमने मनुष्यका अवतार धारण करके भाज मेरी जान बचाई, नहीं तो भिरे मरने में तो काई भी कसर नहीं,रही थीं, यह कहकर वह जमनादास के पैरों में सिर रखकर और गिड़गिड़ा कहने!लगा कि भगवान तुम सचमुच ही अपने मक्ती के रक्षक हो, रात एक महाभ्रष्ट की संगति होगई थी, इसही पाप के परिणामस्वरूप मुक्क पर यह मुसीबत आई कि मौत ही आने दो आगई परन्तु हे दयावत्सल ! दीनदयाल ! तुमने ही अपने भक्त की उस मौत से बबाया अब में कभी आप के। न भृद्धांगा, इस पर जमना-वास ने उसका सिर अपने पैरी परसे उठाकर कहा कि भाई ग्रेंने तो वही महाभ्रष्ट जमनादास हं भीर क्षमा मांगता है कि मैने इस पानी में तुम्हारा शरीर हुकर तुम की भी भुष्ट किया।

रामनाथ — हैं!क्या तुम ही मेरे स्थाने के खास्ते जान जोखम में पड़े हो, धन्य हो भाई तुम की धन्य हो. तुमने तो भाई मुक्ते जीवनदान देकर अपना गुलाम बना लिया।

जमनादास—मेने तुम पर कुछ अहसान नहीं किया किन्तु अपना धर्म पालन किया है।

यह कह कर जमनादास उसके पास से चला गया और रेल के मुसाफिरी की जान बचाने के फिकर में लग गया।



जैन धर्म के प्रचौर का स्वर्णावसर

वर्तमान में पचित्रंत अपना सामा रंग दिखला रहा है। संसार भवतक की सभ्यता-अवतक की शिक्षा से मुंह मोड़ रहा है। वह आत्माबाद की ओर धाकपित होरहा है। वह जान रहा है कि भीया-तमा स्वाधीन है। स्वतंत्र है पराश्चित नहीं हैं। वध अपने परिक्षम द्वारा परमान्कृष्ट उन्नतावस्था की प्राप्त होसका है। प्रमुखापेक्षी होना पाप है। किसी एक महान आत्मा का अपने कर्मी पर आधिपत्य ख्याल करना भूल भरा है। यह सच्ची बात आज जोरों के साथ सर्वत्र सुनार दे रही है। अमेरिका में इस सिद्धान्त पर जोगें का मार्मिक विचार हो रहा है। एक शिक्षक महाशय ने निर्भीकता पूर्वक इस सत्य सिद्धान्त के सदृश ही एक पाठ अपने शिष्टीं को पढाया! 'याबावाक्यम् प्रमाणम्'के मता-न्यायी जज महोदयोंको इसमें अमी छिकता दिखाई दी। बाइबिछ विरोध की गंध खंघ पडी। भट। उस शिश्रक महाशय पर मामला चला दिया! मामला चल गया। अच्छा हुआ। सत्यासत्यका निर्णेष होनाही चाहिये ।यही हालत यूरोप, आपान आदि देशों में है। सब भोर वर्तमान को सुस्रमय बनाने के प्रयस्त हो रहे हैं। विद्वान् और धीमान् पूर्वी विद्याओं और भर्मी का अध्यवसी शीक से कर रहे हैं। जर- मनी और जापान में विशेष रीति से संस्कृत विधा का प्रचार होरहा है! स्वयं भारतवर्ष में भी रख बात के जिन्द दिलाई एड़ रहे हैं। अजैन भारतीय विद्वान जैसे महामदीवाध्याय डो० गंगांनाथ का, साहित्याचार्य भी कन्नोमल जज प्रधृति बड़ी दिक्क चरपी से जैन दर्शन का पाठ कर रहे हैं। डा० रही-न्द्रमाथ टागोरने भपने विश्वभारती विद्यास्य द्वारा पूर्वीय मर्म के प्रचार का मार्ग सिरज दिवा है। पेसी अनुकूल हवा में भी दुःल है कि जीन धर्म की एक सीमा के अंदर, एक कोठरी के भीतर ताले में बन्द रक्ता जारहा है ! आचार्योंके बचनेंकी उपेक्षा की जारही है। आज जैन समाज में अनेकी ऐसे भाई मौजद हैं जिन को आचार्य और लोहाचार्य सदूश आचार्यों ने मिध्यात्व के गहरे गढ़ेमें से उद्यार कर सच्चे मार्ग पर लगाया था। भगवान महसीर के शासन में उनकी दीक्षित किया था। उनके जान नेत्रों को वास्तविक तत्वों के प्रकाश से खोळ दिया था ! पुरातन जैनियों ने उन्हें गक्के स्नुगाया था । गऊ बन्सवत् प्रोम दर्शाया था । परन्तु हतुमान्यवश आज उल्टी गंगा यह रही है। अध्यायों नहीं खर्चन काक्यों की अबहेलना और उपेक्षा करने में ही कर्म समका जा गहा है। सब्बे वीर मर्फो ! यह मृहता है। यह पूरा मिध्यास्य है। भाष मीचकर सकता

गहरे गढ़े में गिरना है। इस लिय विवेक बुद्धि से काम लीजिए। जैन धर्मकी अनेकान्त प्रसुता प्रकट होते दीबिए। अजैनों को जनधर्म प्रचारके लिए उन्हें जेंनी धनोने के लिए लाखों का चन्दा एकतित कर क्षीजिए। लक्ष्मीधारी बीर पूत्रों, यह स्वर्णावसर च्यक्ते के योग्य नहीं है। भारत में जैन धर्म प्रचार का मार्ग सिरजिए। इस ही पवित्र भूमि से उन का पुनः प्रवार होने दीजिए। बोलपुर 'विश्वभारती' विद्यालय में जैन शिभक की नियुक्ति की जिए जो संसार भरके विद्वानों को जीत धर्म का क्षान करा सके । स्वम्ब विद्वान चातक हैनध्मं रूपी स्थाति युंद के लिए मूख बाए घेठे हैं। परन्तु उन की इस छालसा पति में हम भाज से जैनी ही बाधक धने रहे हैं। यह महापाप है। श्री समन्तमद्र स्वामीक्षान प्रचार से ययार्थ प्रभावनों को होना बतला गए हैं। आज इस प्रभावना धर्म का नारा बुलन्द करने का सब से अच्छा मौका है। जर्मनी के अनेकी विद्यानी से पत्र व्यवहार द्वारा मालूम हुआ है कि वे फिल उत्सुकता से पवित्र कल्याणकारी जैन प्रंथों का अध्ययन करने हे लिए तैयार हैं। यथाशकि उनको श्रंथ मेश्रे भी गए हैं। परन्तु क्या यह कार्य व्यक्तिः गत कप में पूर्ति को प्राप्त हो सका है ? हरिएश नहीं। इसके लिए तो प्रत्येक जैनी को तैयार हो ज्ञाना चाहिए और सुरुग्यस्थित दंग से परियद के द्वारा इसका प्रचार होने दोजिए। पश्चित्र जीन धर्म को सीमित करके एक तरह से हम लंगों ने संसार में बापाचार बढ़ा रक्ता है। उस ही के परिणाम स्वक्र इस मिटरहे हैं। तेरा तीन होरहे हैं। जीवन के संकट में पड रहे हैं। यस अब भी खेत जाइए। इतपाय का प्रायश्चित्त कर डालिए। धर्म का

प्रचारसय ओर और सब ठीर की जिए। चिदेशों में क्या दशा है यह निश्न के पत्र से अली भांति प्रकट है। — उ० सं०

विदेशों में जैन धर्मप्रचार की अनुकूतता

हाल ही में जैनसमात से कतिएय धनी धीमान विदेशों को गए हैं। उनमें से प्रोठ बनारसीटास क्रैन एम॰ ए॰ ने जो पत्र "जैन प्रशंप" को लिखा था, उस से भी स्पष्ट है कि वहां परम विवित्र आहिसा धर्म की कचि वढ रही है। ऐसी दशा में अरिसा प्रधान जैन धर्म का बहां खासा स्वागत हो। सका है। मात्र आवश्यका कार्य की है-स्रिवेशी आधाओं में जैन प्रधों को प्रकट करने की है। विदेशों में यह कमी जैन धर्म की अप्रशासना की कारण यह रही है। यही बात हमारे मान्य भूतपूर्व संभापति श्रीमान् तन्जारुलम्लक रायबाहादर सेठ माणि-क्यच्यद्र जी सेठी के निम्न प्रशांश से प्रमाणित है। आप अपने युोप के यात्रा अनुभव का उल्लेख करने हुए सन्दन से सिलते हैं कि "मैंने यह बात यहाँ पर अच्छी तरह देख र्लः है कि उसाही जैन बबु इन देशोंके व्यापारमें भाग लंने,से किस प्रकार लाभ उठा सक्ते हैं। यह भी देखने में आया है कि जिस प्रकार पूर्व की अन्य मुख्य धर्मों में छोग दिलचरपी लेते हैं उसी प्रकार किसी हद तक जैन धर्म में भी ये दिल चर्ला रख रहे हैं। परन्तु यूरीप में लोग अपनी इस दिलचरवी में इस कारण से हताश से हो ाने हैं कि किसी भी पाक्षिमीय भाषा में जैन प्रनथ करीबर नहीं के बराबर ही मिलते हैं। जैनत्व को एश्य कर मुक्तको यह जानकर खेद है यहां बिशनों के निकट हिन्दू और बीद धर्म की

विशेष मान्यता है। बेशक एक सब्बं जंनी के लिए यह स्थित असहा होना ही चाहिए। परन्तु इस में दोष हमारा ही है। यदि हम जंनियों को अपने धर्म में अभिमान है-जेन धर्म की सत्यता मे-प्राणि योपका रित में विश्वास है तो सब से पहला फर्ज यह होना चाहिए कि विवशी में जैन धर्म प्रचार के लिए—अंग्रेजी भाषा में जैन प्रन्थों के प्रकाशन के लिए लाखीं रुपए का फण्ड एकिशत का लें। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारे उक्त सेठ साहय होगा ही इस परमावश्यकीय फण्ड का श्री गर्मश हो ! दान-बारे, चंचल लक्ष्मी को सफल बनाए।

हिन्दी साहित्य सम्मेखन का वार्षिकोत्सव !

भारत में आज हिन्दोंं का जो गौरव प्राप्त हैं उसम प्रयंक भारतीय और जैनी को गर्व हाना लाजा है। दिन्दा को इस समुन्तत शिवर पर पहुंचाने व दिन्दी साहित्य सम्मेलन के शुभ-प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। इस हो की निर्यामत परीक्षाओं और प्रचार कार्यों हारा हिन्दी का मान्यता सारे भारत में घर कर गई है। इस हो को बदौलत हिन्दी को आज राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है। इसंका विषय है अब की इसका वाष-

कोत्सव इस ही मास में श्रीवृष्ण के लीलाधाम चृत्यावन में होबंगा। हम चाहते हैं कि इस अवसर पर इस रसमयी लीला स्थली से हिन्दी की बास्त-विक स्मृति का कार्र मधुर-ग् जार सब ऑर फैल जावे! साम्प्रत हिन्दी-प्रगति को देखते हुए कुछ पेना भाम हाता है कि हिन्दी-महारथी मानुसेदा को किञ्चित गौण करके आयसी मनोग्राहिस्य को प्रधानता दे रहे हैं। उत्तन हो कि इस अधानर पर एक सगडित सुःथवस्था हमारे हिन्दी कार्यक्षेत्र की हो जाने। साथ ही हम देवते हैं कि यद्यपि जैतियाँ का दिन्दी निर्माण कार्य प्रारंभ से ही विशेषरूप में रहा है और आज भी जैनो एक अच्छी हद तक हिन्दी सेवा में भाग है रहे हैं परन्त तोभी उन है साहित्यसं और उनके तत्सम्बन्धी कार्यों से उपेक्षा की जारही है। जैन नवयुवकों को शायद ही हिन्दी सेवा में किसी संस्था से उत्साहित किया जाता है। ऐसी दशा में सम्मेलन इस स्थिति की सुधारने को कोई ब्यवस्था कार्यक्रम में छावे. ऐसी योजना होना आवश्यक है। इधर दिदीश्रेमी जैनियाँ को भी सम्मेलन के कार्यों में सहायक हो अपने साहित्य-अनुराग का परिचय देना लाजमी है। --- उ० सं ०

साहित्य-समालोचना ।

भी प्रवचनसार टीका—दूसराखड (क्षेप-तत्व दीपका) खोकाकार जै॰ घ॰ भू० घ॰ दि० ब॰ शीतलप्रसादजी प्रकाशक जैनमित्र कार्यालय, स्रग्त पृष्ठ २८६। भू० १॥।) छपाई-सफ़ाई सुरुर । जैन सिद्धान्त का यह अद्भुतप्रंथ नचीत हिन्दी टीका-सित जैनसित्र' के शावकों को छा० चिरजीछाल जी की ओर से सेंट किया गया है। टीकाके विषय में कुछ कहना ही बृथा है। जिस गनेषणा और विशे षता से ब्रव् की मूल का नाय व्यक्त करते हैं, वह किसीसे छिया नहीं है। प्रयेक अत्मवेमी की इसका स्वाध्याय करके पुरुष-लाम लेना चाहिये।

-A comparative study of the sience shought from the Jaina slond point. (जैन दृष्टि से न्याय का विवेचन) लेखक श्रीमाम्हरिसत्य सङ्खायां एम॰ए०प्रकाशक श्रीयत बिल्लिनाथ जी व्यवस्थापक "भी देवेन्द्र जिल्लिक यम्ब पन्तिशिङ्ग कम्पनी लिमीटेड बार्न टाउन मदास" पुष्ठ = 9 । मृ० १) मोटा चिकना कागज सन्दर अपार्द । धनन्य साहित्यसेत्री धर्मबीर स्थ कुबार देवेंग्द्र प्रसाद जी की पवित्र स्मृति में जो वक कंपनी स्थापित दुई थी उसके द्वारा प्रध मकाशित होते देखकर हमको परम हर्ष है। कुमार देवेन्द्र प्रसाद की अपूर्व सेवाओं से समाज तभी अञ्चल होंगी जब वह इस कम्पनी के सव (शेयर) बिस्से बरीव लेगी और पवित्र जैन सिद्धान्त का उद्धार उसही प्रकार कराने लगेगी जिस प्रकार . क्रमार जी कर रहे थे। प्रत्येक जैनी को यह शेयर सरीदमा चाहिसे । इसही आशाहणली 'देशेन्द्र कंपनीं से यह न्यायकाद की प्रस्तुत पुस्तक बड़ी गवेषणा के साथ प्रकट हुई है। इसमें न्याय के ब्रत्येक अंग का दिग्दर्शन त्लनात्मक रीति से कराया है जो विशेष लामप्रत है। स्याय के विद्यार्थी के लिये यह पुस्तक वड़े महत्व की है। अंग्रेजी पने किसे जैनियों को संगाना चाहिए।

-- Dinvnity in Jainism-लेखक भीर वकासक उक महोदय। पृष्ट ४० छपाई सफाई अति विकाद्यक। प्रस्तुत पुरतक उक्त कंपनी का दूसरा फलहै। और इस,में अंग्रेजी माषा में बड़े मन्छे हंग से जैनधमं में स्थीकृत प्रमात्मयाद की लिख कियो गया है।भोरतीय पर्व पाइचात्य दार्शनिकोंके मतींसे कुलना करते हुए जैनदृष्टि को प्रमाणित किया गया है। गवेषणामय विवेचनके बाद लेखक लिखते हैं:—

of god world show that the Jaina philosophy is one of the ancient systems in India. It is assuredly not post-Buddh is tie in origin, thre is difficulty in considering it as contemporoneans with Baddha. It Seems to us that the Jaina philosophy preached a new doctrine of god in a new way in that misty, forguther age in which various other theories of Dininity wer being porpounded in ancient in ancient India?

भाषयही है कि परमान्मधाइ को जैन मान्यता पर तिनक गहन विचार करने से स्पष्ट खिदित है। आयगा कि जैन सिद्धान्त भारत के प्राचीन दर्शनों में से एक है। वह बौद्धधमं के उपरान्त नहीं जन्मा या और न वह बुद्ध का समकालीन ही है। हमें यह मालूम होता है कि जैनसिद्धान्त ने उस महात और अंधकारमय काल में नए हंग से परमान्मा संबन्धी नया सिद्धान्त प्रचलित किया था जिसमें सुध परमात्मधाइ के भन्य सिद्धान्त प्रचार में लार जा रहे थे। पुस्तक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक अंग्रेजी विश्व इसके। पद कर लाम उठा सका है।

—श्री खंड गिरि सद्यगिरि पूमन रख-यिता मुनीम मुनोलाल सुन्दरलाल जैनी। साधारण कविता में खंड गिरि उदयगिरि का विवरण सहिन पूजन है और सी० श्रीमता चतुरवाई जी द्वारा जैन भिन्न के ब्राहकों को उवहार में दीगई है।



स्त्री शिक्षः ऋौर प्रयाग विश्व विद्यालय

प्रयाग विश्व विद्यालय के ऊ चे दर्ग में कई अस्याचे भी शिक्षा पा रही हैं। इन के बैठने के लिये कोई अलग दर्जे न थे। वे पुरुप छात्री के साथ ही बैडकर बिद्या अध्या करती थीं। नहीं जानते, स्वी छात्रियों के इस उकार पुरुष छात्रों के बीच में बैउने पर किस ने आपत्ति की। हाळ ही में उक्त विश्वविद्यालय की कार्यकारणी समिति ने पह नियम कर दिया है कि स्त्री छः त्रियों के बैठने का स्थान अलग रहेगा। और उनके पढ़ाने वालीं का भी विशेष प्रशन्ध होगा। इस नियम के बन जाने से स्त्री समाज में वड़ी हलचल उपस्थित हुई है। हाल में इसी विषय को लेकर प्रयाग में शिक्षित गहि-लाओं की दोसमायें हुई थी। एक में तो इस नियम का घोर विरोध किया गया तथा दूसरी में सम्पूर्ण समर्थत । जिस सभा में नियम का चिरोध क्रिया गया, उसकी अध्यक्षा बातू दुर्गाचरण बनजी की भीमती यीं। तथा समर्थन करने वाली समाही

श्रीमती सुरीला देवी। विरोधी पक्ष का कहना है कि पुरुष छात्रों के बीच में स्त्री छात्रियों के पढ़ने को मना कर के विश्वविद्यालय ने एक नवीन और अधनतिशील प्रणाली का अवलम्बन किया है। इससे विश्वविद्यालयको हानि पहुंचेगी । और स्त्री प्रवी में हानिकर संघर्ष उपस्थित होगा। स्त्री छात्रियों को पुरुष छात्रों के बीच न बैठने के लिबे बाध्य करता नितान्त अनुचित । तथा जो स्त्रियां डेंड वर्ष से सम्मिलित दर्जी में शिक्षा पाती रही हैं। उन को अब यकायक निषेधाङ्या के वस पर अध्यन में न भाग लेने देना अन्याय है। उधर नियम का समर्थन करने वाली सभा का कहना है कि छियी की शिक्षा का प्रचन्ध अलग रहना ही ठीक है।इस समय समान की जैसी कुछ अवस्था है इस के देखते यही श्रेयस्करहै किस्त्री और पुरुष छात्र एक साथ बैठकर शिक्षा न पार्चे। समाज की यह आवश्यकता प्री करने के लिये विश्वविद्यालय के अधिका-रियों ने सियों के लिये जो अलग प्रवन्ध कर दिया सो अच्छा ही किया। इसके हिये वे धन्यवाह के पान है। इस मकार प्रवाग की महिलाओं में बोर मतमेद उपस्थित हो गया है। हमें इस बात का हर्ष है कि हमारे समाज शिक्षित महिलामों की ऐसी संस्था मौजूद है, जो इन भश्नों पर स्वतन्त्रता पूर्वक गम्मीरता के स्मथ विचार करती हैं। इस स्वी युक्षों के समान स्थन्तों की बात मी जानते हैं। इस यह भी मानते हैं कि किसी को कोई काम सरवे के लिये बान्य करना उसे बहुत ही बुरा स्नाता है। इस से यह बात भी छिपी नहीं है कि बाष्य कर सकने की सामर्थ्य के बिना नियम का कोई महत्व भी नहीं होता। इन सब बातों पर विचार करने के बाद हमारी राय है कि स्नी छात्रियों की शिक्षा का प्रवन्य अलग रहे तो कोई हर्ज नहीं, पर जो कन्यायें पुरुष छात्रों के बीच बैठ कर पढ़ना चाहें और उनके माता पिता मी कैसी आजा दें तो उन्हें उसी प्रकार पद्ने दिया आप। हां स्त्री छात्रियों के लिये जो प्रवन्थ किया जाय, यह इतना आकर्षक और उत्तम हो कि कन्यायें आप से वहीं पदने को लालायित हों और उन्हें यह कहने का अवसर न मिले कि पुरुष छात्रों चाले दर्जों में पदाई का प्रवन्ध विशेष अच्छा है।

-(माधुरी)

परिषद् समाचार

पूज्य श्री सन्मेर शिखर सम्बन्धो पूनाफेश का अपील पित्रो की निसल (इक्नड) में पेश होने बाला है उसकी पैरवी के लिये परिषद् के सभा-पती श्री सम्पनरायजी इक्नडेंड जाने वाले हैं उन का मोग्राम निस्न लियन होगा।

अपरांता के बाद विलायत में जैन धर्म प्रचार भी करेंगे पचार के नियम अंग्रेजी में अपन वाटेंगे।

पुस्तक वितरण के लिये धन की आवश्यकता होगी।

प्रोग्राम

	• • • • •	
हरवोई से गयन	२१	सितम्बर
वेहली	२२२४	सितम्बर
छ लितपुर	२५	"
बम्बई	₹9₹0	सिनम्यग
इङ्गलैंड रामन	ર	अकृत्वर

रिपोर्ट दौरा पं श्रेमचंद पंचरत १८ जुनाई से ६ अगस्त मध्यमदंश बुन्देलखंड

---बद्रनेरा (अमरावती)-२ जुलाई को गहा यहां केवल तीन घर दि० जैनियों के हैं इस लिये कोई सभा न हो सकी। सिंघर हीरालालको आदि से धर्म सम्बंधी वातें हुई। --- आर्गी (वर्षा) - २२ कुलाई को यहाँ आकर सभा की । यहां के माई पहिले से ही परिषद् के सभासद है।

— फंबलारी(सिवनी)-२४ जुलाई को आया यहां पर सीन मन्दिर व सी घर दि० जैनियों के हैं। यहां के मार्श्यों का उत्साह समाधादि में नहीं हैं इस लिये सभा नहीं छुट सकी । चीघरी मिट्ठनलाठ भी भाषा के कवि हैं आपने पूजन भजन आदि की रचनार्थे की हैं। सिंघां कपूरचन्द जी लहुरी जैन सभा के मंत्रों हैं और उन सभा के कार्य को उत्स-मता के साथ करते हैं थे) उपदेशक फंड को जात हुए।

--- विहर्ष (मण्डला) २६-२६ जुलाई तक रहे-२८ जुलाई को एक यही सभा हुई जिस में जन संख्या १०० सो के लगभग थी। समाज सुधार पर व्याख्यान दिया। जनता पर अच्छा प्रभाच यहा यहां के भाइयों ने वालबृद्ध-विवाह वेश्या नृत्यादि की प्रया वन्द करने का यचन दिया। कितने ही भाई सभासद् परिषद् हुये। यहां पर जैन जन संख्या ४०० है।

-- बंदा पिटर्शसे रीठी ३० जलाई को आया बहां से २ अगस्तको बांदा पहुंचा। यहां के मन्दिर में शास्त्र बांचा सभा की। व्याख्यान समाज सग टन पर हुआ जिसका प्रभाव जैनसमाज पर अस्छ। पहा । कई भाई समासद हुने । और उपदेशक फंड को ने) सहावता प्राप्त हुई ।

-- महावा ५ अगस्त । मार्क चुकीलाल शंकर काल समैधा से मिला, आप बड़े देश भक्त हैं। और असरयोग में जेल में भी हो आवे हैं। आपको जैन सहित्य से बड़ा प्रोम है

— च्रत्रपुर (स्टेट बुन्देलखण्ड) ६—9 क्षा स्त्र यहां पर दो सभायें हुई। व्याख्यात कुरीति नियाण और पिद्या निषय पर दिया यहां के भाइयों ने नेश्या नृथ्य आतिशवाज़ी, कन्या थिकय आदि कुरीति चन्द करने का चथन दिया, सथा स्थात भाइयों ने स्वाव्याय का नियम लिया। कई आई सभासद हुए,और ५) उपदेशक फंड को प्राप्त हुंवे। यहां के महाराजा अहिना धर्म के पालक हैं शिक्षार अदि नहीं करने छानकर पानी पीते हैं और राशि भोजन के त्यागी हैं।

-- नया गांव (छावनी) ६ अगस्त ची० दुलीचंद जमनाधसाद जी से मिळा । तथा अन्य भाउयों से धर्भ पर भाषण हुआ तीन भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया २)उपवेशक पांड को प्राप्त हुवे।

विरले।

मान, यश, वैभव, की जिनको नहीं है चाह करते निःस्थार्थ जो समाज का सुधार हैं। देने आबीयन सहयोय दीन दुलियों को रखते हृदय में जो न किञ्चित विकार हैं॥ ४टते ''बालेन्द्र'' इष्ट पय से कदापि नहीं

करने सर्वस्य सन्य हेतु जो निसार हैं। पेसे नगरन कहीं विरत्ने ही दीख पड़ें वैसे तो रंगे सियार देखिये !इज़ार हैं अध्यक्षित



-श्वेताम्बर भाइयों को श्रपूर्व लाभ भा० दि॰ जैन परिषद में मन्य सभापति विद्यावारिधि श्री मान् बाव् चम्पतराय जी ने अपनी अमृत्य पुस्तक ''श्रसडमा संगम' की ४०० प्रतियां श्वेता-म्बर भाइयों में बिना मूल्य वितरण करने के लिए प्रकट की हैं। श्वेताम्बर भाइयों को ज्ञान लाभ लेना खाहिये। परिषद बाव् जी के इस धार्मिक कार्य के लिए परम आभारी है।

--- बैरिस्टर साहब की हिन्दी पुस्तकों का कापी बाइट। हबं का विषय है कि श्रीमान् चम्पतराय जी ने स्थरचित हिन्दी पुस्तकों को प्रकट करने का (Copy Right) सर्वाधिकार भाव दिव जीन परिषद्ध को दे दिया है। इसके लिए भी परिषद्ध उनका विशेष भामारी है।

—गुहाना (रोडतक) मे झान वनिता जैना-श्रम खोला है। जिसमें विध्या बहुने आश्रम के खर्च से रहकर विद्या अध्ययन कर सकती हैं। यदि कोई साउब आश्रम के खर्च से मेजना मजूर न करें तो उनसे भोजन बचं केंबल ६) ए॰ मासिक लिया जा सकता है। विशेष निषम निषमावली मंगाकर देखें। —महत्रूष सिंह।

🐤 माँकिक फार्न छा॰ हुकु रच र जगावरमञ देहली।

—श्री ऋष्य बह्म चर्याश्रम का पर्युपण पूर्व इन निमित्त दस दिनों के अन्दर आश्रमके अध्यापक महोदयों एवं ब्रह्मचारी महानुभावों ने भवनी २ शक्तियों को पूर्ण रीत्या व्यक्त कर धर्म के उद्देश्यों को पूर्ण पालते हुए आश्रम के नियमों के पालन करने में भी किसी प्रकार की कमी नहीं की है । सभी ब्रह्मचारीगण ब्राह्मसुहर्त में उठ कर ब्रत्युप की कियाओं से निवट कर श्री जिगालय में जाकर श्री देवाविदेव की घड़ी मिक के साथ पूतन करते थे। उस समय की छटा अद्भूत प्रतीत होती थी। नदनंतर आश्रम के धर्माध्यापम श्रीयुक्त पं० शिव-मुखराम जी सरस्वती देवी की पूजन के अनंतर श्री संस्कृत-सर्वार्थ सिद्धि व दशलाक्षणिक धर्मजय माल इन दोंनी शास्त्रों को विराजमान।कर किया-नुसार एक २ अध्याय च एक २ धर्म के ऊपर विवे-चन करते थे। प्रषंरात्रिके समय भी श्री रतन-काण्ड आध्रम चार जी तथा श्री पदापुराण जी इन दानां शाम्बाँ को भलीभांति बांचते थे। जिससे कि दोनों समय अञ्चा भानन्द रहना था। प्रायः सभी छोटे बड़े प्रधानारियों ने अपनी शक्ति के अनुसार वत उपवासादि किये थे।

--- आज वीर सभा की भोर से धीयुत् ला॰

शोमाराम जी के संयापितत्व में सभा हुई। इस में खूल्यवर माना जी खीमती रामदेवी जी संवाितका महिलाक्षम देहली और बाठ जैनेन्द्र कुषार जी ख्यारे थे। माना जी ने अपने मनोह भाषण से जनना को क्तार्थ किया। आपने स्त्री समाज की स्थित बनलाते हुए विध्वा बहिनों की दियति सुधारने का अनुरोध किया। तदुपरान्त मन्त्री जी का व्याच्याम हुआ जिसमें बालविवाह और दृद्ध विध्वा के वुष्परिणाम पर धकाश डाला गया। यहां से ३ विध्वायें आश्रम में पहने के लिए में जी गई है और १४६॥) ६० एटा की जोर से चन्द्रा भी दिया गया है।

-शिवनरायन जैन जातीय मन्त्री।
--श्रावर्यकीय सूचना--जैन संवक
संघ और जैन सगठन सभा मिन्तर हैं तथा , नियम
और कार्यकर्ता भी प्रयक् र हैं कितने ही पत्र जैन
संवक सध सम्बन्धी हमारे पास आ जाते हैं।
कारण नाम मिला हुआ सा है और दोनों का दफ्तर भी घरिज पहाड़ी पर है अतएव घहुत से
सज्जन जो कि सेवक संघ के कार्यों से सन्तुष्ट
नहीं हैं हमको भी उसी चक्कर में समक्ष होते हैं
कहीं विशेष गृलत फहमी न फैल जाय इसीलिय यह
स्चना निकाली है संगठन सभा किसी भी जैन

किएके सं द्वेष नहीं करती है अतएस इस में हर एक जैन सम्मलित हो सकता है और अपने स्वतन्त्र विचार प्रगट कर सकता है तथा सगठन सभा की हर एक बात पूछ सकता है उद्देश्य तथा नियम इस प्रकार हैं-तथा हमारा पता सिर्फ "जैन संग-ठन, सभा देहली" है।

सहायक मनी--अयोध्याप्रसाद गोयलीय।
श्री वहाइ-मध्य प्रांतीय सेतवाल जैन नययुधक मडल का नैभिक्तिक अधिवेशन वर्धा (मध्य
प्रांत) में रथे। स्तव के समय मिती भाइपद ४ व ५
और ६ तद्युसार नारील ६ व ७ और =माह सिनंधर को जैन वोजिङ्ग के हाउस में होगा। सब सैन
बाल नवयुक माई बार्धा में अवश्य प्रधारने की
हुए। करें।

-हीराचन्द्र अयसंद्र श्रावणे संक्रेटरी वर मर प्रांग सेंग कींग नर मंग। भी जैन कुपार सभा श्रागराका वार्षिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय कोंग्लिय केंग्लिय केंग्ल

गोरे स्मीर खूबसुरत होने की दवा।

शहड़ाादा प्रिस-आफ़-चेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैंसर के बास्ते बनाई थो। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाय के फूल की सी रङ्गत भाजाती है मुंह पर न्याह दान, मुँह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, पाँच का फरना, बगल में बदबुदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ़ करके चमड़े को नरम कर देती है। यह फुलों से बनाया है इसकी खुशबू अमें तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) दिपया ३ शीशी के ख़रीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय॥) पता:—मुहस्मद शफ़ीक एएड को० आगरी।

है ?" पर बाद विवाद हुआ।

--कपूरचन्द् जैन, प्रधान मन्त्री ।

-देहराद्न में इस साल दशलाक्षणी पर्व के अवसर पर आगरे की जीव दया प्रचारिणी सभा के मंत्री पं॰ वाब्राम जी तथा काशी के पं॰ पूलचन्द की पथारे थे। जिनके व्याख्यानों से जैन तथा अजैन जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और ३५ मनुष्य जीवद्या प्रचारिणी सभा के सभासद बने। नवयुवकों में विशेष उत्साह रहा। इन के प्रयत्न से प्रचायत के सामने यहाँ पर जैन कुमार सभा के स्थापित करनेका प्रस्ताव रकता गया और आशा है कि सभा शीब्र ही स्थापित हो जावेगी। वं॰जीके उपदेशसे स्थाध्याय करने की प्रतिष्ठा की।

देश।

— भारत सरकारने निश्चय किया है कि भविष्यमें अवस्थान द्वीपमें अपराधी केही नहीं भेजे बायेंगे और यह स्वतन्त्र उपनियेशके क्यमें ढाला जायगा। आजन्म कारावासकी सजा पानेवाले केही यह समाचार सुनकर अवश्य ही फूले नहीं समा-

यों ने क्योंकि घोर नर्क यातनासे उनका पिण्ड छूट गया। परन्तु रससे यह नहीं समभना चाहिये कि भारत सरकार ने उन्होंके उद्यारके लिये इस महाम कार्यका बीडा उठाया है। घल्कि उसे कुछ दिनौसे पंग्लो इव्हियनों के भविष्यको सिन्ता थी कारण कि भारत तो कालों का देश हैं। यहां बाल में नमक के बराबर रहकर वे अपनी सफेड़ी कब तक कायम रख सर्कों। अत्रवध एण्डमन द्वीप पुष्जको एंग्लो इण्डियनीका श्रीप-शृद्ध श्र्वे ताझ हीप-बनाने की युक्ति सुभ पड़ी। मोपला आदि कुछ केरी भी बाल बच्चे सहित बड़ां बसनेके लिये भंजे जा रहे हैं जिसमें नाजुक पंग्लो इव्डियनीको अङ्गल आदि काटकर आबाद करनेमें अधिक कप्टन उठाना पडे। इसके अलावे जानसामाका काम करनेके लिये कुछ काले भी तो चाहिये! अस्त भारतियांको पंग्लो इण्डियनों के वहाँ वस जानेमें प्रसन्नता ही है यदि वह अलस्टर न बने।

--- श्व भड़ीने तक बंगाल प्राग्तका दौरा कर के म॰ गाँधी १ सितम्बर को कलकत्ते से दम्बर्र के लिए रवाना हो गये। महातमा जी अपने आधम

इर जगह एजेन्ट चाहिये नमृना मुफ्त

प्रेंडिये वेदाकृतक प्रभावती वर्दी मन्तिरया, न्युमानियां वादेफाईड मन्तिरया, न्युमानियां वादेफाईड मन्तिरया, न्युमानियां वादेफाईड मन्तिरया, न्युमानियां वादेफाईड कं उसरों की राज्यसाण महालें थीं। विना तकलीफ के दादको भड़से पिटाने के लिए

दद्वहर मरहम

ही योग्य है। शीशी । /) दर्जन २॥) छा० म० माफ । कोई भी द्या १ दर्जन मगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शास्त्रीय औषधियां विकी के लिये तथार रहती हैं। एजेन्ट, वैद्य और धर्माद्य बालों को विशेष सुविधा। बीमारी का हाल लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हालके लिये पश्च लिखिये, स्वीपन मुफ्त।

-पताआयु वाचार्य पाः हुरंग शिवराम शेंडये शैच, श्रीगणेश चिकित्साभवन, नं० ५ दमोह सी० पी०

डाक महसूल माफ

में १५ दिन ठहर कर यिहार और उड़ीसा प्रान्तका हीरा करेंगे। यंगाल में महातमा जी प्रायः सय जिल्हों में गये। किन्तु आसाम का दौरा स्थगित कर देना एड़ा।

-- 'तेश' की मालूम हुआ है कि लाहीरमें मुसलमानों की एक गुप्त संस्था बनी है। जो हिन्दू पत्रों के विरुद्ध प्रचार-कार्य कर रही है। उसके दो पोस्टर निकल भी खुके हैं।

---पालनपुर (ज्ञागाइ) में एक शिवभक्तने भक्ति के आवेश में आकर आवण महीने के एक सोमधार को अपना सर काटकर शिव जी को भेंट कर दिया। वह एक कागज़ पर लिख गया है कि मैं सर किसी अन्य कारण से नहीं भक्ति से ही काट रहा हूं।

--- पानीपन के जिला मजिस्ट्रेट ने सूचना निकाली है कि मोहर्रम के दिनों में मुसलमानों के धार्मिक भानों को चोट पहुंचाने के जुर्म में ३० हिन्दुओं पर मुक्कमा चलाया जायगा।

—वंगाल देश बन्धु-स्मारक फंडमें ३ सित-स्वर तक ७३८३०३ह) इकट्ठा हो चुके।

—विगत रिवार को भिल्लावां (लक्षकः)
में हिन्दू मुसलमानों में दंगा होगया। कुछ हिन्दू क्या
करने जारहे थे। एक जलूस उन्हें स्टेशन पर छोड़ने
आया। रास्ता में मुसलमानों ने आजा बजाने के
लिए मना किया। हिन्दुओं के न मानने पर मुसल-मानों ने यात्रियों पर आक्रमण किया। लड़ाई हुई।
६ आदमी घायल हुए। बारावंकी में भी इसी प्रकार
एक दंगा होगया जिस में कई आदमी घायल हुए।
खाम गाँव (वरार) से भी एक ऐसी ही सूचना
मिली है। वहाँ पर मुसलनानों के हमला करनेपर
हिन्दुओं ने जलूस लौटा लिया और फिर पुलिस
की संरक्षकता में उसे ले गये।

न्छसहयोग का स्थिति करना और स्व-राज्य दल को आत्मसमर्थण कर देना बहुत से देश भक्तों को अच्छा नहीं लगा। कितने ही लोग हृदय थाम कर चुपचाप चंड रहे और महात्मा जी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम के कारण कुछ कह न सके। परन्तु कुछ लोग मौनावलम्बन की नीति को भी घातक मानते हैं और अय समाचार आया है कि सन्याप्रह का श्री गणेश करने के लिये वरीसाल में पुनः पिकेटिंग शुरू कर दी गयी है। हम तो यही बाहते हैं कि वरीसाल का यह उद्योग सफल हो और इस दंश की परमुखांपेक्षी प्रवृति समूल नष्ट हो जाय। परन्तु लोकमत को देखते हुप यह आशा नहीं होती कि वह आन्दोलन सफल होगा।

—विदेशियों हारा निर्मित कानून और व्ययस्था जब तक भारत में प्रचित है, तब तक शासक चाहे कोई भी हो, उनसे रक्ती भर भी लाभ नहीं उठाया जा सकता। कलकत्ता कारपोरेशन मे हैशक्ष्युद्दास का स्मारक घनवाने का निश्चय किया था परन्तु बबर है कि सरकारी पड़बोकेट जनरछ में उसे सूचना दां है कि वह ऐसा नहीं कर खकता क्योंकि कानूनी में ऐसा करने का उसे अधिकार नहीं है। आश्चर्य है कि लाट गर्थनरी का स्टेबो खड़ा करने का उसे अधिकार था परन्तु अपने मेक्ट और देश के हत्य समाद का स्टेबो अड़ा करने का अधिकार नहीं है।

--बाइने 'कानिकल को मालूम हुआ है कि एक बिदेशी सिण्डीकेट बस्बई की बीस मिलें लरीद रहा है।

-- पंताब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटा ने महा-रमा जी से प्रार्थना की है कि वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक पटनों के बजाय दिल्ली में करें। कमेटी ने इस बात पर दुःख प्रकट किया है कि साधारणतः अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक पंजाब से बहुत हुगी पर हुआ करती है।

विदेश।

-- बोह्मोविकों के उस हवाई जहाज़के लिए जो हाल में जावान के शिमोनेस्की नामक टाषू में उत्तरा है, जावानी युद्ध सचिव ने भाक्षा दी है कि जहाज तोड़कर टापू ले हटा दिया जाय क्यों कि: उन्त के उत्तरने से जावान के राष्ट्रीय नियम का, भंग हुआ है।

— बेत्तिवियमके समाट और सकाकी भारत के लिये रवाना हो चुके। वे भारत में एक मासः तक उहरेंगे।

—वहावियों द्वारा मका और मदीना की मसजिदों पर गोलावारी होने के सबब से सारे भारत के मुसलमानों में एक विशेष उशेजना फैल गयी है, विलाफत कमेटी की ढीली ढाली नीति से भी वे असन्तुष्ट हैं। बम्बई में मुसलमानों ने एक वड़ी सभा में खिलाफत कमेटी के प्रति भवि- श्वास का मस्ताच पास किया है।

टाइपगइटर विकाअ

एक कमितियल टाइपगइटर विलेक्स नेया फुलिस्केय खाईज ने १० निजिधिल मज़बूत और खरता विकास है देवने भालते में बिएकुल रमिङ्गटन न० १० की मुताबिक है कीमन सिर्फ १६०) है। पुजें एक दूसरे के तबदील हा सकते हैं।

पना—वाद अनन्तलाल इब्जिनयर मारफत'बीर कार्यालय विजनीर।

			1	विषय-	सूची				
rio.	विषय			पृ० स	में 0	विषय			go sio
१ बोर जिने	रेरा (कविता)	•••	•••	444	ও মনি	डेळा म हिमा	•••	• • • •	4.3
२ बाह्य वि	वाह को पुष्टि	•••	•••	448	⊭ सम	पादकीय दिल्पणि	र्या	•••	YE.
३ अनोखे श	। नी (कविता)	•••	•••	५६ १	ह परि	वद समाचार			9.94
४ एक महा		•••	•••	५३१	१० विर	छे (कविना)	•••	***	Fey
	ीय टिप्पणियां	***	•••		-	गर दिग्दर्शन	•••	•••	j.e.e
६ साहित्य	<i>नमास्रोचना</i>	***	•••	138					

जगतुप्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चाँदी के फूल भाव १।) तांला कि कि कि मोने के चढ़े फूल भाव २।) तांला (सिर्फ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलस्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची) हर श्रदद कम व वेशी जितने तील चाँदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत।

पुरुष) में २०००) होदा **ऐ**शावत २५०) में ३०००) ∻बंधनवार १००) से ५००) २०००) में ३०००) श्रम्यारी ्ड्ह) से १५००) - समोसरनक्रीरचना२५०)से१०००) इन्द्र एक 1000) # 1400) पालकी ∣पञ्चमेरु ३७) स (२००) - सिहामन १००) से २०००) ३००) सं ५००) रेवल ेश्रप्रमङ्गलद्वया १००) सं ५००) **ं)** में **>**4) , चंबर एक हार्थी का माजपुर्व से १०००) श्च्यप्रतिहार्य १५०) से २५०) २०) सं 20) घोडे का माज २००) से ५००। अमुकट असीलहरूबप्ने १००) से ५००) ४५। सं ३००) चौकी 400) H (000) अभिमेमगहल ३०) से २००) २००) से २०००) ⊯ীরা ५५, समास्तरत पुष्तु से पुल में पुल्ली "छनरी डेटी ३०) से ५० श्रहाई ही**प** की ्रिण्सिप्रच्या तखत चाँदी के २००। में १०००) रचनाका महिला जैन मन्दिर के उपकरण । वारहदरी इपुक्का से पुक्का) नेग्ह द्वीप का न्युवद्य) से ४०००) (१००) से ४०००) - तरह होए का -) ५००)से २०००) श्रूपत्तन के वस्तन ३००) से ५००) गन्धकरी . देखा

्षह काम बाल्यि शाहन सक्तर बनवा देने हें मन्दिर ा के क∘म में दे⇔) तेव डा को शाहन लेने हैं को इस बिहार्वा बाज भी नेपार कहना है । राय बाज नाय का बनक्कर सीने का मुख्यमा होना है ।

पता 🔠 🕬 प्रयान कार्यालय (कोडी) मोतीचन्द्र कुर्ज्ञालाल, मोती कटरा, बनारस ।

्र) जैन-समाज-कार्यालय सिंग्ड फूलचंड जैन, कार्यालय, चांटी विभाग वनाग्स सिटी।

सावधान ! नई खुशख़बरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण अज़दूरी घटादी ।

 असे मजदूरा नकाणीदार फेल्मा काम कैसे वेदी, नालको सिद्दायन चेवर लुव श्रादि ॥ भरा मजदूरा सादा काम (क्लेन) कैसे थाला लोटा सिलाय वर्गरह ०।

शीघ ही कुछ आईर भेजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये।

श्रामित्यक्तां के हर किस्म के उपकरण हमारे यहा हमेंगा बना करत ह श्रीर तयार भा रहत है। चंबर सिहासन, चंदा, नानका, श्रष्टमङ्गलदृह्य श्रप्पतीहार्थ, मुक्ट मेर, भीमगडल श्रादि । ताव के उपर साने का वरक चढे हुए सामान, पञ्चमेर, शिष्यर कलश, कलशी जुरुद्दीजी का सामान जैसे चन्दीचा परदा, श्रद्धार, बन्दनवार इत्यादि ।

मीनागम लहगीपमाट.

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चीक, कार्णा।

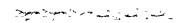
हमारं अन्य काय

हमार यहाँ बतारसी साड़ियाँ, साफे इपट्टे, कमक्वाब, पोत के भान, ईसकाफ, काणी सिट्ट के थात. इपट्टे साफे, दावती,मोटा, पट्टा, पुरबी साडी टकुवा बग्रेंग्ह।

ताति सबक

मीनागम लहरीमसाट, संगक्षा, बनारस् ।

यदि आप व्यापार बहाना चाहते हैं दीर से विद्यारक लुपवाद्य ।



- वीर-को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के माथ पहता है।
- वीर— हरएक जैन स्कुल, लाइबेरी, पाठशाला, आश्रम वर्गेरह में नियमित रूप से पहा जाता है।
- वंश-धार्मिक पत्र होने के कारण बाहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाना है।
- वीर उच्चकोटि का पाचिकपत्र होनेसे फ़ाइल में रक्या जाता है अभैर बार बार पहा जाता है।
- र्थार एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोदिन तरक्की कर रहा है।
- र्वार विज्ञापनदानात्रों के लिए अत्युत्तम पत्र सावित होवेगा। शीघ पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर रेट मालुम कीजिए और स्थान रिजर्ज कराइये अन्यशा रेट वह जाने पर पत्रताना पडेगा।

'बीर' साम्यो।यः विजनीर ।



श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का पाजिक पत्र।

श्रीन० सम्पादक :---

श्राम् उपसम्पादकः:---

केंब्बरभूर,पर्वदेश, श्री बर्ध्यानलप्रसाद जी

श्री कामनाशमाद जी

हर्ष हर्ष हर्ष हर्ष हर्ष !!!

विर के ग्राहकों की विराट उपहार

वीर के भ्रामाभी (नृतीय) वर्ष के प्राहकों की एक परमोपयोगी बृहत ४०० पृष्ठी की पुस्तकसत्य-मार्ग विरादक मुपत मिलेगी !

इसमें गृहस्थ के प्रारम्भिक कर्न व्यों का वियंत्रन नृतनात्मक दह से किया गया है । यह
गहन परिश्रम और भ्रानेक प्रत्यों का मधन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्ण हुई है और भ्रामें
इह की निराली भीर भ्रामृत्य रचना है ।

अग्रामामी वर्ष में दी विशेषाङ्क भी मिलेगे ।

नवीन प्राहकों को शाम हा अपने नाम २॥) वार्षिक मृत्य भेतकर दर्ज रिजस्टर करा लेने
चादियें । क्योंकि पुस्तक कीमती होने के कारण केवल परिमित संया में ही ज्यादार जायगी
अन्यथा पञ्जनाना पहेगा ।

पकाणव

A STATE OF THE PROPERTY OF THE

गाजेन्द्रकृमार जैन विजनीर (यू० पी०)

दिवाली पर 'वीर' का विशेषाङ्क ।

इस वर्ष भी हमने दीपमालिका के उपलच्य में बहुत सुन्दर ऋौर उपयोगा सचित्र वीर का विशेषाङ्क निकालने का निश्चय किया है। अभी से इस के लिये तथ्यारियां होरहीं हैं। इस में अन्य चित्रों के अतिरिक्त एक अत्यंत मनोहर तिरंगा चित्र श्रीपावापुरिजी का भी होगा जिसको कि बड़े परिश्रम श्रीराट्यय करके कलकत्ते में छपवाया गया है। जिन बाहकों का चन्दा निवार्ग अङ्क पर समाप्त होना है (यावनव्दव्ध से लेकर्ह ३७ तक) उनको चाहिये कि आगामी वर्ष का २॥) मृल्य मर्ना-आर्डर द्वारा भेजदें। अन्यथा बी० पी० भेजने पर यह अंक देर से मिलने के अतिरिक्त व्यय भी अधिक पड़ेगा और हम की दिवकत पड़ेगी। अन्य मज्जन जो बाहक होना चाहें उनकी भी शीव अपना नाम २॥) भेजकर दर्ज रिजम्टर करा जेना चाहिये। क्योंकि परिमित संख्या में हं। यह अंक और उपहार ग्रंथ छपेगा। गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी हमको इस अंक की नय्यारी के कारण २४वां अंक वन्ट रखना पड़ेगा । आगामा वर्ष का उपहार भी आशा है इसी आंक के साथ हम बाहकों को भेंद्र कर सकेंगे।

.Et

राजेन्द्रकृषार जैनी, प्रकाशक 'वीर' विजनौर ।



अवर्ष २

बिजनीर, आश्विन शुक्ता १४ वीर सम्बत् २४५१ १ अक्टूबर, सन् १६२५

अङ्क २३

नवयुवकों से निवेदन।

१
यदि करना है कार्य तुम्हें, तो कर्म क्षेत्र में आश्री।
धर्म, जाति, उत्थान हेतु, निय ! अपना हाथ वटाओ।।
तितु नितंडाबाद बढ़ा निज न्पर्थ न समय गमाओ।
केवल मस्तावक बन कोरा ज्ञान न अब दिखलां ओ।।

आपस में मत भेद बढ़ा मत द्वेपानल फैलाओ । पतित जातिको साइस संयुत ऊपर बंधु उठाओ ॥ घोर विरोध करो धनीति कर किंचित् भयमत लाओ । "सरयमेन जयतीय" ध्वना मैथ अतर्गत फैलाओ ॥

हे नवयुकों । क्यों सोते हो ? बठों! शर्म कुछ लाओ । नवजीवन संयुत तव युत को नव्य संदेश सुनाओ ॥

---"बत्सल"

जैन मुनियों का प्राचीन भेष ।



विशेष शोर्षक के गत सेल में हम देस आए हैं
कि हिन्दुओं के नेद, बौदों के पिटक एवं
दिगम्बर और श्वं ताम्घर दोनों सम्प्रदायों के शास्त्र
बहां प्रकट करते हैं कि जैन मुनियों का प्राचीन
भेष नगन है। यही बास्तविक जिन कल्यो-जैन मुनि
है। परन्तु उस ही लेख में हम बौदों के 'कस्सपसिंह नाद' सूत्र से कतिपय कियायों की सूची दे
बाए हैं, जो बौद पुस्तक में किसी एक अमण की
बताई गई हैं। हमने उनको जैन मुनियों की कियायें
बतलाई हैं। उनमें से प्रथम किया नग्न-विचरणकी
है। उसके विषयमें हम देख ही खुके कि यह विशेबण मधवा किया जैन मुनियों को लागू है।

दूसरी किया बौद पुस्तक में यह बतलाई गई है कि 'बद ढोली भारतों का है। शारीरिक कार्य और भोजन वह खड़े २ करता है. भले मानलों की भांति भुक्तकर या बैउकर नहीं करता ।' यहां पर बौद्धाबार्य का भाष भोजन सबंधी चर्या से है। बेशक जैन मुनि सर्वसाधारण की भांति न कुल्ला दतौन करता है और नहाता धांता है। नद शारी-रीक महत्व से एक दम बिलग हो जुका है। शरीर का पोषण मात्र आत्मद्धात के भय एवं धर्मसाधन के निमित्त करता है। इस लिए जब वह शरीर-स्थिति के उह रेय से भोजन के लिए जाता है तो बहीं श्रावकादि भक्त जन उसको पड़गांकर शासुक जल से कड़े ही खड़े उनकर पाद प्रसालन करते हैं। वह रस लिए किया के लिए मुक्तने नहीं हैं! लथवा पोदादि उठाते नहीं हैं । पुरुषार्थ सिष्युः पाय में वह विधि नी प्रकार लिखी, है यथाः— "संप्रद मुख्य स्नानं पादोदकमर्यनं प्रणामं व । वाकायमनःशुद्धिरेषण शुद्धिश्च विभिमाहुः॥१३=॥''

इसका भावार्थ थी 'गृहस्थयमं' में इस प्रकार बतलाया गया है कि '१-प्रथम श्री मृतिराज की पडगाहका याने सुद्ध बस्त पर्ने हुए और प्रापक शुद्ध क्रस्का करुश हिए दुए अपने द्वार पर गमी-कार मंत्र जपता पात्र की राहलड़ा रहे। उस समय घर में अपनी रसोई तथ्यार हो गई हो। जैसे बझी से पीसाजाना, उखलों में कुटा जाना बुहारी का दिया जाना, सखिल पानी का मरा जाना व पंका जाना, आग का जलना या जलाया कामा व आग पर किसी चाज का पकाया जाना। क्योंकि सचित्तका आरम्भ होते देख कर मुनि छौड जांयगे । रसोई तैयार करके चूट्या ठंडा कर दिवा जावे और सब सामान शुद्ध स्वान में बना रक्ता रहे । राह देखते हुए जब मुनि नक्षर पर्डे और उस घर के पास आई तब यह नमीक्तु फहते भुकता हुजा"आहार पानी शुद्धभत्र तिष्ठ तिष्ठ 'हसका प्रयोजन इस बात के दिखाने का है कि हमारे यहां आहार व पानी सब श्रद्ध दोष रहित हैं-आप कुण कर के यहां प्रधारें-प्रधारें प्रधारें। तीन बार करने का प्रयोजन यह है कि हमारी अत्यन्त भक्ति है आप अवश्य कृपा करें--इसका नाम संब्रह है (२) उच्य-स्थान-घर के भोबर लेजा कर किसी ऊचे स्थान

पंग (जैसे ऊँवा पटरा च काम्र की चौकी आति) विराज मान करे और निनय सहित खड़ा करें। (३) पादोरक--ग्रद्धअचित्त जल से पादों को घोवे (४) अर्चनं--अष्ट द्रव्यों से भाव सहित पुत्रत करे. अर्घ चढाचे पजन में बहन समय न लगावे. वहीं तो भारार का संप्रक निकल जानेगर। ५ व ७ मिनट में पूतन करले और मृति का दर्शन कर अपने को कृतार्थ माने।(५) प्रणाय-भावसहित शमस्कार करे। (६)वाक शुद्धि-जिस समय सं मृति को पडगाहा जाय उस समय से लेकर जय-अपकाशी मुनि घर से विदान ही तबतक आप भी बवन धर्म व न्याययुक्त मतलब के बहुत मिएता ब शांतना से कह और घर के अन्यजन भी जो वसन अति जहरी हों सो कहें-नहीं तो मौन रहें। (3) काय-शक्ति-वान देने वाले का शरीर शुद्ध होनी वाहिए ""(=)मनःशुद्धि-दातार का मन धर्म र्म से वासित हो। "(६) पेपण शक्ति-भोजन की शक्ति हो । "(१६१-१६२)-इस किया से इपष्ट है कि मुनिजन इवयं पदावि धोने की इच्छा महीं करते और न यह उसके लिए कोई अवयय हिलाते इलाते हैं। सागंश यह कि जैन मुनियाँ के को एट मूल गुण बनारहैं उन में २५ वें अस्तान-स्गान व करना, २६ वें अदन्त धर्यण-दांत न धाना और २७ वें स्थित भोजन-खड़े २ भोजन फरने का समावेश बौद्ध पुस्तक के इस दूसरे नियम में किया गया है। मृति के यह तीनी गुण क्रमवार निम्न स्रोको द्वारा मुलाचार में प्रकट किए गए हैं।-षद्वणानिक्त्रणेणस बिविस्तत्रल्लमहरू सेन् सन्धंगं। भग्हाणं घोर गुणं संज्ञमद्गपाळ्यं मिललो ॥३१॥ ब गुलिषहाबलेहणिकलीहि पासाणछल्लियादीहि।

दंबमला सोहणयं संज्ञमगुत्ती अदंशमणं ॥ ३३ ॥ भंजलि पुडेण ठिच्चा कुहुदिविनज्ज्ञणेस समणायं। पडिसद्धे भूमितिए असणं ठिदिभोय**र्सणमा** ॥३५॥"

इस ही प्रकार भ्री कुन्दकुरहास्त्रार्थ से अपने प्रवचनसार परमागम में मुनिके २८ गुणों में इस्क तीनों की भी गणना की, है कथा:—

'बदसिविदियरोधो लोबावस्सकमचे(१)लमण्हाणं खिदिसय(२)णमदंतयणं डिदि(३)भोयणमेय मसंब णदे खलु मुलगुणा समणाणं जिणवरेहि पण्णचा । तेमु पमसो समणों होहो यहानगो होदि ॥६॥,

इस प्रकार दूसरी कियाको भी हम जैनमुनियाँ के आचरण सं छात्र पाते हैं। अब बीक पुरुतक को बताई हुई होसरी किया यह है कि वह अपने हाथ बार कर साफ कर होता है।" इसमें कुछ गहती मालय होतीं है। बीद प्रतक में केवल पूर्व मका-शित क्षियायें ही नहीं दी हैं,प्रत्युत कई एक खुचियां कियायों की दों हैं, जिन से यह स्पष्ट हो जाता है कि चौद्धात्वार्य उस समय के विविध धर्म यतियाँ के आजरणों का उल्लेख कर रहे हैं। इन स्वियों में पूर्व प्रकाशित कियायें इमारी समझ में जैन मनियों को लक्ष्य कर लिखीगई हैं। अस्तुःउनमें यह तीसरी किया किसी के दृष्टि दोष अथवा अन्य प्रकार से आगई है। इस सुची के उपरान्त को दूसरी सूची अन्य कियायों की दी है उसमें बीसरी किया "बाल नांचने और वाढी उखाइने की है।" जो वहाँ असंगत माळम होती है। वहाँ अन्य लबर कियायों के साथ यह कठित किया ठीक नहीं है। इस लिए यह किया इस सूची में होना आहिए जिसको हम जैन स्मियों के लिए बतला रहे हैं। क्योंकि जैन गुनियों के लिए यह किया आवश्यह

है इसको छोज किया कहा गया है और यह २८ मूळगुणोंमें ४ चा मूळगुण है। जैसे कि उपरोक्त खोक से प्रगष्ट है इस शम्द की ध्यास्था इस तरह है:—

"लोचः बालोस्पाटनं हस्तेन मस्तक केश शम-धुजामपनयनं सम्मूर्छनादि परिहारार्थ रागादिनि-राकारणार्थं स्वतीर्य प्रकटनार्थं सर्वोत्कृष्ट तपध्यर-णार्थं लिंगादिशुणकापनार्थं चेति।"

भावार्थ-"हायसे वालांको उसाइना लोस है।

मस्तक के केश व डाइ। मूछके केशोंको दूर करना
चाहिए जिस के लिए ५ हेतु हैं: (१) सम्मूर्छन
विकल्प्य बादि जीवों को उत्पति बचाने के लिए
(२) रागादिभावों को दूर करने के लिए (३) आतमबल के प्रकाश के लिए (४) सर्व से उत्ह्रष्ट नपस्या
करने के लिए (५) मुनिएने के लिए को प्रगट करने
फे लिए।"इस प्रकारका सोच करना मुनि के लिए
आवश्यक है। मूलाचार जी में स्पष्ट कहा है:—
"बियतियच उक्तमासेलोचो उक्तस्समन्भिमजहण्लो।
सपडिक्तमणे विषसे उवशासे जेवकायव्यो।।२१।।"

भाषार्थ-केवों का लोच दो मास में करना उत्तृष्ट है, तीन मासमें करना मध्यम है, चार मास में करना जधन्य है। प्रतिकृषण सहित लोच करना चाहिए और उस दिन उपवास अवश्य करना चाहिए।', अथवा यह भी संभव है कि जैन मुनि को हाथों में भोजन करते देख कर बौद्धाबायं ने ऐसा लिखा हो, क्यों कि दि० मुनि भोजन पात्र नहीं रखते। वह हाथों की बांजुलि में भोजन ले भोजन करते हैं। इस तरह बौद्ध-पुश्नक की यह तीसरी किया भी जैन मुनि के आवश्यक कर्तव्यों में भिक्रती हैं। अब बौथी क्रिया वीद्ध पुश्नक की हि भाजन की है:—

'(जय वह अपने आहार के लिए जाता है,यहि सभ्यता पूर्वक नज़दीक माने को या ठहरने को कहा जाय कि जिससे भोजन उन के पात्र में रख दिया जाय# तो) वह तेज़ी से खला काता है (सायद कहीं यह दूसरे मनुष्यके वश्वनीका अनुकर-रण कर दोष का भागी न हो)'

इस का भाध यही है कि मुनि आहार निमित्त ठहरेंगे, नहीं, जैसे कि हम 'गृहस्थ-धर्म' के पूर्य कथन में देख आए हैं कि सब बीज तैयार रहना बाहिए। ठहराने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। मुनि-गण इस वजह से नहीं ठहरेंगे कि उस समय भोजन संबन्धी जो कार्य किया जायगा वह उसके निमित्त कियो जायगा और फिर दूसरे पुरुष भी आकर कुछ कहने लगें। इसलिए नहीं ठहर सकते। पेपण समिति की टीका में वसुनन्दि ध्रमण यही व्यक्त करते हैं कि 'आहार निमित्त निकल कर मुनिगण मध्यम बाल से बिचगते हुए बले जायगे उन्हें बाहे कोई पड़गाले जिसके आहारादि बात शास्त्रानुसार हों। यथा:—

"निक्षावेलायां बात्या प्रशान्ते घूम मुशलादि शब्दे गोचरं प्रविशेष्मुनिः । तत्र गच्छन्नाति द्वृतं, न मन्दं, न विलम्यितं गच्छेत ॥१२१॥

पेपणासमिति मुनि के लिए अधिश्यक है और वह इस प्रकार बतलाई गई हैं:-

"छादालदोस सुद्धं कारणजुन्नं विश्वदणव कोड़ी। सोदादी समभुत्ती परिसुद्धा प्रवण समिदी ॥१३।। मुलाबार"

मूल पुस्तक के यह बान्द नहीं हैं। भाष राष्ट्र फावने
 के बिए टीकाकार ने लिखे हैं। इस बिए यह पान हाथ ही
 समक्रमा घाहिए।

भाषार्थ-"भूख भादि कारण सहित छयालीस दोष रहित, मन, बचन काय, इत, कारित. अनु-मोदना के 8 प्रकार के दोषों से शुद्ध शीत उप्स भादि में समता भाव रखकर भाजन करना सा निर्मल एषण समिति है। इसमें बताए हुए४६ दाय इस भाति हैं:—

१६-उद्गमदोष-जो दाता के आधीन हैं। १६-उत्पादन दोप-जोपात्र के आधीन हैं। १०-मोजन सम्बन्धी शकित दोप हैं --इन्हें भशन दोप भी कहते हैं।

१- अङ्गार दोष, १ धूम दोष, १संयोजन दोष, १ प्रमाण दोष।

इनमें जो उद्गम दोप हैं उनमें दूसरा अध्याधि दोष या साधिक दोप इस प्रकार हैं। "संयमी को आते देखकर अपने बनते हुए भोजन में साधु के निमित्तऔर तंदुल आदि मिला देना अथवा संयमी पड़गाद कर उस समय तक रोक रखना जब तक भोजन तस्थार न हो।" (प्रवचनसार परमान्ममाग ने पृष्ठ ५२)

इस से बौद्ध पुस्तक की उक्त किया जैन सुनि के लिय प्रमाणित हो जाती है अब उसमें चताई हुई पांचवी किया इस प्रकार है—

'वह (उस) भोजन को नहीं छेता है (जो उस के निकट आहार के लिप निकलने के पहिले लाया गया हो)'

यह बिल्कुल स्वष्ट ही है जैसे कि हम पहिले देख खुके हैं कि मुनि आहार के समय जब उसके निमित्त निकलेंगे तब ही जो उनको पड़गा लेना उस के यहां माजन करेंगे। आहार निमित्त निकलने के पहिले वह मोजन पृहण नहीं करेंगे। क्योंकि वह उनकी चर्या के स्विलाफ, है और उसमें उनके निर्मित्त बना जानकर मृदण करने से कारित अथवा अनुमोदना दोष आता है। इस प्रकार यह किया भी जैन मुनि के व्यवहार के अनुसार है। उसकी छटी हियायें है।

'बह (उस भोजन को भी) नहीं छेता है (यदि बता दिया जाय कि बह) खास कर उसके छिए बनीया गया हो)'

जैन मुनि को यदि यह मालूम हो जाय कि उनके लिए ही यह भोजन बनाया गया है तो वह नहीं लेने हैं क्यों कि उसमें कारित अथधी अनुमादना दोष लगना है, जैसा के अपर के पेषणा समिति के श्लोक में यतलाया गया है। इस तरह यह भी किया जैन मुनि सं लागू होती हैं। बौज पुस्तकमें बनाई हुई सातबां किया इस तरह है:—

'यह कोई निमश्ण स्वीकार नहीं करता (कि आहार निमित्त किसी स्नास घर पर अथवा किसी सास रास्ता होकर या किसी खास जगह पर जाऊंगा,'

इसमें भी उक्त दोष आता है। अधःकर्म अर्थात भोजन आदि सामगी बनाने का दोष मुनिगण अपने चारित्र में नहीं लगने देते। और इस प्रकार निमंत्रण गृहण करने से कारित अधवा अनुमोदना द्वारा अधःकर्म के दोष का भागी होता है। इस लिए वह निमंत्रण स्वीकार नहीं करते। अतप्ब, यह क्रिया भी जैन मुनि के वरित्र को स्थ्य कर, लिखी गई है। आठवीं क्रिया इस प्रकार बताई हैं:-,

बह नहीं लगा (भोजन जो उस बर्तन में से निकाला गया होगा) जिसमें बह रांधा गया हो (जिससे कि शायद बह घर्तन चमचे से रगड़े आदि

उस के कारण जैय) इसमें बौद्वाचार्य का भाव 'स्थापित दोष या न्यस्त होन को व्यक्त करने का है, यद्यवि उसको यहां पर उसने पूर्ण स्पष्ट नहीं किया है। यह दोव जैनग्थी में इसप्रकार बतलाया गया है। ''जो भोजन जिस बरतन में बना हो वहां श्री निकाल कर दुसरे चरतन में रखकरके अपने घर मैं ब इसरे के घरमें साधुके लिए पहिले से रखलिया जाय बहु स्थापित दोष है। बास्तव में चाहिये यही कि कुट्रम्यार्थ भोजन बना हुआ अपने अपने पात्रमें ही रक्ला रहे। कदाचित साधु वा जाय तो उसका भाग दान में देवे-पहले से उद्देश न करें। (प्रवच-वसार परमागम भाग ३ प्रध्य ५२) बीद टीका-कार ने बरतन से निकला हुआ भोजन न छने में की अनुमान से लिखा ठीक नहीं है। भाव उक्त प्रकार है। इस तरह यह किया भी जैन साधुको क्षश्यकर बीद्ध पुस्तकमें लिखी गई है। नौबीं और दसवीं क्यार्ये उस में इस प्रकार हैं:-

'(वह भोजन) नहीं (लेगा) आँगन में से (कि शायद यह वहां खासकर उस के ही लियं रंपना हों)' (वहभोजन) नहीं (लेगा) जो लकड़ियों के दरमियान (रंपना गया हो कि वह नहां जास-कर उस के लिये ही रंपना गया हो)!

इनं क्यार्थी में 'प्राहुण्कार दांष' को लक्ष्य किया गया है। यह दोष यूँ हैं:—साधु महाराज के चर में भाजांने पर मोजन य माजन आदि को एक एथांन से दूंसरे स्थानमें लेजाना यह संक्रमण प्राधु-कार दोषा है। तथा सांधु महाराज के घर में होते हुएँ बरतनी की मसमये माजना च पानी से थोना च दीपक जंकांना यह प्रकाशक प्राप्तुंच्कार दोष है। इक में सांधु के उद्देश्य से आरंग्यका होच है।' व्यागन में भोजन पाक स्थान से लाकर ही रक्षा जायेगा। यहाँ पर भी बीज टीकाकार यथि ठीका मतलय को पहुंचा है, परम्तु उसने मुनि की उपिथित को स्पष्ट नहीं किया है। ऐसे ही एकडियों में स्पष्टतः इसका भाव बदि जलती का लिया जाय तो वह आरंभ (रंधना) मुनि के निमित्त से हुआ समका जायगा, इस छिए मुनि धाहार नहीं लेंगे,यह ऐषण समिति में उपर बतला धुके हैं। ग्यारहवीं किया इस प्रकार है:-

(यह भोजन) नहीं (लेगा जो) सिल बहे के दरमियान (रक्ला गया हो, कि शाबद बह वहां स्नासकर उसके लिए ही रक्षा गया हो)

यह शायद उन्मिश्र अशन दोष को स्रस्यकर लिखा गया है। सिलबर्ट के दरमियान रखी हुई चस्तु दाल आदि पदार्थ होंगे जो पीसकर दिस्स सप्में दिए जाय तो फिर मुनि गृहण नहीं करते हैं। और यदि यह भाष हो कि कोई चस्तु सिल बहे में मुनिके लिए रक्ती गई है तो मुनिराज आरंभ दोष के कारण उसे नहीं लेगे। इस तरह यह भी हिश्ला जैनमुनि की सर्यों में मिलती है। बारबीं किया यूं बतलाई गई है:—

जब दो व्यक्ति साथ २ मोजन करते हैं तो वह नहीं लेगा (वह भोजन जो वह काते हैं बदि उन दो में से केवल एक ही देंगा)'

यह अनीश्वर स्यक्तात्मक भनीशार्य दोष का कपानतेन हैं, जिसको (प्रकलनसार परभागम में पृष्ठ ५५) मिभसप कोई देंगा चाहे व बोई निषेधकर कप में बतलाया है। मूलाबारटीका में इसकी भीर भी एवंट्टकर दिया है। इसके लिये मूलाबार में भणि-बाई उनुगमदीय की ब्याख्या देखना बाहिए। तेर- हुवीं और जीदहवी क्रियायें निम्म प्रकार बतलाई गई है:--

वह दृष विराती हुई सी से भोजन नहीं रोगा (कि शायद दृष कम हो जावे)

बह पुरुष के संग रमण करती हुई स्त्री से भोजन नहीं स्वीकार करेगा (कि शायद उनके रम-जर्मे वाघा पड़े /

बहां पर वीद्यचार्य दायक अशन दोष को ही बतला रहे हैं। इस दोब में ३४ (किंवा अधिक) प्रकार व्यक्तियों के हाथ से मुनिकों भोजन लेना मना है। इनमें उक्त दोनों प्रकार के व्यक्तियों का समावेश है। मूलाचार में यह सब विशयु रूपसे दिए हुए हैं। अब पन्द्रह्वीं किया बीद्याचार्य इस मकार बतलाते हैं:--

'बह नहीं लेगा भोजन (जो अकाल के समय आवक डारा) एकत्रित किया गया हो।'

यह भी जैन मुनि के आचरण के अनुकृत है।
यहत सी दशाओं में मुनि का आहार गृश्य करना
यिजेत है जिनका विवेचन मूलाबार अ०६२००० ५६
सं६३में दिया हुआ है। तिसपर इसमें अभिघट या
अभिद्वत उद्गम दोष का भी समावेश दीखता है।
क्योंकि यह दोष इसमें वतलाया गया है कि अपने
पड़ास के घरों में से, प्राम से, देत से और विदेश
से भोजन लाकर मुनि को देना। ऐसा भोजन मुनि
प्रद्रण नहीं करेंगे। अकाल के समय शायद यह
किया बौदाचार्य को देखने को मिली होगी-तव
ही उस्रों ने वैसा उस्तेख किया है।सागंशतः यह
किया भी जैन मुनि के लिए है अगाड़ी १६वां और
१७ थीं कियार्य इस प्रकार हैं:—

'बह वहां भोजन स्त्रीकार नहीं करेगा जहां

षासमें कुत्ता खड़ा हो (कि शायद कुत्ते को भोजन म भिन्ने)।'

'वह वहां भोजन नहीं लेगा जहाँ मिक्लयीं का देर लगा हो (कि शायद मिक्लयों को कष्ट हो)।'

यहां अन्तराय दोषको लक्ष्यकर ही यह कियायें हैं पहिली किया में पादांतर जीव सम्पात अथवा 'दंशक' अन्तराय का समावेश ही सका है। पादी-तर जीव सम्पात अन्तराय तभी होगा जब कुला आदि पश आहार लेते मृति के पैरों के बीच में होकर निकल आवे और दशक लब होगा जब कसा काट खावे। अन्तिम ही संभव है क्योंकि कुले को मोजन न मिलने का भय टीकाकार ने दिखाया है। इसका मतलव यही है कि भोजन न मिलने से कहीं कार न खार्च। इसलिए इस अवस्था में भोजन नहीं रुते । दूसरी 'वाणिजंत्यध' अन्तराय का समावेश है। मिक्लियां जहां अधिक होंगीं वहां उनके भाजन करते हुए द्वाशम उनका आकर गिर पड्ने एव मर जाने की विहीप संभावना रहती है। ऐसी दशा में मुनि भाजन नहीं फरते। बोद्ध लोगों ने मिक्खरी के भुष्ड सं भरपूर स्थानसं अन्तराय होते बिना आहार लीटते मुनियाँ को देखा होगा। इस लिए ऊक प्रकार लिखा है। १= वी किया यूं बताई है:-

'वड (भोजन में) मच्छी, मध्स, मच, आसव, सोरवा ग्रहण नहीं करेगा।'

जैन मुनिगण इन एवं ऐसी ही अन्य बीजों को गृहण नहीं कर सके हैं-यदि वह आहार के समय इनको देख भी लें तो आहार छोड़ दूं! मूळाचार में यह इस प्रकार बतलाई हैं:—

स्तीर दहिसिष्यलेत गुस्लवणाणंग्य जं परिच्ययणं। तिला कटुकसाय विद्यप्रधारसाणंबज्ञं स्थणं।१४५। चतारि महाविधंडी चं होति णवणीव मंजमीसमधू। क बोप नंग द्या सतमकारीओं एदा भी ॥१५६॥॥

इसमें शीर, दिया, तैन गुड़ सिचित्त नमंक, नवनीत, मदा, मांस मधु आदि जैनमुनि के लिय विजेत वतलाय हैं। इस प्रकार यह किया भी जैन मुनि की चयां के अनुसार है। उसमें १६वीं किया इस प्रकार वताई है:-

'यह 'पक घर जाने वाला" होता है (कट ही अपनी आहार वर्षा से लोट काना है कि जहां किसी एक घरसे आहार गृहण किया), पक प्रांस भोजन करने वाला होता है।''

'या वह "दो घर जाने बाल।''-दो प्रास भोजन करने वाला है।"

'या बढ़ "सात घर जाने वाला"-सात ग्रास भोजन करने वाला है।"

'बह एक आहार निभित्त-दो निभित्त या ऐसे ही साननक जाने का नियमी होता है।"

यहां जैनमुनिकी'वृत्तिपरिसक्यात् , किया का उक्लेख है । मूलाचारमे यह इस प्रकार बनाई है:---

"गोधरपमाण दायगभायण णाणा विश्वारण जंगहणं। तह एसणस्स गहण विविधस्स य बुस्ति परि संख्या॥१५=॥"

'गोयरपमाण' का भाव गुर्ग्नमाण से ही है। खुत्ति परिसंख्या के अनुसार जैनमुनि एक या अधिक गृह जाने और अमुक रीति के भोतन करने . खादि का प्रमाण कर लेता है। बौद्धावार्य ने उक्त प्रकार यही किया दर्शाई है। अन्तिम किया इस सरह बतलाई है:---

'वह भोजन दिन में एक बार करता है, अधवा को दिनमें एक बार मधवा ऐसे ही सातदिन में एक चार करता है। इस प्रकार चह नियमानुसार निध-मित अन्तराल में-अर्थमासतक में-भोजन प्रहण करता रहता है।

यह 'साकोज्ञानशन' नामक चृत ही है। यह इत मुखाबार में इस तरह बतलाया गया है:— छट्टार्डामद समदुवादसेहिं मासद्धमास समणाणि। कणनेगावलिआदो तथो विद्याणाणि णाहारे॥१५१॥

यहां अवधि एक मास एवं उससे अधिक बड़ा दी गई है परन्तु भाव बही है। श्वेतास्विन्यों के यहां भी यह मान्य है। नृषउदायन की पूर्वोल्लिखत कथा में लिखा है कि:—

"तश्रों महया विभूवें अभिसिन्ते सिवियारकों भगवओ समिने गतन्त पवत्रे जाव बहुणि सौत्या छत्थ अत्थम-दसम् दृषालसमास अद्भास पेणि तथों कम्माणि कुञ्चमाये विहरें।" (Jacobia Selected Stories, No. III.

भाव यही है कि तब वह यही शान से पालकी
में बैठ कर आजार्य के पास गया और वहां संघ में
दान्तिल हुआ और विविध तपश्चरण करता रहा,
उपवास ४६-१-१०-१२ मीस के एवं अर्थमास के
और इसी तरह के करता रहा। इसके अतिरिक्त
स्वयं मगवान महार्थार में भी १२ वर्ष का घोर उप-वास एवं प्रथम दो २ रोज का उपवास किया था।
इस प्रकार यह किया भी जैनमुनि की खर्या में
मिलती है। इस तरह हमें जैनमुनि की क्रियाय जैसे
दिगायर जैन शास्त्रों में बताई गई हैं वैसी ही
बौद्ध काल के जैनमुनियों की मिलती है। इस विवे-खन से सिद्ध होता है क्योंकि बौद्ध पुस्तक जिसमें
उक्त कियाय जैनमुनियों के लिए दी हुई हैं आजसे
करीब सशाहोहजार वर्ष पहिले लिए वह कीगई धी-इसलिय प्रमाणीक है और उससे दिगम्बर शास्त्रों का सामञ्जल्य वैड जाता है कि:--

(१) दिगम्बर जैन शास्त्रों में जो कियायें जैन मुनियों की बताई गई हैं वे वही कियायें हैं जो म० बुद्ध के समय में अर्थात् करीब २५०० वर्ष पहले जैन मुनियों के लिये नियत थी। और (२) दिगम्बर जैन शास्त्रों का कथन यथार्थता को लिए हुए है, यह प्रन्यक्ष प्रगट है।

परम्तु इस लेख को पूर्ण करने है पहले हम यह भी यता देना च हते हैं कि बौद्ध शास्त्रों में उदासीन ज्ञती और उ कृष्ट भावकों का भी उल्लंख उस ही मकार है, जिस प्रकार आजकल दिगम्बर शास्त्रों में मिलता है। वहां उत्कृष्ट आवक का उब्लेक 'एक वस्त्र वाला निर्मन्थ' के रूप में आया है। (Sec India Antiquay vol. 43.) दिगम्बर शास्त्र भी उत्कृष्ट आवक को खुल्लैक-पहिलक को एक वस्त्र धारण करने की आजा देते हैं, और हुती धावकों को श्वेत वस्त्र धारण करने की। इस प्रकार जिन भगवान के चतुर्निकाय संघ के सुनि और आवकों की कि यायं वास्तव में शिगंबर शास्त्र के अनुक्ष्प थीं यह प्रमाणित होता है। और जैन मुनियों का प्राचीन भेष उन्हीं के अनुक्ष्प में नग्न सिद्ध होता है। इति शम्। -उ॰ सं०

जैन कौम की माध्यमिक शिद्या संबंधी स्थिति

श्रीर

नेताओं का कर्तव्य

(हे०-नन्हेंलाल बौधरी)

मुंबर्ड, के बहुत कृतल हैं जिन्होंने इतना प्रयास कर के हम लोगोंको अपने शिक्षणकी असली हालत का पूरा पूरा पता दिया है, मि॰ शाह ने गुजराती में एक पेम्फलेट "जैनी अने माध्यमिक शिक्षण" नाम का निकाला है, उसमें यह अच्छी तरह बतलाया गया है कि हम लोग माध्यमिक और उधा शिम्ना में जितने गिरे और पीछे पड़े हुएे हैं हमारी गिरी हुई हालतका कारण का है तथा अय उसके सुधार का उपाय क्या है, हमारी हिन्दी जानने बाली समाज भी इतनी भारी खोज से प्राप्त की हुई रिपोर्ट को पड़का, मनन कर, तथा कार्याहरू

में जाकर लाभ लेवे; इस लिये उस के लेख का सारांश उनके तैयार कि हे हुए नकशे के साथ नीचे दिया जाना है।

आत्मा का संबंध अमीरी और गरीबी से कुछ भी नहीं है शिक्षा और अशिक्षा ही उस के उत्थान नथा पतनका कारण होती हैं। किस समाज में लड़के और लड़कियों के शिक्षश के पूर्ण साधन नहीं है उस समाज के नेताओं को तथा उसके हर एक व्यक्ति को शर्म आना चाहिये, हम लोगों में शिक्षण अभी तक मजारूत और रिमागी होने के बजाय थोथी बहुत है, हम लोगों में से बहुत से अधूरा पढ़ना छोड़कर ब्यापार धर्यों में कंस जाते हैं और मीर सच्ची शिक्षा और सुधारसे अनिमह रह जाते हैं हमारी अवनित का दूसरा वड़ा कारण यह खताया गया है कि हमारे यहां कोई अच्छी तरह संगिष्ठित शिक्षा मंदिर नहीं है विन्क उस की जगह काई नये, छोटे २, एक दूसरेसे कोई संबंध न रखने खाले. अनव्यस्थित, योग्य शिक्षकों से रहित, बहुत शिक्षागृह का होना है। संसारमें विद्यान और आविष्कार का तूकान इतने जोरों के साथ उठ रहा है (और जिससे हमारी समाज अमी तक विलक्षल ही अनिमन्न है) कि यदि हम शीव ही तैयार होकर इसने साथ चलने की कोशिया न करेंगे तो हमारी समाज का कायम रहना किन माल्म देता है आहा है हम सब दिगम्बर और श्वेनाम्बर मिलका आगे अवोंगे और इस जिल्ल प्रश्न को हल करेंगे लेख का सारांश यह है:—

जैन जाति के सामने अभी तक उसकी शिक्षा का दिग्दर्शन कराने का सामने न आने से अंध्यारे में गोता जा रही थी, इस लिये बहुत प्रयास करके यह लेख तैबार किया गया है यह सब करने का कारण हमारे नेताओं का माध्यमिक और उच्च शिक्षा की जरूरत पूरी करनेकी तरफ ध्यान खींचने का है, और आशा है कि जैनियों के हित में इस के बात पदकर मनन करेंगे, यद्यपि में शिक्षा विषय का कोई कास अभ्यासी नहीं हूं और इसमें जराभी सजुमय दक्के पर मुक्ते जैन कीम की बड़ी से बड़ी करतों का पता लग गयाहै (१) आरोग्यता पोलन करने के नियमों की गैरहा जिरी के सब्ब से घटती हुई संस्था (२) माध्ययिक और उच्च शिक्षा का अभाव, प्राथमिक शिक्षा देने के बाद हम लोग साध्यमिक और उच्च शिक्षा की लिये

कितनी बेदरकारी बताते हैं कि जिसे देश कर आधर्य होता है यह नकते पर बराबर मासूध देसका है।

शिक्षा लेने के प्रसंग में साधन के प्रभाव से कभी व मुशकिल उत्पन्न हो जाती है और अगर उस समय कोई उत्साह और मदद करने वाला नहीं मिले तो बहुत से बिद्यार्थी अभ्यास छोड़ देते हैं और अपना भिष्ण बिगाड़ सेते हैं। जब कि दूसरे कौमों में बहुत से ठिकाने चाहे जितनी तकलीफ सहन करके अभ्यास चालू रखने के लिये, फालतू समय में चाहे नौकरी करके अपना शिक्षण आगे बढ़ाते हैं जैन कौम के विद्यार्थी चाहे जितने गरीब होचें तो भी पूर्ण साथन हुए बिना ज्यादा सख्या में अपना अभ्यास चालू नहीं रखते हैं।

कुछ समय हुआ, माध्ययिक शिक्षा की उत्ते-जनार्थ एक गृहस्थ की तरफ से ७० स्कालरशिय के बास्ते रु ३५०००) की रकम निकाल कर शिक्षा प्रवार के लिये दान की गई थी पर अफसोस की बात है कि साधन बिना अटक जाने वाले विद्या-थियों ने उस का लाभ नहीं किया।

कई ठिकाने शिक्षा प्रखारार्थ उस के प्रवर्ती में बिलकुल वेपरवाई दिखाई जाती है-और ऐसा कहा जाता है कि शिक्षित विद्यार्थी अपनी आधी जिन्दगी गमाकर (बरवाद करके) फिर नौकरी में ६०) ७०) शुक्रमें कमाते हैं ज्यापारी तरीके इतना कमाना कोई बड़ी बात नहीं हैं, इस तरह महती शिक्षा और बिनइवर पैसे की असंगत बुलता की जाती है, और भाग्य से शिक्षा से वेमशीन रहे मनुष्य की मंत तरीके नजर आते हैं उस से शिक्षा की कम कहरी करने में बड़ी भूल की जाती है, शिक्षा पाई महुष्य सहस्त्रई से धीरे २ आगे वह सका है और शिक्षा लेने की शिक्षमं जो करावन किलें तो कोई समय महान पुरुषों की गणना में आ सका है देश की उन्नति में माग लेने वाले महातमा गाँधी, गोलले, फीरोजशाह, रानडे. तिलक, दास वगृंहरा छिन्नित ही थे जिन्हों ते देश के खातिर अपना जीवन अर्पण कर दिया परंतु अशिन्ति के लिये यह सौभाग्य कभी नहीं मिल सका, इसलिये शिक्षा की तरफ निरस्कार कभी भी नहीं बताना चाहिये, आर्थिक दृष्टि से शिक्षा का बदला जितना चाहिये उनना न मिलने पर भाचार विचार रहन, सहन सुधारने के लिये शिक्षा की बहुत ही ज्यादा ज़रूरत है।

कोई २ ठिकाने मां बाप ख़द अपने बच्चों की तरफ से इतते ज्यादा असामधान रहते हैं कि उन्हें शिक्षान देने में उनके भिक्य का विचार नहीं करते "मेरा बेटा कब पैसा कमार्चे" इस स्याल से कोई से धन्धे में जोत वेते हैं, इतना ही नही बल्कि छोटी उमर में शादी कर देने में भी नहीं चुकते (सायद इस डर से कि कहीं बेटे की आगे पहने की धुन सवार न हो जावे) मां बाप का जितना फरज बच्चों की शादी करने का है उस से कहीं ज्यादा उन्हें उचित शिक्षा देने का भी है, पर बे यह भूक जाते हैं और इसी छिये हमारी समात्र में अज्ञानता के कारण बहुत से हठी, कम जोर कुरुम्बको कलेशित करने वाले और मूर्ख बच्चे देखने में बाते हैं। पैसा पास हो और शिक्षा न हो तो मानसिक शक्तिओंपर काकृ न होने से पैसा का दुक्षयोग सरने केवहुत संयोग आते हैं और दुःख-मय पाप प्रित जीवन ब्यतीत करना पड़ता है।

कभीर वालक्य में शिक्षा से फाववा और उस का लग रहस्य क्या है। यह समम्मने बाला नहीं मिलने से बहुत वालक अशिक्षित रह जाते हैं इस -लिये पेसा उपाय करना चाहिये कि जिस से क्य-पन से ही शिक्षा का संस्कार उत्पन्न हो जाय।

इस के बाद शिला के पीनलकोड में बहुत से जैनस्टियार्थी अमे विद्याभ्यास करने से अटक जाते हैं। जिसके लिये कड़री फरियाद करने को अक-रत पड़ी है यह यह है कि उनके मनकी शिला के साथ तन की शिक्षा गैर हाजिर है यह वे विलक्षल भूल जाते हैं अगर क्लंमान जैन विद्यार्थी की तनहुरस्ती के लिये डाक्टरी न पास की आबे तो विश्वास हो जायमा कि यदि शारीरिक उन्नति के लिये कसरत या व्यायाम शालाओं का उपयोग किया जावे तो दवा खानों का लाम लेंगे की बिल कुल थोड़ी जहरत रह झावे।

सिर्फ प्राथमिक शिक्षा से और वह भी कोई विना उद्देश्य के होने से(याने सिर्फ अक्षर हान से) कोई संगीन और व्यवहारी शक्ति पैदा नहीं हो सक्तो, जिस मनुष्य के अंदर कुछ बीमारी हो और दिन पर दिन बढ़ती जाती हो उसे आप उतनी अच्छी तग्ह आराम से रक्षों और ऊपरी इलाज करें पर वह बुद्धिपने से रहित हैं जैन कीम का फर्ज है कि दर्द को समभ के उसके मूळ कारण का नाश करना चाहिये और बाद में ऊपर दिखने वाले विन्हों को मिटाने की कोशिश करना चाहिये। भीतर का इलाज करने का दूसरा कोई उपाय नहीं सिर्फ कीन की सामान्य वर्ग को आर्थिक स्थित, दूसरे शब्दों में बर्चमान और मिथ्य जैन प्रजा की कराने की शिक्षा कहाने और

बिलने क्यी अन्तर का इलाज करने में है और उसके लिये जकरी उपाय कार्य क्य में लाने की जकरत है।

कोई भी समसदार जैन यह कद्ल करे विमा
नहीं रहेगा कि माध्यमिक शिला का ठेका दिये
विना उच्च शिला में जैन आगे वहाँ, यह हवा में किसा बाँधने के समान हैं एक जैन कालेज लोलने के सिये सैकड़ों मिडल और हाई स्कृलों की जकरत में देखता हूं, लेद की बात ये है कि अभी तक जैन शिक्षित वर्ग और श्रीमान जैनों का टल इस ओर लिखा नहीं, है, इसलिये समाज की स्थित किस मिन्न होगई। है और जिस के पीछे हां में हां बिलाने वाले होने और जिसके कामों का दोल पीटने वाले होने और जिसके कामों का दोल पीटने वाले होने अपेर जिसके कामों का दोल पीटने वाले होने उन्हों को समाज में स्थान मिलता है जैन श्रीमंतों अभी भी अपने दान का भिरमा पुरानी दिशा में ही बहाने में अपना करंग्य सम-

भते हैं इस थावत चर्तमान समय में कहां पर दान करना, कितना करना काटे के लिये और किस तरह करना यह समभाने का कार्य पूज्य त्यागी तथा खुसचारी वर्ग और कौम के थिक्षित वर्ग का है।

आज कीम के अंदर एक घड़ा भाग, सिर्फ धंघा में फंसे हुए, कमजोर प्रजा का उत्पन्न हुआ है जो कीम के लिये एक कीमती जायदाद होने के बदले बिना जरूरी (फज़्ल) वर्ग हो रहा है बह न तां खुद अपने लिये उपयोगी हो सक्ता है न दसरे की !

जैनियों की प्राध्यमिक शिक्षा के सार्वजनिक प्रश्न को हरू करने के लिये हर एक जैन यंशु सहारा देने तथा जितना कुछ बन सक्ता हो अपना, ए.जे बजाने में कसर न रक्से इतना निसेदन कर जैन कीम के हित का प्रश्न जैन कीम के आगे बांचने विचारने और मनन करने

निश्व कोष्टक को देखकर विचार में लाना चाहिये कि राजपूनाना और ट्रायनकोर को छोड़कर शेष रजनाड़ों में खियोंको संख्या पुरुषों की अपेक्षा कम होने का क्या कारण है, कुल जैन पुरुषों से जैन खियों की संख्या करीय १ लाख है, अविचाहित, पुरुषों की संख्या औसद दो तिहाई माग और अविचाहित खियों की संख्या पक तिहाई माग है, समाज के लिये इस कमी का इन्तज्ञाम करना बड़ा भरी प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

(१) राजपूतामा में और (२) जावन कोर में स्त्रियों की संख्या ज्यादा क्यों है कारण (१) बहुत से पुन्न ब्यापार निमित्त, बाहर रहते हैं तथा उनकी स्त्रियों की संख्या ग्रहती हैं (२) ट्रावनकोर को स्त्रियों की संख्या ग्रहती मासुन देती है २० पुन्न होना साहिये ३ स्त्रियों।

सन् १६२१ वीं मर्दु मशुमारी मुजव हिन्दुस्तान के हरेक प्रान्त वार जैनियों की शिचा सम्बन्धी स्थिति।

21	हिन्दुस्तान के जुदे २		जैन वस्ती		शिक्षित संब	जैनी की यो	अङ्गेजी शिक्षित जैनों की संस्था	
नम्बर	मान्त और देशी राज्य	कुल जैन बस्ती	जैन पुरुषां की संख्या	जैन स्त्रियोंकी सं च्या	शि० जैम पुरुष की संख्या	शि० जैन स्त्रियं की संख्या	पुरुष	स्त्रिय
	हिन्दुस्तान	११७=५६६	६१०ऽ७४	५६ ७६२१	३१३४१६	४३४६ ३	२३५५७	EC 3
8	अजमेर-मारवाड	१८४२३	Eryo	ಹರ್ಗಿನ	9058	४६ ०	३१३	Ę
4	शंदमा न	1					i I	
ŧ	अस्साम	इ ४०३	२६७=	६२५	१७२४	ડક	. 3	8
\$.	वल् चिस्तान	6.3	13	8	3	१	۶	
۱	बगाल	६३३७६	2434	३८४१	७३१४	६६२	ध्इर	105
i	विहार और उड़ीसा	४६१०	२६१ ८	१६६२	१५४=	૨ ₹₹	१३४	१०
•	मुम्बई	827840	२५१०६६	२३०५५४	१२६६३७	२५६२४	१२६२६	8ई३
•	वम्मा	११३५	≂६ ६	વદ્દ	ध३६	४४	१११	Ę
•	सें. थी. और परार	83233	३६ १५६	३३८३५	१६६५३	२२=६	१२८६	કક
0	कुर्व	२०२	१०५	દ3	११	2		
2	दिल्ली	४६६=	२६१=	२०६०	१६४१	२.६३	३२५	१६
,૨	मद्रास	२५४६३	१ ५५६	११८१४	૯ ૩૩૩	€93	३५६	४२
3	मार्थबेस्ट प्रावीन्सिस	3	3	{	3		3	_
8	बरोदा स्टेट	४३२२३	२१७	२१४३४	१६०३२	₹203	દાદ	२४
¥	सेस्ट्रल इविजया	४४४३ १	२३२२३	२ १२०⊏	१६४५७	१२३२	पूर्ह	₹७
	कोचीन स्टेंट	१०१	45	83	33	3	3	*
9	म्बाळियर स्टेट	\$=20\$	20239	१=०२8	= २६३	E 90	२०⊏	3
=	पजांब	४१३२१	२६६२ १	१८१०१	६इइ३	3,३७	१०६३	२४
3,9	्युनाइंटेड प्राविन्सिस	६=१११	३६६३०	३११⊏१	१८६£३	२१०३	१४१७	६२
ξo	है दराबाद स्टेट	१=४=४	६=५२	E७३२	३५४६	२६६	२३२	३३
२१	काश्मीर स्टेट	438	५३५	२३४	१६१	२४	23	₹
२२	रोत्रपुताना पजेन्सी	१९९३६१	१३४६६३	१४४७६०	६७०५०	२६३७	१३१०	8
ર	मैस्र स्टेट	२०७३२	28348	\$€₹3	8505	384	3•₹	
₹¥.	त्रावनकार स्टेट	33	3	३०	₹	. 3		P



जैन दीचा समिति

'अङ्ग्रेज़ी जैन गजट' जुलाई मास के अङ्ग में इस उपर का समिति की बहुत बड़ी आवश्यकता बताई गई है। यदि हम जैन धर्म की सत्ता बनाए रखना बाहते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम वर्ष-मोन जैनियों की घटी के कारणों को बहुत शीघ मिटावें। तथा नए भाई और बहनों को जैन धर्म में दीक्षित करें।

बदि पेसा हम नहीं करेंगे तो हमारे वर्षमान जैनी जो सब् १६२१ में ११७८५६६ ये सो प्रति दिन १८ के हिसाब से घटते हुए ६२०३१ दिनों में अर्थात् २०६८ मासों में अर्थात् १७६ वर्षों में सब समाप्त होजायेंगे। पाठकों को मालूम होना चाहिये कि सन् १६११ में जैनी १२४८१८२ ये सो १६२१ में केवल १७७८५६६ ही रह गए, ६६५८६ घट गए।

प्राणों की रक्षा सब से आवश्यक है। यदि जैनी नहीं रहेंगे तो जैन धर्म भी नहीं रहेगा। तब हमारे आवारों के जैनग्रन्थ निर्माण का सब परिश्रम वृथा होजायना। हम जिन भूठों से घट रहे हैं वे सबको प्रत्यक्ष प्रगट हैं। यदि हम इन भूठोंको नहीं त्यागेंगे तो हम एक जैनी नहीं साहे ग्यारह लाख जैन समाज के धातक महापापी समभे जायंगे। क्या हत्तसे बहकर भी कोई पाप हो सकता है ?

इस से व्यारे माइयाँ ! जब भाग अनुस्त पके-

निद्वयों के घात के भय से अल्प फल बहुविघात के दोष से कन्द मूलादि की हिंसा नहीं करते हैं तो आपको सैनी पंचेन्द्रिय सर्वदा के अनुयायियों की दया नहीं आयगी का! हम सम्भते हैं अवश्य दया आयगी और आप नीचे लिखे कार्यों की न करने की दूद प्रतिक्षा कर लेंगे।

- (१) बालक बालिकाओं को अशिक्षित न रखनाः उनको जवानी प्राप्त होने तक शरीर दृढ़ रखना व्यायाम करने, बीर्य रक्षा करने, साहित्य व्याकरणादि आवश्यक विद्या पढ़ने, नीति को जान कर नीति के अनुसार चलने, अनाःमा को पहचान कर आत्मा की उन्नति करने की शिक्षा से विभू-षित करें।
- (२) बीस वर्ष से पहले पुत्र को च १४ च १६ वर्ष से कम पुत्री को न विवाह । विवाह के ७ दिन पीछे ही वे गर्भाधान किया के योग्य हों संतान कन्म दे सर्के तब ही उनका विवाह करना योग्य है।
- (३) कुमारों के रहते हुए कभी भी वि**धुरों को** कन्या न विवाहें।
- (४) कन्याधिकय भूल कर भी न करें। कन्या के योग्य वर को हूं दकर एक नारियल और क्यया मात्र मेंट देकर लड़की धिवाह दें, बरन्तु बिरादरी के बर्च के जाल से परेशान हो कन्या को क्य कर चिरादरी को न जिमावें, न विवाह की बाह २ कर

के कच्या का बात करें।

- (५) सन्तान होते हुए कभी भी दूसरा विवाह न करें।
- (६) जो बाल, वृद्ध व अनमेल विवाह करें उनके यहां शामिल न हो। :
- (७) शादी आदि के खर्च इतने कम रक्खे जावें कि कभी किं न लेना पड़े।
 - (=) मरण का भोजन विलक्कल बंद कर डालें।
- (६) खानपान में कसर कर निर्धेत न बनें। बाज़ार का घी दूध महा अशुद्ध है उसे त्याग कर घर में गाय मेंस रखकर जो थोड़ा या बहुत घी दूध शुद्ध मिले उसी से ही कुटुम्ब का पालन करें।
- (१०) कभी भी कर्जदार बनकर फिक् से खून सुखाकर अकालमरण न करें।

नए दीक्षितों को दीक्षित करने के लिए हम को पहले उपजातियों की तरफ ध्यान देना चाहिये, जिनका पेशा क्षत्री. वैश्य तथा ब्राह्मण के समान हैं वे कीमें चाहे जिस देश की हों जैनी बन कर व जैनी गृहस्थ का साधारण आचार पालन कर सकें जैनीपने की दीक्षा से दीचित होकर हमारे उच्च तीन वर्णों की जैन जाति के साथ खान पान रोटी व्यवहार का सर्व सम्बन्ध कर।सकते हैं।

श्री श्रादिपुराण में श्री जिनसेनाश्चार्य के दीवा-न्वय किया के भीतर यही भाग भरूकाया है। अज़ीन को दीक्षा देने को नीचे ळिली क्रियाएं हैं:-

- (१) अवतार किया-किसी जैनाचार्य के पास जाकर धर्म सुन श्रद्धावान हो।
- (२) ब्रतलाभ किया यांच अणुवत स्यूल पने चार व मदिरा मांस मधु तीन मकार का त्याग कर आड मूल गुण को घारी हो।

- (२) स्थानलां म क्रिया—किसी दिन मन्दिर जी में दीक्षा देने वाला भगवान का पूजन करे। शिष्य पहले दिन उपवास करके मन्दिर जी में आवे भीर जमोकार मन्त्र देकर यह कहें ''पूरोऽसि दी-स्था" तू इस दीका से पिचत्र होगया।
- (४) गए। प्रह किया वह शिष्य , जिन देवाँ की स्थापना करके पहले पूजन करता था उनको घर से अलग कर कहीं प्रथरा देवे।
- (४) पूजाराध्य क्रिया-शिष्य स्वयं भगवान का पूजन करके जिनवासी को सुने।
- (६) पुराययज्ञ किया-अध्य पुराने जैनियौ के साथ शोख सुने।
- (७) दृद्यां किया-शास्त्र ज्ञान में दृष्ट् हो जावे।
- (८) उपयोगिता क्रियां कुछ काल अन्स्मी वीवस को उपवास करके धर्माध्ययन करे।
- (६) उपनीत क्रिया-यहोपवीत लेगे, तक उसका दूसरा नाम, गोत्र, जाति आदि नियत की जावे ।
- (१०) ब्रह्मचर्य क्रिपां नवह शिष्य आवका-चार अच्छी तरह सीखे तव तक बृह्मचारी रहे।
- (११) प्रतादरण क्रिया-विद्या पढ़ कर ग्रः हस्थ योग्य भेव करे।
- (१२) विवाह क्रिया—पञ्चली विवाहिता स्त्री हो तो उसे श्राविका बनावे।
- (१३) वर्णेलाभ क्रिया-सब समात इस. श्रिष्य की क्रिया देख कर इसका वर्ण निश्चय कर. के उसकी बरावर का समर्मे और इसके साथ सम्बन्ध करना निश्चय करलें। लिका है:-"वर्णलाभहततोऽस्य स्थातसम्बन्धं संविधिस्ततः।

समानाजीविभिक्तंत्र्य वर्षोर्ग्येक्पासकीः ॥ ६१॥ इत्युक्त्वैनं समाश्वास्य वर्णलामेन इज्युते। विधिवत्सोपि लब्ध्यां याति सम्यग्दीक्षिताम॥७१॥"

त्य इसके समान माजीविका करनेवाली-अन्य भावकों के साथ वर्णलाम हो-अन्य भावक इसको सन्तोषित करके वर्णलाम देकर सम्मान करे। यहां फिर अविवाहित हो तो उसका विवाह हो सकता है। जो शूद्र का काम करते हैं और वे ही काम करते हुए जैनी होना चाहें नो वे भी जैनी होकर पिछले शूद्र जैनियों से बरावरी का सम्बन्ध रख सकते हैं।

इस तरह से जैन दीक्षा का विधान है। अब उचित है कि इस कार्य्य के लिये एक जैन दीला समिति बनाई जावे जो अजैनों की दीक्षा देकर उन के साथ धर्णनसार खानपान बेटी व्यवहार करने में कीई संकीच न रक्खे। इस समिति की नगह २ घुमकर बर्रामान उन शैनियों की सुची तैयार करनी चाहिये जा ऐसा करने तैयार हों। जब एक. दो हजार भाई भी पक्के हो जावें तब अजैमीं के किसी विशेष उच्च सम्प्रदाय के। जैनी बनाया जावे और उन्हें बरायरी का करके उनके साथ भाईपने का व्यवहार किया जावे। जैसा उदार वर्तात्र करने का उपदेश ीनागम देता है इस ही उपाय से हजारी लाखी माई वहन जीन मत की बीक्षा से संस्कृत है। आत्मा का रित कर सकेंगे। हमें इस दीक्षा विधान की भारत और विदेश दानी में बड़े जार के साथ चलाना चाहिये, साने का समय नहीं है।

-सम्पादकः।

जैन दीन्तान्वय कमेटी ।

"वीर" के विशेषांकर्ने पुज्य ब्रुट शीतल प्रसाद की ने उक्त कमेरी की आश्यकादशई थी। उस पर मध्य प्रान्तके एक महोदयने अपने विषार प्रकार किये थे। आपने उसकी आवश्यक्ताको स्थी-कार करते हुए इस में यहतसी अडखने दिखाई थीं। उपगन्त कुछ भी सनाई न दिया ! बेशक यह कार्य सुगम नहीं है अनेकों कष्ट हैं हजारी अड़-चनें हैं, लावीं विरोध हैं! परन्तु कार्य सतत आर्प मार्ग पर लानेवाला है। पूर्वाचार्यों के चरण चिन्हीं का अनुसरण कराने वाला है। इस लिए कर्म वीर जैनियों के लिए इस विषय की ओर से मन मसोस कर नहीं रह जानो चाहिए ! जैन समात्र में प्रचार कार्य वर्षों से हो रहा है ! उप जातियों की अना-र्पता और अनावश्यका बतलाते मुद्दत होगई! अब भी वही कार्य चालू हैं! किन्तु इस सब के साध अमली कार्य की जहात है! 'जैन संबक संघ' दिल्ली इस कार्य के लिए अगाडी आया जहा है. वरन्तु उस को सफलता तब ही मिल सकी है जब कर्म बीर नवयुक्क उस के उद्दश्यों की पूर्ति के किए वर्ष में कम से कम एक मास उसकी मेंद्रकरें और उस प्रास में संघ के मंत्री अथवा अस्य सद-क्यों के लाथ अपने पशिक्षत क्यानमें अमली प्रचार कार्य करें। विमा उस प्रकार की कार्रवाई किए कुछ भी नहीं होगा ! जिन के इदयों में जाति प्रेम और धर्मानुराग जरा भी शेष है उन्हें इन मरली हुई उपजातियों को रक्षा के लिए कर्म लें कर्म या जाना बाहिए। कर्मधीर विरोध और अञ्चनों का परवा महीं करते ! जैन समाज दकी की फकीर है। बह

पहले अच्छे से अच्छे काम का भी विरोध करेगी, किन्तु जहां वहीं काम अमल में भागया तो विरोध कालें भांकने लगता है। छापे का विरोध स्त्री किसा की मुखालि तत इसी तरह के नमूने हैं! बस धर्म के लिए सत्यमार्ग को गृहण कर के अमली कार्यवाही के लिए कमें क्षेत्र में आ डिटर। वह से प्रित्र बोर निर्मल है कोई बाधा दिक नहीं सकी! इस तरह घरेलू अड़चन हमारे जैन दीशान्वयमचार में हूर होसकी है, जिसको मध्य प्रान्त के सुधारक महोदय ने दिखाई थी! अब अजैनों में जैन धर्म के प्रचार और उनका दीखान्वय प्रोध्राम विचारणीय है। इस विषय में अंग्रेजी जैन गजट के विचार माननीय हैं। वह गनाइ में लिखता है कि:—

"इस प्रकार की एक संस्था, जिस का सुवरा नाम जैन मिरानरी सोसाइटी" (Jeint Missionary Society) होसका है,विशेष रीति से बाइडनीय है। इस कार्य में सामाजिक बाधार्ये अनेक हैं किन्तु हम उस दिन तक की प्रतीचा अव नहीं कर सक्ते जिस दिन यह बाधायं हमारे मार्ग में से दर हो जायें। यह रूपए है कि सामाजिक संगठन के सब प्रयत्न असफ्छ रहेहैं। जमानेके साथ ही कई जातियां मध्ट होती जाती हैं तो कतिएय नई उप न खडी दोती हैं परंतु साथही समग्र जैन समुदायका क्या होगा वह नाश के गर्स की कोर पर है। सेन्सक रिपोर्ट उसकी कमी प्रकट कर रहीहै। सन् १=8१ से १६०१ तक जैनसक्या ५-= मित्रियत घटी १६०१ से १६११तक६,४ सैकडा कमतो द्वरं भीर १६११ से १६२१ तक ६.४ प्रतिशत घट गई। सन् १६११ में कुल जैनी

१२४=१=२ थे। सन् १८२१ में वह घट कर केवल ११७=५६६ रह गये! इस तरह मतदश वर्ष में हम ६८५=६ कम हो गये हैं। यदि इस ओर कुछ उपायंन हुए और दशा यूं ही बलने दी जैसे वह हो रही है तो इसमें कोई आश्वर्ष नहीं कि दो सो वर्ष के भीतर जैनियों का अन्त हो जावे! हा शोक!

हा दुःख १६ जैनी मित दिवस घट जाते हैं,

सदा के लिए इस समाज को कम कर जाते हैं! इस तरह बिना धर्मात्माओं के कोई दिक नहीं सका ! प्रत्येक जैनी जानता है कि जैन धर्म सत्य है और प्रत्येक तीर्धकरने समग्र प्राणी मोत्र के लिए उसका प्रवार किया था। यह किसो की बयौती नहीं है। उस पर सारी दुनियाँ का समान हक है। इस लिए प्रत्येक जैनी का यह धार्मिक फर्ज़ है कि वह अन्यों को अपने धर्म के तत्वीं का महत्व बताए उन्हें हृदयङ्गम करायें। यस जैन सिद्धान्ती के विस्तार के लिए, मानव संसार में विश्व प्रोम का साम्राज्य लाने के लिए, मनुष्यों के हाथीं से निरापराध मुक पश पक्षियों को बचाने के लिए और जैन धर्म धारियों की संख्या बढाने के लिर एक 'जैनमिशनरी सोसाइटी" दृह्ता के साथ शीघ स्थापित कर डालना चाहिए। समप्रभारत ज्यापी इस का क्षेत्र हो। गांव-गांच जाकर इस के लिए फोड एकत्रित किया जाय । दक्ष भीर उत्साही प्रचारक प्राप्तवार -नियुक्त किये आंय और उन की काफी सहा-यता कीजाय जिससे बह सर्वत्र आकर प्रसार कार्य कर सकें। सोसाइटी का पहला उद्देश्य . शहिला और जीवन-पवित्रताका प्रवार करता होना खाहिए। जनता की श्रीवन की विशु-खताका पाठ पड़ा देना खाहिए। कलाईकार्नी को बंद होने दीजिए। शिकार रफू बक्कर हो स्थय और पशु पश्चिमों के प्रति दयामय स्थयहार होने खपे-ऐसे प्रयत्न पहले होना खाहिए। जहां इसका हुआ वहां माना जैनधर्म का आधा धर्म प्रचार हो स्था। फिर अन्तिको अज्ञानी और पालक के जिए जैन धर्म में सत्य को पाने में कुछ देर नहीं लगेको और यह उस का अनु-यायी हो जायगा।"

बात सोखर आना ठीक है। बरन्त कार्य करने बाले कैसे मिलं? यह संभव नहीं कि ब्रहस्थी में रहते कुछ कार्य हो सके ! इस के लिए स्वाधीन कार्यकर्ताओं की आवश्यका है। स्थापीन कार्य कर्चा या तो गृहत्यागी महानुभाष मिल सकते हैं मध्या सबैतनिक समाज दर्द की चीट खाए बुए व्यक्ति । हमास कार्य अन्तिम प्रकार के नीजवानी से ही बल सकेगा। इस लिए सब से पहला कार्य इस भीर प्रत्येक जैनी से एक काया बसल करना है। जिस रोज सारे जैनियों से एक रुपया की आदमी वस्त्र हो जायगा उस रोज सहज में यर कार्य काल होजायगः। अतपव धर्मात्माओं और नेताओं को श्रेत्र ही इस सोसाइटी की स्थापना करके ठपया वसल करने का कार्य हाथ में लेकर प्रशासकार्य प्रारंभ कर देना चाहिए । कतिपथ निःस्वार्थ त्यागियों को अगाडी साना लाजुनी है।

जैनी झौर शिचा!

बस्तुतः हमारी सामाजिक दशा उसदिन सुध-रेगीः जिल्ल दिन अलेक जैगी समुचित धार्मिक और लौकिक शिक्षा से विश्वित होगा। जाज हमारे शिक्षा प्रचार की कितनी शोच रिशा है यह अन्यत्र प्रकट लेख से प्रकट है। दिगम्बर सप्ताज में जैनविद्यालयों में जितना रुपया कर्च होगा है, उससे उत्तना लाम नहीं होता! एक तरह से वह विद्यालय साम प्रकार के लोगों के लिए रिजर्ब हो गए हैं। तिसपर यहां लौकिक विद्या का अभाव १६ वी शताब्दि के विज्ञान उत्पन्न कर रहा है जिससे उल्टी हानि हो रही है। सारे जैनियों में शिक्षा प्रचार करने के लिए 'निशन स्कूलों' की तरह 'जैन स्कूल' खोले जानो चाहिये। और जैन सिद्धान्त की उच्च कोटि की शिक्षांक लिए एक महाविद्यालय पट्यांत होगा, क्योंकि सामान्य धर्म शिक्षा "जैन स्कूलों" में मिलना लाजमी होगी। विद्यालय-संचालकों को घ्यान देना चाहिये।

पृथा पालन !

षर्थान्त में प्रधापालन लाज्या है! इस अ'क के
साधही 'चीर' का जिनायबं सानन्द समाम होता
है। इस वर्ष में उसकी जो कुछ सफलता प्राम हुई
है वह उसके हितेषी शुभिबन्तकों,मान्यलेखकों और
सुद्द पाउकों की छ्या का फल है। उन्हीं का
आसा मरोसा 'चीर'का आधारस्तम है। बीर संघ
तो केवल अपने कर्तन्य पालन का उत्तरदायी है।
उस में भी उससे अथवा हम से तृटि रह गई हो।
तो कोई आएवर्ण नहीं! अपने जान 'चीर-संघ' ने
भरसक कोशिश 'वीर' की सेवा करने में की है।
तो भी अपनी कमियों के लिए हम अपने उदार
प्रेमियों के निकट समा प्रार्थी हैं। किन्तु साथ ही
उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि यदि वे हमारी बुढियों
को बतलाने की अनुकर्या दर्शायों तो उनको सुधा-

सर्वधा आदर्श जैनपत्र ध्वमाने में कुछ उठा न रकता कावेगा। आगामी 'वीर'में गवेषणापूर्ण साहित्यिक ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और सामाजिक छेल तो रहेंगे ही पर साथ ही 'गरुप' पवं मनोहारी किं-साओं' का भी समावेश करीन २ प्रत्येक अंक में रहेगा। और यदि पाठकों ने उसे विशेष अपनाया तो मनोरंजक शिक्षापद कार्ट्न देने का भी प्रवन्ध किया जायगा। उपहार सदैन की भांति मृत्यमय रहेगा। तिस पर आगाभी 'निर्वाणाक्र'' में पाता-पुरीका वर्शनीय तिरंगा स्वित्र और उत्तमोत्तम छेल हमारें उक्त वक्तव्य के भत्यक्ष दर्शन कराहेंगे। अउपदार पाठकों से हमारा सादर अनुभव है कि वे

स्वयं 'वीर' के प्राहक रह कर अपने मित्रों को इस का प्राहक बनायें। यदि हमारे इस कथन पर उन्होंने ध्यान दिया और कम से कम एक एक प्राहक भी वहा दिया तो हम को विश्वास है कि मान्य प्रकाशक यात् गाउँम्द्र कुमार औ इस को सर्वाङ्ग सुंदर बनाने में कुछ उठा थ रक्खेंगे। इस वर्ष ही क्रीब एक हज़ार रुपये का जुक़सान उठा कर 'वीर' आपकी संवा करता रहा है। आगामी बह विशेष चारना से आप की सहायता पाकर सेवा करता रहे, यही भावना है-यही प्रभु बीर से प्रार्थना है। हमें भीर हितंषियों के अनुमह पर प्रा विश्वास है और उन के हम विशेष आभारी हैं। जय बोलों प्रभु धीर की अय!

परिपद्-समाचार ।

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचन्द पंचरतन-१० अगस्त से ३१ अगस्त तक

मऊरानीपुर—(बुंदेल खंड)-१० अगस्त को आया-सभा हुई। भाईयोंने वालविवाहारि कुरी-तियां यन्द्र करने का बचन दिया। यहाँ के सिंघई लालचंद्रजी ने २१ वर्ष से हिसाब गहीं दिया यहाँके भाई हिसाब मांगते हैं परवार सभाको ध्यान देकर हिसाब लेना चाहिये इंडा) उपदेशक फंड को प्राप्त हुने।

देहरका—(टीकमगढ़स्टेट)-१३ अगस्त । मन्दिर जी में सभा हुई सात माई यो ने स्वाध्याय का नियम लिया यहां के भाई यो ने मन्दिर जी में युद्ध काशी रखने, चेश्यानृत्य, अश्लील गान कन्या विक्रय, बाल विवाह की कुपृथा रोकने का बचन दिया व ३) उपदेशक फंड की प्राप्त हुवे।.

भाँसी-१४ अगस्त । सभा का बुलावा दिया परन्तु अधिक संख्या में मनुष्य महीं आये यही पर ६ जीन मन्दिर, जीन जन संख्या २५० है परस्तु उत्साह कम दिखाई देता है यहाँ एक पाठशास्त्र की भी आवश्यकना है।

मोट-(भाँसी बुन्दे लखण्ड)१७ अनस्ता शास्त्र बाँचने के बाद सभा हुई चार माई यो ने स्वाध्याय का नियम लिया नथा मन्दिरंजी में बादी के बन्ध रखने कन्या विकय बाल विवाद आदि मधा को दूर करने का बचन दिया यहाँ से दी मौल पर कुनेहाँ खंड़ा है वहां के ठा०कुँवर बल्देय सिद्दी ने शिका खेलना मांसं खाना त्यागा दिया है यहाँ पर ४) उप-देशक फंड को बाप्त हुवे।

विश्नांव—(भांसी) १८ अगस्त । शास्त्र वांचने के पश्चात सभा हुई व्याख्यान समाज सुधार पर हुआ चार मार्थोने स्वाध्धायका नियम छिया ६) रुपये उपदेशक फड की प्राप्त ,यहाँ पर आपस में फूट है दो चार्टी हैं फूट मेटने का प्रयस्न किया परम्तु निष्फल हुआ 'यहाँ तीन मन्दिर हैं जैन जन संख्या ६० है।

बनीना—(आंसी) १६ अगस्त शास्त्र बांचने के पश्चात ब्यांच्यान हुआ कुरीतिनिवारण पर आषण हुआ। यहां के आईयोंने वेश्यानृत्य अश्लील गाना बाळ-वृद्ध बिचाह कन्या चिक्य की प्रधा बन्द करने तथा मन्दिर जी में खादी प्रधोग में लाने का बचन दिया। उपदेशक फंड कोशा=) प्राप्त हुए। यहांपर उदानीन पं० गिरवर दासजी भी ठहरे हुए हैं आप बड़े ही शान्त और भाषा के कवि हैं आप के बनाये हुए १० प्रथ हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

रायपुर-(भांसी) २१ अगस्त । यहां पर

मुखिया भाइयों के न होने से समा न हो सकी।

श्चातीरा---(भॉसी बुन्देलकण्ड) २१ अगस्त शास्त्र वांचने के पश्चात व्याख्यान "जाति की वतर्मान दशा शोचनीय है" पर हुआ।

उपस्थित १५० थी। ज्याख्यान के अन्त में लोग उठकर खले गये। बाद को मालूम हुआ कि यहां के लोग खन्दे के बहुत उन्ते हैं और इसी ख्याल से खले गये। यहां पर पहिले कुछ पंडित लोगों ने पाठशाला के लिये खन्दा कराया था परन्तु बह चहा (इकट्ठा नहीं हुआ। यहां जैनियों को समभना चाहिये कि दान देना गृहस्थाका धर्म है और परिषद्द का उपदेशक चंदा आम तौर से नहीं करता।

रेहरका-२२ अगस्त से ३१ अगस्त सक और दशलाक्षणी पर्व में रहा। यहाँ पर नित्य ही हार-मोनियम पर पूजन होता था यहां के बोलक गायन कला में बड़े निपुण हैं। जिति दिन शास्त्र सभा होती थी और हमारा व्याख्यान प्रति दिन धर्म के किसी विषय पर होता था। बहुं आनंद के साथ दश लाक्षणी व्यतीत हुई ४) उपदेशक फंड को प्राप्त हुके।

धर्म-धुरन्धरों की धूल।

नृत्य देखो नटचरों का लूट लो पनपर मना। डोल डोंगोंका बना है, स्वांग स्वारयका समा॥ धर्म की आँधी बली है, आम पेड़ों के पके। निर रहे हैं लूट लो, अब किसकी तकते होरण॥ सत्य सत्ता आह होकर मृत्यु शब्या पर पड़ा। आसे दो अब आगई है, उस अभागी की कड़ा॥

सूसुरों की भस्म नाकृत हो गयी कितकाल में।
गड़ गया भएडा हैं जनका धर्मके जदार में।।
लाओ पैसे लाओ पैसे की मची ध्वनि आवजा।
टयर्थ देरी मत करो, परिपूर्ण कर दो तोंद्र को।।
देखलो फिर कैसे उड़ती हैं यहां धर्मध्वमा।
— मतवाला से



समाज

सर सेठ हुकमचंदजी साहब उत्तर दें

हिंदी जैन गज़र अंक ४६ के साथ कोडपत्र के क्ष्म में इन्दीर की पंचायत का दश लाश्रणी संबन्धी विवरण प्रकट हुआ है। प्रकट कर्ता है— श्री कुंचरलाल बापूलाल जी जैन हैं। उसमें हमारी जाति के प्रमुख सर सेठजी का भाषण छपा है। उनके इन शब्दों में कि भार्ती! मेने बाव्यार्टी के कार्यों की तरफ से जो विश्वार किया है तो उस का रास्ता जो कि उन्होंने जैनजाति की उन्नति की शाह लेकर पकड़ा है वह बिव्दुल गुल्स रास्ता है। बह जिस रास्ते से समाज को छे जाना चाहते हैं वह मार्ग जैन समाज की उन्ति का, नहीं होगा।
यानी (जैन समाज में जो ये लोग विधवा विवाह
खलाने जाति पांति को तोड़ कर सब का एका
करके, मान मर्यादा नष्ट करने में लगे हुए हैं)
पर किञ्चित विचार करना है। भा० दि० जैन परिपद में यथिप पंडित, बाबू और सेठ सब ही लीग
सम्मिलित हैं, परन्तु तो भी इसके कार्यकर्मा
अधिकांश अं अं जी पढ़े लिखे होने की बजह से
पत्र महासभा से विशेष करके निकलने से समाज
के बहुत से लोग इसको बाबूवार्टी की ही सभा
ख्याल करते हैं। ऐसी। अवस्था में सर सेठ जी के
उक्त उद्गार परिषद से लागू किए जाकर, उसके
कार्य में याथा पहुंचाने के त्रयत्म किए जांग, यह

इर जगइ एजेन्ट चाहिये नमूना मुक्त

हैं अंडिय वहा कत. प्रभावती वहीं मलेखा न्यूमानगा न ईफाइंट सिन्मान ने हो । सब प्रकार के न्यूसा की के न्यूसा की विना तक्तलीफ के दाद की जड़ से मिटाने के लिए दड़हर मरहम

ही योग्य है। शीशी ।) वर्जन २॥) हा॰ म॰ माफ। कोई भी दवा १ वर्जन मंगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शान्त्रीय श्रीष्टियां विकी के लिये तथार रहती हैं। एजेन्ट, धैद्य और धर्मादव वालों को विशेष सुविधा। बीमारी का झाल किस में अने पर उचित सलाह मुक्त। विशेष हाल के लिये पत्र लिखेने, सूचीपत्र मुफ्त।

पता-मायुर्वेदासार्य पाण्डुरंग शिवराम होंडये बैदा, श्री गणेश चिकित्सामवन, नं० ५ दमोह सी० पी०

4

महस्ख माप

षिरकुल संभव है। यदि परिषष्ट का अबतक का कार्य जाति को रसातल में पहुंचाने बाला हो. तो बेशक हम को कोई आएक्ति नहीं है। परन्तु हम देखते हैं कि आजतक परिषद् ने कहीं भी विधवा विवाहका प्रभ नहीं लिया है,प्रत्युत उसको समाज को हानिकारक और घृणित ही उसके मुखपब हारा अकट किया गया है। जाति-पांति लोपक भी कोई मन्त्रत्य उसके द्वारा प्रकट नहीं हुआ। हो जीन जातियों में परम्पर विशाह संबन्ध खोलने का ं अस्ताव अवश्य इटावा अधिवेशन में स्वीकृत हुआ है। सो उसके प्रस्तोवक श्रीमान् पं॰ भम्मनलाल जी तर्कतीर्थ ही हैं। यदि वह अधर्ममय कार्य था, तो एक बंडित महोदय ने उसे पेश क्यों किया ? तिसपर उसका अधर्ममय सिक्ट करना भी त्रोप है। आचार्यों ने असमर्ण विवाह भी जायज किये हैं इसी लिए परिषद् से यह दोप भी लागू नहीं है। और खुआछूत मेटने का भी प्रयास कोई हुआ नहीं। ऐसी अवस्था में सर सेउ जी के उहुगार किन महोदयों अथवा संस्थाओं के प्रति हैं, इसका उत्तर सेठ जी साहव को अवश्य देना चाहिए। जाति के प्रमुख पुरुष के उद्गार स्पन्ट होना ळाजमी है! बाशा है सेठ जी उत्तर देने का कच्ट उठायंगे । और अन्तंजातीय विवाह को शास्त्र विरुद्ध करेंगे । --30 HO

समभौते का प्रयास विफल गया!

भा॰ दि॰ जैन परिषद् के घार्था अधिवेशन में श्रीमान् जयकुमार देवीदास अवरं, बक्षीक को उस भगड़े को निषटाने का पूर्ण आधिपत्य दिया गया था, जो शेतवाल से उत्पन्न हुआ है। खबरे जी ने इस विषय में अनवात प्रयास किए। परम्त जो पंडित इस शान में हैं कि धर्म सेवा हम ही कर सक्ते हैं-इमारे सिवाय किसी की उस के योग्य योध्यता भाम नहीं और जो दूसरों को लाम्छित करने के आदी हो रहे हैं, वह भला किस तरह इन प्रयासी को सफल होने देते! भगडा नई भौर पुरानी महासभा के अस्तित्व का है। इस लिय लाज़मी यही है कि दोनों के काय कर्ताओं में से व्यक्ति खुने जांग और एक निष्यन्त समापति की अध्यक्षता में एक निर्णय किया साय: बिस से विशेष कलई की शांति हो । किन्तु पं० महोदय इस यात को मंजूर नहीं करते। इस के उत्तर में वह बात अगाड़ी लाते हैं जो व्यावर अधिवेशन के समय ना मंजूर की थी अर्थात समाज के गण्य-मान्य पुरुषों में से खुनाव हो । और जब यह होने लगेगा तब चुनाब संबंध में बखेड़ा बहाकर देंगे। सारांश यह कि इनकी सब कारगुजारी से इपष्ट है कि भागड़े के शान्त करने के स्थान पर बढ़ानेवाले

ग्रहाना (रोहतक) में ज्ञानवनिता जैनाश्रम

खोखा है जिसमें विषया पहने आजम के खर्च से रहकर विद्याध्ययन कर सकती हैं यदि कोई साहब आजम के खर्च से भेजना मंजूर न करें तो उनसे भोजन खर्च केवख ६) ६० मांसिक विद्या जा सकता है, विशेष नियम नियमावित्त मंगाकर मालूप हो सक्ते हैं।

महबूब सिंह, माविक्षमर्थ छा॰ हुक्तमचंद जगाधर मछ, देहबी

यदि कोई हैं तो हमारे यह पडितगण! हमाराभाव इस से उम पर कटाक्ष करने या दोघारोपण करने का नहीं है। जो उनकी स्थिति बतला रही है, यही लिखा जा रहा है। परम्तु हम समाज को सचेत कर देना बोहते हैं कि यह अब आंखें खोल कर देसे कि घर्म रहाा की आड़ में कैसा ताण्डवन्य किया जा रहा है। घर्म अजर अमर है। उस की रक्षा कोई क्या करेगा-यह स्त्रगं दूसरों को स्व-रक्षित रखता है। ऐसी अवस्था में पडित महाशयाँ को अपने विवेकसे काम लेना आवश्यक है। उनकी और समाज को इसी में भलाई है।

— इ० €ं०

—श्रीमान पंडित चम्पतराय जी तिया बारिधि की सेवा में लखनऊ दिगम्बर जीन समाज ने तारीख १= सितम्बर मिती कुवार बदी १५ को जीन बाग में एक सम्मान पत्र श्रीमान बाबू फतेहचन्द जी के सभा पितत्त्व में किया जिसको श्रीयुत अजीत प्रसाद जी ने पढ़ कर सुनाया कल्यनऊ दिगम्बर जीनसमाज के समस्त सदस्य उपस्थित थे। समाज सेवक

बगतीलाल जैन मंत्री जैन सना

---श्चगतिया-सगय अगत (एटा) में एक प्राचीन प्रतिमा जमीन से निकली है।

महाश्राक !

२६ सि॰ सन् २५ को मेरठ में बाव् सुस्तानसिंह बकील को देहानत होगया। आप करीब २४ दिन से बीमार थे। टांग में फोड़ा निकला था। आप जैन प्रचारक के सम्पादक थे और जैन गज़ट के भी एडी-टर रह चुके थे इस दुःख में हम आप के कुटम्बियों के प्रति सम्येदना प्रकट करते हैं।

श्रावर्यकता — अध्याल गोयल गोत्री १४ वर्षीय शिक्षित कन्या के लिये १७ से २१ वर्ष तक के अध्वाल जैन वर की आवश्यकता है।

> पताः—सोहनलाल जैन । माफन"बीर" कार्यालय निजनीर

देश

हिन्दू मुसल्यानों का भगडा !

अलीगढ में दंगा होगया समाचार, जैसा कि

पेसे अवसरों पर हुआ करता है, एक एक पश्रके
हैं। अन्य अनेक स्थानों से उत्तेजना के समाचार
आ रहे हैं। प्रयाग की दशा भी शोचनीय है। मालुम
नहीं इन भगड़ों का अन्त कहां होगा। अवसक
के ल वकरीद ही इन भगड़ों के लिये प्रसिद्ध थी।
अब राम लीलो उसकों भी मात करना चाहती है।
एहले के सल गोप्ध ही भगड़े का कारण हुआ

गोरे स्रोर खूबसुरत होने की दवा।

शहरुगादा बिस-आफ़-मेल्स की सिफ़ारिश से डा॰ लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के बास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत भाजाती है मुंह पर स्थाह बग्ग, मुँह से कोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज. पाँच का कटना, बग्ल में बदबूदोर पसीने का आना हत्याहि सब को साफ़ करके खमड़े को नरम कर देती है। यह फुलों से बनाया है इसकी खुशबू असे तक बदन ूमें से नहीं निकलती। कीमत र शीशी १।) हथया ३ शीशी के ख़रीदार को १ शीशी मुफ्त । डाकम्यव ॥)

प्ताः - ग्रुहम्मद शफ़ीक एएट को॰ भागरा

करता था अब बाजा भी हो गया है। दिंदू मुनल-मानों के मन एक दूसरे के सम्बन्ध में इतने कालु-बित हो रहें हैं कि नये नये कारण उत्परन होते तो जायें गे। जब भगड़े ही को ठान ली तब कारणों का क्या अभाव है? यह भगड़ा बढ़ेगा। किसी के रोके ठक नहीं सकना। महात्मा जी ने जो कहा बरीठीक है। केवल महात्मा जी की धी नहीं, वियेक की बात भी कोई न सुनेगा। भारत के बुरे दिन अभी समान्न नहीं हुए हैं।

—शार बार ख़नरें उडाई जाती हैं. कि भारत सचिव सो० पी० कोंसिल को तोड़ने वाले हैं। भव फिर ऐसी ही खबर गर्म है। हमारी समफ में तो सी० पी० कोंसिल को हा क्यां यदि सभी कोंसिलोंका बात्मा कर दिया जाय, तो द्वे घशासन का भ्रम ही मिट जाय।

— पिछली बड़ी कौंसिल में कई मजेदार घटनार्ये हो गई। मि० जमुनादास मेहता-ने मुडि मैंन रिपोर्ट को की खड़ से सभी हुई बताया तो मीठ मुड़िमैंन विस्थाने से हो गये। मिठ घोठ एक शर्मा ने नहरू जी के खहर के असकन और पाय आमे की और संदेत कर कहा कि देखिये यह है, असकी स्वराज्य का नमूना। इसपर स्थानिकट मेम्बरों ने जब लाल पीली आर्के दिखलाई तो मिठ शर्मा ने कहा, इस शुष्क राजनीति के साथ माइयो, कुछ मनोरस्त्रन भी करना होगा।

विदेश

- मोमलुसे तुर्को हारा ईसाई निकाले जा रहे हैं एक समाचार पश्रमें यताया गया है कि अभी तक चालीस हजार के करीब ईसाई निकाल दिये गये हैं।

— मोरकोमें वड़ जोगें से लड़ाई हो रही है स्पेन और फास्स की सेना में रफ्को में पहुंच गयी है। सिपाही गायोंमें जाकर लेगोंका बड़ा तंग करते और मारते हैं।

टाइपराइटर विकाऊ

एक कमिरायल टाइपगइटर बिलकुल नया फुलिस्केप साईज नं० १० विजिधिल मज़बूत और सस्ता विकाज है दे वने भाजने में विएकुल रमिङ्गटन न० १० के मुनाबिक है कोमत सिर्फ १६०) है। पुर्जे एक दूसरे के तबदील हो सकते हैं।

पता—बावू अनन्तलाल इक्किनयर मारफत वीर'कार्य्याखय विजनौर।

विषय-सूची

4	• विषय	पृ० सं०	नं 0	बिषय			पु० सं०
	न्वयुवकों से निवेदन (क्षिता) 🚻	324	४ सम्पा	दकीय टिप्पणि	वां …	•••	. 482
	ज़ैन मुनियों का प्राचीन भेष · · ·		५ परिषद्	[समाचार	,	***	You
	जैन काम की माध्यमिक शिश्रा सम्बन्धी		६ धर्म ५	इ रम्धरो [*] की धूच	(कविता	,	48ફ
	स्थिति और नेताओं का कर्तन्य ···	¥=3	७ संसा	दिग्दर्शन	. •••	•••	493

जगतप्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चाँदी के फूल भाव १।) तीला अधि कि मोने के चढ़ फूल भाव २।) तीला (सिर्फ चाँदी या चाँदी पर मोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची) हर कहर कम व बेशी जितने तील चाँदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत।

होदा	५००) सं					क्ष्वंधनमार		
श्रम्बारी	(000)	2000)	न्द्र एक	८ ६) स	1,000)	ं समोसरनकीरस	बना२५०)स	(000)
पालकी	२०००) से	(doc)	% सिंहासन	१००) से	२०००)	पञ्चमेरु	३०) से	200)
पालकी टेउल हाथी का म	२००) स्व सि (००) से	(00) (000)	्र ≝चँवर गक्	ं) मे	સ્યુ)	%श्रधमङ्गलद्वय अश्रप्रतिहार्थ	१००) में	
घोड़ेकासा	त्र २००) से	400)	क्षमुक्ट	२०) से	20)	अध्यातहाय ्योक्स्टर्स्ट	१५०) से १००) से	
क्षतंत्रम	५००) मे	(000)	किन्द्रीकी	४५) स	300)	हमोलहस्दरने श्रीममगद्दल	२०) स्ते ३०) स्ते	
#स् ।डा	५०) स	sy)	्यभासरन	२००) से			, <u> </u>	
अस्तृत्यी इंडी	ं ३०) सं	y o)	ै शहार हीए व रचनाका मोह	ી } રહ) [;]	सं५००)	ंकलशा नखन चौदी के	•	
जैन मन्दि	र का उपकर	π (ारच नाका माड	(m1)	•			
गन्धकुटी			तंग्ह द्वीप की	yee)	मं ६०५०	याग्हद्गी)#पूत्रन के यग्त	=५००) स = ३००) चे	yooo)
देवी	६००) सं	Sovo)	रचन।काम।इ	(ला) ′		/ अस्त्रू भग क घरता	1 200) M	400)

यह काम ब्राडिय शाहन रोक्टर वस्ता देने हैं मिन्स् ी के फाम में दे≈) सेद इस की शाहन सेने हैं र∳द्रम चिक्क की चीजें भी नेबार कती हैं। अपसे चीजे तार्वकी सताकर सीने का मुख्यमा होता है।

- पता (१) प्रधान कार्यालय (कोर्टा) मोर्नाचन्द कुञ्जीलाल, मोर्नी कटरा, बनारस ।
- (२) जैन-समाज-कार्यालय सिंगई फुलचंद रैज, कार्यालय, चांदी दिशाग बनाग्स सिटी। Tel. Address---SINGHAL BENARES

सावधान ! नई खुशख़बरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारक अजदूरी घटादी।

 भगे मज़दूरी तकाशीदार फेरमी काम जैसे वेदी, नालकी, निहासन चंदर, लुद श्रादि ॥ भगे मज़दूरी मात्रा काम (रलेर) जैसे शालो, लोटा, गिलास वर्षेरह २ (

शीघ ही कुछ ब्यार्डर भेजकर हमारी सचाई की परीचा कर देखिये। हमाग उद्देश्य जानि व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते है और तैयार भी रहते हैं। संबर, सिंहासन, बेटी, नालकी, श्रष्टमङ्कलद्भ्यः श्रष्टपतीहार्थ, मुकुट, मेरु, भीमण्डल श्रादि । तांवे के ऊपर सोने का चरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर, कलश, कलशी, जुरुर्दों की का सामान जैसे खाबीबा, परदा, श्रद्धार, बन्दनवार इत्यादि ।

मीनाराम लहरीपमाट.

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, काणी।

दमारे अन्य कार्य

हमारं यहाँ यतारम्। साडियाँ, साफे, ड्याटे, कपस्याब, पोत के थान, ईसकाफ, काणी जिल्ह के थान, ड्याटे साफे, दावनी,गोटा, पट्टा, पुग्यी साड़ी टकुया बग्नेंग्ह।

ज्ञानि संवक-

सीतागम लहरीयमाद, सराफा, द्वारस ।



- यदि स्राप व्यापार बहाना चाहते हैं
 विज्ञापन छपवाइये।

 वीर में विज्ञापन छपवाइये।

 वीर—को जैन समाज का प्रत्येक श्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रवा के साथ पहता है।

 वीर—हरएक जैन स्कृल, लाइबेरी, पाठशाला, आश्रम वगेरह में नियमित रूप मे पहा जाता है।

 वीर—पार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि में देखा जाता है।

 वीर—पत्रमात्र सामाजिकपत्र होने से प्राहल में रक्क्या जाता है स्रोर बार बार पहा जाता है।

 वीर—एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

 वीर—विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युक्तम पत्र साबित होवेगा।

 श्रीष्ठ पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर रेट मालूम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पञ्जाता पड़ेगा।

 'विर' काय्यालय, विज्ञापन ।

 'वीर' काय्यालय, विज्ञापन ।